بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

مربوط منظّم مفہوم القرآن

اردو ' ہندی

संबद्ध संगठित भावार्थ कुरआन

از

سکندر احمد کمال

बइस्मिही तआला

तक़रीज़

अल्हमदुलिल्लाह, कफ़ा व सलामुन अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा अम्माबाद

बिरादरान मिल्लत जनाब सिकन्दर अहमद कमाल साहब कस्बा चान्दपुर जिला बिजनौर (यू.पी.) के रहने वाले हैं इस समय अधिकांश समय आदम नगर नगला पटवारी बरोली रोड, अलीगढ़ में रहते हैं, इल्म के शौकीन हैं, इन्तहाई महनत और जांफ़शानी से श्रीमान ने कुछ पुस्तकें लिखी हैं जिनका नाम निम्नलिखित हैं (1) क्या हसीन ख़्वाब है यह मगर ताबीर? (2) कानूने इलाही या इन्सानी? (3) अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल (4) ज़िकरे अंबिया (5) नामूस रसूल छपकर सार्वजनिक हो चुकी हैं, इन पुस्तकों के सन्दर्भ में अहकर इतना ही अर्ज़ कर सकता है कि काफ़ी मसाइल जो आज तक पेचीद्गी में पड़े हुए थे वह सुलझ गए और जनता को उनसे लाभ हुआ.

जो नवीन काविश और महनत सिकन्दर अहमद साहब ने कुरआन पर की है वह पाठकों के हाथों में है इससे क्या-क्या असर लोग लेंगे यह ईश्वर जाने, परन्तु ख़ाकसार इतना अवश्य कहने का साहस कर रहा है कि इसको चिन्त-मनन की दृष्टि से पढ़े और लेखक को हर सम्भव तनकीद बराए ताबीर से नवाज़े, तनकीद बराए तख़रीब हानिकारक होती है जिससे जाति को काफ़ी हानि उठानी पड़ती है मेरी प्रार्थना है कि इसको पढ़कर देखें कि कुरआन फ़हमी को किस अन्दाज़ में प्रस्तुत किया है, क्या मैं यह कहने का साहस कर सकता हूं कि सिकन्दर अहमद साहब ने इज्तिहाद का द्वार खोल दिया है या लकीर के फ़कीर ही बने रहे? मौजूदा माद्दी दुनिया में सफ़र करना बहुत अहम है, यदि हम कुरआन करीम को इस युग में साइन्सी और दीनी दृष्टिकोण से पढ़े समझे और इस पर अमल करें तो ख़लीफ़ा फ़िलअर्ज़ हो सकते हैं, मेरी इनतिहाई पुर ख़ुलूस प्रार्थना है कि हर ख़ास व आम इस मफ़हूम से लाभ प्राप्त करे, प्रार्थना है कि ईश्वर करे ज़ोरे कलम और ज़्यादा, मेरे निकट लेखक ने मौज़ू का हक अदा किया है और जो मोटे आवरण कुरआन पर पड़े हुए हैं उनकी नकाब कुशाई बहुत मोस्सर और दलाइल के साथ की है.

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह

अहकर मौलवी नबीलुर्रहमान कासमी

बछरायूं (यू.पी.)

باسمہٖ تعالیٰ

تقریظ

الحمد للہ کفٰی وسلام علیٰ عبادہ الذین اصطفٰے. امابعد۔

برادران ملت جناب سکندر احمد کمال صاحب قصبہ چاند پور ضلع بجنور، یوپی کے رہنے والے ہیں فی الحال زیادہ تر آدم نگر نگلہ پٹواری بروری روڈ علی گڑھ میں رہتے ہیں. علم کے شوقین ہیں. انتہائی محنت اور جانفشانی سے آنجناب نے چند کتابیں لکھی ہیں. جن کا نام مندرجہ ذیل ہے

(۱) کیا حسین خواب ہے یہ مگر تعبیر؟ (۲) قانون الٰہی یا انسانی؟ (۳) اطیعو اللہ واطیعوا الرسول (۴) ذکر انبیاء علیہ سلام (۵) ناموس رسولؐ جو شائع ہوکر منظر عام پر آچکی ہیں ان کتابوں کے سلسلہ میں احقر اتنا عرض کرسکتا ہے کہ کافی مسائل جو آج تک پیچیدگی میں پڑے ہوئے تھے وہ سلجھ گئے اور عوام الناس کو ان سے فائدہ ہوا۔

جو جدید کاوش اور محنت سکندر احمد صاحب نے قرآن پر کی ہے وہ قارئین کرام کے ہاتھوں میں ہے اس سے کیا کیا اثر لوگ لیں گے یہ اللہ جانے. لیکن خاکسار اتنا ضرور کہنے کی جسارت کر رہا ہے کہ اس کو تدبر کی عائرانہ نظر سے مطالعہ فرمائیں اور مولف کو ہر ممکن تنقید برائے تعبیر سے نوازیں. تنقید برائے تخریب مضر ہوتی ہے جس سے قوم کو کافی نقصان اٹھانا پڑتا ہے. موڈبانہ التماس ہے کہ اس کو پڑھ کر دیکھیں کہ قرآن فہمی کو کس انداز میں پیش کیا ہے. کیا میں یہ کہنے کی ہمت کرسکتا ہوں کہ سکندر احمد صاب نے اجتہاد کا دروازہ کھول دیا ہے یا لکیر کے فقیر ہی بنے رہے؟ موجودہ ماڈی دنیا میں سفر کرنا بہت اہم ہے. اگر ہم قرآن کریم کو اس دور میں سائنسی اور دینی نقطہ نظر سے پڑھیں سمجھیں اور اس پر عمل کریں تو خلیفہ فی الارض ہوسکتے ہیں۔

میری انتہائی پر خلوص استدعا ہے کہ ہر خاص وعام اس مفہوم سے مستفید ہوں. دعاء کہ اللہ کرے زور قلم اور زیادہ میرے نزدیک مولف نے موضوع کا حق ادا کیا ہے اور جو دبیز پردے قرآن پر پڑے ہوئے ہیں ان کی نقاب کشائی بہت موثر اور دلائل کے ساتھ کی ہے.

وماتوفیقی الا باللہ

احقر مولوی نبیل الرحمٰن قاسمی

بچھرایوں (یوپی)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۔ ۳۹:۵۵

اور پیروی کرو سب سے بہتر کتاب کی جو تمہاری طرف نازل کی گئی ہے تمہارے رب کی طرف سے اس سے قبل کہ تم پر اچانک عذاب آ جائے اور تمہیں خبر بھی نہ ہو۔

مربوط منظّم مفہوم القرآن

اردو ٗ ہندی

संबद्ध संगठित भावार्थ कुरआन

سکندر احمد کمال۔ چاند پور سیاؤ، محلّہ شاہ چندن، بجنور

مقیم حال۔ آدم نگر نگلہ پٹواری بروَلی روڈ، علی گڑھ، موبائل نمبر: 9319593020, 9897434015

یہ کائنات ابھی نا تمام ہے شاید
کہ آ رہی ہے دمادم صدائے کن فیکون ؔاقبال

نوٹ:۔ (۱)۔قرآن کے اندر ایک نظم ہے ہر عالم اقرار کرتا ہے اگر اس نظم کو قائم کرتے ہوئے قرآن کو دیکھا جائے گا تو قرآن کا مفہوم واضح ہوگا اور مستشرقین ومخالفین کو قرآن اور نبیؐ پر الزام تراشی کا موقع میسر نہ ہوگا، مگر افسوس ہے کہ قرآن کا ترجمہ کرتے وقت نظم کا خیال نہیں رکھا گیا۔ جس سے بہت جگہ ابہام پیدا ہو گیا ہے۔ جس سے مخالف فائدہ اٹھا رہے ہیں اس لئے میں نے ایک حقیری کوشش کی ہے یعنی جس آیت کے مفہوم کو واضح کیا ہے اس کی دلیل میں اس کے نیچے کچھ آیتوں کا مفہوم لکھا ہے اور کچھ آیتوں کا حوالہ لکھا ہے ان کو دیکھنے سے مفہوم واضح ہوگا ان کے لکھنے کا طریقہ یہ ہے کہ (۲:۵۷) کا مطلب یہ ہے کہ ۲ سے مراد سورت بقرہ اور ۵۷ سے مراد بقرہ کی آیت ۵۷ ہے۔

(۲)۔تراجم اور تفاسیر پہلے سے ہی بہت موجود ہیں پھر کسی اور کی ضرورت کیوں؟ اس کا جواب مفہوم دے گا۔

اہم نوٹ:۔قرآن پاک کی متعدد آیات کے مفہوم پر خط کھینچ دئے گئے ہیں۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ میرے نزدیک ان آیات کا مفہوم دوسرے تراجم سے مختلف ہے۔ اس لئے مفہوم کی اتنی عبارت کو قرآن کے متن کے ساتھ دوسرے تراجم سے موازنہ کرتے ہوئے تدبر کے ساتھ پڑھنے کی مہربانی کریں۔ شکریہ

ایڈیشن:
کمپوزنگ: صابر کمپیوٹرس، چاند پور
طباعت:

विषय सूची

فہرست مضامین

कुरआन मजीद की सूरतों की सूची			قرآن مجید کی سورتوں کی فہرست
1. अलफ़ातिहा	31	۳۱	۱۔الفاتحہ
2. अलबक़रा	37	۳۷	۲۔البقرہ
3. आले इमरान	139	۱۳۹	۳۔آل عمران
4. अन्निसा	180	۱۸۰	۴۔النساء
5. अलमाइदा	235	۲۳۵	۵۔المائدہ
6. अलअनआम	258	۲۵۸	۶۔الانعام
7. अलऐराफ़	287	۲۸۷	۷۔الاعراف
8. अलइनफ़ाल	312	۳۱۲	۸۔الانفال
9. अत्तौबा	327	۳۲۷	۹۔التوبہ
10. यूनुस	354	۳۵۴	۱۰۔یونس
11. हूद	365	۳۶۵	۱۱۔ھود
12. यूसुफ़	380	۳۸۰	۱۲۔یوسف
13. अर्रअद	399	۳۹۹	۱۳۔الرعد
14. इब्राहीम	407	۴۰۷	۱۴۔ابراہیم
15. अलहिजर	413	۴۱۳	۱۵۔الحجر
16. अन्नहल	421	۴۲۱	۱۶۔النحل
17. बनी इसराईल	434	۴۳۴	۱۷۔بنی اسرائیل
18. अलकहफ़	451	۴۵۱	۱۸۔الکھف
19. मरयम	466	۴۶۶	۱۹۔مریم
20. ताहा	477	۴۷۷	۲۰۔طٰہٰ
21. अलअम्बिया	493	۴۹۳	۲۱۔الانبیاء
22. अलहज	504	۵۰۴	۲۲۔الحج
23. अलमूमिनून	514	۵۱۴	۲۳۔المومنون
24. अन्नूर	523	۵۲۳	۲۴۔النور
25. अलफ़ुरकान	537	۵۳۷	۲۵۔الفرقان
26. अश्शोअरा	545	۵۴۵	۲۶۔الشعرأ
27. अन्नमल	555	۵۵۵	۲۷۔النمل
28. अलक़सस	564	۵۶۴	۲۸۔القصص
29. अलअनकबूत	573	۵۷۳	۲۹۔العنکبوت
30. अर्रूम	580	۵۸۰	۳۰۔الروم
31. लुक़मान	594	۵۹۴	۳۱۔لقمان
32. अस्सजदा	597	۵۹۷	۳۲۔السجدہ
33. अलअहज़ाब	599	۵۹۹	۳۳۔الاحزاب
34. सबा	623	۶۲۳	۳۴۔سبا
35. फ़ातिर	631	۶۳۱	۳۵۔فاطر
36. यासीन	636	۶۳۶	۳۶۔یٰسین
37. अस्साफ्फ़ात	642	۶۴۲	۳۷۔الصافات
38. साद	651	۶۵۱	۳۸۔ص

भूमिका

नहमदूहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

चन्द (इब्तदायी बातें)

है औरों का ब्यान और तो है मेरा ब्यान और

कुरआन मजीद एक जीवन नियम कुरआन के सिद्धान्तों और आदेशों पर कर्म करने से हर शारिरिक व आत्मा सम्बन्धी रोगों से आरोग्य, शारीरिक इलाज इसके बताए हुए नियम के अनुसार कर्म करना, उदाहरणतः संयुक्त रहना, अपने नेता का अनुकरण करना, कुरआन के अतिरिक्त जो समस्या सामने आए उस पर संसद में विवेचना के दौरान अपना मत कुरआन के अनुसार देना और उन मतों में जो प्रमाणित हो उस पर कर्म करना, संसद में सहमति के बाद मतभेद न करना, यदि मतभेद किया तो हवा उखड़ जाएगी और दास हो जाना है, और इस दासता में अपमान, निर्धनता नियुक्त होगी और इस दासता की आकृती में रूप और चरित्र और स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, और शरीर विकृत हो जाएगा, परन्तु कुरआन पर कर्म करने से भला होगा, कुरआन से यह भी सिद्ध है कि रोग की दशा में चिकित्सा के सिद्धान्तों से रोगों का उपचार करना यह है शारीरिक रोगों से आरोग्य न कि तावीज़ मंत्र इत्यादि से इलाज व आरोग्य, आत्मा सम्बन्धी आरोग्य यह कि अच्छे चरित्र ग्रहण करने और मानवता की भलाई के कार्य करने पर बहुत बल दिया है, और हर समय के लिए आदेश पारित किया है यहां तक कि घर में कैसे प्रविष्ट हुआ जाए, मार्ग में कैसे चला जाए, अपनी आखों को स्वतन्त्र न छोड़ा जाए, परदे का ध्यान रखना, बेराह रवि कुकर्म ज़िना के निकट न जाना इत्यादि इन आदेशों पर कर्म करने से आत्मा सम्बन्धी रोगों को आरोग्य और आत्मा को प्रकाश मिलेगा,

दूसरी जातियों से कैसे बरताओ किया जाएगा अर्थात उन पर अन्याय न होगा, युद्ध केवल विवशता की दशा में केवल रक्षात्मक होगा, यदि किसी ने अन्याय किया है तब, इसके अतिरिक्त भी "हित्तुन" की नीति से कार्य करना होगा, अस्तु इन्सानों के जीवन में काम आने वाली हर बात को विस्तार के साथ वर्णन किया है, कुरआन एक अप्रत्याशित निधि है, यह कोई साधारण पुस्तक नही, बहुत महत्वपूर्ण और ईश्वर की अनुकम्पा है, इसमें यह भी कहा गया है कि हिम्मत न हारो, दुखी न हो, तुम ही अधिपति रहोगे यदि तुम आस्तिक हो,

यह वचन उस अस्तित्व का है जो सत्यवान और सम्पूर्ण जगत का प्रतिपालक है, अतः यह वचन किसी भी मूल्य पर झूठा नही हो सकता, परन्तु आज यह मुस्लिम समुदाय कही अधिपति नही, आखिर क्यों? ईश्वर कहता है कि ऐ मेरे बन्दों! मुझसे मांगो मैं तुम्हारी सुनूंगा मैं तुम्हारे बहुत निकट हूं, यह कभी नही हो सकता कि तुम मांगो और मैं न दूं, तुम्हारी सहायता न करूं, सहायता अवश्य होगी परन्तु शर्त कुराआन पर कर्म है, (2:1 से5)

परन्तु निकट के समय में अफ़्ग़ानिस्तान व ईराक की ईंट से ईंट बजादी, इसराईल, फ़लिस्तानियों को विनष्ट कर रहा है, रूस ने चैचन्या को नष्ट-विनष्ट कर दिया, उनके बचाने के लिए अधिकतर धर्म योद्धा इस्लामी जगत से जिहाद करने गए और लगभग सब मुसलमानों ने प्रार्थना की, कनूत-ए-नाजला पढ़ी, परन्तु उन लोगों को कोई लाभ न हुआ, अपितु खाक व खून में तड़पते रहे और जिन भवनों में वह सुख के साथ रंग-रेलियां मनाते थे वह बरबाद होते रहे और यह क्रम आज भी बन्द नही, और इस तबाही में मुसलमान स्वंय सम्मिलित है, ईराक व ईरान का युद्ध चला बहुत महंगा और हानि देने वाला,

इसके बाद ना अपरिणाम दर्शीता में या किसी के छल में आकर क्योंकि वह शक्तियां जो छल देने वाली है, उन्होंने इस्लामी जगत को अपना दास बना रखा है, उन्होंने ही कुवैत पर आक्रमण

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم (امابعد)

چند (ابتدائی باتیں)

ہے اوروں کا بیاں اور ۔ تو ہے میرا بیاں اور

قرآن مجید ۔ ایک ضابطہ حیات قرآن کے اصولوں اور احکام پر عمل کرنے سے ہر جسمانی وروحانی امراض کا علاج اس کے بتائے ہوئے ضابطے کے مطابق عمل کرنا۔ مثلاً متحد رہنا، اپنے امیر کی اطاعت کرنا قرآن کے علاوہ جو مسئلہ سامنے آئے اس پر شوریٰ میں بحث ومباحثہ کے دوران جو آراء مثبت ہو اس پر عمل کرنا ۔ شوریٰ میں اتفاق کے بعد اختلاف نہ کرنا۔ اگر اختلاف کیا تو ہوا اکھڑ جائے گی اور غلام ہوجانا ہے اور اس غلامی میں ذلت ومحتاجی مسلط ہوگی۔ صورت وسیرت اور تندرستی بگڑ جاتی ہے اور جسم خراب ہوجائے گا۔ مگر قرآن پر عمل کرنے سے بھلائی ہوگی۔ قرآن سے یہ بھی ثابت ہے کہ بیماری کی حالت میں طب کے اصولوں سے بیماری کا علاج کرنا یہ ہے جسمانی مرضوں کی شفاء نہ کہ تعویز وغیرہ سے (علاج وشفاء روحانی شفاء) یہ کہ اچھے اخلاق اختیار کرنے اور بنی نوع انسان کی بھلائی کے کام کرنے پر بہت زور دیا ہے، اور ہر وقت کے لئے احکام صادر کئے ہیں یہاں تک کہ گھر میں کیسے داخل ہوا جائے، راستے میں کیسے چلا جائے، اپنی آنکھوں کو آزاد نہ چھوڑا جائے، پردے کا خیال رکھنا بے راہ روی فحش زنا کے قریب نہ جانا وغیرہ وغیرہ ان احکام پر عمل کرنے سے روحانی امراض کو شفا اور روح کو جلاء ملے گی۔

دوسری قوموں سے کیسے برتاؤ کیا جائے گا یعنی ان پر ظلم نہ ہوگا، جنگ صرف مجبوری کی حالت میں صرف دفاعی فتنہ کو ختم کرنے کے لئے ہوگی۔ اگر کسی نے ظلم کیا ہے تب اس کے باوجود بھی حطتہ (درگزر) کا رویہ اختیار کرنا ہے۔ بہرحال انسانی زندگی میں کام آنے والے ہر امر کو وضاحت کے ساتھ بیان کیا ہے قرآن ایک نعمت غیر مترقبہ ہے۔ یہ کوئی معمولی کتاب نہیں بہت اہم اور اللہ کی رحمت ہے اس میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ ہمت نہ ہارو غم زدہ نہ ہو تم ہی غالب رہو گے اگر تم مومن ہو۔

یہ وعدہ اس ذات کا ہے جو صادق اور تمام کائنات کا رب ہے، اس لئے یہ وعدہ کسی بھی قیمت پر جھوٹا نہیں ہوسکتا۔ مگر آج یہ مسلم قوم کہیں غالب نہیں آخر کیوں؟ اللہ کہتا ہے کہ اے میرے بندو! مجھ سے مانگو میں جواب دونگا میں تمہارے بہت قریب ہوں میں تمہاری سنونگا، یہ کبھی نہیں ہوسکتا کہ تم مانگو اور میں نہ دوں تمہاری مدد نہ کروں۔ مدد ضرور ہوگی۔ مگر شرط قرآن پر عمل ہے (۲:۱ تا ۵)

مگر زمانہ قریب میں افغانستان وعراق کی اینٹ سے اینٹ بجادی گئی اسرائیل فلسطینیوں کو نیست ونابود کررہا ہے روس نے چیچنیہ کو تہس نہس کردیا ان کے بچانے کے لئے اکثر مجاہد دنیائے اسلام سے جہاد کرنے گئے اور تقریباً سب مسلمانوں نے دعا کی قنوط نازلہ پڑھی۔ لیکن ان لوگوں کو کوئی فائدہ نہ ہوا بلکہ خاک وخون میں تڑپتے رہے اور جن عمارتوں میں وہ عیش کے ساتھ رنگ رلیاں مناتے تھے وہ تباہ ہوتی رہیں۔ اور یہ سلسلہ آج بھی بند نہیں، اور اس تباہی میں مسلمان خود شریک ہیں۔ عراق اور ایران کی جنگ چلی بہت مہنگی اور دوررس نقصان کی حامل۔

اس کے بعد نا عاقبت اندیشی میں یا کسی کے فریب میں آکر کیوں کہ وہ

करा दिया और निकट के देश को इतना भयभीत कर दिया कि कुवैत के बाद तेरी बारी है सावधान हो जा, वह देश अमरीका के छल में आ गया और अपनी भूमि और धन उपलब्ध कर दिया, अमरीका ने ईराक पर आक्रमण कर दिया यह आपस के मतभेद से हुआ.

इस्लामी जगत की क्या दशा रही है और क्या है इस पर भी एक सरसरी दृष्टि डाल ली जाए खिलाफ़त राशिदा में कपटियों ने श्री उमर र० को शहीद किया, फिर श्री उस्मान र० को शहीद किय और फिर कपटियों ने छल करके श्री अली र० और श्रीमती आयशा र० व अमीर मआविया में मन-मुटाव करा दिया.

उसी दौरान श्री अली र० को भी कपटियों ने शहीद किया, उनके बाद खिलाफ़त श्री हसन र० की ओर स्थानान्तरित हो गई, परन्तु श्री हसन र० ने बड़ी दूरदर्शिता के साथ अपना हक़ श्री मुआविया को समर्पित कर दिया, और इस कर्म से उस हानि का भी समाधान हो गया जो उस मतभेद से श्री अली र० के समय में हुआ था, और इस्लामी जगत को इतना लाभ हुआ कि जो सीमाएं असुरक्षित हो गई थी वह सुरक्षित हो गई, अपितु दूसरे क्षेत्र भी इस्लामी राज्य में सम्मिलित हो गए परन्तु उस काल में कपटि भी चुप ने बैठे और श्री हुसैन र० को उनके शुभाकांक्षा की यात्रा पर जाते हुए मैदान करबला में यह कहकर शहीद कर दिया कि हम को यजीद ने भेजा है और उनके लिए हमारे हाथ पर शपथ कर लीजिए और हमारा अमुक अमुक नाम है और यह शपथ आपको इस कारण करनी पड़ेगी कि आप यजीद के विरुद्ध युद्ध करने के इरादे से कूफ़ा जा रहे है और प्रमाण के लिए कपटियों ने अपनी ओर से कूफ़ा वालों के नाम से कुछ पत्र भी लिखकर श्री हुसैन र० के लिए रवाना किए परन्तु यह सब मिथ्या है, न ही श्री हुसैन र० का इरादा युद्ध का था, न ही किसी कूफ़ा वालों ने पत्र लिखे, यह सब एक फरेब था, यदि श्रीमान का विचार युद्ध का होता तो उनके साथ काफ़ी संख्या मुस्लिम योद्धाओं की होती, और न ही वह अपने साथ अपने परिवार जिसमें छोटे बच्चे और औरतें थी, ले जाते, बच्चों और औरतों का साथ होना ही मेरी बात को सत्य सिद्ध करता है, श्रीमान का विचार युद्ध का न था, यह खरूज की कथा श्रीमान के परिवार को शहीद करने के बाद मुसलमानों में गृह युद्ध कराने के लिए घड़ा गया और जो कपटि चाहते थे वह अपने उद्देश्य में सफल होते रहे, और आज भी वह क्रम चल रहे है, वह यह कि श्री अली र० के परिवार व आल के नाम पर मुसलमानों में गृह युद्ध करा रखा है, जबकि अली र० की आल ऐकता की प्रतीक है, यदि बुद्धि से काम लिया जाए

उसके बाद इस नरसंहार का सहारा लेकर उन कपटियों ने समय-समय पर अली और आले अब्बास को संयुक्त करके यह सिद्ध किया कि राज्य का अधिकार केवल आले अली र० का है और अब्बास का परिवार भी राज्य में सम्मिलित रहेगा, यह प्लान इस प्रकार संपादित किया कि दोनों परिवार उन कपटियों के छल में आ गए और उनका नाम लेकर कपटियों ने खिलाफ़त बनी उमय्या के विरुद्ध एक समाप्त न होने वाला युद्ध आरम्भ कर दिया जिसके लिए बार-बार विद्रोह किया, और इस खिलाफ़त का अधिकार सिद्ध करने के लिए मिथ्या अहादीस का सहारा लिया और जगह-जगह आयात कुरआन का अनुवाद और शान-ए-नजूल इस प्रकार लिखा गया मानो सारा कुरआन अली र० और सन्तान अली की शान में ही अवतरित हुआ और राज्य का अधिकार केवल आले नबी फरजन्दाने नबी (यद्यपि यह परिभाषा विचारणीय है) अर्थात अली और सन्तान अली का है, और इन लेखों को

طاقتیں جو فریب دینے والی ہیں انہوں نے عالم اسلام کو اپنا غلام بنا رکھا ہے۔انہوں نے ہی کویت پر حملہ کرادیا اور قریب کے ملک کو اتنا خوف زدہ کر دیا کہ کویت کے بعد تیرا نمبر ہے ہوشیار ہوجا، وہ ملک امریکہ کے فریب میں آگیا اور اپنی زمین اور رقم فراہم کردی امریکہ نے عراق پر حملہ کردیا یہ آپس کے انتشار سے ہوا۔

عالم اسلام کی کیا حالت رہی اور کیا ہے اس پر بھی ایک سرسری نظر ڈال لی جائے خلافت راشدہ میں منافقوں نے حضرت عمرؓ کو شہید کیا پھر حضرت عثمانؓ کو شہید کیا اور پھر منافقوں نے سازش کر کے حضرت علیؓ اور حضرت عائشہؓ اور امیر معاویہ میں چپقلش کرائی۔

دریں اثنا حضرت علیؓ کو بھی منافقوں نے شہید کیا ان کے بعد خلافت حضرت حسنؓ کی طرف منتقل ہوگئی مگر حضرت حسنؓ نے بڑی دوراندیشی کے ساتھ اپنا حق حضرت معاویہ کے سپرد کردیا، اور اس عمل سے اس نقصان کا بھی ازالہ ہوگیا جو خلفشار کی وجہ سے حضرت علیؓ کے زمانہ میں ہوا تھا اور عالم اسلام کو اتنا فائدہ ہوا کہ جو سرحدیں غیر محفوظ ہوگئیں تھی ان میں استحکام آیا بلکہ دوسرے علاقے بھی اسلامی قلم رو میں شامل ہوگئے۔ لیکن اس زمانہ میں منافقین بھی خاموش نہ بیٹھے اور حضرت حسینؓ کو ان کے خیر سگالی کے دورے پر جاتے ہوئے میدان کربلا میں یہ کہہ کر شہید کردیا کہ ہم کو یزید نے بھیجا ہے اور ان کے لئے ہمارے ہاتھ پر بیعت کر لیجئے اور ہمارا فلاں فلاں نام ہے اور یہ بیعت آپ کو اس لئے کرنی پڑے گی کہ آپ یزید کے خلاف خروج کرنے کے ارادے سے کوفہ جارہے ہیں۔ اور ثبوت کے لئے منافقین نے اپنی طرف سے کوفہ والوں کے نام سے کچھ خطوط بھی لکھ کر حضرت حسینؓ کے لئے روانہ کئے مگر یہ سب غلط ہے نہ ہی حضرت حسینؓ کا ارادہ خروج کا تھا نہ ہی کسی کوفہ والوں نے خطوط لکھے یہ سب ایک سازش تھی۔ اگر حضرت کا ارادہ خروج کا ہوتا تو ان کے ساتھ کافی تعداد مسلم جنگجوں کی ہوتی اور نہ ہی وہ اپنے ساتھ اپنے خاندان جس میں کم سن بچے اور عورتیں تھیں لے جاتے بچوں اور عورتوں کا ساتھ ہونا ہی میری بات کو سچ ثابت کرتا ہے کہ حضرت کا ارادہ خروج کا نہ تھا یہ خروج کا قصہ حضرت کے خاندان کو شہید کرنے کے بعد مسلمانوں میں خانہ جنگی کرانے کے لئے گھڑ لیا اور جو منافق چاہتے تھے وہ اپنے مقصد میں کامیاب ہوتے رہے اور آج بھی وہی سلسلہ چل رہا ہے وہ یہ کہ حضرت علیؓ کے خاندان وآل کے نام پر مسلمانوں میں خانہ جنگی کرا رکھی ہے جب کہ آل علی اتحاد کی نشانی ہیں اگر عقل سے کام لیا جائے۔

بعد ازاں اس قتل عام کا سہارا لے کر ان منافقین نے وقتاً فوقتاً آل علی اور آل عباس کو متحد کر کے یہ ثابت کیا کہ خلافت کا حق صرف اور صرف آل علی کا ہے اور خاندان عباس بھی اس حکومت میں شامل رہے گا۔ یہ پلان اس طرح مرتب کیا کہ دونوں خاندان ان منافقین کے فریب میں آگئے اور ان کا نام لے کر ان منافقین نے خلافت بنی امیہ کے خلاف ایک نہ ختم ہونے والی جنگ شروع کردی۔ جس کے لئے بار بار خروج کیا۔ اور اس خلافت کا حق ثابت کرنے کے لئے موضوع احادیث کا سہارا لیا اور جگہ جگہ آیات قرآن کا ترجمہ اور شان نزول اس طرح لکھا گیا گویا سارا قرآن علیؓ اور اولاد علی کی شان میں ہی نازل ہوا اور خلافت کا حق صرف آل نبی فرزندان نبی (حالانکہ یہ اصطلاح محل نظر ہے) یعنی علی اور اولاد علی کا ہے۔ اور ان مندرجات کو اتنی شہرت دی کہ تقریباً ہر خاص وعام ان کو کسی

इतनी ख्याती दी कि लगभग हर प्रमुख व साधारण इन को किसी न किसी सीमा तक स्वीकार करने पर विवश नजर आया, क्योंकि इनको मुहम्मद स0 की ओर से प्रस्तुत किया गया और मुसलमान नबी के कथन को झुटलाने का साहस नही कर सकता, कपटियों ने अपनी इस साजिश में किस-किस को सम्मिलित किया, क्या-क्या जीर्ण आस्था रची वह इतिहास में सुरक्षित हैं, अन्ततः एक लम्बे समय के बाद वह लोग बनी उमय्या के राज्य को समाप्त करने में सफल हो गए और बनी उमय्या के लगभग सभी प्रमुख अफ़राद वध कर दिए गए यदि कोई बचा तो वह छुप गया, केवल एक आदमी अपनी जान बचा कर भागा और उसने अपना राज्य उंदलुस (स्पेन) में स्थापित किया, वह राज्य काफ़ी समय तक यूरोप में स्थापित रहा, परन्तु दुख, वहां भी आपस के मतभेद और कुरआन से विमुखता के कारण समाप्त होई, मस्जिद करतबा आज भी पुकार रही है कि देखो मैं वही हूं जिसको तुम्हारे आस्तिक पुरखों ने बनाया था और आज भी मेरी इमारत वही है जिसमें ईश्वर का नाम नही लिया जा रहा, अतः इसमें दूसरा ही कार्य हो रहा है, परन्तु अब फिर उसमें अज़ान के शब्द सुनाई देने लगे हैं किन्तु उस महिमा से नही,

मैं तुझ को बताता हूं तकदीरे उम्म क्या है।
शमशीर व सना अव्वल ताऊस व रबाब आखिर।।

बनु उमय्या के राज्य की समाप्ती सन्तान अली व अब्बास का नाम लेकर किया था परन्तु जो विधि अपना कर उस राज्य को समाप्त किया था उस विधि पर कार्य करने वाले कतिपय इन्सानों में स्वार्थ विद्यमान था अतः सन्तान अली जो लगभग स्वार्थ से पवित्र थे उनको धोका देकर सन्तान अब्बास ने राज्य पर अधिकार कर लिया और सन्तान अली को वंचित कर दिया गया,

तथापि मैं यह कहने पर विवश हूं कि सन्तान अली र0 को ईरानियों और बनू अब्बास ने अपनी इच्छा पूर्ति करने के लिए प्रयोग किया और एक प्रकार से उनको अपना बन्दी ही बना लिया था और समय-समय पर उनकी ओर सम्बन्धित करके भाषण पढ़ देते थे, यद्यपि सन्तान अली गृह युद्ध नही चाहती थी, वह तो आस्तिक बन्दे थे, परन्तु इतिहास इसके विरुद्ध बता रहा है अर्थात वह राज्य चाहते थे,

परन्तु ईरानी तो कुछ और चाहते थे उसको पूरा करने के लिए उन्होंने फिर सन्ताने अली का सहारा लिया और कहा गया कि राज्य का अधिकार केवल सन्तान अली को है, बनू अब्बास ने यह अधिकार अपहरण किया है, उनको पदच्युत किया जाये,

चूंकि बनू अब्बास को राज्य ईरानियों की सहायता से प्राप्त हुआ था वह ईरानियों के आभारी थे, अतः ईरानियों का मत प्रथम माना जाता था, ईरानियों ने इन हालात से लाभ उठाकर धर्म के नियम में बदलाव किया और मुसलमानों को कुरआन से दूर कर दिया और हर मुख्य व सामान्य विवश हो गया कि कुरआन की बात को न मानते हुए ईरानियों के प्रस्तुत किए हुए नियमों को मानें, जो इतिहास में सुरक्षित है आज जिस धर्म पर कर्म किया जा रहा है उसमें ईरानियों का रंग स्पष्ट नजर आ रहा है, अर्थात धर्म विधान में मतभेद जो ईरानी चाहते थे,

ईरानियों ने अब दो स्थानों पर कार्य करना आरम्भ कर दिया, एक दल बनू अब्बास के साथ हो गया और दूसरे दल ने फिर सन्तान अली का सहारा लेकर बनू अब्बास के विरुद्ध कार्य आरम्भ कर दिया और एक दिन वह आया कि संयुक्त उम्मत पहले सियासी दृष्टिकोण से दो दलों में विभाजित हो गई और फिर आस्था की दृष्टि से भी दो दलों में विभाजित हो गई अर्थात अली का दल शिया और सुन्नी, और इसके बाद भी यह क्रम आज तक जारी है, ईरानियों का

نہ کسی حدتک تسلیم کرنے پر مجبور نظر آیا۔ کیوں کہ ان کو محمدؐ کی طرف سے پیش کیا گیا اور مسلمان نبی کے فرمان کو جھٹلانے کی ہمت نہیں کرسکتا۔ منافقوں نے اپنی اس سازش میں کس کس کو شریک کیا۔ کیا کیا فرسودہ عقیدے تصنیف کئے وہ تاریخ میں محفوظ ہیں۔

آخر ایک طویل عرصے کے بعد وہ لوگ بنی اُمیہ کی حکومت کو ختم کرنے میں کامیاب ہو گئے اور بنی امیہ کے تقریباً سبھی اہم افراد تہ تیغ کر دئے گئے اگر کوئی بچا تو وہ تقیہ میں چلا گیا، صرف ایک فرد اپنی جان بچا کر بھاگا اور اس نے اپنی سلطنت اندلس میں قائم کی وہ سلطنت کافی عرصے تک یوروپ میں قائم رہی، مگر افسوس وہاں بھی آپس کے اختلاف اور قرآن سے انحراف کے سبب ختم ہو گئی مسجد قرطبہ آج بھی پکار رہی ہے کہ دیکھو میں وہی ہوں جس کو تمہارے مومن اسلاف نے قائم کیا تھا اور آج بھی میری عمارت وہی ہے جس میں اللہ کا نام نہیں لیا جا رہا۔ اب اس میں دوسرا ہی کام ہو رہا ہے مگر اب پھر اس میں اذان کے الفاظ سنائی دینے لگے ہیں مگر اس شان سے نہیں۔

میں تجھ کو بتاتا ہوں تقدیر امم کیا ہے ☆ شمشیر و سنا اوّل طاوس و رباب آخر ۔ اقبالؔ

بنو امیہ کی حکومت کا خاتمہ اولادِ علی و عباس کا نام لے کر کیا تھا مگر جو طریقہ اختیار کر کے اس حکومت کو ختم کیا تھا اس طریقہ پر کام کرنے والے بعض افراد میں خود غرضی کا عنصر موجود تھا۔ اس لئے اولادِ علی جو تقریباً خود غرضی سے پاک تھے ان کو دھوکا دے کر اولادِ عباس نے حکومت پر قبضہ کر لیا اور اولادِ علی کو محروم کر دیا گیا۔

تاہم میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ اولادِ علیؓ کو ایرانیوں اور بنو عباس نے اپنی غرض کو پورا کرنے کے لئے استعمال کیا اور ایک طرح سے ان کو اپنا قیدی ہی بنا لیا تھا اور وقتاً فوقتاً ان کی طرف منسوب کر کے بیان پڑھ دیتے تھے حالانکہ اولادِ علیؓ خانہ جنگی نہیں چاہتی تھی وہ تو مومن بندے تھے لیکن تاریخ اس کے خلاف بتا رہی ہے یعنی وہ حکومت چاہتے تھے

لیکن ایرانی تو کچھ اور چاہتے تھے اس کو پورا کرنے کے لئے انہوں نے پھر اولادِ علیؓ کا سہارا لیا اور کہا گیا کہ حکومت کا حق صرف اولادِ علی کو ہے۔ بنو عباس نے یہ حق غصب کیا ہے ان کو معزول کیا جائے۔

چونکہ بنو عباس کو حکومت ایرانیوں کی مدد سے حاصل ہوئی تھی وہ ایرانیوں کے مرہونِ منت تھے اس لئے ایرانیوں کی رائے مقدم رکھی جاتی تھی۔ ایرانیوں نے ان حالات سے فائدہ اٹھا کر دین کے قوانین میں پھیر بدل کیا اور مسلمانوں کو قرآن سے دور کر دیا۔ اور ہر خاص و عام مجبور ہو گیا کہ قرآن کی بات کو نہ مانتے ہوئے ایرانیوں کے پیش کئے ہوئے قوانین کو مانے جو تاریخ میں نظر آ رہا ہے آج جن مذاہب پر عمل کیا جا رہا ہے اس میں ایرانیوں کا رنگ صاف نظر آ رہا ہے یعنی اختلافِ فقہ جو ایرانی چاہتے تھے۔

ایرانیوں نے اب دو محاذوں پر کام کرنا شروع کر دیا ایک گروہ بنو عباس کے ساتھ ہو گیا اور دوسرے گروہ نے پھر اولادِ علی کا سہارا لے کر بنو عباس کے خلاف کام شروع کر دیا اور ایک دن وہ آیا کہ امت واحدہ پہلے سیاسی نقطہ نظر سے دو گروہ میں تقسیم ہو گئی اور پھر عقیدے کے اعتبار سے بھی دو گروہ میں منقسم ہو گئی یعنی شیعانِ علی اور سنی۔ اور اس کے بعد بھی یہ سلسلہ آج تک جاری ہے۔ ایرانیوں کا اولادِ علی کی طرف میلان اس لئے ممکن ہوا اور فطری بھی ہے کہ حضرت

सन्तान अली की ओर झुकाव इसलिए भी सम्भव हुआ और प्राकृतिक भी है कि श्री हुसैन की पत्नी शहर बानो एक ईरानी स्त्री थी जो युद्ध में बन्दी हो गई थी, उनको स्वतंत्र करके श्री हुसैन र० के विवाह में दिया, दूसरा मूल कारण यह था कि मुसलमानों ने ईरान को विजय किया था, ईरानियों का राज्य समाप्त हो गया था, इस पराजय को भी वह नहीं भुला सके थे और हर मूल्य पर अपना राज्य चाहते थे, और उनको राज्य तब ही मिल सकता था जब मुसलमानों में मतभेद करके राज्य को कमजोर कर दिया जाए और बलहीन करने का कार्य उन्होंने आरम्भ कर रखा था,

अतः ईरानियों ने श्रीमान अली र० के नाम पर बनी अब्बास के विरुद्ध युद्ध का क्रम आरम्भ कर दिया और यहां तक किया कि मंत्री अलकमी ने मुगलों अर्थात हलाकू खां को बगदाद पर आक्रमण के लिए तैयार कर लिया जबकि वह इस आक्रमण के लिए तैयार न था,

मुगलों ने आक्रमण कर दिया और कई मुस्लिम इलाकों के साथ बगदाद की ईंट से ईंट बजादी और वह नर संहार किया कि मानवता को खून के आंसू बहाने पड़े, आज भी उस नर संहार को सुनकर दिल धड़कते हैं, इस तबाही से अब्बासी राज्य बलहीन हो गया, वह अपने राज्य को स्थापित न रख सका और हर ओर गवर्नर स्वतंत्र होकर अपनी स्वतंत्र हकूमत बनाते रहे, अब्बासी केवल बगदाद के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित हो गए बेबस, ईरानी अपना राज्य स्थापित करने में सफल हो गए जो उनका मूल उद्देश्य था वह राज्य आज तक स्थापित है, अब इसमें विस्तार की सम्भावना प्रतीत हो रही है,

इसके बाद एक दूसरा चरण आरम्भ होता है वह था तुर्कों का, तुर्कों ने फिर परिश्रम करके एक बलवान राज्य खिलाफत उस्मानिया के नाम से स्थापित किया और बहुत महिमा के साथ स्थापित हुआ, यूरोप भयभीत था, परन्तु कपटि फिर भी अपने कपटों में लगे रहे, कभी उन्होंने छल से जार रूस से युद्ध करा दिया और कभी जंग बलकान में उलझा दिया परन्तु उस्मानी इस चाल को न समझ पाये और वह उनसे लड़ गए जब तुर्की उन युद्धों में लगा था तो यूरोप शत्रु ने अरबों को उकसाया और अरबों ने बगावत कर दी और स्वतंत्र हो गए उधर तुर्की विश्व युद्धों में इतना निर्बल हुआ कि अपने बहुत से क्षेत्र इत्तहादियों को जुर्माने में देकर जान बचाई,

परन्तु उस्मानी राज्य की जड़ें हिल चुकी थी, वह न बच सकी अपनी गलतियों के कारण से और शानदार राज्य के स्थान पर उसका नाम बीमार-ए-यूरोप पड़ गया, जो आज तुर्की है, वह समाप्त हो जाता परन्तु मुस्तफा कमाल पाशा जिसको लोग दहरया भी कहते हैं उसने इस समय की तुर्की को बचा लिया जो आज भी काफी शक्तिशाली मानी जाती है,

जिस विधि से मुस्लिम राज्य से बगावत करके मुसलमानों ने अपने राज्य अलग बना लिए क्या इसको सुन्नते रसूल व ईश्वर कहा जा सकता है? क्या मुसलमान एक दूसरे मुसलमान का रक्त बहा सकता है, क्या हसब-नसब पर गर्व कर सकता है, क्या यह शिया सुन्नी मतभेद अलग-अलग राज्य व फिरके सुन्नत रसूल हो सकते हैं? कदापि नहीं, परन्तु दुख आज भी तथाकथित राज्य व पंथ आपस में युद्धों पर आमादा हैं, अपने में शक्ति नहीं पाते तो दूसरे राज्यों को अपना धन देकर आक्रमण करा देती हैं,

हाल की बात है पहले ईराक पर आक्रमण हुआ यह बहाना बनाकर कि सद्दाम दुनिया के लिए खतरा है उसको इतना कमजोर कर दिया कि फिर न उठ सका और आज समाप्त है और इस पूरे युद्ध का व्यय स्वयं अपनों ने दिया, ऐसे ही अफ़गानिस्तान को समाप्त किया, परन्तु उस इस्लाम के शत्रु की वह प्यास अभी समाप्त नहीं हुई, अब उसका निशाना ईरान, लीबिया व शाम है, जब अमरीका को एक डालर के स्थान पर दस बीस मिलेंगे तो वह अवश्य आक्रमण कर देगा और

حسینؓ کی زوجہ شہربانو ایک ایرانی عورت تھی جو جنگ میں گرفتار ہوگئی تھی. ان کو آزاد کر کے حضرت حسینؓ کے نکاح میں دیا. دوسری اصل وجہ یہ تھی کہ مسلمانوں نے ایران کو فتح کیا تھا. ایرانیوں کی حکومت ختم ہوگئی تھی اس شکست کو بھی وہ نہیں بھلا سکے تھے اور ہر قیمت پر اپنی حکومت چاہتے تھے. اور ان کو حکومت جب ہی مل سکتی تھی جب مسلمانوں میں اختلاف کرا کے حکومت کو کمزور کر دیا جائے اور کمزور کرنے کا کام انہوں شروع کر رکھا تھا.

اس لئے ایرانیوں نے حضرت علیؓ کے نام پر بنی عباس کے خلاف جنگ کا سلسلہ شروع کرا دیا اور یہاں تک کیا کہ وزیر علقمی نے مغلوں یعنی ہلاکو خاں کو بغداد پر حملے کے لئے تیار کرلیا جب کہ وہ اس حملہ کے لئے تیار نہ تھا.

مغلوں نے حملہ کر دیا اور کئی مسلم علاقوں کے ساتھ بغداد کی اینٹ سے اینٹ بجادی اور وہ قتل عام کیا کہ زمانہ کو خون کے آنسو بہانے پڑے. آج بھی اس قتل عام کو سن کر دل دھڑکتے ہیں. اس تباہی سے خلافت عباسیہ کمزور ہوگئی. وہ اپنے علاقوں کو قائم نہ رکھ سکی اور ہر طرف گورنر آزاد ہو کر اپنی خود مختار ریاست بناتے رہے. عباسی صرف بغداد کے گرد و نواح کے علاقوں تک ہی محدود ہو گئے، بے بس، ایرانی اپنی حکومت قائم کرنے میں کامیاب ہو گئے. جو ان کا اصل مقصد تھا وہ حکومت آج تک قائم ہے. اب اس میں توسیع کا امکان نظر آ رہا ہے.

اس کے بعد ایک دوسرا دور شروع ہوتا ہے وہ تھا ترکوں کا. ترکوں نے پھر محنت کر کے ایک مضبوط حکومت خلافت عثمانیہ کے نام سے قائم کی اور بہت شان کے ساتھ قائم ہوئی. یوروپ خوف زدہ تھا. لیکن منافق پھر بھی اپنی سازشوں میں لگے رہے. کبھی انہوں نے چالاکی سے زار روس سے جنگ کرا دی اور کبھی جنگ بلقان میں الجھا دیا. لیکن خلافت عثمانیہ اس چال کو نہ سمجھ پائی. اور وہ ان سے لڑ گئی. جب ترکی ان جنگوں میں مصروف تھا تو یوروپ دشمن نے عربوں کو اکسایا اور عربوں نے بغاوت کر دی اور خود مختار ہو گئے. ادھر ترکی عالمی جنگوں میں اتنا کمزور ہوا کہ اپنے بہت علاقے اتحادیوں کو زرتاوان میں دے کر جان بچائی.

لیکن خلافت عثمانی کی جڑیں ہل چکی تھیں وہ نہ بچ سکی اپنی غلطیوں کی وجہ سے اور شاندار خلافت کی جگہ اس کا نام بیمار یوروپ پڑ گیا. جو آج ترکی ہے وہ ختم ہو جاتا. مگر مصطفیٰ کمال پاشا جس کو لوگ دہریہ بھی کہتے ہیں اس نے اس وقت کی ترکی کو بچا لیا جو آج بھی کافی طاقت ور مانی جاتی ہے.

جس طریقے سے مسلم متحدہ حکومت سے بغاوت کر کے مسلمانوں نے اپنی حکومتیں الگ بنا لیں کیا اس کو سنت اللہ و رسول کہا جا سکتا ہے؟ کیا مسلمان ایک دوسرے مسلمان کا خون بہا سکتا ہے. کیا حسب نسب پر فخر کر سکتا ہے؟ کیا یہ شیعہ سنی اختلاف یا الگ الگ حکومتیں و فرقے سنت رسول ہو سکتے ہیں؟ ہرگز نہیں. مگر افسوس آج بھی نام نہاد حکومتیں و فرقے آپس میں جنگوں پر آمادہ ہیں. اپنے میں طاقت نہیں پاتیں تو دوسری حکومتوں کو اپنا پیسہ دے کر حملہ کرا دیتی ہیں.

حال کی بات ہے پہلے عراق پر حملہ ہوا یہ بہانہ بنا کر کہ صدام دنیا کے لئے خطرہ ہے اس کو اتنا کمزور کر دیا کہ پھر نہ اٹھ سکا اور آج ختم ہے. اور اس پوری جنگ کا خرچہ خود اپنوں نے دیا. ایسے ہی افغانستان کو ختم کیا مگر اس اسلام کے دشمن کی وہ پیاس ابھی ختم نہیں ہوئی اب اس کا نشانہ ایران، لیبیا و شام ہے اور جب امریکہ کو ایک ڈالر کی جگہ دس بیس ملیں گے تو وہ ضرور حملہ کر دے گا اور ہر مسلم

हर मुस्लिम राज्य को अपना निशाना बनाता चला जायेगा, यदि यही अव्यवस्था रही, (37:62से68; 44:43से50; 56:52से56)

मैंने यह असंगत लेख इसलिए लिखा है कि जिस कुरआन का मैंने आरम्भ में संदर्भ दिया है जिसमें इन्सानों की सम्पूर्ण बीमारियों का इलाज है परन्तु नही हो रहा, न होने का कोई कारण तो होगा उसको तलाश करना है इस तलाश रोग के लिए मैंने यह संक्षिप्त भूमिका लिखी है यदि ध्यान से पढ़ी जाएगी तो रोग का कारण मिल जाएगा और उपचार भी, इसके बाद मैं अपनी मूल बात पर लिख रहा हूं,

कुरआन का अपना दावा है कि मैं बड़े विस्तार से हूं हर बात का स्पष्टीकरण है जितने नियम इन्सानों के जीवन में काम आते हैं वह सब मौजूद हैं, जिन पर व्यवहार करने से दुनिया और परलोक की सफलता मिलेगी, यह तो रहा कुरआन का वाद परन्तु मेरी भेंट जिन मुसलमानों से हुई मैंने उनसे यही ज्ञात किया कि भाई आपने कुरआन को अनुवाद के साथ भी पढ़ा है या केवल अरबी लेख ही पढ़ा तो उनमें से अधिकांश का उत्तर यह रहा कि हमने कुरआन अनुवाद से पढ़ना आरम्भ किया परन्तु आयात का अर्थ हमारी समझ में नही आया, अपितु एक संदिग्धता और भ्रम उत्पन्न हुआ, उसको ज्ञानियों से ज्ञात किया कि इस समस्या का समाधान करो तो उन्होंने कहा कि भाई कुरआन को अनुवाद से पढ़ोगे तो पथ भ्रष्ट हो जाओगे, तो उनकी यह बात सुनकर हम डर गए क्योंकि हम पथ भ्रष्ट होना नही चाहते और यदि देखा जाए तो अक्सर स्थान पर अनुवादों में संदिग्धता विद्यमान है, जिसको मैंने भी अनुभूत किया और कुछ देर के लिए रूककर मनन किया तो बात सामने आई कि भूत (साबिक) अनुवादकों ने ऐसे स्थान पर शाब्दिक अनुवाद करने का प्रयास किया जिस कारण से यह संदिग्धता हुई, यद्यपि मैं उनके शुद्ध हृदयता पर शक नही कर सकता, उन्होंने जो समझा और लिखा वह शुद्ध हृदयता और ईश्वर के भय से लिखा, कोई भी इतना बड़ा ज्ञानी अपने को नर्क में ले जाने को तैयार नही, अस्तु कुरआन की व्यवस्था और सियाक व सबाक का हक़ अदा होने में संदिग्धता प्रतीत हो रही है, उन्होंने कुरआन को दृष्टिकोण से देखा, यदि दृष्टि बिन्दु से देखते तो वह संदिग्धता दूर हो जाती, और दृष्टि बिन्दु यह है, जिसमें कहा गया है कि कुरआन में दो प्रकार की आयात है मोहकम और मिलती-जुलती, मताशाबिहम मसानी और ईश्वर ने अपनी बात को समझाने के लिए कुरआन की आयात को बार-बार दोहाराया है अर्थात आयात को बार-बार लाना और उपमाओं से भी बात समझाई है जैसे स्वयं इन्सान आपस में बात करते समय उदाहरण से बात समझाते है,

अतः कुरआन में एक व्यवस्था है जिसको सियाक व सबाक भी कहते है और वह पूरी कुरआन में फैला है, इसको दृष्टि में रखकर इस दृष्टि बिन्दु से कुरआन का अनुवाद होना था, परन्तु इस व्यवस्था से कुछ हट कर दृष्टिकोण से अनुवाद हुआ और इस से ऐसा अनुभूत होता है मानो कुरआन में व्यवस्था नही और यह कि जिसने रहमान को बनाया है वह कोई और है जो जनक है और रहमान रचना है, या यह कि आयात में कुछ है और उसकी अवतरण महिमा इस प्रकार लिख दी कि मतभेद बुरा नही अनुकम्पा है, और किसी समय कुरआन के विरुद्ध कर्म भी कर सकते है, या ऐसा भी अवतरण महिमा से सिद्ध हो रहा है कि सहाबा ने झूट बोलकर नबी को धोका दिया और नबी ने भी उनकी बात को सच मान लिया और जाति पर आक्रमण करने को सैना रवाना कर दी परन्तु इस मिथ्या कथन की जानकारी मार्ग में ही मिल गई और वह युद्ध होते-होते रह गया, या कोई मुसलमान नबी के भेद के फैसले तक को अनेकेश्वर वादियों को पहुंचाने का प्रयास करता था जबकि कुरआन के मूल लेख में यदि उसको व्यवस्था, तसरीफे आयात से देखा जाए तो इस प्रकार के कार्य की कोई गुन्जाईश नही, भला एक सच्चा पक्का आस्तिक कुरआन और नबी का विरोध कर सकता है? कदापि नही,

حکومت کو اپنا نشانہ بناتا چلا جائے گا اگر یہی انتشار رہا۔[۳۷:۶۲تا۶۸؛ ۴۴:۴۳تا۵۰؛ ۵۶:۵۲تا۵۶]

میں نے یہ بے ربط عبارت اس لئے لکھی ہے کہ جس قرآن کا میں نے شروع میں حوالہ دیا ہے جس میں انسانوں کی جملہ بیماریوں کا علاج ہے لیکن نہیں ہو رہا۔ نہ ہونے کی کوئی وجہ تو ہوگی۔ اس کو تلاش کرنا ہے اس تلاش مرض کے لئے میں نے یہ مختصر تمہید لکھی ہے اگر غور سے پڑھی جائے گی تو مرض کی وجہ مل جائے گی اور علاج بھی، اس کے بعد میں اپنی اصل بات لکھ رہا ہوں۔

قرآن کا اپنا دعویٰ ہے کہ میں بڑی تفصیل سے ہوں ہر بات کی وضاحت ہے جو جملہ قانون انسانوں کی زندگی میں کام آتے ہیں وہ سب موجود ہیں۔ جن پر عمل کرنے سے دنیا اور آخرت کی کامیابی ملے گی۔ یہ تو رہا قرآن کا دعویٰ مگر میری ملاقات جن مسلمانوں سے ہوئی میں نے ان سے یہی معلوم کیا کہ بھائی آپ نے قرآن کو ترجمہ سے بھی پڑھا ہے۔ یا صرف ناظرہ ہی پڑھا۔ تو ان میں سے اکثر کا جواب یہ رہا کہ ہم نے قرآن ترجمہ سے پڑھنا شروع کیا مگر آیات کا مطلب ہماری سمجھ میں نہیں آیا بلکہ ایک ابہام اور شک پیدا ہوا اس کو عالموں سے دریافت کیا کہ اس مسئلہ کو حل کیجئے تو انہوں نے کہا کہ بھائی قرآن کو ترجمہ سے پڑھو گے تو گمراہ ہو جاؤ گے۔ تو ان کی یہ بات سن کر ہم ڈر گئے کیوں کہ ہم گمراہ ہونا نہیں چاہتے۔ اور اگر دیکھا جائے تو اکثر مقام پر تراجم میں ابہام موجود ہے۔ جس کو میں نے بھی محسوس کیا اور کچھ دیر کے لئے رُک کر غور کیا تو بات یہ سامنے آئی کہ سابق مترجمین نے ایسی جگہ لفظی ترجمہ کرنے کی کوشش کی جس کی وجہ سے یہ ابہام ہوا۔ حالانکہ میں ان کے خلوص پر شک نہیں کر سکتا انہوں نے جو سمجھا اور لکھا وہ خلوص اور خوف الٰہی کے تحت لکھا کوئی بھی اتنا بڑا عالم اپنے کو دوزخ میں لے جانے کو تیار نہیں۔ تاہم قرآن کا نظم اور سیاق وسباق کا حق ادا ہونے میں ابہام نظر آ رہا ہے انہوں نے قرآن کو زاویہ نظر سے دیکھا۔ اگر نقطۂ نظر سے دیکھتے تو یہ ابہام دور ہو جاتا۔ اور نقطۂ نظر یہ ہے جس میں کہا گیا ہے کہ قرآن میں دو طرح کی آیات ہیں محکم اور متشابہا۔ مُتَشَابِهاً مَّثَانِيَ ۔ اور اللہ نے اپنی بات کو سمجھانے کے لئے قرآن کی آیات کو بار بار دہرایا ہے یعنی تصریف آیات اور مثالوں سے بھی بات سمجھائی ہے جیسے خود انسان آپس میں بات کرتے وقت مثال سے بات سمجھاتے ہیں۔

اس لئے قرآن میں ایک نظم ہے جس کو سیاق وسباق بھی کہتے ہیں اور وہ پوری قرآن میں پھیلا ہے اس کو نظر میں رکھ کر اس نقطۂ نظر سے قرآن کا ترجمہ ہونا تھا۔ مگر اس قاعدے سے کچھ ہٹ کر زاویہ نظر سے ترجمہ ہوا اور اس سے ایسا محسوس ہوتا ہے گویا قرآن میں نظم نہیں اور یہ کہ جس نے رحمان کو بنایا ہے وہ کوئی اور ہے جو خالق ہے اور رحمان مخلوق ہے یا یہ کہ آیات میں کچھ ہے اور اس کا شان نزول اس طرح لکھ دیا کہ اختلاف بُرا نہیں رحمت ہے اور کسی وقت قرآن کے خلاف عمل بھی کر سکتے ہیں یا ایسا بھی شان نزول سے ثابت ہو رہا ہے کہ صحابہ نے جھوٹ بول کر نبیؐ کو دھوکا دیا اور نبیؐ نے بھی ان کی بات کو سچ مان لیا اور قبیلہ پر حملہ کرنے کو لشکر روانہ کر دیا مگر اس غلط بیانی کا علم راہ میں ہی ہو گیا اور وہ جنگ ہوتے ہوتے رہ گئی یا کوئی مسلمان نبیؐ کے راز کے فیصلہ تک کو مشرکوں کو پہنچانے کی کوشش کرتا تھا۔ جب کہ قرآن کے اصل متن میں اگر اس کو نظم، تصریف آیات سے دیکھا جائے تو اس قسم کے کام کی کوئی گنجائش نہیں۔ بھلا ایک سچا پکا مومن قرآن اور نبیؐ کی خلاف ورزی کر سکتا ہے؟ ہرگز نہیں۔

कुरआन पढ़ने के बाद जब पाठक ज्ञानी से ज्ञात करता है कि श्रीमान कुरआन तो अधिपति रहने की बात कहता है, परन्तु आज कही भी मुसलमान अधिपति नही तो वह उत्तर देता है कि कुरआन और सुन्नत पर व्यवहार करो, जब कुरआन व सुन्नत को ज्ञात किया जाता है कि कुरआन व सुन्नत क्या है? तो इसका उत्तर संतोष जनक नही मिलता और ऐसा अनुभूत होता है कि ईश्वर और रसूल के आदेश पृथक-पृथक है अर्थात कुरआन व हदीस, जबकि कुरआन व हदीस में विभिन्नता नजर आती है, वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने अपना विधान हर व्यक्ति को प्रत्यक्ष नही दिया अपने रसूलों के द्वारा दिया, फिर मूल सुन्नत क्या है? तो मैं यह समझा हूं कि सुन्नत का अर्थ है धर्म शास्त्र स्वभाव, रीति, ईश्वर का स्वभाव और रीति यह है कि इस कुरआन में हर कार्य के करने की विधि बता दी है और वह ऐसी बतायी कि वह कभी परिवर्तित न होगी, क्योंकि ईश्वर का स्वभाव रीति यही है अर्थात अपरिवर्तनीय और रसूल की रीति स्वभाव यह है कि ईश्वर ने जो आदेश वही के द्वारा दिया उस पर व्यवहार किया और उसको ही बताया और जिस कर्म के लिए कुरआन में उल्लेख नही दिया जो तात्कालिक समस्याऐं है उनके पेश आने पर ईश्वर के आदेशानुसार नबी स0 ने परामर्श किया और यही रीति महाप्रलय तक आने वाले मुसलमानों के लिए है इससे विमुखता नही, परन्तु इसके विपरीत आज हमारे सामने यह आ रहा है कि कुरआन कुछ है और नबी स0 से सम्बंधित कुछ और कर रखा है जो सुन्नत (रीति) नही है,

सुन्नत क्या है सुनो! सुन्न यह है कि जब नबी स0 इस दुनिया में थे तो वह दो स्थानों पर पदासीन थे, रसूल और शासक, अपने समय में रसूल भी एक और शासक (अमीर) भी एक, उनके साथ कोई और साझी न था, जब आपकी मृत्यु हो गई तो ईशदौत्य तो समाप्त हो गया उनके बाद और कोई रसूल नही आएगा, परन्तु जो राज्य स्थापित किया था वह शेष रहेगा उसका शासक होना अनिवार्य है ओर सुन्नत (रीति) रसूल के अनुसार एक शासक ही होना है, अलग-अलग नहीं, क्योंकि अपने समय पर मुहम्मद स0 ही एक शासक थे यही सुन्नत है न कि अलग-अलग राज्य स्थापित करना, और यह वास्तविकता सुन्नत रसूल खिलाफत राशिदा तक स्थिर रही जिसके कारण से मुसलमानों ने बहुत उन्नति की, हां, कुछ मतभेद श्रीमान अली र0 के काल में सामने आए, जो न होने चाहिए थे, परन्तु सुन्नत रसूल अपने स्थान पर स्थिर रही, श्रीमान अली के काल में जो विवाद हो गए थे उनके प्रभाव से खिलाफत बनी उमय्या की ओर स्थानान्तरित हो गई, परन्तु एक शासक की रीति को उन्होंने भी स्थापित रखा इसलिए एक ही अमीर रहा, परन्तु उस राज्य ने एक सुन्नत को तोड़ा वह यह कि शासन को कौटुम्बिक बना दिया गया, जो रीति रसूल से विमुखता के समान है, अस्तु कुरआन व सुन्नत के अनुकरण में असावधानी बरती गई, इसका परिणाम यह हुआ कि राज्य के टुकड़े होने आरम्भ हो गए और आज दशा यह है कि पूरी इस्लामी दुनिया में लगभग 58 तथा कथित मुस्लिम राज्य है जो सुन्नत रसूल के बिल्कुल विपरीत है जिसको ईश्वर ने मना किया है,

एक सुन्नत रसूल यह है कि सब मुसलमानों का धर्म शास्त्र कुरआन के अनुसार एक होना है परन्तु आज यह सुन्नत भी अपने टुकड़ों को देख कर ईश्वर से याचना कर रही है कि ईश्वर तेरे आदेश और रसूल के व्यवहार को इस जाति ने अपनी इच्छा का पाबन्द बना लिया है, और दल-दल हो गए है, जिसको तूने मना किया है, मेरे ऊपर कृपा कर या तो इन लोगों को समझ दे कि यह मुझ पर इस प्रकार व्यवहार करें जैसा तेरा आदेश नबी के कर्म के द्वारा पारित हुआ या इनके स्थान पर किसी दूसरी जाति को ला खड़ा कर जो सही सुन्नत ईश्वर और सुन्नत रसूल पर व्यवहार करे और यही तेरी रीति है,

रसूल की एक सुन्नत यह भी है कि जब कभी नबी ने जाति

قرآن پڑھنے کے بعد جب قاری عالم سے معلوم کرتا ہے کہ حضرت قرآن تو غالب رہنے کی بات کہتا ہے مگر آج کہیں بھی مسلمان غالب نہیں تو وہ جواب دیتا ہے کہ قرآن اور سنت پر عمل کرو جب قرآن اور سنت کو معلوم کیا جاتا ہے کہ قرآن وسنت کیا ہے۔ تو اس کا جواب تسلی بخش نہیں ملتا اور ایسا محسوس ہوتا ہے کہ اللہ ورسول کے حکم الگ الگ ہیں۔ یعنی قرآن اور حدیث۔ جب کہ قرآن وحدیث میں تضاد نظر آتا ہے مگر حقیقت یہ ہے کہ اللہ نے اپنی شریعت ہر آدمی کو براہ راست نہیں دی اپنے رسولوں کے ذریعہ دی۔ پھر اصل سنت کیا ہے؟ تو میں یہ سمجھتا ہوں کہ سنت کا مطلب ہے شریعت عادت طریقہ۔ اللہ کی عادت اور طریقہ یہ ہے کہ اس قرآن میں ہر کام کے کرنے کا طریقہ بتا دیا اور وہ ایسا بتا دیا کہ وہ کبھی تبدیل نہ ہوگا۔ کیونکہ اللہ کی سنت یہی ہے یعنی غیر متبدل۔ اور رسول کی سنت یہ ہے کہ اللہ نے جو حکم وحی کے ذریعہ دیا اس پر عمل کیا اور اس کو ہی بتایا اور جس کام کے بارے میں قرآن میں ذکر نہیں کیا جو وقتی مسائل ہیں ان کے پیش آنے پر اللہ کے حکم کے مطابق نبیؐ نے مشورہ کیا اور یہی سنت قیامت تک آنے والے مسلمانوں کے لئے ہے۔ اس سے انحراف نہیں لیکن اس کے خلاف آج ہمارے سامنے یہ آرہا ہے کہ قرآن کچھ ہے اور نبیؐ سے منسوب کچھ اور کر رکھا ہے جو سنت نہیں ہے۔ سنت کیا ہے سنو! سنت یہ ہے کہ جب نبیؐ اس دنیا میں تھے تو وہ دو مقام پر فائز تھے۔ رسول اور امیر۔ اپنے زمانے میں رسول بھی ایک تھے اور پوری سلطنت کے امیر بھی ایک۔ ان کے ساتھ کوئی اور شریک نہ تھا۔ جب آپ کا انتقال ہو گیا تو نبوت تو ختم ہو گئی ان کے بعد اور کوئی رسول نہیں آئے گا۔ مگر جو سلطنت قائم کی تھی وہ باقی رہے گی۔ اس کا امیر ہونا ضروری ہے۔ اور سنت رسول کے مطابق ایک امیر ہی ہونا ہے الگ الگ نہیں۔ کیوں کہ اپنے وقت پر محمدؐ ہی ایک امیر تھے۔ یہی سنت رسول ہے۔ نہ کہ الگ الگ حکومت قائم کرنا، اور یہ حقیقی سنت رسول خلافت راشدہ تک قائم رہی۔ جس کی وجہ سے مسلمانوں نے بہت ترقی کی، ہاں کچھ تنازعات حضرت علیؓ کے زمانے میں رونما ہوئے۔ جو نہ ہونے چاہیے تھے لیکن سنت رسول اپنی جگہ پر قائم رہی حضرت علیؓ کے زمانے میں جو تنازعات ہو گئے تھے ان کے اثرات سے خلافت بنی امیہ کی طرف منتقل ہو گئی لیکن ایک امیر کی سنت کو انہوں نے بھی قائم رکھا۔ اس لئے ایک ہی امیر رہا لیکن اس نے ایک سنت کو توڑا۔ وہ یہ کہ حکومت کو خاندانی بنا دیا گیا۔ جو سنت رسول سے انحراف کے مترادف ہے۔ بہر حال قرآن وسنت کی اطاعت میں تساہل برتا گیا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ حکومت کے ٹکڑے ہونے شروع ہو گئے۔ اور آج حال یہ ہے کہ پورے عالم اسلام میں تقریباً ۵۸ نام نہاد مسلم حکومت ہیں۔ جو سنت رسول کے بالکل خلاف ہیں۔ جس کو اللہ نے منع کیا ہے۔

ایک سنت رسول یہ ہے کہ سب مسلمانوں کا فقہ قرآن کے مطابق ایک ہونا ہے مگر آج یہ سنت بھی اپنے ٹکڑوں کو دیکھ کر اللہ سے فریاد کر رہی ہے کہ اللہ تیرے حکم اور رسول کے عمل کو اس قوم نے اپنی مرضی کا پابند بنا لیا ہے۔ اور فرقے فرقے ہو گئے ہیں۔ جس کو تو نے منع کیا ہے میرے حال پر رحم کر یا تو ان لوگوں کو سمجھ دے کہ یہ مجھ پر اس طرح عمل کرے جیسا تیرا حکم نبی کے عمل کے ذریعہ صادر ہوا یا ان کی جگہ کسی دوسری قوم کو لا کھڑا کر جو صحیح سنت اللہ اور سنت رسول پر عمل کرے اور یہی تیری سنت ہے۔

رسول کی ایک سنت یہ بھی ہے کہ جب کبھی نبی نے قوم سے راہ حق میں

से सत्य मार्ग में चलने का आदेश दिया तो हर फर्द उपस्थित हो गया और बूढ़े और बच्चे भी अपने धर्म के आवेश को पेश करने के लिए उपस्थित हो गए परन्तु आज दशा यह है कि पहले तो मुसलमानों का दुनिया और धर्म की दृष्टि से कोई एक नेता नही, सब ने अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग अलाप रखा है, और यदि कोई ईश्वर का सच्चा बन्दा एकता के लिए आकृष्ट करना चाहता है और कुछ सच्चे आदमी उसके साथ चलने को तैयार होते है तो हर ओर से आपत्तियों की एक वर्षा आरम्भ हो जाती है और कहा जाता है यह तो सुन्नी है, शीया है, बरेलवी, देवबन्दी, हनफी, मालकी, अहले हदीस है हम क्यों इसके साथ जाएं तो यह एक बहुत बड़ी दुख की बात है इसको दूर होना चाहिए यदि न हुआ तो यह सुन्नत का विरोध है और सुन्नत के विरोध करने पर आज मुसलमान जलील है,

सुन्नत की विमुखता का एक उदाहरण जंग 'ओहद' की व्याकुलता भी है जिसमें कुछ मुसलमानों से जो घाटी की रक्षा पर थे भूल हो गई और उनमें से कुछ ने मोर्चा छोड़ दिया तो परिणाम परेशानी में निकला, इसलिए संयुक्त रहना और नेता की बात मानना भी सुन्नत रसूल है,

सुन्नत रसूल में एक स्थान बलिदान देने का भी आता है और बलिदान अपनी प्रिय वस्तु ही की दी जाती है, जैसे महामना इब्राहीम अ० ने ईश्वर की इच्छानुसार अपने प्रिय पुत्र की बलि प्रस्तुत कर दी और सफल हो गए यदि वह चाहते तो धन का बलिदान अर्थात जानवर बलि कर देते, परन्तु सबसे प्रिय उनके निकट धन न था अपितु अपना पुत्र था,

सूरत 'निसा' आयत 6- सो साक्ष्य है आपके ईश्वर की वह आस्तिक नही हो सकते जब तक कि सब आपस के मतभेद में आपको शासक न मान लें फिर जो निर्णय आप उनमें कर दें उनसे अपने मन में किसी प्रकार की तंगी और ना खुशी न पाऐं और आज्ञाकारी के साथ स्वीकार करें,

आज जाति ने जो अनेक आस्थाऐं स्वीकार कर रखी है उनको अच्छा समझ कर ही स्वीकार किया जो सुन्नत के विरुद्ध है, अतः उन विभिन्न आस्थाओं को बलि करना ही सुन्नत ईश्वर व सुन्नत रसूल है अर्थात ईश्वर का आदेश इसके अतिरिक्त हर हज व ईदुल अजहा पर आदमी ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जानवरों को बलि करता है और बहुत से इन्सान तो ऐसे है जो अपनी नाक ऊंची करने के लिए पचास-पचास, साठ-साठ हजार यहां तक कि एक लाख तक की बोली लगाकर जानवर को खरीदकर आहुति देते है क्योंकि वह लोग अपने पैसे को प्रिय समझते है, परन्तु उनको समझना चाहिए कि उनके निकट इस पैसे से भी यहां तक कि दुनिया की हर वस्तु से भी प्रिय उनके लिए एक और वस्तु है, और वह है उनका पंथ, आस्था जो ईश्वर के नियम के विरुद्ध है, अतः उनकी मूल आहुति जानवर के साथ यह होगी कि अपने इख़तलाफी अकीदे को छोड़कर एक कुरआनी धर्म शास्त्र स्वीकार करके संयुक्त हो जाऐं जिसका आदेश ईश्वर देता है और यही वास्तव में आहुति है,

हां, पंक्ति ठीक करने की भावना अवश्य है और वह है केवल मस्जिद की पंक्तियों तक मस्जिद में हर व्यक्ति देख सकता है कि एक दूसरे को ताकीद करता नजर आता है कि थोड़ा आगे को हो जा थोड़ा पीछे को हो जा, आपस में मिल जा और मुहम्मद स० ने भी अपनी पंक्तियों को ठीक करने को कहा है, परन्तु क्या यह आदेश केवल मस्जिद तक ही सीमित है, बाहर नही? परन्तु मित्रो! यह आदेश हर स्थान के लिए है परन्तु दुख, आज हम इस आदेश पर केवल मस्जिद तक ही व्यवहार करते है मस्जिद से बाहर आकर फिर हमारी गतिविधि वही मतभेदी और दुश्मनी की हो जाती है, एक दूसरे से लड़ते है बच

چلنے کا حکم دیا تو ہر فرد لبیک کہتا ہوا حاضر ہوا اور بوڑھے اور بچے بھی اپنے جوش ایمانی کو پیش کرنے کے لئے حاضر ہو گئے۔مگر آج حال یہ ہے کہ پہلے تو مسلمانوں کا دینوی یا دینی حیثیت سے کوئی ایک امیر نہیں۔سب نے اپنی اپنی ڈفلی اپنا اپنا راگ الاپ رکھا ہے اور اگر کوئی اللہ کا مخلص بندہ اتحاد کے لئے راغب کرنا چاہتا ہے اور کچھ مخلص آدمی اس کے ساتھ چلنے کو تیار ہوتے ہیں تو ہر طرف سے اعتراضات کی ایک بارش شروع ہو جاتی ہے۔اور کہا جاتا ہے یہ تو سنی ہے، شیعہ ہے، بریلوی، دیوبندی، حنفی، مالکی اہل حدیث ہے ہم کیوں اس کے ساتھ جائیں۔تو یہ ایک بہت بڑا المیہ ہے اس کو دور ہونا چاہیے۔اگر نہ ہوا تو یہ سنت کی خلاف ورزی ہے۔اور سنت کی خلاف ورزی پر آج مسلمان ذلیل ہے۔سنت کی خلاف ورزی کی ایک مثال جنگ احد کی پریشانی بھی ہے۔جس میں کچھ مسلمانوں سے جو درّے کی حفاظت پر معمور تھے بھول ہو گئی اور ان میں سے کچھ نے مورچہ چھوڑ دیا تو انجام پریشانی میں نکلا۔اس لئے متحد رہنا اور امیر کی بات ماننا ہی سنت رسول ہے۔

سنت رسول میں ایک مقام قربانی دینے کا بھی آتا ہے اور قربان اپنی عزیز چیز ہی کی دی جاتی ہے۔جیسے حضرت ابراہیم نے اللہ کی منشاء کے مطابق اپنے عزیز فرزند کی قربانی پیش کر دی اور کامیاب ہو گئے۔اگر وہ چاہتے تو پیسے کی قربانی یعنی جانور قربان کر دیتے مگر سب سے عزیز ان کے نزدیک پیسہ نہ تھا بلکہ اپنا بیٹا تھا۔

سورت نساء آیت (۶۵) سو شہادت ہے آپ کے پروردگار کی وہ مومن نہیں ہو سکتے جب تک کہ تمام آپس کے اختلاف میں آپ کو حاکم نہ مان لیں۔پھر جو فیصلے آپ ان میں کر دیں ان سے اپنے دل میں کسی طرح کی تنگی اور ناخوشی نہ پائیں اور فرمانبرداری کے ساتھ قبول کریں۔

آج قوم نے جو اختلافی عقیدے قبول کر رکھے ہیں ان کو اچھا سمجھ کر ہی قبول کیا ہے جو سنت کے خلاف ہے اس لئے ان اختلافی عقیدوں کو قربان کرنا ہی سنت اللہ و سنت رسول ہے یعنی اللہ کا حکم۔

علاوہ ازیں ہر حج و عیدالاضحیٰ پر آدمی اللہ کی رضا حاصل کرنے کے لئے جانوروں کو قربان کرتا ہے اور بہت سے انسان تو ایسے ہیں جو اپنی ناک اونچی کرنے کے لئے پچاس پچاس ساٹھ ساٹھ ہزار، حتیٰ کہ ایک لاکھ تک کی بولی لگا کر جانور کو خرید کر قربان کرتے ہیں کیونکہ وہ لوگ اپنے پیسے کو عزیز سمجھتے ہیں مگر ان کو سمجھنا چاہیے کہ ان کے نزدیک اس پیسے سے بھی حتیٰ کہ دنیا کی ہر چیز سے بھی عزیز ان کے لئے ایک اور چیز عزیز ہے اور وہ ہے ان کا مسلک عقیدہ جو اللہ کے قانون کے خلاف ہے۔اس لئے ان کی اصل قربانی جانور کے ساتھ یہ ہوگی کہ اپنے اختلافی عقیدے کو ترک کر کے ایک قرآنی فقہ قبول کر کے متحد ہو جائیں جس کا تقاضہ اللہ کرتا ہے اور یہی حقیقی قربانی ہے۔

ہاں صف درست کرنے کا جذبہ ضرور ہے اور وہ ہے صرف مسجد کی صفوں تک۔مسجد میں ہر آدمی دیکھ سکتا ہے کہ ایک دوسرے کو تاکید کرتا نظر آتا ہے کہ ذرا آگے کو ہو جا تھوڑا پیچھے کو ہو جا۔آپس میں مل جا اور محمدؐ نے بھی اپنی صفوں کو درست کرنے کو کہا ہے۔مگر کیا یہ حکم صرف مسجد تک ہی محدود ہے؟ باہر نہیں؟ مگر دوستو! یہ حکم ہر جگہ کے لئے ہے مگر افسوس آج ہم اس حکم پر صرف مسجد تک ہی عمل کرتے ہیں مسجد سے باہر آکر پھر ہمارا رویہ وہی اختلافی اور دشمنی کا ہو جاتا ہے۔

करते हैं, जो सुन्नत रसूल व सुन्नत ईश्वर के विरुद्ध है, क्या एक मुसलमान को जानबूझकर वध करने को ईश्वर ने मना नहीं किया है? और इतनी कठोर चैतावनी सुनाई है कि यदि जानबूझकर किसी मुसलमान ने दूसरे मुसलमान को वध कर दिया तो हत्यारा सदैव नर्क में रहेगा, ऐसे ही मुहम्मद स0 ने कहा कि जब दो मुसलमान अपने घरों से एक दूसरे से लड़ने के लिए निकलें तो वह दोनों नर्की हैं.

ऐतिहासिक लेखों के बारे में यदि कोई प्रश्न करें कि आज तक मुलसमानों के मध्य जो युद्ध लिखे मिलते हैं उनके बारे में आपकी क्या धर्म आज्ञा है? क्या वह दोनों दल नर्की हैं या उनमें से एक मुसलमान था और दूसरा काफ़िर, उत्तर चाहिए आज जो पंथी वध व विनाशकारी हो रही है क्या यह सुन्नत रसूल है, अर्थात शीया सुन्नी इत्यादी क्या यह कार्य स्वर्ग में ले जाऐंगे? उत्तर बड़ा हृदय विदारक होगा, परन्तु इस विकार पर आवरण डालने के लिए एक कथन बनाया गया अर्थात उम्मत का मतभेद अनुकम्पा बताकर लीपा-पोती की जाती है, जबकि यह मतभेद कष्ट विकार है और इस मतभेद की अग्नि में झुलस कर ही उम्मत तिरस्कृत हो गई है, इस मतभेद को शीघ्रातिशीघ्र दूर होना चाहिए और इसको समाप्त करने के लिए एक बड़े प्रयास की आवश्यकता है हर स्थान पर ईश्वर हमको समझ दे इस्लाम में पंथिक मतभेद की कोई गुनजाईश नहीं, अब मैं कुछ संक्षिप्त उपमाएं प्रस्तुत कर रहा हूं जिसकी ओर ऊपर संकेत किया है, अर्थात कुछ आयात के बारे में लिख रहा हूं जिनके अनुवादों में संदिग्धता नजर आती है जबकि अरबी लेख संदिग्धता से पवित्र है इस शर्त के साथ जिसमें ईश्वर ने कहा है कि मैंने बात को समझाने के लिए अपनी आयात को बार-बार दोहराया है अर्थात तसरीफ़े आयात जो एक व्यवस्था है.

सूरत 'हूद' आयत 12- का प्रचलित अनुवाद-

(1) पस ऐ नबी शायद आप इस वही के किसी भाग को छोड़ देने वाले हैं जो आपकी ओर अवतरित की जाती है और इससे आपका हृदय तंग है, केवल उनकी इस बात पर कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतरा? या इसके साथ कोई फ़रिश्ता ही आता सुन लीजिए आप तो केवल डराने वाले ही हैं और हर वस्तु का उत्तर दायी ईश्वर है, मुहम्मद जूनागढ़ी और लगभग सब अनुवादक.

इस अनुवाद से यह संदिग्धता उत्तपन्न हो रही है कि शायद रसूल की यह इच्छा थी कि विरोधियों को खुश करने के लिए उनकी मांग पर उनके विरुद्ध वही के शब्द को छोड़ दे (नऊज़ू बिल्ला) क्या नबी से यह आशा की जा सकती है? अब इस संदिग्धता को दूर करने की विधि क्या है तो स्पष्ट है ईश्वर ने इसकी विधि बताई है अवलोकन हो.

सूरत 'माईदा' आयत 67- ऐ रसूल जो आदेश ईश्वर की ओर से तुम पर अवतरित हो रहे हैं सब लोगों को पहुंचा दो और यदि ऐसा न करोगे तो ईश्वर के संदेश पहुंचाने में अक्षम रहे अर्थात ईशदौत्य का हक अदा न किया और ईश्वर तुम को लोगों से बचाए रखेगा निःसन्देह ईश्वर अवज्ञाकारों को पथ प्रदर्शन नहीं करता.

सूरत 'कहफ़' आयत 6- पस यदि वह लोग इस बात पर विश्वास न लाए तो क्या आप उनके पीछे इस रंज में अपनी जान वध कर डालेंगे.

सूरत 'ताहा' पस इन बातों पर धैर्य करो और अपने रब की पवित्रता का वर्णन और प्रशंसा वर्णन करते रहो.

सूरत बनी इसराईल आयत 74- यदि हम आपको धैर्यवान

ایک دوسرے سے لڑتے ہیں قتل کرتے ہیں جو سنت رسول وسنت اللہ کے خلاف ہے کیا ایک مسلمان کو جان بوجھ کر قتل کرنے کو اللہ نے منع نہیں کیا ہے؟ اور اتنی سخت وعید سنائی ہے کہ اگر جان بوجھ کر کسی مسلمان نے دوسرے مسلمان کو قتل کر دیا تو قاتل ہمیشہ دوزخ میں رہے گا. ایسے ہی محمدؐ نے فرمایا کہ جب دو مسلمان اپنے گھروں سے ایک دوسرے سے لڑنے کے لئے نکلیں تو وہ دونوں دوزخی ہیں.

تاریخی مندرجات کے بارے میں اگر کوئی سوال کرے کہ آج تک مسلمانوں کے درمیان جو جنگیں لکھی ملتی ہیں ان کے بارے میں آپ کا کیا فتویٰ ہے؟ کیا وہ دونوں جماعتیں دوزخی ہیں یا اُن میں سے ایک مسلمان تھی اور دوسری کافر جواب درکار ہے. آج جو مسلکی قتل و غارت گری ہو رہی ہے کیا یہ سنت رسول ہے یعنی شیعہ سنی وغیرہ کیا یہ کام جنت میں لے جائیں گے؟ جواب بڑا الخراش ہوگا مگر اس خرابی پر پردہ ڈالنے کے لئے ایک روایت گھڑی گئی یعنی اختلاف امت رحمت بتا کر لیپا پوتی کی جاتی ہے. جب کہ یہ اختلاف امت زحمت ہے اور اس اختلاف کی آگ میں جھلس کر ہی امت ذلیل ہوگئی ہے. اس اختلاف کو جلد از جلد دور ہونا چاہیے. اور اس کو ختم کرنے کے لئے ایک بڑی جدوجہد کی ضرورت ہے ہر محاذ پر اللہ ہم کو سمجھ دے اسلام میں مسلکی اختلاف کی کوئی گنجائش نہیں. اب میں کچھ مختصر مثالیں پیش کر رہا ہوں جس کی طرف اوپر اشارہ کیا ہے یعنی کچھ آیات کے بارے میں لکھ رہا ہوں جن کے تراجم میں ابہام نظر آتا ہے جب کہ عربی عبارت ابہام سے پاک ہے. اس شرط کے ساتھ جس میں اللہ نے فرمایا ہے کہ میں نے بات کو سمجھانے کے لئے اپنی آیات کو بار بار دوہرایا ہے یعنی تصریف آیات جو ایک نظم ہے.

سورت ''ھودؑ'' آیت ۱۲/ کا رائج الوقت ترجمہ......

(۱) پس شاید آپ اس وحی کے کسی حصے کو چھوڑ دینے والے ہیں جو آپ کی طرف نازل کی جاتی ہے. اور اس سے آپ کا دل تنگ ہے. صرف ان کی اس بات پر کہ اس پر کوئی خزانہ کیوں نہیں اترا؟ یا اس کے ساتھ کوئی فرشتہ ہی آتا. سن لیجئے آپ تو صرف ڈرانے والے ہی ہیں. اور ہر چیز کا ذمہ دار اللہ ہے. محمدؐ جونا گڑھی اور تقریباً سب مترجم.

اس ترجمہ سے یہ ابہام پیدا ہو رہا ہے کہ شاید رسول کی یہ مرضی تھی کہ مخالفوں کو خوش کرنے کے لئے ان کے مطالبہ پر ان کے خلاف وحی کے الفاظ کو چھوڑ دیں (نعوذ باللہ) کیا نبی سے یہ امید کی جا سکتی ہے؟ اب اس ابہام کو دور کرنے کا طریقہ کیا ہے تو صاف ظاہر ہے اللہ نے اس کا طریقہ بتایا ہے ملاحظہ ہو.

سورت ''مائدہ'' آیت ۶۷/ اے رسول جو حکم اللہ کی طرف سے تم پر نازل ہو رہے ہیں سب لوگوں کو پہنچا دو. اور اگر ایسا نہ کرو گے تو اللہ کے پیغام پہنچانے میں قاصر رہے (یعنی رسالت کا حق ادا نہ کیا) اور اللہ تم کو لوگوں سے بچائے رکھے گا. بے شک اللہ منکروں کو ہدایت نہیں کرتا.

سورت ''کہف'' آیت ۶/ پس اگر وہ لوگ اس بات پر ایمان نہ لائیں تو کیا آپ ان کے پیچھے اس رنج میں اپنی جان ہلاک کر ڈالیں گے.

سورت ''طٰہٰ'' پس ان باتوں پر صبر کرو اور اپنے پروردگار کی تسبیح اور تعریف بیان کرتے رہو.

سورت ''بنی اسرائیل'' آیت ۷۴/ اگر ہم آپ کو ثابت قدم نہ رکھتے تو

रखते तो बहुत सम्भव था कि उनकी ओर कुछ आकृष्ट हो ही जाते.

सूरत 'निसा' आयत 113- यदि ईश्वर का कृपा दया व दया आप पर न होती तो उनके एक दल ने तो आपको बहकाने का संकल्प कर ही लिया था.....

सूरत 'कलम' आयत 9- वह तो चाहते हैं कि स्वयं आप थोड़े ढीले हों तो वह भी ढीले पड़ जाऐं

आयत 51- और नास्तिक आशा लगाए हैं कि शीघ्र ही अपनी तीव्र दृष्टि और मुख से आपको फुसला दें जब कभी कुरआन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो अवश्य दीवाना है.

इनके अतिरिक्त और आयात हैं जिनका संदर्भ लिख रहा हूं, कुरआन में देखने की कृपा करें- {6:3,33,49, 7:2, 33:48, 25:16,41,93, 11:17, 6:15,35, 17:73,75, 42:15, 69:44से47, 81:24, 46:10, 86:15, 25:33, 2:120,125, 17:86, 10:15}

उपरोक्त आयात सब कुरआन में हैं, यदि इनको देखा जाता तो अनुवाद की संदिग्धता दूर होती, अब इन आयात की रोशनी में वह भावार्थ लिखा जा रहा है जो मैंने समझा है और जिसने संदिग्धता को दूर कर दिया है, अवलोकन हो-

(11:12) काफ़िर लोग कहेंगे कि यह कैसा नबी है कि इस पर न तो कोई कोष उतरा और न इसके साथ कोई फ़रिश्ता आया, वह इस आशा के साथ यह कहेंगे कि आप तंग होकर शायद कुछ वही से छोड़ दो और कुछ बढ़ा दो, तंग करने और इनकार करने से वह यही आशा लगाए बैठे हैं, शायद आप छोड़ दें (परन्तु आप ऐसा नही करेंगे) आप तो केवल डराने वाले हो सो धैर्य के साथ अपना कार्य करते रहो और ईश्वर हर वस्तु का रखवाला है, आयत में शायद शब्द ईश्वर की ओर से नही है अपितु काफ़िर इस आशा में थे कि शायद मुहम्मद स0 हमारे तंग करने और कहने से कुछ छोड़ दें अब विचार कीजिए इस भावार्थ से वह संदिग्धता दूर हुई या नही और वास्तविक उद्देश्य भी अपने स्थान पर स्थिर है, अब देखें सूरत 'फ़ातिर- की आयत 32-

(2) सूरत 'फ़ातिर' आयत 32- हमने अपने बन्दों में से पसन्द किया और उनको पुस्तक का वारिस बनाया, फिर कतिपय तो उनमें अपनी जानों पर अन्याय करने वाले हैं और कतिपय उनमें मध्यवर्ती दर्जे के हैं और कतिपय उनमें ईश्वर की क्षमता से सत्कर्मों में उन्नति किए चले जाते हैं, यह बड़ा कृपा दया है, (मुहम्मद जूनागढ़ी और लगभग सभी अनुवादक ने यही किया है)

इस अनुवाद में यह संदिग्धता उत्पन्न हो गई है कि जब ईश्वर ने अपने बन्दों को पसन्द करके चुन लिया तो इस चुनाव में क्या कमी रह गई जिसके कारण से कुछ लोग अत्याचारी हो गए क्या अत्याचारियों को ईश्वर पसन्द कर सकता है? दूसरी बात यह कि ईश्वर की क्षमता से कतिपय उन्नति करते चले जाते हैं तो जब ईश्वर ने बन्दों को चुना तो कतिपय पर ही ईश्वर की क्षमता आकृष्ट क्यों हुई, अपने चुने हुए सब बन्दों को क्षमता से क्यों न दिया? परन्तु बात यह नही है, आयत कुछ और बता रही है जिसके लिए दूसरी आयात को देखना पड़ेगा, दो आयात को मैं अंकित कर रहा हूं, और शेष कुरआन में मिल जाऐंगी,

सूरत 'आले इमरान' आयत 33- निःसन्देह ईश्वर ने सम्पूर्ण संसार के लोगों में से आदम अ0 को और नूह अ0 को इब्राहीम की आल को और इमरान की आल (में से) चुन लिया,

सूरत 'अन्नमल' 27- आयत 59- आप कह दें कि सम्पूर्ण प्रशंसा ईश्वर ही के लिए हैं और उसके चुने हुए सर्व श्रेष्ठ बन्दों पर सलाम है क्या ईश्वर अच्छा है या वह जिन्हें वह लोग साझी ठहरा रहे हैं

بہت ممکن تھا کہ ان کی طرف کچھ مائل ہو ہی جاتے

سورت ''نساء'' آیت ۱۱۳/ اگر اللہ کا فضل ورحم آپ پر نہ ہوتا تو ان کی ایک جماعت نے تو آپ کو بہکانے کا قصد کر ہی لیا تھا...

سورت ''قلم'' آیت ۹/ وہ تو چاہتے ہیں کہ خود آپ ذرا ڈھیلے ہوں تو وہ بھی ڈھیلے پڑ جائیں

آیت ۵۱/ اور کافر امید لگائے ہیں کہ عنقریب اپنی تیز نگاہوں اور زبانوں سے آپکو پھسلا دیں. جب کبھی قرآن سنتے ہیں اور کہہ دیتے ہیں یہ تو ضرور دیوانہ ہے.

ان کے علاوہ اور آیات ہیں جن کا حوالہ لکھ رہا ہوں قرآن میں دیکھنے کی مہربانی کریں. [۶:۳، ۴۹:۳۳، ۲:۷، ۳۳:۴۸، ۲۵:۱۶، ۴۱، ۹۳، ۱۱:۱۷، ۶:۱۵، ۳۵، ۱۷:۷۳، ۷۵، ۴۲:۱۵، ۶۹:۴۴ تا ۴۷، ۸۱:۲۴، ۴۶:۱۰، ۸۶:۱۵، ۲۵:۳۳، ۲:۱۲۰، ۱۲۵، ۱۷:۸۶، ۱۰:۱۵]

مندرجہ بالا آیات سب قرآن میں ہیں اگر ان کو دکھا جاتا تو ترجمہ کا ابہام دور ہوتا. اب ان آیات کی روشنی میں وہ مفہوم لکھا جا رہا ہے جو میں نے سمجھا ہے اور جس نے ابہام کو دور کر دیا ہے ملاحظہ ہو.

(۱۱:۱۲) کافر لوگ کہیں گے کہ یہ کیسا نبی ہے کہ اس پر نہ تو کوئی خزانہ اترا اور نہ اس کے ساتھ کوئی فرشتہ آیا. وہ اس امید پر یہ کہیں گے کہ آپ تنگ ہو کر شاید کچھ وحی سے چھوڑ دو اور کچھ بڑھا دو. تنگ کرنے اور انکار کرنے سے وہ یہی امید لگائے بیٹھے ہیں شاید آپ کچھ چھوڑ دیں (مگر آپ ایسا نہیں کریں گے) آپ تو صرف ڈرانے والے ہو سو صبر کے ساتھ اپنا کام کرتے رہو اور اللہ ہر چیز کا نگہبان ہے. آیت میں شاید لفظ اللہ کی طرف سے نہیں ہے بلکہ کافر اس امید میں تھے کہ شاید محمدؐ ہمارے تنگ کرنے اور کہنے سے کچھ چھوڑ دیں. اب غور کیجئے اس مفہوم سے وہ ابہام دور ہوا یا نہیں اور نفس مضمون بھی اپنی جگہ پر قائم ہے. اب دیکھیں سورت فاطر کی آیت (۳۲)

(۲) سورت ''فاطر'' آیت ۳۲/ ہم نے اپنے بندوں میں سے پسند فرمایا اور ان کو کتاب کا وارث بنایا. پھر بعضے تو ان میں اپنی جانوں پر ظلم کرنے والے ہیں اور بعضے ان میں اللہ کی توفیق سے نیکیوں میں ترقی کئے چلے جاتے ہیں یہ بڑا فضل ہے محمد جوناگڑھی اور تقریباً سبھی مترجمین نے یہی کیا ہے.

اس ترجمے میں یہ ابہام پیدا ہو گیا ہے کہ جب اللہ نے اپنے بندوں کو پسند کر کے چن لیا تو اس چناؤ میں کیا کمی رہ گئی جس کی وجہ سے کچھ لوگ ظالم ہو گئے کیا ظالموں کو اللہ پسند کر سکتا ہے؟ دوسری بات یہ کہ اللہ کی توفیق سے بعضے ترقی کرتے چلے جاتے ہیں. تو جب اللہ نے بندوں کو چنا تو بعضوں پر ہی اللہ کی توفیق متوجہ کیوں ہوئی اپنے چنے ہوئے سب بندوں کو توفیق سے کیوں نہ نوازا؟ مگر بات یہ نہیں ہے آیت کچھ اور بتا رہی ہے جس کے لئے دوسری آیات کو دیکھنا پڑے گا. دو آیات کو میں درج کر رہا ہوں اور باقی قرآن میں مل جائیں گی سورت ''آل عمران'' آیت ۳۳/ بے شک اللہ نے تمام جہان کے لوگوں میں سے آدمؑ کو اور نوحؑ کو ابراہیمؑ کی آل کو اور عمران کی آل (میں سے) منتخب فرما لیا.

سورت ''النمل'' ۲۷/ آیت ۵۹/ آپ کہہ دیں کہ تمام تعریف اللہ ہی کے لئے ہے اور اس کے چنے ہوئے برگزیدہ بندوں پر سلام ہے کیا اللہ بہتر ہے یا

3:33 और 27:59 आयत को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट होता है कि जिन बन्दों को ईश्वर चुनता है वह अत्याचरी नही होते, अपितु उन पर ईश्वर की शान्ति सलाम होता है उक्त सूरत फातिर का जो भावार्थ आया है वह निम्न में अंकित है अवलोकन हो.

35:32 फिर हमने अपने बन्दों में से प्रमुख बन्दों को पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया जिन्हें योग्य समझकर चुना (यह चुनाव क्यों हुआ इसलिए कि) इन्सानों में कई प्रकार हैं, कुछ तो (अवज्ञा करके) अपनी जानों पर सितम ढाते हैं और कुछ उनमें से मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण करते हैं और कुछ (ईश्वर के प्रमुख हैं) जो ईश्वर के नियम से सत्कर्मों में साधारण मुसलमानों से आगे निकल जाते हैं (अर्थात रसूल) और यह उन पर ईश्वर का बहुत बड़ा कृपा दया है (7:46,47, 56:7,11)

'अलवाक़िआ' आयत 10-और जो आगे वाले हैं वह तो आगे वाले हैं,

(56:11) वह बिल्कुल निकटता प्राप्त किए हुए हैं,

(3) 'ज़ुख़रुफ़' आयत 45- और हमारे उन ईशदूतों से ज्ञात करो जिन्हें हमने आपसे पहले भेजा था कि क्या हमने सिवाए रहमान के और पूज्य नियुक्त किए थे जिनकी पूजा की जाए

इस अनुवाद में दो भ्रम सामने आ रहे हैं (1) क्या मुहम्मद स0 के सामने पहले नबी जीवित थे जो उनसे ज्ञात करने के लिए लिखा गया (2) (क्या हमने सिवाए रहमान के और पूज्य नियुक्त किए थे) तो यह हम कौन हैं और जिसको हमने नियुक्त किया अर्थात रहमान को वह कौन है स्पष्ट जाहिर हो रहा है कि यह हम रहमान का जनक है अर्थात हमने रहमान को नियुक्त किया है कि उसकी पूजा की जाए रहमान के अतिरिक्त और कोई नियुक्ति नही किया, जबकि पूजा के प्रसंग में रचना की पूजा का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, अतः जो ऊपर अनुवाद पढ़ा वह विचारणीय है, सही भावार्थ निम्न में अवलोकन हो,

(43:45) ऐ मुहम्मद स0 हमने आपसे पहले जितने रसूल भेजे अर्थात मनुष्य और पुस्तकें (चूंकि अब तुम्हारे सामने व्यक्ति रसूल तो विद्यमान नही उनके साथ जो पुस्तकें रसूल भेजे थे उनमें कुछ विद्यमान हैं) इन पुस्तकों को पढ़ कर देख लो (इससे यह सिद्ध हुआ कि ईश्वर की पुस्तकें भी रसूल हैं) क्या हमने अपने अतिरिक्त कोई और रहमान बनाया नियुक्त किया कि उसकी पूजा की जाये, (10:94; 21:24)

सूरत 'मआरिज' आयत 40 का अनुवाद अवलोकन हो जो प्रचलित है- पस मुझे कसम है मशरिकों और मग़रिबों के रब की (कि) हम निःसन्देह प्रभुत्वशाली हैं,

इस अनुवाद से यह भ्रम सामने आता है कि (मुझे कसम है) किसकी (मशरिकों और मग़रिबों के रब की) तो स्पष्ट हुआ शपथ खाने वाला कोई और है और जिसकी शपथ खाई जा रही है वह मशरिकों ओर मग़रिबों का रब है, कोई बता सकता है कि "मुझे" कौन है और "मशरिकों और मग़रिबों का रब" कौन है, और यदि "मुझे" ईश्वर को माना जाए तो ईश्वर ने कुरआन में कहा है कि शपथ झूट का सहारा है आयत प्रस्तुत है,

सूरत 'बकरा' आयत 204- कतिपय लोगों की दुनियावी स्वार्थ की बातें आपको प्रसन्न कर देती हैं और वह अपने मन की बातों पर ईश्वर को साक्षी करता है, यद्यपि वास्तव में वह प्रचण्ड झगड़ालु है,

सूरत 'कलम' 68 आयत 10- ओर आप किसी ऐसे व्यक्ति का भी कहा न मानना जो अधिक शपथ खाने वाला हो,

وہ جنہیں وہ لوگ شریک ٹھہرا رہے ہیں۔

(۳:۳۳)اور(۵۹:۲۷) آیات کو پڑھنے کے بعد یہ واضح ہوتا ہے کہ جن بندوں کو اللہ چنتا ہے وہ ظالم نہیں ہوتے بلکہ ان پر اللہ کی سلامتی سلام ہوتا ہے اس لئے سورت ''فاطر'' کا جو صحیح مفہوم آیا ہے وہ ذیل میں درج ہے ملاحظہ ہو۔

(۳۲:۳۵) پھر ہم نے اپنے بندوں میں سے خاص بندوں کو کتاب کا وارث بنایا جنہیں اہل سمجھ کر منتخب کیا (یہ چناؤ کیوں ہوا اس لئے کہ) انسانوں میں کئی قسم ہیں کچھ تو (نافرمانی کرکے) اپنی جان پر ستم ڈھاتے ہیں اور کچھ ان میں سے درمیانی راستہ اختیار کرتے ہیں نافرمانی نہیں کرتے سچے مسلمان ہیں. اور کچھ (اللہ کے خاص ہیں) جو اللہ کے قانون سے نیکیوں میں تمام مسلمانوں سے آگے نکل جاتے ہیں (یعنی رسول) اور یہ ان پر اللہ کا بہت بڑا فضل ہے[۷:۴۶،۴۷، ۵۶:۷،۱۱]

''الواقعہ'' آیت ۱۰/اور جو آگے والے ہیں وہ تو آگے والے ہی ہیں۔

(۵۶:۱۱) وہ بالکل نزدیکی حاصل کئے ہوئے ہیں۔

(۳) ''زخرف'' آیت ۴۵/اور ہمارے ان نبیوں سے پوچھو! جنہیں ہم نے آپ سے پہلے بھیجا تھا کہ کیا ہم نے سوائے رحمٰن کے اور معبود مقرر کئے تھے جن کی عبادت کی جائے

اس ترجمے میں دو ابہام سامنے آرہے ہیں (۱) کیا محمدؐ کے سامنے پہلے نبی زندہ تھے جو ان سے پوچھنے کے لئے لکھا گیا (۲) (کیا ہم نے سوائے رحمٰن کے اور معبود مقرر کئے تھے) تو یہ ہم کون ہے اور جس کو ہم نے مقرر کیا یعنی رحمان کو وہ کون ہے صاف ظاہر ہو رہا ہے کہ یہ ہم رحمٰن کا خالق ہے یعنی ہم نے رحمٰن کو مقرر کیا ہے کہ اس کی عبادت کی جائے رحمٰن کے علاوہ اور کوئی مقرر نہیں کیا جب کہ عبادت کے معاملہ میں مخلوق کی عبادت کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. اس لئے جو اوپر ترجمہ پڑھا وہ محل نظر ہے صحیح مفہوم ذیل میں ملاحظہ ہو۔

(۴۳:۴۵) اے محمدؐ ہم نے آپ سے پہلے جتنے رسول بھیجے یعنی بشر اور کتابیں (چونکہ اب تمہارے سامنے بشر رسول تو موجود نہیں ان کے ساتھ جو کتابیں رسول بھیجے تھے ان میں سے کچھ موجود ہیں) ان کتابوں کو پڑھ کر دیکھ لو (اس سے یہ ثابت ہوا کہ اللہ کی کتابیں بھی رسول ہیں) کیا ہم نے اپنے علاوہ کوئی اور رحمٰن بنایا مقرر کیا کہ اس کی عبادت کی جائے (۱۰:۹۴؛ ۲۱:۲۴)

سورت ''معارج'' آیت ۴۰/کا ترجمہ ملاحظہ ہو جو درج ہے پس مجھے قسم ہے مشرقوں اور مغربوں کے رب کی (کہ) ہم یقیناً قادر ہیں. اس ترجمہ سے یہ ابہام سامنے آتا ہے کہ (مجھے قسم ہے) کس کی (مشرقوں اور مغربوں کے رب کی) تو ظاہر ہوا قسم کھانے والا کوئی اور ہے اور جس کی قسم کھائی جارہی ہے وہ مشرقوں اور مغربوں کا رب ہے کوئی بتا سکتا ہے کہ ''مجھے'' کون ہے اور ''مشرقوں اور مغربوں کا رب'' کون ہے. اور اگر مجھے اللہ کو مانا جائے تو اللہ نے قرآن میں کہا ہے کہ قسم جھوٹ کا سہارا ہے آیت پیش ہے

سورت ''بقرہ'' آیت ۲۰۴/بعض لوگوں کی دینوی غرض کی باتیں آپ کو خوش کردیتی ہیں اور وہ اپنے دل کی باتوں پر اللہ کو گواہ کرتا ہے. حالانکہ دراصل وہ زبردست جھگڑالو ہے۔

سورت ''قلم'' ۶۸ آیت ۱۰/اور آپ کسی ایسے شخص کا بھی کہا نہ ماننا جو زیادہ قسمیں کھانے والا ہو۔

अब यह देखा जाए कि यह मशरिकों और मग़रिबों का रब कौन है, सूरत 'रहमान' आयत 17- वह रब है दोनों मशरिकों और दोनों मग़रिबों का,

इस आयत से सिद्ध हुआ कि मशरिकों और मग़रिबों का रब ईश्वर है और ईश्वर ने आयत (2:204, 68:10) में शपथ को झूट का सहारा बताया है, तो फिर ईश्वर ही क्यों शपथ खाने लगा, अतः आयत (70:40) का प्रचलित अनुवाद विचारणीय है, भ्रम उत्पन्न हो रहा है, दो अस्तित्व सामने आ रहे है "मुझे और मशरिकों और मग़रिबों का रब" जबकि मुझे और दोनों का रब एक ही है, अतः आयत का भावार्थ ज़ैल में अवलोकन हो-

(70:40) क्या मुझ मशरिकों और मग़रिबों के रब की साक्ष्य कथन काफ़ी नही है कि हम निःसन्देह प्रभुत्वशाली है,

हां एक बात और विचारणीय है, वह यह कि हर ख़ास व सामान्य के मुख पर यह शब्द है कि नमाज-दान इत्यादि का विवरण कुरआन में नही, परन्तु यह विश्वास कुरआन के लेख, स्याक व सबाक और प्रथा के विपरीत है क्योंकि ईश्वर की याद पूजा और जीवन व्यतीत करने की विधि जिन्हें मानव को स्वीकार करके व्यवहार करना है सबके सब ईश्वर ही की ओर से स्पष्ट रूप में विद्यमान हो, क्योंकि अनुकरण की कल्पना सविस्तार आदेश की कल्पना को अनिवार्य है, सविस्तार आदेश के सिवा अनुकरण का कर्म अस्तित्व ही में नही आ सकता,

अतः यह अनिवार्य है कि अनुकरण की मांग करने वाले ने अपने आदेश विवरण के साथ दे दिए हो, जैसे हर शासन अपनी आज्ञापलन कराने के लिए जो आदेश भी पारित करता है साथ ही उसका पूरा विवरण भी बताता है यह सविस्तार न बताया जाए तो हर व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार कर्म करेगा परन्तु यह शासन की आज्ञापालन नही हो सकती एक अफरा तफरी होगी,

ऐसे ही यदि ईश्वर ने यह आदेश दिया है अकिमुस्सलात व आतुज्ज़कात तो कुरआन के वाद और विधि के अनुसार इसका विवरण भी कुरआन में अनिवार्य है, अतः नमाज ज़कात इत्यादि का विवरण में कुरआन में विद्यमान है इन आयात के अनुसार जिनमें कहा गया है कि कुरआन में हर बात का विवरण है जिसको इस मफहूम में लिखा गया है मनन अनिवार्य है,

यह है वह भ्रम जो अनुवादों में सामने आते है, जिनको पढ़कर अपने व्याकुल होते हैं और दूसरे दोषारोपण करते हैं, इन संदिग्धताओं (भ्रमों) को देखकर ही यह भावार्थ कुरआन लिखा गया है, इस भावार्थ के विषय में यह कुछ आरम्भिक बातें लिख दी गई है इनको यदि ध्यान पूर्वक देख लिया जाएगा तो यह भावार्थ इस योग्य है कि लगभग सब भ्रम ही दूर हो जाएंगे, ईश्वर करे ऐसा हो, और यदि सब भ्रम दूर न हो सकें या इस भावार्थ में कोई भ्रम नजर आए तो कोई ईश्वर का बन्दा उनको दूर कर दे तर्क वितर्क करने का प्रयत्न न करे, काम समझने समझाने से चलता है, धन्यवाद।

सिकन्दर अहमद कमाल
आदम नगर बरौली रोड
अलीगढ़

اب یہ دیکھا جائے کہ یہ مشرقوں اور مغربوں کا رب کون ہے. سورت ''رحمٰن'' آیت ۱۷/ وہ رب ہے دونوں مشرقوں اور دونوں مغربوں کا.

اس آیت سے ثابت ہوا کہ مشرقوں اور مغربوں کا رب اللہ ہے اور اللہ نے آیت (۲:۲۰۴) اور (۶۸:۱۰) میں قسم کو جھوٹ کا سہارا بتایا ہے. تو پھر اللہ ہی کیوں قسم کھانے لگا. اس لئے آیت (۷۰:۴۰) کا رائج الوقت ترجمہ محل نظر ہے. ابہام پیدا ہو رہا ہے دو ذات سامنے آ رہی ہیں ''مجھے اور مشرقوں اور مغربوں کا رب'' جب کہ مجھے اور دونوں کا رب ایک ہی ہے اس لئے آیت کا مفہوم ذیل میں ملاحظہ ہو.

(۷۰:۴۰) کیا مجھ مشرقوں اور مغربوں کے رب کی شہادت قول کافی نہیں ہے کہ ہم یقیناً قادر ہیں.

ہاں ایک بات اور قابل غور ہے، وہ یہ کہ ہر خاص و عام کی زبان پر یہ الفاظ ہیں کہ نماز، زکوٰۃ وغیرہ کی تفصیل قرآن میں نہیں مگر یہ عقیدہ قرآن کے متن، سیاق وسباق اور دستور کے خلاف ہے کیوں کہ اللہ کی یاد، پرستش اور زندگی گزارنے کے وہ طریقے جنہیں انسان کو قبول کر کے عمل کرنا ہے سب کے سب اللہ ہی کی طرف سے واضح شکل میں موجود ہوں. کیونکہ اطاعت کا تصور تفصیلی حکم کے تصور کو لازم ہے تفصیلی حکم کے بغیر اطاعت کا فعل وجود ہی میں نہیں آ سکتا.

اس لئے یہ ضروری ہے کہ اطاعت کا مطالبہ کرنے والے نے اپنے احکام تفصیل کے ساتھ دے دئے ہوں. جیسے ہر حکومت اپنی اطاعت کرانے کے لئے جو حکم بھی جاری کرتی ہے ساتھ ہی اس کی پوری تفصیل بھی بتاتی ہے، اگر تفصیل نہ بتائی جائے تو ہر آدمی اپنی عقل کے مطابق عمل کرے گا مگر یہ حکومت کی اطاعت نہیں ہو سکتی ایک افراتفری ہوگی.

ایسے ہی اگر اللہ نے یہ حکم دیا ہے اقیموا الصلوٰۃ و آتوا الزکوٰۃ تو قرآن کے دعویٰ اور دستور کے مطابق اس کی تفصیل بھی قرآن میں ضروری ہے، اس لئے نماز زکوٰۃ وغیرہ کی تفصیل بھی قرآن میں موجود ہے ان آیات کے مطابق جن میں کہا گیا ہے کہ قرآن میں ہر بات کی تفصیل ہے جس کو اس مفہوم میں لکھا گیا ہے غور و فکر ضروری ہے.

یہ ہیں وہ ابہام جو تراجم میں سامنے آتے ہیں. جن کو پڑھ کر اپنے پریشان ہوتے ہیں. اور غیر الزام تراشی کرتے ہیں. ان ابہام کو دیکھ کر ہی یہ ''مفہوم القرآن'' لکھا گیا ہے. اس مفہوم کے بارے میں یہ چند ابتدائی باتیں لکھ دی گئیں ہیں ان کو اگر غور سے دیکھ لیا جائے گا تو یہ مفہوم اس لائق ہے کہ تقریباً سب ابہام ہی دور ہو جائیں گے. اللہ کرے ایسا ہو. اور اگر سب دور نہ ہو سکیں یا اس مفہوم میں کوئی ابہام نظر آئے تو کوئی اللہ کا نیک بندہ ان کو دور کر دے. مناظرہ کرنے کی کوشش نہ کرے. کام افہام و تفہیم سے چلتا ہے. شکریہ

سکندر احمد کمال
آدم نگر بروالی روڈ
علی گڑھ

प्रस्तावना

यह ब्रह्माण्ड जिसमें हम सब रहते है इसकी विशालता मानव के ज्ञान के बाहर की बात है, यदि कोई इसकी चर्म सीमा ज्ञात करना चाहे तो नही कर सकता। क्योंकि मानव के ज्ञान की एक सीमा, अंत है असीमित नही, विश्व की विशालता को असीमित ज्ञान वाला अस्तित्व ही अपने ज्ञान में ला सकता है और वह है ईश्वर.

ईश्वर ने इस विश्व में क्या, क्या और कैसे बनाया है अभी तक मानव उनको भी नही जान सका (36:36), और सम्भवतः भविष्य में भी पूरी तरह नही जान सकेगा, जिन रचनाओं को मानव जान सका है, उनमें अपना अस्तित्व, जिन्न और फरिश्ते भी है, इनके अतिरिक्त और रचनाओं को परलोक के लिए लेखा जोखा का कोई प्रसंग उपस्थित नही है, परन्तु मानव और जिन्न को प्लोक के लिए इस संसार में कर्म करने है, यह दुनिया एक परीक्षा का स्थान है और हर व्यक्ति जानता है कि जिसके लिए परीक्षा उपस्थित होती है उसको यह ज्ञान भी दिया जाता है कि तुम्हारी परीक्षा किन-किन विषय में होगी और उनकी जानकारी के लिए कोई पुस्तक भी होती है, स्कूल में हर कक्षा में एक निश्चित समय के बाद परीक्षा होती है, और जिस विषय में परीक्षा होती है, उसके नियमानुसार कोर्स की पुस्तकें होती है, उन पुस्तकों में हर जानकारी होती है, यदि वह पुस्तकें पूरे विस्तार के साथ समझने योग्य न होंगी तो फिर परीक्षा कैसी, विद्यार्थी की समझ में जब कोई लेख न आए तो फिर वह क्या याद करेगा, या यदि उन पुस्तकों को पढ़ाने वाला गुरू अनाड़ी हो और पुस्तकों में अन्तर हो तब भी विद्यार्थी कुछ नही जान सकता, तो सामने यह बात आई कि पुस्तकें भी समझने योग्य विस्तार के साथ हों और हर उस प्रश्न का उत्तर अंकित हो जो परीक्षा में आने वाला है, और उनको पढ़ाने वाला गुरू भी निपुण हो, इतने बड़े विश्व को ईश्वर ने बनाया है, परन्तु बहुत इन्सान ईश्वर का ही इन्कार करते है, कुछ उसको मानते है, यह मानना और न मानना इसलिए है कि ईश्वर ने इन्सान को अधिकार दिया है कि अच्छा करे या बुरा, परन्तु इस अच्छा या बुरा करने के बाद क्या होगा उसका ज्ञान भी दिया जाना अनिवार्य है, इसी प्रकार जैसे विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिए हर प्रश्न के उत्तर की जानकारी अनिवार्य है, अतः ईश्वर ने अपनी पुस्तकें अपने ईशदूतों के द्वारा मानव को ज्ञान प्राप्त करने के लिये दी, चूंकि इस मानव को सत्य मार्ग पर रहने के लिए इसकी आवश्यकता है, और इन पुस्तकों का सरल और विस्तार के साथ होना जिन में कोई अन्तर न हो हर समस्या, प्रश्न की जानकारी अंकित होना अनिवार्य था, तो ईश्वर ने अपना धर्म विधान पूरे विस्तार और हर शरायत के साथ अपनी पुस्तकों में अवतरित किया, इस पर समय के ईशदूतों और सामान्य इन्सानों ने व्यवहार किया जो सफल हो गए जिन्होंने व्यवहार न किया वह नाकाम हो गए

ईशदूतों और पुस्तकों का क्रम आखिर कभी तो समाप्त होना ही था सो वह मुहम्मद स0 पर कुरआन पुस्तक के साथ समाप्त हुआ, अब क्यामत तक न कोई नबी आना है और न कोई नई पुस्तक आनी है, जिसको मानना हो वह कुरआन को मान ले और मुहम्मद स0 को अन्तिम नबी मानते हुए उनका मार्ग ग्रहण कर ले, यही सफलता है, जैसा मैंने ऊपर लिखा है कि पुस्तक का सरल सविस्तार जिसमें हर प्रसंग का समाधान अंकित हो, होना अनिवार्य है, और इस पुस्तक को पढ़ाने वाले गुरू भी दक्ष और ईमानदार हों तब काम बनता है अवलोकन हो-

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم اما بعد

پیش لفظ

یہ کائنات جس میں ہم سب رہتے ہیں اس کی وسعت علم انسانی سے باہر کی بات ہے. اگر کوئی اس کی انتہا معلوم کرنا چاہے تو نہیں کر سکتا. کیونکہ علم انسانی کی ایک حد ہے اور وہ لامحدود نہیں. کائنات کی وسعت کو خالق کائنات ہی اپنے علم میں لا سکتا ہے اور وہ ہے اللہ.

اللہ نے اس کائنات میں کیا کیا اور کیسے بنایا ہے. ابھی تک انسان اُس کو بھی نہیں جان سکا (۳۶:۳۶). اور غالباً آئندہ بھی پوری طرح نہیں جان سکے گا. جن مخلوقات کو انسان جان سکا ہے اُن میں انسان کی اپنی ذات، جن اور فرشتے بھی ہیں، اِن کے علاوہ اور مخلوقات کو آخرت کے لئے حساب کتاب کا کوئی معاملہ درپیش نہیں ہے. مگر انسان اور جن کو آخرت کے لئے اس دنیا میں عمل کرنے ہیں. یہ دنیا ایک امتحان گاہ ہے اور ہر آدمی جانتا ہے کہ جس کے لئے امتحان درپیش ہوتا ہے اس کو یہ علم بھی دیا جاتا ہے کہ تمہارا امتحان کن چیزوں میں ہوگا اور اُن کی معلومات کے لئے کوئی کتاب بھی ہوتی ہے. اسکول میں ہر کلاس کا ایک مقرر وقت میں امتحان ہوتا ہے اور جس چیز کا امتحان ہوتا ہے اس کے لئے باقاعدہ کورس کی کتابیں ہوتی ہیں. ان کتابوں میں ہر معلومات ہوتی ہے. اگر وہ کتابیں پوری تفصیل کے ساتھ سمجھنے کے قابل نہ ہوں گی تو پھر امتحان کیسا؟ طالب علم کی سمجھ میں جب کوئی تحریر نہ آئے تو پھر وہ کیا یاد کرے گا. یا اگر اُن کتابوں کو پڑھانے والا استاد اناڑی ہو اور کتابوں میں اختلاف ہو تب بھی طالب علم کچھ نہیں جان سکتا، تو سامنے یہ بات آئی کہ کتابیں بھی قابل فہم تفصیل کے ساتھ ہوں اور ہر اس سوال کا جواب درج ہو جو امتحان میں آنے والا ہے. اور ان کو پڑھانے والے استاد بھی ماہر ہوں. اتنی بڑی کائنات کو اللہ نے بنایا ہے. لیکن بیشتر انسان اللہ کا ہی انکار کرتے ہیں. اور کچھ اس کو مانتے ہیں. یہ ماننا اور نہ ماننا اس لئے ہے کہ اللہ نے انسان کو اختیار دیا ہے. اچھا کرے یا بُرا. لیکن اس اچھا یا بُرا کرنے کے بعد کیا ہوگا اس کا علم بھی دیا جانا ضروری ہے. اسی طرح جیسے طالب علم کو امتحان میں بیٹھنے کے لئے ہر سوال کے جواب کی معلومات ضروری ہیں. اس لئے اللہ نے اپنی کتابیں اپنے نبیوں کے ذریعہ انسان کو معلومات حاصل کرنے کے لئے دیں. چونکہ اس انسان کو صحیح راہ پر رہنے کے لئے اس کی ضرورت ہے اور ان کتابوں کا آسان اور تفصیل کے ساتھ ہونا جن میں کوئی اختلاف نہ ہو ہر مسئلہ کی معلومات درج ہونا ضروری تھا، تو اللہ نے اپنی شریعت پوری تفصیل اور وضاحت کے ساتھ اپنی کتابوں میں نازل کی. اس پر وقت کے نبیوں اور عام انسانوں نے عمل کیا جو کامیاب ہو گئے. جنہوں نے عمل نہ کیا وہ ناکام ہو گئے.

نبیوں اور کتابوں کا سلسلہ آخر کبھی تو ختم ہونا ہی تھا سو وہ محمدؐ پر کتاب قرآن کے ساتھ ختم ہوا. اب قیامت تک نہ کوئی نبی آنا ہے اور نہ کوئی نئی کتاب آنی ہے. جس کو ماننا ہو وہ قرآن کو مان لے اور محمدؐ کو آخری نبی مانتے ہوئے اُن کی راہ اختیار کر لے یہی کامیابی ہے. جیسا میں نے اوپر لکھا ہے کہ کتاب کا آسان تفصیلی جس میں ہر مسئلہ کا حل درج ہو ہونا ضروری ہے اور اس کتاب کو پڑھانے والا استاد بھی ماہر اور ایمان دار ہو تب کام بنتا ہے. قرآن کے بارے میں اللہ کیا کہتا ہے ملاحظہ ہو.

(41:1,2,3,4) ऐ मुहम्मद स0 यह ईश्वर दयालु व कृपालु की ओर से अवतरित की हुई है, एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयात खूब खोलकर बयान की गई है, अरबी भाषा का उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते है, मंगल सूचना देने वाला और डराने वाला परन्तु उन लोगों में से अधिकांश ने इससे मुख फैरा और वह सुनकर नही देते,

(44:58) ऐ नबी हम ने इस पुस्तक को तुम्हारी भाषा में सरल बना दिया है, ताकि वह लोग शिक्षा प्राप्त करें,

(47:24) क्या उन लोगों ने कुरआन में विचार नही किया या दिलों पर उनके ताले चढ़े हुए है,

(12:111) अगले लोगों की इन कथाओं में बुद्धि व चेतना रखने वालों के लिए शिक्षा है, यह जो कुछ कुरआन में बयान किया जा रहा है यह बनावटी बातें नही है, अपितु जो पुस्तकें इससे पहले आई हुई है और जो सुरक्षा के दरमियान है उनकी पुष्टि है, और हर वस्तु का विस्तार और विश्वास लाने वालों के लिए पथ प्रदर्शन और करूणा है,

(10:37) और वह कुरआन व वस्तु नही है जो ईश्वर की वही व शिक्षा के बिना लिख लिया जाये, अपितु यह तो जो पहले आ चुका है जो सुरक्षा के मध्य है उसकी पुष्टि और अल किताब का विवरण है, इसमें कोई शक नही कि यह विश्व के शाषक की ओर से है,

(16:89) हमने यह पुस्तक तुम पर अवतरित कर दी है जो हर वस्तु की साफ साफ स्पष्टीकरण करने वाली है, और पथ प्रदर्शन करूणा और शुभ सूचना है उन लोगों के लिए जिन्होंने सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया है,

(4:82) क्या वह लोग कुरआन पर विचार नही करते? यदि यह ईश्वर के अतिरिक्त किसी ओर से होता तो इसमें बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता,

(39:54,55) पलट आओ अपने ईश्वर की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ इससे पहले कि तुम पर कष्ट आ जाये और फिर कहीं से तुम्हें सहायता न मिल सके और अनुसरण स्वीकार कर लो अपने रब की भेजी हुई अच्छी पुस्तक की पूर्व इसके कि तुम पर अचानक कष्ट आ जाए और तुमको सूचना भी न हो, मुहम्मद स0 के बारे में भी कुरआन से जानकारी मिलती है कि मुहम्मद स0 कुरआन का अनुसरण करते थे, इन शब्दों में कि ए मुहम्मद स0 कह दो कि मैं उसका अनुकरण करता हूं जो मेरे ऊपर वही किया जाता है और क्या अवतरित किया जाता है, यह कुरआन और कहा कि मुहम्मद स0 इस वही का अनुकरण करते है अपनी इच्छा का अनुकरण नही करते और कहा कि यदि मुहम्मद स0 हमारी वही के विरुद्ध कुछ अपनी ओर से कहें तो हम उसको कठोरता से पकड़कर उनकी गर्दन काट दें। ऐसी दशा में मुहम्मद स0 कुरआन के अनुकरण के अतिरिक्त कुछ कर सकते थे न कह सकते थे,

आयात बाला को पढ़ने से यह जानकारी मिल जाती है कि इन्सान को अपना अच्छा परिणाम बनाने के लिए जिस वस्तु की आवश्यकता है वह सब इस कुरआन में विस्तार के साथ अंकित है बिना किसी अन्तर के जो सरल है, जिनको हर आलिम अपने भाषण में बयान करता है, इस भाषण को सुनकर व्यक्ति कुरआन को पढ़ता है, कुरआन पढ़ने वालों की कुछ प्रकार है, एक तो वह है जो फल प्राप्त करने के लिए कुरआन में अंकित अरबी लेख को ही पढ़ता है, क्योंकि आलिमों ने बता रखा है कि एक अक्षर पढ़ने से दस नेकियां मिलती है, इसलिए यह व्यक्ति उपकार को प्राप्त करने के लिए केवल अरबी लेख को पढ़ना काफी समझता है, एक प्रकार वह होती है जो कुरआन को

(۴۱:۱،۲،۳،۴) اے محمدؐ یہ اللہ رحمٰن ورحیم کی طرف سے نازل کردہ ہے،ایک ایسی کتاب ہے جس کی آیات خوب کھول کر بیان کی گئی ہیں،عربی زبان کا ان لوگوں کے لئے جو علم رکھتے ہیں۔بشارت دینے والا اور ڈرانے والا مگر ان لوگوں میں سے اکثر نے اس سے روگردانی کی اور وہ سن کر نہیں دیتے۔

(۴۴:۵۸) اے نبی،ہم نے اس کتاب کو تمہاری زبان میں سہل بنا دیا ہے تا کہ وہ لوگ نصیحت حاصل کریں۔

(۴۷:۲۴) کیا ان لوگوں نے قرآن میں غور نہیں کیا،یا دلوں پر ان کے قفل چڑھے ہوئے ہیں۔

(۱۲:۱۱۱) اگلے لوگوں کے ان قصوں میں عقل وہوش رکھنے والوں کے لئے عبرت ہے یہ جو کچھ قرآن میں بیان کیا جا رہا ہے یہ بناوٹی باتیں نہیں ہیں بلکہ جو کتابیں اس سے پہلے آئی ہوئی ہیں اور جو حفاظت کے درمیان ہیں ان کی تصدیق ہے اور ہر چیز کی تفصیل اور ایمان لانے والوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے۔

(۱۰:۳۷) اور یہ قرآن وہ چیز نہیں ہے جو اللہ کی وحی وتعلیم کے بغیر تصنیف کرلیا جائے بلکہ یہ تو جو پہلے آچکا ہے جو حفاظت کے درمیان ہے اس کی تصدیق اور الکتاب کی تفصیل ہے۔اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ فرمارواۓ کائنات کی طرف سے ہے۔

(۱۶:۸۹) ہم نے یہ کتاب تم پر نازل کردی ہے جو ہر چیز کی صاف صاف وضاحت کرنے والی ہے اور ہدایت ورحمت اور بشارت ہے ان لوگوں کے لئے جنہوں نے سرتسلیم خم کردیا ہے

(۴:۸۲) کیا وہ لوگ قرآن پر غور نہیں کرتے؟ اگر یہ اللہ کے علاوہ کسی اور کی طرف سے ہوتا تو اس میں بہت کچھ اختلاف بیانی پائی جاتی۔

(۳۹:۵۴،۵۵) پلٹ آؤ اپنے رب کی طرف اور مطیع بن جاؤ اس کے قبل کہ تم پر عذاب آجائے اور پھر کہیں سے تمہیں مدد نہ مل سکے اور پیروی اختیار کرلو اپنے رب کی بھیجی ہوئی اچھی کتاب کی قبل اس کے کہ تم پر اچانک عذاب آجائے اور تم کو خبر بھی نہ ہو۔

محمدؐ کے بارے میں بھی قرآن سے معلومات حاصل ہوتی ہے کہ محمدؐ پورے کے پورے قرآن کی پیروی کرتے تھے ان الفاظ میں کہ اے محمدؐ کہہ دو کہ میں اس کی پیروی کرتا ہوں۔جو میرے اوپر وحی کیا جاتا ہے اور کیا نازل کیا جاتا ہے یہ قرآن۔اور کہا کہ محمدؐ اس وحی کی پیروی کرتے ہیں اپنی خواہش کی پیروی نہیں کرتے۔اور کہا کہ اگر محمدؐ ہماری وحی کے خلاف کچھ اپنی طرف سے کہیں تو ہم اس کو سختی سے پکڑ کر ان کی گردن کاٹ دیں۔ایسی حالت میں محمدؐ قرآن کی پیروی کے علاوہ نہ کچھ کر سکتے تھے نہ کہہ سکتے تھے

آیات بالا کو پڑھنے سے یہ علم حاصل ہو جاتا ہے کہ انسان کو اپنی اچھی آخرت بنانے کے لئے جس چیز کی ضرورت ہے وہ سب اس قرآن میں تفصیل کے ساتھ درج ہیں بنا کسی اختلاف کے جو آسان ہیں۔جن کو ہر عالم اپنی تقریر میں بیان کرتا ہے۔اس بیان کو سن کر آدمی قرآن کو پڑھتا ہے۔قرآن پڑھنے والوں کی کچھ قسمیں ہیں۔ایک تو وہ ہے جو ثواب حاصل کرنے کے لئے قرآن میں درج عربی متن کو ہی پڑھتا ہے۔کیونکہ عالموں نے بتا رکھا ہے کہ ایک حرف پڑھنے سے دس نیکیاں ملتی ہیں اس لئے یہ آدمی نیکیوں کو حاصل کرنے کے لئے صرف عربی عبارت کو ہی پڑھنا کافی سمجھتا ہے ایک قسم وہ ہوتی ہے جو قرآن کو ترجمے کے

अनुवाद के साथ पढ़ता तो है परन्तु उसका उद्देश्य कुछ जानकारी प्राप्त करके वितर्क करना होता है, कर्म से कोई लेना देना नही, एक प्रकार ऐसी भी है जो पढ़ती ही नही,

परन्तु एक प्रकार ऐसी है जो कुरआन को समझकर कर्म करने के लिए पढ़ती है, परन्तु उसकी गाड़ी रुक जाती है? क्योंकि प्रचलित कुरआन के अनुवादों और टीकाओं में काफी जगह अनुवाद मूल अरबी लेख से विरोध करता है, जब वह व्यक्ति ऐसे स्थान पर पहुंचता है तो रुकता है और यह सोचता है कि हो सकता है कि मेरी समझ में बात न आई हो तो वह आलिम के पास जाता है तो आलिम उसे बताता है कि कुरआन को ऐसे न समझो अपितु हदीस और अवतर्ण महिमा (शाने नजूल) से समझो क्योंकि कुरआन कठिन है और विवरण के साथ नही, अतः जो अर्थ शाने नजूल और हदीस से आता हो वह आयत का अनुवाद है मानों कुरआन पर हदीस और अवतरण महिमा निर्णायक है परन्तु ऐसा नही है,

जब ध्यान से देखा जाता है तो यह नियम मिथ्या सिद्ध होता है और कुरआन का अर्थ इनके बिना ही स्पष्ट होता है, परन्तु इसको माना नही जाता और कहा जाता है कि यह नीति अनुचित है, जो विधि नबी ने निश्चित कर दी है वह ठीक है और उसको ही आलिमों ने लिखा है, मानो एक आरोप नबी पर भी लगा दिया गया है कि आयत का अर्थ नबी ने लेख से हट कर बताया है (नआजु बिल्लाह) और प्रमाण भी अपने विभेद से प्रस्तुत कर दिया, मसलन (2:102) में हारूत व मारूत को कोई फरिश्ता बताता है कोई शैतान और आयत में अंकित अक्षर "मा" को कोई नाफिया बताता है और कोई मोसूला, ऐसे ही कुरआन की आयत (9:80) में ईश्वर ने कहा है कि ऐ रसूल कपटियों के लिए आप क्षमा न मांगे, यदि आप उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा मांगेंगे तो फिर भी ईश्वर उनको क्षमा न करेगा, इस आदेश को नबी ने आदेश न माना जो हदीस में अंकित है और नबी की ओर यह सम्बन्धित किया है कि नबी स0 ने कहा मुझे अधिकार दिया गया है कि चाहे तो क्षमा मांगे या न मांगे, और फिर आपने कपटि की नमाज अर्थी पढ़ दी, परन्तु उमर र0 ने नबी स0 से नमाज़ पढ़ने को मना किया और कहा कि ईश्वर ने कपटियों की नमाज अर्थी और क्षमा मांगने को मना किया है, जिसका समर्थन (9:84) में हो रहा है, यद्यपि (9:80) से ही स्पष्ट इनकार है परन्तु जो अहादीस में लिख दिया गया है उससे यह सिद्ध हो रहा है मानों नबी स0 के मुकाबिले में ईश्वर ने उमर र0 के विवेक के अनुसार निर्णय दिया मानो नबी स0 के विवेक से उमर र0 का विवेक कुरआन का भावार्थ समझने में अधिक था (नआजु बिल्लाह) ऐसा नही है अपितु नबी स0 ने ही कपटि के लिए न क्षमा की प्रार्थना की और न नमाज़ अर्थी पढ़ाई, नमाज़ अर्थी पढ़ने को लिखना नबी स0 पर एक आरोप है,

ऐसे ही और बहुत जगह लिखा मिलता है जो नबी स0 की प्रतिष्ठा में अशिष्टता है।

या जैसे सूरत "साद" की आयत (32) में कोई सूर्य छुपने की बात करता है और कोई घोड़े नज़रों से औझल होने की और साथ में एक दल कहता है कि उन घोड़ों को सुलेमान अ0 ने वध कर दिया और एक दल कहता है कि ऐसा नही अपितु प्रेम से उन पर हाथ फेरा, इसी सूरत की आयत 35 में महामना सुलेमान अ0 से सम्बोधित किया है कि ईश्वर मुझे ऐसा देश दे जो मेरे बाद किसी को न मिले, यह भी अनुवाद अरबी लेख से हठ कर है, क्योंकि कोई नबी या आस्तिक अपने लिये जो अच्छाई मांगता है वह दूसरों के लिए भी चाहता है न कि अपने अतिरिक्त और सब के लिए प्रतिबन्ध की प्रार्थना करे, ऐसे ही श्रीमान सुलेमान अ0 ने ऐसी प्रार्थना नही करी जो करी थी वह अपने स्थान पर लिखी जाएगी और भी बहुत आयात है जिनके अनुवाद में मतभेद है और कहा यह जाता है कि सबको नबी स0 ने ही बताया है मानों विरोधाभास (नाऊजुबिल्लाह) इमाम अबु हनीफा र0 का भी एक

कथन सुन लीजिए उन्होंने कहा कि हम यह भलिभांति जानते हैं कि मुहम्मद स0 ने एक आयात की तफ़सीर एक ही फरमाई है अनेक नही, मैंने भी कुरआन को समझने के लिए अरबी भाषा सीखी भाषा की जानकारी के बाद कुरआन को पढ़ा इसलिए कि समझूं और कर्म करूं, परन्तु मुझे बड़ी व्याकुलता हुई, आलिमों के अनुवाद में काफ़ी स्थान पर मतभेद मिला जबकि कुरआन में मतभेद नही है, इस व्याकुलता को लेकर मैं भी आलिमों के पास गया और अपनी बात रखी, परन्तु उन्होंने वही बात बताई जो मैं ऊपर लिख आया हूँ। उनका उत्तर सुनकर काफ़ी व्याकुल हुआ क्योंकि ईश्वर की घोषणा के विपरीत उनका उत्तर है, फिर भी उनसे कहा हज़रत कुरआन का एक अनुवाद जो आसान, लेख के अनुसार और जिस पर सब सहमत हों परामर्श गृह में करके जाति को दिया जाये, और हर भाषा में किया जाये जिसको जाति भी पढ़े और दूसरे भी पढ़ें और वह अनुवाद ऐसा हो कि अपने पराए उपहास व्यंग न बनाऐं परन्तु उन्होंने इस बात को स्वीकार नही किया, और इस मतभेद को उचित बताया और हर अनुवाद को भी ठीक बताया,

ऐसी स्थिति में जो व्यक्ति समझना चाहता हो वह क्या करेगा? यही कि हिम्मत हार कर बैठ जायेगा और जो उसकी समझ में आएगा वह करेगा या किसी इमाम का अनुकरण करेगा, परन्तु यह बात ठीक नही है, क्योंकि यह कुरआन में अंकित आदेशों के विपरीत है, कुरआन का उचित भावार्थ दुनिया के सामने आना अनिवार्य है,

आलिमों का यह भी कहना है कि कुरआन में नमाज़, ज़कात आदि का विवरण नही परन्तु कुरआन कहता है कि मेरे अन्दर हर जरूरी चीज़ की तफ़सील है, इस आयात को जब आलिमों के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो आलिमों का उत्तर यह होता है, बताओ नमाज़ की 2-3-4 रकआत कुरआन में कहां है, निःसन्देह नही मगर क्या यह 2-3 रकआत उचित है? या जो ज़कात दी जा रही है वह कुरआन के अनुसार है? कुरआन में तो वह मिलेगा जो कुरआन में है इसलिए भी कुरआन का समझना अनिवार्य है, इन बातों को देखा जाये, परन्तु देखने के लिये कोई तैयार नही मानों दिलों पर ताले लगे हैं।

अब तक मेरी दृष्टि से जितने अनुवाद गुज़रे हैं उनमें कतिपय आयात के अनुवाद या उनकी व्याख्या के स्पष्ट भाव में कुछ अन्तर नज़र आता है, और प्राचीन टीकाकारों अनुवादकों के दृष्टिकोण को सामने रखकर जानते हुए या अचेतना में आयात के स्पष्ट अर्थ से विमुखता प्रतीत होती है।

निकट की पांच, छ पंक्तियों को पढ़कर लगभग हर वह व्यक्ति जो किसी न किसी आलिम से आस्था रखता होगा रूष्ट होगा, परन्तु थोड़ी देर के लिए न्याय के साथ विचार कीजिये कि जहां दो व्यक्तियों या अधिक व्यक्तियों में मतभेद हो और हर व्यक्ति अलग अलग बात कहता हो तो स्पष्ट है उस विषय में और वह भी कुरआन में किसी एक व्यक्ति की बात ही सत्य हो सकती है, या फिर उनमें से किसी एक का कथन भी सत्य न होगा, वास्तविकता कुछ और होगी, तो ऐसी स्थिति में जब कोई व्यक्ति यह कह कर बात प्रस्तुत करेगा कि कुरआन के प्रकाश में यह कथन सत्य है तो ऐसी स्थिति में किसी एक की बात से सहमती होगी या फिर सबसे पृथक व बात होगी, यह तब ही तो होगा जब सबकी बातों को अनुचित माना जाऐगा जो वास्तविकता है, फिर आपत्ति करने वालों के लिए अनिवार्य हो जाता है कि ईमानदारी के साथ कुरआन के प्रकाश में देखें, बस यही मेरा कहना है कि मेरी आलोचना पर नाराज़ न हो जाओ मैं किसी का विरोधी नही हूं, न ही प्राचीन और नवीन आलिमों की आलोचना करना मेरा उद्देश्य है और मैं उन सब आलिमों को विश्वासपात्र (मुख़लिस) मानता हूं हो सकता है कि

قول سن لیجئے. انہوں نے فرمایا ہے کہ ہم یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ محمدؐ نے ایک آیت کی تفسیر ایک ہی فرمائی ہے مختلف نہیں. میں نے بھی قرآن کو سمجھنے کے لئے عربی زبان سیکھی. زبان کا علم حاصل کرنے کے بعد قرآن کو پڑھا. اس لئے کہ سمجھوں اور عمل کروں. لیکن مجھے بڑی پریشانی ہوئی. عالموں کے ترجموں میں کافی جگہ اختلاف ملا. جب کہ قرآن میں اختلاف نہیں ہے. اس پریشانی کو لے کر میں بھی عالموں کے پاس گیا اور اپنی بات رکھی. مگر انہوں نے وہی بات بتائی جو میں اوپر لکھ آیا ہوں. اُن کا جواب سن کر کافی پریشان ہوا. کیونکہ اللہ کے فرمان کے خلاف ان کا جواب ہے. پھر بھی ان سے کہا کہ حضرت قرآن کا ایک ترجمہ جو آسان، متن کے مطابق اور جس پر سب کا اتفاق ہو شوریٰ میں کر کے قوم کو دیا جائے اور ہر زبان میں کیا جائے جس کو قوم بھی پڑھے اور دوسرے بھی پڑھیں اور وہ ترجمہ ایسا ہو کہ اپنے اور پرائے مذاق نہ بنائیں. مگر انہوں نے اس بات کو تسلیم نہیں کیا اور اس اختلاف کو درست بتایا اور ہر ترجمہ کو بھی صحیح بتایا.

ایسی حالت میں جو آدمی سمجھنا چاہتا ہو وہ کیا کرے گا؟ یہی کہ ہمت ہار کر بیٹھ جائے گا، اور جو اس کی سمجھ میں آئے گا وہ کرے گا یا کسی امام کی تقلید کرے گا. لیکن یہ بات ٹھیک نہیں ہے. کیونکہ یہ قرآن میں درج احکام کے خلاف ہے. قرآن کا صحیح مفہوم دنیا کے سامنے آنا ضروری ہے.

عالموں کا یہ بھی کہنا ہے کہ قرآن میں نماز، زکوٰۃ وغیرہ کی تفصیل نہیں لیکن قرآن کہتا ہے کہ میرے اندر ہر ضروری چیز کی تفصیل ہے. اس آیت کو جب عالموں کے سامنے پیش کیا جاتا ہے تو عالمون کا جواب یہ ہوتا ہے. بتاؤ نماز کی ۲-۳- چار رکعت قرآن میں کہاں ہیں، یقیناً نہیں مگر کیا یہ ۲-۳ رکعت صحیح ہیں؟ یا جو زکوٰۃ دی جا رہی ہے وہ قرآن کے مطابق ہے؟ قرآن میں تو وہ ملے گا جو قرآن میں ہے. اس لئے بھی قرآن فہمی ضروری ہے. ان باتوں کو دیکھا جائے مگر دیکھنے کے لئے کوئی تیار نہیں گویا دلوں پر تالے لگے ہیں.

اب تک میری نظر سے جتنے ترجمے گذرے ہیں ان میں بعض آیات کے ترجمے یا ان کی تشریح کے واضح مفہوم میں کچھ فرق نظر آتا ہے. اور پُرانے مفسرین اور مترجمین کے نظریات کو سامنے رکھ کر شعوری یا غیر شعوری طور پر آیات کے واضح مفہوم سے انحراف نظر آتا ہے.

قریب کی پانچ چھ لائنوں کو پڑھ کر تقریباً ہر وہ آدمی جو کسی نہ کسی عالم سے عقیدت رکھتا ہوگا ناراض ہوگا. مگر تھوڑی دیر کے لئے انصاف کے ساتھ غور کیجئے کہ جہاں دو آدمیوں یا زیادہ آدمیوں میں اختلاف ہو اور ہر آدمی الگ الگ بات کہتا ہو تو ظاہر ہے اس معاملہ میں اور وہ بھی قرآن میں کسی ایک آدمی کی بات ہی درست ہو سکتی ہے. یا پھر ان میں سے کسی ایک کا قول بھی درست نہ ہوگا. حقیقت کچھ اور ہوگی تو ایسی حالت میں جب کوئی آدمی یہ کہہ کر بات پیش کرے گا کہ قرآن کی روشنی میں یہ بات صحیح ہے تو ایسی حالت میں کسی ایک کی بات سے اتفاق ہوگا یا پھر سب سے الگ وہ بات ہوگی. یہ تب ہی تو ہوگا جب سب کی باتوں کو غلط مانا جائے گا جو حقیقت ہے. پھر اعتراض کرنے والے کے لئے ضروری ہو جاتا ہے کہ ایمانداری کے ساتھ قرآن کی روشنی میں دیکھے بس یہی میرا کہنا ہے کہ میری تنقید پر ناراض نہ ہو جانا میں کسی کا مخالف نہیں ہوں، نہ ہی قدیم اور جدید عالموں کی تنقید کرنا میرا مقصد ہے اور میں ان سب عالموں کو مخلص مانتا ہوں.

उन्होंने ऐसी बात न कही हो, मैं तो बस यह चाहता हूं कि सत्य बात सामने आये आप स्वयं ही विचार करें, अधिकांश आयात में व्याकरण से काफी हद तक अनदेखी की गई है, मसलन भविष्य और वर्तमान को भूत या भूत काल को भविष्य, उपस्थित को अनुपस्थित या अनुपस्थित को वर्तमान, जैसे यसअलूनका का अनुवाद किया गया है कि यह आपसे पूछते हैं जो आयात अंकित करनी है वह नीचे अवलोकन हो,

(17:47,48) जिस उद्देश्य से वह लोग इसे सुनते हैं उनकी इच्छा को हम भलीभांति जानते हैं, जब वह आपकी ओर कान लगाए हुए होते हैं तब भी और जब वह परामर्श करते हैं तब भी जबकि वह अत्याचारी कहते हैं कि इसके अनुकरण में लगे हो जिस पर जादू कर दिया गया है, ऐ रसूल देखो तो आपके लिए क्या क्या उपमाऐं बयान करते हैं बस वह बहक गए हैं मार्ग नहीं पा सकते,

(25:8,9) और ज़ालिमों ने कहा कि तुम ऐसे व्यक्ति के पीछे हो लिए जिस पर जादू कर दिया गया, ऐ मुहम्मद देखो तो वह लोग आपके बारे में कैसी कैसी बातें बनाते हैं, सो वह पथ भ्रष्ट हो गए अब उन्हें (जो ईशदूत को जादू ज़दा कहते हैं) सत्य मार्ग नहीं मिल सकता,

इन आयात में कहा गया है कि नास्तिक लोग रसूल को जादू ज़दा कहते थे तो ईश्वर ने कहा कि वह पथ भ्रष्ट हो गए हैं उनको मार्ग नहीं मिल सकता, परन्तु हमारे ज्ञानी फरमाते हैं कि मुहम्मद स० पर जादू हो गया था और लगभग एक वर्ष तक रहा, अब विचार करना चाहिए कि ज्ञानी नबी स० को जादू ज़दा कह रहे हैं और ईश्वर कहता है कि जो नबी को जादू ज़दा कहता है वह पथ भ्रष्ट है तो हमारे ज्ञान और उनकी बात को मानने वाले कौन हुए,

(53:38,39) कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे का भार न उठाएगा, और यह कि हर व्यक्ति के लिए केवल वही है जिसका प्रयत्न स्वयं उसने किया, कुरआन की स्पष्ट आयात है परन्तु ज्ञानी कहते हैं कि हर व्यक्ति अपने कर्म का फल दूसरे को दे सकता है,

(54:1,2) क़यामत निकट आ गई और चान्द फट जाएगा और यदि वह लोग कोई चमत्कार देखेंगे तो कह देंगे कि यह पहले से चला आता है, अर्थात् आयत में जो बताया गया वह भविष्य के विषय में बताया गया है, परन्तु अनुवाद किया गया है कि चान्द फट गया और चमत्कार देखते हैं तो मुख फैर लेते हैं, मानों भविष्य का अनुवाद भूतकाल में किया,

या जैसे (4:159) पुस्तक वालों में एक भी न बचेगा जो श्रीमान ईसा अ० की मृत्यु से पहले उन पर विश्वास न ला चुके, दूसरा अनुवाद यह किया गया है, पुस्तक वालों में से कोई भी न बचेगा जो अपनी मौत से पहले ईसा अ० पर विश्वास न ला चुकेगा, परन्तु दोनों अनुवाद ही विचारणीय हैं, सत्य क्या है बस अपने स्थान पर अवलोकन हो,

इन आयात में विभिन्न अनुवाद किए गए हैं या जो अनुचित बात कही गई उन पर किसी को क्रोध नहीं आया और जो यह कहता है कि जो कहा गया है वह कुरआन और रसूल पर आरोप है और उचित बात यह है उस पर लोगों को क्रोध आ रहा है, यह तो विचित्र बात है, क्या कभी विचार किया है? या जैसे तलाक का प्रसंग है आज तक ज्ञानी यह निश्चित न कर सके कि एक साथ तीन तलाक ठीक है या एक, और तीन माह की प्रतीक्षा करना है, या हर पवित्रता में हर माह के बाद तलाक देनी है या मुतल्लका को नान नफका देना है या नहीं, हलाला वैध है या नहीं, दान कितना देना है, या नबी स० ने कोई कर्म ऐसा किया जिसकी जानकारी न थी और करने के बाद ईश्वर की ओर से ताड़ना आई जैसे शहद या मारया को अवैध करना या अन्धो पर नाराज़ होना, महामना याकूब अ० महामना इब्राहीम अ० के पुत्र हैं या पोते, इसराईल ने अपने ऊपर कुछ अवैध कर लिया था या ना, या महामना ईसा अ० जीवित हैं या वफात पा चुके क्या वह

ہوسکتا ہے کہ انہوں نے ایسی بات نہ کہی ہو. میں تو بس یہ چاہتا ہوں کہ صحیح بات سامنے آئے.آپ خود ہی غور کریں.اکثر آیات میں صرف ونحو سے کافی حد تک صرف نظر کی گئی ہے مثلاً مستقبل حاضر کو غائب یا غائب کو حاضر جیسے یسئلونک کا ترجمہ کیا گیا ہے کہ یہ آپ سے پوچھتے ہیں.جوآیات درج کرنی ہیں وہ ذیل میں ملاحظہ ہوں.

(۱۷:۴۷، ۴۸) جس غرض سے وہ لوگ اسے سنتے ہیں اُن کی نیتوں کو ہم خوب جانتے ہیں. جب وہ آپ کی طرف کان لگائے ہوئے ہوتے ہیں تب بھی اور جب وہ مشورہ کرتے ہیں تب بھی. جب کہ وہ ظالم کہتے ہیں کہ اس کی تابعداری میں لگے ہو جس پر جادو کر دیا گیا ہے.اے رسولؐ غور کرو آپ کے لئے کیا کیا مثالیں بیان کرتے ہیں بس وہ بہک گئے ہیں اب راہ نہیں پا سکتے.

(۲۵:۸، ۹)اور ظالموں نے کہا کہ تم ایسے آدمی کے پیچھے ہو لئے جس پر جادو کر دیا گیا ہے.اے محمدؐ خیال تو کیجئے کہ وہ لوگ آپ کی نسبت کیسی کیسی باتیں بناتے ہیں،سو وہ گمراہ ہو گئے.اب اُنہیں (جو اللہ کے رسول کو جادو زدہ کہتے ہیں) راہِ حق نہیں مل سکتی.

ان آیات میں کہا گیا ہے کہ کافر لوگ رسول کو جادو زدہ کہتے تھے تو اللہ نے کہا کہ وہ گمراہ ہو گئے ہیں ان کو راہ نہیں مل سکتی لیکن ہمارے علما کرام فرماتے ہیں کہ محمدؐ پر جادو ہو گیا تھا اور تقریباً ایک سال تک رہا.اب مقام غور ہے کہ علماء کرام نبی کو جادو زدہ کہہ رہے ہیں اور اللہ کہتا ہے کہ جو نبیؐ کو جادو زدہ کہتا ہے وہ گمراہ ہے تو ہمارے علماء کرام اور ان کی بات کو ماننے والے کون ہوئے؟

(۵۳:۳۸) کہ کوئی شخص کسی دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گا.اور یہ کہ ہر انسان کے لئے صرف وہی ہے جس کی کوشش خود اس نے کی.قرآن کی صاف آیات ہیں.لیکن علماء کرام کہتے ہیں کہ ہر آدمی اپنے عمل کا ثواب دوسرے کو دے سکتا ہے.

(۵۴:۱،۲) قیامت قریب آ گئی اور چاند پھٹ جائے گا.اور اگر وہ لوگ کوئی معجزہ دیکھیں گے تو کہہ دیں گے کہ یہ پہلے سے چلا آتا ہے یعنی آیت میں جو بتایا گیا ہے وہ مستقبل کے بارے میں بتایا گیا ہے.مگر ترجمہ کیا گیا ہے کہ چاند پھٹ گیا اور معجزہ دیکھتے ہیں تو منہ پھیر لیتے ہیں.گویا مستقبل کا ترجمہ ماضی کیا.

یا جیسے (۴:۱۵۹)اہلِ کتاب میں ایک بھی نہ بچے گا جو حضرت عیسیٰؑ کی موت سے پہلے ان پر ایمان نہ لا چکے.دوسرا ترجمہ یہ کیا گیا ہے.اہل کتاب میں سے کوئی بھی نہ بچے گا جو اپنی موت سے پہلے عیسیٰؑ پر ایمان نہ لا چکے گا.مگر دونوں ہی ترجمے محل نظر ہیں.صحیح کیا ہے وہ اپنی جگہ پر ملاحظہ ہو.

ان آیات میں مختلف ترجمے کئے گئے ہیں.یا جو غلط بات کہی گئی ہے ان پر کسی کو غصہ نہیں آیا.اور جو یہ کہتا ہے کہ جو کہا گیا ہے وہ قرآن اور رسولؐ پر الزام ہے اور صحیح بات یہ ہے اس پر غصہ آتا ہے یہ تو عجیب بات ہے کیا کبھی غور کیا ہے؟ یا جیسے طلاق کا مسئلہ ہے آج تک علماء کرام یہ طے نہ کر سکے کہ ایک ساتھ تین طلاق ٹھیک ہیں یا ایک،اور تین ماہ کا انتظار کرنا ہے،یا ہر پاکی میں ہر ماہ کے بعد طلاق دینی ہے یا مطلقہ کو نان نفقہ دینا ہے یا نہیں.حلالہ جائز ہے یا نہیں.زکوٰۃ کتنی دینی ہے یا نبیؐ نے کوئی کام ایسا کیا جس کی معلومات نہ تھی اور کرنے کے بعد اللہ کی طرف سے تنبیہ آئی جیسے شہد یا ماریہ کو حرام کرنا یا نابینا پر ترش رو ہونا.حضرت یعقوبؑ حضرت ابراہیمؑ کے بیٹے ہیں یا پوتے اسرائیل نے اپنے اوپر کچھ حرام کر لیا تھا یا نہ.یا حضرت عیسیٰؑ زندہ ہیں یا وفات پا چکے،کیا وہ قرب قیامت واپس

क्यामत के निकट वापस आयेंगे या ना, कुरआन में कितनी आयात निरस्त हैं या कोई भी नही, क्या ईश्वर के फैसले बदल जाते हैं? यदि नही तो फिर निरस्त, निरसक क्यों, ईश्वर के फैसले नही बदलते, क्या शादी शुदा का दण्ड संगसार है या कोड़े, नमाज़ को दरमियानी ध्वनि से पढ़ा जाना है या कुछ नमाज़ों को चुपके चुपके,

नबी स० के विवाह में कितनी पत्नियां थीं, नौ, ग्यारह, तेराह या तैंईस या केवल छ निकाह हुए और दो का देहान्त हो गया था तो एक समय में चार थी, क्या नबी स० के यहां कोई ऐसी दासी (अनुचरी) थी जिससे बिना विवाह के मैथुन के सम्बन्ध थे, कुरआन सामान्य स्थिति के लिए एक साथ कितने विवाह की अनुमति देता है और हंगामी स्थिति के लिए कितने विवाह की अनुमति है, क्या मामलाकत ऐमान से बिना विवाह के मैथुन किया जा सकता है या नही और मामलाकत ऐमान है क्या, क्या जाति का मतभेद अनुकम्पा है, और क्या ईश्वर मतभेद की अनुमति देता है कि इस अनुमति से अलग अलग धर्म विधान बनाकर सम्प्रदाय बनाए जाऐं और अलग अलग राज्य स्थापित किए जाऐं या हिदायत और गुमराही ईश्वर की ओर से है या मानव के अपने कर्म पर है, क्या गोत्र वंश पर गर्व करना उचित है अर्थात छोटी जात बिरादरी बताकर ऊंच नीच करना किसी को नीच बताना और कोई अपने को भद्र बताए इस प्रकार की बहुत सी समस्याऐं हैं जो इस मरबूत मफहूमुल कुरआन में आयात के प्रकाश में लिखे गए हैं जिनकी जानकारी पढ़ने के बाद ही हो सकती है और क्या श्रीमती आयशा र० पर लानछन लगा था?

इतना मतभेद जो कुरआन और नबी स० की रीति के बिलकुल विपरीत है सामने आने के बाद चुप होकर बैठना भी अनुचित है तो फिर क्या किया जाए? क्यों कि अब तक अज्ञात कितने अनुवाद और तफसीर हो चुकी हैं जिनकी प्रतियों की संख्या बहुत है जो काफी पृष्ठों में लिखी हैं और सब में विरोधाभास है, क्योंकि हर आलिम ने अपनी आस्था को सामने रखा, ऐसी स्थिति में पढ़ने वाला उचित बात निश्चित नही कर पाएगा और अन्त में अपनी आस्था वाले आलिम के लेख को पढ़कर ही कर्म करेगा जो विरोधाभासी होगा जो आए दिन हमारे सामने है, एक पंथ वाला दूसरे पंथ वाले को काफिर कहता है, वध करता है, एक दूसरे के पीछे नमाज़ नही पढ़ता, ऐसी स्थिति में यह अनिवार्य है कि एक सरल सुबोध भावार्थ सामने आए और हर समस्या अपने स्थान पर आयात के प्रकाश में लिख दी जाए जिससे कर्म कुरआन के अनुसार करने में आसानी हो और किसी पंथ से प्रभावित न हो, यद्यपि किसी नवीन अनुवाद की क्यों आवश्यकता हो जबकि पहले ही बहुत अनुवाद हैं फिर क्यों समय और पैसा नष्ट किया जाए और एक नवीन अनुवाद की बढ़ोत्तरी की जाए जबकि हर भाषा में अनुवाद विद्यमान हैं, इस बात का उत्तर दृष्टिगत "आसान मफहूमुल कुरआन" में मिलेगा, यदि यह प्रकाशित होकर (सार्वजनिक) मनज़रे आम पर आ गया, क्योंकि इतना महत्वपूर्ण कार्य करना कोई आसान कार्य नही, तथापि हर जटिलता का सामना करते हुए एक "आसान मफहूमुल कुरआन" संपादित किया है, जिसके लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि कोई कारण ऐसा बने कि वह प्रकाशित हो जाए क्योंकि मेरे पास पैसे की कमी है, वैसे ईश्वर का कोष बहुत बड़ा है उसमें क्या है किसी को पता नही, और ईश्वर अपने कार्य कैसे कराता है यह भी किसी को ज्ञात नही, बस हो जाते हैं, जैसे महामना मूसा का पालन पोषण शत्रु के घर में ही करा दिया, और ईश्वर के यहां हर कार्य का एक समय निश्चित है जो उसने कर दिया है, जब उसके प्रकट होने का समय आता है तो ईश्वर इतना आदेश करता है कि अब हो जा और

آئیں گے یا قرآن میں کتنی آیات منسوخ ہیں یا کوئی بھی نہیں. کیا اللہ کے فیصلے بدل جاتے ہیں؟ اگر نہیں تو پھر ناسخ منسوخ کیوں. اللہ کے فیصلے نہیں بدلتے. کیا شادی شدہ کی سزا سنگ سار ہے یا کوڑے. نماز کو درمیانی آواز سے پڑھا جانا ہے یا کچھ نمازوں کو چپکے چپکے.

نبیؐ کے نکاح میں کتنی بیویاں تھیں. نو، گیارہ، تیرہ یا تئیس یا صرف چھ نکاح ہوئے اور دو کا انتقال ہو گیا تھا. تو بیک وقت چار تھیں. کیا نبیؐ کے یہاں کوئی ایسی کنیز تھی جس سے بنا نکاح کے مباشرت کے تعلق تھے. قرآن عام حالات کے لئے ایک ساتھ کتنے نکاح کی اجازت دیتا ہے. اور ہنگامی حالات کے لئے کتنے نکاح کی اجازت ہے. کیا ماملکت ایمان سے بنا نکاح کے مباشرت کی جا سکتی ہے یا نہیں. اور ماملکت ایمان ہے کیا. کیا اختلاف امت رحمت ہے. اور کیا اللہ اختلاف کی اجازت دیتا ہے. کہ اس اجازت سے الگ الگ فقہ بنا کر فرقے بنائے جائیں. اور الگ الگ حکومت قائم کی جائیں یا ہدایت اور گمراہی اللہ کی طرف سے ہے. یا انسان کے اپنے عمل پر ہے. کیا حسب نسب پر فخر کرنا درست ہے یعنی چھوٹی بڑی ذات برادری بنا کر اونچ نیچ کرنا کسی کو ذلیل بتانا اور کوئی اپنے کو شریف بتائے.

اس طرح کے بہت سے مسائل ہیں جو اس مربوط مفہوم القرآن میں آیات کی روشنی میں لکھے گئے ہیں. جن کی معلومات پڑھنے کے بعد ہی ہو سکتی ہے. اور کیا حضرت عائشہؓ پر تہمت لگی تھی؟

اتنا اختلاف! جو قرآن اور نبیؐ کے طریقے کے بالکل خلاف ہے سامنے آنے کے بعد خاموش ہو کر بیٹھنا بھی غلط ہے. تو پھر کیا کیا جائے؟ کیونکہ اب تک نہ معلوم کتنے تراجم اور تفاسیر ہو چکی ہیں جن کی جلدوں کی تعداد بہت ہے. جو کافی صفحات میں لکھی ہیں اور سب میں اختلاف ہے کیونکہ کہ ہر عالم نے اپنے عقیدے کو سامنے رکھا ہے. ایسی حالت میں پڑھنے والا صحیح بات طے نہیں کر پائے گا. اور آخیر میں اپنے عقیدے والے عالم کی تصنیف کو پڑھ کر ہی عمل کرے گا. جو اختلافی ہوگا جو آئے دن ہمارے سامنے ہے. ایک مسلک والا دوسرے مسلک والے کو کافر کہتا ہے. قتل کرتا ہے ایک دوسرے کے پیچھے نماز نہیں پڑھتا ایسی حالت میں یہ ضروری ہے کہ ایک آسان سلیس مفہوم سامنے آئے اور ہر مسئلہ اپنی جگہ پر آیات کی روشنی میں لکھ دیا جائے جس سے عمل قرآن کے مطابق کرنے میں آسانی ہو اور کسی مسلک سے متاثر نہ ہو. حالانکہ کسی نئے ترجمے کی کیوں ضرورت ہو جب کہ پہلے ہی بہت ترجمے ہیں پھر کیوں وقت اور پیسہ برباد کیا جائے اور ایک نئے ترجمے کا اضافہ کیا جائے جب کہ ہر زبان میں ترجمے موجود ہیں. اس بات کا جواب زیر نظر آسان مفہوم القرآن سے ملے گا اگر یہ شائع ہو کر منظر عام پر آ گیا. کیونکہ اتنا اہم کام کرنا کوئی آسان کام نہیں. تاہم ہر مشکل کا سامنا کرتے ہوئے ایک آسان مفہوم القرآن مرتب کیا ہے. جس کے لئے اللہ سے دعا ہے کہ کوئی سبب ایسا بنے کہ وہ شائع ہو جائے. کیونکہ میرے پاس پیسے کی کمی ہے. ویسے اللہ کا خزانہ بہت بڑا ہے. اس میں کیا ہے کسی کو پتہ نہیں. اور اللہ اپنے کام کیسے کراتا ہے. یہ بھی کسی کو معلوم نہیں بس ہو جاتے ہیں. جیسے حضرت موسیٰ کی پرورش دشمن کے گھر میں ہی کرا دی. اور اللہ کے یہاں ہر کام کا ایک وقت مقرر ہے. جو اس نے کر دیا ہے جب اس کے ظاہر ہونے کا وقت آتا ہے تو اللہ اتنا

वह हो जाता है, ऐसे ही इस मफ्हूम का सार्वजनिक होने का भी एक समय निश्चित है, और अपने समय पर ईश्वर के आदेश से प्रकट हो जाएगा, मुझे चिंतित होने की ज़रूरत नही मेरा कार्य तो बस इतना है कि अपनी पूरी शक्ति और खलूस के साथ परिश्रम करूं,

फिलहाल में इस पाण्डुलिपि को कम्पोजिंग के लिए दे रहा हूं, इसके बाद क्या होता है ईश्वर जानता है, तथापि मुझे उस पर पूर्ण विश्वास है कि यह भावार्थ मनज़रे आम पर आएगा, अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि यदि इस पाण्डुलिपि में कुछ मिथ्या हो तो उसको ठीक करादे मुझे इतनी समझ दे कि मैं इसको ठीक कर दूं और यदि ठीक है तो ईश्वर मेरी सहायता करे और मुझे साहस दे।

सिकन्दर अहमद कमाल
(1)- आदम नगर, नगला पटवारी, बरौली रोड, अलीगढ़
मोबाईल नं0 9319593020, 9897434015
4-नवम्बर 2004 मुताबिक, 20-रमजानुल मुबारक 1425 हिज़री
(2)- मौहल्ला शाहचन्दन, कस्बा चान्दपुर जिला बिजनौर

حکم کرتا ہے کہ اب ہوجا اور وہ ہوجاتا ہے۔ایسے ہی اس مفہوم کا منظر عام پر آنے کا بھی ایک وقت مقرر ہے اور اپنے وقت پر اللہ کے حکم سے ظاہر ہوجائے گا۔ مجھے فکر مند ہونے کی ضرورت نہیں۔میرا کام تو بس اتنا ہے کہ اپنی پوری طاقت اور خلوص کے ساتھ محنت کروں۔

فی الحال میں اس مسودے کو کمپوزنگ کے لئے دے رہا ہوں۔اس کے بعد کیا ہوتا ہے اللہ جانتا ہے۔تاہم مجھے اس پر پورا یقین ہے کہ یہ مفہوم منظر عام پر آئے گا۔آخر میں اللہ سے دعا ہے کہ اگر اس مسودے میں کچھ غلط ہو تو اس کو درست کرادے۔ مجھے اتنی سمجھ دے کہ میں اس کو درست کردوں اور اگر ٹھیک ہے تو اللہ میری مدد کرے اور مجھے ہمت دے۔ (تقبل)

سکندر احمد کمال
(۱)۔آدم نگر نگلہ پٹواری، بردلی روڈ علی گڑھ
موبائل نمبر:9319593020, 9897434015
۴/نومبر ۲۰۰۴ء مطابق ۲۰/رمضان المبارک ۱۴۲۵ھ
(۲)۔محلہ شاہ چندن، قصبہ چاندپور ضلع بجنور

vkjEHk bZ'oj ds uke ds lkFk tks vR;ar Ñikyq vkSj n;kyq gSA

شروع اللہ کے نام کے ساتھ جو بےانتہا مہربان اور رحم فرمانے والا ہے.

وَماتوفيقي الابالله عليه توكلتُ و اليه أنيب

bjrqy Qkfrgk

سورۃ الفاتحہ

gj izdkj dh iz'kalk bZ'oj gh ds fy, gS tks Eiw.kZ fo'o dk izfrikyd gSA ¼1½ ¿2%107]6%14&19] 40]41]46]63&64] 10%48]49]36]104&107] 11%113]12%39]40] 13%14&16]16%73&76]17%2]67&69] 18%26]27]37&44]102]19%81]82]21%42]43]22%71&76]23%116]117]25%55]29%41&43]32%28&35]31%30&32]32%4]34%40&43]35%13&17]40]36%74]75]37%22 &39]39%36&38]40%60]65]66]42%6]39]46]44%40]45%10]46%4À

ہر طرح کی تعریف اللہ ہی کے لئے ہے جو تمام کائنات کا رب ہے.(۱)[۲:۱۰۷،۶:۱۴ سے ۱۹،۴۰،۴۱،۴۶،۶۳،۶۴، ۱۰:۴۸،۴۹،۶۶، ۱۰۴ سے ۱۰۷، ۱۱:۱۱۳، ۱۲:۳۹،۴۰، ۱۳:۱۴ تا ۱۶، ۱۶:۷۳ تا ۷۶، ۱۷:۲،۶۷ تا ۶۹، ۱۸:۲۶،۲۷،۳۷ تا ۴۴،۱۰۲، ۱۹:۸۱،۸۲، ۲۱:۴۲،۴۳، ۲۲:۷۱ تا ۷۶، ۲۳:۱۱۶،۱۱۷، ۲۵:۵۵، ۲۹:۴۱ تا ۴۳، ۳۰:۲۸ تا ۳۵، ۳۱:۳۰ تا ۳۲، ۳۲:۴، ۳۴:۴۰ تا ۴۳، ۳۵:۱۳ تا ۱۷،۴۰، ۳۶:۷۴،۷۵، ۳۷:۲۲ تا ۳۹، ۳۹:۳۶ تا ۳۸، ۴۰:۶۰،۶۵،۶۶، ۴۲:۶،۹،۴۶، ۴۴:۴۰، ۴۵:۱۰، ۴۶:۴]

vR;ar Ñikyq n;kyq gS ¼2½ ¿2%138]24%22À

نہایت مہربان رحم فرمانے والا ہے(۲)[۲:۱۳۸، ۲۴:۲۲]

izfr.kfn dk Lokeh gS ¼3½

روزِ جزا کا مالک ہے(۳)

gs bZ'oj ge rsjh gh iwtk djrs gSa vkSj rq> ls gh lgk;rk pkgrs gSa ¼4½

اے اللہ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تجھ سے ہی مدد مانگتے ہیں (۴)

pyk,[k ge dks iFkiznZ'kdu okyh lh/kh jkg thou dk h/kk ekxZ] ¼Fkkr~ dqjku½ ¼5½

چلائے رکھ ہم کو ہدایت والی سیدھی راہ زندگی کی سیدھی راہ یعنی قرآن پر (۵)

mu yksxksa dk ekxZ ftu ij rwus iqjLdkj fd;k gS ¼6½

ان لوگوں کی راہ جن پر تو نے انعام کیا ہے (۶)

tks fuUnuh; ugha gq, vkSj HkVds gq, ugha gSa ¼7½ ¼dCqy ¿2%29]7%54]16%89]9%126À

جو معتوب نہیں ہوئے جو بھٹکے ہوئے نہیں ہیں (۷)

"قبول" [۲:۲۹، ۷:۵۴، ۱۶:۸۹، ۹:۱۲۶]

uksV%&^vygen^ dk vuqokn i<+us ds ckn ;fn ge viuk thou ij fopkj djsa gSa rks Li"V fn[kkbZ nsrk gS fd gekjk O;ogkj blds fcYdqy izfrdwy gSA ;fn ge viuk O;ogkj blds vuqlkj dj ysa rks okLro esa ge vkfLrd gks tk,saA tks bZ'oj pkgrk gS vkSj bZ'oj dh lgk;rk gekjs lkFk gks tk, jLrq ,slk ugha gks ik jgk gSA gekjs O;ogkj vkSj cpu esa brruk vUrj D;ksa gS\ bldk dkj.k gS fd ge us dqjku dks mfpr vFkZ esa ns[kk gh ugha gSA mnkgj.k% bZ'oj dgrk gS-

نوٹ:۔ الحمد کا ترجمہ پڑھنے کے بعد اگر ہم اپنی زندگی پر غور کرتے ہیں تو صاف نظر آتا ہے کہ ہمارا عمل اس کے بالکل خلاف ہے. اگر ہم اپنا عمل اس کے مطابق کرلیں تو حقیقت میں ہم مومن ہو جائیں. جو اللہ چاہتا ہے اور اللہ کی مدد ہمارے شامل حال ہو جائے. مگر ایسا نہیں ہو پا رہا. ہمارے عمل اور اقرار میں اتنا فرق کیوں ہے؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ ہم نے قرآن کو صحیح معنوں میں دیکھا ہی نہیں. مثلاً اللہ فرماتا ہے.

¼4%43½ vkLrdksa tc rqe u'ks dh fLFkfr esa gks rks tc rd ¼mu 'kCnksa dks tks eq[k ls dgks ½ le> u ¼ u½ yks uekt+ ds ikl u tkvks

(۴:۴۳) مومنو! جب تم نشے کی حالت میں ہو تو جب تک (ان الفاظ کو جو منہ سے کہو) سمجھنے (نہ) لگو نماز کے پاس نہ جاؤ.

¼7%204½ vkSj tc dqjku i<+k tk, rks mldh vksj dku yxk dj lquk djks vkSj ekSu jgk djks- vk'kk gS fd rqe ij Ñik dh tk,

(۷:۲۰۴) اور جب قرآن پڑھا جائے تو اس کی طرف کان لگا کر سنا کرو اور خاموش رہا کرو امید ہے کہ تم پر رحم کیا جائے

igyh vk;r esa ;g crk;k x;k gS fd mUekn dh n'kk esa uekt ds fudV u tkvks&;g mUekn 'kjkc ;k vkSj fdlh ekndrk oLrq dk ugha gS- dksbZ ;g fopkj djs fd tc rd 'kjkc dk mUekn jgs rc rd uekt+ u i<+ks tc mUekn mrj tk,s rks uekt+ i<+ yks] dHkh ugha] bLyke esa ;g mUekn rks vo/k gS] vr% eknd oLrqvksa dk iz;ksx djus dk iz'u gh mRiUu ugha gksrkA ;gka ij bZ'oj ;g pkgrk gS fd rqe viuk iwjs /;ku ds lkFk uekt+ esa vkvks] gj mUekn pkgs og ;kSou dk gks] :i dk gks] oa'k dk gks] Kku] /ku] jkT; vkfn dk gks] bu lc dks NksM+ dj fouez vkKkdkjh dh HkkWafr uekt+ esa vkvks rc rqe vk;krksa ij iwjk /;ku ns ldksxs- vkSj tks rqe uekt+ esa i<+ jgs gks ;k lqu jgs gks mldks vPNh izdkj le>ks vkSj lquks] rkfd uekt+ ls ckgj vkdj rqe dks ;kn jgs fd uekt+ esa D;k i<+k Fkk lquk-

پہلی آیت میں یہ بتایا گیا ہے کہ نشے کی حالت میں نماز کے قریب نہ جاؤ. یہ نشہ شراب یا اور کسی نشہ آور شی کا نشہ نہیں ہے کوئی یہ خیال کرے کہ جب تک شراب کا نشہ رہے تب تک نماز نہ پڑھو. جب نشہ اتر جائے تو نماز پڑھ لو. ہرگز نہیں. اسلام میں یہ نشہ تو حرام ہے، اس لئے نشہ آور چیزوں کا استعمال کرنے کا تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. یہاں پر اللہ یہ چاہتا ہے کہ تم اپنی پوری توجہ کے ساتھ نماز میں آو. ہر نشہ چاہے وہ جوانی کا ہو. حسن کا ہو، حسب نسب کا ہو، علم دولت، حکومت وغیرہ کا، سب کو چھوڑ کر عاجز فرمابردار کی طرح نماز میں آؤ تب تم آیات پر پوری توجہ دے سکو گے، اور جو تم نماز میں پڑھ رہے ہو یا سن رہے ہو اس کو اچھی طرح سمجھو اور سنو، تا کہ نماز سے باہر آ کر تم کو یاد رہے کہ نماز میں کیا پڑھا یا سنا۔

mnkgj.kr%vk;ri<+h ;klquh ftlesa ukirksy esa de vf/kd u djks gS-
,fnckgjvkdjukirksyBhdfd;krksfuf'pr:ilsgeuekt+esamUeknch
fLFkfresaUFks],fnfoijhrfd;krksuekt+esamUeknchfLFkfresaFks]vkSj
R;;gSfdvktgeuekt+esamUeknchnkkesagksrsgSa]gedksirkgh
ughafdgeD;kiq<+jgsgSa;klqujgsgSa]dmUeknfj;kdkjhdkHkhgS-

,fngemUeknlsckgjgksrsrkstkuysrsfd^vygen* dh
vk;r¼3½esabZ'ojusdM+hvPNhlkQkSyhesakoèkkufd;kgSfdgesjs
cUnks¼HkDrks½esa,dfnudkLokehgw¡vFkkZr~izfrnkufndkLokeh]vkSjge
bldkvFkZtkuysrsvkSjgeixixijtksvoKkdjjgsgSamlls
cptkrs-

bZ'ojusviusdkslkjslalkjdkjcrk;kgSoggÑikyqvkSj
n;kyqHkhgS-bldkvFkZgSfdgesjsHkDrksaleSabnqfu;kesagjvPNs
cqjsdkikyuiks'kkdjjgkgw¡;gkaeSalcijÑikyqn;kyqgw¡¼2%126½
fdUrqesjk,dxq.kokpdukeD;kgkj*vkSj^tCckj*HkhgS-bldkHkhiz;ksx
gksukgS-vkSjoggksxk^^ekfyfd;kSfeíhu** esa]mlfnugjvR;kpkjh]
voKkdkjhdksdeZHkksxrdigq¡pkfn;ktk,xk- fdlhikihijn;ku
gksxh-ghU;k;dkuksrugS-pw¡afdbZ'ojU;k;hgSvr%mlfnuU;k;gksxk
vU;k;ughagksxkvkSjoggksxkdeZuqlkj¼40%15ls20½

blvk;resagSfdtcrqelel>usyxks]bldkvFkZ;gHkh
gqvkfdgedksyxHkxgjmlvk;rdkHkkokFkZrksKkrgksukghpkfg,tks
geuekt+esai<+jgsgSafdUrqnq%[kfdgebZ'ojdsdFkudkdsoyfyfch
hekrdghi<+rsgSa]vFkZlsnwjjgrsgSavkSjle>rsgSafdgeusdqjvku
dkgd+iwjkdjfn;k-vkSjblizdkji<+uslsèkeZorFkkfu;kdhHkykbZfey
xbZ- gedksorkj[kkgSfd,dv{kji<+usijnlusfd;kafy[khxbZ- rks
geususfd;ksadk<sjyxkusdsfy,,drhozrkSM+yxknh]]Urq;g/kksdk
gS- ftldkQy;ggSfdgebZ'ojdhvoKkblhekrddjtkrsgSa
ftldsfy,bZ'ojusdgkgS^^ekfyfd;kSfeíhu**tcfdbZ'ojdhfoks'krk
ÑikyqkSjn;kyqHkhgS-

lwjrlk¶]Qkrvk;r 12 ls 34 rd

vifrqrwvkpZ;djjgkgSvkSjogmldkO;aX;mM+kjgsgSa
le>k;ktkrkgSrksle>djughanrs]dkbZfpUgns[krsgSarksmlsmigkl
esamM+knsrsgSa]vkSjdgrsgSa;gtknwgSHky,kdghaekgksldrkgS
fdtcgeejpqdsgksavkSjfeV~Vhcutk,asvkSjgfM~M;ksadkiatjjgtk,asml
le;gefQjthfordjdsmBk[kM+sfd,tk,saxs]vkSjD;kgekjsvxys
dkydsdM+sHkhmBk,tk,saxs-mulsdgksgk¡vkSjrqecsclgks-d,dgh
>M+dhgksxhvkSjvpkudogviuhvka[kksalsns[kjgsgksaxs-mle;og
dgsaxsgk;gekjhnqHkkZX;;gks^^;kSfeíhu**gS¼cnysdkfnugS½;gogh
U;k;dkfnugS-ftlsrqe>qByk;kdjrsFks-?ksjyksvkslcvR;kpkfj;ksa
vkSjmudslkfFk;ksavkSjmunsorkvksadksftudhogbZ'ojdksNksM+djiwtk
fd;kdjrsFks]fQjmulcdksudZdkekxZfn[kkvksvkSjFkksM+kbUgsajksdks
bulsKkrdjukgS-D;kgksx;krqEgsavcD;ksa,dnwljsdhlgk;rkughsa
djrs\vjsvktrks;gviusdksleiZ.kfd;snsjgsgSa-bldsckn og,d
nwljs dh vksj eqM+saxs vkSj vkil esa Kkr djsaxs- rqe gekjs ikl lh/kh
fn'kklsvkrsFksogmÙkjnsaxsughavfirqrqeLo;avkLFkkokuughaFks-

مثلاً آیت پڑھی یا سنی جس میں ناپ تول میں کمی بیشی نہ کرو ہے، اگر
باہر آکر ناپ تول ٹھیک کیا تو یقیناً ہم نماز میں نشے کی حالت میں نہ تھے، اگر خلاف
کیا تو نماز میں نشے کی حالت میں تھے، اور حقیقت یہ ہے کہ ہم آج نماز میں نشے
کی حالت میں ہوتے ہیں، ہم کو پتہ ہی نہیں کہ کیا پڑھ رہے ہیں یا سن رہے ہیں، ایک
نشہ ریاکاری کا بھی ہے۔

اگر ہم نشے سے باہر ہوتے تو جان لیتے کہ الحمد کی آیت (۴) میں اللہ
نے بڑے اچھے صاف انداز میں متنبہ کیا ہے کہ اے میرے بندو! میں ایک دن کا
مالک ہوں یعنی یوم جزا کا، تو ہم اس کا مطلب جان لیتے اور قدم قدم پر جو نافرمانی
کر رہے ہیں اس سے بچ جاتے۔

اللہ نے اپنے کو سارے جہانوں کا رب بتایا ہے وہ رحمٰن اور رحیم بھی
ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ اے میرے بندو! میں اس دنیا میں ہر اچھے بُرے کی
پرورش کر رہا ہوں۔ یہاں میں سب پر رحمٰن و رحیم ہوں (۲:۱۲۶) لیکن میرا ایک
صفاتی نام قہار اور جبار بھی ہے اس کا بھی استعمال ہونا ہے اور وہ ہوگا "مالک یوم
الدین" میں، اس دن ہر ظالم نافرمان کو کیفر کردار کو پہنچا دیا جائے گا، کسی گناہ گار پر
رحم نہ ہوگا، یہی عدل کا تقاضہ ہے۔ چوں کہ اللہ عادل ہے۔ اس لئے اس دن عدل
ہوگا ظلم نہ ہوگا، اور وہ ہوگا عمل کے مطابق۔ (۴۰:۱۵ تا ۲۰)

اس آیت میں ہے کہ جب تم سمجھنے لگو، اس کا مطلب یہ بھی ہوا کہ ہم کو
تقریباً ہر اس آیت کا مفہوم تو معلوم ہونا ہی چاہئے جو ہم نماز میں پڑھ رہے ہیں۔
لیکن افسوس کہ ہم اللہ کے کلام کو صرف رسم الخط کی حد تک ہی پڑھتے ہیں۔ مطلب
سے دور رہتے ہیں۔ اور سمجھتے ہیں کہ ہم نے قرآن کا حق ادا کر دیا۔ اور اس طرح
پڑھنے سے دین دنیا کی بھلائی مل گئی، ہم کو بتا رکھا ہے کہ ایک حرف پڑھنے پر دس
نیکیاں لکھی گئیں تو ہم نے نیکیوں کا ڈھیر لگانے کے لئے ایک تیز دوڑ لگا دی، مگر یہ
فریب ہے جس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہم اللہ کی نافرمانی اس حد تک کر جاتے ہیں جس
کے لئے اللہ نے فرمایا ہے "مالک یوم الدین" جب کہ اللہ کی صفات رحمٰن و رحیم
بھی ہیں۔

(سورہ صٰفٰت آیت ۱۲ تا ۳۴ تک) بلکہ تو تعجب کر رہا ہے اور وہ اس کا مذاق
اڑا رہے ہیں سمجھایا جاتا ہے تو سمجھ کر نہیں دیتے، کوئی نشانی دیکھتے ہیں تو اسے
ٹھٹھوں میں اڑا دیتے ہیں، اور کہتے ہیں یہ تو صریح جادو ہے بھلا کہیں ایسا ہو سکتا
ہے کہ جب ہم مر چکے ہوں اور مٹی بن جائیں اور ہڈیوں کا پنجر رہ جائیں اس
وقت ہم پھر زندہ کر کے اٹھا کھڑے کئے جائیں گے، اور کیا ہمارے اگلے وقتوں
کے بڑے بھی اٹھائے جائیں گے۔ ان سے کہو ہاں اور تم بے بس ہو۔ بس ایک ہی
جھڑکی ہوگی اور یکا یک وہ اپنی آنکھوں سے دیکھ رہے ہوں گے اس وقت وہ کہیں
گے ہائے ہماری کم بختی یہ تو یوم الدین ہے (یوم الجزا ہے) یہ وہی فیصلے کا دن ہے
جسے تم جھٹلایا کرتے تھے گھیر لاؤ سب ظالموں اور ان کے ساتھیوں اور ان
معبودوں کو جن کی وہ اللہ کو چھوڑ کر بندگی کیا کرتے تھے پھر ان سب کو دوزخ کا
راستہ دکھاؤ اور ذرا انہیں ٹھہراؤ ان سے کچھ معلوم کرنا ہے کیا ہو گیا تمہیں اب کیوں
ایک دوسرے کی مدد نہیں کرتے؟ ارے آج تو یہ اپنے کو حوالے کئے دے رہے ہیں۔
اس کے بعد وہ ایک دوسرے کی طرف مڑیں گیں اور باہم پوچھ پاچھ کریں گے۔ تم
ہمارے پاس سیدھے رُخ سے آتے تھے وہ جواب دیں گے نہیں بلکہ تم خود ایمان

gekjkrqeijdksbZvf/kdkjuFkkrqeLo;aghljdkyksxFks-vUrr%ge
viusjc ds mlvknsk ds vf/kdkjh gksx,- fd ge n.M dk Lokn p[kus
dkysgSa-lksgeusrqedksogdk;kgeLo;aoogdsgq,Fks-blizdkjogb
ml fnu n.M esa lk>h gksaxs- ge vijkf/k;ksa ds lkFk ;gh dqN fd;k
djrsgSa1/441/2

1/4lwjrvyeksfeuvk;r15ls201/2ogmPpekuokyk&vkdkLokehgS-og
HkDrksaesalsftlijpkgrkgSviusvknskls&k1/4:gogh1/2izsf"krdjrkgS
rkfd og feyu ds fnu ls lko/kku dj ns- og fnu tcfd lc ykxs izdV
gksaxs-bZ{;jmuchdkbZ बात छुपी न होगी, आज राज्य किसका है? लिल्लाहिल वाहिदुलकाहार का, आज हर आत्मा को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा जो उसने की थी, आज किसी पर अन्याय न होगा और ईश्वर लेखा लेने में तीव्र है, हे नबी! डरा दो उन लोगों को उस दिन से जो निकट आ लगा है, जिस समय हृदय पहुंचेंगे गलों को दबा रहे होंगे, कोई नही पापियों का मित्र और न कोई अनुशंसक जिसकी बात मानी जाए वह जानता है चोरी दृष्टि की और जो छुपा है सीनों में......निःसन्देह ईश्वर ही सब कुछ सुनने और जानने वाला है (20) (2:23) ईश्वर न्यायी है, न्यायी का अर्थ जानो,

कुरआन में इस बारे में बहुत आयात है जो यौमिद्दीन के बारे में विस्तार के साथ बता रही है, उनमें पुरस्कार व सम्मान का वर्णन भी है और डर व भय भी है, यदि हम आंखें खोलकर उन्माद से दूर होकर शुद्ध हृदयता के साथ कुरआन को देखें और कर्म करें तो निःसन्देह अलहमद का उद्देश्य पूरा हो जाए परन्तु दुख! हमने आंखे बन्द कर रखी है जिसके लिए ईश्वर ने कहा है मालिकि यौमिद्दीन, वरना वास्तव में ईश्वर अपने भक्तों पर बड़ा कृपालु है, है कोई जो उसकी करूणा की कोल में आने को तैयार हो? यदि है तो आंखें खोलकर कुरआन को देखले और सत्कर्म करले, ईश्वर हम सबको आंखों वाला बना दे इस बारे में निम्नलिखित आयात को कुरआन में देख लिया जाए

सूरत अनआम 52से61, 94, 128से 130, एराफ 6,7, यूनुस 45, 46, इब्राहीम 49से51, मरयम 67से94, फुरकान 66 ज़िलज़ाल 1से8, आदियात 1से11,

सितारे डूबते जाते है यूं तकदीरे मुस्लिम के।
के तैह करके इन्होंने भी किताबें आसमा रखदी।।

अलहमद के विषय में मुझे जो कुछ लिखना था लिख दिया, चूंकि मेरा आशय विस्तार देना नही है, अब कुरआन की दूसरी सूरत बकरा के बारे में लिखने से पहले कुछ बातें लिखी जा रही है, कुरआन के विषय में अधिकांश का मत है कि यह पुस्तक सविस्तार नही है, इसका विस्तार हदीस की पुस्तकों में है, परन्तु ईश्वर की पुस्तक में क्या है देखा जाए

(6:114) तो क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त किसी और का निर्णय चाहूं? और वही है जिसने तुम्हारी ओर सविस्तार पुस्तक प्रेषित की

(7:52) और हमने उन लोगों के पास एक ऐसी पुस्तक पहुंचा दी है जिसको हमने अपने पूर्ण ज्ञान से बहुत ही स्पष्ट करके वर्णन किया है पथ प्रदर्शन का साधन और करूणा उन लोगों के लिए है जो आस्था लाते है

(12:111) यह कुरआन कोई तराशी हुई बात तो है नही अपितु इससे

لانے والے نہ تھے ہمارا تم پر کوئی زور نہ تھا تم خود ہی سرکش لوگ تھے آخر کار ہم اپنے رب کے اس فرمان کے مستحق ہو گئے کہ ہم عذاب کا مزا چکھنے والے ہیں. سو ہم نے تم کو بہکایا ہم خود بہکے ہوئے تھے اس طرح وہ سب اس روز عذاب میں مشترک ہوں گے. ہم مجرموں کے ساتھ یہی کچھ کیا کرتے ہیں. (۳۴)

(سورت المؤمن آیت ۱۵ تا ۲۰) وہ بلند درجوں والا مالک عرش ہے. وہ بندوں میں سے جس پر چاہتا ہے اپنے حکم سے علم (روح وحی) نازل کرتا ہے. تاکہ وہ ملاقات کے دن سے خبر دار کردے. وہ دن جب کہ سب لوگ ظاہر ہوں گے. اللہ سے ان کی کوئی بات چھپی نہ ہوگی. آج بادشاہی کس کی ہے؟ لِلّٰہِ الواحد القہار کی. آج ہر نفس کو اس کی کمائی کا بدلہ دیا جائے گا. جو اس نے کی تھی. آج کسی پر ظلم نہ ہوگا اور اللہ حساب لینے میں بہت تیز ہے اے نبیؐ ڈرا دو ان لوگوں کو اس دن سے جو قریب آ لگا ہے. جس وقت دل پہنچیں گے گلوں کو دبا رہے ہوں گے. کوئی نہیں گناہ گاروں کا دوست اور نہ کوئی شفارشی جس کی بات مانی جائے وہ جانتا ہے چوری نگاہ کی اور جو چھپا ہے سینوں میں..... بلاشبہ اللہ ہی سب کچھ سننے اور جاننے والا ہے (۲۰) (۴۳:۲) اللہ عادل ہے عادل کا مطلب جانو.

قرآن میں اس بارے میں بہت آیات ہیں جو یوم الدین کے بارے میں تفصیل کے ساتھ بتا رہی ہیں. ان میں انعام واکرام کا ذکر بھی ہے اور ڈر وخوف بھی ہے. اگر ہم آنکھیں کھول کر نشے سے دور ہو کر خلوص کے ساتھ قرآن کو دیکھیں اور عمل کریں تو یقیناً الحمد کا مقصد پورا ہو جائے مگر افسوس! ہم نے آنکھیں بند کر رکھی ہیں. جس کے لئے اللہ نے فرمایا ہے. مالک یوم الدین. ورنہ حقیقت میں اللہ اپنے بندوں پر بڑا مہربان ہے. ہے کوئی جو اس کی آغوش رحمت میں آنے کو تیار ہو؟ اگر ہے تو آنکھیں کھول کر قرآن کو دیکھ لے اور عمل نیک کر لے. اللہ ہم سب کو آنکھوں والا بنا دے. اس بارے میں ذیل کی آیات کو قرآن میں دیکھ لیا جائے.

سورہ انعام (۵۲ تا ۶۱، ۹۴، ۱۲۸ تا ۱۳۰)، اعراف (۷،۶)، یونس (۴۶،۴۵)، ابراہیم (۴۹ تا ۵۱)، مریم (۶۷ تا ۹۴)، فرقان (۶۶) زلزال (۱ تا ۸)، عادیات (۱ تا ۱۱)

ستارے ڈوبتے جاتے ہیں یوں تقدیر مسلم کے
کہ تہہ کرکے انہوں نے بھی کتاب آسماں رکھدی

الحمد کے بارے میں مجھے جو کچھ لکھنا تھا لکھ دیا. چونکہ میرا مقصد طول دینا نہیں ہے. اب قرآن کی دوسری سورت بقرہ کے بارے میں لکھنے سے پہلے کچھ باتیں لکھی جا رہی ہیں. امید ہے ہمارے لئے مفید ہو سکتی ہیں. قرآن کے بارے میں اکثر کی رائے ہے کہ یہ کتاب مفصل نہیں ہے اس کی تفصیل حدیث کی کتابوں میں ہے. مگر اللہ کی کتاب میں کیا ہے دیکھا جائے

(۶:۱۱۴) تو کیا میں اللہ کے سوا کسی اور کا فیصلہ چاہوں اور وہی ہے جس نے تمہاری طرف مفصل کتاب نازل کی.

(۷:۵۲) اور ہم نے ان لوگوں کے پاس ایک ایسی کتاب پہنچا دی ہے جس کو ہم نے اپنے علم کامل سے بہت ہی واضح کر کے بیان کیا ہے. ذریعہ ہدایت اور رحمت ان لوگوں کے لئے ہے جو ایمان لاتے ہیں.

(۱۲:۱۱۱) یہ قرآن کوئی تراشی ہوئی بات تو ہے نہیں بلکہ اس سے پہلے جو کتابیں

पहले जो पुस्तकें हो चुकी हैं यह उनको प्रमाणित करने वाली है और विस्तार हर वस्तु का और हिदायत और कृपा वास्ते उस जाति के लिए जो आस्था लाती है

ईश्वर का यह भी कथन है कि मैं कुरआन में हर विषय की व्याख्या स्वयं करता हूं,

(16:89) हमने यह पुस्तक तुम पर अवतरित कर दी है जो हर वस्तु का साफ-साफ स्पष्टीकरण करने वाली है और पथ प्रदर्शन व अनुकम्पा और मंगल सूचना है उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने को समर्पण कर दिया है

(17:12) देखो हमने रात्रि और दिन को दो चिन्ह बनाया है, रात्रि के चिन्ह को हमने अन्धकारपूर्ण बनाया और दिन के चिन्ह को उज्ज्वल कर दिया ताकि तुम अपने रब का कृपा दया खोज सको और माह और वर्ष का हिसाब ज्ञात कर सको, इसी प्रकार हमने हर वस्तु को अलग-अलग विभेदित करके रखा है

किस प्रकार वह भी देखा जाए

(6:105) इसी प्रकार हम अपनी आयात का बार-बार विभिन्न विधि से वर्णन करते हैं और इसलिए करते हैं कि वह लोग कहें कि तू ने ध्यान से पढ़कर समझा दिया और स्पष्ट कर दें हम उसको वास्ते समझ वालों को,

(7:58) इसी प्रकार हम चिन्हों को बार बार प्रस्तुत करते हैं, उन लोगों के लिए जो आज्ञाकारी करने वाले हैं

कुरआन में उदाहरण और उपलक्ष्य की भांति भी है, उपरोक्त आयात में ईश्वर कहता है कि यह पुस्तक बड़ी विस्तार से अपनी बात खोल खोलकर वर्णन करती है, और इसकी शैली यह है कि आयात को बार-बार दोहराया गया है, यह पुस्तक आम बोलचाल की भांति उपमा, व्यंजना और उपलक्ष्य अक्षर के साथ भी बात को समझाती है, जैसा कि आयात में विदित होता है, अतः कुरआन में जहां भी इस प्रकार के शब्द आए हैं वहां तसरीफ आयात के द्वारा देखा जाए कि यहां क्या अर्थ है, यदि आयात में सम्बन्ध उत्पन्न किया जाए तो सब बातें सूर्य की भांति स्पष्ट हो जाती हैं, बशर्ते आदमी हठ में न आए और शुद्ध हृदयता से काम करें परामर्श से शूरा में प्रचलित अनुवादों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि कुरआन में विभिन्नता है, परन्तु ईश्वर कहता है कि इसमें विरोध नहीं, देखिए

(4:82) क्या वह लोग कुरआन पर चिन्तन नहीं करते? यदि यह ईश्वर के अलावा किसी और की ओर से होता तो इस में बहुत कुछ विभिन्नता पाई जाती,

इस आयात से सिद्ध हुआ कि कुरआन में मतभेद नहीं फिर अनुवाद में विभिन्नता क्यों है? अर्थात एक स्थान पर है कि मनुष्य स्वंय पथ भ्रष्ट होता है और स्वंय ही पथ प्रदर्शन पर आता है, दूसरी जगह अनुवाद है कि ईश्वर ही पथ भ्रष्ट करता है और ईश्वर ही पथ प्रदर्शन देता है, इस मतभेद का कारण केवल एक ही है कि अनुवाद करते समय आयात सुदृढ़ और अनुरूप पर विचार नहीं किया,

(3:7) हे नबी वही ईश्वर है जिसने यह पुस्तक तुम पर अवतारित की है इस पुस्तक में दो प्रकार की आयात हैं एक सुदृढ़ जो पुस्तक की मूल जड़ है और दूसरी अनुरूप, जिन लोगों के हृदयों में टेढ़ है वह उपद्रव की खोज में सदैव अनुरूप ही के पीछे पड़े रहते हैं और उनको अर्थ देने का प्रयत्न किया करते हैं, यद्यपि उनका वास्तविक अर्थ कोई नहीं जानता, परन्तु ईश्वर और वह लोग जो ज्ञान में पक्के होते हैं जानते हैं, और पक्के ज्ञान वाले कहते हैं कि हमारा इन पर विश्वास है यह सब हमारे स्वामी ही की ओर से है,

ہوچکی ہیں یہ ان کی تصدیق کرنے والی ہے اور تفصیل ہر چیز کی اور ہدایت اور رحمت واسطے اس قوم کے لئے جو ایمان لاتی ہے.

اللہ کا یہ بھی فرمان ہے کہ میں قرآن میں ہر مسئلہ کی تشریح خود کرتا ہوں.

(۸۹:۱۶) ہم نے یہ کتاب تم پر نازل کردی ہے. جو ہر چیز کی صاف صاف وضاحت کرنے والی ہے اور ہدایت و رحمت اور بشارت ہے ان لوگوں کے لئے جنہوں نے سرتسلیم خم کردیا ہے

(۱۲:۱۷) دیکھو ہم نے رات اور دن کو دونشانیاں بنایا ہے. رات کی نشانی کو ہم نے بےنور بنایا اور دن کی نشانی کو روشن کردیا. تاکہ تم اپنے رب کا فضل تلاش کرسکو. اور ماہ اور سال کا حساب معلوم کرسکو. اسی طرح ہم نے ہر چیز کو الگ الگ ممیّز کر کے رکھا ہے. کس طرح وہ بھی دیکھا جائے.

(۱۰۵:۶) اسی طرح ہم اپنی آیات کو بار بار مختلف طریقوں سے بیان کرتے ہیں اور اس لئے کرتے ہیں کہ وہ لوگ کہیں کہ آپ نے توجہ سے پڑھ کر سمجھا دیا اور واضح کریں ہم اس کو واسطے سمجھ والوں کو

(۵۸:۷) اسی طرح ہم نشانیوں کو بار بار پیش کرتے ہیں. ان لوگوں کے لئے جو فرمانبرداری کرنے والے ہیں.

قرآن میں تشبیہات اور باندازمجاز بھی ہیں. آیات بالا میں اللہ فرماتا ہے کہ یہ کتاب بڑی تفصیل سے اپنی بات کھول کھول کر بیان کرتی ہے اور اس کا طریقہ یہ ہے کہ آیات کو بار بار دہرایا گیا ہے. یہ کتاب عام بول چال کی طرح تشبیہات (مثال) استعارات اور حرف مجاز کے ساتھ بھی بات کو سمجھاتی ہے. جیسا کہ آیات میں نظر آتا ہے. اس لئے قرآن میں جہاں بھی اس طرح کے الفاظ آئے ہیں وہاں تصریف آیات کے ذریعہ دیکھا جائے کہ یہاں کیا مطلب ہے. اگر آیات میں ربط پیدا کیا جائے تو سب باتیں سورج کی طرح صاف ہوجاتی ہیں. بشرطیکہ آدمی ضد میں نہ آئے اور خلوص سے کام کرے شوریٰ میں. رائج الوقت ترجموں کو پڑھنے سے پتہ چلتا ہے کہ قرآن میں تضاد ہے. مگر اللہ کہتا ہے کہ اس میں تضاد نہیں، دیکھئے

(۸۲:۴) کیا وہ لوگ قرآن پر غور نہیں کرتے؟ اگر یہ اللہ کے علاوہ کسی اور کی طرف سے ہوتا تو اس میں بہت کچھ اختلاف بیانی پائی جاتی

اس آیت سے ثابت ہوا کہ قرآن میں اختلاف نہیں پھر ترجموں میں اختلاف کیوں ہے؟ یعنی ایک جگہ یہ ہے کہ انسان خود گمراہ ہوتا ہے اور خود ہی ہدایت پر آتا ہے دوسری جگہ ترجمہ ہے کہ اللہ ہی گمراہ کرتا ہے اور اللہ ہی ہدایت دیتا ہے. اس اختلاف کی وجہ صرف ایک ہی ہے کہ ترجمہ کرتے وقت آیات محکمات اور متشابہات پر غور نہیں کیا.

(۷:۳) اے نبیؐ وہی اللہ ہے جس نے یہ کتاب تم پر نازل کی ہے. اس کتاب میں دو طرح کی آیات ہیں ایک محکمات جو کتاب کی اصل بنیاد ہیں اور دوسری متشابہات. جن لوگوں کے دلوں میں ٹیڑھ ہے وہ فتنے کی تلاش میں ہمیشہ متشابہات ہی کے پیچھے پڑے رہتے ہیں. اور ان کو معنی پہنانے کی کوشش کیا کرتے ہیں. حالانکہ ان کا حقیقی مفہوم کوئی نہیں جانتا مگر اللہ اور وہ لوگ جو علم میں راسخ ہیں جانتے ہیں. اور راسخون فی العلم کہتے ہیں کہ ہمارا ان پر ایمان ہے یہ سب ہمارے رب ہی کی طرف سے ہیں.

अब बात स्पष्ट हो गई आयात अनुरूप को सुदृढ़ के आधीन करके देखा जाए तो अर्थ स्पष्ट होगा और अनुवाद में कोई विभिन्नता नही रहेगी, क्योंकि कुरआन ईश्वर की पुस्तक है और (4:82) के अनुसार इसमें कोई विभिन्नता है ही नही, वह अनुवाद भी लिखा जा रहा है जो (3:7) का हमरे पढ़ने में आ रहा है जिससे सिद्ध हो रहा है कि इन अनुरूप का अर्थ केवल ईश्वर ही जानता है और नही, अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब इनका अर्थ केवल ईश्वर ही जनता है तो फिर यह प्रेषित क्यों की गई? किन्तु ऐसा नही है अपितु सत्य वह है जो ऊपर आयात के अनुवाद में वर्णन किया गया है, ज्ञान में पक्के इन का अर्थ कब जानेंगे जब तसरीफ आयात के द्वारा सुदृढ़ और अनुरूप पर दृष्टि होगी

(3:7) का प्रचलित अनुवाद यद्यपि इनका वास्तविक अर्थ ईश्वर के अतिरिक्त कोई नही जानता.....आयात उपरोक्त को लिखकर मैंने यह जानने का प्रयत्न किया है कि यदि सिद्धांतों को ध्यान में रखकर एक सभा में अनुवाद किया जाता तो आज जो मतभेद हमारे सामने है उनका कोई चिन्ह न होता और हम अपमानित न होते, ईश्वर हम सबको आस्तिक सम्मान वाला बना दे

कुरआन में अलहमद के बाद सूरत बक़रा है यह सूरत अक्षर अलिफ-लाम-मीम से आरम्भ होती है इस शब्द (अक्षर) की भांति कुरआन में और भी ऐसे ही अक्षर है, जिनके विषय में अनेक कथन है, अर्थात् उनका अर्थ केवल ईश्वर जानता है, कुछ का कथन है इनका अर्थ है इन अक्षरों को आम बोलचार में अक्षर मुकत्तआत कहते है, मुक्तआत को हर ज्ञानी (आलिम) काटा हुआ अक्षर मानता है इसके अतिरिक्त भी अर्थ वर्णन करने से असमर्थ नज़र आते है, यद्यपि यह वह सत्य है कि संसार इसको स्वीकार कर चुका है, बिना इसके कार्य नही चल पाएगा, अर्थात् ब्रीफ संक्षिप्त, शार्ट फार्म, इस वास्तविकता को कुरआन ने पहले ही प्रकट कर दिया था, जिसको बुद्धिमान इन्सानों ने स्वीकार करके अपना कार्य सरल कर लिया और मुसलमान विवश नजर आ रहा है,

आज कम्प्यूटर का पूरा रख रखाव इस पर ही है, आज फुल फार्म से कार्य करना सम्भव नही है, तथापि कुछ यथार्थवादियों ने इनका अर्थ बताने का साहस किया है, उदाहरणतः इब्ने कसीर र० ने इनका अर्थ नामे मुहम्मद या उस सूरत का नाम लिखा है जिसके आरम्भ में यह अक्षर है इस समय अहले कुरआन समुदाय भी यद्यपि कुरआन के अनुसार वह अहले कुरआन नही है ने इनका अर्थ वर्णन किया है और वह इनका अर्थ मुहम्मद स० के नाम ही मानता है,

यदि वास्तव में देखा जाए तो इन अक्षरों का अर्थ जहां कुरआन में यह अंकित है निकट ही लेख बड़ी अच्छी शैली में बता देता है, और वह अर्थ है मुहम्मद स० का नाम, क्योंकि जब कोई वार्ता करता है तो उसका सुनने वाला अवश्य होता है, ऐसा नही कि वार्ता करने वाला हो और सुनने वाला न हो,

तो स्पष्ट है कुरआन ईश्वर की वाणी है और ईश्वर अपने किसी सुनने वाले को सुनाकर उसको दे रहा है, स्पष्ट है सुनने वाला उस समय मुहम्मद स० के अतिरिक्त उस स्थान पर और कोई नही, क्योंकि वहां पर वह सर्वनाम वाक्य में है जो मुहम्मद स० की ओर लौट रहा है, अतः यह अक्षर काटे हुए मुहम्मद स० के पूरे नामों से काटे हुए अक्षर है जो ब्रीफ आकृति में है जिसको संसार स्वीकार कर चुका है, और वास्तविकता है जैसे कोई नाम मुहम्मद अली खां है तो इस नियमानुसार जिसको कुरआन ने प्रस्तुत किया है को एम.ए.खान लिखा जाता है या डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कलक्टर को डी.एम. लिखा और

اب بات صاف ہوگئی آیات متشابہات کومحکمات کے تحت کر کے اگر دیکھا جائے تو مطلب واضح ہوگا اور ترجمہ میں کوئی اختلاف نہیں رہے گا. کیونکہ قرآن اللہ کی کتاب ہےاور (۴:۸۲) کےمطابق اس میں کوئی تضاد ہےہی نہیں. وہ ترجمہ بھی لکھا جارہا ہے جو(۳:۷) کا ہمارے پڑھنے میں آرہا ہے.جس سے ثابت ہورہا ہے کہ ان متشابہات کا مطلب صرف اللہ ہی جانتا ہےاورنہیں.اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ جب ان کا مطلب صرف اللہ ہی جانتا ہےتو پھر یہ نازل ہی کیوں کی گئیں؟مگرایسانہیں ہےبلکہ حقیقت وہ ہےجواوپرآیت کےترجمہ میں بیان کی گئی ہےعلم میں راسخ ان کا مطلب کب جانیں گے جب تصریف آیات کے ذریعہ محکمات اورمتشابہات پرنظر ہوگی.

(۳:۷) کا رائج الوقت ترجمہ. حالانکہ ان کا حقیقی مفہوم اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا......آیات بالاکولکھ کرمیں نےیہ جاننے کی کوشش کی ہے کہ اگر اصولوں کودھیان میں رکھ کرایک شوریٰ میں ترجمہ کیا جاتا تو آج جواختلاف ہمارے سامنے ہیں ان کا نام ونشان نہ ہوتا اورہم ذلیل نہ ہوتے اللہ ہم سب کومومن عزت والا بنادے.

قرآن میں الحمد کے بعد سورہ بقرہ ہے یہ سورہ حروف الم سے شروع ہوتی ہے.اس لفظ (حروف) کی طرح قرآن میں اوربھی ایسے ہی حروف ہیں جن کے بارے میں مختلف قول ہیں.مثلاً ان کا مطلب صرف اللہ ہی جانتا ہے. کچھ کا قول ہےان کا مطلب ہےان حروف کو عام بول چال میں حروف مقطعات کہتے ہیں.مقطعات کو ہر عالم قطع کیا ہوا حروف مانتا ہے.اس کے باوجودبھی معنی بیان کرنے سے قاصر نظر آتے ہیں.حالانکہ یہ وہ حقیقت ہے کہ آج زمانہ اس کو قبول کرچکا ہے.بغیر اس کے کام نہیں چل پائے گا.یعنی بریف.مختصر.شارٹ فارم. اس حقیقت کوقرآن نے پہلے ہی ظاہر کردیا تھا.جس کوعقل مندانسانوں نے قبول کر کےاپنا کام آسان کرلیا.اورمسلمان مجبورنظر آرہا ہے.

آج کمپیوٹر کا پورا نظام اس پر ہی ہے.آج فل فارم سے کام کرنا ممکن نہیں ہے.تاہم کچھ حقیقت پسندوں نےان کا مطلب بتانے کی ہمت بھی کی ہے مثلاً ابن کثیرؒ نےان کا مطلب نام محمد یا اس سورت کا نام لکھا ہے.جس کے شروع میں یہ حروف ہیں.فی زمانہ اہل قرآن فرقہ بھی حالانکہ قرآن کے مطابق وہ اہل قرآن نہیں ہے نےان کا مطلب بیان کیا ہےاوروہ ان کا مطلب محمدؐ کے نام ہی مانتا ہے.

اگرحقیقت میں دیکھا جائےتوان حروف کا مطلب جہاں قرآن میں یہ درج ہیں پاس ہی کی عبارت بڑے اچھے انداز میں بتادیتی ہے.اوروہ مطلب ہےنام محمدؐ. کیونکہ جب کوئی کلام کرتا ہےتواس کا سننے والا ضرور ہوتا ہے.ایسا نہیں کہ بات کرنے والا ہواورسننے والا نہ ہو.

تو ظاہر ہےقرآن اللہ کا کلام ہےاوراللہ اپنے کسی مخاطب کو خطاب کر کےاس کودے رہا ہے.ظاہر ہےمخاطب اس وقت محمدؐ کےعلاوہ اس جگہ اورکوئی نہیں ہے.کیونکہ وہاں پر وہ ضمیر جملہ میں ہےجومحمدؐ کی طرف راجع ہورہی ہے.اس لئے یہ حروف مقطعات محمدؐ کے پورےناموں سے قطع کئے ہوئے حروف ہیں جو بریف شکل میں ہیں.جس کوزمانہ قبول کرچکا ہے.اورحقیقت ہے.جیسےکوئی نام محمد علی خاں ہےتواس قاعدے کےمطابق جس کوقرآن نے پیش کیا ہے،کوایم.اے. خان لکھا جاتا ہے.یاڈسٹرکٹ مجسٹریٹ کلکٹر کوڈی.ایم لکھا اور بولا جاتا ہےاور

बोला जाता है और हर मनुष्य जान लेता है, बस यही नियम काटे हुए अक्षरों का है,

उदाहरणतः कुरआन में ईश्वर ने अपने एक रसूल का परिचय दो नामों से कराया है, इलयासीन और इलयास, पहले में उनका पूरा नाम है और दूसरा काटा हुआ, काटे हुए अक्षरों के लिए निम्न में ध्यान पूर्व अवलोकन करें

(1) इलयासीन = इलया+स

(2) इलयास = इलया+स काटा हुआ सीन से (37:123,130)

देखिए विस्तार से प्रकट हो रहा है कि इलयास का स इलयासीन के सीन का पहला काटा हुआ अक्षर 'स' है बुद्धिमानों के लिए कुरआन करीम की यह उपमा काटे हुए अक्षरों को समझने के लिए प्रयाप्त है कि वह काटे हुए शब्द के पहले अक्षर है, और अपने पूरे शब्द के स्थानापन्न है, दूसरी उपमा ''यासीन वलकुरआनिल हकीम इन्नका लमिनल मुरसलीन" में उपस्थित है, अर्थात् यासीन में या अक्षर निदा और सीन मनादा है अर्थात् जिस को पुकारा गया है और 'इन्नका' में का (क) सर्वनाम एक वचन पुल्लिंग श्रोता आई जो अपने स्थान को चाहती है और यहां सूर्य की भांति प्रकट है कि इस सर्वनाम का स्थान सीन (स) ही है जिसे कुरआन करीम के प्रमाण के साथ कहा गया है कि निःसन्देह आप हमारे रसूल है और इसमें या सय्यद शब्द के काटे हुए अक्षर यासीन है इसी प्रकार हर काटे हुए अक्षर मुहम्मद स0 के मुबारक नामों के काटे हुए अक्षर है जो मैं पहले लिख चुका हूं कि हर वार्ता करने वाले को एक श्रोता की आवश्यकता होती है, अतः ईश्वर सम्बोधन कर रहा है और मुहम्मद स0 से सम्बोधन हो रहा है, जिसको मुहम्मद स0 के पूरे नामों को न लेते हुए केवल काटे हुए अक्षरों से सम्बोधन किया है, जो कुरआन का लेख बता रहा है और यही नियम आज कम्प्यूटर के समय में बुद्धिमानों ने अपना रखा है, हर शब्द को पूर्ण न लिखते हुए केवल आरम्भ के अक्षर से पुकारा जा रहा है, जैसे पी.एम. (प्राइम मिनिस्टर) या डी.एम. (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट) आदि या जैसे प्रसिद्ध है कि मुहम्मद स0 को 'ताहा' भी कहा जाता है जो काटे हुए अक्षरों में से है और यासीन भी कहा जाता है,

ہر آدمی جان لیتا ہے۔بس یہی قاعدہ حروف مقطعات کا ہے۔

مثلاً قرآن میں اللہ نے اپنے ایک رسول کا تعارف دو ناموں سے کرایا ہے۔ال یاسین اور الیاس۔اوّل الذکران کا پورا نام ہےاور دوسرا قطع کردہ۔ قطع حروف کے لئے ذیل میں بغور ملاحظہ کریں۔ (۱) الیاسین=الیا+سین

(۲) الیاس=الیا+س۔قطع کردہ از سین (۳۷:۱۲۳،۱۳۰)

دیکھئے تفصیل سے عیاں ہو رہا ہے کہ الیاس کا س الیاسین کے سین کا پہلا قطع کردہ حروف س ہے۔ارباب عقل کے لئے قرآن کریم کی یہ مثال حروف مقطعات کو سمجھنے کے لئے کافی ہے کہ وہ الفاظ کے قطع کردہ پہلے حروف ہیں۔اور اپنے پورے الفاظ کے قائم مقام ہیں۔دوسری مثال "یٰس والقرآن الحکیم انک لمن المرسلین" میں موجود ہے۔یعنی یٰس میں یا حروف ندا اور س منادی ہے۔اور انک میں ک ضمیر واحد مذکر مخاطب آئی جو اپنے مرجع کو چاہتی ہے۔اور یہاں سورج کی طرح ظاہر ہے کہ اس ضمیر کا مرجع یٰس ہی ہے۔جسے قرآن کریم کی شہادت کے ساتھ کہا گیا ہے کہ بلاشبہ آپ ہمارے رسول ہیں اور اس میں یا سید لفظ کے قطع کئے ہوئے حروف یٰس ہیں اسی طرح ہر مقطعات حروف محمدؐ کے مبارک ناموں کے قطع کئے حروف ہیں جو میں پہلے لکھ چکا ہوں کہ ہر کلام بولنے والے کو ایک مخاطب کی ضرورت ہوتی ہے۔اس لئے اللہ خطاب کر رہا ہے اور محمدؐ سے خطاب ہو رہا ہے۔جس کو محمدؐ کے پورے ناموں کو نہ لیتے ہوئے صرف حروف مقطعات سے خطاب کیا ہے۔جو قرآن کی عبارت بتا رہی ہے۔اور یہی قاعدہ آج کمپیوٹر کے زمانے میں عقل مندوں نے اپنا رکھا ہے ہر لفظ کو پورا نہ لکھتے ہوئے صرف شروع کے حروف سے پکارا جا رہا ہے۔جیسے پی۔ایم (Prime Minister) یا ڈی۔ایم وغیرہ وغیرہ۔یا جیسے مشہور ہے کہ محمدؐ کو طٰہٰ بھی کہا جاتا ہے جو حروف مقطعات میں سے ہیں اور یٰس بھی کہا جاتا ہے۔

सूरत – बकरा (1)

अलिफ़-लाम-मीम- हे मुहम्मद स० (1)
यह, वह पुस्तक लारैब'1' है इसमें पथ प्रदर्शन है सदाचारियों के लिए अर्थात् ईश्वर के विधान की अवहेलना करने से बचने वालों के लिए (2)

'1' सदाचारियों अर्थात् ईश्वर के विधान की अवहेलना करने से बचने वालों के लिए इस पुस्तक के मार्ग दर्शक होने में कुछ शंका नही और जो विरोध करने वाले है उनसे कुछ लेना देना नही, सूरत अलहमद की आयत (5) में भक्त जिस सीधे मार्ग या पथ प्रदर्शन वाले मार्ग की प्रार्थना करता है तो ईश्वर ने (2:2) में बता दिया है कि हे मेरे भक्तों! जिस पथ प्रदर्शन पर चलने की प्रार्थना तुम कर रहे हो वह मैं दे रहा हूं या दे दी है, यह वह है जिसमें कुछ शंका नही, यदि तुम इस पर व्यवहार करोगे तो हिदायत पाकर सफल हो जाओगे अन्यथा हानी में रहोगे, (2:38, 285,286, 7:52, 12:111, 16:89) और वह कुरआन है जिसमें शंका नही है (10:37,61, 12:1, 17:41)

سورہ-بقرہ(۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الم-اے محمدؐ(۱) یہ وہ کتاب لاریب ہے۔اس میں ہدایت ہے پرہیزگاروں کے لئے۔یعنی ضابطۂ الٰہی کی مخالفت سے بچنے والوں کے لئے (۲)

۱ پرہیزگاروں یعنی ضابطۂ الٰہی کی خلاف ورزی کرنے سے بچنے والوں کے لئے اس کتاب کے رہنما ہونے میں کچھ شک نہیں اور جو خلاف ورزی کرنے والے ہیں ان سے کوئی مطلب نہیں۔سورہ الحمد کی آیت (۵) میں بندہ جس سیدھی راہ یا ہدایت والی راہ کی دعا کرتا ہے تو اللہ نے (۲:۲) میں بتا دیا کہ اے میرے بندو! جس ہدایت پر چلنے کی تم دعا کر رہے ہو وہ میں دے رہا ہوں یا دے دی ہے۔یہ وہ ہے جس میں کچھ شک نہیں۔اگر تم اس پر عمل کروگے تو ہدایت پا کر کامیاب ہو جاؤ گے۔ ورنہ نقصان میں رہو گے۔ (۲:۳۸، ۲۸۵، ۲۸۶، ۷:۵۲، ۱۲:۱۱۱، ۱۶:۸۹)اور وہ قرآن ہے جس میں شک وشبہ نہیں ہے(۱۰:۳۷، ۶۱، ۱۲:۱، ۱۷:۴۱)

जो लोग परोक्ष पर विश्वास रखते है और नमाज़ स्थापित करते है और जो जीविका हमने उनको दी है उसमें से (सत्य मार्ग में) व्यय करते है (3)
और (हे ईशदूत) हमने जो (पुस्तक) तुम पर अवतरित की है और जो (पुस्तकें) तुम से पहले (ईशदूतों पर) अवतरित की है वह लोग उन सब पर विश्वास रखते है (अर्थात् सब को ईश्वर की अवतरित की हुई सत्य पुस्तकें मानते है) और वह लोग प्रलोक पर विश्वास रखते है (4)
वह ऐसे लोग अपने स्वामी की ओर से सत्य मार्ग पर है और वही सफलता पाने वाले है (5)
जिन लोगों ने (सत्य को स्वीकार करने से) इनकार कर दिया है उनके लिए बराबर है चाहे तुमने उनका डराया या न डराया (सावधान किया या न किया) वह मानने वाले नही है (6) {6:26, 47:32, 41:26, 7:179, 7:101}

जو لوگ غیب (کی باتوں) پر ایمان رکھتے ہیں اور نماز قائم کرتے ہیں۔اور جو رزق ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے (راہ حق میں) خرچ کرتے ہیں (۳)
اور (اے رسول) ہم نے جو (کتاب) تم پر نازل کی ہے اور جو (کتابیں) تم سے پہلے (نبیوں پر) نازل کی ہیں وہ لوگ ان سب پر ایمان رکھتے ہیں (یعنی سب کو اللہ کی نازل کی ہوئی سچی کتابیں مانتے ہیں) اور وہ لوگ آخرت پر یقین رکھتے ہیں (۴)
وہ ایسے لوگ اپنے رب کی طرف سے راہ راست پر ہیں اور وہی فلاح پانے والے ہیں (۵)
جن لوگوں نے (حق کو تسلیم کرنے سے) انکار کر دیا ہے ان کے لئے برابر ہے خواہ تم نے ان کو ڈرایا یا نہ ڈرایا (خبردار کیا یا نہ کیا) وہ ماننے والے نہیں ہیں (۶) [۶:۲۶، ۴۷:۳۲، ۴۱:۲۶، ۷:۱۷۹، ۷:۱۰۱]

नोट- प्रचलित अनुवादों में लिखा गया है कि आप चैतावनी दें या न दें वह आस्था लाने वाले नही है, जबकि शब्द 'अनज़र' भूतकाल है और 'तुनज़िर' भविष्य काल है, परन्तु जब भविष्य पर 'लम' लगा दिया जाता है तो यह भी भूत काल हो जाता है, तो फिर इनका अनुवाद भविष्य में किस नियत से किया और यदि भविष्य का अनुवाद उचित मान लिया जाए जबकि अनुचित है तो फिर नबी का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, अर्थात् सावधान करें या न करें वह विश्वास नही लाने के तो नबी का कार्य ही क्या रह जाता है, जबकि नबी को सावधान करने को ही भेजा जाता है, जिससे पापी व्यक्ति सत्य मार्ग पर आकर स्वर्ग के अधिकारी बने जिसका साक्ष्य कुरआन दे रहा है, अतः इन शब्दों का अनुवाद भूतकाल में होना चाहिए था, जो मैंने किया है और बात स्पष्ट हो गई,

نوٹ:۔ اکثر ترجموں میں لکھا گیا ہے کہ آپ خبردار (ڈرائیں) کریں یا نہ ڈرائیں وہ ایمان لانے والے نہیں ہیں۔ جب کہ لفظ انذر ماضی ہے اور تنذر مضارع ہے مگر جب مضارع پر لم داخل ہو جاتا ہے تو یہ بھی ماضی ہو جاتا ہے۔تو پھر ان کا ترجمہ مستقبل میں کس قاعدے سے کیا۔اور اگر مستقبل کا ترجمہ درست مان لیا جائے جب کہ غلط ہے تو پھر نبیؐ کا مقصد ہی ختم ہو جاتا ہے۔یعنی خبردار کریں یا نہ کریں وہ ایمان نہیں لانے کے تو نبیؐ کا کام ہی کیا رہ جاتا ہے۔ جب کہ نبیؐ کو خبردار کرنے کو ہی بھیجا جاتا ہے۔جس سے گناہ گار انسان راہ راست پر آ کر جنت کے حق دار بنیں جس کی شہادت قرآن دے رہا ہے۔اس لئے ان الفاظ کا ترجمہ ماضی میں ہونا چاہئے تھا۔جو میں نے کیا ہے اور بات صاف ہو گئی۔

ईश्वर के नियम के अनुसार उनके पापों के कारण उनके हृदयों और कानों पर मुहर लग गई है, और उनकी आंखों पर आवरण पड़ गया है, और उनके लिए बड़ा कष्ट है (7)
{7:9,179, 8:22,55, 10:100, 17:47,48, 18:57, 45:23, 104:6से9, 41:4,5, 82:14}

اللہ کے قانون کے مطابق ان کے گناہوں کی وجہ سے ان کے دلوں اور کانوں پر ۱ مہر لگ گئی ہے۔اور ان کی آنکھوں پر پردہ پڑ گیا ہے اور اُن کے لئے عذاب عظیم ہے(۷)
[۷:۹، ۱۷۹، ۸:۲۲، ۵۵، ۱۰:۱۰۰، ۱۷:۴۷، ۴۸، ۱۸:۵۷، ۴۵:۲۳،

'1' 'खतामल्लाहु अला कुलुबिहिम' का अनुवाद यह लिखा मिलता है कि ईश्वर ने उनके हृदयों पर मुहर लगा दी और उनके कानों पर और आंखों पर परदा डाल दिया तो मानो ईश्वर ने उनके हृदय आंख और कान बन्द कर दिए है, जब ईश्वर ने बन्द कर दिए है, तो फिर स्वीकार करने सुनने और देखने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, वह बेचारे निर्दोष है फिर उनसे लेखा जोखा कैसा और क्यों? चूंकि ईश्वर ने ही उनको पथभ्रष्ट कर दिया, परन्तु ऐसा नही है, यह आयतें मिलती जुलती है, इनको सुदृढ़ आयतों से देखो, ईश्वर ने उनके हृदयों पर मुहर नही लगा दी अपितु स्वयं उनके दुषकर्म उनको इस स्थान पर ले गए कि अब वह सत्य बात मानने के लिए तैयार नही है, उन्होंने स्वयं ही अपने हृदय, आंख, कान बन्द कर लिए है, इस बारे में विवरण पेज (45) आयत 26 पर अंकित किया जाएगा.

۱۰۴:۶ تا ۹، ۴۱:۴، ۵:۴۸، ۸:۱۴] لے ختم اللہ علی قلوبہم کا ترجمہ یہ لکھا ہوا ملتا ہے کہ اللہ نے ان کے دلوں پر مہر لگادی اوران کے کانوں پراورآنکھوں پر پردہ ڈال دیا توگویا اللہ نے ان کے دل آنکھ اورکان بندکر دئے ہیں. جب اللہ نے بند کر دئے ہیں تو پھر قبول کرنے سننے اور دیکھنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا.وہ بے چارے بے قصور ہیں پھران سے حساب کیسا اور کیوں؟چونکہ اللہ نے ہی ان کو بے راہ کر دیا، مگر ایسا نہیں ہے یہ آیتیں متشابہ ہیں ان کو محکم آیتوں سے دیکھو.اللہ نے ان کے دلوں پر مہر نہیں لگادی بلکہ خودان کے بُرے عمل ان کو اس مقام پر لے گئے کہ اب وہ حق بات ماننے کے لئے تیارنہیں ہیں.انہوں نے خود ہی اپنے دل آنکھ کان بند کر لئے ہیں.اس بارے میں تفصیل صفحہ(۴۵) آیت ۲۶ پر درج کی جائے گی.

कतिपय लोग ऐसे भी है जो कहते है कि हम ईश्वर पर आस्था लाए और महा प्रलय के दिन पर वास्तव में वह आस्था लाने वाले नही है (8)

بعض لوگ ایسے بھی ہیں جو کہتے ہیں کہ ہم اللہ پر ایمان لائے اور قیامت کے دن پر. درحقیقت وہ ایمان لانے والے نہیں(۸)

वह ईश्वर और उन लोगों के साथ जो आस्था लाए है धोका करना चाहते है परन्तु वह स्वयं अपने आपको धोके में डाल रहे हैं और उन्हें विवेक नहीं (9)

وہ اللہ اوران لوگوں کے ساتھ جوایمان لائیں دھوکا بازی کرنا چاہتے ہیں.مگر وہ خود اپنے آپ کودھوکے میں ڈال رہے ہیں اورانہیں اس کا شعورنہیں(۹)

उनके हृदयों में एक (कपट का) रोग है जो (उनकी अवज्ञा के कारण ईश्वर के नियम के अनुसार) बढ़ गया है, उनके लिए कष्ट दायक दण्ड है उनके झूठ बोलने (अवज्ञा) का फल (10) {2:16, 3:78,178}

اُن کے دلوں میں ایک (نفاق کا) مرض ہے جو (ان کی نافرمانی کی وجہ سے اللہ کے قانون کے مطابق) بڑھ گیا ہے.ان کے لئے دردناک عذاب ہےان کے جھوٹ بولنے (نافرمانی) کا بدلا(۱۰) [۲:۱۶، ۳:۷۸،۱۷۸]

और जब उनसे कहा जाएगा कि पृथ्वी में अशान्ति उत्पन्न न करना तो उनका उत्तर यह होगा कि हम तो सुधार करने वाले है. (11)

اور جب ان سے کہا جائے گا کہ زمین میں فساد برپا نہ کرنا تو ان کا جواب یہ ہوگا کہ ہم تو اصلاح کرنے والے ہیں(۱۱)

सावधान विश्वास करो अवगत रहो वास्तव में वही विकार करने वाले है किन्तु समझ नही रखाते (अर्थात् वह लोग विकार को ही अच्छा जानकर कर रहे है इस कारण से संसार में अशान्ति है (12)

خبردار یقین کرو آگاہ رہو حقیقت میں وہی فساد کرنے والے ہیں لیکن شعور نہیں رکھتے (یعنی وہ لوگ فساد کو ہی اچھا کام جان کر کر رہے ہیں اس وجہ سے دنیا میں فساد پھیل رہا ہے)(۱۲)

और जब उनसे कहा जाता है कि जिस प्रकार दूसरे लोग आस्था लाए है उसी प्रकार तुम भी विश्वास लाओ तो उनका उत्तर यह होता है क्या हम मूर्खों की भांति आस्था लाऐं? सावधान सुनो वास्तव में वही मूर्ख है, परन्तु उनको इसका विवेक नही (बात वही कि वह झूठ को ही सत्य जान रहे है, और उनको यह डर नही कि हमारे इस दो रुखे व्यवहार से हमारी पोल खुल जाएगी (13)

اور جب ان سے کہا جاتا ہے کہ جس طرح دوسرے لوگ ایمان لائے ہیں اسی طرح تم بھی ایمان لاؤ توان کا جواب یہ ہوتا ہے.کیاہم بےوقوفوں کی طرح ایمان لائیں؟خبر دار سنو حقیقت میں وہی بےوقوف ہیں مگران کو اس کا احساس نہیں (بات وہی کہ وہ باطل کو ہی حق جان رہے ہیں اوران کو یہ بھی خوف نہیں کہ ہمارے اس دورخے عمل سے ہماری پول کھل جائے گی (۱۳)

जब धर्म वादियों से मिलते है तो कहते है कि हम भी आस्था ले आए है और जब ऐकान्त में अपने शैतान नेताओं से मिलते है तो (उनके रूष्ट होने पर) कहते है कि वास्तव में हम तुम्हारे साथ है, और उन लोगों से केवल उपहास कर रहे है, अर्थात् अपमानित कर रहे है (14)

جب اہل ایمان سے ملتے ہیں تو کہتے ہیں کہ ہم بھی ایمان لے آئے ہیں.اور جب علیحدگی میں اپنے شیطان سرداروں سے ملتے ہیں تو (ان کے ناراض ہونے پر) کہتے ہیں کہ حقیقت میں ہم تمہارے ساتھ ہیں.اوران لوگوں سے صرف مذاق کرر ہے ہیں.یعنی ذلیل کرر ہے ہیں(۱۴)

परन्तु ईश्वर उनको अपने नियमानुसार अपमानित कर रहा है (किस प्रकार) उनको ढील दे रहा हे अवज्ञा में और वह अपनी अवज्ञा में अन्धों की भांति भटकते चले जाते है यही अपमानित होना है अर्थात् वह अपने अनुचित कर्मों के कारण अपमानित हो रहे है (15)

مگر اللہ ان کو اپنے قانون کے مطابق ذلیل کرر ہا ہے(کس طرح)ان کو ڈھیل دے رہا ہے سرکشی میں اور وہ اپنی سرکشی میں اندھوں کی طرح بھٹکتے چلے جاتے ہیں (یہی ذلیل ہونا ہے یعنی وہ اپنی غلط کرتوتوں کی وجہ سے ذلیل ہور ہے ہیں)(۱۵)

(यह सब किस लिए हो रहा है) वह वह लोग है जिन्होंने पथ प्रदर्शन के बदले पथ भ्रष्टता क्रय कर ली है, परन्तु यह सौदा उनके लिए लाभदायक नही है, और वह कदापि सत्य मार्ग पर नही है (16)

(یہ سب کچھ کس لئے ہو رہا ہے) وہ وہ لوگ ہیں جنہوں نے ہدایت کے بدلے گمراہی خریدی ہے مگر یہ سودا ان کے لئے نفع بخش نہیں ہے اور وہ ہرگز صحیح راستے پر نہیں ہیں (۱۶)

उनकी उपमा ऐसी है जैसे एक व्यक्ति ने (अर्थात् ईश्वर के नबी या किसी नेक बन्दे ने धर्म प्रचार की) आग उज्ज्वल की (धर्म का मार्ग दिया) और उस प्रकाश से सारा वातावरण उज्ज्वल हो गया तो उन दुष्टों ने इकरार के परदे में इनकार से काम किया तो इस पाप के कारण नियमानुसार धर्म विधान ईश्वर ने उनकी अंतर्दृष्टि समाप्त कर दी (अर्थात् हो गई) और अब वह इस स्थिति में खड़े रह गए कि उनको व्यर्थ के अतिरिक्त सत्य दिखाई नही देता (17) {2:14}

ان کی مثال ایسی ہے جیسے ایک آدمی نے (یعنی اللہ کے رسول یا کسی نیک بندے نے تبلیغ دین کی) آگ روشن کی (شریعت دین کی راہ دی) اور اس روشنی سے سارا ماحول روشن ہوگیا تو ان مقسدوں نے اقرار کے پردے میں انکار سے کام لیا تو اس گناہ کے سبب قانون شریعت کے مطابق اللہ نے اُن کا نور بصیرت سلب کر لیا (یعنی ہوگیا) اور اب وہ اس حال میں کھڑے رہ گئے کہ ان کو باطل کے علاوہ حق نظر ہی نہیں آتا (۱۷) [۲:۱۴]

(मानो इस दो रुखी पालिसी के कारण उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है इस कारण) मानो वह बहरे है, गूंगे है, अन्धे है, वह अब न पलटेंगे सत्य को स्वीकार न करेंगे (यद्यपि वह बहरे गूंगे अन्धे नही है परन्तु धर्म को न मानने के कारण से वह ऐसे है ईश्वर ने यह एक उपमा दी है (18) {8:22, 16:76}

(گویا اس دورُخی پالیسی کے سبب ان کا دماغی توازن گم ہوگیا اس سبب) گویا وہ بہرے ہیں گونگے ہیں اندھے ہیں وہ اب نہ پلٹیں گے حق کو تسلیم نہ کریں گے (حالانکہ وہ بہرے گونگے اندھے نہیں ہیں مگر شریعت کو نہ ماننے کی وجہ سے وہ ایسے ہیں اللہ نے یہ ایک مثال دی ہے (۱۸) [۸:۲۲، ۱۶:۷۶]

या फिर उनकी उपमा यूं जानो कि आकाश से वेग की वर्षा (दया से भरी) हो रही है अर्थात् कुरआन अवतरित हुआ परन्तु उसके साथ अंधेरी (तात्पर्य कठिन मार्ग और शत्रु का भय भी है) और घटा कड़क (मोमिनाना) और चमक भी है, वह बिजली के कड़ाके सुनकर अपनी जानों के भय से कानों में उंगलियां ठूंस लेते है(कुरआन की चैतावनी को सुनकर कानों में उंगलियां ठूंस लेते है का अर्थ है कि इसको सुनो ही नही {7:182,183, 25:26,30, 41:26} और ईश्वर ने उनको हर ओर से घेरे में ले रखा है उनके नकार के कारण (19)

یا پھر ان کی مثال یوں سمجھو کہ آسمان سے زور کی بارش (رحمت سے بھرپور) ہو رہی ہے یعنی قرآن نازل ہوا مگر اس کے ساتھ اندھیری (مراد مشکل راہ اور دشمن کا خوف بھی ہے) اور گھٹا کڑک (مومنانہ) اور چمک بھی ہے وہ بجلی کے کڑاکے سن کر اپنی جانوں کے خوف سے کانوں میں انگلیاں ٹھونسے لیتے ہیں (قرآن کی وعیدوں کو سن کر کانوں میں انگلی ٹھونس لیتے ہیں مطلب ہے کہ اس کو سنو ہی نہیں) [۷:۱۸۲، ۱۸۳، ۲۵:۲۶، ۳۰، ۴۱:۲۶] اور اللہ نے ان کو ہر طرف سے گھیرے میں لے رکھا ہے ان کے کفر کی وجہ سے (۱۹)

चमक से उनकी दशा यह हो रही है कि मानो निकट ही बिजली उनकी अंतर्दृष्टि उचक ले जाएगी, उसकी चमक से जब वातावरण उज्ज्वल हो जाता है तो वह दो एक पग चल लेते है, जब उन पर अन्धेरा छा जाता है तो खड़े हो जाते है, यदि ईश्वर चाहता तो उनकी सुनने और समझने की शक्ति बिलकुल ही समाप्त कर देता परन्तु ईश्वर ने उनको कर्म ठीक कर लेने की ढील दे रखी है) क्योंकि ईश्वर का नियम अनुमान माप निश्चित करने वाला है (20) {2:201, 11:15, 42:20, 7:183, 17:18से21}

چمک سے ان کی حالت یہ ہو رہی ہے گویا عن قریب بجلی ان کی بصارت اچک لے جائے اس کی چمک سے جب فضا روشن ہو جاتی ہے تو وہ دو ایک قدم چل لیتے ہیں جب ان پر اندھیرا چھا جاتا ہے تو کھڑے ہو جاتے ہیں. اگر اللہ چاہتا تو ان کی سماعت اور بصارت بالکل ہی سلب کر لیتا (مگر اللہ نے ان کو عمل درست کر لینے کی ڈھیل دے رکھی ہے) کیونکہ اللہ کا قانون اندازے پیمانے مقرر کرنے والا ہے (۲۰) [۲:۲۰۱، ۱۱:۱۵، ۴۲:۲۰، ۷:۱۸۳، ۱۷:۱۸تا۲۱]

नोट- आयत (19,20) के विषय में कुरआन के प्रकाश में जो बात सामने आती है वह यह है कि ईश्वर की ओर से एक करूणा की वर्षा हो रही है अर्थात् इस्लामी विधान अवतरित हो रहा है या महाप्रलय तक इसकी सम्पन्नता प्रकट होती रहेंगी, इस धर्म के मानने वालो को अन्धेरों अर्थात् व्याकुलताओं से भी सामना करना पड़ेगा जैसे मक्का या मदीना में पड़ा, हर काल में धर्म का अनुकरण करने वालों को करना पड़ता है,

है इल्ललल्लाह में वही तबाही खेज़ियां।
थी कभी ताएफ व मक्का में तबाही खेजयां।।

इन आशंकाओं को देखकर नास्तिक घबरा कर इस्लाम स्वीकार नही

نوٹ:۔ آیت [۱۹،۲۰] کے بارے میں قرآن کی روشنی میں جو بات سامنے آتی ہے وہ یہ ہے کہ اللہ کی طرف سے ایک رحمت کی بارش ہو رہی ہے یعنی شریعت اسلام نازل ہو رہی ہے یا قیامت تک اس کی برکتیں ظاہر ہوتی رہیں گی. اس دین کے ماننے والوں کو اندھیروں یعنی پریشانیوں سے بھی سابقہ پڑتا رہے گا جیسے مکہ یا مدینہ میں پڑا. ہر زمانے میں دین کی پیروی کرنے والوں کو کرنا پڑتا ہے

ہیں الا اللہ میں وہی تباہی خیزیاں
تھیں کبھی طائف و مکہ میں تباہی خیزیاں

ان خطرات کو دیکھ کر کافر گھبرا کر اسلام قبول نہیں کرتے بلکہ باطل پر

करते अपितु मिथ्या पर जमे रहते हैं, इसके साथ वह आस्तिकों की कड़क से घबराए रहते हैं, और उनकी उन्नति से भी भयभीत रहते हैं और वह आस्तिकों की कड़क चमक और कुरआन को सुनकर अपने कानों में उंगलियां ठूंस लेते हैं, किन्तु सत्य को मिटाने के लिए वह हर समय अपनी अशुद्ध योजना बनाते रहते हैं और जहां से भी कोई ऐसी सूचना मिलती है कि अमुक क्षेत्र के आदमी मुसलमानों को मिटाने के लिए तैयारी कर रहे है तो वह उस ओर को दौड़ते हैं, परन्तु तुरन्त ही उनको असफलता मिलती है, अर्थात् वह आशा समाप्त हो जाती है, और वह फिर खड़े के खड़े रह जाते हैं, उनका सदैव यही प्रयत्न रहता है और बार-बार सत्य के विरुद्ध भाग्य परिक्षण करते हैं, इसके अतिरिक्त भी ईश्वर उनको सत्य स्वीकार करने के लिए छूट देता है क्योंकि उसने हर वस्तु के लिए एक समय निश्चित कर रखा है, इस अवसर से जो लाभ नही उठाता तो भाग्य ईश्वर के विधान के आधीन वह नष्ट हो जाता है और जो लाभ उठाता है वह सफल हो जाता है, यही अर्थ बिजली की चमक में चलने और अंधकार होने पर खड़ा होने का है, जो सत्य और मिथ्या के युद्ध में महा प्रलय तक चलता रहेगा, दूसरा अर्थ यह भी है कि कभी वह नास्तिक लोग इस्लाम स्वीकार कर लेते थे या करते रहेंगे तो प्रकाश मिला गया और उस प्रकाश में कुछ देर या समय के लिए चले, परन्तु फिर मिथ्या ने अधिकार कर लिया जैसे सामरी के साथ हुआ (20:96) और वह फिर अन्धेरे में रह जाते हैं और वहां ही खड़े दिखाई देते हैं,

جمے رہتے ہیں۔اس کے ساتھ وہ مومنوں کی کڑک سے گھبرائے رہتے ہیں۔اور ان کی ترقی سے بھی خوف زدہ رہتے ہیں اور وہ مومنوں کی کڑک کی چمک اور قرآن کو سن کر اپنے کانوں میں انگلیاں ٹھونس لیتے ہیں۔لیکن حق کو مٹانے کے لئے وہ ہر وقت اپنے ناپاک منصوبے بناتے رہتے ہیں اور جہاں سے بھی کوئی ایسی خبر ملتی ہے کہ فلاں علاقے کے آدمی مسلمانوں کو مٹانے کے لئے تیاری کر رہے ہیں تو وہ اس طرف کو دوڑتے ہیں۔مگر جلد ہی ان کو ناکامی ملتی ہے۔یعنی وہ امید ختم ہو جاتی ہے اور وہ پھر کھڑے کے کھڑے رہ جاتے ہیں۔ان کی ہمیشہ یہی کوشش رہتی ہے اور بار بار حق کے خلاف قسمت آزمائی کرتے ہیں۔اس کے باوجود بھی اللہ ان کو حق قبول کرنے کے لئے مہلت دیتا ہے کیونکہ اس نے ہر چیز کے لئے ایک وقت مقرر کر رکھا ہے۔اس موقعہ سے جو فائدہ نہیں اٹھاتا تو تقدیر قانون الٰہی کے تحت وہ برباد ہو جاتا ہے۔اور جو فائدہ اٹھاتا ہے وہ کامیاب ہو جاتا ہے۔یہی مطلب بجلی کی چمک میں چلنے اور اندھیرا ہونے پر کھڑا ہونے کا ہے۔جو حق اور باطل کی جنگ میں قیامت تک چلتا رہے گا۔دوسرا مطلب یہ بھی ہے کہ کبھی وہ کافر لوگ اسلام قبول کر لیتے تھے یا کرتے رہیں گے تو روشنی مل گئی اور اس روشنی میں کچھ دیر یا وقت کے لئے چلے۔مگر پھر باطل اثر انداز ہوتا تھا یا ہوتا رہے گا جیسے سامری کے ساتھ ہوا [۹۶:۲۰] اور وہ پھر اندھیرے میں رہ جاتے ہیں۔اور وہاں ہی کھڑے نظر آتے ہیں

लोगों बन्दगी स्वीकार करो (अर्थात् ईश्वर के हर आदेश को स्वीकार करके उस पर क्रिया करो) अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुम से पहले लोग हो गए हैं उन सब का जनक है, तुम्हारे सदाचारी होने का केवल यही एक उपाए है (21)

لوگو! بندگی اختیار کرو (یعنی اللہ کے ہر حکم کو تسلیم کر کے اس پر عمل کرو) اپنے اس رب کی جو تمہارا اور تم سے پہلے جو لوگ ہو گزرے ہیں ان سب کا خالق ہے تمہارے پرہیزگار ہونے کی صرف یہی ایک صورت ہے (۲۱)

(वह रब कौन है जिसकी आज्ञा पालन करने पर मानवता का भला है) वह वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी का बिछौना बिछाया, आकाश की छत बनाई और ऊपर से पानी बरसाया, और उसके द्वारा हर प्रकार की उपज निकाल कर तुम्हारे लिए भोजन पहुंचाया, बस जब तुम यह जानते हो तो दूसरों को ईश्वर का साझी न बनाओ (22) {4:28,116}

(وہ رب کون ہے جس کی اطاعت کرنے پر انسانیت کا بھلا ہے) وہ وہی ہے جس نے تمہارے لیے زمین کا فرش بچھایا آسمان کی چھت بنائی اور اوپر سے پانی برسایا اور اس کے ذریعہ سے ہر طرح کی پیداوار نکال کر تمہارے لیے رزق بہم پہنچایا بس جب تم جانتے ہو تو دوسروں کو اللہ کا شریک نہ ٹھہراؤ (۲۲) [۱۱۶،۴۸:۴]

नोट-आयत (17से20तक) विभिन्न शैली में ईश्वर ने आस्तिकों की दशा का भी उल्लेख किया और नास्तिकों की दशा का भी, इसके बाद आयत 21 और 22 में अपने जनक होने का वर्णन कुछ इस ढंग में किया, अर्थात् अपनी रचनाओं को संक्षिप्त में गिनाया, यद्यपि उसकी रचनाओं का संग्रह करना असम्भव है, उसने क्या क्या उत्पन्न किया मानव तो आज तक यह भी नही जानता कि ईश्वर ने इस दुनिया में कितनी विचित्र वस्तुएं मनुष्य के लिए बनाई हैं, हर प्रकार से इन्सान को समझाया, परन्तु यह मानव ईश्वर को न मानते हुए अपना स्वामी और को बनाता है, और उसके सामने ही सिर झुकाता है उसी की सराहना करता है, इस कार्य प्रणाली पर सावधान करने के लिए ईश्वर ने इन्सान के सामने एक चुनौती प्रस्तुत की है कि हे इन्सान यदि तू मुझे अपना रब और जनक स्वीकार नही करता तो जैसी रचना तेरे लिए मैंने अपनी क्रियात्मक कुरआन पुस्तक ब्रह्माण्ड में की है तो तू और तेरे वह रब जिनको तू अपना जनक जानता है जिनको मैंने पालनहार बनाने से मना किया है सब मिलकर एक ही चिन्ह सूरत बना दो, यदि तुम ऐसे सुदृढ़ प्रमाणों के अतिरिक्त इस विषय में किसी शंका व भ्रम में ग्रस्त हो कि जो जीवन का विधान मैंने अपने ईशदूत भक्त मुहम्मद के द्वारा तुम्हें दिया है वह वास्तव में सत्य है या नही या उसमें कोई कमी है

نوٹ:۔آیت ۱۷ سے ۲۰ تک مختلف انداز میں اللہ نے مومنین کی حالت بھی بیان کی ہے اور کافروں کی حالت بھی۔اس کے بعد آیت (۲۱) اور (۲۲) میں اپنے خالق ہونے کا بیان کچھ اس انداز میں کیا۔یعنی اپنی تخلیق کو مختصر طور پر شمار کرایا۔اس نے کیا کیا پیدا کیا انسان تو آج تک یہ بھی نہیں جانتا کہ اللہ نے اس دنیا میں کتنی عجیب غریب چیزیں انسان کے لئے بنائیں ہیں۔ہر طرح سے انسان کو سمجھایا مگر انسان اللہ سے کفر اختیار کرتے ہوئے اپنا رب کسی اور کو بناتا ہے اور اس کے سامنے ہی سرخم کرتا ہے اُسی کی تعریف کرتا ہے۔اس طرز عمل پر متنبہ کرنے کے لئے اللہ نے انسان کے سامنے ایک چیلنج پیش کیا ہے کہ اے انسان اگر تو مجھے اپنا رب اور خالق تسلیم نہیں کرتا تو جیسی تخلیق تیرے لئے میں نے اپنی عملی قرآن کتاب کائنات میں کی ہیں۔تو تو اور تیرے وہ رب جن کو تو اپنا خالق جانتا ہے۔جن کو میں نے رب بنانے سے منع کیا ہے سب مل کر ایک ہی نشانی سورت بنا دو۔اگر تم اس قدر محکم دلائل وشواہد کے باوجود اس بارے میں کسی شک وشبہ میں مبتلا ہو کہ جو ضابطہ زندگی میں نے اپنے رسول بندے محمدؐ کی معرفت تمہیں دیا ہے وہ واقعی

तो इसके दूर करने की आसान विधि यह है कि इन्सानी जीवन के लिए जो चित्र यह विधान प्रस्तुत करताहै इसके अतिरिक्त कोई चित्र तुम बनाके दिखा दो, पूरा नही तो एक लक्ष्य ही (नियम) ही सही, परन्तु काल संसार साक्षी है कि इन्सान का बनाया हुआ नियम अज्ञात कितनी बार असफल हो गया और होता रहेगा,

आज मनुष्य कोई विधान बनाता है कल को असफल हो जाता है? इस कारण कि इन्सान के सामने केवल वर्तमान है भविष्य नही, अतः उसका बनाया हुआ नियम असफल होता है, परन्तु ईश्वर को हर वस्तु और हर काल ज्ञात है इसलिए हर काल के अनुरूप ही यह नियम कुरआन करीम दिया है जो बराबर चल रहा है और चलता रहेगा हर स्थान, यह कभी असफल न होगा (10:38, 11:13, 17:88, 8:31) देखिए किस शैली में चुनौती दी है,

यदि तुमको इस रचना या जीवन का नियम जो मैंने अपनी क्रियात्मक और कथानात्मक पुस्तक में की है उसमें कुछ भ्रम हो या शंका में ग्रस्त हो, जिसकी सूचना हमने अपने बन्दे पर वही अवतरित करके दी है (उनके उत्पन्न करने वाला या नियम देने वाला मैं ही हूं) तो उनमें से एक चिन्ह मंत्र नियम (सूरत) ही तुम और तुम्हारे वह रब जिनको मुझे छोड़कर तुम रब बनाते हो बना लाओ यदि तुम सच्चे हो (23)

नोट-आयत (23) का प्रचलित अनुवाद जो पढ़ने में आ रहा है वह यह है,

यदि तुम्हें इस विषय में शंका है कि यह पुस्तक जो हमने अपने बन्दे पर अवतरित की है यह हमारी है या नही तो इसके समान एक सूरत ही बना लाओ और एक ईश्वर को छोड़कर अपने सारे सहायकों मित्रों को बुला लो जिन जिनकी सहायता चाहो, मानो ईश्वर ने एक चुनौती दी कि इस कुरआन जैसी एक सूरत ही बना लाओ दूसरी जगह (8:31) में है,

(8:31) जब उनको हमारी आयात पढ़कर सुनाई जाती है तो कहते है (यह वचन) हमने सुन लिया है, यदि हम चाहें तो इसी तरह का हम भी कह दें और यह है ही क्या, सिर्फ अगले लोगों की बातें है, (17:88) कह दो यदि इन्सान और जिन इस बात पर जमा हों कि इस कुरआन जैसा बना लाएं तो इस जैसा न ला सकेंगे यद्यपि वह एक दूसरे के सहायक हों

इस आयत में ईश्वर ने स्पष्ट कहा कि इस कुरआन जैसा बनाकर कोई नही ला सकता फिर हमने यह कैसे मान लिया कि यह चुनौती कुरआन में अंकित अरबी लेख के विषय में है कि इस जैसी सूरत बनाकर लाओ, चूंकि (4:82) के अनुसार कुरआन में विरोधाभास नही है, अतः (17:88) को देखते हुए यह चुनौती कुरआन के अरबी लेख के विषय में नही है तो फिर क्या है देखो-

यदि (2:23) के आधीन जैसा कि आम अनुवाद किया है को मान लिया जाए तो आयत (8:31) पर ही विद्रोही इन्सानों के कथन पर ईश्वर कहता कि हां हां बना लाओ यदि तुम सच्चे हो परन्तु यहां उन विद्रोही इन्सानों के कथन का कोई उत्तर न दिया, केवल उनकी बात का उल्लेख कर दिया और (2:23) में चुनौती दी, जबकि वास्तविकता कुछ और है जो (2:22) या और जगह स्पष्ट हो रही है, अब एक और विधि से विचार किया जाए, वह यह कि कुरआन में जो लेख है वह एक गद्य में है जो अरबी भाषा है, यदि कुरआन की सूरत जो अरबी में है के बारे में होता तो अवश्य कोई न कोई विद्रोही इन्सान एक लेख बनाकर या कुरआन की ही कोई सूरत पढ़कर शब्द समान से लाभ उठाकर प्रस्तुत कर देता और वाद करता, देखो मैं बना लाया, चूंकि (2:23) में शब्द समान (मिस्ल) है और इससे तात्पर्य अर्थ यही है कि

حقیقت ہے یا نہیں. یا اس میں کوئی کمی ہے تو اس کو دور کرنے کی آسان ترکیب یہ ہے کہ انسانی زندگی کے لئے جو نقشہ یہ ضابطہ پیش کرتا ہے. اس کے بجائے کوئی نقشہ تم بنا کے دکھا دو پورا نہیں ایک منزل ہی سہی. لیکن زمانہ شاہد ہے کہ انسان کا بنایا ہوا قانون نامعلوم کتنی بار فیل ہو گیا اور ہوتا رہے گا.

آج انسان کوئی قانون بناتا ہے کل کو فیل ہو جاتا ہے؟ اس لئے کہ انسان کے سامنے صرف حال ہے مستقبل نہیں. اس لئے اس کا بنایا ہوا ضابطہ فیل ہوتا ہے مگر اللہ کو ہر چیز اور ہر زمانہ معلوم ہے اس نے ہر زمانے کی مناسبت سے ہی یہ ضابطہ قرآن کریم دیا ہے. جو برابر چل رہا ہے اور چلتا رہے گا ہر جگہ یہ کبھی فیل نہ ہوگا [۱۰:۳۸، ۱۱:۱۳، ۱۷:۸۸، ۸:۳۱] دیکھئے کس انداز میں چیلنج دیا ہے.

اگر تم کو اس تخلیق یا ضابطہ حیات جو میں نے اپنی عملی اور قولی کتاب میں کی ہیں اس میں کچھ شک ہو یا شک میں مبتلا ہو جس کی خبر ہم نے اپنے بندے پر وحی نازل کر کے دی ہے (ان کا پیدا کرنے والا یا ضابطہ دینے والا میں ہی ہوں) تو ان میں سے ایک نشانی علامت منزل (سورت) ہی تم اور تمہارے وہ رب جن کو مجھے چھوڑ کر تم رب بناتے ہو بنا لاؤ اگر تم سچے ہو (۲۳)

نوٹ:۔ آیت (۲۳) کا رائج الوقت ترجمہ جو پڑھنے میں آ رہا ہے وہ یہ ہے.

اگر تمہیں اس امر میں شک ہے کہ یہ کتاب جو ہم نے اپنے بندے پر اُتاری ہے یہ ہماری ہے یا نہیں تو اس کے مانند ایک سورت ہی بنا لاؤ اور ایک اللہ کو چھوڑ کر اپنے سارے ہمنواؤں کو بلا لو جن جن کی مدد چاہو. گویا اللہ نے ایک چیلنج دیا کہ اس قرآن جیسی ایک سورت ہی بنا لاؤ دوسری جگہ (۸:۳۱) میں ہے.

(۸:۳۱) جب ان کو ہماری آیات پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو کہتے ہیں (یہ کلام) ہم نے سن لیا ہے اگر ہم چاہیں تو اسی طرح کا ہم بھی کہہ دیں اور یہ ہے ہی کیا. صرف اگلے لوگوں کی حکایتیں ہیں (۱۷:۸۸) کہہ دو اگر انسان اور جن اس بات پر جمع ہوں کہ اس قرآن جیسا بنا لائیں تو اس جیسا نہ لا سکیں گے اگر چہ وہ ایک دوسرے کے مددگار ہوں.

اس آیت میں اللہ نے صاف کہا کہ اس قرآن جیسا بنا کر کوئی نہیں لا سکتا. پھر ہم نے یہ کیسے مان لیا کہ یہ چیلنج قرآن میں درج متن عربی کے بارے میں ہے کہ اس جیسی سورت بنا کر لاؤ چونکہ (۴:۸۲) کے مطابق قرآن میں تضاد نہیں ہے اس لئے (۱۷:۸۸) کو دیکھتے ہوئے یہ چیلنج قرآن کے عربی متن کے متعلق نہیں ہے. تو پھر کیا ہے دیکھو

اگر (۲:۲۳) کے تحت جیسا کہ عام ترجمہ کیا ہے کو مان لیا جائے تو آیت (۸:۳۱) پر ہی باغی انسانوں کے قول پر اللہ کہتا کہ ہاں. ہاں بنا لاؤ اگر تم سچے ہو. مگر یہاں ان باغی انسانوں کے قول کا کوئی جواب نہ دیا. صرف ان کی بات کا ذکر کر دیا. اور (۲:۲۳) میں چیلنج دیا. جب کہ حقیقت کچھ اور ہے جو (۲:۲۲) یا اور جگہ ظاہر ہو رہی ہے اب ایک اور طریقہ سے غور کیا جائے وہ یہ کہ قرآن میں جو عبارت ہے وہ ایک نثر میں ہے جو عربی زبان ہے. اگر قرآن کی سورت جو عربی میں ہے کہ بارے میں ہوتا تو ضرور کوئی نہ کوئی باغی انسان ایک عبارت بنا کر یا قرآن کی ہی کوئی سورت پڑھ کر لفظ مثل سے فائدہ اٹھا کر پیش کر دیتا اور دعویٰ کرتا دیکھو میں بنا لایا. چونکہ (۲:۲۳) میں لفظ مثل ہے اور اس سے مراد یہی ہے کہ

बिल्कुल इस जैसी अर्थात् यदि ज़ैद के अनुरूप बनाना है तो कोई अन्तर न हो और यह तब ही हो सकता है जब तदानुरूप कुरआन की ही किसी सूरत की भांति हो या बिल्कुल ज़ैद हो

ऐसी स्थिति में विद्रोही का वाद कैसे निरस्त किया जा सकता है, और बहुत से विद्रोही इन्सान उसकी हां में हां करने को तैयार होते और निर्णय होना कठिन था जैसा महामना इब्राहीम अ0 को (2:258) में प्रसंग सामने आया, जब आपने ईश्वर के विरोधी से कहा कि उस स्वामी को मानो जो मारता है और जिलाता है, परन्तु वह रब का विरोधी तुरन्त जबानदराज़ी करके कहता है कि यह कार्य तो मैं भी कर सकता हूं जिस को चाहूं मृत्यु दण्ड दूं और जिसको चाहूं क्षमा कर दूं यह सुनकर श्रीमान ने इस उत्तर पर बात न की और एक ऐसी चुनौती प्रस्तुत कर दी जिसको सुनकर नास्तिक स्तब्ध रह गया, कोई उत्तर न था, अर्थात् श्रीमान ने कहा मेरा ईश्वर सूर्य को पूर्व से निकालता है तू पश्चिम से निकाल दे अर्थ यही कि मेरे स्वामी ने यह संसार बनाया है जिसमें सूर्य पूर्व से निकलता है तू ऐसा संसार बना जिसमें सूर्य पश्चिम से निकले, यह एक ऐसी चुनौती थी जिसका कोई उत्तर न था और चुनौती वही होती है जिसका कोई उत्तर न हो, इसलिए ही ईश्वर ने (8:31) में उनकी चुनौती स्वीकार न की, यदि ईश्वर उनसे मांग करता तो अवश्य वह नास्तिक उस नास्तिक की भांति उत्तर देते और एक लेख बनाकर प्रस्तुत कर देते, यह न करते हुए ईश्वर ने दूसरी शैली अपनाई,

शब्द समान अनुरूप से कैसे लाभ उठाया जा सकता है देखो, यदि तदानुरूप का अर्थ हो बिल्कुल वैसा ही तो कोई भी कुरआन की सूरत प्रस्तुत हो सकती है यदि भाव से आशय हो तो निम्न में अवलोकन हो- असल आयत-

(۱۷:۲۹) اِنَّماتَعْبُدُوْنَ مِنْ دون اللہ اَوْثَاناً وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْکاً اِنَّ الَّذِ یْنَ تعبدون من دون اللہ لا یملکون لکم رزقافابتغواعنداللہ الرِّ زق واعبدوہ واشکروالٰہ‍ٗ الیہ ترجعون۔

अनुवाद- (29:17) तुम तो ईश्वर को छोड़कर मूर्तियों को पूजते और तूफ़ान बान्धते हो, तो जिन लोगों को तुम ईश्वर के अतिरिक्त पूजते हो वह तुमको जीविका देने का अधिकार नही रखते, अतः ईश्वर ही के यहां से जीविका मांगो और उसी की आज्ञाकारी करो, उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे

अब मिस्ल आयत व उसका अर्थ देखिए-

الَّذِیْنَ (اِنَّمَا) تَعْبُدُوْنَهُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ اِنَّمَاهُمْ اَصْنَام۔ وَاِنَّكُمْ تَاتُوْنَ بِاِفْكَ مُّبِیْن۔ وَتَرْتَكِبُوْنَ كَذِباًصَرِیْحاً۔ اِنَّهُمْ لَایَسْتَطِیْعُوْن اَنْ یَّرْزُقُوْكُم شَیْئًا۔ اِسْتَرْزِقُوْاللّٰہ۔ وَكُوْنُوْاعَابِدِیْنَ لَهٗ۔ وَاشْكُرُوْالَهٗ۔اِنَّكُمْ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۔

समान लेख का अर्थ- निःसन्देह वह जिनकी तुम ईश्वर को छोड़कर पूजा कर रहे हो वह मूर्ति है, और तुम एक खुला झूठ घड़ रहे हो और खुला पाप कर रहे हो, वह इसकी शक्ति नही रखते कि वह तुमको कुछ जीविका दे सकें, जीविका तुम ईश्वर से मांगो और केवल उसी की पूजा करने वाले बन जाओ और उसी का धन्यवाद करो, निःसन्देह तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे,

ऊपर कुरआन की मूल आयत भी पढ़ली और ऐसा लेख देख लिया जिसका अर्थ मिल रहा है, अब करो निर्णय,

यदि (2:23) में सूरत से अर्थ यही होता कि इस कुरआन के लेख जैसा लेख बनाकर लाओ तो कोई भी आदमी लेख बनाकर या उसी आयत

بالکل اس جیسی یعنی اگر زید کی مثل بنانی ہے تو کوئی فرق نہ ہو اور یہ تب ہی ہو سکتا ہے جب ہوبہو قرآن کی ہی کسی سورت کی طرح ہو یا بالکل زید ہو۔

ایسی صورت میں باغی کا دعویٰ کیسے مسترد کیا جا سکتا ہے۔اور بہت سے باغی انسان اس کی ہاں میں ہاں کرنے کو تیار ہوتے اور فیصلہ ہونا مشکل تھا جیسا حضرت ابراہیم کو (۲۵۸:۲) میں معاملہ پیش آیا جب آپ نے منکر رب سے کہا کہ اس رب کو مانو جو مارتا ہے اور جلاتا ہے۔مگر وہ منکر رب فوراً زبان درازی کر کے کہتا ہے کہ یہ کام تو میں بھی کر سکتا ہوں جس کو چاہوں سزائے موت دوں اور جس کو چاہوں معاف کر دوں۔ یہ سن کر حضرت نے اس جواب پر بات نہ کی اور ایک ایسا چیلنج پیش کر دیا جس کو سن کر کافر ہکا بکا رہ گیا کوئی جواب نہ تھا۔یعنی حضرت نے کہا کہ میرا رب سورج کو مشرق سے نکالتا ہے تو مغرب سے نکال دے۔مطلب وہی کہ میرے رب نے یہ کائنات بنائی ہے جس میں سورج مشرق سے نکلتا ہے۔تو ایسی کائنات بنا جس میں سورج مغرب سے نکلے۔ یہ ایک ایسا چیلنج تحدی تھا جس کا کوئی جواب نہ تھا۔اور چیلنج وہی ہوتا ہے جس کا کوئی جواب نہ ہو۔اس لئے ہی اللہ نے (۳۱:۸) میں ان کے چیلنج کو قبول نہ کیا۔اگر اللہ ان سے مطالبہ کرتا تو ضرور وہ باغی اس باغی کی طرح جواب دیتے اور ایک عبارت بنا کر پیش کر دیتے۔ یہ نہ کرتے ہوئے اللہ نے دوسرا ہی طریقہ اختیار کیا۔

لفظ مثل سے کیسے فائدہ اٹھایا جا سکتا ہے دیکھو۔اگر ہوبہو کا مطلب ہو بالکل ویسا تو کوئی بھی سورت قرآن کی پیش ہو سکتی ہے۔اگر مفہوم سے مراد ہو تو ذیل میں ملاحظہ ہو۔

اصل آیت: (۱۷:۲۹) اِنَّماتَعْبُدُوْنَ مِنْ دون اللہ اَوْثَاناً وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْکاً اِنَّ الَّذِیْنَ تعبدون من دون اللہ لا یملکون لکم رزقافابتغوا عنداللہ الرِّزق واعبدوہ واشکروالٰہ‍ٗ الیہ ترجعون۔

ترجمہ (۱۷:۲۹) تم تو اللہ کو چھوڑ بتوں کو پوجتے اور طوفان باندھتے ہو۔تو جن لوگوں کو تم اللہ کے سوا پوجتے ہو وہ تم کو رزق دینے کا اختیار نہیں رکھتے پس اللہ ہی کے یہاں سے رزق طلب کرو اور اسی کی عبادت کرو اور اسی کا شکر کرو اسی کی طرف تم لوٹ کر جاؤ گے۔

اب مثل والی عبارت اور اس کا ترجمہ ملاحظہ ہو:

الَّذِیْنَ (اِنَّمَا) تَعْبُدُوْنَهُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ اِنَّمَاهُمْ اَصْنَام۔ وَاِنَّكُمْ تَاتُوْنَ بِاِفْكَ مُّبِیْن۔ وَتَرْتَكِبُوْنَ كَذِباًصَرِیْحاً۔ اِنَّهُمْ لَایَسْتَطِیْعُوْن اَنْ یَّرْزُقُوْكُم شَیْئًا۔ اِسْتَرْزِقُوْاللّٰہ۔ وَكُوْنُوْاعَابِدِیْنَ لَهٗ۔ وَاشْكُرُوْالَهٗ۔اِنَّكُمْ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۔

بے شک وہ جن کی تم اللہ کے علاوہ پوجا کر رہے ہو وہ بت ہیں اور تم ایک کھلا جھوٹ گھڑ رہے ہو وہ اس بات کی طاقت نہیں رکھتے کہ وہ تم کو کچھ روزی دے سکیں روزی تم اللہ سے مانگو اور صرف اسی کی عبادت کرنے والے بن جاؤ۔اور اس کا شکر ادا کرو۔بے شک تم اس کی طرف لوٹائے جاؤ گے

اوپر قرآن کی اصل آیت بھی پڑھ لی اور ایسی عبارت دیکھ لی جس کا مطلب مل رہا ہے۔اب کرو فیصلہ

اگر (۲۳:۲) میں سورت سے مراد یہی ہوتی کہ اس قرآن کی عبارت جیسی عبارت بنا کر لاؤ تو کوئی بھی آدمی عبارت بنا کر یا اسی آیت سورت کو پیش

सूरत को प्रस्तुत कर देता जैसे कि मैंने ऊपर अरबी लेख (29:17) के भाव के अनुसार लिखी है, इस चुनौती का उत्तर देने के बारे में ज्ञानी लिखते हैं कि उस समय के इन्सानों में इस बात की क्षमता थी कि वह इसका उत्तर दे सकते थे, परन्तु ईश्वर ने उनकी क्षमता को लुंज कर दिया और उत्तर देने से रोक दिया? यह तो एक बहुत बड़ा अन्याय हुआ कि अपनी बात का उत्तर देने की शक्ति को लुंज कर दिया, ज्ञानियों ने यह लिखकर ईश्वर पर एक आरोप अत्याचार करने का लगा दिया (ईश्वर की शरण), परन्तु बात यह नहीं है, अपितु बात वही है कि (2:23) का अर्थ यह है कि जो कुछ ईश्वर ने अपनी कथनात्मक और क्रियात्मक पुस्तक में बनाया या अवतरित किया है इसी प्रकार तुम भी बना दो या अवतरित कर दो सब नहीं तो थोड़ा ही,

ईश्वर ने (2:21,22) और दूसरे स्थान पर अपनी रचना जो क्रियात्मक पुस्तक संसार में है को संक्षिप्त गिनाकर (2:23) में एक चुनौती प्रस्तुत कर दी, अर्थात् अमुक अमुक मेरी रचना है या यह मेरा कथनात्मक कुरआन में जीवन विधि है और तुम मुझको ईश्वर स्वीकार नहीं करते जबकि मैंने तुमको यह आदेश दिया है कि मेरे अतिरिक्त किसी और को रब न बनाओ, किन्तु तुम बनाते हो, तो तुम और तुम्हारे वह रब जिनको तुमने अभिभावक मान रखा है एक लक्षण, चिन्ह, सूरत अर्थात् एक पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा को ही बना दो, दिन के स्थान पर रात ही कर दो या मेरे जिस नियम के अनुसार वर्षा होती है वर्षा ही कर दो, या उस जीवन विधि जैसी कोई विधि बना दो आदि

यह है इस आयत (2:23) का निष्कर्ष, ईश्वर हम को अपनी वाणी को समझने और व्यवहार करने की क्षमता दे

शब्द सूरत का अर्थ शब्द कोष में देखो मरतबा श्रेष्ठता, सम्मान और चिन्ह भी है,

सम्भवतः मौलिक त्रुटि हमसे यह हो रही है कि हमने केवल एक ही पुस्तक अर्थात् यह कुरआन जिसको हम पढ़ते हैं वह भी केवल लिपि की सीमा तक को ही समझ रखा है, जबकि यह ईश्वर की कथनात्मक पुस्तक है इसमें जीवन विधि सूरतें और आयतें हैं, इसके अतिरिक्त एक और पुस्तक है जो ईश्वर की क्रियात्मक पुस्तक है जिसको हम ब्रह्माण्ड कहते है यह भी एक सत्य पुस्तक है, और जब तक हम इस दूसरी वास्तविक क्रियात्मक पुस्तक को स्वीकार न करेंगे उस समय तक हम ईश्वर की कथनात्मक पुस्तक को समझने में इस प्रकार ठोकरें खाते रहेंगे,

(2:23) में जो चुनौती है वह दोनों कुरआन अर्थात् क्रियात्मक व कथनात्मक दोनों पुस्तकें कुरआन के विषय में है, क्रियात्मक पुस्तक का प्रमाण कथनात्मक पुस्तक में है या नहीं देखते है,

(9:36) वास्तविकता यह है कि महीनों की संख्या जब से ईश्वर ने आकाश व पृथ्वी को उत्पन्न किया है ईश्वर की पुस्तक (क्रियात्मक) में बाराह ही है और उनमें चार महीने सम्मानित है,

(6:59) पृथ्वी के अन्धाकार आवर्णों में कोई दाना ऐसा नहीं जिससे वह अवगत न हो, शुष्क व तर सब एक खुली पुस्तक में है,

इन दोनों आयतों (9:36, 6:59) में क्रियात्मक पुस्तक ब्रह्माण्ड का प्रमाण मिलता है, अतः ईश्वर की दो पुस्तक कुरआन है क्रियात्मक और कथनात्मक और यह चुनौती क्रियात्मक और कथनात्मक दोनों कुरआन की सूरतों के विषय में ही है (6:93)

यदि क्रियात्मक पुस्तक से हट कर केवल कथनात्मक पुस्तक के विषय में ही चुनौती को माना जाए तो वह यह है कि जो जीवन शैली विधि यह है कि तुम भी ऐसा ही पूर्ण या अंश ही बनाकर ला दो जो कभी परिवर्तित न हो, जैसा कुरआन में चल रहा है जो लिखा गया

کر دیتا جیسا کہ میں نے اوپر عربی عبارت (۱۷:۲۹) کے مفہوم کے مطابق لکھی ہے۔اس چیلنج کا جواب دینے کے بارے میں علماء لکھتے ہیں کہ اس وقت کے انسانوں میں اس بات کی صلاحیت تھی کہ وہ اس کا جواب دے سکتے تھے مگر اللہ نے ان کی صلاحیت کو مفلوج کر دیا اور جواب دینے سے روک دیا؟ یہ تو ایک بہت بڑا ظلم ہوا کہ اپنی بات کا جواب دینے کی طاقت کو صلب کر لیا۔علما نے یہ لکھ کر اللہ پر ایک الزام ظلم کرنے کا لگا دیا (نعوذباللہ) مگر بات یہ نہیں ہے بلکہ بات وہی ہے یہ (۲۳:۲) کا مطلب یہ ہے کہ جو کچھ اللہ نے اپنی قولی اور فعلی کتاب میں بنایا یا نازل کیا ہے اسی طرح تم بھی بنا دو یا نازل کر دو سب نہیں تو تھوڑا ہی

اللہ نے (۲۲،۲۱:۲) اور دوسری جگہ اپنی تخلیق جو عملی قرآن کائنات میں ہیں کو مختصر گنا کر (۲۳:۲) میں ایک چیلنج پیش کر دیا یعنی فلاں فلاں میری تخلیق ہیں یا یہ میرا قولی قرآن میں ضابطہ حیات ہے اور تم مجھ کو رب تسلیم نہیں کرتے جب کہ میں نے تم کو یہ حکم دیا ہے کہ میرے علاوہ کسی اور کو رب نا بناؤ مگر تم بناتے ہو تو تم اور تمہارے وہ معبود جن کو تم نے کارساز مان رکھا ہے، ایک علامت نشان سورت یعنی ایک زمین آسمان، سورج چاند کو ہی بنا دو۔ دن کی جگہ رات ہی کر دو یا میرے جس قاعدے کے مطابق بارش ہوتی ہے بارش ہی کر دو۔ یا اس ضابطہ حیات جیسا کوئی ضابطہ بنا دو وغیرہ

یہ ہے اس آیت (۲۳:۲) کا حاصل۔اللہ ہم کو اپنے کلام کو سمجھنے اور عمل کرنے کی توفیق دے۔

لفظ سورت کا مطلب لغت میں دیکھو۔مرتبہ: فضیلت شرف علامت بھی ہے

غالباً بنیادی غلطی ہم سے یہ ہو رہی ہے کہ ہم نے صرف ایک ہی کتاب یعنی یہ قرآن جس کو ہم پڑھتے ہیں وہ بھی صرف رسم الخط کی حد تک کو ہی سمجھ رکھا ہے جب کہ یہ اللہ کی قولی کتاب ہے اس میں ضابطہ حیات سورتیں اور آیتیں ہیں۔اس کے علاوہ ایک اور کتاب ہے جو اللہ کی عملی کتاب ہے جس کو ہم کائنات کہتے ہیں یہ بھی ایک حق کتاب ہے اور جب تک ہم اس دوسری حقیقی کتاب کائنات کو تسلیم نہ کریں گے اس وقت تک ہم اللہ کی قولی کتاب کو سمجھنے میں اسی طرح ٹھوکریں کھاتے رہیں گے۔

(۲۳:۲) میں جو چیلنج ہے وہ دونوں قرآن یعنی کتاب کائنات اور قولی کتاب قرآن کے بارے میں ہے۔عملی کتاب کی تائید کتاب قولی میں ہے یا نہیں دیکھتے ہیں

(۳۶:۹) حقیقت یہ ہے کہ مہینوں کی تعداد جب سے اللہ نے آسمان و زمین کو پیدا کیا ہے اللہ کی کتاب (عملی) میں بارہ ہی ہے۔اور ان میں چار مہینے حرام ہیں

(۵۹:۶) زمین کے تاریک پردوں میں کوئی دانہ ایسا نہیں جس سے وہ باخبر نہ ہو۔ خشک و تر سب ایک کھلی کتاب میں ہے

ان دونوں آیتوں (۳۶:۹، ۵۹:۶) میں عملی کتاب کائنات کا ثبوت ملتا ہے۔اس لئے اللہ کی دو کتاب قرآن ہیں عملی اور قولی اور یہ چیلنج عملی اور قولی دونوں قرآن کی سورتوں کے بارے میں ہی ہے (۹۳:۶)

اگر عملی کتاب سے ہٹ کر صرف قولی کتاب کے بارے میں ہی چیلنج کو تسلیم کیا جائے تو وہ یہ ہے کہ جو ضابطہ حیات یہ ہے تم بھی ایسا ہی پورا یا جزو ہی بنا کر لا دو جو کبھی تبدیل نہ ہو۔ جیسا قرآن چل رہا ہے۔ جو لکھا گیا ہے اس پر غور

है, उस पर विचार अनिवार्य है,
(17:88, 6:93) में बहुत साफ बातें हैं आयत (24) में भी बहुत कुछ है,

पस यदि तुमने ऐसा न किया और निःसन्देह कभी नही कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इन्सान (वह जो पत्थर जैसे हैं) और पत्थर, जो बनाई गई नास्तिकों के लिए (24)

नोट- आयत में शब्द पत्थर आया है, अर्थ इससे वास्तव में पत्थर नही अपितु पत्थर जैसे मानव है, देखें आयत में

(2:74) किन्तु ऐसे चिन्ह देखने के बाद भी अन्ततः तुम्हारे हृदय कठोर हो गए पत्थरों की भांति कठोर अपितु कठोरता में कुछ उनसे भी अधिक

इस आयत में इन्सान के हृदय को पत्थर से उपमा देकर बताया है, अतः (2:24) में पत्थरों से अभिप्राय इन्सान ही हैं जो अवज्ञाकारी होते हैं, उनके लिए ही कहा गया है कि उनके दिलों पर मुहर लगी है, अवज्ञाकारी के कारण ही नर्क में जाना है, अतः विचार करना है कि पत्थरों ने कौन सी अवज्ञा की है जिसके कारण वह नर्क में जाऐंगे?

और हे रसूल स0 जो लोग इस पुस्तक पर आस्था ले आए और (इसके अनुसार) अपने कर्म ठीक कर लें उन्हें शुभ सूचना दे दो उनके लिए ऐसे उपवन हैं जिनके नीचे नहरे बहती होंगी, जब उन्हें उन बागों में से किसी फल से जीविका मिलेगी तो वह पुकार उठेंगे हां हां यह वही है जो हमें बहुत पहले ही दे दिया गया था (अर्थात् यह पुरस्कार व सम्मान जीविका व दया वही है जिसका वचन हमसे दुनिया में ही किया गया था और जिसकी हमें दुनिया में सूचना मिल चुकी थी) और लाए जाऐंगे मिलते जुलते एक दूसरे के, और उनके लिए वहां पवित्र साथी होंगे और वहां सदैव रहेंगे (तो वह वहां पुकार उठेंगे कि यह वही है जो हमें युगों पहले ही वचन दे दिया गया था) (25)

नोट- आयत देखें- (5:12) मैं तुम्हारे साथ हूं, यदि तुमने नमाज़ स्थापित रखी और दान दिया और ईशदूत को माना और उनकी सहायता की और अपने ईश्वर को अच्छा ऋण देते रहे तो विश्वास रखो कि मैं तुम्हारी दुर्दशा समाप्त कर दूंगा और तुमको ऐसे स्वर्ग उपवनों में प्रविष्ट करूंगा जिनके नीचे नहरे बहती होंगी,

(7:44) फिर यह स्वर्ग के लोग नर्क वालों से पुकार कर कहेंगे हमने उन सारे वचनों को ठीक पाया जो हमारे रब ने हमसे किये थे, क्या तुमने भी उन वचनों को ठीक पाया जो तुम्हारे मिथ्या रब ने किये थे,

(8:74) जो लोग विश्वास लाए और जिन्होंने ईश्वर के मार्ग में घर बार छोड़ा और परिश्रम किया और जिन्होंने शरण दी और सहायता की वही सच्चे आस्तिक हैं उनके लिए क्षमा है और अच्छी जीविका है,

(3:50) हे नबी स0 कह दो कि लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए केवल वह व्यक्ति हूं जो स्पष्ट रूप से सावधान कर देने वाला हूं, फिर जो आस्था लाऐंगे और सत्कर्म करेंगे उनके लिए क्षमा है और सम्मान की जीविका और जो हमारी आयात को नीचा दिखाने का प्रयत्न करेंगे वह नर्क के यार हैं,

ضروری ہے

(۹۳:۶،۸۸:۱۷) میں بہت واضح باتیں ہیں آیت (۲۴) میں بھی بہت کچھ ہے۔

پس اگر تم نے ایسا نہ کیا اور یقیناً کبھی نہیں کر سکتے تو ڈرو اس آگ سے جس کا ایندھن بنیں گے انسان (وہ جو پتھر جیسے ہیں) اور پتھر، جو بنائی گئی منکرین حق کے لئے (۲۴)

نوٹ: آیت میں لفظ پتھر آیا ہے، مراد اس سے حقیقت میں پتھر نہیں ہیں بلکہ پتھر نما انسان ہیں دیکھیں آیت میں

(۷۴:۲) مگر ایسی نشانیاں دیکھنے کے بعد بھی آخر کار تمہارے دل سخت ہو گئے پتھروں کی طرح سخت بلکہ سختی میں کچھ ان سے بھی زیادہ۔

اس آیت میں انسان کے دل کو پتھر سے مثال دے کر بتایا ہے۔اس لئے (۲۴:۲) میں پتھروں سے مطلب انسان ہی ہیں جو نافرمان ہوتے ہیں۔ان کے لئے ہی کہا گیا ہے کہ ان کے دلوں پر مہر لگی ہے۔نافرمانی کی وجہ سے ہی دوزخ میں جانا ہے اس لئے غور کرنا ہے کہ پتھروں نے کون سی نافرمانی کی ہے جس کی وجہ سے وہ دوزخ میں جائیں گے؟

اور اے رسولؐ جو لوگ اس کتاب پر ایمان لے آئیں اور (اس کے مطابق) اپنے عمل درست کر لیں انہیں خوشخبری دے دو ان کے لئے ایسے باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہتی ہوں گی۔جب انہیں ان باغوں میں سے کسی پھل سے رزق ملے گا تو وہ پکار اٹھیں گے۔ہاں ہاں یہ وہی ہے جو ہمیں مدتوں پہلے ہی دے دیا گیا تھا (یعنی یہ انعام و اکرام رزق و عطا وہی ہے جس کا وعدہ ہم سے دنیا میں ہی کیا گیا تھا اور جس کی ہمیں دنیا میں بشارت مل گئی تھی) اور لائے جائیں گے ہم شکل ایک دوسرے کے اور ان کے لئے وہاں پاک صاف ساتھی ہوں گے۔اور وہاں ہمیشہ رہیں گے (تو وہ وہاں پکار اٹھیں گے کہ یہ وہی ہے جو ہمیں مدتوں پہلے ہی وعدہ دے دیا گیا تھا) (۲۵)

نوٹ: ان الفاظ کی تائید میں آیت دیکھیں (۱۲:۵) میں تمہارے ساتھ ہوں اگر تم نے نماز قائم رکھی اور زکوٰۃ دی اور میرے رسولوں کو مانا اور ان کی مدد کی اور اپنے اللہ کو اچھا قرض دیتے رہے تو یقین رکھو کہ میں تمہاری بدحالیاں غربت تم سے دور کر دوں گا اور تم کو ایسے باغوں میں داخل کر دوں گا جن کے نیچے نہریں بہتی ہوں گی۔

(۴۴:۷) پھر یہ جنت کے لوگ دوزخ والوں سے پکار کر کہیں گے ہم نے ان سارے وعدوں کو ٹھیک پایا جو ہمارے رب نے ہم سے کئے تھے۔کیا تم نے بھی ان وعدوں کو ٹھیک پایا جو تمہارے باطل رب نے کئے تھے۔

(۷۴:۸) جو لوگ ایمان لائے اور جنہوں نے اللہ کی راہ میں گھر بار چھوڑے اور جدوجہد کی اور جنہوں نے پناہ دی اور مدد کی وہی سچے مومن ہیں۔ان کے لئے بخشش ہے اور بہترین رزق ہے۔

(۵۰:۳) اے نبیؐ کہہ دو کہ لوگو! میں تو تمہارے لئے صرف وہ شخص ہوں جو صاف صاف خبردار کر دینے والا ہوں۔پھر جو ایمان لائیں گے اور نیک عمل کریں گے ان کے لئے مغفرت ہے اور عزت کی روزی اور جو ہماری آیات کو نیچا دکھانے کی کوشش کریں گے وہ دوزخ کے یار ہیں۔

(24:26) उनका आंचल पवित्र है उन बातों से जो बनाने वाले बनाते है उनके लिए क्षमा और सम्मान की जीविका है.

(۲۶:۲۴)ان کا دامن پاک ہےان باتوں سے جو بنانے والے بناتے ہیں ان کے لئے مغفرت اور رزق کریم ہے۔

आयत (5:12, 7:44, 8:74, 3:50 और 24:26) उन शब्दों के समर्थन में लिखी गई है कि वह पुकार उठेंगे कि यह वही है जो हमें युगों पहले ही दे दिया गया था अर्थात् दुनिया में यह वचन हमने कुरआन में पढ़ा था कि अच्छे कर्म करने पर अच्छी जीविका मिलेगी और क्षमा, सो हमने वचनानुसार परोक्ष पर (2:3) आस्था करते हुए अच्छे कार्य किए उनके बदले में ईश्वर ने हम को वही जीविका व आराम दिया है जो हमने पढ़ा जिसका वचन था, यह नही कि उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करके पहले कोई भोजन दिया हो और फिर वही दिया हो और तब उन्होंने यह कहा हो, अपितु पहली दृष्टि में ही प्रविष्ट होने पर वह पुकार उठेंगे कि वचनानुसार यह वही वस्तु है, जैसा कि मैं पहले लिख आया हूँ कि ईश्वर ने कुरआन में भांति-भांति की उपमा देकर इन्सानो को समझाया है, जैसे दुनिया में हम अपनी बातो को उपमा देकर समझाते है निम्न लिखि आयत में देखे कि ईश्वर कैसी उपमा दे रहा है.

آیت (۱۲:۵، ۴۴:۷، ۷۴:۸، ۵۰:۳ اور ۲۶:۲۴)ان الفاظ کی تائید میں لکھی گئیں ہیں کہ وہ پکار اٹھیں گے کہ یہ وہی ہے جو ہمیں مدتوں پہلے ہی دے دیا گیا تھا یعنی دنیا میں یہ وعدہ ہم نے قرآن میں پڑھا تھا کہ اچھے کام کرنے پر اچھا رزق ملے گا اور بخشش، سو ہم نے وعدے کے مطابق غیب پر (۳:۲) ایمان لاتے ہوئے اچھے عمل کئے ان کے صلے میں اللہ نے ہم کو وہی رزق و آرام دیا ہے جو ہم نے پڑھا جس کا وعدہ تھا۔ یہ نہیں کہ ان کو جنت میں داخل کر کے پہلے کوئی رزق دیا ہو اور پھر وہی دیا ہو اور تب انہوں نے یہ کہا ہو، بلکہ پہلی نظر میں ہی داخل ہونے پر وہ پکار اٹھیں گے کہ وعدے کے مطابق یہ وہی چیز ہے جیسا کہ میں پہلے لکھ آیا ہوں کہ اللہ نے قرآن میں طرح طرح کی مثال دے کر انسانوں کو سمجھایا ہے، جیسے دنیا میں ہم اپنی باتوں کو مثال دے کر سمجھاتے ہیں ذیل کی آیت میں دیکھیں کہ اللہ کیسی مثال دے رہا ہے۔

(नास्तिक कहते है कि ईश्वर ने कुरआन में मच्छर, मकड़ी, मक्खी आदि की उपमा क्यों दी उनसे कह दो) ईश्वर इस बातसे नही लज्जाता कि (इन्सानों को समझाने के लिए) वह मच्छर या उससे भी अधिक तुच्छ की उपमा दें सो जिन लोगो के हृदयो में धर्म है वह जानते हे कि यह उनके ईश्वर की ओर से सत्य है, किन्तु वह लोग जिन का काम ही नकार व विद्रोह है वह (अपनी हठधर्मी और नादानी के कारण) यो कहते है कि इस प्रकार की उपमा देने से ईश्वर को क्या सम्बन्ध है? (सत्य यह है कि) बहुत से लोग (अपने स्वभाव की बुराई के कारण) इस प्रकार की उपमाओं से पथ भ्रष्ट होंगे और अधिकांश को ईश्वर का नियम (उन के अच्छे कार्यों के कारण) सीधी राह पर चला देगा (परन्तु ईश्वर का विधान यह है कि) वह उन्ही दुराचारियों को पथ भ्रष्ट करता है (26) {10:44,108,18:29, 27:92, 39:41, 73:19, 76:29,30}

(کافر کہتے ہیں کہ اللہ نے قرآن میں مچھر، مکڑی، مکھی وغیرہ کی مثال کیوں دیں؟ ان سے کہدو) اللہ اس بات سے نہیں شرماتا کہ (انسانوں کو سمجھانے کے لئے) وہ مچھر یا اس سے بھی زیادہ حقیر چیز کی مثال دے۔ سو جن لوگوں کے دلوں میں ایمان ہے وہ جانتے ہیں کہ یہ ان کے پروردگار کی طرف سے حق ہے لیکن وہ لوگ جن کا شیوہ انکار و بغاوت ہے وہ (اپنی ہٹ دھرمی اور نادانی کی وجہ سے) کہتے ہیں کہ اس طرح کی مثال بیان کرنے سے اللہ کو کیا سروکار؟ (حقیقت یہ ہے کہ) بہت سے لوگ (اپنی فطرت کی برائی کی وجہ سے) اس طرح کی مثالوں سے گمراہ ہوں گے۔ اور بہتوں کو اللہ کا قانون (ان کے اچھے عمل کی وجہ سے) راہ حق پر لگا دے گا (لیکن اللہ کا قانون یہ ہے کہ) وہ انہیں فاسقوں کو گمراہ کرتا ہے (۲۶)[۴۴:۱۰، ۱۰۸، ۲۹:۱۸، ۹۲:۲۷، ۴۱:۳۹، ۱۹:۷۳، ۲۹:۷۶، ۳۰]

जो (अपने दुराचार के कारण) ईश्वर के वचन को जिसकी वह प्रतिज्ञा कर चुके है तोड़ डालेंगे और जिन बातों को ईश्वर ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालेंगे (इस तरह अपनी अवज्ञा से) देश में अशांति फैलाएंगे (ऐसे ही लोग अपने बुरे कार्यों के कारण) हानि उठाने वाले है (27) {13:25}

جو (اپنے فسق کی وجہ سے) اللہ کے عہد کو جس کا وہ اقرار کر چکے ہیں توڑ ڈالیں گے۔ اور جن رشتوں کو اللہ نے جوڑنے کا حکم دیا ہے اسے کاٹ ڈالیں گے (اس طرح اپنی سرکشی سے) ملک میں فساد پھیلائیں گے (ایسے ہی لوگ اپنی بے راہ روی کی وجہ سے) نقصان اٹھانے والے ہیں (۲۷) [۲۵:۱۳]

नोट- आयत (25) में शब्द 'मुताशाबहा' मिलता जुलता और आयत (26) में गुमराही और हिदायत का उल्लेख है, जिस हिदायक और गुमराही को ईश्वर की ओर से माना गया है, इस विषय में कुछ लिखा जा रहा है सत्य क्या है.

نوٹ: آیت (۲۵) میں لفظ متشابہا اور ۲۶ میں گمراہی اور ہدایت کا ذکر آیا ہے۔ جس ہدایت اور گمراہی کو اللہ کی طرف سے مانا گیا ہے اس کے بارے میں کچھ لکھا جا رہا ہے حقیقت کیا ہے۔

आयत (6:141).... और खजूर और खेती जिन के भांति भांति के फल होते है और जेतून और अनार जो (कतिपय बातों में) एक दूसरे से मिलते जुलते (मताशाबाह) होते है और (कतिपय बातों में) नही मिलते अलग अलग होते है.

آیت (۱۴۱:۶)...اور کھجور اور کھیتی جن کے طرح طرح کے پھل ہوتے ہیں اور زیتون اور انار جو (بعض باتوں میں) ایک دوسرے سے ملتے جلتے (متشابہ) ہوتے ہیں اور (بعض باتوں میں) نہیں ملتے الگ الگ ہوتے ہیں۔

इस आयत में 'मुतशाबाह' को मिलता जुलता बताया गया है, अतः जिस प्रकार इस आयत में 'मतशाबाह' का अर्थ मिलते जुलते और समान है इसी प्रकार 'मतशाबाह' मिलती जुलती समान, अनुरूप है

اس آیت نے متشابہ کو ملتا جلتا بتایا ہے پس جس طرح اس آیت میں متشابہ کا مطلب ملتے جلتے اور مانند ہے اسی طرح متشابہ ملتی جلتی اور مثل و مانند ہیں

विभिन्न व विरोधी कदापि नहीं और उनका अर्थापन स्वयं ईश्वर ने अचल में कर दिया है जिसकी वह समान अर्थात् मिलती जुलती समान है
आयात (3:7) से सिद्ध है कि 'मुताशाबाह' का अनुसरण अचल से उपेक्षित करके टेढ़े मनका प्रतीक है यदि कुरआन की दो आयतों के अर्थ में बजाहिर विभिन्नता पाई जाए तो इसको दूर करने की यह विधि बताई गई है कि पहले यह ज्ञात किया जाए कि इनमें से अचल कौन सी है और 'मुताशाबाह' कौन सी ताकि मिलती जुलती आयात को अचल के आधीन रखकर और दूसरी आयतों को देखकर उनके अनुसार अर्थ लिया जाए इसके विषय में कुछ उदाहरण अवलोकन करें, क्या इन्सान अच्छा या बुरा मार्ग स्वयं स्वीकार करता है या सदाचारी और दुराचारी ईश्वर करता है? हिदायत और गुमराही के बारे में कुरआनी आयात का अनुवाद करने में अधिक विभिन्नता कर दी है कुछ आयतों का अनुवादों से जो किया गया है से प्रकट होता है कि ईश्वर ही पथ भ्रष्ट करता है और वही हिदायत देता है, परन्तु कुछ आयात से यह सिद्ध होता है कि हिदायत पाना या गुमराह हो जाना इन्सान का अपना कर्म है और इस विभिन्नता को दूर न करने का यह परिणाम है कि मुसलमानों के यहां सदियों से यह विश्वास चल रहा है कि ईश्वर जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे वह गुमराह कर दे उसे कोई सीधी राह देने वाला नही और जिसे चाहता है हिदायत देता है

(7:186) जिसको ईश्वर गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नही, ऐसी आयात को हर आलिम दोहरा देता है कि इन्सान तो विवश है और सब ईश्वर के अधिकार में है, तो हिदायत पाने वाले का क्या गुण हुआ और पथ भ्रष्ट होने वाले का क्या दोष? और इस पर पुरस्कार, दण्ड का क्या अर्थ? स्वयं जिसको पथ भ्रष्ट कर दिया हो उसको दण्ड देना कहां का न्याय है? स्पष्ट हो कि यह दृष्टिकोण प्रतिदान बदले की पूरी व्यवस्था को एक दम ध्वस्त कर देता है जिस में हिदायत व गुमराही से सम्बन्धित आयात की तुलना अवलोकन हो कि कितना मतभेद कर दिया है जिसका समाधान (3:7) में दे दिया गया है

(1) प्रचलित अनुवाद- हिदायत ईश्वर देता है और गुमराह ईश्वर करता है,

(7:178) जिसको ईश्वर राह दे वह राह पावे और जिसको वह भटकावे सो वही है हानि वाले,

(7:186) जिसको भटका दे ईश्वर उसे कोई नही राह देने वाला,

(2) हिदायत और गुमराही इन्सान का अपना कार्य,

(39:4) फिर जो कोई राह पर आया सो अपने भले को और जो कोई बहका सो यही कि बहका अपने बुरे को,

इन आयात के अनुवाद में स्पष्ट रूप से कितनी भिन्नता है किन्तु (3:7) की सूचना के अनुसार यह ज्ञात करना है कि इनमें से सुदृढ़ कौन सी है और मुताशाहबाह कौन सी, ताकि अनुरूप का अर्थ अचल के अनुसार लेकर इस खुले विरोध को समाप्त किया जाए अब विचार करें यदि आयात (1) को अचल माना जाए जिनका शाब्दिक अर्थ यह है कि ईश्वर ही पथ प्रदर्शन देता है और वही पथ भ्रष्ट करता है तो कुरआन का बताया हुआ प्रतिदान की क्रिया अर्थात् बदले की सारी व्यवस्था छिन्न भिन्न हो कर रह जाती है कि स्वयं पथ भ्रष्ट करता है और स्वयं ही दण्ड देता है, अतः सिद्ध हुआ कि आयात (1) मुताशाबाह है मिलती जुलती और आयात (2) अचल है जिनका भाव यह है कि इन्सान ईश्वर के नियम के अनुसार स्वयं ही सीधा मार्ग पाता है और स्वयं ही पथ भ्रष्ट होता है अपने अच्छे बुरे कार्यों से, अतः (3:7) के अनुसार अनिवार्य है कि मुताशाबाह को अचल के आधीन रखकर अचल के अनुसार अर्थ लिया जाए अब रहा प्रश्न यह कि आयात (1) का

مختلف ومتضاد ہرگز نہیں اور ان کی تاویل خود اللہ نے محکمات میں کردی ہے جن کی وہ متشابہ یعنی مثل ومانند ہیں۔
آیت (۳:۷) سے ثابت ہے کہ متشابہ کی اتباع محکمات سے صرف نظر کر کے ٹیڑھے ذہن کی نشانی ہے۔ پس اگر قرآن کی دو آیتوں کے مفہوم میں بظاہر تضاد پایا جائے تو اس کے دور کرنے کا یہ طریقہ بتایا گیا ہے کہ پہلے یہ معلوم کیا جائے کہ ان میں سے محکم کونسی ہے اور متشابہ کونسی ہے۔ تاکہ متشابہ آیت کو محکم کے ماتحت رکھ کر تصریف آیت کے ذریعہ اس کے مطابق مفہوم اخذ کیا جائے اس کے بارے میں چند مثالیں ملاحظہ فرمائیں۔ کیا انسان ہدایت اور گمراہی خود اختیار کرتا ہے یا ہدایت اور گمراہی میں مبتلا اللہ کرتا ہے؟ ہدایت وگمراہی کے بارے میں قرآنی آیات کا ترجمہ کرنے میں کافی اختلاف کر دیا گیا ہے کچھ آیتوں کے لفظی ترجمہ سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اللہ ہی گمراہ کرتا ہے اور وہی ہدایت کرتا ہے مگر کچھ آیات سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ ہدایت پانا یا گمراہ ہو جانا انسان کا اپنا کام ہے۔ اور اس اختلاف کو دور نہ کرنے کا یہ نتیجہ ہے کہ مسلمانوں کے یہاں صدیوں سے یہ عقیدہ چل رہا ہے کہ اللہ جسے چاہتا ہے گمراہ کرتا ہے اور جسے وہ گمراہ کردے اسے کوئی ہدایت دینے والا نہیں۔ اور جسے چاہتا ہے ہدایت دیتا ہے۔

(۷:۱۸۶) [مَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ] ایسی آیت کو ہر عالم دہرا دیتا ہے کہ انسان تو مجبور ہے اور سب اللہ کے اختیار میں ہے۔ تو ہدایت پانے والے کی کیا خوبی ہوئی اور گمراہ ہونے والے کا کیا قصور؟ اور اس پر جزا ئسزا کا کیا مطلب؟ خود گمراہ کردہ کو عذاب کرنا کہاں کا انصاف ہے؟ واضح رہے کہ یہ نظریہ مکافات عمل کی پوری عمارت کو یکسر منہدم کر دیتا ہے۔ ذیل میں ہدایت وگمراہی سے متعلق آیات کا تقابل ملاحظہ ہو۔ کہ کتنا تضاد کر دیا ہے جس کا حل (۳:۷) میں دے دیا گیا ہے۔

(۱) رائج الوقت ترجمہ ہدایت اللہ دیتا ہے اور گمراہ اللہ کرتا ہے۔

(۷:۱۷۸) جس کو اللہ راہ دے وہی راہ پاوے۔ اور جس کو وہ بھٹکا دے سو وہی ہیں نقصان والے۔

(۷:۱۸۶) جس کو بھٹکا دے اللہ اسے کوئی نہیں راہ دینے والا۔

(۲) ہدایت اور گمراہی انسان کا اپنا کام۔

(۳۹:۴۱) پھر جو کوئی راہ پر آیا سو اپنے بھلے کو اور جو کوئی بہکا سو یہی کہ بہکا اپنے بُرے کو ان آیات کے ترجمے میں بظاہر کتنا بڑا تضاد ہے۔ لیکن (۳:۷) کی خبر کے مطابق یہ معلوم کرنا ہے کہ ان میں سے محکم کونسی ہیں اور متشابہ کونسی۔ تاکہ متشابہات کا مفہوم محکمات کے مطابق لے کر اس ظاہری تضاد کو ختم کیا جائے اب غور فرمائیں اگر آیات (۱) کو محکم مانا جائے جن کا لفظی ترجمہ یہ ہے کہ اللہ ہی ہدایت دیتا ہے اور وہی گمراہ کرتا ہے تو قرآن کا بتایا ہوا۔ مکافات عمل یعنی جزا ئسزا کا سارا نظام درہم برہم ہو کر رہ جاتا ہے اور اللہ کھلے بندوں ظالم ٹھہرتا ہے کہ خود ہی گمراہ کرتا ہے اور خود ہی سزا دیتا ہے۔ پس ثابت ہوا کہ آیات (۱) متشابہ ہیں اور آیت (۲) محکم ہیں۔ جن کا مفہوم یہ ہے کہ (۱) انسان اللہ کے قانون کے مطابق خود ہی ہدایت پاتا ہے اور خود ہی گمراہ ہوتا ہے اپنے اچھے بُرے عملوں سے۔ اس لئے (۳:۷) کے مطابق لازم ہے کہ متشابہات کو محکم کے تحت رکھ کر محکمات کے مطابق مفہوم لیا جائے اب رہا سوال یہ کہ آیات (۱) کا مفہوم آیات (۲) کے

है अर्थ आयत (2) के अनुसार किस नियम से सही हो सकता है, निवेदन,

(7:178) का भाव विशेष विचार के आधीन यह होगा, जिसे (अपने अवतरित किए हुए हिदायत नामे के द्वारा) ईश्वर का विधान पथ प्रदर्शन दे फिर यदि वह ईश्वर की हिदायत कुरआन पर स्थिर रहे तो वही हिदायत पाने वाला और इसी प्रकार (7:186) का भाव यह है जिसे ईश्वर का विधान पथ भ्रष्ट पाए अर्थात् जो कोई ईश्वर के दिए हुए पथ प्रदर्शन से विमुखता करता हो फिर यदि वह पथ भ्रष्टता पर अड़ा रहे तो उसे कोई पथ प्रदर्शन देने वाला नहीं,

मुताशाबाह आयत की एक महत्वपूर्ण उपमा यद्यपि यह आयत अचल है परन्तु आलिमों ने अपने अनुवाद में मताशाबाह बना दिया है (22:16) {वअन्नल्लाहा यहदी मंई यूरीद} इस समय जो अनुवाद पढ़ने में आ रहा है वह यह है और निःसन्देह याद रखो ईश्वर जिसको चाहता है हिदायत देता है, किन्तु यह अनुवाद विचारणीय है और ईश्वर को अत्याचारी बनाता है, यद्यपि ईश्वर न्यायशील है इसका ठीक अनुवाद अचल के आधीन यह है, "और निःसन्देह ईश्वर का नियम उसे पथ प्रदर्शन देता है जो हिदायत पाने का स्वयं संकल्प करता है" इसी प्रकार मुताशाबाह व अचल आयात पर विचार किए बिना शाब्दिक अनुवाद करने से अच्छाई व बुराई करने को ईश्वर को उत्तरदायी बनाकर इन्सान की सब दुराचारियों का उत्तरदायी ईश्वर को बनाते हैं किन्तु इस मुताशाबाह आयात का निर्णय निम्नलिखित अचल आयत ने कर दिया है,

(42:13) ईश्वर का नियम उनको चुन लेता है अपनी ओर जो स्वयं चाहें और जो उसकी ओर स्वयं प्रत्यागमन करे उसे अपनी ओर (अर्थात् पथ प्रदर्शन की ओर) मार्ग दिखा देता है,

इस संक्षिप्त लिखने से बात नहीं बनती परन्तु अधिक स्थान भी नहीं, मनन चिन्तन करने वाले इस थोड़े को देखें और जाति को ठीक मार्ग दर्शन दें, इस भावार्थ में जहां भी मुताशाबाह आयात आएँगी उनका अनुवाद गहन विचार के बाद किया जाएगा,

मुताशाबाह आयात में जहां ज्ञानियों ने यह अनुवाद किया है कि ईश्वर हिदायत देता है या गुमराह करता है वास्तव में वहां ईश्वर से अर्थ ईश्वर का आदेश या नियम है प्रमाण प्रस्तुत है-

(16:26) उनसे पहले लोगों ने भी (ऐसी ही) धूर्तताएँ की थी तो ईश्वर (का आदेश कष्ट) उनके भवन के स्तम्भों पर आ पहुंचा और छत उनपर उनके ऊपर से गिर पड़ी और (ऐसी ओर से) उन पर कष्ट आया जहां से उनको गुमान भी न था (अर्थात् यह दण्ड उन पर उने अनुचित कार्यों से आया जो ईश्वर के नियम के आधीन आना ही था),

इस विषय में एक उपमा न्यायालय में होने वाले निर्णय में देखी जाए, जब कोई वाद न्यायाधीश के पास ऐसा आता है जिसमें किसी व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति का वध किया हो और वह न्यायालय में सिद्ध हो जाए तो न्यायाधीश उसको मृत्यु दण्ड देता है और लिखता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक व्यक्ति का वध किया और वधक का पाप सिद्ध हो गया, अतः अमुक वधक को मृत्यु दण्ड दिया जाता है व्यवहार हो,

इस दण्ड के विषय में लगभग सब यही कहते हैं कि अमुक न्यायाधीश ने अमुक को मृत्यु दण्ड दिया, परन्तु मृत्यु दण्ड न्यायाधीश ने नहीं दिया, यह दण्ड उस नियम के आधीन दिया गया जिसमें लिखा है कि यदि कोई किसी को वध कर दे और सिद्ध हो जाए तो बदले में वधक को मृत्यु दण्ड दिया जाएगा, तो बात यह सामने आई कि वधक को मृत्यु दण्ड का दण्ड नियम ने दिया, परन्तु हर आदमी यही कहता है कि जज ने दिया, अतः यही बात इन आयात में है जहां अनुवाद यह

مطابق کس قاعدے کی رو سے صحیح ہوسکتا ہے عرض ہے

(۱۷۸:۷) کا مفہوم خاصہ وجدان کے تحت یہ ہوگا جسے (اپنے نازل کردہ ہدایت نامہ کے ذریعہ) اللہ کا قانون ہدایت دے۔ پھر اگر وہ اللہ کی ہدایت قرآن پر قائم رہے تو وہی ہدایت پانے والا ہے اور اسی طرح (۱۸۶:۷) کا مفہوم یہ ہے جسے اللہ کا قانون گمراہ پائے یعنی جو کوئی اللہ کی ہدایت سے اعتراض کرتا ہو پھر اگر وہ گمراہی پر اڑا رہے تو اسے کوئی ہدایت دینے والا نہیں۔

متشابہ آیت کی ایک اہم مثال حالانکہ یہ آیت محکم ہے مگر عالموں نے اپنے ترجمہ سے متشابہ بنا دیا ہے

(۱۶:۲۲)[وَاَنَّ اللّٰـهَ يَهۡدِىۡ مَنۡ يُّرِيۡدُ] اس وقت جو ترجمہ پڑھنے میں آرہا ہے وہ یہ ہے۔ ''اور بے شک یاد رکھو اللہ جس کو چاہتا ہے ہدایت دیتا ہے''۔ لیکن یہ ترجمہ محل نظر ہے اور اللہ کو ظالم بناتا ہے حالانکہ اللہ عادل ہے اس کا صحیح مفہوم محکم کے تحت یہ ہے

''اور بے شک اللہ کا قانون اسے ہدایت دیتا ہے جو ہدایت پانے کا خود ارادہ کرتا ہے'' اسی طرح متشابہ و محکم آیات پر غور کئے بنا لفظی ترجمہ کرنے سے ہدایت و گمراہی کو اللہ کے ذمہ لگا کر انسان کی جملہ بدکاریوں کا ذمہ دار اللہ کو ٹھہراتے ہیں۔ لیکن اس متشابہ آیت کا فیصلہ ذیل کی محکم آیت نے کر دیا ہے

(۱۳:۴۲) الله يجتبى اليه من يشاء و يهدى اليه من ينيب.

ترجمہ: اللہ کا قانون ان کو چن لیتا ہے اپنی طرف جو خود چاہے اور جو اس کی طرف خود رجوع کرے اسے اپنی طرف (یعنی ہدایت کی طرف) راستہ دکھا دیتا ہے۔

اس مختصر لکھنے سے بات نہیں بنتی مگر زیادہ گنجائش بھی نہیں غور و فکر کرنے والے اس تھوڑے کو دیکھیں اور قوم کو ٹھیک راہ دیں۔ اس مفہوم میں جہاں بھی متشابہ آیات آئیں گی ان کا مفہوم خاصہ وجدان سے کیا جائے گا۔ متشابہ آیات میں جہاں عالموں نے یہ ترجمہ کیا ہے کہ اللہ ہدایت دیتا ہے یا گمراہ کرتا ہے حقیقت میں وہاں اللہ سے مراد اللہ کا حکم یا قانون ہے شہادت پیش ہے۔

(۲۶:۱۶) ان سے پہلے لوگوں نے بھی (ایسی ہی) مکاریاں کی تھیں تو اللہ (کا حکم عذاب) ان کی عمارت کے ستونوں پر آپہنچا اور چھت ان پر ان کے اوپر سے گر پڑیں اور (ایسی طرف سے) ان پر عذاب آیا جہاں سے ان کو خیال بھی نہ تھا (یعنی یہ عذاب ان پر ان کے غلط کاموں سے آیا۔ جو اللہ کے قانون کے تحت آنا ہی تھا)۔

اس بارے میں ایک مثال عدالت میں ہونے والے فیصلوں میں دیکھی جائے۔ جب کوئی مقدمہ قاضی کے پاس ایسا آتا ہے جس میں کسی آدمی نے کسی دوسرے آدمی کو قتل کیا ہو اور وہ عدالت میں ثابت ہو جائے تو قاضی اس کو سزائے موت دیتا ہے اور لکھتا ہے کہ فلاں آدمی نے فلاں آدمی کو قتل کیا اور قتل کا جرم ثابت ہو گیا اس لئے فلاں قاتل کو سزائے موت دی جاتی ہے عمل ہو۔

اس سزا کے بارے میں تقریباً سب یہی کہتے ہیں کہ فلاں قاضی نے فلاں کو سزائے موت دی۔ مگر سزائے موت جج نے نہیں دی یہ سزا اس قانون کے تحت دی گئی جس میں لکھا ہے کہ اگر کوئی کسی کو قتل کر دے اور ثابت ہو جائے تو قصاص میں قاتل کو سزائے موت دی جائے گی۔ تو بات یہ سامنے آئی کہ قاتل کو سزائے موت کی سزا قانون نے دی۔ مگر آدمی یہی کہتا ہے کہ جج نے دی۔ پس یہی بات ان آیات میں ہے جہاں ترجمہ یہ کر دیا ہے کہ اللہ ہی ہدایت دیتا ہے اور وہی

कर दिया है कि ईश्वर ही हिदायत देता है और वही पथ भ्रष्ट करता है, इस आयात में अनुवाद यह होना चाहिए कि हिदायत और गुमराही ईश्वर का नियम देता है, जो विधान के अनुसार कार्य करता है उसको सत्य मार्ग मिलता है और नियम के विरुद्ध करता है वह पथ भ्रष्ट होता है,

जैसे यदि कोई चोरी, बलात्कार करता है तो उसको अपमान मिलेगा कोई उसको सम्मान नही देगा, ऐसे ही यदि कोई अच्छे कर्म करेगा तो उसको सम्मान मिलेगा कोई उसको अपमानित नही करेगा,

तो मुताशाबाह आयात में ईश्वर से आशय ईश्वर का नियम है, जो (16:26) से सिद्ध है, इस नियम से यदि अनुवाद किया जाए तो सारे विरोध समाप्त हो जाऐंगे, या जैसे कुरआन में है कि हे मुहम्मद स० तुमने तीर नही चलाए मैंने चलाए यद्यपि तीर मुहम्मद स० और आस्तिकों ने चलाए थे या वध नास्तिकों को आस्तिकों ने किया था या वचन का विषय है परन्तु इस विषय को ईश्वर ने अपनी ओर सम्बन्धित किया यहां भी अर्थ ईश्वर से ईश्वर का नियम है अर्थात् ईश्वर के नियम के आधीन आस्तिकों और मुहम्मद स० ने यह कार्य किये {13:21,25, 11:19, 31:19}

گمراہ کرتا ہے ان آیات میں ترجمہ یہ ہونا چاہیے کہ ہدایت اور گمراہی اللہ کا قانون دیتا ہے. جو قانون کے مطابق کام کرتا ہے اس کو ہدایت ملتی ہے اور جو قانون کے خلاف کرتا ہے وہ گمراہ ہوتا ہے

جیسے اگر کوئی چوری، زنا کرتا ہے تو اس کو ذلت ملتی ہے کوئی اس کو عزت نہیں دے گا ایسے ہی اگر کوئی اچھے کام کرے گا تو اس کو عزت ملے گی کوئی اس کو ذلیل نہیں کرے گا

تو متشابہ آیات میں اللہ سے مراد اللہ کا قانون ہے جو (۱۶:۲۶) سے ثابت ہے اس قانون سے اگر ترجمہ کیا جائے تو سارے اختلافات ختم ہو جائیں گے. یا جیسے قرآن میں ہے کہ اے محمدؐ تم نے تیر نہیں چلائے میں نے چلائے حالانکہ تیر محمدؐ اور مومنوں نے چلائے تھے یا قتل کافروں کو مومنوں نے کیا تھا یا بیعت کا معاملہ ہے. مگر اس امر کو اللہ نے اپنی طرف منسوب کیا یہاں بھی مراد اللہ سے اللہ کا قانون ہے یعنی اللہ کے قانون کے تحت ہی مومنوں اور محمدؐ نے یہ کام کئے [۱۳:۲۱،۲۵،۱۱:۱۹،۳۱:۱۹]

तुम ईश्वर के अस्तित्व का इनकार किस प्रकार कर सकते हो जबकि (तुम स्वयं ही आप उसके अस्तित्व का एक प्रमाण हो जिसका नकार तुम कर ही नही सकते, एक समय था जब) तुम उपस्थित न थे (अर्थात् मृतक) फिर उसने (अपने नियम के अनुसार) तुम्हें जीवन दिया, फिर तुम्हें मृत्यु देगा, फिर तुम (कर्मों का उत्तर देने के लिए) उसकी ओर लौटाए जाओगे (28) {76:1, 37:58, 60:11, 44:56}

تم اللہ کی ہستی کا انکار کس طرح کر سکتے ہو جب کہ (تم خود ہی آپ اُس کی ہستی کی ایک دلیل ہو جس کا انکار تم کر ہی نہیں سکتے ایک وقت تھا جب) تم موجود نہیں تھے (یعنی مردے) پھر اس نے (اپنے قانون کے مطابق) تمہیں زندگی عطا فرمائی. پھر تمہیں موت دے گا پھر تم (اعمال کی جواب دہی کے لئے) اس کی طرف لوٹائے جاؤ گے (۲۸) [۷۶:۱،۳۷:۵۸،۴۰:۱۱،۴۴:۵۶]

वही तो है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी की सारी वस्तुऐं उत्पन्न की फिर ऊपर की ओर आकृष्ट हुआ और सात आकाश स्थापित किए और वह हर वस्तु का ज्ञान रखता है (29) {57:1से4, 53:31, 11:7}

وہی تو ہے جس نے تمہارے لئے زمین کی ساری چیزیں پیدا کیں پھر اوپر کی طرف توجہ فرمائی اور سات آسمان استوار کئے. اور وہ ہر چیز کا علم رکھنے والا ہے (۲۹) [۵۷:۱تا۴،۵۳:۳۱،۱۱:۷]

और (हे नबी स०) तेरे रब ने जब फरिश्तों से कहा कि मैं (इन्सान को) स्थानापन्नता के साथ (योग्य विशेष अधिकार के साथ) बसने वाले प्राणी के मान से प्रतिनिधि बनाने वाला हूं (जो मेरे अवतरित किए हुए विधान के साथ स्थानापन्नता का हक़ अदा करेगा यह सुनकर) उन्होंने कहा क्या आप पृथ्वीपर किसी ऐसे को नियुक्त करने वाले हैं जो इस व्यवस्था को बिगाड़ देगा और वध करेगा (और तेरा धन्यवाद है तूने अपने कृपा दया व अनुकंपा से हमें यह क्षमता दी है) यह कि हम तेरी पवित्रता, दोष रहित महानता और महत्ता का अंगीकार करते हैं और आपकी पवित्रता का वर्णन तो हम कर ही रहे हैं, कहा, मैं जानता हूं जो कुछ तुम नही जानते (30)

اور اے نبیؐ تیرے رب نے جب فرشتوں سے فرمایا کہ میں (انسان کو) جانشینی کے ساتھ (خلیفہ صاحب اختیار) آباد رہنے والی مخلوق کی حیثیت سے خلیفہ بنانے والا ہوں (جو میرے نازل کردہ قانون کے ساتھ جانشینی خلافت کا حق ادا کرے گا یہ سن کر) انہوں نے کہا کیا آپ زمین پر کسی ایسے کو مقرر کرنے والے ہیں جو اس کے انتظام کو بگاڑ دے گا. اور خونریزی کرے گا (اور تیرا شکر ہے تو نے اپنے فضل وکرم سے ہمیں یہ توفیق دی ہے) یہ کہ ہم تیری پاکی اور بے عیبی' عظمت اور بزرگی کا اقرار کرتے ہیں. اور آپ کی تقدیس کا بیان تو ہم کر ہی رہے ہیں. فرمایا میں جانتا ہوں جو کچھ تم نہیں جانتے (۳۰)

और ईश्वर ने आदम को सम्पूर्ण अनिवार्य वस्तुओं के नामों का ज्ञान दे दिया (अर्थात् यह योग्यता कि आदम वस्तुओं के नाम रख ले और आदम ने उस योग्यता जो प्रगतिशील है जो महा प्रलय तक प्रगति करती रहेगी से उन वस्तुओं के नाम रख लिए और वही रखे जो ईश्वरीय ज्ञान में लिखे हैं) फिर इन वस्तुओं को फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया और कहा यदि तुम्हारा विचार ठीक है (कि इन्सान को उत्तराधिकारी का पद देने से व्यवस्था बिगड़ जाएगी) तो तनिक इन

اور اللہ نے آدم کو تمام ضروری چیزوں کے ناموں کا علم دے دیا تھا (یعنی یہ صلاحیت کہ آدم ان چیزوں کے نام رکھ لے اور آدم نے اس صلاحیت سے جو ترقی پذیر ہے. جو قیامت تک ترقی کرتی رہے سے ان چیزوں کے نام رکھ لئے اور وہی رکھے جو لوح محفوظ میں لکھے ہوئے ہیں) پھر ان چیزوں کو فرشتوں کے سامنے پیش کیا اور فرمایا اگر تمہارا خیال درست ہے (کہ انسان کو جانشین کی حیثیت دینے سے

वस्तुओं के नाम बताओ (31)

انتظام بگڑ جائے گا) تو ذرا ان چیزوں کے نام بتاؤ (۳۱)

उन्होंने निवेदन किया दोष से पवित्र तो आपका अस्तित्व ही है, हम तो बस उतना ही ज्ञान रखते हैं जितना आप ने हमको दिया है निःसन्देह तू ही ज्ञान वाला बुद्धिमान है (32)

انہوں نے عرض کیا نقص سے پاک تو آپ کی ذات ہی ہے ہم تو بس اتنا ہی علم رکھتے ہیں جتنا آپ نے ہم کو دیا ہے۔ بے شک تو ہی علم والا اور حکمت والا ہے (۳۲)

फिर ईश्वर ने आदम से कहा तुम इन्हें इन वस्तुओं के नाम बताओ, अतः उसने उनको उनके नाम बता दिए (इस प्रकार फ़रिश्तों पर मानव की क्षमता और योग्यता प्रकट हो गई जिसका दूसरी रचना ज्ञान नहीं रखती) तो उनसे ईश्वर ने कहा मैंने तुम से कहा न था कि मैं आकाश और पृथ्वी की वह सारी वास्तविकताऐं जानता हूं जो तुम से गुप्त हैं जो कुछ तुम प्रकट करते हो वह भी मुझे ज्ञात है और जो कुछ छुपाते थे या छुपाते हो उसे भी जानता हूं (33)

پھر اللہ نے آدم سے کہا تم انہیں ان چیزوں کے نام بتاؤ. پس اس نے ان کو ان کے نام بتا دیئے (اس طرح فرشتوں پر انسان کی وہ استعداد اور صلاحیت واضح ہو گئی جس سے دیگر مخلوقات محسوسہ تہی دامن تھیں) تو ان سے (اللہ نے) فرمایا میں نے تم سے کہا نہ تھا کہ میں آسمانوں اور زمین کی وہ ساری حقیقتیں جانتا ہوں جو تم سے مخفی ہیں. جو کچھ تم ظاہر کرتے ہو وہ بھی مجھے معلوم ہے اور جو کچھ چھپائے تھے اسے بھی جانتا ہوں (۳۳)

नोट- अर्थात् विवशता और ज्ञान की कमि को स्वीकार करना और मेरे ज्ञान व युक्ति को जो तुम अब स्वीकार कर रहे हो मैं उसे भी जानता हूं और उस विचार को भी जिसे तुम अपने दिलों में छुपाए हुए हो वह विचार क्या था? यही कि उपद्रवों और हिंसक होने के कारण यह इन्सान संसार से मिटा दिया जाएगा इसी धारणा के खण्डन के लिए उनसे 'इन्नी जाइलुन फ़िल अर्ज़ी ख़लीफ़ह' कहा था

نوٹ: یعنی عجز و قصور علم کا اقرار اور میرے علم و حکمت کا اعتراف جو تم اب کر رہے ہو میں اسے بھی جانتا ہوں اور اس خیال کو بھی جسے تم اپنے دلوں میں پوشیدہ کئے ہوئے ہو وہ خیال کیا تھا؟ یہی کہ مفسد و خونریز ہونے کی وجہ سے انسان صفحہ ہستی سے مٹا دیا جائے گا. اسی خیال کی تردید کے لئے ان سے انی جاعل فی الارض خلیفہ کہا گیا تھا.

जब हमने फ़रिश्तों (और विश्व की हर शक्ति से) से कहा कि आदम के आगे झुक जावो (अर्थात् आदम की ज्येष्ठता स्वीकार करो और इसके आज्ञाकारी हो जावो) तो सबने आदेश स्वीकार करते हुए आदम की ज्येष्ठता स्वीकार कर ली और आज्ञाकारी हो गए परन्तु शैतान 'इबलीस' ने नकार किया, वह अपनी बड़ाई के घमण्ड में पड़ गया और अवज्ञाकारों में शामिल हो गया (34)

جب ہم نے فرشتوں (بشمول کائناتی طاقتوں) سے فرمایا کہ آدم کے آگے جھک جاؤ (یعنی آدم کی برتری تسلیم کرو اور اس کے لئے مسخر ہو جاؤ) تو سب نے حکم تسلیم کرتے ہوئے آدم کی برتری تسلیم کر لی اور مسخر ہو گئے. مگر ابلیس نے انکار کر دیا. وہ اپنی بڑائی کے گھمنڈ میں پڑ گیا. اور نافرمانوں میں شامل ہو گیا (۳۴)

और हमने कहा ऐ आदम तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों स्वर्ग (उपवन) में रहो और यहां जो चाहो खाओ, परन्तु इस 'शजर' के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में हो जावगे (35) {20:117, 118,119, 10:14, 2:213}

اور ہم نے کہا اے آدم تم اور تمہاری بیوی دونوں جنت (باغ) میں رہو اور یہاں جو چاہو کھاؤ مگر اس شجر کے قریب نہ جانا ورنہ ظالموں میں ہو جاؤ گے (۳۵) [۲:۲۱۳، ۱۰:۱۴، ۲۰:۱۱۷، ۱۱۹]

अन्ततः शैतान ने उन दोनों को इस शजर की प्रेरणा देकर (हमारे आदेश के अनुसरण से हटा दिया) और उन दोनों को इस स्थिति से निकलवा कर छोड़ा जिसमें वह थे, हमने आदेश दिया कि अब तुम सब यहां से निकल जाओ स्थानान्तरित हो जाओ, तुम सब एक दूसरे के शत्रु हो तुम में एक दूसरे से दूरी रहेगी और तुम्हें एक विशेष समय तक पृथ्वी पर ठेहरना और वहीं जीवन यापन करना है (36)

آخر کار شیطان نے ان دونوں کو اس شجر کی ترغیب دے کر ہمارے حکم کی پیروی سے ہٹا دیا اور ان دونوں کو اس حالت سے نکلوا کر چھوڑا جس میں وہ تھے. ہم نے حکم دیا کہ اب تم سب یہاں سے نکل جاؤ منتقل ہو جاؤ تم ایک دوسرے کے دشمن ہو تم میں ایک دوسرے سے دوری رہے گی اور تمہیں ایک خاص وقت تک زمین میں ٹھہرنا اور وہیں گذر بسر کرنا ہے (۳۶)

फिर आदम ने अपने रब से कुछ वाक्य सीखकर पश्चाताप किया जिसको उसके रब ने स्वीकार कर लिया, क्योंकि वह बड़ा क्षमा करने वाला कृपा करने वाला है (37) {7:23}

پھر آدم نے اپنے رب سے چند کلمات سیکھ کر توبہ کی جس کو اس کے رب نے قبول کر لیا کیونکہ وہ بڑا معاف کرنے والا ہے اور رحم فرمانے والا ہے (۳۷) [۷:۲۳]

हमने कहा तुम सब यहां से (इस आराम से) जाओ फिर जो मेरी ओर से कोई पथ प्रदर्शन तुम्हारे पास पहुंचे तो जो लोग मेरे उस पथ प्रदर्शन का अनुसरण करेंगे उनके लिए किसी डर और कलेश का अवसर न होगा (38)

ہم نے کہا تم سب یہاں سے (اس آرام سے) جاؤ (منتقل ہو جاؤ) پھر جو میری طرف سے کوئی ہدایت تمہارے پاس پہنچے تو جو لوگ میری اس ہدایت کی پیروی کریں گے ان کے لئے کسی خوف اور رنج کا موقعہ نہ ہوگا (۳۸)

और जो उसको स्वीकार करने से इनकार करेंगे और हमारी आयात को झुठलाऐंगे वह आग में जाने वाले हैं जहां वह सदैव रहेंगे (39)

नोट- आगे बढ़ने से पहले आदम की कथा के बारे में कुरआन के प्रकाश में लिखा जा रहा है और कुरआन में जिन और आयात में यह उल्लेख है उनको भी यहां अंकित किया जा रहा है जिससे इस वास्तविकता पर विवेचना हो सके (चिन्तन).

(7:11से25) हमने तुम्हारी रचना का आरम्भ किया (मिट्टी से) फिर तुम्हारा रूप बनाया, फिर फरिश्तों से कहा आदम के आगे झुक जाओ (प्रणाम करो) इस आदेश पर सबने प्रणाम किया परन्तु इबलीस झुकने वालों में शामिल न हुआ, पूछा तुझे किस बात ने प्रणाम से रोका जबकि मैंने तुझको आदेश दिया था? बोला मैं इससे उत्तम हूं तूने मुझे आग से उत्पन्न किया है इसे मिट्टी से, कहा अच्छा तू यहां से निकल जा तुझे अधिकार नहीं कि यहां बड़ाई का घमंड करे, निकल जा कि वास्तव में तू उनमें से है जो स्वयं अपना अपमान चाहते हैं, बोला मुझे और मेरे बाद मेरी सैना को मेरे कार्य के साथ उस दिन तक छूट दे जब तक यह सब दोबारा उठाए जाऐंगे, कहा मेरे कानून में तुझे अर्थात् तेरे कार्य को पहले से ही छूट है परन्तु तुझको ज्ञात न था, चूंकि मेरे नियम बदलते नहीं हैं, अब तुझको भी ज्ञात हो गया, बोला अच्छा तो जिस प्रकार तूने (अर्थात् तेरे नियम ने) मुझे पथ भ्रष्टता में ग्रस्त किया है मैं भी और मेरी सैना (अर्थात् मेरा मिशन) भी अब तेरी सीधी राह पर उनकी घात में लगा रहूंगा आगे और पीछे, दाऐं और बाऐं, हर ओर से उनको घेरूंगा, और तू उनमें से अधिकांश को आज्ञाकारी न पाएगा, कहा निकल जा यहां से अपमानित व ठुकराया हुआ, विश्वास रख कि उनमें जो तेरा अनुसरण करते हुए तेरे कार्य में शरीक होंगे तुझ समेत उन सबसे नर्क को भर दूंगा।

और हे आदम तू और तेरी पत्नी दोनों उस उपवन में रहो, जहां से जिस वस्तु को तुम्हारा दिल चाहे खाओ परन्तु इस शजर के पास न जाना अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे, फिर शैतान ने उनको बहका दिया ताकि उनकी गुप्त वस्तुऐं जो दूसरे से छुपी थी (अर्थात उनकी योग्यता) उनके सामने खोल दे उसने उनसे कहा तुम्हारे रब ने तुम्हें जो इस शजर से रोका है इसका कारण इस के सिवा कुछ नहीं है कि कहीं तुम फरिश्ते न बन जाओ या तुम्हें निरन्तरता का जीवन प्राप्त न हो जाए और उसने शपथ खाकर उनसे कहा कि मैं तुम्हारा सच्चा हितेषी हूं, इस प्रकार धोका देकर उन दोनों को धीरे-धीरे अपने मार्ग पर ले आया, अन्ततः उन्होंने इस शजर का स्वाद चखा तो उनकी गुप्त वस्तु (प्रतिभा) एक दूसरे के सामने खुल गई और वह अपने शरीर को उपवन के पत्तों से ढ़ांकने लगे (अब उनको ज्ञान हो गया कि हम नंगे हैं) तब उनके रब ने उन्हें पुकारा क्या मैंने तुम्हें इस शजर से न रोका था? और न कहा था कि शैतान तुम्हारा शत्रु है? दोनों बोल उठे यदि तूने हमें बखशा न होता और हम पर दया न की होती तो हम नष्ट हो जाते, अब भी हमारी मोक्ष और हम पर दया कर, कहा जाओ (स्थानान्तरित हो जाओ) तुम एक दूसरे के शत्रु हो और तुम्हारे लिए एक खास समय तक पृथ्वी ही में रहने का स्थान है और वहीं जीविका है और कहा वहीं तुम को जीना है और वहीं मरना है, और उसमें से तुमको अन्ततः निकाला जाएगा.

शैतान के निकल जाने का अर्थ यह भी है कि यहां अब तेरा वह सम्मान नहीं रहा जो था अर्थात् तू स्वयं तुच्छ और नीचा हो गया अवज्ञा करने से.

اور جو اس کو قبول کرنے سے انکار کریں گے اور ہماری آیات کو جھٹلائیں گے وہ آگ میں جانے والے ہیں جہاں ہمیشہ رہیں گے (۳۹)

نوٹ: آگے بڑھنے سے پہلے قصہ آدم کے بارے میں قرآن کی روشنی میں لکھا جا رہا ہے اور قرآن میں جن اور آیات میں یہ ذکر ہے ان کو بھی یہاں درج کیا جا رہا ہے جس سے اس کی حقیقت پر غور وفکر ہو سکے

(۷:۱۱تا ۲۵) ہم نے تمہاری تخلیق کی ابتدا کی (مٹی سے) پھر تمہاری صورت بنائی. پھر فرشتوں سے کہا آدم کو سجدہ کرو اس حکم پر سب نے سجدہ کیا مگر ابلیس سجدہ کرنے والوں میں شامل نہ ہوا. پوچھا تجھے کس چیز نے سجدہ کرنے سے روکا. جب کہ میں نے تجھ کو حکم دیا تھا؟ بولا میں اس سے بہتر ہوں تو نے مجھے آگ سے پیدا کیا اور اسے مٹی سے، فرمایا اچھا تو یہاں سے نکل منتقل ہو جا تجھے حق نہیں کہ یہاں بڑائی کا گھمنڈ کرے نکل جا کہ درحقیقت تو ان لوگوں میں سے ہے جو خود اپنی ذلت چاہتے ہیں. بولا مجھے اور میرے بعد میری ذریت کو میرے مشن کے ساتھ اس دن تک مہلت دے جب تک یہ سب دوبارہ اٹھائے جائیں گے. فرمایا میرے قانون میں تجھے یعنی تیرے کام کو پہلے سے ہی مہلت ہے مگر تجھ کو معلوم نہ تھا. چونکہ میرے قانون بدلتے نہیں ہیں. اب تجھ کو بھی معلوم ہو گیا. بولا اچھا! تو جس طرح تو نے (یعنی تیرے قانون نے) مجھے گمراہی میں مبتلا کیا ہے میں بھی اور میری ذریت (یعنی میرا مشن) اب تیری سیدھی راہ پر، ان کی گھات میں لگا رہوں گا آگے اور پیچھے دائیں اور بائیں ہر طرف سے ان کو گھیروں گا اور تو ان میں سے اکثر کو فرمانبردار نہ پائے گا. فرمایا نکل جا یہاں سے ذلیل وٹھکرایا ہوا. یقین رکھ کہ ان میں جو تیری پیروی کرتے ہوئے تیرے کام میں شریک ہوں گے تجھ سمیت ان سب سے جہنم کو بھر دونگا.

اور اے آدم تو اور تیری بیوی دونوں اس جنت میں رہو، جہاں سے جس چیز کو تمہارا دل چاہے کھاؤ مگر اس شجر کے پاس نہ جانا ورنہ ظالموں میں سے ہو جاؤ گے. پھر شیطان نے ان کو بہکا دیا تا کہ ان کی چھپی چیز جو ایک دوسرے سے چھپی تھیں (یعنی ان کی صلاحیت) ان کے سامنے کھول دے اس نے ان سے کہا تمہارے رب نے تمہیں جو اس شجر سے روکا ہے اس کی وجہ اس کے سوا کچھ نہیں ہے کہ کہیں تم فرشتے نہ بن جاؤ یا تمہیں ہمیشگی کی زندگی حاصل نہ ہو جائے اور اس نے قسم کھا کر ان سے کہا کہ میں تمہارا سچا خیر خواہ ہوں. اس طرح دھوکا دے کر ان دونوں کو رفتہ رفتہ اپنے ڈھب پر لے آیا. آخر کار جب انہوں نے اس شجر کا مزا چکھا تو ان کے ستر (صلاحیت) ایک دوسرے کے سامنے کھل گئے اور وہ اپنے جسموں کو جنت کے پتوں سے ڈھانکنے لگے (اب ان کو علم ہو گیا کہ ہم ننگے ہیں) تب ان کے رب نے انہیں پکارا کیا میں نے تمہیں اس شجر سے نہ روکا تھا اور نہ کہا تھا کہ شیطان تمہارا دشمن ہے؟ دونوں بول اٹھے اگر تو نے ہمیں بخشا نہ ہوتا اور ہم پر رحم نہیں کیا ہوتا تو ہم تباہ ہو جاتے اب بھی ہماری مغفرت اور ہم پر رحم کر. فرمایا جاؤ (منتقل ہو جاؤ) تم ایک دوسرے کے دشمن ہو. اور تمہارے لئے ایک خاص مدت تک زمین ہی میں جائے قرار اور سامان زیست ہے. اور فرمایا وہیں تم کو جینا ہے اور وہیں مرنا ہے اور اس میں سے تم کو آخر کار نکالا جائےگا.

شیطان کے نکل جانے کا مطلب یہ بھی ہے کہ یہاں اب تیری وہ عزت نہیں رہی جو تھی یعنی تو ذلیل اور نیچا ہو گیا نافرمانی سے.

"क़ाला-इहबितू" का अर्थ मैंने यह किया है कि स्थानान्तरित हो जाओ इसके समर्थन में (2:61) प्रस्तुत है, इसमें यही शब्द इहबितु आया है, अर्थ है- किसी शहरी आबादी में जा रहो, अतः इस शब्द का अर्थ ऊपर आकाश से नीचे पृथ्वी पर आना नहीं है, अपितु स्थान का बदलना है, विशेष तौर से घटना आदम में आयत (15:34) में शब्द फख़रुज आया है, अर्थात् निकल जा निष्कासित हो जा, तो इस शब्द ने स्वयं को आयात में दोहरा कर बता दिया कि इहबितू का अर्थ निकल जा कहीं दूसरे स्थान चले जाओ भी है,

(15:28,29) और जब कहा तेरे रब ने फ़रिश्तों से मैं बनाऊंगा एक मानव खनखनाते सने गारे से फिर जब ठीक कर दूं उसको और ठीक कर दूं अपना ज्ञान देकर तो झुक जाना उसके आगे आज्ञाकारी होकर

(17:61,62) में भी आदम के आगे सजदा करने और इबलीस के अवज्ञा करने का उल्लेख है

(18:50) में भी सजदे का उल्लेख है {20:115से124} में भी सजदे और अवज्ञा का उल्लेख है

(38:71,73) जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं जब मैं उसे पूरी तरह बना दूं और उसमें अपनी (ओर) से रूह (ज्ञान) फूंक दूं (अर्थात् वह ज्ञान वाला हो जाए) तो तुम सब उसको बड़ा स्वीकार कर लेना अर्थात् उसके लिए काम में लग जाना (समय आने पर) सब फ़रिश्तों ने ईश्वर के आदेश पर पालन किया और आदम की सहायता करने लगे, सजदे में गिर गए परन्तु इबलीस ने अपनी बड़ाई का घमण्ड किया,

(76:1से3) निःसन्देह मानव पर एक समय ऐसा भी आ चुका है कि वह कोई उल्लेखनीय न था, हमने मानव को (पहले मिट्टी से बनाकर फिर) संयुक्त वीर्य से उत्पन्न किया ताकि उसकी परीक्षा करे तो हमने उसको सुनता, देखता, बुद्धि वाला बनाया और उसे मार्ग दिखाया (अब वह) आज्ञाकारी हो या अवज्ञाकारी

उपरोक्त आयात {7:11, 15:28,29, 17:61,62, 38:71,72} आदि में ईश्वर ने फ़रिश्तों को एक सूचना दी और इस सूचना के साथ एक आदेश दिया कि मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं जब उसकी आकृति रूप गुण से सुधार लूं और उसमें अपनी ओर से रूह फूंक दूं अर्थात् उसको ज्ञान दे दूं जिसकी उसको आवश्यकता है जिससे वह उन्नति करता रहेगा, बना लूं तो उसकी ज्येष्ठता स्वीकार कर लेना उसके लिए बेगार में लग जाना यह एक सूचना हुई, समय आने पर ईश्वर ने आदम को जोड़े के साथ बनाया जिसकी सूचना सूरत 'निसा' और दूसरी आयात में दी है,

सूरत निसा (4) आयत- ऐ लोगो! डरते रहो अपने रब की अवज्ञा से जिसने बनाया तुमको एक जान से (और जिस मादे सत सार अर्थात् मिट्टी से उसको बनाया था) उस पदार्थ मिट्टी से ही उसका जोड़ा एक साथ बनाया, फिर उन दोनों से बाहुल्य मर्द और स्त्री फैलाई और ईश्वर की अवज्ञा से डरो जिसके नाम को तुम अपनी आवश्यकता पूर्ति का माध्यम बनाते हो डरो और विभाजन से बचो निःसन्देह ईश्वर तुम को देख रहा है,

(92:3) और जो उत्पन्न किए नर और नारी,

(36:36) वह अस्तित्व पवित्र है अर्थात् मैं ईश्वर जिसने पृथ्वी की वनस्पति के और स्वयं उनके और जिन वस्तुओं की उनको सूचना भी नहीं सबके जोड़े बनाएं { पेज-302, 35:11, 43:12, 51:49, 53:45, 78:8, 49:13}

इन आयात से यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर ने आदम को तनहा (एकाकी) उत्पन्न नहीं किया जैसे कि हमारे यहा लिखा मिलता है कि ईश्वर ने आदम को एकाकी उत्पन्न करके स्वर्ग में रखा और फिर वहां उनकी पसली से हव्वा को उत्पन्न करके उनका जोड़ा बनाया यह धारणा मिथ्या

[قَالَ اِهْبِطُوْا] کا مطلب میں نے یہ کیا ہے کہ منتقل ہو جاؤ اس کی تائید میں (۲:۶۱) پیش ہے اس میں یہی لفظ [اِهْبِطُوْا] آیا ہے مطلب ہے کسی شہری آبادی میں جا رہو اس لئے اس لفظ کا مطلب اوپر آسمان سے نیچے زمین پر آنا نہیں ہے بلکہ مقام کا بدلنا ہے خاص طور سے واقعہ آدم میں آیت (۱۵:۳۴) میں لفظ [فَاخْرُجْ] آیا ہے یعنی نکل جا خارج ہو جا، تو اس لفظ نے خود تصریف آیات سے بتا دیا کہ [اِهْبِطُوْا] کا مطلب نکل جا منتقل ہو جانا بھی ہے۔

(۱۵:۲۸، ۲۹) اور جب کہا تیرے رب نے فرشتوں سے میں بناؤں گا ایک بشر کھنکھناتے سنے گارے سے پھر جب ٹھیک کروں اس کو اور ٹھیک کر دوں اپنا علم دے کر تو جھک جانا اس کے آگے فرماں بردار ہو کر۔

(۱۷:۶۱، ۶۲) میں بھی آدم کے آگے سجدہ کرنے اور ابلیس کے نافرمانی کرنے کا ذکر ہے

(۱۸:۵۰) میں بھی سجدے کا ذکر ہے

(۲۰:۱۱۵ تا ۱۲۴) میں بھی سجدے اور نافرمانی کا ذکر ہے

(۳۸:۷۱، ۷۳) جب تیرے رب نے فرشتوں سے کہا میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں جب میں اسے پوری طرح بنا دوں اور اس میں اپنی (طرف) سے روح (علم) پھونک دوں (یعنی وہ علم والا ہو جائے) تو تم سب اس کو برتر تسلیم کر لینا یعنی اس کے لئے کام میں لگ جانا (وقت آنے پر) سب فرشتوں نے اللہ کا حکم مانا اور آدم کی مدد کرنے لگے۔ مگر ابلیس نے اپنی بڑائی کا گھمنڈ کیا۔

(۷۶:۱ تا ۳) بے شک انسان پر زمانے میں ایک وقت ایسا بھی آ چکا ہے کہ وہ کوئی قابل ذکر نہ تھا ہم نے انسان کو نطفہ مخلوط سے پیدا کیا تا کہ اسے آزمائیں تو ہم نے اس کو سنتا دیکھتا عقل مند بنایا اور اسے راہ دکھائی (اب وہ) فرمانبردار رہو یا نافرمان۔

آیات بالا (۷:۱۱، ۱۵:۲۸، ۲۹، ۱۷:۶۱، ۶۲، ۳۸:۷۱، ۷۲] وغیرہ میں اللہ نے فرشتوں کو ایک خبر دی اور اس خبر کے ساتھ ایک حکم دیا کہ میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں جب اس کو شکل صورت سے درست کر لوں اور اس میں اپنی طرف سے روح پھونک دوں یعنی اس کو علم دے دوں جس کی اس کو ضرورت ہے جس سے وہ ترقی کرتا رہے گا۔ بنا لوں تو اس کی برتری تسلیم کر لینا اس کے لئے بیگار میں لگ جانا یہ ایک خبر ہوئی وقت آنے پر اللہ نے آدم کو جوڑے کے ساتھ بنایا جس کی خبر سورت نساء اور دیگر آیات میں دی ہے

سورت نساء آیت ۱:۔ اے لوگو! ڈرتے رہو اپنے رب کی مخالفت سے جس نے بنایا تم کو ایک جان سے (اور جس مادے ست جوہر یعنی مٹی سے اس کو بنایا تھا) اس مادے مٹی سے ہی اس کا جوڑا ایک ساتھ بنایا۔ پھر ان دونوں سے کثرت سے مرد و عورت پھیلائے اور اللہ کی مخالفت سے ڈرو جس کے نام کو تم اپنی حاجت براری کا ذریعہ بناتے ہو اور قطع تعلق سے (بچو) کچھ شک نہیں کہ اللہ تم کو دیکھ رہا ہے۔

(۹۲:۳) اور جو پیدا کئے نر اور مادہ۔

(۳۶:۳۶) وہ ذات پاک ہے (یعنی میں اللہ) جس نے زمین کی نباتات کے اور خود ان کے اور جن چیزوں کی ان کو خبر نہیں سب کے جوڑے بنائے [صـ۳۰۲، ۳۵:۱۱، ۴۳:۱۲، ۵۱:۴۹، ۵۳:۴۵، ۷۸:۸، ۴۹:۱۳]

ان آیات سے یہ پتہ چلتا ہے اللہ نے آدم کو تنہا پیدا نہیں کیا جیسا کہ ہمارے یہاں لکھا ملتا ہے کہ اللہ نے آدم کو اکیلا پیدا کر کے جنت میں رکھا اور پھر وہاں ان کی پسلی سے حوا کو پیدا کر کے ان کا جوڑا بنایا یہ غلط ہے درست یہ ہے کہ اللہ نے آدم

है उचित यह है कि ईश्वर ने आदम व हव्वा को एक साथ एक ही पदार्थ मिट्टी से बनाया और इसके बाद दोनों को एक साथ स्वर्ग अर्थात् उपवन में प्रविष्ट किया और उनको सावधान कर दिया कि तुम दोनों आराम के साथ रहो और जो मन में आए खाओ परन्तु इस शजर के निकट न जाना और यह भी बता दिया कि शैतान (पिशाच) तुम्हारा शत्रु है उससे सावधान रहना.

आदम के लिए यह वह काल था जिसको सूरत 'दहर' आयत (1से3 तक) बताया है कि यह उस समय में कोई उल्लेखनीय न था, आदम और उसकी पत्नी को कोई समझ चेतना न थी, बस ऐसा समझो जैसा छोटा बच्चा होता है, उसको इतना पता रहता है कि जब भूक लगी रो दिया, मल-मूत्र लगा कपड़ों ही में कर दिया, इसके अतिरिक्त बच्चा कुछ नहीं कर पाता परन्तु आदम व हव्वा थे पूरे बड़े केवल चेतना में बच्चे जैसे थे, जैसे बच्चे के पालन पोषण के लिए उसके माता-पिता होते हैं वह करते हैं ऐसा नहीं कि बच्चा उत्पन्न हुआ और उसको बेसहारा छोड़ दिया, ऐसे ही ईश्वर ने आदम व हव्वा को उत्पन्न करके एक आराम के स्थान उपवन (स्वर्ग को उपवन भी कहते हैं) में रखा जैसे माता-पिता अपने बच्चे को बेसहारा नहीं छोड़ते ऐसे ही ईश्वर ने आदम को भी बेसहारा न छोड़ा और आदम का प्रशिक्षण होता रहा, जैसे बच्चा धीरे-धीरे जानकारी प्राप्त करता है ऐसे ही आदम भी प्राप्त करता रहा, कर रहा है, करता रहेगा क्योंकि ईश्वर ने इसकी प्रकृति ही प्रगतिशील बनाई है.

उधर शैतान भी अपने कार्य में लगा था कि यह क्या रचना है जिसको ईश्वर ने इतने आराम में रखा है इसको इस आराम से निष्कासित करना चाहिए और निष्कासित करने का केवल एक ही मार्ग था कि वह उनको उस शजर का स्वाद चखा दे, वह अपने प्रयास में लग गया और आदम वह हव्वा को भांति भांति से फुसलाने लगा, अन्ततः उनको फुसला दिया और उन्होंने उस शजर के स्वाद को चख लिया.

हर आदमी जानता है कि किसी व्यक्ति या बच्चे को जिस कार्य के करने से रोका जाता है तो जान बूझकर उस कार्य के करने की इच्छा उत्पन्न होती है और अधिकांश वह कार्य कर लिया जाता है ऐसे ही आदम वह हव्वा को भी शजर के चखने की इच्छा उत्पन्न हुई, क्योंकि उससे रोका गया था और शैतान भी बिना परिणाम को सोचे उनको फुसलाने में लग गया, अन्ततः आदम व हव्वा ने उस शजर को चख लिया, उस शजर को चखते ही आदम व हव्वा की गुप्त क्षमता प्रकट होनी आरम्भ हो गई और उनको आभास हो गया कि हमारा शरीर खुला है, और वह पत्तों से छुपाने लगे, मानो उनको चेतना आने लगी, और वह समय आ गया जिसकी ईश्वर को प्रतीक्षा थी, अब ईश्वर ने आदम व हव्वा को उस आराम के स्थान से परिवर्तित कर दिया और ऐसे स्थान पर कर्मशील कर दिया जहां उसकी बुद्धि का विकास हो और अपनी जीविका का प्रबन्ध स्वयं करे, और ईश्वर की दी हुई बुद्धि से उन वस्तुओं से उनके गुणों के अनुसार काम ले और उनके नाम भी रखने लगे, यह होने लगा और आदम व हव्वा काफी चतुर हो गए इसी बीच आदम व हव्वा संतान वाले भी हो गए और उनके दो लड़कों में झगड़ा हुआ जिसको फरिश्तों ने देखा और समय आने पर ईश्वर से उल्लेख किया.

उधर शैतान अपने छल में सफल न हुआ व चाहता था आदम को व्याकुलता में ग्रस्त करना परन्तु उसके छल ने आदम को बुद्धि वाला बना दिया? अर्थात् वह उन्नति करने लगा और उस स्थान पर पहुंच गया जहां ईश्वर चाहता था, इसको इस प्रकार भी देखो कि एक आदमी को कुछ करना न पड़े और उसकी आवश्यकता पूरी होती रहे तो वह आलसी हो जाता है और जो महनत करके अपनी आवश्यकता को पूरी करता है तो वह बुद्धिमान भी होता जाता है और स्वस्थ भी रहता है, ऐसा ही आदम के साथ हुआ, जब उसको बिना श्रम के वस्तुऐं मिलनी बन्द हो गई तो वह उनको प्राप्त करने के लिए

وحوّا کو ایک ساتھ ایک ہی مادہ مٹی سے بنایا اور اس کے بعد دونوں کو ایک ساتھ جنت یعنی باغ میں داخل کیا اور ان کو تاکید کردی کہ تم دونوں آرام کے ساتھ رہو اور جو دل چاہے کھاؤ مگر اس شجر کے پاس نہ جانا اور یہ بھی بتا دیا کہ شیطان تمہارا دشمن ہے اس سے ہوشیار رہنا.

آدم کے لئے یہ وہ زمانہ تھا جس کو سورت ''دھر'' آیت (۱ سے ۳) تک بتایا ہے کہ یہ اس زمانہ میں کوئی قابل ذکر نہ تھا. آدم اور اس کی بیوی کو کوئی سدھ بدھ نہ تھی بس ایسا سمجھو جیسا چھوٹا بچہ ہوتا ہے. اس کو اتنا پتہ رہتا ہے کہ جب بھوک لگی رو دیا. پاخانا پیشاب لگا کر دیا کپڑوں میں ہی اس کے علاوہ بچہ کچھ نہیں کرپاتا مگر آدم وحوّا تھے پورے بڑے صرف سدھ بدھ میں بچے جیسے تھے جیسے بچے کی پرورش کے لئے اس کے والدین ہوتے ہیں وہ کرتے ہیں. ایسا نہیں کہ بچہ پیدا ہو اور اس کو بے سہارا چھوڑ دیا. ایسے ہی اللہ نے آدم وحوّا کو پیدا کر کے ایک آرام کی جگہ باغ جنت (جنت کو باغ بھی کہتے ہیں) میں رکھا جیسے ماں باپ اپنے بچے کو بے سہارا نہیں چھوڑتے ایسے ہی اللہ نے آدم کو بھی بے سہارا نہ چھوڑا اور آدم کی تربیت ہوتی رہی جیسے بچہ رفتہ رفتہ علم حاصل کرتا ہے ایسے ہی آدم بھی حاصل کرتا رہا کر رہا ہے کرتا رہے گا کیونکہ اللہ نے اس کی جبلت ہی ترقی پذیر بنائی ہے.

ادھر شیطان بھی اپنے کام میں لگا تھا کہ یہ کیا مخلوق ہے جس کو اللہ نے اتنے آرام میں رکھا ہے اس کو اس آرام سے خارج کرنا چاہئے اور خارج کرنے کا صرف ایک ہی راستہ تھا کہ وہ ان کو اس شجر کا مزہ چکھا دے وہ اپنی کوشش میں لگ گیا اور آدم وحوّا کو طرح طرح سے ورغلانے لگا. آخر کار ان کو بہکا دیا اور انہوں نے اس شجر کے مزے کو چکھ لیا.

ہر آدمی جانتا ہے کہ کسی آدمی یا بچہ کو جس کام کے کرنے سے منع کیا جاتا ہے تو جان بوجھ کر اس کام کے کرنے کی چاہت پیدا ہوتی ہے اور اکثر وہ کام کر لیا جاتا ہے ایسے ہی آدم وحوّا کو بھی شجر کے چکھنے کی چاہت پیدا ہوئی کیونکہ اس سے روکا گیا تھا اور شیطان بھی بنا انجام کو سوچے ان کو بہکانے میں لگ گیا. آخر آدم وحوّا نے اس شجر کو چکھ لیا. اس شجر کو چکھتے ہی آدم وحوّا کی چھپی ہوئی صلاحیت ظاہر ہونی شروع ہو گئیں اور ان کو یہ احساس ہو گیا کہ ہمارا جسم کھلا ہے اور وہ پتوں سے چھپانے لگے گویا وہ ہوشیار ہونے لگے اور وہ وقت آ گیا جس کا اللہ کو انتظار تھا اب اللہ نے آدم وحوّا کو اس آرام کی جگہ سے منتقل کر دیا اور اس جگہ سرگرم کر دیا جہاں اس کی عقل کو ترقی ہو. اور اپنا کھانے پینے کا انتظام خود کرے اور اللہ کی دی ہوئی عقل سے ان اشیاء سے ان کی صفات کے مطابق کام لینے لگے اور ان کے نام بھی رکھنے لگے. یہ ہونے لگا اور آدم وحوّا کافی ہوشیار ہو گئے. اسی دوران آدم وحوّا اولاد والے بھی ہو گئے. اور ان کے دو لڑکوں میں جھگڑا ہوا جس کو فرشتوں نے دیکھا اور وقت آنے پر اللہ سے ذکر کیا

ادھر شیطان اپنے مکر میں کامیاب نہ ہوا وہ چاہتا تھا آدم کو پریشانی میں مبتلا کرنا مگر اس کے مکر نے آدم کو عقل والا بنا دیا؟ یعنی وہ ترقی کرنے لگا. اور اس مقام پر پہنچ گیا جہاں اللہ چاہتا تھا. اس کو اس طرح بھی دیکھو کہ ایک آدمی کو کچھ کرنا نہ پڑے اور اس کی ضرورت پوری ہوتی رہیں تو وہ بے کار ہی ہو جاتا ہے اور جو محنت کر کے اپنی ضروریات کو پوری کرتا ہے تو وہ عقل مند بھی ہوتا جاتا ہے اور صحت مند رہتا ہے ایسا ہی آدم کے ساتھ ہوا جب اس کو بغیر محنت کے چیز ملنی بند ہو گئیں تو

प्रयास करने लगा और उसकी बुद्धि को भी प्रगति होने लगी,

परन्तु शैतान अपने छल कपट से रुकने वाला न था क्योंकि उसको अपमानित होना था और आदम की संतान को भी यह ज्ञान होना था कि शैतान से सावधान रहें वह मानव का शत्रु है और यह सब कुछ ईश्वर के प्रोग्राम के अनुसार हो रहा था, जैसे महामना यूसुफ अ० की घटना में है कि भाईयों ने क्या किया, भाई करते रहे और यूसुफ की उन्नति होती रही, ऐसे ही शैतान तो अपने मन में यह सोचता रहा कि मैं आदम को व्याकुल कर रहा हूं मगर आदम के लिए अच्छा होता रहा और शैतान के लिए बुरा और वह समय आ ही गया जिसकी ईश्वर को प्रतीक्षा थी,

वह क्या प्रतीक्षा थी वह यह कि मानव की संतान को स्थानापन्न के स्थान पर आबाद रहने वाली रचना का स्थान देना, यह गुण संसार में और किसी रचना को प्राप्त नहीं है और जिसमें यह गुण होगा वही ईश्वर के विधान का भी भारित होगा क्योंकि संसार की व्यवस्था को ठीक रखने के लिए कोई विधान होना भी था और इसको प्रचलित करना और उस पर क्रिया भी अनिवार्य है, यह कार्य वही रचना कर सकती है जो एक दूसरे के बाद स्थानापन्न होती रहे और वह है मानव,

मैं अपनी बात आरम्भ कर रहा हूं उस समय से जब ईश्वर ने फरिश्तों और ब्रह्माण्ड की हर कार्यरत शक्ति से कहा था कि मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं जब उसको ठीक बनादूं और उसको ज्ञान वाला बना दूं अर्थात् वह मेरी दी हुई बुद्धि से कार्य लेकर ज्ञान प्राप्त कर ले तो उसको उच्चतर स्वीकार कर लेना और तुमसे जो भी काम ले तुम नकार न करना क्योंकि तुम उसके लिए एक बेगारी की भांति बनाए गए हो, तुम उसके लिए बेगार करना अर्थात बिना पारिश्रमिक के, और फरिश्तों से कहा कि तुम इसके लिए मार्ग प्रशस्त करना जिस रचना से वह काम ले तुम विरोध न करना अपितु उसकी सहायता करना, यह कह कर ईश्वर ने सूरत निसा की आयत और दूसरी आयत के अनुसार मिट्टी से आदम व हव्वा को बनाया और उनके पालन पोषण के लिए एक स्वर्ग उपवन रमणीक स्थान में रखा, वहां पर उनका पालन पोषण होता रहा, परन्तु ईश्वर का उद्देश्य कुछ और था जो फरिश्तों से कहा था वह अभिप्राय जब ही पूरा होना था जब आदम को ज्ञान हो जाए

उधर शैतान भी कोई कृति करने के चक्कर में था वह उसने कर दिया, अर्थात् जिस कार्य से रोका गया था आदम से करा दिया, मानो अब वह समय आ गया जहां से आदम की बुद्धि ने कार्य करना आरम्भ कर दिया तो ईश्वर ने आदम को उस आराम के स्थान से स्थानान्तरित करके वहां रखा जहां उसको अपना प्रबन्ध स्वयं ही करना था, वह करता रहा और बुद्धि को उन्नति होती रही, संतान वाला बना, संतान में झगड़ा हुआ एक ने दूसरे को वध किया फरिश्तों ने देखा यह सब कुछ होने पर ईश्वर ने जान लिया कि अब आदम को फरिश्तों और ब्रह्माण्ड में कार्यरत सम्पूर्ण शक्तियों के सामने प्रस्तुत कर दिया जाए और उनको आदम का बेगारी बना दिया जाए तब ईश्वर ने आदम को प्रस्तुत किया,

ईश्वर ने संसार की सम्पूर्ण वस्तुओं फरिश्तों सहित से कहा कि जिस मानव के बनाने की बात मैंने कभी कही थी वह मानव बन चुका और इस योग्य हो गया कि उसको उत्तराधिकारी बना कर बसने वाली रचना का स्थान दे दिया जाए वह ऐसी हो कि एक के बाद दूसरा उत्तराधिकारी बनता रहे, यह सुनकर फरिश्तों ने अपने निरीक्षण के आधार पर ईश्वर से निवेदन किया कि यह रचना ऐसी कहां है कि इसको यह स्थान दिया जाए यह तो लड़ भिड़कर समाप्त हो जाएगी, यह तो रक्तपात करती है, रहा प्रश्न तेरी पूजा पाठ और गुणगान का वह तो हम कर ही रहे हैं,

यह सुनकर ईश्वर ने कहा यदि तुम अपने कथन और वाद

وہ خود ان کو حاصل کرنے کے لئے جدو جہد کرنے لگا اور اس کی عقل کو بھی ترقی ہونے لگی.

مگر شیطان اپنی مکاریوں سے رکنے والا نہ تھا کیونکہ اس کو ذلیل ہونا تھا. اور اولادآدم کو بھی یہ علم ہونا تھا کہ شیطان سے ہوشیار رہیں وہ انسان کا دشمن ہے اور یہ سب کچھ اللہ کی مشیت سے ہورہا تھا جیسے حضرت یوسفؑ کے واقعہ میں ہے کہ بھائیوں نے کیا کیا. بھائی کرتے رہے اور یوسف کی ترقی ہوتی رہی ایسے ہی شیطان تو اپنے دل میں یہ سوچتا رہا کہ میں آدم کو پریشان کررہا ہوں مگر آدم کے حق میں اچھا ہوتا رہا اور شیطان کے لئے بُرا اور وہ وقت آ ہی گیا جس کا اللہ کو انتظار تھا

وہ کیا انتظار تھا وہ یہ کہ نسل انسانی کو خلیفہ جانشینی قائم مقامی کی حیثیت سے آباد رہنے والی مخلوق کا درجہ دینا یہ صفت دنیا کی اور کسی مخلوق کو حاصل نہیں ہے. اور جس کے اندر یہ صفت ہوگی وہی اللہ کی شریعت کی بھی مکلف ہوگی. کیونکہ اس دنیا میں کوئی قانون بھی ہونا تھا اور اس کو نافذ کرنا اور اس پر عمل بھی ضروری ہے یہ کام وہی مخلوق کرسکتی ہے جو ایک دوسرے کے بعد قائم مقام ہوتی رہے اور وہ ہے انسان.

میں اپنی بات شروع کررہا ہوں اس وقت سے جب اللہ نے فرشتوں اور کائنات کی ہر طاقت سے کہا تھا کہ میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں جب اس کو ٹھیک بنادوں اور اس کو علم والا بنادوں یعنی وہ میری دی ہوئی عقل سے کام لے کر علم حاصل کرلے تو اس کو برتر تسلیم کرلینا اور تم سے جو بھی کام لے تم انکار مت کرنا کیونکہ تم اس کے لئے ایک بیگاری کی طرح بنائے گئے ہو تم اس کے لئے بیگار کرنا اور فرشتوں سے کہا کہ تم اس کے لئے راہ ہموار کرنا جس مخلوق سے وہ کام لے تم مخالفت نہ کرنا بلکہ اس کی مدد کرنا یہ کہہ کر اللہ نے سورہ نساء کی آیات اور دیگر آیات کے مطابق مٹی سے آدم وحوا کو بنایا اور ان کی پرورش کے لئے ایک باغ جنت پرفزاں مقام میں رکھا وہاں پر ان کی پرورش ہوتی رہی. لیکن اللہ کا مقصد کچھ اور تھا جو فرشتوں سے کہا تھا. وہ مقصد جب ہی پورا ہونا تھا جب آدم کو علم مل جائے.

ادھر شیطان بھی کوئی کارنامہ کرنے کے چکر میں تھا وہ اس نے کردیا یعنی جس کام سے منع کیا گیا تھا آدم سے کرادیا. گویا اب وہ وقت آگیا جہاں سے آدم کی عقل نے کام کرنا شروع کردیا تو اللہ نے آدم کو اس آرام کی جگہ سے منتقل کر کے وہاں رکھا جہاں اس کو اپنا انتظام خود ہی کرنا تھا. وہ کرتا رہا اور عقل کو ترقی ہوتی رہی اولاد والا بنا. اولاد میں جھگڑا ہوا ایک نے دوسرے کو قتل کیا. فرشتوں نے دیکھا یہ سب کچھ ہونے پر اللہ نے جان لیا کہ اب آدم کو فرشتوں اور کائنات میں مصروف تمام قوتوں کے سامنے پیش کردیا جائے اور ان کو آدم کا بیگاری بنادیا جائے تب اللہ نے آدم کو پیش کیا

اللہ نے کائنات کی تمام اشیاء بشمول فرشتوں سے کہا کہ جس بشر کے بنانے کی بات میں نے کبھی کہی تھی وہ بشر بن چکا اور اس لائق ہوگیا کہ اس کو جانشینی کے طور پر آباد رہنے والی مخلوق کا درجہ دے دیا جائے وہ ایسی ہو کہ یکے بعد دیگرے خلیفہ جانشین بنتا رہے یہ سن کر فرشتوں نے اپنے مشاہدے کی بنا پر اللہ سے عرض کیا کہ یہ مخلوق ایسی کہاں ہے کہ اس کو یہ درجہ دیا جائے یہ تو لڑ بھڑ کر ختم ہوجائے گی یہ تو خونریزی کرتی ہے رہا سوال تیری عبادت وتسبیح کا وہ تو ہم کر ہی رہے ہیں.

یہ سن کر اللہ نے کہا اگر تم اپنے اس قول اور دعوے میں سچے ہو تو ان

में सच्चे हो तो इन वस्तुओं के नाम बताओ, यतः फरिश्तों को इन वस्तुओं से कोई प्रयोजन न था और न ही दूसरी शक्तियों को, अतः वह इनके विषयमें कुछ नही जानते थे न जानने का प्रयत्न किया था, अतः असमर्थता प्रकट की, तब ईश्वर ने आदम से कहा कि तुम इनके नाम बताओ, चूंकि आदम ने उस काल में जिसमें उसका प्रशिक्षण पालन पोषण हो रहा था ईश्वर की दी हुई बुद्धि से इन वस्तुओं के नाम रख लिए थे और उनको अपने काबू में भी कर लिया था जैसे घोड़ा, गाय, भैंस, बकरी आदि

आदम ने ईश्वर के आदेश पर तुरन्त उनके नाम बता दिए यह सुनकर फरिश्ते लज्जित हुए और अपनी अज्ञानता को स्वीकार किया तब ईश्वर ने दूसरी रचनाओं से कहा कि अब तुम इसको ज्येष्ठ स्वीकार करो और इसके बेगारी बनो, यह तुमसे काम लेगा तुम नकार मत करना और बेगार में लगे रहना, मैंने तुमको इसका बेगारी बना दिया है, बिना पैसे के कार्य करना जैसे तुम से काम ले तुरन्त करना,

फरिश्तों से कहा कि तुम इसकी सहायता करना, मार्ग प्रशस्तकरना विरोध न करना, किन्तु शैतान ने ईश्वर की यह बात स्वीकार न की और घमण्ड कर बैठा, इस कारण से कि मैं आदम से श्रेष्ठ हूं, मैं इसको अपने से ज्येष्ठ स्वीकार करके इसका बेगारी क्यों बनूं, मैं आग से बना हूं और आदम मिट्टी से, अतः शैतान ईश्वर के आदेश से विधान से निष्कासित हो गया और ईश्वर के विधान ने उसको पतित बना दिया, तब शैतान (पिशाच) ने एक निवेदन किया कि हे ईश्वर जब तेरे विधान ने जिसमें यह है कि जो इस नियम का पालन करेगा वह सीधे मार्ग पर रहेगा और जो इसका विरोध करेगा वह भटक जाएगा, चूंकि मैंने तेरे आदेश नियम का विरोध किया है इस कारण इस विधान के अन्तर्गत मैं पथ भ्रष्ट हो गया और वापस आने का भी संकल्प नही, अतः मुझे और मेरे कार्य को महाप्रलय तक के लिए छूट दे इसलिए कि जिस रचना को तूने ऐसा श्रेष्ठ बनाया है मैं भी देखूं कि वह इस स्थान पर स्थापित रहेगी,

ईश्वर ने कहा जा पतित यहां से अपमानित होकर निकल जा तुझे क्या ज्ञात कि मेरी बात नियम बदला नही करते, अतः मेरे नियम में पहले से ही यह है कि तेरा मिशन महाप्रलय तक शेष रहेगा, जा अब तुझे भी ज्ञात हो गया कि तेरे कार्य को छूट प्रलय तक है, जो तुझसे हो कर, उधर आदम से कहा कि अब तुम इस दुनिया में रहो और मेरी ओर से जो निर्देश आए उस पर कर्म करो और इस शैतान से सावधान रहना, यह तुम्हारा खुला शत्रु है, इस कारण से ही सत्य और मिथ्या में युद्ध महाप्रलय तक जारी रहेगा, इस कारण से शैतानों का महाप्रलय तक रहना ईश्वर के ज्ञान में पहले से था,

बहुत का विचार है कि शैतान की आयु महाप्रलय तक न थी उसकी प्रार्थना पर ईश्वर ने बढ़ा दी, ऐसा नही है, अपितु उसके कार्य की आयु ईश्वर के ज्ञान में महाप्रलय तक ही थी, शैतान को ज्ञात न था और न ही किसी और को होता है, क्योंकि ईश्वर के कार्य ही ऐसे होते हैं कि उनका किसी को ज्ञान नही होता, और वह होते रहते हैं, ऐसे ही शैतान की छूट की बात है, चूंकि कुरआन साक्ष्य देता है कि ईश्वर की बात में न तो विरोधाभाव है और न ही बदलती है, अतः शैतान के कार्य की आयु भी उस समय तक है जब तक उसकी आवश्यकता है,

इस घटना में एक बात स्थानापन्न की है अधिकांश कहते हैं कि आदम को ईश्वर ने अपना उत्तराधिकारी सहायक बनाया, परन्तु यह बात उचित नही है? स्थानापन्न का अर्थ है कि किसी पूर्वज की

اشیاء کے نام بتاؤ چونکہ فرشتوں اور دوسری طاقتوں کو ان چیزوں سے کوئی مطلب نہ تھا اس لئے وہ ان کے بارے میں کچھ نہیں جانتے تھے نہ جاننے کی کوشش کی تھی اس لئے مجبوری ظاہر کی تب اللہ نے آدم سے کہا کہ تم ان کے نام بتاؤ چونکہ آدم نے اس زمانے میں جس میں اس کی تربیت ہو رہی تھی اللہ کی دی ہوئی عقل سے ان اشیاء کے نام بھی رکھ لئے تھے اور ان کو اپنے قابو میں بھی کر لیا تھا جیسے گھوڑا، گائے، بھینس، بکری وغیرہ

آدم نے اللہ کے حکم پر فوراً ان کے نام بتا دیے۔ یہ سن کر فرشتے نادم ہوئے اور اپنی کم علمی کا اقرار کیا تب اللہ نے دوسری مخلوقات سے کہا کہ اب تم اس کو برتر تسلیم کرو اور اس کے بیگاری ہو یہ تم سے کام لے گا تم انکار مت کرنا اور بیگار میں لگے رہنا میں نے تم کو اس کا بیگاری بنا دیا ہے بنا پیسے کے کام کرنا جیسے تم سے کام لے فوراً کرنا۔

فرشتوں سے کہا کہ تم اس کی مدد کرنا راہ ہموار کرنا مخالفت نہ کرنا۔ لیکن شیطان نے اللہ کی یہ بات تسلیم نہ کی۔ اور غرور کر بیٹھا اس وجہ سے کہ میں آدم سے افضل ہوں میں اس کو اپنے سے برتر تسلیم کر کے اس کا بیگاری کیوں بنوں میں آگ سے بنا ہوں اور آدم مٹی سے۔ اس لئے وہ اللہ کے حکم قانون سے خارج ہو گیا۔ اور اللہ کے قانون نے اس کو مردود قرار دے دیا۔ تب شیطان نے ایک درخواست کی کہ اے اللہ جب تیرے قانون نے جس میں یہ ہے کہ جو اس قانون کی پابندی کرے گا وہ راہ راست پر رہے گا اور جو اس کی مخالفت کرے گا وہ بھٹک جائے گا چونکہ میں نے تیرے حکم قانون کی خلاف ورزی کی ہے اس لئے اس قانون کے تحت میں گمراہوں میں شامل ہو گیا اور واپس آنے کا بھی ارادہ نہیں اس لئے مجھے اور میرے بعد میرے کام کو قیامت تک کے لئے مہلت دے اس لئے کہ جس مخلوق کو تو نے ایسا افضل بنایا ہے میں بھی دیکھوں کہ وہ اس مقام پر قائم رہے گی یا نہیں۔ اور تو بھی دیکھ لے گا بہت کم قائم رہیں گے۔

اللہ نے فرمایا کہ جا مردود یہاں سے ذلیل ہو کر نکل تجھے کیا معلوم کہ میری بات قانون بدلا نہیں کرتے اس لئے میرے قانون میں پہلے سے ہی یہ ہے کہ تیرا مشن قیامت تک باقی رہے گا جا اب تجھے بھی معلوم ہو گیا کہ تیرے کام کو مہلت قیامت تک ہے جو تجھ سے ہو کر۔ ادھر آدم سے کہا کہ اب تم اس دنیا میں رہو اور میری طرف سے جو ہدایت آئے اس پر عمل کرو اور اس شیطان سے ہوشیار رہنا یہ تمہارا کھلا دشمن ہے۔ اس وجہ سے ہی حق اور باطل میں جنگ قیامت تک جاری رہے گی۔ اس وجہ سے شیطانوں کا قیامت تک رہنا اللہ کے علم میں پہلے سے تھا۔

بہتوں کا خیال ہے کہ شیطان کی عمر قیامت تک نہ تھی اس کی درخواست پر اللہ نے بڑھا دی ایسا نہیں ہے بلکہ اس کے کام کی عمر اللہ کے علم میں قیامت تک ہی تھی شیطان کو معلوم نہ تھا اور نہ ہی کسی اور کو علم ہوتا ہے کیونکہ اللہ کے کام ہی ایسے ہوتے ہیں کہ ان کا کسی کو علم نہیں ہوتا۔ اور وہ وجود میں آتے رہتے ہیں۔ ایسے ہی شیطان کی مہلت کی بات ہے چونکہ قرآن شہادت دیتا ہے کہ اللہ کی بات میں نہ تو تضاد ہے اور نہ ہی بدلتی ہے اس لئے شیطان کے کام کی عمر بھی اس وقت تک ہے جب تک اس کی ضرورت ہے۔

اس واقعہ میں ایک بات خلیفہ کی ہے اکثر کہتے ہیں کہ آدم کو اللہ نے اپنا خلیفہ نائب بنایا لیکن یہ بات معقول نہیں ہے؟ خلیفہ کا مطلب ہے کہ کسی پیش

अनुपस्थिति में जो उसका उत्तराधिकारी होता है उसको खलीफा स्थानापन्न कहते है और अनुपस्थिति दो प्रकार की होती है, एक यह कि पूर्वज की मृत्यु हो गई हो, दूसरी यह कि वह कहीं अपने स्थान से दूसरे स्थान को गया हो और अपने स्थान पर किसी को नियुक्त कर गया हो, जैसे महात्मना मूसा अ0 जब तूर पर्वत पर गए थे तो अपने भाई को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गए थे, या जैसे मुहम्मद स0 जब कभी मदीना से बाहर धर्म युद्ध में जाते थे तब भी अपना स्थानापन्न बना कर जाते थे या मुहम्मदस0 की मृत्यु के बाद अबुबकर रजि0 आप के उत्तराधिकारी हुए

किन्तु ईश्वर को न तो मृत्यु है और न ही वह कहीं से अनुपस्थित है वह हर स्थान पर उपस्थित है, अनादिकाल से है और अनन्त है, इस कारण खलीफतुल्लाह अर्थात् ईश्वर का उत्तराधिकारी कहना अनुचित है, मिथ्या है मानव, मानव का उत्तराधिकारी है और दुनिया में इस इन्सान को ही यह सम्मान प्राप्त है कि पिता के बाद पुत्र या एक राजा के बाद दूसरा राजा उसका उत्तराधिकारी स्थानापन्न होता रहता है, और ईश्वर ने इस प्रकार के उत्तराधिकारी के बारे में ही कहा था न कि अपना स्थानापन्न,

यह भी एक आस्था है कि वस्तुओं के नामों का ज्ञान ईश्वर ने आदम को बता दिया था और फरिश्तों को नहीं बताया था, यह भी अनुचित है, क्योंकि इस व्यवहार से पक्षपात सिद्ध होता है और जो आदमी पक्षपात करता है वह अत्याचारी होता है, चूंकि ईश्वर अन्यायी नहीं है वह न्यायकारी है, अतः ऐसा पक्षपात का कार्य ईश्वर की ओर सम्बन्धित करना मिथ्या है, हां यह बात अवश्य है कि जो ज्ञान ईश्वर ने आदम को दिया था जो इसकी प्रकृति बनाई है अर्थात् उन्नति करने की योग्यता उससे काम लेकर आदम ने यह कार्य किया और करता रहेगा, बस ऐसे ही आदम ने उन वस्तुओं की जानकारी प्राप्त की दूसरी रचना के पास यह योग्यता न थी, न ही उनको आवश्यकता है यह आवश्यकता केवल इन्सान को है क्योंकि यह एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनता रहेगा,

जो कार्य ईश्वर के नियमानुसार किया जाता है उसको ईश्वर अपनी ओर सम्बन्धित कर लेता है, परन्तु अर्थ वहां पर ईश्वर का नियम होता है, जैसे शिकार के जानवरों को ज्ञान सिखाने की बात है या उधार लेने या देने या कोई और बात निश्चित करने के लिए जो लेख पत्र लिखा जाता है उनको ईश्वर ने अपनी ओर सम्बन्धित किया है यद्यपि उनको आदमी लिखता है,

किसी ने न देखा होगा कि किसी विद्यालय में ईश्वर अध्यापक बनकर आया हो और शिक्षा दी हो, अपितु अर्थ यही है कि ईश्वर के नियमानुसार जो कार्य होगा वह ईश्वर ही से सम्बन्धित होता है,

जैसे किसी अध्यापक के पास दो विद्यार्थी हों वह अध्यापक एक प्रश्न का उत्तर एक विद्यार्थी को बता दे और दूसरे को न बताए और परीक्षा में वही प्रश्न ज्ञात कर ले तो विदित है जिसे बताया था वह सफल हो जाएगा और जिसको नहीं बताया वह असफल हो जाएगा तो ऐसा कर्म अन्याय के समानार्थ होगा, परन्तु ईश्वर ऐसा अन्याय नहीं करता इसलिए ईश्वर ने आदम को उन वस्तुओं के नाम नहीं बताए थे,

आदम वाली आयत में एक शब्द शजर आया है इसके विषय में जो लिखा मिलता है वह यह है कि कोई कहता है वह लेहसुन का पेड़ था, कोई कहता है कि वह गेहूं का था, कोई कहता है कि वह छल कपट से सम्बन्ध रखता है कोई कुछ और कहता है, अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह था क्या? यहां तक सब सहमत है कि शजर से तात्पर्य पेड़ है तो क्या गेहूं, लहसुन के पौधों को पेड़ कह सकते है?

روکی عدم موجودگی میں جو اس کا قائم مقام جانشین ہوتا ہے اس کو خلیفہ کہتے ہیں اور عدم موجودگی دو طرح کی ہوتی ہے ایک یہ کہ پیش رو کی موت ہوگئی ہو دوسری یہ کہ وہ کہیں اپنے مقام سے دوسرے مقام کو گیا ہو اور اپنی جگہ کسی کو مقرر کر گیا ہو جیسے حضرت موسیٰ جب طور پر وت پہاڑ پر گئے تھے تو اپنے بھائی کو اپنا خلیفہ بنا کر گئے تھے یا جیسے محمدؐ جب کبھی مدینہ سے باہر غزوات وغیرہ میں تشریف لے جاتے تھے تب بھی اپنا قائم مقام بنا کر جاتے تھے یا محمدؐ کی وفات کے بعد ابوبکرؓ آپ کے خلیفہ جانشین ہوئے۔

لیکن اللہ کو نہ تو موت ہے اور نہ ہی وہ کہیں سے غائب ہے وہ ہر جگہ حاضر ناظر ہے ازل سے ہے اور ابد تک ہے اس لئے خلیفۃ اللہ کہنا غلط ہے. انسان انسان کے بعد خلیفہ جانشین ہوتا ہے اس لئے انسان انسان کا جانشین ہے اور دنیا میں اس انسان کو ہی یہ شرف حاصل ہے کہ باپ کے بعد بیٹا یا ایک بادشاہ کے بعد دوسرا بادشاہ اس کا خلیفہ جانشین ہوتا رہتا ہے اور اللہ نے اس طرح کے خلیفہ کے بارے میں ہی فرمایا تھا نہ کہ اپنا خلیفہ.

یہ بھی ایک عقیدہ ہے کہ اشیاء کے ناموں کا علم اللہ نے آدم کو بتا دیا تھا اور فرشتوں کو نہیں بتایا تھا یہ بھی غلط ہے کیونکہ اس عمل سے جانبداری ثابت ہوتی ہے اور جو آدمی جانبداری کرتا ہے وہ ظالم ہے. چونکہ اللہ ظالم نہیں ہے وہ عادل ہے اس لئے ایسا جانبداری کا کام اللہ کی طرف منسوب کرنا غلط ہے. ہاں یہ بات ضرور ہے کہ جو علم اللہ نے آدم کو دیا یا جو اس کی جبلت بنائی ہے یعنی ترقی کرنے کی صلاحیت اس سے کام لے کر آدم نے یہ کام کیا اور کرتا رہے گا. بس ایسے ہی آدم نے ان اشیاء کی معلومات حاصل کی دوسری مخلوق کے پاس یہ صلاحیت نہ تھی نہ ہی ان کو ضرورت ہے یہ ضرورت صرف انسان کو ہے کیونکہ یہ ایک دوسرے کا جانشین بنتا رہے گا.

جو کام اللہ کے قانون کے مطابق کیا جاتا ہے اس کو اللہ اپنی طرف منسوب کر لیتا ہے مگر مراد وہاں پر اللہ کا قانون ہوتا ہے جیسے شکار کے جانوروں کو علم سکھانے کی بات ہے یا قرض لینے یا دینے یا کوئی اور بات طے کرنے کے لئے جو دستاویز لکھی جاتی ہیں ان کو اللہ نے اپنی طرف منسوب کیا ہے حالانکہ ان کو آدمی لکھتا ہے.

کسی نے نہ دیکھا ہوگا کہ کسی اسکول میں اللہ ماسٹر بن کر آیا ہو اور تعلیم دی ہو بلکہ مراد یہی ہے کہ اللہ کے قانون کے مطابق جو کام ہوگا وہ اللہ ہی سے منسوب ہوتا ہے۔

جیسے کسی ماسٹر کے پاس دو شاگرد ہوں وہ ماسٹر ایک سوال کا حل ایک شاگرد کو بتا دے اور دوسرے کو نہ بتائے اور امتحان میں وہی سوال معلوم کرے تو ظاہر ہے جس کو بتایا تھا وہ کامیاب ہو جائے گا اور جس کو نہیں بتایا وہ فیل ہو جائے گا تو ایسا کام ظلم کے مترادف ہوگا مگر اللہ ایسا ظلم نہیں کرتا اس لئے اللہ نے آدم کو ان چیزوں کے نام نہیں بتائے تھے

آدم والی آیات میں ایک لفظ شجر آیا ہے اس کے بارے میں جو لکھا ملتا ہے وہ یہ کہ کوئی کہتا ہے وہ لہسن کا درخت تھا کوئی کہتا ہے کہ وہ گندم کا تھا، کوئی کہتا ہے کہ وہ مکر وفریب سے تعلق رکھتا ہے کوئی کچھ اور کہتا ہے. اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ وہ تھا کیا. یہاں تک سب متفق ہیں کہ شجر سے مراد درخت ہے تو کیا گیہوں لہسن کے پودوں کو درخت کہہ سکتے ہیں؟ درخت تو تنے دار مختلف شاخوں والا

पेड़ तो तनेदार अनेक शाखों वाला बहुत बड़ा शक्ति शाली होता है, गेहूं या लहसुन इस परिभाषा में नही आते, इसलिए यह गेहूं वाली बात मिथ्या है और जो वस्तु ईश्वर ने आदम पर अवैध की थी वह उनकी संतान पर भी अवैध होनी चाहिए किन्तु गेहूं या लहसुन आज किसी पर अवैध नही है, हां छल कपट वाली बात पर विचार किया जा सकता है, यदि कुरआन में किसी दूसरी बात के लिए कोई मार्ग दर्शन नही मिलेगा तो उस समय इस बात छल कपट वाली पर विचार हो सकता है.

शब्द शजर के कई अर्थ है जैसे पेड़ परिवारिक वंशावली और जिस कपड़े पर खेतो का चित्र बना होता है जो लेखपाल के पास रहता है उस को भी शजरा कहते है और लड़ाई झगड़े को भी शजरा कहते है जैसे

शजरतु फलानन बिर्रमही अमुकसे मैं नेज़े से लड़ा,

तशाजरुल कौम जाति आपस में लड़ गई जिल्द दोम तारीख इफ्कार व अलूम इस्लामी लेखक रागिबुत्तबाख अनुवाद इफ्खार अहमद बलखी,

देखा जाए इस शब्द का अर्थ कुरआन क्या देता है सूरत बनी इसराईल आयत (60) "जब हम ने तुम से कहा कि तुम्हारा प्रतिपालक लोगो की परिक्रमा किए हुए है और जो प्रदर्शनी हम ने तुम्हें दिखाई उस को लोगो के लिए परिक्षा किया, और इसी प्रकार शजर को जिस पर कुरआन में धिक्कार किया है,................. और हम उन को डराते है तो उनको इससे बड़ी अवज्ञा उत्पन्न होती है,

सूरत निसा आयात 65 तुम्हारा प्रतिपालक साक्षी है वह लोग जब तक अपने आपसी झगड़ों में तुमको न्यायकर्ता न बनाए और जो न्याय तुम कर दो उससे अपने मन में तंग न हों, अपितु उसको खुशी से न मान ले तब तक वह आस्तिक न होंगे,

(17:60) में बताया गया है कि वह शजर जिस पर कुरआन में धिक्कार की गई है पण्डितों (आलिमों) ने इसका अर्थ लिखा है थोहर का पेड़ या जूक्कूम, उस पर धिक्कार की गई है, किन्तु आयत में थोहर का नाम नही केवल शजर है और धिक्कार है हर आदमी जानता है कि कुरआन में धिक्कार किस वस्तु या कार्य पर की गई है कुरआन में धिक्कार ईश्वर की अवज्ञा पर की गई है और अवज्ञा वह रचना करती है जिसमें यह अनुभाव शक्ति हो परन्तु पेड़ (शजर) में यह इन्द्रिय नही है, क्या किसी ने देखा है कि किस पेड़ ने झूठ बोला हो या ऐसा कोई काम किया हो जो ईश्वर की अवज्ञा में शामिल है और जिस पर कुरआन में धिक्कार की गई है, इसलिए इस आयत में शब्द शजर से तात्पर्य पेड़ नही है, अपितु वह वस्तु या कार्य है जिस पर धिक्कार की गई है, पेड़ तो स्पंदन हीन (अर्थात् पाप करने की शक्ति ही नही) है ईश्वर ने उसके लिए जो नियम निर्धारितकर दिया है उसके अनुसार उगता है बड़ा होता है और ईश्वर की रचना को लाभ देता है, और अपना जीवन काल जो ईश्वर ने निर्धारित किया है पर समाप्त हो जाता है, पेड़ तो ईश्वर का आज्ञाकारी है, क्या आज्ञाकारी पर धिक्कार होती है? यदि ऐसा है तो अन्याय है परन्तु ईश्वर अन्याय नही करता, अतः पेड़ पर धिक्कार का प्रश्न ही नही, अतः बात पेड़ से हट कर किसी और स्थान पर पहुंच गई, अब देखा जाए कहां...

(4:65) में कहा गया है कि हे मुहम्मद स0 वह लोग जब तक अपने (शजरा बेनाहुम) अपने आपसी झगड़ों में तुम्हें न्यायधीश न बनाऐं

आयत (4:65) में शजरा का अर्थ खुलकर सामने आ गया कि शजरा का अर्थ झगड़ा, विरोध, अवज्ञा भी है और रागिबत्तबाख़ साहब के दो वाक्यों ने भी शजरा का अर्थ झगड़ा बताया है, और इन कार्यों पर ही

بہت بڑا مضبوط ہوتا ہے گیہوں یا لہسن اس تعریف میں نہیں آتے اس لئے گیہوں والی بات غلط ہے۔اور جو چیز اللہ نے آدم پر حرام کی تھی وہ ان کی اولاد پر بھی حرام ہونی چاہیئے۔لیکن گیہوں یا لہسن آج کسی پر حرام نہیں ہیں ہاں مکر وفریب والی بات پر غور کیا جا سکتا ہے۔اگر قرآن میں کسی دوسری بات کے لئے کوئی رہنمائی نہیں ملے گی تو اس وقت اس بات مکر وفریب والی پر غور ہو سکتا ہے۔

لفظ شجر کے کئی مطلب ہیں جیسے درخت،خاندانی شجرہ اور جس کپڑے پر کھیتوں کا نقشہ بنا ہوتا ہے جو پٹواری کے پاس رہتا ہے اس کو بھی شجرہ کہتے ہیں اور لڑائی جھگڑے کو بھی شجرہ کہتے ہیں جیسے۔

[شجرت فلاناً بالرمح]فلاں سے میں نیزے سے لڑا۔

[تشاجر القوم] قوم باہم لڑ گئی۔

[جلد دوم تاریخ افکار وعلوم اسلامی مصنف راغب الطباخ] ترجمہ:افتخار احمد بلخی۔

اب دیکھا جائے اس لفظ کا مطلب قرآن کیا دیتا ہے سورۃ بنی اسرائیل (۱۷) آیت (۶۰): جب ہم نے تم سے کہا کہ تمہارا پروردگار لوگوں کو احاطہ کئے ہوئے ہے۔اور جو نمائش ہم نے تمہیں دکھائی اس کو لوگوں کے لئے آزمائش کیا۔اور اسی طرح شجر کو جس پر قرآن میں لعنت کی گئی۔[والشجرۃ الملعونۃ فی القرآن] اور ہم انہیں ڈارتے ہیں تو ان کو اس سے بڑی سرکشی پیدا ہوتی ہے

سورہ نساء آیت (۶۵): تمہارا پروردگار شاہد ہے کہ وہ لوگ جب تک اپنے تنازعات [شجر بینھم] میں تمہیں منصف نہ بنائیں۔اور جو تم فیصلہ کر دو اس سے اپنے دل میں تنگ نہ ہوں بلکہ اس کو خوشی سے نہ مان لیں تب تک وہ مومن نہ ہوں گے۔

(۱۷:۶۰) میں بتایا گیا ہے کہ وہ شجر جس پر قرآن میں لعنت کی گئی ہے۔عالموں نے اس کا مطلب لکھا ہے تھوہر کا درخت یا زقوم اس پر لعنت کی گئی ہے لیکن آیت میں تھوہر کا نام نہیں صرف شجر ہے اور لعنت ہے ہر آدمی جانتا ہے کہ قرآن میں لعنت کس چیز یا کام پر کی گئی ہے قرآن میں لعنت اللہ کی نافرمانی پر کی گئی ہے اور نافرمانی وہ مخلوق کرتی ہے جس میں یہ حس ہو۔لیکن درخت میں یہ حس نہیں ہے کیا کسی نے دیکھا ہے کہ کس درخت نے جھوٹ بولا ہو۔چوری کی ہو،زنا کیا ہو،قتل کیا ہو یا ایسا کوئی بھی کام کیا ہو جو اللہ کی نافرمانی میں شامل ہے اور جس پر قرآن میں لعنت کی گئی ہے۔اس لئے اس آیت میں لفظ شجر سے مراد درخت نہیں ہے بلکہ وہ چیز یا کام ہے جس پر لعنت کی گئی ہے۔درخت تو بے حس ہے اللہ نے اس کے لئے جو ضابطہ مقرر کر دیا ہے اس کے مطابق اُگتا ہے بڑا ہوتا ہے اور اللہ کی مخلوق کو فائدہ پہنچاتا ہے۔اور اپنی مدت عمر جو اللہ نے مقرر کی ہے پر ختم ہو جاتا ہے درخت تو اللہ کی فرمانبرداری کرتا ہے کیا فرمانبرداری پر لعنت ہوتی ہے؟ اگر ایسا ہے تو ظلم ہے مگر اللہ ظالم نہیں اس لئے درخت پر لعنت کا سوال ہی نہیں۔اس لئے بات درخت سے ہٹ کر کسی اور جگہ پہنچ گئی اب دیکھا جائے کہاں۔

(۴:۶۵) میں کہا گیا ہے کہ اے محمدؐ وہ لوگ جب تک اپنے [شجر بینھم] تنازعات میں تمہیں منصف نہ بنائیں۔

آیت (۴:۶۵) میں ''شجر'' کا معنی کھل کر سامنے آگیا کہ شجر کا ایک مطلب تنازعہ اختلاف نافرمانی بھی ہے اور راغب الطباخ صاحب کے دو جملوں نے بھی شجر کا

ईश्वर की धिक्कार होती है, अतः (17:60) में भी शजर का अर्थ यही सिद्ध हो रहा है,

तो सिद्ध हुआ कि आदम की कथा में जिस शजर से रोका गया था वह कोई पेड़ या पौधा न था अपितु झगड़ा विभेद अवज्ञा आदि था और किसी सीमा तक छल कपट भी कहा जा सकता है और आदम व हव्वा से यह कार्य तब ही प्रकट हुआ जब उनमें कुछ विवेक चेतना आ गई, जिसकी ईश्वर को प्रतीक्षा थी परन्तु विचित्र बात यह है कि कार्य ईश्वर के कार्यक्रम के अनुसार चल रहा है दुनिया की पूरी व्यवस्था और बदनाम शैतान हो रहा है, बस यही वह बातें हैं जिनको आदमी जल्दी से समझ नहीं पाता, और अनुचित कार्य करता चला जाता है जबकि ईश्वर ने हर बात की जानकारी अपनी पुस्तक में दे दी है, इस रहस्य को यदि जान लें तो कोई भी बात आश्चर्य पूर्ण नहीं रहेगी, सब साफ सुथरा विषय है, अतः आदमियों को उस ताले को खोलना पड़ेगा जो उसने अपने अनुचित कार्यों के कारण लगा रखा है, परन्तु सत्य और असत्य का युद्ध तो चलना ही है, जो बुद्धि वाले हैं वह बुराई से बचते हैं उनका परिणाम स्वर्ग है जो अन्यायी है वह बुराई में फंसे रहते हैं और फल नर्क होता है,

आदम और आदम की संतान के लिए दो परिभाषा प्रचलित हैं (1) मसजूदुलमलाइका (2) अशरफुलमख़लूक़ात : क्या यह कहना उचित है?

(1) 'मसजूदुल मलाईका' से अर्थ यह लिया जाता है कि आदम को सजदा किया किन्तु ईश्वर कहता है कि सजदा केवल ईश्वर को है और किसी को नहीं, तो फिर हमने यह कैसे मान लिया कि फरिश्तों ने आदम को सजदा किया, मगर इस सजदे से अर्थ वह सजदा नहीं जिसमें झुका जाता है अपितु इससे अर्थ यह है कि जो आदेश ईश्वर दे रहा है आदम के विषय में वह करो जिसका स्पष्टीकरण आदम की कथा में हो गया है, और यूसुफ अ० की कथा में भी आयेगा और कुरआन की और आयात में भी सजदा का अर्थ प्रकट होगा, अतः मसजूदल मलाईका कहना अनुचित है, {13:15; 84:21; 16:48,49;:50} से सजदा का अर्थ देखो

(2) 'अशराफुल मख़लूक़ात' अर्थात् सब रचनाओं से श्रेष्ठ कुरआन के प्रकाश में यह कहना भी अनुचित है, प्रमाण प्रस्तुत है-

सूरत बनी इसराईल आयत (70) "निःसन्देह हमने आदम की संतान को बड़ा सम्मान दिया और उन्हें खुशकी और तरी, जल थल में सवारियां दी और उन्हें पवित्र वस्तुओं की जीविका दी, और अपनी बहुत सी रचनाओं पर उन्हें सम्मान दिया,

इस आयत में सिद्ध हुआ कि मानव अशराफुल मख़लूक़ात अर्थात् सबसे श्रेष्ठ नहीं है अपितु बहुत से श्रेष्ठ तो सिद्ध हुआ परन्तु इससे भी श्रेष्ठ कोई और रचना है, इसलिए अशराफुल मख़लूक़ात कहना भी अनुचित है,

मलाइका- आदम की कथा के साथ ही मलाइका के विषय में भी लिखा जा रहा है चिन्तन के लिए-

(व इज़ क़ाला रब्बुका लिलमलाइका) बक़रा (30)

प्रश्न उत्पन्न होता है कि मलाइका क्या है? इन्सान में जल, वायु,मिट्टी, अग्नि के मिश्रण (प्रक्रिया) से बुद्धि उत्पन्न हुई, तो फिर विश्व की दूसरी रचनाऐं जो लगभग इन्ही तत्व से बनी हो बुद्धि से क्यों वंचित माना जाए वह बुद्धि जिस पर विधान का प्रतिबन्ध हो, दार्शनिक यूनान ने ब्रह्माण्ड मं दस बुद्धि स्वीकार की थी, उन्ही बुद्धियों का दूसरा नाम उन्होंने मलाइका रखा,

हम दुनिया में विभिन्न चेतनाशील की विभिन्न प्रकार देखते हैं, उदाहरणतः चूहा, बिल्ली, खरगोश, हिरन, भेड़िया, रीछ और शेर इत्यादि इन सबके बाद इन्सान का पद है, क्या जीवन की अन्तिम कड़ी इन्सान है और बस? क्या हम इन्सान के बाद एक अदृश्य-परोक्ष रचना

مطلب جھگڑا بتایا ہے اوران کاموں پر ہی اللہ کی لعنت ہوتی ہے اس لئے (۶۰:۱۷) میں بھی شجر کا معنی یہی ثابت ہورہا ہے۔

تو ثابت ہوا کہ واقعہ آدم میں جس شجر سے روکا گیا تھا وہ کوئی درخت یا پودا نہ تھا بلکہ تنازعہ۔اختلاف جھگڑا وغیرہ تھا اورکسی حد تک مکروفریب بھی کہا جا سکتا ہے اورآدم وحوا سے یہ کام تب ہی ظاہر ہوا جب ان میں کچھ شعور آ گیا جس کا اللہ کو انتظار تھا۔مگر عجیب بات یہ ہے کہ کام اللہ کے پروگرام کے مطابق چل رہا ہے پورا نظام دنیا اور بدنام شیطان ہورہا ہے۔بس یہی وہ باتیں ہیں جن کو آدمی جلدی سے سمجھ نہیں پاتا اور غلط کام کرتا چلا جاتا ہے۔ جب کہ اللہ نے ہر بات کی معلومات اپنی کتاب میں دے دی ہے اس راز کو اگر آدمی سمجھ لیں تو کوئی بھی عجیب بات نہیں رہے گی سب صاف ستھرا معاملا ہے اس لئے آدمیوں کو اس تالے کو کھولنا پڑے گا جو اس نے اپنے غلط کاموں کی وجہ سے لگا رکھا ہے مگر حق وباطل کی جنگ تو چلتی ہی ہے جو عقل والے ہیں وہ برائی سے بچتے ہیں ان کا انجام جنت ہے جو شرارتی ہیں وہ بُرائی میں ملوث رہتے ہیں اورانجام دوزخ ہے۔

آدم اورنسل آدم کے لئے دو اصطلاحات رائج ہیں (۱) مسجودالملائکہ (۲) اشرف المخلوقات کیا یہ کہنا درست ہے؟

(۱) مسجودالملائکہ سے مراد یہ لی جاتی ہے کہ آدم کو سجدہ کیا۔لیکن اللہ کہتا ہے کہ سجدہ صرف اللہ کو ہے اور کسی کو نہیں تو پھر ہم نے یہ کیسے مان لیا کہ فرشتوں نے آدم کو سجدہ کیا مگر اس سجدہ سے مراد وہ سجدہ نہیں جس میں جھکا جاتا ہے بلکہ اس سے مراد یہ ہے کہ جو حکم اللہ دے رہا ہے آدم کے بارے میں وہ کرو جس کی وضاحت واقعہ آدم میں آگئی ہے اور قصہ یوسف میں بھی آئے گی اور قرآن کی اورآیات سے بھی سجدہ کا مفہوم ظاہر ہوگا اس لئے مسجودالملائک کہنا غلط ہے۔(۱۳:۱۵؛ ۸۴:۲۱؛ ۱۶:۴۸،۴۹،۵۰) سے سجدہ کا مطلب دیکھو۔

(۲) اشرف المخلوقات یعنی سب مخلوق سے اشرف قرآن کی روشنی میں یہ کہنا بھی غلط ہے۔ثبوت پیش ہے۔

سورت بنی اسرائیل آیت (۷۰): یقیناً ہم نے اولاد آدم کو بڑی عزت دی اور انہیں خشکی اورتری کی سواریاں دیں اورانہیں پاکیزہ چیزوں کی روزیاں دیں۔اور اپنی بہت سی مخلوق پر انہیں فضیلت دی۔اس آیت سے ثابت ہوا کہ انسان اشرف المخلوقات یعنی سب سے اشرف نہیں ہے بلکہ بہت سے اشرف تو ثابت ہوا مگر اس سے بھی اشرف کوئی اورمخلوق ہیں۔اس لئے اشرف المخلوقات کہنا بھی غلط ہے۔

ملائکہ: قصہ آدم کے ساتھ ہی ملائک کے بارے میں بھی لکھا جا رہا ہے غوروفکر کے لئے۔[واذ قال ربك للملئكة] (۳۰۔بقرہ)

سوال پیدا ہوتا ہے کہ ملائکہ کیا ہیں؟ انسان میں آب وہوا، خاک اور آتش وغیرہ کی ترکیب سے عقل پیدا ہوئی۔تو پھر کائنات کی دوسری مخلوق جو تقریباً انہی عناصر سے بنی ہوں عقل سے کیوں محروم سمجھا جائے وہ عقل جس پر شریعت کی پابندی ہو۔فلاسفہ یونان نے کائنات میں عقول عشرہ تسلیم کئے تھے انہیں عقول کا دوسرا نام انہوں نے ملائکہ رکھا۔

ہم دنیا میں مختلف ذی حیات کی مختلف انواع دیکھتے ہیں۔مثلاً کچھوا ،مچھلی اورچوپائے۔چوپایوں میں مختلف طبقے مثلاً چوہا،بلی،خرگوش،ہرن،بھیڑیا، ریچھ اورشیر وغیرہ ان سب کے بعد انسان کا درجہ ہے کیا زندگی کی آخری منزل

अर्थात मलाइका का अस्तित्व स्वीकार नही कर सकते? पत्थर में काम, वासना, क्रोध, बुद्धि आदि कुछ भी नही, पशु, जन्तु में काम वासना, क्रोध तो है परन्तु बुद्धि नही है, मनुष्य में तीनों विद्यमान है तो क्या हम ऐसी रचना स्वीकार नही कर सकते जिसमें बुद्धि तो विद्यमान हो परन्तु काम वासना, क्रोध न हो,

तो जिस प्रकार संसार में विभिन्न अनुभागों पर समय का राजा सेवक नियुक्त करता है, इसी प्रकार वास्तविक स्वामी ने विभिन्न अनुभागों उदाहरणतः बादल, वायु इत्यादि पर अपने सेवक नियुक्त कर रखे है और उनका कार्य है (अलमुदब्बिरात अमरन अलमुकस्सिमात अमरन) जिन्हें वेद की भाषा में देवता और कुरआन की भाषा में फरिश्ते 'मलाइका' कहा जाता है, ईश्वर ने अपने आदेश से नियुक्त कर रखे है, जो ईश्वर की तनिक भी अवहेलना नही करते जो कार्य सजदा बता दिया है बस उसी पर लगे है और यही उनकी उपासना है सजदा है अर्थात् आज्ञाकारी वास्तविक स्वामी की पवित्रता का गुणगान करते रहते है, ईश्वर के हर आदेश को मानना ही सजदा है जिसको आज्ञाकारी कहते है (84:21)

चूंकि ईश्वर परोक्ष पर ज्ञान रखता है अतः हर वस्तु उसकी दृष्टि में है, इसके विपरीत दुनिया का राजा परोक्ष का ज्ञान नही जानता अतः उसके सेवक विद्रोह कर देते है और कभी अपने राजा को मार भी देते है, इस दृष्टि से दोनों राजाओं में पृथ्वी आकाश का अन्तर है अर्थात् कोई तुलना नही है कहां ईश्वर स्वतंत्र सर्व शक्तिशाली सब वस्तुओं पर प्रभुत्वशाली और कहा इन्सान विवश उसे भविष्य की कुछ सूचना नही,

انسان ہے اور بس؟ کیا ہم انسان کے بعد ایک غیر مرئی مخلوق یعنی ملائکہ کا وجود تسلیم نہیں کر سکتے؟ پتھر میں شہوت غضب عقل وغیرہ کچھ بھی موجود نہیں. حیوان میں شہوت وغضب تو ہیں لیکن عقل ندارد. انسان میں تینوں موجود ہیں. تو کیا ہم ایسی مخلوق تسلیم نہیں کر سکتے جس میں عقل تو موجود ہو لیکن شہوت وغضب نہ ہو.

تو جس طرح انسانی دنیا میں مختلف شعبوں پر بادشاہ وقت خادم مقرر کرتا ہے اسی طرح مالک حقیقی نے مختلف شعبوں مثلاً ابر باد وغیرہ پر اپنے خادم مقرر کر رکھے ہیں اور ان کا کام ہے [المدبرات امرا المقسمات امراً] جنھیں وید کی زبان میں دیوتا اور قرآن کی اصطلاح میں فرشتے کہا جاتا ہے یہ اللہ نے اپنے حکم سے مقرر کر رکھے ہیں. جو اللہ کی ذرہ برابر بھی نافرمانی نہیں کرتے جو کام سجدہ بتا دیا ہے بس اسی پر لگے ہیں اور یہی ان کی صلوٰۃ ہے سجدہ ہے یعنی فرماں برداری مالک حقیقی کی تسبیح کرتے رہتے ہیں. اللہ کے ہر حکم کو ماننا ہی سجدہ ہے جس کو فرمانبرداری کہتے ہیں. (۲۱:۸۴)

چونکہ اللہ غیب پر حاوی ہے اس لئے ہر چیز اس کی نظر میں ہے. اس کے خلاف دنیا کا بادشاہ غیب نہیں جانتا. اس لئے اس کے خادم بغاوت کر دیتے ہیں اور کبھی اپنے بادشاہ کو مار بھی دیتے ہیں. اس لحاظ سے دونوں بادشاہوں میں زمین وآسمان کا فرق ہے یعنی کوئی مقابلہ ہی نہیں ہے کہاں اللہ خود مختار سب چیزوں پر حاوی اور کہاں انسان مجبور بے بس اسے آئندہ کی کچھ خبر نہیں.

हे बनी इसलराईल तनिक स्मृति करो मेरी उस सुख सामग्री को जो मैंने तुमको प्रदान की थी मेरे साथ तुम ने जो प्रतिज्ञा की है उसे तुम पूरा करो, मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा जो मैंने तुम से किया है और मुझ ही से डरो (40) {2:61, 9:111}

اے بنی اسرائیل ذرا یاد کرو میری ان نعمتوں کا جو میں نے تم کو عطا کی تھیں میرے ساتھ تم نے جو عہد[۱] کیا ہے اسے تم پورا کرو میں تمہارے وعدے کو پورا کروں گا جو میں نے تم سے کیا ہے اور مجھ ہی سے ڈرو (۴۰) [۲:۶۱، ۹:۱۱۱]

'1' बनी इसराईल ने क्या प्रतिज्ञा की थी वह इन आयात में देखो {2:62,63,83,84,177, 3:81,178} और यही प्रतिज्ञा महाप्रलय तक आने वाली हर जाति (कौम उम्मत) से है चाहे वह मुसलमान हो, यहूद या ईसाई हो, या और कोई, किन्तु आज मुसलमान भी इस प्रतिज्ञा को भूल गया,

۱ بنی اسرائیل نے کیا عہد کیا تھا وہ ان آیات میں دیکھو [۲:۶۲، ۶۳، ۸۳، ۸۴، ۱۷۷، ۳:۸۱، ۱۷۸] اور یہی عہد قیامت تک آنے والی ہر قوم امت سے ہے. چاہے وہ مسلمان ہو، یہود یا عیسائی ہو، یا اور کوئی بھی ہو. لیکن آج مسلمان بھی اس عہد کو بھول گیا.

और मैंने जो पुस्तक प्रेषित की है उस पर विश्वास लाओ (अर्थात् उसके अनुसार कार्य करो) जिसका हाल यह है कि उस पुस्तक को सत्य बताती है जो तुम्हारे पास है, अतः सबसे पहले तुम ही नकारने वाले न बन जाओ, थोड़े मूल्य पर मेरी आयतों को न बेचो और मेरे क्रोध से बचो (अर्थात् इस दुनिया की थोड़ी आयु के लिए मेरे विधान की अवहेलना न करो, यह दुनिया का जीवन बहुत थोड़ा है और प्रलोक का जीवन बहुत है) (41)

اور میں نے جو کتاب بھیجی ہے اس پر ایمان لاؤ (یعنی اس کے مطابق عمل کرو) جس کا حال یہ ہے کہ اس کتاب کی تصدیق کرنے والی ہے جو تمہارے پاس ہے. لہٰذا سب سے پہلے تم ہی اس کے منکر نہ بن جاؤ تھوڑی قیمت پر میری آیات نہ بیچ ڈالو اور میرے غضب سے بچو (یعنی اس دنیا کی تھوڑی زندگی کے لئے میرے احکام کی خلاف ورزی نہ کرو) یہ دنیا کی زندگی بہت تھوڑی ہے اور آخرت کی زندگی بہت ہے (۴۱)

और सत्य में मिथ्या को न मिलाओ और सत्य मत छिपाओ, यद्यपि तुम जानते हो (42) {2रू159}

اور حق میں باطل کی ملاوٹ مت کرو اور حق مت چھپاؤ حالانکہ تم جانتے ہو (۴۲) [۲:۱۵۹]

और नमाज़ स्थापित करो, दान दो और जो लोग मेरे आगे झुकते है (अर्थात् मेरे नियम को बड़ा स्वीकार करते हैं) उनके साथ तुम झुक जाओ (9:11) अर्थात् मेरे नियम को मानते हुए उस पर जूं का तूं व्यवहार करो भले ही तुमको हानि विदित हो रही हो, किन्तु वास्तव में हानि नही है और नम्र बनो (43) {89:26, 9:119}

اور نماز قائم کرو، زکوٰۃ دو اور جو لوگ میرے آگے جھکتے ہیں (یعنی میرے قانون کی بالاتری تسلیم کرتے ہیں) ان کے ساتھ تم بھی جھک جاؤ (۹:۱۱) یعنی میرے قانون کو مانتے ہوئے اس پر جوں کا توں عمل کرو بھلے ہی بظاہر تم کو نقصان نظر آ رہا ہو مگر حقیقت میں وہ نقصان نہیں ہے اور عاجزی کرو (۴۳) [۸۹:۲۶، ۹:۱۱۹]

तुम दूसरों को तो सत्कर्म का उपदेश करते हो और अपने आपको भूल जाते हो (अर्थात् स्वयं उस उपदेश पर क्रिया नहीं करते क्रिया मन के अनुसार करते हो) यद्यपि तुम पुस्तक का वाचन करते हो क्या तुम बुद्धि से कार्य नहीं करते (44) {2:17}

تم دوسروں کو تو نیکی کا حکم کرتے ہو اور اپنے آپ کو بھول جاتے ہو (یعنی خود اس حکم پر عمل نہیں کرتے عمل نفس کے مطابق کرتے ہو) حالانکہ تم کتاب کی تلاوت کرتے ہو کیا تم عقل سے بالکل ہی کام نہیں لیتے (۴۴) [۲:۱۷۷]

दृढ़ता और धैर्य और नमाज़ के द्वारा ईश्वर से सहायता चाहो और निःसन्देह नमाज़ भारी है परन्तु नम्रता करने वालों (डरने वालों) के लिए नहीं (जो कर्म का उत्तर देने से डरने वाले हैं) (45) {2:153, 70:17से27, 90:11,14}

صبر اور نماز کے ذریعہ اللہ سے مدد چاہو اور بے شک نماز گراں چیز ہے مگر عاجزی کرنے والوں (ڈرنے والوں) کے لئے نہیں جو اعمال کی جواب دہی سے ڈرنے والے ہیں (۴۵) [۲:۱۵۳، ۷۰:۱۷تا۲۷، ۹۰:۱۱،۱۴]

(उन लोगों पर भारी नहीं) जो विश्वास रखते हैं कि निःसन्देह वह अपने रब से मिलने वाले हैं और उसके धर्म की ओर रुजू करने वाले हैं अर्थात् आज्ञाकार (46)

(ان لوگوں پر بھاری نہیں) جو یقین رکھتے ہیں کہ بلاشبہ وہ اپنے رب سے ملنے والے ہیں اور اس کے دین کی طرف ہی رجوع کرنے والے ہیں یعنی فرمانبردار (۴۶)

ऐ बनी इसराईल याद करो मेरी उस सुख सामग्री को जिससे मैंने तुम्हें सम्मानित किया था और यह कि मैंने तुम्हें एक काल के लोगों पर श्रेष्ठता प्रदान की (तुम्हें फ़िरऔन वालों के राज्य का स्वामी (47) {2:124}

اے بنی اسرائیل یاد کرو میری اس نعمت[۱] کو جس سے میں نے تمہیں نوازا تھا اور یہ کہ میں نے تمہیں ایک زمانے کے لوگوں پر فضیلت بخشی (تمہیں فرعون والوں کی سلطنت کا مالک بنایا) (۴۷) [۲:۱۲۴]

'1' यह प्रसाद ईश्वर ने बिना किसी श्रम के नहीं दिया था, अपितु पहले बनी इसराईल ने जीवन व्यतीत करने वाले विधान पर कार्य किया था तब ईश्वर ने उनको यह प्रसाद दिया था और जब तक इस नीति पर स्थापित रहे तब तक उनको मिलती रही और जब अवज्ञा की तो सुख सामग्री भी समाप्त हो गई, यही ईश्वर का नियम विधान है जब भी किसी दल ने आज्ञा पालन किया शासक बन गया और जब अवज्ञा की तो पराधीन बन गया, निर्धनता और हीनता नियुक्त हो गई और भविष्य में भी यही होता रहेगा,

۱ یہ نعمتیں اللہ نے بغیر کسی محنت کے نہیں دی تھیں۔ بلکہ پہلے بنی اسرائیل نے ضابطہ حیات جو اللہ نے نازل کیا پر عمل کیا تھا تب اللہ نے ان کو یہ نعمتیں دی تھیں اور جب تک اس روش پر قائم رہے تب تک ان کو ملتی رہیں۔اور جب انحراف کیا تو نعمتیں بھی ختم ہو گئیں۔ یہی اللہ کا قانون ہے جب بھی کسی قوم نے فرمانبرداری کی حاکم بن گئی اور جب نافرمانی کی تو محکوم بن گئی ذلت اور محتاجی مسلط ہو گئی اور آگے بھی یہی ہوتا رہےگا۔

उस दिन की यातना से बचो जिस दिन कि न कोई मानव किसी व्यक्ति की ओर से क्षतिपूर्ति करेगा न किसी की ओर से प्रस्तुत हो सकने वाली अनुशंसा की मान्यता होगी, न किसी की ओर से कोई प्रतिदान लिया जायेगा, और न ही (ईश्वर की यातना के अन्तर्गत आए हुए) लोगों की कोई सहायता की जाएगी (48)

اس دن کے عذاب سے بچو جس دن کہ نہ کوئی شخص کسی شخص کی طرف سے تاوان بھرے گا نہ کسی کی جانب سے پیش ہو سکنے والی شفاعت کی پذیرائی ہوگی نہ کسی کی طرف سے کوئی فدیہ لیا جائے گا اور نہ ہی (عذاب الٰہی کے تحت آئے ہوئے) لوگوں کی کوئی مدد کی جائے گی (۴۸)

नोट- अनुशंसा (शिफ़ाअत) से सम्बन्धित कुछ आयतें इस स्थान पर ही लिखी जाती हैं जिससे अनुमान हो सके कि क्या वास्तव में कोई अनुशंसा कर सकता है? या अनुशंसा के बारे में ईश्वर की किसी को आज्ञा है,

نوٹ:۔شفاعت سے متعلق کچھ آیتیں اس جگہ ہی لکھی جاتی ہیں جس سے اندازہ ہو سکے کہ کیا حقیقت میں کوئی شفاعت کر سکتا ہے؟ یا شفاعت کے بارے میں اللہ کی کسی کو اجازت ہے

(2:123) और डरो उस दिन से जब कोई किसी के तनिक काम न आएगा, न किसी से प्रतिदान स्वीकार किया जाए, न कोई अनुशंसा ही आदमी को लाभ देगी, और न अपराधियों को कहीं से कोई सहायता मिलेगी,

(۲:۱۲۳) اور ڈرو اس دن سے جب کوئی کسی کے ذرا کام نہ آئے گا۔ نہ کسی سے فدیہ قبول کیا جائے نہ کوئی شفاعت ہی آدمی کو فائدہ دے گی اور نہ مجرموں کو کہیں سے کوئی مدد ملے گی۔

(2:254) ऐ लोगो! जो आस्था रखते हो जो कुछ सम्पत्ति हमने तुमको दी है उसमें से व्यय करो पूर्व इसके कि वह दिन आए जिसमें न क्रय विक्रय होगा न मैत्री काम आएगी और न अनुशंसा (शिफ़ारिश) चलेगी और अत्याचारी वास्तव में वही है जो नास्तिकता की चाल स्वीकार करते हैं (2:255) वह ईश्वर (जिसके लिए नास्तिक कहता है कि) ईश्वर नहीं है तो सुनो निःसन्देह वह है वह जीवित सदैव रहने वाला अस्तित्व है जो संसार को संभाले हुए है, वह न सोता है और न उसे ऊंघ आती है (न वह बेसुध होता है) पृथ्वी व आकाश में जो कुछ है उसी का है,

(۲:۲۵۴) اے لوگو! جو ایمان لائے ہو جو کچھ مال متاع ہم نے تم کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرو قبل اس کے کہ وہ دن آئے جس میں نہ خرید وفروخت ہوگی نہ دوستی کام آئے گی اور نہ شفاعت (شفارش) چلے گی۔ اور ظالم اصل میں وہی ہیں جو کفر کی روش اختیار کرتے ہیں۔ (۲:۲۵۵) وہ اللہ (جس کے لئے کافر کہتا ہے) اللہ نہیں ہے تو سنو یقیناً وہ ہے وہ زندہ جاوید ہستی ہے، جو تمام کائنات کو سنبھالے ہوئے ہے۔ وہ نہ سوتا ہے اور نہ اسے اونگھ لگتی ہے، (نہ بے خبر ہوتا ہے) زمین۔

कौन है जो उसके सामने उसके विधान (आज्ञा) के बिना अनुशंसा कर सके? जो कुछ बन्दों ने अपने हाथों अर्थात् शक्ति से खुला स्पष्ट किया है उसे भी वह जानता है जो लिखा जा रहा, लिखने वालों के द्वारा और जो कुछ गुप्त है अर्थात् मनों के विचारों को भी जानता है वह भी नोट हो रहे हैं, ईश्वर का नियम नोट कर रहा है, और उसकी जानकारी में से कोई वस्तु उनकी पकड़ ज्ञान में नही आ सकती इल्ला यह कि किसी वस्तु का ज्ञान वह स्वयं ही उनको दे देना चाहे, उसका राज्य आकाश और पृथ्वी पर छाया हुआ है, और उनकी देखभाल उसके लिए कोई थका देने वाला काम नही है, बस वही एक महान उच्चतर अस्तित्व है.

(2:119) हमने तुम को सत्य ज्ञान के साथ मंगल सूचना देने वाला बनाकर भेजा है, अब जो लोग नर्क से नाता जोड़ चुके हैं उनकी ओर से तुम उत्तरदायी न हो.

(3:91) विश्वास रखो जिन लोगों ने कुफ्र ग्रहण किया और नास्तिका ही की दशा में मरे उनमें से यदि कोई अपने आपको दण्ड से बचाने के लिए पूरे संसार का धन बदले में दे तो उसे स्वीकार न किया जाएगा, ऐसे लोगों के लिए दुख देने वाला कष्ट तैयार है और वह अपना कोई सहायता करने वाला न पाएंगे.

नोट- आयत में शब्द नास्तिक आया है, आम बोलचाल में नास्तिक उस व्यक्ति को कहते हैं जो ईश्वर को न माने, किन्तु शायद दुनिया में कोई ऐसा आदमी मिले जो ईश्वर के अस्तित्व से नकार करता हो, किसी न किसी नाम से ईश्वर को मानता हुआ मिलेगा, अतः नास्तिक की यह परिभाषा ठीक नही है, कुफ्र का एक अर्थ और भी है अर्थात् सत्य को छुपाना ईश्वर की पुस्तक के अनुसार निर्णय न करना {5:44,45,47}

नास्तिक का एक अर्थ और भी है अर्थात सच को छिपाना, पुस्तक ईश्वर के अनुसार इन्साफ न करना {5:44,45,47}

किन्तु आजकी मुस्लिम जाति केवल ईश्वर को न मानने वाले को ही नास्तिक मानकर अपने को आस्तिक मान रहे हैं, यद्यपि ईश्वर का नकार कोई नही कर रहा, और आस्था है कि हमको तो हर दशा में स्वर्ग मिलेगा, इस पर विवेचना तो बाद में होगी, पहले यह देखा जाए कि कुरआन नास्तिक किस को कहता है.

(4:123) न तुम्हारी आशाओं पर आधारित है और न पुस्तक वालों की आशाओं पर जो कोई बुरा कार्य करेगा उसका दण्ड भोगेगा और ईश्वर के अतिरिक्त अपना कोई सहायक, समर्थक न पाएगा.

(5:44) जो लोग ईश्वर के अवतरित विधान नियम के अनुसार न्याय व कर्म न करे वही नास्तिक हैं.

(5:45) और जो लोग ईश्वर के अवतरित किए नियम के अनुसार न्याय व कर्म न करे वही दुराचारी हैं.

किस अच्छे ढंग से ईश्वर ने उन लोगों के विषय में जो ईश्वर द्वारा अवतरित विधान के अनुसार न्याय और कर्म आदेश नही करते हैं उनके लिए तीन आदेश प्रमाणित किए हैं वह नास्तिक है (1) वह अत्याचारी है (2) वह दुराचारी है (3) तो अब विचारणीय बात यह है कि ईश्वर ने एक अपराध में तीन शब्द प्रयोग किए हैं और ईश्वर की बात सत्य होती है, अतः काफिर, अत्याचारी, दुराचारी तीनों एक हुए (3:91) में जिन नास्तिकों का उल्लेख है उसमें यह तीनों भी आते हैं, इस आयत के बाद कोई स्थान नही कि हम बहाना खोजें, वैसे अत्याचारी हठ धर्मी करते रहेंगे, अतः कुरआन के अनुसार कर्म और निर्णय न करने वाले नास्तिक हैं, अनेकेश्वर वादी हैं, दुराचारी अत्याचारी

آسمانوں میں جو کچھ ہے اس کا ہے کون ہے جو اس کی جناب میں اس کے قانون (اجازت) کے بغیر شفارش (شفاعت) کر سکے؟ جو کچھ بندوں نے اپنے ہاتھوں یعنی طاقت سے کھلے ظاہر کیا ہے اسے بھی وہ جانتا ہے جو لکھا جا رہا ہے لکھنے والوں کے ذریعہ۔اور جو کچھ چھپا ہے یعنی دلوں کے خیالات کو بھی جانتا ہے۔وہ بھی نوٹ ہو رہے ہیں۔اللہ کا قانون نوٹ کر رہا ہے۔اور اس کی معلومات میں سے کوئی چیز اُن کی گرفت علم میں نہیں آسکتی الّا یہ کہ کسی چیز کا علم وہ خود ہی ان کو دینا چاہے۔اس کی حکومت آسمانوں اور زمین پر چھائی ہوئی ہے۔اور ان کی نگہبانی اس کے لئے کوئی تھکا دینے والا کام نہیں ہے۔بس وہی ایک بزرگ و برتر ذات ہے

(۱۱۹:۲) ہم نے تم کو علم حق کے ساتھ خوشخبری دینے والا اور ڈرسنانے والا بنا کر بھیجا ہے اب جو لوگ جہنم سے رشتہ جوڑ چکے ہیں ان کی طرف سے تم جواب دہ نہیں ہو

(۹۱:۳) یقین رکھو جن لوگوں نے کفر اختیار کیا اور کفر ہی کی حالت میں جان دی ان میں سے کوئی اگر اپنے آپ کو سزا سے بچانے کے لئے روئے زمین کا پورا خزانہ فدیہ میں دے تو اسے قبول نہ کیا جائے گا۔ایسے لوگوں کے لئے دردناک سزا تیار ہے اور وہ اپنا کوئی مددگار نہ پائیں گے

نوٹ:۔آیت میں لفظ کفر آیا ہے۔عام بول چال میں کافر اس آدمی کو کہتے ہیں جو اللہ کو نہ مانے۔لیکن شائد دنیا میں کوئی ایسا آدمی ملے جو اللہ کے وجود سے انکار کرتا ہو کسی نہ کسی نام سے اللہ کو مانتا ہوا ملے گا اس لئے کفر کی یہ تعریف ٹھیک نہیں ہے

کفر کا ایک مطلب اور بھی ہے یعنی حق کو چھپانا کتاب اللہ کے مطابق فیصلے نہ کرنا [۴۴:۵، ۴۵، ۴۷]

لیکن آج کی مسلم قوم صرف اللہ کو نہ ماننے والے کو ہی کافر مان کر اپنے کو مومن مان رہے ہیں۔حالانکہ اللہ کا انکار کوئی نہیں کر رہا اور عقیدہ ہے کہ ہم کو تو ہر حالت میں جنت ملے گی۔اس پر بحث تو بعد میں ہوگی۔ پہلے یہ دیکھا جائے کہ قرآن کافر کس کو کہتا ہے

(۱۲۳:۴) نہ تمہاری امیدوں پر مدار ہے اور نہ اہل کتاب کی امیدوں پر جو کوئی بُرا کام کرے گا اس کی سزا پائے گا۔اور اللہ کے سوا اپنا کوئی مددگار حمایتی نہ پائے گا

(۴۴:۵) جو لوگ اللہ کے نازل کردہ قانون کے مطابق فیصلہ و عمل نہ کریں وہی کافر ہیں (۴۵:۵) اور جو لوگ اللہ کے نازل کردہ قانون کے مطابق فیصلہ نہ کریں وہی ظالم ہیں۔

(۴۷:۵) اور جو لوگ اللہ کے نازل کردہ قانون کے مطابق فیصلہ عمل نہ کریں وہی فاسق ہیں۔

کس اچھے انداز میں اللہ نے ان لوگوں کے حق میں جو اللہ کے نازل کردہ قانون کے مطابق فیصلہ (اور عمل حکم) نہیں کرتے ہیں ان کے لئے تین حکم ثابت کئے ہیں (۱) وہ کافر ہیں (۲) وہ ظالم ہیں (۳) وہ فاسق ہیں۔تو اب قابل غور بات یہ ہے کہ اللہ نے ایک جرم میں تین لفظ استعمال کئے ہیں اور اللہ کی بات حق ہوتی ہے۔اس لئے کافر ظالم اور فاسق تینوں ایک ہوئے (۹۱:۳) میں جن کافروں کا ذکر ہے اس میں یہ تینوں بھی آتے ہیں۔اس آیت کے بعد تاویل کی گنجائش نظر نہیں آتی۔ویسے ظالم لوگ ہٹ دھرمی کرتے رہیں گے۔اس لئے قرآن کے مطابق عمل اور فیصلے نہ کرنے والے کافر ہیں۔مشرک ہیں اور فاسق ظالم ہیں۔تو

है तो क्या आज वह जाति जो अपने को मुसलमान आस्तिक कहती है उनका व्यवहार और न्याय कुरआन के अनुसार है? विचार करो कुरआन एकता को कहता है और यह जाति दलों को उचित बता रही है, कुरआन नमाज़ बीच की ध्वनि से पढ़ने को कहता है और यह जाति चुप चाप पढ़ रही है?

(3:128,129) (ऐ नबी) हमारे न्याय के अधिकार में तुम्हारा कोई भाग नही ईश्वर को अधिकार है चाहे उन्हें क्षमा करे चाहे दण्ड दे क्योंकि वह अत्याचारी है, पृथ्वी व आकाश में जो कुछ है उसका स्वामी ईश्वर है, जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे वह क्षमा करने वाला और रहीम है (और वह न्यायकारी है),

(4:105) हे नबी स0 हमने यह पुस्तक सत्य के साथ तुम्हारी और प्रेषित की है ताकि जो सत्य मार्ग तुम्हें दर्शाया है उसके अनुसार लोगों के मध्य न्याय करो, तुम विश्वासघाती लोगों की ओर से झगड़ने वाले न बनो,

(4:107से110) जो लोग अपनी आत्मा से विश्वासघात करते है तुम उनकी सहायता न करो, ईश्वर को ऐसा व्यक्ति पसन्द नही है जो कपटी हो और पापी हो, वह लोग इन्सानों से अपनी करतूत छुपा सकते है परन्तु ईश्वर से नही छुपा सकते वह तो (अर्थात् मैं) उस समय भी उनके साथ होता हूं जब वह रातों को छुपकर उसकी इच्छा के विरुद्ध मंत्रणा करते है उनके सारे आचार व्यवहार पर ईश्वर व्यापक है, हां तुम लोगों ने दोषियों की ओर से संसार के जीवन में तो झगड़ा कर लिया परन्तु महा प्रलय के दिन उनके लिए कौन झगड़ा करेगा, अन्ततः वहां कौन उनका प्रतिनिधि होगा? यदि कोई व्यक्ति दुष्कर्म करे या अपने जी पर अत्याचार कर जाए और इसके बाद ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना करे तो ईश्वर को क्षमा करने वाला और दयालु पाएगा,

(6:51) और ऐ नबी स0 तुम उस ज्ञान (वही) के द्वारा उन लोगों को समझाओ जो उसका भय रखते है कि अपने रब के सामने कभी इस दशा में प्रस्तुत किए जाएंगे कि उसके अतिरिक्त वहां कोई न होगा जो उनका समर्थक व सहायक हो या उनकी अनुशंसा (शिफाअत) करे कदाचित वह डर जाएं

(6:70) छोड़ो उन लोगों को जिन्होंने अपने धर्म को खेल और दर्शन बना रखा है, और जिन्हें संसार का जीवन छल में ग्रस्त किए हुए है हां यह कुरआन सुनाकर उपदेश करते रहो कि कहीं कोई व्यक्ति अपने किए करतूतों के बवाल में बन्दी न हो जाए और बन्दी भी इस स्थिति में हो कि ईश्वर से बचाने वाला कोई सहायक समर्थक और कोई अनुशंसा करने वाला उस के लिए न हो, और यदि वह हर सम्भव वस्तु बदले में देकर छूटना चाहे तो वह भी उससे स्वीकार न की जाएगी, क्योंकि ऐसे लोग तो स्वयं अपनी कमाई के फल में पकड़े जाएंगे, उनको अपने नकार के बदले में खोलता हुआ पानी पीने को और दुख देने वाला दण्डभोगने को मिलेगा,

(6:94) लो अब तुम वैसे ही अकेले हमारे सामने उपस्थित हो गए जैसा हमने तुमको पहली बार अकेला उत्पन्न किया था, जो कुछ हमने तुम्हें दुनिया में दिया था वह सब तुम पीछे छोड़ आए हो, और अब हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन अनुशंसा करने वालों को भी नही देखते जिनके बारे में तुम समझते थे कि तुम्हारे काम बनाने में उनका भी कुछ भाग है, तुम्हारे आपस के सब सम्बन्ध टूट गए और वह सब तुमसे गुम हो गए जिनका तुम भ्रम रखते थे,

(32:4) कहो वह ईश्वर ही है जिसने आकाश और पृथ्वी को और उन सारी वस्तुओं को जो इनके बीच है छः चरण में उत्पन्न किया, और इसके बाद सिंहासन पर सत्तासीन हुआ, उसके अतिरिक्त न तुम्हारा कोई

کیا آج وہ قوم جو اپنے کو مسلمان مومن کہتی ہے ان کا عمل اور فیصلہ قرآن کے مطابق ہے؟ غور کرو قرآن متحد رہنے کو کہتا ہے اور یہ قوم فرقوں کو درست بتا رہی ہے قرآن نماز درمیانی آواز سے پڑھنے کو کہتا ہے اور یہ قوم خاموش پڑھ رہی ہے؟

(۳:۱۲۸،۱۲۹) (اے نبیؐ) ہمارے فیصلے کے اختیارات میں تمہارا کوئی حصہ نہیں. اللہ کو اختیار ہے چاہے انہیں معاف کرے چاہے سزا دے. کیونکہ وہ ظالم ہیں. زمین و آسمان میں جو کچھ ہے اس کا مالک اللہ ہے جس کو چاہے بخش دے اور جس کو چاہے عذاب دے وہ معاف کرنے والا اور رحیم ہے (اور وہ عادل بھی ہے)

(۴:۱۰۵) اے نبیؐ ہم نے یہ کتاب حق کے ساتھ تمہاری طرف نازل کی ہے تا کہ جو راہ راست اللہ نے تمہیں دکھائی ہے. اس کے مطابق لوگوں کے درمیان فیصلہ کرو تم بددیانت لوگوں کی طرف سے جھگڑنے والے نہ بنو.

(۴:۱۰۷ تا ۱۱۰) جو لوگ اپنے نفس سے خیانت کرتے ہیں تم ان کی حمایت نہ کرو. اللہ کو ایسا شخص پسند نہیں ہے جو خیانت کار ہو. اور گنہگار ہو. وہ لوگ انسانوں سے اپنی حرکات چھپا سکتے ہیں. مگر اللہ سے نہیں چھپا سکتے. وہ تو اس وقت بھی ان کے ساتھ ہوتا ہے جب وہ راتوں کو چھپ کر اس کی مرضی کے خلاف مشورے کرتے ہیں ان کے سارے اعمال پر اللہ محیط ہے. ہاں تم لوگوں نے مجرموں کی طرف سے دنیا کی زندگی میں تو جھگڑا کر لیا. مگر قیامت کے روز ان کے لئے کون جھگڑا کرے گا. آخر وہاں کون ان کا وکیل ہوگا؟ اگر کوئی شخص برا فعل کرے یا اپنے نفس پر ظلم کر جائے اور اس کے بعد اللہ سے درگزر کی درخواست کرے تو اللہ کو معاف کرنے والا اور رحیم پائے گا.

(۶:۵۱) اور اے نبیؐ تم اس علم (وحی) کے ذریعہ ان لوگوں کو نصیحت کرو جو اس کا خوف رکھتے ہیں کہ اپنے رب کے سامنے کبھی اس حال میں پیش کئے جائیں گے کہ اس کے سوا وہاں کوئی نہ ہوگا جو انکا حامی و مددگار ہو، یا ان کی شفارش (شفاعت) کرے، شاید وہ ڈر جائیں.

(۶:۷۰) چھوڑو ان لوگوں کو جنہوں نے اپنے دین کو کھیل اور تماشا بنا رکھا ہے اور جنہیں دنیا کی زندگی فریب میں مبتلا کئے ہوئے ہے ہاں مگر یہ قرآن سنا کر نصیحت اور تنبیہ کرتے رہو کہ کہیں کوئی شخص اپنے کئے کرتوتوں کے وبال میں گرفتار نہ ہو جائے اور گرفتار بھی اس حال میں ہو کہ اللہ سے بچانے والا کوئی حامی و مددگار اور کوئی شفاعت کرنے والا اس کے لئے نہ ہو، اور اگر وہ ہر ممکن چیز فدیہ میں دے کر چھوٹنا چاہے تو وہ بھی اس سے قبول نہ کی جائے، کیونکہ ایسے لوگ تو خود اپنی کمائی کے نتیجہ میں پکڑے جائیں گے ان کو اپنے انکار حق کے معاوضہ میں کھولتا ہوا پانی پینے اور دردناک عذاب بھگتنے کو ملے گا.

(۶:۹۴) لو اب تم ویسے ہی تن تنہا ہمارے سامنے حاضر ہو گئے، جیسا ہم نے تم کو پہلی مرتبہ اکیلا پیدا کیا تھا، جو کچھ ہم نے تمہیں دنیا میں دیا تھا وہ سب تم پیچھے چھوڑ آئے ہو، اور اب ہم تمہارے ساتھ تمہارے ان شفارشیوں کو بھی نہیں دیکھتے جن کے متعلق تم سمجھتے تھے کہ تمہارے کام بنانے میں ان کا بھی کچھ حصہ ہے، تمہارے آپس کے سب رابطے ٹوٹ گئے اور وہ سب تم سے گم ہو گئے جن کا تم زعم رکھتے تھے.

(۳۲:۴) کہو وہ اللہ ہی ہے جس نے آسمان اور زمین کو اور ان ساری چیزوں کو جو ان کے درمیان ہیں چھ یوم (دور) میں پیدا کیا، اور اسکے بعد عرش پر جلوہ

समर्थक व सहायक है और न कोई उसके आगे अनुशंसा (शिफ़ाअत) करने वाला फिर क्या तुम चेतना में न आओगे?

(35:18) कोई भार उठाने वाला किसी दूसरे का भार न उठाएगा और यदि कोई दबा हुआ जो अपना भार उठाने के लिए पुकारेगा तो उसके भार का एक क्षुद्रतम भाग भी बटाने के लिए कोई न आएगा चाहे वह निकटतम सम्बन्धी ही क्यों न हो, तुम उन्ही लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे ईश्वर से डरते हों और नमाज़ स्थापित करते हैं जो व्यक्ति भी पवित्रता स्वीकार करता है अपनी भलाई के लिए करता है, और लौटना सबको ईश्वर ही की ओर है

(36:43,44) क्या उस रब को छोड़कर उन लोगों ने दूसरों को अनुशंसक बना रखा है? उनसे कहो क्या वह अनुशंसा करेंगे चाहे उनके अधिकार में कुछ न हो और वह समझते भी न हों? कहो अनुशंसा सारी की सारी ईश्वर के अधिकार में है आकाशों और पृथ्वी के राज्य का वही स्वामी है, फिर उसकी ओर तुम पलटाए जाने वाले हो

(40:18,19) ऐ नबी डरा दो उन लोगों को उस दिन से जो निकट आ लगा है, जब कलेजे मुंह को आ रहे होंगे, और लोग चुपचाप दुख के घूंट पिए खड़े होंगे, अत्याचारियों का न कोई मित्र होगा और न कोई अनुशंसक जिसकी बात मानी जाए ईश्वर आंखों की चोरी तक से अवगत है और वह भेद तक जानता है जो वक्षों ने छुपा रखे हैं,

इन आयात के अतिरिक्त क़ुरआन में और बहुत आयात हैं उनके सन्दर्भ लिखे जा रहे हैं कृपया क़ुरआन में देखें {6:113, 9:80,84,96, 10:18, 11:37,46,75,76, 19:82, 20:108,111, 20:112, 25:19,30, 26:100, 33:65, 39:7,30:,42,43, 60:30, 74:11, 76:10, 40:85, 2:175,176, 78:38}

इनके अतिरिक्त अब वह आयत लिखी जा रही हैं जिनमें अनुमति का उल्लेख है, क्या वास्तव में ईश्वर की अनुमति किसी व्यक्ति के लिए अनुशंसा करने की है या नही, विख्यात आस्था है कि अनुशंसा करेंगे (2:255) तो पहले ही लिख चुका हूं दूसरी आयते लिखी जा रही हैं कुछ को तो अधिकार मिल भी चुका है जैसे हाफ़िज़ या छोटा बच्चा जो मर जाता है

(10:3) सत्य यह है कि तुम्हारा रब वही रब है, जिसने आकाशों और पृथ्वी को छ चरण (अय्याम) में उत्पन्न किया, फिर राज सिंहासन पर सत्तासीन होकर ब्रह्माण्ड की व्यवस्था चला रहा है कोई अनुशंसा करने वाला नही किन्तु (निःसन्देह) जो पहले उसका आदेश हो, यही ईश्वर तुम्हारा रब है अतः तुम उसी की उपासना करो फिर क्या तुम चेतना में न आवेंगे

(19:87) उस समय लोग कोई अनुशंसा लाने पर क्षमता न रखते होंगे, सिवाए इसके जिसने महाकृपालु से अनुमति पत्र प्राप्त कर लिया हो,

(20:109,110) उस दिन अनुशंसा प्रभावकारी न होगी सिवाए इसके कि किसी को महाकृपालु इसकी आज्ञादे और उसकी बात सुनना पसन्द करे, वह लोगों का विदित और छुपा अगला पिछला सब जानता है और दूसरों को इसका ज्ञान नही है,

(21:28) जो कुछ उनके हाथों ने विदित किया है उसे भी जानता है और जो कुछ छुपा कर करते हैं उससे भी वह अवगत है, लोगों ने जिनको अनुशंसक बना रखा है वह किसी की अनुशंसा नही करते, किन्तु यह कि जिसके लिए अनुशंसा सुनने पर सहमत हो,

(43:86) उसको छोड़कर वह लोग जिन्हें पुकारते हैं वह किसी की अनुशंसा का अधिकार नही रखते किन्तु यह कि कोई ज्ञान के आधार

فرمایا ہوا،اس کے سوا نہ تمہارا کوئی حامی و مددگار ہے اور نہ کوئی اس کے آگے شفارش (شفاعت) کرنے والا پھر کیا تم ہوش میں نہ آؤ گے؟

(۳۵:۱۸) کوئی بوجھ اٹھانے والا کسی دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گا.اور اگر کوئی دبا ہوا نفس اپنا بوجھ اٹھانے کے لئے پکارے گا تو اس کے بوجھ کا ایک ادنیٰ حصہ بھی بٹانے کے لئے کوئی نہ آئے گا.چاہے وہ قریب ترین رشتہ دار ہی کیوں نہ ہو تم انہی لوگوں کو متنبہ کر سکتے ہو.جو بے دیکھے رب سے ڈرتے ہوں اور نماز قائم کرتے ہیں.جو شخص بھی پاکیزگی اختیار کرتا ہے اپنی بھلائی کے لئے کرتا ہے اور پلٹنا سب کو اللہ ہی کی طرف ہے.

(۳۶:۴۳،۴۴) کیا اس رب کو چھوڑ کر ان لوگوں نے دوسروں کو شفیع بنا رکھا ہے؟ ان سے کہو کیا وہ شفاعت کریں گے خواہ ان کے اختیار میں کچھ نہ ہو اور وہ سمجھتے بھی نہ ہوں؟ کہو شفاعت ساری کی ساری اللہ کے اختیار میں ہے آسمانوں اور زمین کی بادشاہی کا وہی مالک ہے.پھر اس کی طرف تم پلٹائے جانے والے ہو.

(۴۰:۱۸،۱۹) اے نبی ڈرا دو ان لوگوں کو اس دن سے جو قریب آ لگا ہے. جب کلیجے منہ کو آ رہے ہوں گے اور لوگ چپ چاپ غم کا گھونٹ پئے کھڑے ہوں گے. ظالموں کا نہ کوئی دوست ہوگا اور نہ کوئی شفیع جس کی بات مانی جائے اللہ نگاہوں کی چوری تک سے واقف ہے اور وہ راز تک جانتا ہے جو سینوں نے چھپا رکھے ہیں.

ان آیات کے علاوہ قرآن میں اور بہت آیات ہیں ان کے حوالے لکھے جا رہے ہیں قرآن میں دیکھنے کی مہربانی کریں.[۶:۱۱۳، ۹:۸۰،۸۴،۹۶، ۱۰:۱۸، ۱۱:۳۷،۴۶،۷۵،۷۶، ۱۹:۸۲، ۲۰:۱۰۸،۱۱۱،۱۱۲، ۲۵:۱۹،۳۰، ۲۶:۱۰۰، ۳۳:۶۵، ۳۹:۷،۳۰،۴۲،۴۳، ۶۰:۳۰، ۷۴:۱۱، ۷۶:۱۰، ۴۰:۸۵، ۲:۱۷۵، ۱۷۶، ۷۸:۳۸]

ان کے علاوہ اب وہ آیتیں لکھی جا رہی ہیں جن میں اجازت کا ذکر ہے کیا حقیقت میں اللہ کی اجازت کسی شخص کے لئے شفاعت کرنے کی ہے یا نہیں.مشہور عقیدہ ہے کہ فلاں فلاں ہستیاں اللہ کی اجازت سے شفاعت کریں گی اور کچھ کو تو اختیار مل بھی چکا ہے جیسے حافظ یا چھوٹا بچا جو مر جاتا ہے.(۲:۲۵۵) تو پہلے ہی لکھ چکا ہوں دوسری آیتیں لکھی جا رہی ہیں.

(۱۰:۳) حقیقت یہ ہے کہ تمہارا رب وہی رب ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ دور (ایام) میں پیدا کیا، پھر تخت سلطنت پر جلوہ گر ہو کر کائنات کا انتظام چلا رہا ہے کوئی شفاعت کرنے والا نہیں.مگر (یقینا) جو پہلے اس کا حکم ہو، یہی اللہ تمہارا رب ہے لہٰذا تم اس کی عبادت کرو.پھر کیا تم ہوش میں نہ آؤ گے.

(۱۹:۸۷) اس وقت لوگ کوئی شفارش لانے پر قادر نہ ہوں گے، بجز اس کے جس نے رحمان سے پروانہ حاصل کر لیا ہو.

(۲۰:۱۰۹،۱۱۰) اس روز شفاعت کارگر نہ ہوگی الا یہ کہ کسی کو رحمان اس کی اجازت دے اور اس کی بات سننا پسند کرے.وہ لوگوں کا ظاہر اور چھپا اگلا پچھلا سب حال جانتا ہے اور دوسروں کو اس کا علم نہیں ہے.

(۲۱:۲۸) جو کچھ ان کے ہاتھوں نے ظاہر کیا ہے اسے بھی جانتا ہے اور جو کچھ چھپا کر کرتے ہیں اس سے بھی وہ باخبر ہے.لوگوں نے جن کو شفارشی بنا رکھا ہے وہ کسی کی شفارش نہیں کر سکتے.الا یہ کہ جس کے حق میں شفارش سننے پر راضی ہو.

(۴۳:۸۶) اس کو چھوڑ کر وہ لوگ جنہیں پکارتے ہیں وہ کسی کی شفاعت کا اختیار

पर सत्य का प्रमाण दे (और यह तो विदित है ईश्वर से किसी का कोई कार्य छुपा नही है आंखों की चोरी वक्षों के रहस्य सब उसको ज्ञात है फिर अनुशंसा की क्या आवश्यकता)

(53:26) आकाश में कितने ही देवता उपस्थित हैं उनकी अनुशंसा कुछ भी काम नही आ सकती, जब तक कि ईश्वर किसी को इसकी आज्ञा न दे, जिसक लिए वह कोई प्रार्थना सुनना चाहे, और उसको पसन्द करें (74:47,45,49) यहां तक कि हमें उस सत्यवस्तु से सम्पर्क हो गया, अर्थात मृत्यु उनकी दुनिया में जो विश्वास था कि हमारी अनुशंसा होगी तो सुन लें कि उन्हें अनुशंसा करने वालों की अनुशंसा लाभ न देगी, दुनिया के जीवन में उन्हें क्या हो गया है कि शिक्षा से मुख मोड़ रहे हैं,

(34:23) और ईश्वर के समक्ष कोई अनुशंसा किसी के लिए लाभदायक नही होगी, किन्तु उस मानव की जिसके लिए ईश्वर ने अनुशंसा की आज्ञा दी हो, यहां तक कि जब लोगों के दिलों से घबराहट दूर होगी तो वह ज्ञात करेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या उत्तर दिया, वह कहेंगे कि ठीक उत्तर मिला है और वह सर्व श्रेष्ठ और उच्च है (अर्थात् यह उत्तर तो कुरआन में अंकित है कि किसी को अनुशंसा की आज्ञा नही फिर इस नियम को ईश्वर कैसे तोड़ेगा तो यही उत्तर जान लो)

(44:41,42) वह दिन जब कोई निकटतम प्रिय अपने किसी प्रिय के कुछ भी काम न आएगा और न कही से उन्हें कोई सहायता पहुंचेगी, सिवाए इसके कि ईश्वर ही किसी पर दया करे वह शक्तिशाली और दयालु है

(25:30) और रसूल स0 कहेंगे ऐ मेरे रब मेरी जाति (दल) के लोगों ने इस कुरआन को हंसी मज़ाक बना लिया था और छोड़ रखा था अपनी इच्छा का पाबन्द कर रखा था

अनुशंसा के विषय में हदीस भी पढ़ली जाए- किताबुल वसाया जिल्द दोम पन्ना-44 हदीस नं0-26 अबुसलमा बिन अब्दुर्रहमान हज़रत अबुहुरेराह से रवायत करते हैं कि जब ईश्वर ने सूरत शोआरा की आयत 214 अवतरित की तो रसूल स0 खड़े हुए और कहा ऐ दल कुरैश या इसी जैसा कोई शब्द कहा तुम अपनी जानो को (नर्क की आग से) बचाओ मैं ईश्वर के समक्ष तुम्हारे किसी काम नही आ सकता, ऐ बनी अब्द मनाफ ईश्वर के समक्ष तुम्हारे किसी काम नही आ सकता, ऐ अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब मैं ईश्वर के सम्मुख आपके काम भी नही आ सकता ऐ रसूलुल्लाह स0 की फूफी सफिया! मैं ईश्वर के समक्ष आपके भी किसी काम नही आ सकता, ऐ मुहम्मद की पुत्री! मेरे धन में से जो चाहे मांग ले किन्तु ईश्वर के समक्ष मैं तेरे भी काम नही आ सकता,

इस हदीस को असबग़ इब्न वहब, यूनुस इब्न शहाब ने भी रवायत किया है,

किताबुल जिहाद पे0-151, नं0-318

हज़रत अबु हुरेरा र0 फरमाते हैं कि नबी स0 हमारे बीच खड़े हुए और आपने परिहार में कपट का वर्णन फरमाते हुए उसे बहुत बड़ा अपराध कहा और कहा कि महाप्रलय में तुम में से किसी को मैं इस दशा में देखना पसन्द नही करता कि उसकी गर्दन पर बकरी मिम्या रही हो, या घोड़ा सवार होकर हिनहिना रहा हो, उस समय वह कहे या रसूलुल्लाह स0 मेरी सहायता कीजिए उस समय मैं उत्तर दूं

نہیں رکھتے الا یہ کہ کوئی علم کی بنا پر حق کی شہادت دے (اور یہ تو ظاہر ہے اللہ سے کسی کا کوئی کام چھپا نہیں ہے نگاہوں کی چوری سینوں کے راز سب اس کو معلوم ہیں پھر شفاعت کی کیا ضرورت).

(۲۶:۵۳) آسمانوں میں کتنے ہی فرشتے موجود ہیں ان کی شفاعت کچھ بھی کام نہیں آ سکتی جب تک کہ اللہ کسی کو اس کی اجازت نہ دے جس کے لئے وہ کوئی عرضداشت سننا چاہے. اور اس کو پسند کرے.

(۷۴:۴۷، ۴۸، ۴۹) یہاں تک کہ ہمیں اس یقینی چیز سے سابقہ پیش آ گیا. یعنی موت. ان کو جو دنیا میں یقین تھا کہ ہماری شفاعت ہوگی تو سن لیں کہ انہیں شفارش کرنے والوں کی شفارش نفع نہ دے گی. دنیا کی زندگی میں انہیں کیا ہو گیا ہے کہ نصیحت سے منہ موڑ رہے ہیں.

(۳۴:۲۳) اور اللہ کے حضور کوئی شفاعت کسی کے لئے نافع نہیں ہو سکتی. الا اس شخص کی جس کے لئے اللہ نے شفاعت کی اجازت دی ہو. حتیٰ کے جب لوگوں کے دلوں سے گھبراہٹ دور ہوگی. تو وہ پوچھیں گے کہ تمہارے رب نے کیا جواب دیا. وہ کہیں گے کہ ٹھیک جواب ملا ہے. اور وہ بزرگ اور برتر ہے (یعنی یہ جواب تو قرآن میں درج ہے کہ کسی کو شفاعت کی اجازت نہیں پھر اس قانون کو اللہ کیسے توڑے گا تو یہی جواب جان لو).

(۴۴:۴۱، ۴۲) وہ دن جب کوئی عزیز اپنے کسی عزیز کے کچھ بھی کام نہ آئے گا. اور نہ کہیں سے انہیں کوئی مدد پہنچے گی. سوائے اس کے کہ اللہ ہی کسی پر رحم کرے وہ زبردست اور رحیم ہے.

(۲۵:۳۰) اور رسول کہیں گے. اے میرے رب میری قوم کے لوگوں نے اس قرآن کو نشانہ تضحیک بنا لیا تھا یعنی مذاق بناتے تھے اور چھوڑ رکھا تھا. اپنی مرضی کا پابند کر رکھا تھا.

شفاعت کے بارے میں حدیث بھی پڑھ لی جائے کتاب الوصایا جلد دوم صفحہ ۴۴ نمبر (۲۶) ابو سلمہ بن عبدالرحمٰن حضرت ابوہریرہؓ سے روایت کرتے ہیں کہ جب اللہ نے آیت وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ (۲۱۴) سورت شعراء نازل فرمائی تو رسولؐ کھڑے ہوئے اور فرمایا اے گروہ قریش یا اسی جیسا کوئی لفظ فرمایا تم اپنی جانوں کو دوزخ کی آگ سے بچاؤ میں اللہ کے بالمقابل تمہارے کوئی کام نہیں آ سکتا. اے بنی عبد مناف! میں اللہ کے بالمقابل تمہارے کسی کام نہیں آ سکتا. اے عباس بن عبدالمطلب میں اللہ کے بالمقابل آپ کے کام بھی نہیں آ سکتا. اے رسولؐ اللہ کی پھوپھی صفیہ! میں اللہ کے بالمقابل آپ کے بھی کسی کام نہیں آ سکتا. اے محمدؐ کی بیٹی! میرے مال میں سے جو چاہے مانگ لے لیکن اللہ کے بالمقابل میں تیرے بھی کام نہیں آ سکتا.

اس حدیث کو اصبغ ابن وحب، یونس ابن شہاب نے بھی روایت کیا ہے

کتاب الجہاد صفحہ ۱۵۱ نمبر (۳۱۸)

حضرت ابوہریرہؓ فرماتے ہیں کہ نبیؐ ہمارے درمیان کھڑے ہوئے اور آپ نے مال غنیمت میں خیانت کا تذکرہ فرماتے ہوئے اسے بہت بڑا جرم قرار دیا. اور فرمایا کہ قیامت میں تم میں سے کسی کو میں اس حالت میں دیکھنا پسند نہیں کرتا کہ اس کی گردن پر بکری سوار ہو کر ممیا رہی ہو یا گھوڑا سوار ہو کر ہنہنا رہا ہو، اس وقت وہ کہے کہ یا رسولؐ اللہ میری مدد فرمائے اس وقت میں جواب دوں

कि अब मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता मैंने ईश्वर का आदेश तुम्हें पहुंचा दिया था, या उसकी गर्दन पर ऊंट सवार होकर बिलबिला रहा हो, और उस समय कहे या रसूलुल्लाह स0 मेरी सहायता कीजिए अतः मैं उत्तर दूं कि अब मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता, मैंने ईश्वर का आदेश तुम लोगों तक पहुंचा दिया था, या उसकी गर्दन पर धन-दौलत सवार हो और वह कहे या रसूलुल्लाह! मेरी सहायता कीजिए तो मैं उत्तर दूं आज मुझे तुम्हारा कोई अधिकार (नहीं है) मैंने ईश्वर का आदेश तुम तक पहुंचा दिया था, या उसकी गर्दन पर कपड़े जो उड़ रहे हों और वह कहे या रसूलुल्लाह मेरी सहायता कीजिए तो मैं उत्तर दूं कि तुम्हारे लिए मेरे पास कोई अधिकार नहीं, मैंने ईश्वर का आदेश तुम्हें पहुंचा दिया था,

(319) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर र0 फरमाते हैं कि करकराह नामी एक व्यक्ति नबी करीम स0 के समान की रखवाली पर नियुक्त था जब उसकी मृत्यु हो गई तो रसूल अल्लाह ने कहा कि वह नर्की है लोग इस का कारण ढूंढने लगे तो उसके सामान से एक अबा पाई गई जो उसने परिहार (माले गनिमत) से छुपाकर रख ली थी,

नोट- रसूल अल्लाह को यह चोरी कैसे ज्ञात हुई? और क्या यह अपराध बहुत बड़ा था जो उसके लिए अनुशंसा काम न देगी, अनुशंसा तो बड़े से बड़े पापी को मुक्ति दिला देगी तो फिर करकराह नामी व्यक्ति के लिए कैसे उपयोगी न होगी? विचार करो-

हदीस (741) किताबुल अम्बिया जिल्द दोम पे0-336 महामना अबुहुरेराह र0 से रवायत है कि नबी करीम स0 ने कहा ऐ बनी अब्द मनाफ! अपनी जानों को ईश्वर से बचाओ, ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब! अपनी जानों को ईश्वर से बचाओ, ऐ माताजुबैर बिनअलअवाम अर्थात् रसूलुल्लाह की फूफ़ी! ऐ फात्मा बिनते मुहम्मद स0! तुम दोनों भी अपनी जान को ईश्वर से बचाओ, मुझे ईश्वर की ओर से तुम्हारा भी निजी अधिकार नहीं है हां मेरे धन से जो चाहो मुझ से मांग लो

जिन आयातों में आज्ञा (इज़्न) का उल्लेख है तो इस शब्द का अर्थ जानने के लिए कुरआन की आयतों को देखना आवश्यक है, क्या इस शब्द से अभिप्राय आज्ञा है या नकार या शब्द इज़्न का अर्थ नियम भी हो सकता है या नहीं?

(7:123) फिरऔन ने कहा तुम इस पर आस्था ले आए पूर्व इसके कि मैं तुम्हें आज्ञा दूं? निःसन्देह यह कोई गुप्त षड्यंत्र था जो तुम लोगों ने इस राजधानी में की ताकि इसके स्वामियों को सत्ता से अलग कर दो, इसी प्रकार फिरऔन ने (20:71) और (26:49) में कहा कि तुम इस पर विश्वास ले आए पूर्व इसके कि मैं तुम्हें इसकी आज्ञा देता,

विचारणीय बात यह है कि यदि जादूगर फिरऔन से इस बात की आज्ञा मांगते कि हम मूसा के रब पर विश्वास ले आएं तो क्या फिरऔन यह आज्ञा दे देता? यदि ईमानदारी के साथ और मिथ्या आस्था से अलग हट कर सम्मति दी जाएगी तो निःसन्देह उत्तर यही होगा कि नहीं और यही उत्तर उचित भी है,

जैसे ज़ैद ने कहा, क्या मैं इस खाने को खालूं? या इसको न खाऊं? तो अर्थ पहले प्रश्न में विपरीत पार्श्व (पहलू) है और दूसरे में स्वीकारात्मक पार्श्व है, ज़ैद का अर्थ पहले वाक्य से यह है कि मैं इसको नहीं खाऊंगा, दूसरे में यह है कि मैं इसकोखाऊंगा, इससे मैं क्यों वंचित रहूं, बस यही पार्श्व फिरऔन के प्रश्न का है, अर्थात् मेरी इस विषय में कोई आज्ञा नहीं कि मेरी सत्ता में रहने वाला कोई व्यक्ति मूसा के रब पर विश्वास लाए मेरी आज्ञा किसी भी दशा में नहीं है,

क्या इज़्न का अर्थ आज्ञा ही है या कुछ और भी है

کہ اب میں تمہارے لئے کچھ نہیں کر سکتا. میں نے اللہ کا حکم تمہیں پہنچا دیا تھا. یا اس کی گردن پر اونٹ سوار ہو کر بلبلا رہا ہو اور اس وقت کہے یا رسولؐ اللہ میری مدد فرمائیے پس میں جواب دوں کہ اب میں تمہارے لئے کچھ نہیں کر سکتا. میں نے حکم اللہ تم لوگوں تک پہنچا دیا تھا. یا اس کی گردن پر مال و دولت سوار ہو اور وہ کہے یا رسولؐ اللہ میری مدد فرمائیے تو میں جواب دوں آج مجھے تمہارا کوئی اختیار نہیں ہے، میں نے اللہ کا حکم تم تک پہنچا دیا تھا. یا اس کی گردن پر کپڑے ہوں جو اڑ رہے ہوں اور وہ کہے یا رسولؐ اللہ! میری مدد فرمائیے تو میں جواب دوں کہ تمہارے لئے میرے پاس کوئی اختیار نہیں میں نے خدا کا حکم تمہیں پہنچا دیا تھا.

(۳۱۹) حضرت عبداللہ بن عمرؓ فرماتے ہیں کہ کرکرہ نامی ایک شخص نبی کریمؐ کے اسباب کی حفاظت پر متعین تھا. جب اس کا انتقال ہو گیا تو رسولؐ اللہ نے فرمایا کہ وہ جہنمی ہے لوگ اس کی وجہ تلاش کرنے لگے تو اس کے سامان میں ایک عبا پائی جو اس نے مال غنیمت سے چھپا کر رکھ لی تھی.

نوٹ:۔ رسولؐ کو یہ چوری کیسے معلوم ہوئی؟ اور کیا یہ جرم بہت بڑا تھا جو اس کے لئے شفاعت کام نہ دے گی. شفاعت تو بڑے سے بڑے گناہ گار کو بخشوا دے گی تو پھر کرکرہ نامی شخص کے لئے کیسے کارگر نہ ہوگی؟ غور کرو.

حدیث صفحہ ۷۴۱ کتاب الانبیاء جلد دوم نمبر ۳۳۶.

حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ نبی کریمؐ نے فرمایا اے بنی عبد مناف! اپنی جانوں کو اللہ سے بچاؤ. اے بنی عبدالمطلب! اپنی جانوں کو اللہ سے بچاؤ. اے والدہ زبیر بن العوام یعنی رسولؐ اللہ کی پھوپھی! اے فاطمہ بنت محمدؐ! تم دونوں بھی اپنی جان کو اللہ سے بچاؤ مجھے اللہ کی طرف سے تمہارا بھی ذاتی اختیار نہیں ہے. ہاں میرے مال میں سے جو چاہو مجھ سے مانگ لو.

جن آیتوں میں اجازت (اذن) کا ذکر ہے تو اس لفظ کا مطلب جاننے کے لئے قرآن کی آیتوں کو دیکھنا ضروری ہے. کیا اس لفظ سے مراد اجازت ہے یا انکار یا لفظاً اذن کا مطلب قانون بھی ہو سکتا ہے یا نہیں؟

(۷:۱۲۳) فرعون نے کہا تم اس پر ایمان لے آئے قبل اس کے کہ میں تمہیں اجازت دوں؟ یقیناً یہ کوئی خفیہ سازش تھی جو تم لوگوں نے اس دارالسلطنت میں کی، تاکہ اس کے مالکوں کو اقتدار سے بے دخل کر دو. اس طرح فرعون نے (۲۰:۷۱) اور (۲۶:۴۹) میں کہا کہ تم اس پر ایمان لے آئے قبل اس کے کہ میں تمہیں اس کی اجازت دیتا.

قابل غور بات یہ ہے اگر جادوگر فرعون سے اس بات کی اجازت مانگتے کہ ہم موسیٰ کے رب پر ایمان لے آئیں تو کیا فرعون یہ اجازت دے دیتا؟ اگر ایمان داری کے ساتھ اور وراثت میں ملے عقیدوں سے الگ ہٹ کر رائے دی جائے گی تو یقیناً جواب یہی ہوگا کہ نہیں اور یہی جواب صحیح بھی ہے.

جیسے زید نے کہا، کیا میں اس کھانے کو کھا لوں؟ یا اس کو نہ کھاؤں؟ تو مطلب پہلے سوال میں منفی پہلو ہے اور دوسرے میں مثبت پہلو ہے. زید کا مطلب پہلے جملے سے یہ ہے کہ میں اس کو نہیں کھاؤں گا. دوسرے میں یہ ہے کہ میں اس کو کھاؤں گا. اس سے میں کیوں محروم رہوں. بس یہی پہلو فرعون کے سوال کا ہے یعنی میری اس امر میں کوئی اجازت نہیں کہ میری حکومت میں رہنے والا کوئی آدمی موسیٰ کے رب پر ایمان لائے میری اجازت کسی بھی قیمت پر نہیں ہے. کیا اذن کا

फ़िरऔन के शब्दों पर विचार करने से यह पता चलता है कि शब्द इज़्न का अर्थ नियम भी है चूंकि फ़िरऔन ने यह नियम बना रखा था कि मेरी सत्ता में रहने वाले हर व्यक्ति को मेरे ही नियम स्वीकार करना है, और मेरे नियम में किसी को यह आज्ञा नही है कि वह मेरे अतिरिक्त किसी और को अपना ईश्वर स्वीकार करे, अतः इज़्न बोलकर फ़िरऔन का यही अभिप्राय था कि मेरे नियम के विरुद्ध तुम कैसे विश्वास ले आए मेरे नियम में इस कर्म की आज्ञा नही फ़िरऔन अपने राज्य की सीमा के अन्दर लोगों का रब था इसलिए उसका नियम चल रहा था (28:38, 46:29, 79:29) परन्तु ईश्वर के राज्य में पूरा संसार है अतः ईश्वर का नियम पूरे संसार पर छाया हुआ है और जो उसके नियम को स्वीकार करते हुए कर्म करेगा और उसको रब स्वीकार करेगा वह आज्ञाकारी है जो अवज्ञा करेगा वह अवज्ञा कारी है.

सूरत इमरान आयत 152 और ईश्वर ने अपना वचन सच्चा कर दिया उस समय जबकि तुम नास्तिकों को उसके इज़्न से वध कर रहे थे यहां तक कि तुम ने नामर्दी की और झगड़ा डाला आदेश में और बे हुकमी की बाद इसके कि तुमको दिखा चुका तुम्हारी हर्ष की वस्तु कोई तुम में से चाहता था संसार और कोई चाहता था प्रलोक फिर तुम को ईश्वर ने प्रतियोगिता से फैर (कर भगा) दिया कि तुम्हारी परीक्षा करे.

(166) जो हानी युद्ध के दिन तुम्हें पहुंची वह ईश्वर के इज़्न नियम से थी और इसलिए थी कि ईश्वर प्रकट कर दे तुम में से आस्तिक कौन है और कपटि कौन.

(7:58) जो भूमि अच्छी होती है वह अपने रब के आदेश इज़्न (नियम) से उत्तम फल-फूल लाती है और जो भूमि दोषयुक्त होती है उससे विकृत पैदावार के सिवा कुछ नही निकलता.

(22:65) क्या तुमने देखा नही कि उसने वह सब तुम्हारे लिए बेगार में लगा रखा है जो भूमि में है और उसी ने नौका को नियम का अमुक्त बनाया है कि वह उसके आदेश (नियम) से सागर में चलती है और वही आकाश को इस प्रकार थामे हुए है कि उसके इज़्न (नियम) के बिना वह पृथ्वी पर नही गिर सकता?

(59:5) तुम लोगों ने खजूरों के जो वृक्ष काटे या जिनको अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया यह सब ईश्वर के इज़्न (नियम) से था (और ईश्वर ने यह इज़्न इस लिए दिया) ताकि कपटियों को अपमानित करे.

उपरोक्त आयात में शब्द इज़्न अनुमति आया है ईश्वर ने कहा कि ऐ आस्तिको तुम मेरे इज़्न से उनको वध कर रहे थे और सफलता प्राप्त की और फिर कहा कि मेरे इज़्न से अनुमति से शत्रुओं ने तुमको भगा दिया, क्या इतनी देर में ही मित्रता शत्रुता में बदल गई कि पहले अनुमति सफलता की और फिर विफलता की? परन्तु प्रसंग यह नही है, अपितु वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने हर कार्य के लिए एक प्रक्रिया नियम निर्धारित कर दिया है, इस नियम के अनुसार कार्य किया जाएगा तो सफलता है और इसके विरुद्ध किया जाएगा तो असफलता.

युद्ध की सफलता के लिए ईश्वर का नियम यह है कि शत्रु के मुकाबले के लिए अच्छे से अच्छा शस्त्र अर्जित किया जाए जो उस समय चल रहा हो यदि शत्रु पर बन्दूक हो तो प्रति द्वन्द्वी पर भी बन्दूक होनी अनिवार्य है यह नही हो सकता कि शत्रु पर बन्दूक हो औरप्रतिवादी तलवार या लाठी लेकर मुकाबले पर आए या शत्रु सैना तो प्रतिशक्षण लिए हो और प्रतिवादी अनाड़ी हो या युद्ध का नियम है कि

مطلب اجازت ہی ہے یا کچھ اور بھی ہے فرعون کے الفاظوں پر غور کرنے سے یہ پتہ چلتا ہے کہ لفظ اذن کا مطلب قانون بھی ہے چونکہ فرعون نے یہ قانون بنا رکھا تھا کہ میری حکومت میں رہنے والے ہر آدمی کو میرا ہی قانون تسلیم کرنا ہے۔ میں سب سے بڑا رب ہوں۔ اس بنا پر مجھے رب تسلیم کرنا ہے۔ اور میرے قانون میں کسی کو یہ اجازت نہیں ہے کہ وہ میرے علاوہ کسی اور کو اپنا رب تسلیم کرے اس لئے اذن بول کر فرعون کا یہی مقصد تھا کہ میرے قانون کے خلاف تم کیسے ایمان لے آئے میرے قانون میں اس حرکت کی اجازت نہیں۔ فرعون اپنی حکومت کی حدود کے اندر لوگوں کا رب تھا۔ اس لئے اس کا قانون چل رہا تھا۔ (۲۸:۳۸، ۴۶:۲۹، ۷۹:۲۴) مگر اللہ کی حکومت میں پوری کائنات ہے۔ اس لئے اللہ کا قانون پوری کائنات پر حاوی ہے اور جو اس کے قانون کو تسلیم کرتے ہوئے عمل کرے گا اور اس کو مانے گا وہ فرمانبردار ہے جو خلاف ورزی کرے گا وہ نافرمان ہے۔

سورہ آل عمران آیت (۱۵۲) اور اللہ نے اپنا وعدہ سچا کر دیا۔ اس وقت جبکہ تم کافروں کو اس کے اذن سے قتل کر رہے تھے۔ یہاں تک کہ تم نے نامردی کی اور جھگڑا ڈالا کام میں اور بے حکمی کی بعد اس کے کہ تم کو دکھا چکا تمہاری خوشی کی چیز۔ کوئی تم میں سے چاہتا تھا دنیا اور کوئی تم میں سے چاہتا تھا آخرت پھر تم کو اللہ نے ان کے مقابلہ سے پھیر (کر بھگا) دیا تا کہ تمہاری آزمائش کرے۔

(۱۶۶) جو نقصان لڑائی کے دن تمہیں پہنچا وہ اللہ کے اذن (قانون) سے تھا اور اس لئے تھا کہ اللہ ظاہر کر دے تم میں سے مومن کون ہیں اور منافق کون۔

(۷:۵۸) جو زمین اچھی ہوتی ہے وہ اپنے رب کے حکم اذن (قانون) سے خوب پھل پھول لاتی ہے۔ اور جو زمین ناقص ہوتی ہے اس سے ناقص پیداوار کے سوا کچھ نہیں نکلتا۔

(۲۲:۶۵) کیا تم نے دیکھا نہیں کہ اس نے وہ سب تمہارے لئے بیگار میں لگا رکھا ہے جو زمین میں ہے اور اس نے کشتی کو قاعدے کا پابند بنایا ہے کہ وہ اس کے حکم (قانون) سے سمندر میں چلتی ہے اور وہی آسمان کو اس طرح تھامے ہوئے ہے کہ اس کے اذن (قانون) کے بغیر وہ زمین پر نہیں گر سکتا؟

(۵۹:۵) تم لوگوں نے کھجوروں کے جو درخت کاٹے یا جن کو اپنی جڑوں پر کھڑا رہنے دیا یہ سب اللہ کے اذن (قانون) سے تھا (اور اللہ نے یہ اذن اس لئے دیا) تا کہ فاسقوں کو ذلیل و خوار کرے۔

آیات بالا میں لفظ اذن آیا ہے۔ اللہ فرما رہا ہے کہ اے مسلمانوں تم میرے اذن سے ان کو قتل کر رہے تھے اور جیت حاصل کی اور پھر کہا کہ میرے اذن سے دشمنوں نے تم کو بھگا دیا۔ کیا اتنی دیر میں ہی دوستی دشمنی میں بدل گئی کہ پہلے اذن جیت کا اور پھر ہار کا؟ لیکن معاملہ یہ نہیں ہے بلکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ نے ہر کام کے لئے ایک ضابطہ قانون مقرر کر دیا ہے۔ اس ضابطہ کے مطابق کام کیا جائے گا تو کامیاب اور اس کے خلاف کیا جائے گا تو ناکامی۔

جنگ کی جیت کے لئے اللہ کا قانون یہ ہے کہ دشمن کے مقابلہ کے لئے اچھے سے اچھا ہتھیار فراہم کیا جائے جو اس زمانے میں چل رہا ہو اگر دشمن پر بندوق ہو تو مقابل پر بھی بندوق ہونی ضروری ہے۔ یہ نہیں ہو سکتا کہ دشمن پر بندوق ہو اور فریق ثانی تلوار یا لاٹھی لیکر مقابلہ پر آئے یا دشمن فوج تو تربیت یافتہ ہو اور فریق ثانی اناڑی۔ یا جنگ کا قانون یہ ہے کہ سالار جنگ کے حکم کی پابندی کی

सैनापति के आदेश का पालन किया जाए इसी प्रकार और बहुत से जंगी नियम हैं, अतः जब तक मुसलमानों ने उन नियमों का पालन किया उनको सफलता मिली और जब मुहम्मद स० के आदेश की अवहेलना की हार हो गई जिसके लिए कहा वह सब मेरे इज़न अर्थात् नियम से हुआ

दूसरी बात नौका की है कि मेरे इज़न से नौका सागर पर चलती है, हर व्यक्ति जानता है कि नौका में लोहा और लकड़ी लगी होती है और लोहे का स्वभाव है कि जब उसको पानी में डाला जाएगा तो वह डूब जाएगा, परन्तु नियमानुसार जो ईश्वर ने निश्चित कर दिया है उसके अनुसार लोहे से नौका बनाई जाती है तो वह बहुत बड़े भार को लेकर पानी में तैरती फिरती है और पड़ाओ को पहुंच जाती है, यह तैरना भी नियम के अनुसार है यदि लोहे के गारडर को पानी में डाला जाए और कहा जाए कि ईश्वर के इज़न से अनुमति से तैर, तो नही तैरेगा अपितु डूब जाएगा

तीसरी बात भूमि की पैदावार की है तो नियम यह है कि जो हर आदमी जानता है कि जो भूमि उपजाऊ होती है पानी खाद बीज नियम से दिया जाता है और नराई आदि नियमानुसार होती है तो पैदावार उत्तम होती है और जो भूमि दोषवाली होती है उसमें पैदावार नही होती, अगर कही होती है तो बहुत कम तो वहां भी इज़न से अर्थ नियम है, इज़न का अर्थ आयत 2:102 में भी नियम ही आता है,

चौथी बात यह है कि पेड़ काटने के लिए कहा गया है कि ईश्वर के इज़न से जो युद्ध का नियम है कि जो वस्तु युद्ध में बाधा डाल रही हो जिस से शत्रु को लाभ हो रहा हो तो उसको काट दिया जाए या गिरा दिया जाए चाहे वह पेड़ हो या दीवार और जिससे लाभ हो रहा हो उसको शेष रखा जाता है, जिससे शत्रु के शस्त्र हानि न पहुंचाए यह है वह इज़न वाली बात मानों बात खुलकर यह आई कि इज़न से अर्थ नियम है, अतः अनुशंसा वाली आयात में भी इज़न से तात्पर्य नियम विधान है, ईश्वर का क्या नियम और विधान है देखा जाए जैसी करनी वैसी भरनी,

ईश्वर ने अपने पवित्र कथन में अनेक आयात में यह बताया है कि मै हर उपस्थित और गुप्त को जानता हूं, मेरे इस ज्ञान में कोई कण मात्र वृद्धि नही कर सकता और हर व्यक्ति का कर्म पत्र संपादित हो रहा है जिसको सम्मान वाले लिख रहे है, और जो उनकी पकड़ में नही आता अर्थात् सीनों के विचार उनको भी नोट किया जा रहा है और उस कर्म पत्र से प्रलोक का निर्णय होना है, जब सब ईश्वर के सामने प्रलय में लेखा जोखा के लिए प्रस्तुत होंगे तो उचित न्याय हो जाएगा किसी पर कण मात्र अत्याचार न होगा, चूंकि ईश्वर न्यायशील है और न्याय का यही नोदन है कि अन्याय न हो, ईश्वर ने मानव को सचेत करने के लिए अनेक आयात दी है जो मैने लिखी भी है और कुरआन में इनके अतिरिक्त और भी है, इनमें यही कहा है कि डरो उस दिन से जिसमें कोई किसी के काम न आएगा, न अनुशंसा चलेगी न सहायता की जाएगी न फरिश्ते ही अनुशंसा कर सकें न नबी ही और न कोई पीर बजुर्ग ही यह काम करेगा, न कोई अबोध बच्चा ही अनुशंसा करेगा और न कोई रक्षक (हाफिज़) ही अपनी चौदाह पीढ़ी जिनके ऊपर नर्क अनिवार्य हो चुका होगा स्वर्ग में ले जाएगा,

किन्तु लोगों ने यही विश्वास बना रखा था और बना रखा है, बार-बार मना करने समझाने के बाद भी अनुशंसा की रट लगाने वालों को सरलता से समझाने से काम न चला तो फिर ईश्वर को

جائے اسی طرح اور بہت سے جنگی قانون ہیں. اس لئے جب تک مسلمانوں نے ان ضابطوں پر عمل کیا ان کو فتح ملی اور جب محمدؐ کے فرمان کی خلاف ورزی کی ہار ہوگئی جس کے لئے کہا کہ یہ سب میرے اذن یعنی قانون سے ہوا.

دوسری بات کشتی کی ہے کہ میرے اذن سے کشتی سمندر پر چلتی ہے ہر آدمی جانتا ہے کہ کشتی میں لوہا اور لکڑی لگی ہوتی ہے اور لوہے کی عادت یہ ہے کہ جب اس کو پانی میں ڈالا جائے گا تو وہ ڈوب جائے گا مگر قانون کے مطابق جو اللہ نے مقرر کر دیا ہے اس کے مطابق لوہے سے کشتی بنائی جاتی ہے تو وہ بہت بڑے وزن کو لے کر پانی میں تیرتی پھرتی ہے اور منزل کو پہنچ جاتی ہے یہ تیرنا بھی قانون کے مطابق ہے اگر لوہے کے گاڈر کو پانی میں ڈالا جائے اور کہا جائے کہ اللہ کے اذن سے تیر تو نہیں تیرے گا بلکہ ڈوب جائے گا تیسری بات زمین کی پیداوار کی ہے تو قاعدہ قانون یہ ہے جو ہر آدمی جانتا ہے کہ جو زمین زرخیز ہوتی ہے پانی کھاد بیج قاعدے سے دیا جاتا ہے اور زرائی وغیرہ قانون کے مطابق ہوتی ہے تو پیداوار خوب ہوتی ہے اور جو زمین خراب اوسر ہوتی ہے اس میں پیداوار نہیں ہوتی. اگر کہیں ہوتی بھی ہے تو بہت کم تو یہاں بھی اذن سے مراد قانون ہے. اذن کا مطلب آیت ۲:۱۰۲، میں بھی قانون ہی آتا ہے.

چوتھی بات یہ ہے کہ درخت کاٹنے کے لئے کہا گیا ہے کہ اللہ کے اذن سے جو جنگ کا قاعدہ ہے کہ جو چیز جنگ میں رکاوٹ ڈال رہی ہو جس سے دشمن کو فائدہ ہو رہا ہو تو اس کو کاٹ دیا جائے یا گرا دیا جائے چاہے وہ درخت ہوں یا دیوار. اور جس سے فائدہ ہو رہا ہو اس کو باقی رکھا جاتا ہے. یا وقت ضرورت پر جدید بنایا جاتا ہے. جس سے دشمن کے ہتھیار نقصان نہ پہنچائیں. یہ ہے وہ اذن والی بات گویا بات کھل کر یہ آئی کہ اذن سے مراد قانون ہے اس لئے شفاعت والی آیت میں بھی اذن سے مراد قانون ضابطہ ہے اب اللہ کا کیا ضابطہ اور قانون ہے دیکھا جائے جیسی کرنی ویسی بھرنی.

اللہ نے اپنے کلام پاک میں متعدد آیات میں یہ بتایا ہے کہ میں ہر حاضر اور غائب کو جانتا ہوں میرے اس علم میں کوئی ذرہ برابر اضافہ نہیں کر سکتا. اور ہر انسان کا نامہ اعمال مرتب ہو رہا ہے. جس کو عزت والے لکھ رہے ہیں. اور جو ان کی گرفت میں نہیں آتا یعنی سینوں کے غلط خیالات ان کو بھی نوٹ کیا جا رہا ہے اور اس اعمال نامہ سے آخرت کا فیصلہ ہونا ہے. جب سب اللہ کے سامنے حشر میں حساب کے لئے پیش ہوں گے تو حق کے ساتھ فیصلہ ہو جائے گا. کسی پر ذرہ برابر ظلم نہ ہوگا. چونکہ اللہ عادل ہے اور عدل کا یہی تقاضہ ہے کہ ظلم نہ ہو. اللہ نے انسان کو خبردار کرنے کے لئے متعدد آیات دی ہیں جو میں نے لکھی بھی ہیں اور قرآن میں ان کے علاوہ اور بھی ہیں. ان میں یہی کہا ہے کہ ڈرو اس دن سے جس میں کوئی کسی کے کام نہ آئے گا. نہ شفاعت چلے گی نہ مدد کی جائے گی نہ فرشتے ہی شفارش کر سکیں نہ نبی ہی اور نہ کوئی پیر بزرگ ہی یہ کام کرے گا. نہ کوئی نابالغ بچہ ہی شفاعت کرے گا اور نہ کوئی حافظ ہی اپنی چودہ پشتوں جن کے اوپر دوزخ واجب ہو چکی ہوگی جنت میں لے جائے گا.

مگر لوگوں نے یہی عقیدہ بنا رکھا تھا اور بنا رکھا ہے. بار بار منع کرنے سمجھانے کے بعد بھی شفاعت کی رٹ لگانے والوں کو نرمی سے سمجھانے سے کام نہ چلا تو پھر اللہ کو جوش میں آنا پڑا اور کہا میں ظاہر غیب آگے پیچھے زمین و آسمان کے

आवेश में आना पड़ा और कहा मैं प्रत्यक्ष, परोक्ष, आगे, पीछे, पृथ्वी व आकाश के सब भेदों को जानता हूं, कौन दोषी है कौन सदाचारी है इसके बाद कौन है जो मेरी आज्ञा या मेरे राज्य में रहते हुए मेरे नियम के विरुद्ध अनुशंसा कर सके, कोई नही, न मैंने किसी को आज्ञा दी है, मेरे नियम में इस प्रकार का कोई अवसर नही है, कि जैसे दुनिया में अनजान अधिकारी के सामने प्रभावशाली आदमी अपराधियों की अनुशंसा करके उसे मुक्त करा देता है क्योंकि वह अधिकारी परोक्ष नही जानता और उन प्रभावशाली व्यक्तियों से भयभीत भी रहता है, परन्तु ईश्वर किसी से भयभीत नही होता, ईश्वर हर परोक्ष हर बात को जानता है, उसके यहां अनुशंसा चलने का प्रश्न ही नही और न ही उसके नियम में आज्ञा है,

उसके यहां तुला है और न्याय जो कुछ होना है नियम के अन्तर्गत ही होना है

जैसे यदि कोई अधिकारी किसी अपराधी को अनुशंसा पर क्षमा कर देता है तो उसने न्याय का वध किया परन्तु ईश्वर ऐसा अनुचित कार्य नही करता और इन्सानों से भी यही चाहता है कि न्याय पर स्थापित रहें और न्याय यह है कि ईश्वर के नियम का पालन किया जाए इसके लिए ही कहा है कि पापियों के सहायक न बनो, दुनिया में यदि वह कार्य कर भी लिया तो प्रलय में कौन करेगा, इस नियम के होते हुए कौन है जो सदाचारी आदमी पापियों की अनुशंसा के लिए ईश्वर के सम्मुख जाए? यह तो रहा कुरआन का न्याय {39:19, 19:71, 26:90,91, 24:21, 29:54, 78:37}

परन्तु कुरआन से पहले हमारी दृष्टि हदीस (कथन) पर जाती है उसको भी मैंने लिख दिया है कि मुहम्मद स0 ने कहा कि मैं किसी के कुछ काम न आ सकूंगा, ईश्वर के सम्मुख वहां पर केवल तुम्हारे कर्म ही काम आऐंगे, मैंने तुम को समझा दिया है अब तुम अच्छे कर्म करो जो तुम्हारे काम आए

परन्तु बड़ा विख्यात विश्वास है कि हर कलमा पढ़ने वाला स्वर्ग में जाएगा चाहे उसने चोरी की हो या बलात्कार किया हो, बुखारी हदीस नं0-1147 हज़रत अबुज़र कहते है कि (एक बार) रसूले खुदा स0 ने कहा कि मेर पास एक आने वाला मेरे परवरदिगार के पास से आया और उसने मुझे सूचना दी या यह कहा कि मुझे मंगल सूचना दी कि जो व्यक्ति मेरी उम्मत में से इस दशा में मरेगा कि वह ईश्वर के साथ किसी को साझी न करता हो वह स्वर्ग में होगा, मैंने निवेदन किया यद्यपि उसने ज़िना किया हो और यद्यपि चोरी की हो, आपने कहा यद्यपि ज़िना किया हो यद्यपि चोरी की हो, पाराह पांच किताबुल जनायज़ पे0-293,

इस हदीस से प्रमाणित होता है कि अनेकेश्वर वाद के अतिरिक्त हर पाप क्षमा वह स्वर्ग में ही जाएगा, किन्तु दूसरी हदीस में है कि यदि पापी मुसलमान को पापों का कुछ दण्ड मिलेगा तो अपनी यातना व्यतीत करके फिर स्वर्ग में आजाएगा किन्तु एक रिवायत के अनुसार यह विश्वास भी मिथ्या सिद्ध हो रहा है वह यह कि प्रलय के मैदान में मुहम्मद स0 सजदे में सिर झुका देंगे और उस समय तक सिर नही उठाऐंगे जब तक ईश्वर उनकी सम्पूर्ण उम्मत को नर्क से मुक्त करके स्वर्ग में प्रविष्ट न कर देगा, और एक आस्था यह भी है कि जिसके छोटे बच्चे मर जाऐंगे तो वह स्वर्ग में ही जाएगा, और यदि वह नर्की होगा तो केवल शपथ पूरी करने के लिए उसको नर्क के पुल से चला दिया जाएगा (बुखारी), क्या ईश्वर ने कोई शपथ खा रखी है?

यह भी बुखारी में है कि जब नर्क वाले नर्क में और जन्नत

سب رازوں کو جانتا ہوں۔کون مجرم ہے کون نیک ہے اس کے باوجود کون ہے جو میری اجازت یا میری حکومت میں رہتے ہوئے میرے قانون کے خلاف شفاعت کر سکے کوئی نہیں۔ نہ میں نے کسی کو اجازت دی ہے میرے قانون میں اس طرح کی کوئی گنجائش نہیں ہے، کہ جیسے دنیا میں بےخبر حاکم کے سامنے بااثر آدمی مجرم کی شفارش کر کے اسے بری کرا دیتا ہے، چونکہ وہ حاکم غیب نہیں جانتا اور ان اثر دار آدمیوں سے خوف زدہ بھی رہتا ہے مگر اللہ کسی سے خوف نہیں کھاتا، اللہ ہر غیب ہر بات کو جانتا ہے اس کے یہاں شفارش چلنے کا سوال ہی نہیں۔اور نہ ہی اس کے قانون میں کوئی اجازت ہے۔

اس کے یہاں میزان ہے اور عدل جو کچھ ہونا ہے قانون کے اندر ہی ہونا ہے۔

جیسے اگر کوئی حاکم کسی ظالم کو شفارش پر معاف کر دیتا ہے تو اس نے عدل کا قتل کیا مگر اللہ ایسا غلط کام نہیں کرتا، اور انسانوں سے بھی یہی چاہتا ہے کہ عدل پر قائم رہیں اور عدل یہ ہے کہ اللہ کے قانون کی پابندی کی جائے اس کے لئے ہی کہا ہے کہ مجرموں کی حمایت نہ کرو۔دنیا میں اگر یہ کام کر بھی لیا تو حشر میں کون کرے گا۔اس قانون کے ہوتے ہوئے کون ہے جو نیک آدمی مجرموں کی شفاعت کے لئے اللہ کے سامنے جائے؟ یہ تو رہا قرآن کا فیصلہ (۳۹:۱۹، ۱۹:۷۱، ۲۶:۹۰،۹۱، ۲۴:۲۱، ۲۹:۵۴، ۷۸:۳۷)۔

لیکن قرآن سے پہلے ہماری نظر حدیث پر جاتی ہے اس کو بھی میں نے لکھ دیا ہے کہ حضورؐ نے فرمایا کہ میں کسی کے کچھ کام نہ آسکوں گا اللہ کے مقابلہ میں۔وہاں پر صرف تمہارے عمل ہی کام آئیں گے۔میں نے تم کو سمجھا دیا ہے۔اب تم اچھے عمل کرو جو تمہارے کام آئیں۔

مگر بڑا مشہور عقیدہ ہے کہ ہر کلمہ گو جنتی ہے چاہے اس نے چوری کی ہو یا زنا۔(بخاری حدیث نمبر ۱۱۴۷)۔

حضرت ابوذر کہتے ہیں کہ (ایک مرتبہ) رسولؐ خدا نے فرمایا کہ میرے پاس ایک آنے والا میرے پروردگار کے پاس سے آیا اور اس نے مجھے خبر دی۔یا یہ فرمایا کہ مجھے بشارت دی کہ جو شخص میری امت میں سے اس حال میں مرے گا کہ وہ اللہ کے ساتھ کسی کو شریک نہ کرتا ہو وہ جنت میں ہوگا۔میں نے عرض کیا اگر چہ اس نے زنا کیا ہو اور اگر چہ چوری کی ہو۔آپؐ نے فرمایا اگر چہ زنا کیا ہو ،اگر چہ چوری کی ہو۔پارہ پانچ کتاب الجنائز نمبر ۲۹۳۔

اس حدیث سے ثابت ہوتا ہے کہ شرک کے علاوہ ہر گناہ معاف وہ جنت میں ہی جائے گا۔لیکن دوسری روایت میں ہے کہ اگر گناہ گار مسلمان کو گناہوں کی کچھ سزا ملے گی تو اپنی سزا کاٹ کر پھر جنت میں آجائے گا۔مگر ایک روایت کے مطابق یہ عقیدہ بھی غلط ثابت ہو رہا ہے۔وہ یہ کہ حشر کے میدان میں محمدؐ سجدے میں سر جھکا دیں گے اور اس وقت تک سر نہیں اٹھائیں گے جب تک اللہ ان کی پوری امت کو دوزخ سے بری کر کے جنت میں داخل نہ کر دیں گے۔اور ایک عقیدہ یہ بھی ہے کہ جس کے چھوٹے بچے مر جائیں گے تو وہ جنت میں ہی جائے گا۔اور اگر وہ دوزخی ہوگا تو صرف قسم پوری کرنے کے لئے اس کو دوزخ کے پل سے گزار دے گا (بخاری) کیا اللہ نے کوئی قسم کھا رکھی ہے؟

یہ بھی بخاری میں ہے کہ جب دوزخ والے دوزخ میں اور جنت

वाले स्वर्ग में चले जाएंगे तो ईश्वर फरिश्तों से कहेगा जिसके हृदय में राई के दाने के बराबर ईमान हो उसको नर्क से निकाल लो, अतः वह नर्क से निकाले जाएंगे और वह काले हो गए होंगे और उनको स्वर्ग में प्रविष्ट कर दिया जाएगा, और भी बहुत आस्थाएं हैं जिनसे यही प्रकट होता है कि कलमागो अर्थात् मुसलमान चाहे वह कितना ही पापी हो नर्क में नहीं जाएगा,

अनुशंसा करने वाले भी असंख्यक हैं अतः यह आस्था हमारे यहां क्यों पक्की हो गई? इसका कारण यह है कि यहूदियों का जो विश्वास है या ईसाईयों का या दूसरे धर्म वालों का वही हमारे यहां आ गया, परन्तु उनके इस झूठे विश्वास का कुरआन ने खण्डन किया है,

सूरत बक़राह आयत (८०,८१) और यहूदियों ने कहा कि कदापि हमको नर्क की अग्नि नहीं पकड़ेगी परन्तु थोड़े दिन जो गिन लिए जाएंगे आप कह दीजिए कि तुम लोगों ने ईश्वर से कोई वचन ले लिया है जिसमें ईश्वर अपने वचन के विरुद्ध न करेगा, या ईश्वर पर ऐसी बात का भार डालते हो जिसका कोई व्यवहारिक प्रमाण अपने पास नहीं रखते, क्यों नहीं जो व्यक्ति बुरी बातें करता रहे और उसको उसका अपराध परिक्रमा कर ले सौ ऐसे लोग नर्क वाले हैं और वह उसमें सदैव रहेंगे,

सूरत आले इमरान आयत (24) उनकी यह कार्य प्रणाली इस कारण से है कि वह कहते हैं नर्क की अग्नि तो हमें स्पर्श नहीं कर सकती, यदि नर्क का दण्ड हमको मिलेगा तो बस कुछ दिन, उनके मन गढ़ंत विश्वास ने उनको अपने धर्म के बारे में बड़ी भ्रान्ति में डाल रखा है, किन्तु क्या बनेगी उन पर जब हम उन्हें उस दिन संग्रह करेंगे जिसका आना अवश्य है उस दिन हर व्यक्ति को उसकी कमाई का फल पूरा मिलेगा और किसी पर अन्याय न होगा,

इन आयात में उस भ्रांति का ईश्वर ने खण्डन किया है जिसका आखेट होकर यहूद पर निर्धनता और हीनता छा गई थी और आज इस मन गढ़ंत विश्वास को ही इस मुसलमान जाति ने अपना धर्म बना रखा है और हीन हो रहा है, इस अनुशंसा की आशा में ही वह इतने पाप कर रहा है जिसकी गणना नहीं और उनको देखकर असुर भी लज्जित हो रहा है,

एक दृष्टि कुरआन पर और डाली जाए कुरआन में अनेक आयात में यह है कि हर आदमी को उसकी कमाई का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा तनिक भी अत्याचार न होगा और जब लेखा जोखा हो जाएगा तो कर्म पत्र दाएं और बाएं हाथ में दे दिया जाएगा और स्वर्ग और नर्क में डाल दिया जाएगा और सदैव वहां रहना है, किन्तु आस्था है कि नर्क से निकलना है परन्तु यह विश्वास कुरआन के विपरीत है और इस मिथ्या विश्वास ने ही जाति समुदाय को हीन बना दिया है,

यह कुरआन के विरुद्ध विश्वास क्यों बना इसका कारण यह है कि जाति के सामने कुछ ऐसा लेख आ गया जिसने मूल धर्म को लुप्त कर दिया और विश्वासपात्र ज्ञानी और अइम्मा कराम भी धोका खा गए जैसे एक उपमा दी जा रही है चिन्तन मनन के लिए कोई भी आदमी जब दर्पण के सामने खड़ा होता है तो प्रतिबिम्ब वही होता है जो सामने खड़ा है कण बराबर भी अन्तर नहीं होता, हर व्यक्ति यही कहता है कि यह अमुक का ही प्रतिबिम्ब है, परन्तु एक अन्तर होता है जिसको जल्दी से अनुभूत नहीं किया जाता वह यह कि प्रतिबिम्ब बिल्कुल उल्टा होता है अर्थात् दाहिनी जानिब बाईं बन जाती है और बाईं, दाईं बन जाती है, बस यही जाति के साथ हुआ, कुरआन वही मूल लेख हमारे सामने रखा परन्तु धर्म शास्त्र इसके विपरीत सामने आ गया, अनुवाद और तफ्सीर में मतभेद किया ऐसे ही कुरआन के मूल आदेश से दूरी हो गई और साथ में यह भी प्रतिबद्ध हो गया कि

والے جنت میں چلے جائیں گے تو اللہ فرشتوں سے فرمائے گا جس کے دل میں رائی کے دانے کے برابر ایمان ہو اس کو دوزخ سے نکال لو. پس وہ دوزخ سے نکالے جائیں گے. اور وہ سیاہ ہو گئے ہوں گے اور ان کو جنت میں داخل کر دیا جائے گا. اور بھی بہت عقیدے ہیں جن سے یہی ظاہر ہوتا ہے کہ کلمہ گو چاہے وہ کتنا ہی گناہگار ہے دوزخ میں نہیں جائے گا.

شفاعت کرنے والے بھی بے شمار ہیں آخر یہ عقیدہ ہمارے یہاں کیوں پختہ ہو گیا؟ اس کی خاص وجہ یہ ہے کہ یہود کا جو عقیدہ ہے یا عیسائیوں کا یا اور دوسرے مذہب والوں کا وہی ہمارے یہاں آ گیا. مگر ان کے اس غلط عقیدے کی قرآن نے تردید کی ہے.

سورہ بقرہ آیت (۸۰،۸۱) اور یہودیوں نے کہا کہ ہرگز ہم کو آتش دوزخ نہیں چھوئے گی مگر تھوڑے دن جو شمار کر لئے جائیں گے. آپ فرما دیجئے کہ تم لوگوں نے اللہ سے کوئی وعدہ لے لیا ہے جس میں اللہ اپنا وعدہ خلاف نہ کرے گا. یا اللہ کے ذمہ ایسی بات لگاتے ہو جس کی کوئی بھی عملی سند اپنے پاس نہیں رکھتے کیوں نہیں جو شخص بری باتیں کرتا رہے اور اس کو اس کی خطائیں، احاطہ کر لیں سو ایسے لوگ اہل دوزخ ہیں اور وہ اس میں ہمیشہ رہیں گے.

سورہ آل عمران آیت (۲۴) ان کا یہ طرز عمل اس وجہ سے ہے کہ وہ کہتے ہیں آتش دوزخ تو ہمیں مس نہیں کر سکتی. اور اگر دوزخ کی سزا ہم کو ملے گی تو بس چند روز ان کے خود ساختہ عقیدوں نے ان کے اپنے دین کے معاملہ میں بڑی غلط فہمیوں میں ڈال رکھا ہے مگر کیا بنے گی ان پر جب ہم انہیں اس روز جمع کریں گے جس کا آنا یقینی ہے اس روز ہر شخص کو اس کی کمائی کا بدلہ پورا ملے گا اور کسی پر ظلم نہ ہو گا.

ان آیات میں اس خام عقیدے کی اللہ نے تردید کر دی ہے جس کا شکار ہو کر یہود پر محتاجی اور ذلت مسلط ہو گئی تھی. اور آج اس باطل عقیدے کو ہی اس مسلمان قوم نے اپنا ایمان بنا رکھا ہے اور ذلیل ہو رہی ہے اس شفاعت کی امید میں ہی یہ اس قدر گناہ کر رہی ہے جس کا شمار نہیں اور ان کو دیکھ کر شیطان بھی شرما رہا ہے.

ایک نظر قرآن پر اور ڈال لی جائے قرآن میں متعدد آیات میں یہ ہے کہ ہر آدمی کو اس کی کمائی کا پورا پورا بدلا دیا جائے گا. ذرا بھی ظلم نہ ہو گا. اور جب حساب کتاب ہو جائے گا تو نامہ اعمال دائیں اور بائیں ہاتھ میں دے دیا جائے گا اور جنت اور دوزخ میں ڈال دیا جائے گا. اور ہمیشہ وہاں رہنا ہے. مگر عقیدہ یہ بنا رکھا ہے کہ دوزخ سے نکلنا ہے. لیکن یہ عقیدہ قرآن کے خلاف ہے اور اس غلط عقیدے نے ہی قوم کو ذلیل بنا دیا ہے.

یہ خلاف قرآن عقیدہ کیوں بنا اس کی وجہ یہ ہے کہ قوم کے سامنے کچھ ایسی تحریر آئی جس نے اصل دین کو چھپا دیا اور مخلص علماء کرام اور ائمہ کرام بھی دھوکا کھا گئے. جیسے ایک مثال دی جا رہی ہے غور و فکر کے لئے کوئی بھی آدمی جب آئینہ کے سامنے کھڑا ہوتا ہے تو عکس وہی ہوتا ہے جو سامنے کھڑا ہے ذرہ برابر بھی فرق نہیں ہوتا. ہر آدمی یہی کہتا ہے کہ یہ فلاں کا ہی عکس ہے مگر ایک فرق ہوتا ہے جس کو جلدی سے محسوس نہیں کیا جاتا. وہ یہ کہ عکس بالکل الٹا ہوتا ہے یعنی داہنی جانب بائیں بن جاتی ہے اور بائیں دائیں بن جاتی ہے بس یہی قوم کے ساتھ ہوا. قرآن وہی اصل متن ہمارے سامنے رکھا مگر فقہ اس کے خلاف سامنے آ گیا تراجم اور تفاسیر میں اختلاف کیا. ایسے ہی قرآن کے اصل احکام سے دوری ہو گئی اور

ساتھ میں یہ بھی پابندی ہوگئی کہ قرآن کو بغیر وضو کے نہیں چھو سکتے اور قرآن ہر آدمی کے سمجھنے کی کتاب نہیں اگر قرآن کو ترجمے سے پڑھو گے تو گمراہ ہو جاؤ گے اس وجہ سے ہی ہر بات میں اختلاف ہے نہ ترجمہ ایک ہے نہ فقہ ایک ہے نہ جماعت ایک ہے نہ ایک امام. بہرحال ایک افراتفری ہے اور اس افراتفری کا نتیجہ یہ ہے کہ پوری قوم غلام ہے اور ذلت اس پر طاری ہے اللہ ہم کو یہ توفیق دے کہ نبیؐ کے فرمان کے مطابق جو قرآن سے فرمایا ہے اور آج بھی قرآن میں درج ہے پر عمل کرنے لگیں اور اپنے باطل عقیدوں سے توبہ کرلیں یہ ہوا شفاعت کے بارے میں قرآن وحدیث کی روشنی میں. حقیقت یہ سامنے آئی کہ شفاعت کی کوئی ضرورت نہیں اللہ سب کچھ جانتا ہے نامہ اعمال بن رہا ہے اس سے فیصلہ ہوگا.

(میری علماء کرام سے پرخلوص اپیل ہے کہ قوم کے سامنے وہ بات لائیں جو قرآن اور صحیح سنت میں ہو.)

कुरआन को बिना वजू के नही छू सकते और कुरआन हर व्यक्ति के समझने की पुस्तक नही, यदि कुरआन को अनुवाद से पढ़ेगे तो पथभ्रष्ट हो जाओगे, इस कारण से ही हर बात में मतभेद है न अनुवाद एक है न धर्म विधान एक है न दल एक है न एक नेता, अस्तु एक अफरातफरी है, इस अफरातफरी का परिणाम यह है कि पूरा समुदाय दास है और अपमानि हो गया है, ईश्वर हमको यह क्षमता दे कि नबी के आदेशानुसार जो कुरआन से कहा है और आज भी कुरआन में अंकित है, पर कार्य करने लगें और अपने मिथ्या आस्था से पश्चाताप कर लें, यह हुआ अनुशंसा के बारे में कुरआन व कथन के प्रकाश में, सत्यता यह सामने आई कि अनुशंसा की कोई आवश्यकता नही ईश्वर सब कुछ जानता है कर्म पत्र बन रहा है उससे निर्णय होगा,

(मेरा उलमा-ए-कराम से अनुरोध है कि जाति के सामने वह बात लाऐं जो कुरआन और सही सुन्नत में हो)

और (याद करो उस समय को) जब हमने तुम्हें (ऐ बनी ईस्राईल) फ़िरऔनियो से मुक्ति दी वह तुम्हे निकृष्टतम दुखः पहुँचाते थे, अर्थात तुम्हारे पुत्रों को वध करते थे और तुम्हारी स्त्रीयों को जीवित रखना चाहते थे, और इस दशा में तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी अर्थात तुम्हें यह प्रकट करने का अवसर दिया कि तुम कैसे कर्म करते हो स्वतंत्र होने पर (49)

اور (یاد کرو اس وقت کو) جب ہم نے تمہیں (اے بنی اسرائیل) فرعونیوں سے نجات دی وہ تمہیں بدترین دُکھ پہنچاتے تھے یعنی تمہارے بیٹوں کو ذبح کرتے تھے اور تمہاری عورتوں کا زندہ رہنا چاہتے تھے اور اس حالت میں تمہارے رب کی طرف سے تمہاری بڑی آزمائش تھی یعنی تمہیں یہ ظاہر کرنے کا موقع دیا کہ تم کیسے کام کرتے ہو آزادی ملنے پر (۴۹)

और जब हमने तुम्हारे लिए दरया चीर दिया और तुम्हे उससे पार कर दिया और फ़िरऔनियो को तुम्हारी दृष्टि के सामने उसने प्लावन कर दिया (50) 7:138,10:90, 20:77, 26:63,44:24

اور جب ہم نے تمہارے لئے دریا چیر دیا اور تمہیں اس سے پار کردیا اور فرعونیوں کو تمہاری نظروں کے سامنے اس میں ڈبودیا (۵۰)[۷:۱۳۸،۱۰:۹۰،۲۰:۷۷،۲۶:۶۳،۴۴:۲۴

याद करो जब हमने मूसा अ0 को चालीस अहोरात्री निश्चय पर बुलाया (ताके धार्मिक नियम दिए जाऐं) तो उसके बाद तुम बछड़े को अपना पूज्य बना बेठे उस समय तुमने बड़ा अत्याचार किया (51)

یاد کرو جب ہم نے موسیٰ کو چالیس شبانہ روز کی قرار داد پر بلایا (تا کہ قوانین شریعت دیے جائیں) تو اس کے پیچھے تم بچھڑے کو اپنا معبود بنا بیٹھے، اس وقت تم نے بڑی زیادتی کی (۵۱)

इस अपराध के बाद भी हमने तुमको क्षमा कर दिया, इस आशा पर कदाचित तुम आज्ञाकारी बनो (52) {2:56}

اس ظلم کے بعد بھی ہم نے تم کو معاف کردیا، اس امید پر شاید تم فرمانبردار رہو (۵۲)[۲:۵۶]

याद करो ठीक उस समय जब तुम यह अपराध कर रहे थे हमने मूसा अ0 को अपनी पुस्तक (तुम्हारे समस्त विवादों का समाधान) अर्थात सत्य और झूठ में अन्तर करने वाली (कसौटी) प्रदान की स्यात कि तुम इससे सीधा मार्ग पा सको(53)

یاد کرو کہ ٹھیک اس وقت جب تم یہ ظلم کر رہے تھے ہم نے موسیٰ کو اپنی کتاب (تمہارے جملہ متنازعہ مسائل کا حل) یعنی حق و باطل میں فرق کرنے والی (کسوٹی) عطا فرمائی شاید کہ تم اس سے سیدھا راستہ پا سکو (۵۳)

वह समय वर्णनीय है जब मूसा अ0 ने अपनी जाति से कहा ऐ जाति! निःसंदेह तुमने बछड़े को पुज्य मानकर अपनी जानों पर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पन्न करने वाले के समक्ष दोष का स्वीकरण करो (और तामस मन का विरोध करो, शैतानी विचारों जिनसे तुमने बछड़ा बना लिया था को त्याग दो) अपना सुधार करलो तुम्हारे स्वामी के समीप तुम्हारी भलाई इसी में है फिर (जब तुमने स्वीकरण और सुधार कर लिया तो) उसने तुम्हे क्षमा कर दिया, निःसंदेह वह क्षमा करने वाला है (54) {16:191, 4:29,2:235, 7:152'50, 20:91}

<u>وہ وقت قابل ذکر ہے جب موسیٰ نے اپنی قوم سے کہا اے قوم! بلاشبہ تم نے بچھڑے کو معبود ٹھہرا کر اپنی جانوں پر ظلم کیا ہے پس تم اپنے پیدا کرنے والے کے حضور غلطی کا اعتراف کرو اور نفس امارہ کی مخالفت کرو (یعنی نفس امارہ کو قتل کرو. شیطانی خیالات جن سے تم نے بچھڑا بنالیا تھا کو ترک کردو) اپنی اصلاح کرو تمہارے پروردگار کے نزدیک تمہاری بہتری اسی میں ہے پھر (جب تم نے اعتراف واصلاح کرلی تو) اس نے تمہیں معاف کردیا. بلاشبہ وہ معاف کرنے والا ہے (۵۴)</u>[۱۶:۱۱۹، ۴:۲۹، ۲:۲۳۵، ۷:۱۵۲، ۵۰، ۲۰:۹۱]

नोट :- आयत में किसी व्यक्ति को वध करने का आदेश नही है जैसा कि ज्ञानी समझ रहे है कि उनमें तीन दल या दो दल थे, आयत से किसी दल का ज्ञान नही हो रहा वरन यह प्रकट हो रहा है कि पूरा समुदाय ही बछड़े की पूजा करने लगा था, केवल श्रीमान हारुन बच गए थे पहले धर्मो और इस्लाम में विमुख होने वाले का दण्ड वध नही है फिर कैसे यहूदियो को आदेश दिया जा सकता था कि बछड़े की पूजा करने वालो को वध कर दो, और कौन वध करने वाले थे, जबकि सब ही विमुख हो गए थे (लाइकराहाफिद्दीन) जब श्रीमान मूसा अ0 वापस आए श्रीमान हारुन से ज्ञात किया तो उन्होंने कहा भाईजान! जाति मुझे निर्बल समझ रही थी, निकट था कि मुझे वध कर दे (7:150, 20:90, 91,92,93,94) इन आयतों से स्पष्ट प्रकट है कि पूरा समुदाय एक ओर था और श्रीमान हारुन अकेले बेबस थे, यदि केवल चन्द लोग पापी थे तो शेष जाति ने हज़रत हारुन अ0 का साथ क्यों न दिया, फिर यदि बछड़ा पूजने वालों का वध कर दिया गया था तो कितने बचे, जिनको वध नही किया गया, और जो बचे वह पापी न थे फिर उनको पश्चाताप करने का आदेश क्यों दिया गया? और ईश्वर ने किस जाति

نوٹ:۔ آیت میں کسی آدمی کو قتل کرنے کا حکم نہیں ہے جیسا کہ علماء نے سمجھا ہے کہ ان میں تین گروہ یا دو گروہ تھے آیت سے کسی گروہ کا پتہ نہیں چل رہا بلکہ یہ ظاہر ہو رہا ہے کہ پوری قوم گوسالہ پرست ہو گئی تھی صرف حضرت ہارون بچ گئے تھے پہلے مذاہب اور اسلام میں مرتد کی سزا قتل نہیں ہے پھر کیسے یہودیوں کو حکم دیا جا سکتا تھا کہ گوسالہ پرستوں کو قتل کردو، اور کون قتل کرنے والے تھے جب کہ سب ہی اس جرم کا ارتکاب کر چکے تھے (لا اکرہ فی الدین) جب حضرت موسیٰ واپس آئے اور حضرت ہارون سے بازپرس کی تو انہوں نے کہا بھائی جان! قوم مجھے کمزور سمجھ رہی تھی. قریب تھا کہ مجھے قتل کردیں (۷:۱۵۰، ۲۰:۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴) ان آیتوں سے صاف ظاہر ہے کہ پوری قوم ایک طرف تھی اور حضرت ہارون تنہا بے بس تھے. اگر صرف چند لوگ مجرم تھے تو باقی قوم نے حضرت ہارون کا ساتھ کیوں نہ دیا. پھر اگر بچھڑا پوجنے والوں کو قتل کر دیا گیا تھا تو کتنے بچے جن کو قتل نہیں کیا گیا، اور جو بچے وہ مجرم نہ تھے پھر ان کو توبہ کرنے کا حکم کیوں دیا گیا؟ اور اللہ نے کس قوم کو مرنے

को मरने के बाद जीवित किया था? जिसका उल्लेख आयत (2:56) में है।

सीधा सा अर्थ यह है कि अपनी काम इच्छा को जिसके कारण तुम्हारे मनों में बछड़ा पूजने की इच्छा उत्पन्न हुई है मिटा दो, और ईश्वर के समक्ष गिड़गिड़ा कर पश्चाताप करो कि अब कभी ऐसा न करोगे,

कुरआन की किसी भी आयत से बनी इस्राईल में दो या तीन दल प्रमाणित नहीं हैं फिर ज्ञानियों ने कहां से और क्यों दल लिखे हैं?

کے بعد زندہ کیا تھا؟ جس کا ذکر آیت (۵۶:۲) میں ہے

سیدھا سا مطلب یہ ہے کہ اپنی خواہشات نفسانی کو جن کی وجہ سے تمہارے دلوں میں گوسالا پرستی کا جذبہ پیدا ہوا ہے. مٹا دو اور اللہ کے حضور گڑگڑا کر توبہ کرو کہ اب کبھی ایسا نہ کرو گے

قرآن کی کسی بھی آیت سے بنی اسرائیل میں دو یا تین گروہ کی تصدیق نہیں ہے پھر عالموں نے کہاں سے اور کیوں گروہ لکھے ہیں؟

याद करो जब तुमने मूसा अ० से कहा था कि हम तुम्हारे कहने का कदापि विश्वास न करेंगे, जबतक कि अपनी आंखों से स्पष्ट, ईश्वर को (तुम से बात करते) न देख लें उस समय तुम्हारे देखते देखते एक शक्तिशाली कड़क ने तुमको आ लिया तुम मूर्छित होकर गिर चुके थे (55)

یاد کرو جب تم نے موسیٰ سے کہا تھا کہ ہم تمہارے کہنے کا ہرگز یقین نہ کریں گے جب تک کہ اپنی آنکھوں سے علانیہ اللہ کو (تم سے کلام کرتے) نہ دیکھ لیں اس وقت تمہارے دیکھتے دیکھتے ایک زبردست کڑک نے تم کو آلیا تم بے ہوش ہو کر گر چکے تھے (۵۵)

परन्तु फिर हमने तुमको बेहोशी (मौत) की स्थिति से मुक्ति दी कदाचित कि तुम उपकार के बाद आज्ञाकारी बनो (56) {7:155}

مگر پھر ہم نے تم کو بے ہوشی (موت) کی حالت سے نجات دی شاید کہ تم احسان کے بعد فرمانبردار بنو (۵۶) [۷:۱۵۵]

हमने तुम पर मेघ का साया (मौसम बरसात में) मन व सलवा (पक्षीयों का मास और वनस्पतियों का मिष्ठान का आहार तुम्हारे लिए अर्जित किया (अच्छा मौसम होने के कारण पैदा हो रहा था) और तुमसे कहा जो पवित्र वस्तुऐं हमने तुमको दी हैं उन्हें खाओ (परन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने और तुमने जो कुछ किया) वह हम पर उनका अत्याचार न था अपितु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया (57) {2:131से134, 3:93, 19:58}

ہم نے تم پر بادل کا سایہ (موسم برسات میں) من وسلویٰ (پرندوں کا گوشت اور نباتاتی شیرنی) کی غذا تمہارے لئے فراہم کی (اچھا موسم ہونے کی وجہ سے پیدا ہو رہی تھی) اور تم سے کہا جو پاک چیزیں ہم نے تم کو دی ہیں انہیں کھاؤ (مگر تمہارے اسلاف اور تم نے جو کچھ کیا) وہ ہم پر ان کا ظلم نہ تھا بلکہ انہوں نے آپ اپنے اوپر ظلم کیا (۵۷) [۲:۱۳۱تا۱۳۴، ۳:۹۳، ۱۹:۵۸]

फिर याद करो जब हमने कहा था कि यह बस्ती (जो तुम्हारे सामने है) इसमें प्रविष्ट हो जाओ इसकी उपज जिस प्रकार चाहो खाओ, परन्तु बस्ती के द्वार में ईश्वर के पूरे आज्ञाकारी (नम मस्तक) बनकर प्रविष्ट होना (और बतौर घोषणा पत्र के कहना) कहना हित्ततुन (जनता के भार उतारना कमी करना हमारा काम है अर्थात जनता को क्षमा करना न कि अत्याचारियों की भांति अत्याचार करना) इस प्रकार हम तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर देंगे और उपकारियों को अधिक उत्तमता, अनुकंपा से दया करेंगे (58)

सुज्जदवं व हित्ततुन का पूरा अर्थ मुहम्मद स० और सहाबा ने मक्का और दूसरे नगरों की विजय में प्रस्तुत किया अर्थात वह अन्यायी शासकों की भांति नही थे जिन्होंने पराजित नगरों के निवासियों पर अत्याचार करना अपना अधिकार मान लिया है और आज भी अत्याचारी ऐसा ही करते हैं {4:154, 7:161}

پھر یاد کرو جب ہم نے کہا تھا کہ یہ بستی (جو تمہارے سامنے ہے) اس میں داخل ہو جاؤ اس کی پیداوار جس طرح چاہو کھاؤ مگر بستی کے دروازے میں اللہ کے پورے فرمانبردار (سجدہ ریز) بن کر داخل ہونا (اور بطور منشور اعلان کرنا) کہنا حطۃ (عوام کے بوجھ اتارنا تخفیف کرنا ہمارا کام ہے یعنی عوام کو معاف کرنا نہ کہ ظالموں کی طرح ظلم کرنا) اس طرح ہم تمہاری خطاؤں سے درگزر کریں گے اور نیکوکاروں کو مزید فضل وکرم سے نوازیں گے (۵۸)

نوٹ:۔ سجداً وحطۃ کا پورا حق محمدؐ اور صحابہ کرام نے فتح مکہ اور دوسرے شہروں کی فتح میں پیش کیا یعنی وہ ظالم حکمرانوں کی طرح سے نہیں تھے جنہوں نے مفتوح شہروں کی آبادی پر ظلم کرنا اپنا حق مان لیا ہے اور آج بھی ظالم ایسا ہی کرتے ہیں [۴:۱۵۴، ۷:۱۶۱]

किन्तु जो बात उनसे कही गई थी अत्याचारियों ने उसे बदल कर कुछ से कुछ कर दिया, अंततः हमने (अर्थात हमारे नियम ने) अत्याचार करने वालों पर आकाश से यातना अवतरित की, यह दण्ड था उन अवज्ञाकारी का जो वह कर रहे थे, (59) {2:61, 5:22से26}

مگر جو بات ان سے کہی گئی تھی ظالموں نے اسے بدل کر کچھ اور کر دیا. آخرکار ہم نے (یعنی ہمارے قانون نے) ظلم کرنے والوں پر آسمان سے عذاب نازل کیا یہ سزا تھی ان نافرمانیوں کی جو وہ کر رہے تھے (۵۹) [۲:۶۱، ۵:۲۲تا۲۶]

याद करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो हमने कहा कि पत्थर पर अपनी लाठी मारो अतएव उससे बारह स्रोत फूट निकले और हर गोत्र ने जान लिया कि कौन सी जगह उसके पानी लेने की है, ईश्वर की दी हुई जीविका खाओ और पृथ्वी में अशान्ति फैलाते न फिरो (60)

नोट- उनको मूसा अ० ने निर्देशित कर दिया था कि अमुक गोत्र अमुक स्थान से पानी लेगा इस में परिवर्तन न कर लेना, इसलिए इस आदेशानुसार वह लोग पानी लेते थे, जब आदमी अधिक होते हैं तो नेता को ऐसी व्यवस्था करनी अनिवार्य हो जाती है जिस से कोई व्याकुलता न हो

یاد کرو جب موسیٰ نے اپنی قوم کے لئے پانی کی دعا کی تو ہم نے کہا کہ پتھر پر اپنا عصا مارو چنانچہ اس سے بارہ چشمے پھوٹ نکلے اور ہر قبیلے نے جان لیا کہ کونسی جگہ اس کے پانی لینے کی ہے اللہ کا دیا ہوا رزق کھاؤ اور پھر زمین میں فساد پھیلاتے نہ پھرو (۶۰)

نوٹ:۔ ان کو موسیٰ نے ہدایت کر دی تھی کہ فلاں قبیلہ فلاں جگہ سے پانی لے گا اس میں ردوبدل نہ کر لینا اس لئے اس حکم کے مطابق وہ لوگ پانی لیتے تھے جب آدمی زیادہ ہوتے ہیں تو امیر کو ایسا انتظام کرنا ضروری ہے جس سے کوئی پریشانی نہ ہو یاد کرو جب تم نے کہا تھا کہ اے موسیٰ ہم

याद करो जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा हम एक ही प्रकार के भोजन पर संतोष नही कर सकते, अपने प्रभु से प्रार्थना करो कि हमारे लिए भूमिक की उपज साग, भाजी, गेंहू, लेहसुन, प्याज, दाल इत्यादि उत्पन्न करे तो मूसा ने कहा क्या एक उत्तम वस्तु के बदले तुम तुछ श्रेणी की वस्तुऐं लेना चाहते हो? (अर्थात् स्वतंत्रता के बदले जो तुम को मिल गई है फिर पराधीनता में जाना चाहते हो?) अच्छा किसी नगर की आबादी में जा रहो, जो कुछ तुम मांगते हो वहां मिल जाएगा, अंततः उनकी अवज्ञा की सीमा यहां तक पहुंची कि हीनता अपमान दुर्दशा उन पर नियुक्त हो गई और वह ईश्वर की कठोर अप्रसन्नता के अधिकारी हो गए यह दण्ड उन पर इस कारण अनिवार्य हुआ कि वह ईश्वर की आयात को नकारने लगे और ईशदूतों से अकारण लड़ने लगे यह परिणाम था उनकी अवज्ञा का और इस बात का कि वह धर्म शास्त्र की सीमा से निकल निकल जाते थे (61)

ایک طرح کے کھانے پر صبر نہیں کر سکتے اپنے رب سے دعا کرو کہ ہمارے لئے زمین کی پیداوار ساگ ترکاری گیہوں، لہسن، پیاز، دال وغیرہ پیدا کرے۔ تو موسیٰ نے کہا کیا ایک بہتر چیز کے بجائے تم ادنیٰ درجے کی چیزیں لینا چاہتے ہو؟ یعنی آزادی کے بدلے جو تم کو مل گئی ہے پھر غلامی میں جانا چاہتے ہو اچھا کسی شہری آبادی میں جا رہو جو کچھ تم مانگتے ہو وہاں مل جائے گا آخر کار ان کی نافرمانی کی حد یہاں تک پہنچی کہ ذلت وخواری وبدحالی ان پر مسلط ہو گئی۔ اور وہ اللہ کی سخت ناراضگی کے حقدار ہو گئے یہ عذاب ان پر اس لئے واجب ہوا کہ وہ اللہ کی آیات سے کفر کرنے لگے اور رسولوں سے ناحق لڑنے لگے یہ نتیجہ تھا ان کی نافرمانی اور زیادتی کا کہ حدود شرع سے نکل جاتے تھے۔ (۶۱)

नोट- (वयकतुलू नन्नबिय्यीना बिगेरिल हक्कि) का अनुवाद 'अकारण विवाद करने' लगे किया गया है, इस अनुवाद के प्रमाणिकरण के लिए निम्नलिखित आयतों का ध्यान पूर्वक वाचन अनिवार्य है जिसमें वध का अर्थ स्पष्ट लड़ाई झगड़ा युद्ध ही सिद्ध हो रहा है (58:21) दूसरी बात विचार योग्य यह है कि ईश्वर कहता है कि मैं और मेरे ईशदूत ही प्रभुत्वशाली रहते हैं और ईश्वर की सहायता हर समय अपने ईशदूतों के साथ है, जैसे हज़रत ईसा अ0 को वध होने से बचाया, मुहम्मद स0 को भी शत्रुओं से बचाकर स्वदेश पलायन करा दिया और हर समय आपकी सहायता होती रही, हज़रत मूसा अ0 को बचपन में ही शत्रु से बचाकर उसके घर में ही पालन पोषण करा दिया और दूध भी अपनी माता का ही पिलाया, और कुरआन में घोषणा कर दी कि ऐ मेरे ईशदूतों! तुम निर्भीक होकर धर्म का प्रचार करो मेरी सहायता तुम्हारे साथ है (5:67), ईश्वर की मदद होते हुए शत्रु रसूलों को कैसे वध कर सकते हैं, इस शब्द का अर्थ इन आयतों में वध नही अपितु ईशदूतों से झगड़ा, युद्ध है जो कुरआन की आयतों से प्रमाणित है (26:14)

एक बात और विचारणीय है कि जिन लोगों ने इन आयात में ईशदूतों का वध करना लिखा है वह लोग किसी ऐसे ईशदूत का नाम कुरआन से प्रस्तुत नही कर सके जिसको कुरआन में लिखा हो कि अमुक नबी को अमुक जाति ने वध किया हो, जबकि कुरआन से कई ऐसे ईशदूतों के नाम प्रमाणित हो रहे हैं कि अमुक अमुक ईशदूत को शत्रु ने वध करना चाहा परन्तु ईश्वर ने उनको बचा लिया, जैसे श्रीमान इब्राहीम अ0, ईसा अ0, मूसा अ0 और श्रीमान मुहम्मद स0 इत्यादि

जो ईशदूतों के वध को मान रहे हैं उनको किसी ईशदूत का नाम कुरआन से प्रस्तुत करना चाहिए किन्तु उन्होंने केवल इसराईलयात की रवायात को अपने सामने रखा जो अनुचित है निम्न में उन आयात का सन्दर्भ लिखा जा रहा है जिसमें सहायता और विवाद का उल्लेख है, ईशदूतों की सहायता वाली आयात-{12:110,15:94,95,20:46,21:9,69,70,26:14,15,27:50,28:25,40:5,45;8:30;9:40;10:13;36:26,27}
झगड़े वाली आयात {58:21,2:91,190,193,246,87,11:113,17:74,68:9;10:20;48:16;49:9;59:14;49:9;60:8,9;33:48;22:39}

نوٹ:۔[یقتلون النبیین بغیر الحق] کا مفہوم ناحق لڑنے لگے کیا گیا ہے۔ اس مفہوم کی تصدیق کے لئے درج ذیل آیتوں کا بغور مطالعہ ضروری ہے جس میں قتل کا مطلب صاف طور پر لڑائی جھگڑا جنگ ہی ثابت ہو رہا ہے (۵۸:۲۱) دوسری قابل غور بات یہ ہے کہ اللہ کہتا ہے کہ میں اور میرے رسول ہی غالب رہتے ہیں اور اللہ کی مدد ہر وقت اپنے رسولوں کے ساتھ ہے جیسے حضرت عیسیٰؑ کو قتل کی سازش سے بچایا محمدؐ کو بھی دشمنوں سے بچا کر ہجرت کرادی اور ہر وقت آپ کی مدد ہوتی رہی۔ حضرت موسیٰؑ کو بچپن میں ہی دشمن سے بچا کر اس کے گھر میں ہی پرورش کرادی اور دودھ بھی اپنی ماں کا ہی پلایا اور قرآن میں اعلان کر دیا کہ اے میرے نبیو! تم بے خوف ہو کر دین کی تبلیغ کرو میری مدد تمہارے ساتھ ہے (۵:۶۷)، اللہ کی مدد ہوتے ہوئے دشمن رسولوں کو کیسے قتل کر سکتے ہیں، اس لفظ کا مطلب ان آیتوں میں قتل نہیں ہے بلکہ نبیوں سے جھگڑا جنگ ہے جو قرآن کی آیتوں سے ثابت ہے (۲۶:۱۴)

ایک بات اور قابل غور ہے کہ جن لوگوں نے ان آیات میں نبیوں کا قتل کرنا لکھا ہے وہ لوگ کسی ایسے نبی کا نام قرآن سے پیش نہیں کر سکے جس کو قرآن میں لکھا ہو کہ فلاں نبی کو فلاں قوم نے قتل کیا ہو جب کہ قرآن سے کئی ایسے نبیوں کے نام ثابت ہو رہے ہیں کہ فلاں فلاں نبی کو دشمنوں نے قتل کرنا چاہا مگر اللہ نے ان کو بچایا جیسے حضرت ابراہیمؑ عیسیٰؑ موسیٰؑ اور حضرت محمدؐ وغیرہ

جو نبیوں کے قتل کو مان رہے ہیں ان کو کسی نبی کا نام قرآن سے پیش کرنا چاہیئے تھا مگر انہوں نے صرف اسرائیلیات کی روایات کو اپنے سامنے رکھا جو غلط ہے ذیل میں ان آیات کا حوالہ لکھا جا رہا ہے جس میں مدد اور جھگڑے کا ذکر ہے۔

رسولوں کی مدد والی آیات:[۱۲:۱۱۰، ۱۵:۹۴'۹۵، ۲۰:۴۶، ۲۱:۹'۶۹'۷۰، ۲۶:۱۴'۱۵، ۲۷:۵۰، ۲۸:۲۵، ۴۰:۵'۵۵، ۸:۳۰، ۹:۴۰، ۱۰:۱۱۳، ۳۶:۲۶، ۲۷]

جھگڑے والی آیات:[۵۸:۲۱، ۲:۹۱'۹۳'۱۹۱'۲۴۶، ۸۷:۲۰، ۴۸:۱۶، ۴۹:۹، ۵۹:۱۴، ۶۰:۸'۹، ۳۳:۴۸، ۲۲:۳۹، ۱۰:۲۰، ۱۱:۱۱۳، ۱۷:۷۴، ۶۸:۹، ۲:۱۲، ۸۷

विश्वास करो कि नबी अरबी के मानने वाले हो (अर्थात मुसलमान हों) या यहूदि ईसाई हो या साबी (या और कोई हो) जो ईश्वर पर और प्रतिदान दिवस पर (अर्थात नबी अरबी मुहम्मद स0 पर अवतरित किए हुए कुरआन पर) विश्वास करेगा उसका प्रतिदान उसके ईश्वर के

یقین جانو کہ نبی عربی کے ماننے والے ہوں (یعنی مسلمان ہوں) یا یہودی، عیسائی ہوں۔ یا صابی (یا اور کوئی ہوں) جو اللہ پر اور روز آخر پر (یعنی نبی عربی محمدؐ پر نازل کئے ہوئے قرآن پر) ایمان لائے اور نیک عمل کرے گا اس کا اجر اس کے رب کے

पास है और उसके लिए किसी भय और कलेश का अवसर नहीं (62) {9:18, 2:12,59,137, 4:136, 22:17}

پاس ہےاور اس کے لئے کسی خوف اور رنج کا موقعہ نہیں ہے(۶۲)[۹:۱۸، ۲:۱۲، ۵۹، ۱۳۷، ۴:۱۳۶، ۲۲:۱۷]

नोट- मुसलमान इस धोके में हैं कि हमको तो हर मूल्य पर क्षमा कर दिया जाएगा क्योंकि हमारे नबी हमको नर्क से निकाल लेंगे, अनुशंसा करके नबी के साथ-साथ सदाचारियों अबोध बच्चों को भी अपना शफ़ी मान रखा है और यदि एक हाफ़िज़ (रक्षक) हो गया तो वह सात अगली और सात पिछली पीढ़ियों जिन पर नर्क अनिवार्य हो चुका होगा स्वर्ग में ले जाएगा, परन्तु यह आस्था अनुचित है, वास्तविकता ईश्वर ने इस आयत या दूसरी आयतों में बता दी है अर्थात् मोक्ष अच्छे कर्मों से होगी और वह भी मुहम्मद स० पर अवतरित कुरआन के अनुसार आस्था व कर्म पर {2:89,91,2:120,121,125,129,136,137, 142,3:18से22,31,68,81से83,91,95से102,114से120,134, 4:47,170, 5:10,13से16,19,31,68,82से86,93, 6:109, 7:156,157, 9:18, 2:109}

نوٹ:۔مسلمان اس دھوکے میں ہیں کہ ہم تو ہر قیمت پر بخشے جائیں گے. کیونکہ ہمارے نبی ہم کو دوزخ سے نکال لیں گے. شفاعت کر کے. نبی کے ساتھ ساتھ نیک آدمیوں نابالغ بچوں کو بھی اپنا شفاعت کرنے والا مان رکھا ہے اور اگر ایک حافظ ہوگیا تو وہ سات اگلی اور سات پچھلی پشتیں جن پر دوزخ واجب ہوچکی ہوگی جنت میں لے جائے گا مگر یہ عقیدہ غلط ہے. حقیقت اللہ نے اس آیت یا دوسری آیتوں میں بتادی ہے یعنی بخشش نیک عمل سے ہوگی اور وہ بھی محمدؐ پر نازل شریعت قرآن کے مطابق ایمان و عمل پر[۲:۸۹، ۹۱، ۲:۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۵، ۱۲۹، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۴۲، ۳:۱۸ تا ۲۲، ۳۱، ۶۸، ۸۱ تا ۸۳، ۹۱، ۹۵ تا ۱۰۲، ۱۱۴ تا ۱۲۰، ۱۳۴، ۴:۴۷، ۱۷۰، ۵:۱۰، ۱۳ تا ۱۶، ۱۹، ۳۱، ۶۸، ۸۲ تا ۸۶، ۹۳، ۶:۱۰۹، ۷:۱۵۶، ۱۵۷، ۹:۱۸، ۲:۱۰۹]

और वह समय उल्लेखनीय है जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली थी (2:40) और (तुम पर्वत की झुकी हुई चट्टान के नीचे थे या तुमको भय के कारण ऐसा लग रहा था मानो कि) हमने तूर पर्वत को तुम्हारे ऊपर ऊंचा कर दिया था (हमने आदेश दिया कि) जो पुस्तक तुमको दी है उसे शक्ति के साथ पकड़ लो और जो कुछ इसमें अंकित है उसे जीवन के हर स्थान पर याद रखना (उसके विरुद्ध कर्म न करना, ताकि तुम जीवन की आशंकाओं से बच जाओ (63) {2:93}

اور وہ وقت قابل ذکر ہے جب ہم نے تم سے پکا عہد لیا (۲:۴۰)اور (تم پہاڑ کی جھکی ہوئی چٹان کے نیچے تھے یا تم کو خوف کی وجہ سے ایسا لگ رہا تھا گویا کہ) ہم نے طور کو تمہارے اوپر بلند کر دیا تھا (ہم نے حکم دیا کہ) جو کتاب ہم نے تم کو عطا کی ہے اسے قوت کے ساتھ تھام لو اور جو کچھ اس میں درج ہے اسے زندگی کے ہر مقام پر یاد رکھنا (اس کے خلاف عمل نہ کرنا تاکہ تم زندگی کے خطرات سے بچ جاؤ)(۶۳)[۲:۹۳]

किन्तु इसके बाद तुम अपने प्रण से फिर गए यदि तुम पर ईश्वर की कृपादया न होता (अर्थात हमारा प्रेषित किया हुआ नियम तुम्हारे बीच न होता और अपने समय पर मूसा व हारून न होते) तो तुम अवश्य घाटा खाने वालों में से हो जाते (64)

مگر اس کے بعد تم اپنے عہد سے پھر گئے اگر تم پر اللہ کا فضل نہ ہوتا (یعنی ہمارا نازل کردہ قانون تمہارے درمیان نہ ہوتا اور اپنے وقت پر موسیٰ و ہارون نہ ہوتے) تو تم ضرور گھاٹا کھانے والوں میں سے ہوجاتے (۶۴)

फिर तुम्हें अपनी जाति के उन लोगों की कथा तो ज्ञात ही है, जिन्होंने सबत का नियम तोड़ा था, हमने (अर्थात हमारे विधान ने) कह दिया सिद्ध कर दिया कि बन्दर बन जाओ (अर्थात बन्दर बन गए) और इस दशा में रहो कि हर ओर से तुम पर धिक्कार, फटकार पड़े (65) {4:47,154, 7:167,163, 5:60, 2:61,85, 76:28}

پھر تمہیں اپنی قوم کے ان لوگوں کا قصہ تو معلوم ہی ہے جنہوں نے سبت کا قانون توڑا تھا ہم نے (یعنی ہمارے قانون نے) کہدیا ثابت کردیا کہ بندر بن جاؤ (یعنی بندر بن گئے) اور اس حال میں رہو کہ ہر طرف سے تم پر دھتکار پھٹکار پڑے (۶۵)[۷:۱۶۳، ۴:۱۵۴، ۴۷، ۷:۱۶۷، ۵:۶۰، ۲:۶۱، ۸۵، ۷۶:۲۸]

नोट- आज भी संसार में बहुत बन्दर हैं और हर आदमी जानता है कि उनका स्वभाव क्या है अर्थात वह सदैव आदमी को व्याकुल करते हैं कोई कपड़ा सूखने डाल दिया या कोई और वस्तु उनको मिल जाए तो वह उठाकर ले जाते हैं और फाड़ देते हैं, अतः आदमी उनको मार भगाता है धिक्कार फटकार पड़ती रहती है उनकी इस बुरी प्रकृति के कारण, इसी प्रकार वह बनी इस्राईल ईश्वर के नियम की अवहेलना करते करते इस स्थान पर पहुंच गए थे कि अच्छा काम करना उनके लिए कठिन था (61:5) और उनका नेतृत्व ऐसे अयोग्य इन्सानों के हाथ आ गया था जो अपने हित के लिए हर आदमी को ऐसे नचाते थे जैसे कलन्दर बन्दर को नचाता है, जहां चाहता है बांधता है, क्योंकि बन्दर की रस्सी कलन्दर के हाथ होती है, ऐसे ही उन अवज्ञाकारी इन्सानों की रस्सी शैतान जैसे इन्सानों के हाथ थी वह कलन्दर ईश्वर के नियम के विरुद्ध कर्म कराते थे, अपनी ओर से अवैध वैध करके, दूसरा कारण उनकी विमुखता का यह था कि ईश्वर ने उनको बार-बार क्षमा किया तो इस क्षमा करने से उन्होंने यह समझ लिया कि हमको ईश्वर क्षमा कर ही देगा, परन्तु उन्होंने ईश्वर की इस दया का लाभ न उठाया, अपितु इस दया से अधिक अवज्ञा की, अन्तिम सीमा आने पर ईश्वर ने अपने नियम के अनुसार कहा कि अब तुम स्वभाव

نوٹ: آج بھی زمانے میں بہت بندر ہیں اور ہر آدمی جانتا ہے کہ ان کی عادت کیا ہے. یعنی وہ ہمیشہ آدمی کو پریشان کرتے ہیں کوئی کپڑا سوکھنے کے لئے ڈال دیا کوئی اور چیز ان کو مل جائے تو وہ اٹھا کر لے جاتے ہیں. اور پھاڑ دیتے ہیں. اس لئے آدمی ان کو مار بھگاتا ہے دھتکار پھٹکار پڑتی رہتی ہے ان کی اس بری خصلت کی وجہ سے اسی طرح وہ بنی اسرائیل اللہ کے قانون کی خلاف ورزی کرتے کرتے اس مقام پر پہنچ گئے تھے کہ اچھا کام کرنا ان کے لئے مشکل تھا (۶۱:۵) اور ان کی قیادت ایسے ناکارہ انسانوں کے پاس آ گئی جو اپنے مفاد کے لئے ہر آدمی کو ایسے نچاتے تھے جیسے قلندر بندر کو نچاتا ہے. جہاں چاہتا ہے باندھتا ہے. کیونکہ بندر کی رسی قلندر کے ہاتھ ہوتی ہے. ایسے ہی ان نافرمان انسانوں کی رسی شیطان جیسے انسانوں کے ہاتھ تھی وہ قلندر اللہ کے قانون کے خلاف عمل کراتے تھے اپنی طرف سے حرام حلال کر کے دوسری بات ان کے انحراف کی یہ تھی کہ اللہ نے ان کو بار بار معاف کیا تو اس معاف کرنے سے انہوں نے یہ سمجھ لیا کہ ہم کو اللہ معاف کر ہی دے گا مگر انہوں نے اللہ کے اس کرم کا فائدہ نہ اٹھایا. بلکہ اس کرم سے زیادہ نافرمانی کی آخر حد آنے پر اللہ نے اپنے قانون کے مطابق کہا کہ اب تم خصلت

से बन्दर हो गए हो तो बन्दर ही रहो, मूर्ख बनना चाहते हो तो बन जाओ.

کے اعتبار سے بندر ہو گئے ہو تو بندر ہی رہو۔ احمق بنا چاہتے ہو تو بن جاؤ.

वास्तव में वह शरीर से बन्दर न थे अपितु स्वभाव के अनुसार वह बन्दर हो गए थे, इसी प्रकार जब भी कोई जाति उनकी भांति व्यवहार करेगी वह भी उनकी भांति होगी.

حقیقت میں وہ جسم کے اعتبار سے بندر نہ تھے بلکہ خصلت کے مطابق وہ بندر ہو گئے تھے۔ اسی طرح جب بھی کوئی قوم ان کی طرح کے عمل کرے گی وہ بھی ان کی طرح ہوگی.

इसी प्रकार हमने उनके परिणाम को उस काल के लोगों और बाद के आने वाले वंशों के लिए शिक्षा और डरने वालों के लिए उपदेश बना कर छोड़ा (66)

اس طرح ہم نے ان کے انجام کو اس زمانے کے لوگوں اور بعد کی آنے والی نسلوں کے لئے عبرت اور ڈرنے والوں کے لئے نصیحت بنا کر چھوڑا (٦٦)

नोट- अर्थात् अवज्ञा करने के कारण उनसे अपनी दया दूर कर दी और वह हर ओर अपमान के साथ मारे मारे फिरने लगे जो सम्मान था वह मिट्टी में मिल गया, आज भी ईश्वर का यही नियम है जो ईश्वर की मानता है वह सम्मान के साथ रहता है और जो अवज्ञा करता है उसके लिए अपमान है दोनों स्थान पर बन्दर की भांति.

نوٹ:۔ یعنی خلاف ورزی کرنے کے سبب ان سے اپنی رحمت دور کردی اور وہ ہر طرف ذلت کے ساتھ مارے مارے پھرنے لگے جو عزت تھی وہ خاک میں مل گئی۔ آج بھی اللہ کا یہی قانون ہے جو اللہ کی مانتا ہے وہ عزت کے ساتھ رہتا ہے اور جو خلاف ورزی کرتا ہے اس کے لئے ذلت ہے۔ دونوں جگہ مثل بندر کے.

फिर वह घटना याद करो जब मूसा अ० ने अपनी जाति से कहा कि ईश्वर तुम्हें एक गाय वध करने का आदेश देता है, वह कहने लगे क्या तुम हमसे उपहास करते हो मूसा अ० ने कहा मैं इससे ईश्वर की शरण मांगता हूं कि मूर्खों जैसी बात करूं (67)

پھر وہ واقعہ یاد کرو جب موسیٰ نے اپنی قوم سے کہا کہ اللہ تمہیں ایک گائے ذبح کرنے کا حکم دیتا ہے۔ وہ کہنے لگے کیا تم ہم سے مذاق کرتے ہو۔ موسیٰ نے کہا میں اس سے اللہ کی پناہ مانگتا ہوں کہ جاہلوں کی سی بات کروں (٦٧)

समुदाय ने कहा ऐ मूसा अ० अपने रब से प्रार्थना करो कि वह कैसी हो आप ने कहा, ईश्वर का आदेश है कि वह ऐसी गाय होनी चाहिए जो न बूढ़ी हो और न बछिया, अपितु बीच आयु की हो, अतः जिस कार्य का आदेश दिया जाता है वह करो (68)

قوم نے کہا اے موسیٰ اپنے رب سے درخواست کرو کہ وہ کیسی ہو آپ نے فرمایا اللہ کا ارشاد ہے کہ وہ ایسی گائے ہونی چاہیئے جو نہ بوڑھی ہو اور نہ بچھیا۔ بلکہ درمیانی عمر کی ہو۔ پس جس کام کا حکم دیا جاتا ہے وہ کرو (٦٨)

जाति ने फिर कहा कि अपने रब से ज्ञात करो कि उसका रंग क्या हो, मूसा अ० ने कहा वह आदेश देता है कि पीत रंग की गाय होनी चाहिए जिसका रंग ऐसा चमकीला हो कि देखने वालों का मन प्रसन्न हो जाए (69)

قوم نے پھر کہا کہ اپنے رب سے پوچھنے کہ اس کا رنگ کیا ہو۔ موسیٰ نے کہا وہ فرماتا ہے کہ زرد رنگ کی گائے ہونی چاہیئے جس کا رنگ ایسا چمکیلا ہو کہ دیکھنے والوں کا جی خوش ہو جائے (٦٩)

फिर बोले आप अपने ईश्वर से ज्ञात करो कि वह गाय कैसी हो निःसन्देह वह गाय हम पर संदिग्ध हो गई है और निःसन्देह ईश्वर यही चाहता है तो हम अवश्य पता पालेंगे (70)

پھر بولے آپ اپنے رب سے معلوم کریں کہ وہ گائے کیسی ہو۔ بلاشبہ وہ گائے ہم پر مشتبہ ہو گئی ہے۔ اور بے شک اللہ یہی چاہتا ہے تو ہم ضرور پتہ پالیں گے (٧٠)

श्रीमान मूसा अ० ने कहा वह कहता है कि वह ऐसी होनी चाहिए जिससे सेवा नही ली गई हो न भूमि जोतती हो न पानी खीचती हो, यथोचित व स्वस्थ और बेकलंक हो, उस पर वह पुकार उठे कि हां अब तुम ने ठीक पता बताया है, फिर उन्होंने उसे वध किया, यद्यपि वह करना नहीं चाहते थे (71)

حضرت موسیٰ نے کہا وہ فرماتا ہے کہ وہ ایسی ہونی چاہیئے جس سے خدمت نہیں لی گئی ہو نہ زمین جوتتی ہو نہ پانی کھینچتی ہو۔ صحیح سالم اور بے داغ ہو۔ اس پر وہ پکار اٹھے کہ ہاں اب تم نے ٹھیک پتہ بتایا ہے پھر انہوں نے اسے ذبح کیا حالانکہ وہ کرنا نہیں چاہتے تھے (٧١)

नोट- गाय वध करने का आदेश ईश्वर ने इसलिए दिया था क्योंकि बनी इस्राईल मिस्र वालों के साथ रहते थे, चूंकि मिस्र वाले गाय की पूजा करते थे इसलिए गाय की महानता मिस्र वालों की भांति उनके हृदयों में बस गई थी और गाय की पूजा करने लगे थे, इसलिए ही उन्होंने मिस्र से निकलते ही बछड़े को पूज्य बना लिया था, गाय के स्नेह के कारण हज़रत मूसा अ० का आदेश अर्थात ईश्वर का आदेश मूसा अ० के द्वारा मानने को कटिबद्ध न थे, बाद को विवश होकर उन्होंने बछड़े को वध किया, यदि वह पहले ही एक बछड़ा वध कर देते तो स्यात उनका देवता जिसकी वह पूजा करने लगे थे बच जाता, परन्तु बार-बार ज्ञात करने के बाद अन्त में चिन्ह उसी बछड़े पर आ गया और वह बछड़ा वध हो गया, तब उनको ज्ञात हुआ कि यदि यह गाय या बछड़ा देवता होता तो वध न होता, इस प्रकार ईश्वर ने बछड़े की

نوٹ:۔ گائے ذبح کرنے کا حکم اللہ نے اس لئے دیا تھا کیونکہ بنی اسرائیل اہل مصر کے ساتھ رہتے تھے چونکہ اہل مصر گائے کی پوجا کرتے تھے اس لئے گائے کی عظمت مصر والوں کی طرح ان کے دلوں میں بس گئی تھی اور گائے پرستی کرنے لگے تھے اس لئے ہی انہوں نے مصر سے نکلتے ہی بچھڑے کو معبود بنا لیا تھا۔ گائے کی محبت کی وجہ سے ہی حضرت موسیٰ کا حکم یعنی اللہ کا حکم بذریعہ موسیٰ ماننے کو تیار نہ تھے بعد کو مجبوری کے تحت انہوں نے بچھڑے کو ذبح کیا اگر وہ پہلے ہی ایک بچھڑا ذبح کر دیتے تو شاید ان کا معبود جس کی وہ پوجا کرنے لگے تھے بچ جاتا مگر بار بار معلوم کرنے کے بعد آخر میں نشانی اسی بچھڑے پر آگئی اور وہ بچھڑا ذبح ہو گیا۔ تب اُن کو معلوم ہوا کہ اگر یہ گائے

वास्तविकता बताने के लिए गाय वध करने का आदेश दिया,बनी इस्राईल की टाल मटोल केवल आस्था के कारण थी विवश होकर वध किया,

किन्तु इसके बाद भी वह समुदाय ईश्वर से विद्रोह ही करता रहा, अंत में उन पर हीनता निर्धनता नियुक्त हो गई, इसी प्रकार जो जाति भी अवज्ञा करेगी उस पर भी हीनता नियुक्त होगी यह ईश्वर का नियम है {2:54, 7:152}

आयात उपरोक्त में बनी इस्राईल की भ्रांति को समाप्त करना था जो मिस्र में रहते हुए उनमें परवान चढ़ गई थी आगे वाली आयात में एक दूसरी घटना का वर्णन किया जा रहा है, जो इस गाय वाली घटना से अलग है, यद्यपि अनुवादकों ने दोनों घटनाओं को जोड़ दिया है मैंने क्या समझा है वह प्रस्तुत है,

और (याद करो ऐ बनी इस्राईल) जब तुमने एक आदमी को वध कर दिया, अतः तुमने उसके विषय में आपस में नरमी बरती अर्थात् हत्यारे को छुपा लिया यद्यपि ईश्वर प्रकट करने वाला था जिसे तुम छुपा रहे थे (72)

अतः हमने नबी के द्वारा कहा कि घटना वध को अलग-अलग भागों में नबी के सामने वर्णन (ज़राबा) करो तो नबी सत्य को पा लेंगे, बस ऐसे ही ईश्वर मृतकों को जीवन प्रदान करता है और तुम्हें अपने चिन्ह दिखाता है ताकि तुम समझो (73)

नोट- इस प्रकार खोज व जांच से नबी ने उस बधक का पता पा लिया और बधक को दण्ड दिया, अर्थात् बदले में उस बधक को वध कर दिया गया, जिसके लिए ईश्वर ने कहा ईश्वर इस प्रकार मृतकों को जीवन प्रदान करता है अर्थात् कसास में जीवन है जो आयत कहती है और प्रलय में भी तुमको ईश्वर जीवित करेगा, जब तुम लेखा दोगे, आज भी हम देखते है कि जो वाद उलझ जाता है बधक आदि का कुछ पता नही चलता तो उस समय खोज होती है और न जाने कितने संदिग्ध व्यक्तियों से जानकारी की जाती है वह व्यक्ति वक्तव्य देते है और अनुसंधान करने वाले उन व्यक्तियों से मूल हत्यारे या अपराधी का पता लगा लेते हैं जो ठीक होत है, यही विधि ईश्वर ने ईशदूत को बताई थी {2:179}

फिर (इस प्रकार बार-बार की अवहेलना का परिणाम यह हुआ कि) इसके पश्चात् तुम्हारे हृदय कठोर हो गए मानो कि वह पत्थर के समान है या उससे भी अधिक कठोर यद्यपि कतिपय पत्थर ऐसे है, उनसे नहरें जारी हो जाती है, कोई उनमें ऐसे भी है कि (वह हमारे नियमानुसार) फट जाते है और उनसे पानी के स्रोत बह निकलते है और उनमें से वह भी है कि वह अपना स्थान बदल देते है ईश्वर के भय से (यद्यपि उनको प्रलोक का कोई भय नही, परन्तु ऐ इन्सान तुझे प्रलोक का प्रसंग उपस्थित है, इसके अतिरिक्त तू ईश्वर की अवज्ञा करता है तुझे भय नही) ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अनजान नही (74) {2:24, 57:16}

(ऐ अहले ईमान) बनी इस्राईल की यह दशा जान लेने के पश्चात् क्या तुम यह आशा रखते हो कि वह तुम्हारे निमंत्रण पर आस्था ले आयेंगे? यद्यपि उनमें से एक दल ऐसा है कि ईश्वर का कथन सुनकर और फिर अच्छी प्रकार समझकर ज्ञानतः उसमें परिवर्तन करता है (75)

और वह लोग जब आस्तिकों से मिलेंगे तो कहेंगे कि हम आस्तिक है और जब आपस में ऐकान्त में मिलेंगे तो (आपस में) कहेंगे (कि ऐ भ्राताओं)

یا بچھڑا معبود ہوتا تو ذبح نہ ہوتا. اس طرح اللہ نے بچھڑے کی حقیقت بتانے کے لئے گائے ذبح کرنے کا حکم دیا. بنی اسرائیل کی ٹال مٹول صرف عقیدت کی وجہ سے تھی مجبور ہو کر ذبح کیا. مگر اس کے باوجود بھی وہ قوم اللہ سے بغاوت ہی کرتی رہی آخر میں ان پر ذلت محتاجی مسلط ہو گئی. اس طرح جو قوم بھی بغاوت کرے گی اس پر بھی ذلت مسلط ہوگی یہ اللہ کا قانون ہے (۲:۵۴، ۷:۱۵۲)

آیات بالا میں بنی اسرائیل کے خام عقیدے کو ختم کرنا تھا. جو مصر میں رہتے ہوئے ان میں پروان چڑھ گیا تھا آگے والی آیات میں ایک دوسرے واقعہ کی نشان دہی کی جا رہی ہے. جو اس گائے والے واقعہ سے بالکل الگ ہے. حالانکہ مترجمین نے دونوں کو منسلک کر دیا ہے میں نے کیا سمجھا ہے وہ پیش ہے

اور (یاد کرو اے بنی اسرائیل) جب تم نے ایک آدمی کو قتل کر دیا پس تم نے اس کے بارے میں باہم نرمی برتی یعنی قاتل کو چھپا لیا، حالانکہ اللہ ظاہر کرنے والا تھا جسے تم چھپا رہے تھے (۷۲)

پس ہم نے نبی کے ذریعہ کہا کہ واقعہ قتل کو الگ الگ حصوں میں نبی کے سامنے بیان (ضرب) کرو تو نبی حقیقت کو پا لیں گے. بس ایسے ہی اللہ مردوں کو زندگی بخشتا ہے اور تمہیں اپنی نشانیاں دکھاتا ہے تا کہ تم سمجھو (۷۳)

نوٹ:۔ اس طرح تفتیش و تحقیق کے ذریعہ نبی نے اس قاتل کا پتہ پا لیا اور قاتل کو سزا دی گئی یعنی قصاص میں اس کو قتل کر دیا گیا جس کے لئے اللہ نے کہا اللہ اس طرح مردوں کو زندگی بخشتا ہے یعنی قصاص میں زندگی ہے جو آیت کہتی ہے اور آخرت میں بھی تم کو اللہ زندہ کرے گا جب تم حساب دو گے آج بھی ہم دیکھتے ہیں کہ جو کیس الجھ جاتا ہے قاتل وغیرہ کا کچھ پتہ نہیں چلتا تو اس وقت تفتیش ہوتی ہے اور نہ معلوم کتنے مشتبہ افراد سے معلومات کی جاتی ہے وہ آدمی بیان دیتے ہیں اور تحقیق کرنے والے ان بیانوں سے اس قاتل یا مجرم کا پتہ لگا لیتے ہیں، جو بالکل درست ہوتا ہے یہی طریقہ اللہ نے نبی کو بتلایا (۲:۱۷۹)

پھر (اس طرح بار بار کی نافرمانی کا یہ نتیجہ ہوا کہ) اس کے بعد تمہارے دل (انسانیت کی طرف سے) سخت ہو گئے. گویا کہ وہ پتھر کے مانند ہیں یا اس سے بھی زیادہ سخت حالانکہ بعض پتھر ایسے ہیں اُن سے نہریں جاری ہو جاتی ہیں. کوئی ان میں ایسے بھی ہیں کہ (وہ ہمارے قانون کے مطابق) پھٹ جاتے ہیں اور ان سے پانی کے چشمے بہہ نکلتے ہیں اور ان میں سے وہ بھی ہیں کہ وہ اپنی جگہ بدل دیتے ہیں اللہ کے خوف سے (حالانکہ ان کو آخرت کا کوئی خوف نہیں مگر اے انسان تجھے آخرت کا معاملہ درپیش ہے اس کے باوجود تو اللہ کی نافرمانی کرتا ہے تجھے خوف نہیں) اللہ تمہارے کاموں سے بے خبر نہیں ہے (۷۴) [۲:۲۴، ۵۷:۱۶]

(اے اہل ایمان) بنی اسرائیل کے یہ حالات جان لینے کے بعد کیا تم یہ امید رکھتے ہو کہ وہ تمہاری دعوت پر ایمان لے آئیں گے؟ حالانکہ ان میں سے ایک گروہ ایسا ہے کہ اللہ کا کلام سن کر اور پھر خوب سمجھ کر دانستہ اس میں تحریف کرتا ہے (۷۵)

اور وہ لوگ جب اہل ایمان سے ملیں گے تو کہیں گے ہم مومن ہیں اور جب باہم تنہائی میں ملیں گے تو (آپس

क्या तुम उन मुसलमानों से वह बातें वर्णन कर देते हो जो ईश्वर ने तुम पर खोली है (परिणाम यह होगा) कि वह लोग तुम को तर्क में पराजित कर देंगे, उसके साथ जो तुम्हारे रब के पास से है तो क्या तुम समझते नही? बुद्धि से काम नही लेते (76)

میں) کہیں گے (کہ اے برادران قوم) کیا تم ان مسلمانوں سے وہ باتیں بیان کرگزرتے ہو جو اللہ نے تم پر کھولی ہیں (تو نتیجہ یہ ہوگا) کہ وہ لوگ تم کو حجت میں مغلوب کردیں گے اس کے ساتھ جو تمہارے رب کے پاس سے ہے تو کیا تم سمجھتے نہیں؟ عقل سے کام نہیں لیتے (۷۶)

और क्या वह नही जानते कि ईश्वर उस वस्तु को भी जानता है जिसे वह छुपाते है और उस वस्तु को भी जानता है जिसको वह प्रकट करते है. (77)

اور کیا وہ نہیں جانتے کہ اللہ اس چیز کو بھی جانتا ہے جسے وہ راز میں رکھتے ہیں اور اس چیز کو بھی جانتا ہے جس کا وہ اظہار کرتے ہیں (۷۷)

उन में एक दल उम्मीयों का है जो तौरात (पुस्तक) का ज्ञान नही रखता, पस कुछ धारणाओं को उन्होंने धर्म समझ रखा है और वह केवल अनुचित अनुमान लगा रहे है (78)

ان میں ایک گروہ امیوں کا ہے جو تورات (کتاب) کا علم نہیں رکھتا پس چند خیالات کو انہوں نے دین سمجھ رکھا ہے اور وہ صرف بے جا قیاس آرائی کررہے ہیں (۷۸)

नोट- यही दशा आज मुसलमानों की है अर्थात कुरआन से बहुत दूर है और वर्गों में बंट गए है और उसको ही उन्होंने धर्म मान लिया, और उसके अनुसार ही कर्म कर रहे है.

نوٹ:۔ یہی حال آج مسلمانوں کا ہے یعنی قرآن سے بہت دور ہیں اور فرقوں میں بٹ گئے ہیں اور اس کو ہی دین مان لیا ہے اور اس کے مطابق ہی عمل کررہے ہیں۔

अतः विनाश और पतन है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते है फिर लोगों से कहदेंगे कि यह ईश्वर की ओर से आया है ताकि उसके बदले में थोड़ा सा लाभ प्राप्त करें उनके हाथों का यह लिखा भी उनके लिए पतन का सामान है और उनकी यह कमाई भी उनके लिए विनाश का कारण है (79)

پس ہلاکت اور تباہی ہے ان لوگوں کے لئے جو اپنے ہاتھوں سے کتاب لکھتے ہیں پھر لوگوں سے کہتے ہیں کہ یہ اللہ کی طرف سے آیا ہے تاکہ اس کے بدلے میں تھوڑا سا فائدہ حاصل کریں۔ ان کے ہاتھوں کا یہ لکھا بھی ان کے لئے تباہی کا سامان ہے اور ان کی یہ کمائی بھی اُن کے لئے موجب ہلاکت ہے (۷۹)

नोट- मिथ्या पुस्तक लिखने को तो पत्र मिलता था जो इस आयत से सिद्ध हो रहा है कि वह पुस्तक लिखकर ईश्वर की ओर सम्बन्धित करते थे परन्तु अनुताप है मुसलमानों की आस्था के अनुसार कुरआन लिखने को पत्र न था, इस कारण कुरआन हड्डी, पत्तों, लकड़ी इत्यादि पर अलग-अलग लिखा मिलता था, सत्य क्या है इसको बुद्धिमान सामने लाऐं मेरे निकट कुरआन और हदीस से ठीक यह है कि कुरआन मुहम्मद स0 के जीवन में ही लिखा गया और पत्र पर ही लिखा गया और बहुत सी प्रति बनी जो हर स्थान पर भेजी गई.

نوٹ:۔ باطل کتاب لکھنے کو تو کاغذ ملتا تھا جو اس آیت سے ثابت ہورہا ہے کہ وہ کتاب لکھ کر اللہ کی طرف منسوب کرتے تھے مگر افسوس مسلمانوں کے عقیدے کے مطابق قرآن لکھنے کو کاغذ نہ تھا۔ اس وجہ سے قرآن ہڈی، پتوں، لکڑی وغیرہ پر الگ الگ لکھا ملتا تھا۔ حقیقت کیا ہے اس کو عقلمند سامنے لائیں۔ میرے نزدیک قرآن وحدیث کی روشنی میں حقیقت یہ ہے کہ قرآن محمدؐ کی زندگی میں ہی لکھا گیا اور کاغذ پر ہی لکھا گیا۔ اور بہت سی جلدیں بنی جو ہر جگہ پر بھیجی گئیں۔

और वह (इन पुस्तकों में स्वयं लिखकर यह कहते) है कि हमें नर्क की अग्नि कदापि छूने वाली नही किन्तु यह कि कुछ दिन का दण्ड मिल जाए उनसे ज्ञात करो क्या तुमने ईश्वर से कोई वचन ले लिया है जिसकी अवहेलना वह नही करेगा या तुम ईश्वर पर वह भार डालते हो जिसे तुम जानते ही नही (80) {2:23,25,111,112,167,175, 3:24,25, 62:7}

اور وہ (ان کتابوں میں خود لکھ کر یہ کہتے) ہیں کہ ہمیں دوزخ کی آگ ہرگز چھونے والی نہیں الا یہ کہ چند دن کی سزا مل جائے ان سے پوچھو کیا تم نے اللہ سے کوئی عہد لے لیا ہے جس کی خلاف ورزی وہ نہیں کرے گا۔ یا تم اللہ کے ذمہ وہ کچھ لگاتے ہو جسے تم جانتے ہی نہیں (۸۰) [۲:۲۳،۲۵،۱۱۱،۱۱۲،۱۶۷،۱۷۵، ۳:۲۴،۲۵، ۶۲:۷]

अंत तुम्हें नर्क की अग्नि क्यों न छुएगी जो भी दुष्टता कमाएगा और अपनी त्रुटि के चक्कर में पड़ा रहेगा वह नर्क में जाने वाला है और नर्क में ही वह सदैव रहेगा (81)

آخر تمہیں دوزخ کی آگ کیوں نہ چھوئے گی؟ جو بھی بدی کمائے گا اور اپنی خطاکاری کے چکر میں پڑا رہے گا وہ دوزخی ہے اور دوزخ میں ہی وہ ہمیشہ رہے گا (۸۱)

नोट- आयत {2:80,81} में नर्क से निकलने के विश्वास का ईश्वर ने इनकार किया है कि नर्क में जाने के बाद कोई नही निकलेगा, नर्क से निकलने का विश्वास यहूद व नसारा का था और है परन्तु खेद यह है कि आज मुस्लिम जाति का भी यही विश्वास पक्का हो गया है कि कलमा (मंत्र) कहने वाला हर मूल्य पर स्वर्ग में ही जाएगा यदि पापी होता है तो कुछ दिन उन पापों का दण्ड काट कर फिर स्वर्ग में आ जाएगा, पहले तो नर्क में जाने का प्रश्न भी कदाचित न आएगा? क्योंकि मुहम्मद स0 पूरी जाति को प्रलय में ही स्वर्ग में प्रविष्टि करा

نوٹ:۔ آیت (۲:۸۰،۸۱) میں دوزخ سے نکلنے کے عقیدے کا اللہ نے انکار کیا ہے کہ دوزخ میں جانے کے بعد کوئی نہیں نکلے گا۔ دوزخ سے نکلنے کا عقیدہ یہود ونصاریٰ کا تھا اور ہے مگر افسوس آج مسلم قوم کا بھی یہی عقیدہ پختہ ہوگیا ہے کہ کلمہ گو ہر قیمت پر جنت میں ہی جائے گا۔ اگر گناہ گار ہوتا ہے تو چند دن گناہوں کی سزا کاٹ کر پھر جنت میں آجائے گا۔ پہلے تو دوزخ میں جانے کا سوال بھی شاید نہ آئے؟ کیونکہ محمدؐ پوری امت کو حشر میں ہی جنت میں داخل کرادیں گے جب

देंगे जब पूरी जाति को ईश्वर मुक्ति दे देगा तब ही सजदे से सिर को उठाएंगे, क्या यह आस्था ठीक है?

पوری امت کواللہ بخش دے گا تب ہی سجدے سے سرکو اُٹھائیں گے. کیا یہ عقیدہ ٹھیک ہے؟

इस आस्था का खण्डन ईश्वर कर चुका फिर यह कहां से और क्यों आई? इस आस्था से ही आज मुसलमान प्रलोक के दण्ड से निर्भीक होकर पाप कर रहा है, जिस कारण ईश्वर रूष्ट हो गया है, वरन यह न होते हुए हम ईश्वर से रूष्ठ हो गए हैं, इस कारण तो उसकी अवज्ञा कर रहे हैं, अवज्ञा रूष्ट होने पर ही तो की जाती है और अवज्ञा का अर्थ है ईश्वर की सहायता का समाप्त हो जाना दोनों जगह {2:23,25,30,167,175, 3:24,25, 62:75}

اس عقیدہ کی تردید اللہ کرچکا پھر یہ کہاں سے اور کیوں آیا؟ اس عقیدے سے ہی آج مسلمان آخرت کے عذاب سے بےخوب ہوکر گناہ کررہا ہے جس کی وجہ سے اللہ ناراض ہوگیا ہے. بلکہ یہ نہ ہوتے ہوئے ہم اللہ سے ناراض ہوگئے ہیں.اس لئے تو اس کی نافرمانی کررہے ہیں نافرمانی ناراض ہونے پر ہی تو کی جاتی ہے اورنافرمانی کا مطلب ہے اللہ کی مددکا ختم ہوجانا دونوں جگہ [۲:۲۳‘۲۵‘۳۰‘۱۶۷‘۱۷۵،۳:۲۴‘۲۵،۶۲:۷۵]

और जो लोग आस्था लाएंगे और सत्कर्म करेंगे वही स्वर्गीय हैं और स्वर्ग में वह हमेशा रहेंगे (82) (यह है सत्य)

اور جولوگ ایمان لائیں گےاور نیک عمل کریں گے وہی جنتی ہیں اور جنت میں وہ ہمیشہ رہیں گے(۸۲) یہ ہے حق.

और याद करो जब हमने बनी इसराईल से यह वचन लिया था कि तुम ईश्वर ही की पूजा करना किसी और की नहीं, और माता-पिता और सम्बन्धियों और अनाथों और निर्धनों के साथ सद्भाव करना और लोगों से उत्तम बात करना और नमाज़ स्थापित करना और धर्मादाय देना फिर (ऐ बनी इसराईल इस वचन व शपथ का पूरा करने से और उन आदेशों के पालन करने से) कुछ लोगों के अलावा तुम बिल्कुल फिर गए और अब तक फिरे हुए हो (83)

اور یاد کرو جب ہم نے بنی اسرائیل سے یہ عہد لیا تھا کہ تم اللہ ہی کی عبادت کرنا کسی اور کی نہیں.اورماں باپ اوررشتہ داروں اوریتیموں اورمسکینوں کےساتھ حسن سلوک کرنا اورلوگوں سے خوبی بھری بات کرنا اورنماز قائم کرنا اورزکوۃ دینا پھر (اے بنی اسرائیل اس عہدو پیمان کی وفا سےاوران احکام کی بجا آوری سے)چندلوگوں کےسوا تم بالکل پھر گئےاوراب تک پھرے ہوئے ہو(۸۳)

फिर तनिक याद करो हमने तुमसे पक्का वचन लिया था कि आपस में एक दूसरे का खून न बहाना और न एक दूसरे को घर से बेघर करना तुमने इसकी प्रतिज्ञा की थी, तुम स्वयं इस पर साक्षी हो (84)

پھر ذرایاد کروہم نے تم سے مضبوط عہدلیا تھا کہ آپس میں ایک دوسرے کا خون نہ بہانا اور نہ ایک دوسرے کوگھر سے بےگھر کرنا تم نے اس کااقرار کیا تھا تم خود اس پر گواہ ہو(۸۴)

मगर आज वही तुम हो कि अपने भ्राताओं का वध करते हो, अपनी जाति के कुछ लोगों को बेघर कर देते हो, अन्याय, अत्याचार के साथ उनके विरुद्ध जत्थे बन्दियां करते हो (अर्थात् पाप और अत्याचार के साथ एक दूसरे के सहायोगी बन जाते हो) और जब वह युद्ध में पकड़े हुए आते हैं तो उनकी मुक्ति के लिए प्रतिदान लेते देते हो यद्यपि उन्हें उनके घरों से निकालना और मुक्ति प्रतिदान लेना देना ही तुम पर वर्जित था तो क्या तुम पुस्तक के एक भाग पर विश्वास लाते हो और दूसरे भाग के साथ नास्तिकता करते हो, फिर तुम में से जो लोग ऐसा करें उनका दण्ड इसके अतिरिक्त और क्या है कि दुनिया के जीवन में हीन व अपमानित होकर रहें और प्रलोक में तीव्र दण्ड की ओर फेर दिए जाएं ईश्वर उन कर्मों से अनजान नहीं है जो तुम कर रहे हो (85)

مگر آج وہی تم ہو کہ اپنے بھائی بندوں کوقتل کرتے ہو، اپنی برادری کے کچھ لوگوں کو بےگھر کردیتے ہو، ظلم وزیادتی کےساتھ ان کے خلاف جتھے بندیاں کرتے ہو(یعنی گناہ اورزیادتی کےساتھ ایک دوسرے کے مددگار بن جاتے ہو)اور جب وہ لڑائی میں پکڑے ہوئے تمہارے پاس آتے ہیں تو ان کی رہائی کے لئے فدیہ لیتے دیتے ہو. حالانکہ انہیں ان کےگھروں سے نکالنا اورفدیہ کالینا دینا ہی تم پر حرام تھا تو کیا تم کتاب کےایک حصہ پر ایمان لائے ہو اوردوسرے حصہ کےساتھ کفرکرتے ہو.پھر تم میں سے جولوگ ایسا کریں ان کی سزا اس کے سوا اور کیا ہے کہ دنیا کی زندگی میں ذلیل وخوار ہوکر رہیں اور آخرت میں شدید عذاب کی طرف پھیردے جائیں.اللہ اُن حرکات سے بےخبر نہیں ہے جوتم کررہے ہو(۸۵)

वही वह लोग हैं जो प्रतिज्ञा भंग करते हैं जिन्होंने प्रलोक के बदले इस तुछ जीवन को क्रय कर लिया, अतः उनसे दण्ड का भार हल्का न किया जाएगा, और न उनकी सहायता की जाएगी (86)

وہی وہ لوگ ہیں جو عہدشکن ہیں جنہوں نے آخرت کے بدلےاس حقیر زندگی کوخریدلیا.لہٰذاان سے سزا کا بوجھ ہلکا نہ کیا جائےگا اور نہ ان کی مدد کی جائےگی(۸۶)

फिर हमने मूसा अ0 को पुस्तक दी उसके बाद लगातार ईशदूत भेजे और ईसा अ0 बेटा मरयम को उज्ज्वल स्मृति देकर भेजा और शुद्ध (इल्म वही) से उसकी सहायता की फिर तुम्हारा क्या ढंग है कि जबकि कोई ईशदूत तुम्हारी काम वासना के विरुद्ध

پھر ہم نے موسیٰ کوکتاب دی اس کے بعد پےدرپے رسول بھیجے.اور عیسیٰ ابن مریم کو روشن نشانیاں دے کر بھیجا اور روح پاک (علم ووحی) سے اس کی مدد کی پھر تمہارا کیا طریقہ ہے کہ جب بھی کوئی رسول تمہاری خواہشات نفس کے خلاف کوئی

कोई वस्तु लेकर तुम्हारे पास आया तो तुमने उसके सम्मुख उद्दण्डता ही की, किसी को झुठलाया और किसी से झगड़ा किया (87) {2,190,193, 33:48, 10:15, 11:113, 17:74, 68,119}

چیز لے کر تمہارے پاس آیا تو تم نے اس کے مقابلے میں سرکشی ہی کی کسی کو جھٹلایا اور کسی سے جھگڑا کیا (۸۷) [۲:۱۹۰، ۱۹۳، ۳۳:۴۸، ۱۰:۱۵، ۱۱:۱۱۳، ۱۷:۱۱۳، ۱۷:۷۴، ۶۸:۹]

वह कहते हैं हमारे दिल सुरक्षित हैं तो सुनों मूल बात यह है कि उनकी नास्तिकता के कारण से उन पर ईश्वर की फटकार पड़ी है इस लिए वह कम ही आस्था लाते हैं (88) {2:6}

وہ کہتے ہیں ہمارے دل محفوظ ہیں تو سنو اصل بات یہ ہے کہ ان کے کفر کی وجہ سے ان پر اللہ کی پھٹکار پڑی ہے۔ اس لئے وہ کم ہی ایمان لاتے ہیں (۸۸)

और जब उनके पास ईश्वर की ओर से उसकी (अन्तिम) पुस्तक आई जो इस पुस्तक को प्रमाणित करने वाली है जो उनके पास थी तो उन्होंने उसका भी नकार किया, यद्यपि वह उसके अवतरित होने से पहले उन लोगों पर जिन्हें वह अपने विचार में नास्तिक समझते थे विजय के इच्छुक थे परन्तु जब उनके पास वह (सफलता की प्रति) आई जिसे वह पहचानते थे (क्योंकि उनकी पुस्तक में इस ईशदूत और पुस्तक व काबा की सूचना विद्यमान थी {7:157, 48:29, 61:5,6} उन्होंने इसका नकार कर दिया, अतः नकार करने वालों पर ईश्वर की अप्रसन्नता है (89)

اور جب ان کے پاس اللہ کے طرف سے اس کی (آخری) کتاب آئی جو اس کتاب کی تصدیق کرنے والی ہے جو ان کے پاس تھی تو انہوں نے اس کا بھی انکار کیا۔ حالانکہ وہ اس کے نزول سے پہلے ان لوگوں پر جنہیں وہ اپنے خیال میں کافر سمجھتے تھے فتح کے طلبگار تھے لیکن جب ان کے پاس وہ (نسخہ کامیابی وکامرانی) آیا جسے وہ پہنچانتے تھے (کیونکہ ان کی کتابوں میں اس رسول اور کتاب وکعبہ کی خبر موجود تھی [۷:۱۵۷، ۴۸:۲۹، ۶۱:۵،۶]) انہوں نے اس کا انکار کر دیا۔ پس انکار کرنے والوں پر اللہ کی بیزاری ہے (۸۹)

बहुत बुरी वस्तु है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच दिया (अर्थात सत्य से नकार करके काम पूजा के द्वारा दुनिया प्राप्त करना) कि जो पथ प्रदर्शन ईश्वर ने अवतरित की है उसको स्वीकार करने से केवल हठ के कारण नकार कर रहे हैं कि ईश्वर ने अपने कृपा दया ईश्वरीय वाणी, ईशदौत्य (राज्य) से अपने जिस बन्दे को स्वयं चाहा कृपा की, अतः अब वह प्रकोप के अधिकारी हो गए हैं, और ऐसे नास्तिकों के लिए कठोर (अपमान) जनक दण्ड निर्धारित है (90)

بہت بری چیز ہے جس کے بدلے انہوں نے اپنی جانوں کو بیچ دیا (یعنی حقیقت سے انکار کر کے نفس پرستی کے ذریعہ دنیا حاصل کرنا) کہ جو ہدایت اللہ نے نازل کی ہے اس کو قبول کرنے سے صرف اس ضد کی بنا پر انکار کر رہے ہیں کہ اللہ نے اپنے فضل، وحی رسالت (حکومت) سے اپنے جس بندے کو خود چاہا نواز دیا لہٰذا اب وہ غضب بالائے غضب کے مستحق ہو گئے ہیں۔ اور ایسے کافروں کے لئے سخت ذلت آمیز سزا مقرر ہے (۹۰)

जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ ईश्वर ने प्रेषित किया है उस पर विश्वास लाओ तो वह कहते है हम केवल उस वस्तु पर आस्था लाते है जो हमारे यहां (अर्थात् बनी इस्राईल में) अवतरित हुआ है इस परिधि के बाहर जो कुछ आया है उसे मानने से वह नकार करते है यद्यपि वह सत्य है और उस दीक्षा को प्रमाणित व अनुमोदन करता है जो उनके यहां पहले से विद्यमान है, अच्छा उनसे कहो यदि तुम उस दीक्षा पर ही आस्था रखने वाले हो जो तुम्हारे यहां आई थी तो इससे पहले ईश्वर के उन ईशदूतों से (जो बनी इस्राईल में उत्पन्न हुए थे) तुम अर्थात तुम्हारे पूर्वज क्यों झगड़ते थे (91) {33:3} (अतः उनकी आस्था उस पर भी नही थी)

جب ان سے کہا جاتا ہے کہ جو کچھ اللہ نے نازل کیا ہے اس پر ایمان لاؤ تو وہ کہتے ہیں ہم صرف اس چیز پر ایمان لاتے ہیں جو ہمارے یہاں (یعنی بنی اسرائیل میں) اترا ہے اس دائرے کے باہر جو کچھ آیا ہے اسے ماننے سے وہ انکار کرتے ہیں حالانکہ وہ حق ہے اور اس تعلیم کی تصدیق وتائد کرتا ہے جو ان کے یہاں پہلے سے موجود ہے اچھا ان سے کہو اگر تم اس تعلیم ہی پر ایمان رکھنے والے ہو جو تمہارے یہاں آئی تھی تو اس سے پہلے اللہ کے ان رسولوں سے (جو بنی اسرائیل میں پیدا ہوئے تھے) تم یعنی تمہارے اسلاف کیوں جھگڑتے رہے (۹۱) [۳:۳۳] (اس لئے ان کا ایمان اُس پر بھی نہیں تھا)

तुम्हारे पास मूसा अ० हमारे उज्ज्वल प्रमाण लेकर आए फिर उन प्रमाणों को पीछे फैंक कर तुमने (तुम्हारे पूर्वजों ने) बछड़े को पूज्य बना लिया, (जान लो) तुम अत्याचारी हो (जो मानव होकर एक पशु के सामने नतमस्तक होने लगे थे) (92)

تمہارے پاس موسیٰ ہماری روشن دلیلیں لے کر آئے پھر ان دلائل کو پس پشت پھینک کر تم نے بچھڑے کو معبود بنالیا سو (جان لو) تم ظالم ہو (جو انسان ہو کر ایک حیوان کے سامنے جھکنے لگے تھے) (۹۲)

और वह समय भी उल्लेखनीय है जब हमने तुमसे अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों से (तूर की ऊंची चोटियों की घाटी में इस प्रकार की मानों हमने तूर को तुम्हारे ऊपर ऊंचा कर दिया है उनको भय

اور وہ وقت قابل ذکر ہے جب ہم نے تم سے یعنی تمہارے اسلاف سے (طور کی بلند چوٹیوں کے دامن میں اس طرح کہ گویا ہم نے طور کو تمہارے اُوپر بلند کر دیا ہے ان کو خوف

کی وجہ سے ایسا لگ رہا تھا) وعدہ لیا کہ جو (ضابطہ) ہم نے تمہیں عطا کیا ہے اسے مضبوطی کے ساتھ تھام لو (اسے دن رات کا معمول بنالو) اور سنو (لیکن تمہارے بزرگوں نے) کہا ہم نے سنا اور انکار کر دیا کہ مانیں گے نہیں۔ اور ان کی اس باطل پرستی کی وجہ صرف ایک تھی کہ ان کے دلوں میں بچھڑا بسا ہوا تھا۔ کہو اگر تم مومن ہو تو یہ عجیب ایمان ہے جو ایسی بُری حرکات کا تمہیں حکم دیتا ہے (۹۳) [۲:۶۳]

के कारण ऐसा लग रहा था) वचन लिया कि जो (नियम) हमने तुमको दिया है उसे दृढ़ता के साथ थाम लो (उसे दिन रात का नित्य कार्य बना लो) और सुनो (परन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने) कहा हमने सुना और नकार कर दिया कि मानेंगे नहीं, और उनकी इस मिथ्या पूजन का कारण केवल एक था कि उनके मन में बछड़ा बसा हुआ था, कहो यदि तुम आस्तिक हो तो यह विचित्र विश्वास है जो ऐसे बुरे कर्मों का तुम्हें आदेश देता है (93) {2:63}

ان سے کہو اگر واقعی اللہ کے نزدیک آخرت کا گھر تمام انسانوں کو چھوڑ کر صرف تمہارے ہی لئے مخصوص ہے تب تو تمہیں چاہیئے کہ موت کی تمنا کرو اگر تم اپنے اس خیال میں سچے ہو (۹۴) [۵:۱۸، ۲:۸۰،۱۱۱، ۱۱:۷، ۶۷:۲]

उनसे कहो यदि वास्तव में ईश्वर के निकट परलोक का घर सब इन्सानों को छोड़कर केवल तुम्हारे ही लिए विशिष्ट है तब तो तुम्हें चाहिए कि मृत्यु की कामना करो, यदि तुम अपने इस विचार में सच्चे हो (94) {5:18, 2:80,115, 11:7, 67:2}

یقین جانو کہ وہ کبھی اس کی تمنا نہ کریں گے۔ اس لئے کہ اپنے ہاتھوں جو کچھ کما کر وہاں بھیجا ہے یعنی نامہ اعمال میں جو کچھ لکھا گیا ہے اس کا تقاضہ یہی ہے (کہ وہ وہاں جانے کی تمنا نہ کریں) اللہ اُن ظالموں کے حال سے خوب واقف ہے (۹۵)

विश्वास करो कि वह कभी इसकी कामना न करेंगे, इस कारण कि अपने हाथों जो कुछ कमा कर वहां भेजा है अर्थात कर्म पत्र में जो कुछ लिखा गया है उसका नोदन यही है कि वह वहां जाने की कामना न करें) ईश्वर उन अपराधियों के हाल से अच्छी प्रकार अवगत है (95)

تم اُنہیں سب سے بڑھ کر جینے کا حریص پاؤ گے۔ حتیٰ کہ وہ اس معاملے میں مشرکوں سے بھی بڑھ کر ہیں۔ اُن میں سے ہر ایک آدمی چاہتا ہے کہ کسی طرح ہزار برس جیئے، حالانکہ لمبی عمر بہر حال اسے عذاب سے تو دور نہیں کر سکتی جیسے کچھ اعمال وہ کر رہے ہیں اللہ تو انہیں دیکھ ہی رہا ہے (ان کے عمل دنیوی زندگی کے لئے ہیں، اس لئے وہ موت کی تمنا کرتے ہوئے خوف زدہ ہیں) (۹۶)

तुम उन्हें सबसे बढ़कर जीने का लोलुप पाओगे यथा कि वह इस विषय में अनेकेश्वर वादियों से भी बढ़ कर हैं उनमें से हर एक आदमी चाहता है कि किसी प्रकार हजार वर्ष जीवित रहे, यद्यपि लम्बी आयु अस्तु उसे दण्ड से तो नहीं बचा सकती जैसे कुछ कर्म वह कर रहे हैं, ईश्वर तो उन्हें देख ही रहा है (उनके कर्म सांसारिक जीवन के लिए हैं अतः वह मृत्यु की कामना करते हुए भयभीत हैं (96)

(اے رسول) کہہ دیجئے گا کہ جو جبرئیل کا دشمن ہے اللہ اس کا دشمن ہے (۲:۹۸) (کیونکہ جبرئیل امین ہے ۲۶:۱۹۳) اور بلاشبہ اس نے (قرآن کو) اپنی مرضی سے نہیں بلکہ اللہ کے حکم کے ساتھ آپ کے قلب اطہر پر نازل کیا ہے۔ جو پہلے آئی ہوئی کتابوں کی تصدیق کرتا ہے اس لئے کہ وہ مضبوط حفاظت کے درمیان ہے اور ایمان لانے والوں کے لئے ہدایت اور کامیابی کی بشارت ہے (۹۷)

(ऐ रसूल) कह दो कि जो जिबरईल अ० का शत्रु है ईश्वर उसका शत्रु है (2:98)
(क्योंकि जिबरईल अ० विश्वसनीय है {26:193}) और निःसन्देह उसने (कुरआन को) अपनी इच्छा से नहीं अपितु ईश्वर के आदेश के साथ आपके हृदय पवित्र पर अवतरित किया है जो पहले आई हुई पुस्तकों को प्रमाणित करता है, इसलिए कि वह सुदृढ़ सुरक्षा के मध्य है और आस्था रखने वालों के लिए पथ प्रदर्शन और सफलता की मंगल सूचना है (97)

(اور اگر جبرئیل سے ان کی عداوت کا سبب یہی ہے تو کہہ دو کہ) جو اللہ اور اس کے فرشتوں اور اس کے رسولوں اور جبرئیل و میکائیل کے دشمن ہیں اللہ ان کافروں کا دشمن ہے (۹۸) [۲:۹۰]

(और यदि जिबरईल से उनकी शत्रुता का कारण यही है तो कह दो कि) जो ईश्वर और उसके फरिश्तों और उसके ईशदूतों और जिबरईल व मीकाईल के शत्रु हैं ईश्वर उन नास्तिकों का शत्रु है (98) {2:90}

ہم نے تمہاری طرف ایسی آیات نازل کی ہیں جو صاف صاف حق کا اظہار کرنے والی ہیں اور ان کی پیروی سے جو انکار کریں گے یقیناً وہ کافر ہیں (۹۹)

हमने तुम्हारी ओर ऐसी आयात अवतरित की हैं जो खुले ढंग से सत्य का प्रकटीकरण करने वाली हैं और इनके अनुकरण से जो इनकार करेंगे नास्तिक हैं (99)

جب وہ لوگ کسی سے معاہدہ کرتے تھے تو ان کا کوئی نہ کوئی فریق اسے توڑ ڈالتا تھا ان میں زیادہ تر ایسے ہی لوگ ہیں جو ایمان سے خالی ہیں (۱۰۰) [۲:۱۰۱]

जब वह लोग किसी से अनुबन्ध करते थे तो उनका कोई न कोई पक्ष उसे तोड़ डालता था उनमें से अधिकांश ऐसे ही लोग हैं जो विश्वास से रहित हैं (100) {2:101}

اور جب ان کے پاس اللہ کی طرف سے کوئی رسول اس کتاب کی تصدیق کرتا ہوا آیا جو ان کے پاس پہلے سے

और जब उनके पास ईश्वर की ओर से कोई रसूल उस पुस्तक को प्रमाणित करता हुआ आया जो उनके पास पहले से

विद्यमान थी तो उन ग्रंथधारियों में से एक पक्ष ने ईश्वर के ग्रंथ से इस प्रकार इनकार किया मानों वह कुछ जानते ही नही (101)

موجود تھی تو ان اہل کتاب میں سے ایک گروہ نے کتاب کو اس طرح پس پشت ڈالا گویا وہ کچھ جانتے ہی نہیں (۱۰۱)

और लगे उन वस्तुओं का अनुसरण करने जो शैतान सुलेमान के राज्य का नाम लेकर प्रस्तुत किया करते थे अर्थात् सुलेमान पर झूठा आरोप लगाया करते थे यद्यपि सुलेमान अ० ने कभी अधर्म नही किया, अधर्म के अपराधी तो वह शैतान है जो लोगों को जादूगरी की शिक्षा देते थे या देंगे, और (ईश्वर ने) अवतरित नही किया दो फरिश्तों पर नगर बाबिल में (जादू) हारूत व मारूत (अर्थात् हारूत व मारूत नाम से सम्बन्धित किया हुआ जादू) यद्यपि वह जादूगर जब भी किसी को उन दोनों विद्या की शिक्षा देते हैं तो पहले साफ तौर पर (सदाचारी बनकर कपट पूर्ण विधि से) सावधान कर दिया करते हैं कि हम केवल एक परीक्षा हैं तू अधर्म में ग्रस्त न हो फिर भी लोग उनसे वह वस्तु सीखेंगे जिससे पति और पत्नी में विच्छेद डाल दें, स्पष्ट है कि ईश्वर के विधान के बिना वह उस माध्यम से किसी को भी हानि नही दे सकेंगे, किन्तु इसके अतिरिक्त वह ऐसी वस्तु सीखेंगे जो स्वयं उनके लिए लाभ दायक नही अपितु हानि देने वाली है और उन्हें अच्छी प्रकार ज्ञान है कि जो इस वस्तु का क्रेता बना उसके लिए परलोक में कोई भाग नही कितनी बुरी सम्पत्ति है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, काश उन्हें ज्ञात होता (102) {6:8,9,50, 7:20,163}

اور لگے ان چیزوں کی پیروی کرنے جو شیاطین سلیمانؑ کی سلطنت کا نام لے کر پیش کیا کرتے تھے. یعنی سلیمانؑ پر جھوٹا الزام لگایا کرتے تھے. حالانکہ سلیمانؑ نے کبھی کفر نہیں کیا. کفر کے مرتکب تو وہ شیاطین ہیں جو لوگوں کو جادوگری کی تعلیم دیتے تھے یا دیں گے. اور (اللہ نے) نازل نہیں کیا دو فرشتوں پر شہر بابل میں (جادو) ہاروت و ماروت (یعنی ہاروت و ماروت نام) سے منسوب کیا ہوا (جادو) حالانکہ وہ جادوگر جب بھی کسی کو ان دونوں علم کی تعلیم دیتے ہیں تو پہلے صاف طور پر (متقی و پرہیزگار بن کر پرفریب طریقے سے) متنبہ کر دیا کرتے ہیں کہ ہم محض ایک آزمائش ہیں تو کفر میں مبتلا نہ ہو پھر بھی لوگ ان سے وہ چیز سیکھیں گے جس سے شوہر اور بیوی میں جدائی ڈال دیں ظاہر ہے کہ قانون الٰہی کے بغیر وہ اس ذریعہ سے کسی کو بھی ضرر نہ پہنچا سکیں گے مگر اس کے باوجود وہ ایسی چیز سیکھیں گے جو خود ان کے لئے نفع بخش نہیں بلکہ نقصان دہ ہے. اور انہیں خوب معلوم ہے کہ جو اس چیز کا خریدار بنا اس کے لئے آخرت میں کوئی حصہ نہیں. کتنی بری متاع ہے جس کے بدلے انہوں نے اپنی جانوں کو بیچ ڈالا کاش انہیں معلوم ہوتا (۱۰۲) [۶:۸،۹،۵۰، ۷:۲۰،۱۶۳]

यदि वह विश्वास लाऐं और भय करें तो ईश्वर के यहां इसका बदला मिलता वह उनके लिए अधिक अच्छा है काश उन्हें ज्ञात होता (103)

اگر وہ ایمان لائیں اور تقویٰ اختیار کریں تو اللہ کے یہاں اس کا بدلہ ملتا وہ ان کے لئے زیادہ بہتر ہے کاش انہیں خبر ہوتی (۱۰۳)

नोट- आयात (102) में शब्द हारूत व मारूत का अनुवाद कुछ ने फरिश्ते किया है और कतिपय ने शैतान स्वभाव वाले दो इन्सान किन्तु आयात को ध्यान पूर्वक देखने से ज्ञात होता है कि न तो वह फरिश्ते है और न कपटी इन्सान, अपितु स्पष्ट तौर पर संकेत है उस जादू की ओर जो इस नाम हारूत व मारूत से उस काल में प्रचलित था और जादूगरों ने जनता में यह बता रखा था कि यह ज्ञान हारूत व मारूत है जो बाबिल नगर में दो फरिश्तों पर अवतरित हुआ था और हमने अपने गुरूओं से बड़े परिश्रम के साथ सीखा है और श्रीमान सुलेमान अ० भी इसी जादू से काम लेते थे तब ही तो उनका राज्य शक्ति शाली था।

जादूगरों और जनता की इस मिथ्या धारणा का खण्डन इस आयात में है कि हमने बाबिल नगर में दो फरिश्तों पर ज्ञान हारूत व मारूत नाम का अवतरित नही किया यह अनुचित कहते है, यह उनका बनाया हुआ है, क्या ईश्वर अवैध वस्तु को अपनी प्रकाश युक्त रचना के द्वारा संसार को दे सकता था? आखिर हमारे यहां ऐसी मिथ्या बातों पर क्यों विचार नही किया जाता? कतिपय ने तो उन फरिश्तों से न मालूम क्या क्या मिथ्या व्यर्थ लिख रखे है, जिसका उल्लेख करना मैं उचित नही समझता, किसी व्याख्या में पढ़ लिया जाए तब आपको ज्ञान होगा कि हमारे यहां यह व्यर्थ क्यों अंकित हो गई और कहां से आई, अधिकतर यह व्यर्थ इसराईलयात से ली गई है.

نوٹ: ۔آیت (۱۰۲) میں لفظ ہاروت و ماروت کا ترجمہ کچھ نے دو فرشتوں کیا ہے اور بعض نے شیطان خصلت دو انسان. لیکن آیت کو بغور دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ نہ تو وہ فرشتے ہیں اور نہ شریر انسان بلکہ صاف طور پر اشارہ ہے اس جادو کی طرف جو اس نام ہاروت و ماروت سے اس زمانے میں رائج تھا، اور جادوگروں نے عوام میں یہ بتا رکھا تھا کہ یہ علم ہاروت و ماروت ہے جو شہر بابل میں دو فرشتوں پر نازل ہوا تھا اور ہم نے اپنے استادوں سے بہت محنت کے ساتھ سیکھا ہے اور حضرت سلیمانؑ بھی اسی جادو سے کام لیتے تھے تب ہی تو ان کی سلطنت اتنی مضبوط تھی. جادوگروں اور عوام کے اس خیال باطل کی تردید اس آیت میں کی ہے کہ ہم نے شہر بابل میں دو فرشتوں پر علم جادو ہاروت و ماروت نام کا نازل نہیں کیا یہ غلط کہتے ہیں یہ ان کا بنایا ہوا ہے.

کیا اللہ حرام چیز کو اپنی نورانی مخلوق کے ذریعہ دنیا کو دے سکتا ہے؟ آخر ہمارے یہاں ایسی غلط باتوں پر کیوں غور نہیں کیا جاتا؟ بعض نے تو ان فرشتوں سے نہ معلوم کیا کیا خرافات لکھ رکھی ہیں جن کا تحریر کرنا میں مناسب نہیں سمجھتا کسی تفسیر کو پڑھ لیا جائے تب آپ کو علم ہوگا کہ ہمارے یہاں یہ خرافات کیوں درج ہو گئیں اور کہاں سے آئیں. زیادہ تر یہ خرافات اسرائیلیات سے لی گئی ہیں.

अब रहा प्रश्न ईश्वर के विधान का कि ईश्वर के विधान या आदेश से ही हानि लाभ होता है, इसका कारण यह है कि ज़ैद को अपनी पत्नी से अपनी कमी या पत्नी की कमी से अप्रसन्नता होती है और बढ़ती चली जाती है, यथा कि विच्छेद हो जाता है, यह तलाक उन दोनों की अपनी त्रुटि का परिणाम है या संधि हो जाती है यह भी उनके बरताओं में नरमी का कारण है ईश्वर के विधान में यही है इसी को ईश्वर का नियम कहते है,

जैसे विष खाने से मृत्यु और दवा खाने से आरोग्य किन्तु कभी कभी इसके विपरीत भी होता है, परन्तु वह भी उनमें किसी कमी के कारण ही होता है,

जैसे पानी सर्वदा गहराई की ओर और धुआं ऊपर की ओर जाता है, परन्तु जब ईश्वर के विधान के अनुसार इन पर नियन्त्रण किया जाता है तो यह विपरीत दिशा को गतिशील हो जाते है यही ईश्वर का नियम है,

इसी प्रकार जब ज़ैद और उसकी पत्नी में झगड़ा बढ़ और ज़ैद तलाक देना चाहता है और वह किसी जादूगर या आलिम से इस विषय में कहे तो वह जादूगर यही कहेगा कि हां मैं अपने जादू से तलाक करा दूंगा या संधि इसके बाद वह जादूगर या आलिम अपनी क्रिया आरम्भ करता है उधर यह झगड़ा उस स्थान पर आ चुका होता है कि तलाक के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग ही न था, तलाक हो गई, यह तलाक तो ईश्वर के नियमानुसार हुई, जिस नियम में है कि झगड़ा हानि देता है हवा उखड़ जाती है और प्रेम ऐकता में लाभ है,

परन्तु वह जादूगर या आलिम यही कहता है कि मेरी क्रिया से तलाक हो गई या संधि हो गई और ज़ैद यही समझेगा, यह है ईश्वर का नियम का अर्थ, ईश्वर स्वयं कभी नही चाहता कि किसी में झगड़ा हो और तलाक हो जाए यह सब इन्सानों के अपने कर्म है उससे ही दुनिया और प्रलोक बनते है,

कतिपय ने यह भी लिखा है कि किसी काल में जादू का बहुत चलन था लोग उधर अधिक आकृष्ट हो गए तो ईश्वर ने उस जादू के तोड़ के लिए हारूत मारूत नामी दो फरिश्ते भेजकर एक विद्या की शिक्षा दी जो उनके जादू से बड़ा जादू अर्थात् ज्ञान था जो बाद को लोगों में प्रसिद्ध हो गया,

परन्तु लिखने वालों ने यह न सोचा कि ईश्वर अपनी वाणी में खुले प्रकार इनकार कर रहा है वह कहता है कि हम जब भी फरिश्ते पृथ्वी पर भेजेंगे तो वह अन्तिम समय होगा, तो फरिश्तों का इस प्रकार पृथ्वी पर अबाद रहकर इन्सानों को शिक्षा देने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, एक फरिश्ता जिबराईल वही लेकर आया करते थे वह भी ईशदूतों पर सो वह क्रम भी बन्द हो गया क्योंकि अब कोई नबी मुहम्मद स0 के बाद नही आएगा,

वैसे ईश्वर ने अपने ब्रह्माण्ड में जो कार्य फरिश्तों को समर्पित कर रखे है उनके लिए फरिश्ते इस संसार में कार्यरत है, किन्तु यह नही है कि मानव में रहकर मानव बनकर माया इन्द्रजाल की दुकान लगाऐं जो अवैध है, क्या अवैध कार्य की शिक्षा देने के लिए फरिश्ते ही रह गए हैं? इस कार्य को करने के लिए तो शैतान इन्सान ही प्रयाप्त है, इसलिए हारूत व मारूत नाम का जादू शैतान जैसे मनुष्यों का प्रचलित किया हुआ है, जैसे आज भी नक्श सुलेमानी इत्यादि नाम से बहुत सी पुस्तकें प्रचलित है और उनसे अधिकांश आलिम ही काम कर रहे हैं। इस आयत 102 में भी इजन का अर्थ नियम ही आता है,

यदि वह आस्था लाते और संयम स्वीकार करते तो ईश्वर के यहां इसका फल मिलता, वह उनके लिए अधिक उत्तम था यदि उन्हें सूचना होती (103)

اب رہا سوال اللہ کے قانون کا کہ اللہ کے قانون یا حکم سے ہی نفع نقصان ہوتا ہے۔اس کی وجہ یہ ہے کہ زید کو اپنی زوجہ سے اپنی کمی یا زوجہ کی کمی سے ناراضگی ہوتی ہے اور بڑھتی چلی جاتی ہے۔ یہاں تک کہ طلاق ہو جاتی ہے یہ طلاق ان دونوں کی اپنی غلطی کا نتیجہ ہے یا صلح ہو جاتی ہے یہ بھی ان کے برتاؤ میں نرمی کا نتیجہ ہے۔اللہ کے قانون میں یہی ہے اسی کو ضابطہ الٰہی کہتے ہیں۔

جیسے زہر کھانے سے موت اور دوا کھانے سے شفا مگر کبھی کبھی اس کے خلاف بھی ہوتا ہے مگر وہ بھی ان میں کسی کمی کی وجہ سے ہوتا ہے۔

جیسے پانی ہمیشہ نشیب کی طرف اور دھواں فراز کی طرف جاتا ہے مگر جب قانون کے مطابق ان پر کنٹرول کیا جاتا ہے تو یہ مخالف سمت کو رواں دواں ہو جاتے ہیں یہی اللہ کا قانون ہے۔

اسی طرح جب زید اور اس کی زوجہ میں جھگڑا بڑھا اور زید طلاق دینا چاہتا ہے اور وہ کسی جادوگر یا عالم سے اس بارے میں کہے تو وہ جادوگر یہی کہے گا کہ ہاں میں اپنے جادو سے طلاق کرا دوں گا یا میل اس کے بعد جادوگر یا عالم اپنا عمل شروع کرتا ہے اُدھر یہ جھگڑا اس منزل پر آ چکا ہوتا ہے کہ طلاق کے علاوہ دوسرا کوئی راستہ ہی نہ تھا۔طلاق ہو گئی یہ طلاق تو قانون الٰہی کے مطابق ہوئی۔جس قانون میں ہے کہ جھگڑا نقصان دیتا ہے ہوا اکھڑ جاتی ہے۔اور محبت اتحاد میں فائدہ ہے۔

مگر وہ جادوگر یا عالم یہی کہتا ہے کہ میرے عمل سے طلاق ہو گئی یا میل ہو گیا۔اور زید بھی یہی سمجھے گا۔یہ ہے قانون الٰہی کا مطلب اللہ خود کبھی نہیں چاہتا کہ کسی میں جھگڑا ہو اور طلاق ہو جائے یہ سب انسان کے اپنے عمل ہیں۔ان سے ہی دنیا اور آخرت بنتی ہے۔

بعض نے یہ بھی لکھا ہے کہ کسی زمانے میں جادو کا زور تھا لوگ ادھر زیادہ راغب ہو گئے تو اللہ نے اس جادو کے توڑ کے لئے ہاروت ماروت نامی دو فرشتے بھیج کر ایک علم کی تعلیم دی جو ان کے جادو سے بڑا جادو یعنی علم تھا۔جو بعد کو لوگوں میں مشہور ہو گیا۔

مگر لکھنے والوں نے یہ نہ سوچا کہ اللہ اپنے کلام میں صاف طور پر انکار کر رہا ہے وہ فرماتا ہے کہ ہم جب بھی فرشتے زمین پر بھیجیں گے تو وہ وقت آخر ہو گا۔تو فرشتوں کا اس طرح آ کر زمین پر آباد رہ کر انسانوں کو تعلیم دینے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ایک فرشتہ جبرئیل وحی لے کر آیا کرتے تھے وہ بھی نبیوں پر۔سو وہ سلسلہ بھی بند ہو گیا کیونکہ اب کوئی نبی محمدؐ کے بعد نہیں آئے گا۔

ویسے اللہ نے اپنی کائنات میں جو کام فرشتوں کے سپرد کر رکھے ہیں ان کے لئے فرشتے اس کائنات میں سرگرم عمل ہیں لیکن یہ نہیں ہے کہ آدمیوں میں رہ کر انسان بن کر ساحری کی دوکان لگائیں جو حرام ہے کیا حرام کام کی تعلیم دینے کے لئے فرشتے ہی رہ گئے ہیں؟ اس کام کو کرنے کے لئے تو شیطان انسان ہی کافی ہیں۔اس لئے ہاروت و ماروت نام کا جادو شیطان نما انسانوں کا جاری کیا ہوا ہے۔جیسے آج بھی نقش سلیمانی وغیرہ نام سے بہت سی کتابیں رائج ہیں اور ان سے زیادہ تر عالم ہی کام کر رہے ہیں۔اس آیت ۱۰۲ میں بھی اذن کا مطلب قانون ہی آتا ہے۔

اگر وہ ایمان لاتے اور تقویٰ اختیار کرتے تو اللہ کے یہاں اس کا بدلہ ملتا وہ ان کے لئے زیادہ بہتر تھا کاش انہیں خبر ہوتی (۱۰۳)

ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो राइना न कहा करो अपितु अनज़ुरना कहा करो और ध्यान से बात को सुना करो, वह काफ़िर तो कष्ट के अधिकारी हैं (104)

नोट– अरबी में किसी को आकृष्ट करना होता है तो राइना कहते हैं परन्तु यह उस समय कहा जाता है जब दोनों बराबर मान रखते हों क्योंकि राइना का अर्थ है तू हमारा ध्यान रख हम तेरा ध्यान रखें किन्तु जब सम्बोधित बड़े पद का हो तो उस समय राइन नहीं कहते अपितु उनज़ुरना कहते हैं, अर्थात् ऐ स्वामी हमारे ऊपर दृष्टि रखिए इस आयत में मुसलमानों से यही कहा गया है कि रसूल को राइना न कहा करो इससे तुम्हारे हृदयों में अनार्जव उत्पन्न होगी और उत्तम यही है कि तुम पहले ही बात को ध्यान से सुनो तो तुम को अनज़ुरना भी न कहना पड़े जो आयत में ही बता दिया गया है कि ध्यान से सुनो और अपने रसूल से यह भी प्रार्थना करो कि ऐ ईश्वर के ईशदूत आप हम पर दृष्टि रखें कि हम पथभ्रष्ट न होने पाएं और हम आपकी आज्ञा पालन करते जाएं

और यदि तुमने वह गतिविधि अपनाई जो बनी इसराईल ने अपने रसूलों के साथ की थी या वह मुहम्मद स0 के साथ बोल चाल में करते हैं तो उन कर्मों के दुष्परिणाम होंगे, अतः तुम ईश्वर की मानो और वह सब कुछ कुरआन में अंकित है,

पुस्तक धारियों में से जिन लोगों ने नास्तिकता का मार्ग स्वीकार किया वह और अनेकेश्वरवादी नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर मंगल सम्पन्नता का अवतरण हो परन्तु ईश्वर जिसको चाहता है अपनी कृपा के लिए चुन लेता है और वह बड़ा कृपा दया करने वाला है (105) {3:71, 16:30, 2:91}

हम अपनी जिस स्मृति को मिटा देते हैं या भुला देते हैं उसके स्थान पर उससे अच्छी लाते हैं या वैसी ही, क्या तुम नहीं जानते हो कि ईश्वर हर वस्तु पर सामर्थ्य रखता है (अर्थात् हर वस्तु के अनुमान, रीति, मानदण्ड निर्धारित करने वाला है) (106) {3:73,74, 16:102, 6:6}

नोट– यहूद का यह विश्वास था कि धर्म और संसार की सब भलाई हमारे लिए ईश्वर ने विशेष कर दी है अतः न दूसरी जाति को संसार के राज्य का अधिकार है और न ही धर्म के दृष्टिकोण से कोई ईशदूत दूसरी जाति में हो सकता है, परन्तु जब ईश्वर ने मुहम्मद स0 को ईशदूत बनाया और आपने सत्य धर्म जो कुरआन में अवतरित होता था उसको सुनाया जिसमें है कि जो इस पर क्रिया करेगा उसके लिए दुनिया और प्रलोक की भलाई है जिसमें पृथ्वी पर राज्य और स्थानपन्नता भी है तो यहूद और तथाकथित नसारा को यह एक विचित्र बात लगी और उन्होंने कहना आरम्भ किया कि ईशदूत तो केवल हमारी जाति में ही आ सकता है और संसार का राज्य भी हमारा है, देखा नहीं कि हमारे समुदाय में कितने बड़े बड़े राजा हुए हैं (3:73) (5:20) अतः हम किसी ऐसे नबी को स्वीकार नहीं करेंगे जो हमसे बाहर हो (2:91) इस आपत्ति पर ईश्वर ने आयत (105) में यहूद व ईसाईयों को सम्बोधित करते हुए कहा ऐ यहूद व अनेकेश्वर वादियो तुम्हारा यह विचार मिथ्या है कि धर्म और संसार की सारी भलाई तुम्हारे लिए ही है ऐसा नहीं है अपितु नियम यह है कि जो जाति मेरी आज्ञा पालन करती है या करेगी यह संसार की भलाई राज्य सत्ता और प्रलोक की भलाई स्वर्ग उसके लिए है और ईशदौत्य भी मेरी इच्छा पर है मैं जिसको चाहूं ईशदूत बना दूं और जब तक चाहूं ईशदौत्य को जारी रक्खूं

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو راعنا نہ کہا کرو بلکہ انظرنا کہا کرو اور توجہ سے بات کو سنو۔ وہ کافر تو عذاب عظیم کے مستحق ہیں (۱۰۴)

نوٹ :۔ عربی میں کسی کو متوجہ کرنا ہوتا ہے تو راعنا کہتے ہیں۔ مگر یہ اس وقت کہا جاتا ہے کہ دونوں برابر درجہ رکھتے ہوں۔ کیونکہ راعنا کا معنی ہے تو ہمارا خیال رکھ ہم تیرا خیال رکھیں۔ لیکن جب مخاطب بڑے درجے کا ہو تو اس وقت راعنا نہیں کہتے بلکہ انظرنا کہتے ہیں۔ یعنی اے آقا ہمارے اوپر نظر رکھئے۔ اس آیت میں مسلمانوں سے یہی کہا گیا ہے کہ رسول کو راعنا نہ کہا کرو اس سے تمہارے دلوں میں بے ایمانی پیدا ہوگی۔ اور بہتر یہی ہے کہ تم پہلے ہی بات کو توجہ سے سنو تو تم کو انظرنا بھی نہ کہنا پڑے گا۔ جو آیت میں ہی بتا دیا گیا ہے کہ توجہ سے سنو اور اپنے رسول سے یہ بھی عرض کرو کہ اے اللہ کے رسول آپ ہم پر نگاہ رکھیں کہ ہم بے راہ نہ ہونے پائیں۔ اور ہم آپ کی اطاعت کرتے جائیں۔

اور اگر تم نے وہ روش اختیار کی جو بنی اسرائیل نے اپنے رسولوں کے ساتھ کی تھی یا وہ محمدؐ کے ساتھ بول چال میں کرتے ہیں تو ان عملوں کے برے اثرات ہوں گے اس لئے تم اللہ کی مانو اور وہ سب کچھ قرآن میں درج ہیں۔

اہل کتاب میں سے جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی وہ اور مشرکین نہیں چاہتے کہ تمہارے رب کی طرف سے تم پر خیر و برکت کا نزول ہو۔ لیکن اللہ جس کو چاہتا ہے اپنی رحمت کے لئے چن لیتا ہے۔ اور وہ بڑا ہی فضل فرمانے والا ہے (۱۰۵)[۳:۷۱، ۱۶:۳۰، ۲:۹۱]

ہم اپنی جس نشانی کو مٹا دیتے ہیں یا بھلا دیتے ہیں۔ اس کی جگہ اس سے بہتر لاتے ہیں یا ویسی ہی کیا تم نہیں جانتے ہو کہ اللہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے (یعنی ہر چیز کے اندازے پیمانے مقرر کرنے والا ہے)(۱۰۶)[۳:۷۳، ۳:۷۴، ۱۶:۱۰۲، ۶:۶، ۲۱:۲۲]

نوٹ :۔ یہود کا عقیدہ تھا کہ دین اور دنیا کی سب بھلائی ہمارے لئے اللہ نے خاص کر دی ہیں اس لئے نہ دوسری قوم کو دنیا کی حکومت کا حق ہے اور نہ ہی دینی اعتبار سے کوئی نبی دوسری قوم میں ہو سکتا ہے۔ مگر جب اللہ نے محمدؐ کو نبی بنایا اور آپ نے دین حق جو قرآن میں نازل ہوتا تھا اس کو سنایا جس میں ہے کہ جو اس پر عمل کرے گا اس کے لئے دنیا اور آخرت کی بھلائی ہے جس میں زمین پر حکومت خلافت بھی ہے تو یہود اور نام نہاد نصاریٰ کو یہ ایک عجیب بات لگی۔ اور انہوں نے کہنا شروع کیا کہ نبی تو صرف ہماری قوم میں ہی آ سکتا ہے اور دنیا کی حکومت بھی ہماری ہے۔ دیکھا نہیں کہ ہماری قوم میں کتنے بڑے بڑے بادشاہ گزرے ہیں (۳:۷۳، ۵:۲۰) اس لئے ہم کسی ایسے نبی کو تسلیم نہیں کریں گے جو ہم سے باہر ہو (۲:۹۱) اس اعتراض پر اللہ نے آیت (۱۰۵) میں یہود و عیسائیوں کو خطاب کرتے ہوئے فرمایا، اے یہود و مشرکین تمہارا یہ خیال غلط ہے کہ دین اور دنیا کی ساری بھلائی تمہارے لئے ہی ہے ایسا نہیں ہے بلکہ قانون یہ ہے کہ جو قوم میری فرمانبرداری کرتی ہے یا کرے گی یہ دینوی بھلائی خلافت اور آخرت کی بھلائی جنت اس کے لئے ہے۔ اور پیغمبری بھی میری مرضی پر ہے میں جس کو چاہوں نبی بنا دوں اور جب تک چاہوں نبوت کو جاری رکھوں۔

अब ईशदौत्य की परम्परा तो अन्तिम नबी मुहम्मद स0 पर समाप्त हो जाएगी, रहा प्रश्न दुनिया के राज्य का तो जो जाति अवज्ञाकारी होगी उससे यह सारी भलाई छीन ली जाती है अर्थात् वह स्वयं अपने कर्मों से हीन व अपमानित हो जाते हैं और दुनिया से मिटा दिए जाते हैं और जो जाति मेरी आज्ञा पालन करती है उसको यह सारी भलाई प्रदान कर दी जाती है (3:73,74) उसको ही ईश्वर ने (2:106) में कहा है कि मेरी सारी भलाई उसके लिए है जो चाहता है, अर्थात् सत्कर्म करता है, अतः जिस स्थान से आपको हटा कर मैंने अपने आज्ञाकारी भक्तों को पदासीन कर दिया है और तुम से भी अधिक चमक दमक के साथ स्थापित होगी उसके लिए ही कहा है कि हम जिस स्मृति को मिटा देते हैं तो दूसरी उससे अच्छी स्मृति (साम्राज्य) या उस जैसी स्मृति (राज्य) देते हैं, या ऐसा भी हुआ है कि बहुत जातियां ऐसी हुई हैं जिसका उस काल में उन जैसा कोई दूसरा न था, और चारों ओर छा गए थे, परन्तु अवज्ञा के कारण वह ऐसे मिटे कि आज उनका कहीं प्रतीक भी नहीं है और स्मृति से भी मिट गए अर्थात् इतिहास में भी अब उनका उल्लेख नहीं है, इन बातों का साक्षी इतिहास है जो बुद्धिमान होते हैं इससे शिक्षा लेकर अच्छा कर्म करते हैं और स्थापित रहते हैं जो ना समझ होते हैं वह अवज्ञा करके मिट जाते हैं ऐसा ही होता रहा है होता रहेगा, आज भी मुस्लिम जाति अवज्ञा कर रही है जो इस स्थान से हट गई, जहां ईश्वर ने उसको स्थापित किया था और अपमानित हो गई,

यह है आयत (105,106) का सारांश किन्तु इसके विपरीत मुसलमानों ने कुरआन में जो आयतें पढ़ी जाती हैं को निरस्तकर्ता व निरस्त मान रखा है कि अमुक आयत अमुक आयत से निरस्त है और किसी का वाचन और किसी का आदेश निरस्त है किन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है, कुरआन में कोई आयत निरस्त नहीं, न आदेश से न वाचन से सब अपने स्थान पर विद्यमान है,

खण्डन कर्ता व निरस्त का विश्वास कुरआनी आयत में कुरआन के विरुद्ध है,

आयत में एक शब्द अनुरूप है उस जैसी ही लाते हैं अब प्रश्न उत्पन्न होता है यदि आयत कुरआन पहली आयत जैसी लानी थी तो पहली को ही क्यों निरस्त किया गया? या उससे अच्छी तो पहली में क्या कमी थी? बस यही बातें शब्द आयत और अनुरूप का अर्थ वर्णन करने के लिए काफी है उस जैसी या उससे अच्छी या भुला देना, कुरआन की आयत के लिए नहीं है, अपितु वह आयत (चिन्ह) है जो ईश्वर इन्सानों को राज्य देता है,

आज्ञाकारी जाति स्थापितत रहती है, अवज्ञाकारी बदल दिए जाते हैं इसके लिए ही निरस्त व निरस्तकर्ता कहा गया है, आयत (107) में भी वही बात है जो (105,106) में है मनन अनिवार्य है,

तुम्हें ज्ञात नहीं है कि पृथ्वी व आकाश का राज्य ईश्वर ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा मित्र और सहायक नहीं (107)

अगली आयत में ईश्वर फिर सावधान कर रहा है ईश्वर राजा बनकर स्वयं सामने नहीं आता अपितु इन्सानों को ही राजा बनाता रहता है

फिर क्या तुम अपने ईशदूत से इस प्रकार के प्रश्न और अभिवाचन करना चाहते हो (5:101) जैसे इससे पहले मूसा अ0 से किए जा चुके हैं? यद्यपि जिस व्यक्ति ने आस्था की गतिविधि को नास्तिकता की

اب نبوت کا سلسلہ تو آخری نبی محمدؐ پر ختم ہو جائے گا. رہا سوال دنیا کی حکومت کا تو جو قوم نافرمان ہوگی اس سے یہ ساری بھلائی چھین لی جاتی ہیں یعنی وہ خود اپنے عمل سے ذلیل وخوار ہو جاتی ہے اور دنیا سے مٹا دئے جاتے ہیں اور جو قوم میری فرمانبرداری کرتی ہے اس کو یہ ساری بھلائی عطا کر دی جاتی ہیں (۳:۷۳،۷۴) اس کو ہی اللہ نے (۲:۱۰۶) میں کہا ہے کہ میری ساری بھلائی اس کے لئے خاص ہیں جو چاہتا ہے یعنی نیک عمل کرتا ہے اس لئے جس جگہ پر کبھی آپ لوگ فائز تھے اس جگہ سے آپ کو ہٹا کر میں نے اپنے فرمانبردار بندوں کو فائز کر دیا ہے اور تم سے بھی زیادہ چمک دمک کے ساتھ قائم ہوں گے اس کے لئے ہی کہا ہے کہ ہم جس نشانی کو مٹا دیتے ہیں تو دوسری اس سے اچھی نشانی (سلطنت) یا اس جیسی ہی شان وشوکت کی نشانی (سلطنت) دیتے ہیں. یا ایسا بھی ہوا ہے کہ بہت قومیں ایسی گزری ہیں جن کا اُس زمانے میں کوئی ثانی نہ تھا اور وہ چاروں طرف چھا گئے تھے. مگر نافرمانی کی وجہ سے وہ ایسے مٹے کہ آج ان کا کہیں نام ونشان بھی نہیں اور ذہنوں سے مٹ گئے. یعنی تاریخ میں بھی اب ان کا ذکر نہیں ان باتوں کی شاہد تاریخ ہے جو عقل مند ہوتے ہیں ان سے سبق لے کر اچھا عمل کرتے ہیں. اور قائم رہتے ہیں جو ناسمجھ ہوتے ہیں وہ نافرمانی کر کے مٹ جاتے ہیں ایسا ہی ہوتا رہا ہے اور ہوتا رہے گا آج مسلم قوم بھی نافرمانی کر رہی ہے جو اس مقام سے ہٹ گئی. جہاں اللہ نے اس کو قائم کیا تھا اور ذلیل ہوگئی.

یہ ہے آیت (۱۰۵،۱۰۶) کا خلاصہ لیکن اس کے خلاف مسلمانوں نے قرآن میں جو آیتیں پڑھی جاتی ہیں کو ناسخ ومنسوخ مان رکھا ہے کہ فلاں آیت فلاں آیت سے منسوخ ہے کوئی آیت حکماً منسوخ ہے اور کوئی تلاوتاً لیکن حقیقت اس کے خلاف ہے قرآن میں کوئی آیت منسوخ نہیں نہ حکماً نہ تلاوتاً. سب اپنی جگہ پر قائم ہیں.

ناسخ منسوخ کا عقیدہ قرآنی آیات میں قرآن کے خلاف ہے

آیت میں ایک لفظ مثل ہے اس جیسی ہی لاتے ہیں اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ اگر آیت قرآن پہلی آیت جیسی ہی لانی تھی تو پہلی کو ہی کیوں منسوخ کیا گیا؟ یا اس سے اچھی تو پہلی میں کیا کمی تھی؟ بس یہی باتیں لفظ آیت اور مثل کا مطلب بیان کرنے کے لئے کافی ہیں. اس جیسی یا اس سے اچھی یا بھلا دینا قرآن کی آیت کے لئے نہیں ہے بلکہ وہ آیت (نشان) ہے جو اللہ انسانوں کو حکومت دیتا ہے.

فرمانبردار قومیں قائم رہتی ہیں نافرمان بدل دئے جاتے ہیں. اس کے لئے ہی ناسخ ومنسوخ کہا گیا ہے. آیت (۱۰۷) میں بھی وہی بات ہے غور ضروری ہے (۲:۱۲۲)

تمہیں خبر نہیں ہے کہ زمین وآسمان کی بادشاہت اللہ ہی کے لئے ہے اور اس کے سوا کوئی تمہارا دوست اور مددگار نہیں (۱۰۷)

اگلی آیت میں اللہ پھر متنبہ کر رہا ہے اللہ بادشاہ بن کر خود سامنے نہیں آتا بلکہ انسانوں کو ہی بادشاہ بناتا رہتا ہے.

پھر کیا تم اپنے رسول سے اس قسم کے سوالات اور مطالبات کرنا چاہتے ہو (۵:۱۰۱) جیسا اس سے پہلے موسیٰ سے کئے جا چکے ہیں؟ حالانکہ جس شخص نے ایمان کی روش کو کفر کی

गतिविधि से बदल लिया वह राह रास्त से भटक गया (108) {2:55,61}

روش سے بدل لیا وہ راہ راست سے بھٹک گیا (۱۰۸) [۲:۵۵،۶۱]

नोट- ऐ मुसलमानों एक बात जान लो कि जितने आदेश व नियमों का दिया जाना ईश्वर का लक्ष्य है वह सब स्वतः कुरआन में दे दिए जाएेंगे और जिन विषयों के प्रति कुछ नही कहा जाएगा उनके बारे में समझ लेना चाहिए कि ऐसा ज्ञानतः किया गया है ईश्वर से भूल नही हुई, अतः तुमको अपनी ओर से अपने ईशदूत से ऐसे प्रश्न नही करने चाहिए जिस प्रकार के प्रश्न इससे पूर्व बनी इसराईल अपने रसूल मूसा से किया करते थे, इस कुरेद का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने ऐसी बातों को अपने लिए अपरिवर्तनीय धर्म विधान बना लिया जिसका आदेश नही था और पालन करना कठिन था सो तुम ऐसा न करना.

نوٹ:۔ اے مسلمانوں ایک بات جان لو کہ جس قدر احکام وقوانین کا دیا جانا اللہ کو مقصود ہے وہ سب از خود قرآن میں دے دئے جائیں گے۔ اور جن امور کے متعلق کچھ نہیں کہا جائے گا ان کے بارے میں سمجھ لینا چاہئے کہ ایسا دانستہ کیا گیا ہے اللہ سے بھول نہیں ہوئی۔ لہٰذا تم کو اپنی طرف سے اپنے رسول سے ایسے سوال نہیں کرنے چاہئیں جس قسم کے سوالات اس سے پہلے بنی اسرائیل اپنے رسول موسیٰ سے کیا کرتے تھے اس کرید کا نتیجہ یہ ہوا کہ انہوں نے ایسی باتوں کو اپنے لئے غیر متبدل شریعت بنا لیا جس کا حکم نہیں تھا اور پابندی کرنا مشکل تھا سو تم ایسا نہ کرنا۔

एहले किताब की अधिकता बाद इसके कि उन पर सत्य खुल चुका है, अपने द्वेष के कारण यह चाहती है कि तुम को आस्था लाने के बाद फिर नास्तिकता की ओर लौटा दे, पस धर्म वालो! उनको क्षमा करो और उनके अपमान जनक व्यवहार को कोई महत्व न दो क्षमा से काम लो (10:85,73:10) यहां तक कि ईश्वर अपना आदेश (अर्थात् उसके निर्धारित विधान भाग्य के अनुसार उनके पापों के दण्ड का समय आजाए क्योंकि वह अपनी निश्चित छूट के विरुद्ध जल्दी नही करता अतः तुम भी जल्दी न करो) निःसन्देह वह हर वस्तु के ठीक ठीक नियम बनाने वाला है (109) {2:210}

اہل کتاب کی اکثریت بعد اس کے کہ ان پر حقیقت کھل چکی ہے۔ اپنے حسد کی بدولت یہ چاہتی ہے کہ تم کو ایمان لانے کے بعد پھر کفر کی طرف لوٹا دے۔ پس ایمان والو! ان سے درگزر کرو اور ان کے توہین آمیز رویہ کو کوئی وقعت نہ دو درگزر سے کام لو (۱۰:۸۵،۷۳:۱۰) یہاں تک کہ اللہ اپنا امر (یعنی اس کے مقررہ قانون تقدیر کے مطابق ان کے جرائم کی سزا کا وقت آجائے۔ کیونکہ وہ اپنے مقررہ مہلت کے خلاف جلدی نہیں کرتا لہٰذا تم بھی جلدی نہ کرو) بلا شبہ وہ ہر چیز کے ٹھیک ٹھیک قوانین بنانے والا ہے (۱۰۹) [۲:۲۱۰]

नमाज़ स्थापित करो दान धर्मादाय दो तुम अपने अन्तिम परिणाम के लिए जो भलाई कमाकर आगे भेजोगे ईश्वर के यहां उसे उपस्थित पाओगे जो कुछ तुम करते हो वह सब ईश्वर की दृष्टि में है (110)

نماز قائم کرو اور زکوٰۃ دو تم اپنی عافیت کے لئے جو بھلائی کما کر آگے بھیجو گے اللہ کے یہاں اسے موجود پاؤ گے جو کچھ تم کرتے ہو وہ سب اللہ کی نظر میں ہے (۱۱۰)

यहूद और नसारा का राज्य व ईशदूत के अतिरिक्त प्रलोक के लिए भी यह वाद था कि हमारे अतिरिक्त कोई भी स्वर्ग में नही जाने का, यही विचार मुसलमानों का भी है तो आयत (111) में इस आस्था को भी निरस्त कर दिया

یہود و نصاریٰ کا حکومت و نبوت کے علاوہ آخرت کے لئے بھی یہ دعویٰ تھا کہ ہمارے علاوہ کوئی بھی جنت میں نہیں جائے گا یہی خیال مسلمانوں کا بھی ہے تو آیت (۱۱۱) میں اس عقیدے کو بھی خارج کر دیا۔

इनका कहना है कि कोई व्यक्ति स्वर्ग में न जाएगा जब तक वह यहूदी न हो जाए या ईसाई न हो यह उनकी अभिलाषा है इनसे कहो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो यदि तुम अपने वाद में सच्चे हो (111) {2:135}

ان کا کہنا ہے کہ کوئی شخص جنت میں نہ جائے گا جب تک وہ یہودی نہ ہو یا عیسائی نہ ہو یہ ان کی تمنائیں ہیں۔ ان سے کہو اپنی دلیل پیش کرو اگر تم سچے ہو اپنے دعوے میں (۱۱۱) [۲:۱۳۵]

(वास्तव में न तुम्हारी कुछ विशेषता है न किसी और की) सत्य यह है कि जो भी अपने अस्तित्व को ईश्वर की आज्ञापालन में सौंप दे और अच्छे मार्ग पर चले (जो कुरआन में अंकित है) उसके लिए उसके रब के पास उसका प्रतिदान है और ऐसे लोगों के लिए किसी डर या क्लेश का कोई अवसर नही (112) {7:180, 41:40}

(دراصل نہ تمہاری کچھ خصوصیت ہے نہ کسی اور کی) حق یہ ہے کہ جو بھی اپنی ہستی کو اللہ کی اطاعت میں سونپ دے اور عملاً نیک روش پر چلے (جو قرآن میں درج ہیں) اس کے لئے اس کے رب کے پاس اس کا اجر ہے اور ایسے لوگوں کے لئے کسی خوف یا رنج کا کوئی موقع نہیں (۱۱۲) [۷:۱۸۰، ۴۱:۴۰]

यहूद कहते है ईसाईयों के पास कुछ नही ईसाई कहते है यहूदियों के पास कुछ नही यद्यपि दोनों ही पुस्तक पढ़ते है और इसी प्रकार के वाद उन लोगों के भी है जिनके पास (पुस्तक का) ज्ञान नहीं (उम्मी) यह मतभेद जिसमें वह लोग लिप्त है उनका निर्णय ईश्वर महाप्रलय के दिन करेगा (113) {3:104, 11:118,119}

یہود کہتے ہیں عیسائیوں کے پاس کچھ نہیں عیسائی کہتے ہیں یہودیوں کے پاس کچھ نہیں۔ حالانکہ دونوں ہی کتاب پڑھتے ہیں۔ اور اسی قسم کے دعوے ان لوگوں کے بھی ہیں جن کے پاس (کتاب کا) علم نہیں (امی) یہ اختلاف جس میں وہ لوگ مبتلا ہیں ان کا فیصلہ اللہ قیامت کے دن کرے گا (۱۱۳) [۳:۱۰۴،

[۱۱۹،۱۱۸:۱۱

और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो ईश्वर के पूजा गृहों में उसके नाम की याद से रोके और उनके विनाश का इच्छुक हो? ऐसे लोग इस योग्य नही कि वह उन पूजा गृहों में पग रखे और यदि वहां जाए भी तो डरते हुए जाएं उनके लिए तो दुनिया में अपमान है और प्रलोक में महादण्ड है (114) {9:17,107से109, 72:18}

اوراس شخص سے بڑھ کر ظالم کون ہوگا جو اللہ کی مسجدوں میں اس کے نام کی یاد سے روکے اوران کی ویرانی کے درپے ہو؟ ایسے لوگ اس قابل نہیں کہ وہ ان عبادت گاہوں میں قدم رکھیں اوراگر وہاں جائیں بھی تو ڈرتے ہوئے جائیں ان کے لئے تو دینا میں رسوائی ہے اورآخرت میں عذاب عظیم (۱۱۴)[۹:۱۷،۹:۱۷،۱۰۷تا۱۰۹،۷۲:۱۸]

पूर्व और पश्चिम सब ईश्वर के है जिस ओर भी तुम मुख करो (अर्थात् जाओगे) वहां ईश्वर का मुख है (अर्थात् ईश्वर वहां भी उपस्थित है) ईश्वर बड़े विस्तार वाला और सब कुछ जानने वाला है (115)

مشرق ومغرب سب اللہ کے ہیں جس طرف بھی تم رُخ کرو(یعنی جاؤ گے)وہاں اللہ کا رُخ ہے(یعنی اللہ وہاں بھی موجود ہے)اللہ بڑی وسعت والا اور سب کچھ جاننے والا ہے(۱۱۵)

वह कहते है ईश्वर (ने उजेर और मसीह को पुत्र बनाया है) संतान रखता है (यद्यपि पुत्र की आवश्यकता उसको होती है जिसे बुढ़ापे और मृत्यु की आशंका हो, बुढ़ापे में लाठी पकड़ने वाला अर्थात् सहारे की आवश्यकता हो, और मृत्यु होने पर उसका उत्तराधिकारी बने) वह इन व्याधि से शतप्रतिशत पवित्र है अपितु आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है सब उसी का है और यह सब उसकी आज्ञापालन करने वाले है (116)

وہ کہتے ہیں اللہ(نے عزیر اور مسیح کو بیٹا بنایا ہے)اولاد رکھتا ہے(حالانکہ بیٹے کی ضرورت اس کو ہوتی ہے جسے بڑھاپے اور موت کا خطرہ ہو اور بڑھاپے میں لاٹھی پکڑنے والا یعنی سہارے کی ضرورت پیش آئے اور مرجائے تو اس کا جانشین بنے)وہ ان عورض سے سوفیصدی پاک ہے بلکہ آسمانوں اور زمین میں جو کچھ ہے سب اسی کا ہے اور یہ سب کے سب اس کی اطاعت کرنے والے ہیں(۱۱۶)

(नया) वह आकाशों और पृथ्वी का पैदा करने वाला है और जब अपने अमर को प्रकट करने का इरादा करता है तो कह देता है कि हो जा और वह हो जाता है क्योंकि हर अमर उसके ज्ञान में पहले से विद्यमान है जो आना है (117)

<u>وہ بلندیوں اور پستیوں کا پیدا کرنے والا ہے اور جب اپنے امر کو ظاہر کرنے کا ارادہ کرتا ہے تو کہہ دیتا ہے کہ ہوجا اور وہ ہوجاتا ہے کیونکہ ہر امر اس کے علم میں پہلے سے موجود ہے جو آنا ہے(۱۱۷)</u>

मूर्ख लोग कहते है कि ईश्वर स्वयं हम से बात क्यों नही करता या कोई चिन्ह हमारे पास क्यों नही आता ऐसी ही बातें उनसे पहले लोग भी किया करते थे उन सब (अगले पिछलों पथभ्रष्टों) के हृदय एक जैसे है, विश्वास लाने वालों के लिए तो हम स्मृति प्रकट कर चुके है (118) {42:51, 18:29}

نادان لوگ کہتے ہیں کہ اللہ خود ہم سے بات کیوں نہیں کرتا یا کوئی نشانی ہمارے پاس کیوں نہیں آتی ایسی ہی باتیں ان سے پہلے لوگ بھی کیا کرتے تھے ان سب (اگلے پچھلے گمراہوں) کے دل ایک جیسے ہیں یقین لانے والوں کے لئے تو ہم نشان صاف صاف نمایاں کرچکے ہیں (۱۱۸)[۴۲:۵۱،۱۸:۲۹،۶:۷۳]

ऐ ईशदूत निःसन्देह हमने आपको सत्य (कुरआन) देकर उसके आदेशों का पालन करने वालों को अच्छे फल का शुभ समाचार देने वाला और इसके विरोधी के लिए बुरे दण्ड से सूचित करने वाला बनाकर भेजा है (लोग उनका इनकार करके नर्क का ईंधन क्यों बनते है) नर्क वालों के बारे में आपसे प्रश्न नही किया जाएगा (119) {13:40}

اے رسول بلاشبہ ہم نے آپ کو حق (قرآن) دے کر اس کے احکام کی پابندی کرنے والوں کو بہتر جزا کی خوشخبری دینے والا اوراس کے مخالفین کے لئے بُری سزا سے آگاہ کرنے والا بنا کر بھیجا ہے(لوگ ان کا انکار کرکے دوزخ کا ایندھن کیوں بنتے ہیں)اہل جحیم کے بارے میں آپ سے سوال نہیں کیا جائے گا(۱۱۹)[۱۳:۴۰]

यहूद और नसारा तुमसे कदापि प्रसन्न न होंगे जब तक तुम उनकी रीति पर न चलने लगो, साफ कह दो कि रीति बस वही है जो ईश्वर ने बनाई है, अन्यथा यदि इस ज्ञान के बाद (धर्म वालों) जो तुम्हारे पास आ चुका है तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया तो ईश्वर की पकड़ से बचाने वाला कोई मित्र और सहायक तुम्हारे लिए नही है (120) {7:3, 10:109, 13:37}

یہودی اور نصاریٰ تم سے ہرگز راضی نہ ہوں گے جب تک تم ان کے طریقے پر نہ چلنے لگو صاف کہہ دو کہ راستہ بس وہی ہے جو اللہ نے بتایا ہے ورنہ اگر اس علم کے بعد (اہل ایمان) جو تمہارے پاس آچکا ہے تم نے ان کی خواہشات کی پیروی کی تو اللہ کی پکڑ سے بچانے والا کوئی دوست اور مددگار تمہارے لئے نہیں ہے(۱۲۰)[۷:۳،۱۰:۱۰۹، ۱۳:۳۷]

नोट- आयत (120) में प्रत्यक्ष सम्बोधन मुहम्मद स0 से है, परन्तु वास्तव में इस भाषण शैली से सम्पूर्ण आस्तिकों के कान खोल दिए गए हैं, चूंकि मुहम्मद स0 से तो यह आशा की ही नहीं जा सकती थी कि वह इस पाप का व्यवहार कर सकते हैं, वास्तव में यह सम्बोधन मुहम्मद स0 के माध्यम से आस्तिकों से है, उनसे भी जो इस आयत के अवतरण के समय उपस्थित थे और उनसे भी जो बाद में उत्पन्न होंगे, जब भी कोई वादी इस्लाम इस पाप का अपराधी होगा अर्थात् ईश्वर ने जिस सत्य से कृपा की है उससे विमुख होकर अपनी सोच या व्यवहार में वह यहूद या ईसाईयों या अनेकेश्वर वादियों के व्यवहार या विचार को अपनाए तो वह इस कड़ी चेतावनी का अधिकारी है चाहे कोई मानव हो या कोई जाति हो, इस आयत के अन्तर्गत मुसलमान अपना अवलोकन करे.

نوٹ:۔آیت (۱۲۰) میں بظاہر خطاب محمدؐ سے ہے مگر اصل میں اس طرز کلام سے تمام اہل ایمان کے کان کھول دیے گئے ہیں. چونکہ محمدؐ سے تو یہ امید کی ہی نہیں جا سکتی تھی کہ وہ اس جرم کا ارتکاب کر سکتے ہیں حقیقت میں یہ خطاب محمدؐ کے واسطے سے اہل ایمان سے ہے ان سے بھی جو اس آیت کے نزول کے وقت موجود تھے اور ان سے بھی جو بعد میں پیدا ہوں گے جب بھی کوئی مدعی اسلام اس جرم کا مرتکب ہوگا یعنی اللہ نے جس حق سے نوازا ہے اس سے منحرف ہوکر اپنے فکر یا عمل میں وہ یہودیا عیسائی یا مشرکین کے اعمال افکار کو اپنائے تو وہ اس وعید شدید کا مستحق ہے خواہ کوئی فرد ہو یا کوئی قوم، اس آیت کے تحت مسلمان اپنا جائزہ لیں.

जिन लोगों को हमने पुस्तक दी है (उनमें एक दल ऐसा भी है कि) वह इस प्रकार पुस्तक का अनुसरण करते हैं जो अनुकरण करने का नोदन है वह इस पर आस्था रखते हैं और जो नकार करे पस वही घाटा पाने वाले हैं (121) {3:113, 5:83,84, 6:20, 28:52,53}

جن لوگوں کو ہم نے کتاب دی ہے (ان میں ایک گروہ ایسا بھی ہے کہ) وہ اس طرح کتاب کی اتباع کرتے ہیں جو اتباع کرنے کا تقاضہ ہے وہ اس پر ایمان رکھتے ہیں اور جو انکار کرے بس وہی کھاٹا پانے والے ہیں (۱۲۱) [۳:۱۱۳، ۵:۸۳'۸۴، ۶:۲۰، ۲۸:۵۲'۵۳]

ऐ बनी इसराईल याद करो वह सुख सामग्री जिससे मैंने तुम पर दया की और यह कि मैंने तुम्हें संसार की सब जातियों पर श्रेष्ठता दी थी (122) तुम्हारे आज्ञाकारी होने के कारण, परन्तु तुमने नास्तिकता की और अपनी आस्था वही बना ली जो तुम से पहली अवज्ञाकारी जातियों ने अपनाऐं थे, जिनकी आस्था थी कि हम ईश्वर के प्रिय हैं हम नर्क में नही जाऐंगे, यदि गए भी तो कुछ दिन के लिए फिर वहां से हमारे ईशदूत हम को निकाल लेंगे, परन्तु यह आस्था मिथ्याहै जो भी अच्छे कर्म करेगा वह स्वर्ग में और जो बुरे कर्म करेगा वह नर्क में जाएगा जिसका वर्णन आयत (123) में है.

اے بنی اسرائیل یاد کرو وہ نعمت جس سے میں نے تمہیں نوازا تھا اور یہ کہ میں نے تمہیں دنیا کی تمام قوموں پر فضیلت دی تھی (۱۲۲) تمہاری فرمانبرداری کی وجہ سے لیکن تم نے کفر کیا اور اپنے عقیدے وہی بنائے جو تم سے پہلے نافرماں قوموں نے اپنائے تھے جن کا عقیدہ تھا کہ ہم اللہ کے پیارے ہیں ہم دوزخ میں نہیں جائیں گے اگر گئے بھی تو چند دن کے لئے پھر وہاں سے ہمارے نبیؐ ہم کو نکال لیں گے مگر یہ عقیدہ غلط ہے جو بھی اچھے عمل کرے گا وہ جنت میں اور جو برے عمل کرے گا وہ دوزخ میں جائے گا جس کا ذکر آیت '۱۲۳' میں ہے.

और डरो उस दिन से जब कोई किसी के तनिक काम न आएगा न किसी से बदला स्वीकार किया जाएगा न कोई अनुशंसा ही आदमी को लाभ देगी, और न पापियों को कहीं से कोई सहायता मिलेगी (123) {2:48, 3:154,155}

اور ڈرو اس دن سے جب کوئی کسی کے ذرا کام نہ آئے گا نہ کسی سے فدیہ قبول کیا جائے گا. نہ کوئی شفاعت ہی آدمی کو فائدہ دے گی اور نہ مجرموں کو کہیں سے کوئی مدد پہنچ سکے گی (۱۲۳) [۲:۴۸، ۳:۱۵۴'۱۵۵]

याद करो जब इब्राहीम अ0 को उसके रब ने प्रकट करना चाहा कुछ बातों में ग्रस्त करके और उन सबमें वह पूरा उतर गया तो ईश्वर ने कहा मैं तुझे सब लोगों का अग्रणी बनाने वाला हूं, अर्थात् बनाता हूं, इब्राहीम अ0 ने प्रार्थना की और क्या मेरी संतान से भी यही वचन है, ईश्वर ने उत्तर दिया मेरा वचन पापियों के बारे में नहीं (124) {7:97, 3:82, 60:4, 21:73, 29:27, 59:26}

یاد کرو جب ابراہیمؑ کو اس کے رب نے ظاہر کرنا چاہا چند باتوں میں مبتلا کر کے اور وہ ان سب میں پورا اتر گیا تو اللہ نے کہا میں تجھے سب لوگوں کا پیشوا بنانے والا ہوں یعنی بناتا ہوں. ابراہیم نے عرض کیا اور کیا میری اولاد سے بھی یہی وعدہ ہے اللہ نے جواب دیا میرا وعدہ ظالموں سے متعلق نہیں ہے (۱۲۴) [۷:۹۷، ۳:۸۲، ۶۰:۴، ۲۱:۷۳، ۲۹:۲۷، ۵۹:۲۶، ۳:۱۱۰، ۴۹:۱۳]

नोट- आयत में ईश्वर का वचन केवल सदाचारी और शीलवान बन्दों से है न कि अवज्ञाकारी संतान ईशदूत या अवज्ञाकारी समुदाय नबी से, इसलिए हर आदमी को कुरआन पर व्यवहार ही लाभ दे सकता है न कि दूसरे नियम पर व्यवहार करने पर, हर आदमी को विचार करना चाहिए कि हम किस नियम पर कर्म कर रहे हैं, यह कुरआन के विरुद्ध तो नहीं है मरने से पहले अपने कर्म ठीक कर लेना ही लाभ दायक है

نوٹ:۔آیت میں اللہ کا وعدہ صرف نیک اور صالح بندوں سے ہے نہ کہ نافرمان اولاد نبی یا نافرمان امت نبی سے اس لئے ہر آدمی کو قرآن پر عمل ہی فائدہ دے سکتا ہے نہ کہ دوسرے قانون پر عمل، ہر آدمی کو غور کرنا چاہیئے کہ ہم کس قانون پر عمل کر رہے ہیں. یہ قرآن کے خلاف تو نہیں ہے مرنے سے پہلے اپنے عمل درست کر لینا ہی فائدہ مند ہے

और यह कि हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्ति का स्थान निर्धारित किया और लोगों को आदेश दिया कि इब्राहीम अ0 जहां पूजा के लिए खड़ा होता था उस स्थान को स्थायी पूजा की जगह बना लो, और इब्राहीम अ0 और इस्माईल अ0 को (और सम्पूर्ण लोगों को) चेतावनी दी

اور یہ کہ ہم نے اس گھر (کعبہ) کو لوگوں کے لئے مرکز اور امن کی جگہ مقرر کیا اور لوگوں کو حکم دیا کہ ابراہیمؑ جہاں عبادت کے لئے کھڑا ہوتا تھا اس مقام کو مستقل نماز کی جگہ بنا لو اور ابراہیمؑ اور اسماعیل (اور پورے لوگوں کو) تاکید کی

कि मेरे इस घर को परिक्रमा और रुकने वालों और झुकने वालों और सजदा करने वालों के लिए पवित्र रखो (और मूर्ति पूजा से भी पवित्र रखो) (125) {3:96, 5:97, 22:25, 2:143, 22:78}

کہ میرے اس گھر کو طواف اور اعتکاف رکوع اور سجود کرنے والوں کے لئے پاک رکھو (مشرکانہ رسوم اور بت پرستی سے بھی پاک کردو) (۱۲۵) [۳:۹۶، ۵:۹۷، ۲۲:۲۵، ۲:۱۴۳، ۲۲:۷۸]

नोट- आयत (125) में स्पष्ट शब्दों में ईश्वर ने आदेश दिया है आस्तिकों को कि तुम्हारे लिए केवल एक केन्द्र बनाया है, और वही तुम्हारे लिए शान्ति का स्थान है अर्थात् तुम एक नायक के आधीन रह कर कार्य करो और इस केन्द्र से जिसको ईश्वर ही ने निर्धारित किया है, पूरे संसार के लिए शान्तिके निर्देश पारित होंगे तुम्हारे द्वारा जिस प्रकार श्रीमान इब्राहीम अ0 ने इसी केन्द्र से सम्पूर्ण संसार को शान्ति के संदेश दिए थे,

نوٹ:۔ آیت ۱۲۵ میں صاف الفاظ میں اللہ نے مسلمانوں کو حکم دیا ہے کہ تمہارے لئے صرف ایک مرکز بنایا ہے اور وہی تمہارے لئے امن کی جگہ ہے یعنی تم ایک ہی امیر کے تحت رہ کر کام کرو اور اس مرکز سے جس کو اللہ نے ہی مقرر کیا ہے تمام عالم کے لئے امن کے احکام صادر ہوں گے تمہارے ذریعہ جس طرح حضرت ابراہیم نے اسی مقام مرکز سے تمام عالم کو اس کے پیغام دیئے تھے.

और कहा कि केन्द्र से सहगतक नियम जो अवतरित हैं मान लो तो शान्ति में रहोगे, और जब इस केन्द्र में सम्पूर्ण संसार से लोग शान्ति के संदेश लेने के लिए आऐंगे तो उनके लिए हर प्रकार का प्रबन्ध करो, वह पूजा भी करेंगे परिक्रमा भी करेंगे और बैठेंगे भी, बाहर से आने वालों का हर प्रकार का ध्यान करना है और यह भी देखना है कि कोई मूर्ति पूजा तो नहीं कर रहा है कोई अनुचित रीतियां तो नही कर रहा जैसे पहले करते थे,

اور کہا کہ مرکز سے منسلک قانون جو نازل شدہ ہیں مان لو تو امن میں رہو گے. اور جب اس مرکز میں تمام عالم سے لوگ امن کے احکام لینے کے لئے آئیں گے تو ان کے لئے ہر طرح کا انتظام کرو. وہ نماز بھی پڑھیں گے طواف کریں گے اور اعتکاف میں بھی رہیں گے. باہر سے آنے والوں کا ہر طرح کا خیال کرنا ہے اور یہ بھی دیکھنا ہے کہ کوئی بت پرستی تو نہیں کر رہا ہے کوئی غلط رسوم تو نہیں کر رہا جیسا پہلے کرتے تھے

और अतिथि का भी ध्यान रखना है, और अतिथि का भी कर्तव्य है कि वह आतिथ्य को अनुचित विधि से व्याकुल न करे वह जो संदेश ईश्वर के आदेशानुसार दे उसको माने और अपने हज के स्तम्भ भी पूरे करे यदि इस आयत पर क्रिया की जाए तो मुसलमानों में एकता हो सकती है और फिर वह उस स्थान पर पदासीन हो जाऐंगे जिस पर पदासीन होने के बाद संसार को शान्ति के संदेश दिए जाते हैं और संसार में शान्ति होगी (21:73, 21:27, 57:26)

اور مہمان کا بھی خیال رکھنا ہے اور مہمان کی بھی ذمہ داری ہے کہ وہ میزبان کو ناجائز طریقے سے پریشان نہ کرے اور جو حکم میزبان حکم الٰہی کے مطابق دے اس کو مانے اور اپنے حج کے ارکان بھی پورے کرے. اگر اس آیت پر عمل کیا جائے تو مسلمان متحد ہو سکتے ہیں اور پھر وہ اس مقام پر فائز ہو جائیں گے جس پر فائز ہونے کے بعد دنیا کو پیغام امن دیے جاتے ہیں. اور دنیا میں امن ہوگا [۲۱:۷۳، ۲۹:۲۷، ۵۷:۲۶]

और यह कि इब्राहीम अ0 ने प्रार्थना की ऐ मेरे रब इस नगर को शान्ति का नगर बना दे और इसके रहने वालों में से जो ईश्वर को और प्रलोक को माने उन्हें हर प्रकार की जीविका फलों से दे उत्तर में उसके ईश्वर ने कहा और जो न मानेगा दुनिया में कुछ दिन का जीवन का सामान तो मैं उसे भी दूंगा परन्तु अंततः उसे नर्क की यातना की ओर घसीटूंगा और वह निकृष्टतम स्थान है (126)

اور یہ کہ ابراہیم نے دعا کی اے میرے رب اس شہر کو امن کا شہر بنا دے اور اس کے باشندوں میں سے جو اللہ کو اور آخرت کو مانیں انہیں ہر قسم کا رزق پھلوں سے دے جواب میں اس کے رب نے فرمایا اور جو نہ مانے گا دنیا کی چند روزہ زندگی کا سامان تو میں اسے بھی دوں گا مگر آخر کار اسے عذاب جہنم کی طرف گھسیٹوں گا اور وہ بدترین ٹھکانہ ہے (۱۲۶)

और याद करो वह समय जब इब्राहीम अ0 व इस्माईल अ0 इस घर की दीवारें उठा रहे थे तो प्रार्थना करते जाते थे ऐ हमारे ईश्वर हमसे यह सेवा स्वीकार कर ले तू सबकी सुनने वाला है और जानने वाला है (127)

اور یاد کرو وہ وقت جب ابراہیمؑ و اسماعیلؑ اس گھر کی دیواریں اٹھا رہے تھے تو دعا کرتے جاتے تھے اے ہمارے رب ہم سے یہ خدمت قبول فرما لے تو سب کی سننے والا اور جاننے والا ہے (۱۲۷)

ऐ रब हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना हमारे वंश से एक समुदाय उठा जो तेरा आज्ञाकारी हो, हमें अपनी पूजा की विधि बता और हमारी त्रुटियों को क्षमा कर तू बड़ा क्षमा करने वाला और करूणा करने वाला है (128)

اے رب ہم دونوں کو اپنا مسلم (ماننے والا) بنا ہماری نسل سے ایک قوم اٹھا جو تیری مسلم (فرمانبردار) ہو ہمیں اپنی عبادت کے طریقے بتا اور ہماری کوتاہیوں سے درگزر فرما تو بڑا معاف کرنے والا اور رحم فرمانے والا ہے (۱۲۸)

ऐ रब! इस बस्ती के निवासियों में एक ऐसा ईशदूत उत्पन्न कर देना जो इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए (कानून) और उनके दिलों में अनेकेश्वर वाद के विरुद्ध सुदृढ़ तर्क स्थापित कर दे और दिलों को साफ करने के बाद युक्ति की शिक्षा सिखाए और उनके मनों को (नास्तिकता और अनेकेश्वर वाद की गंदगी से) पवित्र करे, निःसन्देह तू प्रभुत्व शाली और युक्ति वाला है (129) {6:116, 2:231, 17:39,

اے پروردگار! اس بستی کے باشندوں میں ایک ایسا رسول پیدا کر دینا جو ان کو تیری آیتیں پڑھ کر سنائے (قانون) اور ان کے دلوں میں محکم دلیل قائم کر دے اور دلوں کو صاف کرنے کے بعد حکمت اور دانائی سکھائے اور ان کے دلوں کو (کفر اور شرک کی گندگی سے) پاک صاف کرے. بے شک تو غالب اور صاحب حکمت ہے (۱۲۹) [۶:۱۱۶،

33:34, 57:25, 62:2, 6:116}

۲:۲۳۱، ۱۷:۳۹، ۳۳:۳۴، ۵۷:۲۵، ۶۲:۲، ۶:۱۱۶]

नोट- आयत (129) में कुरआन की आयात ही सुनाने को कहा और पुस्तक व युक्ति की शिक्षा को कहा अतः सबसे पहले हर आदमी को कुरआन ही देखना चाहिए इसके बाद किसी दूसरी वस्तु को देखे और उसके यथार्थ को इस कुरआन से देखे न कि दूसरे ज्ञान से इस कुरआन को देखे.

نوٹ:۔آیت '۱۲۹' میں قرآن کی آیات ہی سنانے کو کہا اور کتاب وحکمت کی تعلیم کو کہا اس لئے سب سے پہلے ہر انسان کو قرآن ہی دیکھنا چاہیئے. اس کے بعد کسی دوسری چیز کو دیکھے اور اس کی حقیقت کو اس قرآن سے دیکھے نہ کہ دوسرے علم سے اس قرآن کو دیکھے.

अब कौन है जो इब्राहीम अ0 की पद्धति से घृणा करे? केवल वह जिसने स्वयं अपने को मूर्खता व अज्ञानता में ग्रस्त कर लिया हो, उसके सिवा कौन यह हरकत कर सकता है, इब्राहीम अ0 तो वह व्यक्ति है जिसको हमने दुनिया में अपने काम के लिए चुन लिया था और प्रलोक में उसकी गणना सदाचारियों में होगी (130) {16:120,122}

اب کون ہے جو ابراہیم کے طریقے سے نفرت کرے؟ صرف وہ جس نے خود اپنے کو حماقت و جہالت میں مبتلا کرلیا ہو اس کے سوا کون یہ حرکت کرسکتا ہے ابراہیمؑ تو وہ شخص ہے جس کو ہم نے دنیا میں اپنے کام کے لئے چن لیا تھا اور آخرت میں اس کا شمار صالحین میں ہوگا (۱۳۰) [۱۶:۱۲۰،۱۲۲]

उसकी दशा यह थी कि जब उसके रब ने उससे कहा आज्ञाकारी हो जा तो उसने तुरन्त कहा मैं संसार के स्वामी का आस्तिक हो गया (131)

اس کا حال یہ تھا کہ جب اس کے رب نے اس سے کہا مسلم (فرمانبردار) ہوجا تو اس نے فوراً کہا میں مالک کائنات کا مسلم ہوگیا (۱۳۱)

इसी विधि पर चलने का आदेश इब्राहीम अ0 ने अपनी संतान को दिया था और इसी का आदेश याकूब अ0 ने अपनी संतान को दिया था, उसने कहा था कि मेरे पुत्रों ईश्वर ने तुम्हारे लिए यही धर्म अभिरूचि किया है, अतः मरते समय तक आज्ञाकारी ही रहना (132) {2:135,136, 2:57, 3:93, 19:58, 2:128, 21:92}

اسی طریقے پر چلنے کی وصیت (ہدایت) ابراہیمؑ نے اپنی اولاد کو کی تھی اور اسی کی وصیت یعقوبؑ نے اپنی اولاد کو کی تھی. اس نے کہا تھا کہ میرے بچو اللہ نے تمہارے لئے یہی دین پسند کیا ہے لہٰذا مرتے دم تک مسلم (فرمانبردار) ہی رہنا (۱۳۲) [۲:۱۳۵،۱۳۶، ۲:۵۷، ۳:۹۳، ۱۹:۵۸، ۲:۱۲۸، ۲۱:۹۲]

फिर क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब याकूब अ0 इस संसार से विदा हो रहे थे? उसने मरते समय अपने पुत्रों से ज्ञात किया बच्चों? मेरे बाद तुम किसकी पूजा करोगे? उन सबने कहा हम उस एक ईश्वर की पूजा करेंगे जिसकी आपने और आपके पिता इब्राहीम अ0 ने और आपके (बड़े भाईयों) इस्हाक़ अ0 और इस्माईल अ0 ने एक ईश्वर माना है और उसी के आज्ञाकारी हैं जो ईश्वर एक ही है (133)

پھر کیا تم اس وقت موجود تھے جب یعقوب اس دنیا سے رخصت ہو رہا تھا؟ اس نے مرتے وقت اپنے بیٹوں سے پوچھا بچو! میرے بعد تم کس کی بندگی کروگے؟ ان سب نے کہا ہم اس ایک اللہ کی بندگی کریں گے جس کو آپ نے اور آپ کے باپ ابراہیمؑ اور آپ کے بڑے (بھائی) اسماعیلؑ اور اسحاقؑ نے ایک اللہ مانا ہے. اور اسی کے فرمانبردار ہیں جو معبود ایک ہی ہے (۱۳۳)

महामना याकूब अ0 को महामना इब्राहीम अ0 का पौता माना है जबकि याकूब अ0 इब्राहीम अ0 के पुत्र हैं, इसका प्रमाण अपने स्थान पर आएगा, जबकि इस आयत में भी शब्द आबाइका इब्राहीमा अर्थात् तेरे पिता इब्राहीम के रब की.

حضرت یعقوبؑ کو حضرت ابراہیمؑ کا پوتا مانا ہے جب کہ یعقوبؑ ابراہیمؑ کے بیٹے ہیں اس کی دلیل اپنی جگہ پر آئے گی جب کہ اس آیت میں بھی لفظ آبا تک ابراہیم یعنی تیرے باپ ابراہیم کے رب کی.

वह कुछ लोग थे जो चले गए जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके लिए है और जो तुम कमाओगे वह तुम्हारे लिए है तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वह क्या करते थे (तुम अपनी चिन्ता करो) (134)

وہ کچھ لوگ تھے جو گزر گئے جو کچھ انہوں نے کمایا وہ ان کے لئے ہے اور جو تم کماؤ گے وہ تمہارے لئے ہے تم سے یہ نہ پوچھا جائے گا کہ وہ کیا کرتے تھے (تم اپنی فکر کرو) (۱۳۴)

यहूद कहते हैं कि यहूदी हो जाओ तो सत्य मार्ग पाओगे, ईसाई कहते हैं ईसाई हो तो पथ प्रदर्शन मिलेगी, उनसे कहो नहीं अपितु सबको छोड़कर इब्राहीम का का मार्ग स्वीकार करो और इब्राहीम अनेकेश्वर वादियों में से न था (जबकि यहूद व नसारा अनेकेश्वर वादी हैं) (135)

یہود کہتے ہیں یہودی ہوجاؤ تو راہ راست پاؤ گے عیسائی کہتے ہیں عیسائی ہو تو ہدایت ملے گی ان سے کہو نہیں بلکہ سب کو چھوڑ کر ابراہیم کا طریقہ اختیار کرو اور ابراہیم مشرکوں میں سے نہ تھا (جب کہ یہود و نصاریٰ مشرک ہیں) (۱۳۵)

उनके उत्तर में कहो कि हम आस्था लाए ईश्वर पर और उस शिक्षा पर जो हमारी ओर प्रेषित की गई है और (जो इब्राहीम अ0, इस्माईल अ0, इस्हाक अ0, याकूब अ0 की ओर प्रेषित की गई थी और

ان کے جواب میں کہو کہ ہم ایمان لائے اللہ پر اور اس ہدایت پر جو ہماری طرف نازل ہوئی ہے اور جو ابراہیمؑ اسماعیلؑ اسحاقؑ یعقوبؑ کی طرف نازل ہوئی تھی اور

जो मूसा अ० और ईसा अ० और सम्पूर्ण ईशदूतों को उनके रब की ओर से दी गई थी हम उनके मध्य कोई अन्तर नहीं करते और हम ईश्वर के आज्ञाकारी हैं (136)

جوموسیٰ اور عیسیٰ اور دوسرے تمام نبیوں کو ان کے رب کی طرف سے دی گئی تھی ہم ان کے درمیان کوئی فرق نہیں کرتے اور ہم اللہ کے فرمانبردار ہیں (۱۳۶)

नोट- आयत में कितने स्पष्ट शब्दों में बताया गया है कि ईश्वर ने हर ईशदूत को एक ही विधान दिया है और हर नबी और जाति को यही चैतावनी दी कि तुम सब इस पर विश्वास करो जो पहले अवतरित की थी और अब तुम को दी जा रही है, यदि अन्तर है तो केवल भाषा का विधान में कोई अन्तर नहीं, ईश्वर का विधान बदला नहीं करता और बुद्धि के अनुसार होता है.

نوٹ:۔آیت میں کتنے صاب الفاظ میں بتایا گیا ہے کہ اللہ نے ہر نبی کو ایک ہی شریعت دی اور ہر نبی اور قوم کو یہی تاکید کی کہ تم سب اس پر بھی ایمان لاؤ جو پہلے نازل کی تھی اور اب تم کو دی جا رہی ہے. اگر فرق ہے تو صرف زبان کا. قانون میں کوئی فرق نہیں اللہ کا قانون بدلا نہیں کرتا، اور عقل کے مطابق ہوتا ہے.

फिर यदि वह इस प्रकार आस्था लाए जिस प्रकार तुम आस्था लाए हो तो सीधे मार्ग पर हैं और यदि इससे मुख फेरे तो स्पष्ट बात है कि वह हठधर्म हैं, अतः विश्वास रखो कि उनकी तुलना में ईश्वर तुम्हारी सहायता के लिए प्रयाप्त है वह सब कुछ सुनता और जानता है (137)

پھر اگر وہ اس طرح ایمان لائیں جس طرح تم ایمان لائے ہو تو ہدایت پر ہیں، اور اگر اس سے منہ پھریں تو کھلی بات ہے کہ وہ ہٹ دھرم ہیں لہٰذا اطمینان رکھو کہ ان کے مقابلے میں اللہ تمہاری حمایت کے لئے کافی ہے وہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے (۱۳۷)

नोट- आयत (137) में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अब किसी समुदाय को मोक्ष उस समय तक नहीं मिलेगी जब तक इस कुरआन और कुरआन के भारवाहक को सत्य मानकर उन पर विश्वास न लाए और इस पर कर्म न करे, यह जो कहा जाता है कि हर सदाचारी मनुष्य चाहे वह किसी भी विधान को मान रहा है मोक्ष मिलेगी यह मिथ्या है, अब तो केवल इब्राहीम अ० के धर्म जो मुहम्मद स० के द्वारा मिला है को मानकर ही मोक्ष मिलेगी, इस बात पर आपत्ति हो सकती है कि हर ईशदूत को वही धर्म मिला जो मुहम्मद स० को मिला, फिर उन धर्मों पर कर्म करने से मोक्ष क्यों नहीं? परन्तु दो कमी है एक तो यह कि किसी भी ईशदूत का धर्म शास्त्र जो उस पर अवतरित हुआ था वह मूल दशा में किसी भूतपूर्व समुदाय के पास नहीं है तो क्रिया किस पर होगी, मिथ्या धर्म शास्त्र पर क्रिया करने से मोक्ष कहां? फिर जिस प्राचीन धर्म शास्त्र जो बदल चुके हैं पर क्रिया की तो उसके अनुसार अन्तिम आने वाले ईशदूत को मानने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि मनुष्य हठ में आकर वहां ही रुक जाएगा जो उसकी परिवर्तित धर्मशास्त्र में लिख दिया गया है.

نوٹ:۔آیت ۱۳۷ میں صاف الفاظ میں فرمایا گیا ہے کہ اب کسی قوم کو نجات اس وقت تک نہیں ملے گی جب تک اس قرآن اور حامل قرآن کو برحق مان کر ان پر ایمان نہ لائے اور اس پر عمل نہ کرے یہ جو کہا جاتا ہے کہ ہر نیک آدمی چاہے وہ کسی بھی شریعت کو مان رہا ہے نجات ملے گی یہ غلط ہے اب تو صرف ملت ابراہیم جو محمدؐ کے ذریعہ ملی ہے کو مان کر ہی نجات ملے گی اس بات پر اعتراض ہوسکتا ہے کہ ہر نبی کو وہی شریعت ملی جو محمدؐ کو ملی پھر ان شریعتوں پر عمل کرنے سے نجات کیوں نہیں؟ مگر دو کمی ہیں ایک تو یہ کہ کسی بھی نبی کی شریعت جو اس پر نازل ہوئی تھی وہ اصل حالت میں کسی سابق امت کے پاس نہیں ہے تو عمل کس پر ہوگا؟ غلط شریعت پر عمل کرنے سے نجات کہاں پھر جس قدیم شریعت جو بدل چکی ہے پر عمل کیا تو اس کے مطابق آخری آنے والے نبی کو ماننے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوگا. کیونکہ آدمی ضد میں آ کر وہاں ہی رک جائے گا جو ان کی تبدیل شریعت میں لکھ دیا گیا ہے

अतः जो विधान कुरआन के अन्दर मूल स्थिति में है उस पर क्रिया ही सफलता की कुंजी है, विचार करो फिर (3:81) में बनी इसराईल से एक वचन लिया है जिसमें कहा है कि यदि कोई ईशदूत इस शिक्षा विधान को प्रमाणित करता हुआ आए जो तुम्हारे पास है मूल रूप में धर्म शास्त्र है तो उस पर विश्वास लाना और उसकी सहायता करना है इस आयत ने सारा भ्रम ही खोल दिया, अतः अब मुहम्मद स० पर आस्था ही परलोक की सफलता है, (3:81)

اس لئے جو شریعت قرآن کے اندر اصل حالت میں ہے اس پر عمل ہی کامیابی کی کلید ہے غور کرو پھر (۳:۸۱) میں بنی اسرائیل سے ایک عہد لیا ہے جس میں کہا ہے کہ اگر کوئی نبی اس تعلیم کی تصدیق کرتا ہوا آئے جو تمہارے پاس اصل شریعت ہے تو اس پر ایمان لانا ہے اور اس کی مدد کرنی ہے اس آیت نے سارا بھرم ہی کھول دیا اس لئے اب محمدؐ پر ایمان ہی آخرت کی کامیابی ہے. (۳:۸۱)

रंग दिया है हमको ईश्वर ने अर्थात् धर्म दिया है हमने उसको धारण कर लिया है और ईश्वर से अच्छा रंग धर्म किसका हो सकता है, और हम उसी की पूजा करने वाले हैं (138)

رنگ دیا ہے ہم کو اللہ نے یعنی دین دیا ہے ہم نے اس کو اختیار کرلیا ہے اور اللہ سے بہتر رنگ دین کس کا ہوسکتا ہے اور ہم اسی کی عبادت کرنے والے ہیں (۱۳۸)

नोट- रंग से अभिप्राय ईश्वर का धर्म स्वभाव रीति है, रंग का उल्लेख इस लिए हुआ है कि ईश्वर संसार में हर एक की आवश्यकता को पूरा करता है चाहे वह सदाचारी है या बद, ईश्वर कृपालु, महाकृपालु है क्षमाशील है इत्यादि, अतः मनुष्य को चाहिए कि वह भी जरूरत मन्दों की आवश्यकता को उसी प्रकार पूरी करे जैसे ईश्वर बिना किसी स्वार्थ के पूरा करता है, और उसके धर्म को जो कुरआन में है को स्वीकार कर उसके आज्ञाकारी बनना है तब ठीक है अन्यथा विकार है.

نوٹ:۔رنگ سے مراد اللہ کا دین ہے عادت طریقہ ہے رنگ کا ذکر اس لئے ہوا ہے کہ اللہ دنیا میں ہر ضرورت مند کی ضرورت کو پورا کرتا ہے. چاہے وہ نیک ہے یا بد. اللہ رحمٰن ہے ستار ہے غفار ہے وغیرہ. اس لئے انسان کو چاہیئے کہ وہ بھی ضرورت مندوں کی ضرورت کو اسی طرح پورا کرے جیسے اللہ بغیر کسی غرض کے پورا کرتا ہے اور اس کے دین کو جو قرآن میں ہے کو مان کر اس کا مسلم بننا ہے تب ٹھیک ہے ورنہ خرابی ہے

इसके अतिरिक्त यह भी अर्थ है कि आज जो भांति भांति के वर्ग या मत बना रखे हैं उनको छोड़कर केवल एक ही मत जो इब्राहीम का मत धर्म है को मान लो, आयत (139) में भी लगभग यही बात है.

علاوہ ازیں یہ بھی مطلب ہے کہ آج جو طرح طرح کے فرقے یا مسلک بنا رکھے ہیں ان کو چھوڑ کر صرف اور صرف ایک طریقہ جو ملت ابراہیم ہے کو مان لو آیت (۱۳۹) میں بھی تقریباً یہی بات ہے.

है ईशदूत उनसे कहो क्या तुम ईश्वर के विषय में हमसे झगड़ते हो यद्यपि (निजी तौर पर न वह किसी का सहोदर है न सौतेला, तुम कहते हो कि हम उसके प्रिय हैं) वास्तविकता यह है कि वह हमारा और तुम्हारा सबका एक जैसा रब है (उसके यहां अच्छे कर्म का मूल्य है बुरे कर्म का नही, फल कर्मों ही का संपादित होगा) सत्य यह है कि हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं (तुम ईश्वर का पुत्र बनाकर उज़ेर व मसीह को उसके अस्तित्व में सम्मिलित करते हो) किन्तु हम ईश्वर ही के आज्ञाकारी हैं (139)

اے نبی ان سے کہو کیا تم اللہ کے بارے میں ہم سے جھگڑتے ہو. حالانکہ (ذاتی طور پر نہ وہ کسی کا سگا ہے نہ سوتیلا تم کہتے ہو کہ ہم اس کے پیارے ہیں) حقیقت یہ ہے کہ وہ ہمارا اور تمہارا سب کا ایک جیسا رب ہے (اس کے یہاں اچھے عمل کی قیمت ہے بُرے عمل کی نہیں. نتیجہ اعمال ہی کا مرتب ہوگا) حقیقت یہ ہے کہ ہمارے اعمال ہمارے لئے ہیں اور تمہارے اعمال تمہارے لئے ہیں (تم اللہ کا بیٹا ٹھہرا کر عزیرؑ و مسیحؑ کو اس کی ذات میں شریک کرتے ہو) لیکن ہم خالصتاً اللہ ہی کے فرمانبردار ہیں (۱۳۹)

(ऐ यहूद व नसारा) क्या तुम यह कहते हो कि इब्राहीम अ0, इस्माईल अ0, इस्हाक अ0 व याकूब अ0 और उनकी संतान सब यहूदी या नसरानी थे (तुम्हें इतनी भी समझ नही कि हज़रात इब्राहीम अ0 इत्यादि किस प्रकार यहूदी या नसरानी हो सकते हैं जबकि वह मूसा अ0 व ईसा अ0 से पहले हो चुके हैं और उन्होंने भी अपने को यहूदी या नसरानी न कहा होगा) ऐ ईशदूत उनसे कह दो कि क्या यथार्थ को तुम जानते हो या ईश्वर और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है कि उसके पास ईश्वर का साक्ष्य विद्यमान हो और वह उसे छुपाए सत्य यह है कि तुम जो भी कर्म करते हो ईश्वर उससे अन्जान नही है (140)

(اے یہود ونصاریٰ) کیا تم یہ کہتے ہو کہ ابراہیمؑ، اسماعیلؑ، اسحاقؑ و یعقوبؑ اور ان کی اولاد سب یہودی یا نصرانی تھے (تمہیں اتنی بھی سمجھ نہیں کہ حضرات ابراہیمؑ وغیرہ کس طرح یہودی و نصرانی ہو سکتے ہیں جب کہ وہ موسیٰؑ و عیسیٰؑ سے پہلے ہو چکے ہیں اور انہوں نے بھی اپنے کو یہودی یا نصرانی نہ کہا ہوگا) اے رسولؐ ان سے کہدو کہ کیا حقیقت کو تم جانتے ہو یا اللہ اور اس سے بڑھ کر ظالم کون ہے کہ اس کے پاس اللہ کی شہادت موجود ہو اور وہ اسے چھپائے حقیقت یہ ہے کہ تم جو بھی عمل کرتے ہو اللہ اس سے بے خبر نہیں ہے (۱۴۰)

वह एक दल था जो जा चुके, जो कर्म उन्होंने किए थे वह केवल उनके लिए हैं (उनमें से तुम्हें कोई भाग नही मिलेगा) जो कर्म तुम करते हो वह केवल तुम्हारे लिए हैं तुम से उनके विषय में कदापि नही पूछा जाएगा कि वह किया कर्म करते थे (141)

وہ ایک جماعت تھی جو گزر چکی. جو اعمال انہوں نے کئے تھے وہ صرف ان کے لئے ہیں (ان میں سے مطلقاً تمہیں کوئی حصہ نہیں ملے گا) جو اعمال تم کرتے ہو وہ صرف تمہارے لئے ہیں تم سے ان کے متعلق ہرگز نہیں پوچھا جائے گا کہ وہ کیا عمل کرتے تھے (۱۴۱)

नोट- आयाता (2:125) से मिल्लते इब्राहीम अ0 के अनुसरण का आदेश दिया जा रहा है तो इस आदेश के होते हुए किस में यह साहस है कि वह इस आदेश की अवज्ञा कर जाए और न ही किसी ने किया, अतः हर ईशदूत की उपासना दिशा काबा वही रहा जो मक्काह में है जिसका नव निर्माण श्रीमान इब्राहीम अ0 ने किया था,

जिसका उल्लेख अगली आयात में आ रहा है परन्तु अनुचित अनुवाद करके मुहम्मद स0 से ऐसा कार्य सम्बंधित कर दिया गया है जिसको मुहम्मद स0 किसी भी मूल्य पर नही कर सकते थे और न ही किया, न ही ऐसा काम करने का आदेश कुरआन की किसी आयात में है, अपितु इसके विपरीत चैतावनी से कहा जा रहा है कि उस किब्ले का अनुसरण करो जो प्राचीन से है जो मिल्लते इब्राहीम है, अब इन आयात का अनुवाद लिखा जा रहा है जो दूसरे पाराह सयाकूल से आरम्भ होता है और हर ईशदूत ने मिल्लते इब्राहीम पर होते हुए अपना मुख नमाज़ में मक्काह वाले काबे की ओर ही किया है,

نوٹ:۔ (۲:۱۲۵) سے ملت ابراہیمؑ کی پیروی کا حکم دیا جارہا ہے تو اس حکم کے ہوتے ہوئے کسی میں یہ مجال ہے کہ وہ اس حکم سے انحراف کر جائے اور نہ ہی کسی نبی نے کیا اس لئے ہر نبی کا قبلہ وہی رہا جو مکہ میں ہے. جس کی تعمیر نو حضرت ابراہیمؑ نے کی تھی.

جس کا ذکر اگلی آیات میں آرہا ہے لیکن غلط ترجمہ کر کے محمدؐ سے ایسا کام منسوب کر دیا گیا ہے جس کو محمدؐ کسی بھی قیمت پر نہیں کر سکتے تھے اور نہ ہی کیا نہ ہی ایسا کام کرنے کا حکم قرآن کی کسی آیت میں ہے. بلکہ اس کے خلاف تاکید اً کہا جارہا ہے کہ اس قبلہ کی پیروی کرو جو قدیم سے ہے جو ملت ابراہیمؑ ہے اب ان آیات کا ترجمہ لکھا جارہا ہے جو دوسرے پارہ سیقول سے شروع ہوتا ہے. اور ہر نبی نے ملت ابراہیمؑ پر ہوتے ہوئے اپنا رُخ نماز میں مکہ والے کعبہ کی طرف ہی کیا ہے.

पाराह दो (सयाकूल)

अभी मूर्ख लोग अवश्य कहेंगे कि इन इस्लाम वालों को उनके अर्थात् भूतपूर्व ईशदूतों के काबे में जिस पर वह श्रीमान सर्व कालिक स्थापित रहे किस वस्तु ने फेर दिया, ऐ नबीउनसे कहो पूर्व व पश्चिम सब ईश्वर के हैं और ईश्वर उसको सीधी राह दिखा देता है जो अपने कर्मों से चाहता है (142)

और इसी प्रकार तो हमने तुम मुसलमानों को एक मध्यवर्ती सम्प्रदाय अच्छे न्यायशील अनुयायी बनाया है ताकि तुम दुनिया के लिए आदर्श (प्रत्यक्ष दर्शी) बनो और ईशदूत तुम्हारे लिए आदर्श (प्रत्यक्ष दर्शी) है जिस ओर तुम मुख कर रहे हो या करते थे (जिसके लिए तुम प्रसन्न हो) उसको निर्धारित करने का इसके अतिरिक्त और कोई उद्देश्य नहीं (यद्यपि यही आदेश आरम्भ से है जिसका हर नबी को मिललते इब्राहीम के नाम से आदेश दिया गया था परन्तु बाद को अवज्ञाकारी समुदाय ने और अवज्ञा के साथ साथ इस काबा जो मक्काह में है से भी विमुखता की (2:125,130) कि हम प्रकट स्पष्ट कर दें कि कौन रसूल अरबी का अनुसरण करता है और कौन उलटा फिर जाता है (पहले किताब पर) यह प्रसंग था तो बड़ा कठिन परन्तु उन लोगों के लिए कुछ भी कठिन सिद्ध न हुआ जो ईश्वर के उपदेश से लाभ उठाते हैं ईश्वर तुम्हारे आस्था (क्रिया) को कदापि नष्ट न करेगा विश्वास करो कि वह लोगों के प्रति अत्यन्त स्नेही और कृपालु है (143)

नोट- मध्यवर्ती सम्प्रदाय और साक्षी का अर्थ विविध लिखा गया है परन्तु इनसे वास्तविकता का प्रकाशन नही हो पा रहा है,

मध्यवर्ती समुदाय से अर्थ यह है कि धर्म व संसार के प्रसंग में सीमा के अन्दर रहकर कार्य करना, पूजा के समय पूजा और जीविका के समय जीविका, न संयासी ही बन जाना अर्थात् दुनिया से सम्बन्ध समाप्त कर लेना और न बिल्कुल दुनियादार ही बन जाना कि धर्म का तुम्हारे जीवन में कोई प्रवेश ही न हो, वैसे आस्तिक की जीविका कमाना भी धर्म ही है, क्योंकि वह ईश्वर के विधान के अनुसार जीविका कमाता है और ईश्वर का आदेश मानता है, जो दीन है, इन दुनिया वालों के दोनों मार्गों से बिल्कुल अलग आस्तिक का एक तीसरा मार्ग है जो संतुलन का है इसको ही मध्यवर्ती समुदाय कहा गया है,

जैसे गन्ना या मछली है उनके दोनों किनारों को अच्छा नही माना जाता है, ऐसे ही संतुलन अच्छा होता है और वही आज्ञाकारी समुदायका कार्य होता है, इसके अतिरिक्त एक बात यह है कि आज्ञाकारी समुदाय हठधर्मी नही होता है जो सत्य बात होती है उसको स्वीकार करते हैं जैसे दूसरी जातियों ने हठ में आकर मुहम्मद स0 का ही नकार कर दिया और अपने को नर्क का अधिकारी बना लिया,

रहा प्रश्न गवाही का, गवाही से अभिप्राय सम्भावतः उस साक्ष्य से है जो एक वाद में दी जाती है, किन्तु यहां बात कुछ और प्रकट हो रही है, वह यह कि तुम संसार वालों के लिए अपने कार्यों से एक आदर्श बनो, दुनिया तुम्हारी बात और कार्य पर उपस्थित हूं, कहे जो भी आधुनिक आविष्कार हो वह सबसे पहले तुम करो, और संसार उसका अनुसरण करे, कोई न्याय हो उसे तुम करो, जैसे आज अमरिका कर रहा है कोई नवीन जानकारी हो उसको तुम दुनिया के सामने प्रस्तुत करो जैसे जनाब अब्दुल कलाम साहब कर रहे हैं,

किन्तु दुख है आज यह मुस्लिम समाज दूसरे सम्प्रदायों की ओर ताक रहा है, टुक टुक दीदम दम न कशीदम, जो दूसरे इसके लिए

پارہ۔سیقول(۲)

ابھی نادان لوگ ضرور کہیں گے کہ ان اہل اسلام کو ان کے یعنی سابق انبیاء کے قبلہ سے جس پر وہ حضرات دائم وقائم رہے کس چیز نے پھیر دیا اے نبی ان سے کہو مشرق ومغرب سب اللہ کے ہیں اور اللہ اس کو سیدھی راہ دکھا دیتا ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے (۱۴۲)

اور اسی طرح تو ہم نے تم مسلمانوں کو ایک امت وسط بہترین عادل امت بنایا ہے۔تا کہ تم دنیا کے لئے نمونہ (شاہد) بنو اور رسول تمہارے لئے نمونہ (شاہد) ہیں جس طرف تم رُخ کر رہے ہو یا کرتے تھے (جس کے لئے تم راضی ہو) اس کو مقرر کرنے کی اس کے سوا اور کوئی غرض نہیں (حالانکہ یہی فیصلہ شروع سے ہے جس کا ہر نبی کو ملت ابراہیم کے نام سے حکم دیا گیا تھا مگر بعد کو نافرمان امتوں نے اور انحراف کے ساتھ ساتھ اس کعبہ جو مکہ میں ہے سے بھی انحراف کر لیا' ۲:۱۳۰،۱۲۵') کہ ہم ظاہر واضح کر دیں کہ کون رسول عربی کی پیروی کرتا ہے اور کون الٹا پھر جاتا ہے (اہل کتاب پر) یہ معاملہ تھا تو بڑا سخت مگر ان لوگوں کے لئے کچھ بھی سخت ثابت نہ ہوا جو اللہ کی ہدایت سے فیض یاب ہیں اللہ تمہارے ایمان عمل کو ہرگز ضائع نہ کرے گا یقین جانو کہ وہ لوگوں کے حق میں نہایت شفیق ورحیم ہے (۱۴۳)

نوٹ:۔امت وسط اور شہدا کا مطلب مختلف لکھا گیا ہے لیکن ان سے حقیقت کا اظہار نہیں ہو پا رہا ہے۔

امت وسط کا مطلب یہ ہے کہ دین ودنیا کے معاملہ میں حد کے اندر رہ کر کام کرنا۔عبادت کے وقت عبادت اور معاش کے وقت معاش۔نہ راہب ہی بن جانا یعنی دنیا سے بالکل تعلق ختم کر لینا اور نہ بالکل دنیا دار ہی بن جانا کہ دین کا تمہاری زندگی میں کوئی دخل ہی نہ ہو۔ویسے مومن کا معاش کمانا بھی دین ہی ہے کیونکہ وہ اللہ کے قانون کے مطابق روزی کماتا ہے اور اللہ کا حکم مانتا ہے جو دین ہے ان دنیا والوں کے دونوں راستوں سے بالکل الگ مومن کا ایک تیسرا راستہ ہے جو اعتدال کا ہے اس کو ہی امت وسط کہا گیا ہے۔

یا جیسے گنا یا مچھلی ہے ان کے دونوں کناروں کو اچھا نہیں مانا جاتا بلکہ بیچ کے حصہ کو اچھا مانا جاتا ہے ایسے ہی اعتدال اچھا ہوتا ہے اور وہی امت مسلمہ کا کام ہے اس کے علاوہ ایک بات یہ ہے کہ امت مسلمہ ضدی نہیں ہے۔جو حق بات ہوتی ہے اس کو قبول کرتے ہیں۔ایسا نہیں کرتے جیسے دوسری قوموں نے ضد میں آ کر محمدؐ کا ہی انکار کر دیا اور اپنے کو دوزخ کا حق دار بنا لیا۔

رہا سوال گواہی کا۔گواہی سے مراد غالباً اس گواہی سے لیا جاتا ہے جو ایک مقدمے میں دی جاتی ہے۔مگر یہاں بات کچھ اور نظر آ رہی ہے۔وہ یہ کہ تم دنیا والوں کے لئے اپنے عمل سے ایک نمونہ بنو۔دنیا تمہاری بات اور عمل پر لبیک کہے جو بھی جدید ایجاد ہو۔وہ سب سے پہلے تم کرو اور دنیا اس کی تقلید کرے۔کوئی فیصلہ ہو اسے تم کرو جیسے آج امریکہ کر رہا ہے۔کوئی نئی معلومات ہو اس کو تم دنیا کے سامنے پیش کرو۔جیسے جناب عبدالکلام صاحب پیش کر رہے ہیں۔

لیکن افسوس آج یہ مسلم دنیا دوسری قوموں کی طرف کوتاک رہی ہے۔

आदेश करते हैं उनको यह मानने के लिए विवश हैं, क्योंकि इसके पास अपना कुछ नही, इस कुरआन को इसने ध्यान से पढ़ा ही नहीं न ईशदूत की जीवनी को देखा, मुहम्मद स0 ईशदूत हमारे लिए एक आदर्श हैं,

जाति में जो विभिन्नता थी ईशदूत ने उनको समाप्त किया ईश्वर की पुस्तक के द्वारा, जिस विभेद की आग में जाति जल रही थी जिसको ईश्वर ने नर्क के गढ़े से व्यंजना किया है, किन्तु इसके बाद भी हमने यह स्वीकार कर रखा है कि ईशदूत मुहम्मद स0 के साथियों में विभिन्नता थी जिसको मुहम्मद स0 ने बुरा नही बताया, कदापि नही, ईश्वर के नबी ने न विभिन्न कर्म किए और न ही मतभेद को उचित बताया,

नबी आते ही मतभेद को समाप्त करने के लिए न कि मतभेदों को शेष रखने के लिए (2:213) ईशदूत के साथियों में यदि मतभेद होते तो ईश्वर के कुरआन के अनुसार उनकी हवा उखड़ जाती और वह हीन हो जाते वह प्रभुत्वशाली न होते परन्तु उनकी प्रतिष्ठा बनी हुई थी वह जिधर को निकलते सफलता उनके पग चुम्बन करती थी, यह तब ही हुआ जब वह एकता बद्ध थे, अतः उनको देखते हुए हमको भी एकता बद्ध होने की आवश्यकता है,

साक्षी और आदर्श का एक अर्थ यह भी है कि ईश्वर ने कुरआन में मक्काह के लिए उम्मुल कुरा कहा है तो इसका अर्थ है बस्तियों की मूल जड़ (मां) अर्थात सबसे पहली बस्ती, अतः इन्सानी आबादी भी सबसे पहली मक्काह में ही हुई थी इस आयत को पढ़कर मुसलमान अनुसंधान करता और संसार को बताता कि तुम इधर उधर जो लेकर खा रहे हो अनुचित है यह देखो हमने खोज लिया कि संसार में सबसे पहले मानव कहा आबाद हुआ था, संसार तुम्हारी इस खोज पर उपस्थित हूं कहता और तुमको अपना नेता स्वीकार करता, सब निर्णय तेरे मक्काह-मदीना में होते जैसे आज जनेवा में हो रहे हैं, अमरिका आज सारी दुनिया का नायक बना हुआ है उस स्थान पर तुझको होना चाहिए

आदर्श का एक अर्थ यह भी है कि हमारी हर समुदाय से बराबर दूरी रहनी चाहिए न किसी से दोस्ती न किसी वैर, अपितु हर एक पर सत्य के साथ हर स्थान पर दृष्टि होनी चाहिए अपने पर भी और दूसरों पर भी कि कही कोई शक्ति के उन्माद में किसी पर अत्याचार तो नही कर रहा, शक्ति के उन्माद में हम भी तो सीमा से बाहर नहीं जा रहे, जैसे आज अमरिका सीमा से बाहर जा चुका है और यही उसके पतन का कारण बनेगा,

यह तो रहा समुदाय का काम उधर नबी ने हमारे लिए आदर्श बनकर दिखा दिया, चाहे वह युद्ध का क्षेत्र हो या पूजा या जीविका, उन्होंने हर एक के साथ न्याय किया, यदि मुसलमान ने अतिक्रमण किया है तो उसको दण्ड दिया यदि दूसरे ने किया तो उसको दण्ड दिया, विजय मक्काह के दिन देखो उस दिन कैसा बरताओ किया जबकि मक्काह वालों ने उनके साथ बहुत अत्याचार किए थे, किन्तु सबको क्षमा कर दिया और शब्द हित्तुन का हक़ अदा कर दिया (22:78,29,23, 3:95, 47:7, 14:35,37, 29:25)

आज वैज्ञानिक यह वाद कर रहे हैं कि इन्सानी आबादी सबसे पहले जम्बिया या ऐथोपिया में थी, परन्तु कुरआन कहता है कि सबसे पहले मक्काह में थी, ज्ञात करो, महामना इब्राहीम अ0, मूसा अ0, सुलेमान अ0, दाऊद अ0 और ज़ुलकरनैन इत्यादि की कथा घटना को पढ़कर हर प्रकार का आविष्कार मुसलमानों को करना था और यही प्रयत्न है, न कि पूर्ण धर्म में इजतिहाद करके धर्म को बिगाड़ देना और मतभेद करना पूर्ण धर्म में प्रयत्न करना तो बिल्कुल धर्म के विरुद्ध है और ईश्वर के रूष्ट होने का कारण,

इस अप्रसन्नता से ही आज मुस्लिम जाति हीन हो गई है,

ٹک ٹک دیدم دم نہ کشیدم. جو دوسرے اس کے لئے فیصلہ کرتے ہیں ان کو یہ ماننے کے لئے مجبور ہے کیونکہ اس کے پاس اپنا کچھ نہیں. اس قرآن کو اس نے غور سے پڑھا ہی نہیں. نہ رسول کی زندگی کو دیکھا محمدؐ رسول ہمارے لئے ایک نمونہ ہیں.

قوم میں جو اختلاف تھے رسول نے ان کو ختم کیا کتاب اللہ کے ذریعہ جس اختلاف کی آگ میں قوم جل رہی تھی. جس کو اللہ نے دوزخ کے گڑھے سے تعبیر کیا ہے لیکن اس کے باوجود ہم نے یہ تسلیم کر رکھا ہے کہ صحابہ میں اختلاف تھا جس کو محمدؐ نے بُرا نہیں بتایا, ہرگز نہیں. اللہ کے نبی نے نہ اختلافی عمل کیا اور نہ ہی اختلاف کو درست بتایا.

نبی آتے ہی اختلاف کو ختم کرنے کے لئے نہ کہ اختلافات کو باقی رکھنے کے لئے (۲:۲۱۳) صحابہ کرام میں اگر اختلاف ہوتے تو اللہ کے قرآن کے مطابق ان کی ہوا اُکھڑ جاتی اور وہ ذلیل ہو جاتے وہ غالب نہ ہوتے لیکن ان کی ہوا بنی ہوئی تھی وہ جدھر کو نکلتے کامیابی ان کے قدم چومتی تھی یہ تب ہی ہوا جب وہ متحد تھے اس لئے ان کو دیکھتے ہوئے ہم کو بھی متحد ہونے کی ضرورت ہے.

شاہد اور نمونہ کا ایک مطلب یہ بھی ہے اللہ نے قرآن میں مکہ کے لئے ام القریٰ فرمایا ہے. تو اس کا مطلب ہے بستیوں کی اصل جڑ (ماں) یعنی سب سے پہلی بستی اس لئے انسانی آبادی بھی سب سے پہلے مکہ میں ہی ہوئی تھی اس آیت کو پڑھ کر مسلمان تحقیق کرتا اور دنیا کو بتاتا کہ تم ادھر اُدھر جو ٹھوکر کھا رہے ہو غلط ہے. یہ دیکھو ہم نے کھوج لیا کہ دنیا میں سب سے پہلے انسان کہاں آباد ہوا تھا. دنیا تمہاری اس کھوج پر لبیک کہتی اور تم کو اپنا سردار سید تسلیم کرتی. سب فیصلے تیرے مکہ مدینہ میں ہوتے جیسے آج جنیوا میں ہو رہے ہیں امریکہ آج ساری دنیا کا امام بنا ہوا ہے اس جگہ پر تجھے ہونا چاہیئے.

نمونہ کا ایک مطلب یہ بھی ہے کہ ہماری ہر قوم سے برابر دوری رہنی چاہیئے نہ کسی سے دوستی اور نہ کسی سے بیر. بلکہ ہر ایک پر حق کے ساتھ ہر جگہ نظر ہونی چاہیئے. اپنے پر بھی اور دوسروں پر بھی کہ کہیں کوئی طاقت کے نشے میں کسی پر ظلم تو نہیں کر رہا طاقت کے نشہ میں ہم بھی تو حد سے باہر نہیں جا رہے. جیسے آج امریکہ حد سے باہر جا چکا ہے. اور یہی اس کے زوال کا سبب بنے گا.

یہ تو رہا امت کا کام ادھر نبی نے ہمارے لئے نمونہ بن کر دکھا دیا. چاہے وہ جنگ کا میدان ہو یا عبادت یا معاش انہوں نے ہر ایک کے ساتھ انصاف کیا. اگر مسلمان نے زیادتی کی ہے تو اس کو سزا دی اور اگر غیر نے کی تو اس کو سزا دی. فتح مکہ کے دن دیکھو اس دن کیسا برتاؤ کیا جب کہ مکہ والوں نے ان کے ساتھ بہت ظلم کئے تھے مگر سب کو معاف کر دیا اور لفظ حطتہ کا حق ادا کر دیا. (۲۲:۷۸، ۲۹:۲۳، ۳:۹۵، ۴۷:۷، ۱۴:۳۵، ۳۷، ۲۹:۲۵)

سائنس دان یہ دعویٰ کر رہے ہیں کہ انسانی آبادی سب سے پہلے زمبیایا ایتھوپیہ میں تھی لیکن قرآن کہتا ہے کہ سب سے پہلے مکہ میں تھی پتہ لگاؤ. حضرت ابراہیمؑ، موسیٰؑ، سلیمانؑ، داؤدؑ اور ذوالقرنین وغیرہ کے واقعہ کو پڑھ کر ہر طرح کی ایجاد مسلمانوں کو کرنی تھی اور یہی اجتہاد ہے. نہ کہ مکمل دین میں اجتہاد کر کے دین کو بگاڑ دینا اور اختلاف کرنا. مکمل دین میں اجتہاد کرنا تو بالکل دین کے خلاف ہے اور اللہ کی ناراضگی کا سبب.

اس ناراضگی سے ہی آج مسلم قوم ذلیل ہوگئی مسلمانوں کو قرآن کے

मुसलमानों को कुरआन के द्वारा यह बड़े बड़े विशारद दिए परन्तु मुसलमानों ने लाभ न उठाया, मुसलमानों ने उनके द्वारा किए गए कार्यों को चमत्कार का रूप दे दिया और झूम झूमकर वर्णन करने लगे, जबकि वह उनके विज्ञानिक आविष्कार थे मुसलमानों को भी यही करना था जो न किया, दूसरी जातियों ने कुरआन को देखा और समझा और उन्नति कर गया परन्तु मुसलमान ने झूम झूमकर पढ़कर अपने को हर्षित किया यह सोचकर कि हमारे पूर्वज ऐसे थे तो दुनिया वाले उनके चमत्कारों के कारण हमसे डरेंगे और इस दबदबे से हम दुनिया पर राज्य करेंगे, परन्तु ऐसा न हुआ अपितु दूसरी जातियों ने उन सबको पढ़ और सुनकर शिक्षा ली और वायु, पानी, बिजली, आकाश, समुद्र, पर्वत, लोहा, तांबा से ईश्वर के आदेशानुसार काम लिया और आज सारी मूर्ख दुनिया विशेषकर मुसलमान उनके दास हैं और हीन हैं,

ذریعہ یہ بڑے بڑے انجینئر دے گئے مسلمانوں نے فائدہ نہ اٹھایا مسلمانوں نے ان کے ذریعہ کئے گئے کاموں کو معجزہ کی شکل دیدی اور جھوم جھوم کر بیان کرنے لگے. جب کہ وہ ان کی سائنسی ایجاد تھیں مسلمانوں کو بھی یہی کرنا تھا جو نہ کیا. دوسری قوموں نے قرآن کو دیکھا اور سمجھا اور ترقی کر گیا مگر مسلمان نے جھوم جھوم کر پڑھ کر اپنے کو خوش کیا یہ سوچ کر کہ ہمارے بزرگ ایسے تھے تو دنیا والے ان کے معجزوں کی وجہ سے ہم سے بھی ڈریں گے اور اس دبدبہ سے ہم دنیا پر حکومت کریں گے مگر ایسا نہ ہوا بلکہ دوسری قوموں نے ان سب کو پڑھ اور سُن کر سبق لیا اور ہوا، پانی، بجلی، آسمان، سمندر، پہاڑ، لوہا، تانبہ سے اللہ کے حکم کے مطابق کام لیا. اور آج ساری جاہل دنیا خاص طور سے مسلمان ان کے غلام ہیں اور ذلیل ہیں.

ऐ ईशदूत हम आकाश में तेरी व्याकुलता का निरीक्षण कर रहे हैं अतः हम अवश्य ही तुझे अभिभावक बना देंगे उस काबे का जिसे तूने (हमारे आदेश से) अपनाया है और तू प्रसन्न है (2:205) ऐ ईशदूत (एहले किताब के आक्षेप से निर्भीक होकर) तुम नमाज़ में प्रतिष्ठावान मस्जिद की ओर ही आकृष्ट रहो और तुम जहां भी हो तो प्रतिष्ठा वाली मस्जिद की ओर ही ध्यान रखो (अर्थात् शत्रु से वापस लेने के लिए पूरे साहस से प्रयास करते रहो क्योंकि इस समय उस पर बहुदेववादी अधिकार किए हैं और बहुदेव वादियों को यह अधिकार नही हैं कि वह पूजा स्थलों का प्रबन्ध करें) वह लोग जिन्हें पुस्तक दी गई थी उत्तम जानते हैं कि वह आदेश उनके ईश्वर ही की ओर से है और सत्य है कि वह आदेश उनके ईश्वर की ओर से है और सत्य है परन्तु इसके बाद जो कुछ वह कर रहे हैं ईश्वर उससे अनभिज्ञ नहीं है (144)

اے نبی ہم آسمان بالا میں تیری بیقراری کا مشاہدہ کر رہے ہیں پس ہم ضرور بالضرور تجھے والی متولی بنادیں گے اس قبلہ کا جسے تو نے (ہمارے حکم سے) اختیار کر رکھا ہے اور تو راضی ہے (۲:۲۰۵) اے نبی (اہل کتاب کے اعتراض سے صرف نظر کر کے) تم نماز میں مسجد حرام کی سمت ہی متوجہ رہو اور تم جہاں بھی ہو تو مسجد حرام ہی کی طرف متوجہ رہو (یعنی دشمن سے واپس لینے کے لئے پوری توجہ سے جدوجہد کرتے رہو کیونکہ اس وقت اس پر مشرک قابض ہیں اور مشرکوں کو حق نہیں کہ وہ مسجدوں کا انتظام کریں) وہ لوگ جنہیں کتاب دی گئی تھی خوب جانتے ہیں کہ یہ حکم ان کے رب ہی کی طرف سے ہے اور برحق ہے مگر اس کے باوجود جو کچھ وہ کر رہے ہیں اللہ اس سے غافل نہیں ہے (۱۴۴)

तुम उन पुस्तकधारियों के पास कोई चिन्ह ले आओ सम्भाव नही कि वह तुम्हारे काबे का अनुसरण करें और न तुम्हारे लिए यह सम्भाव है कि उनके काबे का अनुकरण करो और उनमें से कोई दल भी दूसरे के काबे के अनुसरण के लिए कटिबद्ध नही है और यदि तुमने इस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है उनकी इच्छाओं का अनुकरण किया तो निःसन्देह तुम्हारी गणना अत्याचारियों में होगी (145) {2:291}

تم اُن اہل کتاب کے پاس کوئی نشانی لے آؤ ممکن نہیں کہ وہ تمہارے قبلہ کی پیروی کریں اور نہ تمہارے لئے ممکن ہے کہ ان کے قبلہ کی پیروی کرو اور اُن میں سے کوئی گروہ بھی دوسرے کے قبلہ کی پیروی کے لئے تیار نہیں ہے اور اگر تم نے اس علم کے بعد جو تمہارے پاس آچکا ہے ان کی خواہشات کی پیروی کی تو یقیناً تمہارا شمار ظالموں میں ہوگا (۱۴۵) [۲:۲۹۱]

नोट- मुहम्मद स० से इस आयत में कहा गया है कि वह लोग कदापि तुम्हारे काबे का अनुसरण न करेंगे, चूंकि वह आपस में ही एक दूसरे के काबे का अनुसरण नही करते, यहूद का काबा अलग, ईसाईयों का अलग, यदि बेतुलमुकद्दस (योरोशलम) भूतपूर्व ईशदूतों का काबा होता तो वह लोग सहमत होते, परन्तु उनमें मतभेद है, अतः वह काबा बेतुलमुकद्दस न तो कभी रहा और न ही भविष्य में होगा और न ही किसी ईशदूत ने बेतुलमुकद्दस को काबा बनाया, उन सबका काबा ईश्वर के आदेश के अनुसार जो मिललते इब्राहीम के नाम से दिया गया यही मक्काह वाला रहा है,

अतः तुम कभी उनके मतभेदी और काल्पनिक काबे का अनुकरण नही करोगे और न ही कभी किया है क्योंकि तुम सत्य पर हो हठ में नही, उम्मत वस्त होने का यह भी अर्थ है,

نوٹ: محمدؐ سے اس آیت میں کہا گیا ہے کہ وہ لوگ ہرگز تمہارے قبلہ کی پیروی نہ کریں گے چونکہ وہ آپس میں ہی ایک دوسرے کے قبلہ کی پیروی نہیں کرتے. یہود کا قبلہ الگ عیسائیوں کا الگ. اگر بیت المقدس انبیاء سابقین کا قبلہ ہوتا تو وہ لوگ متفق ہوتے لیکن ان میں اختلاف ہے اس لئے وہ قبلہ بیت المقدس نہ تو کبھی رہا اور نہ ہی آئندہ ہوگا اور نہ ہی کسی نبی نے بیت المقدس کو قبلہ بنایا. ان سب کا قبلہ اللہ کے حکم کے مطابق جو ملت ابراہیم کے نام سے دیا گیا یہی مکہ والا رہا ہے.

اس لئے تم کبھی ان کے اختلافی اور فرضی قبلہ کی پیروی نہیں کرو گے اور نہ ہی کبھی کی ہے کیونکہ تم حق پر ہو ضد میں نہیں. امت وسط ہونے کا یہ بھی مطلب ہے

जिन लोगों को हमने पुस्तक दी है वह उसको अर्थात् काबा इस्लाम मक्काह की वास्तविकता को इस प्रकार पहचानते हैं जिस प्रकार वह अपने पुत्रों को पहचानते हैं परन्तु उनमें से एक बड़ा दल जानते हुए सत्य को छुपा रहा है (146)

جن لوگوں کو ہم نے کتاب دی ہے وہ اس کو یعنی قبلہ اسلام مکہ کی حقانیت کو اس طرح پہچانتے ہیں جس طرح کہ وہ اپنے بیٹوں کو پہچانتے ہیں. مگر ان میں سے ایک بڑا گروہ جانتے ہوئے حق کو چھپا رہا ہے (۱۴۶)

यह सत्य तेरे ईश्वर की ओर से है अतः इस विषय में तुम कदापि भ्रम में नही पड़ सकते (147) {2:177, 57:20, 83:26}

یہ حق تیرے رب کی طرف سے ہے لہٰذا اس کے متعلق تم ہرگز شک میں نہیں پڑ سکتے (۱۴۷)[۲:۱۷۷، ۵۷:۲۰، ۸۳:۲۶]

और हर एक के लिए एक ही दिशा (प्रलोक) निश्चित है जिसका वह रुख किए हुए है (हर एक ईश्वर के विधान के विरुद्ध अपनी समझ से प्रलोक की मोक्ष के लिए कर्म कर रहा है जो मिथ्या है होना यह था जो ईश्वर ने दिशा मार्ग निश्चित कर दिया है उसके अनुसार क्रिया करें) अतः तुम एक दूसरे से बढ़ चढ़कर अच्छे कर्म करो (क्योंकि प्रलोक में अच्छे कर्म ही काम आने वाले हैं) तुम जहां कही भी हो ईश्वर तुम सबको उपस्थित करेगा क्योंकि वह हर वस्तु के अनुमान नियम निर्धारित करने वाला है (हर कार्य उसके नियमानुसार होता है) (148)

اور ہر ایک کے لئے ایک ہی سمت (آخرت) طے ہے جس کا وہ رُخ کئے ہوئے ہے (ہر ایک اللہ کی شریعت کے خلاف اپنی سمجھ سے آخرت کی نجات کے لئے عمل کر رہا ہے جو غلط ہے. ہونا یہ تھا جو اللہ نے سمت راستہ طے کر دیا ہے اس کے مطابق عمل کرے) لہٰذا تم ایک دوسرے سے بڑھ چڑھ کر اچھے کام کرو (کیونکہ منزل آخرت میں اعمال صالح ہی کام آنے والے ہیں) تم جہاں کہیں بھی ہو اللہ تم سب کو حاضر کرے گا. کیونکہ وہ ہر چیز کے اندازے اور قانون مقرر کرنے والا ہے (ہر کام اس کے قانون کے مطابق ہوتا ہے) (۱۴۸)

और जिस स्थान से तुम निकलो अपना मुख और ध्यान सम्मान वाली मस्जिद की ओर रखो और यही सत्य है तेरे ईश्वर की ओर से और ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अचेत नही है (149) {2:291}

اور جس جگہ سے تم نکلو اپنا منھ اور توجہ مسجد حرام کی طرف رکھو اور یہی حق ہے تیرے رب کی طرف سے اور اللہ تمہارے کاموں سے ، بے خبر نہیں ہے (۱۴۹)[۲:۲۹۱]

और (फिर सुन लो) तुम जहां से भी निकलो तो उसी प्रतिष्ठि वाली मस्जिद की ओर अधीन करो अपना मुख ध्यान चेष्टा उसी की ओर रखो और जहां भी तुम हो (यह आदेश केवल मदीने के लिए ही नही है अपितु हर स्थान के लिए है) अपना मुख और ध्यान उसी दिशा की ओर रखो (इस मस्जिद को तुम्हारे लिए काबा इसलिए निर्धारित किया गया है) ताकि लोगों को तुम्हारे विरुद्ध तर्क न मिले, हां उनमें जो पापी है उनकी ज़बान किसी स्थिति में बन्द न होगी, अतः तुम (ऐ मुसलमानो!) उनकी आपत्ति करने से न डरो अपितु मुझसे डरो (अर्थात् मेरे आदेशों पर भलीभांति क्रिया करो किसी की आपत्ति उन पर कर्म करने से न रोक दे तो इस कर्म के बदले में) मैं तुम पर अपनी कृपा पूरी कर दूंगा ताकि तुम सीधा मार्ग चलो (150) {5:3}

اور (پھر سن لو) تم جہاں سے بھی نکلو تو اسی محترم مسجد کی طرف تابع کرو اپنا منھ توجہ اور جدو جہد اسی کی طرف رکھو اور جہاں کہیں بھی تم ہو (یہ حکم صرف مدینہ کے لئے ہی نہیں ہے بلکہ ہر جگہ کے لئے ہے) اپنا منھ اور توجہ اسی سمت کی طرف رکھو (مسجد حرام کو تمہارے لئے قبلہ اس لئے مقرر کیا گیا ہے) تاکہ لوگوں کو تمہارے خلاف حجت نہ ملے. ہاں ان میں جو ظالم ہیں ان کی زبان کسی حال میں بند نہ ہوگی. اس لئے تم (اے مسلمانو!) ان کے اعتراض کرنے سے نہ ڈرو بلکہ مجھ سے ڈرو (یعنی میرے احکام پر پوری طرح سے عمل کرو کسی کا اعتراض ان پر عمل کرنے سے نہ روک دے تو اس عمل کے بدلے) میں تم پر اپنی نعمت پوری کر دوں گا تا کہ تم سیدھی راہ چلو (۱۵۰)[۵:۳]

(सबसे बड़ी अनुकम्पा यह है कि) हमने तुम्हारे मध्य स्वयं तुम में से एक ईशदूत भेजा जो तुम्हें हमारी आयात सुनाता है तुम्हारे जीवन को संवारता है (अर्थात् इन आयात पर क्रिया करने योग्य तुम्हारे मन बनाता है) और तुम्हें पुस्तक जो युक्ति है की शिक्षा देता है और तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम न जानते थे (151) {4:113, 2:129, 3:164}

(سب سے بڑی نعمت یہ ہے کہ) ہم نے تمہارے درمیان خود تم میں سے ایک رسول بھیجا جو تمہیں ہماری آیات سناتا ہے تمہاری زندگیوں کو سنوارتا ہے (یعنی ان آیات پر عمل کرنے لائق تمہارے ذہن بناتا ہے) اور تمہیں کتاب جو حکمت ہے (دانش) کی تعلیم دیتا ہے اور تمہیں وہ باتیں سکھاتا ہے جو تم نہ جانتے تھے (۱۵۱)[۴:۱۱۳، ۲:۱۲۹، ۳:۱۶۴]

अतः तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरी आज्ञाकारी करो अवज्ञा न करो (152)

لہٰذا تم مجھے یاد رکھو میں تمہیں یاد رکھوں گا اور میرا شکر ادا کرو ناشکری نہ کرو (۱۵۲)

नोट- (1) अर्थात् मेरे अवतरित विधान का पालन करो, इसको याद रखो इसकी अवहेलना न करो, इस आज्ञाकारी का बदला मेरे यहां से यह मिलेगा कि मैं तुमको संसार और प्रलोक में याद रखूंगा और सहायता करूंगा, यह वही बात है जो (2:40) में बनी इसराईल से कहा गया था कि तुम मेरा वचन पूरा करो मैं तुम्हारा वचन पूरा करूंगा (2:10, 21:24, 23:70, 43:44)

نوٹ:۔(۱) یعنی میرے نازل کردہ ضابطہ کی پابندی کرو اس کو یاد رکھو اس کی خلاف ورزی نہ کرو اس فرمانبرداری کا بدلہ میرے یہاں سے یہ ملے گا کہ میں تم کو دنیا میں اور آخرت میں یاد رکھوں گا. اور مدد کروں گا یہ وہی بات ہے جو (۲:۴۰) میں بنی اسرائیل سے کہا گیا تھا کہ تم میرا عہد پورا کرو میں تمہارا عہد پورا کروں گا. (۲:۱۰، ۲۱:۲۴، ۲۳:۷۰، ۴۳:۴۴)

क्या काबा बदला गया? पहले बैतुल मुकद्दस और बाद में मक्काह हुआ? (2) कुरआन में (2:127 से 2:151 तक) और अनेक आयात में मुहम्मद स0 से यही कहा गया है कि तुम मिल्लते इब्राहीम पर हो, अतः उसका पालन करो, और यह भी बताया कि जो विधान इब्राहीम को दिया गया वही आपके साथ सब ईशदूतों को दिया गया है, अतः सब ईशदूतों का विधान एक है (2:136, 4:47,26, 6:83से90, 26:196से197, 42:13,87:18,19,2:213) जो कुरआन में है और कुरआन मिल्लते इब्राहीम है (3:68, 3:95से100) अतः और आदेशों के साथ मक्काह स्थित काबा का पालन भी अनिवार्य है जिसका अपने समय में ईश्वर के आदेश से इब्राहीम अ0 ने नव निर्माण किया था, इसलिए हर ईशदूत ने ईश्वर के आदेश के अनुसार अपना मुख काबा की ओर को ही रखा था, बाद में अवज्ञाकारी समुदाय बनी इसराईल ने और आदेशों की भांति जिनकी जानकारी कुरआन में है के साथ काबा प्राचीन जो मक्काह में है के अनुसरण से भी विमुख हो गए केवल इस आधार पर कि यह इब्राहीम ने इस्माईल के साथ मिलकर बनाया था,

चूंकि अरब जाति इस्माईल अ0 की संतान है और बनी इसराईल अपने को इस्हाक़ व याकूब अ0 की संतान बताते हैं? इस मिथ्या आस्था और हठ के कारण से उन्होंने काबा प्राचीन को भी छोड़ दिया, यद्यपि यह काबा आरम्भ से ही ईश्वर ने स्थापित किया था इब्राहीम ने तो केवल इसका नवीन निर्माण किया था (2:130) बनी इसराईल के बारे में समीक्षा 19:58 पर अंकित है,

आयत में यह भी है कि ऐ मुहम्मद स0 वह लोग एक दूसरे के काबे की जो उन्होंने बना रखे हैं पालन नहीं करते और न वह आपके प्राचीन कालीन काबा का अनुकरण करेंगे जिसको मैंने ही आदिम काल अर्थात् आरम्भ से ही स्थापित कर दिया था जिसकी सूचना कुरआन में है (3:96)

(3:96) निःसन्देह सबसे पहला पूजा स्थल जो मानव के लिए निर्माण हुआ वह वही है जो मक्काह में स्थित है, उसको मंगल सम्पन्नता दी गई और सम्पूर्ण संसार वालों के लिए पथ प्रदर्शन का केन्द्र बनाया गया है,

(3:96,97) में कितनी स्पष्ट बात है कि सबसे पहला यही भवन है (पूजा स्थल) इसमें पर्याप्त स्मृतियां हैं, इब्राहीम अ0 का पूजा का स्थान है इस घर के हज का आदेश है, जो इसमें प्रविष्ट हुआ वह शान्ति में प्रविष्ट हुआ, इससे अधिक और क्या आदेश हो सकता है कि काबा प्रथम दिन से वही है जो मक्काह में है जबसे धर्मशास्त्र के पालन का आरम्भ है और सब ईशदूतों ने इस आदेश का पालन किया है (16:123) मिल्लते इब्राहीम,

इस सूचना के अन्तर्गत मुहम्मद स0 किसी भी मूल्य पर उनके मतभेदी काबे का अनुकरण नहीं करेंगे, यदि किया तो पापियों में गणना होगी, यहां यह बात भी विचारणीय है कि ऐसा आदेश और इब्राहीम अ0 के धर्म में होते हुए मुहम्मद स0 प्राचीन काबे से अपना मुख बैतुल मुकद्दस की ओर कैसे कर सकते थे, कदापि नहीं, इसके प्रमाण के लिए मस्जिदे नबवी और कुबा को देख लिया जाऐ

प्रसिद्ध यह है कि मुहम्मद स0 ने मक्काह त्यागने के बाद 16 या 17 माह तक मदीने में रहकर नमाज़ बैतुल मुकद्दस की ओर मुख करके पढ़ी, तो अवश्य था कि मस्जिद नबवी और कुबा की दिशा बैतुल मुकद्दस की ओर को ही रखना था, परन्तु इतिहास में इस बात का कहीं उल्लेख नहीं मिलता कि उन मस्जिदों को पहले बैतुल मुकद्दस की ओर दिशा करके बनाया था और बाद

کیا قبلہ بدلہ گیا؟ کیا پہلے بیت المقدس اور بعد میں مکہ ہوا؟

نوٹ:۔(۲) قرآن میں (۱۲۷:۲) سے (۱۵۱:۲) تک اور متعدد آیات میں محمدؐ سے یہی کہا گیا ہے کہ تم ملت ابراہیم پر ہو اس لئے اس کی پیروی کرو. اور یہ بھی بتایا کہ جو شرع دین ابراہیم کو دی گئی تھی وہی بشمول آپ کے سب نبیوں کو دی گئی اس لئے سب نبیوں کی شرع ایک ہے (۱۳۶:۲، ۴۷:۴، ۲۶، ۸۳:۶ تا ۹۰، ۱۹۶:۲۶ تا ۱۹۷، ۱۳:۴۲، ۱۸:۸۷، ۱۹، ۲۱۳:۲) جو قرآن میں ہے اور قرآن ملت ابراہیم ہے (۶۸:۳، ۹۵:۳ سے ۱۰۰) اس لئے اور احکام کے ساتھ مکہ والے کعبہ کی پیروی بھی ضروری ہے جس کی اپنے زمانے میں اللہ کے حکم سے ابراہیم نے تعمیر نو کی تھی. اس لئے ہر نبی نے اللہ کے حکم کے مطابق اپنا رُخ کعبہ کی طرف کو ہی رکھا تھا بعد میں نافرمان ملت بنی اسرائیل نے اور احکام کی طرح جن کی نشان دہی قرآن میں ہے کہ ساتھ کعبہ قدیم جو مکہ میں ہے کی پیروی سے بھی انحراف کرلیا محض اس بنا پر کہ یہ ابراہیم نے اسماعیل کے ساتھ مل کر بنایا تھا.

چونکہ عرب قوم اسماعیل کی اولاد ہیں اور بنی اسرائیل اپنے کو اسحاق و یعقوب کی اولاد بتاتے ہیں؟ اس غلط عقیدے اور ضد کی وجہ سے انہوں نے قبلہ قدیم کو بھی چھوڑ دیا. حالانکہ یہ کعبہ شروع سے ہی اللہ نے قائم کیا تھا. ابراہیم نے تو صرف اس کی تعمیر نو کی تھی. جو زمانے کے نشیب و فراز نے آنکھوں سے اوجھل کر دیا تھا (۱۳۰:۲) بنی اسرائیل کے بارے میں نوٹ ۵۸:۱۹ پر درج ہے.

آیت میں یہ بھی ہے کہ اے محمدؐ وہ لوگ ایک دوسرے کے کعبہ کی جو انہوں نے بنا رکھے ہیں پیروی نہیں کرتے اور نہ وہ آپ کے قدیم کعبہ کی پیروی کریں گے. جس کو میں نے ہی زمانہ قدیم یعنی شروع میں ہی مقرر کر دیا تھا جس کی خبر قرآن میں موجود ہے (۹۶:۳)

(۹۶:۳) بےشک سب سے پہلی عبادت گاہ جو انسانوں کے لئے تعمیر ہوئی وہ وہی ہے جو مکہ میں واقعہ ہے اُس کو خیر و برکت دی گئی ہے. اور تمام جہان والوں کے لئے مرکز ہدایت بنایا گیا ہے.

(۹۶:۳) اور (۹۷:۳) میں کتنی صاف بات ہے کہ سب سے پہلا یہی گھر ہے (عبادت گاہ) اس میں کافی نشانیاں ہیں ابراہیم کا مقام عبادت ہے اس گھر کے حج کا حکم ہے. جو اس میں داخل ہوا وہ امن میں داخل ہوا اس سے زیادہ اور کیا حکم ہو سکتا ہے کہ کعبہ اول دن سے وہی ہے جو مکہ میں ہے اور سب نبیوں نے اس حکم کی پیروی کی ہے (۱۲۳:۱۶) ملت ابراہیم جب سے شریعت کی پابندی شروع ہے.

اس خبر کے تحت کہ آپ کسی بھی قیمت پر ان کے اختلافی قبلہ کی پیروی نہیں کریں گے اگر کی تو ظالموں میں شمار ہوگا. یہاں یہ بات قابل غور ہے کہ ایسا حکم اور ملت ابراہیم میں ہوتے ہوئے محمدؐ قبلہ قدیم سے اپنا رُخ بیت المقدس کی طرف کیسے کر سکتے تھے ہرگز نہیں. اس کے ثبوت کے لئے مسجد نبوی اور قبا کو ہی دیکھ لیا جائے.

مشہور یہ ہے کہ محمدؐ نے ہجرت کے بعد '۱۶' یا '۱۷' ماہ تک مدینہ میں رہ کر نماز بیت المقدس کی طرف کو منہ کر کے پڑھی تو ضروری تھا کہ مسجد نبوی اور قبا کا رُخ بیت المقدس کی طرف کو ہی رکھنا چاہیے تھا مگر تاریخ میں اس بات کا کہیں ذکر نہیں ملتا کہ ان مسجدوں کو پہلے بیت المقدس کی طرف رُخ کر کے بنایا تھا. اور بعد

में काबा परिवर्तन के साथ उन मस्जिदों की दिशा भी मक्काह की ओर कर दिया अर्थात् उत्तर से दक्षिण को, यह उल्लेख नही है, जबकि यदि काबा परिवर्तन हुआ होता तो यह उल्लेख होना अनिवार्य था, किन्तु मस्जिद प्रथम नीव दिशा पर ही स्थापित है,

विस्तार का उल्लेख तो मिलता है क्योंकि विस्तार हुआ परन्तु दिशा परिवर्तन होना नही मिलता, यह बात भी विचारणी है, दूसरी बात यह है कि (2:146) में अंकित है कि पुस्तक वाले काबा को ऐसे पहचानते है जैसे अपने पुत्रों को, तो स्पष्ट है कि यह परिचय पहचान तब ही हो सकती है जब उनकी पुस्तकों में काबे की बात अंकित हो, और वह यह कि काबा आरम्भ से मक्काह में ही है जिसका अनुकरण हर नबी ने किया,

आयत में यह भी अंकित है कि वह जानबूझकर सत्य को छुपा रहे है, ईश्वर ने यह सूचना भी तब दी जब उन्होंने काबा को छुपा कर दूसरा कर दिया हो, एक बात यह भी है कि मुहम्मद स0 से कहा जा रहा है कि आप उन लोगों के काल्पनिक काबे का कभी अनुसरण नही करेंगे और न किया है,

इन सब बातों से यही सिद्ध हो रहा है कि मुहम्मद सं0 ने कभी भी बेतुल मुक़द्दस (योरोशलम) की ओर मुख करके नमाज़ नही पढ़ी, आपने सदैव मक्काह में बने काबा की ओर मुख करके ही नमाज़ पढ़ी है चाहे आप किसी भी स्थान पर होते थे,

काबे के परिवर्तन के विषय में जो कथन मिलते है उनको पढ़ने के बाद उनमें अधिक विभिन्नता मिलती है, किसी में 8 या 9 माह का समय है किसी में 16 या 17 माह का समय है, किसी में दोपहर जोहर की नमाज़ में वही आई, किसी में नमाज़ असर में वही, अर्थात् आदेश आया किसी में इनके बाद, किसी में और कुछ है, एकता नही है,

इस प्रकार वही (ईश्वरीय वाणी) आने की बात भी बुद्धि में आने वाली नही? क्या ईश्वर नमाज़ पढ़ने समय "वही" अवतरित करेगा? नमाज़ पढ़ने में वही आने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, नमाज़ में कुरआन पढ़ें या वही को सुनें एक कर्म ही हो सकता है, और वह है नमाज़ में कुरआन पढ़ना, वही तो परितुष्टि के समय अवतरित होती थी, (इब्राहीम का धर्म 3:68,95,96, 22:78)

और यदि नमाज़ पढ़ने में काबा बदलने का आदेश आया तो निःसन्देह उस पर क्रिया हुई होगी तो बताओ मुहम्मद स0 चल कर नमाज़ियों के पीछे गए या नमाज़ी अपना स्थान छोड़कर मुहम्मद स0 के पीछे गए, जबकि इमाम के आगे अर्थात् पीछे इतनी जगह नही थी, फिर उस आदेश को नमाज़ियों को कैसे किसने बताया? क्या ईश्वर ने हर नमाज़ी से कहा या मुहम्मद स0 ने, यदि नही कहा तो विचित्र बेचैनी का समा बना होगा, मुहम्मद स0 नमाज़ियों के पीछे जा रहे होंगे या उनकी ओर को मुख करके खड़े हो गए होंगे तो नमाज़ियों ने क्या समझा होगा (ईश्वर की शरण),

एक बात यह भी प्रसिद्ध है कि मुहम्मद स0 ने उन्नयन (मेराज) की रात्री को बेतुल मुक़द्दस की मस्जिदुल अक़सा में सब ईशदूतों का नेतृत्व करते हुए नमाज़ पढ़ाई और वह मस्जिद अक़सा आज भी स्थापित है जिसकी दिशा काबे की ओर को है, कोई देखना चाहे देख सकता है, जब उस मस्जिद की दिशा काबे की ओर है और वह पहले से स्थापित है जिसमें मुहम्मद स0 ने नमाज़ का नेतृत्व किया तो फिर यह कैसे मान लिया जाए कि मुहम्मद स0 ने नमाज़ बेतुल मुक़द्दस की ओर को मुख करके पढ़ी, यद्यपि यह घटना मेराज जैसे पुस्तकों में लिखी है कुरआन के प्रकाश में मिथ्या सिद्ध हो रही है कि आप मेराज (उन्नयन) की रात्रि में काबा से बेतुल मुक़द्दस गए और वहां से आकाश में गए

मुहम्मद स0 काबा से ही आकाश मस्जिद अक़सा को गए

میں تحویل قبلہ کے ساتھ ان مسجدوں کا رُخ بھی مکہ کی طرف کر دیا یعنی شمال سے جنوب کو یہ ذکر نہیں ہے جب کہ اگر تحویل قبلہ ہوا ہوتا تو یہ ذکر ہونا ضروری تھا مگر مسجدیں اوّل بنیاد رُخ پر ہی قائم ہیں۔

توسیع کا ذکر تو ضرور ملتا ہے کیونکہ توسیع عمل میں آئی مگر رُخ تبدیل ہونا نہیں ملتا۔ یہ بات بھی قابل غور ہے۔ دوسری بات یہ کہ (۲:۱۴۶) میں درج ہے کہ اہل کتاب کعبہ کو ایسے پہچانتے ہیں جیسے اپنے بیٹوں کو تو ظاہر ہے یہ شناخت تب ہی ہو سکتی ہے جب ان کی کتابوں میں قبلہ کی بات درج ہو۔ اور وہ یہ کہ قبلہ شروع سے مکہ میں ہی ہے۔ جس کی پیروی ہر نبی نے کی۔

آیت میں یہ بھی درج ہے کہ وہ جان بوجھ کر حق کو چھپا رہے ہیں اللہ نے یہ خبر بھی تب دی جب انہوں نے کعبہ کو چھپا کر دوسرا کر دیا ہو۔ ایک بات یہ بھی ہے کہ محمدؐ سے کہا جا رہا ہے کہ آپ ان لوگوں کے فرضی قبلہ کی کبھی پیروی نہیں کریں گے اور نہ کی ہے۔

ان سب باتوں سے یہی ثابت ہو رہا ہے کہ محمدؐ نے کبھی بھی بیت المقدس کی طرف منھ کر کے نماز نہیں پڑھی آپ نے ہمیشہ مکہ میں بنے کعبہ کی طرف منھ کر کے ہی نماز پڑھی چاہے آپ کسی بھی مقام پر ہوتے تھے

تحویل قبلہ کے بارے میں جو روایات ملتی ہیں اُن کو پڑھنے کے بعد اُن میں کافی تضاد ملتا ہے۔ کسی میں ۸ یا ۹ ماہ کا عرصہ ہے کسی میں ۱۶ یا ۱۷ ماہ کا عرصہ ہے کسی میں نماز ظہر میں وحی آئی کسی میں نماز عصر میں کسی میں ان کے بعد کسی میں اور کچھ ہے۔ اتفاق نہیں ہے۔

اس طرح وحی آنے کی بات بھی عقل میں آنے والی نہیں؟ کیا اللہ نماز پڑھتے وقت وحی نازل کرے گا؟ نماز پڑھنے میں وحی آنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا نماز میں قرآن پڑھیں یا وحی کو سنیں ایک کام ہی ہو سکتا ہے۔ اور وہ ہے نماز میں قرآن پڑھنا۔ وحی تو اطمینان کے وقت نازل ہوتی تھی ملت ابراہیم (۳:۶۸، ۷۸:۲۲،۹۶،۹۵)

اور اگر نماز پڑھنے میں قبلہ بدلنے کا حکم آیا تو یقیناً اس پر عمل ہوا ہوگا تو بتاؤ محمدؐ چل کر نمازیوں کے پیچھے گئے یا نمازی اپنی جگہ چھوڑ کر محمدؐ کے پیچھے گئے جب کہ امام کے آگے یعنی پیچھے اتنی جگہ نہیں تھی پھر اس حکم کو نمازیوں کو کیسے کس نے بتایا؟ کیا اللہ نے ہر نمازی سے کہا یا محمدؐ نے۔ اگر نہیں کہا تو عجیب افراتفری کا ماحول بنا ہوگا۔ محمدؐ نمازیوں کے پیچھے جا رہے ہوں گے یا ان کی طرف کو منھ کر کے کھڑے ہو گئے ہوں گے تو نمازیوں نے کیا سمجھا ہوگا (نعوذباللہ)

ایک بات یہ بھی مشہور ہے کہ محمدؐ نے معراج کی رات کو بیت المقدس کی مسجد الاقصیٰ میں سب نبیوں کی امامت کرتے ہوئے نماز پڑھائی۔ اور وہ مسجد اقصیٰ آج بھی موجود ہے۔ جس کا رُخ کعبہ کی طرف کو ہے۔ کوئی دیکھنا چاہے دیکھ سکتا ہے۔ جب اس مسجد کا رُخ کعبہ کی طرف کو ہے اور وہ پہلے سے موجود ہے جس میں محمدؐ نے نماز کی امامت کی تو پھر یہ کیسے مان لیا جائے کہ محمدؐ نے نماز بیت المقدس کی طرف کو منھ کر کے پڑھی۔ حالانکہ یہ واقع معراج کتابوں میں لکھا ہے۔ قرآن کی روشنی میں غلط ثابت ہو رہا ہے کہ آپ معراج کی رات میں کعبہ سے بیت المقدس گئے اور وہاں سے آسمان بالا میں گئے۔

محمدؐ کعبہ سے ہی آسمان بالا مسجد اقصیٰ کو گئے اس کی بحث سورت بنی

इसकी विवेचना सूरत बनी इसराईल में है, मस्जिद अकसा जो कुरआन में है वह बैतुल मुकद्दस वाली नही है, फिर लिखा जा रहा है कि जो इस समय मस्जिद अकसा नाम से है वह मेराज के समय नही थी उस समय तो वहां खाली स्थान था, जिस पर ईसाई कूड़ा डाला करते थे, कथन में जो लिखा मिलता है कि प्रातः को मुहम्मद स0 ने समुदाय से कहा कि रात को मैंने मस्जिद अकसा में नमाज़ पढ़ी है और मुझे मेराज कराई गई है तो जाति ने कुछ प्रश्न किए उनमें यह था कि मस्जिद अकसा कैसी है तो उस समय ईश्वर ने मस्जिद को आपके सामने कर दिया और आपने उनके प्रश्नों के अनुसार उसको देखकर उत्तर दे दिए

जब उस समय मस्जिद थी ही नही तो वह मस्जिद कहां से आ गई? और फिर मुहम्मद स0 ने जब उसको एक बार देखा तो उसकी बनावट क्यों याद न रही, ईश्वर को उसको उखकर लाना पड़ा, जबकि एक बार वही को सुनकर मुहम्मद स0 याद कर लेते थे? क्या इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर है? सत्य यह है कि मेराज के समय वह मस्जिद नही थी उसको तो उमर र0 ने बनवाया था और उसका नाम पहले मस्जिद उमर था बाद को उसी मस्जिद को कुरआन से अकसा नाम लेकर नाम रखा और अनुवाद यह कर दिया गया कि मस्जिदे हराम से मस्जिद अकसा जो मुल्क शाम में है मेराज को गए

यदि उस समय वह मस्जिद उपस्थित थी तो जब उमर के काल में बैतुल मुकद्दस विजय हुआ और उमर र0 वहां गए थे उस समय नमाज़ पढ़ने को स्थान की खोज हुई थी, स्थान खोजने की क्या आवश्यकता थी? उमर और मुसलमानों को जानकारी होनी चाहिए थी कि यहां तो एक मस्जिद अकसा है जिसमें नबी ने मेराज के समय नमाज़ पढ़ी है तुरन्त वहां जाते और नमाज़ पढ़ते परन्तु मस्जिद में न जाते हुए स्थान की खोज करने का क्या अर्थ है?

क्या उस काल में उस मस्जिद को गिरा दिया गया था और स्थान को भी सब भूल गये थे, जो पादरी ने कहा कि हमारे गिरजे में नमाज़ पढ़ लो, उस पादरी को तुरन्त कहना चाहिए था कि श्रीमान मस्जिद है उसमें नमाज़ पढ़े, पहली बात तो मुसलमान ही उनसे ज्ञात करते और मेराज से लेकर बैतुल मुकद्दस की विजय तक कोई तो मुसलमान उस मस्जिद को देख लेता और तुरन्त मुसलमानों को लेकर वहां पहुंच जाता कि चलो हम अकसा में नमाज़ पढ़ेंगे, यह कुछ न हुआ और दूसरी जगह पर नमाज़ पढ़ी तो भाईयो! विचार करो वास्तविकता वही है कि मेराज के समय बैतुल मुकद्दस में कोई मस्जिद न थी और न ही मुहम्मद स0 बैतुल मुकद्दस गए वह तो मस्जिद हराम से सीधे मस्जिदे अकसा आसमान पर गए आयत (2:144) में शब्द फिस्समाह... के अनुवाद के बारे में भी लिखना है वह यह कि ज्ञाताओं ने अनुवाद किया है हम तुम्हारा आकाश की ओर मुख फैर फैरकर देखना देख रहे हैं सो हम उसी काबे की ओर जिसको तुम पसन्द करते हो मुंह करने का आदेश देंगे,

आयत में अक्षर 'फी' है इसके होते हुए अनुवाद यह होना चाहिए कि 'आकाश में' जबकि अनुवाद 'इला' का कर दिया अर्थात् 'आकाश की ओर', दूसरी बात आयत में शब्द धातु 'वल्ला' है 'तवल्ला' नही है, अनुवाद 'तवल्ला' का किया गया है अर्थात् सो हम तुमको उसी काबे की ओर जिसको तुम पसन्द करते हो मुख करने का आदेश देंगे फैर देंगे तो अपना मुख मस्जिद हराम की ओर फैर लो, जबकि अनुवाद होना यह है 'हम तुम को उस काबा का अभिभावक प्रबन्धक बना देंगे जिसको आप पसन्द करते हैं',

वास्तविकता यह है कि काबा पर अनेकेश्वर वादियों का अधिकार था और वहां पर मूर्तियों की पूजा होती थी और मुहम्मद स0 उसकी ओर को मुख करके नमाज़ पढ़ते थे क्योंकि वह इब्राहीम का धर्म है

اسرائیل میں ہے مسجد اقصیٰ جو قرآن میں ہے وہ بیت المقدس والی نہیں ہے پھر لکھا جار ہا ہے کہ جو اس وقت مسجد اقصیٰ نام سے ہے وہ معراج کے وقت نہیں تھی اس وقت تو وہاں خالی جگہ تھی جس پر عیسائی کوڑا ڈالا کرتے تھے روایت میں جو لکھا ملتا ہے کہ صبح کو محمدؐ نے قوم سے کہا کہ رات کو میں نے مسجد اقصیٰ میں نماز پڑھی ہے اور مجھے معراج کرائی گئی ہے تو قوم نے کچھ سوالات کئے ان میں یہ تھا کہ مسجد اقصیٰ کیسی ہے تو اس وقت اللہ نے مسجد کو آپ کے سامنے کر دیا اور آپ نے ان کے سوالات کے مطابق اس کو دیکھ کر جوابات دے ئے۔

جب اس وقت مسجد تھی ہی نہیں تو وہ مسجد کہاں سے آ گئی؟ اور پھر محمدؐ نے جب اس کو ایک بار دیکھا تو اس کا حال کیوں یاد نہ رہا اللہ کو اس کو اٹھا کر لانا پڑا؟ جب کہ ایک بار وحی کو سن کر محمدؐ یاد کر لیتے تھے؟ کیا اس قسم کے سوالات کا جواب ہے؟ حقیقت یہ ہے کہ معراج کے وقت وہ مسجد نہیں تھی اس کو تو عمرؓ نے بنوایا تھا اور اس کا نام پہلے مسجد عمر تھا بعد کو اسی مسجد کو قرآن سے اقصیٰ نام اخذ کر کے نام رکھا اور ترجمہ یہ کر دیا گیا کہ مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ جو ملک شام میں ہے معراج کو گئے۔

اگر اس وقت وہ مسجد موجود تھی تو جب عمر کے زمانے میں بیت المقدس فتح ہوا اور عمرؓ وہاں گئے تھے اس وقت نماز پڑھنے کو جگہ کی تلاش ہوئی تھی جگہ تلاش کرنے کی کیا ضرورت تھی عمر اور سب مسلمانوں کو معلوم ہونا چاہئے تھا کہ یہاں تو ایک مسجد اقصیٰ ہے جس میں نبی نے معراج کے وقت نماز پڑھی ہے فوراً وہاں جاتے اور نماز پڑھتے مگر مسجد میں نہ جاتے ہوئے جگہ کو تلاش کرنے کا کیا مطلب ہے؟

کیا اس عرصے میں اس مسجد کو گرا دیا گیا تھا اور جگہ کو بھی سب بھول گئے تھے اور پادری نے کہا کہ ہمارے گرجے میں نماز پڑھ لو اس پادری کو فوراً کہنا چاہئے تھا کہ حضور مسجد ہے اس میں نماز پڑھو پہلی بات تو مسلمان ہی ان سے معلوم کرتے اور معراج سے لے کر فتح بیت المقدس تک کوئی تو مسلمان اس مسجد کو دیکھ لیتا اور فوراً مسلمانوں کو لے کر وہاں پہنچ جاتا کہ چلو ہم مسجد اقصیٰ میں نماز پڑھیں گے یہ کچھ نہ ہوا اور دوسری جگہ پر نماز پڑھی تو بھائیو! غور کرو حقیقت وہی ہے کہ معراج کے وقت بیت المقدس میں کوئی مسجد نہ تھی اور نہ ہی محمدؐ بیت المقدس گئے وہ تو مسجد حرام سے سیدھے آسمان پر مسجد اقصیٰ گئے۔

آیت (۲:۱۴۴) میں لفظ [فِی السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ] کے مطلب کے بارے میں بھی لکھنا ہے وہ یہ کہ عالموں نے ترجمہ کیا ہے ہم تمہارا آسمان کی طرف منہ پھیر پھیر کر دیکھنا دیکھ رہے ہیں۔ سو ہم اُس قبلے کی طرف جس کو تم پسند کرتے ہو منہ کرنے کا حکم دیں گے۔

آیت میں حرف ''فی'' ہے اس کے ہوتے ہوئے ترجمہ یہ ہونا چاہئے کہ آسمان میں جب کہ ترجمہ ''الیٰ'' کا کر دیا یعنی آسمان کی طرف دوسری بات آیات میں لفظ مادہ ولیٰ ہے تولیٰ نہیں ہے ترجمہ تولیٰ کا کیا گیا ہے یعنی سو ہم تم کو اسی قبلے کی طرف جس کو تم پسند کرتے ہو منہ کرنے کا حکم دیں گے، پھیر دیں گے تو اپنا منہ مسجد حرام کی طرف پھیر لو۔ جب کہ ترجمہ ہونا یہ ہے ہم تم کو اس کعبہ کا والی متولی بنا دیں گے جس کو آپ پسند کرتے ہیں۔

حقیقت یہ ہے کہ کعبہ پر مشرکوں کا قبضہ تھا اور وہاں پر بتوں کی پوجا ہوتی تھی اور محمدؐ اس کی طرف کو منہ کر کے نماز پڑھتے تھے کیونکہ یہ ملت ابراہیم ہے۔

मूर्ति पूजा होने और दूसरों के अधिकार में काबा का होने के कारण मुहम्मद स0 को बहुत व्याकुलता रहती थी, आपकी इच्छा थी कि जो काबा इब्राहीम का धर्म होते हुए सब नबियों का काबा रहा है आज उसमें मूर्ति पूजा हो रही है, हे ईश्वर! उस स्थान को मूर्तियों की मलिनता से पवित्र कर दे और उसको मुसलमानों के अधिकार में कर दे इस व्याकुलता के कारण आपके मुख मण्डल से भी प्रकट होते थे तो उसके लिए ही कहा है "फिस्समा" कि ऐ मुहम्मद स0 तेरी इस व्याकुलता को हम ऊपर आकाश में देख रहे हैं, तो हम आपको उस काबा का अभिभावक बना देंगे जिसकी आपको अभिरूचि है, परन्तु प्रतिबद्धा यह है कि आप उसको प्राप्त करने के लिए हर प्रकार के सामान का प्रबद्ध करें जिसमें युद्ध के उपकरण भी होंगे,

क्योंकि काबा पर जिन लोगों का अधिकार है वह उसको सुगमता से देने वाले नहीं हैं और वह निर्बल भी नहीं है कि आप खाली हाथ जाएं और वे उसका अधिकार आपको दे दें, वे युद्ध के लिए कटिबद्ध हैं, इसलिए आप हर समय हर स्थान जहां भी जिस दशा में हो उसको लेने का प्रयास करते रहें अपना पूरा ध्यान उधर को ही रखें,

जब आप इस योग्य हो जाएंगे तो आपको वह मिल जाएगा, और यही ईश्वर का नियम भी है अर्थात् शक्ति का सामना शक्ति से ही किया जाता है और ईश्वर सहायता भी उसकी करता है जो अपनी सहायता आप करता है और यही भाग्य भी है,

काबा के विषय में कुछ अधिक ही लिखा गया, अंत में कुछ पंक्तियां और लिख दूं यह कि बेतुल मुकद्दस किसी भी नबी का किबला नहीं रहा हर, ईशदूत ने इब्राहीम की नीति का अनुसरण करते हुए मक्काह वाले काबे का अनुकरण किया है जिसका एक प्रमाण यह भी है कि काबा का हज हर काल में होता रहा है जो आज भी हो रहा है, यहूद व नसारा ने हठ में आकर अपना काबा बेतुल मुकद्दस को बनाया, परन्तु वह भी विभिन्न,

मस्जिद अक्सा मेराज के समय न थी उमर र0 ने बेतुल मुकद्दस की विजय के बाद बनवाई, मस्जिद कबा और मस्जिदे नबवी अपनी पहली दिशा पर स्थापित हैं, अतः मुहम्मद स0 ने कभी भी बेतुल मुकद्दस की ओर को मुख करके नमाज़ नहीं पढ़ी सदैव काबा मक्काह वाले की ओर को मुख करके नमाज़ पढ़ी तो किबला प्रथम और किबला दोयम का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, सदैव से काबा मक्काह वाला है,

बेतुल मुकद्दस की ओर को मुख करके नमाज़ पढ़ने को उचित सिद्ध करने के लिए एक मस्जिद जिसको दो किबले वाली कहा जाता है को प्रस्तुत किया जाता है जो आज भी स्थापित है उसके विषय में यह कहना है कि वह मस्जिद यहूदियों की बनाई हुई है, चूंकि वह भी एहले किताब हैं और कुरआन के शाक्षय के अनुसार प्रेषण कुरआन के समय उनमें धर्मवादी भी उपस्थित थे, जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता था तो वह सजदे में गिर जाते थे अर्थात् इस्लाम को मान लेते थे और विश्वास लाते थे, किन्तु किबले के विषय में संदिग्ध थे, अतः उन्होंने वह मस्जिद बेतुल मुकद्दस की ओर को बनाई और नमाज़ पढ़ते थे, परन्तु जब मुहम्मद स0 नबी हुए और देश त्याग करके मदीने आ गए तो उन यहूदियों ने जो एक नबी की प्रतीक्षा करते थे, जो उनकी पुस्तकों में लिखा था को देखकर मुहम्मद स0 पर विश्वास लाए और मुसलमान बन गए और अपनी मस्जिद को स्थापित रखा, परन्तु किबले में परिवर्तन किया वह यह कि पहले वे लोग नमाज़ बेतुल मुकद्दस की ओर को मुख करके पढ़ते थे फिर मक्काह की ओर को मुख करके नमाज़ पढ़ने लगे, परन्तु पहली दिशा भी कायम रखी जो आज भी स्थापित है,

और यदि यह बात उचित नहीं है तो यह एक षडयंत्र है और

مورتی پوجا ہونے اور دوسروں کے قبضہ میں کعبہ کا ہونے کی وجہ سے محمدؐ کو بہت بیقراری رہتی تھی آپ کی خواہش تھی کہ جو قبلہ ملت ابراہیم ہوتے ہوئے سب نبیوں کا قبلہ رہا ہے آج اس میں بتوں کی پوجا ہو رہی ہے۔ اے اللہ اس جگہ کو بتوں کی گندگی سے پاک صاف کر دے۔ اور اس کو مسلمانوں کے قبضے میں کر دے۔ اس پریشانی کی وجہ آپؐ کے چہرے سے بھی ظاہر ہوتی تھی تو اس کے لئے ہی کہا ہے "فی السماء" کہ اے محمدؐ تیری اس بےقراری کو ہم آسمان بالا میں دیکھ رہے ہیں۔ تو ہم آپ کو اس کعبہ کا متولی بنا دیں گے جس کو آپ پسند کرتے ہیں۔ مگر شرط یہ ہے کہ آپ اس کو حاصل کرنے کے لئے ہر طرح کا سامان تیار کریں جس میں جنگی سامان بھی ہے۔

کیونکہ کعبہ پر جن لوگوں کا قبضہ ہے وہ اس کو آسانی سے دینے والے نہیں ہیں اور وہ کمزور بھی نہیں ہیں کہ آپ خالی ہاتھ جائیں اور وہ اس کا قبضہ آپ کو دے دیں وہ لڑائی کے لئے تیار ہیں۔ اس لئے آپ ہر وقت ہر جگہ جہاں بھی جس حال میں ہوں اس کو لینے کی جدوجہد کرتے رہیں اپنی پوری توجہ ادھر کو ہی رکھیں۔

جب آپ اس لائق ہو جائیں گے آپ کو وہ مل جائیگا۔ اور یہی اللہ کا قانون بھی ہے یعنی طاقت کا مقابلہ طاقت سے ہی کیا جاتا ہے۔ اور اللہ مدد بھی اس کی کرتا ہے جو اپنی مدد آپ کرتا ہے اور یہی تقدیر بھی ہے۔

کعبہ کے بارے میں کچھ زیادہ ہی لکھا گیا آخر میں چند لائنیں اور لکھدوں۔ یہ کہ بیت المقدس کسی بھی نبی کا قبلہ نہیں رہا۔ ہر نبی نے ملت ابراہیم کی پیروی کرتے ہوئے مکہ والے قبلہ کی پیروی کی ہے جس کا ایک ثبوت یہ بھی ہے کہ کعبہ کا حج ہر زمانے میں ہوتا رہا ہے جو آج بھی ہو رہا ہے۔ یہود و نصاریٰ نے ضد میں آ کر اپنا قبلہ بیت المقدس کو بنایا مگر وہ بھی اختلافی۔

مسجد اقصیٰ معراج کے وقت نہ تھی عمرؓ نے بیت المقدس کی فتح کے بعد بنوائی۔ مسجد قبا اور مسجد نبوی اپنی پہلی سمت پر قائم ہیں۔ اس لئے محمدؐ نے کبھی بھی بیت المقدس کی طرف کو منھ کر کے نماز نہیں پڑھی۔ ہمیشہ کعبہ مکہ والے کی طرف کو منھ کر کے نماز پڑھی تو قبلہ اوّل اور قبلہ دوئم کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ہمیشہ سے قبلہ کعبہ مکہ والا ہے۔

بیت المقدس کی طرف کو منھ کر کے نماز پڑھنے کو درست ثابت کرنے کے لئے ایک مسجد جس کو دو قبلہ والی کہا جاتا ہے کو پیش کیا جاتا ہے جو آج بھی قائم ہے اُس کے بارے میں یہ کہنا ہے کہ وہ مسجد یہودیوں کی بنائی ہوئی ہے۔ چونکہ وہ بھی اہل کتاب ہیں اور قرآن کی شہادت کے مطابق نزول قرآن کے وقت ان میں ایمان دار بھی موجود تھے جب ان کے سامنے قرآن پڑھا جاتا تھا تو وہ سجدے میں گر جاتے تھے یعنی اسلام کو مان لیتے تھے اور ایمان لاتے تھے لیکن قبلہ کے بارے میں مشکوک تھے اس لئے انہوں نے وہ مسجد بیت المقدس کی طرف کو بنائی اور نماز پڑھتے تھے مگر جب محمدؐ نبی ہوئے اور ہجرت کر کے مدینہ آ گئے تو ان یہودیوں نے جو ایک نبی کا انتظار کرتے تھے، جو ان کی کتابوں میں لکھا تھا کو دیکھ کر محمدؐ پر ایمان لائے اور مسلمان بن گئے اور اپنی اس مسجد کو قائم رکھا مگر قبلہ میں تبدیلی کی وہ یہ کہ پہلے وہ لوگ نماز بیت المقدس کی طرف کو منھ کر کے پڑھتے تھے پھر مکہ کی طرف کو منھ کر کے نماز پڑھنے لگے مگر پہلا رُخ بھی قائم رکھا جو آج بھی قائم ہے۔

اور اگر یہ بات درست نہیں ہے تو یہ ایک سازش ہے اور وہ یہ کہ محمدؐ کو

वह यह कि मुहम्मद स0 को बेतुल मुकद्दस की ओर नमाज़ पढ़ने को उचित करने के लिए पहले कुरआन की आयत का अनुवाद बदला और मस्जिद अकसा बेतुल मुकद्दस में सिद्ध करके उसका नाम अकसा रखा और एक मस्जिद भी दो किबलों वाली बना दी, यदि यह बात उचित मान ली जाए तो मस्जिद कबा और मस्जिद नबी की प्रथम दिशा कहां गई, उनको तो हर मूल्य पर स्थापित रखना चाहिए था, क्योंकि इन दोनों मस्जिदों का मुहम्मद स0 ने अपने कर कमलों से आधार शिला रखा और बनाने में कार्य किया, क्या किसी के पास कोई प्रमाण है कि मुहम्मद स0 ने पहली बार जो भाषण दिया वह स्थान बदला गया? जब पहले दिए गए व्याख्यान का स्थान आज भी स्थापित है और उस मस्जिद का क्षेत्रफल भी आज विद्यमान है जो मुहम्मद स0 ने मस्जिद में लिया था और सम्भवतः उस स्थान के स्तम्भ और फर्श भी अलग रंग के हैं और बताया जाता है कि मुहम्मद स0 भाषण इस स्थान पर खड़े होकर पढ़ा करते थे, नमाज़ इस जगह खड़े होकर पढ़ी थी, आप इस हुजरे से निकल कर ऐसे आते थे, यह सब वस्तुऐं विद्यमान होने के बाद भी वही एक रट कि मुहम्मद स0 ने पहले नमाज़ बेतुल मुकद्दस की ओर को मुख करके पढ़ी थी बाद में काबा बदला,

بیت المقدس کی طرف نماز پڑھنے کو درست کرنے کے لئے پہلے قرآن کی آیت کا ترجمہ بدلا اور مسجد اقصیٰ بیت المقدس میں ثابت کر کے اس کا نام اقصیٰ رکھا اور ایک مسجد بھی دو قبلہ والی بنا دی اگر یہ بات درست مان لی جائے تو مسجد قبا اور مسجد نبوی کے اوّل رُخ کہاں گئے. ان کو تو ہر قیمت پر قائم رکھنا چاہئے تھا. کیونکہ ان دونوں مسجدوں کا محمدؐ نے اپنے دست مبارک سے سنگ بنیاد رکھا اور بنانے میں کام کیا. کیا کسی کے پاس کوئی ثبوت ہے کہ محمدؐ نے پہلی بار جو خطبہ دیا وہ جگہ بدلی گئی جب کہ پہلے خطبہ کی جگہ آج بھی موجود ہے اور اس مسجد کا رقبہ بھی آج موجود ہے جو محمدؐ نے مسجد میں لیا تھا اور غالباً اس جگہ کے ستون اور فرش بھی الگ رنگ کے ہیں اور بتایا جاتا ہے کہ محمدؐ خطبہ اس جگہ کھڑے ہو کر پڑھا کرتے تھے نماز اس جگہ کھڑے ہو کر پڑھی تھی آپ اس حجرے سے نکل کر ایسے آتے تھے یہ سب چیزیں موجود ہونے کے بعد بھی وہی ایک رٹ ہے کہ محمدؐ نے پہلے نماز بیت المقدس کی طرف کو منھ کر کے پڑھی تھی بعد میں کعبہ بدلا.

जबकि यह बिल्कुल मिथ्या है उचित यह है कि मुहम्मद स0 ने नमाज़ सदैव मक्काह वाले काबा की ओर मुख करके पढ़ी और हर नबी ने भी, ईश्वर के नियम बदला नहीं करते (18:27, 5:29, 33:62, 48:23, 35:43, 10:64, 6:115 और 4:82)

جب کہ یہ بالکل غلط ہے. درست یہ ہے کہ محمدؐ نے نماز ہمیشہ مکہ والے کعبہ کی طرف کو منھ کر کے پڑھی اور ہر نبی نے بھی. اللہ کے قانون بدلا نہیں کرتے (۱۸:۲۷، ۵:۲۹، ۳۳:۶۲، ۴۸:۲۳، ۳۵:۴۳، ۱۰:۶۴، ۶:۱۱۵ اور ۴:۸۲)

ऐ आस्था वालो! दृढ़ता और नमाज़ से सहायता लिया करो, निःसन्देह ईश्वर धैर्य करने वालों के साथ है (153)

اے ایمان والو! صبر اور نماز سے مدد لیا کرو. بے شک اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے (۱۵۳)

नोट- इस्लाम की व्यवस्था अर्थात् शान्ति को स्थापित करने में जो कठिनाईयां आएँगी अर्थात् इस्लाम के शत्रु तुमको तंग करेंगे, रास्ता रोकेंगे उनका सामना दृढ़ता धैर्य और नमाज़ से करो साहस न हारो,

نوٹ:- نظام اسلام یعنی سلامتی کو قائم کرنے میں جو پریشانیاں آئیں گی یعنی اسلام کے دشمن تم کو تنگ کریں گے راستہ روکیں گے، ان کا مقابلہ استقامت صبر اور نماز سے کرو ہمت نہ ہارو.

जो लोग ईश्वर की राह में मारे जाएं उन्हें मृत न कहो अर्थात उन्हें कायर न कहो वह कायर मृतक नहीं हैं अपितु ऐसे ही लोग वास्तव में समुदाय को जीवित करने वाले हैं, परन्तु तुमको चेतना नहीं है (154) {3:169से170,195,4:74,33:31,34:4,37:78से82,67:2, 62:11} समुदाय का जीवन व स्वतंत्रता का रहस्य लोगों के बलिदान में निहित है,

اور جو لوگ اللہ کی راہ میں مارے جائیں انہیں مردہ نہ کہو. یعنی انہیں بزدل نہ کہو وہ بزدل مردہ نہیں ہیں بلکہ ایسے ہی لوگ تو حقیقت میں قوم کو زندہ کرنے والے ہیں. مگر تم کو شعور نہیں ہے (۱۵۴) [۳:۱۶۹تا۱۷۰، ۴:۷۴، ۳۳:۳۱، ۳۴:۴، ۳۷:۷۸تا۸۲، ۶۷:۲، ۶۲:۱۱] قوموں کی زندگی و آزادی کا راز افراد کی قربانیوں میں ہی مضمر ہے.

नोट-इस विषय में कुरआन के अन्दर जो आयात हैं उनको यहां पर लिख देना आयात के भाव को समझने में बड़ा लाभकारी रहेगा, (आहयाउन) इस्म फाइल (संज्ञा कार्य) है अतः इसका अर्थ जीवित करने वाले हैं जैसे (अम्बिया) {41:39, 45:5,50:11,53:44,53:44} व अन्ना हू हुवा अमाता व आह्या और यह कि वही मारता और जिलाता है,

نوٹ:- اس بارے میں قرآن کے اندر جو آیات ہیں ان کو یہاں پر لکھ دینا آیت کے مفہوم کو سمجھنے میں بڑا مفید رہے گا. (آحیاءٌ) اسم فاعل ہے اس کا مطلب زندہ کرنے والے ہیں جیسے انبیاءؑ [۴۱:۳۹، ۴۵:۵، ۵۰:۱۱، ۵۳:۴۴] [وَاَنَّـــهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا] اور یہ کہ وہی مارتا اور جلاتا ہے.

(41:39) इन्नललजी आह्ययाहा लमुहयील मूता निःसन्देह जिसने उसे जीवित किया वही जीवित करेगा मृतक,

(۴۱:۳۹) [اِنَّ الَّذِیْ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰی] بے شک جس نے اسے زندہ کیا وہی جلائے گا مردے.

(3:169से170, 68) वह लोग जो स्वयं तो (युद्ध से बचकर) बैठ ही रहे थे परन्तु (जिन्होंने ईश्वर के मार्ग में जानें बलिदान कर दीं) अपने (उन) भाईयों के विषय में भी कहते हैं कि यदि हमारा कहा मानते तो वध न होते, कह दो यदि सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना,

(۳:۱۶۸تا۱۷۰، ۱۶۸) وہ لوگ جو خود تو (جنگ سے بچ کر) بیٹھ ہی رہے تھے مگر (جنہوں نے اللہ کی راہ میں جانیں قربان کر دیں) اپنے (اُن) بھائیوں کے بارے میں بھی کہتے ہیں کہ اگر ہمارا کہا مانتے تو قتل نہ ہوتے کہہ دو اگر سچے ہو تو اپنے اُوپر سے موت کو ٹال دینا.

(3:169) जो लोग ईश्वर के मार्ग में मारे गए उनको मरे हुए अर्थात कायर न समझना (वह मुर्दा अर्थात कायर नहीं हैं) अपितु ईश्वर के समीप वह जातियों को जीवित करने वाले हैं और उनको सम्मान की जीविका (ईश्वर की अनुकम्पा) दी जाएगी,

(۳:۱۶۹) جو لوگ اللہ کی راہ میں مارے گئے ان کو مرے ہوئے یعنی بزدل نہ سمجھنا (وہ مردہ یعنی بزدل نہیں ہیں) بلکہ وہ اللہ کے نزدیک قوموں کو زندہ کرنے والے ہیں اور ان کو رزق کریم (اللہ کی عنایات) دیا جائے گا.

(3:170) जो कुछ ईश्वर ने उनको अपने कृपा दया से दे रखा है उसमें

(۳:۱۷۰) جو کچھ اللہ نے ان کو اپنے فضل سے دے رکھا ہے اس میں خوش ہیں

प्रसन्न है और जो लोग उनके पीछे हैं अर्थात उनके उत्तराधिकारी परन्तु अभी उनमें सम्मिलित न हो सके वह उनके संबन्ध में हर्षित हो रहे हैं कि (वह उनके बलिदान के कारण सम्मानित जीविका कृपा दया पा रहे हैं सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं, शत्रु उनकी ओर को आंख उठाकर देखने का साहस नहीं कर पा रहा है) उनको भी न कुछ भय होगा न वह शोकाकुल होंगे,

(3:185) हर आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना है और तुमको तुम्हारे कर्मों का बदला महा प्रलय के दिन पूरा पूरा दिया जाएगा,

(4:74) तो जो लोग प्रलोक के बदले संसार के जीवन को बेचना चाहते हैं उनको चाहिए कि ईश्वर के मार्ग में युद्ध करें और जो व्यक्ति ईश्वर के मार्ग में युद्ध करे फिर शहीद हो जाए या अधिकार प्राप्त करे हम समीप ही उसको बड़ा प्रतिदान देंगे (अनुकम्पा)

(4:75) और तुमको क्या हुआ है कि ईश्वर के मार्ग में और उन बेबस पुरुषों और स्त्रीयों और बच्चों के लिए युद्ध नहीं करते जो दुआऐं कर रहे हैं कि ऐ स्वामी हमको इस नगर से जिसके रहने वाले अत्याचारी हैं निकाल कर कहीं और ले जा, और अपनी ओर से किसी को हमारा समर्थक बना और अपनी ओर से किसी को हमारा सहायक नियुक्त कर

(4:76) जो आस्तिक हैं वह तो ईश्वर के लिए युद्ध करते हैं और जो नास्तिक हैं वह मिथ्या देवताओं के लिए युद्ध करते हैं, सो तुम शैतान के सहायकों से युद्ध करो (और डरो मत) क्योंकि शैतान की चाल बोदी होती है,

(33:31) और जो तुम में से ईश्वर और उसके ईशदूत की आज्ञा मानेगी और शुभ कार्य करेगी उसको हम दूना फल देंगे और उसके लिए हमने सम्मान की जीविका उपलब्ध कर रखी है (अनुकम्पा अच्छा जप)

(34:4) इसलिए जो लोग आस्था लाए और शुभ कार्य किए उनको बदला दे यही वह लोग हैं जिनके लिए क्षमा और सम्मान की जीविका अनुकम्पा है,

(36:70) ताकि उस व्यक्ति को जो जीवित हो पथ प्रदर्शन का मार्ग दिखाए और नास्तिकों पर बात पूरी हो जाए (आयत में पथ प्रदर्शन प्राप्त करने वालों को जीवित कहा गया है क्या नास्तिक जीवत नही होते? अतः जो सत्य धर्म स्वीकार कर लेते हैं वह जीवित हैं और जो सत्य को स्वीकार नहीं करते वह नास्तिक मृतक हैं,

(9:37) आस्तिको! तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि ईश्वर के मार्ग में (धर्म युद्ध प्रयत्न के लिए) निकलो तो तुम भूमि पर गिर जाते हो, क्या तुम प्रलोक को छोड़कर संसार के जीवन पर प्रसन्न हो बैठे हो, संसार के जीवन के लाभ तो प्रलोक की तुलना में बहुत कम हैं,

(9:38) यदि तुम न निकलोगे तो ईश्वर तुमको बड़ी पीड़ा का दण्ड देगा और तुम्हारी जगह पर और लोग उत्पन्न कर देगा और तुम उसको कुछ हानि न पहुंचा सकोगे, ईश्वर हर वस्तु के माप निर्धारित करने वाला है,

(55:26) जो प्राणी पृथ्वी पर हैं सबका नाश होना है

(55:27) और तुम्हारे रब ही का अस्तित्व जो शक्ति वाला व महिमा वाला है शेष रहेगा,

(4:82) भला वह कुरआन में मनन क्यों नहीं करते यदि यह ईश्वर के अलावा किसी और का कथन होता तो इसमें (बहुत) मतभेद पाते,

(21:35) हर नफ्स को मृत्यु का स्वाद चखना है और हम तुम लोगों को सख्ती और समपन्नता में परीक्षा के लिए ग्रस्त करते हैं और तुम हमारी ओर ही लोटकर आओगे,

(29:57) हर जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है फिर तुम हमारी ओर ही आओगे,

اور جولوگ ان کے پیچھے ہیں یعنی ان کے جانشین مگرابھی ان میں شامل نہ ہوسکے وہ ان کی نسبت خوشیاں منارہے ہیں کہ (وہ ان کی قربانیوں کی وجہ سے عزت کا رزق عنایات پارہے ہیں عزت کے ساتھ زندگی گزاررہے ہیں دشمن ان کی طرف کوآنکھ اُٹھاکردیکھنے کی ہمت نہیں کرپارہاہے) ان کو بھی نہ کچھ خوف ہوگا اور نہ وہ غم ناک ہوں گے.

(۳:۱۸۵) ہر نفس کوموت کا مزا چکھنا ہے تم کوتمہارے اعمال کا بدلہ قیامت کے دن پوراپورادیا جائے گا.

(۴:۷۴) تو جولوگ آخرت کے بدلے دنیا کی زندگی کو بیچنا چاہتے ہیں ان کو چاہیئے کہ اللہ کی راہ میں جنگ کریں.اور جوشخص اللہ کی راہ میں جنگ کرے پھر شہید ہوجائے یاغلبہ پائے ہم عنقریب اس کوبڑا ثواب دیں گے (عنایات)

(۴:۷۵) اور تم کوکیا ہوا ہے کہ اللہ کی راہ میں اور ان بےبس مردوں اور عورتوں اور بچوں کی خاطر نہیں لڑتے جودعائیں کررہے ہیں کہ اے پروردگار ہم کواس شہر سے جس کے رہنے والے ظالم ہیں نکال کرکہیں دور لے جا.اوراپنی طرف سے کسی کوہماراحامی بنا.اوراپنی ہی طرف سے کسی کوہمارامددگار مقرر فرما.

(۴:۷۶) جومومن ہیں وہ تو اللہ کے لئے لڑتے ہیں.اور جوکافر ہیں وہ بتوں کے لئے لڑتے ہیں.سوتم شیطان کے مددگاروں سے لڑو (اورڈرومت) کیونکہ شیطان کاداؤبوداہوتا ہے.

(۳۳:۳۱) اور جوتم میں سے اللہ اوراس کے رسول کی فرمانبرداری کرے گی اور عمل نیک کرے گی اس کوہم دونا ثواب دیں گے.اوراس کے لئے ہم نے (رزقا کریما) عزت کی روزی تیارکررکھی ہے عنایات اچھاوضیفہ.

(۴:۳۴) اس لئے جولوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کو بدلہ دے یہی وہ لوگ ہیں جن کے لئے بخشش اورعزت کی روزی (رزق کریم) ہے

(۳۶:۷۰) تاکہ اس شخص کو جو زندہ ہو ہدایت کا راستہ دکھائے اور کافروں پر بات پوری ہوجائے (آیت میں ہدایت قبول کرنے والوں کوزندہ کہا گیا ہے کیا کافر زندہ نہیں ہوتے؟ اس لئے جو ہدایت قبول کرلیتے ہیں وہ زندہ ہیں اور جو ہدایت قبول نہیں کرتے وہ کافر مردہ ہیں).

(۹:۳۷) مومنو! تمھیں کیا ہوا ہے کہ جب تم سے کہا جاتا ہے کہ اللہ کی راہ میں (جہاد کے لئے) نکلو تو تم زمین پرگر جاتے ہو.کیا تم آخرت کوچھوڑکر دنیا کی زندگی پرخوش ہوبیٹھے ہو.دنیا کی زندگی کے فائدے تو آخرت کے مقابل بہت ہی کم ہیں

(۹:۳۸) اگرتم نہ نکلو گے تو اللہ تم کو بڑی تکلیف کا عذاب دے گا.اورتم اس کوکچھ نقصان نہ پہنچا سکو گے۔اللہ ہرچیز کے پیمانے مقرر کرنے والا ہے.

(۵۵:۲۶) جومخلوق زمین پر ہے سب کوفنا ہونا ہے.

(۵۵:۲۷) اورتمہارے رب ہی کی ذات ہے جوصاحب جلال وعظمت ہے باقی رہےگی.

(۴:۸۲) بھلا وہ قرآن میں غور کیوں نہیں کرتے اگر یہ اللہ کے سوا کسی اور کا (کلام) ہوتا تو اس میں (بہت سا) اختلاف پاتے

(۲۱:۳۵) ہر نفس کوموت کا مزا چکھنا ہے اور ہم تم لوگوں کوسختی اور آسودگی میں آزمائش کے طور پر مبتلا کرتے ہیں اور تم ہماری طرف ہی لوٹ کر آؤ گے (۲۹:۵۷) ہرمتنفس کوموت کا مزہ چکھنا ہے پھر تم ہماری ہی طرف لوٹ کر آؤ گے

रिज़क का अर्थ क्या है यह भी देखें-

(56:82) वतजअलूना रिज़्क़ा कुम अन्नाकुम तुकज़्ज़िबून

और अपना जप (व्यवहार) यह बनाते हो कि उसे झुटलाते हो, इस आयत में रिज़कका अर्थ खोल दिया अर्थात् जप या गतिविधि

आयात उपरोक्त में लगभग हर बात आ गई जिसकी आवश्यकता (2:154) में शब्द 'आहयाउन' की विवेचना के लिए आवश्यक है कुछ लिखने से पहले (2:154) का वह अनुवाद भी लिखा जा रहा है जो प्रचलित है,

(2:154) जो लोग ईश्वर के मार्ग में मारे गए है उन्हें कभी मृत मत कहना अपितु (वह लोग) जीवित हैं परन्तु तुम (उनके जीवन की वास्तविकता का) कुछ भी विवेक नही रखते,

आयात (3:185, 21:35, 29:57) में अंकित है कि हर जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है और आयात (55:56,57) में अंकित है कि हर जीव का नाश होना है केवल तेरा ईश्वर ही शेष रहेगा,

आयात (4:82) में अंकित है कि यह कुरआन ईश्वर की ओर से है, अतः इसमें विरोधाभास नही परन्तु अनुवादों में मतभेद स्पष्ट है,

(2:154) में जीवित लिखा जा रहा है और (2:185, 21:35, 29:57, 55:26,27) में है हर जीव को मृत्यु है अब कुरआन के प्रकाश में देखा जाए वास्तविकता क्या है?

(4:75) में है कि निर्बल याचना कर रहे है कि ऐ ईश्वर हमारा कोई सहायक भेज और आस्तिक बन्दे उनकी सहायता करते है और उनको अत्याचारियों के अत्याचारों से मुक्ति दिला कर उनको सम्मान जनक स्थान पर नियुक्त करते है और वह सम्मान की जीविका पाते है,

अतः ससांर में वही रचना या जाति सम्मान के साथ जीवित रहती है जिसमें अपनी रक्षा करने की क्षमता अधिक होती है और जो अपनी रक्षा करने में निर्बल होती है या दूसरों पर निर्भर करती है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है, अतः आयत (2:154) या दूसरी आयात में जो यह कहा गया है कि जो ईश्वर के मार्ग में युद्ध करते है और उनको उसी प्रयास में मृत्यु आ जाती है वास्तव में वही जातियों को जीवित करने वाले है वह कायर मुर्दा नही है तुमको इसका विवेक नही है, अर्थात् तुम विचार नही करते, अर्थ यह है कि जो लोग अपनी जाति और धर्म की रक्षा के लिए युद्ध के क्षेत्र में शत्रुओं का सामना करते है और अपनी शहादत और बलिदान प्रस्तुत करके शत्रु को परास्त कर देते है तो शत्रु यह सोचने पर विवश हो जाता है कि इस समुदाय को परास्त करना कठिन है और वह अपने उद्देश्य में सफल नही होंगे और वह वापस जाकर अपने घरों में छुप जाते है,

और जिन लोगों ने जिस जाति के लिए अपनी आहुति प्रस्तुत की वह सम्मान के साथ स्थापित रहेगी, और जब तक बलिदान की भावना विद्यमान रहेगी जाति जीवित रहेगी अर्थात् स्वतंत्र रहेगी और यह जीवन और स्वतंत्रता उन वीरो के बलिदान का परिणाम ही है, जिन्होंने शत्रु जाति से युद्ध करते हुए बलिदान दिया,

दूसरी बात यह है कि जो ईश्वर के मार्ग में बलिदान देता है वह सदैव के लिए अमर हो जाता है, जैसे सहाबा कराम या और सदाचारी लोगों का नाम महा प्रलय तक हर आदमी की जिह्वा पर सम्मान से आएगा और इतिहास में सुरक्षित रहेगा, जैसे अपने भारत के माहत्मा गांधी या दूसरे स्वतंत्रता संग्राम के महापुरुष परन्तु जिन्होंने

رزق کا مطلب کیا ہے یہ بھی دیکھیں

(۸۲:۵۶)[وَتَجۡعَلُوۡنَ رِزۡقَکُمۡ اَنَّکُمۡ تُکَذِّبُوۡنَ]

اور اپنا وظیفہ (رویہ) یہ بناتے ہو کہ اسے جھٹلاتے ہو. اس آیت میں رزق کا مطلب کھول دیا یعنی وظیفہ یا رویہ

آیات بالا میں قریب قریب ہر بات آ گئی جس کی ضرورت (۲:۱۵۴) میں لفظ (آحیاءٌ) کی بحث کے لئے درکار ہے کچھ لکھنے سے پہلے (۲:۱۵۴) کا وہ ترجمہ بھی لکھا جا رہا ہے جو رائج الوقت ہے.

(۲:۱۵۴) جو لوگ اللہ کی راہ میں مارے گئے ہیں انہیں کبھی مردہ نہ کہنا بلکہ (وہ لوگ) زندہ ہیں مگر تم (ان کی زندگی کی حقیقت کا) کچھ بھی شعور نہیں رکھتے.

آیت (۳:۱۸۵، ۲۱:۳۵، ۲۹:۵۷) میں درج ہے کہ ہر نفس کو موت کا مزہ چکھنا ہے اور آیت (۵۵:۲۶، ۲۷) میں درج ہے کہ ہر جاندار کو فنا ہونا ہے صرف تیرا رب ہی باقی رہے گا.

آیت (۴:۸۲) میں درج ہے کہ یہ قرآن اللہ کی طرف سے ہے اس لئے اس میں اختلاف نہیں. لیکن ترجموں میں اختلاف نظر آ رہا ہے

(۲:۱۵۴) میں زندہ لکھا جا رہا ہے اور (۲:۱۸۵، ۲۱:۳۵، ۲۹:۵۷، ۵۵:۲۶، ۲۷) میں ہے کہ ہر نفس کو موت ہے اب قرآن کی روشنی میں دیکھا جائے حقیقت کیا ہے

(۴:۷۵) میں ہے کہ کمزور فریاد کر رہے ہیں کہ اے اللہ کوئی ہمارا مددگار بھیج اور مومن بندے ان کی مدد کرتے ہیں اور ان کو ظالموں کے ظلم سے نجات دلا کر ان کو عزت کے مقام پر قائم کرتے ہیں، اور وہ رزق کریم عنایات عزت کا رزق پاتے ہیں.

اس لئے دنیا میں وہی مخلوق یا قوم عزت کے ساتھ زندہ رہتی ہے جس میں اپنی حفاظت کرنے کی صلاحیت زیادہ ہوتی ہے. اور جو اپنی حفاظت کرنے میں کمزور ہوتی ہے یا دوسروں پر انحصار کرتی ہے وہ جلد ہی ختم ہو جاتی ہے. اس لئے آیت (۲:۱۵۴) یا دوسری آیات میں جو یہ کہا گیا ہے کہ جو اللہ کی راہ میں قتال کرتے ہیں اور ان کو اسی جدو جہد میں موت آ جاتی ہے حقیقت میں وہی قوموں کو زندہ کرنے والے ہیں وہ بزدل مردہ نہیں ہیں تم کو اس کا شعور نہیں ہے یعنی تم غور نہیں کرتے. مطلب یہ ہے کہ جو لوگ اپنی قوم اور دین کی حفاظت کے لئے میدان جنگ میں دشمنوں کا مقابلہ کرتے ہیں اور اپنی شہادت قربانی پیش کر کے دشمن کو مغلوب کر دیتے ہیں تو دشمن یہ سوچنے پر مجبور ہو جاتا ہے کہ اس قوم کو شکست دینا مشکل ہے اور وہ اپنے مقصد میں کامیاب نہیں ہوں گے اور وہ واپس جا کر اپنے بلوں میں چھپ جاتے ہیں.

اور جن لوگوں نے جس قوم کے لئے اپنی قربانی پیش کی وہ عزت کے ساتھ قائم رہے گی اور جب تک قربانی کا جذبہ موجود رہے گا قوم زندہ رہے گی. یعنی آزاد رہے گی اور یہ زندگی اور آزادی ان سرفروشوں کی قربانی کا نتیجہ ہی ہے جنہوں نے دشمن قوم سے جنگ کرتے ہوئے قربانی دی.

دوسری بات یہ ہے کہ جو اللہ کی راہ میں قربانی دیتا ہے وہ ہمیشہ کے لئے زندہ جاوید ہو جاتا ہے. جیسے صحابہ کرام یا اور نیک آدمیوں کا نام قیامت تک ہر آدمی کی زبان پر عزت سے آئے گا. اور تاریخ میں محفوظ رہے گا. جیسے اپنے بھارت کے مہاتما گاندھی یا دوسرے جنگ آزادی کے مہاپرش. مگر جنہوں نے حق

सत्य का विरोध करके मिथ्या कर्म किए और ईश्वर के मार्ग में बलिदान प्रस्तुत नही किया जैसे अबु लहब फिरऔन, नमरूद इत्यादि तो उन का नाम भूल जाते है और यदि नाम आता भी है तो घृणा के साथ और धिक्कार होती रहती है.

کی مخالفت کر کے غلط کام کئے اور اللہ کے راستے میں قربانی نہیں دی جیسے ابولہب فرعون، نمرود وغیرہ تو ان کا نام بھول جاتے ہیں. اور اگر نام آتا بھی ہے تو حقارت کے ساتھ اور لعنت ہوتی رہتی ہے.

तो स्पष्ट हुआ कि आहुति में सम्मान का जीवन है और उनको ईश्वर की ओर से आदर की जीविका मिलती है अर्थात् वह स्वतंत्र रहती है और जो बलिदान नहीं देते वह दास हो जाते हैं और उनको अपमान की जीविका मिलती है और शीघ्र ही समाप्त हो जाती है अतः जाति के जीवन और स्थिरता के लिए जिससे वह दुनिया में सम्मान के साथ जीवित रह सके हर समय बलिदान के लिए प्रस्तुत रहो इसी में जाति और लोगों का भला है यदि विवेक रखते हो तो विचार करो. (9:38) में स्पष्टीकरण है कि यदि तुम बलिदान के लिए न निकलोगे तो तुमको बड़ी यातना मिलेगी अर्थात् पराधीनता, और पराभव में हर आदमी जानता है कि क्या होता है, है जुर्मे जईफी की सजा मर्गे मफाजात, या (21:35) में कष्ट और सम्पन्नता की बात है.

تو ظاہر ہوا قربانی میں قوموں کی زندگی ہے اور ان کو اللہ کی طرف سے عزت کا رزق ملتا ہے یعنی وہ آزاد رہتی ہے اور جو قربانی نہیں دیتے وہ غلام ہو جاتے ہیں. اور ان کو ذلت کی روزی ملتی ہے اور جلد ہی ختم ہو جاتی ہے. اس لئے قوم کی زندگی اور بقا کے لئے جس سے وہ دنیا میں عزت کے ساتھ زندہ رہ سکے ہر وقت قربانی کے لئے تیار رہو. اسی میں قوم اور افراد کا بھلا ہے. اگر شعور رکھتے ہو تو غور کرو (۳۸:۹)

(۳۸:۹) میں وضاحت ہے کہ اگر تم قربانی کے لئے نہ نکلو گے تو تم کو بڑا عذاب ملے گا یعنی غلامی کا. اور غلامی میں ہر آدمی جانتا ہے کیا ہوتا ہے. ہے جرم ضعیفی کی سزا مرگ مفاجات.

یا (۳۵:۲۱) میں سختی اور آسودگی کی بات ہے.

इतिहास देख लिया जाए, जब भी किसी जाति ने निर्बलता दिखाई और वह भ्रष्ट कर्मों में लिप्त हो गई तो पराधीन हो गई, और जब लोग जागरुक हुए और प्रयास किया तो स्वतंत्र हो गए यही नियम है और यही आयत में है कि जो बलिदान देते है वही जीवित है वह मृतक निर्जीव कायर नही है और वह अपनी आहुति से सम्प्रदाय को जीवित करने वाले है.

تاریخ دیکھ لی جائے جب بھی کسی قوم نے کمزوری دکھائی اور وہ غلط کاموں میں لگ گئی تو غلام ہو گئی اور جب لوگ بیدار ہوئے اور جد و جہد کی تو آزاد ہو گئے. یہی قاعدہ ہے اور یہی آیت میں ہے کہ جو قربانی دیتے ہیں وہی زندہ ہیں وہ مردہ بزدل نہیں ہیں اور وہ اپنی قربانی سے قوموں کو زندہ کرنے والے ہیں.

और हम अवश्य तुम्हारी दृढ़ता को शत्रु के भय, भूक, मालों, जानों और फलों की हानि के साथ परीक्षा करेंगे (अर्थात् लोगों पर स्पष्ट करेंगे स्पष्ट हो जाएगा कि वास्तव में यही आस्तिक है जो हानि के बाद भी मुझ पर विश्वासकरके धैर्यवान है) और (ऐ नबी) इन दुर्घटनाओं में दृढ़ता करने वालों को मंगल सूचना दे दो (सफलता संसार और परलोक में) (155)

اور ہم ضرور تمہاری استقامت کو دشمن کے خوف، بھوک، مالوں، جانوں اور پھلوں کے نقصان کے ساتھ آزمائیں گے (یعنی لوگوں پر ظاہر کریں گے، ظاہر ہو جائے گا کہ حقیقت میں یہی مومن ہیں جو ان نقصانات کے باوجود بھی مجھ پر بھروسہ کر کے ثابت قدم ہیں) اور اے نبی ان حوادث میں صبر کرنے والوں کو خوشخبری دے دو (کامیابی دنیا اور آخرت میں) (۱۵۵)

(वह वे लोग हैं) उन पर जब कोई संकट आता है तो वह यह कहते है हृदय के पूरे विश्वास से कि इसमें घबराने की कोई बात नही, हमारा पूरा जीवन ईश्वर के नियम के लिए समर्पित है और हम इन कठिनाईयों का सामना करने के लिए उसी के नियम की ओर आते है उसी से सहायता चाहते है (156)

(وہ وہ لوگ ہیں جب) ان پر کوئی مصیبت آتی ہے تو وہ یہ کہتے ہیں دل کے پورے اطمینان سے کہ اس میں گھبرانے کی کوئی ضرورت نہیں. ہماری پوری زندگی اللہ کے قانون کے لئے وقف ہے اور ہم ان مشکلات کا سامنا کرنے کے لئے اسی کے قانون کی طرف رجوع کرتے ہیں اسی سے مدد چاہتے ہیں (۱۵۶)[۳:۸۳،۳۶:۸۳]

नोट- और दुनिया भर की मुश्किलात व मसायब के बावजूद हमारा हर पग इसी व्यवस्था की तरफ उठता है उसी से हम शक्ति प्राप्त करते है हमारे जीवन की हर गति उसी केन्द्र के गिर्द घूमती है यहां तक कि हमारा हर कर्म उसके कानूने मकाफात की ओर कशा-कशा चला जाता है वह इससे इधर उधर कभी हट नही सकता, वह नतीजा खेज़ होकर रहता है चाहे दुनिया में या दूसरे जीवन में क्योंकि उसका कानून हर जगह काम करता है.

نوٹ:۔ اور دنیا بھر کی مشکلات و مصائب کے باوجود ہمارا ہر قدم اسی نظام کی طرف اٹھتا ہے اسی سے ہم طاقت حاصل کرتے ہیں ہماری زندگی کی ہر حرکت اسی محور کے گرد گھومتی ہے نیز یہ کہ ہمارا ہر عمل اس کے قانون مکافات کی طرف کشاں کشاں چلا جاتا ہے وہ اس سے ادھر ادھر کہیں ہٹ نہیں سکتا۔ وہ نتیجہ خیز ہو کر رہتا ہے خواہ اس دنیا میں یا مرنے کے بعد دوسری زندگی میں۔ کیونکہ اس کا قانون ہر جگہ کام کرتا ہے

वह वे लोग है जिन पर उनके रब की ओर से सामान्य करुणा कृपा है (शान्ति व ऐकता और विशिष्ट करुणा पृथ्वी में अधिपत्य दिया जाता है) और वह लोग सीधे मार्ग पर हैं (157) {9:99,103, 33:43,56}

وہ وہ لوگ ہیں جن پر ان کے پروردگار کی طرف سے عام رحمتیں صلوٰۃ ہے (امن واتحاد اور مخصوص رحمت تمکن فی الارض عطا کیا جاتا ہے) اور وہ لوگ راہ راست پر ہیں (۱۵۷)[۹:۹۹،۱۰۳،۳۳:۴۳،۵۶]

निःसन्देह सफा और मरवा ईश्वर के प्रतीकों में से है अतः जो व्यक्ति ईश्वर के घर की यात्रा हज या उमराह करे उसके लिए कोई पाप की बात

یقیناً صفا اور مروہ اللہ کی نشانیوں میں سے ہیں پس جو شخص بیت اللہ کا حج یا عمرہ کرے اس کے لئے کوئی گناہ کی بات

नहीं कि वह इन दोना (पर्वतों) के मध्य प्रयत्न को (आया जाया करे चक्कर लगाना) और जो सप्रसन्नता से कोई भलाई का काम करेगा ईश्वर को उसका ज्ञान है और वह उसका आदर करने वाला है निःसन्देह ईश्वर पूरा फल प्रदान करने वाला है (158) {2:148, 17:7, 42:34, 24:55}

نہیں کہ وہ ان دونوں (پہاڑیوں) کے درمیان سعی کرے (آیا جایا کرے چکر لگانا) اور جو برضا ورغبت کوئی بھلائی کا کام کرے گا اللہ کو اس کا علم ہے اور وہ اس کی قدر کرنے والا ہے بلا شبہ اللہ بھرپور ثمر عطا کرنے والا ہے (۱۵۸) [۲:۱۴۸، ۱۷:۷، ۴۲:۳۴، ۲۴:۵۵]

जो लोग हमारी अवतरित की हुई उज्ज्वल शिक्षा और पथ प्रदर्शन को छुपाते हैं जबकि हम उन्हें सब इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए अपनी पुस्तक में उल्लेख कर चुके हैं, विश्वास करो कि ईश्वर भी उन पर धिक्कार करता है और सम्पूर्ण धिक्कार करने वाले भी उन पर धिक्कार भेजते हैं (159) {22:28}

جو لوگ ہماری نازل کی ہوئی روشن تعلیمات اور ہدایات کو چھپاتے ہیں درآں حالیکہ ہم انہیں سب انسانوں کی رہنمائی کے لئے اپنی کتاب میں بیان کر چکے ہیں یقین جانو کہ اللہ بھی ان پر لعنت کرتا ہے اور تمام لعنت کرنے والے بھی ان پر لعنت بھیجتے ہیں (۱۵۹) [۲۲:۲۸]

किन्तु जो इस गतिविधि से रुक जाए और अपनी कार्य प्रणाली में सुधार कर ले और जो कुछ छुपाते थे उसे वर्णन करने लगे उनको मैं क्षमा कर दूंगा और मैं बड़ा क्षमा करने वाला हूं (160)

البتہ جو اس روش سے باز آجائیں اور اپنے طرز عمل کی اصلاح کرلیں اور جو کچھ چھپاتے تھے اسے بیان کرنے لگیں ان کو میں معاف کردوں گا اور میں بڑا درگزر کرنے والا ہوں (۱۶۰)

जिन लोगों ने नास्तिकता की गतिविधि अपनाई और कुफ्र की दशा में ही जान दी उन पर ईश्वर और फरिश्तों और सब इन्सानों की धिक्कार है (161)

جن لوگوں نے کفر کا رویہ اختیار کیا اور کفر کی حالت میں ہی جان دی ان پر اللہ اور فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہے (۱۶۱)

इस भर्त्सना की दशा में वह सदैव रहेंगे न उनके दण्ड में कमी होगी और न ही उन्हें छूट दी जाएगी (162)

اس لعنت کی حالت میں وہ ہمیشہ رہیں گے نہ ان کی سزا میں تخفیف ہوگی اور نہ ہی انہیں مہلت دی جائے گی (۱۶۲)

और लोगो! तुम्हारा पूज्य एक ईश्वर है, कौन कहता है ईश्वर नहीं है निःसन्देह वह रहमान रहीम है (163)

اور لوگو! تمہارا معبود ایک اللہ ہے کون کہتا ہے اللہ نہیں ہے یقیناً وہ رحمٰن ہے رحیم ہے (۱۶۳)

(इस वास्तविकता को जानने के लिए कि वही एक ईश्वर है यदि कोई स्मृति और लक्षण चाहते हो तो) जो लोग विवेक से काम लेते हैं उनके लिए आकाशों और पृथ्वी के उत्पन्न करने में रात और दिन के बराबर एक दूसरे के बाद आने में, उन नौकाओं में जो इन्सानों के लाभ की वस्तुऐं लिए हुए नदियों और सागर में चलती फिरती हैं बारिश के पानी में जिसे ईश्वर ऊपर से बरसाता है फिर उसके द्वारा निर्जीव भूमि को जीवन प्रदान करता है और (अपने इस प्रबन्ध के द्वारा) भूमि में हर प्रकार के जीवधारी प्राणी फैलाता है, वायु के चक्र में और उन बादलों में जो आकाश और पृथ्वी के मध्य आज्ञाकारी बनाकर रखे गए हैं असंख्य चिन्ह हैं (164) {20:114, 2:164, 3:190,191, :45:13, 10:64, 33:62, 35:43, 48:23, 45:13, 44:39, 54:49, 25:2, 30:30}

(اس حقیقت کو جاننے کے لئے کہ وہی ایک اللہ ہے اگر کوئی نشانی علامت درکار ہے تو) جو لوگ عقل سے کام لیتے ہیں ان کے لئے آسمانوں اور زمین کے پیدا کرنے میں رات اور دن کے برابر ایک دوسرے کے بعد آنے میں ان کشتیوں میں جو انسان کے نفع کی چیزیں لئے ہوئے دریاؤں اور سمندروں میں چلتی پھرتی ہیں بارش کے پانی میں جسے اللہ اوپر سے برساتا ہے پھر اس کے ذریعہ سے مردہ زمین کو زندگی بخشتا ہے اور (اپنے اس انتظام کی بدولت) زمین میں ہر قسم کی جاندار مخلوق کو پھیلاتا ہے ہواؤں کی گردش میں اور ان بادلوں میں جو آسمان اور زمین کے درمیان مسخر بنا کر رکھے گئے ہیں بے شمار نشانیاں ہیں (۱۶۴) [۲۰:۱۱۴، ۲:۱۶۴، ۳:۱۹۰،۱۹۱، ۴۵:۱۳، ۳۳:۶۲، ۱۰:۶۴، ۴۸:۲۳، ۳۵:۴۳، ۴۵:۱۳، ۴۴:۳۹، ۵۴:۴۹، ۲۵:۲، ۳۰:۳۰]

(2:164 में वर्णन असंख्य गुणों के स्पष्ट प्रमाणों के बाद) लोगों में से कतिपय लोग ऐसे भी हैं जो ईश्वर के विशिष्ट गुणों में उसके साथ औरों को भी साझी बनाते हैं और उनसे इसी प्रकार स्नेह करते हैं (मानों कि उन्हें भी ईश्वर के साथ उपस्थित व दर्शक, सहायक व समर्थक संकट मोचन ठेहराकर अपने मन में उनकी भी उसी प्रकार पूजा करते हैं और उन से उसी भांति स्नेह करते हैं) जिस प्रकार

(۲:۱۶۴ میں مذکورہ بالا صفات کی ظاہر اور واضح نشانیوں کے باوجود) لوگوں میں سے بعض لوگ ایسے بھی ہیں جو اللہ کی صفات مخصوصہ میں اس کے ساتھ اوروں کو بھی شریک ٹھہراتے ہیں اور ان سے اُسی طرح محبت کرتے ہیں (گویا کہ انہیں بھی اللہ کے ساتھ حاضر وناظر حامی وناصر۔ دستگیر ومشکل کشا ٹھہرا کر اپنے دل میں ان کی بھی اسی طرح پوجا کرتے ہیں۔ اور ان سے اسی طرح محبت کرتے ہیں)

ईश्वर के साथ की जाती है (अर्थात् उनके प्रस्तुत किए दृष्टिकोण व आस्था को ईश्वर के अवतरित किए आस्था व दृष्टिकोण पर श्रेष्ठता देते हैं) और उनके विपरीत जो लोग विश्वास लाते वह ईश्वर के स्नेह में बहुत ही कठोर है (वह ईश्वर के गुणों में किसी एक को भी साझी नही करते) और काश अत्याचारी लोग विचार करें कि जब वह दण्ड को देखेंगे और फिर जानेंगे कि पूर्ण शक्ति केवल ईश्वर के लिए है, निःसन्देह ईश्वर यातना देने में बहुत कठोर है (165)

जब वह दण्ड देगा उस समय अवस्था यह होगी कि वही नेता और मार्ग दर्शक जिनका संसार में अनुसरण किया गया था अपने शिष्यों से कोई सम्बन्ध होने का इनकार करेंगे, किन्तु दण्ड पाकर रहेंगे और उनके सारे साधन व सम्बन्ध की शृंखला कट जाएगी (166)

और वह लोग जो दुनिया में उनका अनुसरण करते थे कहेंगे कि काश हमको फिर एक अवसर दिया जाए तो जिस प्रकार आज वह हम से अप्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं हम उनसे अप्रसन्न होकर दिखा देते, यूं ईश्वर उन लोगों के वह कर्म जो वह संसार में कर रहे हैं उनके सामने इस प्रकार लाएगा कि वह संताप और ग्लानियों के साथ हाथ मलते रहे, परन्तु आग से निकलने का कोई मार्ग न पाएंगे (167)

लोगो! भूमि की उपज से हर वस्तु जो वैध और पवित्र वस्तुएं हैं उन्हें खाओ (किसी वस्तु को वर्जित ठहराकर) शैतान का अनुसरण न करना निःसन्देह व तुम्हारा प्रकट शत्रु है (168) {16:116, 5:87,88, 6:16,17, 2:172, 66:1, 7:22,157}

वह तुम्हें दुष्टता और अश्लील का आदेश देता है कि तुम ईश्वर के नाम पर वह बातें कहो जिनके विषय में तुम्हें ज्ञान नही है (169)

उनसे जब कहा जाता है कि ईश्वर ने जो आदेश अवतरित किए हैं उनका अनुसरण करो तो उत्तर देते हैं कि हम तो उसी रीति का अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है, अच्छा यदि उनके पूर्वजों ने विवेक से कुछ भी काम न लिया हो और सत्य मार्ग न पाया हो (तब भी वह उन्ही का अनुसरण किए जाएंगे) (170) {5:104, 10:78, 11:62,87, 21:52, 23:24, 34:43, 38:7, 43:23}

वह लोग जिन्होंने ईश्वर की बताई हुई पद्धति पर चलने से इनकार कर दिया है उनकी स्थिति निश्चित ऐसी है जैसे चरवाहा पशुओं को पुकारता है और वह हांक पुकार की ध्वनि के अतिरिक्त कुछ नही सुनते, वह बहरे हैं गूंगे हैं अन्धे हैं इसलिए कोई बात उनकी बुद्धि में नही आती (171) {7:179}

ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो यदि तुम वास्तव में ईश्वर ही की पूजा करने वाले हो तो जो पवित्र वस्तुएं हमने तुम्हें प्रदान की हैं उन्हें निःसंकोच खाओ और ईश्वर की आज्ञाकारी करो (172)

ईश्वर की ओर से यदि कोई प्रतिबन्ध तुम पर है तो वह यह है कि मृतक शव न खाओ, रक्त से और सूअर के मांससे संयम बरतो और कोई

جس طرح اللہ کے ساتھ کی جاتی ہے (یعنی ان کے پیش کردہ نظریات وعقائد کو اللہ کے نازل کردہ عقائد ونظریات پر فوقیت دیتے ہیں) اوران کے برعکس جولوگ ایمان لاتے ہیں وہ اللہ کی محبت میں بہت ہی سخت ہیں (وہ اللہ کی صفات میں کسی ایک کو بھی شریک نہیں ٹھہراتے) اورکاش کہ ظالم لوگ غور کریں کہ جب وہ عذاب کو دیکھیں گے اور پھر جان لیں گے کہ پوری کی پوری طاقت صرف اللہ کے لئے ہے بلاشبہ اللہ عذاب کرنے میں بہت ہی سخت ہے (۱۶۵)

جب وہ سزا دے گا اس وقت کیفیت یہ ہوگی کہ وہی پیشوا اور رہنما جن کی دنیا میں پیروی کی گئی تھی اپنے مریدوں سے بےتعلقی ظاہر کریں گے مگر سزا پا کر رہیں گے. اوران کے بارے میں اسباب وسائل کا سلسلہ کٹ جائے گا (۱۶۶)

اوروہ لوگ جو دنیا میں ان کی پیروی کرتے تھے کہیں گے کہ کاش ہم کو پھر ایک موقع دیا جائے تو جس طرح آج وہ ہم سے بیزاری ظاہر کررہے ہیں ہم ان سے بیزار ہوکر دکھا دیتے یوں اللہ ان لوگوں کے وہ اعمال جو وہ دنیا میں کررہے ہیں ان کے سامنے اس طرح لائے گا کہ وہ حسرتوں اور پشیمانیوں کے ساتھ ہاتھ ملتے رہیں مگر آگ سے نکلنے کی کوئی راہ نہ پائیں گے (۱۶۷)

لوگو! زمین کی پیداوار سے ہر چیز جو حلال اور پاک چیزیں ہیں انہیں کھاؤ (کسی چیز کو حرام ٹھہرا کر) شیطان کی پیروی نہ کرنا بلاشبہ وہ تمہارا ظاہر دشمن ہے (۱۶۸) [۱۶:۱۱۶، ۵:۸۷، ۸۸، ۷:۳۲، ۱۵۷، ۶:۱۶، ۱۷، ۲:۱۷۲، ۶۶:۱]

وہ تمہیں بدی اور فحش کا حکم دیتا ہے اور یہ سکھاتا ہے کہ تم اللہ کے نام پر وہ باتیں کہو جن کے متعلق تمہیں علم نہیں (۱۶۹)

ان سے جب کہا جاتا ہے کہ اللہ نے جو احکام نازل کئے ہیں ان کی پیروی کرو تو جواب دیتے ہیں کہ ہم تو اسی طریقے کی پیروی کریں گے جس پر ہم نے اپنے بڑوں کو پایا ہے اچھا اگر ان کے باپ دادا نے عقل سے کچھ بھی کام نہ لیا ہو اور راہ راست نہ پائی ہو (تب بھی وہ انہیں کی پیروی کئے جائیں گے؟) (۱۷۰) [۵:۱۰۴، ۱۰:۷۸، ۱۱:۶۲، ۸۷، ۲۱:۵۲، ۲۳:۲۴، ۳۴:۴۳، ۳۸:۷، ۴۳:۲۳]

وہ لوگ جنہوں نے اللہ کے بتائے ہوئے طریقے پر چلنے سے انکار کردیا ہے ان کی حالت بالکل ایسی ہے جیسے چرواہا جانوروں کو پکارتا ہے اور وہ ہانک پکار کی صدا کے علاوہ کچھ نہیں سنتے وہ بہرے ہیں گونگے ہیں اندھے ہیں اس لئے کوئی بات ان کی عقل میں نہیں آتی (۱۷۱) [۷:۱۷۹]

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو اگر تم حقیقت میں اللہ ہی کی بندگی کرنے والے ہو تو جو پاک چیزیں ہم نے تمہیں بخشی ہیں انہیں بےتکلف کھاؤ اور اللہ کی فرمانبرداری کرو (۱۷۲)

اللہ کی طرف سے اگر کوئی پابندی تم پر ہے تو وہ یہ ہے کہ مردار نہ کھاؤ خون اور سور کے گوشت سے پرہیز کرو اور کوئی

ऐसी वस्तु न खाओ जिस पर ईश्वर के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हां जो व्यक्ति विवशता की दशा में हो और वह उनमें से कोई वस्तु खा ले बिना इसके कि वह नियम भंग करने का विचार रखता हो या आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन करे तो उस पर कुछ पाप नहीं, ईश्वर क्षमा करने वाला और कृपा करने वाला है (173) {6:146}

ایسی چیز نہ کھاؤ جس پر اللہ کے علاوہ کسی اور کا نام لیا گیا ہو. ہاں جو شخص مجبوری کی حالت میں ہو اور وہ ان میں سے کوئی چیز کھا لے بغیر اس کے کہ وہ قانون شکنی کا ارادہ رکھتا ہو یا ضرورت کی حد سے تجاوز کرے تو اس پر کچھ گناہ نہیں اللہ بخشنے والا اور رحم کرنے والا ہے (۱۷۳) [۶:۱۴۶]

सत्य यह है कि जो लोग उन आदेशों को छुपाएंगे जो ईश्वर ने अपनी पुस्तक में अवतरित किए हैं और थोड़े संसारिक लाभ पर उन्हें भेंट चढ़ाएंगे वह वास्तवमें अपने पेटों में आग भर रहे हैं, भला प्रलय के दिन ईश्वर कदापि उनसे बात न करेगा न उन्हें पवित्र करेगा और उनके लिए दुख दायक दण्ड है (174) {5:3, 6:119,120,124,146, 10:59, 16:115,116, 22:30; 66:1}

حق یہ ہے کہ جو لوگ ان احکام کو چھپائیں گے، جو اللہ نے اپنی کتاب میں نازل کئے ہیں اور تھوڑے دنیوی فائدوں پر انہیں بھینٹ چڑھائیں گے وہ دراصل اپنے پیٹ آگ سے بھر رہے ہیں. قیامت کے روز اللہ ہرگز ان سے بات نہ کرے گا. نہ انہیں پاکیزہ ٹھہرائے گا اور ان کے لئے دردناک عذاب ہے (۱۷۴) [۵:۳، ۶:۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۴، ۱۴۶، ۱۰:۵۹، ۱۶:۱۱۵، ۱۱۶، ۲۲:۳۰، ۶۶:۱]

वह वे लोग हैं जिन्होंने सीधे मार्ग के बदले पथ भ्रष्टता क्रय की और मोक्ष के बदले यातना मोल ले ली, विचित्र है उनका साहस कि नर्क का कष्ट सहन करने के लिए कटिबद्ध है (175)

وہ وہ لوگ ہیں جنہوں نے ہدایت کے بدلے ضلالت (گمراہی) خریدی اور مغفرت کے بدلے عذاب مول لے لیا عجیب ہے ان کا حوصلہ کہ جہنم کا عذاب برداشت کرنے کے لئے تیار ہیں (۱۷۵)

यह सब कुछ इसलिए हुआ कि ईश्वर ने तो ठीक ठीक सत्य के साथ पुस्तक अवतरित की थी परन्तु जिन लोगों ने पुस्तक में मतभेद निकाले वह अपने झगड़ों में सत्य से बहुत दूर निकल गए (176) {4:82}

یہ سب کچھ اس لئے ہوا کہ اللہ نے تو ٹھیک ٹھیک حق کے ساتھ کتاب نازل کی تھی مگر جن لوگوں نے کتاب میں اختلاف نکالے وہ اپنے جھگڑوں میں حق سے بہت دور نکل گئے (۱۷۶) [۴:۸۲]

ऐ लोगो! तुम यदि यह समझते हो कि नमाज़ में मुख पूर्व या पश्चिम को करना ही सत्कर्म है (अर्थात् काबा पश्चिम है तो मुख पश्चिम को करना या पूर्व है तो पूर्व को करना या चिल्लाह करना, यदि तुमने केवल नमाज़ पढ़ने को ही सत्कर्म जान लिया है जैसा आज कल केवल नमाज़ पर ही बल दिया जाता है और शेष जीवन की दशा कुरआन के विरुद्ध है तो यह सोच दोषयुक्त है) अपितु वास्तव में सत्कर्म यह है कि नमाज़ के साथ-साथ ईश्वर को अन्तिम दिवस को और फरिश्तों को और ईश्वर की अवतरित की हुई पुस्तक और उसके ईशदूतों को हृदय से माने और ईश्वर के प्रेम में अपना रोचक माल सम्बन्धियों और अनाथों पर निर्धनों (जिनका कारोबार रुक गया हो) और यात्रियों पर सहायता के लिए हाथ फैलाने वालों पर और दासों की मुक्तिपर व्यय करें, और सलात-उपासना की व्यवस्था स्थापित करें और दान दें और सदाचारी वह लोग हैं कि (इन शुभ कर्मों के साथ) जब प्रतिज्ञा करें तो पूरा करें और तंगी और आपदा के समय और सत्य और मिथ्या के युद्ध में धैर्य करें (अर्थ यह है कि कुरआन के अनुसार अपने पूरे जीवन में कर्म करें, ईश्वर की अवज्ञा से बचें तब उन नमाज़ियों की नमाज़ स्थापित होगी अन्यथा पाखण्ड की नमाज़ कुछ लाभ न देगी) वही लोग हैं सच्चे और वही हर प्रकार की आशंकाओं से बचने वाले हैं (177) {2:4, 3:91, 2:285, 7:157, 47:4}

اے لوگو! تم اگر یہ سمجھتے ہو کہ نماز میں منہ مشرق یا مغرب کو کرنا ہی نیکی ہے (یعنی کعبہ مغرب ہے تو منہ مغرب کو کرنا یا مشرق ہے تو مشرق کو کرنا یا چلہ کرنا. اگر تم نے صرف نماز پڑھنے کو ہی نیکی جان لیا ہے جیسا آج کل صرف نماز پر ہی زور دیا جاتا ہے اور باقی زندگی کے حالات قرآن کے خلاف ہیں تو یہ سمجھ ناقص ہے) بلکہ حقیقت میں نیکی یہ ہے کہ نماز کے ساتھ ساتھ اللہ کو یوم آخر اور ملائکہ کو اور اللہ کی نازل کی ہوئی کتاب اور اس کے رسولوں کو دل سے مانے اور اللہ کی محبت میں اپنا پسندیدہ مال رشتے داروں اور یتیموں پر مسکینوں (جن کا کام ساکن ہو گیا ہو) اور مسافروں پر مدد کے لئے ہاتھ پھیلانے والوں پر اور غلاموں کی رہائی پر خرچ کرے. اور نظام صلوٰۃ قائم کرے اور زکوٰۃ دے اور نیک وہ لوگ ہیں کہ (ان نیکیوں کے ساتھ) جب عہد کریں تو پورا کریں اور تنگی اور مصیبت کے وقت میں اور حق و باطل کی جنگ میں صبر کریں (مطلب یہ ہے کہ قرآن کے مطابق اپنی پوری زندگی میں عمل کریں اللہ کی نافرمانی سے بچیں تب ان نمازیوں کی صلوٰۃ قائم ہوگی ورنہ ریاکاری کی نماز کچھ فائدہ نہ دے گی) وہی لوگ ہیں راست باز اور وہی ہر قسم کے خطرات سے بچنے والے (۱۷۷) [۲:۴، ۳:۹۱، ۲:۲۸۵، ۷:۱۵۷، ۴۷:۴]

ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो तुम्हारे लिए वध के

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو تمہارے لئے قتل کے مقدموں

वालों में बदले का आदेश लिख दिया गया है (अनिवार्य किया गया है) स्वतंत्र आदमी ने वध किया है तो उस स्वतंत्र से ही बदला लिया जाएगा, दास वधक है तो वह वध किया जाएगा, यदि स्त्री इस पाप की अभियुक्त हो तो उस स्त्री से ही बदला लिया जाएगा, हां यदि किसी वधक को उसका भाई कुछ (अर्थात् वधक का भाई) नरमी करना चाहे तो परिचित रीति के अनुसार अर्थ दण्ड का निर्णय होना चाहिए और वधक को अनिवार्य है कि सत्य के साथ अर्थ दण्ड दे, यह तुम्हारे ईश्वर की ओर से कमी और दया है जो अत्याचार करे उसके लिए दुख देने वाला दण्ड है (178) {5:32, 4:93, 42:40, 17:33, 4:92, 5:45, 2:58}

میں قصاص کا حکم لکھ دیا گیا ہے (فرض کیا گیا ہے) آزاد آدمی نے قتل کیا ہے تو اس آزاد ہی سے بدلہ لیا جائے گا. غلام قاتل ہے تو وہ غلام ہی قتل کیا جائے گا اور اگر عورت اس جرم کی مرتکب ہو تو اس عورت سے ہی قصاص لیا جائے گا ہاں اگر کسی قاتل کو اس کا بھائی کچھ (یعنی مقتول کا بھائی) نرمی کرنا چاہے تو معروف طریقے کے مطابق خوں بہا کا تصفیہ ہونا چاہیے اور قاتل کو لازم ہے کہ راستی کے ساتھ خوں بہا ادا کرے یہ تمہارے رب کی طرف سے تخفیف اور رحمت ہے جو زیادتی کرے اس کے لئے دردناک عذاب ہے (۱۷۸) [۵:۳۲، ۴:۹۳، ۴۲:۴۰، ۱۷:۳۳، ۴:۹۲، ۵:۴۵، ۲:۵۸]

ऐ बुद्धि रखने वालो! तुम्हारे लिए बदले में जीवन है आशा है कि तुम इस नियम की अवज्ञा में संयम बरतोगे (179)

اے عقل رکھنے والو! تمہارے لئے قصاص میں زندگی ہے امید ہے کہ تم اس قانون کی خلاف ورزی سے پرہیز کروگے (۱۷۹)

नोट- बदले में जीवन है का अर्थ यह है कि एक आदमी ने किसी का वध किया यदि उसको एक दल के सामने वध कर दिया जाएगा तो दूसरे व्यक्ति देखकर भयभीत हो जाएंगे और किसी को वध करने का साहस न करेंगे तो इस प्रकार व्यक्ति सुरक्षित होंगे, यदि वधक को बदले में दण्ड न दिया जाएगा जैसा आज कल तथा कथित सभ्य समाज में हो रहा है तो हर व्यक्ति यह सोचकर दूसरों का वध करेगा कि हम को वध नहीं किया जाएगा, वह अधिक वध करता फिरेगा, तो इस प्रकार कोई भी सुरक्षित न रहेगा और सुरक्षित रहने में ही जीवन है, यह है अर्थ कसास (बदले) में जीवन का.

نوٹ:۔ قصاص میں زندگی ہے کا مطلب یہ ہے کہ ایک آدمی نے کسی کو قتل کیا اگر اس کو ایک جماعت کے سامنے قتل کر دیا جائے گا تو دوسرے آدمی دیکھ کر خوف زدہ ہو جائیں گے. اور کسی کو قتل کرنے کی ہمت نہ کریں گے تو اس طرح آدمی محفوظ ہوں گے. اگر قاتل کو قصاص میں سزا نہ دی جائے گی. جیسا آج کل نام نہاد مہذب زمانے میں ہو رہا ہے تو ہر آدمی یہ سوچ کر دوسروں کو قتل کرے گا کہ ہم کو قتل نہیں کیا جائے گا وہ خوب قتل کرتا پھرے گا. تو اس طرح کوئی بھی محفوظ نہ رہے اور محفوظ رہنے میں ہی زندگی ہے. یہ ہے مطلب قصاص میں زندگی کا.

नोट- आयत (2:177) में नमाज़ स्थापित करने का शब्द आया है इसी प्रकार अधिकांश आयात में शब्द स्थापित करने का ही आया है, नमाज़ पढ़ने का बहुत कम, अतः इसके विषय में भी कुछ लिख दिया जाए नमाज़ मस्जिद में समय के प्रतिबद्ध के साथ एक साथ मिलकर या अकेले कहीं भी पढ़ी जाती है परन्तु प्रश्न स्थापित करने का है स्थापित कैसे किया जाएगा?

نوٹ:۔ آیت (۲:۱۷۷) میں نماز قائم کرنے کا لفظ آیا ہے اسی طرح زیادہ تر آیات میں لفظ قائم کرنے کا ہی آیا ہے نماز پڑھنے کا بہت کم آیا ہے. اس لئے اس کے بارے میں بھی کچھ لکھ دیا جائے نماز مسجد میں وقت کی پابندی کے ساتھ باجماعت یا تنہا کہیں بھی پڑھی جاتی ہے مگر سوال قائم کرنے کا ہے. قائم کیسے کیا جائے گا؟

नमाज़ को स्थापित इस प्रकार किया जाएगा, उदाहरणतः नमाज़ पढ़ते समय आयत पढ़ी, वअक़ीमुल वज़ना बिलक़िस्ति वला तुख़सिरूल मीज़ान (55:9) (और न्याय के साथ ठीक ठीक तौलो और तौल कम न करो, या और आयात है जैसे यही (177) जिनमें जीवन व्यतीत करने के नियम हैं उनको पढ़ा, यदि नमाज से बाहर आकर इन आयात के अनुसार कार्य किया माप-तौल पूरी की वचन को पूरा किया, सत्य बोला, दूसरों की सहायता की तात्पर्य यह कि हर कार्य नमाज़ में पढ़ी आयात के अनुसार किया तो नमाज़ स्थापित हो गई, व्यक्ति के पूरे जीवन का व्यवहार सलात (नमाज़ उपासना) है यदि इन आयात की शिक्षा के विरुद्ध किया तो नमाज़ स्थापित नहीं हुई और न ही वास्तव में हमने नमाज़ पढ़ी, केवल लोगों को दिखाने के लिए कुछ स्तम्भ अदा किए ईश्वर हमको वास्तव में नमाज़ पढ़ने और उसको अपने जीवन में व्यवहार में स्थापित करने की क्षमता दे जैसे (5:66) और यदि वह तौरात और इनजील को और जो उनके प्रतिपालक की ओर से उन पर अवतरित हुई उनको स्थापित रखते तो अपने ऊपर और पाओं के नीचे से खाते उनमें कुछ लोग मध्य चाल हैं और बहुत से ऐसे हैं जिनके कर्म बुरे हैं.

نماز کو قائم اس طرح کیا جائے گا مثلاً نماز پڑھتے وقت آیت پڑھی. [واقیموا الوزن بالقسط ولا تخسروا المیزان] (۵۵:۹) (اور انصاف کے ساتھ ٹھیک ٹھیک تولو اور تول کم نہ کرو. یا اور آیات ہیں جیسے یہی ۱۷۷ جن میں زندگی گذارنے کے قانون ہیں ان کو پڑھا. اگر نماز سے باہر آ کر ان آیات کے مطابق کام کیا. ناپ تول پوری کی عہد کو پورا کیا. سچ بولا، دوسروں کی مدد کی غرض یہ کہ ہر کام نماز میں پڑھی آیات کے مطابق کیا تو نماز قائم ہو گئی. انسان کی پوری زندگی کے معاملات صلوٰۃ ہیں. اگر ان آیات کی تعلیمات کے خلاف کیا تو نماز قائم نہیں ہوئی. اور نہ ہی حقیقت میں ہم نے نماز پڑھی صرف لوگوں کو دکھانے کے لئے. چند ارکان ادا کئے. اللہ ہم کو حقیقت میں نماز پڑھنے اور اس کو اپنی زندگی کے معاملات میں قائم کرنے کی توفیق دے. جیسے (۵:۶۶) اور اگر وہ توراۃ اور انجیل کو اور جو ان کے پروردگار کی طرف سے ان پر نازل ہوئیں ان کو قائم رکھتے تو اپنے اوپر سے اور پاؤں کے نیچے سے کھاتے ان میں کچھ لوگ میانہ رو ہیں. اور بہت سے ایسے ہیں جن کے اعمال بُرے ہیں.

(6:67) ऐ रसूल! जो आदेश ईश्वर की ओर से तुम पर अवतरित हुए हैं सब लोगों को पहुंचा दो, और यदि ऐसा न किया तो तुमने ईश्वर के आदेश पहुंचाने का हक़ अदा न किया, और ईश्वर तुमको लोगों से बचाए रखेगा, निःसन्देह ईश्वर विरोधियों को पथ प्रदर्शन नहीं करता.

(۵:۶۷) اے رسول! جو ارشادات اللہ کی طرف سے تم پر نازل ہوئے ہیں سب لوگوں کو پہنچا دو. اور اگر ایسا نہ کیا تو تم نے اللہ کے پیغام پہنچانے کا حق ادا نہیں کیا۔ اور اللہ تم کو لوگوں سے بچائے رکھے گا۔ بے شک اللہ منکروں کو ہدایت نہیں کرتا.

(5:68) कहो कि ऐ अहले किताब जब तक तुम तौरात और इनजील को और जो तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम लोगों पर अवतरित हुई उनको स्थापित न रखोगे कुछ भी मार्ग पर नही हो सकते, और जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर कुरआन अवतरित हुआ है इससे उनमें से अधिक की अवज्ञा और नास्तिकता और बढ़ेगी तो तुम नास्तिकों पर अनुताप न करो.

उपरोक्त आयत में तौरात व इनजील और जो पुस्तकें ईश्वर की ओर से अवतरित हुई उनको स्थापित करने का आदेश है क्या इस आदेश से यह अर्थ है कि उनको कही भवन या पेड़ की भांति खड़ा करना है? कदापि नही, अपितु अर्थ यह है कि उनमें जो शिक्षा है उन पर व्यवहार करना है, उनको अपने ऊपर लागू करना है जिससे दूसरों को तुम्हारी जिन्दगी में यह दिखाई दे कि तुमने अपने पूरे जीवन को इन पुस्तकों की शिक्षा के अनुसार कर लिया, यदि ऐसा किया तो वह पुस्तकें स्थापित हो गई और उन पर व्यवहार न किया तो वह स्थापित न हुई,

आज हम नमाज़ पढ़ते तो रहे हैं परन्तु ईश्वर के आदेश के अनुसार नही पढ़ रहे, ईश्वर आदेश देता है कि जब तक तुम यह न समझने लगो कि नमाज़ में क्या पढ़ रहे हो नमाज़ के निकट न जाओ अर्थात न समझी कि स्थिति को ईश्वर ने उन्माद बताया है अतः हम को समझ कर नमाज़ पढ़नी चाहिए और उस के अनुसार अपने कर्म करने चाहिए हर बुराई से नमाज़ रोकती है यदि हम बुराई से न रुके तब भी नमाज़ स्थापित न हुई और हम नमाज़ पढ़ने में उन्माद की स्थिति में रहे.

आज अधिकांश की दशा यही है कि नमाज़ उन्माद की दशा में पढ़ रहे हैं, अतः नमाज़ स्थापित नही हुई भाईयो! हम नमाज़ स्थापित करें और ईश्वर को प्रसन्न करें,

मुसलमानो! तुम पर अनिवार्य किया गया है कि जब तुम में से कोई व्यक्ति अनुभूत करे कि मृत्यु का समय निकट आ गया है और वह अपने पीछे धन छोड़ रहा है तो माता पिता और सम्बंधो के लिए (यदि वास्तव में उनको आवश्यकता हो दूसरे मागी दारो की तुलना में तो) अच्छे ढंग से उत्तर पत्र करे यह स्वत्व अनिवार्य है संयमी लोगो पर (180) {4:11,12,23, 5:106,108, 24:61}

नोट- परिचित रीति से उत्तर पत्र करने का आदेश है परन्तु ज्ञाताओं ने इस आयत को निरस्त माना है, जबकि ऐसा नही है और न ही कुरआन में कोई आयत निरस्त है, निरसक व निरस्त की विवेचना आयत (2:106) पेज 82 पर देखी जाए

यदि कोई आदमी जीवन में अपने परिवार की स्थिति को देखकर इस आयत के आधीन परिचित रीति से उत्तर पत्र करता है तो मृत्यु के बाद उसके उत्तर पत्र के अनुसार विभाजन होगा, और यदि उसने जान लिया कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे परिवार में उत्तर पत्र न करने से किसी का स्वत्व नष्ट न होगा तो उत्तर पत्र करना अनिवार्य नही, मरने के बाद उसका धन आयत (4:11,12) के अनुसार विभाजन होगा, इस प्रकार कोई भी आयत न निरसक है और न निरस्त,

उदाहरणतः ज़ैद के चार पुत्र हैं तीन लड़के व्यस्क हो गए पढ़ लिखकर विवाह हो गया और कारोबार में पिता ने आत्म निर्भर कर दिया परन्तु एक पुत्र छोटा है उसके लिए अभी कुछ नही हुआ ऐसी स्थिति में यदि ज़ैद की मृत्यु हो जाती है तो उसके धन का विभाजन आयत (4:11,12) के अनुसार कर दिया जाएगी अर्थात् हर भाई को बराबर बराबर किन्तु इस विभाजन से छोटा पुत्र हानि में रहा, अतः छोटे पुत्र को इस हानि से बचाने के लिए अनिवार्य हो जाता है कि ज़ैद

(۶۸:۵) کہو کہ اے اہل کتاب! جب تک تم توراۃ اور انجیل کو اور جو تمہارے رب کی طرف سے تم لوگوں پر نازل ہوئیں اُن کو قائم نہ رکھو گے کچھ بھی راہ پر نہیں ہو سکتے. اور جو تمہارے پروردگار کی طرف سے تم پر قرآن نازل ہوا ہے اس سے ان میں سے اکثر کی سرکشی اور کفر اور بڑھے گا تو تم قوم کفار پر افسوس نہ کرو.

آیات بالا میں توراۃ و انجیل اور جو کتابیں اللہ کی طرف سے نازل ہوئیں ان کو قائم کرنے کا حکم ہے. کیا اس حکم سے یہ مطلب ہے کہ ان کو کہیں عمارت یا درخت کی طرح کھڑا کرنا ہے؟ ہرگز نہیں بلکہ مطلب یہ ہے کہ ان میں جو تعلیمات ہیں ان پر عمل کرنا ہے ان کو اپنے اوپر نافذ کرنا ہے. جس سے دوسروں کو تمہاری زندگی میں یہ نظر آئے کہ تم نے اپنی پوری زندگی کو ان کتابوں کی تعلیمات کے مطابق کر لیا اگر ایسا کیا تو وہ کتابیں قائم ہو گئیں اور ان پر عمل نہ کیا تو وہ قائم نہ ہوئیں.

آج ہم نماز پڑھ تو رہے ہیں مگر اللہ کے حکم کے مطابق نہیں پڑھ رہے اللہ فرماتا ہے کہ جب تک تم یہ نہ سمجھنے لگو کہ نماز میں کیا پڑھ رہے ہو نماز کے قریب نہ جاؤ یعنی ناسمجھی کی حالت کو اللہ نے نشہ بتایا ہے. اس لئے ہم کو سمجھ کر نماز پڑھنی چاہیئے اور اس کے مطابق اپنے عمل کرنے چاہیئے. ہر برائی سے نماز روکتی ہے اگر ہم برائی سے نہ روکے تب بھی نماز قائم نہ ہوئی اور ہم نماز پڑھنے میں نشے کی حالت میں رہے.

آج اکثر کا حال یہی ہے کہ نماز نشہ کی حالت میں پڑھ رہے ہیں. اس لئے نماز قائم نہیں ہوئی. بھائیو! ہم نماز قائم کریں اور اللہ کو راضی کریں.

مسلمانو! تم پر فرض کیا گیا ہے کہ جب تم میں سے کوئی شخص محسوس کرے کہ موت کا وقت قریب آ گیا ہے اور وہ اپنے پیچھے مال چھوڑ رہا ہے تو والدین اور رشتہ داروں کے لئے (اگر وہ واقعی ضرورت مند ہوں دوسرے حصہ داروں کے مقابلہ میں تو) معروف[1] طریقہ سے وصیت کرے یہ حق ہے متقی لوگوں پر (۱۸۰) [۴:۱۱،۱۲،۲۳، ۵:۱۰۶، ۱۰۸، ۲۴:۶۱]

[1] معروف طریقے سے وصیت کرنے کا حکم ہے مگر علماء کرام نے اس آیت کو منسوخ مانا ہے. جب کہ ایسا نہیں ہے اور نہ ہی قرآن میں کوئی آیت منسوخ ہے ناسخ منسوخ کی بحث آیت (۲:۱۰۶) ص۔۸۲، پر دیکھی جائے

اگر کوئی آدمی زندگی میں اپنے خاندان کے حالات کو دیکھ کر اس آیت کے تحت معروف طریقے سے وصیت کرتا ہے تو مرنے کے بعد اس کی وصیت کے مطابق تقسیم ہوگی. اور اگر اس نے جان لیا کہ میرے مرنے کے بعد میرے خاندان میں وصیت نہ کرنے سے کسی کی حق تلفی نہ ہوگی تو وصیت کرنا ضروری نہیں مرنے کے بعد اس کا مال آیات (۴:۱۱،۱۲) کے مطابق تقسیم ہوگا اس طرح کوئی بھی آیت نہ ناسخ ہے اور نہ منسوخ.

مثلاً زید کے چار لڑکے ہیں تین لڑکے بالغ ہو گئے پڑھ لکھ کر شادی ہو گئی اور کاروبار میں باپ نے خود کفیل کر دیا. مگر ایک لڑکا چھوٹا ہے اس کے لئے ابھی کچھ نہیں ہوا. ایسی حالت میں اگر زید کا انتقال ہوتا ہے تو اس کے مال کی تقسیم آیت (۴:۱۱،۱۲) کے مطابق کر دی جائے گی. یعنی ہر بھائی کو برابر برابر. مگر اس تقسیم سے چھوٹا لڑکا نقصان میں رہا. اس لئے چھوٹے لڑکے کو اس نقصان سے بچانے

अनुमान करे और छोटे पुत्र को हिसाब से एक उत्तराधिकार कर दे जिससे वह ज़ैद की मृत्यु के बाद हानि में न रहे यह है इस आयत का अर्थ जिसको नासमझी की दशा में निरस्त मान लिया गया है, परन्तु कुरआन में कोई आयत निरस्त नहीं है, सूरत निसा की आयत (4:11,12) जिनमें उत्तराधिकार के पूरा करने का आदेश है और अनिवार्य है फिर आयत 180 निरस्त कैसे है?

کے لئے ضروری ہوجاتا ہے کہ زید اندازہ کرے اور چھوٹے لڑکے کو حساب سے ایک وصیت کردے۔ جس سے وہ زید کے انتقال کے بعد نقصان میں نہ رہے یہ ہے اس آیت کا مطلب جس کو نہ سمجھی کی حالت میں منسوخ مان لیا گیا ہے۔ مگر قرآن میں کوئی آیت منسوخ نہیں ہے۔ سورت نساء کی آیت (۴:۱۱،۱۲) جن میں وصیت کے پورا کرنے کا حکم ہے اور ضروری ہے پھر آیت (۱۸۰) منسوخ کیسے ہے؟

फिर जिन्होंने उत्तराधिकार को सुना और बाद में उसको बदल डाला तो उसका पाप उन बदलने वालों पर होगा, ईश्वर सब कुछ सुनता और जानता है (181) {5:106}

پھر جنہوں نے وصیت سنی اور بعد میں اسے بدل ڈالا تو اس کا گناہ ان بدلنے والوں پر ہوگا اللہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے (۱۸۱) [۵:۱۰۶]

किन्तु जिसको यह शंका है कि उत्तराधिकार करने वाले ने अज्ञानता या जानकर हानि की है फिर विषय से सम्बन्ध रखने वालों के बीच वह सुधार करे तो उस पर कुछ पाप नहीं है ईश्वर क्षमा करने वाला और कृपा करने वाला है (182)

البتہ جس کو یہ اندیشہ ہو کہ وصیت کرنے والے نے نادانستہ یا قصداً حق تلفی کی ہے اور پھر معاملے سے تعلق رکھنے والوں کے درمیان وہ اصلاح کرے تو اس پر کچھ گناہ نہیں ہے اللہ بخشنے والا اور رحم فرمانے والا ہے (۱۸۲)

ऐ लोगो! जो विश्वास लाए हो तुम पर व्रत अनिवार्य कर दिए गए जिस भांति तुमसे पहले लोगों पर अनिवार्य किए गए थे कदाचित कि तुम्हारे अन्दर बुराईयों से बचने का गुण उत्पन्न हो जाए (183)

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو تم پر روزے فرض کردیے گئے جس طرح تم سے پہلے لوگوں پر فرض کئے گئے تھے شاید کہ تمہارے اندر برائیوں سے بچنے کی صفت پیدا ہوجائے (۱۸۳)

यह कुछ दिनों के व्रत (रोज़े) हैं यदि तुम में से कोई बीमार हो या यात्रा पर हो तो दूसरे दिनों में इतनी ही गिनती पूरी कर ले और जो रोज़ा रखने की शक्ति रखते हैं (फिर किसी विवशता के कारण व्रत न रखें) तो वह बदला दें एक व्रत का बदला एक निर्धन को भोजन कराना है और जो अपनी इच्छा से कुछ अधिक भलाई करे तो यह उसके लिए अच्छा है, परन्तु वह व्रत रखे तो अच्छा है यदि तुम जानो (184)

یہ چند مقرر دنوں کے روزے ہیں اگر تم میں سے کوئی بیمار ہو یا سفر پر ہو تو دوسرے دنوں میں اتنی ہی تعداد پوری کرے اور جو روزہ رکھنے کی طاقت رکھتے ہوں (پھر کسی مجبوری کے تحت روزہ نہ رکھیں) تو وہ فدیہ دیں ایک روزے کا فدیہ ایک مسکین کو کھانا کھلانا ہے اور جو اپنی خوشی سے کچھ زیادہ بھلائی کرے تو یہ اس کے لئے بہتر ہے۔ تاہم وہ روزے رکھے تو بہتر ہے اگر تم سمجھو (۱۸۴)

नोट- शक्ति रखते हुए व्रत न रखने का अर्थ यह है कि एक व्यक्ति स्वस्थ और शक्तिशाली है किन्तु उसका कार्य इतना कठोर है कि शरीर से पसीने के कारण पानी कम होता रहता है, यदि उस पानी की कमी को पूरा न किया गया तो व्यक्ति की मृत्यु होने या बीमार होने की शंका है, ऐसे में आदमी रोज़ा पूरा न कर पाएगा, यदि रोज़ा रखता है तो काम छोड़ता है दूसरा कोई जीविका का साधन नहीं तो स्पष्ट है उसको धन की कमी का सामना करना पड़ेगा,

नوٹ:۔ طاقت رکھتے ہوئے روزہ نہ رکھنے کا مطلب یہ ہے کہ ایک آدمی خوب تندرست اور طاقتور ہے مگر اس کا کام اتنا سخت ہے کہ جسم سے پسینے کے ذریعہ پانی کم ہوتا رہتا ہے اگر اس پانی کی کمی کو پورا نہ کیا گیا تو آدمی کے ختم ہونے یا بیمار ہونے کا اندیشہ ہے۔ ایسے میں آدمی روزہ پورا نہ کرپائے گا۔ اگر روزہ رکھتا ہے تو کام چھوڑتا ہے دوسرا کوئی ذریعہ معاش نہیں تو ظاہر ہے اس کو پیسے کی کمی کا سامنا کرنا پڑے گا۔

इन सब बातों को देखते हुए ही ईश्वर ने रोज़ा (व्रत) छोड़ने की अनुमति दी है, असमर्थता के अन्तर्गत यदि कोई व्यक्ति बहाना बनाकर रोज़ा छोड़ता है तो वह पापी है, अर्थ यह हुआ कि शक्तिशाली आदमी भी काम के कारण रोज़ा छोड़ सकता है यदि उसका कार्य निरन्तर रहता है इसके बाद भी ईश्वर ने कहा है कि यदि तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है,

ان سب باتوں کو دیکھتے ہوئے ہی اللہ نے روزہ چھوڑنے کی اجازت دی ہے مجبوری کے تحت۔ اگر کوئی آدمی بہانہ بنا کر روزہ چھوڑتا ہے تو وہ گناہگار ہے مطلب یہ ہوا کہ طاقتور آدمی بھی کام کی وجہ سے روزہ چھوڑ سکتا ہے۔ اگر اس کا وہ کام متواتر رہتا ہے۔ اس کے بعد بھی اللہ نے کہا ہے کہ اگر تم روزے رکھو تو یہ تمہارے لئے اچھا ہے۔

अतः व्रत विवशता के कारण ही छोड़ा जाएगा और बदला (प्रतिदान) दिया जाएगा, इससे दो लाभ हैं एक तो रोज़ा छोड़ने वाले को जीविका मिलेगी दूसरे एक निर्धन को भोजन मिलेगा,

اس لئے روزہ مجبوری کے تحت ہی چھوڑا جائے گا اور فدیہ دیا جائے گا۔ اس سے دو فائدے ہیں ایک تو روزہ چھوڑنے والے کو روزی ملے گی دوسرے ایک غریب کو کھانا ملے گا۔

कुछ ने इस आयत को निरस्त माना है, कुछ ने मंत्र का अर्थ ही बदल दिया है, अर्थात् यदि शक्ति न रखता हो जो मिथ्यासार किया है, अस्तु अभी हम ईश्वर के कुरआन को समझने से क्या असमर्थ हैं?

کچھ نے اس آیت کو منسوخ مانا ہے۔ کچھ نے آیت کا مطلب ہی بدل دیا ہے یعنی اگر طاقت نہ رکھتا ہو جو غلط تاویل کی ہے بہرحال ابھی ہم اللہ کے قرآن کو سمجھنے سے کیوں قاصر ہیں؟

रमज़ान वह माह है जिसमें कुरआन अवतरित किया गया (अर्थात् आरम्भ हुआ) जो इन्सानों के लिए सर्वथा आदेश और ऐसी स्पष्ट शिक्षा पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली है, जो सत्य और मिथ्या का अन्तर खोलकर रख देने वाली है, अतः अब जो व्यक्ति इस मास को पाए उस पर अनिवार्य है कि इस पूरे मास के व्रत रखे और जो कोई रोगी हो या यात्रा पर हो तो वह दूसरे दिनों में व्रतों की संख्या पूरी कर ले, ईश्वर तुम्हारे साथ नरमी करना चाहता है, कष्ट नहीं चाहता, अतः यह विधि तुम्हें बताई जा रही है ताकि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर सको और जिस शिक्षा से ईश्वर ने तुम्हें प्रतिष्ठित किया है उस पर ईश्वर की महिमा का प्रकटीकरण व स्वीकरण करो और आभारी बनो (185) {9:33, 44:3,4, 97:1,5}

رمضان وہ مہینہ ہے جس میں قرآن نازل کیا گیا (یعنی شروعات ہوئی) جو انسانوں کے لئے سراسر ہدایت ہے. اور ایسی واضح تعلیمات پر مشتمل ہے جو راہ راست دکھانے والی ہے. جو حق و باطل کا فرق کھول کر رکھ دینے والی ہے. لہٰذا اب سے جو شخص اس مہینے کو پائے اس کو لازم ہے کہ اس پورے مہینے کے روزے رکھے. اور جو کوئی مریض ہو یا سفر پر ہو تو وہ دوسرے دنوں میں روزوں کی تعداد پوری کرے. اللہ تمہارے ساتھ نرمی چاہتا ہے اور سختی نہیں چاہتا اس لئے یہ طریقہ تمہیں بتایا جا رہا ہے تا کہ تم روزوں کی تعداد پوری کر سکو. اور جس ہدایت سے اللہ نے تمہیں سرفراز کیا ہے اس پر اللہ کی کبریائی کا اظہار و اعتراف کرو اور فرمانبردار بنو (۱۸۵) [۹:۳۳، ۴۴:۳،۴، ۹۷:۱،۵]

और ऐ ईशदूत जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे सम्बन्ध में ज्ञात करेंगे तो उन्हें बता देना कि मैं उनसे निकट हूं, पुकारने वाला जब मुझे पुकारेगा मैं उसकी पुकार सुनूंगा और उत्तर दूंगा, अतः उन्हें चाहिए कि मेरे आह्वान पर उपस्थित हूं कहें और मुझ पर आस्था लाएं (यह बात तुम उन्हें बता दो) कदाचित कि वह सीधा मार्ग पा लें (186) {7:56, 8:24, 32:15,16}

اور اے نبی جب میرے بندے تم سے میرے متعلق پوچھیں تو انہیں بتا دینا کہ میں ان سے قریب ہوں. پکارنے والا جب مجھے پکارے گا میں اس کی پکار سنونگا اور جواب دوں گا. لہٰذا انہیں چاہیئے کہ میری دعوت پر لبیک کہیں اور مجھ پر ایمان لائیں (یہ بات تم انہیں سنا دو) شاید کہ وہ راہ راست پالیں (۱۸۶) [۷:۵۶، ۸:۲۴، ۳۲:۱۵،۱۶]

(ऐ आस्तिको! तुम्हारे लिए रोज़ों की रात्रि में अपनी स्त्रियों से सहभोग होना वैध कर दिया है, तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारे लिए आवरण हैं और तुम उनके लिए आवरण हो, यह बात ईश्वर को ज्ञात है कि तुम लोग अपनी जानों पर अत्याचार करोगे, पस ईश्वर अपनी अनुकम्पा के साथ तुम पर आकृष्ट हुआ और तुमको क्षमा किया, अब तुम अपनी स्त्रियों के साथ सहभोग करो और जो आनन्द ईश्वर ने तुम्हारे लिए वैध कर दिया है उसे प्राप्त करो, और रात्रि में खाओ पियो यहां तक के तुमको रात्रि की काली धारी से प्रभात की सफेद धारी स्पष्ट दिखाई देने लगे, फिर व्रत पूरा करो रात्रि तक और जब तुम मस्जिदों में ऐतकाफ में हो (रुके हो अपेक्षित कार्य से) तो पत्नीयों से संभोग न करो यह ईश्वर की बांधी हुई सीमाऐं हैं इनके निकट न जाओ इस प्रकार ईश्वर अपने आदेश लोगों के लिए विवरण से वर्णन करता है, आशा है कि वह अनुचित गतिविधि से बचेंगे (187)

(اے اہل ایمان) تمہارے لئے روزوں کی رات کو اپنی عورتوں سے ہم بستر ہونا حلال کر دیا ہے تمہاری عورتیں تمہارے لئے لباس ہیں اور تم ان کے لئے لباس ہو یہ بات اللہ کو معلوم ہے کہ تم لوگ اپنے نفوس کی حق تلفی کرو گے. پس اللہ اپنی رحمت کے ساتھ تم پر متوجہ ہوا اور تم سے درگزر فرمائی. اب تم اپنی بیویوں کے ساتھ شب باشی کرو. اور جو لطف اللہ نے تمہارے لئے جائز کر دیا ہے اسے حاصل کرو. نیز راتوں کو کھاؤ پیو. یہاں تک کہ تم کو سیاہی شب کی دھاری سے صبح کی سفید دھاری نمایاں نظر آ جائے. پھر روزہ پورا کرو رات تک اور جب تم مسجدوں میں اعتکاف میں ہو (رُکے ہو ضروری کام سے) تو بیویوں سے مباشرت نہ کرو یہ اللہ کی باندھی ہوئی حدیں ہیں. ان کے قریب نہ پھٹکنا. اس طرح اللہ اپنے احکام لوگوں کے لئے بصراحت بیان کرتا ہے امید ہے کہ وہ غلط روی سے بچیں گے (۱۸۷)

और तुम आपस में एक दूसरे का माल अनुचित ढंग (घूस, मिलावट, धोका, छल) के साथ न खाओ और न अधिकारियो को (घूस) माल दिया करो ताकि तुम उनकी सहायता से पाप के साथ लोगों की सम्पत्ति खा जाओ यद्यपि तुम जानते हो (यदि अनुचित ढंग से तुम्हारा माल खाया जाए तो तुम सहन न करोगे) (188) {4:29,31, 5:42}

اور تم آپس میں ایک دوسرے کا مال باطل طریقوں (رشوت ملاوٹ دھوکا فریب) کے ساتھ نہ کھاؤ اور نہ حکام کو (رشوت) مال دیا کرو تا کہ تم ان کی مدد سے گناہ کے ساتھ لوگوں کا مال کھا جاؤ۔ حالانکہ تم جانتے ہو (اگر باطل طریقے سے تمہارا مال کھایا جائے تو تم برداشت نہ کرو گے) (۱۸۸) [۴:۲۹،۳۱، ۵:۴۲]

ऐ नबी वह तुम से नये चान्द के घटने बढ़ने के बारे में ज्ञात करेंगे, कह देना कि इससे व्यक्ति को समय और तिथि का लेखा ज्ञात होता है और हज का काल ज्ञात होने का साधन है, और सत्कर्म यह नहीं है कि तुम घरों में उनकी पृष्ठ से आओ, वास्तव में सत्कर्म उस व्यक्ति का है जो ईश्वर की अवज्ञा से बचे (अर्थात् अनुचित और बेतुके कार्यों से बचे) और घरों में उनके द्वारों से आओ (अर्थात् ईश्वर के नियम के अनुसार कार्य करो) और ईश्वर की अवज्ञा से बचो ताकि तुम सफल हो जाओ। (189)

اے نبی وہ تم سے نئے چاند کے گھٹنے بڑھنے کے بارے میں معلوم کریں گے کہہ دینا کہ اس سے انسان کو وقت اور تاریخ کا حساب معلوم ہوتا ہے اور حج کے اوقات معلوم ہونے کا ذریعہ ہے۔ اور نیکی یہ نہیں ہے کہ تم گھروں میں ان کی پشت سے آؤ حقیقت میں نیکی اس شخص کی ہے جو اللہ کی نافرمانی سے بچے (یعنی بے ڈھنگے اور بے تکے کاموں سے بچے) اور گھروں میں ان کے دروازوں سے آؤ (یعنی ضابطۂ الٰہی کے مطابق کام کرو) اور اللہ کی نافرمانی سے بچو تا کہ تم فلاح پاؤ (۱۸۹)

जो लोग तुम से लड़ते हैं तुम उनसे लड़ो (बचाओ के लिए) ईश्वर के मार्ग में और तुम अत्याचार व अन्याय न करना निःसन्देह ईश्वर अत्याचार करने वालों को स्वीकार नहीं करता (190) {2:217, 9:36}

جو لوگ تم سے لڑتے ہیں تم ان سے لڑو (بچاؤ کے لئے) اللہ کی راہ میں اور تم ظلم و زیادتی نہ کرنا۔ بلاشبہ اللہ زیادتی کرنے والوں کو پسند نہیں کرتا (۱۹۰) [۲:۲۱۷، ۹:۳۶]

(चूंकि शत्रुओं ने तुम्हें युद्ध करने पर विवश कर दिया है अतः) जहां कहीं उन से सामना हो जाए उन्हें वध करो और जहां से उन्होंने ने तुम्हें निकाला है तुम भी उन्हें वहां से निकाल दो (उन्होंने तुम्हें मक्काह से निकाला है अतः उत्तर में तुम भी उन्हें मक्काह से निकाल बाहर करो) इस में कोई शंका नहीं कि वध रक्तपात कोई अच्छी बात नहीं है किन्तु देश में अशान्ती व विकार का स्थापित रहना वध से भी अधिक प्रचण्ड है (अतः अशान्ती उपद्रव को दबाने के लिए और शान्ति को स्थापित करने के लिए युद्ध अनिवार्य है) किन्तु वर्जित सीमा के अन्दर उनसे युद्ध न करो, हां यदि सीमा के अन्दर तुम से वह लड़ें तो तुम भी उनसे लड़ो, सत्य के विरोधियों का (आक्रमण करने का) यही दण्ड है (191) {2:145,61}

(چونکہ دشمنوں نے تم پر جنگ مسلط کر دی ہے اس لئے) جہاں کہیں ان سے مقابلہ ہو جائے انہیں قتل کرو اور جہاں سے انہوں نے تمہیں نکالا ہے تم بھی انہیں وہاں سے نکال دو (انہوں نے تمہیں مکہ سے نکالا ہے اس لئے جوابی کارروائی میں تم بھی انہیں مکہ سے نکال باہر کرو) اس میں کوئی شک نہیں کہ قتل و خونریزی کوئی اچھی بات نہیں ہے لیکن ملک میں فتنہ و فساد اور بدامنی کا قائم رہنا قتل سے بھی زیادہ سخت ہے (لہٰذا فتنوں کو دبانے کے لئے اور امن کو قائم کرنے کے لئے لڑنا ضروری ہے) لیکن حدودِ حرم کے اندر ان سے نہ لڑو۔ ہاں اگر حدود میں تم سے وہ لڑیں تو تم بھی ان سے لڑو۔ منکر حق کی (جارحانہ کارروائیوں کی) یہی سزا ہے (۱۹۱) [۲:۱۴۵، ۶۱]

फिर यदि वह रुक जाऐं तो जान लो कि ईश्वर क्षमा करने वाला और दयालु है (192)

پھر اگر وہ باز آجائیں تو جان لو کہ اللہ معاف کرنے والا اور رحم فرمانے والا ہے (۱۹۲)

उनसे उस समय तक युद्ध करते रहो कि (उनकी शक्ति समाप्त हो जाए) भविष्य के लिए युद्ध की आशंका शेष न रहे और धर्म निर्मल ईश्वर के लिए हो जाए (अर्थात् धर्म के सम्बन्ध में कोई किसी पर दमन या बलात न कर सके -2:256) फिर यदि वह धर्म में झगड़ने से रुक जाऐं तो फिर तुम्हें अत्याचारियों के सिवा किसी से युद्ध की अनुमति नहीं (193)

ان سے اس وقت تک لڑتے رہو کہ (ان کی طاقت ختم ہو جائے) آئندہ کے لئے جنگ کا خطرہ باقی نہ رہے اور دین خالص اللہ کے لئے ہو جائے (یعنی دین کے معاملے میں کوئی کسی پر جبر و اکراہ نہ کر سکے۔ ۲:۲۵۶) پھر اگر وہ دین میں جھگڑنے سے باز آجائیں تو پھر تمہیں ظالموں کے سوا کسی سے جنگ کی اجازت نہیں (۱۹۳)

प्रतिष्ठ के मास का सम्मान उसी समय तक है जब तक प्रतिवादी भी उसका सम्मान करे (यदि उन महीनों में वह लोग आक्रमण करे तो तुम्हें रक्षा करनी ही पड़ेगी) महीनों की प्रतिष्ठ का सम्बन्ध एक दूसरे का अदला बदला है (जो गतिविधि एक पक्ष की होगी दूसरा भी वही गतिविधि अपनाएगा, अतः जो भी (इन महीनों में) तुम पर अत्याचार करे तो तुम भी उसके अत्याचार का उसी प्रकार सामना करो, किन्तु ईश्वर से डरते रहो (तुम्हारी ओर से किसी प्रकार का अत्याचार न हो) और याद रखो ईश्वर उन्हीं लोगों का साथ देता है जो (हर प्रकार के) अत्याचार से दूर रहते हैं) (194)

حرمت کے مہینے کا احترام اس وقت تک ہے جب تک فریق ثانی بھی اس کا احترام کرے (اگر ان مہینوں میں وہ لوگ حملہ کریں تو تمہیں مدافعت کرنی ہی پڑے گی) مہینوں کی حرمت کا معاملہ ایک دوسرے کا ادلا بدلا ہے (جو روش ایک فریق کی ہوگی دوسرا بھی وہی روش اختیار کرے گا) پس جو بھی (ان مہینوں میں) تم پر زیادتی کرے تو تم بھی اس کی زیادتی کا اس طرح مقابلہ کرو۔ لیکن اللہ سے ڈرتے رہو (تمہاری طرف سے کسی طرح کی زیادتی نہ ہو) اور یاد رکھو اللہ انہیں لوگوں کا ساتھ دیتا ہے جو (ہر طرح کی) زیادتی سے دور رہتے ہیں (۱۹۴)

ईश्वर के मार्ग में (युद्ध की आवश्यकताओं के लिए अधिक से अधिक) धन व्यय करते रहो और जंगी तैयारी और व्यय में कार्य करके अपने हाथों (अर्थात् अपनी संस्था और शक्ति को विनाश में न डाल देना (और इस कमी को पूरा करते रहो निःसन्देह ईश्वर कमियां पूरी करने वालों को पसन्द करता है) और सत्कर्म करने वालों को पसन्द करता है (195) {8:60}

اللہ کی راہ میں (جنگی ضروریات کے لئے زیادہ سے زیادہ)مال خرچ کرتے رہواور جنگی تیاری اور خرچے میں کمی کرکے اپنے ہاتھوں (یعنی اپنی جماعت طاقت کو) کو ہلاکت میں نہ ڈال دینا(اوراس کمی کو پورا کرتے رہو بلاشبہ اللہ کمیاں پوری کرنے والوں کو پسند کرتا ہے)ورنیکی کرواللہ نیکی کرنےوالوں کو پسند کرتا ہے(۱۹۵)[۸:۶۰]

ईश्वर की प्रसन्नता के लिए जब तुम हज और उमरे का संकल्प करो तो उसे पूरा करो, और यदि कहीं घिर जाओ तो जो आहुति प्राप्त हो जब तक वह आहुति अपने स्थान पर न पहुंच जाए अपने सर न मूंड़ो, किन्तु जो व्यक्ति रोगी हो या जिसके सिर में कोई पीड़ा हो और इस आधार पर सिर मुंडवाले तो उसे चाहिए कि बदले के लिए व्रत रखे या दान दे या आहुति दे, फिर यदि तुम्हें अमन हो जाए तो जो व्यक्ति एक ही यात्रा में उमराह और हज तक दोनों का लाभ प्राप्त करना चाहे तो यथा स्थिति आहुति दे और आहुति प्राप्त न हो तो तीन व्रत हज के समय में और सात व्रत घर पहुंचकर रखे, इस प्रकार पूरे दस व्रत रख ले, यह आसानी उन लोगों के लिए है जिसका घर मर्यादा वाली मस्जिद के पास न हो, ईश्वर के आदेशों की अवहेलना से बचो और अच्छी प्रकार जान लो कि ईश्वर कठोर दण्ड देने वाला है (196)

اللہ کی رضا کے لئے جب تم حج اور عمرے کا ارادہ کرو تو اسے پورا کرواور اگر کہیں گھر جاؤ تو جو قربانی میسر آئے جب تک وہ قربانی اپنی جگہ پر نہ پہنچ جائے اپنے سر نہ منوڈو.مگر جو شخص مریض ہو یا جس کے سر میں کوئی تکلیف ہو اور اس بنا پر منڈوالے تو اسے چاہیے کہ فدیہ کے طور پر روزے رکھے یا صدقہ دے یا قربانی کرے.پھر اگر تمہیں امن ہو جائے تو جو شخص ایک ہی سفر میں عمرہ اور حج تک دونوں کا ثواب حاصل کرنا چاہے تو حسب مقدرو قربانی دے.اور قربانی نہ ملے تو تین روزے حج کے زمانے میں اور سات روزے گھر پہنچ کرر کھے.اس طرح پورے دس روزے رکھ لے.یہ رعایت ان لوگوں کے لئے ہے جن کا گھر مسجد حرام کے قریب نہ ہو.اللہ کے ان احکام کی خلاف ورزی سے بچو اور خوب جان لو کہ اللہ سخت سزا دینے والا ہے(۱۹۶)

हज के महिने सब को ज्ञात है जो व्यक्ति इन निर्धारित महिनो में हज का संकल्प करे उसे सचेत रहना चाहिए कि हज के चक्र में उस से कोई कुकर्म बुरा चरित्र कोई लड़ाई झगड़े की बात न हो, और जो सत्कर्म तुम करोगे वह ईश्वर के ज्ञान में होगा, हज की यात्रा के लिए मार्ग कब साथ ले जाओं, और जो सबसे उत्तम मार्ग व्यम है वह ईश्वर की अवज्ञा से बचना है (अर्थात यह मार्ग व्यम बुरे कर्मो से बचा देगा) अतः ऐ चेतना शीलो! मेरी अवज्ञा से बचो (197) 22:28

حج کے مہینے سب کو معلوم ہیں جو شخص ان مقرر مہینوں میں حج کی نیت کرے اسے خبر دار رہنا چاہیے کہ حج کے دوران میں اس سے کوئی بُرا فعل کوئی بدعملی کوئی لڑائی جھگڑے کی بات نہ ہو اور جو نیک کام تم کروگے وہ اللہ کے علم میں ہوگا. سفر حج کے لئے زاد راہ ساتھ لے جاؤ اور جو سب سے بہتر زاد راہ ہے وہ اللہ کی نافرمانی سے بچنا ہے(یعنی یہ زاد راہ برائیوں سے بچادےگا)پس اے ہوشمندو!میری نافرمانی سے بچو(۱۹۷)[۲۲:۲۸]

और तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम ईश्वर का कृपा दया खोजो, फिर जब तुम सम्मेलन अराफात से लोटो तो मश-अरल हराम के स्थान पर भी ईश्वर के नियम को भलीभांति याद रखना और (ईश्वर को और उस के नियम को इस प्रकार याद रखो जिस प्रकार उस ने तुम्हें (कुरआन में) आदेश दिया है) और निःसंदेह तुम कुरआन के प्रेषण से पहले हज की वास्तविक्ता से अनजान थे (198)

اورتم پر کوئی گناہ نہیں کہ تم اللہ کا فضل تلاش کرو.پھر جب تم اجتماع عرفات سے لوٹو تو مشعر الحرام کے مقام پر بھی اللہ کے قانون کو اچھی طرح یاد رکھنا اور اللہ کو اور اس کے قانون کو اس طرح یاد رکھو جس طرح اس نے تمہیں (قرآن میں)ہدایت دی ہے.اور بلاشبہ تم نزول قرآن سے پہلے حقیقت حج سے بےخبر تھے(۱۹۸)

फिर जहां से और सब लोग वापस होते है वहीं से तुम भी पलटो और ईश्वर से क्षमा चाहो, निःसंदेह वह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है (199)

پھر جہاں سے اور سب لوگ واپس ہوتے ہیں وہیں سے تم بھی پلٹو اور اللہ سے معافی چاہو.یقیناً وہ معاف کرنے والا اوررحم فرمانےوالا ہے(۱۹۹)

फिर जब अपने हज के स्तंभ चुकता कर चुको जो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजो जो जैसे का स्मरण करते थे उस प्रकार अब ईश्वर का स्मरण करो, अपितु उस से भी बढ़कर (अर्थात प्रशंसो) के योग्य

پھر جب اپنے حج کے ارکان ادا کر چکو تو جس طرح پہلے اپنے آباؤ وجداد کا جس طرح ذکر کرتے تھے اُس طرح اب اللہ کا ذکر کرو.بلکہ اس سے بھی بڑھ کر (یعنی تعریف کے لائق

केवल ईश्वर है और ईश्वर का तुलना में जो कहा जाता कि हम ने अपने पूर्वजो को जिस पर पाया है हम उसी मार्ग पर व्यवहार करेंगे, परन्तु यह सोच अनुचित है अब केवल और केवल ईश्वर का विधान चलेगा पितृ भक्ति नही चलेगी, और जो ईश्वर की पूजा के अतिरिक्त पित्र पूजा करेगा वह हानि में रहेगा इस उपदेश के बाद लोग अनुचित मार्ग पर चलते है, जैसे सब लोग यह याद रखते है कि मेरा पिता कौन है और वह एक ही है, और एक ही होना चाहिए तो जैसे लोग अपने पिता के विषय में किसी दूसरे को साथी नही कर सकते ऐसे ही ईश्वर एक है उस के साथ किसी और को पूजा में विधान बनाने में विचार व भेंट में प्रशंसा में सम्मिलित न करो उन में से कोई तो ऐसा है जो कहता है कि ऐ हमारे रब हमें दुनिया ही में सब कुछ दे दे ऐसे व्यक्ति के लिए प्रलोक में कोई भाग नही, (200) {7:18,21}

صرف اللہ ہے اور اللہ کے قانون کے مقابلہ میں جو کہا جاتا ہے کہ ہم نے اپنے باپ دادا کو جس طریقے پر پایا ہے ہم اس طریقہ پر ہی عمل کریں گے. مگر یہ سوچ غلط ہے اب صرف اور صرف اللہ کا قانون چلے گا آباء پرستی نہیں چلے گی. اور جو اللہ کی عبادت کے بجائے آباء پرستی کرے گا وہ نقصان میں رہے گا. باوجود اس نصیحت کے لوگ غلط راستے پر چلتے ہیں. جیسے سب لوگ یہ یاد رکھتے ہیں کہ میرا باپ کون ہے اور وہ ایک ہی ہے. اور ایک ہی ہونا چاہیے. تو جیسے لوگ اپنے باپ کے معاملہ میں کسی دوسرے کو شریک نہیں کرسکتے. (ایسے ہی اللہ ایک ہے. اس کے ساتھ کسی اور کو عبادت میں قانون سازی میں نظر و نیاز میں تعریف میں شریک نہ کرو) ان میں سے کوئی تو ایسا ہے جو کہتا ہے کہ اے ہمارے رب ہمیں دنیا ہی میں سب کچھ دے دے. ایسے شخص کے لئے آخرت میں کوئی حصہ نہیں. (۲۰۰) [۱۷:۱۸،۲۱]

और कोई कहता है कि ऐ हमारे रब हमें दुनिया में भी भलाई दे और प्रलोक में भी भलाई दे और अग्नि के कष्ट से हमें बचा, (201)

اور کوئی کہتا ہے کہ اے ہمارے رب ہمیں دنیا میں بھی بھلائی دے اور آخرت میں بھی بھلائی دے اور آگ کے عذاب سے ہمیں بچا (۲۰۱)

ऐसे लोग अपनी कमाई के अनुसार भाग पायेंगे और ईश्वर को हिसाब चुकाते कुछ देर नहीं लगती, (202)

ایسے لوگ اپنی کمائی کے مطابق حصہ پائیں گے اور اللہ کو حساب چکاتے کچھ دیر نہیں لگتی (۲۰۲)

यह गिनती के कुछ दिन है, जो तुम्हें ईश्वर की याद में व्यतीत करने है फिर जो कोई जलदी करके दो ही दिन में वापस हो गया तो कोई क्षति नही और जो अधिक ठेहरा तो भी कोई क्षति नही प्रतिबन्धा यह है कि उसने यह दिन संयम के साथ व्यतीत किये हो ईश्वर की अवज्ञा से बचो और जान लो कि एक दिन उस के समक्ष तुम्हारी उपस्थिति होगी (303)

یہ گنتی کے چند روز ہیں جو تمہیں اللہ کی یاد میں بسر کرنے ہیں. پھر جو کوئی جلدی کر کے دو ہی دن میں واپس ہو گیا تو کوئی ہرج نہیں اور جو زیادہ ٹھہرا تو بھی کوئی حرج نہیں بشرطیکہ یہ دن اس نے تقوی کے ساتھ بسر کئے ہوں اللہ کی نافرمانی سے بچو اور جان لو کہ ایک دن اس کے حضور میں تمہاری پیشی ہوگی (۲۰۳)

(उन्ही) इन्सानों में कोई तो ऐसा है जिस की बातें दुनिया के जीवन में तुम्हें बहुत भली ज्ञात होती है, और अपनी शीलवान इच्छा पर बार बार ईश्वर को साक्षी बनाता है, परन्तु वास्तव में वह निकृष्टम सत्य का शत्रु होता है (204)

(انہیں) انسانوں میں کوئی تو ایسا ہے جس کی باتیں دنیا کی زندگی میں تمہیں بہت بھلی معلوم ہوتی ہیں اور اپنی نیک نیتی پر وہ بار بار اللہ کو گواہ بناتا ہے. مگر حقیقت میں وہ بدترین دشمن حق ہوتا ہے (۲۰۴)

और जब हज से वापस आने पर उसको सत्ता मिलेगी (तो उसके परदे में) उसकी सारी दौड़ धूप इसलिए होती है कि पृथ्वी में फ़िसाद फैलाए खेतियों को नष्ट करे और मानुषिक वंश को नष्ट करे, यद्यपि ईश्वर जिसे वह साक्षी बनाता है अशान्ति को कदापि स्वीकार नही करता (205) {2:144}

اور جب وہ حج سے واپس آنے پر وہ اقتدار پر فائز ہوگا (تو اس کے پردے میں) اس کی ساری دوڑ دھوپ اس لئے ہوتی ہے کہ زمین میں فساد پھیلائے کھیتوں کو غارت کرے اور نسل انسانی کو تباہ کرے حالانکہ اللہ (جسے وہ گواہ بناتا ہے) فساد کو ہرگز پسند نہیں کرتا (۲۰۵) [۲:۱۴۴]

और जब उससे कहा जाता है कि ईश्वर से डर तो अपनी प्रतिष्ठा की भावना उसको पाप पर जमा देती है, ऐसे व्यक्ति के लिए तो बस नर्क ही काफ़ी है और वह बहुत बुरा स्थान है (206)

اور جب اس سے کہا جاتا ہے کہ اللہ سے ڈر تو اپنے وقار کا خیال اس کو گناہ پر جما دیتا ہے ایسے شخص کے لئے تو بس جہنم ہی کافی ہے اور وہ بہت برا ٹھکانہ ہے (۲۰۶)

दूसरी ओर इन्सानों में कोई ऐसा भी है जो ईश्वर की प्रसन्नता की प्राप्ति में अपनी जान बेच देता है और ईश्वर ऐसे बन्दों पर कृपालु है (207)

دوسری طرف انسانوں میں کوئی ایسا بھی ہے جو رضائے الٰہی کی طلب میں اپنی جان بیچ دیتا ہے اور اللہ ایسے بندوں پر مہربان ہے (۲۰۷)

ऐ धर्म वालो! तुम पूरे के पूरे इस्लाम (अर्थात् शान्ति जिस बात के पालन करने को मुहम्मद बताए चाहे वह धर्म हो या संसार उसको भलिभांति स्वीकार कर लो, काम पूजा न करो यही शान्ति का धर्म है)

اے ایمان والو! تم پورے کے پورے اسلام (یعنی سلامتی جس بات کی پیروی کرنے کو محمدؐ بتائیں چاہے وہ دین ہو یا دنیا اس کو پوری طرح مان لو نفس پرستی نہ کرو یہی دین اسلام

में आ जाओ और शैतान का अनुकरण न करो वह तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है (208)

ہے) میں آجاؤ اور شیطان کی پیروی نہ کرو وہ تمارا کھلا دشمن ہے (۲۰۸)

फिर यदि इसके बाद कि तुम्हारे पास स्पष्ट तर्क आ चुके हैं फिसल जाओ तो (हमारे नियम की पकड़ से बच नही सकते) जाने रहो कि निःसन्देह ईश्वर अधिपति युक्ति वाला है (उसके नियम अधिकार प्राप्त और युक्ति के आधार पर स्थापित हैं) (209)

پھر اگر اس کے بعد کہ تمہارے پاس واضح دلائل آچکے ہیں پھسل جاؤ تو (ہمارے قانون کی گرفت سے بچ نہیں سکتے) جانے رہو کہ بلاشبہ اللہ غالب حکمت والا ہے (اس کے قوانین غلبہ اور حکمت کی بنیاد پر قائم ہیں) (۲۰۹)

क्या वह लोग विश्वास लाने के लिए इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि ईश्वर का कष्ट बादलों की छाया में फरिश्तों के द्वारा उनके पास आ जाए और क्रम समाप्त हो जाए अर्थात् प्रसंग तो निर्धारित है यद्यपि समस्त कार्य ईश्वर ही की ओर लौट कर जाते हैं। (अर्थात् हर कार्य में उसके नियम की ओर आकृष्ट होना चाहिए) (210)

کیا وہ لوگ ایمان لانے کے لئے اس چیز کا انتظار کر رہے ہیں کہ اللہ کا عذاب بادلوں کے سائے میں فرشتوں کے ذریعہ ان کے پاس آجائے اور سلسلہ ختم ہو جائے یعنی معاملہ تو طے ہے. حالانکہ جملہ امور اللہ ہی کی طرف لوٹ کر جاتے ہیں (یعنی ہر کام میں اس کے قانون کی طرف رجوع کرنا چاہیے) (۲۱۰)

नोट- वकुजियल अमर का अर्थ यह भी है कि प्रसंग तो निर्धारित है कि जब फरिश्ते पृथ्वी पर आऐंगे तो महा प्रलय होगी, अतः उसने अपने कामों को पूर्ण करने के लिए जो नियम निर्धारित कर रखा हे हर कार्य उन्ही नियमों के अनुसार अंत होता है, ईश्वर लोगों की इच्छा के लिए अपने नियम नही बदलता, पहले से यह प्रसिद्ध कर रखा है कि ईश्वर बादलों में अवतरित हुआ और उसके साथ फरिश्ते भी थे, अतः लोगों की मांग हुई कि अब भी ऐसा हो तो हम विश्वास लाऐं उनके इस कथन का ईश्वर ने खण्डन किया है कि ऐसा नही होता कि ईश्वर अवतरित हो, उसकी यातना अवतरित होती है, और जब फरिश्ते पृथ्वी पर आऐंगे तो वह महा प्रलय होगी (43:61)

نوٹ:۔ [وَقُضِیَ الْاَمْرُ] کا مطلب یہ بھی ہے کہ معاملہ تو طے ہے کہ جب فرشتے زمین پر آئیں گے تو قیامت ہوگی. اس لئے اس نے اپنے کاموں کی تکمیل کے لئے جو ضابطہ مقرر کر رکھا ہے ہر کام انہی قانون کے مطابق انجام پذیر ہوتا ہے. اللہ لوگوں کی مرضی کے لئے اپنے قانون نہیں بدلتا. پہلے سے یہ مشہور کر رکھا ہے کہ اللہ بادلوں میں نازل ہوا اور اس کے ساتھ فرشتے بھی تھے. اس لئے لوگوں کا مطالبہ ہوا کہ اللہ نازل ہو مگر اس کا عذاب نازل ہوتا ہے اور جب فرشتے زمین پر آئیں گے تو وہ قیامت ہوگی (۶۱:۴۳)

(ऐ मुहम्मद स0) बनी इसराईल से ज्ञात कर लो कैसे स्पष्ट प्रतीक हमने उन्हें दिए हैं (और फिर यह भी उन्ही से ज्ञात कर लो) ईश्वर की कृपा पाने के बाद जो जाति उसको बदलती है उसे ईश्वर कैसी कठोर यातना देता है (211) {14:28}

(اے محمدؐ) بنی اسرائیل سے معلوم کرلو کیسی کھلی کھلی نشانیاں ہم نے انہیں دیں (اور پھر یہ بھی انہیں سے معلوم کرلو) اللہ کی نعمت پانے کے بعد جو قوم اس کو بدلتی ہے اسے اللہ کیسی سخت سزا دیتا ہے (۲۱۱) [۲۸:۱۴]

सत्य के विरोधी की दृष्टि में तो संसार की शोभा और सज्जा ही सब कुछ है और वह आस्तिकों की हंसी करते है यद्यपि जो लोग सदाचारी और संयमी हैं वह महा प्रलय के दिन उन (हंसी करने वालों से) ऊंचे स्थान पर होंगे, और ईश्वर उसको बेहिसाब जीविका देता है जो उसके ईश्वरीय संकल्प के अनुसार प्राप्त करता है (212)

منکرین حق کی نظر میں تو دنیا کی زینت اور آرائش ہی سب کچھ ہے اور وہ ایمان والوں کا مذاق اڑاتے ہیں حالانکہ جو لوگ متقی اور پرہیزگار ہیں وہ قیامت کے روز ان (مذاق اڑانے والوں) سے اونچے مقام پر ہوں گے اور اللہ اس کو بے شمار رزق دیتا ہے جو اس کے قوانین مشیت کے مطابق حاصل کرتا ہے (۲۱۲)

आरम्भ में सब लोग एक ही मार्ग पर थे (फिर यह दशा शेष न रही और मतभेद प्रकट हुए) तब ईश्वर ने ईशदूत भेजे जो सत्यनिष्ठ पर मंगल सूचना देने वाले और कुटिल गामी के परिणाम से डराने वाले थे और उनके साथ सत्य पुस्तक अवतरित की गई ताकि सत्य के विषय में लोगों के मध्य जो मतभेद प्रकट हो गए थे उनका निर्णय करें (ईशदूत और पुस्तक का कार्य मतभेद को समाप्त करना है न कि मतभेद को उचित बता कर स्थापित रखना जैसे हमारे यहां लिखा मिलता है कि ईशदूत के समय में मतभेद थे, अतः मतभेद जाति अनुकम्पा है, परन्तु यह आस्था मिथ्या है, जाति में मतभेद कष्ट है) मतभेद उन लोगों ने किया जिन्हें सत्य का ज्ञान दिया जा चुका था, उन्होंने उज्ज्वल आदेश शिक्षा पाने के बाद इसलिए सत्य को छोड़कर

ابتداء میں سب لوگ ایک ہی طریقے پر تھے (پھر یہ حالت باقی نہ رہی اور اختلافات رونما ہوئے) تب اللہ نے نبی بھیجے جو راست روی پر بشارت دینے والے اور کجروی کے نتائج سے ڈرانے والے تھے اور ان کے ساتھ کتاب برحق نازل کی گئی تاکہ حق کے بارے میں لوگوں کے درمیان جو اختلافات رونما ہو گئے تھے ان کا فیصلہ کرے (نبی اور کتاب کا کام اختلافات کو ختم کرنا ہے نہ کہ اختلافات کو درست بتا کر قائم رکھنا. جیسے ہمارے یہاں لکھا ملتا ہے کہ نبی کے زمانے میں اختلافات تھے اس لئے اختلافات امت رحمت ہے مگر یہ عقیدہ غلط ہے اختلافات (امت زحمت ہے) اختلافات ان لوگوں نے کیا جنہیں حق کا علم دیا جا چکا تھا. انہوں نے روشن ہدایات پانے کے بعد اس لئے حق کو چھوڑ کر مختلف طریقے نکالے

अनेक मार्ग निकाले कि वह आपस में अत्याचार करना चाहते थे, अतः जो ईशदूतों पर विश्वास ले आए उन्हें ईश्वर ने अपने इज़न (विधान) से सत्य का मार्ग दिखा दिया जिस सत्य में लोगों ने मतभेद किया था, ईश्वर सत्य मार्ग दर्शन देता है उसको जो स्वयं चाहता है (213)

کہ وہ آپس میں زیادتی کرنا چاہتے تھے پس جو لوگ انبیاء پر ایمان لے آئے انہیں اللہ نے اپنے اذن (قانون) سے حق کا راستہ دکھا دیا جس حق میں لوگوں نے اختلاف کیا تھا۔ اللہ راہ راست دکھا دیتا ہے اس کو جو خود چاہتا ہے (۲۱۳)

फिर क्या तुम लोगो ने यह समझ रखा है कि यूंही स्वर्ग का प्रवेश तुम्हें मिल जाएगा, यद्यपि अभि तुम पर वह सब कुछ नही पड़ा है जो तुम से पहले हो चुका है उन्हें युद्ध और कष्ट पहुँचे और अधिक झटकाए गए (इस लिए व्याकूल किया गया कि आस्तिक डगमगा जांए और धर्म को छोड़ दें और पुकार उठें कि ईश्वर की सहायता कहां है? परन्तु ऐसा न हुआ और धैर्य के साथ उन कष्टोका सामना करते रहे, ऐसा ही तुम्हारे साथ होगा) नास्तिको का आरादा था के ईशदूत के साथी जो आस्तिक है पुकार उठें कि ईश्वर की सहायता कब आएगी, परन्तु सावधान धैर्य और साहस से काम लो ईशदूत के द्वारा तुम ने सुन लिया कि धैर्य करने वालो के लिए ईश्वर की सहायता निकट है और अवश्य आएगी (धर्म वाले ईश्वर की सहायता से कभी हताश नही होते अतः वह सहायता की आशा पर ही कठिन कार्य करते है जिस से धर्म को शक्ति प्राप्त हो.) (214) {3:146-147 33:11से15 21से25}

پھر کیا تم لوگوں نے یہ سمجھ رکھا ہے کہ یونہی جنت کا داخلہ تمہیں مل جائے گا۔ حالانکہ ابھی تم پر وہ سب کچھ نہیں گزرا ہے جو تم سے پہلے ہو چکا ہے انہیں جنگیں اور تکلیفیں پہنچی اور خوب جھٹکائے گئے (اس لئے پریشان کیا گیا کہ ایمان والے ڈگمگا جائیں اور ایمان کو چھوڑ دیں۔ اور پکار اٹھیں کہ اللہ کی مدد کہاں ہے؟ مگر ایسا نہ ہوا اور صبر کے ساتھ اُن تکلیفوں کا مقابلہ کرتے رہے ایسا ہی تمہارے ساتھ ہوگا) کافروں کا منشا تھا کہ رسول کے ساتھی جو اہل ایمان ہیں پکار اٹھیں کہ اللہ کی مدد کب آئے گی۔ مگر خبردار صبر اور ہمت سے کام لو رسول کے ذریعہ تم نے سن لیا کہ صبر کرنے والوں کے لئے اللہ کی مدد قریب ہے اور ضرور آئے گی (ایمان والے اللہ کی مدد سے کبھی مایوس نہیں ہوتے اس لئے وہ مدد کی امید پر ہی مشکل کام کو کرتے ہیں جس سے دین کو تقویت ملے) (۲۱۴) [۳:۱۴۶، ۱۴۷، ۳۳:۱۱ تا ۱۵، ۲۱ تا ۲۵]

नोट :- इस आयत का जो अनुवाद चल रहा है यह किया गया है कि "यहां तक कि ईश्वर का ईशदूत और जो उनके साथ ईमान लाए थे चित्कार उठें" इस अनुवाद को दूसरी आयात और आस्तिकों और ईशदूत का साहस मिथ्या बताता है, और भावार्थ वही उचित है जो मैंने किया है इसके समर्थन में निम्नलिखित आयात देखो (6:34, 3:146-147, 9:16, 29:2, 32:2, 2:217)

نوٹ:۔ اس آیت کا جو ترجمہ چل رہا ہے یہ کیا گیا ہے کہ "یہاں تک کہ اللہ کا رسول اور جو ان کے ساتھ ایمان لائے تھے چیخ اٹھے پکار اٹھے" اس ترجمہ کو دوسری آیات اور مومنوں اور نبی کی ہمت غلط بتاتی ہے اور مفہوم وہی صحیح ہے جو میں نے کیا ہے اس کی تائید میں ذیل کی آیات دیکھو [۶:۳۴، ۳:۱۴۶، ۱۴۷، ۹:۱۶، ۲۹:۲، ۳۲:۲، ۲:۲۱۷]

(3:146) और बहुत से ईशदूत हुए है जिनके साथ मिलकर बहुत से आस्तिकों ने धर्म युद्ध किया, किन्तु कभी ऐसा नही हुआ कि वह युद्ध की कठोरता में घिरकर हतोत्साह हो गए हों और न उन्होंने किसी प्रकार की निर्बलता दिखाई और न कभी शत्रु के सामने गिड़गिड़ा कर विनय का प्रकटीकरण किया और ईश्वर धैर्य करने वालों को मित्र रखता है" ऐसे ही दूसरी आयात है जो अपने स्थान पर लिखी जाएगी.

[۳:۱۴۶] اور بہت سے نبی ہوئے ہیں جن کے ساتھ مل کر بہت سے اللہ کے سچے بندوں نے جہاد کیا لیکن کبھی ایسا نہیں ہوا کہ وہ جنگ کی سختیوں میں گھر کر پست ہمت ہو گئے ہوں۔ اور نہ انہوں نے کسی طرح کی کمزوری دکھائی اور نہ کبھی دشمنوں کے سامنے گڑگڑا کر عاجزی کا اظہار کیا اور اللہ صبر کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے ایسے ہی دوسری آیات ہیں جو اپنی جگہ پر لکھی جائیں گی۔

ऐ ईशदूत लोग आपसे प्रश्न करेंगे कि वह किन के लिए क्या व्यय करें? आप कह देना कि तुम जो धन व्यय करो वह माता-पिता पर सम्बन्धियों पर व्यय करो और जो भलाई भी तुम करोगे ईश्वर उस से सचेत है (215)

اے رسولؐ لوگ آپ سے سوال کریں گے کہ وہ کن کے لئے کیا خرچ کریں۔ آپ کہہ دیجئے گا کہ تم جو مال خرچ کرو وہ والدین پر رشتے داروں پر یتیموں پر اور مسکینوں اور مسافروں پر خرچ کرو اور جو بھلائی بھی تم کروگے اللہ اس سے باخبر ہے (۲۱۵)

आस्तिको! तुम पर (2:39 सुरक्षा की और 4:75 सहायतार्थ) युद्ध करना तुम्हारा कर्तव्य है और तुम्हारी दशा यह हो कि तुम उसे ना पसन्द करो 8:5 और कदाचित तुमको बुरी लगे, एक वस्तु और वह अच्छी हो तुम को, सम्भव है कोई वस्तु तुम को रोचक हो परन्तु वह तुम्हारे सामूहिक जीवन के लिए बुरी हो अतः जानलो कि हर वस्तु के अच्छे बुरे कोणो को ईश्वर ही जानता है तुम नहीं जानते (216)

ایمان والو! تم پر (۲۲:۳۹ دفاعی اور ۴:۷۵ امدادی) جنگ فرض کردی گئی ہے اور تمہاری حالت یہ ہو کہ تم اسے نا پسند کرو (۸:۵) اور شاید تم کو بُری لگے ایک چیز اور وہ بہتر ہو تم کو یا ممکن ہے کوئی چیز تم پسند کرو مگر وہ تمہاری اجتماعی زندگی کے لئے بُری ہو پس جان لو کہ ہر چیز کے اچھے بُرے گوشوں کو اللہ ہی جانتا ہے تم نہیں جانتے (۲۱۶)

लोग आप से प्रतिष्ठ के महीने के विषय में प्रश्न करेंगे कि उसमें युद्ध कैसा है? कह देना इस में लड़ना अधिक बुरा है परन्तु ईश्वर के मार्ग से लोगों

لوگ آپ سے حرمت کے مہینہ کے بارے میں سوال کریں گے کہ اس میں لڑنا کیسا ہے؟ کہہ دینا اس میں لڑنا بہت

को रोकना और ईश्वर से विमुख होना और प्रतिष्ठ वाली मस्जिद का मार्ग सत्यवादियों पर बन्द करना और मर्यादा वाले स्थान पर रहने वालों को वहां से निकालना ईश्वर के निकट उससे भी अधिक बुरा है और अशान्ति रक्तपात से बढ़कर है वह तो तुम से लड़े ही जाऐंगे यहां तक कि उनका वश चले तो तुम्हारे धर्म से तुमको फेर ले जाऐं (और यह अच्छी प्रकार जान लो कि) तुम में से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा और नास्तिकता की स्थिति में जान देगा, उसके कर्म दुनिया और प्रलोक दोनों में नष्ट हो जाऐंगे ऐसे लोग नर्क में जाऐंगे और सदैव ही उसमें रहेंगे (217) {2:214}

بڑا گناہ ہے مگر اللہ کی راہ سے لوگوں کو روکنا اور اللہ سے کفر کرنا اور مسجد حرام کا راستہ حق پرستوں پر بند کرنا اور حرم کے رہنے والوں کو وہاں سے نکالنا اللہ کے نزدیک اس سے بھی زیادہ بُرا ہے اور خونریزی سے شدید تر ہے. وہ تو تم سے لڑے ہی جائینگے حتیٰ کے اگر اُن کا بس چلے تو تمہارے دین سے تم کو پھیر لے جائیں (اور یہ جان لو کہ) تم میں سے جو کوئی اپنے دین سے پھرے گا اور کفر کی حالت میں جان دے گا اس کے اعمال دنیا ور آخرت دونوں میں ضائع ہو جائیں گے ایسے لوگ جہنمی ہیں اور ہمیشہ ہی اس میں رہیں گے (۲۱۷) [۲:۲۱۴]

(इसके अतिरिक्त) जो लोग आस्था लाऐं हैं और जिन्होंने ईश्वर के मार्ग में अपना घर बार छोड़ा और धर्म युद्ध किया वह ईश्वर की करूणा के उचित आशावान हैं और ईश्वर उनको क्षमा करने वाला और करूणा करने वाला है (218) {2:133, 53:32}

(اس کے علاوہ) جو لوگ ایمان لائے ہیں اور جنہوں نے اللہ کی راہ میں اپنا گھر بار چھوڑا اور جہاد کیا وہ رحمت الٰہی کے جائز امیدوار ہیں اور اللہ ان کو بخشنے والا اور رحمت کرنے والا ہے (۲۱۸) [۲:۱۳۳، ۵۳:۳۲]

ऐ रसूल स0 आपसे लोग मादक वस्तुओं और जुआ के सम्बन्ध में प्रश्न करेंगे कह देना इन दोनों वस्तुओं में बड़ा विकार है, यद्यपि इनमें लोगों के लिए कुछ लाभ भी है, परन्तु इनका पाप इनके लाभ से से बहुत अधिक है, आपसे प्रश्न करेंगे कि ईश्वर के मार्ग में क्या व्यय करें आप कह देना जो कुछ तुम्हारी आवश्यकता से अधिक हो, इस प्रकार ईश्वर तुम्हारे लिए स्पष्ट निर्देश वर्णन करता है, कदाचित कि तुम वास्तविकता पर विचार किया करो (219)

اے رسولؐ آپ سے لوگ نشہ آور چیزوں اور جوئے کے متعلق سوال کریں گے؟ کہو ان دونوں چیزوں میں بڑی خرابی ہے اگر چہ ان میں لوگوں کے لئے کچھ منافع بھی ہیں مگر ان کا گناہ ان کے فائدے سے بہت زیادہ ہے. آپ سے سوال کریں گے کہ اللہ کی راہ میں کیا خرچ کریں؟ آپ کہہ دینا جو کچھ تمہاری ضرورت سے زیادہ ہو اس طرح اللہ تمہارے لئے صاف صاف احکام بیان کرتا ہے شاید کہ تم حقیقت حال پر غور کیا کرو (۲۱۹)

नोट- शब्द इसमुन कबीर आया है, इस शब्द से बहुत से यह अर्थ लेते हैं कि सुरा अवैध नहीं है, जबकि मदिरा अवैध है, आयात (7:33) में भी यही शब्द आया है वहां इसका स्पष्ट अर्थ अवैध है, अतः तसरीफे आयात के द्वारा मदिरा वर्जित है {6:146, 7:33, 5:90}

نوٹ:۔ لفظ اِثمٌ کبیر آیا ہے. اس لفظ سے بہت سے آدمی یہ مطلب لیتے ہیں کہ شراب حرام نہیں ہے. جب کہ شراب حرام ہے آیت (۷:۳۳) میں بھی یہی لفظ آیا ہے. وہاں اس کا صاف مطلب حرام ہے اس لئے تصریف آیت کے ذریعہ شراب حرام ہے [۶:۱۴۶، ۷:۳۳، ۵:۹۰]

(तुम दुनिया पर ही दृष्टि न रखो) अपितु दुनिया और प्रलोक दोनों पर विचार किया करो, लोग आपसे अनाथों के सम्बन्ध में प्रश्न करेंगे आप कह देना कि उनका सुधार करना अच्छा है, यदि तुम अपना और उनका व्यय और रहना सहना सम्मिलत रखो तो इसमें कोई अनिष्ट नहीं, अंत वह तुम्हारे भाई बन्द ही तो है, बुराई करने वाले और भलाई करने वाले दोनों की दशा ईश्वर पर प्रकट है, ईश्वर चाहता तो इस सम्बन्ध में तुम पर कठोरता करता परन्तु वह शासन अधिकार होने के साथ युक्ति वाला भी है (220) {2:185}

(تم دنیا پر ہی نظر نہ رکھو) دنیا اور آخرت دونوں پر غور کیا کرو لوگ آپ سے بے سہارا لوگوں کے متعلق سوال کریں گے آپ کہہ دینا کہ ان کی اصلاح کرنا بہتر ہے اگر تم اپنا اور ان کا خرچ اور رہنا سہنا مشترک رکھو تو اس میں کوئی مضائقہ نہیں آخر وہ تمہارے بھائی بند ہی تو ہیں بُرائی کرنے والے اور بھلائی کرنے والے دونوں کا حال اللہ پر روشن ہے اللہ چاہتا تو اس معاملہ میں تم پر سختی کرتا مگر وہ صاحب اختیار ہونے کے ساتھ صاحب حکمت بھی ہے (۲۲۰) [۲:۱۸۵]

तुम अनेकेश्वर वादी स्त्रियों से कदापि विवाह न करना जब तक कि वह आस्तिक न हो जाऐं एक आस्तिक दासी अनेकेश्वर वादी स्वतंत्र स्त्री से अच्छी है यद्यपि वह तुम्हें बहुत अच्छी लगे, और अपनी स्त्रियों के विवाह अनेकेश्वर वादी मर्दों से कभी न करना जब तक वह आस्था न ले आऐं, एक

تم مشرک عورتوں سے ہرگز نکاح نہ کرنا جب تک کہ وہ ایمان نہ لے آئیں ایک مومن لونڈی مشرک آزاد عورت سے بہتر ہے اگر چہ وہ تمہیں بہت پسند ہو اور اپنی عورتوں کے نکاح مشرک مردوں سے کبھی نہ کرنا جب تک وہ ایمان

आस्तिक दास अनेकेश्वर वादी स्वतंत्र से उत्तम है यद्यपि वह तुम्हें बहुत अच्छा लगे वह लोग तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं और ईश्वर अपने इजन (विधान) से तुमको स्वर्ग और मोक्ष की ओर बुलाता है, और वह अपने नियम स्पष्ट करके लोगों के सामने वर्णन करता है, आशा है कि वह शिक्षा लेंगे (221) {24:3}

نہ لے آئیں ایک مومن غلام مشرک آزاد سے بہتر ہے اگر چہ وہ تمہیں بہت پسند ہو۔ وہ لوگ تمہیں آگ کی طرف بلاتے ہیں اور اللہ اپنے اذن (قانون) سے تم کو جنت اور مغفرت کی طرف بلاتا ہے اور وہ اپنے احکام واضح طور پر لوگوں کے سامنے بیان کرتا ہے توقع ہے کہ وہ سبق لیں گے (۲۲۱) [۲۴:۳]

ऐ ईशदूत! लोग आपसे स्त्रियों के मासिक धर्म की स्थिति के विषय में प्रश्न करेंगे, आप कह देना कि वह बीमारी (पीड़ा) के दिन हैं, अतः तुम (उन दिनों में) स्त्रियों से अलग रहो, और उनके निकट न जाओ, जब तक कि वह पवित्र न हो जाए फिर जब वह पवित्र हो जाएं तो तुम उनके पास जाओ इस प्रकार जैसा जहां से ईश्वर ने तुमको आदेश दिया है ईश्वर उन लोगों को पसंद करता है जो दुष्टता से रुक जाएं और पवित्रता ग्रहण करें (222) {4:102, 17:32, 56:79}

اے رسولؐ! لوگ آپ سے عورتوں کی ماہواری کی حالت کے متعلق سوال کریں کے آپ کہدینا کہ وہ بیماری (تکلیف) کے دن ہیں پس تم (ان دنوں میں) عورتوں سے الگ رہو اور ان کے قریب نہ جاؤ جب تک کہ وہ پاک صاف نہ ہو جائیں پھر جب وہ پاک صاف ہو جائیں تو ان کے پاس جاؤ اس طرح جیسا جہاں سے اللہ نے تم کو حکم دیا ہے اللہ ان لوگوں کو پسند کرتا ہے جو بدی سے رُک جائیں اور پاکیزگی اختیار کریں (۲۲۲) [۴:۱۰۲، ۱۷:۳۲، ۵۶:۷۹]

तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारे लिए ऐसी हैं जैसे खेती (जिस प्रकार खेत से अन्न प्राप्त किया जाता है उसी प्रकार स्त्रियों के द्वारा संतान मिलती है) अतः जब चाहो अपनी भूमि में (प्राकृतिक रीति से) कृषि करो और अपने भविष्य का प्रबन्ध करो और ईश्वर की रुष्टता से बचो, जान लो कि तुम्हें एक दिन उससे मिलना है अर्थात् साक्षात होना है लेखा जोखा के लिए और ऐ ईशदूत जो तुम्हारी शिक्षा को मान लें उन्हें (सफलता सुयोग्यता की) मंगल सूचना दे दो (223)

تمہاری عورتیں تمہارے لئے ایسی ہیں جیسے کھیتی (جس طرح کھیت سے غلہ حاصل کیا جاتا ہے اسی طرح عورتوں کے ذریعہ اولاد ملتی ہے) پس جب چاہو اپنی زمین میں (فطری طریقہ سے) کاشت کرو اور اپنے مستقبل کا انتظام کرو اور اللہ کی ناراضگی سے بچو جان لو کہ تمہیں ایک دن اس سے ملنا ہے یعنی روبرو ہونا ہے حساب کے لئے اور اے نبی جو تمہاری ہدایات کو مان لیں انہیں (فلاح وسعادت کی) خوشخبری دے دو (۲۲۳)

नोट- खेत की उपमा से तात्पर्य यह है कि किसान अपने खेत में जब अच्छा जानता है प्रयोजन के अनुसार हल चलाकर अन्न बोता है और जब उसका मन चाहता है अपने खेत को रिक्त रखता है, ऐसे ही यह उपमा है जब व्यक्ति का मन चाहे अपनी स्त्री से प्राकृतिक रीति से मैथुन करे प्रकृति के विरुद्ध नहीं,

نوٹ:۔ کھیت کی مثال سے مراد یہ ہے کہ کسان اپنے کھیت میں جب اچھا جانتا ہے ضرورت کے مطابق ہل چلا کر اناج بوتا ہے اور جب اس کا دل چاہتا ہے اپنے کھیت کو خالی رکھتا ہے ایسے ہی یہ مثال ہے جب آدمی کا دل چاہے اپنی عورت سے فطری طریقہ سے مباشرت کرے فطرت کے خلاف نہیں۔

ईश्वर का नाम ऐसी शपथ खाने के लिए प्रयोग न करो जिनसे उद्देश्य उपकार और संयम और इन्सानों की भलाई के कार्यों से रुका रहना हो, और ईश्वर तुम्हारी बातें सुन रहा है और सब कुछ जानता है (224)

اللہ کا نام قسمیں کھانے کے لئے استعمال نہ کرو جن سے مقصود نیکی اور تقویٰ اور بندگان الٰہی کی بھلائی کے کاموں سے باز رہنا ہو اور اللہ تمہاری باتیں سن رہا ہے اور سب کچھ جانتا ہے (۲۲۴)

जो बेकार शपथ तुम बेनिश्चय खा लिया करते हो उन पर ईश्वर पकड़ नहीं करता, परन्तु जो शपथ तुम सत्य मन से खाते हो उनका प्रति प्रश्न अवश्य करेगा, ईश्वर क्षमा करने वाला और सहनशील है (225)

جو بے معنی قسمیں تم بلا ارادہ کھا لیا کرتے ہو ان پر اللہ گرفت نہیں کرتا مگر جو قسمیں تم سچے دل سے کھاتے ہو ان کی باز پرس ضرور کرے گا اللہ درگزر کرنے والا اور بردبار ہے (۲۲۵)

जो लोग अपनी स्त्रियों से सम्बन्ध न रखने की शपथ खा लेते हैं उनके लिए चार माह की छूट है यदि उन्होंने प्रत्यागमन कर लिया तो ईश्वर क्षमा करने वाला और कृपालु है (226) {5:88, 33:4, 58:3}

جو لوگ اپنی عورتوں سے تعلق نہ رکھنے کی قسم کھا بیٹھتے ہیں ان کے لئے چار مہینے کی مہلت ہے اگر انہوں نے رجوع کر لیا تو اللہ معاف کرنے والا اور رحیم ہے (۲۲۶) [۵:۸۸، ۳۳:۴، ۵۸:۳]

और यदि उन्होंने तलाक की ठान ली हो तो जाने रहें कि ईश्वर सब सुनता और जानता है (227)

اور اگر انہوں نے طلاق کی ٹھان لی ہو تو جانیں رہیں کہ اللہ سب سنتا اور جانتا ہے (۲۲۷)

जिन औरतों को तलाक दी गई हो वह तीन कुरू तक अपने को रोके रखें और उनके लिए यह उचित नहीं कि ईश्वर ने उनके गर्भाशय में जो सृजन किया हो उसे छुपाए उन्हें कदापि ऐसा न करना चाहिए यदि वह ईश्वर और महाप्रलय के दिन पर आस्था रखती हो उनके पति उस समय (इद्दत) के चक्र में उन्हें फिर अपनी पत्नीत्व में वापस लेने के अधिकारी हैं, औरतों के लिए भी उचित रीति पर वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों के अधिकार उन पर हैं, अपितु पुरुषों को उन पर एक श्रेणी प्राप्त है और सब पर ईश्वर प्रभुत्व शाली प्रभुत्व रखने वाला और नीतिज्ञ बुद्धिमान है (228) {65:4, 33:49, 4:19}

جن عورتوں کوطلاق دی گئی ہو وہ تین قروتک اپنے کوروکے رکھیں اوران کے لئے یہ جائزنہیں ہے کہ اللہ نے ان کے رحم میں جو کچھ خلق فرمایا ہوا سے چھپائیں انہیں ہرگز ایسا نہ کرنا چاہیے اگر وہ اللہ اور روز قیامت پرایمان رکھتی ہوں ان کے شوہر تعلقات درست کر لینے پر آمادہ ہوں تو اس عدت کے دوران میں انہیں پھر اپنی زوجیت میں واپس لے لینے کے حق دار ہیں عورتوں کے لئے بھی معروف طریقے پر ویسے ہی حقوق ہیں جیسے مردوں کے حقوق ان پر ہیں البتہ مردوں کو ان پر ایک درجہ حاصل ہے اور سب پر اللہ غالب اقتدار رکھنے والا اور حکیم ودانا ہے (۲۲۸) [۶۵:۴،۳۳:۴۹،۴:۱۹]

नोट- तीन कुरू का अर्थ अधिकांश ने तीन मासिक धर्म लिखा है, अब देखना यह है कि तीन मासिक धर्म कितने दिन में हो जाते हैं, ज़ैद ने एक तिथि को तलाक दी, उसको तलाक देते ही मासिक धर्म आने लगा, साधारणतः रजोधर्म एक हफ्ता रहती है, इसके बाद फिर एक तिथि को दूसरा फिर अगली तिथि को तीसरा रजो धर्म हो गया, ऐसी स्थिति में 8 तिथि तक वह तीनों रजोधर्म से निवृत्त हो गई, 8 तारीख तक 2 माह 8 दिन हो गए किन्तु सूरत तलाक आयत 4 से इद्दत तीन माह बताई गई है, जबकि (4:82) के अनुसार कुरआन में विभिन्नता नहीं है,

अब विचारणीय बात यह है कि यहां इन आयतों के अर्थ में विरोधाभास क्यों प्रतीत हो रहा है, किन्तु वास्तविकता यह है कि हमने कुरू को (65:4) के अन्तर्गत विचार नहीं किया और अनुवाद अनुचित कर गए

نوٹ:۔ تین قروکا مطلب اکثر نے تین حیض لکھا ہے۔اب دیکھنا یہ ہے کہ تین حیض کتنے دن میں ہوجاتے ہیں۔زید نے ایک تاریخ کوطلاق دی اس کوطلاق دیتے ہی ماہواری شروع ہوگئی۔عام طور پر ماہواری ایک ہفتہ رہتی ہے اس کے بعد پھر ایک تاریخ کودوسری پھر اگلی ایک تاریخ کوتیسری ماہواری ہوگئی۔ایسی حالت میں ۸/تاریخ تک وہ تینوں حیض سے فارغ ہوگئی۔۸/تاریخ تک ۲ماہ۸دن ہوگئے۔ لیکن سورہ طلاق آیت (۴)میں عدت ۳ ماہ بتائی گئی ہے ایسی حالت میں دونوں باتیں مختلف ہوگئیں جب کہ (۴:۸۲) کے مطابق قرآن میں اختلاف نہیں ہے

اب غورطلب بات یہ ہے کہ یہاں ان آیتوں کے مطلب میں تضاد کیوں نظر آرہا ہے مگر حقیقت یہ ہے کہ ہم نے قروکو(۶۵:۴) کے تحت غورنہیں کیا اورترجمہ غلط کرگئے۔

वास्तव में तीन कुरू का अर्थ भी तीन माह ही है, सूरत तलाक में इद्दत स्पष्टतः तीन माह है फिर भी हमने तीन रजोधर्म आना ही लिख दिया, इमाम मालिक और इमाम शाफेई और सहाबा का एक दल भी तीन कुरू से तीन तोहर (शुद्धता) ही अभिप्राय लेते हैं, यदि कुरू से तात्पर्य रजोधर्म हो तो तीन कुरू 2 महीने 8 दिन में पूर्ण हो जाते हैं जैसे ऊपर लिखा गया है तो क्या कोई धर्माधिकारी तलाक का समय 2 महीने 8 दिन स्वीकार करेगा? कदापि नहीं तो फिर कुरू से अभिप्राय रजोधर्म नहीं अपितु तोहर है (शुद्धता) जिसका समय एक माह और तीन कुरू का समय तीन माह है,

حقیقت میں تین قروکا مطلب بھی تین ماہ ہی ہے سورہ طلاق میں عدت صاف طور پر تین ماہ بتادیا ہے پھر بھی ہم نے تین حیض آنا ہی لکھ دیا۔امام مالک اورامام شافعی اورصحابہ کی ایک جماعت بھی تین قروء سے تین طہر یعنی تین ماہ ہی مراد لیتے ہیں۔اگر قروء سے مراد حیض ہوتو تین قروء ۲/مہینے ۸ دن میں پورے ہوجاتے ہیں۔جیسے اوپر لکھا گیا ہے تو کیا کوئی مفتی طلاق کی مدت ۲ماہ۸دن تسلیم کرلے گا؟ ہرگز نہیں تو پھر قروء سے مراد بھی حیض نہیں بلکہ طہر ہے جس کی مدت ایک ماہ اور تین قروکی مدت تین ماہ ہے۔

तलाक दो बार है या तो सीधी प्रकार स्त्री को रोक लिया जाए या भली प्रकार से उसको विदा कर दिया जाए और विदा करते समय तुम्हारे लिए ऐसा करना उचित नहीं है कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ वापस ले लो, हां यह स्थिति पृथक है कि युग्ल को ईश्वर की सीमाओं पर स्थिर न रह सकने का डर हो, ऐसी दशा में यदि तुम्हें यह डर हो कि वह दोनों ईश्वर की सीमाओं पर स्थिर न रहेंगे तो उन दोनों के बीच यह व्यवहार हो जाने में अनिष्ठता नहीं कि स्त्री अपने पति को क्षतिपूर्ति देकर पृथकता प्राप्त कर ले, यह ईश्वर की निर्धारित की हुई सीमाऐं हैं इनका उल्लंघन न करो और जो लोग ईश्वर की सीमाओं का उल्लंघन करें वही अत्याचारी हैं (229) {4:137}

طلاق دوبار ہے پھر یا تو سیدھی طرح عورت کوروک لیا جائے یا بھلے طریقے سے اس کورخصت کردیا جائے۔اور رخصت کرتے وقت تمہارے لئے ایسا کرنا جائزنہیں ہے کہ جو کچھ تم انہیں دے چکے ہو اس میں سے کچھ واپس لے لو البتہ یہ صورت مستثنیٰ ہے کہ زوجین کو اللہ کی حدود پر قائم نہ رہ سکنے کا اندیشہ ہو ایسی حالت میں اگر تمہیں یہ ڈر ہو کہ وہ دونوں حدوالٰہی پر قائم نہ رہیں گے تو ان دونوں کے درمیان یہ معاملہ ہوجانے میں مضائقہ نہیں کہ عورت اپنے شوہر کو کچھ معاوضہ دے کر علیحدگی حاصل کرلے یہ اللہ کی مقرر کردہ حدود ہیں ان سے تجاوز نہ کرو اور جو لوگ حدود الٰہی سے تجاوز کریں وہی ظالم ہیں (۲۲۹) [۴:۱۳۷]

फिर भी यदि (दो बार तलाक देने और दो बार प्रत्यागमन (रूजू) करने के बाद पति ने अपनी पत्नी को तीसरी बार) तलाक दे दी तो वह स्त्री फिर उसके लिए वैध न होगी, (अर्थात् वह अब रूजू नही कर सकेगा) हां यह कि उसका विवाह किसी दूसरे आदमी से (तलाक देने वाले के दूसरे से) हो और वह उसे तलाक दे दे तब यदि पहला पति और यह स्त्री दोनों विचार करें कि ईश्वर की सीमाओं पर स्थिर रहेंगे तो उनके लिए एक दूसरे की ओर प्रत्यागमन अर्थात् विवाह कर लेने में कोई बाधा नही, यह ईश्वर की निर्धारित की हुई सीमाऐं है जिन्हें वह उन लोगों के लिए स्पष्ट कर रहा है जो (सीमाओं के उल्लंघन करने का परिणाम) जानते है (230)

शब्द फ-इन की क्रिया तुरन्त नही होती अपितु कुछ समय चाहता है, और वह समय जब ही होगा जब प्रत्यागमन के बाद फिर तलाक दी जाए {2:28, 6:59,62, 23:15,16}

پھر اگر (دوبار طلاق دینے اور دوبار رجوع کرنے کے بعد شوہر نے اپنی زوجہ کو تیسری بار) طلاق دے دی تو وہ عورت پھر اس کے لئے حلال نہ ہوگی. (یعنی اب وہ رجوع نہیں کر سکے گا) الا یہ کہ اس کا نکاح کسی دوسرے آدمی سے (طلاق دینے والے کے غیر سے) ہو اور وہ اسے طلاق دے دے تب اگر پہلا شوہر اور یہ عورت دونوں خیال کریں کہ حدودِ الٰہی پر قائم رہیں گے تو ان کے لئے ایک دوسرے کی طرف رجوع یعنی نکاح کر لینے میں کوئی حرج نہیں. یہ اللہ کی مقرر کردہ حدیں ہیں جنہیں وہ ان لوگوں کے لئے واضح کر رہا ہے جو (حدیں توڑنے کا انجام) جانتے ہیں (۲۳۰)

لفظ فان کا عمل فوراً نہیں ہوتا بلکہ کچھ وقفہ چاہتا ہے اور وہ وقفہ جب ہی ہوگا جب رجوع کے بعد پھر طلاق دی جائے [۲:۲۸، ۶:۵۹، ۶۲، ۲۳:۱۵، ۱۶]

और जब तुम औरतों को तलाक दो और उनकी इद्दत पूरी होने को आ जाए तो या भली प्रकार उन्हें रोक लेना या भली रीति से विदा कर देना मात्र संतान के लिए उन्हें न रोकना, यह अत्याचार होगा, और जो ऐसा करेगा वह वास्तव में अपने आप ही अपने ऊपर अत्याचार करेगा और ईश्वर की आयत का खेल न बनाओ, भूल न जाओ कि ईश्वर ने कैसे प्रसाद से तुम्हें प्रतिष्ठित किया है वह तुम्हें उपदेश करता है जो पुस्तक और युक्ति उसने तुम पर (तुम्हारे लिए) अवतरित की है उसका आदर करो, ईश्वर से डरो और जान लो कि ईश्वर को हर बात की सूचना है (231) {2:228, 65:2,6}

اور جب تم عورتوں کو طلاق دو اور ان کی عدت پوری ہونے کو آجائے تو یا بھلے طریقے سے روک لینا یا بھلے طریقے سے رخصت کر دینا محض ستانے کے لئے انہیں نہ روکنا یہ زیادتی ہوگی. اور جو ایسا کرے گا وہ درحقیقت آپ اپنے ہی اوپر ظلم کرے گا. اللہ کی آیات کا کھیل نہ بناؤ بھول نہ جاؤ کہ اللہ نے کیسی نعمت سے تمہیں سرفراز کیا ہے. وہ تمہیں نصیحت کرتا ہے کہ جو کتاب اور حکمت اس نے تم پر (تمہارے لئے) نازل کی ہے اس کا احترام کرو اللہ سے ڈرو اور جان لو کہ اللہ کو ہر بات کی خبر ہے (۲۳۱)[۲:۲۲۸، ۶۵:۲، ۶]

और जब तुम अपनी पत्नीयों को तलाक दो और उनकी इद्दत पूरी होने को आए पूरी कर लें तो फिर तुम (अर्थात् तलाक देने वाले पति) इस में बाधक न बनना कि वह अपने चुने हुए पतियों (जिन्होंने ने तलाक दी है उनके अतिरिक्त से) विवाह करें, जबकि वह परिचित रीति से आपस में विवाह पर सहमत हो जाऐं तुम्हें उपदेशित किया जाता है कि ऐसा कर्म कदापि न करना यदि तुम ईश्वर पर और अन्तिम दिन पर विश्वास लाने वाले हो, तुम्हारे लिए सुशील और पवित्र मार्ग यही है कि उससे रूक जाओ, ईश्वर जानता है तुम नही जानते (अर्थात् उन्हें विवाह से न रोकना) (232)

اور جب تم اپنی عورتوں کو طلاق دو اور ان کی عدت پوری ہونے کو آئے پوری کر لیں تو پھر تم (یعنی طلاق دینے والے شوہر) اس میں مانع نہ ہونا کہ وہ اپنے زیرِ تجویز شوہروں سے (جنہوں نے طلاق دی ہے ان کے علاوہ سے) نکاح کر لیں جب کہ وہ معروف طریقے سے باہم مناکحت پر راضی ہو جائیں تمہیں نصیحت کی جاتی ہے کہ ایسی حرکت ہرگز نہ کرنا. اگر تم اللہ پر اور روزِ آخر پر ایمان لانے والے ہو تمہارے لئے شائستہ اور پاکیزہ طریقہ یہی ہے کہ اس سے باز رہو اللہ جانتا ہے تم نہیں جانتے (یعنی انہیں نکاح سے نہ روکنا) (۲۳۲)

जो पिता चाहते हों कि उनकी संतान पूरा समय दूध पिऐं तो माताएं अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलाएं और इस दशा में बच्चे के पिता को अच्छी विधि से उन्हें भोजन कपड़ा देना होगा, परन्तु किसी पर उसकी क्षमता से अधिक बार न डालना चाहिए न तो माता को,

इस कारण कष्ट में डाला जाए कि बच्चा उसका है और न पिता को ही इस कारण से तंग किया जाए कि बच्चा उसका है, दूध पिलाने वाली का यह अधिकार जैसा बच्चे के पिता पर है वैसा ही उसके अभिभावक पर भी है, किन्तु यदि उभय पक्ष आपसी

جو باپ چاہتے ہوں کہ ان کی اولاد پوری مدت رضاعت تک دودھ پئے تو مائیں اپنے بچوں کو کامل دو سال دودھ پلائیں اور اس حال میں بچے کے باپ کو اچھے طریقے سے انہیں کھانا کپڑا دینا ہوگا مگر کسی پر اس کی وسعت سے بڑھ کر بار نہ ڈالنا چاہیے نہ تو ماں کو اس وجہ سے تکلیف میں ڈالا جائے کہ بچہ اس کا ہے اور نہ باپ کو ہی اس وجہ سے تنگ کیا جائے کہ بچہ اس کا ہے دودھ پلانے والی کا یہ حق جیسا بچے کے باپ پر ہے ویسا ہی اس وارث پر بھی ہے لیکن اگر

فریقین باہمی رضامندی اور مشورے سے دودھ چھڑانا چاہیں تو ایسا کرنے میں کوئی مضائقہ نہیں اور اگر تمہارا خیال اولاد کو کسی غیر عورت سے دودھ پلوانے کا ہو تو اس میں بھی کوئی حرج نہیں ہے اگر اس کا معاوضہ طے کرو معروف طریقے سے ادا کرو اللہ سے ڈرو اور جان لو کہ جو کچھ تم کرتے ہو سب اللہ کی نظر میں ہے (۲۳۳)[۲۴:۱۷، ۱۴:۳۱، ۱۵:۴۶، ۱۵:۴۶، ۲۴:۱۷]

تم میں سے جو لوگ مریں ان کے پیچھے اگر ان کی بیویاں زندہ رہیں تو وہ اپنے آپ کو چار مہینے دس دن روکے رکھیں پھر جب ان کی عدت پوری ہونے کو آئے تو انہیں اختیار ہے اپنی ذات کے معاملے میں معروف طریقے سے جو چاہیں کریں تم پر اس امر میں کوئی حرج نہیں اللہ تم سب کے اعمال سے باخبر ہے (۲۳۴)

زمانہ عدت میں خواہ تم ان بیوہ عورتوں کے ساتھ منگنی کا ارادہ اشارے کنائے میں ظاہر کرو خواہ دل میں چھپائے رکھو دونوں صورتوں میں کوئی مضائقہ نہیں اللہ جانتا ہے کہ ان کا خیال تو تمہارے دل میں آئے گا ہی. مگر دیکھو خفیہ عہد و پیمان نہ کرنا. اگر کوئی بات کرنی ہے تو معرفت طریقے سے کرنا اور عقد نکاح باندھنے کا فیصلہ اس وقت تک نہ کرو جب تک عدت پوری نہ ہو جائے. جان لو کہ اللہ تمہارے دلوں کا حال جانتا ہے لہٰذا اس سے ڈرو یہ بھی جان لو کہ اللہ بردبار بخشنے والا ہے (۲۳۵)[۳:۵۴]

تم پر کوئی حرج نہیں اگر تم عورتوں کو اس حالت میں طلاق دو کہ تم نے ان سے مباشرت نہیں کی یا مہر مقرر نہیں کیا تو انہیں متاع دینا. یہ امر زیادہ مال والے پر اس کی بساط کے مطابق فرض ہے اور کم مال والے پر اس کی حیثیت کے مطابق ہے یہ متاع معروف قاعدے کے مطابق دیا جانا معاشرے میں حسن و توازن قائم رکھنے والوں پر فرض ہے (۲۳۶)[۳۳:۴۹]

اور اگر تم ہاتھ لگانے سے پہلے طلاق دو لیکن مہر مقرر کیا جا چکا ہے تو اس صورت میں نصف مہر دینا ہوگا یہ اور بات ہے کہ عورت نرمی برتے (اور مہر نہ لے) یا وہ مرد جس کے اختیار میں عقد نکاح ہے نرمی سے کام لے اور تم نرمی سے کام لو تو یہ تقویٰ سے زیادہ قریب ہے آپس کے معاملات میں فیاضی کو نہ بھولو. تمہارے اعمال کو اللہ دیکھ رہا ہے (۲۳۷)[۲:۲۲۹

اپنی نماز کی نگہداشت رکھو خصوصاً ایسی نماز کی جو محاسن صلوٰۃ کی جامع ہو اور اللہ کے آگے اس طرح کھڑے ہو جیسے

सहमती और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो ऐसा करने में कोई अनिष्ट नही और यदि तुम्हारा विचार संतान को किसी दूसरी स्त्री से दूध पिलवाने का हो तो इसमें भी कोई हानि नहीं है, यदि इसका प्रतिकर निर्धारित करो परिचित विधि से चुकता करो, ईश्वर से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो सब ईश्वर की दृष्टि में है (233) {17:24, 31:14, 46:15}

तुम में से जो लोग मृतक हों उनके पीछे यदि उनकी पत्नियां जीवित रहें तो वह अपने आपको चार माह दस दिन रोके रखें, फिर जब उनका समय पूरा होने को आए तो उन्हें अधिकार है अपने विषय में अच्छे ढंग से जो चाहे करें, तुम पर इस विषय में कोई बाधा नही, ईश्वर तुम सबके कर्मों से अवगत है (234)

इद्दत के काल में चाहे तुम उन विधवा स्त्रियों के साथ विवाह का निश्चय संकेत गुप्त वार्ता में प्रकट करो चाहे मन में छिपाए रखो, दोनों दशाओं में कोई पाप नही, ईश्वर जानता है कि उनका ध्यान तो तुम्हारे मन में आएगा ही, परन्तु देखो गुप्त अनुबन्ध न करना यदि कोई बात करनी है तो परिचित विधि से करना, और विवाह का निर्णय उस समय तक न करो जब तक कि इद्दत पूरी न हो जाए जान लो कि ईश्वर तुम्हारे मनों की दशा जानता है, अतः उससे डरो यह भी जान लो कि ईश्वर सहनशील और क्षमा करने वाला है (235) {3:54}

तुम पर कोई बाधा नही यदि तुम स्त्रियों को इस स्थिति में तलाक दो कि तुमने उनसे मैथुन नही किया या महर निर्धारित नही किया तो उन्हें जीविका सामग्री देना, यह विषय अधिक धन वाले पर उसकी क्षमता के अनुसार अनिवार्य है, और कम धन वाले पर उसकी क्षमता के अनुसार है, यह जीविका परिचित रीति के अनुसार दिया जाना समाज में अच्छाई व संतुलन स्थापित रखने वालों पर अनिवार्य है (236) {33:49}

और यदि तुम मैथुन करने से पहले तलाक दो किन्तु मेहर निर्धारित किया जा चुका है तो इस स्थिति में आधा मेहर देना होगा, यह और बात है कि स्त्री नरमी बरते (और मेहर न ले) या वह मनुष्य जिसके अधिकार में विवाह है नरमी से काम ले और तुम नरमी से काम लो तो यह संयम से अधिक निकट है, आपस के व्यवहार में उदारता को न भूलो, तुम्हारे कर्मों को ईश्वर देख रहा है (237) {2:229}

अपनी नमाज़ की देखभाल रखो विशेषतः ऐसी पूजा की जो सद्भाव से व्यापी हो और ईश्वर के आगे

इस प्रकार खड़े हो जैसे आज्ञाकारी भक्त खड़े होते हैं (238)

नोट- अर्थ यह है कि हम नमाज़ में क्या पढ़ते हैं इसका अर्थ क्या है इस पर विचार विवेचना करके अपने हर कार्य इसके अनुसार करें, यदि इसके अनुसार करेंगे तो हमसे पाप और ईश्वर की अवज्ञा न होगी, और तलाक व नान नफ़्क़ा (जीविका) और अन्य जीवन के कार्यों में हम ईश्वर के आदेश के अनुसार कार्य करेंगें यही सलातुल वस्ता पर दृष्टि रखने का अर्थ है और अकीमुस्सलात अर्थात नमाज़ स्थापित करना भी यही है परन्तु खेद है आज हम अपनी पूजा (नमाज) को भूल गए मस्जिद में अवश्य हम नमाज पढ़ रहे हैं परन्तु बाहर आकर नमाज़ स्थापित नहीं कर रहें बाहर आकर इस के विरुद्ध व्यावहार हर रहे हैं, उदाहरणतः तलाक और जीविका के बारे में जो आदेश कुरआन में अंकित है हमने उनका अनुवाद ही बदल कर अपनी इच्छा कर कर लिया, और ईश्वर के आदेश की अवहेलना कर गए ऐसे ही दूसरे विषय हैं जिन के बारे में ईश्वर हम को बार बार संचेत कर रहा है परन्तु हम नहीं मान रहे इस अवज्ञा से ही आज हम व्याकूल हैं ईश्वर हम को नमाज़ स्थापित करने की क्षमता दे

हम को विचार इस बात पर करना है कि इस आयात 238 से पहले और बाद की आयात में तलाक से सम्बधित आदेश हैं तो इन आदेशों के मध्य नमाज का उल्लेख करने से क्या अर्थ? अर्थ यह है कि इन्सान का हर कार्य जो ईश्वर के आदेश के अनुसार संयम से किया जाएगा व नमाज़ है, मैं पहले अर्ज कर चुका हूं कि सलात स्थापित करना अनिवार्य है अतः ईश्वर यहां भी याद दिला रहा है कि तलाक के आदेश पर क्रिया करना सलात है आदेश का ध्यान रखों,

فرمانبردار بندے کھڑے ہوتے ہیں (۲۳۸)

نوٹ:۔ مطلب یہ ہے کہ ہم نماز میں کیا پڑھتے ہیں اس کا کیا مطلب ہے اس پر غور کر کے کام اس کے مطابق کریں اگر اس کے مطابق کریں گے تو ہم سے گناہ اور اللہ کی نافرمانی نہ ہوگی۔ اور طلاق و نان نفقہ اور دیگر امور زندگی میں ہم اللہ کے حکم کے مطابق عمل کریں گے یہی صلوٰۃ ہے اور یہی صلوٰۃ الوسطیٰ پر نظر رکھنے کا مطلب ہے اور اقیمو الصلوٰۃ یعنی نماز قائم کرنا بھی یہی ہے مگر افسوس آج ہم اپنی نماز کو بھول گئے۔ مسجد میں ضرور ہم نماز پڑھ رہے ہیں مگر باہر آ کر نماز قائم نہیں کر رہے۔ باہر آ کر اس کے خلاف عمل کر رہے ہیں۔ مثلاً طلاق اور نان نفقہ کے بارے میں جو حکم قرآن میں درج ہیں ہم نے ان کا ترجمہ ہی بدل کر اپنی مرضی کا کر لیا اور اللہ کے حکم کی خلاف ورزی کر گئے۔ ایسے ہی دوسرے حالات میں جن کے بارے میں اللہ بار بار ہم کو خبردار کر رہا ہے مگر ہم نہیں مان رہے اس خلاف ورزی سے ہی آج ہم پریشان ہیں اللہ ہم کو نماز قائم کرنے کی توفیق دے۔

ہم کو غور اس بات پر کرنا ہے کہ اس آیت ۲۳۸ سے پہلے اور بعد کی آیات میں طلاق سے متعلق احکام ہیں تو ان احکام کے درمیان نماز کا ذکر کرنے سے کیا مطلب ہے؟ مطلب یہ ہے کہ انسان کا ہر کام اللہ کے حکم کے مطابق تقویٰ سے کیا جائیگا وہ نماز ہے۔ میں پہلے عرض کر چکا ہوں کہ صلوٰۃ قائم کرنا ضروری ہے اس لئے اللہ یہاں بھی یاد دلا رہا ہے کہ طلاق کے احکام پر عمل کرنا بھی صلوٰۃ ہے اس لئے ان احکاموں کا خیال رکھو۔

अशांति की दशा में पैदल या सवार जिस प्रकार सम्भव हो नमाज़ पढ़ो और जब शान्ति हो जाए तो ईश्वर को उस प्रकार याद करो (अर्थात नमाज़ पढ़ो) जो उस ने तुम्हें सिखा दिया है, जिस से अनभिज्ञ थे, (229) {4:101,103}

بدامنی کی حالت میں پیدل یا سوار جس طرح ممکن ہو نماز پڑھو اور جب امن ہو جائے تو اللہ کو اس طریقے سے یاد کرو (یعنی نماز پڑھو) جو اس نے تمہیں سکھا دیا ہے۔ جس سے تم پہلے ناواقف تھے (۲۳۹) [۴:۱۰۱،۱۰۳]

तुम में से जो लोग मृत हो जाए और पीछे पत्नियां छोड़ रहे हो उनको चाहिए कि अपनी पत्नियों के लिए उत्तर पत्र कर जाएं कि एक साल तक उनको जीविका दी जाएं और वह घर से न निकाली जाए फिर यदि वह स्वंय निकल जाएं तो अपने व्यक्तित्व के लिए अच्छे ढंग से वह जो कुछ भी करे तुम पर उसमें कोई पाप नहीं वस्तिवक्ता यह है कि ईश्वर प्रभुत्वशाली एवं युक्ति वाला है (240)

تم میں سے جو لوگ وفات پا جائیں اور پیچھے بیویاں چھوڑ رہے ہوں ان کو چاہیے کہ اپنی بیویوں کے حق میں وصیت کر جائیں کہ ایک سال تک ان کو نان نفقہ دیا جائے۔ اور وہ گھر سے نہ نکالی جائیں پھر اگر وہ خود نکل جائیں تو اپنی ذات کے لئے معروف طریقے سے وہ کچھ بھی کریں تم پر اس میں کوئی گناہ نہیں۔ حقیقت یہ ہے کہ اللہ غالب حکمت والا ہے (۲۴۰)

इसी प्रकार जिन स्त्रीयों को तलाक दी गई हो उनके लिए जीविका अनिवार्य है नियम के अनुसार हक है अनिवार्य है तलाक देने वालों पर जो ईश्वर की अवज्ञा से बचने वाले हैं (संयमी) (241) {7:24, 12:17, 16:80}

اسی طرح جن عورتوں کو طلاق دی گئی ہو ان کے لئے نان نفقہ ضروری ہے قاعدے کے مطابق حق ہے طلاق دینے والوں پر جو اللہ کی نافرمانی سے بچنے والے ہیں (متقی) (۲۴۱) [۷:۲۴، ۱۲:۱۷، ۱۶:۸۰]

इसी प्रकार ईश्वर अपने नियम तुम्हें स्पष्ट बताता है, आशा है कि तुम बुद्धि से काम लो (इस आयत में भी बुद्धि का उल्लेख कर दिया परन्तु हम अंधे हो रहे हैं), (242)

اسی طرح اللہ اپنے احکام تمہیں صاف صاف بتاتا ہے امید ہے کہ تم عقل سے کام لو (اس آیت میں بھی عقل کا ذکر کر دیا ہے مگر ہم اندھے ہو رہے ہیں) (۲۴۲)

नोट :- तलाक नान नफ़्क़ा (जीविका) के विषय में लिखने से पहले कुरआन में तलाक के विषय में जो और आयात है उन को लिखा जा रहा है मनन के लिए,

نوٹ:۔ طلاق نان نفقہ کے بارے میں لکھنے سے پہلے قرآن میں طلاق کے بارے میں جو اور آیات ہیں ان کو لکھا جا رہا ہے غور و فکر کے لئے۔

4:128 और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से अत्याचार या अनिच्छा का भय हो तो पति पत्नी पर कुछ पाप नहीं कि आपस में किसी प्रस्ताव पर समझौता कर ले और समझौता अच्छा है, और स्वभाव तो कृपणता की ओर आकृष्ट होता है, और यदि तुम शील वानता और सदाचारीता करोगे तो ईश्वर तुम्हारे सब कार्यों से अवगत है,

(4:129) (और यदि तात्कालिक स्थिति के कारण तुम को एक से अधिक विवाह करने पड़े वह भी उस स्थिति में जब वह स्त्रीयां तुम को स्वीकार करें (4:3) तो तुम कदापि शक्ति नहीं रखते कि एक से अधिक पत्नीयों के दरमियान न्याय कर सको, अगर च हिर्स (लिप्सा) करो और यदि विवाह करने पड़े तो ऐसा भी न हो कि एक ही की ओर ढ्ल जाओ और दूसरी को (ऐसी स्थिति में) छोड़ दो मानो अधार में लटक रही है और यदि आपस में अनुकूलता (सहमति) कर लो और यदि आपस में सहमति करो तो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है,

(4:130) और यदि पति पत्नी एक दूसरे से पृथक हो जाएं तो ईश्वर हर एक को अपने धन से समपन्न कर देगा और ईश्वर बड़ा विस्तार वाला युक्ति वाला है,

(4:34) पुरुष स्त्रियों पर आज्ञा दाता है इस लिए कि ईश्वर ने कतिपय को श्रेष्ठ बनाया है और इसलिए कि पुरुष अपना धन व्यय करते है तो जो सदाचारी पत्नीयां है वह पतियों के आदेश पर चलती है और उनकी पीठ पीछे ईश्वर की रक्षा में सावधानी करती है और जिन स्त्रियों के बारे में तुम्हें ज्ञात हो कि अवज्ञा करने लगी है तो नीति से प्रहार करो और यदि आज्ञाकारी हो जाए तो फिर उनको कष्ट देने का कोई बहाना मत ढूंढो, निःसन्देह ईश्वर सबसे उच्चतर महानुभाव है,

(4:35) और यदि तुमको ज्ञात हो कि पति पत्नी में अनबन है तो एक न्यायिक पुरुष के परिवार से और एक न्यायिक स्त्री के परिवार में से नियुक्त करो वह यदि संधि करा देनी चाहेंगे तो ईश्वर उनमें अनुकूलता (मैत्री) उत्पन्न कर देगा कुछ सन्देह नहीं कि ईश्वर सब कुछ जानता और सब बातों का ज्ञाता है,

(33:49) आस्तिको! जब तुम आस्तिक स्त्रियों से विवाह करके उनको हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो तुमको कोई अधिकार नहीं कि उनसे इद्दत तलाक का समय पूरा कराओ, उनको जीविका दो और भलिभांति विदा कर दो,

(65:1) ऐ ईशदूत (मुसलमानों से कह दो कि) जब तुम स्त्रियों को तलाक देने लगो तो उनको इद्दत के लिए तलाक दो और इद्दत की गणना रखो और ईश्वर से जो तुम्हारा पालनहार है डरो, उनको इद्दत के समय में घरों से न निकालो और न वह स्वयं निकले, हां यदि वह स्पष्ट निर्लज्जता करे और यह ईश्वर की सीमाऐं है जो ईश्वर की सीमाओं का उल्लंघन करेगा वह अपने आप पर अत्याचार करेगा (ऐ तलाक देने वाले) तुझे क्या ज्ञात शायत ईश्वर इसके बाद कोई (प्रति क्रिया) का मार्ग उत्पन्न कर दे

(65:2) फिर जब वह अपनी अवधि अर्थात् इद्दत समाप्त होने के निकट पहुंच जाएं तो या तो अच्छी प्रकार से (विवाह में) रहने दो या अच्छी प्रकार से पृथक कर दो और अपने में से दो न्यायकर्ता पुरुषों को शाक्षी कर लो और ईश्वर के लिए ठीक साक्ष्य दो इन बातों से उस व्यक्ति को शिक्षा दी जाती है जो ईश्वर पर और महा प्रलय के दिन पर विश्वास रखता है और जो कोई ईश्वर से डरेगा, वह उसके लिए मुक्ति की स्थिति उत्पन्न कर देगा,

(65:4) और तुम्हारी स्त्रियां जो रजोधर्म से निराश हो चुकी है और तुमको शंका हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिनको अभी रजोधर्म नहीं आने लगा (उनकी इद्दत भी यही है)

(۴:۱۲۸) اور اگر کسی عورت کو اپنے شوہر کی طرف سے زیادتی یا بے رغبتی کا اندیشہ ہو تو میاں بیوی پر کچھ گناہ نہیں کہ آپس میں کسی قرارداد پر صلح کرلیں. اور صلح اچھی ہے اور طبیعتیں تو بخل کی طرف مائل ہوتی ہیں اور اگر تم نیکوکاری اور پرہیزگاری کروگے تو اللہ تمہارے سب کاموں سے واقف ہے.

(۴:۱۲۹) (اور اگر ہنگامی حالات کی وجہ سے تم کو ایک سے زیادہ نکاح کرنے پڑیں وہ بھی اس صورت میں جب وہ عورتیں تم کو پسند کریں ۔۴:۳۔ تو) تم ہرگز طاقت نہیں رکھتے کہ ایک سے زائد بیویوں کے درمیان عدل کرسکو، اگر چہ حرص کرو اور اگر نکاح کرنے پڑیں تو ایسا بھی نہ ہو کہ ایک ہی کی طرف ڈھل جاؤ اور دوسری کو (ایسی حالت میں) چھوڑ دو گویا ادھر میں لٹک رہی ہے اور اگر آپس میں موافقت کرلو اور پرہیزگاری کرو تو اللہ بخشنے والا مہربان ہے.

(۴:۱۳۰) اور اگر میاں بیوی ایک دوسرے سے جدا ہو جائیں تو اللہ ہر ایک کو اپنی دولت سے غنی کردے گا اور اللہ بڑی کشائش والا حکمت والا ہے.

(۴:۳۴) مرد عورتوں پر حاکم ہیں اس لئے کہ اللہ نے بعض کو بعض سے افضل بنایا ہے اور اس لئے بھی کہ مرد اپنا مال خرچ کرتے ہیں تو جو نیک بیویاں ہیں وہ مردوں کے حکم پر چلتی ہیں اور ان کے پیٹھ پیچھے اللہ کی حفاظت میں خبرداری کرتی ہیں اور جن عورتوں کی نسبت تمہیں معلوم ہو کہ سرکشی کرنے لگی ہیں تو پہلے ان کو سمجھاؤ پھر ان کے ساتھ سوا ترک کردو. اگر اس پر بھی باز نہ آئیں تو قاعدے سے زدوکوب کرو اور اگر فرمانبردار ہو جائیں تو پھر ان کو ایذا دینے کا کوئی بہانہ مت تلاش کرو. بےشک اللہ سب سے اعلیٰ جلیل القدر ہے.

(۴:۳۵) اور اگر تم کو معلوم ہو کہ میاں بیوی میں ان بن ہے تو ایک منصف مرد کے خاندان سے اور ایک منصف عورت کے خاندان میں سے مقرر کرو وہ اگر صلح کرادینی چاہیں گے تو اللہ ان میں موافقت پیدا کردے گا. کچھ شک نہیں کہ اللہ سب کچھ جانتا اور سب باتوں سے خبردار ہے.

(۳۳:۴۹) مومنو! جب تم مومن عورتوں سے نکاح کرکے ان کو ہاتھ لگانے سے پہلے طلاق دے دو تو تم کو کچھ اختیار نہیں کہ ان سے عدت پوری کراؤ. ان کو نان نفقہ دو اور اچھی طرح رخصت کردو.

(۶۵:۱) اے رسول (مسلمانوں سے کہہ دو کہ) جب تم عورتوں کو طلاق دینے لگو تو ان کو عدت کے لئے طلاق دو اور عدت کا شمار رکھو اور اللہ سے جو تمہارا پروردگار ہے ڈرو. ان کو ایام عدت میں گھروں سے نہ نکالو اور نہ وہ خود نکلیں. ہاں اگر وہ صریح بےحیائی کریں اور یہ اللہ کی حدیں ہیں جو اللہ کی حدوں سے تجاوز کرے گا وہ اپنے آپ پر ظلم کرے گا (اے طلاق دینے والے!) تجھے کیا معلوم شاید اللہ اس کے بعد کوئی (رجعت کی) سبیل پیدا کردے.

(۶۵:۲) پھر جب وہ اپنی میعاد یعنی عدت ختم ہونے کے قریب پہنچ جائیں یا تو ان کو اچھی طرح سے (زوجیت میں) رہنے دو یا اچھی طرح سے علیحدہ کردو. اور اپنے میں سے دو منصف مردوں کو گواہ کرلو. اور اللہ کے لئے درست گواہی دینا. ان باتوں سے اس شخص کو نصیحت کی جاتی ہے جو اللہ پر اور روز آخرت پر ایمان رکھتا ہے اور جو کوئی اللہ سے ڈرے گا وہ اس کے لئے مخلصی کی صورت پیدا کردے گا.

(۶۵:۴) اور تمہاری عورتیں جو حیض سے ناامید ہو چکی ہوں اور تم کو شبہ ہو تو ان کی عدت تین مہینے ہے اور جن کو ابھی حیض نہیں آنے لگا (ان کی عدت بھی یہی ہے)

और गर्भ वाली स्त्रियों की इद्दत शिशु प्रसव तक है और जो ईश्वर से डरेगा ईश्वर उसके कार्य में आसानी उत्पन्न कर देगा.

(65:6) जिन स्त्रियों को तलाक दी गई है (इद्दत के दिनों में) उनको घर रहने को दो, जहां आप रहो अपनी शक्ति के अनुसार और उनको कष्ट न दो ताकि तंग करो उनको, और यदि गर्भ से हों तो उन पर व्यय करो जब तक बच्चे को जन्म दे फिर यदि दूध पिला दें तुम्हारे लिए तो दो उनको उनकी पारिश्रमिक और आपस में सहमती रखो और यदि आपस में झगड़ा करो तो दूध पिलाएगी उसको दूसरी स्त्री.

(65:7) क्षमता वाले को अपनी क्षमता के अनुसार व्यय करना चाहिए और जिसकी जीविका में तंगी हो वह जितना ईश्वर ने उसको दिया है उसके अनुसार व्यय करें ईश्वर किसी को कष्ट नहीं देता, परन्तु उसी के अनुसार जो उसको दिया है और ईश्वर निकट ही तंगी के बाद सम्पन्नता प्रदान करेगा. तलाक (पत्नी परित्याग) खुलआ, भरण पोषण और रूजू से सम्बद्ध आयात लगभग सब ही आ गई पहले यह देखा जाए कि प्रचलित तलाक, भरण पोषण आदि के प्रसंग में क्या है.

(1) एक बैठक में तीन बार तलाक का शब्द कहने से तलाक मान ली गई है.

(2) एक बैठक में तीन बार तलाक कहने को न मानते हुए हर शुद्धता में एक बार तलाक देना उचित माना गया है.

(3) एक बार तलाक देकर तीन महीने तक इद्दत में स्त्री से संधी रूजू का अधिकार दिया गया है और यह रूजू का अधिकार जीवन में दो बार दिया गया है, यदि दो बार रूजू करके तीसरी बार तलाक दी तो इस बार रूजू न होगा तलाक हो जाएगी.

(4) तलाक देने के बाद इद्दत समाप्त होने पर उसी तलाक देने वाले से विवाह उचित माना गया है.

(5) भरण पोषण केवल इद्दत में ही दिया जाता है.

(6) तलाक देते समय और विदा करते समय कुरआन में अंकित आदेश पर व्यवहार नहीं किया जाता.

(7) स्त्री को अपनी ओर से तलाक लेने अर्थात् खुलआ को लगभग समाप्त ही कर रखा है.

कुरआन में अंकित तलाक का नियम प्रचलित रीति से अधिकांश मेल नहीं खाता. और इस रीति को यह कहकर प्रस्तुत किया जाता है कि मुहम्मद स0 ने ऐसे ही बताया है जबकि कुरआन में इस रीति के विपरीत अंकित है तो क्या मुहम्मद स0 कुरआन पर व्यवहार नहीं करते थे (ईश्वर की शरण)? मुहम्मद स0 कुरआन पर व्यवहार करते थे. अतः आपकी हर क्रिया और कथन कुरआन के अनुसार था. अतः तलाक की रीति भी वही बताते थे जो कुरआन में अंकित है और उसी को यहां लिखा जाएगा.

(1) एक बार तीन तलाक देना कुरआन की किसी आयात में अंकित नहीं है एक बार तीन तलाक कहना और उसको मानकर व्यवहार करना कुरआन के विपरीत है. कुरआन में क्या अंकित है वह आयात में लिखा है और यहां उसको ही संबद्ध विधि से लिखा जा रहा है.

सूरत तलाक की आयत 1 और 2 में अंकित है कि जब स्त्री को तलाक दी जाए तो इद्दत के लिए दी जाए और जब इद्दत समाप्त होने को हो तो भलिभांति रीति से रूजू कर लो या विदा कर दो अर्थात् तीन महीने पर ऐसे ही (2:226,227) में शपथ खाने की स्थिति में है कि जो आदमी शपथ खा लेते हैं अपनी स्त्रियों से उनको चार महीने की छूट है. इस समय में नियम से रूजू करें या नियम से

اورحمل والی عورتوں کی عدت وضع حمل تک ہے اور جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کے کام میں سہولت پیدا کرے گا۔

(۶۵:۶) جن عورتوں کو طلاق دی گئی ہے (ایام عدت میں) ان کو گھر دو رہنے کو جہاں آپ رہو اپنی طاقت کے مطابق اور ان کو ایذا نہ دو تا کہ ان کو تنگ کرو۔ اور اگر حاملہ ہوں تو ان پر خرچ کرو جب تک جنیں بچہ۔ پھر اگر دودھ پلا دیں تمہاری خاطر تو دو ان کو ان کی اجرت اور آپس میں موافقت رکھو اور اگر آپس میں ضد کرو تو دودھ پلائے گی اس کو دوسری عورت۔

(۶۵:۷) صاحب وسعت کو اپنی وسعت کے مطابق خرچ کرنا چاہیے۔ اور جس کے رزق میں تنگی ہو وہ جتنا اللہ نے اس کو دیا ہے اس کے موافق خرچ کرے۔ اللہ کسی کو تکلیف نہیں دیتا مگر اسی کے مطابق جو اس کو دیا ہے اور اللہ عن قریب تنگی کے بعد آسانی فراغت بخشے گا۔

طلاق، خلع، نان نفقہ و رجوع سے متعلق آیات تقریباً سب ہی آ گئیں۔

پہلے یہ دیکھا جائے کہ رائج الوقت طلاق و نان نفقہ وغیرہ کے بارے میں کیا ہے؟

(۱) ایک نشست میں تین بار طلاق کا لفظ کہنے سے طلاق مان لی گئی ہے۔

(۲) ایک نشست میں تین بار طلاق کہنے کو نہ مانتے ہوئے ہر پاکی میں ایک بار طلاق دینا درست مانا گیا ہے۔

(۳) ایک بار طلاق دے کر تین مہینے تک عدت میں رجوع کا حق دیا گیا اور یہ رجوع کا حق زندگی میں دوبار دیا گیا ہے۔ اگر دوبار رجوع کر کے تیسری بار طلاق دی تو اس بار رجوع نہ ہوگا، طلاق ہو جائے گی۔

(۴) طلاق دینے کے بعد عدت ختم ہونے پر اسی طلاق دینے والے سے نکاح درست مانا گیا ہے۔

(۵) نان نفقہ صرف عدت میں ہی دیا جاتا ہے۔

(۶) طلاق دیتے وقت اور رخصت کرتے وقت قرآن میں درج حکم پر عمل نہیں کیا جاتا۔

(۷) عورت کو اپنی طرف سے طلاق لینے یعنی خلع کو تقریباً ختم ہی کر رکھا ہے۔

قرآن میں درج طلاق کا قانون رائج الوقت طریقے سے زیادہ تر مطابق نہیں ہے اور اس قاعدے کو یہ کہہ کر پیش کیا جاتا ہے کہ محمدؐ نے ایسے ہی بتایا ہے جب کہ قرآن میں اس طریقے کے خلاف درج ہے تو کیا محمدؐ قرآن پر عمل نہیں کرتے تھے (نعوذ)؟ محمدؐ قرآن پر عمل کرتے تھے اس لئے آپ کا ہر عمل اور قول قرآن کے مطابق تھا۔ اس لئے طلاق کا طریقہ بھی وہی بتاتے تھے جو قرآن میں درج ہے اور اسی کو یہاں لکھا جائے گا۔

(۱) ایک بار تین طلاق دینا قرآن کی کسی آیت میں درج نہیں ہے ایک بار تین طلاق کہنا اور اس کو مان کر عمل کرنا قرآن کے خلاف ہے۔ قرآن میں کیا درج ہے وہ آیات میں درج ہے اور یہاں اس کو ہی مربوط طریقے سے لکھا جا رہا ہے۔

سورت طلاق کی آیت ۱ اور ۲ میں لکھا ہے کہ جب عورت کو طلاق دی جائے تو عدت کے لئے دی جائے اور جب عدت ختم ہونے کو ہو تو بھلی طرح رجوع کر لو یا رخصت کر دو یعنی تین مہینے پر۔ ایسے ہی (۲:۲۲۶، ۲۲۷) میں قسم کھانے کی صورت میں ہے کہ جو آدمی قسم کھا لیتے ہیں اپنی عورتوں سے ان کو چار مہینے کی مہلت ہے اس عدت میں قاعدے سے رجوع کریں یا قاعدے سے

समय समाप्त होने पर विदा कर दें.

आयत (2:228) में भी तलाक देने वाले को तीन कुरू की छूट है यदि पति चाहता है.

आयात उपरोक्त में समय के चक्र में प्रत्यागमन (रूजू) का अधिकार है, किन्तु यह अधिकार बिना रोक नही है अपितु रोक है जो आयात (2:229) में अंकित है.

(2:229) में है कि अत्तलाकुमर्रतान, तलाक केवल दो बार है दो बार का अर्थ है कि जिस तलाक में रूजू का अधिकार है वह दो बार है जैसे ज़ैद ने तलाक दी चाहे एक बार कहा या तीन बार कहा वह एक ही मानी जाएगी और जब से तलाक दी उस समय से इद्दत (समय) आरम्भ हो गई जो तीन माह है इन तीन माह में तलाक देने वाला यदि चाहे तो रूजू कर सकता है. इस इद्दत में यदि ज़ैद ने रूजू कर लिया तो तलाक समाप्त हो गई. एक बार संधी रूजू करने के बाद यदि ज़ैद फिर दूसरी बार तलाक देता है तो इस बार भी समय के क्रम में रूजू का अधिकार है इस बार भी इद्दत में रुजू कर लिया तो तलाक समाप्त हो गई. दोबारा तलाक और दोबारा रुजू करने के बाद यदि ज़ैद फिर कभी तीसरी बार तलाक देता है तो इस बार तलाक हो जाएगी. यह रुजू केवल दोबार का अधिकार है.

दोबार का अधिकार इसलिए है कि यदि आदमी को बिना किसी रोक के हर तलाक देने पर रुजू का अधिकार दे दिया जाता तो आदमी जीवन भर अपनी पत्नी और घर वालो को ब्लिक मेल करता रहता. क्योंकि न तो कोई लड़की वाला यह चाहता है कि मेरी पुत्री को तलाक हो और न ही कोई सज्जन पुत्र वाला यह चहता है कि मेरा पुत्र अपनी पत्नी को तलाक दे. तलाक देने में परिवारों में शत्रुता हो जाती है. कोई व्यक्ति अपना अपमान नही चाहता. अतः हर मूल्य पर दोनों परिवार तलाक देने वाले को प्रसन्न करने के लिए उसकी बात को मानते रहेंगे और वह उनको ब्लैक मेल करता रहेगा अतः ईश्वर ने रुजू का अधिकार केवल दोबार रखा है और उसको ही कहा कि जिस तलाक में रुजू का अधिकार है वह दोबार ही है बार बार नही.

इस का स्पष्टीकरण आयात (2:230) में यूं है फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक दे दे तो अब उसके लिए वैद्य नही (कि वह रुजू करें) जब तक कि वह स्त्री उसके अतिरिक्त दूसरे से विवाह न करे फिर यदि वह भी तलाक दे दे तो इन दोनो को मेल करने में कोई पाप नही....

शब्द दो बार से ही भ्रम हुआ है जिस को यह मान लिया है कि यदि दो बार तलाक कहा तो तलाक तुरन्त नही हुई वह ईद्दत के बाद होगी और यदि तीन बार कहा तो तलाक तुरन्त होगी रुजू का अधिकार नही किन्तु ईश्वर रुजू का अधिकार दे रहा है दो बार और बन्दा छीन रहा है. यह कुरआन की रीति फिक्राह जाफरी में प्रचलित है.

यदि एक साथ तीन बार तलाक कहने से तलाक मान ली जाए जिसमें रुजू का अधिकार नही दिया तो दिन में नमाज पांच समय है और समय के साथ है. यदि कोई आदमी फजर के समय ही पांचों नमाज़ पढ़ ले तो क्या आप मान लेंगे कि नमाज़ अदा हो गई? ऐसा तो नही माना जाएगा क्योंकि नमाज़ तो अपने समय पर ही पढ़ने से अदा होती है. ऐसे ही तलाक भी कुरआन में अंकित नियम से होगी जो ऊपर लिखा है और आयात में अंकित है.

(2) एक बार (बैठक) में तीन तलाकों को बुरा मानते हुए एक दल ने यह रीति बताई है कि रजो धर्म से पवित्र होने के बाद एक तलाक दी

عدت ختم پر رخصت کردیں.

آیت (۲۲۸:۲) میں بھی طلاق دینے والے کو تین قرو کی مہلت ہے اگر شوہر چاہتا ہے.

آیات بالا میں عدت کے دوران رجوع کا حق ہے.لیکن یہ حق بلا روک نہیں ہے بلکہ روک ہے جو آیت (۲۲۹:۲) میں درج ہے.

(۲۲۹:۲) میں ہے کہ [الطلاق مرتٰن] طلاق صرف دوبار ہے. دوبار کا مطلب ہے کہ جس طلاق میں رجوع کا حق ہے وہ دوبار ہے جیسے زید نے طلاق دی چاہے ایک بار کہا یا تین بار کہا وہ ایک ہی مانی جائے گی. اور جب سے طلاق دی اس وقت سے عدت شروع ہوگئی جو تین ماہ ہے ان تین ماہ میں طلاق دینے والا اگر چاہے تو رجوع کرسکتا ہے. اس عدت میں اگر زید نے رجوع کرلیا تو طلاق ختم ہوگئی ایک بار رجوع کرنے کے بعد اگر زید پھر دوسری بار طلاق دیتا ہے تو اس بار بھی عدت کے دوران رجوع کا حق ہے اس بار بھی عدت میں رجوع کرلیا تو طلاق ختم ہوگئی. دوبار طلاق اور دوبار رجوع کرنے کے بعد اگر زید پھر کبھی تیسری بار طلاق دیتا ہے تو اس بار رجوع کا حق نہیں. طلاق ہو جائے گی. یہ رجوع صرف دوبار کا حق ہے.

دوبار کا حق اس لئے ہے کہ اگر آدمی کو بلا کسی روک کے ہر بار طلاق دینے پر رجوع کا حق دیدیا جاتا تو آدمی زندگی بھر اپنی بیوی اور گھر والوں کو بلیک میل کرتا رہتا کیوں کہ نہ تو کوئی لڑکی والا یہ چاہتا ہے کہ میری لڑکی کو طلاق ہو اور نہ ہی کوئی شریف لڑکے والا یہ چاہتا ہے کہ میرا لڑکا اپنی بیوی کو طلاق دے. طلاق دینے میں خاندانوں میں دشمنی ہو جاتی ہے کوئی آدمی اپنی بے عزتی نہیں چاہتا. اس لئے ہر قیمت پر دونوں خاندان طلاق دینے والے کو راضی کرنے کے لئے اس کی بات کو مانتے رہیں گے. اور وہ ان کو بلیک میل کرتا رہے گا. اس لئے اللہ نے رجوع کا حق صرف دوبار رکھا ہے اور اس کو ہی کہا کہ جس طلاق میں رجوع کا حق ہے وہ دوبار ہی ہے بار بار نہیں.

اس کی وضاحت آیت (۲۳۰:۲) میں یوں آئی ہے. پھر اگر اس کو (تیسری بار) طلاق دے دے تو اب اس کے لئے حلال نہیں (کہ وہ رجوع کرے) جب تک کہ وہ عورت اس کے سوا دوسرے سے نکاح نہ کرلے پھر اگر وہ بھی طلاق دے دے تو ان دونوں کو میل کرنے میں کوئی گناہ نہیں....

لفظ دوبار سے ہی دھوکا لگا ہے جس کو یہ مان لیا ہے کہ اگر دوبار طلاق کہا تو طلاق فوراً نہیں ہوئی وہ عدت کے بعد ہوگی اور اگر تین بار کہا تو طلاق فوراً ہوگئی. رجوع کا حق نہیں. لیکن اللہ رجوع کا حق دے رہا ہے دوبار تک اور بندہ چھین رہا ہے یہ قرآن کا طریقہ فقہ جعفری میں رائج ہے.

اگر ایک ساتھ تین بار طلاق کہنے سے طلاق مان لی جائے جس میں رجوع کا حق نہیں دیا تو دن میں نماز پانچ وقت ہے اور وقت کے ساتھ ہیں. اگر کوئی آدمی فجر کے وقت ہی پانچوں نماز پڑھ لے تو کیا آپ مان لیں گے کہ نماز ادا ہوگئیں؟ ایسا تو نہیں مانا جائے گا کیونکہ نماز تو اپنے وقت پر ہی پڑھنے سے ادا ہوتی ہے. ایسے ہی طلاق بھی قرآن میں درج قاعدے سے ہوگی. جو اوپر لکھا ہے اور آیات میں درج ہے.

(۲) ایک نشست میں تین طلاقوں کو برا مانتے ہوئے ایک جماعت نے یہ طریقہ بتایا ہے کہ حیض سے پاک ہونے کے بعد ایک طلاق دی جائے. پھر انتظار کیا

जाए फिर प्रतीक्षा की जाए संधी रुजू का, यदि न हो सके तो दूसरी पवित्रता में दूसरी तलाक दी जाए फिर प्रतीक्षा हो संधी रुजू की यदि अब भी न हो सके तो तीसरी पवित्रता में तीसरी तलाक दे दी जाए और इद्दत जो तीन माह हैं में स्त्री को विदा कर दिया जाए यह रीति क्यों प्रचलित की? इसके लिए कथन मिल गया अवलोकन हो.

श्रीमान महमूद इब्न लबीद फरमाते हैं कि मुहम्मद स0 को एक व्यक्ति की सूचना दी गई कि उसने अपनी पत्नी को एक ही समय में तीन तलाक दे दी, आप इस सूचना को सुनते ही रोष के कारण खड़े हो गए और कहा कि मेरी उपस्थिति में ही ईश्वर की पुस्तक के साथ खेल किया जाता है, इस पर एक व्यक्ति खड़ा होकर कहने लगा कि क्या रसूल अल्लाह उस व्यक्ति को वध न कर दूं (निसाई), एक साथ तीन तलाक देने पर मुहम्मद स0 रूष्ट हुए? इसलिए कि ईश्वर के विधान से हटकर यह हुआ था, परन्तु यह एक साथ तीन तलाकों को कब और क्यों माना गया, इसका भी अवलोकन करें.

बताया जाता है कि श्रीमान उमर र0 के काल में तलाकों की भरमार हो गई तो श्रीमान उमर र0 ने यह तलाक मुग़ल्लज़ा प्रचलित कर दी जबकि यह तलाक न मुहम्मद स0 के काल में थी न अबूबकर र0 के समय में थी और उमर र0 के आरम्भ दो ढाई साल तक न थी, बाद को आदमियों को डराने के लिए यह तलाक मुग़ल्लज़ा अर्थात् एक साथ तीन तलाकें उमर र0 ने प्रचलित कर दी, परन्तु आदमी तब भी न डरे और आज तक बराबर इसका चलन है, इस प्रकार हर काल में जिस नियम को मुसलमान न माने समय का शासक उनकी इच्छा के अनुसार नियम बना देगा और धीरे-धीरे कुरआन के कानून समाप्त होकर रह जाएँगे जैसा के हमारे सामने है.

प्रश्न उत्पन्न होता है क्या उमर र0 ईश्वर के विधान को बदलने का अधिकार रखते थे? ऐसा तो नहीं है अपितु उमर र0 सच्चे आस्तिक थे, ईश्वर और रसूल का अनुकरण करते थे, इस प्रकार की बातें बनाकर उन पर एक आरोप लगाया है जो बाद को इच्छा पूजकों ने नियम बनाकर उमर र0की ओर सम्बन्धित कर दिए दूसरे अर्थ में इसको अपमान भी कह सकते हैं.

एक बात यह कि क्या मुहम्मद स0 के निकट के मुसलमान इस प्रकार कुरआन के विपरीत कार्य कर सकते थे कदापि नहीं, कुरआन के प्रतिकूल नियम बनाकर कार्य करना बहुत बाद की बात है आज उसको ही ठीक माना जा रहा है.

विधि नं0 2- जिसमें लिखा गया है कि तीन पवित्रता में तीन तलाक दी जाएं इस पर भी विचार किया जाए

ईश्वर कहता है कि तलाक इद्दत (समय) के लिए दी जाए अर्थात् तलाक देने के बाद तीन माह में रूजू हो सकता है और वह भी दो बार, यदि संधी (रूजू) हो गया तो तलाक समाप्त हो जाएगी, रूजू न हुआ तो तलाक हो जाएगी तीन माह के समाप्त पर.

अब देखा जाए जब स्त्री रज से पवित्र हो गई तो तलाक दी इस तलाक का समय तीन माह है, दूसरा रज आने के बाद जब स्त्री पवित्र हो गई तो फिर दूसरी तलाक दी तो इस तलाक की इद्दत भी तलाक देने से आरम्भ हो गई जो ईश्वर के आदेश के अनुसार तीन माह है, फिर तीसरे रज की पवित्रता के बाद तीसरी तलाक दी, इस तलाक का समय भी आरम्भ हो गया, दो इद्दत पहले से ही दौड़ रही हैं, तीसरी इस दौड़ में और सम्मिलित हो गई.

ईश्वर के आदेशानुसार हर तलाक का समय तीन माह है, तो इन तीनों तलाक का समय भी तीन माह माना जाएगा, पहली तलाक यदि प्रथम मोहर्रम को दी तो इसकी इद्दत प्रथम रबी उस्सानी को समाप्त होगी, दूसरी तलाक दूसरी पवित्रता की प्रथम सफर को दी तो

جائے رجوع کا، اگر نہ ہو سکے تو دوسری پاکی میں دوسری طلاق دی جائے پھر انتظار ہو رجوع کا اگر اب بھی نہ ہو سکے تو تیسری پاکی میں تیسری طلاق دیدی جائے اور عدت جو تین ماہ ہے میں عورت کو رخصت کر دیا جائے یہ طریقہ کیوں رائج کیا؟ اس کے لئے روایت مل گئی ملاحظہ ہو۔

حضرت محمود ابن لبید فرماتے ہیں کہ محمدؐ کو ایک شخص کی خبر دی گئی کہ اس نے اپنی بیوی کو ایک ہی وقت میں تین طلاقیں دیدیں. آپ اس خبر کو سنتے ہی غصہ کی وجہ سے کھڑے ہو گئے. اور پھر فرمایا کہ کیا میری موجودگی میں ہی کتاب اللہ کے ساتھ کھیل کیا جاتا ہے اس پر ایک شخص کھڑا ہو کر کہنے لگا کہ کیا رسول اللہ اس شخص کو قتل نہ کر دوں (نسائی) ایک ساتھ تین طلاق دینے پر محمدؐ ناراض ہوئے؟ اس لئے کہ اللہ کے قانون سے ہٹ کر یہ ہوا تھا مگر یہ ایک ساتھ تین طلاق کو کب اور کیوں مانا گیا اس کو ملاحظہ کریں۔

بتایا یہ جاتا ہے کہ حضرت عمرؓ کے زمانہ میں طلاقوں کی بھرمار ہو گئی تو حضرت عمرؓ نے یہ طلاق مغلظہ رائج کر دی جبکہ یہ طلاق مغلظہ نہ محمدؐ کے زمانے میں تھی نہ ابوبکرؓ کے زمانہ میں تھی اور عمرؓ کے شروع ڈھائی سال تک نہ تھی. بعد کو آدمیوں کو ڈرانے کے لئے یہ طلاق مغلظہ یعنی ایک ساتھ تین طلاقیں عمرؓ نے رائج کر دیں. مگر آدمی تب بھی نہ ڈرے اور آج تک برابر اس کا رواج ہے اس طرح ہر زمانے میں جس قانون کو مسلمان نہ مانیں حاکم وقت ان کی مرضی کے مطابق قانون بنا دے گا. اور رفتہ رفتہ قرآن کے قانون ختم ہو کر رہ جائیں گے جیسا کہ ہمارے سامنے ہے۔

سوال پیدا ہوتا ہے کیا عمرؓ اللہ کے قانون کو بدلنے کا اختیار رکھتے تھے؟ ایسا تو نہیں ہے بلکہ عمرؓ سچے مومن تھے اللہ اور رسولؐ کی اطاعت کرتے تھے اس طرح کی باتیں بنا کر ان پر ایک الزام لگایا ہے جو بعد کو نفس پرستوں نے قانون بنا کر عمرؓ کی طرف منسوب کر دیا ہے۔ دوسرے معنوں میں اس کو تبرا بھی کہہ سکتے ہیں

ایک بات یہ کہ کیا محمدؐ کے قریب کے مسلمان اس طرح قرآن کے خلاف عمل کر سکتے تھے؟ ہرگز نہیں قرآن کے خلاف قانون بنا کر عمل کرنا بہت بعد کی بات ہے. آج اس کو ہی درست مانا جا رہا ہے۔

طریقہ نمبر (۲) جس میں لکھا گیا ہے کہ تین طہر میں تین طلاقیں دی جائیں اس پر غور کیا جائے

اللہ کہتا ہے کہ طلاق عدت کے لئے دی جائے یعنی طلاق دینے کے بعد تین ماہ میں رجوع ہو سکتا ہے اور وہ بھی دوبار. اگر رجوع ہو گیا تو طلاق ختم ہو جائے گی رجوع نہ ہوا تو طلاق ہو جائے گی تین ماہ کے ختم پر۔

اب دیکھا جائے جب عورت حیض سے پاک ہو گئی تو طلاق دی اس طلاق کی عدت تین ماہ ہے دوسرا حیض آنے کے بعد عورت پاک ہو گئی تو پھر دوسری طلاق دی تو اس طلاق کی عدت بھی طلاق دینے سے شروع ہو گئی جو اللہ کے حکم کے مطابق تین ماہ ہے. پھر تیسرے حیض کی پاکی کے بعد تیسری طلاق دی اس طلاق کی عدت بھی شروع ہو گئی. دو عدت پہلے سے ہی ڈوڑ رہی ہیں. تیسری اس دوڑ میں اور شامل ہو گئی

اللہ کے حکم کے مطابق ہر طلاق کی عدت تین ماہ ہے تو ان تینوں طلاق کی عدت بھی تین ماہ مانی جائے گی. پہلی طلاق اگر یکم محرم کو دی تو اس کی عدت یکم ربیع الثانی کو ختم ہو گئی. دوسری طلاق دوسرے طہر کی یکم صفر کو دی تو اس کی عدت

इसका समय ईश्वर के आदेश के अनुसार प्रथम जमादिल अव्वल को समाप्त होता है, तीसरी पवित्रता की तीसरी तलाक प्रथम रबीउलअव्वल को दी तो इसकी इद्दत प्रथम जमादीस्सानी को समाप्त होती है परन्तु हमारी विकसित बुद्धि ने इन सबकी इद्दत प्रथम रबीउस्सानी को ही समाप्त कर दी, इस प्रकार पहली तलाक की इद्दत तीन माह दूसरी की दो माह तीसरी की एक माह ही होती है क्या यह दो माह और एक माह का समय कुरआन से प्रमणित है? कुरआन में तो तलाक का समय तीन माह है,

कुरआन में अंकित इद्दत और स्वंय बनाई हुई में बहुत अन्तर है, अतः अपनी बनाई हुई तलाक की रीति भी अनुचित है, और पहली तलाक के बाद दूसरी तलाक तब ही दी जा सकती है जब पहले रुजू कर लिया हो और फिर कभी तलाक दी जाएं किन्तु यह तलाक पर तलाक कुरआन में कहां है और कहां बिना रुजु के दूसरी तलाक को लिखा है? यदि कोई कुरआन में ऐसा आदेश है तो मुझे भी बताया जाए जिस से मेरी भी भ्रान्ति दूर हो जाए

(3) कुरआन के अनुसार तलाक देने की उचित प्रणाली यह है कि एक बार तलाक देकर तीन माह तक इद्दत में रुजू का अधिकार जीवन में दो बार है यदि दो बार रुजू करके तीसरी बार तलाक दी तो इस बार रुजू का अधिकार नही है तलाक हो जाएगी, इस का विस्तार पहले लिख दिया है,

(4) तलाक देने के बाद इद्दत समाप्त होने पर उसी तलाक देने वाले से विवाह उचित माना गया है,

आयत 2:232 का अनुवाद मौलाना महमूदुलहसन साहब फिर पूरा कर चुके अपनी इद्दत को तो अब न रोको उन को इस से कि विवाह करले अपने उन्ही पतियों से जब कि प्रसन्न हो जावें आपस में, फायदा-6

फायदा 6-व्याख्या मौलाना शब्बीर अहमद साहब फायदा 6 पेज 46,

एक स्त्री को उसके पति ने एक या दो तलाक दी और फिर इद्दत में संधी भी न की जब समय समाप्त हो गया तो दूसरे लोगों के साथ प्रथम पति ने भी विवाह का संदेश दिया स्त्री भी इस पर सहमत थी परन्तु स्त्री के भाई को क्रोध आया और विवाह को रोक दिया इस पर यह आदेश उतरा कि स्त्री की इच्छा और कल्याण को दृष्टिगत रखो उसी अनुसार विवाह होना चाहिए अपने किसी विचार और अप्रसन्नता को प्रवेश मत दो और यह सम्बोधन सामान्य है विवाह रोकने वालों को सबको चाहे प्रथम पति जिसने कि तलाक दी है वह दूसरी जगह स्त्री को विवाह करने से रोके या स्त्री के अभिभावक और उत्तराधिकारी स्त्री को पहले पति से या किसी दूसरे स्थान पर विवाह करने से बाधक हों सबको रोकने से वर्जन आ गई, हां यदि कोई अनुचित बात हो उदाहरणतः भिन्न कफू में स्त्री विवाह करने लगे या पहले पति की इद्दत के अन्दर किसी दूसरे से विवाह करना चाहे तो निःसन्देह ऐसे विवाह से रोकने का अधिकार है बिलमारूफ कहने का यही अर्थ है,

अनुवाद मौलाना महमूदुल हसन साहब और व्याख्या मौलाना शब्बीर अहमद साहब और यही अनुवाद और व्याख्या मौलाना मुहम्मद जूनागढ़ी व मौलाना सलाह उद्दीन यूसुफ साहब की लिखी गई है और अधिकांश आलिम यही आस्था रखते है, परन्तु यह अनुवाद और व्याख्या कुरआन के अनुसार नही है और इस अनुचित अनुवाद से ही ज्ञात नही कितने विवाह करा दिये जो ईश्वर के कुरआन से विपरीत है कुरआन की आयत (2:230) में है फिर यदि पति दो बार तलाक देकर दो बार रुजू कर चुका हो इद्दत के अन्दर और फिर उसने तीसरी बार तलाक दी हो

اللہ کے حکم کے مطابق یکم جمادالاوّل کو ختم ہو جاتی ہے تیسرے طہور کی تیسری طلاق یکم ربیع الاول کو دی تو اس کی عدت یکم جمادی الثانی کو ختم ہوتی ہے مگر ہمارے ترقی یافتہ ذہن نے ان سب کی عدت یکم ربیع الثانی کو ہی ختم کر دی. اس طرح پہلی طلاق کی عدت ۳ ماہ دوسری کی دو ماہ تیسری کی ایک ماہ ہی ہوتی ہے کیا یہ دو ماہ اور ایک ماہ کی عدت قرآن سے ثابت ہے؟ قرآن میں تو عدت طلاق تین ماہ ہے.

قرآن میں درج عدت اور خود بنائی ہوئی میں بہت فرق ہے. اس لئے

اپنا بنایا ہوا طلاق کا طریقہ بھی غلط ہے اور پہلی طلاق کے بعد دوسری طلاق تب ہی دی جا سکتی ہے جب پہلے رجوع کر لیا ہو اور پھر کبھی طلاق دی جائے لیکن یہ طلاق پر طلاق قرآن میں کہاں ہے اور کہاں بغیر رجوع کے دوسری طلاق کو لکھا ہے؟ اگر کوئی قرآن میں ایسا حکم ہے تو مجھے بھی بتایا جائے جس سے میری بھی غلط فہمی دور ہو جائے

(۳) قرآن کے مطابق طلاق دینے کا صحیح طریقہ یہ ہے کہ ایک بار طلاق دے کر تین مہینے تک عدت میں رجوع کا حق دیا گیا ہے اور یہ رجوع کا حق زندگی میں دو بار ہے اگر دو بار رجوع کر کے تیسری بار طلاق دی تو اس بار رجوع کا حق نہیں ہے طلاق ہو جائے گی اس کی تفصیل پہلے لکھ دی گئی ہے.

(۴) طلاق دینے کے بعد عدت ختم ہونے پر اسی طلاق دینے والے سے نکاح درست مانا گیا ہے

آیت (۲:۲۳۲) کا ترجمہ مولانا محمود الحسن صاحب ...پھر پورا کر چکیں اپنی عدت کو تو اب نہ روکو ان کو اس سے کہ نکاح کر لیں اپنے انہی خاوندوں سے جبکہ راضی ہو جاویں آپس میں ف ۶

ف ۶ تفسیر مولانا شبیر احمد صاحب ص ۴۶ ایک عورت کو اس کے خاوند نے ایک یا دو طلاق دی اور پھر عدت میں رجعت بھی نہ کی جب عدت ختم ہو چکی تو دوسرے لوگوں کے ساتھ زوج اوّل نے بھی نکاح کا پیام دیا. عورت بھی اس پر راضی تھی مگر عورت کے بھائی کو غصہ آیا اور نکاح کو روک دیا. اس پر یہ حکم اترا کہ عورت کی خوشنودی اور بہبودی کو ملحوظ رکھو. اس کے موافق نکاح ہونا چاہیے اپنے کسی خیال اور ناخوشی کو دخل مت دو. اور یہ خطاب عام ہے نکاح سے روکنے والوں کو سب کو خواہ زوج اوّل جس نے کہ طلاق دی ہے. وہ دوسری جگہ عورت کو نکاح کرنے سے روکے یا عورت کے ولی اور وارث عورت کو پہلے خاوند سے یا کسی دوسری جگہ نکاح کرنے سے مانع ہوں سب کو روکنے سے ممانعت آ گئی ہاں اگر خلاف قاعدہ کوئی بات ہو مثلاً غیر کفو میں عورت نکاح کرنے لگے یا پہلے خاوند کی عدت کے اندر کسی دوسرے سے نکاح کرنا چاہے تو بے شک ایسے نکاح سے روکنے کا حق ہے. بالمعروف فرمانے کا یہی مطلب ہے.

ترجمہ مولانا محمود الحسن صاحب اور تفسیر مولانا شبیر احمد صاحب اور یہی ترجمہ اور تفسیر مولانا محمد جونا گڑھی و مولانا صلاح الدین یوسف صاحب کی لکھی گئی ہے اور کافی عالم یہی عقیدہ رکھتے ہیں. مگر یہ ترجمہ اور تفسیر قرآن کے مطابق نہیں ہے اور اس غلط ترجمہ سے ہی نہ معلوم کتنے نکاح کرا دیئے جو اللہ کے قرآن کے خلاف ہیں.

قرآن کی آیت (۲:۲۳۰) میں ہے پھر اگر شوہر دو بار طلاق دے کر دو بار رجوع کر چکا ہو عدت کے اندر اور پھر اس نے تیسری بار طلاق دی تو جب

तो जब तक वह स्त्री किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह न करे पहले पति पर वैध न होगी, तलाक देने वाले आदमी को इद्दत के चक्र में ही रूजू का अधिकार है वह भी जीवन में दो बार, दो बार रूजू के बाद यदि तीसरी बार तलाक दी तो इस बार रूजू का अधिकार नही.

(2:232) में जिसके अन्तर्गत आलिमों ने तलाक देने वाले पति से ही इद्दत व्यतीत होने के बाद विवाह की आज्ञा दी है इसमें ईश्वर उन व्यक्तियों के लिए ही बता रहा है जिन्होंने तलाक दी अवलोकन हो-

(2:232) और जब तुम स्त्रियों को तलाक दे चुको और उनकी इद्दत पूरी हो जाए तो उनको उनके दूसरे पतियों के साथ जब वह आपस में (जब तुम आपस में नही) वैध रीति से सहमत हो जाएं विवाह करने से मत रोको, इस आदेश से उस व्यक्ति को उपदेश दिया जाता है जो तुम में से ईश्वर और प्रलोक पर विश्वास रखता हो.

आयात में स्पष्ट है कि तलाक देने वालों से कहा जा रहा है कि तुमने इद्दत में रूजू नही किया, अतः वह मुतल्लका स्त्री अपना विवाह किसी और से करती है तो तुम न रोको, आयात मं तलाक देने वाले के लिए जमीर (सर्वनाम) "तुम" आई है और विवाह करने वालों के लिए "तुम" आई है इतना स्पष्ट आदेश होने पर भी उन्हीं तलाक देने वाले व्यक्तियों से विवाह की आज्ञा दी जा रही है और वह भी इद्दत व्यतीत होने के बाद तो क्या यह आज्ञा कुरआन से खेल के यथार्थ नहीं है? बिलकुल कुरआन से खेल है इसलिए ही ईश्वर हमसे रुष्ट है जबकि तलाक वाली आयात के मध्य में 'सलातुवुस्ता' का उल्लेख कर दिया है

(5) जिस स्त्री को तलाक दी जाती है उसको नान नफ्क़ा केवल इद्दत तक ही दिया जाता है इद्दत के बाद नही, मगर यह स्त्री पर अत्याचार है और कुरआन के आदेश के विरुद्ध है, तलाक दी हुई स्त्री इद्दत के चक्र में तो मुतल्लका होती ही नही क्योंकि इस समय में रूजू का अधिकार है, जब इद्दत समाप्त हो जाती है रूजू का अधिकार समाप्त हो जाता है, तब वह स्त्री मुतल्लका होती है, इद्दत के चक्र में तो आयात में स्पष्ट आदेश है कि वह स्त्री उसी घर में रहेगी और वहीं खाएगी, उसको निकाला नही जाएगा, यदि वह स्वयं ही निकल जाये तो अलग बात है क्या इस आदेश के अतिरिक्त कुरआन में कोई और आदेश नही जिसमें नान नफ्क़ा का स्पष्टीकरण होता हो, यदि नही तो इद्दत के बाद नान नफ्क़ा न देना आपकी बात ठीक है यदि कुरआन में नान नफ्क़ा देने का आदेश है तो आपकी बात अनुचित है कुरआन में क्या है अवलोकन हो-

(2:236) यदि तुम इससे पहले कि औरतों को हाथ लगाओ या उनका मेहर निर्धारित करो उन्हें तलाक दे दो तो तुम पर कोई दोष नही किन्तु नियम के अनुसार उन्हें जीविका दो, सामर्थ्य वाला अपनी स्थिति के अनुसार और निर्धन अपनी स्थिति के अनुसार सदाचारियों पर अनिवार्य है कि मुतल्लका को नान नफ्क़ा दे अर्थात जीविका दे

(2:241) जिन स्त्रियों को तलाक दे दी गई हो, उनके जीवन यापन के लिए उचित प्रबन्ध किया जाये अर्थात् जीविका दिया जाये (जब तक वह मुतल्लका है) यह अनिवार्य है ईश्वर से डरने वालों पर.

(2:242) इस प्रकार ईश्वर तुम्हारे लिए अपने नियम खोल खोलकर वर्णन करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो (उनके पालन में).

यह है कुरआन का आदेश इसलिए मुतल्लका स्त्री को जब तक वह जीवित है या दूसरा विवाह नही करती जीविका दी जाएगी, यदि नही दिया जा रहा तो यह स्त्रियों पर अत्याचार है और ईश्वर के नियम की अवज्ञा है और विडम्बना यह है कि यदि भारत के न्यायालय

تک وہ عورت کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرے پہلے شوہر پر حلال نہ ہوگی۔ طلاق دینے والے آدمی کو عدت کے دوران ہی رجوع کا حق ہے وہ بھی زندگی میں دوبار۔ دوبار رجوع کے بعد اگر تیسری بار طلاق دے تو اس بار رجوع کا حق نہیں۔

(۲:۲۳۲) میں جس کے تحت عالموں نے طلاق دینے والے شوہر سے ہی عدت گزرنے کے بعد نکاح کی اجازت دی ہے۔ اس میں اللہ ان آدمیوں کے لئے ہی بتارہا ہے جنہوں نے طلاق دی ملاحظہ ہو۔

(۲:۲۳۲) اور جب تم عورتوں کو طلاق دے چکو اور ان کی عدت پوری ہو جائے تو اُن کو اُن کے دوسرے شوہروں کے ساتھ جب وہ آپس میں (جب تم آپس میں نہیں) جائز طور پر راضی ہو جائیں نکاح کرنے سے مت روکو۔ اس حکم سے اس شخص کو نصیحت کی جاتی ہے جو تم میں سے اللہ اور روز آخرت پر یقین رکھتا ہو......

آیت میں صاف ہے کہ طلاق دینے والوں سے کہا جارہا ہے کہ تم نے تو طلاق دے دی اور عدت پوری ہوگئی تم نے عدت میں رجوع نہیں کیا۔ اس لئے وہ مطلقہ عورت اپنا نکاح کسی اور سے کرتی ہے تو تم نہ روکو۔ آیت میں طلاق دینے والے کے لئے ضمیر "تم" آئی ہے اور نکاح کرنے والوں کے لئے ضمیر ھم آئی ہے۔ اتنا صاف حکم ہونے پر بھی انہی طلاق دینے والے آدمیوں سے نکاح کی اجازت دی جارہی ہے اور وہ بھی عدت گزرنے کے بعد تو کیا یہ اجازت قرآن سے کھیل کے مترادف نہیں ہے؟ بالکل قرآن سے کھیل ہے اس لئے ہی اللہ ہم سے ناراض ہے جب کہ طلاق والی آیات کے درمیان ہی صلوٰۃ الوسطیٰ کا ذکر بھی کر دیا ہے۔

(۵) جس عورت کو طلاق دی جاتی ہے اس کو نان نفقہ صرف عدت تک ہی دیا جاتا ہے عدت کے بعد نہیں۔ مگر یہ عورت پر ظلم ہے اور قرآن کے حکم کی خلاف ورزی ہے طلاق دی ہوئی عورت عدت کے درمیان تو مطلقہ ہوتی ہی نہیں، کیونکہ اس عرصے میں رجوع کا حق ہے۔ جب عدت ختم ہو جاتی ہے رجوع کا حق ختم ہو جاتا ہے تب وہ عورت مطلقہ ہوتی ہے۔ عدت کے دوران میں تو آیات میں صاف حکم ہے کہ وہ عورت اسی گھر میں رہے گی، اور وہیں کھائے گی۔ اس کو نکالا نہیں جائے گا اگر وہ خود ہی نکل جائے تو الگ بات ہے۔ کیا اس حکم کے علاوہ قرآن میں کوئی اور حکم نہیں جس میں نان نفقہ کی وضاحت ہوتی ہو۔ اگر نہیں تو عدت کے بعد نان نفقہ نہ دینا آپ کی بات ٹھیک ہے اگر قرآن میں نان نفقہ دینے کا حکم ہے تو آپ کی بات غلط ہے قرآن میں کیا ہے ملاحظہ ہو۔

(۲:۲۳۶) اگر تم اس سے پہلے کہ عورتوں کو ہاتھ لگاؤ یا ان کا مہر مقرر کرو انہیں طلاق دیدو تو تم پر کوئی الزام نہیں لیکن دستور کے مطابق انہیں نان نفقہ (متاع) دو مقدور والا اپنی حیثیت کے مطابق دے اور تنگ دست اپنی حیثیت کے مطابق نیک کرداروں پر واجب ہے کہ مطلقہ کو نان نفقہ دیں۔

(۲:۲۴۱) جن عورتوں کو طلاق دیدی گئی ہو۔ ان کے گزارے کے لئے مناسب انتظام کیا جائے یعنی نان نفقہ دیا جائے (جب تک وہ مطلقہ ہیں) یہ واجب ہے اللہ سے ڈرنے والوں پر

(۲:۲۴۲) اسی طرح اللہ تمہارے لئے اپنے احکام کھول کھول کر بیان کرتا ہے تاکہ تم عقل سے کام لو (ان کی ادائیگی میں)

یہ ہے قرآن کا حکم اس لئے مطلقہ عورت کو جب تک وہ زندہ ہے یا دوسرا نکاح نہیں کرتی نان نفقہ دیا جائے گا۔ اگر نہیں دیا جارہا ہے تو یہ عورتوں پر ظلم ہے اور اللہ کے قانون کی خلاف ورزی ہے اور غضب یہ ہے کہ اگر بھارت کے

कुरआन के अनुसार जीविका देने का आदेश पारित करते हैं तो आलिम इस निर्णय पर धरती आकाश एक कर देते हैं और कहते हैं कि हमारे निजि विधान में हस्तक्षेप हो रहा है और स्त्री को जीविका नही देने देते, अब स्वयं ही निर्णय करें कि क्या भारत का न्यायालय कुरआन की अवज्ञा कर रहा है या स्वयं मुसलमान?

(6) तलाक देते समय और विदा करते समय कुरआन में अंकित आदेश पर व्यवहार नही किया जाता, अवलोकन हो- जब विवाह किया जाता है तो विवाह से पहले स्त्री की सहमती अनिवार्य है, यदि स्त्री ने विवाह के लिए सहमती दी तो विवाह होगा अन्यथा नही, इसी प्रकार तलाक देते समय भी स्त्री से ज्ञात करना उसको सहमत करना अनिवार्य है, जैसे खुलआ के समय स्त्री आदमी को सहमत करेगी और तलाक का क्या विधान है वह निम्नलिखित है-

(4:35) और यदि तुमको ज्ञात हो कि पति पत्नी में बिगाड़ है तो एक न्यायिक पुरुष के परिवार से और एक न्यायिक स्त्री के परिवार से नियुक्त करो, वह यदि संधि करा देना चाहेंगे तो ईश्वर उनमें संधि कर देगा कुछ संदेह नही कि ईश्वर सब कुछ जानता और सब बातों से सचेत है,

(65:1) (ऐ नबी मुसलमानों से कह दो) जब तुम स्त्रियों को तलाक दो तो उनको इद्दत के लिए तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो और अपने रब से डरते रहो.....

(65:2) फिर जब वह अपनी अवधि को पहुंच जाएं तो उनको या तो अच्छी प्रकार से रहने दो (अपने विवाह में) या अच्छी प्रकार से विदा कर दो और अपने में से दो न्याय प्रिय पुरुषों को साक्षी कर लो और ईश्वर के लिए उचित साक्ष्य देना....

यह है तलाक की विधि, कि यदि पति पत्नी में झगड़ा हो तो दो पुरुष नियुक्त करके उनमें संधि करा दो, यदि संधि नही होती है तो तलाक दो इद्दत के लिए और साक्षियों के सामने और जब विदा करो अवधि के बाद तो भी साक्षी होने हैं और उन साक्षियों के साथ एक न्यायाधीश भी होना है जैसे (65) में मुहम्मद से कहा जा रहा है अतः मुहम्मद न्यायाधीश के स्थान को पूरा करने के लिए कोई धर्मवादी आदमी जो न्यायाधीश हो वह यह काम करेगा और साक्षी का होना अनिवार्य है, इस्लाम हर कार्य के लिए साक्षी नियुक्त करता है और लिखने के लिए भी सावधान करता है,

(7) कुरआन ने स्त्री के लिए खुलआ की आज्ञा दी है परन्तु आज खुलआ को लगभग समाप्त कर रखा है और उसको बुरा जाना जाता है, क्या आदेश है-

(2:229)...हां यदि पति पत्नी को भय हो कि वह ईश्वर की सीमाओं को स्थापित नही रख सकेंगे तो यदि स्त्री (पति के हाथ से) मुक्ति पाने के बदले में प्रतिदान दे डाले तो दोनों पर कुछ पाप नही, यह ईश्वर की (निर्धारित की हुई) सीमाऐं हैं इनसे बाहर न निकलना और जो लोग ईश्वर की सीमाओं से बाहर निकल जाऐंगे वह पापी होंगे (4:128),

यह हुआ तलाक का नियम मानो जब आदमी तलाक देगा तब भी नियमानुसार और जब स्त्री खुलआ लेगी तब भी नियमानुसार, ईश्वर ने दोनों को अधिकार दिया है परन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जो कार्य करो वह ईश्वर से डरते हुए उसके विधान के अनुसार करो, यदि ईश्वर के विधान के अनुसार कार्य होगा तो अशांति नही होगी, संक्षिप्त में तलाक के विषय मं लिखा जा रहा है,

एक बैठक में तीन तलाक एक ही मानी जाएगी यही इमाम

کورٹ قرآن کے مطابق نان نفقہ دینے کا حکم صادر کرتے ہیں تو علماء اس فیصلہ پر زمین وآسمان ایک کر دیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہمارے نجی قانون میں مداخلت ہورہی ہے اور عورت کو نان نفقہ نہیں دینے دیتے. اب خود ہی فیصلہ کریں کہ کیا بھارت کی عدالت قرآن کی خلاف ورزی کر رہی ہے یا خود مسلمان؟

(۶) طلاق دیتے وقت اور رخصت کرتے وقت قرآن میں درج حکم پر عمل نہیں کیا جاتا ملاحظہ ہو.

جب نکاح کیا جاتا ہے تو نکاح سے پہلے عورت کی رضامندی ضروری ہے اگر عورت نے نکاح کے لئے ہاں کر دی تو نکاح ہوگا ورنہ نہیں. اسی طرح طلاق دیتے وقت بھی عورت سے معلوم کرنا اس کو راضی کرنا ضروری ہے جیسے خلع کے وقت عورت آدمی کو راضی کرے گی اور طلاق کا کیا طریقہ ہے وہ ذیل میں درج ہے.

(۴:۳۵) اور اگر تم کو معلوم ہو کہ میاں بیوی میں ان بن ہے تو ایک منصف مرد کے خاندان سے اور ایک منصف عورت کے خاندان سے مقرر کرو. وہ اگر صلح کرا دینی چاہیں گے تو اللہ ان میں صلح کر دے گا کچھ شک نہیں کہ اللہ سب کچھ جانتا اور سب باتوں سے خبردار ہے.

(۶۵:۱) اے نبی (مسلمانوں سے کہہ دو) جب تم عورتوں کو طلاق دو تو ان کو عدت کے لئے طلاق دو اور عدت کو گنتے رہو اور اپنے رب سے ڈرتے رہو.....

(۶۵:۲) پھر جب وہ اپنی میعاد کو پہنچ جائیں تو یا تو ان کو اچھی طرح سے رہنے دو (اپنے نکاح میں) یا اچھی طرح سے رخصت کر دو اور اپنے میں سے دو منصف مردوں کو گواہ کر لو اور اللہ کے لئے درست گواہی دینا.....

یہ ہے طلاق کا طریقہ کہ اگر میاں بیوی میں ان بن ہو تو دو آدمی مقرر کر کے ان میں صلح کرا دو اگر صلح نہیں ہوتی ہے تو طلاق دو عدت کے لئے اور گواہوں کے سامنے. اور جب رخصت کرو عدت کے بعد تو بھی گواہ ہونے ہیں اور ان گواہوں کے ساتھ ایک قاضی بھی ہونا ہے جیسے (۶۵:۱) میں محمدؐ سے کہا جا رہا ہے اس لئے محمدؐ قاضی ہیں مگر اب محمدؐ نہیں ہیں اس قاضی کی جگہ کو پورا کرنے کے لئے کوئی ایماندار آدمی جو قاضی ہو وہ یہ کام کرلے گا اور گواہ کا ہونا ضروری ہے اسلام ہر کام کے لئے گواہ مقرر کرتا ہے اور لکھنے کی تاکید بھی کرتا ہے.

(۷) قرآن نے عورت کے لئے خلع کی اجازت دی ہے مگر آج خلع کو تقریباً ختم کر رکھا ہے اور اس کو بُرا جانا جاتا ہے. کیا حکم ہے.

(۲:۲۲۹)..... ہاں اگر زن وشوہر کو خوف ہو کہ وہ اللہ کی حدوں کو قائم نہیں رکھ سکیں گے تو اگر عورت (خاوند کے ہاتھ سے) رہائی پانے کے بدلے میں فدیہ دے ڈالے تو دونوں پر کچھ گناہ نہیں. یہ اللہ کی (مقرر کی ہوئی) حدیں ہیں. ان سے باہر نہ نکلنا اور جو لوگ اللہ کی حدوں سے باہر نکل جائیں گے وہ گنہگار رہوں گے. (۴:۱۲۸)

یہ ہوا طلاق کا طریقہ گویا جب آدمی طلاق دے گا تب بھی قاعدے کے مطابق اور جب عورت خلع لے گی تب وہ بھی قاعدے کے مطابق اللہ نے دونوں کو اختیار دیا ہے. مگر ساتھ ہی یہ بھی واضح کر دیا ہے کہ جو کام کرو وہ اللہ سے ڈرتے ہوئے اس کے قانون کے مطابق کرو. اگر اللہ کے قانون کے مطابق کام ہوگا تو فساد نہیں ہوگا. مختصراً طلاق کے بارے میں لکھا جا رہا ہے.

ایک نشست میں تین طلاق ایک ہی مانی جائے گی یہی امام ابوحنیفہؒ نے بھی کہا ہے.

अबु हनीफा र० ने भी कहा है,

ईश्वर ने आयत (4:35) में बताया है कि जब पति पत्नी में झगड़ा हो तो उनमें संधि करा दो यदि संधि नही होती तो तलाक का मरहला चलेगा, और उस समय ही यह ज्ञात हो जाएगा कि पति की कमी है या पत्नी की, यदि पति की त्रुटि है तो यह तलाक मानी जाएगी और इस स्थिति में स्त्री इद्दत के बाद दूसरे विवाह या मृत्यु तक नान नफका की अधिकारी है और यदि स्त्री की कमी है तो वह खुलआ होगा और इस स्थिति में स्त्री अपना अधिकार छोड़ेगी और पति को प्रसन्न करेगी, ऐसी स्थिति में नान नफका नही मिलेगा,

आयत में मुतल्लका को नान नफका देने को कहा है विचारणीय बात यह है कि स्त्री मुतल्लका कब होती है, स्त्री मुतल्लका तब होती है जब इद्दत पूरी जो जाए इद्दत में तो रूजू का अधिकार है अतः इद्दत में स्त्री मुतल्लका नही होती तो सिद्ध हुआ कि इद्दत समाप्त होने के बाद ही स्त्री मुतल्लका होती है, तब वह नफका की हकदार है, देना अनिवार्य है सदाचारी पर(33:49 देखो)

आयत (2:228, 231,232, 65:1,2) में तलाक इद्दत के लिए है और ईश्वर कहता है कि इद्दत में तलाक देने वाला रूजू कर सकता है यह एक सामान्य आदेश है ऐसी स्थिति में व्यक्ति दुष्टता से जीवन भर स्त्री और अपने घर वालों व नातेदारों को व्याकुल करेगा, अतः ईश्वर ने आयत (2:229,230) में बता दिया कि रूजू का अधिकार केवल दो बार है, बार बार नही, अतः तलाक देखभाल कर दो, आलिमों को बस यहां धोका लगा है, और उन्होंने इन आयतों से एक समय में तीन तलाकों को मानकर लागू कर दिया जो अनुचित है,

सूरत तलाक में बताया गया है कि जो स्त्री मासिक धर्म से वंचित हो गई या अभी रज नही आया उनकी इद्दत तीन माह है परन्तु शिआ हजरात ने इस स्पष्ट आदेश को समाप्त कर दिया और कहा कि जो मासिक धर्म से निराश हो गई है उसकी इद्दत नही है? तो यह क्या कुरआन का विरोध नही है?

अवधि व्यतीत होने के बाद यदि स्त्री किसी और से विवाह करे फिर वहां से नियम के अनुसार तलाक हो तो यदि दोनों चाहें तो पहले पति से विवाह हो सकता है,

तुमने उन लोगों के हाल पर विचार नही किया (अर्थात् विचार करना चाहिए) जो मौत के भय से अपने घर बार छोड़कर निकले थे और हजारों की गिनती में थे ईश्वर ने उनसे कहा मर जाओ (अर्थात् साहस हीन तुच्छ हो गए तो लज्जा से मर जाओ) फिर उसने उनको दोबारा जीवन प्रदान किया (अर्थात् जब वह जाति व्याकुल हो गई तो ईश्वर के विधान पर वापस आ गई) ईश्वर ने उनको इस आज्ञाकारी के कारण से साहस वाला बना दिया और उन्होंने इस साहस से अपना खोया हुआ सम्मान वापस ले लिया, युद्ध करके (सिद्ध यह हुआ कि अधर्मी और दास मृतक है और धर्म वादी और स्वतंत्र जीवित है) वास्तविकता यह है कि ईश्वर इन्सानों पर बड़ा कृपा दया करने वाला है, परन्तु अधिकांश धन्यवाद नहीं करते (243) {2:216,218, 221,232, 2:56, 5:20,26, 6:122, 27:80, 8:24}

मुसलमानो! (बनी इसराईल की भांति साहस हीन न बनो) अपितु ईश्वर के मार्ग में युद्ध प्रयास करो और जान लो कि ईश्वर सुनने वाला और जानने वाला है (244)

ईश्वर के लिए संग्राम के आदेश का पालन करने के लिए चूंकि सैनिक शक्ति प्राप्त करना अनिवार्य है (8:60) और शक्ति चूंकि रुपये पैसे के बिना प्राप्त नही होती, इसलिए आदेश हुआ है और यह व्यय ईश्वर पर ऋण है,

اللہ نے آیت (۳۵:۴) میں بتایا ہے کہ جب میاں بیوی میں جھگڑا ہوتو ان میں صلح کرادو اگر صلح نہیں ہوئی تو طلاق کا مرحلہ چلے گا اور اس وقت ہی یہ پتہ چل جائے گا کہ شوہر کی غلطی ہے یا عورت کی اگر شوہر کی غلطی ہے تو یہ طلاق مانی جائے گی اور اس حال میں عورت عدت کے بعد دوسرے نکاح یا موت تک نان نفقہ کی حق دار ہے اور اگر عورت کی غلطی ہے تو وہ خلع ہوگا اور اس حالت میں عورت اپنا حق چھوڑے گی اور شوہر کو راضی کرے گی ایسی حالت میں نان نفقہ نہیں ملے گا۔

آیت میں مطلقہ کو نان نفقہ دینے کو کہا ہے غور طلب بات یہ ہے کہ عورت مطلقہ کب ہوتی ہے۔ عورت مطلقہ تب ہوتی ہے جب عدت پوری ہوجائے عدت میں تو رجوع کا حق ہے اس لئے عدت میں عورت مطلقہ نہیں ہوئی۔ تو ثابت ہوا کہ عدت گزرنے کے بعد ہی عورت مطلقہ ہوتی ہے تب وہ نفقہ کی حقدار ہے۔ دینا فرض ہے متقی پر۔ (۳۳:۴۹۔ دیکھو)

آیت (۲:۲۲۸، ۲۳۱،۲۳۲، ۶۵:۱،۲) میں طلاق عدت کے لئے ہے اور اللہ کہتا ہے کہ عدت میں طلاق دینے والا رجوع کرسکتا ہے ان میں یہ نہیں ہے کہ کب تک رجوع کرسکتا ہے یہ ایک عام حکم ہے۔ ایسی حالت میں آدمی شرارت سے زندگی بھر عورت اور اپنے گھر والوں و رشتے داروں کو پریشان کرے گا۔ اس لئے اللہ نے آیت (۲:۲۲۹، ۲۳۰) میں بتا دیا کہ رجوع کا حق صرف دوبار ہے، بار بار نہیں۔ اس لئے طلاق دیکھ بھال کر دو۔ عالموں کو بس یہاں دھوکا لگا ہے اور انہوں نے ان آیتوں سے ایک وقت میں تین طلاقوں کو مان کر نافذ کردیا جو غلط ہے۔

سورت طلاق میں بتایا گیا ہے کہ جو عورت حیض سے محروم ہوگئی یا ابھی تک نہیں آیا ان کی عدت تین ماہ ہے مگر شیعہ حضرات نے اس کھلے حکم کو ختم کردیا اور کہا کہ جو حیض سے مایوس ہوگئی ہے اس کی عدت نہیں ہے؟ تو کیا یہ قرآن کی مخالفت نہیں ہے؟

عدت گذرنے کے بعد اگر عورت کسی اور سے نکاح کرے پھر وہاں سے قاعدے کے مطابق طلاق ہو تو اگر دونوں چاہیں تو پہلے شوہر سے نکاح ہوسکتا ہے

<u>تم نے ان لوگوں کے حال پر غور نہیں کیا (یعنی غور کرنا چاہیے) جو موت کے ڈر سے اپنے گھر بار چھوڑ کر نکلے تھے اور ہزاروں کی تعداد میں تھے اللہ نے ان سے کہا مرجاؤ (یعنی کم ہمت ذلیل ہوگئے تو شرم سے مرجاؤ) پھر اس نے ان کو دوبارہ زندگی بخشی (یعنی جب وہ قوم پریشان ہوگئی تو اللہ کے قانون پر واپس آگئی) اللہ نے ان کو اس فرمانبرداری کی وجہ سے ہمت والا بنادیا اور انہوں نے اس ہمت سے اپنا کھویا ہوا وقار واپس لے لیا جنگ کرکے (ثابت یہ ہوا کہ بے دین اور غلام مردہ ہیں اور دین دار اور آزاد زندہ ہیں) حقیقت یہ ہے کہ اللہ انسانوں پر بڑا فضل فرمانے والا ہے مگر اکثر شکرادا نہیں کرتے (۲۴۳)</u> [۲:۲۱۶،۲۱۸،۲۲۱،۲۳۲، ۲:۵۶، ۵:۲۰،۲۶، ۶:۱۲۲، ۲۷:۸۰، ۸:۲۴]

مسلمانو! (بنی اسرائیل کی طرح بزدل نہ بنو) بلکہ اللہ کی راہ میں جنگ جدوجہد کرو اور خوب جان لو کہ اللہ سننے اور جاننے والا ہے (۲۴۴)

قتال فی سبیل اللہ کے حکم کی تعمیل کے لئے چونکہ عسکری قوت مہیا کرنا فرض ہے (۸:۶۰) اور قوت چونکہ روپے پیسے کے بغیر مہیا نہیں ہوتی۔ اس لئے ارشاد ہوا ہے اور یہ خرچ اللہ پر قرض ہے۔

तुम में से कौन है जो ईश्वर को अच्छा ऋण दे ताकि ईश्वर उसे बढ़ाकर वापस करे, घटाना भी ईश्वर के अधिकार में है और बढ़ाना भी (इन्सानों के कर्मों पर) और उसी की ओर तुमको पलट कर जाना है (245)

تم میں کون ہے جو اللہ کو قرض حسنا دے تا کہ اللہ اسے بڑھا کر واپس کرے گھٹانا بھی اللہ کے اختیار میں ہے اور بڑھانا بھی (انسانوں کے عمل پر) اور اسی کی طرف تم کو پلٹ کر جانا ہے (۲۴۵)

नोट- आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर बढ़ाकर वापस करेगा जो जाति अपनी और अपनी जाति की रक्षा के लिए हर समय प्रस्तुत रहती है तो वह सम्मान के साथ हर कार्य करती है और इस कार्य में आय अधिक होती है यह बढ़ाना है और जो जाति रक्षा के लिए कार्य नही करती तो वह दास हो जाती है और आय समाप्त हो जाती है और हीनता छा जाती है यह घटाना है, तो यह सब आदमी के कर्मों पर हुआ इतिहास यही कहता है,

نوٹ:۔ آیت میں یہ کہا گیا ہے کہ اللہ بڑھا کر واپس کرے گا۔ جو قوم اپنی اور اپنی قوم کی حفاظت کے لئے ہر وقت تیار رہتی ہے تو وہ عزت کے ساتھ ہر کام کرتی ہے اور اس کام میں آمدنی خوب ہوتی ہے یہ بڑھانا ہے اور جو قوم حفاظت کے لئے کام نہیں کرتی تو وہ غلام ہو جاتی ہے اور اس کی آمدنی ختم ہو جاتی ہے اور ذلت چھا جاتی ہے یہ گھٹانا ہے تو یہ سب آدمی کے عمل پر ہوا، تاریخ یہی کہتی ہے۔

ऐ श्रोता! क्या तुमने मूसा अ० के बाद वाले बनी इसराईल के नायकों की स्थिति पर विचार नही किया, जब उन्होंने अपने ईशदूत से कहा कि हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर दें ताकि हम ईश्वर के मार्ग में धर्म युद्ध करें, नबी ने कहा हो सकता है कि यदि तुम्हें युद्ध का आदेश दिया जाए तो तुम युद्ध न करो, उन्होंने निवेदन किया कि हमें क्या हो गया है कि हम इस दशा में ईश्वर के मार्ग में युद्ध न करें कि हम अपने घरों और संतानों से पृथक कर दिए गए हैं, किन्तु जब उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से अधिकांश अपने वचन से मुकर गए परन्तु उनमें से थोड़े दृढ़ पग रहे, सत्य यह है कि (अपने वचन से फिर जाने वाले) पापियों को ईश्वर उत्तम जानता है (246)

اے مخاطب! کیا تم نے موسیٰ کے بعد والے بنی اسرائیل کے سرداروں کے حالات پر غور نہیں کیا جب انہوں نے اپنے نبی سے کہا کہ ہمارے لئے ایک بادشاہ مقرر کر دے۔ تا کہ ہم اللہ کی راہ میں جہاد (لڑائی) کریں۔ نبی نے فرمایا ہوسکتا ہے کہ اگر تمہیں جنگ کا حکم دیا جائے تو تم جنگ نہ کرو۔ انہوں نے عرض کیا کہ ہمیں کیا ہو گیا ہے کہ ہم اس حالت میں اللہ کی راہ میں جنگ نہ کریں کہ ہم اپنے گھروں اور اولاد سے جدا کر دئے گئے ہیں لیکن جب ان پر لڑائی فرض کی گئی تو ان کی اکثریت اپنے عہد سے پھر گئی۔ مگر ان میں سے تھوڑے سے ثابت قدم رہے۔ حقیقت یہ ہے کہ (اپنے عہد سے پھر جانے والے) ظالموں کو اللہ خوب جانتا ہے (۲۴۶)

और उनसे उनके ईशदूत ने कहा कि ईश्वर ने तालूत को तुम्हारा राजा नियुक्त किया है, बनी इसराईल के नायकों ने कहा कि उसे हम पर शासन का अधिकार किसने दिया? उससे कहीं अधिक हम शासन करने के अधिकारी हैं इसके अतिरिक्त उसके पास ऐसी अधिक सम्पत्ति भी नही है, नबी ने उत्तर दिया कि ईश्वर ने (तुम्हारी तुलना) उसको महत्ता प्रदान की है और उसको तुम से अधिक मानसिक और शारीरिक शक्ति प्रदान की है, (तुम्हारी सम्मति से किसी को राज्य नही मिलता) ईश्वर जिसे (राज्य के) योग्य समझता है उसे राजा बनाता है, ईश्वर बड़ी विशालता रखने वाला और सब कुछ जानने वाला है (247)

اور ان سے ان کے نبی نے فرمایا کہ اللہ نے طالوت کو تمہارے لئے بادشاہ مقرر کیا ہے بنی اسرائیل کے سرداروں نے کہا کہ اسے ہم پر حکومت کا حق کس نے دیا؟ اس سے کہیں زیادہ ہم حکومت کرنے کے مستحق ہیں علاوہ ازیں اس کے پاس ایسی زیادہ دولت بھی تو نہیں ہے۔ نبی نے جواب دیا کہ اللہ نے (تمہارے مقابلہ) اس کو بزرگی بخشی ہے اور اس کو تم سے کہیں زیادہ دماغی اور جسمانی طاقت عطا کی ہے (تمہاری رائے سے کسی کو بادشاہت نہیں ملتی) اللہ جسے (بادشاہت کے) لائق سمجھتا ہے اسے بادشاہ بناتا ہے اللہ بڑی وسعت رکھنے والا اور سب کچھ جاننے والا ہے (۲۴۷)

और उनसे उनके नबी ने कहा कि ईश्वर की ओर से उसके राजा नियुक्त होने का लक्षण यह है कि उसके काल में वह पेटी तुम्हें वापस मिल जाएगी जिसमें तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की ओर से हृदय शान्ति का सामान होगा जिसमें मूसा की संतान और हारून की सन्तान के छोड़े हुए प्रसाद हैं और जिसको फ़रिश्ते उठा लाएँगे यदि तुम आस्तिक हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ा चिन्ह है (248)

(अर्थात् मूसा व हारून का छोड़ा हुआ सब राज्य भी मिल जाएगा जो सुरक्षित होगा)

اور ان سے ان کے نبی نے کہا کہ اللہ کی طرف سے اس کے بادشاہ مقرر ہونے کی علامت یہ ہے کہ اس کے عہد میں وہ صندوق تمہیں واپس مل جائے گا جس میں تمہارے لئے تمہارے رب کی طرف سے سکون قلب کا سامان ہوگا جس میں آل موسیٰ اور آل ہارون کے چھوڑے تبرکات ہیں اور جس کو فرشتے اٹھا لائیں گے اگر تم مومن ہو تو یہ تمہارے لئے بہت بڑی نشانی ہے (۲۴۸)

(یعنی موسیٰ و ہارون کی چھوڑی ہوئی ساری سلطنت بھی مل جائے گی جو محفوظ ہوگی)

फिर जब तालूत सैना लेकर चला तो उसने कहा

پھر طالوت لشکر لے کر چلا تو اس نے کہا ایک دریا پر اللہ کی

एक नदी पर ईश्वर की ओर से तुम्हारी परीक्षा होने वाली है जो उसका पानी पिएगा वह मेरा साथी नही मेरा साथी केवल वह है जो उससे प्यास न बुझाए हां एक आध चुल्लू कोई पी ले, परन्तु थोड़े व्यक्तियों के अतिरिक्त सब उस नदी से तृप्त हुए फिर जब तालूत और उसके साथी नदी पार करके आगे बढ़े तो उन्होंने तालूत से कहा कि आज हम में जालूत और उसकी सैनाओं का सामना करने की शक्ति नही है, किन्तु जो लोग यह समझते थे कि उन्हें एक दिन ईश्वर से मिलना है उन्होंने कहा अनेक बार ऐसा हुआ है कि एक अल्पसंख्या ईश्वर के (इज़्न) आज्ञा से (ईश्वर के विधान के अनुसार कार्य करने से) से बड़े दल पर प्रभुत्वशाली हो गया, ईश्वर धैर्य करने वालों के साथ है (249)

طرف سے تمہاری آزمائش ہونے والی ہے جو اس کا پانی پیئے گا وہ میرا ساتھی نہیں. میرا ساتھی صرف وہ ہے جو اس سے پیاس نہ بجھائے. ہاں ایک آدھ چلو کوئی پی لے. مگر ایک گروہ قلیل کے سوا سب اس دریا سے سیراب ہوئے. پھر جب طالوت اور اس کے ساتھی دریا پار کرکے آگے بڑھے تو انہوں نے طالوت سے کہا کہ آج ہم میں جالوت اور اس کے لشکروں کا مقابلہ کرنے کی طاقت نہیں ہے لیکن جو لوگ یہ سمجھتے تھے کہ انہیں ایک دن اللہ سے ملنا ہے انہوں نے کہا بارہا ایسا ہوا ہے کہ ایک قلیل گروہ اللہ کے اذن سے (قانون الٰہی کے مطابق عمل کرنے سے) ایک بڑے گروہ پر غالب آگیا ہے. اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے (۲۴۹)

नोट- पानी न पीने का एक आदेश था उसकी अवहेलना पाप है, परन्तु हो सकता है यह आदेश कपटियों की पहचान के लिए दिया हो या चिकित्सा सम्बन्धी दृष्टि बिन्दु से दिया हो, क्योंकि गर्मी से चले आने के बाद जब तुरन्त ठंडा पानी अधिक मात्रा में पी लिया जाता है तो हानि देता है, यदि थोड़ा पिया जाए तो हानि नही देता, या यह भी हो सकता है कि उस पानी में शत्रु ने विष मिला दिया हो, अस्तु वास्तविकता तो वही जानते थे, परन्तु स्पष्ट बात यह है कि वह एक आदेश था और आदेश का पालन करना अनिवार्य है,

نوٹ :- پانی نہ پینے کا ایک حکم تھا اس کی خلاف ورزی گناہ ہے. مگر ہوسکتا ہے یہ حکم منافقوں کی شناخت کے لئے دیا ہو یا طبی نقطہ نگاہ سے دیا ہو کیونکہ گرمی سے چلے آنے کے بعد فوراً ٹھنڈا پانی زیادہ مقدار میں پی لیا جاتا ہے تو نقصان دیتا ہے اگر تھوڑا پیا جائے تو نقصان نہیں دیتا. یا یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس پانی میں دشمن نے زہر ملا دیا ہو. بہرحال حقیقت حال تو وہی جانتے تھے. مگر صاف بات یہ ہے کہ وہ ایک حکم تھا اور حکم کی پابندی ضروری ہے.

और जब वह जालूत और उनकी सैना के सामने निकले तो उन्होंने प्रार्थना की, ऐ हमारे रब हम पर धैर्य का देन कर हमारे पग जमा दे और नास्तिकों पर हमें विजयी बना (250)

अंततः ईश्वर की आज्ञा (विधान) से उन्होंने नास्तिकों को मार भगाया और दाऊद ने जालूत को वध कर दिया और ईश्वर ने उसे अर्थात् दाऊद को राज्य और युक्ति प्रदान की और जिन जिन वस्तुओं का चाहा उसको ज्ञान दिया यदि इस प्रकार ईश्वर इन्सानों के एक दल को दूसरे दल के द्वारा हटाता न रहे तो पृथ्वी का प्रबन्ध बिगड़ जाए परन्तु लोगो पर ईश्वर की बड़ी दया है कि (वह उपद्रव के निवारण का प्रबन्ध करता रहता है) (251){22:39}

اور جب وہ جالوت اور ان کے لشکروں کے مقابلہ پر نکلے تو انہوں نے دعا کی اے ہمارے رب ہم پر صبر کا فیضان کر ہمارے قدم جمادے اور کافروں پر ہمیں فتح نصیب فرما (۲۵۰)

آخر کار اللہ کے اذن (قانون) سے انہوں نے کافروں کو مار بھگایا اور داود نے جالوت کو قتل کر دیا. اور اللہ نے اسے یعنی داود کو سلطنت اور حکمت سے نوازا. جن جن چیزوں کا چاہا اس کو علم دیا. اگر اس طرح اللہ انسانوں کے ایک گروہ کو دوسرے گروہ کے ذریعہ سے ہٹاتا نہ رہے تو زمین کا نظام بگڑ جائے. لیکن لوگوں پر اللہ کا بڑا فضل ہے کہ (وہ دفع فساد کا انتظام کرتا رہتا ہے) (۲۵۱) [۲۲:۳۹]

यह वह ईश्वर की आयात है जिन्हें हम सत्य के साथ आप पर पढ़ते है निःसन्देह आप ईशदूतों में से है (252)

یہ وہ اللہ کی آیات ہیں جنہیں ہم حق کے ساتھ آپ پر پڑھتے ہیں یقیناً آپ رسولوں میں سے ہیں (۲۵۲)

पाराह तीन (तिकर्रुसुल)

پارہ تین (تلک الرسل)

वह ईशदूत उनको हमने अर्थात् मुझ ईश्वर ने एक दूसरे से बढ़ चढ़कर सम्मान प्रदान किया, उनमें से कतिपय ऐसे है जिनसे मुझ ईश्वर ने बात की, किसी को उसने अर्थात मुझ ईश्वर ने दूसरी स्थितियों से उच्चमान किया और ईसा बिन मरयम को उज्ज्वल स्मृति प्रदान की और शुद्ध आत्मा या ज्ञान से उसकी सहायता की, यदि ईश्वर चाहता तो सम्भाव न था कि उन ईशदूतों के बाद जो लोग उज्ज्वल लक्षण देख चुके थे वह आपस में लड़ते, परन्तु (ईश्वर किसी को बल पूर्वक नही रोकता और न ही किसी काम को बल पूर्वक कराता है, आदमी को अधिकार दिया है चाहे वह अच्छा करे या बुरा

وہ رسول ان کو ہم نے یعنی مجھ اللہ نے ایک دوسرے سے بڑھ چڑھ کر مرتبے عطا کئے ان میں سے بعض ایسے ہیں جن میں اللہ ہم کلام ہوا. کسی کو اس یعنی مجھ اللہ نے دوسری حیثیتوں سے بلند درجے کئے اور عیسیٰ بن مریم کو روشن نشانیاں عطا کیں اور روح پاک سے اس کی مدد کی اگر اللہ چاہتا تو ممکن نہ تھا کہ ان رسولوں کے بعد جو لوگ روشن نشانیاں دیکھ چکے تھے وہ آپس میں لڑتے مگر (اللہ کسی کو جبراً نہیں روکتا اور نہ ہی کسی کام کو جبراً کراتا ہے آدمی کو اختیار دیا ہے چاہے وہ اچھا کرے یا بُرا. (۴۱:۴۰، ۵۲:۵۱،

(41:40, 52:51, 18:29) उन्होंने आपस में मतभेद किया फिर कोई आस्था लाया और किसी ने नास्तिकता का मार्ग स्वीकार किया, हां ईश्वर चाहता (बलपूर्वक) तो वह कदापि न लड़ते परन्तु ईश्वर वही करता है जिसका (अपने निर्धारित किये हुए विधान अनुसार से वह) निश्चय करता है (253)

۲۹:۱۸) انہوں نے باہم اختلاف کیا پھر کوئی ایمان لایا اور کسی نے کفر کی راہ اختیار کی ہاں اللہ چاہتا (زبردستی) تو وہ ہرگز نہ لڑتے مگر اللہ وہی کرتا ہے جس کا (اپنے مقرر کردہ قانون مشیت کے مطابق ہی وہ) ارادہ کرتا ہے (۲۵۳)

ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो जो कुछ धन हमने तुमको दिया है उसमें से व्यय करो, पूर्व इसके कि वह दिन आए जिसमें न क्रय विक्रय होगी न मैत्री काम आएगी और न अनुशंसा चलेगी और अत्याचारी वास्तव में वही हैं जो नास्तिकता की नीति अपनाते हैं (254) {2:48,123}

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو جو کچھ مال ہم نے تم کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرو قبل اس کے کہ وہ دن آئے جس میں نہ خرید و فروخت ہوگی نہ دوستی کام آئے گی۔ اور نہ شفاعت چلے گی اور ظالم اصل میں وہی ہیں جو کفر کی روش اختیار کرتے ہیں (۲۵۴) [۱۲۳،۴۸:۲]

वह ईश्वर (जिसके लिए नास्तिक कहता है कि) ईश्वर नही है तो सुनो निःसन्देह वह है, वह सदैव जीवित रहने वाला, संसार के प्रबन्ध को स्थापित रखने वाला, न ऊंघता है न निद्रा करता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब उसी का है, किस का साहस है कि उसकी अनुमति के बिना किसी की अनुशंसा के लिए मुख खोल सके? जो कुछ उनके हाथों के मध्य है अर्थात् लिख लिया है और जो उनसे पीछे है अर्थात् छुपाकर किया वह न लिख सके, जो मनों के वसवसे हैं ईश्वर को सब ज्ञात है मानव उसके ज्ञान को कुछ भी नही जान सकता, परन्तु केवल उतना ही ज्ञान जितना वह देना चाहे (दे देता है) उसके राज्य का परिधि क्षेत्र सारे आकाशों और पृथ्वी पर (अर्थात् पूरे ब्रह्माण्ड पर) फैला हुआ है वह इनकी रक्षा और देखभाल से कभी नही थकता वह मान आदर और बड़े पद वाला है (255) {7:123, 20:71,109, 22:49}

وہ اللہ (جس کے لئے کافر کہتا ہے کہ) اللہ نہیں ہے تو سنو یقیناً وہ ہے وہ ہمیشہ زندہ رہنے والا کائنات کے نظام کو قائم رکھنے والا۔ نہ اونگھتا ہے نہ سوتا ہے جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے سب اسی کا ہے کسی کی مجال ہے کہ اس کی اجازت کے بغیر کسی کی شفاعت کے لئے زبان کھول سکے۔ جو کچھ ان کے ہاتھوں کے درمیان ہے یعنی لکھ لیا ہے اور جو ان سے پیچھے ہے یعنی چھپا کر کیا ہے وہ نہ لکھ سکے جو دلوں کے وسوسے ہیں اللہ کو سب معلوم ہے انسان اس کے علم کا کچھ بھی احاطہ نہیں کر سکتا مگر صرف اتنا علم جتنا وہ دینا چاہے (دے دیتا ہے) اس کی سلطنت کا دائرہ سارے آسمانوں اور زمین پر (یعنی ساری کائنات میں) پھیلا ہوا ہے وہ ان کی حفاظت اور نگرانی سے کبھی نہیں تھکتا عالی قدر اور بڑے مرتبہ والا ہے (۲۵۵)

[۱۲۳:۷، ۷۱:۲۰، ۱۰۹، ۴۹:۲۲]

नोट- आयत में शब्द (इजन) आज्ञा आया है कि कौन है जो मेरी बिना आज्ञा के (नियम के) अनुशंसा कर सके मानो ईश्वर की आज्ञा (विधान) है ही नही परन्तु इस शब्द से अनुशंसा का औचित सिद्ध कर लिया है और अनुशंसा पर भरोसा करके मन मानी कर रहे हैं अब इस शब्द इजन को कुरआन की ज्योति में देखा जाए कि क्या अर्थ निकलता है क्या यह आज्ञा के लिए बोला गया है या नकार के लिए? महा मना मूसा अ0 के वर्णन में कई स्थान पर जादू गरों का ईश्वर पर विश्वास लाने का उल्लेख है कि उन्होंने अपनी पराज्य स्वीकार करने के बाद यह घोषणा की कि हम आस्था लाए ईश्वर पर जो मूसा व हारुन का रब है इस घोषणा पर फ़िरऔन ने रुष्ट होकर कहा कि तुम मेरी आज्ञा के बिना ही विश्वास लाए? क्या फ़िरऔन आज्ञा दे देता यदि जादूगर अनुमति मांगते सम्भवतः फ़िरऔन कदापि आज्ञा नही देता, अतः यहां उस ने मेरे इजन के बिना बोल कर यह बताया है कि मेरी आज्ञा नही और फिर भी तुम विश्वास लाए मानो नकार है क्योंकि मेरे नियम में तो यह है कि तुम्हारा सबसे बड़ा रब मैं हूं और कोई नही है, अतः मेरे अतिरिक्त और पर आस्था लाने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता ऐसे ही आयत (255) में ईश्वर ने इनकार के लिए ही इजन बोला है अर्थात मेरी (आज्ञा) नियम नही है अतः अनुशंसा की आस्था मिथ्या है इस प्रसंग का विस्तार बाब अनुशंसा में अंकित है.

نوٹ:۔ آیت میں لفظ اذن ہے کہ کون ہے جو میری بغیر اجازت کے (قانون کے) شفاعت کر سکے گویا اللہ کی اجازت (قانون) ہے ہی نہیں۔ مگر اس لفظ سے شفاعت کا جواز ثابت کر لیا ہے اور شفاعت پر قناعت کر کے من مانی کر رہے ہیں اب اس لفظ اذن کو قرآن کی روشنی میں دیکھا جائے کہ کیا مطلب نکلتا ہے۔ کیا یہ اجازت کے لئے بولا گیا ہے یا انکار کے لئے؟ حضرت موسیٰ کے ذکر میں کئی جگہ جادوگروں کا اللہ پر ایمان لانے کا ذکر ہے کہ انہوں نے اپنی ہار تسلیم کرنے کے بعد یہ اعلان کیا کہ ہم ایمان لائے اللہ پر جو موسیٰ و ہارون کا رب ہے۔ اس اعلان پر فرعون نے ناراض ہو کر کہا کہ تم میری اجازت کے بغیر ہی ایمان لائے؟ کیا فرعون اجازت دیدیتا اگر جادوگر اجازت طلب کرتے؟ غالباً فرعون ہرگز اجازت نہیں دیتا۔ اس لئے یہاں اس نے میرے اذن کے بغیر بول کر یہ بتایا ہے کہ میری اجازت نہیں اور پھر بھی تم ایمان لائے گویا انکار ہے۔ کیونکہ میرے قانون میں تو یہ ہے کہ تمہارا سب سے بڑا رب میں ہوں اور کوئی نہیں ہے۔ اس لئے میرے علاوہ اور پر ایمان لانے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ ایسے ہی آیت (۲۵۵) میں اللہ نے انکار کے لئے ہی اذن بولا ہے۔ یعنی میری اجازت (قانون) نہیں ہے اس لئے شفاعت کا عقیدہ غلط ہے۔ اس مسئلہ کی تفصیل باب شفاعت میں درج ہے۔

धर्म के विषय में कोई बल बलात नही उचित बात मिथ्या विचार से अलग छांटकर रख दी गई है अब

دین کے معاملہ میں کوئی زور زبردستی نہیں صحیح بات غلط خیالات سے الگ چھانٹ کر رکھ دی گئی ہے اب جو کوئی

जो कोई असुर का इनकार करके ईश्वर पर आस्था ले आया उसने एक ऐसा बलिष्ठ सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नही और ईश्वर सब कुछ जानने वाला है (256)

طاغوت کا انکار کر کے اللہ پر ایمان لے آیا اس نے ایک ایسا مضبوط سہارا تھام لیا جو کبھی ٹوٹنے والا نہیں اور اللہ سب کچھ جاننے والا ہے (۲۵۶)

नोट- ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि दे दी और अपना विधान, इसके बाद मानव को अधिकार दे दिया कि वह कौन सा मार्ग स्वीकार करता है, ईश्वर व्यक्ति को अपना नियम या धर्म मनवाने के लिए बाध्य नही करता कोई बलात नही, यदि वह चाहता तो दूसरी रचनाओं की भांति व्यक्ति को भी बुद्धिहीन उत्पन्न करता, परन्तु व्यक्ति को स्वतंत्रता दी है बुद्धि के साथ अब क्या करता है देखा जाएगा,

نوٹ:۔ اللہ نے انسان کو عقل دے دی اور اپنا قانون اس کے بعد انسان کو اختیار دیدیا کہ وہ کونسا راستہ اختیار کرتا ہے اللہ انسان کو اپنا قانون یا دین منوانے کے لئے مجبور نہیں کرتا کوئی زبردستی نہیں اگر وہ چاہتا تو دوسری مخلوقات کی طرح انسان کو بھی بغیر عقل کے پیدا کرتا مگر انسان کو آزادی ہے عقل کے ساتھ اب کیا کرتا ہے دیکھا جائے گا۔

जो लोग आस्था लाए है उनका समर्थक व सहायक ईश्वर है और वह उनको अन्धकार से प्रकाश में निकाल लाता है (यह ईश्वर की अनुकम्पा आशीर्वाद व्यक्तियों पर है जब वह उचित मार्ग ग्रहण करेगा तो ईश्वर की सहायता आएगी, अर्थात् अनुकम्पा आशीवार्द) और जो लोग नास्तिकता का मार्ग ग्रहण करते है उनके समर्थक व सहायक असुर है और वह उन्हें प्रकाश से निकाल कर अन्धकार की ओर खींच ले जाते है वह लोग अग्नि में जाने वाले है जहां वह सदैव रहेंगे (257)

جو لوگ ایمان لائے ہیں ان کا حامی و مددگار اللہ ہے اور وہ ان کو تاریکیوں سے روشنی میں نکال لاتا ہے (یہ اللہ کی رحمت صلوٰۃ بندوں پر ہے جب وہ صحیح راہ اختیار کرلے گا تو اللہ کی مدد آئے گی یعنی صلوٰۃ و (رحمت) اور جو لوگ کفر کی راہ اختیار کرتے ہیں ان کے حامی و مددگار طاغوت ہیں اور وہ انہیں روشنی سے نکال کر تاریکیوں کی طرف کھینچ لے جاتے ہیں وہ لوگ آگ میں جانے والے ہیں جہاں وہ ہمیشہ رہیں گے (۲۵۷)

क्या तुमने उस व्यक्ति की स्थिति पर विचार नही किया जिसने इब्राहीम से विवाद किया था इस बात पर कि इब्राहीम का रब कौन है और इस आधार पर कि उस व्यक्ति को ईश्वर ने राज्य दे रखा था जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जिसके अधिकार में जीवन और मृत्यु है तो उसने उत्तर दिया जीवन और मृत्यु मेरे अधिकार में भी है, इब्राहीम अ0 ने कहा अच्छा ईश्वर सूर्य को पूर्व से निकालता है तू उसे पश्चिम से निकाल ला, यह सुनकर वह सत्य का विरोधी हक्का बक्का रह गया, परन्तु ईश्वर का नियम अत्याचारियों को सीधा मार्ग नही दिखाता (अर्थात् अत्याचार के कारण वह इस योग्य नही रहते कि पथ प्रदर्शन स्वीकार करें) (258)

کیا تم نے اس شخص کے حالات پر غور نہیں کیا جس نے ابراہیم سے جھگڑا کیا تھا اس بات پر کہ ابراہیم کا رب کون ہے اور اس بنا پر کہ اس آدمی کو اللہ نے حکومت دے رکھی تھی جب ابراہیم نے کہا کہ میرا رب وہ ہے جس کے اختیار میں زندگی اور موت ہے تو اس نے جواب دیا زندگی اور موت میرے اختیار میں بھی ہے ابراہیم نے کہا اچھا اللہ سورج کو مشرق سے نکالتا ہے تو ذرا اسے مغرب سے نکال لا یہ سن کر وہ منکر ہکا بکا رہ گیا مگر اللہ کا قانون ظالموں کو راہ راست نہیں دکھاتا (یعنی ظلم کی وجہ سے وہ اس لائق نہیں رہتے کہ ہدایت قبول کریں) (۲۵۸)

या फिर उदाहरणार्थ उस व्यक्ति को देखो जिसका गमन ऐसी बस्ती पर हुआ जो अपनी छतों पर औंधी गिरी पड़ी थी उसने कहा यह आबादी जो विनष्ट हो चुकी है इसे ईश्वर किस प्रकार पुनः जीवन प्रदान करेगा, इस पर ईश्वर ने उसकी आत्मा बद्ध कोष्ट कर ली और वह सौ वर्ष तक मृत पड़ा रहा फिर ईश्वर ने उसे पुनः जीवन प्रदान किया और उससे ज्ञात किया कितने समय पड़े रहे हो, उसने कहा एक दिन या कुछ घन्टे रहा हूंगा, कहा तुम पर सौ वर्ष इसी दशा में व्यतीत हो चुके है, अब तनिक अपने भोजन और पानी को देखो कि उसमें तनिक बदलाओ नही आया, दूसरी ओर तू अपने गधे को देख (उसका पंजर तक भी जीर्ण हो रहा है) और यह हमने इसलिए किया है कि हम तुम्हें लोगों के लिए एक स्मृति बना देना चाहते है फिर देखो कि हड्डियों के उस पंजर को हम किस प्रकार उठाकर मांस व त्वचा उस पर चढ़ाते है इस प्रकार जब वास्तविकता उसके सामने आ गई तो उसने कहा मैं जान गया कि ईश्वर हर वस्तु के अनुमान और मानदण्ड निर्धारित करने वाला है (259)

یا پھر مثال کے طور پر اس آدمی کو دیکھو جس کا گزر ایک ایسی بستی پر ہوا جو اپنی چھتوں پر اوندھی گری پڑی تھی اس نے کہا یہ آبادی جو ہلاک ہو چکی ہے اسے اللہ کس طرح دوبارہ زندگی بخشے گا اس پر اللہ نے اس کی روح قبض کر لی اور وہ سو برس تک مردہ پڑا رہا پھر اللہ نے اسے دوبارہ زندگی بخش دی اور اس سے پوچھا کتنی مدت پڑے رہے ہو اس نے کہا ایک دن یا چند گھنٹے رہا ہوں گا فرمایا تم پر سو برس اس حالت میں گذر چکے ہیں، اب ذرا اپنے کھانے اور پانی کو دیکھو کہ اس میں ذرا تغیر نہیں آیا ہے دوسری طرف تو اپنے گدھے کو دیکھ (اس کا پنجر تک بھی بوسیدہ ہو رہا ہے) اور یہ ہم نے اس لئے کیا ہے کہ ہم تمہیں لوگوں کے لئے ایک نشانی بنا دینا چاہتے ہیں، پھر دیکھو کہ ہڈیوں کے اس پنجر کو ہم کس طرح اٹھا کر گوشت پوست اس پر چڑھاتے ہیں اس طرح جب حقیقت اس کے سامنے آ گئی تو اس نے کہا میں جان گیا کہ اللہ ہر چیز کے اندازے اور پیمانے مقرر کرنے والا ہے (۲۵۹)

नोट- उस आदमी के शरीर और भोजन को ईश्वर ने इतने टेम्प्रेचर पर रखा कि वह सड़ न सके इस आयत को देखकर ही फ्रीज बनाया गया है और साथ में अस्हाबे कहफ की घटना भी यही बताती है इसमें इतना टेम्प्रेचर रहता है कि सामान काफ़ी दिनों तक सड़ता नही. यह कार्य मुसलमानों को करना था परन्तु यह न कर सका.

نوٹ:۔اس آدمی کے جسم اور کھانے کو اللہ نے اتنے ٹیمپریچر میں رکھا کہ وہ سڑ نہ سکے اس آیت کو دیکھ کر ہی فریج بنایا گیا ہے اور ساتھ میں اصحاب کہف کا واقعہ بھی یہی بتاتا ہے اس میں اتنا ٹیمپریچر رہتا ہے کہ سامان کافی دنوں تک سڑتا نہیں یہ کام مسلمانوں کو کرنا تھا مگر یہ نہ کر سکا.

तथा यह घटना सुनकर इब्राहीम अ0 ने निवेदन किया ऐ मेरे रब मुझे विधि बता दे (दिखा दे) कि तू मृतकों को (अर्थात् आत्मा सम्बंधि मृतकों को जो धर्म से दूर हैं) कैसे जीवित (अर्थात् धर्म स्वीकार करने वाला) करेगा, कहा क्या तुझे विश्वास नही है (कि वह धर्म स्वीकार कर लेंगे?) निवेदन किया कि क्यों नही (मुझे इसका पक्का विश्वास है तूने मुझे इस कार्य के लिए ही तो उठाया है) परन्तु मैं इसलिए प्रार्थना कर रहा हूं कि विधि जानकर मेरे हृदय को संतोष आ जाए (और उस विधि पर ही कार्य करूं) कहा (संतोष चाहता है और विधि भी आवश्यक है) तो पक्षियों की प्रकार में से चार पक्षी लेकर स्वयं से परिचित कर लो फिर उनमें से एक एक को पृथक पृथक पर्वत पर रख देना (अर्थात छोड़ देना) फिर उन्हें पुकारना वह सब झपट कर तेरे पास आ जाएंगे और भलीभांति जान लो कि ईश्वर सम्मान वाला और युक्ति वाला है (260)

نیز یہ واقعہ سن کر ابراہیم نے عرض کیا اے میرے رب مجھے طریقہ بتادے (دکھادے) کہ تو مردوں کو (یعنی روحانی مردوں کو جو ایمان سے دور ہیں) کیسے زندہ (یعنی ایمان قبول کرنے والا) کرے گا فرمایا کیا تجھے یقین نہیں ہے (کہ وہ ایمان قبول کرلیں گے)؟ عرض کیا کیوں نہیں (مجھے اس کا پکا یقین ہے تو نے مجھے اس کام کے لئے ہی تو معبوث فرمایا ہے) لیکن میں اس لئے درخواست کر رہا ہوں کہ طریقہ جان کر میرے دل کو قرار آجائے (اور اس طریقے پر ہی عمل کروں) فرمایا (اطمینان مطلوب ہے اور طریقہ بھی درکار ہے) تو پرندوں کے اقسام میں سے چار پرندے لے کر خود سے مانوس کرلو پھر ان میں سے ایک ایک کو الگ الگ پہاڑ پر رکھ دینا (یعنی چھوڑ دینا) پھر انہیں پکارنا وہ سب جھپٹ کر تیرے پاس آجائیں گے اور خوب جان لے کہ اللہ عزت والا حکمت والا ہے (۲۶۰)

नोट- 'जुज़उन' से जो अभिप्राय है वह (15:44) से देखो. (15:44) जिसके सात द्वार हैं हर द्वार के लिए उन लोगों के अलग अलग 'जुज़उन' भाग हैं, अतः उन पक्षियों में से एक एक से तात्पर्य है न कि उनको काटकर भुस बना देना और ऐसा ही अर्थ अबुमुस्लिम अस्फ़हानी और इमाम फ़खरुद्दीन राज़ी रह0 ने भी लिखाहै इस घटना से आशय यह है कि महा महिम ने अध्यात्मिक मृत जाति में प्रचार की प्रणाली ज्ञात की, ऐ ईश्वर यह जाति तो बिलकुल ही मृत और कायर हो गई है और मूर्ख भी अधिक है क्योंकि बुतों की पूजा कर रही है सत्य सुनकर ही नही देती, लड़ती है, इनमें कैसे धर्म का प्रचार करूं, मुझे वह विधि बता दे, तो ईश्वर ने पक्षियों के उदाहरण से बात बताई कि देखो जैसे यह पक्षी जो इन्सान की आहट से भी डर कर भाग जाते हैं जब तुम इनको इष्ट कर लेते हो जैसे तुम करोगे पक्षी पालकर तो वह तुम्हारी ध्वनि पर अधिक दूर से तुम्हारे पास आ जाएंगे, उन्हें छोड़कर देख लेना, क्योंकि तुम उन्हें नरमी से भलिभांति इष्ट कर लोगे, उनका भय समाप्त हो जाएगा जैसे कि लोग उन पक्षीयों को इष्ट करते हैं, यह तुमसे इष्ट हो जाएंगे और फिर तुम्हारी ध्वनी पर उपस्थित हो जाएंगे और धर्म स्वीकार करेंगे, हर नबी ने नरमी से काम लिया है, और आज भी धर्म प्रचार का एक यही नरमी की विधि उचित है, कठोरता से व्यक्ति भड़क जाता है.

نوٹ:۔جزءً سے جو مراد ہے وہ (۱۵:۴۴) سے دیکھو. (۱۵:۴۴) جس کے سات دروازے ہیں ہر دروازے کے لئے ان لوگوں کے الگ الگ (جزءً) حصے ہیں اس لئے ان پرندوں میں سے ایک ایک مراد ہے نہ کہ ان کو کاٹ کر قیمہ بنا دینا اور ایسا ہی مطلب ابو مسلم اصفہانیؒ اور امام فخر الدین رازیؒ نے بھی نقل کیا ہے اس واقعے سے مراد یہ ہے کہ حضرت نے روحانی مردہ قوم میں تبلیغ کا طریقہ معلوم کیا کہ اے اللہ یہ قوم تو بالکل ہی مردہ اور بزدل ہو گئی ہے اور جاہل بھی زیادہ ہے کیونکہ بتوں کی پوجا کر رہی ہے حق سن کر ہی نہیں دیتی لڑتی ہے ان میں کسے تبلیغ کروں مجھے وہ طریقہ بتادے تو اللہ نے پرندوں کی مثال سے بات بتائی کہ دیکھو جیسے یہ پرندے جو انسان کی آہٹ سے بھی ڈر کر بھاگ جاتے ہیں جب تم ان کو مانوس کر لیتے ہو جیسے تم کرو گے پرندے پال کر تو وہ تمہاری آواز پر دور دراز سے تمہارے پاس آجائیں گے انہیں چھوڑ کر دیکھ لینا کیونکہ تم انہیں نرمی سے خوب مانوس کرو گے ان کا ڈر ختم ہو جائے گا جیسا کہ لوگ ان پرندوں کو مانوس کرتے ہیں ایسے ہی اس قوم میں نرمی سے تبلیغ کرو یہ تم سے مانوس ہو جائیں گے اور پھر تمہاری آواز پر لبیک کہتے ہوئے تمہارے پاس آجائیں گے اور دین قبول کریں گے ہر نبی نے نرمی سے کام لیا ہے اور آج بھی تبلیغ دین کا ایک یہی نرمی کا طریقہ درست ہے سخت مزاجی سے آدمی بدک جاتا ہے.

जो लोग अपने माल ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं उनके व्यय का उदाहरण ऐसा है जैसे एक दाना बोया जाए और उससे सात बाले निकलें और हर बाल में सौ दाने हो, इसी प्रकार ईश्वर का नियम उसके कर्मों को बढ़ोतरी प्रदान करता है जो चाहता है और ईश्वर विस्तार वाला और ज्ञान वाला है. (261)

جو لوگ اپنے مال اللہ کی راہ میں صرف کرتے ہیں ان کے خرچ کی مثال ایسی ہے جیسے ایک دانہ بویا جائے اور اس سے سات بالیں نکلیں اور ہر بال میں سو دانے ہوں اسی طرح اللہ کا قانون اس کے عمل کو افزونی عطا کرتا ہے جو چاہتا ہے اور اللہ وسعت والا ہے اور جاننے والا ہے (۲۶۱)

जो लोग अपने माल ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं और व्यय करके फिर उपकार नही जताते न दुख देते है उनका प्रतिदान उनके रब के पास है और उनके लिए किसी खेद और भय का अवसर नही है. (262) {2:254,158, 76:9, 15:88, 26:215}

جولوگ اپنے مال اللہ کی راہ میں خرچ کرتے ہیں اورخرچ کر کے پھراحسان نہیں جتاتے نہ دکھ دیتے ہیں ان کا اجر ان کے رب کے پاس ہےاوراُن کے لئے کسی رنج اور خوف کا موقع نہیں (۲۶۲) [۲:۲۵۴، ۱۵۸، ۷۶:۹، ۱۵:۸۸، ۲۶:۲۱۵]

भली बात और क्षमा उस दान से उत्तम है जिसके पीछे दुख हो ईश्वर लालसा रहित और सहन शील है (263)

بھلی بات اور چشم پوشی اس صدقے سے بہتر ہے جس کے پیچھے دکھ ہو اللہ بے نیاز اور بردبار ہے (۲۶۳)

ऐ आस्तिकों! उपकार जताकर और दुख पहूँचा कर अपने दान को नष्ट मत करो उस व्यक्ति की भाँति कि जो अपना धन लोगों को दिखाने के लिए व्यय करता है और ईश्वर पर और प्रलोक पर आस्था न रखें तो उसकी दशा उस चिकने पत्थर की चट्टान की भाँति है जिस पर कुछ मिट्टी पड़ी हुई हो, अतः उस पर प्रचण्ड वर्षा पड़े तो उसे साफ चट्टान करके छोड़ती है इस चट्टान पर कृषि करने वाले अपनी कमाई और परिश्रम का कोई फल प्राप्त नही करते. ईश्वर सत्य का नकार करने वालों को (अपने विधान के अनुसार) पथ प्रदर्शन नहीं देता (264) {56:66-67}

اے اہل ایمان ! احسان جتا کر اور اذیت پہنچا کر اپنی خیرات کوضائع مت کرواس آدمی کی طرح کہ جواپنا مال لوگوں کودکھانے کے لئےخرچ کرتا ہےاوراللہ پراورپچھلے دن پرایمان نہ رکھےتواس کی حالت اس چکنے پتھر کی چٹان کی طرح ہےجس پر کچھ مٹی پڑی ہوئی ہو پس اس پر زور دار بارش پڑی تو اُسے صاف چٹان کر کے چھوڑ گئی اس چٹان پر زراعت کرنے والے اپنی کمائی اور محنت کا کوئی نتیجہ حاصل نہیں کرتے اللہ تعالیٰ حق کا انکار کرنےوالوں کو (اپنے قانون کے مطابق) ہدایت نہیں فرماتا (۲۶۴) [۵۶:۶۶، ۶۷]

नोट- चट्टान से तात्पर्य कपटि से है वह अपने कपट को पाखण्डता से छुपाता है परन्तु अवसर आने पर प्रकट हो जाता है कि यह कपटि है जैसे चट्टान से मिट्टी बह जाती है और मिट्टी बहने से सब बीज और उपज समाप्त हो जाती है, इसी प्रकार कपटि की पाखण्डता के कार्य भी समाप्त हो जाते हैं और चट्टान स्पष्ट दिखाई देती है अर्थात् जो वास्तविकता छुपा रखी थी वह सामने आ जाती है और ज्ञात हो जाता है कि यह कपटि है.

نوٹ:۔ چٹان سے مراد منافق سے ہےوہ اپنے نفاق کو ریاکاری سے چھپاتا ہے مگر موقع آنے پر ظاہر ہو جاتا ہے کہ یہ منافق ہے جیسے چٹان سے مٹی بہہ جاتی ہے اور مٹی بہنے سے سب بیج اور فصل ختم ہو جاتی ہےاسی طرح منافق کی ریاکاری کے عمل بھی ختم ہو جاتے ہیں اور چٹان نظر آجاتی ہے یعنی جو حقیقت چھپا رکھی تھی وہ سامنے آجاتی ہےاور پتہ چل جاتا ہے کہ یہ منافق ہے.

और उन लोगों की दशा जो अपनी सम्पत्ति को ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने और अपनी आत्माओं को (ईश्वर के मार्ग में बलिदान पर) जमा लेने के कारण से व्यय करते हैं उस उपवन की भाँति है जो अच्छी और उपजाऊ (न अधिक ऊंचाई पर और न अधिक गहराई में) में हो उस पर प्रचण्ड वर्षा पड़ी तो उसने अपनी उपज दुगनी, चौगुनी (अर्थात अच्छी) मात्रा में दी या यदि उस पर प्रचण्ड वर्षा न पड़ी तो हल्की वर्षा से प्राप्त होगी और ईश्वर तुम्हारे कर्मों को देख रहा है (265)

اوران لوگوں کی حالت جو اپنے اموال کواللہ کی رضا حاصل کرنے اوراپنے نفسوں کو(راہ حق میں قربانی پر)جما لینے کی وجہ سےخرچ کرتے ہیں اس باغ کی طرح ہے جوعمدہ اور زرخیز زمین (نہ زیادہ اونچائی پراور نہ زیادہ نشیب میں) میں ہواس پر زوردار بارش پڑی تو اس نے اپنی پیداوار (دگنی چوگنی یعنی خوب) مقدار میں دی پس اگر اس پر زوردار بارش نہ پڑی تو ہلکی بارش ہی کافی ہوگی اوراللہ تمہارے عمل کو دیکھ رہا ہے(۲۶۵)

नोट- उपजाऊ भूमि से तात्पर्य आस्तिक का हृदय है बात समझाने के लिए ईश्वर ने उपजाऊ की उपमा दी है परन्तु कुरआन के अनुवादों में अनुवाद ऊंची भूमि किया गया है, अब विचारणीय बात यह है क्या ऊंची भूमि पर अच्छा उपवन हो सकता है ऊंची भूमि पर न अच्छी प्रकार पानी दिया जा सकता है और ऊंचाई होने के कारण तीव्र वायु भी हानि पहुँचाएगी इसी प्रकार निम्न भूमि में भी उपवन ठीक न होगा, उपवन की भूमि उपजाऊ और समतल ही ठीक रहती है जिसका तल ठीक हो न ऊंची न नीची.

نوٹ:۔ زرخیز زمین سے مراد مومن کا دل ہےبات سمجھانے کے لئے اللہ نے باغ کی مثال دی ہےلیکن اکثر نے ترجمہ اونچی زمین کیا ہےاب غورطلب بات یہ ہے کیا اونچی زمین پر اچھا باغ ہو سکتا ہےاونچی زمین پر نہ اچھی طرح پانی دیا جا سکتا ہےاور اونچائی ہونے کی وجہ سے تیز ہوا بھی نقصان پہنچائے گی اس طرح نشیب والی زمین میں بھی باغ ٹھیک نہ ہوگا باغ کی زمین زرخیز اور ہموار ہی ٹھیک رہتی ہےجس کی سطح بھی ٹھیک ہو نہ اونچی نہ نیچی.

प्रचण्ड वर्षा से तात्पर्य आस्तिक को ईश्वर के मार्ग में व्यय करने के लिए अधिक प्रेरणा देना और यदि थोड़ी प्रेरणा भी दी जाएगी तो भी आस्तिक हर दशा में व्यय करने को प्रस्तुत रहता है उसका हृदय हर समय उपकार करने को व्याकूल रहता है प्रेरणा कम या अधिक वर्षा

زوردار بارش سے مراد مومن کو راہ حق میں خرچ کرنے کی زیادہ ترغیب دینا اوراگر تھوڑی بھی ترغیب دی جائے گی تو بھی مومن ہرحال میں خرچ کرنے کو تیار رہتا ہےاس کا دل ہروقت نیکیاں کرنے کو بیقرار رہتا ہےترغیب کم یا

कम या अधिक आस्तिक दोनों दशा में उपकार करता है.

زیادہ بارش کم یا زیادہ مومن دونوں حالتوں میں نیکیاں کرتا ہے.

क्या तुम में कोई यह पसन्द करता है कि उसके पास एक हरा-भरा उपवन हो नहरों से सिंचित खजूरों और अंगूरों और हर प्रकार के फलों से लदा हुआ और वह अन्तिम समय अर्थात लाभ देने के समय पर एक तीव्र आंधी जिसमें आग हो, की चपेट में आकर झुलस जाए जबकि वह स्वंय बूढ़ा हो और उसके छोटे बच्चे अभी किसी योग्य न हों इस प्रकार ईश्वर अपनी बातें तुम्हारे सामने स्पष्ट करता है शायद कि तुम विचार करो (266)

کیا تم میں سے کوئی یہ پسند کرتا ہے کہ اس کے پاس ایک ہرا بھرا باغ ہو نہروں سے سیراب کھجوروں اور انگوروں اور ہر قسم کے پھلوں سے لدا ہوا اور وہ عین وقت پر ایک تیز بگولے جس میں آگ ہو کی زد میں آ کر جھلس جائے جب کہ وہ خود بوڑھا ہو اور اس کے کمسن بچے ابھی کسی لائق نہ ہوں اس طرح اللہ اپنی باتیں تمہارے سامنے بیان کرتا ہے شاید کہ تم غور کرو (۲۶۶)

नोट- हरा भरा उपवन से आशय आस्तिक के अच्छे कर्म है जो उसके प्रलोक में काम आने वाले है यदि आस्तिक की त्रुटि से (तीव्र आंधी) वह समाप्त हो गए तो उससे बड़ी हानि और क्या हो सकती है? और वह भी अन्तिम समय में इसको समझाने के लिए ईश्वर ने एक उपमा उपवन और बूढ़े की देकर शिक्षा दी है बुद्धि वाले विचार करें और किसी मिथ्या कथन के चक्कर में आकर अपने अच्छे कर्म नष्ट न करें अन्तिम सांस तक ईश्र के आज्ञाकारी बने रहें, कहीं ऐसा न हो कि ऐसे समय में कर्म नष्ट हो जाएं जब पश्चाताप करने का भी अवसर न रहे जैसे बूढ़े आदमी की उपमा है कि अब बुढ़ापे में वह क्या करे शक्ति उत्तर दे चुकी और उपवन समाप्त हो गया छोटे छोटे बच्चे है.

نوٹ:۔ ہرا بھرا باغ سے مراد مومن کے نیک عمل ہیں جو اس کے آخرت میں کام آنے والے ہیں اگر مومن کی غلطی سے (تیز بگولے) وہ باطل ہو گئے تو اس سے بڑا نقصان اور کیا ہو سکتا ہے؟ اور وہ بھی آخیر وقت میں اس کو سمجھانے کے لئے اللہ نے ایک مثال باغ اور بوڑھے کی دے کر تعلیم دی ہے عقل والے غور کریں اور کسی باطل روایت کے چکر میں آ کر اپنے نیک اعمال برباد نہ کریں آخری سانس تک اللہ کی فرمانبرداری کریں کہیں ایسا نہ ہو کہ ایسے وقت میں عمل برباد ہو جائیں جب توبہ کرنے کا بھی موقع نہ رہے جیسے بوڑھے آدمی کی مثال ہے کہ اب بڑھاپے میں وہ کیا کرے طاقت جواب دے چکی اور باغ ختم ہو گیا چھوٹے چھوٹے بچے ہیں.

ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो जो सम्पत्ति तुमने कमाई है और जो कुछ हमने भूमि से तुम्हारे लिए निकाला है उसमें से उत्तम उपज ईश्वर के मार्ग में व्यय करो, ऐसा न हो कि उसके मार्ग में देने के लिए बुरी से बुरी वस्तु छांटकर देने का प्रयत्न करो यद्यपि वही बुरी वस्तु यदि कोई तुमको दे तो तुम कदापि उसे लेना स्वीकार न करोगे किन्तु यह कि उसे लेने में असावधानी बरत जाओ तुम्हें जान लेना चाहिए कि ईश्वर लालसा रहित है और सर्वोत्तम गुणों का स्वामी है (267)

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو جو مال تم نے کمائے ہیں اور جو کچھ ہم نے زمین سے تمہارے لئے نکالا ہے اس میں سے بہتر پیداوار اللہ کی راہ میں خرچ کرو ایسا نہ ہو کہ اس کی راہ میں دینے کے لئے بُری سے بُری چیز چھانٹ کر دینے کی کوشش کرو حالانکہ وہی خراب چیز اگر کوئی تم کو دے تو تم ہرگز اسے لینا گوارہ نہ کرو گے اِلّا یہ کہ اس کو قبول کرنے میں غفلت برت جاؤ تمہیں جان لینا چاہیے کہ اللہ بے نیاز ہے اور بہترین صفات کا مالک ہے (۲۶۷)

शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और बुरे कर्म करने की प्रेरणा देता है, किन्तु ईश्वर तुम्हें अपनी क्षमा और कृपा दया की आशा दिलाता है ईश्वर बड़ा विस्तार वाला और ज्ञानी है (268)

شیطان تمہیں مفلسی سے ڈراتا ہے اور بُرے کام کرنے کی ترغیب دیتا ہے مگر اللہ تمہیں اپنی بخشش اور فضل کی امید دلاتا ہے اللہ بڑی کشائش والا اور دانا ہے (۲۶۸)

ईश्वर का नियम उसको युक्ति प्रदान करता है जो इस योग्य होता है जो चाहता है और जिसको ज्ञान मिला उसे वास्तव में बड़ा पुण्य, बड़ी सम्पत्ति मिल गई इन बातों से केवल वही लोग शिक्षा लेते है जो बुद्धिमान है (269) {108:1से3, 17:39}

اللہ کا قانون اس کو حکمت عطا کرتا ہے جو اس لائق ہوتا ہے جو چاہتا ہے اور جس کو حکمت ملی اسے حقیقت میں خیر کثیر بڑی دولت مل گئی ان باتوں سے صرف وہی لوگ سبق لیتے ہیں جو دانشمند ہیں (۲۶۹) [۱۰۸:۱تا۳، ۱۷:۳۹]

और जो कुछ भी धन तुमने व्यय किया हो या जो कुछ भी तुमने भेंट मानी हो विश्वास करो कि ईश्वर उसे जानता है और पापियों के लिए उनके (कल्पित) सहायकों में से कोई न होगा (270)

اور جو کچھ بھی مال تم نے خرچ کیا ہو یا جو کچھ بھی تم نے نذر مانی ہو یقین کرو کہ اللہ اسے جانتا ہے اور ظالموں کے لئے ان کے (فرضی) مددگاروں میں سے کوئی نہ ہوگا (۲۷۰)

यदि तुम अपने दान प्रकट करो अर्थात् दूसरों के सामने शुद्ध हृदयता के साथ चुकता करो तो यह भी अच्छी बात है (इसमें न कोई दोष है न यह निःस्वार्थता के विरुद्ध है) और यदि दान गुप्त

اگر تم اپنے صدقات کو ظاہر کرو یعنی دوسروں کے سامنے خلوص کے ساتھ ادا کرو تو یہ بھی اچھی چیز ہے (اس میں نہ کوئی قباحت ہے نہ یہ اخلاص کے منافی ہے) اور اگر تم

आवश्यकता वालों को दो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है और यह कार्य प्रणाली तुम्हारी बहुत सी बुराईयों पर आवरण डाल देगी, ईश्वर तुम्हारे कर्मों को जानता है (271)

صدقات چھپا کر ضرورت مندوں کو ادا کرو تو یہ تمہارے لئے بہتر ہے اور یہ طرز عمل تمہاری بہت سی برائیوں پر پردہ ڈال دے گا اللہ تمہارے اعمال سے باخبر ہے (۲۷۱)

ऐ नबी लोगों को पथ प्रदर्शन प्रदान कर देने का उत्तरदायित्व तुम पर नही है (आप पर भार केवल संदेश पहुंचा देना है और अपने कर्म से बता देना है-5:99) और ईश्वर का नियम पथ प्रदर्शन उसे देता है जो स्वयं चाहता है और जो तुम माल व्यय करोगे वह तुम्हारे अपने ही लिए है और तुम जो भी व्यय करोगे उस व्यय करने से तुम्हारा इरादा निःसन्देह ईश्वर की प्रसन्नता चाहना होगा और तुम जो धन व्यय करोगे वह पूरा पूरा लौटा दिया जाएगा और तुम पर अत्याचार नही किया जाएगा (272)

اے نبی لوگوں کو ہدایت بخش دینے کی ذمہ داری تم پر نہیں ہے (آپ کے ذمہ صرف پیغام پہنچا دینا اور اپنے عمل سے بتا دینا ہے۔۵:۹۹) اور اللہ کا قانون ہدایت اسے دیتا ہے جو خود چاہتا ہے اور جو تم مال خرچ کرو گے وہ تمہارے اپنے ہی لئے ہے اور تم جو بھی خرچ کرو گے اس خرچ کرنے سے تمہارا منشا یقیناً اللہ کی رضا چاہنا ہوگا اور تم جو مال خرچ کرو گے وہ پورا پورا واپس کر دیا جائے گا اور تم پر ظلم نہیں کیا جائے گا (۲۷۲)

दान का धन उन निर्धनों के लिए भी है जो ईश्वर के कार्य के लिए आबद्ध हो जाएं वह जीविका कमाने के लिए पृथ्वी में चल फिर न सकते हो उनके प्रश्न न करने के कारण अनजान व्यक्ति उनको सम्पन्न जानता है और तुम उन्हें उनके मुख से पहचान लोगे वह लोगों से लिपट कर प्रश्न नही करेंगे और तुम जो भी धन व्यय करोगे ईश्वर उसे भलिभांति जानता है (273)

صدقوں کے مال ان محتاجوں کے لئے بھی ہیں جو اللہ کی راہ میں پابند ہو جائیں وہ روزی کمانے کے لئے زمین میں چل پھر نہ سکتے ہوں ان کے سوال نہ کرنے کی بدولت بے خبر آدمی ان کو آسودہ حال گمان کرتا ہو اور تم انہیں ان کے چہروں سے پہچان لو گے وہ لوگوں سے لپٹ کر سوال نہیں کریں گے اور تم جو بھی مال خرچ کرو گے اللہ اسے اچھی طرح جانتا ہے (۲۷۳)

जो लोग अपने माल दिन रात प्रकट और गुप्त दान करते है उनका फल उनके रब के पास है और उनके लिए किसी भय और कलेश का स्थान नही है (274)

جو لوگ اپنے مال شب و روز کھلے اور چھپے خرچ کرتے ہیں ان کا اجر ان کے رب کے پاس ہے اور ان کے لئے کسی خوف اور رنج کا مقام نہیں ہے (۲۷۴)

जो लोग ब्याज खाऐंगे वह नही खड़े होंगे किन्तु उस व्यक्ति की भांति खड़े होंगे जिसे शैतान ने प्रेरणा देकर (अधिक से अधिक ब्याज प्राप्त करने के लिए) पागल कर दिया हो यह इसलिए कि वह कहते है व्यापार भी तो सूद के समान है यद्यपि ईश्वर ने व्यापार को वैध बनाया और ब्याज को अवैध बनायाहै फिर व्यक्ति जिसके पास उसके रब की ओर से उसका आदेश आ चुका यदि वह ब्याज लेने से रुक जाएगा तो उसके लिए है जो गमन हो चुका उसका प्रसंग ईश्वर को समर्पित है और जिन लोगों ने फिर ब्याज लिया तो वही लोग नर्क में जाने वाले है वह उसके दण्ड में सदैव रहने वाले है (275) {3:130, 30:39, 53:39}

جو لوگ سود کھائیں گے وہ نہیں کھڑے ہوں گے مگر اس آدمی کی طرح کھڑے ہوں گے جسے شیطان نے ترغیب دے کر (زیادہ سے زیادہ سود حاصل کرنے کے لئے) خبطی کر دیا ہو یہ اس لئے کہ وہ کہتے ہیں تجارت بھی تو سود کے مانند ہے حالانکہ اللہ نے تجارت کو حلال ٹھہرایا ہے اور سود کو حرام قرار دیا ہے پھر وہ آدمی جس کے پاس اس کے رب کی طرف سے اس کا نصیحت نامہ آ چکا اگر وہ سود خوری سے باز آ جائے گا تو اس کے لئے ہے جو گزر چکا اس کا معاملہ اللہ کے حوالے ہے اور جن لوگوں نے پھر سود خوری کی پس وہی لوگ اہل نار ہیں وہ اس کی سزا میں ہمیشہ رہنے والے ہیں (۲۷۵) [۳:۱۳۰، ۳۰:۳۹، ۵۳:۳۹]

ईश्वर ब्याज को नष्ट करता है और दान को बढ़ाता है क्योंकि ईश्वर हर विरोधी और पापी को अभिरूचि नही करता (276)

اللہ سود کو ملیا میٹ کرتا ہے اور صدقات کو بڑھاتا ہے کیونکہ اللہ ہر منکر اور گنہگار کو پسند نہیں کرتا (۲۷۶)

हां जो लोग आस्था ले आएं और सत्कर्म करे और नमाज़ स्थापित करें और दान दें उनका प्रतिदान निःसन्देह उनके स्वामी के पास है और उनके लिए किसी भय और कलेश का अवसर नही (277)

ہاں جو لوگ ایمان لے آئیں اور نیک عمل کریں اور نماز قائم کریں اور زکوٰۃ دیں ان کا اجر بے شک ان کے رب کے پاس ہے اور ان کے لئے کسی خوف اور رنج کا موقع نہیں (۲۷۷)

ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो ईश्वर से डरो और

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو اللہ سے ڈرو اور جو کچھ تمہارا

سودلوگوں پر باقی رہ گیا ہے اسے چھوڑ دو اگر واقعی تم ایمان لائے ہو (۲۷۸) [۱۱:۶۴، ۲۳:۵۴]

जो कुछ तुम्हारा सूद लोगों पर शेष रह गया है उसे छोड़ दो यदि वास्तव में तुम आस्था लाए हो (278) {11:64, 23:54}

لیکن اگر تم نے ایسا نہ کیا تو آگاہ ہو جاؤ کہ اللہ اور اس کے رسول کی طرف سے تمہارے خلاف اعلان جنگ ہے اب بھی توبہ کرلو (اور سود چھوڑ دو) تو اپنا اصل سرمایا لینے کے تم حق دار ہو نہ تم ظلم کرو نہ تم پر ظلم کیا جائے (۲۷۹)

यदि तुमने ऐसा न किया तो सुचित हो जाओ कि ईश्वर और उस के रसूल की ओर से तुम्हारे विरुद्ध युद्ध की घोषणा है अब भी पश्चाताप कर लो (और ब्याज छोड़ दो) तो अपना मूल धन लेने के तुम अधिकारी हो न तुम पर अत्याचार करो न तुम पर अत्याचार किया जाए (279)

تمہارا قرض دار تنگ دست ہو تو ہاتھ کھلنے تک اسے مہلت دو اور جو صدقہ کر دو تو یہ تمہارے لئے زیادہ بہتر ہے اگر تم سمجھو (۲۸۰)

तुम्हारा ऋणी निर्धन हो तो हाथ खुलने तक उसे छूट दो और जो दान कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है यदि तुम समझो, (280)

اس دن کی رسوائی و مصیبت سے بچو جب کہ تم اللہ کی طرف واپس ہو گے وہاں پر ہر آدمی کو اس کی کمائی ہوئی نیکی یا بدی کا پورا پورا بدلہ مل جائے گا اور کسی پر ظلم نہ ہوگا (۲۸۱)

उस दिन के अपमान व संकट से बचो जब कि तुम ईश्वर की ओर वापस होंगे वहां पर आदमी को उस की कमाई हुई नेकी या बदी का पूरा पूरा फल मिल जाएगा और किसी पर अत्याचार न होगा, (281)

اے اہل ایمان جب تم ایک مقررہ مدت تک کے لئے کسی سے ادھار کا معاملہ کرو تو اسے لکھ لیا کرو اور چاہئے کہ تمہارے اس باہمی معاملہ کو کوئی لکھنے والا انصاف کے ساتھ لکھے اور کوئی لکھنے والا لکھنے سے انکار نہ کرے جیسا کہ اللہ نے اسے سکھایا ہے پس کاتب لکھے اور جس پر حق واجب ہے لکھوائے یعنی قرض لینے والا. اور اللہ کی نافرمانی سے بچے جو اس کا رب ہے اور حق میں سے کچھ کم نہ کرے. پس اگر قرض لینے والا بے عقل یا ناتواں ہو یا املا کرنے کی طاقت نہ رکھتا ہو تو اس کا ولی انصاف کے ساتھ املا کرادے اور دستاویز لکھادے پھر اپنے مردوں میں سے دو آدمیوں کی اس پر گواہی کرالو. اگر دو آدمی نہ ہوں تو ایک مرد اور دو عورتیں ہوں تا کہ ایک بھول جائے تو دوسری اسے یاد دلادے. یہ گواہ ایسے لوگوں میں سے ہونے چاہئیں جن کی گواہی تمہارے درمیان مقبول ہو. گواہوں کو جب گواہی کے لئے کہا جائے تو انہیں انکار نہ کرنا چاہیے معاملہ چاہے چھوٹا ہو یا بڑا میعاد کے ساتھ اس کی دستاویز لکھوا لینے میں تساہل نہ کرو. اللہ کے نزدیک یہ طریقہ تمہارے لئے زیادہ مبنی بر انصاف ہے. اس سے شہادت قائم ہونے میں زیادہ سہولت ہوتی ہے. اور تمہارے شک وشبہ میں مبتلا ہونے کا امکان کم رہ جاتا ہے. ہاں جو تجارتی لین دین دست بدست تم لوگ آپس میں کرتے ہو اس کو نہ لکھا جائے تو کوئی حرج نہیں. مگر تجارتی معاملہ طے کرتے وقت گواہ کرلیا کرو. کاتب اور گواہ نقصان نہ کریں نہ ان کو ستایا جائے. ایسا کرو گے تو گناہ کا ارتکاب کرو گے. اللہ کے غضب سے بچو وہ تم کو صحیح طریق عمل کی تعلیم دیتا ہے اور اللہ کو ہر چیز کا علم ہے (۲۸۲)

ऐ आस्तिको! जब तुम एक निश्चित अवधि तक के लिए किसी से उधार का व्यवहार करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि तुम्हारे इस आपसी प्रसंग को कोई लिखने वाला न्याय के साथ लिखे और कोई लिखने वाला लिखने से इनकार न करे जैसा कि ईश्वर ने उसे सिखाया है अतः लेखक लिखे और जिस पर अधिकार अनिवार्य है लिखवाए अर्थात् ऋण लेने वाला और ईश्वर की अवज्ञा से बचे जो उस का रब है, और अधिकार में से कुछ कम न करे, अतः यदि उधार लेने वाला बुद्धिहीन या दुर्बल हो या लिखवाने की क्षमता न रखता हो तो उसका अभिभावक न्याय के साथ लिखा दे और लेखपत्र लिखा दे फिर अपने नरों में से दो नरों की उस पर साक्ष्य करा लो, यदि दो आदमी न हों तो एक पुरुष और दो स्त्री हो ताकि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे यह साक्षी ऐसे लोगों में से होने चाहिए जिनकी साक्ष्य तुम्हारे मध्य मान्य हो, साक्षियों को जब साक्ष्य के लिए कहा जाए तो उन्हें नकार न करना चाहिए प्रसंग चाहे छोटा हो या बड़ा अवधि के साथ उसका लेख पत्र लिखवाने में आलस्य न करो, ईश्वर के निकट यह विधि तुम्हारे लिए अधिक न्याय पर आधारित है, इससे साक्ष्य स्थापित होने में अधिक सरलता होती है, और तुम्हारे भ्रम में ग्रस्त होने की सम्भावना कम रह जाती है, हां जो व्यापारिक लेन देन हस्ततः तुम लोग आपस में करते हो उसको न लिखा जाए तो कोई हानि नहीं किन्तु व्यापारिक प्रसंग निश्चित करते समय साक्षी कर लिया करो, लेखक और साक्षी हानि न करें न उनको सताया जाये, ऐसा करोगे तो पाप का व्यवहार करोगे, ईश्वर के प्रकोप से बचो वह तुम को उचित कार्य विधि की शिक्षा देता है, और ईश्वर को हर वस्तु का ज्ञान है (282)

और यदि तुम यात्रा पर हो और तुम्हें कोई लेखक न मिले तो (लेख पत्र का बदल) बन्धक रखी हुई वस्तुऐं जिन पर अधिकार कर लिया गया हो, यदि तुम में कोई व्यक्ति दूसरे पर भरोसा करके उसके साथ कोई व्यवहार करें तो जिस पर विश्वास किया गया है उसे चाहिए कि धरोहर चुकता करे और ईश्वर अपने रब से डरे, और साक्ष्य कदापि न छुपाओं जो साक्ष्य छुपाता है उसका हृदय पाप में ओत प्रोत है, और ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अनजान नहीं है (283)

اوراگرتم سفر میں ہواورتمہیں کوئی لکھنے والا نہ ملے تو (دستہ ویز کا بدل) رھن رکھی ہوئی چیزیں ہیں جس پر قبضہ کرلیا گیا ہو.اگرتم میں سے کوئی آدمی دوسرے پر بھروسہ کرکے اس کے ساتھ کوئی معاملہ کرلے تو جس پر بھروسہ کیا گیا ہے اسے چاہیے کہ امانت ادا کرے.اور اللہ اپنے رب سے ڈرے۔اورشہادت ہرگز نہ چھپاؤ جوشہادت چھپاتا ہے اس کا دل گناہ میں آلودہ ہےاوراللہ تمہارے اعمال سے بےخبرنہیں ہے(۲۸۳)

आकाशों और भूमि में जो कुछ है सब ईश्वर का है तुम अपने हृदय की बाते चाहे प्रकट करो चाहे गुप्त रखो ईश्वर अस्तु उनका लेखा जोखा तुम से लेगा, फिर उसे अधिकार है (अपने विधान के अनुसार) जिसे चाहे क्षमा करे जिसे चाहे दण्ड दे वह हर वस्तु के माप निर्धारित करने वाला है (284) {34:3,4, 45:24, 53:31}

آسمانوں اورزمین میں جو کچھ ہےسب اللہ کا ہےتم اپنے دل کی باتیں خواہ ظاہر کروخواہ چھپاؤ اللہ بہرحال ان کا حساب تم سے لےگا پھراسے اختیار ہے(اپنے قانون کے مطابق) جسے چاہےمعاف کرے جسے چاہےسزادے.وہ ہر چیز کے پیمانے مقرر کرنے والا ہے(۲۸۴)[۴:۳:۳۴
۴۵:۲۴، ۵۳:۳۱]

ईशदूत उस पथ प्रदर्शन पर विश्वास लाया है जो उसके ईश्वर की ओर से उस पर अवतरित हुई है और आस्तिक भी जो रसूल के मानने वाले हैं उन्होंने भी इस शिक्षा को हृदय से स्वीकार कर लिया है, यह सब ईश्वर और उसके फरिश्तों और उसकी पुस्तकों और उसके रसूलों को मानते हैं और उनका कथन यह है कि हम ईश्वर के ईशदूतों को एक दूसरे से पृथक नहीं करते अर्थात् अन्तर नहीं करते, हमने सुना और अनुकरण किया, स्वामी हम तुझ से अपराध की क्षमा के इच्छुक हैं और हमें तेरी ही ओर पलटना है (285) {45:11, 3:164}

رسول اس ہدایت پرایمان لایا ہے جواس کے رب کی طرف سے اس پر نازل ہوئی ہے.اورمومن بھی جو رسول کے ماننے والے ہیں انہوں نے بھی اس ہدایت کو دل سے تسلیم کرلیا ہے. یہ سب اللہ اوراس کے فرشتوں اوراس کی کتابوں اوراس کے رسولوں کو مانتے ہیں اوران کا قول یہ ہے کہ ہم اللہ کے رسولوں کوایک دوسرے سے الگ نہیں کرتے یعنی فرق نہیں کرتے ہم نے سنا اوراطاعت کی مالک ہم تجھ سے خطا بخشی کے طالب ہیں اورہمیں تیری ہی طرف پلٹنا ہے (۲۸۵)[۴۵:۱۱، ۳:۱۶۴]

नोट- पथ प्रदर्शन आदेश क्या है? कुरआन ही आदेश है अर्थात् मुहम्मद स0 पर कुरआन अवतरित हुआ और कुरआन को ही सबने माना, यतः कुरआन में किसी विभेद का स्थान नहीं है (4:82) और कुरआन पर मुहम्मद स0 और सहाबा कराम आस्था लाए तो स्पष्ट है बिना विभेद वाली वस्तु पर आस्था लाने से विभेद का कोई स्थान नहीं है, परन्तु इसके अतिरिक्त आज मुस्लिम जाति में न जाने कितने मतभेद हैं, और उनका सम्बन्ध मुहम्मद स0 और सहाबा कराम से जोड़ा जाता है जो एक मिथ्या बात है मुहम्मद स0 और सहाबा ने न कुरआन के विरुद्ध कुछ कहा और नहीं व्यवहार किया यह सब एक दुष्टता है जिसका आखेट यह जाति हो गई और आज हीन हो गई ईश्वर हमें मतभेद से बचा ले और अपनी प्रिय जाति बना ले यह अवतरित पथ प्रदर्शन वही है जिसकी प्रार्थना (1:5) में की जाती है और ईश्वर ने इसका उत्तर (2:2) में दिया है कि ऐ प्रार्थना करने वाले जिसकी तू प्रार्थना कर रहा है वह यह है जिसमें कोई शंका नहीं बस इस पर जो कर्म करेगा वह सफल हो जाएगा,

نوٹ:۔ ہدایت کیا ہے؟ قرآن ہی ہدایت ہے.یعنی محمدؐ پرقرآن نازل ہوا اور قرآن کو ہی سب نے مانا چونکہ قرآن میں کسی بھی اختلاف کی گنجائش نہیں (۴:۸۲)اورقرآن پرمحمدؐ اورصحابہ کرام ایمان لائےتو صاف ظاہر ہےبلا اختلاف والی چیز پرایمان لانے سے اختلاف کی کوئی گنجائش نہیں ہے.لیکن اس کے باوجود آج مسلم قوم میں نہ معلوم کتنے اختلاف ہیں اوران کی نسبت محمدؐ اورصحابہ کرام کی طرف کی جاتی ہے.جوایک غلط بات ہےمحمدؐ اورصحابہ کرام نے نہ قرآن کے خلاف کچھ کہا اورنہ ہی عمل کیا. یہ سب ایک شرارت ہےجس کا شکار یہ قوم ہوگئی اورآج ذلیل ہوگئی اللہ ہمیں اس اختلاف سے بچالےاوراپنی مقبول قوم بنالے. یہ نازل شدہ ہدایت وہی ہےجس کی دعا (۱:۵) میں کی جاتی ہےاوراللہ نے اس کا جواب (۲:۲) میں دیا ہےکہ اے دعا کرنے والےجس کی تو دعا کررہا ہےوہ یہ ہےجس میں کوئی شک نہیں بس جواس پرعمل کرلےگا کامیاب ہوجائےگا.

ईश्वर किसी जीव पर उसकी शक्ति से बढ़कर उत्तर दायित्व का भार नहीं डालता हर व्यक्ति ने जो भलाई की है उसका फल उसी के लिए है और जो बदी की है उसका कष्ट उसी पर है (ईमान वालो! तुम यूं प्रार्थना किया करो) ऐ हमारे रब हमसे भूल

اللہ کسی متنفس پراس کی طاقت سے بڑھ کر ذمہ داری کا بوجھ نہیں ڈالتا. ہرآدمی نے جونیکی کمائی ہےاس کا پھل اسی کے لئے ہےاور جو بدی کی ہےاس کا وبال اسی پر ہے (ایمان لانے والو! تم یوں دعا کیا کرو) اے ہمارے رب

चूक में जो अपराध हो जाऐं उन पर पकड़ न कर, स्वामी हम पर वह भार न डाल जो तूने हम से पहले लोगों पर डाले थे स्वामी जिस भार को उठाने की शक्ति हम में नही है वह हम पर न डाल हमारे साथ नम्रता कर हम को क्षमा कर हम पर दया कर तू हमारा स्वामी है नास्तिकों की तुलना में हमारी सहायता कर (286) {2:153, 7:42,157, 23:62}

ہم سے بھول چوک میں جو قصور ہو جائیں ان پر گرفت نہ کر. مالک ہم پر وہ بوجھ نہ ڈال جو تو نے ہم سے پہلے لوگوں پر ڈالے تھے پروردگار جس بار کو اٹھانے کی طاقت ہم میں نہیں ہے وہ ہم پر نہ ڈال ہمارے ساتھ نرمی کر ہم سے درگزر کر ہم پر رحم کر تو ہمارا مولیٰ ہے کافروں کے مقابلہ میں ہماری مدد کر (۲۸۶) [۲:۱۵۳، ۷:۱۵۳، ۷:۴۲، ۱۵۷، ۲۳:۶۲]

नोट- सूरत के अन्त में आस्तिक भक्तों की ओर से एक विशेष प्रार्थना है जो ईश्वर ने बतायी है किन्तु प्रार्थना उस समय स्वीकार होती है और लाभ देती है जब प्रार्थना करने वाला अपनी प्रार्थना को याद रखता है और कर्म करता है, इस आयत में जिन बातों के लिए ईश्वर से सहायता की प्रार्थना की है उनमें सहायता जब ही आएगी जब प्रार्थना करने वाला अर्थात् हम मुसलमान ईश्वर के आदेश की अवहेलना न करें और उसके अवतरित विधान पर विश्वास करते हुए इस पर कार्य करें न इस विधान से कम न अधिक जैसा कि (2:285) में प्रकट है, अभिप्राय यह है कि जीवन व्यतीत करने की विधि कुरआन में जैसा लिखा है और आदेश है उस पर पूरी क्रिया करें, जान बूझकर क्षमा और अनुशंसा की आशा पर कोई त्रुटि या पाप न करें हां यदि भूल से हो जाए तो क्षमा मांगने पर ईश्वर उसको क्षमा कर देगा,

نوٹ:۔سورت کے آخر میں مومن بندوں کی طرف سے ایک خاص دعا ہے جو اللہ نے بتا دی.مگر دعا اس وقت قبول ہوتی ہے اور فائدہ دیتی ہے جب دعا کرنے والا اپنی دعا کو یاد رکھتا ہے اور عمل کرتا ہے.اس آیت میں جن باتوں کے لئے اللہ سے مدد کی دعا کی ہے ان میں مدد جب ہی آئے گی جب دعا کرنے والا یعنی ہم مسلمان اللہ کے حکم کی خلاف ورزی نہ کریں.اور اس کے نازل کردہ قانون پر یقین کرتے ہوئے اس پر عمل کریں.نہ اس قانون سے کم نہ زیادہ جیسا کہ (۲:۲۸۵) میں ظاہر ہے.مقصد یہ ہے کہ ضابطہ حیات قرآن میں جیسا لکھا اور حکم ہے اس پر پورا عمل کریں جان بوجھ کر بخشش اور شفاعت کی امید پر کوئی کوتاہی یا گناہ نہ کریں ہاں اگر بھول سے ہو جائے تو معافی مانگنے پر اللہ اس کو معاف کر دے گا.

आले इमरान मदनी {3}

آل عمران [۳]

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अलिफ लाम मीम (मुहम्मद स0) (1) वह ईश्वर है क्या वह ईश्वर नही? निःसंदेह वह है वह ईश्वर सदैव जीवित रहने वाला स्वंय स्थापित रहने वाला हर वस्तु को स्थापित रखने वाला है, (2)

ऐ ईशदूत उसने तुम पर यह पुस्तक अवतरित की सत्यता के साथ प्रमाणी करण उस की जो उस की रक्षा के बीच है और तौरात व इन्जील अवतरित की (3)

और (वास्तव में) इससे पूर्व (अर्थात कुरआन से) वह (तौरात और इन्जील) इन्सानो के लिए शिक्षा थी, अब यह कसौटी कुरआन अवतरित किया जो लोग ईश्वर के आदेश को स्वीकार करने से नकार कर दें उनको निःसंदेह कठोर दण्ड मिलेगा, वास्तविक्ता यह है कि ईश्वर अधिपति है और हर पाप का पूरा दण्ड देने वाला है, (4)

निःसंदेह ईश्वर से कोई वस्तु नही छुप सकती न पृथ्वी में और न आकाश में तो इस प्रकार जब हर पाप की वास्तविक्ता का भलिभांति ज्ञान है तो उसके न्यायालय से किसी पापी का बच निकलना कदापि सम्भव नही जबकि उसके यहां न घूस चल सकती है न अनुशंसा, (5) {2:48,254,}

الم (محمدؐ)(۱) وہ اللہ ہے کیا وہ اللہ نہیں؟ یقیناً وہ ہے ہمیشہ زندہ رہنے والا.خود قائم رہنے والا ہر شئے کو قائم رکھنے والا ہے (۲)

اے نبی اس نے تم پر یہ کتاب نازل کی حق اور صدق کے ساتھ تصدیق اس کی جو اس کی حفاظت کے درمیان ہے اور توراۃ انجیل نازل کیں (۳)

اور (حقیقت میں) اس سے قبل (یعنی قرآن سے) وہ (توراۃ اور انجیل) انسانوں کے لئے ہدایت تھیں اب یہ کسوٹی قرآن نازل کیا.جو لوگ اللہ کے فرمان کو قبول کرنے سے انکار کر دیں ان کو یقیناً سخت سزا ملے گی.حقیقت یہ ہے کہ اللہ غالب ہے اور ہر جرم کی پوری پوری سزا دینے والا ہے (۴)

یقیناً اللہ سے کوئی چیز نہیں چھپ سکتی نہ زمین میں نہ آسمان میں (تو اس طرح جب) ہر جرم کی حقیقت سے پوری طرح باخبر ہے تو اس کی عدالت سے کسی مجرم کا بچ نکلنا ہرگز ممکن نہیں جب کہ اس کے یہاں نہ رشوت راہ پا سکتی ہے نہ شفارش (۵) [۲:۴۸، ۲۵۴]

वही तो है जो माताओं के पेटों में जैसे चाहता है तुम्हारी आकृति बनाता है कौन कहता है ईश्वर नही है निःसंदेह वह है वह पूर्ण सम्मान वाला है और पूर्ण सम्मान वाला है, (6)

ऐ ईशदूत वही ईश्वर है जिस ने यह पुस्तक तुम पर अवतरित की इस पुस्तक में दो प्रकार की आयत हैं, एक सुदृढ़ जो पुस्तक का मूल आधार है और दूसरी अनुरूप, जिन के मनो में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज में सदैव अनुरूपता मिलती

وہی تو ہے جو ماؤں کے پیٹوں میں جیسے چاہتا ہے تمہاری صورت گری کرتا ہے کون کہتا ہے وہ اللہ نہیں ہے؟ یقیناً وہ ہے وہ کامل حکمت والا کامل عزت والا ہے (۶)

اے نبی وہی اللہ ہے جس نے یہ کتاب تم پر نازل کی اس کتاب میں دو طرح کی آیات ہیں ایک محکمات جو کتاب کی اصل بنیاد ہیں اور دوسری متشابہ جن کے دلوں میں کجی ہے وہ فتنے کی تلاش میں ہمیشہ متشابہات کے پیچھے

जुलती के पीछे पड़े रहते हैं, (अपनी बुद्धि से) उनको अर्थ देने का प्रयास करते हैं, यद्यपि उनका वास्तविक अर्थ कोई नही जानता परन्तु ईश्वर और वह लोग जो ज्ञान में पक्के हैं जानते हैं और ज्ञान में परिपक्व वाले कहते हैं कि हमारा उन पर विश्वास है यह सब हमारे रब की ओर से है और सत्य यह है कि किसी वस्तु से ठीक शिक्षा केवल बुद्धिमान लोग ही प्राप्त करते हैं (7) {41:53, 39:23, 4:162}

پڑے رہتے ہیں.(اپنی عقل سے) ان کو معنی پہنانے کی کوشش کرتے ہیں حالانکہ ان کا حقیقی مفہوم کوئی نہیں جانتا. مگر اللہ اور وہ لوگ جو علم میں راسخ ہیں جانتے ہیں.اور راسخ علم والے کہتے ہیں کہ ہمارا ان پر ایمان ہے یہ سب ہمارے رب کی طرف سے ہیں اور سچ یہ ہے کہ کسی چیز سے صحیح سبق صرف دانشمند لوگ ہی حاصل کرتے ہیں (۷)

[۴۱:۵۳، ۳۹:۲۳، ۴:۱۶۲]

नोट- अनुरूप अर्थात मिलती जुलती आयतों को उपद्रव उत्पन्न करने वाले व्यक्ति अपनी बुद्धि से भांति-भांति के अर्थ निकालते हैं जो मिथ्या होते हैं, अनुरूप का अर्थ कुरआन स्वंय ही बार-बार आयात को लाकर उनके द्वारा स्पष्ट कर देता है, सुदृढ़ के प्रकाश में, परन्तु यह कार्य वह कर सकतें हैं जिनको ज्ञान में परिपक्वता हो और ईश्वर से मिलने और लेखा जोखा का भय हो और वही ज्ञान में पक्के होते हैं और बुद्धिमान भी वही हैं,

نوٹ:۔متشابہات یعنی ملتی جلتی آیتوں کو فتنہ پیدا کرنے والے آدمی اپنی عقل سے طرح طرح کے معنی نکالتے ہیں جو غلط ہوتے ہیں.متشابہات کا مطلب قرآن خود ہی تصریف آیات کے ذریعہ ظاہر کردیتا ہے محکمات کی روشنی میں مگر یہ کام وہ کرسکتے ہیں جن کو علم کی پختگی ہو اور اللہ سے ملنے اور حساب کتاب کا خوف ہو اور وہی علم میں راسخ ہوتے ہیں اور دانشمند بھی وہی ہیں.

आयात में स्पष्ट है कि इन मताशाबाह (मिलती-जुलती) का अर्थ ईश्वर जानता है और वह भी जानते हैं जो ज्ञान में पक्के होते हैं, किन्तु एहले सुन्नत ने तो यह स्वीकार किया है कि इनका अर्थ केवल ईश्वर जानता है और नही जानता, तो प्रश्न उत्पन्न होता है फिर यह अवतरित क्यों की गई, यद्यपि ऐसा नही है, यदि इनका अर्थ केवल ईश्वर ही को जानना था तो इनको अवतरित करने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, केवल वही आयात अवतरित की जाती जिनका अर्थ हर व्यक्ति जान लेता, परन्तु बात यह है कि इनका अर्थ ईश्वर तो जानता ही है परन्तु वह भी जानते हैं जो ज्ञान में पक्के और बुद्धिमान होते हैं, एहले सुन्नत की आस्था को देख लिया अब शीआ हजरात का दृष्टिकोण भी अवलोकन हो, शीआ लोगों ने यह स्वीकार किया है कि इनका अर्थ ज्ञान में पक्के जानते हैं परन्तु उन्होंने ज्ञान में परिपक्व केवल अली र० और संतान अली अर्थात 12 नायकों को ही स्वीकार किया है जबकि यह दृष्टिकोण कुरआन की आयत से मिथ्या सिद्ध हो रहा है, ज्ञान में परिपक्व हर वह व्यक्ति हो सकता है जो ज्ञान जानता है ज्ञानी है और ईश्वर से डरता है, ईश्वर से डरने वाले ही ज्ञानी होते हैं चाहे वह अली की संतान हो या और कोई (4:162) में अवलोकन हो ईश्वर ने क्या कहा है,

آیت میں ظاہر ہے کہ ان متشابہات کا مطلب اللہ جانتا ہے اور وہ بھی جانتے ہیں جو علم میں پختہ ہوتے ہیں لیکن اہل سنت نے تو یہ تسلیم کیا ہے کہ ان کا مطلب صرف اللہ جانتا ہے اور نہیں جانتا.تو سوال پیدا ہوتا ہے پھر یہ نازل کیوں کی گئیں؟ حالانکہ ایسا نہیں ہے اگر ان کا مطلب صرف اللہ ہی کو جاننا تھا تو ان کو نازل کرنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا صرف وہی آیات نازل کی جاتیں جن کا مطلب ہر آدمی جان لیتا.مگر بات یہ ہے کہ ان کا مطلب اللہ تو جانتا ہی ہے مگر وہ بھی جانتے ہیں جو علم میں راسخ اور دانشمند ہوتے ہیں.اہل سنت کے عقیدے کو دیکھ لیا اب شیعہ حضرات کا نظریہ بھی ملاحظہ ہو.شیعہ لوگوں نے یہ تسلیم کیا ہے کہ ان کا مطلب علم میں راسخ بھی جانتے ہیں مگر انہوں نے علم میں راسخ صرف علیؓ اور اولاد علی یعنی ۱۲/اماموں کو ہی تسلیم کیا ہے جب کہ یہ نظریہ قرآن کی آیت سے غلط ثابت ہو رہا ہے علم میں راسخ ہر وہ انسان ہو سکتا ہے جو علم جانتا ہے دانشمند ہے اور اللہ سے ڈرتا ہے اللہ سے ڈرنے والے ہی عالم ہوتے ہیں چاہے وہ اولاد علی سے ہوں یا اور کوئی (۴:۱۶۲) میں ملاحظہ ہو ارشاد الٰہی.

(4:162) किन्तु जो लोग उनमें (अर्थात पुस्तक वालों में) पक्का ज्ञान रखते हैं (रासिखूना फिलइल्म) और धर्म वादी हैं वह सब इस शिक्षा पर विश्वास लाते हैं जो ऐ ईशदूत तुम्हारी ओर अवतरित की गई है और जो तुम से पहले प्रेषित की गई थी,

(۴:۱۶۲) مگر جو لوگ ان میں (یعنی اہل کتاب میں) پختہ علم رکھتے ہیں (راسخون فی العلم) اور ایمان دار ہیں وہ سب اس تعلیم پر ایمان لاتے ہیں جو اے نبی تمہاری طرف نازل کی گئی ہے اور جو تم سے پہلے نازل کی گئی تھی.

इस आयात में पहले पुस्तक धारी या हर काल के मानव जो ज्ञान में परिपक्व हैं उनको बताया गया है न कि संतान अली, अतः हर व्यक्ति जो ज्ञान प्राप्त करता है वह ज्ञान में परिपक्व हो सकता है, अतः (4:162) ने शीया आस्था संतान अली तक ही सीमित को मिथ्या कर दिया, इस प्रकार की बातें कुरआन से दूरी और हठ का कारण हैं,

اس آیت میں پہلے اہل کتاب یا ہر زمانے کے انسان جو علم میں پختہ ہیں ان کو بتایا گیا ہے نہ کہ اولاد علی.اس لئے ہر آدمی جو علم حاصل کرتا ہے وہ راسخون فی العلم ہو سکتا ہے اس لئے (۴:۱۶۲) نے شیعہ عقیدہ اولاد علی تک ہی محدود کو باطل کردیا.اس طرح کی باتیں قرآن سے دوری اور ضد کا سبب ہے.

इन मताशाबहात के अनुचित अर्थ निकालने वाले ही पथ भ्रष्ट होते हैं और उनका ठीक अर्थ निकालने वाले पथ प्रदर्शन पाते हैं, जिसके लिए ईश्वर ने कहा है कि इनके द्वारा बहुत व्यक्ति ठीक मार्ग पाते हैं और बहुत भटक जाते हैं,

ان متشابہات کے غلط معنی نکالنے والے ہی گمراہ ہوتے ہیں اور ان کا صحیح مطلب نکالنے والے راہ راست پاتے ہیں جس کے لئے اللہ نے فرمایا ہے کہ ان کے ذریعہ بہت آدمی ہدایت پاتے ہیں اور بہت گمراہ ہو جاتے ہیں.

(और वह ज्ञान में पक्के अपने रब से यूं प्रार्थना करते हैं) ऐ हमारे रब हमारे हृदयों को वक्र (कजी) से बचा बाद इसके कि तूने हमें सीधा मार्ग दिया (अर्थात हमें सीधे मार्ग पर स्थापित रख ऐसा न हो कि हम इससे हट कर पथ भ्रष्ट हो जाऐं और हमारे हृदय टेढ़े हो

(اور وہ علم میں پختہ اپنے رب سے یوں عرض کرتے ہیں) اے ہمارے رب ہمارے دلوں کو کجی سے بچا بعد اس کے کہ تو نے ہمیں ہدایت دی ہے (یعنی ہمیں ہدایت پر قائم رکھ ایسا نہ ہو کہ ہم اس سے منحرف ہو کر گمراہی میں مبتلا ہو جائیں اور ہمارے دل

ٹھہرے ہو جائیں) اور اپنی طرف سے رحمت عطا فرما بے شک تو ہی بے عوض و بے غرض مراد عطا فرمانے والا ہے (۸)

जाएँ) और अपनी ओर से दया प्रदान कर निःसन्देह तू ही निःस्वार्थ अभिप्राय प्रदान करने वाला है (8)

اے ہمارے رب بے شک تو لوگوں کو ایک ایسے دن جس کے آنے میں کوئی شبہ نہیں ہے جمع کرنے والا ہے بے شک اللہ وعدہ خلاف نہیں کرتا (۹)

ऐ हमारे रब निःसन्देह तू लोगों को एक ऐसे दिन जिसके आने में कोई शंका नही है संग्रह करने वाला है निःसन्देह ईश्वर वचन भंग नही करता (9)

جن لوگوں نے کفر کیا (یعنی محمدؐ پر اور قرآن پر ایمان نہ لائے اور نیک عمل نہ کئے) یقین کرو کہ اللہ کے مقابلہ میں ہرگز کام نہ آئیں گے ان کے اموال نہ ان کی اولاد کچھ بھی اور وہی لوگ آتش دوزخ کا ایندھن ہیں (۱۰)

जिन लोगों ने इनकार किया (अर्थात् मुहम्मद स0 पर और कुरआन पर आस्था न लाए और सत्कर्म न किये) विश्वास करो कि ईश्वर के सम्मुख कदापि काम न आएँगे उनके धन न उनकी सन्तान कुछ भी और वही लोग नर्क की अग्नि का ईंधन है (10)

ان منکروں کی مثال قوم فرعون اور ان سے پہلی قوموں جیسی ہے کہ انہوں نے ہماری آیتوں کو (اس حد تک) جھٹلایا کہ اللہ نے ان کے انکار کے بدلے انہیں پکڑ لیا حقیقت یہ ہے کہ اللہ مجرموں کو عذاب کرنے میں بہت سخت ہے (۱۱)

उन विरोधियों की उपमा फ़िरऔन के समुदाय और उनसे पहली जातियों जैसी है कि उन्होंने हमारी आयतों को (इस सीमा तक) झुटलाया कि ईश्वर ने उनके इनकार के बदले उन्हें पकड़ लिया, सत्य यह है कि ईश्वर पापियों को यातना देने में बहुत कठोर है (11)

ان سے کہو جنہوں نے کفر کیا کہ تم جلد مغلوب ہو گے اور جہنم کی طرف ہانکے جاؤ گے اور وہ بُری جگہ ہے (۱۲)

उनसे कहो जिन्होंने नकार किया कि तुम शीघ्र परास्त होंगे और नर्क की ओर हांके जाओगे और वह बुरा स्थान है (12)

تمہیں (کفار پر اہل ایمان کے غلبہ کی) دلیل مل چکی ہے دو جماعتوں میں جو (بدر کے میدان میں) باہم مقابل ہوئی تھیں۔ ایک جماعت اللہ کی راہ میں جنگ کر رہی تھی اور دوسری جماعت کافر تھی دونوں جماعتیں ایک دوسرے کو اپنے سے دو چند دیکھ رہے تھے آنکھ کا دیکھنا اور اللہ اپنی مدد سے قوت دیتا ہے اس کو جو چاہتا ہے (یعنی اللہ کے بتائے طریقے سے ہر طرح کی جنگی تیاری کرتا ہے اور نیک عمل) بے شک اس واقعہ میں نگاہ والوں کے لئے بڑی عبرت ہے (۱۳) [۲۲:۴۰]

तुम्हें (नास्तिकों पर आस्तिकों के प्रभुत्व का) प्रमाण मिल चुका है दो दलों में जो (बदर के मैदान में) एक दूसरे के सम्मुख हुए थे एक दल ईश्वर के मार्ग में युद्ध कर रहा था और दूसरा दल नास्तिक था। दोनों दल एक दूसरे को अपने से दो चन्द देख रहे थे आंख का देखना और ईश्वर अपनी सहायता से शक्ति देता है उसको जो चाहता है (अर्थात ईश्वर की बताई विधि से हर प्रकार की जंगी तैयारी करता है और अच्छे कर्म) निःसन्देह इस घटना में दृष्टि वालों के लिए बड़ी शिक्षा है (13) {22:40}

مرغوب چیزوں کی محبت لوگوں کے لئے مزین کر دی گئی ہے جیسے عورتیں اور بیٹے اور سونے اور چاندی کے جمع کئے ہوئے خزانے اور نشاندار گھوڑے اور چوپائے اور کھیتی۔ یہ دنیا کی زندگی کا سامان ہے اور لوٹنے کا اچھا ٹھکانا تو اللہ تعالیٰ ہی کے پاس ہے (۱۴)

रुचिकर वस्तुओं का स्नेह लोगों के लिए सुसज्जित कर दी गई है जैसे स्त्री और पुत्र और सोने और चान्दी के संग्रह किए हुए कोष और चिन्ह लगे घोड़े और पशु और खेती यह दुनिया के जीवन का सामान है और लौटने का अच्छा स्थान तो ईश्वर ही के पास है (14)

اے رسول کہہ دیجیے گا کہ کیا میں تم کو اس سے بہتر چیز کی خبر دوں جو ان لوگوں کے لئے ہے جو ضابطہ الٰہی کی مخالفت سے بچنے والے ہیں ان کے لئے اللہ کے یہاں ایسے باغات ہیں جن کی سطح میں نہریں بہتی ہیں ان باغوں میں پاکیزہ سیرت والے ساتھی اور رضا الٰہی کا پورا سامان ہے یہ ہے کہ اللہ اپنے بندوں کے جملہ اعمال کو خوب دیکھنے والا ہے (۱۵)

ऐ ईशदूत कह देना कि क्या मैं तुमको इससे उत्तम वस्तु की सूचना दूं जो उन लोगों के लिए है जो ईश्वर के नियम के विरोध से बचने वाले हैं उनके लिए ईश्वर के यहां ऐसे उपवन हैं जिनके तल में नहरें बहती हैं। उन उपवनों में पवित्र आचरण वाले साथी और ईश्वर की प्रसन्नता का पूरा सामान है यह कि ईश्वर अपने भक्तों के समस्त कर्मों को उत्तम देखने वाला है (15)

وہ وہ لوگ ہیں جو کہتے ہیں کہ مالک ہم ایمان لائے ہماری خطاؤں سے درگزر فرما اور ہمیں آتش دوزخ سے بچا لے (۱۶)

वह वह लोग है जो कहते है कि स्वामी हम आस्था लाऐ हमारी त्रुटि को क्षमा कर और हमें नर्क की अग्नि से बचा ले (16)

وہ وہ لوگ ہیں جو صبر کرنے والے ہیں سچے ہیں فرمانبردار

वह वह लोग है जो धैर्य करने वाले है सच्चे है

आज्ञाकारी और दानी है और रात्रि की अंतिम घड़ियों में ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना करते हैं (17)

ईश्वर ने स्वयं इस बात से सूचित किया है निःसन्देह वह है, कौन कहता है कि ईश्वर नही, निःसन्देह वह है और फरिश्ते और सब ज्ञानी भी जो न्याय पर स्थिर हैं वह भी साक्ष्य देते हैं कि वह है, कौन कहता है कि ईश्वर नहीं है वह है जो अधिपत्य और युक्ति वाला है (18)

निःसन्देह ईश्वर का वांछनीय धर्म केवल आत्म-समर्पण (अर्थात निर्मल ईश्वर की आज्ञापलन करना और शान्ति से रहना) है इस धर्म से हटकर जो अनेक मार्ग लोगों ने अपना लिए हैं जिन्हें पुस्तक दी गई थी उनके इस कार्य शैली का कोई कारण इसके अतिरिक्त न था कि उन्होंने ज्ञान आने के बाद आपस में एक दूसरे पर अतिक्रमण करने के लिए ऐसा किया और जो कोई ईश्वर के विधान व संदेश के अनुकरण से नकार कर दे ईश्वर को उससे लेखा लेते कुछ देर नही लगती (19)

ہیں اور فیاض ہیں اور رات کی آخری گھڑیوں میں اللہ سے مغفرت کی دعائیں مانگا کرتے ہیں (۱۷)

اللہ نے خود اس بات کو بتایا ہے بے شک وہ ہے کون کہتا ہے کہ اللہ نہیں ہے یقیناً وہ ہے اور فرشتے اور سب اہل علم بھی جو انصاف پر قائم ہیں وہ بھی گواہی دیتے ہیں کہ وہ ہے کون کہتا ہے کہ اللہ نہیں وہ ہے جو غلبہ اور حکمت والا ہے (۱۸)

بلا شبہ اللہ کا پسندیدہ دین صرف اسلام (یعنی خالص اللہ کی فرمانبرداری کرنا اور سلامتی امن سے رہنا) ہے اس دین سے ہٹ کر جو مختلف طریقے لوگوں نے اختیار کیے جنہیں کتاب دی گئی تھی ان کے اس طرز عمل کی کوئی وجہ اس کے سوا نہ تھی کہ انہوں نے علم آنے کے بعد آپس میں ایک دوسرے پر زیادتی کرنے کے لئے ایسا کیا اور جو کوئی اللہ کے احکام وہدایات کی اطاعت سے انکار کر دے اللہ کو اس سے حساب لیتے کچھ دیر نہیں لگتی (۱۹)

यदि लोग आपसे झगड़ा करें आप कह दो कि मैंने और मेरा अनुसरण करने वालों ने ईश्वर की आज्ञाकारी कर ली है और आप उन लोगों से जिन्हें पुस्तक दी गई और उम्मीयीन से (जिन्हें पुस्तक नहीं दी गई) ज्ञात करो क्या तुम ईश्वर के आज्ञाकारी हो गए हो, फिर यदि वह ईश्वर के आज्ञाकारी हो जाऐं तो पथ प्रदर्शन पा लेंगे और यदि वह नकार करें तो निःसन्देह आपका दायित्व हमारा संदेश पहुंचा देना है और ईश्वर अपने भक्तों के कर्मों को देखने वाला है (20) {5:92}

اگر لوگ آپ سے جھگڑا کریں تو آپ کہہ دیجیے گا کہ میں نے اور میری پیروی کرنے والوں نے اللہ کی فرمانبرداری کر لی ہے اور آپ ان لوگوں سے جنہیں کتاب دی گئی اور اُمّیّین سے (جنہیں کتاب نہیں دی گئی) معلوم کرو کیا تم اللہ کے فرمانبردار ہو گئے ہو پھر اگر وہ اللہ کے فرمانبردار ہو جائیں تو ہدایت پالیں گے اور اگر وہ اعراض کریں تو بلا شبہ آپ کا ذمہ ہمارا پیغام پہنچا دینا ہے (۵:۹۲) اور اللہ اپنے بندوں کے اعمال کو دیکھنے والا ہے (۲۰)

निःसन्देह जो लोग ईश्वर की आयात (चिन्हों) का नकार करेंगे और ईश्वर के ईशदूतों का अकारण विरोध करेंगे अर्थात झगड़ा करेंगे और उस पवित्र दल का अकारण विरोध करेंगे जो लोगों को न्याय का आदेश देते हैं ऐ ईशदूत पीड़ा देने वाली यातना की सूचना दो (21)

بے شک جو لوگ اللہ کی آیات کا انکار کریں گے اور اللہ کے نبیوں کی ناحق مخالفت کریں گے یعنی جھگڑا کریں گے اور اس مقدس جماعت کی ناحق مخالفت کریں گے جو لوگوں کو انصاف کا حکم دیتے ہیں اے رسول انہیں دردناک عذاب کی خبر دو (۲۱)

यही वह लोग हैं कि उनके कर्म दुनिया में भी नष्ट हो गए और प्लोक में भी नष्ट हो गए और उनका सहायक कोई नही है (22)

यہی वہ لوگ ہیں کہ ان کے اعمال دنیا میں بھی برباد ہو گئے اور آخرت میں بھی برباد ہو گئے اور ان کا مددگار کوئی نہیں (۲۲)

तुमने देखा नही कि जिन लोगों को पुस्तक के ज्ञान में से भाग दिया गया (जिसका अनुसरण करने से राज्य मिला-7:137, 26:59, 44:28) उनकी दशा क्या है? उन्हें जब ईश्वर की पुस्तक की ओर बुलाया जाएगा ताकि वह उनके मध्य निर्णय करे तो उनमें से एक दल मुंह मोड़कर चल देगा और वह हैं ही नकार करने वाले (23)

تم نے نہیں دیکھا کہ جن لوگوں کو کتاب کے علم میں سے حصہ دیا گیا (جس پر عمل کرنے سے حکومت ملی ۷:۱۳۷، ۲۶:۵۹، ۴۴:۲۸) ان کا حال کیا ہے؟ انہیں جب کتاب اللہ کی طرف بلایا جائے گا تا کہ وہ ان کے درمیان فیصلہ کرے تو ان میں سے ایک فریق منہ موڑ کر چل دے گا اور وہ ہیں ہی انکار کرنے والے (۲۳)

नोट- आज यही दशा अधिकांश मुस्लिम जाति की है कुरआन केवल मुख पर है हृदय अधिकांश आयात इलाही का विरोधी है कुरआन कहता है कि परोक्ष ज्ञानी केवल ईश्वर है उनकी आस्था है कि परोक्ष ज्ञानी मुहम्मद स0 थे कुरआन कहता है कि ऐ ईशदूत तुम मरने वाले हो, परन्तु आज कितने मुसलमान ईशदूत के जीवित होने का विश्वास रखते हैं और जान देते हैं और विश्वास करते हैं कि ईशदूत अपनी समाधी

نوٹ:۔ آج یہی حال اکثر مسلم قوم کا ہے قرآن صرف زبان پر ہے دل اکثر آیات الٰہی کا منکر ہے۔ قرآن کہتا ہے عالم الغیب صرف اللہ ہے اُن کا عقیدہ ہے عالم الغیب رسول تھے قرآن کہتا ہے (اِنَّكَ مَيِّتٌ) اے رسول تم مرنے والے ہو مگر آج کتنے مسلمان حیاۃ النبی کے عقیدے پر جان دیتے ہیں اور یقین کرتے

में जीवित है, ईश्वर कहता है कि मेरे यहां कोई अनुशंसा नही किन्तु आज लगभग सम्पूर्ण मुसलमान अनुशंसा का विश्वास रखते है,

यह इस लिए (दण्ड से निर्भिकता) है कि वह कहते है हमें नर्क की अग्नि की यातना स्पर्श नही करेगी परन्तु केवल कुछ दिन (2:80) वास्तविकता यह है कि उन्हें उनके धर्म में धोका दिया है जो वह स्वयं मिथ्या रोपण कर लेते है, (24)

नोट- खेद है कुछ दिन की आस्था आज मुसलमानों की भी परिपक्व हो चुकी है और हर ज्ञानी यही भाषण देता है जिसको सुन कर मुसलमान निर्भिक हो गए हैं जिस कारण से वह हीन हो चुके है क्योंकि मुसलमान ईश्वर की पुस्तक कुरआन और ईश्वर से रुष्ट हो चुके है तब ही तो कुरआन में अंकित आदेशों की अवज्ञा कर रहे है ईश्वर तो रुष्ट नही है वह तो हर समय यही संदेश दे रहा है कि ऐ मेरे बन्दो! मैं कृपाल हूं दयाल, हूं क्षमा शील हूं आजाओ मेरे राज्य सभा में,

परन्तु क्या बनेगी उन पर जब हम उन्हें उस दिन संग्रह करेंगे जिसका आना अवश्य है उस दिन हर आदमी को उसकी कमाई का फल पूरा-पूरा दिया जाएगा और किसी पर अत्याचार न होगा(25) {59:2}

(वास्तविकता यह है कि ईश्वर के निर्णय उसके निर्धारित नियमानुसार होते है उनके विपरीत नही होते अतः) कहो ऐ ईश्वर देश के स्वामी तू देश उसे देता है जो चाहता है और छीनता उस से है जो बुरे कर्म करके अवज्ञाकारी हो जाता है (अर्थात अच्छे और बुरे कर्म पर राज्य मिलता और छिनता है इस में वह भी है कि सैनिक सामग्री भी तैयार करता है शक्ति के साथ राज्य है) और सम्मान और अपमान ईश्वर उसको देता है जो स्वयं चाहता है (अर्थात अच्छे बुरे कर्म पर ही सम्मान और अपमान मिलता है) भलाई भी तेरे अधिकार में है (परन्तु नियम एक ही है) निःसंदेह तू हर वस्तु का अनुमान (माप और विधान) निर्धारित करने वाला है (26) {4:116,22:40,53:39,46:19,2:247,21:105,8:53, 13:11, 38:17}

ऐ ईश्वर तू अपने निर्धारित प्राकृतिक नियम के अनुसार रात्री को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात्री में प्रविष्ट करता है (और इसी नियम के अनुसार) मृत में से जीवित निकालता है और जीवित में से मृत निकालता है (और इसी नियम के अनुसार) तू बेशुमार जीविका देता है उसे जो चाहता है, (27)

नोट- सम्मान और अपमान स्वतः नही मिलता अपितु मनुष्य के अपने कर्म से मिलता है उदाहरणतः जैद चोरी, व्यभिचार करता है झूट बोलता है तो हर आदमी उस को बुरी दृष्टि से देखेगा और पकड़ में आने पर दण्ड भी मिलेगा, इन बुरे कर्मों पर न इन्सान ही उस को सम्मान की दृष्टि से देखेगा और न ही ईश्वर उस को सम्मान देगा अपितु अपमान मिलेगा इसी प्रकार यदि बकर अच्छे कर्म करेगा तो हर व्यक्ति उस को सम्मान देगा और ईश्वर भी उस को सम्मान देगा ऐसा नही है कि आदमी कर्म बुरे करे और सम्मान मिले या अच्छे कर्म करे और उस को अपमान मिले, बस यही नियम ईश्वर का है चूंकि ईश्वर न्यायशील है और न्याय से काम लेकर सम्मान व अपमान देता है,

2:- दिन रात दोनो एक के बाद दूसरा आता रहता है कभी रात्री बड़ी कभी दिन बड़ा परन्तु न दिन को सर्वदा है न रात्री को किसी क्षेत्र पर रात्री उसी समय आती है जब सूर्य औझल हो जाता है और जितने समय औझल रहता है उतने समय ही रात्री रहती है और जितने समय

ہیں کہ رسول اللہ اپنی قبر میں زندہ ہیں۔ اللہ کہتا ہے کہ میرے یہاں کوئی شفاعت نہیں لیکن آج تقریباً پورے مسلمان شفاعت کا یقین رکھتے ہیں۔

یہ اس لئے (عذاب سے بے خوفی) ہے کہ وہ کہتے ہیں ہمیں آخرت کا عذاب چھو نہیں سکے گا مگر صرف چند دن (۲:۸۰) حقیقت یہ ہے کہ انہیں ان کے دین میں دھوکا دے دیا ہے جو وہ خود افترا کر لیتے ہیں (۲۴)
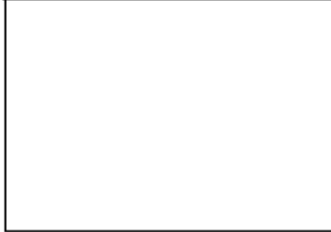
نوٹ:۔افسوس ہے چند دن کا عقیدہ آج اہل اسلام کا بھی پختہ ہو چکا ہے اور ہر عالم یہی تقریر کرتا ہے جس کو سن کر مسلمان بے خوف ہو گئے ہیں جس کی وجہ سے وہ ذلیل ہو چکے ہیں۔ کیونکہ مسلمان اللہ کی کتاب قرآن اور اللہ سے ناراض ہو چکے ہیں تب ہی تو قرآن میں درج احکام کی خلاف ورزی کر رہے ہیں اللہ تو ناراض نہیں ہے وہ تو ہر وقت یہی پیغام دے رہا ہے کہ اے میرے بندو! میں رحمان ہوں رحیم، غفار ہوں آجاؤ میرے دربار میں۔
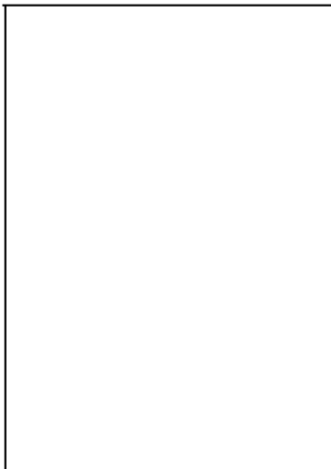
مگر کیا بنے گی ان پر جب ہم انہیں اس روز جمع کریں گے جس کا آنا یقینی ہے۔ اس روز ہر آدمی کو اس کی کمائی کا بدلہ پورا پورا دیا جائے گا اور کسی پر ظلم نہ ہوگا (۲۵)[۵۹:۲]

(یہ حقیقت ہے کہ اللہ کے فیصلے اس کے مقرر کردہ قانون کے مطابق ہوتے ہیں ان کے خلاف کچھ نہیں ہوتا اس لئے) کہو اے اللہ ملک کے مالک تو ملک اسے دیتا ہے جو چاہتا ہے اور چھینتا اس سے ہے جو برے عمل کر کے نافرمان ہو جاتا ہے (یعنی اچھے اور برے عمل پر ملک ملتا اور چھنتا ہے اس میں یہ بھی ہے کہ فوجی سامان بھی تیار کرتا ہے طاقت کے ساتھ حکومت ہے) اور عزت اور ذلت اللہ اس کو دیتا ہے جو خود چاہتا ہے (یعنی اچھے اور برے اعمال پر ہی عزت اور ذلت ملتی ہے) بھلائی بھی تیرے اختیار میں ہے (مگر قانون ایک ہی ہے) بے شک تو ہر چیز کی قدریں (پیمانے اور قانون) مقرر کرنے والا ہے (۲۶)[۴:۱۱۶، ۲۲:۴۰، ۵۳:۳۹، ۴۶:۱۹، ۲:۲۴۷، ۲۱:۱۰۵، ۸:۵۳، ۱۳:۱۱، ۳۸:۱۷]
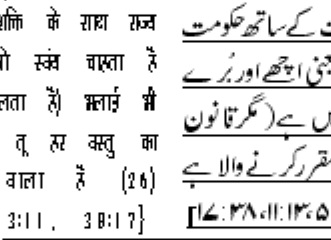
اے اللہ تو اپنے مقرر کردہ قانون مشیت کے مطابق رات کو دن میں داخل کرتا ہے اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے (اور اسی قانون کے مطابق) مردہ میں سے زندہ نکالتا ہے اور زندہ میں سے مردہ نکالتا ہے (اور اسی قانون کے مطابق) تو بے شمار رزق عطا کرتا ہے اسے جو چاہتا ہے (۲۷)
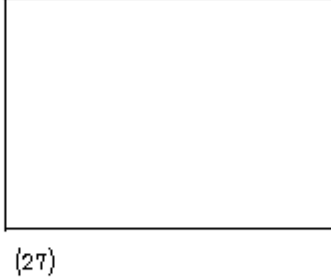
نوٹ:۔(۱) عزت اور ذلت خود بخود نہیں ملتی آدمی کے اپنے عمل سے ملتی ہے مثلاً زید چوری زنا کرتا ہے جھوٹ بولتا ہے تو ہر آدمی اس کو بری نظر سے دیکھے گا اور پکڑ میں آنے پر سزا بھی ملے گی۔ ان برے اعمال پر نہ تو انسان ہی اس کو عزت کی نظر سے دیکھے گا اور نہ ہی اللہ اس کو عزت دے گا بلکہ ذلت ملے گی اسی طرح اگر بکر اچھے اعمال کرے گا تو ہر انسان اس کو عزت دے گا اور اللہ بھی اس کو عزت دے گا۔ ایسا نہیں ہے کہ آدمی عمل برے کرے اور عزت ملے یا اچھے عمل کرے اور اس کو ذلت ملے۔ بس یہی قانون اللہ کا ہے۔ چونکہ اللہ عادل ہے وہ عدل سے کام لے کر عزت و ذلت دیتا ہے۔
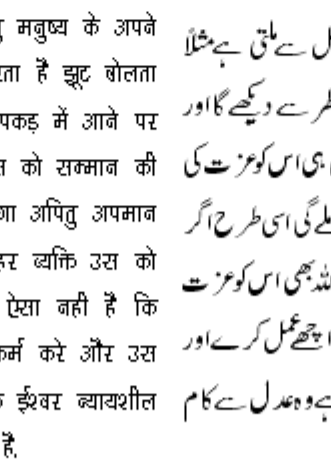
(۲) دن رات دونوں یکے بعد دیگرے آتے رہتے ہیں کبھی رات بڑی کبھی دن بڑا، مگر نہ دن کو دوام ہے نہ رات کو۔ کسی خطہ پر رات اسی وقت آتی ہے جب سورج اوجھل ہو جاتا ہے۔ اور جتنی مدت اوجھل رہتا ہے اتنی مدت ہی رات رہتی ہے۔ اور

सूर्य रहता है दिन होता है, अर्थ यह हुआ प्रकाश और अंधकार का आधार सूर्य पर है इसी प्रकार किसी क्षेत्र पर नास्तिक्ता व नास्तिको का प्रभुत्व व आधिपत्य उसी दशा में होता है कि वहां या तो आस्तिक हो ही नही या हो तो अस्त व्यस्त हो और जब तक यह दशा रहेगी नास्तिक्ता का आधिपत्य रहेगा परन्तु जब आस्तिक एक सत्य दल का रूप धारण कर लें तो अनिवार्यतः धीरे धीरे उन का प्रभुत्व स्थापित होगा और उनके सम्मुख नास्तिक्ता की पराजय हो जाती है जैसे सूर्य के आने पर रात्री का अंधकार समाप्त हो जाता है.

(3) इसी प्रकार मृतक और जीवित का उदाहरण है आस्तिक जीवित के समान है और नास्तिक मृतक के समान नास्तिको में से किसी ने बुद्धि व अंतदृष्टि से काम लिया और उस पर इस्लाम की सत्यता स्पष्ट हो गई और ईश्वर ने उसे सत्य स्वीकार करने की क्षमता दी तो वाध्यतः वह अपने नास्तिक सम्बन्धीयों (मृतक) से निकल कर आस्तिको में ही आ जाएगा क्यों कि वह जीवित हो गया उसको जीवित साथियों में ही रहना चाहिए न कि मृतको में इसी प्रकार जो व्यक्ति कपटि हृदय से नास्तिक हो गया हो तो उसकी सारी सहानुभूति नास्तिकों के साथ होती है क्योंकि वह मृतक है वह उन मृतको के साथ ही रहेगा, और उस का ठीक स्थान वही है यह ही धर्म च्युत का स्थान है अस्तु यह होता ही रहेगा मृतको में से जीवित और जीवितो में से मृतक निकलेंगे कोइ विमुख नास्तिक होगा और कोई नास्तिक से आस्तिक होगा हर व्यकुलता के बाद सुगमता और हर सुगमता के बाद व्यकुलता (अलम नशरह)

मैं तुम को बताता हूं तकदीरे उम्म क्या है
शमशीर व सुना अव्वल ताऊस व रबाब आखिर (इकबाल)

(4) जो समुदाय ईश्वर के बताए हुए नियमनुसार अपने जीवन में कर्म करता है उस कर्म पर ईश्वर उस को स्वतंत्र और अधिकारी रखता है. {8:60,3:102-103}

वह जाति ज्ञान प्राप्त करती है और उस ज्ञान से एकमत रहकर राज्य प्राप्त करती है और उस ज्ञान से हर वह अविष्कार करती है जिस से शास्त्र बनते है अधिक उत्पादन होता है धरती से सोना, चान्दी , लोहा, तैल इत्यादी निकालती है पवतों से लाभ उठाती है और हर कार्य स्वतंत्रता के साथ ईश्वर के आदेशनुसार करती है तो अधिक आय होती है और दास आदमी को पारिश्रमिक निर्धारित की हुई हिसाब से मिलती है और कभी बैगार भी करता है क्योंकि वह दास है किन्तु जिस ने स्वतंत्र रहकर ज्ञान के द्वारा कार्य किया उस को बेहिसाब बेशुमार धन मिलता है जो आज देखा जा सकता है एक मजदूर को क्या मिल रहा है और एक उध्योग पति को क्या मिल रहा है बेहिसाब बेशुमार जीविका देना यह भी ईश्वर के नियम के अनुसार मिलता है.

परन्तु उस धनी को भी विचार करना है जिस को बेहिसाब बेशुमार जीविका मिल रही है उस का भी लेख होना है और वह है बड़ा कठिन अतः उस कठिन लेखा जोखा से बचने के लिए बेशुमार जीविका को ईश्वर के मार्ग में व्यय करना अनिवार्य है और इस दुनिया में जिन को जो आवश्यक्ता हो उनकी आवश्यक्ता का पूरा करना अनिवार्य है यदि यह न किया तो बेशुमार जीविका ही दुख बनकर नर्क में ले जाएगी अतः उस बेहिसाब जीविका के लेखा जोखा से बचो इस में ही भलाई है.

अतः यह जान लेना चाहिए कि (वतर्जुकु मनतशाऊ बिगेरी हिसाब) बिला प्रतिबन्धा के नही है इस के प्रतिबन्धा को जो जाति पूरा करती है उस को ही बेहिसाब बेशुमार जीविका मिलती है और वह स्वतंत्र रहती है. {4:119}

جتنی مدت سورج رہتا ہے دن ہوتا ہے مطلب یہ ہوا نور اور تاریکی کا دارومدار سورج پر ہے.اسی طرح کسی خطہ زمین پر کفر واہل کفر کا غلبہ وتسلط اسی صورت میں ہوتا ہے کہ وہاں یا تو سرے سے اہل ایمان ہوں ہی نہیں یا ہوں تو منتشر ہوں اور جب تک یہ حالت رہے گی کفر کا تسلط قائم رہے گا.لیکن جب اہل ایمان ایک جماعت صادقہ کی شکل اختیار کرلیں تو لامحالہ آہستہ آہستہ ان کا تسلط قائم ہوگا.اور ان کے مقابلہ میں کفر پسپا ہو جاتا ہے جیسے سورج کے آنے پر رات کی اندھیری ختم ہو جاتی ہے.

(۳)اسی طرح مردہ اور زندہ کی مثال ہے ایمان بمنزلہ حیات ہے اور کفر بمنزلہ مرگ.اہل کفر میں سے کسی نے عقل وبصیرت سے کام لیا اور اس پر اسلام کی حقانیت واضح ہوگئی اور اللہ نے اسے قبول حق کی توفیق دی تو لامحالہ وہ اپنے کافر اقربا (مردہ) سے نکل کر اہل ایمان میں ہی آجائے گا. کیونکہ وہ زندہ ہو گیا اُسے زندہ ساتھیوں میں ہی رہنا چاہیے نہ کہ مردوں میں.اسی طرح جو شخص منافق اور دل سے کافر ہوگیا ہوتو اس کی ساری ہمدردیاں کفار کے ساتھ ہوتی ہیں کیونکہ وہ مردہ ہے وہ ان مردوں کے ساتھ ہی رہے گا اور اس کا ٹھیک مقام وہی ہے یہ ہی مرتد کا مقام ہے. بہرحال یہ تو ہوتا ہی رہے گا مردوں میں سے زندہ اور زندوں میں سے مردہ نکلیں گے کوئی مرتد کافر ہوگا اور کوئی کافر سے مومن ہوگا.ہر پریشانی کے بعد آسانی اور ہر آسانی کے بعد پریشانی (الم نشرح)

میں تجھ کو بتاتا ہوں تقدیر اُمم کیا ہے
شمشیر و سناں اوّل طاوس و رباب آخر (اقبال)

(۴)جو قوم اللہ کے بتائے ہوئے قانون کے مطابق اپنی زندگی میں عمل کرتی ہے اس عمل پر اللہ اس کو آزاد اور حاکم رکھتا ہے (۸:۶۰،۳:۱۰۲،۱۰۳) وہ قوم علم حاصل کرتی ہے اور اس علم سے متحد ومتفق رہ کر حکومت حاصل کرتی ہے اور اس علم سے ہر وہ ایجاد کرتی ہے جس سے ہتھیار بنتے ہیں خوب پیداوار ہوتی ہے زمین سے سونا چاندی لوہا تیل وغیرہ نکالتی ہے پہاڑوں سے فائدہ اٹھاتی ہے اور ہر کام آزادی کے ساتھ اللہ کے حکم کے مطابق کرتی ہے تو خوب آمدنی ہوتی ہے.اور غلام آدمی کو اجرت مقرر کی ہوئی حساب سے ملتی ہے اور کبھی بیگار بھی کرتا ہے کیوں کہ وہ غلام ہے لیکن جس نے آزاد رہ کر علم کے ذریعہ کام کیا اس کو بے حساب بے شمار دولت ملتی ہے جو آج دیکھا جا سکتا ہے ایک مزدور کو کیا مل رہا ہے اور ایک مل مالک کو کیا مل رہا ہے. یہ ہے بے حساب بے شمار رزق دینا یہ بھی اللہ کے قانون کے مطابق ملتا ہے.

مگر اس امیر کو بھی غور کرنا ہے جس کو بے شمار رزق مل رہا ہے اس کا بھی حساب ہونا ہے اور وہ ہے بڑا سخت اس لئے اس سخت حساب سے بچنے کے لئے بے شمار رزق کو اللہ کی راہ میں خرچ کرنا ضروری ہے اور اس دنیا میں جو ضرورت مند ہوں ان کی ضرورت کو پورا کرنا ضروری ہے.اگر یہ نہ کیا تو بے شمار رزق ہی مصیبت بن کر جہنم میں لے جائے گا.اس لئے اس بے حساب رزق کے حساب سے بچو اس میں ہی خیر ہے.

اس لئے یہ جان لینا چاہیے کہ [وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ] بلا شرط نہیں ہے اس کی شرط کو جو قوم پورا کرتی ہے اس کو ہی بے حساب بے شمار رزق ملتا ہے اور وہ آزاد رہتی ہے (۴:۱۱۹)

आदेश दिया जाता है कि आस्तिक दल (जीवित दल) उन दलों से मैत्री न रखें जो नास्तिक अर्थात मृत है और जो व्यक्ति या दल ऐसा करेगा वह जान ले कि उन का ईश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं अर्थात वह मृतक नास्तिक) है अतिरिक्त इस स्थिति के कि तुम उन से इस प्रकार बच जाओं जो बचने का उचित मार्ग है वास्तविक्ता यह है कि ईश्वर तुम्हें अपने नियम की प्रतिद्वन्दिता के परिणाम से डराता है क्योंकि (कर्मों का उत्तर देने के लिए) ईश्वर ही की ओर लोटकर आना है (28) {3:117-119, 58:22,60:4}

حکم دیا جاتا ہے کہ جماعت مومنین (زندہ گروہ) ان اقوام سے دوستی نہ رکھے جو کافر یعنی مردہ ہیں اور جو فردیا گروہ ایسا کرے گا وہ جان لے کہ ان کا اللہ کے ساتھ کوئی تعلق نہیں (یعنی وہ مردہ کافر ہیں) سوائے اس صورت کے کہ تم ان سے اس طرح بچ جاؤ جو بچنے کا حق ہے حقیقت یہ ہے کہ اللہ تمہیں اپنے قانون کی مخالفت کے نتائج سے ڈراتا ہے. کیونکہ (اعمال کی جواب دہی کے لئے) اللہ ہی کی طرف لوٹ کر آنا ہے (۲۸)

[۳:۱۱۷_۱۱۹، ۵۸:۲۲، ۶۰:۴]

नोट- नास्तिक आस्तिको से घृणा रखते है और उनको हर समय कष्ट देने को कटिबद्ध रहते है, अतः धार्मिक स्वाभिमान व गौरव का नोदन यह है कि आस्तिक भी उन से दूर और सर्तक रहें, और चूंकि नास्तिक ईश्वर के विद्रोही और शत्रु है अतः ईश्वर उस आदमी को पसन्द नही करता जो उस के विद्रोही से मित्रता रखे, परन्तु इन्सानी सहानुभूति करना अधिक अनिवार्य है हर आवश्यक्ता वाले की आवश्यक्ता को पूरा करना और उन की सहायता करना आस्तिको का धर्म है यदि सहयता न की और वह सहायता न मिलने पर मर गया तो उसका उत्तर दायी आस्तिक को होना पड़ेगा अतः संसार में हर सदाचारी दुराचारी की सहायता अनिवार्य है जैसे मुहम्मद स0 ने की है यही आदर्श बनना होता है.

نوٹ:۔ اہل کفر اہل ایمان سے نفرت رکھتے ہیں اور ان کے درپے آزار رہتے ہیں. پس ایمانی حمیت وغیرت کا تقاضہ یہ ہے کہ اہل ایمان بھی ان سے دور اور ہوشیار رہیں. اور چونکہ کفار اللہ کے باغی اور دشمن ہیں اس لئے اللہ اس آدمی کو پسند نہیں کرتا جو اس کے باغی سے دوستی رکھے. مگر انسانی ہمدردی کرنا بہت ضروری ہے ہر ضرورت مند کی ضرورت کو پورا کرنا اور ان کی مدد کرنا اہل ایمان پر فرض ہے اگر مدد نہ کی اور وہ مدد نہ ملنے پر مر گیا تو اس کا ذمہ دار اہل ایمان کو ہونا پڑے گا. اس لئے دنیا میں ہر نیک وبد کی مدد ضروری ہے جیسے محمدؐ نے کی ہے یہی نمونہ بننا ہوتا ہے

(ऐ नबी लोगों से बता दो) चाहे तुम (आयत 28 का विरोध करते हुए) अपने वक्षों की वस्तु (छुपे छुपे नास्तिको से मित्रता करो) को छुपाओं या प्रकट करो अस्तु ईश्वर उसे जानता है और जो कुछ आकाशो में है और जो पृथ्वी में है (अतः ईश्वर की शिक्षा से नास्तिकता न करो) ईश्वर हर वस्तु के नियम निर्धारित करने वाला है (29)

(اے نبیؐ لوگوں سے بتادو) خواہ تم (آیت ۲۸ کی مخالفت کرتے ہوئے) اپنے سینوں کی چیز (چھپے چھپے کافروں سے دوستی کرو) کو چھپاؤ یا ظاہر کرو بہر حال اللہ اسے جانتا ہے اور جو آسمانوں میں ہے اور جو زمین میں ہے (اس لئے اللہ کی تعلیم سے کفر مت کرو) اللہ ہر چیز کے قانون مقرر کرنے والا ہے (۲۹)

वह दिन उल्लेखनीय है जिस में हर आदमी अपने हर उस कर्म को उपस्थिति पाएगा जो बुराई में से लाया वह कामना करेगा काश कि इस दण्ड के और उसके बीच बहुत दूरी हो वास्तविक्ता यह है (कि महाप्रलय की बार बार याद दिलाकर (और उपमा देकर) ईश्वर तुम्हें अपने नियम से डराता है क्योंकि ईश्वर अपने बन्दों पर बहुत कृपाल है. (30)

وہ دن قابل ذکر ہے جس میں ہر آدمی اپنے ہر عمل کو حاضر پائے گا جو وہ بھلائی میں سے لایا. اور اپنے اس عمل کو بھی حاضر پائے گا جو بُرائی میں سے لایا. وہ آرزو کرے گا کاش کہ اس سزا کے اور اس کے درمیان بہت دوری ہو حقیقت یہ ہے (کہ قیامت کو بار بار یاد دلا کر اور مثال دے کر) اللہ تمہیں اپنے قانون سے ڈراتا ہے کیوں کہ اللہ اپنے بندوں پر بہت ہی مہربان ہے (۳۰)

ऐ रसूल कह दीजिए कि यदि तुम ईश्वर से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो (चूंकि मैं कुरआन का अनुकरण करता हूं, {6:50,10:15, 46:9} इस लिए मेरा अनुकरण कुरआन का अनुकरण है) इस प्रकार ईश्वर तुम्हें पसन्द करेगा और तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर देगा, क्योंकि ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है. (31)

اے رسول! کہہ دیجئے گا اگر تم اللہ سے یعنی اللہ کے قانون سے محبت کرتے ہو تو میری پیروی کرو (چونکہ میں قرآن کی پیروی کرتا ہوں [۶:۵۰، ۱۰:۱۵، ۴۶:۹] اس لئے میری پیروی قرآن کی پیروی ہے) اس طرح اللہ تم پر شفقت یعنی پسند کرے گا اور تمہاری خطائیں معاف کردے گا کیونکہ اللہ معاف کرنے والا مہربان ہے (۳۱)

नोट- ईशदूत का अनुकरण कुरआन में बहुत आयात में है जिन में ईश्वर ने ईशदूत का अनुकरण करने का आदेश दिया है तो क्या ईश्वर और ईशदूत का अनुकरण अलग अलग है? इन आयात के आवरण में कथन की पुस्तको के अनुकरण का प्रमाण में प्रस्तुत किया जाता है यद्यपि कुरआन के द्वारा ईश्वर ने मुहम्मद से स्वंय घोषणा करा दी है कि मैं उसी पर चलता हूं जो मुझको वही के द्वारा आदेश आया है, {6:15,49:9} और आप पर क्या "वही" किया जाता है इस का उत्तर भी कुरआन में अंकित है जो मुहम्मद स0 से ही उत्तर दिलाया गया है, {6:19} और मेरी ओर यह कुरआन वही किया गया है {12:3} और तेरी ओर हम ने यह कुरआन पही किया है {6:50,

نوٹ:۔ اتباع رسول۔ قرآن میں متعدد آیات ہیں جن میں اللہ نے رسول کی اطاعت کرنے کا حکم دیا ہے تو کیا اللہ اور رسول کی اطاعت الگ الگ ہیں؟ ان آیات کے پردے میں کتب روایات کی اتباع کا ثبوت پیش کیا جاتا ہے حالانکہ قرآن کے ذریعہ اللہ نے محمدؐ سے خود اعلان کرا دیا ہے کہ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا یُوْحٰی اِلَـیَّ [۶:۵۰، ۱۰:۱۵، ۴۶:۹] میں اُس پر چلتا ہوں جو مجھ کو وحی کے ذریعہ حکم آیا ہے۔ اور آپ پر کیا وحی کیا جاتا ہے اس کا جواب بھی قرآن میں درج ہے جو محمدؐ سے ہی جواب دلایا گیا ہے.

وَاُوْحِیَ اِلَیَّ ھٰذَا الْقُرْاٰنُ (۶:۱۹) اور میری طرف یہ قرآن وحی کیا

10:15, 4:9} से सिद्ध हुआ कि मुहम्मद स0 वही का अनुकरण करते थे, और आप पर क्या वही किया गया वह 6:19 और 12:3 से स्पष्ट हो गया कि आप पर कुरआन ही वही किया गया था

इस विषय में कुरआन में और भी आयात हैं अतः सिद्ध हुआ कि मूल अनुसरण ईश्वरीय वाणी है जिसका अनुकरण करने वाले स्वंय मुहम्मद स0 भी थे इस प्रकार यद्यपि मुहम्मद स0 हम में उपस्थित नही है किन्तु हमारे मध्य मूल ईश्वरीय वाणी कुरआन करीम अपने सत्य लेख के साथ उपस्थित व सुरक्षित है और महा प्रलय तक उपस्थित व सुरक्षित रहेगा पस आयत विचाराधीन (3:31) में अनुसरण अवतार के रूप में अनुकरण कुरआन का आदेश दिया गया है (3:101) "अब चूंकि कोई नबी आने वाला नही और कुरआन मजीद की आकृति में मुसलमानों का रसूल हर समय उपस्थित है" हवाला पुस्तक तहकीक-ए-मजीद लेखक महमूद अहमद अब्बासी पेज 395 किसी भी आयत में कथन की पुस्तक के अनुकरण का आदेश नही दिया गया अतः (3:32) में भी मुहम्मद स0 को पुनः आदेश हुआ है कि आप कह दीजिएगा कि लोगो! ईश्वर की आज्ञा पालन उसके रसूल के लाए हुए नियम के द्वारा करो (43:45) में देखो रसूल क्या है, ? (3:32) भी देखो,

ऐ रसूल कह देना कि ईश्वर की आज्ञा पालन करो उसके अवतार के द्वारा (क्योंकि उसने अपना आदेश अपने रसूल ही के द्वारा तुम तक पहुचाया है,) फिर ईश्वर नकार करने वालो को पसंद नही करता (32)

नोट- अतिउल्लाह वर्रसूल में वाव का अर्थ द्वारा है जिस का स्पष्टीकरण कुरआन ने सूरत तौबा की आयत 1-2-3- में कर दिया है,

(9:1) अप्रसन्नता है उत्तर है ईश्वर की ओर से उस के रसूल के द्वारा उन अनेकेश्वर वादियो को जिन से तुम ने वचन किया था,

(9:2) सो चल फिर लो इस देश में चार महीने और जान लो कि तुम न थका सकोगे ईश्वर को और ईश्वर अपमानित करता है, विरोधीयो को

(9:3) "वाअज़ानुम्मिनल्लाहि वर्रसूलिहि इलन्नासि यौमिल हज्जिल अकबर अन्नल्लाहा बरी उम्मिनल मुशरिकीन वर्रसूलुह",

ईश्वर की घोषणा है उस के रसूल के द्वारा लोगो के लिए हज्ज अकबर के दिन कि निःसंदेह ईश्वर और उस का रसूल अनेकेशवर वादियो से अप्रसन्न है,

सूरत तौबा की आयत 1-2-3 से स्पष्ट हो गया कि ईश्वर और अवतार की घोषणा एक है दो नही यदि दो है तो बताओं कि हज के अवसर पर आदेश ईश्वर का बताया गया जो ज्ञात हो गया कुरआन में अंकित है वह यह कि जो अनुबन्ध तुमने किया था ईश्वर ने अर्थात नियम ने उसको निरस्त कर दिया और अनेकेश्वर वादियो को चार माह की छूट दी गई और बताया गया कि अनेकेश्वर वादियों से ईश्वर रुष्ट है और जिस वस्तु से ईश्वर अप्रसन्न है तो उससे उसका रसूल भी अप्रसन्न है और जिससे ईश्वर प्रसन्न उससे रसूल भी प्रसन्न क्योंकि रसूल ईश्वर के आदेश का अनुकरण करते थे,

और जो कुछ आयात में अंकित है वह सब ईश्वर की ओर से था इनके अतिरिक्त आज तक किसी ने यह नही बताया कि रसूल का यह आदेश था जिसको मानना अनेकेश्वर वादियों के लिए अनिवार्य

گیا ہے. اَوْ حَیْنَا اِلَیْکَ ھٰذَا الْقُرْاٰن (۳:۱۲)اورتیری طرف ہم نے یہ قرآن وحی کیا ہے.

(۵۰:۲، ۱۵:۱۰، ۹:۴۲) سے ثابت ہوا کہ محمدؐ وحی کی پیروی کرتے تھےاور آپ پر کیا وحی کیا گیا تھا وہ (۱۹:۲ اور ۳:۱۲) سے ظاہر ہوگیا کہ آپ پر قرآن ہی وحی کیا گیا تھا اس بارے میں قرآن میں اور بھی آیات ہیں. پس ثابت ہوا کہ اصل متبوع وحی الٰہی ہے جس کے پابند خود محمدؐ بھی تھے. اس طرح اگرچہ محمدؐ رسول اللہ ہم میں موجود نہیں ہیں لیکن ہمارے درمیان اصل وحی الٰہی قرآن کریم اپنے صحیح متن کے ساتھ موجود و محفوظ ہے اور قیامت تک موجود و محفوظ رہے گا. پس آیت زیر بحث (۳:۳۰) میں اتباع رسول کی صورت میں اتباع قرآن کا حکم دیا گیا ہے (۳:۱۰۱) (اب چونکہ کوئی نبی آنے والا نہیں اور قرآن مجید کی صورت میں مسلمانوں کا رسول ہر وقت موجود ہے) کتاب تحقیق مزید مولفہ محمود احمد عباسی صہ ۳۹۵ کسی بھی آیت میں کتب روایت کی پیروی کا حکم نہیں دیا گیا چنانچہ (۳:۳۲) میں بھی محمدؐ کو دوبارہ حکم ہوا ہے کہ آپ کہہ دیجئے گا کہ لوگو! اللہ کی اطاعت اس کے رسول کے لائے ضابطہ حیات کے ذریعہ کرو (۴۳:۴۵) میں دیکھو رسول کیا ہے. (۳:۳۲) بھی دیکھو

اے رسول کہہ دیجئے گا کہ اللہ کی اطاعت کرو اس کے رسول کے ذریعہ (اور میرے پیچھے پیچھے چلتے جاؤ کیوں کے اس نے اپنا حکم نامہ اپنے رسول ہی کے ذریعہ تم تک پہنچایا ہے) پھر اگر لوگ روگردانی کریں تو (اعلان کردو کہ) اللہ انکار کرنےوالوں کو پسند نہیں کرتا (۳۲)

نوٹ :۔ اطیعو اللہ والرسول میں واؤ بمعنٰی بذریعہ ہے جس کی وضاحت قرآن نے سورت توبہ کی آیت (۱،۲،۳) میں کردی ہے.

(۹:۱) بیزاری ہے جواب اللہ کی طرف سے اس کے رسول کے ذریعہ سے ان مشرکوں کے بارے میں جن سے تم نے عہدو پیان کیا تھا.

(۹:۲) سو پھر لو اس ملک میں چار مہینے اور جان لو کہ تم نہ تھکا سکو گے اللہ کو اور اللہ رسوا کرتا ہے منکروں کو.

(۹:۳) وَاَذَانٌ مِنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللهَ بَرِیٌٔ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَرَسُوْلُهٗ ط

اللہ کا اعلان ہے اس کے رسول کے ذریعہ لوگوں کے لئے حج اکبر کے دن کہ بے شک اللہ اور اس کا رسول مشرکوں سے بیزار ہے.

سورت توبہ کی آیت ۱،۲،۳ سے ظاہر ہوگیا کہ اللہ اور رسول کا اعلان ایک ہے دو نہیں. اگر دو ہیں تو بتاؤ کہ حج کے موقع پر حکم اللہ کا بتایا گیا جو معلوم ہوگیا قرآن میں درج ہے وہ یہ کہ جو تم نے معاہدہ کیا تھا اللہ نے یعنی قانون نے اس کو منسوخ کردیا اور مشرکوں کو چار مہینے کی مہلت دی گئی اور بتایا گیا کہ مشرکوں سے اللہ بیزار ہے اور جس چیز سے اللہ بیزار ہے تو اس چیز سے اس کا رسول بھی بیزار اور جس سے اللہ خوش اس سے رسول بھی خوش کیوں کہ رسول اللہ کے حکم کی اتباع کرتے تھے.

اور جو کچھ آیات میں درج ہے وہ سب اللہ کی طرف سے تھا ان کے علاوہ آج تک کسی نے یہ نہیں بتایا کہ رسول کا یہ حکم تھا جس کو ماننا ان مشرکین کے لئے ضروری تھا. اللہ کا حکم کیا ہے وہ آیت (۹:۱،۲،۳) میں درج ہے جو لکھا گیا ہے

था ईश्वर का आदेश क्या है वह आयात (9:1-2-3) में अंकित है जो लिखा गया है जिस प्रकार इन आयात में उज्जवल दिन की भांति स्पष्ट है कि ईश्वर की घोषणा से पृथक नही थी इस प्रकार रसूल का अनुसरण ईश्वर के अनुसरण से पृथक नही है, पालन होता है आदेश का और आदेश केवल ईश्वर का है,

(18:26) ईश्वर अपने आदेश में किसी एक को भी सहयोग नही करता, {6:57,12:40,22:67,18:26} यथा कि कोई ईशदूत भी ईश्वर के आदेश में कदापि सहयोगी नही था, पस आज्ञापालन केवल ईश्वर के आदेश का है जिसे वह कराता है रसूलों के द्वारा अपनी वही प्रेषित करके चूंकि वही प्रेषित की हुई है और प्रेषित की हुई वस्तु रसूल होती है इस प्रकार यदि मनन किया जाये तो कुरआन ईश्वर का प्रेषण है तो यह भी ईश्वर का रसूल हुआ जिसका समर्थन कुरआन की आयात करती है जो अपने स्थान पर अंकित की जाऐगी (3:101, 43:45)
ईश्वर के नबी चूंकि शत प्रतिश ईश्वर के आज्ञाकारी थे अतः वह (6:57, 12:40, 22:67) के पुनरावृत्ति घोषणा के अनुसार अपनी नही अपितु केवल ईश्वर की आज्ञा का पालन कराते थे। अपने व्यवहार के द्वारा इसके अतिरिक्त कुरआन में अनुकरण रसूल से तात्पर्य मुहम्मद स0 के वह निर्देश भी है जो आप एक शासक के स्थान से दिया करते थे, अर्थात् वह कार्य जिन में मुहम्मद स0 को साथियों के साथ परामर्श करने का आदेश दिया गया (42:38, 3:159 जो कुरआन में न है, आप साथियों के साथ तात्कालिक महत्वपूर्ण कार्यों में परामर्श किया करें फिर आपसी परामर्श के बाद जिस कार्य का इरादा करें तो ईश्वर पर विश्वास किया करें, इसी प्रकार हर काल में कुरआन के अतिरिक्त जो कार्य प्रस्तुत हो उनको (3:159, 42:38) के अनुसार परामर्श सभा में निर्णीत किया जाएगा सहमतति से यह अनुसरण रसूल और ईश्वर है न कि मतभेद और परामर्श सभा का समाप्त कर देना जैसे आज न कोई सभा है और न किसी कार्य में सहमती है, हर कार्य धर्म सांसारिक सब में मतभेद है यह अनुसरण रसूल नही है, फिर विचार किया जाए अनुसरण रसूल ईश्वर के अनुकरण से पृथक कोई वस्तु नही है यदि है तो यह दो अनुसरण हो गए और दो का मानने वाला अनेकेश्वर वादी होता है, अतः अनेकेश्वर वाद से पृथक रहना चाहिए, जैसे ईश्वर का आदेश है कि कह दो ईश्वर एक है और ईश्वर का आदेश भी एक है तो ईश्वर`के एक आदेश का अनुकरण ही करना चाहिये, वह नबी हो या एक सामान्य आदमी, जो कहा जाता है कि ईश्वर का अनुकरण पृथक है और रसूल का अनुसरण अलग है जब ज्ञात किया जाता है कि यह पृथक अनुकरण क्या है तो तुरन्त कहा जाता है कुरआन व सुन्नत फिर यदि प्रश्न किया जाए कि कुरआन व सुन्नत क्या है तो उत्तर होता है कि जैसे कुरआन में नमाज़ पढ़ने का आदेश है विधि नही रकआत नही या दान देने का आदेश है कितनी दें यह नही है तो नमाज़ पढ़ने की विधि और दान की संख्या रसूल ने बताया है अतः नमाज पढ़ना और दान का देना अनुकरण ईश्वर है और किस प्रकार पढ़ा जाए और कितना दान दिया जाए यह अनुकरण रसूल है यह सुनकर आदमी चुप हो जाता है और बड़े बड़े ज्ञानी भी चुप हो जाते हैं परन्तु वह बात नहीं है,

कुरआन में हर आवश्यक वस्तु का विस्तार विवरण है अतः नमाज़ पढ़ने और दान देने का भी विवरण विधि विद्यमान है, हां, जिस विधि से नमाज़ पढ़ी जाती है या दान दिया जाता है वह अवश्य कुरआन में नही है कुरआन में वह है जो सत्य है और अपने स्थान

جس طرح ان آیات میں روز روشن کی طرح عیاں ہے کہ اللہ کا اعلان رسول کے اعلان یا رسول کا اعلان اللہ کے اعلان سے الگ نہیں تھا۔ اسی طرح رسول کی اطاعت اللہ کی اطاعت سے الگ نہیں ہے۔ اطاعت ہوتی ہے حکم کی اور حکم صرف اللہ کا ہے۔

(۶:۵۷) اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ (۱۲:۴۰،۲۲:۶۷) اور فرمایا (وَلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا)

(۱۸:۲۶) اللہ اپنے حکم میں کسی ایک کو بھی شریک نہیں کرتا۔ حتّٰی کہ کوئی نبی بھی اللہ کے حکم میں ہرگز شریک نہیں تھا۔ پس اطاعت صرف اللہ کے حکم کی ہے جسے وہ کراتا ہے نبیوں کے ذریعہ اپنی وحی ارسال کر کے چونکہ وحی ارسال کی ہوئی ہے اور ارسال کی ہوئی چیز رسول ہوتی ہے اس طرح اگر غور کیا جائے تو قرآن اللہ کا ارسال کیا ہوا ہے تو یہ بھی اللہ کا رسول ہوا جس کی تائید قرآن کی آیات کرتی ہیں جو اپنی جگہ پر درج کی جائیں گی (۳:۱۰۱،۴۳:۴۵)

اللہ کے نبی چونکہ صد فیصد اللہ کے فرمانبردار تھے اس لئے وہ (۶:۵۷، ۱۲:۴۰، ۲۲:۶۷) کے تکراری اعلان کے مطابق اپنی نہیں بلکہ صرف اللہ کی اطاعت کراتے تھے اپنے عمل کے ذریعہ اس کے علاوہ قرآن میں اطاعت رسول سے مراد محمدؐ کے وہ احکام بھی ہیں جو آپ بحیثیت صاحب امر دیا کرتے تھے یعنی وہ امور جن میں محمدؐ کو صحابہ کرام کے ساتھ مشورہ کرنے کا حکم دیا گیا (۴۲:۳۸، ۳:۱۵۹) جو قرآن میں نہ ہیں۔ آپ صحابہ کے ساتھ وقتی اہم امور میں مشورہ کیا کریں پھر باہمی مشورہ کے بعد جس کام کا ارادہ فرمائیں تو اللہ پر بھروسہ کیا کریں۔ اسی طرح ہر زمانے میں قرآن کے علاوہ جو امور پیش آئیں ان کو (۳:۱۵۹، ۴۲:۳۸) کے مطابق شوریٰ میں طے کیا جائے گا۔ اتفاق رائے سے یہ اتباع رسول اور اللہ ہے نہ کہ اختلاف اور شوریٰ کو ختم کر دینا جیسے آج نہ کوئی شوریٰ ہے اور نہ کسی کام میں اتفاق ہے ہر کام دین و دنیا سب میں اختلاف ہے۔ یہ اطاعت رسول نہیں ہے۔ پھر غور کیا جائے کہ اتباع رسول اللہ کی اطاعت سے الگ کوئی چیز نہیں ہے اگر ہے تو یہ دو اطاعت ہو گئیں اور دو کا ماننے والا مشرک ہوتا ہے اس لئے شرک سے دور رہنا چاہئے۔

جیسے اللہ کا حکم ہے کہ کہہ دو اللہ ایک ہے اور اللہ کا حکم بھی ایک ہے تو ایک اللہ کے ایک حکم کی اطاعت ہی کرنی ہے چاہے وہ نبی ہے یا ایک عام انسان جو کہا جاتا ہے کہ اللہ کی اطاعت الگ ہے اور رسول کی اطاعت الگ جب معلوم کیا جاتا ہے کہ یہ الگ اطاعت کیا ہیں تو فوراً کہا جاتا ہے قرآن و سنت پھر اگر سوال کیا جائے کہ قرآن و سنت کیا ہیں تو جواب ہوتا ہے کہ جیسے قرآن میں نماز پڑھنے کا حکم ہے طریقہ رکعت نہیں یا زکوٰۃ دینے کا حکم ہے تعداد نہیں تو نماز کا طریقہ اور زکوٰۃ کی تعداد رسول نے بتایا ہے اس لئے نماز پڑھنا اور زکوٰۃ کا ادا کرنا اطاعت اللہ ہے اور کس طرح پڑھی جائے اور کتنی زکوٰۃ ادا کی جائے یہ اطاعت رسول ہے یہ سن کر آدمی خاموش ہو جاتا ہے اور بڑے بڑے عالم بھی خاموش ہوتے ہیں مگر یہ بات نہیں ہے۔

قرآن میں ہر ضروری چیز کی تفصیل ہے اس لئے نماز پڑھنے اور زکوٰۃ دینے کا بھی تفصیلی طریقہ موجود ہے ہاں جس طرح نماز پڑھی جاتی ہے یا زکوٰۃ دی جاتی ہے وہ ضرور قرآن میں نہیں ہے قرآن میں وہ ہے جو حق ہے اور اپنی جگہ پر

पर उनका विवरण लिखा जाएगा प्रतीक्षा करो, किसी धोके में आकर अपना प्रलोक नष्ट न करो,

ان کی تفصیل لکھی جائے گی انتظار کرو کسی دھوکے میں آکر اپنی آخرت کو برباد نہ کرو.

आज हमारी पूजा और प्रार्थना हम को लाभ नही दे रही? इसका कारण यही है कि हम इन कार्यों को कुरआन में अंकित विधि से हट कर कर रहे हैं, जिस दिन ठीक विधि पर आ गए उस दिन ही सफलता है,

آج ہماری عبادات اور دعا ہم کو فائدہ نہیں دے رہی؟ اس کی وجہ یہی ہے کہ ہم ان کاموں کو قرآن میں درج طریقوں سے ہٹ کر کر رہے ہیں جس دن ٹھیک طریقے پر آگئے اس دن ہی کامیابی ہے.

ईश्वर ने आदम और नूह और आले इबराहीम और सन्तान इमरान को सम्पूर्ण संसार वालों पर श्रेष्ठता देकर चुना था, (33)

(वह एक क्रम के लोग थे) जो एक दूसरे के वंश से उत्पन्न हुए ईश्वर सब कुछ सुनता और जानता है (34)

वह समय वर्णनीय है जब इमरान की पत्नी ने कहा ऐ मेरे स्वामी निःसंदेह मैं ने अपने इस बच्चे को जो मेरे पेट में है (अपने अधिकार से) धर्म की सेवा के लिए तेरी भेंट कर दिया है अतः तू मेरा यह तुच्छ उपहार स्वीकार कर निःसंदेह तू सुन्नेवाला और जानने वाला है, (35)

اللہ نے آدم اور نوح اور آل ابراہیم اور آل عمران کو تمام دنیا والوں پر ترجیح دے کر منتخب کیا (۳۳)

(وہ ایک سلسلہ کے لوگ تھے) جو ایک دوسرے کی نسل سے پیدا ہوئے اللہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے (۳۴)

وہ وقت قابل ذکر ہے جب زوجہ عمران نے کہا اے میرے پروردگار بلاشبہ میں نے اپنے اس بچے کو جو میرے پیٹ میں ہے (اپنے حقوق سے) آزاد کر کے تیرے دین کی خدمت کے لئے تیری نذر کر دیا ہے. پس تو میرا یہ حقیر نذرانہ قبول فرما. بلاشبہ تو سننے والا اور جاننے والا ہے (۳۵)

फिर जब इमरान की पत्नी ने उसे जना तो वह लड़की थी, उसने कहा कि ऐ मेरे स्वामी मैंने पुत्री जनी है वास्तविक्ता यह है कि ईश्वर अधिक जानता है जो कुछ उसने जना है और पुत्र न होता जैसी वह पुत्री थी और मैंने इस पुत्री का नाम मरयम रखा और निःसंदेह मैं इस पुत्री और इसके वंश को पतित शैतान से सुरक्षित रहने के लिए तेरी शरण में देती हूं, (36) {3:142}

پھر جب زوجہ عمران نے اسے جنا تو وہ لڑکی تھی. اس نے کہا کہ اے میرے پروردگار میں نے لڑکی جنی ہے حقیقت یہ ہے کہ اللہ خوب جانتا ہے جو کچھ اس نے جنا ہے اور لڑکا نہ ہوتا جیسی وہ لڑکی تھی اور میں نے اس کا نام مریم رکھا. اور بے شک میں اس لڑکی اور اس کی نسل کو ملعون شیطان سے محفوظ رہنے کے لئے تیری پناہ میں دیتی ہوں (۳۶) [۳:۱۴۲]

उसके स्वामी ने उस पुत्री को प्रसन्नता से स्वीकार किया उसे बड़ी अच्छी लड़की बना कर उठाया और जकरिया को उसका अभिभावक बना दिया जब जकरिया मरयम के पास महराब में जाते तो उनके पास जीविका ईश्वर की अनुकरण जिकर पाते आप ज्ञात करते मरयम यह तेरे पास कहां से आता है वह कहती वह ईश्वर के पास से आता है निःसंदेह ईश्वर बेहिसाब जीविका अनुकरण जप देता है (अपने नियम के अनुसार) जो चाहता है अपने कर्म से (37) {2:154,3:169-185,33:31,34:4,71:17}

اس کے رب نے اس لڑکی کو بخوشی قبول فرما لیا. اسے بڑی اچھی لڑکی بنا کر اٹھایا اور زکریا کو اس کا سرپرست بنا دیا. جب حضرت زکریا مریم کے پاس محراب میں جاتے تو ان کے پاس رزق اللہ کی عنایت وظیفہ پاتے. آپ معلوم کرتے مریم یہ تیرے پاس کہاں سے آتا ہے وہ کہتی وہ اللہ کے پاس سے آتا ہے یقیناً اللہ بے حساب عنایات رزق. وظیفہ دیتا ہے (اپنے قانون کے مطابق) جو چاہتا ہے اپنے عمل سے. (۳۷) [۲:۱۵۴، ۳:۱۶۹، ۱۸۵، ۳۳:۳۱، ۳۴:۴، ۷۱:۱۷، ۳۶:۲]

नोट- श्रीमान जकरिया की तारण में श्रीमति मरयम थी तो स्पष्ट है जकरिया मरयम के लिए हर प्रयोजन की सामग्री अर्जित करते थे वह खाने की सामग्री हो या प्रतिदिन प्रयोग में आने वाला सामान और जो भी सामान आता होगा वह महामना जकरिया की जानकारी में आकर ही मरयम के पास जाता होगा और बुद्धि का नोदन भी यही है कि घर का पोषक अपने घर पर घर वालों पर दृष्टि रखे और जो भी वस्तु घर में आए वह उसके ज्ञान में हो, यह कहां से कैसे और कौन लाया है क्रय करके आई नकद या उधार या उपहार आया अस्तु हर प्रकार से जानकारी हो तब ही घर का प्रबन्ध ठीक चलेगा और परिवार वाले भी ठीक रहेंगे इसके अतिरिक्त मरयम के पास कुछ जीविका थी जिसका ज्ञान जकरिया को न था तब ही तो ज्ञात किया तो फिर प्रश्न उत्पन्न होतो है कि भरण पोषण कैसा?

نوٹ: ۔حضرت زکریاؑ کی کفالت میں حضرت مریم تھیں تو ظاہر ہے حضرت زکریا مریم کے لئے ہر ضرورت کا سامان فراہم کرتے تھے. وہ کھانے پینے کا سامان ہو یا روزانہ استعمال کا سامان. اور جو بھی سامان آتا ہوگا وہ حضرت زکریا کے علم میں آکر ہی مریم کے پاس جاتا ہوگا. اور عقل کا تقاضہ بھی یہی ہے کہ گھر کا کفیل اپنے گھر پر گھر والوں پر نظر رکھے اور جو بھی چیز گھر میں آئے وہ اس کے علم میں ہو. یہ کہاں سے کیسے اور کون لایا ہے خرید کر آئی نقد یا ادھار، یا ہدیہ آیا. بہر حال ہر طرح سے علم میں ہو تب ہی گھر کا نظام ٹھیک چلے گا. اور گھر والے بھی ٹھیک رہیں گے. اس کے باوجود مریم کے پاس کچھ رزق تھا جس کا علم زکریا کو نہ تھا. تب ہی تو معلوم کیا؟ تو پھر سوال پیدا ہوتا ہے کہ کفالت کیسی؟

बात विचारणीय है क्या आयत में जीविका से आशय वह ज्ञान अनुकरण जप नही हो सकता जिस से आत्मा को आहार मिलता हो और वह प्रत्यक्ष श्रीमति मरयम के पास ईश्वर की ओर से आता हो जिस का ज्ञान जकरिया को न हो और यह जकरिया के प्रश्न से ही

بات قابل غور ہے کیا آیت میں رزق سے مراد وہ علم عنایات وظیفہ نہیں ہو سکتا جس سے روح کو غذا ملتی ہو. اور وہ بلاواسطہ حضرت مریم کے پاس اللہ کی طرف سے آتا ہو جس کا علم زکریا کو نہ ہو اور یہ زکریا کے سوال سے ہی ظاہر

प्रकट हो रहा है जिसके लिए प्रश्न किया गया था, क्योंकि महामना ज़करिया जब भी मरयम के पास आते थे तो उनसे वह बातें सुनते होंगे जिसकी शिक्षा ज़करिया ने न दी हो और वह मरयम बता रही हो,

यह सुनकर और देखकर महामना प्रश्न करते होंगे मरयम यह ज्ञान जीविका कहां से आया तो मरयम बता देती थी कि वह मेरे स्वामी की ओर से है, आयत में शब्द 'हुवा' भी विचारणीय है, 'हुवा' लुप्त के लिए बोला जाता है, महामना ज़करिया ने शब्द 'हाज़ा' बोला इसके लिए मरयम से सुन रहे थे, उत्तर में मरयम ने शब्द 'हुवा' बोला जो लुप्त ज्ञान था और अदृश्य स्थान से ही आ रहा था अतः आयत में शब्द रिज़क का अर्थ आध्यात्मिक ज्ञान था, (वज़ीफा) जप है अर्थात नित्यकर्म अनुकरण जो ईश्वर की ओर से मिलता था ईश्वर की कृपा से, अतः आगे कहा गया है कि ईश्वर उसको जीविका वज़ीफा (जप) बेहिसाब देता है जो चाहता है अर्थात हर प्रकार से ईश्वर के बताए हुए विधान के अनुसार श्रम करता है और जीवन व्यतीत करता है, रिज़क का अर्थ क्या वज़ीफा (जप) हो सकता है या नहीं आयत प्रस्तुत है,
(56:82) 'वतज अलूना रिज़काकुम व अन्नाकुम तुकज़्ज़िबून' और तुम अपना वज़ीफा (जप) यह बनाते हो कि उसे झुठलाते हो,

रिज़क का अर्थ इस आयत में खुलकर सामने आ गया, वज़ीफा (जप) ईश्वर की ओर से यह कृपा मरयम पर देखकर ज़करिया के मन में तुरन्त एक कामना उत्पन्न हुई वह यह कि जिस प्रकार मरयम पर ईश्वर कृपा कर रहा है क्या मुझ पर कृपा दृष्टि न होगी, तब ही ज़करिया ने विकल होकर ईश्वर से प्रार्थना की जिसका समय आ चुका था ईश्वर का नियम ऐसा ही है, प्रार्थना नीचे अंकित है, ईश्वर का विधान बदला नहीं करता प्राचीन है,

वहीं अर्थात पूजा स्थल में ही ज़करिया ने अपने ईश्वर से प्रार्थना की आवेदन किया ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से अपनी कृपा दया से अच्छी पवित्र संतति (उद्योजक उत्तराधिकारी) प्रदान कर निःसन्देह तू प्रार्थना सुनने वाला है (38)

उत्तर में फरिश्तों ने ध्वनि दी जबकि वह पूजा स्थल में खड़ा पूजा कर रहा था कि ईश्वर तुझे याहया का (अर्थात याहया नाम पुत्र की) मंगल सूचना देता है वह ईश्वर की ओर से एक आदेश (कलमा) की पुष्टि करने वाला बनकर आएगा, उसमें नायक व महत्ता का गौरव होगा, विशेष श्रेणी का आबद्ध धर्म विधान होगा, ईशदौत्य से प्रतिष्ठित सदाचारियों में गणना की जाएगी, (39)

(सु-समाचार सुनकर ज़करिया ने कहा) ऐ मेरे स्वामी मेरे पुत्र कहां से होगा, यद्यपि मुझे बुढ़ापा पहुंच चुका है और मेरी पत्नी बांझ है, कहा, ऐसा ही होगा ईश्वर करता है जो चाहे अपने नियम के अनुसार (40)

निवेदन किया स्वामी फिर कोई लक्षण मेरे लिए निर्धारित कर दे कहा चिन्ह यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से संकेत के अतिरिक्त कोई बात चीत न करोगे, इस चक्र में अपने स्वामी को बहुत याद करना और प्रातः सायं उस की पवित्रता का वर्णन करते रहना, (41) {19:10-11-26}

नोटः- संतति का अर्थ अधिकांश बेटा पुत्र लिखा गया है किन्तु

ہورہا ہے.جس کے لئے سوال کیا گیا تھا کیونکہ حضرت زکریا جب بھی مریم کے پاس آتے تھے توان سے وہ باتیں سنتے ہوں گے جس کی تعلیم زکریا نے نہ دی ہو. اور وہ مریم بتارہی ہوں.

یہ سن کر اور دیکھ کر حضرت سوال کرتے ہوں اے مریم یہ علم رزق کہاں سے آیا تو مریم بتا دیتی تھیں کہ وہ میرے رب کی طرف سے ہے.آیت میں لفظ هُوَ بھی قابل غور ہے. هُوَ غائب کے لئے بولا جاتا ہے.حضرت زکریا نے لفظ هٰذا بولا اس کے لئے جو مریم سے سن رہے تھے.جواب میں مریم نے لفظ هُوَ بولا جو علم غائب تھا اور غائب جگہ سے ہی آرہا تھا.اس لئے آیت میں لفظ رزق کا مطلب روحانی علم یا وضیفہ ہے یعنی ذکر عنایات جو اللہ کی طرف سے ملتا تھا.اللہ کی مہربانی سے.اس لئے آگے کہا گیا ہے کہ اللہ اس کو رزق وضیفہ بے حساب دیتا ہے جو چاہتا ہے یعنی ہر طرح سے اللہ کے بتائے ہوئے قانون کے مطابق محنت کرتا ہے اور زندگی گزارتا ہے.رزق کا مطلب کیا وضیفہ ہوسکتا ہے یا نہیں آیت پیش ہے.
(۵۶:۸۲)[وَتَجۡعَلُوۡنَ رِزۡقَكُمۡ اَنَّكُمۡ تُكَذِّبُوۡنَ]اور تم اپنا وضیفہ ورد یہ بناتے ہو کہ اسے جھٹلاتے ہو.

رزق کا مطلب اس آیت میں کھل کر آگیا وضیفہ اللہ کی طرف سے یہ مہربانی مریم پر دیکھ کر زکریا کے دل میں فوراً ایک آرزو پیدا ہوئی وہ یہ کہ جس طرح مریم کو اللہ نواز رہا ہے کیا مجھ پر نظر کرم نہ ہوگی.تب ہی زکریا نے بے قرار ہو کر اللہ سے دعا کی جس کا وقت آچکا تھا اللہ کا قانون ایسا ہی ہے دعا ذیل میں درج ہے اللہ کے قانون بدلا نہیں کرتے قدیم ہیں.

وہیں یعنی محراب میں ہی زکریا نے اپنے رب سے دعا کی عرض کیا اے میرے رب مجھے اپنے پاس سے اپنے فضل وکرم سے اچھی پاکیزہ ذریت (پیروکار وارث) عطا فرما بے شک تو دعا سننے والا ہے(۳۸)

جواب میں فرشتوں نے آواز دی جب کہ وہ محراب میں کھڑا صلوٰۃ کررہا تھا کہ اللہ تجھے یحیٰ کی (یعنی یحیٰ نام کے فرزند کی) خوشخبری دیتا ہے.وہ اللہ کی طرف سے ایک فرمان کی تصدیق کرنے والا بن کر آئے گا.اس میں سرداری و بزرگی کی شان ہوگی کمال درجہ کا پابند شریعت ہوگا نبوت سے سرفراز اور صالحین میں شمار کیا جائے گا(۳۹)

(بشارت سن کر زکریا نے کہا) اے میرے رب میرے لڑکا کہاں سے ہوگا حالانکہ مجھے بڑھاپا پہنچ چکا ہے اور میری بیوی بانجھ ہے.فرمایا ایسا ہی ہوگا.اللہ کرتا ہے جو چاہے اپنے قانون مشیت کے مطابق (۴۰)

عرض کیا مالک پھر کوئی نشانی میرے لئے مقرر فرمادے کہا نشانی یہ ہے کہ تم تین دن تک لوگوں سے اشارہ کے سوا کوئی بات چیت نہ کروگے اس دوران میں اپنے رب کی بہت یاد کرنا اور صبح اور شام اس کی تسبیح بیان کرتے رہنا (۴۱)
[۱۹:۱۰،۱۱،۲۶]

نوٹ:۔ذریت کا مطلب اکثر بیٹا لکھا گیا ہے مگر آیت (۱۹:۱:۵،۳:۴۰،۲۱:۸۹]

{19:1-5,3:40,21:89} और नबी के स्थान पर विचार करने से संतति का अर्थ कुछ और बनता है, ज़करिया बुढ़े और उनकी पत्नी भी बूढ़ी और बांझ थी, अतः जानते थे कि अब इस आयु में संतान होने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, अतः प्रार्थना पुत्र की नही की थी, जब उनको एक पुत्र की मंगल सूचना दी गई तो उन्होंने एक आश्चर्य पूर्ण स्थिति में कहा कि मैं और मेरी पत्नी बूढ़ी है और पत्नी बांझ भी है, यदि महामना अपने लिए पुत्र की प्रार्थना करते तो निःसंदेह मंगल सूचना पर आश्चर्य न करते अपितु प्रसन्न होते, अब देखा यह जाए इस शब्द संताति (ज़ुर्रियत या उत्तराधिकारी का क्या अर्थ है आयात को बार-बार पढ़ने से)

सूरत मरयम आयात 3 से 6, ऐ मेरे रब मैं क्षीण और वृद्ध हो चुका हूं सिर सफेद हो चुका है, और मैं तुझ से मांग कर कभी वंचित नही रहा हूं और मरे जो भाई बन्द हैं उनसे मुझे डर है कि (अपनी अज्ञानता व पापाचार के कारण) वह मेरा स्थानापन्नता नही कर सकते और मेरा कोई सगा पुत्र भी नही है, और न होने की आशा है, क्योंकि मेरी पत्नी बांझ है मुझे अपने कृपा दया से कोई ऐसा स्थानापन्न मित्र कार्य उठाने वाला प्रदान कर जो मेरा और याकूब के परिवार का उत्तराधिकारी हो, और मेरे रब उसे अभिप्रेत बना (21:89) में भी वारिस उत्तराधिकारी का वर्णन है,

(21:89) और ज़करिया को (याद करो) जबकि उसने अपने स्वामी को पुकारा किऐ मेरे स्वामी मुझे अकेला न छोड़ और अच्छा अभिभावक तो तू ही है,

इन आयतों को पढ़ने के बाद और ईशदूत के स्थान को देखने और (3:40) में आश्चर्य की शैली में कहने के बाद शब्द संतति का अर्थ पुत्र नही आता अपितु उत्तराधिकारी उद्योजक कार्य उठाने वाला ही आता है, अतः महामना ने अपने पुत्र की प्रार्थना नही की अपितु सदाचारी उत्तराधिकारी उद्योजक कार्य उठाने वाला मित्र सहायक की प्रार्थना की थी, इस पर ईश्वर ने उनको सदाचारी पुत्र की शुभ सूचना दी और सूरत (19:5) में भी संतति का अर्थ उद्योजक स्थापनापन्न ही आता है फिर देखा जाये,

यदि महामना पुत्र की प्रार्थना करते तो ईश्वर की शुभ सूचना पर आश्चर्य न करते अपितु प्रसन्न होते, आश्चर्य इसलिए किया कि इस आयु में पुत्र कैसे होगा और न ही पुत्र की प्रार्थना की है, तब ईश्वर ने उनको बताया कि यह कार्य मेरा है मैं करूंगा तब ईश्वर ने उनको और उनकी पत्नी को इस स्थिति में कर दिया कि पत्नी को गर्भ हो गया और बच्चा हो गया,

एक बात और विचारणीय यह है कि ईश्वर की बात नियम बदला नही करते क्योंकि यह सब प्राचीन है अतः ईश्वर के यहां यह बात निश्चित थी, सुरक्षित पट्ट में अंकित है कि ज़करिया के एक पुत्र होगा और वह होगा उनकी प्रार्थना पर जो वह अपने उत्तराधिकारी अभिभावक के लिए करेंगे, यदि अपने पुत्र के लिए प्रार्थना करते तो उस आयु में करते जब दोनों पति-पत्नी ठीक दशा में होते,

परन्तु ईश्वर के यहां यह पहले से था कि उनका अपना पुत्र ऐसी आयु में देना है कि जब वह निराश हो चुके होंगे, बच्चा होने की कोई संभावना न होगी यह भी एक चमत्कार है बुद्धि वालों के लिए क्योंकि परोक्ष की स्थिति को केवल ईश्वर जानता है और कोई नही और यह भी एक परोक्ष की बात थी जिसको ज़करिया भी न जानते थे यदि जानते तो प्रार्थना न करते, प्रार्थना करने का अर्थ हुआ कि वह न जानते थे,

फिर वह समय आया जब फरिश्तों ने कहा था ऐ मरयम निःसन्देह ईश्वर ने तुझे श्रेष्ठ किया है और तुझे (स्त्री को संबद्ध होने वाली हर बुराई और मलयुक्ति से) पवित्र बनाया है और तुझे संसार भर

اور نبی کے مقام پر غور کرنے سے ذریت کا مطلب کچھ اور بنتا ہے.زکریا بوڑھے اوران کی زوجہ بھی بوڑھی اور بانجھ تھیں اس لئے وہ جانتے تھے کہ اب اس عمر میں اولاد ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا اس لئے دعا بیٹے کی نہیں کی تھی. جب ان کو ایک بیٹے کی بشارت دی گئی تو انہوں نے ایک عجیب حالت میں کہا کہ میرے یہاں بیٹا کس طرح ہوگا جب کہ میں اور میری بیوی بوڑھے ہیں اور بیوی بانجھ بھی ہے.اگر حضرت اپنے لئے بیٹے کی دعا کرتے تو یقیناً بشارت پر تعجب نہ کرتے بلکہ خوش ہوتے اب دیکھا یہ جائے اس لفظ ذریت یا وارث کا کیا مطلب ہے تصریف آیات سے.

سورت مریم آیت ۳ تا ۶/اے میرے رب میں ناتواں اور بوڑھا ہو چکا ہوں سر سفید ہو چکا ہے اور میں تجھ سے مانگ کر کبھی محروم نہیں رہا اور میرے جو بھائی بند ہیں ان سے مجھے ڈر ہے کہ (اپنے جہل و فسق کی وجہ سے) وہ میری جانشینی نہیں کر سکتے اور میرا کوئی صلبی فرزند بھی نہیں ہے اور نہ ہونے کی امید ہے کیونکہ میری بیوی بانجھ ہے مجھے اپنے فضل سے کوئی ایسا جانشین ولی کام اٹھانے والا عطا فرما دے جو میرا اور خاندان یعقوب کا وارث ہو.اور میرے رب اسے پسندیدہ بنا.

(۸۹:۲۱) میں بھی وارث کا ذکر ہے

(۸۹:۲۱) اور زکریا کو (یاد کرو) جب کہ اس نے اپنے رب کو پکارا کہ اے میرے پروردگار مجھے اکیلا نہ چھوڑ اور بہترین وارث تو تو ہی ہے.

ان آیتوں کو پڑھنے کے بعد اور نبی کے مقام کو دیکھنے اور (۴۰:۳) میں تعجب کے انداز میں کہنے کے بعد لفظ ذریت کا مطلب بیٹا نہیں آتا بلکہ وارث پیرو کار کام اٹھانے والا ہی آتا ہے.اس لئے حضرت نے اپنے بیٹے کی دعا نہیں کی بلکہ نیک وارث پیرو کار کام اٹھانے والے ولی کی دعا کی تھی.اس پر اللہ نے ان کو نیک فرزند کی خوشخبری دی اور سورت (۱۹:۵) میں بھی ذریت کا مطلب پیرو کار جانشین ہی آتا ہے.پھر دیکھا جائے

اگر حضرت بیٹے کی دعا کرتے تو اللہ کی بشارت پر تعجب نہ کرتے بلکہ خوش ہوتے تعجب اس لئے کیا کہ اس عمر میں بیٹا کیسے ہوگا اور نہ ہی بیٹے کی دعا کی ہے.تب اللہ نے ان کو بتایا کہ یہ کام میرا ہے میں کروں گا.تب اللہ نے ان کو اور ان کی بیوی کو اس حالت میں کر دیا کہ بیوی کو حمل قرار پا گیا اور بچہ ہو گیا.

ایک بات اور قابل غور یہ ہے کہ اللہ کی بات قانون بدلا نہیں کرتے کیونکہ یہ سب قدیم ہیں اس لئے اللہ کے یہاں یہ بات طے تھی،لوح محفوظ میں درج ہے کہ زکریا کے ایک بیٹا ہوگا اور وہ ہوگا ان کی دعا پر جو وہ اپنے وارث کے لئے کریں گے اگر اپنے بیٹے کے لئے دعا کرتے تو اس عمر میں کرتے جب دونوں میاں بیوی ٹھیک حالت میں ہوتے مگر اللہ کے یہاں یہ پہلے سے تھا کہ ان کا اپنا بیٹا ایسی عمر میں دینا ہے کہ جب وہ مایوس ہو چکے ہوں گے. بچہ ہونے کا کوئی امکان نہ ہوگا یہ بھی ایک معجزہ ہے عقل والوں کے لئے کیونکہ غیب کا حال صرف اللہ جانتا ہے اور کوئی نہیں اور یہ بھی ایک غیب کی بات تھی جس کو زکریا بھی نہ جانتے تھے اگر جانتے تو دعا نہ کرتے.دعا کرنے کا مطلب ہوا کہ وہ نہ جانتے تھے.

پھر وہ وقت آیا جب فرشتوں نے کہا تھا اے مریم یقیناً اللہ نے تجھے برگزیدہ کیا ہے اور تجھے (عورت کو لاحق ہونے والی ہر برائی اور آلودگی سے) پاک بنایا ہے.اور تجھے دنیا

بھر کی تمام عورتوں پر ترجیح دے کر (ایک عظیم مقصد کے لئے) منتخب فرمایا ہے (۴۲)

की संपूर्ण स्त्रियों पर श्रेष्ठता देकर (एक महान प्रयोजन के लिए) चुन लिया है (42)

اے مریم اپنے رب کی فرمانبردار رہ اور اس کے سامنے سجدہ ریز ہو جا یعنی فرمانبردار اور اللہ کے قانون کے سامنے جھکنے والوں کے ساتھ جھک جا عاجزی کر (۴۳)

ऐ मरयम अपने रब की आज्ञाकारी रह और उसके सामने नतमस्तक हो जा अर्थात आज्ञाकारी और ईश्वर के नियम के सामने झुकने वालों के साथ झुक जा विनीत कर (43)

(اے محمدؐ) یہ باتیں غیب کی خبروں میں سے ہیں جو ہم آپ کی طرف وحی کرتے ہیں. حقیقت یہ ہے کہ آپ اس وقت ان کے پاس موجود نہ تھے جب وہ لوگ حضرت مریم کا کفیل مقرر کرنے کے لئے (ایک تحریر پر جس میں حضرت زکریا کو کفیل مقرر کیا گیا) اپنے قلموں سے دستخط کر رہے تھے. اور آپ اس وقت بھی ان کے پاس موجود نہ تھے جب وہ جھگڑتے تھے. (۴۴)

(ऐ मुहम्मद स०) यह बातें परोक्ष की सूचनाओं में से हैं जो हम आपकी ओर वाणी करते हैं वास्तविकता यह है कि आप उस समय उनके पास उपस्थित न थे जब वह लोग श्रीमति मरयम का पोषक नियुक्त करने के लिए (एक लेख पर जिसमें महामना ज़करिया को पोषक नियुक्त किया गया) अपने कलमों से हस्ताक्षर कर रहे थे, और आप उस समय भी उनके पास उपस्थित न थे जब वह झगड़ते थे (44)

نوٹ:۔ جب مریم کا کفیل مقرر کرنے کا وقت آیا تو ان کا کفیل ہونے کے لئے ہر آدمی جو اچھا تھا آگے آیا. کفیل بننے والے جب زیادہ ہو گئے تو جھگڑا بول چال ہونا ہی تھا. ان کفیل بننے والوں میں ایک زکریا بھی تھے چونکہ حضرت نبی تھے اور مریم کے قریبی رشتہ دار بھی تھے اس لئے سب لوگوں نے مریم کی کفالت کے لئے کچھ کہا سنی کے بعد زکریا کو کفیل تسلیم کر لیا. اور آگے چل کر کوئی جھگڑا نہ ہوا. اس کے بارے میں ایک دستاویز لکھ دی جس پر سب نے اپنے قلموں سے دستخط کر دئے. یہ ہے [یلقون اقلامھم] کا مفہوم.

नोट- जब मरयम का पोषक नियुक्त करने का समय आया तो उनका पोषक होने के लिए हर आदमी जो अच्छा था आगे आया, पोषक बनने वाले जब अधिक हो गए तो झगड़ा बोल चाल होनी ही थी, उन पोषक बनने वालों में एक ज़करिया भी थे, चूंकि महामना नबी थे और मरयम के सगोत्र सम्बन्धी भी थे, अतः सब लोगों ने मरयम के पोषक के लिए कुछ कहा सुनी के बाद ज़करिया को पोषक स्वीकार कर लिया, और आगे चल कर कोई झगड़ा न हो उसके विषय में एक लेख लिख दिया जिस पर सब ने अपने कलमों से हस्ताक्षर कर दिए यह है 'यलकूना अकलामुहुम' का भाव,

(پھر وہ وقت بھی آیا اللہ کے قانون کے مطابق) جب فرشتے نے کہا اے مریم! اللہ تجھے اپنے ایک کلمہ کے ذریعہ (ایک لڑکے کی) بشارت دیتا ہے. اس کا نام مسیح عیسیٰ ابن مریم ہوگا وہ دنیا اور آخرت میں معزز ہوگا اللہ کے مقرب بندوں میں ہوگا (۴۵)

(फिर वह समय भी आया ईश्वर के विधान के अनुसार) जब फरिश्ते ने कहा ऐ मरमय! ईश्वर तुझे अपने एक वाक्य के द्वारा (एक पुत्र की) शुभ सूचना देता है, उसका नाम मसीह ईसा पुत्र मरयम होगा वह संसार और प्रलोक में प्रतिष्ठित होगा, ईश्वर के सम्मानित भक्तों में होगा, (45)

گہوارے مہد یعنی چھوٹی اور بڑی عمر میں لوگوں سے بات کرے گا اور وہ ایک مرد صالح ہوگا [۱۹:۳۰] ہر عمر میں عقل مندی کی بات کرے گا (۴۶)

झूला अर्थात छोटी और बड़ी आयु में लोगों से बात करेगा और वह एक सदाचारी व्यक्ति होगा (46) {19:30} हर आयु में समझदारी की बात करेगा,

(یہ سن کر) بولی ہائے میرے رب میرے لئے لڑکا کہاں سے ہوگا. حالانکہ مجھے کسی مرد نے چھوا تک نہیں. کہا ایسا ہی ہوگا (چونکہ یہ فیصلہ پہلے سے ہی تھا کہ فلاں وقت میں بغیر باپ کے مریم کے بچہ ہوگا) اللہ پیدا کرتا ہے جو اس کے قانون میں ہوتا ہے جس کو وہ چاہتا ہے. جب وہ کسی کام کا فیصلہ کر دے تو وقت آنے پر اس کے متعلق فرما دیتا ہے کہ ہو جا وہ ہو جاتا ہے (۴۷)

(यह सुनकर) बोली हाय मेरे रब मेरे लिए पुत्र कैसे होगा, यद्यपि मुझे किसी नर ने छुआ तक नही, कहा ऐसा ही होगा, (चूंकि यह निर्णय पहले से ही था कि अमुक समय में बिना पिता के मरयम के बच्चा होगा) ईश्वर उत्पन्न करता है जो उसके नियम में होता है जिसको वह चाहता है जब वह किसी काम का निर्णय कर दे तो समय आने पर उसके विषय में आदेश देता है कि हो जा वह हो जाता है (47)

اور اللہ اسے لکھنا سکھائے گا اور اپنی حکمت بھری کتاب توراۃ اور انجیل سکھائے گا (۴۸) [۲۶:۹۶، ۳۶:۲]

और ईश्वर उसे लिखना सिखाएगा और अपनी युक्ति भरी पुस्तक तौरात और इनजील सिखाएगा (48) {26:96, 36:2}

اور بنی اسرائیل کی طرف رسول بنا کر بھیجے گا (جب وہ آیا تو اس نے کہا) میں تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس نشانی لے کر آیا ہوں میں تمہارے سامنے مٹی سے پرندے کی شکل کی ایک مورت بناتا ہوں اور اس میں پھونک مارتا ہوں وہ اللہ کے حکم سے زندہ پرندہ بن جاتا ہے میں اللہ کے حکم سے مادرزاد اندھے اور کوڑھی کو اچھا

और बनी इसराईल की ओर रसूल बनाकर भेजेगा (जब वह आयातो उस ने कहा) मैं तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास चिन्ह लेकर आया हूं मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से पक्षी की आकृति की एक मूर्ति बनाता हूं और उस में फूंक मारता हूं वह ईश्वर के आदेशसे जीवित पक्षी बन जाता है मैं ईश्वर के आदेश से जनम से अन्धे और कोढ़ी को अच्छा

करता हूं और उसकी आज्ञा (नियम से) मृत को जीवित करता हूं, मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम क्या खाते हो और क्या अपने घरों में भण्डार करके रखते हो इसमें तुम्हारे लिए प्रयाप्त चिन्ह है, यदि तुम आस्था लाते हो (49)

नोट- ऊपर आयत का अनुवाद लिखा गया जो एक चमत्कार है उस पर जूं का तूं विश्वास लाना अनिवार्य है, परन्तु इन कार्यों को एक उपमा के द्वारा देखा जाए तो भी कुछ भय नही, अपितु आयत को समझने में सहायता मिलेगी और आयत में जो काम अंकित है उनको करने का नबियों का दायित्व भी है, महामना ईसा भी करते थे उन पर विचार किया जाये,

वह यह कि महामना ईसा अ० का काल यूनानी दर्शनशास्त्र, युक्ति व सत्ता के उत्थान का युग था, पूरा देश शाम यूनानियों के अधिकार में था और यूनानी चिकित्सकों व दक्षता की धांक जमी थी, पूरी बनी इसराईल जाति उनकी पराधीन थी और इस पराधीनता के कारण उनका पापों में लिप्त होना था धर्म से दूर थे,

उस काल में ईश्वर ने महामना ईसा को यह चमत्कार देकर जाति के सुधार आत्मा व जिस्मानी करने को प्रेषित किया, उसके अन्तर्गत ही महामना इन कामों को किया करते थे, ईश्वर के (इज़्न) नियम से अन्धों और कुष्ठ रोगियों को भला चंगा और मृतकों को जीवित कर देने में यह सोच छुपी थी कि बनी इसराईल उस समय तीन निकृष्टतम विपत्ति में ग्रस्त थे,

1:- सम्मान व सत्ता के जीवन से वंचित रूमी मूर्ति पूजकों की दासता में थे,

2:- पापाचार व कुकर्म में कार्यरत होने से उनके जीवन चरित्र का रूप बिगाड़ कर रख दिया था जैसे कुष्ठ में ग्रस्त कुरूप, जक़बिकार से जाता है,

3:- उन कष्टों में ग्रस्त होने के कारण सम्मान के जीवन की प्राप्ति से वह ऐसे निराश हो गए थे जैसे अन्धे को कुछ दिखाई नही देता और हर वस्तु को देखने से हताश होता है परन्तु ईसा अ० जाति की उस बीमारी का उपाय ईश्वर की पुस्तक की दीक्षा देकर करते थे और जो उस दीक्षा को स्वीकार कर लेता था वह हर रोग आत्मा व शारीरिक से शुद्ध व पवित्र हो कर दृष्टा जीवित और पक्षी जैसा स्वतंत्र हो जाता था अर्थात धर्मवादी और धर्मवादी जीवित व स्वतंत्र हो जाता है,

रहा यह चमत्कार कि महामना लोगों को बता देते थे कि तुमने क्या खाया है और क्या अपने घरों में संचित किया है, इस बताने का कारण यह था कि जाति पापी होने के कारण अवैध कमाई कमाते थे और अपने पापों को छुपाने का प्रयत्न करते थे, परन्तु महामना जाति को उस वर्जित कमाई से रोकते थे और बता देते थे कि तुम जो खा रहे हो या भण्डार कर रहे हो वह अवैध कमाई है, उसका लेखा जोखा देना है, उस वर्जित से बचो, रहा प्रश्न मृतकों को जीवित करने का तो आयत (8:24) में है, ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो ईश्वर और ईशदूत की पुकार पर उपस्थित हो जाओ जबकि ईशदूत तुम्हें उस वस्तु की ओर बुलाते है जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है,

इस प्रकार महामना ईसा आध्यामिक मृतकों को जीवन प्रदान करने वाली शिक्षा देते थे हर काल में पापी जाति मृतक होती है और आस्तिक जीवित होते है,

और मेरी अवस्था यह है कि जो तौरात से सुरक्षा के मध्य मेरे सामने उपस्थित है मैं उसकी पुष्टि करने वाला हूं और मैं इसलिए आया हूं कि वैध बताऊं तुम्हारे लिए कतिपय उन वस्तुओं को जो तुम

کرتا ہوں اور اس کے اذن (قانون سے) مردے کو زندہ کرتا ہوں میں تمہیں بتاتا ہوں کہ تم کیا کھاتے ہو اور کیا اپنے گھروں میں ذخیرہ کر کے رکھتے ہو اس میں تمہارے لئے کافی نشانی ہے اگر تم ایمان لاتے ہو (۴۹)

نوٹ:۔اوپر آیت کا ترجمہ لکھا گیا جو ایک معجزہ ہے اس پر جوں کا توں ایمان لانا ضروری ہے مگر ان کاموں کو ایک مثال کے ذریعہ دیکھا جائے تو بھی کچھ ڈر نہیں بلکہ آیت کو سمجھنے میں مدد ملے گی اور آیت میں جو کام درج ہیں ان کو کرنے کی نبیوں کی ذمہ داری بھی ہے حضرت عیسیٰ بھی کرتے تھے ان پر غور کیا جائے

وہ یہ کہ حضرت عیسیٰ کا زمانہ یونانی فلسفہ، حکمت و اقتدار کے عروج کا زمانہ تھا۔ پورا ملک شام یونانیوں کے قبضہ میں تھا اور یونانی اطبا و حذاقت کی طوطی بول رہی تھی۔ پوری بنی اسرائیل قوم ان کی محکوم تھی اور اس محکومی کا سبب ان کا گناہ میں ملوث ہونا تھا ایمان سے دور تھے

اس دور میں اللہ نے حضرت عیسیٰ کو یہ معجزے دے کر قوم کی اصلاح روحانی و جسمانی کرنے کو مبعوث کیا اس کے ضمن میں ہی حضرت ان کاموں کو کیا کرتے تھے اللہ کے اذن قانون سے۔ اندھوں اور برص کے مریضوں کو بھلا چنگا اور مُردوں کو زندہ کر دینے میں یہ دعوت فکر پوشیدہ تھی کہ بنی اسرائیل اس وقت تین بدترین آفتوں میں گرفتار تھے

(۱)عزت و اقتدار کی زندگی سے محروم رومی بت پرستوں کی غلامی میں تھے۔

(۲)فسق و فجور کے مشغلہ نے ان کی سیرت و صورت کا حلیہ بگاڑ کر رکھ دیا تھے۔ جیسے برص یا جذام میں مبتلا آدمی بدمنظر و کریہ الجسم ہو جاتا ہے۔

(۳)ان آفات میں مبتلا ہونے کی وجہ سے عزت و شرف کی زندگی کے حصول سے وہ ایسے مایوس ہو گئے تھے جیسے اندھے کو کچھ دکھائی نہیں دیتا اور وہ ہر چیز کو دیکھنے سے مایوس ہوتا ہے مگر عیسیٰ قوم کی اس بیماری کا علاج اللہ کی کتاب کی تعلیم دے کر کرتے تھے۔ اور جو اس تعلیم کو تسلیم کر لیتا تھا وہ ہر مرض روحانی و جسمانی سے پاک و صاف ہو کر بینا زندہ اور پرندے کی طرح آزاد ہو جاتا تھا یعنی ایمان دار اور ایماندار زندہ آزاد ہو جاتا تھا۔

رہا یہ معجزہ کہ حضرت لوگوں کو بتادیتے تھے کہ تم نے کیا کھایا ہے اور کیا اپنے گھروں میں ذخیرہ کیا ہے اس بتانے کی وجہ یہ تھی کہ قوم گناہ گار ہونے کی وجہ سے حرام کمائی کماتے تھے اور اپنے عیب پر پردہ ڈالنے کی کوشش کرتے تھے مگر حضرت قوم کو اس حرام کمائی سے منع کرتے تھے۔ اور بتادیتے تھے کہ تم جو کھا رہے ہو یا ذخیرہ کر رہے ہو وہ حرام کمائی ہے اس کا حساب دینا ہے اس حرام سے بچو۔ رہا سوال مُردوں کو زندہ کرنے کا تو آیت (۸:۲۴) میں ہے اے لوگو! جو ایمان لائے ہو اللہ اور رسول کی پکار پر لبیک کہو جب کہ رسول تمہیں اس چیز کی طرف بلاتے ہیں جو تمہیں زندگی بخشنے والی ہے۔

اس طرح عیسیٰ روحانی مردوں کو زندگی بخشنے والی تعلیم دیتے تھے ہر زمانے میں گناہ گار قوم مُردہ ہوتی ہے اور ایمان دار زندہ ہوتے ہیں۔

<u>اور میرا حال یہ ہے کہ جو توراۃ سے حفاظت کے درمیان میرے سامنے موجود ہے میں اس کی تصدیق کرنے والا ہوں۔ اور میں اس لئے آیا ہوں کہ حلال بتاؤں تمہارے</u>

पर (तुम्हारे मूर्ख व स्वार्थी पण्डितों ने) वर्जित कर दी थी और मैं तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम्हारे लिए बड़ी स्मृति लेकर आया हूं, अतः ईश्वर के प्रकोप से बचो और मेरा अनुकरण करो अर्थात ईश्वर जो आदेश मुझे देता है मैं उस पर ही चलता हूं और कर्म करता हूं और तुम से कहता हूं कि मेरे कर्म करने की भांति तुम भी कर्म करो उसके विरुद्ध नही, अतः वास्तव में मेरा अनुकरण ईश्वर का ही अनुकरण है मैं अपनी ओर से कोई अनुकरण नहीं चाहता (50) {3:79}

لئے بعض ان چیزوں کو جو تم پر (تمہارے جاہل وخودغرض عالموں نے) حرام کردی تھیں اور میں تمہارے رب کی طرف سے تمہارے لئے بڑی نشانی لے کر آیا ہوں.بس اللہ کے غضب سے بچو اور میری اطاعت کرو (یعنی اللہ جو حکم مجھے دیتا ہے میں اس پر ہی چلتا ہوں عمل کرتا ہوں اور تم سے کہتا ہوں کہ میرے عمل کرنے کی طرح تم بھی عمل کرو اس کے خلاف نہیں.اس لئے حقیقت میں میری اطاعت اللہ کی ہی اطاعت ہے میں اپنی طرف سے کوئی اطاعت نہیں چاہتا) (۵۰) [۷۹:۳]

(इस आयत में अनुकरण खुलकर सामने आ गया कि आज्ञापलन पूजा किस की होती है) निःसन्देह ईश्वर मेरा रब है और तुम्हारा भी स्वामी है (जैसे मैं उसकी मान कर व्यवहार कर रहा हूं वैसे ही तुम भी करो) अतः उसकी पूजा करो यह सीधा मार्ग है. (51)

(اس آیت میں اطاعت کھل کر سامنے آگئی کہ اطاعت عبادت کس کی ہوتی ہے) بےشک اللہ میرا رب ہے اور تمہارا بھی رب ہے (جیسے میں اس کی مان کر عمل کر رہا ہوں ویسے ہی تم بھی کرو) لہٰذا اس کی بندگی کرو یہ سیدھی راہ ہے (۵۱)

अतः जब ईसा अ० ने उनकी अर्थात बनी इस्राईल की ओर से अवज्ञा (और इच्छा बध) देखी तो कहा कौन है मेरे सहायक ईश्वर के लिए तो कहा हवारियों ने (अर्थात सहायकों ने जिनके हृदय धर्म की शिक्षा से उज्ज्वल पवित्र हो चुके थे) हम हैं ईश्वर के (धर्म और तेरे) सहायक और तू साक्षी रह कि हम ईश्वर और उसके रसूल के आज्ञाकारी हैं (52)

پس جب عیسیٰ نے ان کی یعنی بنی اسرائیل کی طرف سے نافرمانی (اور نیت قتل) دیکھی تو فرمایا کون ہیں میرے مددگار اللہ کے لئے.تو کہا حواریوں مددگاروں نے (یعنی ہمدردوں نے جن کے دل دین کی تعلیم سے روشن صاف ستھرے ہو چکے تھے) ہم ہیں اللہ کے (دین اور تیرے) مددگار اور تو گواہ رہ کہ ہم اللہ اور اس کے رسول کے مسلم ہیں فرمانبردار (۵۲)

ऐ हमारे रब हम ने उस (शिक्षा के सत्य होने का) का विश्वास व स्वीकार किया है जिसे तू ने अवतरित किया है (अपने रसूल पर) और हम ने ईशदूत का अनुकरण स्वीकार किया अतः तू हमें उन लोगो के साथ लिख ले जो सत्य का साक्ष्य देने वाले हैं. (53)

اے ہمارے رب ہم نے اس (ہدایت کے برحق ہونے کا) کا یقین واقرار کیا ہے جسے تو نے نازل کیا ہے (اپنے رسول پر) اور ہم نے رسول کی پیروی اختیار کی بس تو ہمیں ان لوگوں کے ساتھ لکھ لے جو حق کی شہادت دینے والے ہیں (۵۳)

और नास्तिको ने (ईसा को बध करने का) उपाय किया और ईश्वर ने उन को बचाने की युक्ति की और ईश्वर सब से अच्छी युक्ति करने वाला है (54)

اور کفار نے (عیسیٰ کو قتل کرنے کی) تدبیر کی اور اللہ نے ان کو بچانے کی تدبیر کی اور اللہ سب سے اچھی تدبیر کرنے والا ہے (۵۴)

(नास्तिको की चाल के उत्तर में ईश्वर ने नबी को विश्वास दिलाया) जब कहा ईश्वर ने ईसा! निःसंदेह मैं तेरी रक्षा करूंगा और तुझे पूरा करने वाला हूं (आर्थात तेरा कार्य पूरा करूंगा जो तेरे समर्पित है और उस कार्य के पूरा होने पर ही तू उच्च होगा अर्थात तेरे मानने वाले तेरा नाम उज्ज्वल करेंगे और धर्म प्रभुत्वशाली होगा) (61:14) तुझे मृत्यू भी देनी है) अतः कार्य पूर्ण होने पर तुझे मेरी ओर से श्रेष्ठता मिलने वाली है अर्थात तुम्हारे मान उच्च होंगे और जिन लोगों ने इनकार किया है उनसे तुझे पवित्र करने वाला हूं अर्थात तुम्हारे विरुद्ध जो मिथ्या दोषारोपण वह करते है उनसे तुम्हें मुक्त करूंगा और जो तेरा अनुकरण करेंगे (आस्तिक) उन लोगों को उन पर प्रलय तक शासक रखूंगा जिन्होंने तेरा इनकार किया है, फिर तुम सब को अंततः मेरे पास आना है उस समय मैं अर्थात मेरा नियम उन बातों का निर्णय कर देगा जिन में तुम्हारे मध्य मत भेद हुआ है, (55) {10:46,7: 136-137,37:99,10:24 (5:11,6:32,34,20:46-48)

(کفار کی سازش کے جواب میں اللہ نے نبی کو یقین دلایا) جب کہا اللہ نے عیسیٰ! بےشک میں تیری حفاظت کروں گا اور تجھے پورا کرنے والا ہوں (یعنی تیرا کام پورا کروں گا جو تیرے سپرد ہے اور اس کام کے پورا ہونے پر ہی تو بلند ہوگا یعنی تیرے ماننے والے نام روشن کریں گے اور دین غالب ہوگا) (۶۱:۱۴) تجھے وفات بھی دینی ہے) اس لئے کام پورا ہونے پر تجھے میری طرف سے بلندی ملنے والی ہے یعنی تمہارے درجے بلند ہوں گے اور جن لوگوں نے کفر کیا ہے ان سے تجھے پاک کرنے والا ہوں یعنی جو الزامات وہ تمہارے خلاف تراشتے ہیں، ان سے تمہیں بری کروں گا.اور جو تیری پیروی کریں گے (مومن) ان کو ان لوگوں پر قیامت تک بالادست رکھوں گا جنہوں نے تیرا انکار کیا ہے.پھر تم سب کو آخر کار میرے پاس آنا ہے اس وقت میں یعنی میرا قانون ان باتوں کا فیصلہ کردے گا جن میں تمہارے درمیان اختلاف ہوا ہے (۵۵) [۱۰:۴۶، ۷:۱۳۶، ۱۳۷، ۳۷:۹۹، ۱۰:۲۴، ۵:۱۱، ۶:۳۲، ۳۴، ۲۰:۴۶، ۴۸]

नोट- कार्य पूरा होने को एक दूसरे पार्श्व से देखा जाए वह यह कि जब नबी ने जाति की दुष्टता का अनुमान कर लिया और सहायको ने सहायता का प्रण किया तो उस समय ईश्वर ने ईसा अ0 को सांत्वना देते हुए कहा ऐ ईसा तू घबरा मत जिस कार्य को तू कर रहा है वह मेरा कार्य है और तुम मेरे ईशदूत हो अतः अत्याचारी कुछ भी करते रहें आप को वध नही कर सकते और आप के समर्पित जो कार्य है उस का पूर्ण करना मेरा काम है, जैसे आपसे पहले ईशदूतों से उनका कार्य पूर्ण कराया तुम भी अपना कार्य पूर्ण करोगे, क्योंकि तुम मेरी रक्षा में हो और जो कार्य तुम से शेष रहेगा जो रहना ही है उसको पूर्ण और प्रभुत्वशाली करने वाला अन्तिम ईशदूत महामना मुहम्मद स0 आएंगे उन से पूर्ण होगा, मेरा कार्य तो सम्पूर्ण होना ही है, तब आप श्रेष्ठ होंगे, इस श्रेष्ठता में मुहम्मद स0 की भविष्य वाणी भी है और यह भी है कि हर पुस्तक धारियों को अपनी मौत से पहले मुहम्मद स0 के ईशदौत्य को अंगीकार करना है, यह वह भविष्य वाणी है जो ईसा अ0 के मुख से (61:6) में बताई है,

तब ही कल्याण है और वही अधिकार प्राप्त रहेंगे क्योंकि ईसा सहित हर ईशदूत ने अन्तिम ईशदूत मुहम्मद स0 की सूचना दी है और अपनी जाति से कहा है कि उस पर विश्वास लाना और सहायता करना और यही ईश्वर ने कहा है (3:81)

नोट-2) मुसलमानों की एक आस्था यह है कि ईसा को ईश्वर ने जीवित आकाश पर उठा लिया है और वह महा प्रलय के निकट धर्म को प्रभुत्वशाली करने और मुसलमानों की सहायता करने के लिए इस दुनिया में विराजमान होंगे और उनके साथ अन्तिम अग्रणीय मेहदी भी होंगे जो शीआ आस्था के अनुसार जन्मित हो चुके है और एक गुफ़ा जो ईरान में है लुप्त है और वही से धर्म के आदेश प्रेषित करते है और सुन्नी आस्था है कि वह जन्मित होंगे और दोनों मिलकर धर्म को प्रभुत्व शाली करेंगे और पुस्तक धारी महामना ईसा पर विश्वास लाएंगे,

अब देखा यह जाए कुरआन के प्रकाश में क्या ईसा अ0 वास्तव में जीवित है,

सूरत अंबिया आयत 7,8 और ऐ नबी तुम से पहले भी हमने इंसानों ही को ईशदूत बनाकर भेजा है जिन पर हम वही किया करते थे, तुम लोग यदि बुद्धि नही रखते अर्थात नही जानते तो पुस्तक वालों से ज्ञात कर लो, उन ईशदूतों को हमने ऐसा शरीर नही दिया था कि वह खाते न हों, और न वह सदैव जीवित रहने वाले थे,

आयत (21:34,35) और ऐ नबी निरन्तरता तो हम ने तुम से पहले भी किसी इंसान के लिए नही रखी है, यदि तुम मर गए तो क्या वह लोग सदैव जीवित रहेंगे? हर जीवधारी को मौत का स्वाद चखना है,

एक पुस्तक का सन्दर्भ मुहम्मद स0 ने लोगों से कहा, ऐ लोगो! मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम अपने नबी की मृत्यु से भयभीत हो? क्या मुझ से पहले कोई ईशदूत सदैव रहा है जो मैं रहता, हां मैं अपने ईश्वर से मिलने वाला हूं अर्थात मुझे मृत्यु आने वाली है,

(सीरत ख़ातमुल अम्बिया, पेज 103 मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी)

(5:116से119) जब ईश्वर कहेगा कि ऐ ईसा अ0 बिन मरयम क्या तूने लोगों से कहा था (वास्तिविकता यह है तूने ऐसा नही कहा) कि ईश्वर के अतिरिक्त मुझे और मेरी माता को भी पूज्य बना लो (सत्य यह है कि वह जाति अवज्ञाकारी है और उनकी आस्था भी भ्रष्ट है और उनका नेतृत्व भी शैतानी है, उन्होंने स्वयं ही यह विश्वास बनाया था कि

نوٹ ۱۔ کام پورا ہونے کو ایک دوسرے پہلو سے دیکھا جائے. وہ یہ کہ جب نبی نے قوم کی شرارت کا احساس کرلیا اور حواریوں نے مدد کا وعدہ کیا تو اس وقت اللہ نے عیسیٰ کو دلاسا دیتے ہوئے کہا. اے عیسیٰ تو گھبرا مت جس کام کو تو کر رہا ہے وہ میرا کام ہے اور تم میرے نبی ہو. اس لئے ظالم کچھ بھی کرتے ہیں آپ کو قتل نہیں کر سکتے اور آپ کے سپرد جو کام ہے اس کا پورا کرنا میرا کام ہے. جیسے آپ سے پہلے نبیوں سے ان کا کام پورا کرایا تم بھی اپنا کام پورا کرو گے کیونکہ تم میری حفاظت میں ہو اور جو کام تم سے باقی رہے گا جو رہنا ہی ہے اس کو پورا اور غالب کرنے والا آخری نبی محمدؐ آئیں گے ان سے پورا ہوگا. میرا کام تو مکمل ہونا ہی ہے. تب آپ بلند ہوں گے. اس بلندی میں حضرت محمدؐ کے لئے پیش گوئی بھی ہے اور یہ بھی ہے کہ ہر اہل کتاب کو اپنی موت سے پہلے محمدؐ کی نبوت کا اقرار کرنا ہے یہ وہ پیش گوئی ہے جو عیسیٰ کی زبانی (۶۱:۶) میں بتائی ہے.

تب ہی خیر ہے اور وہی غالب رہیں گے کیوں کہ بشمول عیسیٰ کے ہر نبی نے آخری نبی محمدؐ کی خبر دی ہے اور اپنی قوم سے کہا ہے کہ اس پر ایمان لانا اور مدد کرنا اور یہی اللہ نے کہا ہے (۳:۸۱)

نوٹ ۲۔ مسلمانوں کا ایک عقیدہ یہ ہے کہ عیسیٰ کو اللہ نے زندہ آسمان پر اٹھایا ہے اور وہ قرب قیامت دین کو غالب کرنے اور مسلمانوں کی مدد کرنے کے لئے اس دنیا میں تشریف لائیں گے اور ان کے ساتھ آخری امام مہدی بھی ہوں گے. جو شیعہ عقیدے کے مطابق پیدا ہو چکے ہیں اور ایک غار جو ایران میں ہے غائب ہیں اور وہیں سے احکام دین روانہ کرتے ہیں. اور سنی عقیدہ ہے کہ وہ پیدا ہوں گے. اور دونوں ملکر دین کو غالب کریں گے. اور اہل کتاب حضرت عیسیٰ پر ایمان لائیں گے. اب دیکھا یہ جائے قرآن کی روشنی میں کیا عیسیٰ حقیقت میں زندہ ہیں.

سورت انبیاء آیت (۸،۷) اور اے نبی تم سے پہلے بھی ہم نے انسانوں ہی کو رسول بنا کر بھیجا ہے جن پر ہم وحی کیا کرتے تھے. تم لوگ اگر عقل نہیں رکھتے یعنی نہیں جانتے تو اہل کتاب سے پوچھ لو. ان رسولوں کو ہم نے ایسا جسم نہیں دیا تھا کہ وہ کھاتے نہ ہوں اور نہ وہ سدا جینے والے تھے.

آیت (۲۱:۳۴، ۳۵) اور اے نبی ہمیشگی تو ہم نے تم سے پہلے بھی کسی انسان کے لئے نہیں رکھی ہے اگر تم مر گئے تو کیا وہ لوگ ہمیشہ جیتے رہیں گے؟ ہر جاندار کو موت کا مزا چکھنا ہے.

ایک کتاب کا حوالہ محمدؐ نے لوگوں سے فرمایا اے لوگو! مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم اپنے نبی کی موت سے ڈر رہے ہو؟ کیا مجھ سے پہلے کوئی نبی ہمیشہ رہا ہے جو میں رہتا. ہاں میں اپنے پروردگار سے ملنے والا ہوں. یعنی مجھے موت آنے والی ہے. [سیرت خاتم الانبیاء]۔ صفحہ ۱۰۳ (مفتی محمد شفیع)

(۵:۱۱۶ تا ۱۱۹) جب اللہ فرمائے گا کہ اے عیسیٰ بن مریم کیا تو نے لوگوں سے کہا تھا (حقیقت یہ ہے تو نے ایسا نہیں کہا) کہ اللہ کے علاوہ مجھے اور میری ماں کو بھی معبود بنا لو (حقیقت میں وہ قوم نافرمان ہے اور ان کا عقیدہ بھی خراب ہے اور ان کی قیادت بھی شیطانی ہے. انہوں نے خود ہی یہ عقیدہ بنایا تھا کہ ماں بیٹا بھی الہٰ ہیں)

तو وہ جواب دیں گے۔سبحان اللہ میرا یہ کام نہ تھا اگر میں نے ایسی بات کہی ہوتی تو آپ کو ضرور علم ہوتا۔آپ جانتے ہیں جو کچھ میرے دل میں ہے اور میں نہیں جانتا جو کچھ آپ کے دل میں ہے۔آپ تو ساری پوشیدہ حقیقتوں کے عالم ہیں۔میں نے ان سے اس کے علاوہ کچھ نہیں کہا جس کا آپ نے حکم دیا تھا۔یہ کہ اللہ کی بندگی کرو جو میرا بھی رب ہے اور تمہارا بھی رب ہے میں اس وقت تک ان کا نگراں تھا جب تک ان میں تھا۔جب آپ نے مجھے وفات (توفیتی ۔یعنی پورا وصول کر لیا اور کام بھی پورا کر دیا) دیدی یعنی موت تو آپ ان پر نگراں تھے اور آپ تو ساری ہی چیزوں پر نگراں ہیں۔اب اگر آپ انہیں سزا دیں تو یہ آپ کے بندے ہیں اور اگر آپ معاف کر دیں تو آپ غالب اور دانا ہیں۔

(۳۱:۱۹) اور بنایا مجھ کو برکت والا جس جگہ میں ہوں اور تاکید کی مجھ کو نماز پڑھنے کی اور زکوۃ دینے کی جب تک میں زندہ رہوں۔

سورت الصف ۶۱/۶ آیت ۶/ر اور جس وقت کہ کہا عیسیٰ ابن مریم نے اے بنی اسرائیل تحقیق میں رسول اللہ کا ہوں تمہاری طرف ماننے والا اس چیز کا جو میرے سامنے ہے درمیان حفاظت کے تورات سے اور خوشخبری دینے والا اس رسول کی جو آئے گا میرے بعد۔نام اس کا محمد ہے۔مگر جب آیا ان کے پاس وہ روشن دلیلوں کے ساتھ تو کہا انہوں نے یہ جادو ہے کھلا

ہم نماز جنازہ میں کہتے ہیں اے اللہ ہم میں سے جس کو موت دے تو اس کو موت دے ایمان پر (توفیتہ توفیتی) ہی کہتے ہیں اور آیت میں بھی یہی لفظ توفیتی ہے تو ظاہر ہوا کہ عیسیٰ کو اللہ نے موت دے دی۔اب وہ زندہ نہیں ہیں۔

بقول اکثر مسلمانوں کے اگر وہ زندہ ہیں اور توفیتی سے مراد زندہ اٹھالینا ہے جیسا کہ عقیدہ بنا دیا گیا ہے۔تو پھر تقریباً سب کی موت کے لئے قرآن میں ''توفیتی یا توفیتہ'' لفظ ہی آیا ہے تو پھر سب کے سب انسان اللہ نے زندہ اٹھالئے ہیں اور وہ بھی عیسیٰ کی طرح پھر آ کر موت کا مزہ چکھیں گے۔کیونکہ قدرتی موت سب کو مرنا ہے۔بات غور طلب ہے ہر نفس کو موت کا مزہ چکھنا ہے۔

سورت مائدہ کی جو آیات لکھی گئیں ہیں ان میں اللہ ایک سوال عیسیٰ سے کریں گے جو حشر میں ہوگا کہ اے عیسیٰ کیا تم نے لوگوں سے کہا تھا کہ مجھ کو اور میری ماں کو بھی اللہ کے علاوہ معبود بنالو تو عیسیٰ عرض کریں گے میرا یہ کام نہ تھا کہ یہ بات کہتا میں نے وہی کہا جو آپ نے مجھے حکم دیا اور جب تک میں ان میں رہا نہ ہی ان لوگوں نے ایسا کیا تھا۔

اگر مان لیا جائے کہ عیسیٰ دوبارہ آئیں گے تو ضرور قرآن پڑھیں گے قرآن میں صاف لکھا ہے کہ عیسائیوں نے عیسیٰ اور مریم کو اللہ کے ساتھ معبود بنا لیا ہے اور ویسے بھی عیسائیوں کے عقیدے کا مشاہدہ کریں گے۔ان شہادتوں کے بعد عیسیٰ کا جواب وہ نہ ہوتے ہوئے یہ ہونا چاہیے کہ ہاں اے اللہ جب تک میں ان میں رہا اس وقت تک تو وہ ٹھیک تھے جتنے بھی میرے ماننے والے تھے مگر بعد کو ان کا عقیدہ یہی ہو گیا تھا۔جس کا آپ نے سوال کیا ہے کیونکہ جب آپ نے مجھے دوبارہ بھیجا تھا اپنے دین کو غالب کرنے کے لئے اس وقت میں نے قرآن میں بھی پڑھا تھا اور مشاہدہ بھی کیا تھا حقیقت میں وہ لوگ مشرک ہیں مگر میں بری ہوں۔

اس آیت کی تفسیر میں ایک روایت ہے جو بخاری میں درج ہے۔کہ حشر میں محمدؐ بھی یہی الفاظ توفیتی فرمائیں گے تو کیا محمدؐ کو بھی زندہ اٹھالیا گیا

माता पुत्र भी पूज्य हैं) तो वह उत्तर देंगे ईश्वर तू पवित्र है मेरा यह काम न था कि वह बात कहता जिसके कहने का मुझे अधिकार न था, यदि मैंने ऐसी बात कही होती तो आपको अवश्य ज्ञान होता, आप जानते हैं जो कुछ मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो कुछ आपके मन में है, आप तो सारी गुप्त वस्तु स्थिति को जानते हैं, मैंने उनसे इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जिसका आपने आदेश दिया था, यह कि ईश्वर की पूजा करो जो मेरा भी स्वामी है और तुम्हारा भी स्वामी है, मैं उस समय तक उनका रक्षक था जब तक उनमें था, जब आपने मुझे वफ़ात मृत्यु (तवफ्फ़ैतनी अर्थात पूरा प्राप्त कर लिया और कार्य भी पूरा कर दिया) दे दी अर्थात मृत्यु, तो आप उन पर रक्षक थे, और आप तो सारी ही वस्तुओं पर रक्षक हैं, अब यदि आप इन्हें दण्ड दें तो यह आपके बन्दे हैं और यदि क्षमा कर दें तो आप प्रभुत्वशाली और ज्ञानी हैं,

(19:31) और बनाया मुझको सम्पन्नता वाला जिस स्थान पर हूं और चैतावनी दी मुझको नमाज़ पढ़ने की और दान देने की जब तक मैं जीवित रहूं,

सूरत सफ आयत 6, और जिस समय कि कहा ईसा इब्ने मरयम ने ऐ बनी इसराईल निःसन्देह मैं ईशदूत हूं तुम्हारी ओर, मानने वाला उस वस्तु का जो मेरे सामने है सुरक्षा के मध्य तौरात से और शुभ सूचना देने वाला उस रसूल की जो आएगा मेरे बाद नाम उसका मुहम्मद है, मगर जब आया उनके पास वह उज्ज्वल प्रमाणों के साथ तो कहा उन्होंने यह जादू है खुला,

हम नमाज़ अर्थी में कहते हैं ऐ स्वामी हम में से जिसको मृत्यु दे तो उसको मौत दे ईमान पर (तवफ्फ़ैतहू तवफ्फ़ैतनी) ही कहते हैं और आयत में भी यही शब्द 'तवफ्फ़ैतनी' है तो स्पष्ट हुआ कि ईसा को ईश्वर ने मौत दे दी, अब यह जीवित नहीं है,

कथनानुसार अधिकांश मुसलमानों के यदि वह जीवित हैं और तवफ्फ़ैतनी से तात्पर्य जीवित उठा लेना है जैसा कि आस्था बना दी गई है तो फिर लगभग सब की मृत्यु के लिए कुरआन में तवफ्फ़ैतनी या तवफ्फ़ैतहू शब्द ही आया है तो फिर सबके सब इंसान ईश्वर ने जीवित उठा लिए हैं, और वह भी ईसा अ० की भांति फिर आकर मौत का स्वाद चखेंगे, क्योंकि प्राकृतिक मौत, सबको मरना है बात विषय विचारणीय है हर जीव को मौत का स्वाद चखना है,

सूरत माइदा की जो आयात लिखी गई हैं उनमें ईश्वर एक प्रश्न ईसा अ० से करेंगे जो प्रलय में होगा कि ऐ ईसा अ० क्या तुम ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माता को भी ईश्वर के अतिरिक्त पूज्य बना लो तो ईसा अ० निवेदन करेंगे मेरा यह काम न था कि यह बात कहता मैंने वही कहा जो आपने मुझे आदेश दिया और जब तक मैं उनमें रहा न ही उन लोगों ने ऐसाकिया था,

यदि मान लिया जाए कि ईसा पुनः आऐंगे तो अवश्य कुरआन पढ़ेंगे, कुरआन में स्पष्ट लिखा है कि ईसाईयों ने ईसा और मरयम को ईश्वर के साथ पूज्य बना लिया है और वैसे भी ईसाईयों के धर्म का अवलोकन करेंगे, इन साक्ष्यों के बाद ईसा का उत्तर वह न होते हुए यह होना चाहिए कि हां, ऐ ईश्वर जब तक मैं उनमें रहा उस समय तक तो वह ठीक थे जितने भी मेरे अनुयायी थे परन्तु बाद को उनकी आस्था यही हो गई थी जिसका आपने प्रश्न किया है, क्योंकि जब आपने मुझे पुनः भेजा था अपने धर्म को प्रभुत्वशाली करने के लिए उस समय मैंने कुरआन में पढ़ा था और प्रत्यक्ष दर्शन भी किया था, वास्तव में वह लोग अनेकेश्वर वादी हैं परन्तु मैं निर्दोष हूं,

इस आयत के टीका में एक कथन है जो पुस्तक बुखारी में अंकित है, कि प्रलय में मुहम्मद स० भी यही शब्द तवफ्फ़ैतनी कहेंगे तो क्या मुहम्मद स० को भी जीवित उठा लिया गया है? देखो बुखारी

जिल्द दोम पाराह 18 रवायत 1737 पेज 776.

सूरत मरयम में है कि ईसा अ0 ने कहा कि मुझे आदेश है कि जब तक मैं जीवित रहूं नमाज़ पढूं और दान दूं यदि ईसा जीवित है तो कहां नमाज़ पढ़ते हैं और किसको दान दे रहे हैं? दान धन पर दी जाती है तो वह कौन-सा काम कर रहे हैं जिससे इतनी आय हो रही है और कहां उनका यह कार्य चल रहा है क्या आकाश पर या पृथ्वी पर बताया जाए और उनको कार्य करने वाले कहां से मिल रहे होंगे, और उनकी फैक्ट्री है तो उसमें मशीन कहां से गई, खराब होने पर कौन ठीक करता होगा तैल, बिजली कहां से जाती होगी? या यह सब हवा में ही कार्य चल रहा है?

सूरत सफ में ईसा अ0 की भविष्य वाणी है कि मेरे बाद एक ईशदूत मुहम्मद आऐंगे शब्द हैं मेरे बाद तो इसका अर्थ हुआ कि ईसा की मृत्यु के बाद और अधिकांश यह मानते हैं कि ईसा जीवित है तो जब जीवित हैं तो उनका धर्म विधान भी जीवित है, और एक पुस्तक धारी ईशदूत के जीवन में दूसरा पुस्तक धारी व धर्म विधान वाले नबी के आने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता और ईसा अ0 ने कहा भी यही है कि मेरे बाद और उनका बाद उनकी मृत्यु के बाद ही हो सकता है, क्योंकि कथनानुसार मुसलमानों के ईसा जीवित हैं (ईश्वर की शरण) परन्तु यह सब धोका है ईसा की मृत्यु हो चुकी और उनकी भविष्यवाणी के अनुसार मुहम्मद स0 आए और उनको भी मौत आ चुकी,

अब हमको स्वयं ही विचार करना चाहिए क्या अन्तिम ईशदूत मुहम्मद स0 न होते हुए ईसा हुए (ईश्वर की शरण) अन्तिम नबी का प्रश्न तो बाद का है पहले तो एक नबी के जीवन में जो पुस्तक व धर्म शास्त्र वाला होता है दूसरा नबी पुस्तक वाला आता ही नही तो इस प्रकार अभी हमारे नबी मुहम्मद स0 का आना भी संदिग्ध है (नआऊज़ू)

देखिए बात कहां से कहा जा रही है अतः ईश्वर हम को बुद्धि दे वास्तविकता यह है कि किसी भी आयत से सिद्ध नही कि ईसा अ0 को ईश्वर ने जीवित उठा लिया है और वह पुनः महाप्रलय के निकट वापस आकर धर्म को अधिपति करेंगे और साथ में इमाम मेंहदी भी?

परन्तु ईसा अ0 की मृत्यु हो चुकी है जिसकी पुष्टि आयाते कुरआन कर रही है और मुहम्मद स0 का कथन, बस हम उनको सत्य स्वीकार करें, रहा प्रश्न श्रेष्ठ करने और पवित्र करने का तो वास्तव में श्रीमान पवित्र थे अतः शारीरिक व रूहानी पवित्रता का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, अपितु उन मिथ्या दोषारोपण से पवित्र करना था जो वह लोग ईसा पर लगाते थे आयत से ज्ञात होता है कि ईश्वर ने नास्तिकों की विधि की तुलना में एक युक्ति की अर्थात ईसा को उनका कार्य पूरा होने पर मृत्यु देकर उनके शरीर को भी नास्तिकों की दृष्टि से लुप्त कर दिया ताकि यदि महामना का शरीर नास्तिकों को मिल जाता तो वह उसको अशुद्ध करते अपमान करते जैसा अत्याचारी लोग करते हैं, इतिहास साक्षी है कि मृतकों की समाधियों से हड्डी तक निकाल कर उनका अपमान किया है, अतः ईश्वर ने उस अशुद्धता से बचाने के लिए आपके शव तक को लुप्त कर दिया और नास्तिक हाथ मलते रह गए और ईश्वर की युक्ति के सामने जो उन्होंने ईसा अ0 को वध करने की बनाई थी, सफल न हो सकी और उनको इस विषय में भ्रम हो गया, न नास्तिकों ने उनको वध किया न सूली दी अपितु ईश्वर ने उनको मृत्यु देकर उनके शव को भी उठा लिया लुप्त कर दिया, एक सहाबी का शव भी नास्तिकों से ईश्वर ने बचाया था जिसको शहीद कर दिया था और प्रण किया था कि उसकी खोपड़ी में सुरा पीना है, परन्तु ईश्वर ने शव को लुप्त कर दिया,

ہے؟ دیکھو بخاری جلد دوم پارہ ۱۸، حدیث ۱۷۳۷، ص ۷۷۶

سورت مریم میں ہے کہ عیسیٰ نے کہا کہ مجھے حکم ہے کہ جب تک میں زندہ رہوں نماز پڑھوں اور زکوۃ دوں اگر عیسیٰ زندہ ہیں تو کہاں نماز پڑھ رہے ہیں اور کس کو زکوۃ دے رہے ہیں؟ زکوۃ مال پر دی جاتی ہے تو وہ کونسا ایسا کام کر رہے ہیں جس سے اتنی آمدنی ہو رہی ہے اور کہاں ان کا یہ کام چل رہا ہے کیا آسمان پر یا زمین پر بتایا جائے اور ان کو کام کرنے والے کہاں سے مل رہے ہوں گے اور ان کی فیکٹری ہے تو اس میں مشین کہاں سے گئی خراب ہونے پر کون ٹھیک کرتا ہوگا تیل بجلی کہاں سے جاتی ہوگی یا یہ سب ہوا میں ہی کام چل رہا ہے؟

سورت صف میں عیسیٰ کی ایک پیش گوئی ہے کہ میرے بعد ایک نبی محمدؐ آئیں گے لفظ ہے میرے بعد تو اس کا مطلب ہوا کہ عیسیٰ کی وفات کے بعد اور اکثر یہ مانتے ہیں کہ عیسیٰ زندہ ہیں تو جب زندہ ہیں تو ان کی شریعت بھی زندہ ہے. اور ایک صاحب کتاب نبی کی زندگی میں دوسرا صاحب کتاب وشریعت نبی کے آنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا اور عیسیٰ نے کہا بھی یہی ہے کہ میرے بعد اور ان کا بعد ان کی موت کے بعد ہی ہوسکتا ہے. کیونکہ بقول مسلمانوں کے عیسیٰ زندہ ہے (نعوذباللہ) مگر یہ سب دھوکا ہے عیسیٰ کی وفات ہوچکی اور ان کی پیش گوئی کے مطابق ہی ان کے بعد محمدؐ آئے اور ان کو بھی موت آچکی.

اب ہم کو خود ہی غور کرنا چاہیے کیا آخری نبی محمدؐ نہ ہوتے ہوئے عیسیٰ ہوئے (نعوذباللہ) آخری نبی کا سوال تو بعد کا ہے پہلے تو ایک نبی کی زندگی میں جو صاحب کتاب وشریعت ہوتا ہے دوسرا نبی صاحب کتاب آتا ہی نہیں تو اس طرح ابھی ہمارے نبی محمدؐ کا آنا بھی مشکوک ہے (نعوذباللہ).

دیکھیے بات کہاں سے کہاں جارہی ہے بس اللہ ہم کو عقل دے. حقیقت یہ ہے کہ کسی بھی آیت سے ثابت نہیں کہ حضرت عیسیٰ کو اللہ نے زندہ اٹھا لیا اور وہ دوبارہ قرب قیامت واپس آکر دین کو غالب کریں گے. اور ساتھ میں امام مہدی بھی؟

لیکن عیسیٰ کو موت آچکی ہے جس کی تصدیق آیات قرآنی کررہی ہے اور محمدؐ کا قول بس ہم ان کو صحیح تسلیم کریں.

رہا سوال بلند کرنے اور پاک کرنے کا تو حقیقت میں حضرت پاک تھے اس لئے جسمانی وروحانی پاکی کا تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. بلکہ ان الزاموں سے پاک کرنا ہے جو وہ لوگ عیسیٰ پر لگاتے تھے آیت سے پتہ چلتا ہے کہ اللہ نے کافروں کی تدبیر کے مقابلے میں ایک تدبیر کی یعنی عیسیٰ کو ان کا کام پورا ہونے پر موت دے کر ان کے جسم کو بھی کافروں کی نظروں سے غائب کردیا اگر حضرت کا جسم کافروں کو مل جاتا تو وہ اس کو ناپاک کرتے بےعزت کرتے جیسا ظالم لوگ کرتے ہیں. تاریخ شاہد ہے کہ مردوں کی قبروں سے ہڈی تک نکال کر ان کی بےعزتی کی ہے اس لئے اللہ نے اس ناپاکی سے بچانے کے لئے آپ کی نعش تک کو غائب کردیا اور کافر ہاتھ ملتے رہ گئے. اور اللہ کی تدبیر کے سامنے جو انہوں نے عیسیٰ کو قتل کرنے کی بنائی تھی کامیاب نہ ہوسکی اور ان کو اس معاملے میں شبہ ہوگیا. نہ کافروں نے ان کو قتل کیا نہ سولی دی بلکہ اللہ نے ان کو موت دیکر ان کی نعش کو بھی اٹھا لیا غائب کردیا. ایک صحابی کی نعش کو بھی کافروں سے اللہ نے بچایا تھا. جس کو شہید کردیا تھا اور عہد کیا تھا کہ اس کی کھوپڑی میں شراب پینا ہے مگر اللہ نے نعش کو غائب کردیا.

मान श्रेष्ठ इसलिए है कि बनी इसराईल उनको तिरस्कृत करते थे और ईशदूत स्वीकार नही करते थे, परन्तु ईश्वर की महिमा से आज दुनिया में कितने आदमी है जो आपको नबी स्वीकार करते और आपका नाम सम्मान से लेते है, वैसे तो उनको अनुचित विधि से मानने वाले भी प्रयाप्त है किन्तु उचित विधि से मानने वालों की संख्या भी प्रयाप्त है और उनके शत्रु ही अपमानित हो गए (61:14) भी श्रेष्ठ करने को कहती है,

यदि ईसा का शव मिल जाता तो हर स्थिति में उनको दफ़्न भी किया जाता और बाद को उनके तथा कथित माने वाले समाधि को उपासना शुरू करा लेते और उसकी पूजा करते जैसे आज और महापुरुषों की समाधि की हो रही है, इस बात से ईश्वर ने उनको पवित्र कर दिया किन्तु इसके बाद भी लोग उनको ईश्वर स्वीकार कर रहे है,

रहा प्रश्न अन्तिम नायक का तो वह हमारे हर घर में सजा हुआ ताकों में रखा है दूर जाकर खोजने की आवश्यकता नही, बस ताक से उठाकर पढ़कर कर्म करना है बस गाड़ी पार, वह नायक है कुरआन जिसका प्रमाण कुरआन दे रहा है कि पहले नायक मूसा की पुस्तक थी और अब कुरआन और इस पर व्यवहार से ही सम्मान मिलेगा,

ईसा को मानने वाले ही अधिपति रहेंगे का अर्थ है कि उनके धर्म शास्त्र और उनकी भविष्य वाणी को मानने वाले ही अधिपति रहेंगे, आयत में जो अनुवाद कर दिया गया है कि ईसा को मानने वाले महाप्रलय तक अधिपति रहेंगे तो वह भ्रमित है, आयत का आशय मुहम्मद स0 से है जिसकी पुष्टि कुरआन की बहुत सी आयत कर रही है

मैंने बात धर्म शास्त्र की लिखी है तो आज वह धर्म शास्त्र मुहम्मद का धर्म शास्त्र है चूंकि हर नबी का धर्म शास्त्र मिल्लते इब्राहीम एक है, (42:13, 3:84), अतः आज धर्म शास्त्र मुहम्मद ही धर्म शास्त्र इब्राहीम, मूसा, ईसा व नूह इत्यादि सबका है और इस पर कर्म ही अधिपति का वचन जमानत है और आज मिल्लते इब्राहीम कुरआन में अंकित धर्म विधान है इस पर व्यवहार करने वाले ही गालिब रहेंगे न मानने वाले परास्त,

इस लिखने का अर्थ यही है कि ईसा अ0 की मृत्यु हो चुकी अब वह जीवित नही है और न ही वापस आऐंगे,

क्या आने वाले से मसीह नासरी मकसूद है
या मुजद्दिद जिसमें हों इब्न मरयम के सिफ़ात (इक़बाल)

درجات بلند اس لئے ہیں کہ بنی اسرائیل ان کو ذلیل کرتے تھے اور نبی تسلیم نہیں کرتے تھے. مگر اللہ کی قدرت سے آج دنیا میں کتنے آدمی ہیں یعنی بہت ہیں جو آپ کو نبی تسلیم کرتے اور آپ کا نام عزت سے لیتے ہیں. ویسے تو ان کو غلط طریقے سے ماننے والے بھی کافی ہیں لیکن درست حیثیت سے ماننے والوں کی تعداد بھی کافی ہے اور ان کے دشمن ہی ذلیل ہو گئے. (۶۱:۱۴) بھی بلند کرنے کو کہتی ہے.

اگر عیسیٰ کی نعش مل جاتی تو ہر حالت میں ان کو دفن بھی کیا جاتا اور بعد کو ان کے نام نہاد ماننے والے قبر کو عبادت گاہ بنا لیتے اور اس کی پوجا کرتے جیسے آج اور بزرگوں کے مزاروں کی ہو رہی ہے. اس بات سے بھی اللہ نے ان کو پاک کر دیا. لیکن اس کے باوجود بھی لوگ ان کو اللہ تسلیم کر رہے ہیں.

رہا سوال آخری امام کا تو وہ ہمارے ہر گھر میں سجا ہوا طاقوں میں رکھا ہے دور جا کر تلاش کرنے کی ضرورت نہیں. بس طاق سے اُٹھا کر پڑھ کر اس پر عمل کرنا ہے بس گاڑی پار، وہ امام ہے قرآن جس کی شہادت قرآن دے رہا ہے کہ پہلے امام موسیٰ کی کتاب تھی اور اب قرآن اور اس پر عمل سے ہی عزت ملے گی.

عیسیٰ کو ماننے والے ہی غالب رہیں گے کا مطلب ہے کہ ان کی شریعت اور ان کی پیش گوئی کو ماننے والے ہی غالب رہیں گے آیت میں جو ترجمہ کر دیا گیا کہ عیسیٰ کو ماننے والے قیامت تک غالب رہیں گے تو وہ محل نظر ہے آیت کا منشا محمدؐ سے ہے جس کی تصدیق قرآن کی بہت سی آیات کر رہی ہیں.

میں نے بات شریعت کی لکھی ہے تو آج وہ شریعت ہے شریعت محمدؐ چونکہ ہر نبی کی شریعت ملت ابراہیم ایک ہے (۴۲:۱۳، ۳:۸۴) اس لئے آج شریعت محمد ہی شریعت ابراہیم و موسیٰ و عیسیٰ و نوح وغیرہ سب کی ہے اور اس پر عمل ہی غلبہ کی ضمانت ہے. اور آج ملت ابراہیم قرآن میں درج شریعت ہے اس پر عمل کرنے والے ہی غالب رہیں گے نہ ماننے پر مغلوب. اس لکھنے کا مطلب یہی ہے کہ عیسیٰ کو وفات ہو چکی اب وہ زندہ نہیں ہیں اور نہ ہی واپس آئیں گے.

کیا آنے والے سے مسیح ناصری مقصود ہے یا مجدد جس میں ہوں ابن مریم کے صفات (اقبال)

और जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई उन्हें दुनिया और प्रलोक में मैं कठोर दण्ड दूंगा और वह कोई सहायक न पाऐंगे (56)

और जिन्होंने आस्था लाकर सत्कर्म किए उन्हें उनके प्रतिदान पूरे दे दिए जाऐंगे और अत्याचारियों से ईश्वर कदापि प्रेम नही करता (57)

(ऐ रसूल!) यह वह युक्ति से भरा जप है जो हम पढ़ते है तुझ पर आयात से (58) {36:2, 108:1}

ईश्वर के समीप ईसा की उपमा आदम की सी है कि ईश्वर ने उसे मिट्टी से उत्पन्न किया और आदेश दिया कि हो जा, जब इरादा किया तो वह हो गया (59) {22:5, 30:20}

ऐ रसूल! ईसा के विषय में तुम्हारे रब की ओर से जो बताया गया है वह सत्य है सावधान शंका करने वालों से न होना (60)

اور جن لوگوں نے کفر کی روش اختیار کی انہیں دنیا اور آخرت میں، میں سخت سزا دوں گا اور وہ کوئی مدد گار نہ پائیں گے (۵۶)

اور جنہوں نے ایمان لا کر نیک عمل کئے انہیں ان کے اجر پورے دیدیئے جائیں گے اور ظالموں سے اللہ ہرگز محبت نہیں کرتا (۵۷)

(اے رسول) یہ وہ حکمت سے بھرا ذکر ہے جو ہم پڑھتے ہیں تجھ پر آیات سے (۵۸) [۳۶:۲، ۱۰۸:۱]

اللہ کے نزدیک عیسیٰ کی مثال آدم کی سی ہے کہ اللہ نے اسے مٹی سے پیدا کیا اور حکم دے دیا کہ ہو جا جب ارادہ کیا تو وہ ہو گیا (۵۹) [۲۲:۵، ۳۰:۲۰]

اے رسول! عیسیٰ کے بارے میں تمہارے رب کی طرف سے جو بتایا گیا ہے وہ حق ہے خبردار شک کرنے والوں سے نہ ہونا (۶۰)

नोट- अर्थात ईसा की उत्पत्ति और उनका समय पूरा होने के बाद मृत्यु

نوٹ:۔ یعنی عیسیٰ کی پیدائش اور ان کا وقت پورا ہونے کے بعد وفات اور ان کے

और उनके मान बड़े होनाजिनको यहूद कम करना चाहते थे और उनके शव की रक्षा करना नास्तिकों के मिथ्या दोषारोपणों से मुक्त करना तेरे ईश्वर की ओर से सत्य है अतः आप शंका करने वालों से न होना,

शंका लाने वालों में से न होना विदित है सम्बोधन तो मुहम्मद स0 हैं, परन्तु वास्तव में यह सम्बोधन नबी के द्वारा इंसानों से है कि तुम को जो सत्य कुरआन के द्वारा बताया जा रहा है उन पर विश्वास करो, बुद्धि विवेक से काम लो और कल्पित कहानियों से शंका में ग्रस्त न हो जाना, इसके बाद भी ईसाई ईसा अ0 को ईश्वर का पुत्र मान रहे हैं और उनको जीवित उठा लेना मान रहे हैं, परन्तु मुसलमान भी उनसे कम नहीं हैं, उन्होंने भी उनको जीवित स्वीकार कर रखा है और अपनी बिगड़ी किस्मत भाग्य को ठीक करने वाला और धर्म को अधिपति करने वाला मान रखा है महाप्रलय के निकट किन्तु समझने की बात यह है कि उससमय आने में क्या लाभ जब तो शीघ्र ही महाप्रलय आ जाएगी वह समय अधिक न होगा, उतने समय को व्यतीत करने में कोई अधिक व्याकुलता नहीं, उनको अब आना चाहिए चारो ओर मुसलमान व्याकुल हैं और अधिक दिनों तक इनकी सहायता करनी चाहिए क्योंकि यह जाति अपनी सहायता करने की स्वीकारकर्ता नहीं रही,

इस व्याकुलता की स्थिति में ईसा अ0 आराम क्यों कर रहे हैं उनको सहायता के लिए आना चाहिए किन्तु बात यह नहीं है, बात वही है जिसको ईश्वर ने बताया है कि ईसा अ0 की मृत्यु हो चुकी और मुसलमानों की बिगड़ी को वह नहीं बना सकते अपितु मुसलमान अपने कर्म और ईश्वर की कृपा से ही बना सकते हैं,

धर्म को प्रभुत्व शाली तो ईश्वर ने अपने अन्तिम नबी के द्वारा ही कर दिया है, धर्म पूर्ण होने का अर्थ तो यही है कि धर्म अधिपति हो गया और कुरआन भी साक्षी है कि यह धर्म प्रभुत्व शाली हो गया भले ही नास्तिक रूष्ट हों,

और यदि देखा जाए तो ईसा अ0 जब दुनिया में नबी थे उस समय को भी महाप्रलय का निकट ही कहा जाएगा क्योंकि मुहम्मद को उनसे अधिक दूरी नहीं है और ईश्वर ने कुरआन में उस समय ही कहा है कि महाप्रलय निकट आ गई तो इस प्रकार भी ईसा अ0 को महाप्रलय के निकट ही कहा जाएगा, हर प्रकार से देखो तो बात वही आएगी कि ईसा अ0 की मृत्यु हो गई महाप्रलय के निकट

ईश्वर ने फिर आयत 61 में नबी के द्वारा एक संदेश दिया है कि वास्तविकता क्या है,

फिर ऐ रसूल! जो दल ज्ञान आने के बाद आपके साथ इस विषय के (अर्थात ईसा के) बारे में झगड़ा करे तो आप कह दीजिएगा कि आओ हम बुलाएँ अपने पुत्रों को और तुम्हारे पुत्रों को अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को अपने नरों को और तुम्हारे नरों को फिर हम (इस प्रसंग में हर पक्षपात से ऊपर उठकर तथ्य के प्रकाश में) स्वतंत्र मनन चिन्तन बात चीत करें (अर्थात ईसा अ0 इंसान हैं या ईश्वर के पुत्र उनको सूली दी गई है या जीवित उठाया गया है या ईश्वर ने उनको मृत्यु देकर उनके शव को लुप्त कर दिया) तो तथ्य वही सामने आएगा जिसको कुरआन ने स्पष्ट किया है इसके बाद भी यदि न माने तो झूठों और झगड़ालुओं पर ईश्वर की अप्रसन्नता की घोषणा करें ऐसे झूठों पर ईश्वर की धिक्कार हो (61)

درجات بلند ہونا جن کو یہود کم کرنا چاہتے تھے اور ان کی نعش کی حفاظت کرنا کافروں کے الزامات سے پاک کرنا تیرے رب کی طرف سے حق ہے بس تم شک کرنے والوں سے نہ ہونا۔

شک لانے والوں میں سے نہ ہو جانا بظاہر خطاب تو محمدؐ سے ہے۔مگر حقیقت میں یہ خطاب نبی کی معرفت انسانوں سے ہے کہ تم کو جو حقیقتیں قرآن کے ذریعہ بتائی جارہی ہیں ان پر یقین کرو عقل سے کام لو اور فرضی کہانیوں سے شک میں مبتلا نہ ہو جانا ۔اس کے باوجود بھی عیسائی عیسیٰؑ کو اللہ کا بیٹا مان رہے ہیں اور ان کو زندہ اٹھا لینا مان رہے ہیں۔مگر مسلمان بھی ان سے کم نہیں ہیں۔انہوں بھی ان کو زندہ تسلیم کر رکھا ہے اور اپنی بگڑی قسمت کو ٹھیک کرنے والا اور دین کو غالب کرنے والا مان رکھا ہے قرب قیامت۔

لیکن سمجھنے کی بات یہ ہے کہ اس وقت آنے میں کیا فائدہ جب تو جلد ہی قیامت آجائے گی وہ وقت زیادہ نہ ہوگا اتنے وقت کو تو گزارنے میں کوئی زیادہ پریشانی نہیں۔ان کو اب آنا چاہیے جب چاروں طرف مسلمان پریشان ہیں اور زیادہ دنوں تک ان کی مدد کرنی چاہیے کیونکہ یہ قوم اپنی مدد آپ کرنے کی قائل نہیں رہی۔

اس پریشانی کی حالت میں عیسیٰؑ آرام کیوں کر رہے ہیں ان کو مدد کے لئے آنا چاہیے لیکن بات یہ نہیں ہے۔بات وہی ہے جس کو اللہ نے بتایا ہے کہ عیسیٰؑ کا انتقال ہو چکا اور مسلمانوں کی بگڑی کو وہ نہیں بنا سکتے بلکہ مسلمان اپنے عمل اور اللہ کے کرم سے ہی بنا سکتے ہیں۔

دین کو غالب تو اللہ نے اپنے آخری نبی کے ذریعہ ہی کر دیا ہے دین مکمل ہونے کا مطلب تو یہی ہے کہ دین غالب ہو گیا اور قرآن بھی شاہد ہے کہ یہ دین غالب ہو گیا بھلے ہی کفار ناراض ہوں۔

اور اگر دیکھا جائے تو عیسیٰؑ جب دنیا میں نبی تھے اس وقت کو بھی قرب قیامت ہی کہا جائے گا کیونکہ محمدؐ کو ان سے زیادہ دوری نہیں ہے اور اللہ نے قرآن میں اس وقت ہی کہا ہے کہ قیامت قریب آگئی تو اس طرح بھی عیسیٰؑ کو قریب قیامت ہی کہا جائے گا ہر طرح سے دیکھو تو بات وہی آئے گی کہ عیسیٰؑ کا انتقال ہو گیا قرب قیامت میں۔

اللہ نے پھر آیت ۶۱ / میں نبی کے ذریعہ ایک پیغام دیا ہے کہ حقیقت کیا ہے۔

پھر اے رسول! جو گروہ علم آنے کے بعد آپ کے ساتھ اس مسئلے کے (یعنی عیسیٰؑ کے) بارے میں جھگڑا کرے تو آپ کہہ دیجئے گا کہ آؤ ہم بلائیں اپنے بیٹوں کو اور تمہارے بیٹوں کو اپنی عورتوں کو اور تمہاری عورتوں کو اپنے مردوں کو اور تمہارے مردوں کو پھر ہم (اس مسئلہ میں ہر تعصب سے اوپر اٹھ کر حقیقت کی روشنی میں) آزادانہ غور و فکر بات چیت کریں (یعنی عیسیٰؑ بشر ہیں یا اللہ کے بیٹے ان کو سولی دی گئی ہے یا زندہ اٹھایا گیا ہے یا اللہ نے ان کو موت دے کر ان کی نعش کو غائب کر دیا) تو حقیقت وہی سامنے آئے گی جس کو قرآن نے ظاہر کیا ہے اس کے بعد بھی اگر نہ مانیں تو جھوٹوں اور جھگڑالوؤں پر اللہ کی بیزاری کا اعلان کریں ایسے جھوٹوں پر اللہ کی لعنت ہو (۶۱)

नोट– जब बात झगड़े में पड़ जाती है तो उसका एक मार्ग यह भी होता है जो आयत से स्पष्ट हो रहा है कि हम अपने आपको अपने नरों को पुत्रों को और स्त्रियों को बुलाएं और तुम भी इसी प्रकार अपने नरों, स्त्रियों और पुत्रों को बुला लो अर्थात बुद्धिमानों को और फिर बैठकर स्वतंत्र रूप से बात करें या एक दूसरे को अपनी स्थिति पर छोड़ दें और किसी प्रसंग में हस्तक्षेप न करें, अपने कार्यक्रम के अनुसार कार्य करते रहें परिणाम स्वयं बता देगा कि कौन झूठा है और उस पर ईश्वर की धिक्कार हो,

कहा जाता है जो लिखा हुआ है कि ईसाईयों का एक आयोग मुहम्मद स0 के पास मदीने आया और उसने ईसा अ0 के बारे में बात की और अपने विश्वास के अनुसार बात की इस पर ईश्वर ने मुहम्मद स0 को इसके बारे में बताया जो आयत 61 में अंकित है और उनसे निश्चित हुआ कि आप लोग आऐं और हम भी आते हैं, परन्तु कहा यह गया है कि मुहम्मद स0 अपने साथ श्रीमान अली व फ़ातमा, हसन और हुसैन र0 को लेकर अपने कमरे से निकले, उधर से ईसाई भी आए किन्तु जब उन लोगों ने इन महापुरुषों को देखा तो उन पर भय छा गया, और आपस में परामर्श किया कि यह लोग ऐसे प्रतीत हो रहे हैं कि यदि यह किसी के लिए अभिशाप कर दें तो वह नष्ट हो जाएगा और यदि इन्होंने हमारे लिए अभिशाप कर दिया तो फिर ईसाई जाति समाप्त हो जाएगी, अतः उन्होंने मुहम्मद स0 से समझौता कर लिया और रक्षा कर देना स्वीकार करके वापस चले गए

आयत में शब्द 'अबनाअना निसाअना व अनफ़ुसाना' बहुवचन है परन्तु मुहम्मद स0 के साथ केवल श्री अली श्रीमति फ़ातमा र0 एक वचन और श्री हसन र0 व श्री हुसैन र0 दो, बहुवचन की परिभाषा में नहीं आते तो क्या उस समय मदीने में केवल यही पांच व्यक्ति ही मुसलमान थे इसलिए मुहम्मद स0 विवशता में अपने साथ उन चार व्यक्तियों को लेकर निकले या मुहम्मद आयत को समझने से अक्षम रहे (ईश्वर की शरण) परन्तु उन दोनों बातों में से कोई भी बात नही थी, मुहम्मद स0 आयत को अच्छी प्रकार समझते थे और उस समय मदीना में बहुत मुसलमान थे आपके परिवार और आपकी पत्नियां इत्यादि बहुत से मुसलमान थे, यदि मुहम्मद स0 एक ध्वनि कर देते तो हजारों व्यक्ति, स्त्री, बच्चे एकत्र हो जाते फिर यह पांच ही क्यों,

इसके पीछे भी एक षड्यंत्र काम कर रहा है वह यह कि एक वर्ग ने यह विख्यात कर रखा है कि मुहम्मद स0 के साथ जो लोग अपने को मुसलमान कहते थे उनमें अधिकांश कपटि थे केवल कुछ लोग मुसलमान थे और इस बात को सत्य सिद्ध करने के लिए इतना लिखा और कुरआन की आयात का भी कुछ स्थान पर अनुवाद किया जिससे भ्रम होता है और इस लिखे को समुदाय ने स्वीकार भी कर लिया है, जैसा कि यह कथा मुबाहिला है, किन्तु यदि ध्यान से देखा जाए कुरआन के प्रकाश और मुहम्मद स0 के व्यवहार और उन लोगों के व्यवहार जिनको वह वर्ग कपटि कहता है तो उनका लिखा मिथ्या सिद्ध होता है और जिनको बुरा कहा जाता है वह आस्तिक सिद्ध होते हैं, किन्तु हमने स्वयं उन दुष्ट व्यक्तियों के लिखे को स्वीकार कर लिया है और ऐसी मिथ्या घटनाओं को उचित मान लिया है,

परन्तु अब यह नही चलेगा, वास्तविकता को स्वीकार करना पड़ेगा, वह यह कि मुहम्मद स0 इन चार व्यक्तियों को लेकर निकले ही नही क्योंकि आयत आगे बता रही है कि वह विमुखता करेंगे क्योंकि वह दुराचारी हैं, यह सुनकर मुहम्मद स0 क्यों निकलते और यदि निकलते तो आयत के अनुसार बहुत से मुसलमान उनके साथ होते,

व्याख्याओं में यह भी लिखा है कि उन ईसाईयों ने इनके प्रकाश युक्त मुखों को देखकर कहा कि यदि यह अभिशाप कर देंगे तो हम समाप्त हो जाएंगे,

विचारणीय बात यह है कि उन लोगों को यह आभास हो गया कि यह लोग बड़े सदाचारी हैं इनका आशीर्वाद और अभिशाप

نوٹ:۔ جب بات جھگڑے میں پڑ جاتی ہے تو اس کا ایک طریقہ یہ بھی ہوتا ہے جو آیت سے ظاہر ہو رہا ہے کہ ہم اپنے آپ کو اپنے مردوں کو بیٹوں کو اور عورتوں کو بلا لیں اور تم بھی اسی طرح اپنے مردوں عورتوں اور بیٹوں کو بلا لو یعنی دانشمندوں کو اور پھر بیٹھ کر آزادانہ بات کر لیں یا ایک دوسرے کو اپنے حال پر چھوڑ دیں اور کسی معاملے میں دخل نہ دیں اپنے پروگراموں کے مطابق کام کرتے رہیں انجام خود بتادے گا کہ کون جھوٹا ہے اور اس پر اللہ کی لعنت ہو.

کہا یہ جاتا ہے جو لکھا ہوا ہے کہ عیسائیوں کا ایک وفد محمدؐ کے پاس مدینہ آیا اور اس نے عیسیٰؑ کے بارے میں بات کی اور اپنے عقیدے کے مطابق بات کی اس پر اللہ نے محمدؐ کو اس کے بارے میں بتایا جو آیت ۶۱/ میں درج ہے اور ان سے طے ہوا کہ آپ لوگ آئیں اور ہم بھی آتے ہیں. مگر کہا یہ گیا ہے کہ محمدؐ اپنے ساتھ حضرت علیؓ و فاطمہ و حسن و حسینؓ کو لے کر اپنے حجرے سے نکلے ادھر سے عیسائی بھی آئے. لیکن جب ان لوگ نے ان حضرات کو دیکھا تو ان پر خوف طاری ہو گیا اور آپس میں مشورہ کیا کہ یہ لوگ ایسے نظر آرہے ہیں کہ اگر یہ کسی کے لئے بد دعا کر دیں گے تو وہ برباد ہو جائے گا. اور اگر انہوں نے ہمارے لئے بد دعا کر دی تو پھر عیسائی قوم ختم ہو جائے گی. اس لئے انہوں نے محمدؐ سے صلح کر لی اور جزیہ دینا قبول کر کے واپس چلے گئے.

آیت میں لفظ [ابناء نا نساء نا وانفسنا] جمع ہیں. لیکن محمدؐ کے ساتھ صرف حضرت علی، فاطمہ، واحد اور حضرت حسن و حسین دو، جمع کی تعریف میں نہیں آتے. تو کیا اس وقت مدینہ میں صرف یہی پانچ افراد مسلمان تھے اس لئے محمدؐ مجبوری میں اپنے ساتھ ان چار نفسوں کو لے کر نکلے یا محمدؐ آیت کو سمجھنے سے قاصر رہے (نعوذ باللہ) مگر ان دونوں باتوں میں سے کوئی بھی بات نہیں تھی محمدؐ آیت کو اچھی طرح سمجھتے تھے اور اس وقت مدینہ میں بہت مسلمان موجود تھے آپ کے خاندان اور آپ کی ازواج وغیرہ بہت سے مسلمان موجود تھے. اگر محمدؐ ایک آواز لگا دیتے تو ہزاروں آدمی عورت بچے جمع ہو جاتے پھر یہ پانچ ہی کیوں.

اس کے پیچھے بھی ایک سازش کام کر رہی ہے وہ یہ کہ ایک طبقہ نے یہ مشہور کر رکھا ہے کہ محمدؐ کے ساتھ جو لوگ اپنے کو مسلمان کہتے تھے ان میں زیادہ تر منافق تھے صرف چند لوگ مسلمان تھے اور اس بات کو صحیح ثابت کرنے کے لئے اتنا لکھا اور قرآن کی آیات کا بھی کچھ جگہ پر ترجمہ کیا جس سے دھوکا ہوتا ہے اور اس لکھے کو قوم نے تسلیم بھی کر لیا ہے. جیسا کہ یہ واقعہ مباہلہ ہے. لیکن اگر غور سے دیکھا جائے قرآن کی روشنی اور محمدؐ کے عمل اور ان لوگوں کے عمل جن کو وہ گروہ منافق کہتا ہے تو ان کا لکھا غلط ثابت ہوتا ہے اور جن کو برا کہا گیا ہے وہ مومن ثابت ہوتے ہیں. لیکن ہم نے خود ان غلط آدمیوں کے لکھے کو تسلیم کر لیا ہے اور ایسے غلط واقعات کو صحیح مان لیا ہے.

مگر اب یہ نہیں چلے گا حقیقت کو تسلیم کرنا پڑے گا. وہ یہ کہ محمد ان چار افراد کو لے کر نکلے ہی نہیں. کیوں کہ آیت آگے بتا رہی ہے کہ وہ روگردانی کریں گے کیوں کہ وہ فاسق ہیں یہ سن کر محمدؐ کیوں نکلتے اور اگر نکلتے تو آیت کے مطابق بہت سے مسلمان ان کے ساتھ ہوتے.

تفاسیر میں یہ بھی لکھا ہے کہ ان عیسائیوں نے ان کے نورانی چہروں کو دیکھ کر کہا کہ اگر یہ بد دعا کر دیں گے تو ہم سب ختم ہو جائیں گے.

غور طلب بات یہ ہے کہ ان لوگوں کو یہ احساس ہو گیا کہ یہ لوگ بڑے

काम करता है तो वह लोग इन सदाचारियों में सम्मिलित क्यों न हो गए दूसरी बात यह कि क्या उन लोगों ने श्राप देना ही सीखा था, आशीर्वाद करना नही या आशीर्वाद करते न थे, उनके लिए आशीर्वाद कर देते जिससे वह लोग मुसलमान हो जाते और सारा झगड़ा ही समाप्त हो जाता.

نیک ہیں ان کی دعا اور بد دعا کام کرتی ہے تو وہ لوگ ان نیک لوگوں میں شامل کیوں نہ ہو گئے دوسری بات یہ کہ کیا ان نیک لوگوں نے بد دعا کرنا ہی سیکھا تھا، دعا کرنا نہیں یا دعا کرتے نہ تھے ان کے لئے دعا کر دیتے جس سے وہ لوگ مسلمان ہو جاتے اور سارا جھگڑا ہی ختم ہو جاتا.

परन्तु यह सब घटना मिथ्या लिखी है मुबाहिला की क्रिया हुई ही नही, न मुहम्मद स0 उसके लिए निकले, हमें अपनी त्रुटि को ठीक कर लेना चाहिए मौलाना मोदूदी साहब ने भी मुबाहिला से इनकार किया है.

مگر یہ سب واقعہ غلط لکھا ہے مباہلہ عمل میں آیا ہی نہیں نہ محمدؐ اس کے لئے نکلے ہمیں اپنی غلطی کو درست کر لینا چاہیے مولانا مودودی صاحب نے بھی مباہلہ سے انکار کیا ہے.

निःसन्देह मसीह के प्रति यही बात सत्य है (कि वह मानव जाति का एक पवित्र ईशदूत था) और सत्य यह है कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य संसार में विद्यमान नहीं, निःसन्देह ईश्वर ही प्रभुत्व वाला और युक्ति वाला है. (62)

بلا شبہ مسیح کے متعلق یہی بات سچ ہے (کہ وہ بنی آدم کا ایک پاکیزہ رسول تھا) اور حقیقت یہ ہے کہ اللہ کے سوا کوئی اللہ کائنات میں موجود نہیں. بلا شبہ اللہ ہی غلبہ والا اور حکمت والا ہے (۶۲)

अतः यदि वह लोग महामना ईसा के प्रति सत्यता और सार्वभौम निरीक्षण के बाद भी विमुखता करते हैं तो ईश्वर अशांति करने वालों से भलीभांति अवगत है. (वास्तव में यह विमुखता कर रहे हैं नही आएंगे) (63)

پس اگر وہ لوگ حضرت عیسیٰ کے متعلق حقائق اور عالمی مشاہدات کے باوجود روگردانی کرتے ہیں تو پھر اللہ فساد کرنے والوں سے پوری طرح باخبر ہے (حقیقت میں وہ روگردانی کر رہے ہیں نہیں آئیں گے) (۶۳)

ऐ रसूल! कह दो कि पुस्तक वालों आओ हम सब एक ऐसे विषय पर सहमत हो जाएं जो हमारे तुम्हारे बीच एकसा है कि हम ईश्वर के अतिरिक्त किसी की आज्ञा पालन न करें और उसके साथ किसी वस्तु को सम्मिलित न ठहराएं और हमारा कतिपय कतिपय को ईश्वर के साथ जीविका देने वाला आवश्यकता का पूर्ण करने वाला संकट मोचन विधान बनाने वाला न बनाए फिर ऐ ईशदूत यदि वह लोग इस सत्यता से विमुख होते हैं तो आप घोषणा कर दें कि तुम साक्षी रहो कि हम ईश्वर के आज्ञाकारी हैं (64)

اے رسول! کہدو کہ اہل کتاب آؤ ہم سب ایک ایسے مسئلہ پر متفق ہو جائیں جو ہمارے اور تمہارے درمیان یکساں ہے کہ ہم اللہ کے سوا کسی کی اطاعت نہ کریں اور اس کے ساتھ کسی چیز کو شریک نہ ٹھہرائیں اور ہمارا بعض بعض کو اللہ کے ساتھ روزی رساں روا حاجت روا اور مشکل کشا قانون ساز نہ ٹھہرائیں. پھر اے رسول! اگر وہ لوگ ان حقائق سے روگردانی کرتے ہیں تو آپ اعلان کر دیں کہ تم گواہ رہو کہ ہم اللہ کے فرمانبردار ہیں (۶۴)

ऐ पुस्तक वालो! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ोगे (यह कह कर कि वह यहूदी थे या ईसाई) यद्यपि तौरात और इनजील निःसन्देह उनके बहुत बाद अवतरित की गई थी तो क्या तुम बुद्धि नही रखते (65)

اے اہل کتاب! تم ابراہیم کے بارے میں کیوں جھگڑو گے (یہ کہہ کر کہ وہ یہودی تھے یا عیسائی) حالانکہ تورات وانجیل یقیناً ان کے بہت بعد نازل کی گئیں تھیں تو کیا تم عقل نہیں رکھتے (۶۵)

तुम वह लोग हो कि जिस वस्तु का तुम्हें ज्ञान है उसमें झगड़ चुके हो फिर तुम इस विषय में जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान नही उसमें क्यों झगड़ते हो और ईश्वर जानता है और तुम नही जानते (66)

تم وہ لوگ ہو کہ جس چیز کا تمہیں علم ہے اس میں جھگڑ چکے ہو پھر تم اس امر میں جس کا تمہیں کچھ علم نہیں اس میں کیوں جھگڑتے ہو اور اللہ جانتا ہے اور تم نہیں جانتے (۶۶)

इब्राहीम न तो यहूदी थे न नसरानी अपितु हर मिथ्या धर्म से मुख मोड़कर सत्य धर्म की ओर झुकने वाले और ईश्वर के पूरे आज्ञाकारी थे और वह अनेकेश्वर वादी न थे (67) {30:31,32}

ابراہیم نہ تو یہود تھے نہ نصرانی بلکہ وہ ہر باطل دین سے منہ موڑ کر دین حق کی طرف جھکنے والے اور اللہ کے پورے فرمانبردار تھے اور وہ شرک کرنے والے نہ تھے (۶۷) [۳۰:۳۱،۳۲]

इब्राहीम से सम्बन्ध रखने का सबसे अधिक अधिकार किसी को पहुंचता है तो उन लोगों को जिन्होंने उसका अनुसरण किया (3:95) और यह नबी और उसके मानने वाले इस सम्बन्ध के अधिक अधिकारी हैं ईश्वर केवल उन्ही का हामी व सहायक है जो धर्म रखते हैं (68) {6:106, 10:15, 46:9, 6:50, 10:109, 33:21, 6:161}

ابراہیم سے نسبت رکھنے کا سب سے زیادہ حق اگر کسی کو پہنچتا ہے تو ان لوگوں کو جنہوں نے اس کی پیروی کی (۳:۹۵) اور اب یہ نبی اور اس کے ماننے والے اس نسبت کے زیادہ حق دار ہیں اللہ صرف انہیں کا حامی و مددگار ہے جو ایمان رکھتے ہیں (۶۸) [۶:۱۰۶، ۱۰:۱۵، ۴۶:۹، ۶:۵۰، ۱۰:۱۰۹، ۳۳:۲۱، ۶:۱۶۱]

पुस्तक वालों में से एक दल चाहता है कि किसी

اہل کتاب میں سے ایک گروہ چاہتا ہے کہ کسی طرح تمہیں

प्रकार तुम्हें सत्य मार्ग से हटा दें यद्यपि वास्तव में अपने सिवा किसी के पथ भ्रष्टता में नहीं डाल सकते परन्तु उन्हें इसकी चेतना नहीं (69) {68:9, 2:15}

راہ راست سے ہٹا دیں حالانکہ درحقیقت وہ اپنے سوا کسی کو گمراہی میں نہیں ڈال سکتے۔ مگر انہیں اس کا شعور نہیں ہے (۶۹) [۲:۱۵،۶۸:۹]

ऐ ग्रन्थधारियों तुम ईश्वर की स्पष्ट स्मृतियों का क्यों इनकार करते हो यद्यपि तुम स्वयं उनके साक्षी हो (70)

اے اہل کتاب تم اللہ کی واضح نشانیوں کا کیوں انکار کرتے ہو حالانکہ تم خود ان کے گواہ ہو (۷۰)

ऐ ग्रन्थधारियों तुम सत्य को मिथ्या में क्यों मिलाते हो और सत्य को क्यों छुपाते हो यद्यपि तुम जानते हो (71)

اے اہل کتاب تم حق کو باطل میں کیوں ملاتے ہو اور حق کو کیوں چھپاتے ہو حالانکہ تم جانتے ہو (۷۱)

पुस्तक वालों का एक दल अपने साथियों को यह कहता है कि मुसलमानों पर जो पुस्तक अवतरित हुई है उस पर दिन के पहले भाग में विश्वास ले आया करो और पिछले भाग में उसका इनकार कर दिया करो ताकि वह आस्तिक भी कुरआन का इनकार करके तुम्हारी ओर लौट आऐं (72)

اہل کتاب کا ایک گروہ اپنے ساتھیوں کو یہ کہتا ہے کہ مومنوں پر جو کتاب نازل ہوئی ہے تم اس پر دن کے پہلے حصہ میں ایمان لے آیا کرو اور پچھلے حصہ میں اس کا انکار کر دیا کرو تاکہ وہ مومن بھی قرآن کا انکار کر کے تمہاری طرف لوٹ آئیں (۷۲)

और अपने धर्म के अनुगामी के अतिरिक्त किसी के स्वीकारकर्ता न होना (ऐ ईशदूत) कह दो कि आदेश तो ईश्वर ही का पथ प्रदर्शन है (और वह यह भी कहते हैं) यह भी (न मानना) कि जो वस्तु तुम को मिली है वैसी किसी और को मिलेगी या यह कि वह तुम्हें ईश्वर के सम्मुख निरुत्तर कर सकें यह भी कह दो कि महत्ता ईश्वर ही के हाथ है वह उसको देता है जो अपने कर्म से चाहते हैं और ईश्वर विस्तार वाला और जानने वाला है (2:102) किन्तु उसका कृपा दया अन्धे की कसौटी नहीं अपितु योग्य को मिलता है (73)

اور اپنے دین کے پیرو کے سوا کسی کے قائل نہ ہونا (اے رسول) کہہ دو کہ ہدایت تو اللہ ہی کی ہدایت ہے (اور وہ یہ بھی کہتے ہیں) یہ بھی (نہ ماننا) کہ جو چیز تم کو ملی ہے ویسی کسی اور کو ملے گی یا یہ کہ وہ تمہیں اللہ کے روبرو قائل و معقول کر سکیں۔ یہ بھی کہہ دو کہ بزرگی اللہ ہی کے ہاتھ ہے وہ اس کو دیتا ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے اور اللہ وسعت والا اور جاننے والا ہے (۲:۱۰۲) لیکن اس کا فضل اندھے کی بکھیر نہیں بلکہ اہل کو ملتا ہے (۷۳)

वह जिसे चाहता है निश्चय नियम के अनुसार अपनी करूणा के लिए चुन लेता है सत्य यह है कि ईश्वर बड़े कृपा दया वाला है (74)

وہ جسے چاہتا ہے قانون مشیت کے مطابق اپنی رحمت کے لئے چن لیتا ہے حقیقت یہ ہے کہ اللہ بہت بڑے فضل والا ہے (۷۴)

पुस्तक वालों में कोई ऐसा है कि यदि उसके विश्वास पर धन का एक ढेर भी दे दो तो तुम्हारा धन तुम्हें चुका देगा और किसी की दशा यह है कि यदि तुम एक दीनार के बारे में भी उस पर भरोसा करो तो वह चुकता न करेगा, परन्तु यह कि तुम उसके सिर पर स्वार हो जाओ उनकी इस नैतिक दशा का कारण यह है कि वह कहते हैं उम्मियों के (बिना ग्रन्थ धारियों के) प्रसंग में हम पर कोई पकड़ नहीं है, और यह बात वह मात्र झूट गढ़कर ईश्वर की ओर सम्बन्धित करते हैं यद्यपि उन्हें ज्ञात है (कि ईश्वर या रसूल ने ऐसी कोई बात नहीं कही) (75) {62:2}

اہل کتاب میں کوئی تو ایسا ہے کہ اگر اس کے اعتماد پر مال و دولت کا ایک ڈھیر بھی دیدو تو تمہارا مال تمہیں ادا کر دے گا اور کسی کا حال یہ ہے کہ اگر تم ایک دینار کے معاملہ میں بھی اس پر بھروسہ کرو تو وہ ادا نہ کرے گا۔ الا یہ کہ تم اس کے سر پر سوار ہو جاؤ ان کی اس اخلاقی حالت کا سبب یہ ہے کہ وہ کہتے ہیں امیوں کے (غیر اہل کتاب لوگوں کے) معاملہ میں ہم پر کوئی مواخذہ نہیں ہے اور یہ بات وہ محض جھوٹ گھڑ کر اللہ کی طرف منسوب کرتے ہیں حالانکہ انہیں معلوم ہے (کہ اللہ یا رسول نے ایسی کوئی بات نہیں فرمائی) (۷۵) [۶۲:۲]

अंत क्यों उनसे प्रतिप्रश्न न होगा? जो भी अपने वचन को पूरा करेगा और बुराई से बचकर रहेगा वह ईश्वर का प्रिय बनेगा, निःसन्देह ईश्वर उन लोगों को पसंद करता है जो उसके नियमों की अवहेलना से बचने वाले हैं (76)

آخر کیوں ان سے باز پرس نہ ہوگی جو بھی اپنے عہد کو پورا کرے گا اور برائی سے بچ کر رہے گا وہ اللہ کا محبوب بنے گا۔ بلاشبہ اللہ ان لوگوں کو پسند کرتا ہے جو اس کے قوانین کی خلاف ورزی سے بچنے والے ہیں (۷۶)

जो लोग ईश्वर के वचन और अपनी शपथों के बदले हीन दुनिया की सामग्री प्राप्त करते हैं निःसन्देह ऐसे लोगों के लिए प्रलोक में प्रसाद का

جو لوگ اللہ کے عہد اور اپنی قسموں کے عوض حقیر متاع دنیوی حاصل کرتے ہیں یقیناً ایسے لوگوں کے لئے آخرت میں نعمت کا کوئی حصہ نہیں ہے۔ اور قیامت

कोई भाग नही है, और प्रलय के दिन न ईश्वर उनसे वार्ता करेगा न उन पर दृष्टि डालेगा और उनके लिए पीड़ा देने वाला दण्ड है (77)
और निःसन्देह उनमें से कतिपय ऐसे है कि वक करते हैं अपनी भाषा को और मिलाते हैं पुस्तक के लेख से, ताकि तुम लोग उसको पुस्तक समझो यद्यपि वह पुस्तक का भाग नही और कहेंगे कि यह ईश्वर के पास से है यद्यपि वह ईश्वर के पास से नही और ईश्वर पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं (78)
किसी मानव के लिए उचित नही कि ईश्वर उसे पुस्तक और आदेश (विधान) व ईशदौत्य प्रदान करे फिर वह लोगों को यह कहे कि तुम ईश्वर को छोड़कर मेरे भक्त बन जाओ (अर्थात मेरा आदेश मानो) अपितु उसके लिए यह उचित है कि वह यह कहेगा कि लोगों ईश्वर वाले बनो, इसलिए कि तुम ईश्वर की पुस्तक का ज्ञान प्राप्त करते हो और उसी पुस्तक की शिक्षा देते हो (79) {6:90, 45:16; 5:17,72से76; 5:116,117; 4:171से174; 2:116; 6:101से103; 9:30,13; 10:66से69; 43:81से89; 51:51;52;43; 68:61, सूरत 109, 112, 7, 64}

کے دن نہ اللہ ان سے کلام کرے گا نہ ان پر نظر ڈالے گا اور ان کے لئے دردناک سزا ہے(۷۷)
اور بے شک ان میں بعض ایسے ہیں کہ کج کرتے ہیں اپنی زبان کو اور ملاتے ہیں کتاب کی عبارت سے تاکہ تم لوگ اس کو کتاب سمجھو حالانکہ وہ کتاب کا حصہ نہیں اور کہیں گے کہ یہ اللہ کے پاس سے ہے حالانکہ وہ اللہ کے پاس سے نہیں اور اللہ پر جھوٹ بولتے ہیں اور وہ جانتے ہیں(۷۸)
کسی بشر کے لئے یہ لائق نہیں کہ اللہ اسے کتاب اور حکم (قانون) و نبوت عطا کرے پھر وہ لوگوں کو یہ کہے کہ تم اللہ کو چھوڑ کر میرے بندے بن جاؤ (یعنی میرا حکم مانو) بلکہ اس کے لئے یہ لائق ہے کہ وہ یہ کہے کہ لوگو! رب والے بنو اس لئے کہ تم اللہ کی کتاب کا علم حاصل کرتے ہو اور اسی کتاب کا درس دیتے ہو(۷۹)
[۶:۹۰، ۴۵:۱۶؛ ۵:۱۷،۷۲تا۷۶؛ ۵:۱۱۶تا۱۱۷؛ ۴:۱۷۱تا۱۷۴؛ ۲:۱۱۶، ۶:۱۰۱تا۱۰۳؛ ۹:۳۰،۳۱؛ ۱۰:۶۶تا۶۹؛ ۴۳:۸۱سے۸۹؛ ۵۱:۵۱؛۵۲؛۴۳؛ ۶۸:۶۱، سورت ۱۰۹، ۱۱۲، ۷، ۶۴]

वह तुम से कदापि यह न कहेगा कि फरिश्तों को रसूल को अपना रब बना लो, क्या यह सम्भव है कि एक नबी तुम्हें नास्तिकता का आदेश दे जबकि तुम मुस्लिम हो (80)
और वह समय वर्णनीय है जब ईश्वर के नियम ने (अपने ईशदूत के द्वारा उनकी उम्मतों से ईसराईल के पुत्रों से) ईशदूतों के लिए वचन लिया कि निःसन्देह मैंने तुम्हें जो पुस्तक व युक्ति प्रदान की है फिर यदि तुम्हारे पास कोई ईशदूत इस पुस्तक की पुष्टि करने वाला आए जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर अवश्य विश्वास लाना, और उसकी सहायता करना और कहा क्या तुम ने प्रण किया और उस पर मेरा वचन स्वीकार किया, अर्थात मेरा दायित्व स्वीकार किया उन्होंने कहा हमने प्रण किया कहा पस तुम शाक्षी रहो कि मैं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूं (81) इस आयत पर विवेचना (5:66,68) पर अंकित है {7:35,3:75, 2:38,39}

وہ تم سے ہرگز یہ نہ کہے گا کہ فرشتوں کو یا رسول کو اپنا رب بنالو. کیا یہ ممکن ہے کہ ایک نبی تمہیں کفر کا حکم دے جب کہ تم مسلم ہو(۸۰)
اور وہ وقت قابل ذکر ہے جب اللہ کے قانون نے (اپنے نبی کے ذریعہ ان کی امتوں سے بنی اسرائیل سے) ان کی امتوں سے اور نبیوں کے لئے عہد لیا کہ بے شک میں نے تمہیں جو کتاب و حکمت عطا کی ہے پھر اگر تمہارے پاس کوئی رسول اس کتاب کی تصدیق کرنے والا آئے جو تمہارے پاس ہے تو تم اس پر ضرور ایمان لانا. اور اس کی مدد کرنا. اور فرمایا کیا تم نے اقرار کیا اور اس پر میرا عہد قبول کیا. یعنی میرا ذمہ قبول کیا. انہوں نے کہا ہم نے اقرار کیا. فرمایا پس تم گواہ رہو کہ میں بھی تمہارے ساتھ گواہ ہوں(۸۱) اس آیت پر بحث [۵:۶۶، ۶۸] پر درج ہے [۷:۳۵، ۳:۷۵، ۲:۳۸، ۳۹]

फिर इस पक्के प्रण के बाद जो लोग विमुख हो जाएँ वही दुराचारी है (82)
क्या ईश्वर के धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म की खोज करते हैं यद्यपि जो भी आकाशों और पृथ्वी में उपस्थित है सब हर्ष और रूष्टता के साथ उसी के आज्ञाकारी है और इस प्रकार हर वस्तु का पग उसी केन्द्र की ओर उठता है हर वस्तु उसी बिन्दु पर चक्कर कर रही है इसी नियमानुसार कार्यरत है (अतः ऐ मानव तू अवज्ञा न कर) (83) {36:83}

پھر اس پختہ عہد کے بعد جو لوگ روگردانی کریں وہی تو فاسق ہیں(۸۲)
کیا اللہ کے دین کے سوا کسی اور دین کی تلاش کرتے ہیں حالانکہ جو بھی آسمانوں اور زمین میں موجود ہیں سب خوشی اور ناخوشی کے ساتھ اسی کے فرمانبردار ہیں اور اس طرح ہر شئے کا قدم اسی مرکز کی طرف اٹھتا ہے. ہر شئے اسی محور کے گرد گردش کر رہی ہے. اسی قانون کے مطابق سرگرم عمل ہے (اس لئے اے انسان تو نافرمانی نہ کر)(۸۳)[۳۶:۸۳]

ऐ ईशदूत कह दो फिर (मैं और मेरे उद्योजक) हम सब ईश्वर पर विश्वास लाए और जो पुस्तक हम पर अवतरित हुई है उस पर विश्वास लाए है और जो पुस्तकें इब्राहीम, इस्माईल पर इस्हाक और

اے رسول! کہدو کہ (میں اور میرے پیروکار) ہم سب اللہ پر ایمان لائے اور جو کتاب ہم پر نازل ہوئی ہے اس پر ایمان لائے ہیں اور جو کتابیں ابراہیم، اسماعیل پر اسحاق،

याकूब पर और याकूब की संतान पर अवतरित हुई थी और जो पुस्तकें मूसा और ईसा को और सब ईशदूतों को उनके ईश्वर की ओर से दी गई थी सब पर विश्वास लाते हैं, हम उन ईशदूतों में से किसी एक में भी अन्तर नही करते हम सब उस ईश्वर ही के आज्ञाकारी हैं, (84)

یعقوب پر اور اولاد یعقوب پر نازل ہوئی تھیں اور جو کتابیں موسیٰ اور عیسیٰ کو اور جملا انبیاء کو ان کے رب کی طرف سے دی گئیں تھیں سب پر ایمان لاتے ہیں ہم ان رسولوں میں سے کسی ایک میں بھی فرق نہیں کرتے ہم سب اس اللہ ہی کے فرمانبردار ہیں (۸۴)

और जो कोई भी इस्लाम के सिवा कोई और धर्म की खोज करेगा, अतः वह उससे कदापि स्वीकार न किया जाएगा और वह परलोक में क्षति पाने वालों में से होगा, (85)

اور جو کوئی بھی اسلام کے سوا کوئی اور دین تلاش کرے گا پس وہ اس سے ہرگز قبول نہ کیا جائے اور وہ آخرت میں خسارہ پانے والوں میں سے ہوگا (۸۵)

ईश्वर उस जाति को किस प्रकार पथ प्रदर्शन पाने वाला मानेगा जिसने विश्वास करने के बाद इनकार कर दिया यद्यपि उन्होंने साक्ष्य दी कि निःसंदेह अरबी ईशदूत सच्चे ईश्दूत हैं, और उनके पास उज्ज्वल चिन्ह भी आ चुके हैं सत्य यह है कि ईश्वर व्यर्थ कार्य करने वालों को पथ प्रदर्शन पाने वाला नही मानता (86)

اللہ اس قوم کو کس طرح ہدایت یافتہ ٹھہرائے جس نے ایمان لانے کے بعد انکار کر دیا۔ حالانکہ انہوں نے گواہی دی کہ بلاشبہ رسول عربی سچے رسول ہیں۔ اور ان کے پاس روشن نشانیاں بھی آچکی ہیں حقیقت یہ ہے کہ اللہ بے ٹھکانہ کام کرنے والوں کو ہدایت یافتہ نہیں ٹھہراتا (۸۶)

उनके अत्याचार का ठीक बदला यही है कि उन पर ईश्वर के फरिश्तों और सब सदाचारियों की धिक्कार हो (87)

ان کے ظلم کا صحیح بدلہ یہی ہے کہ ان پر اللہ اور فرشتوں اور تمام نیک انسانوں کی لعنت ہو (۸۷)

ईसी स्थिति में वह सदैव रहेंगे न उनकी सजा में कोई कमी होगी और न उन्हें छूट दी जाएगी (88)

اسی حالت میں وہ ہمیشہ رہیں گے نہ ان کی سزا میں کمی ہوگی اور نہ انہیں مہلت دی جائے گی (۸۸)

हां वह लोग बच जाएंगे जो इसके बाद पश्चाताप करके अपने कार्य प्रणाली में सुधार कर लें ईश्वर क्षमा करने वाला और दयालु है (89)

ہاں وہ لوگ بچ جائیں گے جو اس کے بعد توبہ کرکے اپنے طرزِ عمل کی اصلاح کرلیں اللہ بخشنے والا اور رحم کرنے والا ہے (۸۹)

परन्तु जिन लोगों ने विश्वास लाने के बाद नास्तिकता स्वीकार की फिर अपने इनकार में बढ़ते चले गए उनकी पश्चाताप कदापि स्वीकार न होगी ऐसे लोग तो पक्के पथ भ्रष्ट हैं (90)

مگر جن لوگوں نے ایمان لانے کے بعد کفر اختیار کیا پھر اپنے کفر میں بڑھتے چلے گئے ان کی توبہ ہرگز قبول نہ ہوگی ایسے لوگ تو پکے گمراہ ہیں (۹۰)

जिन लोगों ने कुफ्र स्वीकार किया और नास्तिकता की दशा में जान दी उनमें से कोई यदि अपने आपको दण्ड से बचाने के लिए पृथ्वी भर का सोना बदले में दे तो स्वीकार न किया जाएगा, ऐसे लोगों के लिए पीड़ा देने वाला दण्ड तैयार है और वह अपना कोई सहायक न पाएंगे (91)

جن لوگوں نے کفر اختیار کیا اور کفر ہی کی حالت میں جان دی ان میں سے کوئی اگر اپنے آپ کو سزا سے بچانے کے لئے روئے زمین بھر کا سونا فدیہ میں دے تو اسے قبول نہ کیا جائے گا۔ ایسے لوگوں کے لئے دردناک سزا تیار ہے اور وہ اپنا کوئی مددگار نہ پائیں گے۔ (۹۱)

पाराह चार (लन तनालू)

پارہ چار (لن تنالو)

(आस्था वालो!) तुम उस समय तक उपकार प्राप्त नही कर सकते जब तक उस वस्तु में से व्यय न करो जिससे तुम प्रेम करते हो और जो कुछ व्यय करोगे ईश्वर भलिभांति जानता है (92)

(ایمان والو!) تم اس وقت تک نیکی حاصل نہیں کرسکتے جب تک اس چیز میں سے خرچ نہ کرو جس سے تم محبت کرتے ہو اور جو کچھ خرچ کروگے اللہ خوب جانتا ہے (۹۲)

खाने की यह सारी वस्तुऐं (जो मुहम्मद स0 के धर्म शास्त्र में वैध हैं) बनी इसराईल के लिए भी वैध थी, निःसन्देह नही वर्जित किया इसराईल ने अपने ऊपर कुछ भी तौरात अवतरित होने से पहले उनसे कहो यदि तुम सच्चे हो तो लाओ तोरात और प्रस्तुत करो उसका कोई लेख (93) {19:58}

<u>کھانے کی یہ ساری چیزیں (جو شریعت محمدؐ میں حلال ہیں) بنی اسرائیل کے لئے بھی حلال تھیں، یقیناً نہیں۔ حرام کیا اسرائیل نے اپنے اوپر کچھ بھی تورات نازل ہونے سے پہلے۔ ان سے کہو اگر تم سچے ہو تو لاؤ تورات اور پیش کرو اس کی کوئی عبارت (۹۳) [۱۹:۵۸، ۶:۵۷، ۱۲:۴۰، ۶۷]</u>

(6:57, 12:40,67) आदेश केवल ईश्वर का है (3:128) वैध और अवैध में रसूल को कोई अधिकार नही,

حکم صرف اللہ کا ہے (۳:۱۲۸) حرام حلال میں رسول کا کوئی حق نہیں۔

समीक्षाः- इस आयत का प्रचलित अनुवाद यह लिखा गया है,

نوٹ:۔ اس آیت کا رائج ترجمہ یہ لکھا گیا ہے۔

सब खाने थे वैध वास्ते बनी इस्राईल के परन्तु जो अवैध किया (याकूब) ने अपनी जान पर पहले इससे कि अवतरित हुई तौरात.

यहूद ने जब यह सुना कि मुहम्मद स० यह कहते हैं कि हमारी पुस्तक कुरआन पहली सब पुस्तकों को प्रमाणित करती है, और वही वस्तुऐं हमारे लिए वैध हैं जो पहली जातियों के लिए वैध थी तो उन्होंने उन वस्तुओं को प्रस्तुत किया जो उन्होंने अवैध कर रखी थी और उनका कहना यह था कि उनको इस्राईल ने अवैध किया था, और जब इस्राईल ने अवैध किया था तो स्पष्ट है उन्होंने ईश्वर के आदेश से ही अवैध किया था, और तुम्हारे यहां यह वैध है, तो फिर आपका यह वाद कैसे मान लें कि तुम्हारे लिए वही वैध है जो पहले वैध थी, तब ईश्वर ने उनके इस कथन का खण्डन किया कि इस्राईल ने कोई वस्तु अवैध नहीं की यह तुम स्वयं ही अवैध करके उन पर आरोप लगा रहे हो, चूंकि तुम हो ही अत्याचारी और झूठे यदि वास्तव में तुम्हारा कथन सच है तो लाओ तौरात और पढ़कर बताओ कि इसमें कहां यह लिखा है कि अमुक जानवर या वस्तु इस्राईल ने अवैध किया था अपने ऊपर, वास्तव में किसी मानव या ईशदूत को यह अधिकार नहीं है कि वह ईश्वर के अवैध को वैध में या वैध को वर्जित में बदल दे वह पृथक बात है कि किसी को कोई खाना अनुकूल न आए परन्तु वह वर्जित नहीं होता और लोग खाते हैं और न ही यह कहा जाएगा कि यह वस्तु अमुक ने वर्जित की है (6:57, 12:40, 3:128, 78:6,7, 11:17,18, 12:31, 10:49, 40:16, 2:131)

(पूर्व वर्णित उपरोक्त विस्तार के बाद कि ईश्वर का विधान बनाने में ईशदूत का कोई भाग नहीं) फिर जो लोग ईश्वर पर झूट बान्धेंगे (कि ईश्वर ने ईशदूतों को वैधानिक अधिकार दे रखे हैं) पस वही अत्याचारी हैं (और जो स्वयं हराम हलाल करेगा वह भी अत्याचारी है (94)

कहो ईश्वर ने जो कुछ कहा है सच कहा है तुम को एकाग्रचित होकर इब्राहीम के पंथ का अनुकरण करना चाहिए और इब्राहीम अनेकेश्वरवाद करने वालों में से न थे (95)

निःसंदेह पहला घर (सर्व प्रथम केन्द्रीय स्थान) जो लोगों (के नाम आदेश आदेश पारित करने और उपासना करने) के लिए बनाया गया था वह मक्काह महान में है अधिकता वाला और संसार भर के लोगों के लिए (शान्ति के 3:97) आदेश पारित करने का केन्द्र बनाया गया है (96)

इसमें स्पष्ट स्मृत्तियां हैं और इब्राहीम का एक स्थान है और जो व्यक्ति भी इस व्यवस्था में प्रविष्ट हुआ वह शान्ति पाने वाला हुआ और जो इस केन्द्र तक पहुंचने की क्षमता (आर्थिक, शारीरिक व मानसिक) पाए उस पर अनिवार्य है संकल्प करना उसकी यात्रा का (ईश्वर के घर का निर्मल ईश्वर के लिए) और जो कोई उसकी केन्द्रीयता का (जाने का) इनकार करेगा (उसकी अपनी ही हानि होगी) ईश्वर लोगों की स्वीकृति और इनकार से लालसा रहित है (97) {22:28}

ऐ ईशदूत! कहो कि ऐ ग्रन्थ वालो तुम ईश्वर की आयतों का क्यों इनकार करते हो (अर्थात व्यवहार ईश्वर की पुस्तक के विरुद्ध क्यों हो गया है जाने रहो कि) जो भी तुम कर्म करते हो ईश्वर उनका स्वयं साक्षी है (98)

ऐ रसूल! पुस्तक वालों से कहो कि तुम उन लोगों को ईश्वर के मार्ग से क्यों रोकते हो जो उस पर

تمام کھانے تھے حلال واسطے بنی اسرائیل کے مگر جو حرام کیا یعقوب نے اپنی جان پر پہلے اس سے کہ نازل ہوئی تورات

یہود نے جب یہ سنا کہ محمدؐ یہ کہتے ہیں کہ ہماری کتاب قرآن پہلی سب کتابوں کی تصدیق کرتی ہے اور وہی چیزیں ہمارے لئے حلال ہیں جو پہلی امتوں کے لئے حلال تھیں تو انہوں نے ان چیزوں کو پیش کیا جو انہوں نے حرام کر رکھی تھیں ۔اوران کا کہنا یہ تھا کہ ان کو اسرائیل نے حرام کیا تھا۔اور جب اسرائیل نے حرام کیا تھا تو ظاہر ہے انہوں نے اللہ کے حکم سے ہی حرام کیا تھا۔اور تمہارے یہاں یہ حلال ہیں۔تو پھر آپ کا یہ دعویٰ کیسے مان لیں کہ تمہارے لئے وہی حلال ہے جو پہلے حلال تھا۔تب اللہ نے ان کے اس قول کی تردید کی کہ اسرائیل نے کوئی چیز حرام نہیں کی یہ تم خود ہی حرام کر کے ان پر الزام لگا رہے ہو۔چونکہ تم ہو ہی ظالم اور جھوٹے۔اگر حقیقت میں تمہارا قول سچ ہے تو لاؤ تورات اور پڑھ کر بتاؤ کہ اس میں کہاں یہ لکھا ہے کہ فلاں جانور یا چیز اسرائیل نے حرام کیا تھا اپنے اوپر۔حقیقت میں کسی فرد یا نبی کو یہ حق نہیں ہے کہ وہ اللہ کے حرام کو حلال میں یا حلال کو حرام میں بدل دے وہ الگ بات ہے کہ کسی کو کوئی کھانا موافق نہ آئے مگر وہ حرام نہیں ہوتا۔ اور لوگ کھاتے ہیں اور نہ ہی یہ کہا جائے گا کہ یہ چیز فلاں نے حرام کی ہے۔ [۶:۵۷،۱۲:۴۰،۳:۱۲۸،۷۸:۶،۷، ۱۱:۱۷،۱۸، ۱۲:۳۱، ۱۰:۴۹، ۴۰:۱۶، ۲:۱۳۱]

(مذکورہ بالا تفصیل کے بعد کہ قانون الٰہی کے بنانے میں انبیاء کا کوئی حصہ نہیں) پھر جو لوگ اللہ پر جھوٹ باندھیں گے (کہ اللہ نے انبیاء کو قانونی اختیار دے رکھے ہیں) پس وہی ظالم ہیں (جو خود حرام حلال کرے گا وہ بھی ظالم ہے)(۹۴)

کہو اللہ نے جو کچھ فرمایا ہے سچ فرمایا ہے تم کو یکسو ہو کر ابراہیم کے طریقے کی پیروی کرنی چاہیے اور ابراہیم شرک کرنے والوں میں سے نہ تھے(۹۵)

بلاشبہ پہلا گھر (اوّلین مرکزی مقام) جو لوگوں کے نام ہدایت نامہ جاری کرنے اور عبادت کرنے) کے لئے بنایا گیا تھا وہ مکہ معظمہ میں ہے برکت والا اور دنیا بھر کے لوگوں کے لئے (امن کے ۳:۹۷) ہدایت نامہ جاری کرنے کا مرکز بنایا گیا ہے(۹۶)

اس میں کھلی نشانیاں ہیں اور ابراہیم کا ایک مقام ہے اور جو شخص بھی اس نظام میں داخل ہوا وہ امن پانے والا ہوا۔اور جو اس مرکز تک پہنچنے کی طاقت (مالی ، جسمانی ، دماغی) پائے اس پر لازم ہے ارادہ کرنا اس کے سفر کا (اللہ کے گھر کا خالص اللہ کے لئے) اور جو کوئی اس کی مرکزیت کا (جانے کا) انکار کرے (اس کا اپنا ہی نقصان ہوگا) اللہ لوگوں کے اقرار وانکار سے بے نیاز ہے(۹۷)[۲۲:۲۸]

اے رسول کہو کہ اے اہل کتاب تم اللہ کی آیتوں کا کیوں انکار کرتے ہو (یعنی عمل کتاب اللہ کے خلاف کیوں ہوگیا ہے جانے رہو کہ) جو بھی تم عمل کرتے ہو اللہ ان کا خود گواہ ہے(۹۸)

اے رسول! اہل کتاب سے کہو کہ تم ان لوگوں کو اللہ کی راہ سے کیوں روکتے ہو جو اس پر ایمان لاتے ہیں تم اس میں

विश्वास लाते हैं, तुम उसमें वक्रता खोजते हो यद्यपि उस पर तुम स्वयं साक्षी हो सत्य यह है कि ईश्वर उन कर्मों से अचेत नहीं है जो तुम करते हो (99) {7:157,158}

کی تلاش کرتے ہو. حالانکہ اس پر تم خود گواہ ہو. حقیقت یہ ہے کہ اللہ ان کاموں سے غافل نہیں جو تم کرتے ہو (۹۹) [۷:۱۵۷،۱۵۸]

आस्था वालो! यदि तुमने उन लोगों में से जिन्हें पुस्तक दी गई थी का अनुकरण किया तो वह तुम्हें विश्वास लाने के बाद नास्तिक बना देंगे (100)

ایمان والو! اگر تم نے ان لوگوں میں سے جنہیں کتاب دی گئی تھی کی اطاعت کی تو وہ تمہیں ایمان لانے کے بعد کافر بنا دیں گے (۱۰۰)

ऐ आस्तिको! तुम किस प्रकार नकार करोगे जबकि तुम वह हो कि तुम पर ईश्वर की आयतें पढ़ी जाती हैं, और तुम्हारे मध्य उसका रसूल उपस्थित है सत्य यह है कि जो ईश्वर (अर्थात् ईश्वर की पुस्तक 3:103) को दृढ़ता से पकड़ेगा पस वह निःसन्देह सीधे मार्ग की ओर चला दिया गया (101) {3:31,32, 14:1, 6:104, 4:170,174}

ایمان والو! تم کس طرح انکار کروگے جب کہ تم وہ ہو کہ تم پر اللہ کی آیتیں پڑھی جاتی ہیں اور تمہارے درمیان اس کا رسول موجود ہے حقیقت یہ ہے کہ جو اللہ (یعنی اللہ کی کتاب ۳:۱۰۳) کو مضبوط پکڑے گا بس وہ بلاشبہ سیدھی راہ کی طرف چلا دیا گیا (۱۰۱) [۳:۳۱،۳۲، ۱۴:۱، ۶:۱۰۴، ۴:۱۷۰،۱۷۴]

ऐ आस्तिकों! ईश्वर की अवज्ञा से बचते रहो जैसा कि उसकी अवज्ञा से बचने का नोदन है और देखो तुम्हें इस्लाम की स्थिति में मृत्यु आए (102) {2:130,141, 19:12}

اے ایمان والو! اللہ کی نافرمانی سے بچتے رہو جیسا کہ اس کی نافرمانی سے بچنے کا حق ہے اور دیکھو تمہیں اسلام کی حالت میں موت آئے (۱۰۲) [۲:۱۳۰،۱۴۱، ۱۹:۱۲]

और (आस्तिकों) ईश्वर की पुस्तक को सब मिलकर दृढ़ता से थामे रहो, और आपस में पृथकता करके वर्ग वर्ग न हो जाना, और ईश्वर की दया को याद करो जो तुम पर की गई है (एक समय वह था) जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे फिर ईश्वर ने तुम्हारे मनों में प्रेम डाल दिया फिर तुम ईश्वर की कृपा से भाई भाई बन गए (तुम्हारी दशा यह थी कि) तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे फिर उसने तुम्हें आग (अर्थात आपस के युद्ध व द्वेष दुनिया में और इस पाप के दण्ड में नर्क से प्रलोक में) से बचा लिया, ईश्वर इस प्रकार तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट वर्णन करता है ताकि तुम पथ प्रदर्शन पाते रहो, (103) {6:65,160,30:31,32,11:56,16:9}

اور ایمان والو! اللہ کی کتاب کو سب مل کر مضبوطی کے ساتھ تھامے رہو. اور آپس میں افتراق کر کے فرقے فرقے نہ ہو جانا اور اللہ کی نعمت کو یاد کرو جو تم پر کی گئی ہے (ایک وقت وہ تھا) جب تم ایک دوسرے کے دشمن تھے پھر اللہ نے تمہارے دلوں میں الفت ڈال دی پھر تم اللہ کی مہربانی کے ساتھ بھائی بھائی بن گئے (تمہاری حالت یہ تھی کہ) تم آگ کے گڑھے کے کنارے پر تھے پھر اس نے تمہیں آگ (یعنی باہمی جنگ و عداوت دنیا میں اور اس جرم کی سزا میں دوزخ سے آخرت میں) سے بچا لیا. اللہ اسی طرح تمہارے لئے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتا ہے تا کہ تم ہدایت پاتے رہو (۱۰۳) [۶:۶۵،۱۶۰، ۳۰:۳۱،۳۲، ۱۱:۵۶، ۱۶:۹]

और इस अच्छी ऐकता में तुम में एक ऐसा दल होना चाहिए जो लोगो को सत्कर्म की ओर बूलाए और अच्छे कर्म का अदेश करें और अनुचित से रोके और ऐसे ही लोग सफलता पाने वाले हैं. (104) {3:19, 2:141,22:78,23:1}

(اور اس اچھی وحدت میں) تم میں ایک ایسی جماعت ہونی چاہیے جو لوگوں کو نیکی کی طرف بلائے اور اچھے کام کا حکم کرے اور منکر سے منع کرے اور ایسے ہی لوگ فلاح پانے والے ہیں (۱۰۴) [۳:۱۹، ۲:۱۴۱، ۲۲:۷۸، ۲۳:۱]

और उन लोगो की भांति न हो जाना जो पृथक हो गए (विभिन्न दल) और आपस में विरोधी बन गए बाद इस के कि उन के पास स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे और उन लोगो के लिए बड़ा दण्ड है. (105) {6:159,30:32-33

اور ان لوگوں کی طرح نہ ہو جانا جو الگ الگ ہو گئے (مختلف فرقے) اور باہم مخالف بن گئے بعد اس کے کہ ان کے پاس واضح دلیلیں آچکی تھیں اور ان لوگوں کے لئے بڑی سزا ہے (۱۰۵) [۶:۱۵۹، ۳۰:۳۲،۳۳]

जिस दिन कुछ लोगो के मुख सफेद होंगे (उन के अच्छे कर्मों के कारण) और कुछ लोगो के मुख काले होंगे (उन के बुरे कर्मों के कारण) जिस का मुख काला होगा (उन से कहा जाएगा कि) धार्म का प्रसाद पाने के बाद भी तुम ने नास्तिकता की गति विधि स्वीकार की? अच्छा तो अब उस कृपा के इनकार के बदले में दण्ड का स्वाद चखो. (106)

جس دن کچھ لوگوں کے چہرے سفید ہوں گے (ان کے اچھے عملوں کی وجہ سے) اور کچھ لوگوں کا منہ کالا ہوگا (ان کے بُرے عملوں کی وجہ سے) جس کا منہ کالا ہوگا (ان سے کہا جائے گا کہ) نعمت ایمان پانے کے بعد بھی تم نے کافرانہ رویہ اختیار کیا؟ اچھا اس کفران نعمت کے صلہ میں عذاب کا مزا چکھو (۱۰۶)

रहे वह लोग जिन के मुख उज्ज्वल होंगे उन को ईश्वर की कृपा में स्थान मिलेगा और सदैव वह

رہے وہ لوگ جن کے چہرے روشن ہوں گے ان کو اللہ کی رحمت

उसी स्थिति में रहेंगे. (107)
यह ईश्वर की आयते हैं जो हम तुम्हें सच्चाई के साथ सुना रहे हैं ईश्वर संसार वालो पर अत्याचार नही चाहता. (108)
और जो कुछ आकाशो में और जो कुछ पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है और सब कार्यो का प्रत्यागमन ईश्वर ही की ओर है. (109)
तुम सर्वोत्तम दलों में से हो निकाले गए लोगो के लिए, शुभ कर्म करने को कहते हो और बुरे कार्यो से रोकते हो और ईश्वर पर आस्था रखते हो और यदि पुस्तक धारि भी आस्था ले आते तो उनके लिए अच्छा होता उन में आस्था लाने वाले भी हैं (किन्तु थोड़े) और अधिकांश अवज्ञाकारी है. (110)
और यह तुम्हें थोड़ी सी पीड़ा के सिवा कुछ हानी नही पहुंचा सकते और यदि तुम से लड़ेंगे तो पीठ फैर कर भाग जाएंगे फिर उन को सहायता भी नही मिलेगी. (111)
वह जहां भी पाऐं जाऐं हीनता उनसे चिमट रही है और यदि कही ईश्वर और इन्सानों की शरण मिल गई तो और बात है और वह लोग ईश्वर के प्रकोप में बन्दी हैं और दरिद्रता उन पर छा गई है. यह इसलिए कि ईश्वर की आयतों का इनकार करते थे और उसके ईशदूतों से अकारण लड़ते थे. और यह स्थिति इसलिए उत्पन्न हुई कि ईश्वर की अवज्ञा और उद्दण्डता में सीमा से आगे बढ़ गए थे (112)
वह भी सब एक जैसे नही है उन पुस्तक वालों में कुछ लोग (ईश्वर के आदेश पर) स्थापित भी है. जो रात्रि के समय ईश्वर की आयतें पढ़ते हैं और सजदा करते हैं (113)

میں جگہ ملے گی اور ہمیشہ وہ اسی حالت میں رہیں گے (۱۰۷)
یہ اللہ کی آیتیں ہیں جو ہم تمہیں سچائی کے ساتھ سنا رہے ہیں اللہ اہل عالم پر ظلم کرنا نہیں چاہتا (۱۰۸)
اور جو کچھ آسمانوں میں اور جو کچھ زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے اور سب کاموں کا رجوع اللہ ہی کی طرف ہے (۱۰۹)
تم بہترین امتوں میں سے ہو نکالی گئی واسطے لوگوں کے. نیک کام کرنے کو کہتے ہو اور برے کاموں سے منع کرتے ہو اور اللہ پر ایمان رکھتے ہو. اور اگر اہل کتاب بھی ایمان لے آتے تو ان کے لئے اچھا ہوتا. ان میں ایمان لانے والے بھی ہیں (لیکن تھوڑے) اور اکثر نافرمان ہیں (۱۱۰)
اور یہ تمہیں تھوڑی سی تکلیف کے سوا کچھ نقصان نہیں پہنچا سکتے اور اگر تم سے لڑیں گے تو پیٹھ پھیر کر بھاگ جائیں گے. پھر ان کو مدد بھی نہیں ملے گی (۱۱۱)
وہ جہاں بھی پائے جائیں ذلت ان سے چمٹ رہی ہے اور اگر کہیں اللہ اور انسانوں کی پناہ مل گئی تو اور بات ہے اور وہ لوگ اللہ کے غضب میں گرفتار ہیں اور ناداری ان پر چھائی ہے یہ اس لئے کہ اللہ کی آیتوں کا انکار کرتے تھے اور اس کے رسولوں سے ناحق جھگڑا کرتے تھے اور یہ حالت اس لئے پیدا ہوئی کہ اللہ کی نافرمانی اور سرکشی میں حد سے آگے بڑھ گئے تھے (۱۱۲)
وہ بھی سب ایک جیسے نہیں ہیں ان اہل کتاب میں کچھ لوگ (اللہ کے حکم پر) قائم بھی ہیں جو رات کے وقت اللہ کی آیتیں پڑھتے ہیں اور سجدے کرتے ہیں (۱۱۳)

नोट- यह आयत उस समय के पुस्तक वालों की दशा की सूचना दे रही है उन पुस्तक वालों की जो कुरआन को सुनकर कुरआन और मुहम्मद स0 पर विश्वास ले आते थे जिसकी सूचना दूसरी आयतों में भी है. {4:159, 3:199, 5:83से85, 42:13,41, 26:196, 28:52,53}

نوٹ :۔ یہ آیت اس وقت کے اہل کتاب کے حال کی خبر دے رہی ہے ان اہل کتاب کی جو قرآن کو سن کر قرآن اور محمدؐ پر ایمان لے آتے تھے جس کی خبر دوسری آیتوں میں بھی ہے [۴:۱۵۹، ۳:۱۹۹، ۵:۸۳ تا ۸۵، ۴۲:۱۳:۴۱، ۲۶:۱۹۶، ۲۸:۵۲،۵۳]

(वह अहले किताब) ईश्वर पर और प्रलय पर विश्वास रखते है और अच्छे कार्य करने को कहते हैं और बुरी बातों से रोकेंगे और सत्कर्म पर दोड़ेंगे और वही सदाचारी है (114)
और वह जिस प्रकार के सत्कर्म करेंगे उसकी उपेक्षा न की जाएगी और ईश्वर सदाचारियों को भलिभाति जानता है (115)
जो लोग नास्तिक है उनके धन और संतान ईश्वर की यातना को कदापि नही टाल सकेंगे और वह लोग नर्क वाले है कि सदैव उसी में रहेंगे (116)
ऐसे अत्याचारी लोगों के व्यय की उपमा इस संसार के जीवन में ऐसी है वह इस प्रकार नष्ट हो जाता है उसको इस उपमा से जानो जैसे एक वायु चले

(وہ اہل کتاب) اللہ پر اور روز آخرت پر ایمان رکھتے ہیں اور اچھے کام کرنے کو کہتے ہیں اور بری باتوں سے منع کریں گے اور نیکیوں پر لپکیں گے اور وہی لوگ نیکوکار ہیں (۱۱۴)
اور وہ جس طرح کی نیکی کریں گے اس کی ناقدری نہیں کی جائے گی اور اللہ پرہیزگاروں کو خوب جانتا ہے (۱۱۵)
جو لوگ کافر ہیں ان کے مال اور اولاد اللہ کے عذاب کو ہرگز نہیں ٹال سکیں گے اور وہ لوگ اہل دوزخ ہیں کہ ہمیشہ اسی میں رہیں گے (۱۱۶)
ایسے ظالم لوگوں کے خرچ کی مثال اس دنیا کی زندگی میں ایسی ہے وہ اس طرح برباد ہو جاتا ہے اس کو اس مثال سے

जिसमें पाला हो वह खेती को नष्ट कर देती है वहां कुछ नही रहता ऐसे ही ईश्वर का नियम वायु की भांति उन लोगों के कर्मों को नष्ट कर देता है जो जाति अपने ऊपर अत्याचार करती है और ईश्वर अपनी ओर से किसी पर अन्याय नही करता, परन्तु लोग स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार कर रहे है (117)

جانو جیسے ایک ہوا چلے جس میں پالا ہو وہ کھیتی کو برباد کر دیتی ہے وہاں کچھ نہیں رہتا۔ ایسے ہی اللہ کا قانون ہوا کی طرح ان لوگوں کے عملوں کو برباد کر دیتا ہے جو قوم اپنے اوپر ظلم کرتی ہے اور اللہ اپنی طرف سے کسی پر ظلم نہیں کرتا لیکن لوگ خود ہی اپنے اوپر ظلم کر رہے ہیں (۱۱۷)

मुसलमानों अपने साथियों के अतिरिक्त अपने विरोधियों को अपना भेदी न बनाओ, वह तुम्हारे विरुद्ध उपद्रव करने में कोई कसर नही उठा रखते, वह उसी वस्तु को पसन्द करते है जिससे तुम्हें हानि पहुंचे उनकी शत्रुता तो उनकी भाषा से स्पष्ट हो रही है और जो कुछ उनके मन में निहित है वह उससे भी बढ़कर है, हमने तुम पर सारे लक्षण स्पष्ट कर दिए है यदि तुम बुद्धि से काम लो (118)

مسلمانوں اپنے ساتھیوں کے علاوہ اپنے مخالفوں کو اپنا ہم راز نہ بناؤ۔ وہ تمہارے خلاف فتنہ کرنے میں کوئی کسر نہیں اٹھا رکھتے۔ وہ اسی چیز کو پسند کرتے ہیں جس سے تمہیں نقصان پہنچے ان کی دشمنی تو ان کی زبانوں سے ظاہر ہو رہی ہے اور جو کچھ ان کے سینوں میں چھپا ہے وہ اس سے بھی بڑھ کر ہے ہم نے تم پر ساری نشانیاں ظاہر کر دی ہیں اگر تم عقل سے کام لو (۱۱۸)

देखो तुम ऐसे शुद्ध मन आदमी हो कि उन लोगों का भला चाहते हो यद्यपि वह तुम से मैत्री नही रखते और तुम सब पुस्तकों पर विश्वास रखते हो (और वह तुम्हारी पुस्तक को नही मानते) और जब तुमसे मिलते है तो कहते है हम विश्वास ले आए है और जब अलग होते है तो तुम पर क्रोध के कारण उंगलियां काट काट खाते है (कह दो) क्रोध में मर जाओ ईश्वर तुम्हारे हृदय की बातों का भलि भांति ज्ञाता है (119)

دیکھو تم ایسے صاف دل آدمی ہو کہ ان لوگوں کا بھلا چاہتے ہو حالانکہ وہ تم سے دوستی نہیں رکھتے اور تم سب کتابوں پر ایمان رکھتے ہو (اور وہ تمہاری ان کتاب کو نہیں مانتے) اور جب تم سے ملتے ہیں تو کہتے ہیں ہم ایمان لے آئے ہیں اور جب الگ ہوتے ہیں تو تم پر غصہ کے سبب انگلیاں کاٹ کاٹ کھاتے ہیں (کہدو) غصے میں مرجاؤ۔ اللہ تمہارے دلوں کی باتوں سے خوب واقف ہے (۱۱۹)

यदि तुम्हें किसी प्रकार की भलाई पहुंचेगी तो उन्हें बुरा लगेगा और यदि किसी प्रकार की बुराई पहुंच जाए तो प्रसन्न हो जाऐंगे यदि तुम धैर्य से काम लोगे और ईश्वर से डरते रहोगे तो उनके छल कपट से तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा वह ईश्वर की पकड़ से बाहर नही निकल सकते (120)

اگر تمہیں کسی طرح کی بھلائی پہنچے گی تو انہیں بُرا لگے گا اور اگر کسی طرح کی بُرائی پہنچ جائے تو خوش ہو جائیں گے۔ اگر تم صبر سے کام لو گے اور اللہ سے ڈرتے رہو گے تو ان کے مکروفریب سے تمہارا کچھ نہ بگڑے گا وہ اللہ کی پکڑ سے باہر نہیں نکل سکتے (۱۲۰)

और जब तुम प्रभात को अपने घर से चलित होकरआस्तिकों को युद्ध के लिए मोर्चों पर बैठा रहे थे और ईश्वर सब कुछ सुनता और जानता है (121)

اور جب تم صبح کو اپنے گھر سے روانہ ہو کر ایمان والوں کو لڑائی کے لئے مورچوں پر بٹھا رہے تھے اور اللہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے (۱۲۱)

(हो सकता था स्थिति को देखकर कि) तुम्हारे दो दल साहस छोड़ देते (परन्तु उन्होंने ऐसा नही किया) क्योंकि ईश्वर उनका सहायक है और आस्तिकों को ईश्वर पर ही विश्वास करना चाहिए (122) {6:127, 22:40}

(ہوسکتا تھا حالات کو دیکھ کر کہ) تمہاری دو جماعتیں ہمت ہار دیتیں (مگر انہوں نے ایسا نہ کیا) کیوں کہ اللہ ان کا مددگار ہے اور مومنوں کو اللہ پر ہی بھروسہ کرنا چاہیے (۱۲۲)

[۶:۱۲۷،۲۲:۴۰]

और (याद करो कि) ईश्वर ने बदर के युद्ध में भी तुम्हारी सहायता की थी (धैर्य वानता के कारण) और तुम उस समय निर्बल थे, अतः ईश्वर के विधान से डरो ताकि तुम आज्ञाकारी करो (123)

اور (یاد کرو کہ) اللہ نے جنگ بدر میں بھی تمہاری مدد کی تھی (ثابت قدمی کی وجہ سے) اور تم اس وقت کمزور تھے پس اللہ کے قانون سے ڈرو تاکہ تم فرمانبرداری کرو (۱۲۳)

(ताकि यह आज्ञाकारी तुम को सफल कर दे) और वह समय भी याद करो जब तुम आस्तिकों से कह रहे थे क्या तुम्हारे लिए यह बात प्रयाप्त नही है कि ईश्वर तीन हजार फरिशते अवतरित करके तुम्हारी सहायता करे (124) {3:148,150}

(تاکہ یہ فرمانبرداری تم کو کامیاب کرے) اور وہ وقت بھی یاد کرو جب تم مسلمانوں سے کہہ رہے تھے کیا تمہارے لئے یہ بات کافی نہیں ہے کہ اللہ تین ہزار فرشتے نازل کر کے تمہاری مدد فرمائے؟ (۱۲۴) [۳:۱۴۸،۱۵۰]

हां, यदि तुम हृदय को सुदृढ़ रखो और ईश्वर के

ہاں اگر تم دل کو مضبوط رکھو اور اللہ کے قانون کی مخالفت

नियम के विरोध से बचो और बचाओ का सब युद्ध का सामान पूरा रखो और नास्तिक तुम पर आवेश के साथ अकस्मात धावा कर दे और तुम उसका उत्तर पूरी दृढ़ता से दो तो ईश्वर पांच हजार फरिश्तों से जिन पर चिन्ह होंगे तुम्हारी सहायता को भेजेगा (125)

سے بچو اور بچاؤ کے سب جنگی سامان پورے رکھو اور کافر تم پر جوش کے ساتھ دفعتہً حملہ کر دیں اور تم اس کا جواب پوری استقامت سے دو تو پروردگار پانچ ہزار فرشتے جن پر نشان ہوں گے تمہاری مدد کو بھیجے گا (۱۲۵)

(यह सहायता की मंगल सूचना एक मुहावरा है इसको ऐसे मानों कि जो दल ईश्वर के विधान के अनुसार पूरे सामान और साहस के साथ कार्य करता है वह ईश्वर के भरोसे से हर ऐसा कार्य कर जाते है मानो उसके साथ ईश्वर के फरिश्ते कार्य कर रहे है और ऐसे ही ईश्वर ने कहा है कि यदि तुम साहस और धैर्य से कार्य करोगे तो मानो तुम्हारे साथ मेरे फरिश्ते है यद्यपि वह कार्य तुम ही करोगे) और यह सहायता का वचन तो ईश्वर ने तुम्हारे लिए (माध्यम) मंगल सूचना बनाया अर्थात इसलिए कि तुम्हारे मनों में संतोष हो अन्यथा सहायता तो ईश्वर की ही है जो प्रभुत्वशाली बुद्धि वाला है (126) {6:127, 8:10, 22:40}

(یہ مدد کی بشارت ایک محاورہ ہے اس کو ایسا مانو کہ جو جماعت اللہ کے قانون کے مطابق پورے سامان اور ہمت کے ساتھ کام کرتی ہے وہ اللہ کے بھروسے پر ایسا کام کر جاتے ہیں گویا ان کے ساتھ اللہ کے فرشتے کام کر رہے ہیں اور ایسے ہی اللہ نے کہا ہے کہ اگر تم ہمت اور صبر سے کام لو گے تو گویا تمہارے ساتھ میرے فرشتے ہیں حالانکہ وہ کام تم ہی کرو گے) اور یہ مدد کا وعدہ تو اللہ نے تمہارے لئے (ذریعہ) بشارت بنایا یعنی اس لئے کہ تمہارے دلوں کو تسلی ہو ورنہ مدد تو اللہ کی ہی ہے جو غالب حکمت والا ہے (۱۲۶) [۶:۱۲۷، ۸:۱۰، ۲۲:۴۰]

नोट- यदि ओहद के युद्ध में मुसलमानों के साथ पांच हजार फरिश्ते लड़े थे क्रियात्मक शैली से तो क्या कारण है कि नास्तिक सत्तर ही वध हुए? नास्तिकों की पूरी सेना को समाप्त करने के लिए पांच हजार तो दूर एक फरिश्ता ही वध कर देता, और फिर जब फरिश्ते उनको वध कर रहे थे तो क्यों मुसलमानों ने साहस छोड़ दिया? और यहां तक कि मुहम्मद स0 भी ज़ख़्मी हो गए और मुसलमानों ने युद्ध का क्षेत्र छोड़ दिया? वह इसलिए हुआ कि ईश्वर की सहायता नियमानुसार कार्य करने पर आती है और ऐसी है जैसे ईश्वर के फरिश्ते ही वह कार्य कर रहे है (41:30से32, 8:11,12, 9:25,26, 33:9से11, 48:4से7, 2:249) छोटा दल बड़े दल पर अधिपति आता है, इन आयात को देखकर निर्णय करें कि क्या वास्तव में फरिश्ते आए थे, और देखिए ईश्वर कहता है कि यदि तुम्हारे दस व्यक्ति धैर्यवान रहेंगे तो वह सौ पर अधिपती प्राप्त कर लेंगे, तो वास्तविकता यह सामने आती है कि धैर्य दृढ़ पग, ईश्वर पर भरोसा और उसके नियमानुसार तैयारी करना सफलता है और सफलता ऐसे मिलती है मानो वह कार्य फरिश्तों ने किया है ईश्वर के आदेश से तो आज्ञाकारों के साथ ईश्वर है अपनी सैना के साथ,

نوٹ:۔ اگر احد کی جنگ میں مسلمانوں کے ساتھ پانچ ہزار فرشتے لڑے تھے عملی طریقے سے تو کیا وجہ ہے کہ کفار صرف ستر ہی قتل ہوئے؟ کفار کی پوری تعداد کو ختم کرنے کے لئے پانچ ہزار تو دور ایک فرشتہ ہی قتل کر دیتا۔ اور پھر جب فرشتے ان کو قتل کر رہے تھے تو کیوں مسلمانوں نے ہمت ہار دی تھی؟ اور یہاں تک کہ محمد بھی زخمی ہو گئے اور مسلمانوں نے میدان جنگ چھوڑ دیا؟ یہ اس لئے ہوا کہ اللہ کی مدد قانون کے مطابق کام کرنے پر آتی ہے اور ایسی ہے جیسے اللہ کے فرشتے ہی وہ کام کر رہے ہیں [۴۱:۳۰ تا ۳۲، ۸:۱۱،۱۲، ۹:۲۵،۲۶، ۳۳:۹ تا ۱۱، ۴۸:۴ تا ۷، ۲:۲۴۹] چھوٹی جماعت بڑی جماعت پر غالب آتی ہے ان آیات کو دیکھ کر فیصلہ کریں کہ کیا حقیقت میں فرشتے آئے تھے۔ اور دیکھئے اللہ فرماتا ہے کہ اگر تمہارے دس آدمی ثابت قدم رہیں گے تو وہ سو پر غالب آ جائیں گے۔ تو حقیقت سامنے یہ آتی ہے کہ صبر، ثابت قدمی، اللہ پر بھروسہ اور اس کے قانون کے مطابق تیاری کرنا کامیابی ہے اور وہ کامیابی ایسے ملتی ہے گویا وہ کام فرشتوں نے کیا ہے اللہ کے حکم سے تو فرمانبرداروں کے ساتھ اللہ ہے اپنے لشکر کے ساتھ۔

(यह मंगल सूचना और प्रोत्साहन इसलिए है कि धर्म योद्धाओं के हाथों) ईश्वर युद्ध के क्षेत्र में एक ओर के नास्तिकों में से वध कर दे और निर्बल कर दे फिर वह सब पराजय होकर वापस लौट जाएं असफल होकर (127)

(یہ خوشخبری اور حوصلہ افزائی اس لئے ہے کہ مجاہدوں کے ہاتھوں) اللہ میدان جنگ میں ایک طرف کے کافروں میں سے ہلاک کر دے اور کمزور کر دے پھر وہ سب شکست کھا کر واپس لوٹ جائیں نامراد ہو کر (۱۲۷)

(ऐ ईशदूत) इस कार्य में (अर्थात क्षमा और दण्ड में) तुम्हारा कुछ अधिकार नही (अब दो स्थिति है) या ईश्वर उनकी दशा पर कृपा करे (यदि वह पश्चाताप करके सदाचारी बन जाएं) या उन्हें दण्ड दे कि वह अत्याचारी लोग है (128) {6:95, 6:70से72, 29: 12,13, 30:12,13, 26:22से25, 39:43से46, 40:18से20, 53:26से28, 2:165से167, 21:7से8, 21:34से36, 27:80, 35:19से22}

(اے رسول) اس کام میں (یعنی معافی اور سزا میں) تمہارا کچھ اختیار نہیں (اب دو صورتیں ہیں) یا اللہ ان کے حال پر مہربانی کرے (اگر وہ توبہ کر کے نیک بن جائیں) یا انہیں عذاب دے کہ وہ ظالم لوگ ہیں (۱۲۸) [۶:۹۵، ۶:۷۰ تا ۷۲، ۲۹:۱۲،۱۳، ۳۰:۱۲،۱۳، ۲۶:۲۲ تا ۲۵، ۳۹:۴۳ تا ۴۶، ۴۰:۱۸ تا ۲۰، ۵۳:۲۶ تا ۲۸، ۲:۱۶۵ تا ۱۶۷، ۲۱:۷ تا ۸، ۲۱:۳۴ تا ۳۶، ۲۷:۸۰، ۳۵:۱۹ تا ۲۲]

वास्ते ईश्वर ही के है आकाशों और पृथ्वी में, आदेश उसी का है (6:57, 12:40) और वह उसे क्षमा करता है जो अपने कर्म से चाहता है और ईश्वर उसे दण्ड देता है जो अपने कर्म से चाहता है और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (129) {2:284}

واسطے اللہ ہی کے ہے آسمانوں اور زمین میں حکم اس کا ہے (۶:۵۷، ۱۲:۴۰) اور وہ اسے معاف کرتا ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے اور اسے عذاب دیتا ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے اور اللہ بخشنے والا مہربان (۱۲۹) [۲:۲۸۴]

ऐ आस्था वालो! यह बढ़ता चढ़ता सूद न खाओ और ईश्वर से डरो कि मोक्ष प्राप्त करो (130) {2:275,281, 30:39}

اے ایمان والو! یہ بڑھتا چڑھتا سود نہ کھاؤ اور اللہ سے ڈرو کہ نجات حاصل کرو (۱۳۰) [۲:۲۷۵، ۲۸۱، ۳۰:۳۹]

और नर्क की अग्नि से बचो जो विरोधियों के लिए तैयार की गई है (131) {2:276}

اور دوزخ کی آگ سے بچو جو منکروں کے لئے تیار کی گئی ہے (۱۳۱) [۲:۲۷۶]

और ईश्वर और उसके ईशदूत की आज्ञापलन करो ताकि तुम पर दया की जाए (132) अनुकरण की बहस (3:31) पर देखो और अपने स्वामी की क्षमा और स्वर्ग की ओर दौड़ो (अर्थात पूरी शक्ति के साथ अच्छे कर्म करो) उस स्वर्ग की ओर जो स्पष्ट है जैसे आकाश और पृथ्वी स्पष्ट है और जो डरने वालो के लिये तैयार है (133)

اور اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرو تا کہ تم پر رحم کیا جائے (۱۳۲) اطاعت کی بحث (۳:۳۱) پر دیکھو۔ اور اپنے پروردگار کی بخشش اور جنت کی طرف دوڑو (یعنی پوری قوت کے ساتھ اچھے کام کرو) اس جنت کی طرف جو نمایا ہے جیسے آسمان اور زمین ظاہر ہیں اور جو ڈرنے والوں کے لئے تیار ہے (۱۳۳)

(स्वर्ग उन लोगों के लिए तैयार है) जो सुख और संकीर्णता में (अपना धन ईश्वर के मार्ग में) व्यय करते है और क्रोध को रोकते है और लोगों के अपराध क्षमा करते है और सदाचारियों को ईश्वर मित्र रखता है (134) {41:34, 6:54}

(جنت ان لوگوں کے لئے تیار ہے) جو آسائش اور تنگی میں (اپنا مال اللہ کی راہ میں) خرچ کرتے ہیں اور غصے کو روکتے اور لوگوں کے قصور معاف کرتے ہیں اور اللہ نیکو کاروں کو دوست رکھتا ہے (۱۳۴) [۴۱:۳۴، ۶:۵۴]

और वह लोग कि जब कोई पाप या अपने प्रति कोई और बुराई कर बैठेंगे तो ईश्वर को याद करेंगे और पापों की क्षमा मांगेंगे और ईश्वर के अतिरिक्त पाप क्षमा कर भी कौन सकता है? और जानबूझ कर अपने कर्मों पर उड़े नही रहते (135) {4:17}

اور وہ لوگ کہ جب کوئی گناہ یا اپنے حق میں کوئی اور برائی کر بیٹھیں گے تو اللہ کو یاد کریں گے اور اپنے گناہوں کی بخشش مانگیں گے اور اللہ کے سوا گناہ بخش بھی کون سکتا ہے؟ اور جان بوجھ کر اپنے افعال پر اڑے نہیں رہتے (۱۳۵) [۴:۱۷]

ऐसे ही लोगों का प्रतिफल ईश्वर की ओर से क्षमा और उपवन है जिनके नीचे नहरें बह रही है (और) वह उनमें सदैव बस्ते रहेंगे और (अच्छे) कार्य करने वालों का प्रतिफल बहुत अच्छा है (136) {11:107,108}

ایسے ہی لوگوں کا صلہ پروردگار کی طرف سے بخشش اور باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں (اور) وہ ان میں ہمیشہ بستے رہیں گے اور (اچھے) کام کرنے والوں کا بدلہ بہت اچھا ہے (۱۳۶) [۱۱:۱۰۷، ۱۰۸]

तुम लोगों से पहले भी (जातियों के उत्थान व पतन के) बहुत काल गमन हो चुके है तो विश्वास के लिए तुम पृथ्वी में घूमकर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ (137)

تم لوگوں سے پہلے بھی (قوموں کے عروج وزوال کے) بہت دور گذر چکے ہیں تو یقین کے لئے تم زمین میں سیر کر کے دیکھ لو کہ جھٹلانے والوں کا کیا انجام ہوا (۱۳۷)

यह (कुरआन) है यथार्थ जो लोगों के लिए खोल खोलकर वर्णन कर दिया गया है और पथ प्रदर्शन व शिक्षा (का सामान) उन लोगों के लिए जो हर प्रकार की आशंका से (व्यवहारतः) बचना चाहते है (138)

یہ (قرآن) بے حقیقت جو لوگوں کے لئے کھول کھول کر بیان کر دی گئی ہے اور ہدایت ونصیحت (کا سامان) ان لوگوں کے لئے جو ہر قسم کے خطرات سے (عملاً) بچنا چاہتے ہیں (۱۳۸)

और (आस्था के वादकर्ताओं! हर कार्य को उसके समय पर किया करो उस में) न तुम आलस्य किया करो और न (अपनी आलस्य के बदले में यदि कभी हो जाए) शोकपूर्ण हुआ करो, तुम ही प्रभुत्वशाली रहोगे यदि तुम (हमारे हर आदेश को) मानने वाले हो (139) {3:146,148}

اور (ایمان کے دعویدارو! ہر کام کو اس کے وقت پر کیا کرو اس میں) نہ تم سستی کیا کرو اور نہ (اپنی سستی کے بدلے میں اگر کبھی ہو جائے) اس میں غم کھایا کرو تم ہی غالب رہو گے اگر تم (ہمارے ہر حکم کو) ماننے والے ہو (۱۳۹) [۳:۱۴۶، ۱۴۸]

नोट- यह याद रखो जब तुमको विजय इष्ट सिद्धि प्राप्त हो तो उससे तुम्हारे अन्दर आलस्य और शिथिलता उत्पन्न न हो जाए और अकस्मात कार्य ऐसा हो जाए तो शोकपूर्ण न हो जाओ, अपितु फिर साहस से उठो क्योंकि आस्तिक का यही काम है कि ईश्वर के मार्ग में प्रयासरत रहे क्योंकि प्रभुत्व केवल ईश्वर और आस्तिकों को है साहस से काम लेना ऐसा ही है जैसे त्रुटि से ओहद के युद्ध में पराजय हो गई, परन्तु फिर

نوٹ:۔ یہ یاد رکھو جب تم کو فتح و کامرانی سے سامان زیست کی فراوانی حاصل ہو تو اس سے تمہارے اندر سستی اور کسلمندی پیدا نہ ہو جائے۔ اور اتفاقاً کبھی ایسا ہو جائے تو غم زدہ نہ ہو جاؤ بلکہ پھر ہمت سے اٹھو کیونکہ مومن کا یہی کام ہے کہ اللہ کی راہ میں جدوجہد کرتا رہے۔ کیونکہ غلبہ صرف اللہ اور مومن کو ہے ہمت سے کام لینا ایسا ہی ہے جیسے غلطی سے جنگ احد میں شکست ہوگئی مگر پھر ہمت سے کام لیا تو

साहस से काम लिया तो विजय हो गई और नास्तिक भाग गए किन्तु ऐसा सदैव ही नही होता अपितु जातियों में पतन आता ही है उनके कर्मों पर,

मैं तुझ को बताता हूं तकदीरें उम्म क्या है,
शमशीर व सना अव्वल ताऊसवरबाव आखिर (इक़बाल)

हर जाती का एक समय निर्धारित है परन्तु यह भी सत्य है कि जब जाति प्रयासरत रहती है सदाचारी रहते हुए वह अधिपति रहती है,

جیت ہوگئی اور کافر بھاگ گئے لیکن ایسا ہمیشہ ہی نہیں ہوتا بلکہ قوموں میں زوال آتا ہی ہے ان کے عملوں کی وجہ سے۔

میں تجھ کو بتاتا ہوں تقدیر امم کیا ہے☆شمشیر وسنا اول طاؤس ورباب آخر (اقبال)

ہر قوم کا ایک وقت مقرر ہے مگر یہ بھی حقیقت ہے کہ جب قوم جدو جہد کرتی رہتی ہے نیک رہتے ہوئے وہ غالب رہتی ہے

(आस्तिकों!) यदि तुम्हें तुम्हारी आलस्य के कारण विरोधियों के हाथों आघात पराजय पहुंचा है तो निःसन्देह उस जाति को ऐसा ही आघात (तुम्हारे हाथों) पहुंचा था, और वर्णित प्रकार के दिनों को हम अपने विधान विजय व पराजय के अनुसार बदलते रहते हैं (जो जाति भी आलस्य करेगी उसे आघात खाने ही पड़ेंगे) और ताकि ईश्वर आस्तिकों को स्पष्ट कर दे (कि वह कष्ट उठाने के बाद भी धैर्यवान रहते हैं) और तुम ही में से कतिपय को साक्षी बनाए सत्य यह है कि ईश्वर अत्याचारियों (आलस्य करने वालों) को प्रिय नही रखता (140)

(ایمان والو!) اگر تمہیں تمہاری سستی کی بدولت مخالفوں کے ہاتھوں زخم شکست پہنچا ہے تو بے شک اس قوم کو ایسا ہی زخم (تمہارے ہاتھوں) پہنچا تھا اور مذکورہ قسم کے دنوں کو ہم اپنے قانون فتح وشکست کے مطابق بدلتے رہتے ہیں (جو قوم بھی سستی کرے گی اسے زخم کھانے ہی پڑیں گے) اور تاکہ اللہ مومنوں کو ظاہر کردے (کہ وہ تکلیف اٹھانے کے بعد بھی ثابت قدم رہتے ہیں) اور تمہیں میں سے بعض کو گواہ ٹھہرائے حقیقت یہ ہے کہ اللہ ظالموں (سستی کرنے والوں) کو پسند نہیں کرتا (۱۴۰)

नोट- (1) 'यालम' का अर्थ लिखा गया है स्पष्ट करे ईश्वर क्रिया, 'अलिमा यालमू' का अर्थ जानना भी है और स्पष्ट करना भी, जब इस कार्य का कर्ता ईश्वर हो तो अधिकांश इसका धात्वर्थ (मसदरी अर्थ) जानना नहीं अपितु स्पष्ट करना होता है, ईश्वर तो हर वस्तु को जानता ही है उसे तो दूसरों के लिए स्पष्ट करना है, प्रमाण आयात 142 में है,
(2) जिन महोदयों के आलस्य या अवज्ञा के कारण पराजय हुई थी वह इस तथ्य पर साक्षी है कि पराजय का कष्ट अपने ही आलस्य का कारण होता है जैसे ओहद के युद्ध में हुआ,

نوٹ:۔(۱) [یَعْلَمْ] کا مطلب لکھا گیا ہے ظاہر کرے اللہ فعل [عَلِمَ یَعْلَمُ] کا مطلب جاننا بھی ہے اور ظاہر کرنا بھی جب اس فعل کا فاعل اللہ ہو تو اکثر اس کا مصدری معنی جاننا نہیں بلکہ ظاہر کرنا ہوتا ہے۔ اللہ تو ہر چیز کو جانتا ہی ہے اسے تو دوسروں کے لئے ظاہر کرنا ہے ثبوت آیت (۱۴۲) میں ہے۔
(۲) جن صحابہ کی سستی یا نافرمانی کی بدولت شکست ہوئی تھی وہ اس حقیقت پر گواہ ہیں کہ شکست کا غم اپنی ہی سستی کا نتیجہ ہوتا ہے جیسے جنگ احد میں ہوا۔

और मुसलमानों को (परीक्षा में डाल कर विचलनों से) शुद्ध कर दे और विरोधियों को नष्ट विनष्ट कर दे (141)

اور مسلمانوں کو (آزمائش میں ڈال کر لغزشوں سے) پاک کردے اور منکروں کو تباہ و برباد کردے (۱۴۱)

क्या तुम यह समझते हो कि (बिना परीक्षा) स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे, यद्यपि अभी ईश्वर ने तुम में से धर्म युद्ध करने वालों को अच्छी प्रकार स्पष्ट किया ही नहीं और वह धैर्यवान रहने वालों को स्पष्ट करें (142)

کیا تم یہ سمجھتے ہو کہ (بے آزمائش) جنت میں جا داخل ہو جاؤ گے حالانکہ ابھی اللہ نے تم میں سے جہاد کرنے والوں کو تو اچھی طرح ظاہر کیا ہی نہیں اور وہ ثابت قدم رہنے والوں کو ظاہر کرے (۱۴۲)

और तुम लोग तो मृत्यु शहादत (युद्ध) से सम्मुख होने से पहले मृत्यु की (शहादत युद्ध की) कामना करते थे सो तुम ने अपनी आंखों से उसे देख लिया कि कैसी होती है और युद्ध करना सरल नही है (143) {6:64, 2:243}

اور تم لوگ تو موت شہادت (جنگ) سے دوچار ہونے سے پہلے موت کی (شہادت جنگ کی) آرزو کرتے تھے سوتم نے اپنی آنکھوں سے اسے دیکھ لیا کہ کیسی ہوتی ہے اور جنگ کرنا آسان نہیں ہے (۱۴۳) [۶:۶۴:۲:۲۴۳]

और जो मुहम्मद स0 है वह निःसन्देह ईश्वर के रसूल है इनसे पहले भी बहुत से ईशदूत गमन हो चुके है भला यदि यह मृतक हो जाएं या मारे जाएं मानों उनसे युद्ध हो तो तुम उलटे पग फिर जाओगे (अर्थात् विमुख हो जाओगे) और जो उल्टे पग फिर जाएगा तो ईश्वर की कुछ हानि नहीं कर सकेगा, और ईश्वर अभी अच्छा फल देगा अच्छा परिश्रम करने वालों को अर्थात धन्यवाद आज्ञाकारी करने वालों को (144)

اور جو محمدؐ ہیں وہ یقیناً اللہ کے رسول ہیں ان سے پہلے بھی بہت سے رسول گذرے ہیں بھلا اگر یہ مرجائیں یا مارے جائیں گویا ان سے جنگ ہو تو تم الٹے پاؤں پھر جاؤ گے (یعنی مرتد ہو جاؤ گے) اور جو الٹے پاؤں پھر جائے گا تو اللہ کا کچھ نقصان نہیں کر سکے گا اور اللہ ابھی اچھا بدلہ دے گا اچھی محنت کرنے والوں کو یعنی شکر فرمانبرداری کرنے والوں کو (۱۴۴)

और किसी व्यक्ति में शक्ति नहीं कि वह ईश्वर के नियम के बिना मर जाए (आत्म हत्या अवैध है ईश्वर ने मृत्यु का समय) ईश्वर ने मृत्यु का समय निश्चित करके लिख रखा है, और जो व्यक्ति दुनिया में फल चाहे उसको हम यही फल देंगे और

اور کسی شخص میں طاقت نہیں کہ وہ اللہ کے قانون کے بغیر مرجائے (خودکشی حرام ہے اللہ نے) موت کا وقت مقرر کر کے لکھ رکھا ہے جو شخص دنیا میں بدلہ چاہتا ہے اس کو ہم یہیں بدلہ دیدیں گے اور فرمانبرداری کرنے والوں کو ہم

आज्ञाकारी करने वालों को हम निकट ही अच्छा फल देंगे (145)

عن قریب اچھا بدلہ دیں گے (۱۴۵)

और बहुत से ईशदूत हुए है जिनके साथ होकर अधिक ईश्वर के उपासक शत्रुओं से लड़े है तो जो कष्ट उन पर ईश्वर के मार्ग में घटित हुआ उनके कारण उन्होंने न तो साहस हारा और न कायरता की न वह दबे और ईश्वर साहस रखने वालों को मित्र रखता है (146) {2:214}

اور بہت سے نبی ہوئے ہیں جن کے ساتھ ہو کر اکثر اللہ پرست دشمنوں سے لڑے ہیں تو جو مصیبتیں ان پر راہ الٰہی میں واقع ہوئیں ان کے سبب انہوں نے نہ تو ہمت ہاری اور نہ بزدلی کی نہ وہ دبے اور اللہ ہمت رکھنے والوں کو دوست رکھتا ہے (۱۴۶) [۲:۲۱۴]

और उनके मुख से कोई बात निकलती तो यही निकलती कि ऐ ईश्वर हमारे पाप और अत्याचार जो हम अपने कामों में करते रहे है क्षमा कर और हम को दृढ़ पग रख और इनकार करने वालों पर विजय दे (147)

اور ان کے منہ سے کوئی بات نکلتی تو یہی نکلتی کہ اے پروردگار ہمارے گناہ اور زیادتیاں جو ہم اپنے کاموں میں کرتے رہے ہیں معاف فرما اور ہم کو ثابت قدم رکھ اور انکار کرنے والوں پر فتح دے (۱۴۷)

तो ईश्वर ने उनको दुनिया में भी अच्छा फल दिया और प्रलोक में भी बहुत अच्छा फल देगा, और ईश्वर पसन्द करता है सदाचारियों को (148)

تو اللہ نے ان کو دنیا میں بھی اچھا بدلہ دیا اور آخرت میں بھی بہت اچھا بدلہ دے گا. اور اللہ پسند کرتا ہے نیک لوگوں کو (۱۴۸)

आस्तिको! यदि तुमने नास्तिकों का कहा मान लिया तो वह तुम को उल्टे पग फेर देंगे, फिर तुम बड़े खसारे में पड़ जाओगे (149)

مومنو! اگر تم نے منکروں کا کہا مان لیا تو وہ تم کو الٹے پاؤں پھیر دیں گے پھر تم بڑے خسارے میں پڑ جاؤ گے (۱۴۹)

अपितु ईश्वर तुम्हारा सहायक है और सबसे अच्छा सहायक है (150)

بلکہ اللہ تمہارا مددگار ہے اور سب سے اچھا مددگار ہے (۱۵۰)

(यदि तुम नियम के अनुसार तैयारी करते हुए कार्य करोगे तो) हम समीप ही नास्तिकों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, क्योंकि वह ईश्वर के साथ अनेकेश्वर वाद करते है, जिसका उसने कोई भी प्रमाण अवतरित नही किया और उनका स्थान नर्क है वह पापियों का बहुत बुरा ठिकाना है (151)

(اگر تم قانون کے مطابق تیاری کرتے ہوئے کام کرو گے تو) ہم ابھی جلد منکروں کے دلوں میں تمہارا رعب ڈال دیں گے کیونکہ وہ اللہ کے ساتھ شرک کرتے ہیں جس کی اس نے کوئی بھی دلیل نازل نہیں کی اور ان کا ٹھکانا دوزخ ہے وہ ظالموں کا بہت برا ٹھکانا ہے (۱۵۱)

और निःसन्देह ईश्वर ने अपना (विजय का) वचन तुम पर उस समय पूर्ण कर दिया जब तुम उन्हें (अर्थात अनेकेश्वर वादियों को) ईश्वर के नियमानुसार वध करते रहे थे, यहां तक कि जब तुमने निर्बलता दिखाई (अर्थात तुम्हारे कुछ व्यक्तियों ने) और जो कर्तव्य तुम्हारे समर्पित हुआ था उसमें तुम्हारे कुछ व्यक्तियों ने झगड़ा किया और तुम में से कुछ ने अवज्ञा की उस विजय को देखने के बाद जिसे तुम पसन्द करते हो तुम में से कतिपय वह है जिन्होंने दुनिया का संकल्प किया और तुम में कतिपय वह है जिन्होंने संकल्प किया उत्तम फल का फिर फेर दिया तुम्हें उनसे ताके तुम पर स्वयं स्पष्ट हो जाए कि दोष किसका था और निःसन्देह ईश्वर ने क्षमा किया तुम को सत्य यह है कि ईश्वर आस्तिकों पर कृपालु है (152)

اور بے شک اللہ نے اپنا (فتح کا) وعدہ تم پر اس وقت پورا کر دیا جب تم انہیں (یعنی مشرکین کو) اللہ کے قانون کے مطابق قتل کر رہے تھے یہاں تک کہ جب تم نے کمزوری دکھائی (یعنی تمہارے کچھ افراد نے) اور جو فریضہ تمہارے سپرد ہوا تھا اس میں تمہارے کچھ افراد نے جھگڑا کیا اور تم میں سے کچھ نے نافرمانی کی اس فتح کو دیکھنے کے بعد جسے تم پسند کرتے ہو تم میں سے بعض وہ ہیں جنہوں نے دنیا کا ارادہ کیا اور تم میں بعض وہ ہیں جنہوں نے ارادہ کیا بہتر انجام کا پھر پھیر دیا تمہیں ان سے تا کہ تم پر خود ظاہر ہو جائے کہ غلطی کس کی تھی اور بے شک اللہ نے معاف کیا تم کو حقیقت یہ ہے کہ اللہ مومنوں پر صاحب فضل ہے (۱۵۲)

(वह समय भी याद करने योग्य है) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नही देखते थे और ईशदूत तुम को तुम्हारे पीछे खड़े बुला रहे थे तो ईश्वर ने तुम को दुख पर दुख पहुंचाया ताकि जो वस्तु तुम्हारे हाथ से जाती रही या जो कष्ट तुम पर घटित हुआ उससे तुम शोकाकुल न

(وہ وقت بھی یاد کرنے کے لائق ہے) جب تم لوگ دور بھاگ جاتے تھے اور کسی کو پیچھے پھر کر نہیں دیکھتے تھے اور رسول اللہ تم کو تمہارے پیچھے کھڑے بلا رہے تھے. تو اللہ نے تم کو غم پر غم پہنچایا تا کہ جو چیز تمہارے ہاتھ سے جاتی رہی یا جو مصیبت تم پر واقع ہوئی ہے اس سے تم غم زدہ نہ ہو

हो और ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है (153) {3:168}

फिर ईश्वर ने तुम पर दुख के बाद शांति प्रेषित की (शत्रु क्षेत्र छोड़कर वापस भाग गया और तुम क्षेत्र में लौट आए) तुम में से एक दल पर ऐसा आभास हुआ मानों उन पर निद्रा अधिपति हो गई, और तुम्हारा एक दल वह था कि उनकी अपनी आत्माओं ने निम्न साहस कर दिया था और वह ईश्वर के विषय में अज्ञानता के समय का अनुचित भ्रम करने लगे थे, (कि ईश्वर उनकी सहायता नही करेगा और शत्रु उन्हें नष्ट विनष्ट कर देगा किन्तु ईश्वर ने इस भांति उनकी सहायता की कि शत्रु विजय को स्थापित न रख सका और वापस लौट गया) उन्होंने कहा यदि हमें कुछ भी अधिकार होता तो हम यहां युद्ध के लिए न आते और न हमारे आदमी कत्ल होते, आप कहो सब कार्य है ईश्वर के हाथ, गुप्त रखते है अपने मन में जो तुझ से प्रकट नही करते कहते है यदि युद्ध करने का फैसला हमारे अधिकार में होता तो हम युद्ध न करते, इस स्थान पर तू कह यदि तुम होते अपने भवनों में तो अवश्य बाहर निकलते जिन पर लिखा था मारा जाना अपने पड़ाव पर और ईश्वर को स्पष्ट करना था जो कुछ तुम्हारे वक्षों में है और निर्मल करना था जो कुछ तुम्हारे वक्षों में और ईश्वर को ज्ञात है मनों की बात (154) {8:11}

اوراللہ تمہارے سب اعمال سے خبردار ہے(۱۵۳)[۱۶۸:۳]

پھراللہ نے تم پرغم کے بعد امن نازل کیا(دشمن میدان چھوڑ کر واپس چلا گیا اورتم میدان میں لوٹ آئے)تم میں سے ایک گروہ پرایسا غلبہ ہوا گویا ان پرنیند غالب آئی،اورتمہارا ایک گروہ وہ تھا کہ انہیں ان کے نفس نے پست ہمت کردیا تھا،اوروہ اللہ کے متعلق جاہلیت کے زمانہ کا غلط گمان کرنے لگے تھے(کہ اللہ ان کی مدد نہیں کرے گا اوردشمن انہیں نیست ونابود کردے گا لیکن اللہ نے اس طرح ان کی مدد فرمائی کہ دشمن فتح کو برقرار نہ رکھ سکا اوروا پس لوٹ گیا)انہوں نے کہا اگرہمیں کچھ اختیار ہوتا توہم یہاں جنگ کے لئے نہ آتے اورنہ ہمارے آدمی قتل ہوتے آپ کہوسب کام ہے اللہ کے ہاتھ۔چھپاتے ہیں اپنے جی میں جوتجھ سے ظاہرنہیں کرتے کہتے ہیں اگر جنگ کرنے کا فیصلہ ہمارے اختیار میں ہوتا توہم جنگ نہ کرتے،اس جگہ تو کہہ اگرتم ہوتے اپنے گھروں میں توضروربا ہر نکلتے جن پرلکھا تھا جنگ کرنا اورمارا جانا اپنے پڑاؤ پراوراللہ کوظاہر کرنا تھا جو کچھ تمہارے سینوں میں ہے،اور خالص کرنا تھا جو کچھ تمہارے دل میں ہے اوراللہ کومعلوم ہے دلوں کی بات(۱۵۴)[۱۱:۸]

तुम में से जिन लोगों ने दोनों सैना के प्रतियोगिता के दिन युद्ध से मुख मोड़ा था उसका कारण यह था कि उनकी कतिपय कमजोरी के कारण शैतान ने उनके पग डगमगा दिए थे (परन्तु उनकी आस्था में विकार नही है और वह अपने किए पर लज्जित है) अतः ईश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया वह बड़ा क्षमा करने वाला है (155)

تم میں سے جن لوگوں نے دونوں فوجوں کے مقابلہ کے دن لڑائی سے منہ موڑا تھا اس کا سبب یہ تھا کہ ان کی بعض کمزوریوں کی وجہ سے شیطان نے ان کے قدم ڈگمگادیے تھے(لیکن ان کے ایمان میں فتورنہیں ہے اوروہ اپنے کئے پرشرمندہ ہیں)اس لئے اللہ نے انہیں معاف کردیا۔وہ بڑا بخشنے والا ہے(۱۵۵)

आस्तिको! उन लोगों जैसे न हो जाना जो इनकार करते है और उनके (आस्तिक) भाई जब (ईश्वर के मार्ग में) यात्रा करें (और मर जाएँ) या धर्म युद्ध को निकले तो उनके विषय में कहते है कि यदि वह हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते इन बातों से उद्देश्य यह है कि ईश्वर उनके मनों में अभिलासा व लज्जा का साधन बना दे और जीवन और मृत्यु तो ईश्वर ही देता है और ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों को देख रहा है (156)

और यदि तुम ईश्वर के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ तो जो लोग धन संग्रह करते है उससे ईश्वर की क्षमा और कृपा ही उत्तम है (157)

और यदि तुम मर जाओ या मारे जाओ तो ईश्वर के सम्मुख अवश्य संग्रह किए जाओगे (158)

(ऐ रसूल!) यह ईश्वर की कृपा है कि तुम उनके लिए इतने कोमल हृदय सिद्ध हुए हो, यदि तुम कठोर मन और संकीर्ण हृदय होते तो तुम्हें छोड़कर भाग खड़े होते (अब तो उनसे त्रुटि हो गई) यह उनका अपराध क्षमा कर दो उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो (यही नही अपितु) इसी प्रकार (युद्ध व संधि) के प्रसंग में उनसे परामर्श करो फिर जब

مومنو!ان لوگوں جیسے نہ ہوجانا جوکفرکرتے ہیں اوران کے (مسلمان) بھائی جب (اللہ کی راہ میں) سفرکریں (اور مرجائیں) یا جہادکونکلیں توان کی نسبت کہتے ہیں کہ اگروہ ہمارے پاس رہتے تو نہ مرتے اور نہ مارے جاتے ان باتوں سے مقصود یہ ہے کہ اللہ ان کے دلوں میں حسرت وندامت کا سبب بنادے۔اورزندگی اورموت تواللہ ہی دیتا ہے اوراللہ تمہارے سب کاموں کودیکھ رہا ہے(۱۵۶)

اوراگرتم اللہ کی راہ میں مارے جاؤیا مرجاؤ تو جولوگ مال جمع کرتے ہیں اس سے اللہ کی بخشش اوررحمت کہیں بہتر ہے(۱۵۷)

اوراگرتم مرجاؤیا مارے جاؤ تو اللہ کے حضور میں ضرور اکٹھے کئے جاؤ گے(۱۵۸)

(اے رسول!) یہ اللہ کی رحمت ہے کہ تم اُن کے لئے اتنے نرم مزاج واقع ہوئے ہو اگرتم سخت مزاج اورتنگ دل ہوتے تو تمہیں چھوڑکر بھاگ کھڑے ہوتے(اب تو اُن سے غلطی ہوگئی) یہ ان کا قصور معاف کردو،ان کے لئے دعائے مغفرت کرو(یہی نہیں بلکہ) اس طرح کے (جنگ

किसी बात का पक्का निश्चय कर लो तो ईश्वर पर भरोसा करके कार्यरत हो जाओ ईश्वर उन्ही लोगों को मित्र रखता है जो उस पर भरोसा रखते है (159) {42:38}

وصلح)معاملات میں ان سے مشورہ کرو پھر جب کسی بات کا پختہ ارادہ کرلو تو اللہ پر بھروسہ کر کے سرگرم عمل ہو جاؤ اللہ انہیں لوگوں کو دوست رکھتا ہے جو اس پر بھروسہ رکھتے ہیں (۱۵۹)[۴۲:۳۸]

यदि ईश्वर का नियम तुम्हारा सहायक है तो तुम पर कोई प्रभुत्व शाली नही हो सकता और यदि वह तुम्हें छोड़ दे तो फिर कोन है कि तुम्हारी सहायता करे और आस्तिकों को चाहिए कि ईश्वर पर ही भरोसा रखे (160) {6:127, 22:40, 3:153}

اگر اللہ کا قانون تمہارا مددگار ہے تو تم پر کوئی غالب نہیں آسکتا اور اگر وہ تمہیں چھوڑ دے تو پھر کون ہے کہ تمہاری مدد کرے اور مومنوں کو چاہیے کہ اللہ پر ہی بھروسہ رکھیں (۱۶۰)[۶:۱۲۷،۲۲:۴۰،۳:۱۵۳]

और कभी नही हो सकता कि ईश्वर के रसूल मन में कुछ वही को छुपा रखे अर्थात पूरी वही न बताऐ छुपाकर रखने वालों को महाप्रलय के दिन छुपाई हुई बात उपस्थित करनी होगी फिर हर व्यक्ति को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और अन्याय न होगा (161) {7:43, 10:15}

اور کبھی نہیں ہوسکتا کہ رسول اللہ دل میں کچھ وحی کو چھپا رکھیں یعنی پوری وحی نہ بتائیں مخفی رکھنے والوں کو قیامت کے دن چھپائی ہوئی بات حاضر کرنی ہوگی پھر ہر شخص کو اس کے اعمال کا پورا پورا بدلہ دیا جائے گا اور بے انصافی نہ ہوگی (۱۶۱)[۷:۴۳،۱۰:۱۵]

नोट- आयत 152 से 160 तक के अनुसार युद्ध के अवसर पर कुछ व्यक्तियों की भूल और अपने नायक की अवज्ञा करने से जीते हुए युद्ध में हानि हो गई थी जिसको ईश्वर ने क्षमा कर दिया, और नबी से भी कहा कि ऐ रसूल आप भी उनके लिए जैसे पहले कोमल थे अब भी और भविष्य के लिए भी कोमल रहो यदि आप प्रखर स्वभावी होते तो वह सब आपके पास से भाग जाते, उनकी कुछ भूल हो गई जिसको मैंने क्षमा कर दिया अतः आप भी क्षमा करदें और आप क्रमागत भूत के आने वाले विषय में उनसे परामर्श लेते रहें और उनके लिए अपने मन में कोई कपट न रखे जिसके लिए आयत 161 में कहा गया है ईश्वर ने उनको क्षमा कर दिया आप भी उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करें,

نوٹ:۔ آیت (۱۵۲) سے (۱۶۰) تک کے مطابق جنگ کے موقع پر چند آدمیوں کی بھول اور اپنے امیر کی نافرمانی کرنے سے جیتی ہوئی جنگ میں نقصان ہوگیا تھا۔ جس کو اللہ نے معاف کردیا۔ اور نبی سے بھی کہا کہ اے نبی آپ ان کے لئے جیسے پہلے نرم تھے اب بھی اور آئندہ کے لئے بھی نرم رہیں اگر آپ تندخو ہوتے تو وہ سب آپ کے پاس سے بھاگ جاتے۔ ان کی کچھ لغزش ہوگئی جس کو میں نے معاف کردیا۔ اس لئے آپ بھی معاف کردیں۔ اور آپ بدستور سابق پیش آنے والے معاملوں میں ان سے مشورہ لیتے رہیں۔ اور ان کے لئے اپنے دل میں کوئی کینہ نہ رکھنا جس کے لئے آیت (۱۶۱) میں کہا گیا ہے اللہ نے ان کو معاف کردیا۔ آپ بھی ان کے لئے مغفرت کی دعا کریں۔

परन्तु मुसलमानों में एक दल है वह उन सब को कपटि कहता है और बुरा भला कहता है जो अनुचित है इस दल को अपने व्यवहार पर विचार करके अपनी नीति को ठीक कर लेना चाहिए यही उत्तम है अन्यथा ईश्वर तो दण्ड देगा ही,

مگر مسلمانوں میں ایک فرقہ ہے وہ ان سب کو منافق کہتا ہے اور برا بھلا کہتا ہے جو غلط بات ہے اس گروہ کو اپنے رویہ پر غور کر کے اپنے عمل کو درست کرلینا چاہیے یہی بہتر ہے ورنہ اللہ تو سزا دے گا ہی۔

दूसरी बात इन आयात में यह है कि जीत हार ईश्वर के इज़्न से हुई तो यहां इज़्न का अर्थ नियम है, नियम यह है कि युद्ध हो या और कोई कार्य हो उसका जो नियम है उसके अनुसार कार्य किया जाएगा तो सफलता होगी और उस नियम के विरुद्ध होगा तो विफलता, युद्ध के लिए अनिवार्य है कि पूरी तैयारी की जाए और अपने नायक की आज्ञाकारी की जाए परन्तु ओहद के युद्ध में नायक की अवज्ञा कर दी, पराजय हो गई, और जब आज्ञाकारी की तो सफलता मिल गई, बस यही नियम सफलता है प्रलय तक और यही इज़्न है अर्थात नियम और इज़्न हर कार्य के लिए यही है जो अपनी सहायता आप करता है ईश्वर भी उसकी सहायता करता है,

دوسری بات ان آیات میں یہ ہے کہ جیت ہار اللہ کے اذن سے ہوئی تو یہاں اذن کا مطلب قانون ہے قانون یہ ہے کہ جنگ ہو یا اور کوئی کام ہو اس کا جو طریقہ ہے اس کے مطابق کام کیا جائے گا تو کامیابی ہوگی اور اس قانون کے خلاف ہوگا تو ناکامی۔ جنگ کے لئے ضروری ہے کہ پوری تیاری کی جائے اور اپنے امیر کی فرمانبرداری کی جائے مگر جنگ احد میں امیر کی نافرمانی کردی، ہار ہوگئی اور جب فرمانبرداری کی تو جیت ہوگئی۔ بس یہی قانون کامیابی کا قیامت تک ہے اور یہی اذن ہے یعنی قانون اور اذن ہر کام کے لئے یہی ہے جو اپنی مدد آپ کرتا ہے اللہ بھی اس کی مدد کرتا ہے۔

आयत में शब्द अपयोजन कपट आया है तो इससे तात्पर्य ईशदूत नही अपितु नबी के द्वारा आस्तिकों को शिक्षा दी जा रही है कि जैसे ईशदूत के लिए यह सम्भाव नही कि नबी कपट रखे या अपयोजन करे इसी प्रकार ऐ आस्तिकों तुम भी इस अनुचित कार्य अर्थात कपट अपयोजन और पक्षपात से दूर रहना यदि ऐसा करोगे तो यह सब किया हुआ लेखा जोखा के दिन उपस्थित पाओगे,

آیت میں لفظ خیانت یا کینہ آیا ہے تو اس سے مراد نبی نہیں ہیں بلکہ نبی کے ذریعہ مومنوں کو تعلیم دی جارہی ہے کہ جیسے نبی کے لئے یہ ممکن نہیں کہ نبی کینہ رکھے یا خیانت کرے اسی طرح اے مومنوں تم بھی اس غلط کام یعنی کینہ خیانت اور جانبداری سے دور رہنا اگر ایسا کروگے تو یہ سب کیا ہوا حساب کے دن حاضر پاؤ گے۔

भला जिस व्यक्ति ने ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया हो वह (क्या कपट भेदभाव करेगा?) उसकी भांति हो सकता है जो ईश्वर की अप्रसन्नता में बन्दी हो और जिसका स्थान नर्क हो और वह बुरा स्थान है (162)

بھلا جس شخص نے اللہ کی خوشنودی کے لئے اپنی زندگی وقف کردی ہو وہ (کیا خیانت جانبداری کرے گا؟) اس کی طرح ہوسکتا ہے جو اللہ کی ناراضی میں گرفتار ہو اور جس کا ٹھکانا دوزخ ہو اور وہ برا ٹھکانا ہے (۱۶۲)

ईश्वर के यहां उन लोगों की अलग-अलग श्रेणी है और ईश्वर उनके सब कार्य देख रहा है (163)
ईश्वर ने आस्तिकों पर बड़ा उपकार किया है कि उनमें उन्ही में से ईशदूत उत्पन्न कर दिया जो पढ़ता है उन पर आयतें उसकी और संवारता है उनको और सिखाता है उनको पुस्तक जो युक्ति से भरी है और उससे पहले वह एक खुली खोज में थे (164) {1:6, 2:28,285, 12:95, 45:11, 93:7}

اللہ کے یہاں اُن لوگوں کے الگ الگ درجے ہیں اور اللہ ان کے سب اعمال دیکھ رہا ہے(۱۶۳)
اللہ نے مومنوں پر بڑا احسان کیا ہے کہ ان میں انہیں میں سے رسول پیدا کردیا جو پڑھتا ہے ان پر آیتیں اس کی اور سنوارتا ہے ان کو اور سکھاتا ہے ان کو کتاب جو حکمت سے بھری ہے اور اس سے پہلے وہ ایک کھلی تلاش میں تھے (۱۶۴)[۱:۶،۲:۲۸،۲۸۵،۱۲:۹۵،۴۵:۱۱،۹۳:۷]

नोट- इस आयत से सिद्ध हो रहा है कि मक्काह में उस समय जब मुहम्मद को ईशदौत्य मिला था और भी आस्तिक थे अन्तर इतना है कि उनके पास वह धर्म विधान उपस्थित न था जो मिल्लते इब्राहीम है, परन्तु उसकी खोज में थे जैसे मुहम्मद स0 इब्राहीम के धर्म की खोज में थे जिसको लोगों ने बदल दिया था, यदि उस समय आस्तिक न होते तो ईश्वर यह न कहता कि आस्तिकों में एक ईशदूत उठाया, इन शब्दों से स्पष्ट हो रहा है कि आस्तिक थे, यदि न होते तो पहले दिन ही मुहम्मद स0 पर पांच आदमी विश्वास क्यों लाते? पहले दिन ही मुहम्मद स0 पर पांच आदमी विश्वास लाए, दूसरी बात यह कि अधिकांश मक्काह वाले मुहम्मद स0 के विरुद्ध थे परन्तु आपके चचा सीना तानकर मुहम्मद स0 की रक्षा में खड़े चितवन आते हैं, और तीन वर्षों तक शोएबे अबुतालिब में बन्दी के समय जो व्यक्ति मुहम्मद स0 के साथ थे वह कौन थे? क्या उनको नास्तिक कहा जा सकता है?

इन बातों को देखते हुए कौन कह सकता है कि अबतालिब इत्यादि नास्तिक थे कदापि नही, और उनके साथ और भी आस्तिक थे जो आयत से प्रमाणित है, (12:95, 93:7)
(12:95) वह पुरानी खोज में हैं, (93:7) आप स0 लुप्त हुए धर्म की खोज में थे सत्य के खोजी,

نوٹ:۔اس آیت سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ مکہ میں اس وقت جب محمدؐ کو نبوت ملی تھی اور بھی مومن تھے فرق اتنا ہے کہ ان کے پاس وہ شریعت موجود نہیں تھی جو ملت ابراہیم ہے۔مگر اس کی تلاش میں تھے جیسے محمدؐ گم شدہ ملت ابراہیم کی تلاش میں تھے جس کو لوگوں نے بدل دیا تھا۔اگر اس وقت مومن نہ ہوتے تو اللہ یہ نہ کہتا کہ مومنوں میں ایک رسول اٹھایا۔ان الفاظ سے صاف ظاہر ہو رہا ہے کہ مومن تھے۔اگر مومن نہ ہوتے تو پہلے دن ہی محمدؐ پر پانچ آدمی ایمان کیوں لاتے؟ پہلے دن ہی محمدؐ پر پانچ آدمی ایمان لائے۔دوسری بات یہ کہ زیادہ تر مکہ والے محمدؐ کے خلاف تھے لیکن آپ کے چچا سینہ تان کر محمدؐ کی حمایت میں کھڑے نظر آتے ہیں؟ اور تین سال تک شعبہ ابو طالب میں قید کے درمیان جو آدمی محمدؐ کے ساتھ تھے وہ کون تھے؟ کیا ان کو کافر کہا جا سکتا ہے؟

ان باتوں کو دیکھتے ہوئے کون کہہ سکتا ہے کہ ابو طالبؓ وغیرہ کافر تھے ہرگز نہیں اور ان کے ساتھ اور بھی مومن تھے جو آیت سے ثابت ہے (۱۲:۹۵،۹۳:۷)
(۱۲:۹۵) وہ پرانی تلاش میں ہیں۔(۹۳:۷) آپؐ گمشدہ شریعت کی تلاش میں تھے جویائے حق۔

तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम पर संकट आ पड़ा तो तुम चीत्कार उठे यह संकट कहां से आया? यद्यपि इससे दो गुनी विपत्ति तुम्हारे हाथों (शत्रु पर) पड़ चुकी है, तुम कह दो यह तुम्हारे ही करतूतों का फल है (न तुम ईशदूत की अवज्ञा करते न यह संकट आता) ईश्वर हर बात की शैली नियम निर्धारित करने वाला है (165)

تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ جب تم پر مصیبت آپڑی تو تم چیخ اُٹھے یہ مصیبت کہاں سے آئی؟ حالانکہ اس سے دو چند مصیبت تمہارے ہاتھوں (دشمنوں پر) پڑ چکی ہے تم کہہ دو یہ تمہارے ہی کرتوتوں کا پھل ہے (نہ تم رسول کی نافرمانی کرتے نہ یہ مصیبت آتی) اللہ ہر بات کے انداز ے قانون مقرر کرنے والا ہے(۱۶۵)

दोनों दलों के संग्राम के दिन जो कुछ प्रस्तुत हुआ वह ईश्वर के नियम के अनुसार था ताकि ईश्वर स्पष्ट कर दे कि आस्तिक कौन है? (166)
और यह भी ईश्वर स्पष्ट कर दे कि कपटि कौन है वह कपटि, जब उनसे कहा गया आओ ईश्वर के मार्ग में युद्ध करो या कम से कम (अपने नगर की) रक्षा ही करो तो कहने लगे यदि हम लड़ना जानते या यह विश्वास होता कि युद्ध होगा तो अवश्य आपके साथ चलते, यह बात जब वह कह रहे थे उस समय वह धर्म की तुलना में अधर्म से अधिक निकट थे वह अपनी भाषा से वह बात कहते हैं जो उनके मन में नहीं होती और जो कुछ वह हृदय में छुपाते हैं ईश्वर उसे अधिक जानता है (167)

دونوں جماعتوں کے مقابلہ کے دن جو کچھ پیش آیا وہ اللہ کے قانون کے مطابق تھا تا کہ اللہ ظاہر کردے کہ مومن کون ہے؟(۱۶۶)
اور یہ بھی اللہ ظاہر کردے کہ منافق کون ہیں وہ منافق جب ان سے کہا گیا آؤ اللہ کی راہ میں جنگ کرو یا کم از کم (اپنے شہر کی) حفاظت ہی کرو تو کہنے لگے اگر ہم لڑنا جانتے یا یہ یقین ہوتا کہ جنگ ہوگی تو ضرور آپ کے ساتھ چلتے۔یہ بات جب وہ کہہ رہے تھے اس وقت وہ ایمان کی نسبت کفر سے زیادہ قریب تھے وہ اپنی زبانوں سے وہ باتیں کہتے ہیں جو ان کے دلوں میں نہیں ہوتیں۔اور جو کچھ وہ دلوں میں چھپاتے ہیں اللہ اسے خوب جانتا ہے(۱۶۷)

वह स्वयं (तो युद्ध से बच कर) बैठ ही रहे थे मगर

وہ خود (تو جنگ سے بچ کر) بیٹھ ہی رہے تھے مگر (جنہوں

(जिन्होंने बलिदान दिया) उन अपने भाईयों के विषय में भी कहते है कि यदि हमारा कहा मानते तो वध न होते, कह दो कि यदि सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना (168)

नے قربانی دی) ان اپنے بھائیوں کے بارے میں بھی کہتے ہیں کہ اگر ہمارا کہا مانتے تو قتل نہ ہوتے کہدو کہ اگر سچے ہو تو اپنے اوپر سے موت کو ٹال دینا (۱۶۸)

जो लोग ईश्वर के मार्ग में मारे गए उन को मुर्दा कायर न समझना (वह मुर्दा नही हैं) अपितु वह ईश्वर के निकट जातियों को जीवित करने वाले हैं और उनको अच्छी जीविका दी जाएगी (169) {2:154, 3:185,37, 33:31, 34:4}

جو لوگ اللہ کی راہ میں مارے گئے ان کو مردہ بزدل نہ سمجھنا (وہ مردہ نہیں ہیں) بلکہ وہ اللہ کے نزدیک قوموں کو زندہ کرنے والے ہیں اور ان کو اچھا رزق دیا جائے گا (۱۶۹)
[۲:۱۵۴، ۳:۱۸۵، ۳۷، ۳۳:۳۱، ۳۴:۴]

ईश्वर ने अपने कृपा दया से उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उससे वह बहुत प्रसन्न है और जो लोग उनके पीछे है अर्थात उनके उत्तराधिकारी परन्तु अभी उनमें नही मिले उनके लिए वह आनन्दित हो रहे है कि (उनके बलिदान के कारण) सम्मान की जीविका अनुकम्पा पा रहे है सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर रहे है शत्रु उनकी ओर को आंख उठाकर देखने का साहस नही कर पा रहा है उनको दुनिया में किसी प्रकार का भय और दुख न होगा वह स्वतंत्र है (170)

اللہ نے اپنے فضل و کرم سے انہیں جو کچھ عطا کیا ہے اس سے وہ بہت خوش ہیں اور جو لوگ ان کے پیچھے ہیں یعنی ان کے جانشین مگر ابھی ان میں شامل نہیں ہوئے ان کے لئے وہ خوشیاں منا رہے ہیں کہ (ان کی قربانی کی وجہ سے عزت کا رزق عنایات پا رہے ہیں عزت کے ساتھ زندگی گزار رہے ہیں دشمن ان کی طرف کو آنکھ اٹھا کر دیکھنے کی ہمت نہیں کر رہا ہے) ان کو دنیا میں کسی طرح کا خوف اور غم نہ ہوگا وہ آزاد ہیں (۱۷۰)

और ईश्वर के पुरस्कार और दया से प्रसन्न हो रहे हैं और इसलिए कि ईश्वर आस्तिकों का पारिश्रमिक नष्ट नही करता (171) {2:254}

اور اللہ کے انعامات اور فضل سے خوش ہو رہے ہیں اور اس لئے کہ اللہ مومنوں کا اجر ضائع نہیں کرتا (۱۷۱)
[۲:۲۵۴]

जिन लोगों ने आघात खाने के बाद ईश्वर व रसूल के आदेश (अर्थात ईश्वर के आदेश को रसूल के द्वारा) स्वीकार किया जो लोग उनमें सदाचारी है उनके लिए बड़ा पारिश्रमिक है (172)

جن لوگوں نے زخم کھانے کے باوجود اللہ و رسول کے حکم کو (یعنی اللہ کے حکم کو رسول کے ذریعہ) قبول کیا جو لوگ ان میں نیکوکار اور پرہیزگار ہیں ان کے لئے بڑا اجر ہے (۱۷۲)

जिन आस्था वालों से लोगों ने कहा कि तुम्हारे से युद्ध करने के लिए एक शक्तिशाली सेना तैयार है उससे डरो किन्तु उनका धर्म और बढ़ गया और वह बोले हमारी सहायता के लिए ईश्वर का नियम पर्याप्त है और वह अच्छा अभिभावक है (173)

جن ایمان والوں سے لوگوں نے کہا کہ تمہارے مقابلہ کے لئے ایک زبردست فوج تیار ہے اس سے ڈرو لیکن ان کا یمان اور بڑھ گیا اور وہ بولے ہماری مدد کے لئے اللہ اور اللہ کا قانون کافی ہے اور وہ بہترین کارساز ہے (۱۷۳)

फिर वह ईश्वर की सुख सामी और उसकी दया के साथ वापस आए उनको किसी प्रकार की हानि न पहुंची, और वह ईश्वर की प्रसन्नता के अधीन रहे और ईश्वर बड़े कृपा दया का स्वामी है (174)

پھر وہ اللہ کی نعمتوں اور اس کے فضل کے ساتھ واپس آئے، ان کو کسی قسم کا ضرر نہ پہنچا اور وہ اللہ کی خوشنودی کے تابع رہے اور اللہ بڑے فضل کا مالک ہے (۱۷۴)

ऐसी सूचना लाने वाला शैतान होगा जो अपने मित्रों से तुमको डराएगा पस यदि तुम आस्तिक हो तो उनसे न डरना अपितु मुझसे (अर्थात मेरी प्रतिद्वंद्विता से) डरना (175)

ایسی خبر لانے والا شیطان ہوگا جو اپنے دوستوں سے تم کو ڈرائے گا پس اگر تم مومن ہو تو ان سے نہ ڈرنا بلکہ مجھ سے (یعنی میری مخالفت سے) ڈرنا (۱۷۵)

और जो लोग नास्तिकता में जल्दी करेंगे उनसे शोकाकुल न होना, वह ईश्वर की कुछ हानि नही कर सकते ईश्वर चाहता है कि परलोक में उनको कुछ भाग न दे और उनके लिए बड़ा दण्ड है(176)

اور جو لوگ کفر میں جلدی کریں گے ان سے غمگین نہ ہونا۔ وہ اللہ کا کچھ نقصان نہیں کر سکتے۔ اللہ چاہتا ہے کہ آخرت میں ان کو کچھ حصہ نہ دے اور ان کے لئے بڑا عذاب ہے (۱۷۶)

जो लोग आस्था के बदले अधर्म क्रय करेंगे वह ईश्वर का कुछ नही बिगाड़ सकते और उनको दुख देने वाला दण्ड है (177)

جو لوگ ایمان کے بدلے کفر خریدیں گے وہ اللہ کا کچھ نہیں بگاڑ سکتے اور ان کو دکھ دینے والا عذاب ہے (۱۷۷)

और नास्तिक यह न कल्पना करें कि हम जो उनको छूट दे रहे है तो यह उनके लिए अच्छी होगी,

اور کافر لوگ یہ نہ خیال کریں کہ ہم جو ان کو مہلت دے

हम उनको इसलिए ढ़ील दे रहे हैं (अर्थात हमारा नियम ही ऐसा है कि उनको अधिकार दे रखा है और एक समय निश्चित है) कि और पाप कर लें (या पश्चाताप कर लें) अंततः उनको हीन करने वाला दण्ड है (वह यह न कहें कि ईश्वर की ओर से हमको अवसर न मिला अन्यथा हम सदाचारी हो जाते) (।७८)

رہے ہیں تو یہ ان کے حق میں اچھی ہوگی ہم ان کو اس لئے ڈھیل دے رہے ہیں (یعنی ہمارا قانون ہی ایسا ہے کہ ان کو اختیار دے رکھا ہے اور ایک وقت مقرر ہے) کہ اور گناہ کرلیں (یا توبہ کرلیں) آخر کار ان کو ذلیل کرنے والا عذاب ہے (وہ یہ نہ کہیں کہ اللہ کی طرف سے ہم کو موقع نہ ملا ورنہ ہم نیک ہوجاتے) (۱۷۸)

ईश्वर ऐसा नही है कि छोड़ देगा मुसलमानों को इस स्थिति पर जिस पर तुम हो जब तक पृथक न करें अशुद्ध को शुद्ध से और ईश्वर की यह भी विधि नही कि तुम पर परोक्ष प्रकट कर दे किन्तु ईश्वर अपने ईशदूतों को चुन लेता है जिसको चाहे जो इस योग्य होता है, सो तुम विश्वास लाओ ईश्वर पर और उसके रसूलों पर और यदि तुम विश्वास पर रहो और सदाचारिता पर तो तुम को बड़ा फल है (179) {9:73, 66:9, 33:60,61}

اللہ ایسا نہیں ہے کہ چھوڑ دے گا مسلمانوں کو اس حال پر جس پر تم ہو جب تک جدا نہ کرلے ناپاک کو پاک سے اور اللہ کا یہ طریقہ نہیں کہ تم پر غیب ظاہر کردے۔ لیکن اللہ اپنے رسولوں کو چن لیتا ہے جس کو چاہے جو اس لائق ہوتا ہے سو تم یقین لاؤ اللہ پر اور اس کے رسولوں پر اور اگر تم یقین پر رہو اور پرہیزگاری پر تو تم کو بڑا ثواب ہے (۱۷۹) [۹:۷۳، ۶۶:۹، ۳۳:۶۰، ۶۱]

जो लोग उसको व्यय करने में कृपणता करेंगे जो माल उनको ईश्वर ने दिया है वह उस कृपणता को अपने लिए अच्छा न समझें, अपितु उनके लिए बुरा है वह जिस माल में कृपणता करेंगे महाप्रलय के दिन उसका हार बनाकर उनकी गरदनों में डाला जाएगा और आकाशों और पृथ्वी का उत्तराधिकारी ईश्वर ही है और जो कर्म तुम करोगे ईश्वर को ज्ञात है (।८०)

جو لوگ اس کو خرچ کرنے میں بخل کریں گے جو مال ان کو اللہ نے دیا ہے وہ اس بخل کو اپنے حق میں اچھا نہ سمجھیں بلکہ ان کے لئے بُرا ہے وہ جس مال میں بخل کریں گے قیامت کے دن اس کا طوق بنا کر ان کی گردنوں میں ڈالا جائے گا۔ اور آسمانوں اور زمین کا وارث اللہ ہی ہے اور جو عمل تم کرو گے اللہ کو معلوم ہے (۱۸۰)

(जब उन धनी लोगों से राष्ट्र हित में अच्छा ऋण मांगा जाता है तो वह जो कहते है वह आयत में है) ईश्वर ने उन लोगों का कथन सुन लिया जो कहते है कि ईश्वर कंगाल है और हम धनी है वह जो कुछ कहते है हम उसको लिख रहे है और ईशदूतों से जो वह अनुचित लड़ते रहे है और वध का इरादा किया उसको भी (लिख रखेंगे) और (प्रलय के दिन) कहेंगे कि जलने वाले दण्ड का स्वाद चखो (।८१)

(جب ان سرمایہ داروں سے قومی ضروریات کے لئے قرض حسنہ مانگا جاتا ہے تو وہ جو کہتے ہیں وہ آیت میں ہے) اللہ نے ان لوگوں کا قول سن لیا جو کہتے ہیں کہ اللہ فقیر ہے اور ہم امیر ہیں وہ جو کچھ کہتے ہیں ہم اس کو لکھ رہے ہیں اور رسولوں سے جو وہ ناحق لڑتے رہے ہیں اور قتل کا ارادہ کیا اس کو بھی (لکھ رکھیں گے) اور (قیامت کے روز) کہیں گے کہ جلنے والے عذاب کا مزہ چکھو (۱۸۱)

यह उन कर्मों की यातना है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे है और ईश्वर तो बन्दों पर अत्याचार नही करता (।८२)

یہ ان کاموں کی سزا ہے جو تمہارے ہاتھ آگے بھیجتے رہے ہیں اور اللہ تو بندوں پر ظلم نہیں کرتا (۱۸۲)

(ऐ रसूल!) जो लोग यह कहते है कि ईश्वर ने हम को यह आदेश दिया है कि हम किसी ईशदूत पर उस समय तक विश्वास न लाएंगे जब तक वह हमारे पास ऐसी आहुति न लाए जिसे आग (आकर) खाले, उनसे कहो मुझ से पहले बहुत से ईशदूत तुम्हारे पास उज्ज्वल प्रमाण लेकर आए और जिस स्मृति (अर्थात भष्म होने वाली आहुति) का तुम उल्लेख कर रहे हो कथनानुसार तुम्हारे वह भी लाएें तो फिर तुम यदि सच्चे हो तो बताओ तुमने (और तुम्हारे बड़ों ने) उनसे झगड़ा और वध का इरादा क्यों किया (।८३)

(اے رسولؐ) جو لوگ یہ کہتے ہیں کہ اللہ نے ہم کو یہ حکم دیا ہے کہ ہم کسی رسول پر اس وقت تک ایمان نہ لائیں گے جب تک وہ ہمارے پاس ایسی قربانی نہ لائے جسے آگ (آکر) کھالے ان سے کہو مجھ سے پہلے بہت سے رسول تمہارے پاس روشن دلیلیں لے کر آئے اور جس نشانی (یعنی سوختنی قربانی) کا تم ذکر کررہے ہو بقول تمہارے وہ بھی لائے تو پھر تم اگر سچے ہو تو بتاؤ تم نے (اور تمہارے بڑوں نے) ان سے جھگڑا اور قتل کا ارادہ کیوں کیا؟ (۱۸۳)

नोट- सत्य यह है कि ऐसा चमत्कार जिसकी मांग वह कर रहे थे आहुति को अग्नि जला दे किसी ईशदूत को दी ही नही यदि दिया होता तो कुरआन में उल्लेख होता कि अमुक नबी को ऐसा चमत्कार दिया गया था और जब दिया गया था और लोग चाहते यही थे जो मुहम्मद स० से भी मांग कर रहे थे तो फिर वह लोग उन पहले नबियों से क्यों झगड़ते थे कथनानुसार वध भी करते थे उनको नही झगड़ना चाहिए था,

इसके विपरीत उनका झगड़ा मिलता है तो सिद्ध हुआ ऐसा

نوٹ:۔ حقیقت یہ ہے کہ ایسا معجزہ جس کی فرمائش وہ کررہے تھے قربانی کو آگ جلادے کسی نبی کو دیا ہی نہیں گر دیا ہوتا تو قرآن میں ذکر ہوتا کہ فلاں نبی کو ایسا معجزہ دیا گیا تھا اور جب دیا گیا تھا اور وہ لوگ چاہتے یہی تھے جو محمدؐ سے بھی مانگ کررہے تھے تو پھر وہ لوگ ان پہلے نبیوں سے کیوں جھگڑتے تھے بقول لوگوں کے قتل بھی کرتے تھے ان کو نہیں جھگڑنا چاہیے تھا

اس کے خلاف ان کا جھگڑا ملتا ہے تو ثابت ہوا ایسا کوئی معجزہ کسی نبی کو

कोई चमत्कार किसी ईशदूत को नही दिया गया था वह लोग मिथ्या वक्तव्य दे रहे थे और न ही यह ईश्वर की प्रथा है कि खाने की वस्तुओं को जलाकर भष्म करा दे और स्वयं प्रसन्न हो जबकि उसकी कमी से आदमी भूके मरें, अतः खाने की वस्तुओं को जलाना ही अनुचित है ईश्वर ने न आदेश दिया और न ही ऐसा कोई चमत्कार दिया,

यदि जलाना उचित होता और ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होती तो हज के अवसर पर जो आहुति होती है उनको अग्नि आकर जला दिया करती, परन्तु उस आहुति को तो ईश्वर ने यह कहा कि उसमें से खाओ और खिलाओ और दुनिया के किसी क्षेत्र में कही भी ऐसा नही होता कि अग्नि आकाश से आती हो और बलिदान को जला देती हो, अतः उनका कहना मिथ्या था जिसका खण्डन ईश्वर ने अपनी पुस्तक में कर दिया कि यदि यह बलिदान था कथनानुसार तुम्हारे तो तुम उसको देखकर ईशदूतों से क्यों झगड़ते थे, अतः यह आई नही, आयात (184) को देखो-

نہیں دیا گیا تھا.وہ لوگ غلط بیانی کرر ہے تھےاور نہ ہی یہ اللہ کا دستور ہے کہ کھانے کی چیزوں کو جلا کر خاک کرادے اور خود خوش ہو۔جب کہ اس کی کمی سے آدمی بھوکے مریں اس لئے کھانے کی چیزوں کو جلانا ہی غلط ہے اللہ نے نہ حکم دیا اور نہ ہی ایسا کوئی معجزہ دیا

اگر جلانا درست ہوتا اور اللہ کو خوشی حاصل ہوتی تو حج کے موقع پر جو قربانی ہوتی ہیں ان کو آگ آکر جلادیا کرتی مگر اس قربانی کو تو اللہ نے یہ کہا ہے کہ اس میں سے کھاؤ اور کھلاؤ.اور دنیا کے کسی خطے میں کہیں بھی ایسا نہیں ہوتا کہ آگ آسمان سے آتی ہو اور قربانی کو جلادیتی ہو اس لئے ان کا کہنا غلط تھا جس کی تردید اللہ نے اپنی کتاب میں کردی کہ اگر یہ قربانی تھی بقول تمہارے تو تم اس کو دیکھ کر نبیوں سے کیوں جھگڑے اس لئے یہ آئی نہیں.آیت ۱۸۴ کو دیکھو.

फिर अगर वह लोग तुम को झुटलाऐं तो तुम से पहले बहुत से रसूल खुली हुई स्मृत्ति और लिखित पृष्ठ और उज्ज्वल पुस्तकें लेकर आ चुके हैं और लोगों ने उनको सच्चा नही समझा (184)

پھر اگر وہ لوگ تم کو جھٹلائیں تو تم سے پہلے بہت سے رسول کھلی ہوئی نشانی اور صحیفے اور روشن کتابیں لےکر آچکے ہیں اورلوگوں نے ان کو سچا نہیں سمجھا (۱۸۴)

हर जीव को मुत्यू का स्वाद चखना है और तुम को प्रलय के दिन तम्हारे कर्मों का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा जो व्यक्ति नर्क की अग्नि से दूर रखा गया, और स्वर्ग मैं प्रविष्ट किया गया वह उद्देश्य को पहुंचा गया और दुनया का जीवन तो धोके का सामान है, (185)

ہر نفس کو موت کا مزا چکھنا ہے اور تم کو قیامت کے دن تمہارے اعمال کا پورا پورا بدلہ دیا جائے گا جو شخص دوزخ کی آگ سے دور رکھا گیا اور بہشت میں داخل کیا گیا وہ مراد کو پہنچ گیا اور دنیا کی زندگی تو دھوکے کا سامان ہے (۱۸۵)

(धर्म वालो!) तम्हारे माल व जान में तम्हारी परिक्षा की जाएगी और तुम उन लोगों से जिन को तुम से पहले पुस्तक दी गई थी और उन लोगों से जो अनेकश्वर वादी है बहुत से दुख देने वाली बाते सुनोगे तो यदि तुम धैर्य और संयम से काम लोगे तो यह बड़े साहस के कार्य है, (186)

(ایمان والو!) تمہارے مال و جان میں تمہاری آزمائش کی جائے گی اور تم ان لوگوں سے جن کو تم سے پہلے کتاب دی گئی تھی اور ان لوگوں سے جو شرک ہیں بہت سی ایذا کی باتیں سنو گے.تو اگر صبر اور پرہیزگاری کرتے رہو گے تو یہ بڑی ہمت کے کام ہیں (۱۸۶)

और जब ईश्वर ने उन लोगो से जिनको पुस्तक दी गई थी वचन लिया कि इसे स्पष्ट वर्णन करते रहना और इसको न छुपाना तो उन्होंने उसको पुष्ट पीछे फैंक दिया और उसके बदले थोड़ी सी कीमत प्राप्त की वह जो कुछ प्राप्त करते है बरा है, (187)

اور جب اللہ نے ان لوگوں سے جن کو کتاب دی گئی تھی اقرار لیا کہ اسے صاف صاف بیان کرتے رہنا اور اس کو نہ چھپانا تو انہوں نے اس کو پس پشت پھینک دیا اور اس کے بدلے تھوڑی سی قیمت حاصل کی وہ جو کچھ حاصل کرتے ہیں بُرا ہے (۱۸۷)

(ऐ इशदूत!) जो लोग अपनी गतिविधि से प्रसन्न है और चाहते है कि ऐसे कर्मों पर जो दूसरों से कहते है उनकी सराहना की जाए परन्तु उन्होंने कभी नही किए तुम उनके विषय में यह न समझना कि वह दण्ड से बच जाऐंगे (विश्वास करो) उन के लिए पीड़ा देने वाला कष्ट तैयार है, (188)

(اے رسول!) جو لوگ اپنی حرکتوں سے خوش ہیں اور چاہتے ہیں کہ ایسے کاموں پر جو دوسروں سے کہتے ہیں ان کے لئے تعریف کی جائے مگر انہوں نے کبھی نہیں کئے تم ان کے بارے میں یہ نہ سمجھنا کہ وہ عذاب سے بچ جائیں گے (یقین کرو) ان کے لئے دردناک عذاب تیار ہے (۱۸۸)

और आकाशो और पृथ्वी पर ईश्वर ही का राज्य है और ईश्वर हर वस्तु के माप और नियम निर्धारित करने वाला है, (189) {4:126-131-132}

اور آسمانوں اور زمین پر اللہ ہی کی بادشاہت ہے اور اللہ ہر چیز کے پیمانے اور قوانین مقرر کرنے والا ہے (۱۸۹)

[۱۳۲:۱۳۱:۱۲۶:۴]

आकाशो और पृथ्वी की उत्पत्ति में और रात्री दिन की विभिन्नता में बुद्धिमानों के लिए (बड़े ही) लक्षण है (190)

آسمانوں اور زمین کی پیدائش میں اور رات دن کے اختلاف میں عقلمندوں کے لئے (بڑی ہی) نشانیاں ہیں (۱۹۰)

नोट- इस आयत में आस्तिको को पृथ्वी आकाश की उत्पत्ति में और

نوٹ:۔اس آیت میں مومنوں کو زمین آسمان کی پیدائش اور دن رات کے گھٹنے

दिन रात के घटने बढ़ने में चिन्तन का आवाहन या आदेश दिया परन्तु इस कार्य को मुसलमान न कर सका इस कार्य को दूसरी जातियों ने किया और उन्होंने इस में चिन्तन से लाभ उठाया और विज्ञान में उन्नति की जो उन को काम दे रही है उन को बेशुमार जीविका मिल रही है,

उन के साथ यदि यह मुसलमान भी इस कार्य को करता तो इस की स्थिति भी ठीक रहती, और इस को भी बेहिसाब जीविका मिलती परन्तु इस ने कुरआन के इस आदेश की अवहेलना की और उस कार्य को किया जिस का आदेश न था, अर्थात यह कुरआन स्वर के साथ पढ़ने के लिए न है अपितु व्यवहार के लिए है, परन्तु कर्म न करते हुए न मालूम कितनी विधि बना ली और उन की शिक्षा इतनी अनिवार्य कर दी है कि उन के सामने कुरआन की वास्तविक्ता अंधकार में चली गई और समुदाय उन को जानता भी नही तो इन का सम्मान भी अन्धाकार में चला गया,

हां स्वर की प्रतियोग्यताएं अधिक होती हैं और पुरस्करित किया जाता है किन्तु यह याद रहे कुरआन क्रिया के लिए है कर्म करो और ठीक पढ़ो जैसे भाषा पढ़ी जाती है, मुहम्मद स० ने भी अपने कथन में चिन्तन को कहा है और ईश्वर का भी यही आदेश है, आयत 190 के साथ 191 और वह आयत जिन में चिन्तन कर के इस आयत के अर्थ को जाना जाए {21:33,31:16,36:38-40}

بڑھنے میں غور کی دعوت کا حکم دیا مگر اس کام کو مسلمان نہ کر سکا اس کام کو دوسری قوموں نے کیا اور انہوں نے اس میں غور وفکر سے فائدہ اٹھایا اور سائنس میں ترقی کی جو ان کو فائدہ دے رہی ہے اور ان کو بے شمار رزق مل رہا ہے۔

ان کے ساتھ اگر یہ مسلمان بھی اس کام کو کرتا تو اس کی حالت بھی ٹھیک رہتی اور اس کو بے حساب رزق ملتا مگر اس نے قرآن کے اس حکم سے صرف نظر کیا اور اُس کام کو کیا جس کا حکم نہ تھا یعنی یہ قرآن قرأت کے ساتھ پڑھنے کے لئے نہ ہے بلکہ عمل کے لئے ہے مگر عمل نہ کرتے ہوئے نہ معلوم کتنے طریقے ایجاد کئے اور آج ان کی تعلیم اتنی ضروری کردی ہے کہ ان کے سامنے قرآن کے حقائق تاریکی میں چلے گئے اور آج قوم ان کو جانتی بھی نہیں تو ان کی عزت بھی تاریکی میں چلی گئی.

ہاں قرأت کا مقابلہ خوب ہوتا ہے اور انعامات دیے جا رہے ہیں مگر یہ یاد رہے قرآن عمل کے لئے ہے عمل کرو اور درست پڑھو جیسے علم پڑھا جاتا ہے محمدؐ نے بھی اپنے فرمان میں غور کرنے کو کہا ہے اور اللہ کا بھی یہی حکم ہے آیت (۱۹۰) کے ساتھ (۱۹۱) اور وہ آیات جن میں غور کر کے اس آیت کے مطلب کو جانا جائے (۲۱:۳۳، ۳۱:۱۶، ۳۶:۳۸:۴۰)

बुद्धिमान वह लोग हैं जो खड़े बैठे लेटे हर दशा में ईश्वर को याद रखते हैं (अर्थात उसके नियम को) और आकाशों और पृथ्वी की रचना में चिन्तन करते हैं (कि यह कैसे बने किसने बनाए इनकी रचना का उद्देय क्या है, इस पर विचार करने से उन पर यह वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है कि किसी बहुत बड़े प्रबन्धक ने यह कार्यशाला बनाया है और किसी बड़े कार्य के लिये और पुकार उठते हैं) ऐ हमारे स्वामी! तूने यह बेकार और अकारण नही बनाया तेरा अस्तित्व पवित्र है (कि कोई बेकार कार्य करे) तू हमें नर्क में दण्ड से सुरक्षित रख (191) {3:201, 67:3,4}

اہل عقل وہ لوگ ہیں جو کھڑے بیٹھے لیٹے ہر حال میں اللہ کو یاد رکھتے ہیں (یعنی اس کے قانون کو) اور آسمانوں اور زمین کی تخلیق میں غور وفکر کرتے ہیں (کہ یہ کیسے بنے، کس نے بنائے ان کی تخلیق کا مقصد کیا ہے اس پر غور کرنے سے ان پر یہ حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ کسی بہت بڑے مدبر نے یہ کارخانہ بنایا ہے اور کسی بڑے کام کے لئے اور وہ پکار اٹھتے ہیں) اے ہمارے پروردگار! تو نے یہ بے کار اور عبث نہیں بنایا تیری ذات پاک ہے (کہ کوئی بے کار کام کرے) تو ہمیں دوزخ کے عذاب سے محفوظ رکھ (۱۹۱) [۲:۲۰۱، ۶۷:۳،۴]

ऐ स्वामी जिसको तेरे नियम ने नर्क में प्रविष्ट किया वह अपमानित हुआ और अत्याचारियों का कोई सहायक नही (192) {42:30}

اے پروردگار جس کو تیرے قانون نے دوزخ میں داخل کیا وہ رسوا ہوا اور ظالموں کا کوئی مددگار نہیں (۱۹۲) [۴۲:۳۰]

(ऐ स्वामी हमने एक सम्बोधन करने वाले को सुना कि धर्म के लिए संवाद कर रहा है कि अपने स्वामी पर आस्था लाओ और हम आस्था लाए ऐ स्वामी हमारे दोषों को ढ़ांप ले और दूर कर हमारी दुर्दशा को हम से और हमको दुनिया से सदाचारी भक्तों के साथ मृत्यु दे (193)

ऐ स्वामी तूने जिन वस्तुओं का हम से अपने ईशदूतों के द्वारा वचन किए हैं वह हमें प्रदान कर और प्रलय के दिन हमें अपमानित न करना निःसन्देह तू वचन के विरुद्ध नही करता (194) {20:118,119, 6:34,115, 10:64, 18:27}

اے پروردگار ہم نے ایک ندا کرنے والے کو سنا کہ ایمان کے لئے پکار رہا ہے کہ اپنے پروردگار پر ایمان لاؤ تو ہم ایمان لائے اے پروردگار ہمارے قصوروں کو ڈھانپ لے اور دور کر ہماری بدحالیوں کو ہم سے اور ہم کو دنیا سے نیک بندوں کے ساتھ فوت کر (۱۹۳)

اے پروردگار تو نے جن چیزوں کے ہم سے اپنے رسولوں کے ذریعہ وعدے کئے ہیں وہ ہمیں عطا فرما اور قیامت کے دن ہمیں رسوا نہ کرنا بے شک تو وعدہ خلاف نہیں کرتا (۱۹۴) [۲۰:۱۱۸، ۱۱۹، ۶:۳۴، ۱۱۵، ۱۰:۶۴، ۱۸:۲۷]

तो उनके स्वामी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की (कहा) कि मैं किसी कर्म करने वाले के कर्म को पुरुष हो या स्त्री नष्ट नही करता, तुम एक दूसरे की जाति से हो तो जो लोग मेरे लिए देश छोड़ गए और सताए गए और लड़े और वध किए गए मैं उनकी दुर्दशा दूर कर दूंगा और उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करूंगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं यह

تو ان کے پروردگار نے ان کی دعا قبول کرلی (فرمایا) کہ میں کسی عمل کرنے والے کے عمل کو مرد ہو یا عورت ضائع نہیں کرتا تم ایک دوسرے کی جنس ہو تو جو لوگ میرے لئے وطن چھوڑ گئے اور اپنے گھروں سے نکالے گئے اور ستائے گئے اور لڑے اور قتل کئے گئے میں ان کی بدحالیاں دور کردوں گا۔ اور ان کو بہشتوں میں داخل کروں گا جن کے

ईश्वर की ओर से अच्छा बदला है और ईश्वर की ओर से अच्छा फल है (195) {8:7,8,30, 3:195, 33:10 (13:95 दुर्दशा) 5:12 उपवनों में प्रवेश} (22:39 से 41)

نیچے نہریں بہ رہی ہیں یہ اللہ کی طرف سے بدلہ ہے اور اللہ کی طرف سے اچھا بدلہ ہے (۱۹۵) [۸:۳۰،۷،۸، ۳:۱۹۵، ۳۳:۱۰) (۱۳:۲۵ بد حالیاں) (۵:۱۲ باغوں میں داخلہ)[۲۲:۳۹تا۴۱]

नास्तिकों का नगरों में चलना फिरना अर्थात उनकी वैभव ऐ ईशदूत तुझे धोके में न डाल दे (196)
(यह दुनिया का वैभव) थोड़ा लाभ है (प्रलोक में) तो उनका स्थान नर्क है और वह बुरा स्थान है (197)
किन्तु जो लोग अपने ईश्वर से डरते रहे उनके लिए उपवन है जिनके नीचे नहरें बह रही है (और) उनमें सदैव रहेंगे यह ईश्वर की ओर से अतिथि सत्कार है और जो ईश्वर के यहां से है वह सदाचारियों के लिए बहुत अच्छा है (198)
और कतिपय ग्रन्थ वाले ऐसे भी है जो ईश्वर पर और उस (पुस्तक) पर जो तुम पर अवतरित हुई है और उस पर जो उन पर अवतरित हुई विश्वास रखते है और ईश्वर के आगे नम्रता करते है और ईश्वर की आयतों के बदले थोड़ा सा मूल्य नही लेते वही लोग है जिनका फल उनके ईश्वर के यहां है और ईश्वर शीघ्र लेखा जोखा लेने वाला है (199) {3:113, 5:83,85, 42:13, 26:196, 42:41, 28:52,53}

کافروں کا شہروں میں چلنا پھرنا یعنی ان کی شان وشوکت اے رسول تجھے دھوکا نہ دے (۱۹۶)
(یہ دنیا کی شان وشوکت) تھوڑا فائدہ ہے پھر (آخرت میں تو ان کا ٹھکانا دوزخ ہے اور وہ بُری جگہ ہے (۱۹۷)
لیکن جو لوگ اپنے پروردگار سے ڈرتے رہے ان کے لئے باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہ رہی ہیں (اور) اُن میں ہمیشہ رہیں گے یہ اللہ کی طرف سے مہمانی ہے اور جو اللہ کے یہاں سے ہے وہ نیکوکاروں کے لئے بہت اچھا ہے (۱۹۸)
اور بعض اہل کتاب ایسے بھی ہیں جو اللہ پر اور اس (کتاب) پر جو تم پر نازل ہوئی اور اس پر جو ان پر نازل ہوئی ایمان رکھتے ہیں اور اللہ کے آگے عاجزی کرتے ہیں اور اللہ کی آیتوں کے بدلے تھوڑی سی قیمت نہیں لیتے وہی لوگ ہیں جن کا صلہ ان کے پروردگار کے یہاں ہے اور اللہ جلد حساب لینے والا ہے (۱۹۹) [۳:۱۱۳، ۵:۸۳تا۸۵، ۴۲:۱۳، ۲۶:۱۹۶، ۴۲:۴۱، ۲۸:۵۲، ۵۳]

नोट- शीघ्र लेखा जोखा लेने से क्या अर्थ है? बहुत कहते है जो मर गया उसका तुरन्त हिसाब हो गया परन्तु यह विश्वास ठीक नही है लेखा महाप्रलय में होगा, आयात अंकित की जा रही है जो इनमें है उसको ही शीघ्र लेखा लेना कहा गया है {23:15,16, 80:18से22, 34:7,8, 23:82, 37:15से18, 17:49से51, 20:55, 56:45से50}

نوٹ:۔(۱) حساب جلد لینے سے کیا مراد ہے؟ بہت کہتے ہیں جو مرگیا اس کا فوراً حساب ہوگیا. مگر یہ عقیدہ ٹھیک نہیں ہے. حساب قیامت میں ہوگا آیات نوٹ کی جا رہی ہیں جو ان میں ہے اس کو ہی جلد حساب لینا کہا گیا ہے [۲۳:۱۵، ۱۶، ۸۰:۱۸تا۲۲، ۳۴:۷، ۸، ۲۳:۸۲، ۳۷:۱۵تا۱۸، ۱۷:۴۹تا۵۱، ۲۰:۵۵، ۵۶:۴۵تا۵۰]

(2) लेखा कर्म पत्र से होगा कैसे और वह कहां रखा जा रहा है, आयतें नोट है- 17:13,14, 18:49, (83:1से9 सिज्जीयीन) (83:18से20 इल्लीयीन)

(۲) حساب نامہ اعمال سے ہوگا کیسے اور وہ کہاں رکھا جا رہا ہے آیتیں نوٹ ہیں [۱۷:۱۳، ۱۴، ۱۸:۴۹] (۸۳:۱تا۹ سجین) (۸۳:۱۸تا۲۰ علیین)

(किन्तु यह सब कुछ उस समाज में हो सकता है जिसमें सम्पूर्ण व्यक्तियों की दशा यह हो कि) वह अपनी व्यवस्था पर अत्यन्त दृढ़ पग से स्थापित रहें आपस में एक दूसरे की दृढ़ता का कारण बनें, विरोधियों के सम्मुख दृढ़ता दिखाऐं अपनी रक्षा का पूर्ण सामान रखें, आपस में सम्पर्क रखें, जो उद्देश्य सामने हो उसके प्राप्त करने में बराबर प्रयत्न करें और ईश्वर की अवज्ञा से बचें तब सफलता है (200)
एकाकी एक आदमी दुनिया में कोई बड़ा उद्देश्य लाभ दायक कार्य करने के योग्य नही होता चाहे वह कितना ही योग्य क्यों न हो, हां उसके साथ कुछ सदाचारी और कुरआन के अनुसार आस्था वाले लोगो के मन में भी एक स्वर और सहमत हो जाएं तो सफलता व सुधार के महान कार्य किए जा सकते है और किए गए है, यह स्पष्ट रहे कि बेमेल कुछ वस्तुओं को आपस में जोड़ देना रचना नही उचित ढंग से जोड़ना रचना है अनुचित ढंग से शब्दों को आपस में जोड़ ने से कोई उचित अर्थ का वाक्य नही बनता और कुछ मिथ्या वाक्यों को अनुचित शैली में मिला, कोई ठीक व अर्थवाला निबन्ध नही बनता और एक दूसरे से सम्बन्ध न

(لیکن یہ سب کچھ اس معاشرہ میں ہو سکتا ہے جس میں تمام افراد کی کیفیت یہ ہو کہ) وہ اپنے نظام پر نہایت ثابت قدمی سے قائم رہیں آپس میں ایک دوسرے کی استقامت کا سبب بنیں مخالفین کے مقابلہ میں استقامت دکھائیں اپنی حفاظت کا پورا سامان رکھیں آپس میں ربط رکھیں. جو مقصد سامنے ہو اس کے حاصل کرنے میں مسلسل کوشش کریں اور اللہ کی نافرمانی سے بچیں تب کامیابی ہے (۲۰۰)
نوٹ:۔ تنہا ایک آدمی دنیا میں کوئی بڑا مقصد و نفع بخش کام کرنے کے قابل نہیں ہوتا چاہے وہ کتنا ہی قابل کیوں نہ ہو. ہاں اس کے ساتھ کچھ اور نیک اور قرآن کے مطابق عقیدے والے لوگوں کے دل بھی ہم آہنگ اور متفق ہو جائیں تو فلاح واصلاح کے عظیم کارنامے انجام دیے جا سکتے ہیں اور دیے گئے ہیں. یہ واضح رہے کہ بے ربط چند چیزوں کو باہم جوڑ دینا تالیف نہیں. مناسب طور سے جوڑنا تالیف ہے. غیر مناسب طور سے لفظوں کو باہم جوڑ دینے سے کوئی بامعنی جملہ نہیں بنتا. اور چند غلط جملوں کو نا مناسب انداز میں ملا دینے سے کوئی صحیح و بامعنی مضمون

रखने वाले निबन्धो को एक जगह कर देने से पुस्तक आस्तिक में नही आ जाती यदि अनुचित निबन्धो को जोड़ कर एक पुस्तक बना दी गई तो वह उद्देश्य रहित होगी,

इसी प्रकार कुछ लोगो को जिन के विश्वास विभिन्न हों को अनुचित ढंग में जोड़ देने से उन के मध्य एकता व मेल प्रकट नही होता सामायिक तौर पर वह अवश्य एक प्रतीत होते हैं परन्तु वास्तव में सहमत नही होते फिर उन में वही पथिक मतभेद उभर आता है, इस लिए वास्तिविक सहमति तब ही हो सकती है जब एक पंथ कुरआन के अनुसार हो,

नोट- इस सूरत के अन्त में कुछ इसकी विशेष बातें संक्षिप्त में लिखी जा रही हैं-

1) कुरआन में दो प्रकार की आयतें हैं सुदृढ़ और अनुरूप, अनुरूप का ज्ञान ईश्वर जानता है और वह भी जो ज्ञान मं परिपक्व है (3:7)

2) धर्म केवल इसलाम है अर्थात शान्ति (3:19)

3) लोगों को ईश्वर की पुस्तक की ओर बुलाया जाता है परन्तु नही आते (3:23)

4) सम्मान और अपमान उसको मिलता है जो अपने कर्मों से चाहता है और जीविका बेहिसाब भी व्यक्ति के श्रम पर मिलती है (3:26,27)

5) ईशदूत के अनुकरण से क्या अर्थ है (3:31)

6) रिजक (जीविका) का अर्थ जप भी है (3:37)

7) महामना ज़करिया की प्रार्थना और ईश्वर का पुरस्कार (3:38से40)

8) श्रीमान ज़करिया को मरयम का पोषक बनाना (3:44)

9) महामना ईसा के द्वारा मुर्दे जीवित होना और उनकी मृत्यु और उत्पत्ति (3:49)

10) मुबाहिका की उचित स्थिति (3:61)

11) एकता अनिवार्य है (3:103)

12) यहूद पर तिरस्कार क्यों हो गया (3:112)

13) पुस्तक वालों की दशा की सूचना (3:113)

14) फरिश्तों की सहायता के विषय में (3:126)

15) आस्तिकों में रसूल का आना तो उस समय आस्तिक और भी थे (3:164)

16) शीघ्र लेखा लेने के बारे में (3:199)

17) लेखा कर्म पत्र से होगा (3:199)

18) विशेषता के साथ युद्ध के नियम कि युद्ध कैसे जीता और हारा जाता है और इजन का अर्थ क्या है, जब इजन के अनुसार कार्य किया तो विजय हो गई, जब इजन के विपरीत कार्य कियचा तो पराजय हो गई? इजन का अर्थ है समय के अनुसार जंगी सामग्री रखना और अपने नेता की आज्ञा पालन करन और यही नियम है जिसको ईश्वर ने इजन कहा है कही अमर कहा है और कही ईश्वर ही कहा है, किन्तु हर स्थान पर तात्पर्य नियम है,

{सूरतुन्निसा मदनिया}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

लोगो! अपने स्वामी (की अवज्ञा) से डरो जिसने तुम को अकेली जान से उत्पन्न किया (और वह इस प्रकार कि उसी जाति अर्थात उसी सतसार मिट्टी से) उसी मिट्टी से उसका जोड़ा (हव्वा) को उत्पन्न किया और (केवल) उन दोनों से बहुत से पुरुष व स्त्री दुनिया में फैला दिए और उस ईश्वर के विधान के

نہیں بنتا۔اور ایک دوسرے سے مناسبت نہ رکھنے والے مضامین کو یکجا کر دینے سے کتاب وجود میں نہیں آجاتی۔اگر نامناسب مضمون کو جوڑ کر ایک کتاب بنادی گئی تو وہ بے مقصد ہوگی۔

اسی طرح چند لوگوں کو جن کے عقائد مختلف ہوں کو نامناسب انداز میں جوڑ دینے سے ان کے درمیان وحدت وہم آہنگی نمودار نہیں ہوتی۔وقتی طور پر وہ ضرور متحد نظر آتے ہیں لیکن حقیقت میں متفق نہیں ہوتے پھر ان میں وہی نظریاتی اختلاف ابھر آتا ہے اس لئے حقیقی اتحاد تب ہی ہو سکتا ہے جب ایک عقیدہ قرآن کے مطابق ہو۔

نوٹ:۔اس سورت کے آخر میں کچھ اس کی خاص باتیں مختصر لکھی جا رہی ہیں۔

(۱)قرآن میں دو طرح کی آیات ہیں محکمات اور متشابہات۔متشابہات کا علم اللہ جانتا ہے اور وہ بھی جو علم میں راسخ ہیں (۳:۷)

(۲)دین صرف اسلام ہے یعنی سلامتی (۳:۱۹)

(۳)لوگوں کو کتاب اللہ کی طرف کو بلایا جاتا ہے نہیں آتے (۳:۲۳)

(۴)عزت وذلت اس کو ملتی ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے اور رزق بے حساب بھی آدمی کی محنت پر ہے (۳:۲۶،۲۷)

(۵)اتباع رسول سے کیا مراد ہے (۳:۳۱)

(۶)رزق بمعنیٰ وضیفہ ذکر بھی ہے

(۷)حضرت زکریا کی دعا اور اللہ کا انعام (۳:۳۸ تا ۴۰)

(۸)حضرت زکریا کو مریم کا کفیل بنانا (۳:۴۴)

(۹)حضرت عیسیٰ کے ذریعہ مردے زندہ ہونا اور ان کی وفات اور پیدائش (۳:۴۹)

(۱۰)مباہلہ کی صحیح نوعیت (۳:۶۱)

(۱۱)اتحاد ضروری ہے (۳:۱۰۳)

(۱۲)یہود پر ذلت کیوں طاری ہوئی (۳:۱۱۲)

(۱۳)اہل کتاب کی حالت کی خبر (۳:۱۱۳)

(۱۴)فرشتوں کی مدد کے بارے میں (۳:۱۲۶)

(۱۵)مومنوں میں رسول کا آنا تو اس وقت مومن اور بھی تھے (۳:۱۶۴)

(۱۶)جلد حساب لینے کے بارے میں (۳:۱۹۹)

(۱۷)حساب نامہ اعمال سے ہوگا (۳:۱۹۹)

(۱۸)خاص طور سے جنگ کے قانون کہ جنگ کیسے جیتی اور ہاری جاتی ہے اور اذن کا مطلب کیا ہے جب اذن کے مطابق کام کیا تو جیت ہوگئی جب اذن کے خلاف کام کیا تو ہار ہوگئی؟اذن کا مطلب ہے زمانے کے مطابق جنگی سامان رکھنا اور اپنے امیر کی اطاعت کرنا۔اور یہی قانون ہے جس کو اللہ نے اذن کہا ہے کہیں امر کہا ہے اور کہیں اللہ ہی کہا ہے۔لیکن ہر جگہ پر مراد قانون ہے۔

[سورۃ النساء مدنی]

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

لوگو! اپنے رب (کی نافرمانی) سے ڈرو جس نے تم کو اکیلی جان سے پیدا کیا (اور وہ اس طرح کہ اسی جنس سے یعنی اسی ست جوہر مٹی سے) اسی جنس مٹی سے اس کا جوڑا (حوا) کو پیدا کیا اور (صرف) ان دونوں سے بہت سے مرد وعورت دنیا میں پھیلا دئے اور اس اللہ کے قانون کی مخالفت سے ڈرو

विरोध से डरो जिसके नाम से प्रश्न करते हो और सम्बन्धियों के विषय में दुर्व्यवहार से संयम करो, याद रखो ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों को देख रहा है (1)

नोट- "वख़लाक़ा मिन्हा ज़ोजाहा" का जो अनुवाद किया गया है उसका प्रमाण यह है कि-

(30:31) और उसकी स्मृत्तियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से तुम्हारी ही जैसी पत्नीयां (जोड़े साथी) बनाई ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे मध्य प्रेम और करूणा उत्पन्न कर दी,

(36:36) पवित्र है वह अस्तित्व जिसने समस्त प्रकार के जोड़े उत्पन्न किए चाहे वह भूमि की वनस्पति में से हो या स्वयं उनकी अपनी प्रकार (अर्थात मानव) में से या उन वस्तुओं में से जिनको जानते तक नही,

(51:49) और हर वस्तु को हमने जोड़े जोड़े बनाया ताकि तुम शिक्षा पकड़ो,

(92:3) और वह जिसने नर व नारी उत्पन्न किए {43:12, 41:49, 78:8, 26:7, 35:11, 51:49, 42:71, 42:11}

(2:35) फिर हमने आदम से कहा तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों स्वर्ग में रहो और यहां आराम से जो चाहो खाओ मगर इस शजर के पास न जाना अन्यथा अत्याचारियों में गिनती होगी,

(53:45) और यह कि उसी ने जोड़ा अर्थात नर व नारी उत्पन्न किया है

आयात उपरोक्त से प्रमाणित होता है कि जब आदम को जिस मिट्टी जिन्स से बनाया तब ही हव्वा को बनाया क्योंकि (30:21, 36:36, 51:49, 53:45, 92:3 आदि) में स्पष्ट उल्लेख है कि हर वस्तु का जोड़ा जोड़ा बनाया तो मानव वंश में भी जोड़ा जोड़ा बनाया और वह है आदम व हव्वा, इसके बाद (2:35) में है कि आदम व हव्वा को ईश्वर ने स्वर्ग उपवन में प्रविष्ट होने का आदेश दिया वह एक साथ दिया, उससे सिद्ध हुआ कि आदम व हव्वा और जोड़ों की भांति एक साथ उत्पन्न किए गए

इसके विपरीत जो आस्था बनी हुई है कि श्रीमती हव्वा को उपवन में उस समय उत्पन्न किया जब आदम उपवन (स्वर्ग) में प्रविष्ट हो गए थे और वहां अकेले उदास रहते थे तब आदम की पसली से हव्वा को बनाया, अपने जोड़े से मिलकर आदम की उदासी दूर हो गई, परन्तु यह आस्था आयात कुरआनी के प्रकाश में मिथ्या है उचित बात यह है कि आदम व हव्वा एक ही जाति मिट्टी से उत्पन्न किए गए और एक साथ ही उपवन में प्रविष्ट किए

उत्पत्ति मानव वंश

कुरआन कहता है कि मानव वंश की उत्पत्ति मिट्टी से हुई, परन्तु कुछ व्यक्तियों का कथन है कि इसका आरम्भ पानी से हुआ पहले जरसूमा बना फिर उन्नति करके बन्दर बना और फिर बन्दर से इन्सान देखा जाए

(1) पहले अहले कुरआन पंथ का दृष्टिकोण का अवलोकन हो जो अपने को निर्मल आस्तिक और कुरआन का मानने वाला कहता है "4-अब चूंकि 'नफ्स वाहिदातिन' से अर्थ जीवन का कीटाणु है जिसमें पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों प्रकार के गुण उपस्थित है और जिससे पहली बार धरती से बहुत से नर और बहुत सी नारी उत्पन्न की गई थी, अतः मिन्हा तसनिया (दो) से अर्थ जिंस जोड़ा है रिवायात का बताया हुआ वह एक जोड़ा नही है" संदर्भ तफ्सीर कुरआन बिल कुरआन लन तनालू-4 निसा पेज-178,

एक नर और एक नारी से मानव वंश का आरम्भ कुरआन से स्पष्ट है और अहले कुरआन की दृष्टि में इसका नाम रवायत है तो क्या अहले कुरआन की दृष्टि में कुरआन में अंकित सत्य रवायत है?

جس کے نام سے سوال کرتے ہو۔ اور قرابت داری کے معاملہ میں بدسلوکی سے پرہیز کرو۔ یاد رکھو اللہ تمہارے سب اعمال کو دیکھ رہا ہے۔(۱)

نوٹ:۔[وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا] کا جو ترجمہ و مفہوم اختیار کیا ہے اس کی دلیل یہ ہے کہ.....

(۳۰:۲۱) اور اس کی نشانیوں میں سے یہ ہے کہ اس نے تمہارے لئے تمہاری ہی جنس سے تمہاری ہی جیسی بیویاں (جوڑے ساتھی) بنائیں تاکہ تم ان کے پاس سکون حاصل کرو اور تمہارے درمیان محبت اور رحمت پیدا کردی۔

(۳۶:۳۶) پاک ہے وہ ذات جس نے جملہ اقسام کے جوڑے پیدا کئے خواہ وہ زمین کی نباتات میں سے ہوں یا خود ان کی اپنی جنس (یعنی نوع انسانی) میں سے یا ان اشیاء میں سے جن کو وہ جانتے تک نہیں۔

(۵۱:۴۹) اور ہر چیز کو ہم نے جوڑے جوڑے بنایا تاکہ تم نصیحت پکڑو۔

(۹۲:۳) اور وہ جس نے نر اور مادہ پیدا کئے [۴۳:۱۲، ۴۱:۴۹، ۷۸:۸، ۲۶:۷، ۳۵:۱۱، ۵۱:۴۹، ۴۲:۱۱، ۷۸:۸]

(۲:۳۵) پھر ہم نے آدم سے کہا تم اور تمہاری بیوی دونوں جنت میں رہو۔ اور یہاں بفراغت جو چاہو کھاؤ مگر اس شجر کا رخ نہ کرنا ورنہ ظالموں میں شمار ہوگا۔

(۵۳:۴۵) اور یہ کہ اسی نے جوڑا یعنی نر و مادہ پیدا کیا ہے۔

آیات بالا سے ثابت ہوتا ہے کہ جب آدمؑ کو جس مٹی جنس سے بنایا تب ہی حوا کو بنایا کیوں کہ (۳۰:۲۱، ۳۶:۳۶، ۵۱:۴۹، ۵۳:۴۵، ۹۲:۳) وغیرہ میں صاف لکھا ہے کہ ہر چیز کا جوڑا جوڑا بنایا تو نسل انسانی میں بھی جوڑا جوڑا بنایا اور وہ ہے آدم و حوا اس کے بعد (۲:۳۵) میں ہے کہ آدم و حوا کو اللہ نے جنت میں داخل ہونے کا حکم دیا وہ ایک ساتھ دیا۔ اس سے ثابت ہوا کہ آدم و حوا اور جوڑوں کی طرح ایک ساتھ پیدا کئے گئے۔

اس کے خلاف جو عقیدہ بنا ہوا ہے کہ حضرت حوا کو جنت میں اس وقت پیدا کیا جب آدم جنت میں داخل ہو گئے تھے اور وہاں اکیلے اداس رہتے تھے تب آدم کی پسلی سے حوا کو بنایا۔ اپنے جوڑے سے مل کر آدم کی اداسی دور ہو گئی۔ مگر یہ عقیدہ آیات قرآنی کی روشنی میں غلط ہے۔ ٹھیک بات یہ ہے کہ آدم و حوا ایک ہی جنس مٹی سے پیدا کئے گئے اور ایک ساتھ ہی جنت میں داخل کئے۔

[پیدائش نسل انسانی]

قرآن کہتا ہے کہ نسل انسانی کی پیدائش مٹی سے ہوئی مگر کچھ آدمیوں کا کہنا ہے کہ اس کی شروعات پانی سے ہوئی۔ پہلے جرثومہ بنا پھر ترقی کر کے بندر بنا اور پھر بندر سے انسان دیکھا جائے

(۱) پہلے اہل قرآن فرقہ کا نظریہ ملاحظہ ہو۔ جو اپنے کو خالص مومن قرآن کا ماننے والا کہتا ہے "۴۔ اب چونکہ [نفس واحدۃ] سے مراد جرثومہ حیات ہے جس میں مذکر اور مونث دونوں صنفوں کے خواص موجود ہیں۔ اور جس سے پہلی مرتبہ زمین سے بہت سے مرد اور بہت سی عورتیں پیدا کی گئی تھیں۔ اس لئے منھما تثنیہ سے مراد جنس جوڑا ہے روایات کا بتایا ہوا وہ ایک جوڑا نہیں ہے" حوالہ تفسیر القرآن بالقرآن لن تنالو(۴) نساء ۱۷۸

ایک مرد اور ایک عورت سے نسل انسانی کی شروعات قرآن سے ظاہر ہے اور اہل قرآن فرقہ اس کا نام روایات رکھتا ہے تو کیا اہل قرآن کی نظر میں قرآن میں درج حقیقت روایت ہے؟ تفصیل اپنے مقام پر درج ہوگی۔ پہلے ایک

مولوی محمد اور علماء سائنس کا نظریہ بھی ملاحظہ ہو۔جس سے متاثر ہو کر اہل قرآن ومولوی محمد اور دوسرے کچھ بے علم انسان گمراہ ہو گئے اور ان لوگوں کو قرآن میں تحریف کرنے کا جواز مل گیا۔

سیدھی سی بات یہ ہے کہ انسان اس زمین پر کروڑوں بلکہ اربوں سال سے ارتقائی منزلیں طے کرتا ہوا انسانیت کے درجہ پر پہنچا۔اور ارد گرد کی چیزوں کے نام بولنے لگا۔ابھی اس نے پورے جملے بولنا نہیں سیکھا تھا تب اللہ نے اس کو زمین پر اپنا خلیفہ بنایا انسان کی ارتقائی منازل کا خلاصہ یہ ہے کہ

(۱)سب سے پہلے پانی میں امیبا پیدا ہوا اللہ فرماتا ہے [وجعلنا من الماء کل شیء حئی] (الانبیاء-۳۰)ہم نے ہر زندہ شے کو پانی سے بنایا۔[واللہ خلق کل دابہ من ماء] (النور-۴۵)اللہ نے ہر دابہ (زمین پر رینگنے والے اور چلنے والے جانور) کو پانی سے پیدا کیا (ان دونوں آیتوں کا ترجمہ غلط لکھا گیا ہے) علماء سائنس کا بھی یہ خیال ہے کہ سب سے پہلے زندگی کی حرکت پانی میں (امیبا) کی شکل میں نمودار ہوئی اور پھر کیچڑ اور سڑے گارے سے کائی اور چھوٹے چھوٹے پودے پیدا ہوئے۔قرآن میں جا بجا کہا گیا کہ ہم نے سڑے گارے سے انسان کو پیدا کیا پھر یہ بھی فرمایا کہ [واللہ انبتکم من الارض نباتا-۷۱:۱۷]

لوگو! اللہ نے تم کو زمین سے پودا بنا کر اگایا (ترجمہ غلط ہے) پھر زمین کی سطح پر جانوروں اور پرندوں کی تخلیق ہوئی یہ جانور ارتقائی منزلیں طے کرتے ہوئے انسانیت کے اعلیٰ مرتبہ تک پہنچے۔چنانچہ اللہ فرماتا ہے [وقد خلقکم اطوارا-۷۱:۱۴] اور ہم نے تم کو مختلف مدارج میں پیدا کیا (۱۲:۲۳،۱۶)

ان تمام مدارج میں انسان مختلف شکلوں میں موجود تھا۔پانی میں امیبائی شکل میں کیچڑ میں کائی گاس۔پودا کیڑے مکوڑے چھوٹے جانور بڑے جانور کی شکل اگرچہ یہ ساری شکلیں انسانی شکلیں نہ تھیں لیکن انسان ابتدائی مراحل میں کسی نہ کسی شکل میں موجود تھا اگرچہ اس کو انسان نہیں کہا جا سکتا تھا؟ قرآن تائید کرتا ہے [ھل اتی علی الانسان حین من الدھر لم یکن شیئا مذکورا] (الدھر)

انسان پر ایسا زمانہ بھی گزرا ہے جب وہ قابل ذکر چیز نہ تھا وہ زمانہ آدم سے پہلے کا تھا۔(حوالہ انوار القرآن جلد اوّل ۲۰،۲۱، ۲:۳۰-مولوی محمد)

اوپر مضمون میں پڑھ چکے ہیں اور اگرچہ اس کو انسان نہیں کہا جا سکتا تھا قرآن تائید کرتا ہے لیکن قرآن تائید انسان کی کر رہا ہے کہ انسان پر ایک زمانہ ایسا گزرا ہے.....اس لئے موصوف کا لکھنا اور دلیل غلط ہے چونکہ موصوف اس حالت کو انسان نہیں تسلیم کر رہا کیا تسلیم کر رہا ہے مضمون میں لکھا ہے ملاحظہ ہو۔

اب وہ لکھا جا رہا ہے جو قرآن میں ہے ملاحظہ ہو۔

(۱۵:۲۶)اور ہم نے انسان کو بجتی ہوئی مٹی سے جو کہ سڑے ہوئے گارے کی بنی تھی پیدا کیا۔

(۱۵:۲۷)اور جن کو اس کے قبل آگ سے کہ وہ ایک گرم ہوا تھی پیدا کر چکے تھے

(۱۵:۲۸)اور جب کہا تیرے رب نے فرشتوں کو میں بناؤں گا ایک بشر کھنکھناتے سنے گارے سے۔

(۲۳:۱۲)اور ہم نے پیدا کیا (خلقنا) انسان کو مٹی کے جوہر (ست) سے

(۲۳:۱۳)پھر رکھا اس کو بوند کر کے جمے ٹھہراؤ میں

विस्तार अपने स्थान पर अंकित होगा. पहले एक मौलवी मुहम्मद और विज्ञान के पंडितों का दृष्टिकोण का भी अवलोकन हो, जिससे प्रभावित होकर अहले कुरआन व मौलवी मुहम्मद और दूसरे कुछ ज्ञान रहित व्यक्ति पथ भ्रष्ट हो गए और उन लोगों को कुरआन में परिवर्तन करने का औचित मिल गया.

सीधी सी बात है कि इन्सान इस पृथ्वी पर करोड़ों अपितु अरबों वर्ष से प्रगतिशील पड़ाव तै करता हुआ इन्सानियत के पद पर पहुंचा और आस-पास की वस्तुओं के नाम बोलने लगा, अभी उसने पूरे पूरे वाक्य बोलना नही सीखा था तब ईश्वर ने उसको पृथ्वी पर अपना स्थानापन्न बनाया, इन्साने के प्रगतिशील पड़ाव का सारांश यह है कि

1) सबसे पहले पानी में अमीबा उत्पन्न हुआ, ईश्वर कहता है (हमने हर जीवित वस्तु को पानी से बनाया अल अम्बिया-30)

ईश्वर ने हर दाबाह (धरती पर रेंगने वले और चलने वाले जानवर) को पानी से रचा (इन दोनों आयतों का अनुवाद मिथ्या लिखा गया है) विज्ञान के पंडितों का भी यही विचार है सबसे पहले जीवन की गति पानी में अमीबा के रूप में प्रकट हुई और फिर कीचड़ और सड़े गारे से काई और छोटे छोटे पौदे उत्पन्न हुए

कुरआन में यत्र तत्र कहा गया है कि हमने सड़े गारे से इन्सान को उत्पन्न किया फिर यह भी कहा कि लोगो! तुम को ईश्वर ने भूमि से पौधा बनाकर उगाया (71:17) (अनुवाद मिथ्या है) फिर धरती के धरातल पर पशु और पक्षियों की उत्पत्ति हुई यह जीवधारी उन्नति करते करते इन्सानियत के उच्च पद तक पहुंचे, अतः ईश्वर कहता है "और हमने तुम को विभिन्न श्रेणी में उत्पन्न किया 23:12से16"

इन सब श्रेणी में इन्सान विभिन्न रूपों में विद्यमान था, पानी में अमीबाई रूप में कीचड़ में काई घास पौधा कीड़े मकोड़े छोटे जानवर बड़े जानवर की आकृति में यद्यपि यह सारी आकृति इन्सानी आकृति न थी परन्तु इन्सान प्रारम्भिक चरण में किसी न किसी रूप में विद्यमान था, यद्यपि उसको इन्सान नहीं कहा जा सकता, कुरआन समर्थन करता है,

इन्सान पर ऐसा समय भी गमन हुआ है जब वह वर्णनीय वस्तु न था (दहर) वह काल आदम से पहले का था,

(संदर्भ अनवारुल कुरआन जिल्द प्रथम पेज 20,21,2:30 मौलवी मुहम्मद)

ऊपर लेख में पढ़ चुके है और यद्यपि उसको इन्सान नही कहा जा सकता था, कुरआन समर्थन करता है, किन्तु कुरआन समर्थन इन्सान का कर रहा है कि मानव पर एक समय ऐसा गमन हुआ है..... अतः उक्त महोदय का लिखना और प्रमाण तर्क मिथ्या है, चूंकि महोदय उस स्थिति को मानव नही स्वीकार कर रहा, क्या स्वीकार कर रहा है लेख में लिखा है अवलोकन हो-

अब वह लिखा जा रहा है जो कुरआन में है अवलोकन हो-

(15:26) और हमने मानव को बजती हुई मिट्टी से जोकि सड़े हुए गारे से बनी थी उत्पन्न किया

(15:27) और जिन्न को इससे पूर्व अग्नि से कि वह एक गर्म वायु थी उत्पन्न कर चुके थे,

(15:128) और जब कहा तेरे रब ने फरिश्तों से मैं बनाऊंगा एक मानव खन खनाते सने गारे से

(23:12) और हमने उत्पन्न किया है इन्सान को मिट्टी के जौहर (सत) से

(23:13) फिर रखा उसको बून्द कर कर जमे ठहराओ में

(32:7) जिसने अच्छी बनाई जो वस्तु बनाई और आरम्भ की इन्सान की रचनाएक मिट्टी से
(32:8) फिर उसका वंश बनाया तुच्छ पानी से
(35:11) और ईश्वर ने तुम को उत्पन्न किया मिट्टी से फिर बून्द पानी से
(40:67) वही है जिसने उत्पन्न किया मिट्टी से फिर पानी की बून्द से
(49:13) लोगो! हमने तुम को एक मर्द और औरत से उत्पन्न किया
(अहले कुरआन कहता है कि बहुत से मर्द और बहुत सी औरतें एक साथ धरती से निकली और उनसे मानव वंश चला, कुरआन के एक पुरुष और एक औरत से नहीं)
(20:55) बनाया (तुम्हारे माता-पिता को जिनकी तुम औलाद हो) इसी मिट्टी '1' से तुम को और इसी में तुम को फिर डालते हैं और इसी से निकालेंगे तुम को दूसरी बार
(3:59) ईसा की उपमा ईश्वर के निकट आदम की सी है कि उसने मिट्टी से उनको उत्पन्न किया फिर कहा हो जा और वह हो गया
'1' और देखा जाए तो हर समय में इन्सान की रचना मिट्टी से होती है क्योंकि इन्सान भोजन खाता है यदि न खाए तो आदमी मर जाएगा और न ही वीर्य उत्पन्न होगा इसलिए पहले इन्सान के बाद भी हर इन्सान की उत्पत्ति मिट्टी से होती है विचार अनिवार्य है, (23:12)
(38:71) अतः तुम्हारे ईश्वर ने फरिश्तों से कहा मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं
(38:72) फिर जब उसको ठीक कर लूं और उसमें ज्ञान रूह फूंक दूं तो उसके आगे सजदा में गिर जाना अर्थात उसको उच्च स्वीकार करना,
(18:37) कहा उसको दूसरे ने जब बात करने लगा क्या तू इनकार करता है उस अस्तित्व से जिसने बनाया तुझ को मिट्टी से फिर बून्द से फिर पूरा कर दिया तुझ को नर
(22:5) लोगों यदि तुम को धोका है जी उठने में तो हमने बनाया मिट्टी से फिर बून्द से
(53:32) वह तुम को और तुम्हारी वास्तविकता को अच्छा जानता है जब उत्पन्न किया तुम को अर्थात (तुम्हारे माता-पिता) को धरती मिट्टी से और जब तुम बच्चे थे माता के पेट में सो मत वर्णन करो अपनी पवित्रता वह सदाचारियों को अच्छा जानता है
(53:45) और यह कि उसी ने जोड़ा अर्थात नर व मादा उत्पन्न किया
(71:14) यद्यपि उसने तुम को भांति-भांति से अर्थात विभिन्न चरणों में उत्पन्न किया
(23:12) और हमने इन्सान को मिट्टी के सत (जोहर) से उत्पन्न किया
(23:13) फिर उसको एक सुरक्षित स्थान में वीर्य बनाकर रखते हैं
(23:14) फिर वीर्य को लोथड़ा बनाते फिर लोथड़े को बोटी बनाते हैं फिर बोटी से हड्डियां बनाते हैं फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाते हैं फिर उसको नई आकृति बना देते हैं तो ईश्वर जो सबसे अच्छा बनाने वाला है बड़ा अधिवक्ता वाला है
(23:17) तुम्हारी उत्पत्ति सात चरणों में पूर्ण करते हैं
(71:14) में जो भांति-भांति से बनाने को लिखा है जिसको भ्रष्ट आदमी वहां पर ले गए जो उन्होंने प्रगति करने का दृष्टिकोण बना रखा है, जिसको ईश्वर ने (23:12,13,14) में बता दिया कि वह चरण भांति-भांति क्या है
(71:17) और ईश्वर ने तुम को बनाया बढ़ाया जैसे पृथ्वी से पौधा (पालन पोषण होता है)
(3:37) पस उसे उसके रब ने अच्छी प्रकार स्वीकार किया और उत्तम पालन पोषण दी

(۳۲:۷) جس نے خوب بنائی جو چیز بنائی اور شروع کی انسان کی پیدائش ایک مٹی سے
(۳۲:۸) پھر اس کی نسل بنائی (جعل) حقیر پانی سے
(۳۵:۱۱) اور اللہ نے تم کو پیدا کیا مٹی سے پھر بوند پانی سے
(۴۰:۶۷) وہی ہے جس نے پیدا کیا مٹی سے پھر پانی کی بوند سے
(۴۹:۱۳) لوگو! ہم نے تم کو ایک مرد اور عورت سے پیدا کیا
(اہل قرآن کہتا ہے کہ بہت سے مرد اور بہت سی عورتیں ایک ساتھ زمین سے نکلیں اور ان سے نسل انسانی چلی قرآن کے ایک مرد اور ایک عورت سے نہیں)
(۲۰:۵۵) بنایا (تمہارے والدین کو جن کی تم اولاد ہو) اسی مٹی ۱ سے تم کو اور اسی میں تم کو پھر ڈالتے ہیں، اور اسی سے نکالیں گے تم کو دوسری بار
(۳:۵۹) عیسیٰ کی مثال اللہ کے نزدیک آدم کی سی ہے کہ اس نے مٹی سے ان کو پیدا کیا پھر کہا ہو جا اور وہ ہو گیا
۱ اور دیکھا جائے تو ہر زمانہ میں انسان کی پیدائش مٹی سے ہوتی ہے کیونکہ انسان غذا کھاتا ہے اگر نہ کھائے تو آدمی مر جائے گا اور نہ ہی نطفہ پیدا ہوگا اس لئے پہلے انسان کے بعد بھی ہر انسان کی پیدائش مٹی سے ہی ہے غور ضروری ہے (۲۳:۱۲)
(۳۸:۷۱) اس لئے تمہارے پروردگار نے فرشتوں سے کہا میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں۔
(۳۸:۷۲) پھر جب اس کو درست کر لوں اور اس میں علم روح پھونک دوں تو اس کے آگے سجدہ میں گر جانا یعنی اس کو برتر تسلیم کرنا۔
(۱۸:۳۷) کہا اس کو دوسرے نے جب بات کرنے لگا کیا تو منکر ہو گیا اس ذات سے جس نے بنایا تجھ کو مٹی سے پھر بوند سے پھر پورا کر دیا تجھ کو مرد۔
(۲۲:۵) لوگو! اگر تم کو دھوکا ہے جی اٹھنے میں تو ہم نے تم کو بنایا مٹی سے پھر بوند سے
(۵۳:۳۲) وہ تم کو اور تمہاری حقیقت کو خوب جانتا ہے جب پیدا کیا تم کو یعنی (تمہارے ماں باپ) کو زمین مٹی سے اور جب تم بچے تھے ماں کے پیٹ میں۔ سو مت بیان کرو اپنی پاکی وہ پرہیزگاروں کو خوب جانتا ہے۔
(۵۳:۴۵) اور یہ کہ اسی نے جوڑا یعنی نر و مادہ پیدا کیا۔
(۷۱:۱۴) حالانکہ اس نے تم کو طرح طرح سے یعنی مختلف مراحل سے پیدا کیا۔
(۲۳:۱۲) اور ہم نے انسان کو مٹی کے خلاصے (جوہر ست) سے پیدا کیا۔
(۲۳:۱۳) پھر اس کو ایک محفوظ جگہ میں نطفہ بنا کر رکھتے ہیں۔
(۲۳:۱۴) پھر نطفے کو لوتھڑا بناتے پھر لوتھڑے کی بوٹی بناتے ہیں پھر بوٹی کی ہڈیاں بناتے ہیں پھر ہڈیوں پر گوشت چڑھاتے ہیں۔ پھر اس کو نئی صورت بنا دیتے ہیں تو اللہ جو سب سے بہتر بنانے والا ہے بڑا بابرکت ہے۔
(۲۳:۱۷) تمہاری پیدائش سات مراحل میں مکمل کرتے ہیں۔
(۷۱:۱۴) میں جو طرح طرح سے بنانے کو لکھا ہے جس کو گمراہ آدمی وہاں پر لے گئے جو انہوں نے نظریہ ارتقاء کھڑا کیا ہے جس کو اللہ نے (۲۳:۱۲،۱۳،۱۴) میں بتا دیا کہ وہ مراحل طرح طرح کے کیا ہیں۔
(۷۱:۱۷) اور اللہ نے تم کو بنایا بڑھایا جیسے زمین سے پودا (پرورش پاتا ہے)۔
(۳:۳۷) پس اسے اس کے پروردگار نے اچھی طرح قبول کیا اور اسے بہترین پرورش دی

(16:4) उत्पन्न किया इन्सान को वीर्य से फिर तब ही हो गया झगड़ता बोलता

(36:77) क्या देखता नही आदमी कि हम बनाते है उसको एक बून्द से

(75:37) भला न था एक बून्द वीर्य की जो टपकी

(75:38) फिर था लहू की फुटकी फिर उसने बनाया

(76:2) हम बनाते है इन्सान को एक बून्द के लच्छे से पलटते रहते है उसको (गर्भाशय में) फिर कर दिया उसको हंसता देखता

(77:20,21,22) क्या हम नही बनाते तुम को एक बे आदर पानी से फिर रखा उसको एक ठेहराव में एक निश्चित समय तक

(80:18,19) किस वस्तु से बनाया उसको एक बूंद से बनाया उसको फिर अनुमान रखा उसका

(86:5,6,7) अब देख ले आदमी काहे से बना, बना एक उछलते पानी से जो निकलता है पीठ और छाती के बीच से

(21:30) और स्थापित किया हर जीवित वस्तु को पानी से जिसमें जीव है

(22:45) और ईश्वर ने उत्पन्न किया हर दाब्बाह फिरने वाला पानी से फिर कोई है चलता अपने पेट पर और चलता दो पगों पर और कोई चलता है चार पर, रचता है ईश्वर जो चाहता है

(6:38) और पृथ्वी में चलने फिरने वाला दाब्बाह (हैवान) या दो परों से उड़ने वाला पक्षी है उनके भी तुम लोगों की भांति दल है हमने पुस्तक में किसी वस्तु (के लिखने) में कमी नही की, फिर वह सब अपने रब की ओर संग्रह किए जाऐंगे,

आयत 6:38 और 24:45 में एक शब्द दाब्बाह आया है दाब्बाह हर हैवान को कह सकते है जो चलता फिरता है और जानदार है, अतः इन्सान व जिन्न भी तो हो सकते है किन्तु यह सोच मिथ्या हो जाएगी, कही इनको सम्मिलित किया जाएगा और कही पृथक रखा जाएगा जैसे 6:38 ने दाब्बाह का अर्थ बताया है अर्थात जिन्न और इन्सान के अतिरिक्त जो और हैवान है उनको दाब्बाह कहा गया है जिनकी उत्पत्ति पानी से बताई है अतः इन्सान की उत्पत्ति पानी से नही है ईश्वर की बात मिथ्या नही हो सकती,

सिद्ध यह हुआ कि 6:38 में दाब्बाह की उत्पत्ति पानी से बताई है और ईश्वर सम्बोधन इन्सान को कर रहा है अतः इन्सान की पहली उत्पत्ति पानी से नही है मिट्टी से है और बाद को दूसरी उत्पत्ति उछलते पानी से जो पीठ और छाती के बीच से निकलता है यह वह पानी नही है जिसको डारविन, मौलवी मुहम्मद या पंथ आहले कुरआन बताता है और जिन्न की उत्पत्ति अग्नि से है और फरिश्तों की उत्पत्ति नूर से है (तेज से), डारविन या वैज्ञानिक क्या कहते है उसको भी लिखा जा रहा है,

मानव वंश के आरम्भ के प्रति दूसरे विचारकों का मत लिखने से पहले फ्रेजन साहब के प्रगति के दृष्टिकोण का सारांश लिखना उचित ज्ञात होता है, वह यह कि "पहले पहल जीवन का आरम्भ कीचड़ और पानी में पाए जाने वाले एक जरसूमे से हुई है फिर आगे चल कर इसी जीवन के बीज से (प्रोटोप्लाज्म से) वनस्पति का जीवन आरम्भ हुआ जो उन्नति के पड़ाव तै करता हुआ भांत-भांत के फल फूल अनाज तरकारी और बड़े बड़े वृक्षों की आकृति तक पहुंच गया, फिर उसी जीवन के बीज या वनस्पति कण से अमीबा उत्पन्न हुआ जिससे पाशविक जीवन प्रकट हुआ, जो क्रमशः उन्नति करता रहा, यहां तक कि बिना रीढ़दार आरम्भिक पाशविक प्रकट हुआ, फिर दीर्घकाल के बाद रीढ़दार और फिर बाल व पर वाले पाशविक उत्पन्न हुए फिर एक दीर्घकाल के बाद दूध

(۴:۱۶) پیدا کیا انسان کو نطفہ سے پھر تب ہی ہوگیا جھگڑتا بولتا۔

(۳۶:۷۷) کیا دیکھتا نہیں آدمی کہ ہم بناتے ہیں اس کو ایک بوند سے۔

(۷۵:۳۷) بھلا نہ تھا ایک بوند منی کی جو ٹپکی۔

(۷۵:۳۸) پھر تھا لہو کی پھٹکی پھر اس نے بنایا۔

(۷۶:۲) ہم بناتے ہیں انسان کو ایک بوند کے لچھے سے پلٹتے رہتے ہیں اس کو (رحم میں) پھر کر دیتے ہیں اس کو ہنستا دیکھتا۔

((۷۷:۲۰،۲۱،۲۲) کیا ہم نہیں بناتے تم کو ایک بےقدر پانی سے پھر رکھا اس کو ایک ٹھہراؤ میں۔ ایک وعدے مقرر تک۔

(۸۰:۱۸،۱۹) کس چیز سے بنایا اس کو ایک بوند سے بنایا اس کو پھر اندازہ رکھا اس کا

(۸۶:۵،۶،۷) اب دیکھ لے آدمی کا ہے سے بنا۔ بنا ایک اچھلتے پانی سے جو نکلتا ہے پیٹھ اور چھاتی کے بیچ سے۔

(۲۱:۳۰) اور قائم کیا ہر زندہ چیز کو پانی سے جس میں جی ہے۔

(۲۴:۴۵) اور اللہ نے پیدا کیا ہر دابہ پھرنے والا پانی سے پھر کوئی ہے چلتا اپنے پیٹ پر اور کوئی ہے چلتا دو پیروں پر اور کوئی چلتا ہے چار پر۔ پیدا کرتا ہے اللہ جو چاہتا ہے۔

(۶:۳۸) اور زمین میں چلنے پھرنے والا دابہ (حیوان) یا دو پروں سے اڑنے والا پرندہ ہے ان کی بھی تم لوگوں کی طرح جماعتیں ہیں۔ ہم نے کتاب میں کسی چیز (کے لکھنے) میں کوتاہی نہیں کی پھر سب اپنے پروردگار کی طرف جمع کیے جائیں گے۔

آیت (۶:۳۸ اور ۲۴:۴۵ میں ایک لفظ دابہ آیا ہے۔ دابہ ہر حیوان کو کہہ سکتے ہیں جو چلتا پھرتا جاندار ہے اس لئے انسان و جن بھی تو ہو سکتے ہیں۔ لیکن یہ سوچ غلط ہو جائے گی کہیں ان کو شامل کیا جائے گا اور کہیں الگ رکھا جائے گا۔ جیسے (۶:۳۸) نے دابہ کا مطلب بتایا ہے یعنی جن اور انسان کے علاوہ جو اور حیوان ہیں ان کو دابہ کہا گیا ہے جن کی پیدائش پانی سے بتائی ہے اس لئے انسان کی پیدائش پانی سے نہیں ہے اللہ کی بات غلط نہیں ہو سکتی۔

ثابت یہ ہوا کہ (۶:۳۸) میں دابہ کی پیدائش پانی سے بتائی ہے اور اللہ خطاب انسان کو کر رہا ہے۔ اس لئے انسان کی پہلی پیدائش پانی سے نہیں ہے مٹی سے ہے اور پھر بعد کو دوسری پیدائش اچھلتے پانی سے جو پیٹھ اور چھاتی کے بیچ سے نکلتا ہے یہ وہ پانی نہیں ہے جس کو ڈارون، مولوی محمد یا فرقہ اہل قرآن بتاتا ہے اور جن کی پیدائش نار سے ہے اور فرشتوں کی پیدائش نور سے ہے۔ ڈارون یا سائنس داں کیا کہتے ہیں اس کو بھی لکھا جا رہا ہے

آغاز نسل انسانی کے متعلق دوسرے منکرین کی آراء لکھنے سے قبل فوزان صاحب کے نظریہ ارتقاء کا خلاصہ تحریر کرنا مناسب معلوم ہوتا ہے۔ وہ یہ ہے کہ "پہلے پہل زندگی کی ابتداء کیچڑ اور پانی میں پائے جانے والے ایک جرثومے سے ہوئی ہے پھر آگے چل کر اسی تخم حیات (پروٹوپلازم) سے نباتی زندگی کا آغاز ہوا۔ جو ترقی کی منزلیں طے کرتی ہوئی انواع و اقسام کے پھل پھول غلہ ترکاری اور بڑے بڑے درختوں کی شکل تک پہنچ گئی پھر اس تخم حیات یا نباتی ذرے سے امیبا پیدا ہوا جس سے حیوانی زندگی نمودار ہوئی۔ جو بتدریج ترقی کرتی رہی یہاں تک کہ غیر ریڑھ دار ابتدائی حیوان کا ظہور ہوا پھر مدت کا رہائے دراز کے بعد ریڑھ دار اور پھر بال و پر والے حیوانات پیدا ہوئے پھر ایک طویل مدت کے بعد دودھ پلانے والے

पिलाने वाले जीव फिर उसके बाद बन्दर और बन्दर जैसे मानव उत्पन्न हुआ, फिर तहतुल इन्सान उसके बाद पहला मानव उत्पन्न हुआ जो अंग और बोद्धिक सिद्धान्त से त्रुटिपूर्ण जन और वाक शक्ति व अनुभूति की क्षमता से विहीन था और बिल्कुल अंत में उपस्थिति पूर्ण मानव अस्तित्व में आया (लेख कबीरुद्दीन फौजान दारुल हुदा करीम नगर) (ए.पी.) तजल्ली देवबन्द नजरिया इरतका नम्बर- अक्टूबर, नवम्बर 1973 ई0 जिसमें मौलाना आमिर उस्मानी साहब मरहूम ने फौजान साहब की मिथ्या आस्था का उत्तर दिया है,

उपरोक्त दृष्टिकोण के अनुसार मानव प्रगतिशील है अर्थात वह कीचड़ से उन्नति करते हुए मानव तक पहुंचा, परन्तु आश्चर्य है कि जो वस्तु प्रगतिशील है वह मानव पर आकर क्यों रुक गई और जिस प्रकार पानी कीचड़ पेड़ पौधे बन्दर आदि से प्रथम मानव बना उसी विधि से अब क्यों नही बन रहे, आज भी ऐसे ही बने जैसे पहले उत्पन्न हुए थे और होते रहें, और फिर मानव पर ही क्यों रुक गए इस मानव को प्रगति करते हुए कोई और रचना बन जाना चाहिए परन्तु मानव, मानव से आगे उन्नति नही कर रहा, और न ही किसी ने यह देखा होगा कि किसी वृक्ष से दूध देने वाला पशु बना और उससे बन्दर और बन्दर से मानव यह सब अपने स्थान पर वैसे के वैसे ही हैं जैसे पहले थे, और वैसे ही रहने की स्थिति नजर आ रही है, अतः वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण प्रगति करने का मिथ्या है,

ईश्वर ने जो बताया है कि प्रथम मानव मिट्टी से बना और फिर उसका वंश उछलते वीर्य पानी से जो छाती और पीठ के बीच से निकलता है और यह भी बता दिया कि हर जीवधारी का जीवन पानी से है यदि जीवधारी के शरीर से पानी समाप्त हो जाए तो वह जीवधारी समाप्त हो जाएगा, अतः हर जीवधारी का जीवन पानी से है और आदम के वंश की उत्पत्ति भी पानी से है जो मिट्टी से उत्पन्न भोजन से बनता है अर्थात वीर्य नजरिया इरतका अर्थात प्रगतिशील दृष्टिकोण बनाने वालों को कुरआन की आयात न समझने के कारण से या उनका अनुचित अनुवाद सामने आने के कारण धोका लगा है, उदाहरणतः सूरत 'साद' आयत 71, जब कहा तेरे रब ने फरिश्तों से मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं

(72) फिर जब ठीक बना चुकूं और उसमें ज्ञान फूंक दूं अर्थात उसको ज्ञान वाला बना दूं तो तुम उसको उच्च स्वीकार कर लेना, इस प्रकार सूरत 'अलहिजर' आयत-28, 29 में कहा गया परन्तु लोगों ने इन आयात को कुछ और समझा परन्तु ईश्वर ने फरिश्तों से कहा था कि मैं मिट्टी से एक मानव बनाने वाला हूं, जब उसको ज्ञान से संवार दूं तो तुम उसको उच्च स्वीकार कर लेना यह कह कर ईश्वर ने मिट्टी से एक पुतला आदम का बनाया और उसी मिट्टी से उसका जोड़ा हव्वा को बनाया, फिर उनमें जान डाली वह चलने फिरने लगे और उनके रहने के लिए एक घाटी उपवन बनाया जिसको जन्नत (स्वर्ग) कहा गया है जिसमें आदम व हव्वा के खाने की हर वस्तु उपस्थित थी, क्योंकि जिस स्थिति में आदम को बनाया वह कोई बच्चा नही था अपितु पूरा आदमी था, कमी तो केवल विवेक चेतना की थी, और आदम के बनाने से पहले ही ईश्वर ने उसके काम आने वाली सब मखलूक जिसको तहतुल इनसान तक लिखा गया है, को ईश्वर ने उत्पन्न कर दिया था, इस इन्सान के लिए क्योंकि यह इन्सान इनसे काम लेगा,

उसको कुछ ज्ञान न था अतः ईश्वर ने हर वस्तु का प्रबन्ध किया जैसे हर माता-पिता अपने छोटे से बच्चे के लिए करते हैं हर प्रकार से देखभाल करते हैं, जब बच्चा बड़ा होता है तो आत्मनिर्भर हो जाता है, अपितु फिर वह स्वयं ही अपने माता-पिता की सेवा करता है, परन्तु ईश्वर को किसी सेवक की आवश्यकता नही है, ऐसे ही ईश्वर ने

جانور پھر اس کے بعد بندر اور انسان نما بندر پیدا ہوئے پھر تحت الانسان اس کے بعد پہلا انسان پیدا ہوا، جو عضویاتی اور عقلی لحاظ سے ناقص الخلقت اور نطق و ادراک کی صلاحیت سے عاری تھا اور بالکل آخیر میں موجودہ کامل انسان عالم وجود میں آیا" (تحریر کبیر الدین فوزان دار الہدیٰ، کریم نگر۔اے۔پی۔) تجلی دیوبند، (نظریہ ارتقاء نمبر) اکتوبر، نومبر ۱۹۷۳ء جس میں مولانا عامر عثمانی صاحب مرحوم نے فوزان صاحب کے باطل عقیدے کا جواب دیا ہے۔

بالا نظریہ کے مطابق انسان طرقی پزیر ہے یعنی وہ کیچڑ سے ترقی کرتے ہوئے انسان تک پہنچا لیکن تعجب ہے کہ جو چیز ترقی پزیر ہے وہ انسان پر آکر کیوں رُک گئی اور جس طرح پانی کیچڑ، پیڑ، پودے، بندر وغیرہ سے پہلا انسان بنا اُس طریقے سے اب کیوں نہیں بن رہے۔ آج بھی ایسے ہی بنیں جیسے پہلے پیدا ہوئے تھے اور ہوتے رہیں۔ اور پھر انسان پر ہی کیوں رُک گئے اس انسان کو ترقی کرتے ہوئے کوئی اور مخلوق بن جانا چاہیے۔ مگر انسان انسان سے آگے ترقی نہیں کر رہا اور نہ ہی کسی نے یہ دیکھا ہوگا کہ کسی پیڑ سے دودھ دینے والا جانور بنا اور اس سے بندر اور بندر سے انسان یہ سب اپنی جگہ پر ویسے کے ویسے ہی ہیں جیسے پہلے تھے۔ اور ویسے ہی رہنے کی حالت نظر آرہی ہے۔ اس لئے سائنس والوں کا نظریہ ارتقاء غلط ہے۔

اللہ نے جو بتایا ہے کہ پہلا انسان مٹی سے بنا اور پھر اس کی نسل اچھلتے نطفے پانی سے جو چھاتی اور پیٹھ کے درمیان سے نکلتا ہے اور یہ بھی بتا دیا کہ ہر جاندار کی زندگی پانی سے ہے اگر جاندار کے جسم سے پانی ختم ہو جائے تو وہ جاندار ختم ہو جائے گا اس لئے ہر جاندار کی زندگی پانی سے ہے اور نسل آدم کی پیدائش بھی پانی سے ہے جو مٹی سے پیدا غذا سے بنتا ہے یعنی نطفہ

نظریہ ارتقاء بنانے والوں کو قرآن کی آیات نہ سمجھنے کی وجہ سے یا ان کا غلط ترجمہ سامنے آنے کی وجہ سے دھوکا لگا ہے مثلاً سورت [ص] آیت (۷۱)۔ جب کہا تیرے رب نے فرشتوں کو میں مٹی سے ایک انسان بنانے والا ہوں

(۷۲) پھر جب ٹھیک بنا چکوں اور اس میں علم پھونک دوں یعنی اس کو علم والا بنا دوں تو تم اس کو برتر تسلیم کر لینا۔ اسی طرح سورت [الحجر] آیت ۲۸،۲۹ میں کہا گیا لیکن لوگوں نے ان آیات کو کچھ اور سمجھا مگر اللہ نے فرشتوں سے کہا تھا کہ میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں جب اس کو علم سے سنوار دوں تو تم اس کو برتر تسلیم کر لینا۔ یہ کہہ کر اللہ نے مٹی سے ایک پتلا آدم کا بنایا اور اسی مٹی سے اس کا جوڑا حوا کو بنایا۔ پھر ان میں جان ڈالی وہ چلنے پھرنے لگے اور ان کے رہنے کے لئے ایک وادی باغ بنایا جس کو جنت کہا گیا ہے جس میں آدم و حوا کے کھانے کی ہر چیز موجود تھی کیونکہ جس حالت میں آدم کو بنایا وہ کوئی بچہ نہیں تھا بلکہ پورا آدمی تھا۔ کمی تو صرف شعور کی تھی اور آدم کے بنانے سے پہلے ہی اللہ نے اس کے کام آنے والی سب مخلوق جس کو تحت الانسان تک لکھا گیا ہے کو اللہ نے پیدا کر دیا تھا اس انسان کے لئے کیونکہ یہ انسان ان سے کام لے گا۔ (۷:۱۱)

اس کو کچھ پتہ نہیں تھا اس لئے اللہ نے ہر چیز کا انتظام کیا جیسے ہر والدین اپنے چھوٹے سے بچے کے لئے کرتے ہیں۔ ہر طرح سے دیکھ بھال کرتے ہیں جب بچہ بڑا ہوتا ہے تو خود کفیل ہو جاتا ہے بلکہ پھر وہ خود ہی اپنے والدین کی خدمت کرتا ہے مگر اللہ کو کسی خدمت گار کی ضرورت نہیں ہے۔ ایسے ہی

आदम व हव्वा के लिए किया और उनसे कहा कि आदम तू और तेरी पत्नी इस उपवन स्वर्ग में रहो और जहां से चाहो खाओ, परन्तु इस शजर के पास न जाना आदम व हव्वा रहने लगे, परन्तु कुछ समय के बाद उन्होंने उस शजर को चख लिया शैतानी वसवसे से, तो उस शजर के चखते ही उनको चेतना आनी आरम्भ हो गई, अर्थात अब तक उन्हें ज्ञान नही था कि हम नग्न हैं उसके चखते ही उनको ज्ञान हो गया और वह अपने शरीर को पत्तों से ढकने लगे मानो अन्दर की जो चेतना छुपी थी वह प्रकट होना आरम्भ हो गई तो ईश्वर ने उस आराम से स्थानान्तरित कर दिया और ऐसे स्थान पर कर्मशील कर दिया जहां उनको अपना प्रबन्ध स्वयं करना था, वह करते रहे और ज्ञान प्राप्त करते रहे, इस ज्ञान से उन्होंने उन वस्तुओं के नाम रखने आरम्भ कर दिए जिनसे वह काम ले रहे थे और जो ईश्वर ने पहले ही बता दी थी और उस काल में ही वह संतान वाले हो गए और उनकी सन्तान में झगड़ा भी हुआ,

यह एक दिन में नही हुआ अपितु काफी दिन लगे जब आदम के पास ज्ञान आ गया जिसके विषय में फरिश्तों से कहा था कि मैं मिट्टी से एक व्यक्ति बनाने वाला हूं जब उसमें आत्मा फूंक दूं अर्थात वह ज्ञान वाला हो जाए तो उसको श्रेष्ठ स्वीकार कर लेना,

यह वही समय था जिसको सूरत 'दहर' में इन शब्दों में कहा गया है सूरत 'दहर' आयत-(76:1)

(76:1) निःसन्देह मानव पर अवधि में एक ऐसा समय आ चुका है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था अर्थात उसको विवेक न था, परन्तु था मानव न कि कीड़ा, पेड़ या बन्दर, एक और आयत अवलोकन हो, सूरत 'दहर' के साथ-

(19:47) क्या इन्सान को याद नही आता कि हम पहले उसको (अपनी प्रभुता से) उत्पन्न कर चुके हैं जबकि वह कुछ न था

लोगों ने इस आयत से अनुचित अर्थ लेकर अपना पिता बन्दर तुच्छ को मानकर प्रगतिशील दृष्टिकोण की इमारत बना ली, आयत में शब्द मानव है न कि कोई वनस्पति, वृक्ष, बन्दर, अतः डारविन के फलसफे के लिए कोई गुंजाईश नही, क्योंकि इस फलसफे में कीचड़ ऐमीबा जस्सूमा पौधा, बन्दर इत्यादि कहा गया है जबकि इन स्थितियों को मानव नही कहा जा सकता और आयत में मानव का वर्णन है अतः उनका विचार मिथ्या है, दूसरी बात कुरआन की सुरत नुह आयत 17 से धोका लगा जिस का अर्थ यह लिखा गया है और ईश्वर ही ने तुम को धरती से उत्पन्न किया इस अनुवाद को भी लोगो ने अपने समर्थन में प्रयोग क्या जब कि इस आयत में ईश्वर ने पौधो की उपमा देकर मानव को समझाया है कि देखो जिस प्रकार हम ने धरती से पौधों को उगाकर उनका पालन पोषण करते है, वह बड़े होते हैं और फिर समाप्त हो जाते हैं ऐसे ही तुम भी पालन पोषण पाते हो अर्थात आरम्भ में पौधो की भांति निर्बल उत्पन्न होते हो फिर शक्ति प्राप्त करते जाते हो और फिर अपनी आयु पर पौधों की भांति समाप्त हो कर भूमि में दफन हो जाते हो फिर महा प्रलय में धरती से निकाल लेंगे इस आयत पर भी विचार करने में धोका खा गए आयत का ठीक अनुवाद और ईश्वर ने तुम को उत्पन्न किया बनाया बढ़ाया जैसे धरती से पौधा, (पालन पोषण पाता है)

इस सूरत की दूसरी आयत (14) (और इसी ने तुम को भांति भांति से बनाया) यहां भी वैज्ञानिको को भ्रम हो गया उन्होंने शब्द अतवारा को अपने वृक्ष पौधो और बन्दर पर चसपां कर दिया और प्रसन्न हो गए परन्तु यह न देखा कि ईश्वर क्या कहता है इस शब्द के बारे में सूरत अलमुमिनून आयत 12 और हम ने उत्पन्न किया है आदमी चुन ली मिट्टी से 13 फिर रखते हैं उसको बून्द कर कर एक जमे ठहराओ में

اللہ نے آدم وحوا کے لئے کیا اوران سے کہا کہ آدم تو اور تیری بیوی اس باغ جنت میں رہو اور جہاں سے چاہو کھاؤ مگر اس شجر کے پاس نہ جانا آدم وحوا رہنے لگے مگر کچھ زمانہ کے بعد انہوں نے اس شجر کو چکھ لیا شیطانی وسوسہ سے۔ تو اس شجر کے چکھتے ہی ان کو شعور آنا شروع ہو گیا یعنی اب تک انہیں پتہ نہیں تھا کہ ہم ننگے ہیں اس کے چکھتے ہی ان کو معلوم ہو گیا۔ اور وہ اپنے جسموں کو پتوں سے ڈھکنے لگے گویا اندر کی جو صلاحیت چھپی تھیں وہ ظاہر ہونا شروع ہو گئیں تو اللہ نے اس آرام سے منتقل کر دیا۔ اور ایسی جگہ سرگرم عمل کر دیا جہاں ان کو اپنا انتظام خود کرنا تھا وہ کرتے رہے اور علم حاصل کرتے رہے۔ اس علم سے انہوں نے ان چیزوں کے نام رکھنے شروع کر دئے جن سے وہ کام لے رہے تھے جو اللہ نے پہلے ہی بنا دی تھیں۔ اور اس زمانہ میں ہی وہ اولاد والے ہو گئے۔ اور ان کی اولاد میں جھگڑا بھی ہوا۔ یہ ایک دن میں نہیں ہوا بلکہ کافی دن لگے جب آدم کے پاس علم آ گیا جس کے بارے میں فرشتوں سے کہا تھا کہ میں مٹی سے ایک بشر بنانے والا ہوں جب اس میں روح پھونک دوں یعنی وہ علم والا ہو جائے تو اس کو برتر تسلیم کر لینا۔

یہ وہی زمانہ تھا جس کو سورت ''دہر'' میں ان الفاظ میں کہا گیا ہے سورت ''دہر۔۷۶:۱'' آیت (۷۶:۱) بے شک انسان پر زمانہ میں ایک ایسا وقت آ چکا ہے کہ وہ کوئی قابل ذکر چیز نہ تھا۔ یعنی اس کو شعور نہ تھا مگر تھا انسان نہ کہ کیڑا، پیڑ یا بندر ایک اور آیت ملاحظہ ہو سورت ''دہر'' کے ساتھ

(۱۹:۶۷) کیا انسان کو یاد نہیں آتا کہ ہم پہلے اس کو (اپنی قدرت سے) پیدا کر چکے ہیں جب کہ وہ کچھ نہ تھا

لوگوں نے اس آیت سے غلط مطلب لے کر اپنا باپ بندر ذلیل کو مان کر نظریہ ارتقاء کی عمارت بنالی۔ آیت میں لفظ انسان ہے نہ کہ کائی نباتات پیڑ بندر۔ اس لئے ڈارون کے فلسفے کے لئے کوئی گنجائش نہیں۔ کیونکہ اس فلسفے میں کیچڑ ایمیبا جرثومہ پودا بندر وغیرہ کہا گیا ہے۔ جب کہ ان حالتوں کو انسان نہیں کہا جا سکتا اور آیت میں انسان کا ذکر ہے اس لئے ان کا خیال غلط ہے۔ دوسری بات قرآن کی سورت [نوح] آیت (۱۷) سے دھوکا لگا جس کا مطلب یہ لکھا گیا ہے اور اللہ ہی نے تم کو زمین سے پیدا کیا۔ اس ترجمہ کو بھی ان لوگوں نے اپنی تائید میں استعمال کیا جب کہ اس آیت میں اللہ نے پودے کی مثال دے کر آدمی کو سمجھایا ہے کہ دیکھو جس طرح ہم زمین سے پودوں کو اگا کر ان کو پرورش کرتے ہیں وہ بڑے ہوتے ہیں اور پھر ختم ہو جاتے ہیں۔ ایسے ہی تم بھی پرورش پاتے ہو یعنی شروع میں پودوں کی طرح کمزور پیدا ہوتے ہو پھر طاقت حاصل کرتے جاتے ہو اور پھر اپنی اپنی عمر پر پودوں کی طرح ختم ہو کر زمین میں دفن ہو جاتے ہو۔ پھر قیامت میں زمین سے نکال لیں گے۔ اس آیت پر بھی غور کرنے میں دھوکا کھا گئے۔ آیت کا صحیح ترجمہ۔ اور اللہ نے تم کو پیدا کیا بنایا بڑھایا جیسے زمین سے پودا (پرورش ہوتا ہے) (۳۷:۴)

اس سورت کی دوسری آیت (۱۴)

(اور اسی نے تم کو بنایا طرح طرح سے بنایا) یہاں بھی سائنس والوں کو دھوکا ہو گیا۔ انہوں نے لفظ اطوار کو اپنے پیڑ پودوں اور بندر پر چسپاں کر دیا اور خوش ہو گئے۔ مگر یہ نہ دیکھا کہ اللہ کیا کہتا ہے اس لفظ کے بارے میں سورت المومنوں آیت ۱۲۔ اور ہم نے پیدا کیا ہے آدمی چن لی مٹی سے۔

(۱۳) پھر رکھتے ہیں اس کو بوند کر کر ایک جمے ٹھہراؤ میں۔ (۱۴) پھر بناتے ہیں بوند

14 फिर बनाते है बून्द से फुटकी फिर बनाते है उस फुटकी से बोटी फिर बनाते है उस बोटी से हड्डीयां फिर पहनाते है उन हड्डी पर मांस फिर उठा खड़ा किया उस को एक नई आकृती में सो बड़ी सम्पन्नता है ईश्वर की जो सब से उत्तम बनाने वाला है,

17 हमने तुम्हारी रचना में सात चरणों से कार्य किया अर्थात तुम को इस स्थिति में आने के लिए सात चरणों से गमन करना पड़ा जो ऊपर आयात में ईश्वर ने बता दिए है उन लोगो ने इन आयात पर भी विचार नही किया बस उन को शब्द अतवार मिल गया और उन्होंने अपने अतवार मान कर अपनी इमारत बनायी, ईश्वर ने सात अतवार चर्ण गिना दिए उन में पहला मिट्टी है और दूसरा वीर्य पानी है,

विचित्र बात एक यह भी है कि मोलवी मुहम्मद व अहले कुरआन और वैज्ञानिकों ने और दूसरे उन्ही जैसे व्यक्तियों ने अपना अर्थात इन्सान का पिता एक बन्दर बताया है, इस बात पर भी विचार कर लिया जाए

सूरत बनी इसराईल आयात 70 और हम ने सम्मान दिया आदम की सन्तान को और स्वारी दी उन को थल और दरया में और जीविका दी हम ने उन को पवित्र वस्तुओं से और अपनी बहुत सी रचनाओं पर उन्हें श्रेष्ठता दी,

सूरत तीन आयात 4 हम ने इन्सान को उत्पन्न किया उत्तम स्थिति अर्थात उत्तम विधि पर कर्म करने के लिए इन आयात में मानव को सम्मन वाला और अच्छी आकृती में पैदा होने वाले का पिता भी सम्मान वाला होता है किन्तु कुरआन डारविन मोलवी मुहम्मद, फोज़ान और अहले कुरआन इत्यादि के पिता को क्या कहता है अवलोकन हो,

सूरत बकरा आयात 35, हो जाओ बनदर, तिरकृत,

सूरत ऐराफ आयात 166 फिर जब बढ़ते ही रहे उस काम में जिस से उन्हें रोका गया था तो हम ने उन के बारे में आदेश पारित किया कि हो जाओं बन्दर तिरस्कृत,

इन आयात में बन्दर को तिरस्कृत जलील बताया गया है जो सत्य है और आयात (17:70,95:4) में मानव को सम्मान वाला बताया गया है, तो क्या जलील पिता जिसको ईश्वर तिरस्कृत बता रहा है की सन्तान सम्मान वाली हो सकती है? क्या बन्दर के बच्चे को सम्मान वाला कहते है और बन्दर का भोजन भी देख लो कैसा है और आदमी का कैसा पवित्र है यहां भी वैज्ञानिकों की बात अनुचित है बात ईश्वर की उचित है अतः कुरआन के प्रकाश में बात सामने यह आती है कि मानव की पहली उत्पत्ति मिट्टी से है और फिर वीर्य जिसको पानी कहा गया है और मानव जब से बना है उस समय से आज तक उन्नति कर रहा है करता रहेगा अतः यह प्रगति शील है जब पहली बार आदम को बनाया गया था, तो नंगा था उस को कुछ ज्ञान न था फिर धीरे धीरे उस को विवेक होता गया और आज उस आदम की सन्तान की दशा यह है कि आकाश में उड़ रहा परमाणु बम बना रहा है और क्या क्या बनाएगा चन्द्रमा पर पहुंच गया यह बराबर प्रगति कर रहा है परन्तु है आदमी ही आदमी से कुछ और नही बना,

और हर जानदार पानी से जीवित है यदि पानी समाप्त हो जाए तो हर जीवधारी समाप्त हो जाए रोगी होने पर बहुत से रोगियों में डॉक्टर शरीर में पानी चढ़ाता है, और माता के पेट में चर्णवार बनाया जाता है और फिर इस प्रकार पालन पौषण पाता है और मरता है जैसे धरती से उगने वाला पौधा यह है प्रगति के दृष्टि कोण के संदर्भ में कुरआन का निर्णय अर्थात मानव की प्रथम उत्पत्ति मिट्टी से है, और फिर बाद को वीर्य से जिस को पानी कहा गया है कुरआन में अनेक आयात है

سے پھٹکی، پھر بناتے ہیں اس پھٹکی سے بوٹی، پھر بناتے ہیں اس بوٹی سے ہڈیاں. پھر پہناتے ہیں ان ہڈیوں پر گوشت پھر اٹھا کھڑا کیا اس کو ایک نئی صورت میں سو بڑی برکت اللہ کی جو سب سے بہتر بنانے والا ہے.

(۱۷) ہم نے تمہاری پیدائش میں سات طریقوں سے کام لیا یعنی تم کو اس حالت میں آنے کے لئے سات مرحلوں سے گزرنا پڑا جو اوپر آیت میں اللہ نے بتا دیے ہیں. اُن لوگوں نے ان آیات پر بھی غور نہیں کیا بس ان کو لفظ اطوار مل گیا اور انہوں نے اپنے اطوار مان کر اپنی عمارت بنالی. اللہ نے سات اطوار مراحل گنا دیے ان میں پہلا مٹی ہے اور دوسرا نطفہ پانی ہے.

عجیب بات ایک یہ بھی ہے کہ مولوی محمد و اہل قرآن اور سائنس والوں نے اور دوسرے انہی جیسے انسانوں نے اپنا یعنی انسان کا باپ ایک بندر بتایا ہے. اس بات پر بھی غور کر لیا جائے

سورت ''بنی اسرائیل'' آیت ۷۰/ اور ہم نے عزت دی ہے آدم کی اولاد کو اور سواری دی ان کو خشکی اور دریا میں اور روزی دی ہم نے ان کو پاک چیزوں سے اور اپنی بہت سی مخلوق پر انہیں فضیلت دی.

سورت ''تین'' آیت ۴/ ہم نے انسان کو پیدا کیا بہترین تقویم پر یعنی بہترین قانون پر عمل کرنے کے لئے.

ان آیات میں انسان کو عزت والا بتایا گیا ہے. عزت والا اور اچھی صورت میں پیدا ہونے والے کا باپ بھی عزت والا ہوتا ہے. لیکن قرآن ڈارون، مولوی محمد فوزان اور اہل قرآن وغیرہ کے باپ کو کیا کہتا ہے ملاحظہ ہو.

سورہ ''بقرہ'' آیت ۳۵/ ہو جاؤ بندر ذلیل

سورت ''اعراف'' آیت ۱۶۶/ پھر جب بڑھتے ہی رہے اس کام میں جس سے انہیں منع کیا گیا تھا ہم نے ان کے بارے میں حکم صادر کیا کہ ہو جاؤ بندر ذلیل.

ان آیات میں بندر کو ذلیل بتایا گیا ہے جو حق ہے اور آیت (۱۷:۷۰) (۴:۹۵) میں انسان کو عزت والا بتایا گیا تو کیا ذلیل باپ جس کو اللہ ذلیل بتا رہا ہے کی اولاد عزت والی ہو سکتی ہے؟ کیا بندر کے بچے کو عزت والا کہتے ہیں. اور بندر کی خوراک بھی دیکھ لو کیسی ہے اور آدمی کی کیسی ستھری بتائی ہے. یہاں بھی سائنس والوں کی بات غلط ہے. بات اللہ کی صحیح ہے اس لئے قرآن کی روشنی میں بات سامنے یہ آتی ہے کہ انسان کی پہلی پیدائش مٹی سے ہے اور پھر نطفہ جس کو پانی کہا گیا ہے. اور انسان جب سے بنا ہے اس وقت سے آج تک ترقی کر رہا ہے کرتا رہے گا اس لئے یہ ترقی پذیر ہے.

جب پہلی بار آدم کو بنایا تھا تو ننگا تھا اس کو کچھ پتہ نہ تھا پھر رفتہ رفتہ اس کو علم ہوتا گیا. اور آج اس آدم کی اولاد کا حال یہ ہے کہ آسمان میں پرواز کر رہا ہے. ایٹم بم بنا رہا ہے. اور کیا کیا بنائے گا چاند پر پہنچ گیا. یہ برابر ترقی کر رہا ہے. لیکن ہے آدمی ہی آدمی سے کچھ اور نہیں بنا.

اور ہر جاندار پانی سے زندہ ہے اگر پانی ختم ہو جائے تو ہر جاندار ختم ہو جائے بیمار ہونے پر بہت سے مرضوں میں ڈاکٹر جسم میں پانی چڑھاتے ہیں. اور ماں کے پیٹ میں مرحلہ وار بنایا جاتا ہے اور پھر اس طرح پرورش پاتا ہے اور مرتا ہے جیسے زمین سے اگنے والا پودا. یہ ہے نظریہ ارتقاء کے بارے میں قرآن کا فیصلہ یعنی انسان کی پہلی پیدائش مٹی سے ہے اور پھر بعد کو نطفہ سے جس کو پانی کہا

जिनमें मानव की उत्पत्ति को मिट्टी से बताया गया है अतः बन्दर की सन्तान वाले इन्सान का दृष्टिकोण अनुचित है और यदि वह अब भी हठ पर है तो सुनो जो यह कहता है कि मैं बन्दर की सन्तान हूँ तो बन्दर तिरस्कृत तुच्छ है अतः वह भी हीन है और न जाने वह लोग किस दिन योनी बदल कर गधे और सूवर बन जाएं प्रतीक्षा करो इस के विपरीत हम तो आदम की सन्तान हैं जिस को ईश्वर ने मिट्टी से बनाया था और उन को सम्मान दिया अतः हम भी सम्मान वाले हैं और आदम के बाद उनके वंश की उत्पत्ति वीर्य पानी से होती है. {39:6,6:2,30:20,32:7-8,40:67,36:36,35:11,43:12-13,49:13 51:49,53:45,78:7}

گیا ہے قرآن میں متعدد آیات ہیں جن میں انسان کی پیدائش کو مٹی سے بتایا ہے اس لئے بندر کی اولا د والے انسانوں کا نظریہ غلط ہے اور اگر وہ اب بھی بضد ہیں تو سنو جو یہ کہتا ہے کہ میں بندر کی اولاد ہوں تو بندر ذلیل ہے اس لئے وہ بھی ذلیل ہیں اور نہ معلوم وہ لوگ کس دن یونی بدل کر گدھے اور سور بن جائیں، انتظار کرو. اس کے خلاف ہم تو آدم کی اولاد ہیں جس کو اللہ نے مٹی سے بنایا تھا اور ان کو عزت دی. اس لئے ہم بھی عزت والے ہیں. اور آدم کے بعد ان کی نسل کی پیدائش نطفہ پانی سے ہوتی ہے. (۶:۳۹، ۲:۶، ۲۰:۳۰، ۲۰:۳۲، ۷، ۸، ۶۷:۴۰، ۳۶:۳۶، ۱۱:۳۵، ۱۲:۴۳، ۱۳، ۱۳:۴۹، ۴۹:۵۱، ۴۵:۵۳، ۸:۷۸)

मानव इतनी मूल्यवान वस्तु है कि ईश्वर ने उसको उत्पन्न करने से पहले ही उसके जीवन में काम आने वाली हर वस्तु को उत्पन्न कर दिया था. जब इस संसार में वह सब वस्तुऐं पैदा हो गईं जैसा कि डारविन इत्यादि ने लिखा है कि पहले यह बना फिर यह बना और फिर तहतुल इन्सान बना यहां तक उन लोगों की बात उचित है. परन्तु यहां से आगे जो उन्होंने यह कहा है कि उस तहतुल इन्सान या बन्दर से मानव बना यह अनुचित कहा है. मूल बात यह है कि ईश्वर ने इन सबको मानव के लिए आदम इन्सान से पहले उत्पन्न कर दिया था उनके बाद अपने कथनानुसार ईश्वर ने मिट्टी से आदम को पैदा कर दिया और आदम से कह दिया कि यह सब वस्तुऐं तेरे लिए ही बनाई हैं इनसे काम ले परन्तु मेरी अवज्ञा झगड़ा (शजर) न करना.

انسان اتنی قیمتی چیز ہے کہ اللہ نے اس کو پیدا کرنے سے پہلے ہی اس کو زندگی میں کام آنے والی ہر اشیاء کو پیدا کر دیا تھا. جب اس دنیا میں وہ سب چیزیں پیدا ہو گئی جیسا کہ ڈارون وغیرہ نے لکھا ہے کہ پہلے یہ بنا پھر یہ بنا اور پھر تحت الانسان بنا، یہاں تک ان لوگوں کی بات ٹھیک ہے لیکن یہاں سے آگے جو انہوں نے یہ کہا ہے کہ اس تحت الانسان یا بندر سے انسان بنا یہ غلط کہا ہے. اصل بات یہ ہے کہ اللہ نے ان سب کو انسان کے لئے انسان سے پہلے پیدا کر دیا تھا ان کے بعد اپنے کہنے کے مطابق اللہ نے مٹی سے آدم کو پیدا کر دیا اور آدم سے کہہ دیا کہ یہ سب چیزیں تیرے لئے ہی بنائی ہیں ان سے کام لے لیکن میری نافرمانی جھگڑا (شجر) نہ کرنا.

जब आदम में ज्ञान आ गया तब ईश्वर ने स्थानापन्न के स्थान पर फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया पूरी कथा आयात में अंकित है अवलोकन हो.

جب آدم میں علم آ گیا تب اللہ نے آدم کو جانشین کے طور پر فرشتوں کے سامنے پیش کیا. پورا قصہ آیات میں درج ہے ملاحظہ ہو.

ईश्वर ने आदम व हव्वा को बनाने से पहले ही उसकी जरूरत की हर वस्तु पैदा कर दी. यदि पैदा न करता तो आदम व्याकुल होता (14:34) (अर्थ यह कि तुम्हें जरूरियात जिन्दगी के लिए) जिस जिस वस्तु की आवश्यकता थी जो तुम ने मांगी सब प्रस्तुत कर दी यदि तुम ईश्वर के प्रसादों को गिनना चाहो तो (किसी प्रकार) न गिन सकोगे (परन्तु इन्सान उसका धन्यवाद अदा नही करता) सत्य यह है कि इन्सान बड़ा ही जालिम है और अवज्ञाकारी है.

اللہ نے آدم وحوا کو بنانے سے پہلے ہی اس کی ضرورت کی ہر چیز پیدا کر دی تھیں. اگر پیدا نہ کرتا تو آدم پریشان ہوتا. (۳۴:۱۴) (غرض یہ کہ تمہیں ضروریات زندگی کے لئے) جس جس چیز کی ضرورت تھی سب مہیا کر دیں. اگر تم اللہ کی نعمتوں کو گننا چاہو تو (کسی طرح) نہ گن سکو گے (مگر انسان اس کا شکر ادا نہیں کرتا) حقیقت یہ ہے کہ انسان بڑا ہی ظالم اور نافرمان ہے.

और अनाथों का माल (जो तुम्हारे पास रखा हो या उनका अधिकार आता हो) उनको समर्पण कर दो (जब वह सूझबूझ को पहुंच जाएं 4:6) और उनके पवित्र धन को अपने बुरे धन से न बदलो, और न उनका माल अपने माल में मिलाकर खाओ, कि यह बड़ा कठोर पाप है (2)

اور یتیموں کا مال (جو تمہاری تحویل میں ہو یا تم پر ان کا حق آتا ہو) ان کے حوالے کر دو (جب وہ سوجھ بوجھ کو پہنچ جائیں ۔۶:۴) اور ان کے پاک مال کو اپنے برے مال سے نہ بدلو اور نہ ان کا مال اپنے مال میں ملا کر کھاؤ. کہ یہ بڑا سخت گناہ ہے (۲)

नोट- आयात 4:3 में यह आदेश दिया जा रहा है कि यदि कभी ऐसा समय आए जब युद्ध या किसी और कारण से आदमी कम हो जाए और वह अपने पीछे वैवा औरतें और अनाथ बच्चे छोड़ गए हों तो उन औरतों और बच्चों का ठीक पालन पोषण करो. और उनको अनुचित कार्यों से बचाने के लिए उनकी देखभाल ठीक करो. यदि इस प्रकार से देखभाल न कर सको तो उन वैवा स्त्रियों से जो तुम को पसंद आऐं या तुम को पसन्द करें, 2 या 3 या 4 तक विवाह कर लो. जिससे उन बच्चों और स्त्रियों को एक शक्तिशाली सहारा मिल जाए और कोई अत्याचारी उन पर हस्तक्षेप और उनका शोषण न करें.

نوٹ:۔ آیت (۳:۴) میں یہ حکم دیا جا رہا ہے کہ اگر کبھی ایسا وقت آئے جب جنگ یا کسی اور وجہ سے آدمی کم ہو جائیں اور وہ اپنے پیچھے بیوہ عورتیں اور یتیم بچے چھوڑ گئے ہوں تو ان عورتوں اور بچوں کی ٹھیک پرورش کرو. اور ان کو غلط کاموں سے بچانے کے لئے ان کی دیکھ بھال ٹھیک کرو. اگر اس طرح سے دیکھ بھال نہ کر سکو تو ان بیوہ عورتوں سے جو تم کو پسند آئیں یا تم کو پسند کریں ۲ یا ۳ یا ۴ تک نکاح کر لو جس سے ان بچوں اور عورتوں کو ایک مضبوط سہارا مل جائے اور کوئی ظالم ان پر دست درازی اور ان کا استحصال نہ کرے.

किन्तु यह चार विवाह तक की आज्ञा केवल तात्कालिक स्थिति में ही है जब स्त्रियों की संख्या अधिक हो जाए और अनाथ बच्चों के पालन पोषण का नोदन हो क्योंकि जब अनाथ स्त्री और बच्चे बे सहारा

تاہم یہ چار نکاح تک کی اجازت صرف ہنگامی حالات میں ہی ہے. جب عورتوں کی تعداد زیادہ ہو جائے اور یتیم بچوں کی پرورش کا تقاضہ ہو کیونکہ

होंगे तो पापी उनको तंग करेंगे उनको बुरे कार्यों में लगा देंगे और समाज में निर्लज्जता के कार्यों का विकास होगा, जिससे पूरा समाज विनष्ट हो जाएगा, इसलिए यह विवाह उन बेसहारा नारियों बच्चों के पालन पोषण करने के लिए है और जो आदमी कम हो गए है उनकी संख्या भी बढ़ जाएगी.

तात्कालिक स्थिति समाप्त होते ही फिर वही एक विवाह की अनुमति है (4:25) वह इसलिए कि हर व्यक्ति जानता है कि दुनिया में आदमी और स्त्री लगभग बराबर होते है बस इतना अन्तर होता है कि कही एक या दो प्रतिशत स्त्री अधिक और कही इसी अनुपात से पुरुष अधिक.

यदि चार विवाह की सामान्य स्थिति में आज्ञा दी जाती है या यह ईश्वर की ओर से ही मानी जाती है जैसा कि माना जा रहा है तो संतुलन स्थापित नही रह सकता और ईश्वर संतुलन को बिगाड़ने की अनुमति कभी नही दे सकता. वह इसलिए, मान लो कि देश की पूर्ण जन संख्या एक अरब हो तो उनमें आधे के हिसाब से पचास करोड़ पुरुष और इतनी ही स्त्री होंगी या 49 व 51 का अनुपात होगा. अब सामान्य अनुमति का सहारा लेकर दस करोड़ पुरुषों ने चार चार स्त्री कर ली इस प्रकार चालीस करोड़ स्त्री आबद्ध हो गई. केवल दस करोड़ स्त्री बची और पुरुष चालिस करोड़, अब दस करोड़ स्त्री केवल दस करोड़ पुरुषों की पत्नी ही बन सकती है. यह उस समय जब दस करोड़ आदमी एक पत्नी पर ही संतोष करें. इस प्रकार शेष 30 करोड़ पुरुष बिना पत्नी के होंगे.

बिना स्त्री के पुरुष काम का आखेट हो सकता है, जब यह स्थिति होगी तो समाज का संतुलन बिगड़ जाएगा. और एक आम बदचलनी होगी जिससे समाज नष्ट विनष्ट हो जाएगा. इन सब बातों को जानते हुए ही ईश्वर ने केवल आपात काल में अनाथों की समस्या का समाधान करने के लिए चार विवाह की अनुमति दी है. सामान्य स्थिति में केवल एक पत्नी ही की अनुमति है. (4:25, 23:4)

ईश्वर ने पुरुष और स्त्री जोड़े से उत्पन्न किए है और कहा है सूरत "रोम" आयत 30 में तो तुम एक ओर के होकर धर्म,

(ईश्वर के विधान पर) पर सीधा मुख किए चले जाओ (और ईश्वर की प्रकृति को जिस पर उसने लोगों को उत्पन्न किया है (स्वीकार किये रहो) ईश्व की बनाई हुई प्रकृति में परिवर्तन नही हो सकता, यही सीधा धर्म (विधान) है, परन्तु अधिक लोग नही जानते.

ऊपर पढ़ लिया कि ईश्वर ने जिस प्रकृति पर उत्पन्न किया है उसको न बदलो और ईश्वर का स्वभाव यह है कि उसने नर नारी बराबर बराबर बनाए है और उसका आदेश है कि सामानय स्थिति में एक ही विवाह करो. (4:25, 4:3) अतः एक ही विवाह ईश्वर का स्वभाव है. केवल आपात कालीन स्थिति के लिए आज्ञा है. चार विवाह तक अनाथों की समस्या का समाधान करने के लिए

इस विषय में ईशदूत का कथन हदीस का भी अवलोकन हो. बुखारी (जिल्द तीन किताबुन निकाह नं0 214 पे0 10)

श्रीमान मिसविर बिन मखरमा र0 का कथन है कि मैंने ईशदूत को आसन पर कहते हुए सुना कि बनी हश्शाम बिन मुगीराह ने मुझ से आज्ञा मांगी कि अपनी पुत्री अली बिन अबू तालिब के विवाह में दे दें अतः मैं आज्ञा नही देता, फिर कहता हूं कि आज्ञा नही देता, फिर कहता हूं कि आज्ञा नही देता, यदि अली बिन अबू तालिब भी यही

جب یتیم عورت اور بچے بے سہارا ہوں گے تو ظالم لوگ ان کو تنگ کریں گے ان کو غلط کاموں میں لگا دیں گے.اور معاشرہ میں بے حیائی کے کاموں کو فروغ حاصل ہوگا جس سے پورا معاشرہ تباہ ہو جائے گا اس لئے یہ نکاح ان بے سہارا عورتوں بچوں کی پرورش کرنے کے لئے ہیں اور جو آدمی کم ہو گئے ہیں ان کی تعداد بھی بڑھ جائے گی.

ہنگامی حالات ختم ہوتے ہی پھر وہی ایک نکاح کی اجازت ہے (۴:۲۵) وہ اس لئے کہ ہر آدمی جانتا ہے کہ دنیا میں آدمی اور عورتیں تقریباً برابر ہی ہوتے ہیں بس اتنا فرق ہوتا ہے کہ کہیں ایک یا دو فیصد عورتیں زیادہ اور کہیں اس تناسب سے آدمی زیادہ.

اگر چار نکاح کی عام حالت میں اجازت دی جاتی ہے یا یہ اللہ کی طرف سے ہی مانی جاتی ہے جیسا کہ مانا جا رہا ہے تو توازن قائم نہیں رہ سکتا اور اللہ توازن کو بگاڑنے کی اجازت کبھی نہیں دے سکتا. وہ اس لئے ،فرض کرو کہ ملک کی کل آبادی ایک ارب ہو تو ان میں آدھے کے حساب سے پچاس کروڑ آدمی اور اتنی ہی عورتیں ہوں گی یا ۴۹ یا ۵۱ کا تناسب ہوگا.اب عام اجازت کا سہارا لے کر دس کروڑ آدمیوں نے چار چار عورتیں کر لیں.اس طرح چالیس کروڑ عورتیں پابند ہو گئیں صرف دس کروڑ عورتیں بچیں اور آدمی چالیس کروڑ.اب دس کروڑ عورتیں صرف دس کروڑ آدمیوں کی بیوی ہی بن سکتی ہیں. یہ اس وقت جب دس کروڑ آدمی ایک عورت پر ہی قناعت کریں.اس طرح باقی ۳۰ کروڑ آدمی مجرد رہوں گے.

بغیر عورت کے آدمی نفس کا شکار ہو سکتا ہے. جب یہ حالت ہوگی تو معاشرہ عدم توازن کا شکار ہوگا.اور ایک عام بدچلنی ہوگی. جس سے معاشرہ تباہ و برباد ہو جائے گا. ان سب باتوں کو جانتے ہوئے ہی اللہ نے صرف ہنگامی حالات میں یتیموں کا مسئلہ حل کرنے کے لئے چار نکاح کی اجازت دی ہے عام حالت میں صرف ایک عورت ہی کی اجازت ہے (۴:۲۵،۲۳:۴)

اللہ نے آدمی اور عورت جوڑے سے پیدا کی ہیں اور کہا ہے سورت ''روم'' آیت ۳۰/میں تو تم ایک طرف کے ہو کر دین (اللہ کے قانون) پر سیدھا منہ کئے چلے جاؤ (اور) اللہ کی فطرت کو جس پر اس نے لوگوں کو پیدا کیا ہے (اختیار کئے رہو) اللہ کی بنائی ہوئی فطرت میں تغیر و تبدل نہیں ہو سکتا، یہی سیدھا دین (قانون) ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے.

اوپر پڑھ لیا کہ اللہ نے جس فطرت پر پیدا کیا ہے اس کو نہ بدلو اور اللہ کی فطرت یہ ہے کہ اس نے آدمی اور عورت برابر برابر بنائے ہیں. اور اس کا حکم ہے کہ عام حالت میں ایک شادی ہی کرو (۴:۲۵،۴:۳) اس لئے ایک ہی شادی اللہ کی فطرت ہے.صرف ہنگامی حالات کے لئے اجازت ہے چار شادیوں تک یتیموں کا مسئلہ حل کرنے کے لئے.

اس بارے میں فرمانے رسول حدیث بھی ملاحظہ ہو. بخاری جلد سوئم کتاب النکاح (۲۱۴) ص۔۱۰۷

حضرت مسور بن مخرمہؓ کا بیان ہے کہ میں نے رسول اللہؐ کو منبر شریف پر فرماتے ہوئے سنا کہ بنی ہشام بن مغیرہ نے مجھ سے اجازت مانگی کہ اپنی بیٹی علی بن ابو طالب کے نکاح میں دے دیں. پس میں اجازت نہیں دیتا، پھر کہتا ہوں کہ اجازت نہیں دیتا، پھر کہتا ہوں کہ اجازت نہیں دیتا. اگر علی بن

चाहते हैं तो मेरी पुत्री को तलाक दे दें और उनकी पुत्री से विवाह कर लें क्योंकि वह (श्रीमति फात्मा) मेरे जिस्म का टुकड़ा है जो बात उसे बुरी लगे वह मुझे भी बुरी लगती है, और जो वस्तु उसे पीड़ा देती है वह मुझे भी कष्ट देती है, आपने इसी प्रकार कहा,

उपरोक्त लिखने से यह बात सामने आई कि कुरआन व हदीस और प्रकृति के प्रकाश में एक विवाह की ही अनुमति है, केवल आपात कालीन समय में चार विवाह तक आज्ञा है, वह भी अनाथों की समस्या का समाधान करने के लिए है अब आयत (4:3) लिखी जा रही है,

यदि तुम्हें भय हो कि (विधवा स्त्रियों का स्वत्व देकर उनके बारे में) अनाथों के साथ संतुलन स्थापित नही कर सकते तो विधवा स्त्रियों में से जो तुम्हें पसन्द आए या पसन्द करें दो-दो, तीन-तीन या चार-चार तक विवाह किया करो (परन्तु एक समय में विवाह में चार से अधिक पत्नी न हों) और यह इसलिए (ताकि वह विधवा स्त्री और अनाथ बच्चे समाज में समा जाऐं और स्त्रियों को उनका हर प्रकार का अधिकार मिल जाए) फिर यदि तुम्हें भय हो कि एक से अधिक पत्नीयों में न्याय न करोगे तो एक ही पत्नी हो (पैतृक स्वतंत्र) या (एक पराजित जाति की) जो तुम्हारी अभिभावकी में रहती हो, यह आदेश इस विषय में कम से कम है कि सामाजिक असंतुलन से बचे रहो (3) {4:127, 4:19} (कि एक पत्नी तो होनी ही चाहिए न चार से अधिक जो आपात कालीन स्थिति में हैं)

नोट- बेसहारा स्त्री और बच्चे जब होते हैं तो उपद्रवी आदमी उन औरतों और बच्चों का शोषण करते हैं और उनको तंग करते हैं उनको दुष कर्मों में प्रयोग करते हैं और वह ऐसे बहुत से दुराचारों में लिप्त हो जाते हैं जिससे समाज नष्ट विनष्ट हो जाता है और ईश्वर की यातना आ जाती है जिससे जाति पराधीन हो जाती है और सम्मान समाप्त हो जाता है,

जब उन बेसहारा स्त्रियों बच्चों को आधार मिल जाएगा तो उनका शोषण न होगा और उन बच्चों का पालन पोषण भलिभांति होगा, वह समाज के सफल व्यक्ति बन कर उभरेंगे और आपस में प्रेम उत्पन्न होगा जो शक्ति का कारण होता है, एक पार्श्व सामान्य स्थिति में एक से अधिक विवाह इसलिए वर्जित है कि ईश्वर का विधान प्रकृति यह है कि उसने नर और नारी जोड़े से बनाया है, जैसा उल्लेख हो,

(78:7) अतः हम ही ने तुम को जोड़ा जोड़ा अर्थात नर और नारी बनाया,

(30:21) वास्ते तुम्हारे तुम्हारी प्रकार से उत्पन्न किया जोड़ा ताकि तुम को उनके पास आराम मिले यह उसकी स्मृतियों में से है,

(7:189) वह ईश्वर ही तो है जिसने तुम को एक व्यक्ति से उत्पन्न किया (और जिस जाति मिट्टी से उसको उत्पन्न किया था) उसी मिट्टी जाति से उसका जोड़ा बनाया ताकि उससे आनन्द प्राप्त करो

(36:36) वह ईश्वर पवित्र है जिसने पृथ्वी की वनस्पति के और सबयं उनके और जिन वस्तुओं की उनको सूचना नही सबके जोड़े बनाऐं

(51:49) और हर वस्तु की हमने दो प्रकार बनाई ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो,

(42:11) उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति के जोड़े बनाऐं और चार पायों के भी जोड़े बनाए

(16:72) और ईश्वर ही ने तुम्हारी जाति से तुम्हारे लिए जोड़े बनाए

ابوطالب بھی یہی چاہتے ہیں تو میری بیٹی کو طلاق دے دیں اور ان کی بیٹی سے نکاح کرلیں کیونکہ وہ (حضرت فاطمہؓ) میرے جسم کا ٹکڑا ہے، جو بات اسے بُری لگے وہ مجھے بھی بُری لگتی ہے. اور جو چیز اسے تکلیف دیتی ہے وہ مجھے بھی تکلیف دیتی ہے. آپ نے اس طرح فرمایا.

مندرجہ بالا لکھنے سے یہ بات سامنے آئی کہ قرآن وحدیث اور فطرت کی روشنی میں ایک نکاح کی ہی اجازت ہے صرف ہنگامی وقت میں چار نکاح تک اجازت ہے وہ بھی یتیموں کا مسئلہ حل کرنے کے لئے ہے. اب آیت (۴:۳) لکھی جارہی ہے.

اگر تمہیں خوف ہو کہ (بیوہ عورتوں کا حق دے کر ان کے بارے میں) یتیموں کے ساتھ توازن قائم نہیں کرسکتے تو بیوہ عورتوں میں سے جو تمہیں پسند آئیں یا پسند کریں دو. دو، تین۔ تین یا چار چار تک نکاح کیا کرو (مگر بیک وقت نکاح میں چار سے زیادہ بیوی نہ ہوں) اور یہ اس لئے (تاکہ وہ بیوہ عورتیں اور یتیم بچے معاشرہ میں سما جائیں اور عورتوں کو ان کا ہر طرح کا حق مل جائے) پھر اگر تمہیں خوف ہو کہ ایک سے زائد بیویوں میں عدل نہ کرو گے تو ایک ہی بیوی ہو (خاندانی آزاد) یا ایک مفتوحہ قوم کی جو تمہاری سرپرستی میں رہتی ہوں. یہ حکم اس امر میں کم سے کم ہے کہ تم عائلی عدم توازن سے بچے رہو (۳) [۴:۱۹، ۱۲۷] (کہ ایک بیوی تو ہونی ہی چاہیے نہ چار سے زیادہ جو ہنگامی حالات میں ہے)

نوٹ:۔ بے سہارا عورتیں اور بچے جب ہوتے ہیں تو فسادی آدمی ان عورتوں اور بچوں کا استحصال کرتے ہیں اور ان کو تنگ کرتے ہیں ان کو غلط کاموں میں استعمال کرتے ہیں. اور وہ ایسی بہت سی بداخلاقیوں میں ملوث ہوجاتے ہیں جن سے معاشرہ تباہ وبرباد ہوجاتا ہے. اور اللہ کا عذاب آجاتا ہے. جس سے قوم غلام ہوجاتی ہے اور عزت ختم ہوجاتی ہے.

جب ان بے سہارا عورتوں بچوں کو سہارا مل جائے گا تو ان کا استحصال نہ ہوگا. اور ان بچوں کی پرورش اچھی طرح ہوگی. وہ معاشرے کے کامیاب فرد بن کر ابھریں گے اور آپس میں محبت پیدا ہوگی. جو طاقت کا سبب ہوتی ہے. ایک پہلو عام حالت میں ایک سے زائد شادی اس لئے ممنوع ہے کہ اللہ کا قانون فطرت یہ ہے کہ اس نے مونث اور مذکر جوڑے سے بنائے ہیں آیات ملاحظہ ہوں

(۷۸:۸) واسطے تمہارے تمہاری جنس سے پیدا کیا جوڑا تاکہ تم کو ان کے پاس آرام ملے. یہ اس کی نشانیوں میں سے ہے.

(۷:۱۸۹) (وہ اللہ ہی تو ہے جس نے تم کو ایک شخص سے پیدا کیا تھا) اسی مٹی سے اس کا جوڑا بنایا تاکہ اس سے راحت حاصل کرو.

(۳۶:۳۶) وہ اللہ پاک ہے جس نے زمین کی بناتات کے اور خود ان کے اور جن چیزوں کی ان کو خبر نہیں سب کے جوڑے بنائے.

(۵۱:۴۹) اور ہر چیز کی ہم نے دو قسمیں بنائیں تاکہ تم نصیحت پکڑو.

(۴۲:۱۱) اسی نے تمہارے لئے تمہاری ہی جنس کے جوڑے بنائے اور چارپایوں کے بھی جوڑے بنائے

(۱۶:۷۲) اور اللہ ہی نے تمہاری جنس سے تمہارے لئے جوڑے بنائے اور

और स्त्रियों जोड़ों से तुम्हारे पुत्र और पौते उत्पन्न किए (16:72, 43:12, 41:49, 26:7, 35:11, 78:8, 53:45, 92:3)

عورتوں جوڑوں سے تمہارے بیٹے اور پوتے پیدا کیے (۱۶:۷۲، ۴۳:۱۲، ۴۱:۴۹، ۲۶:۷، ۳۵:۱۱، ۷۸:۸، ۵۳:۴۵، ۹۲:۳)

आयात कुरआन के प्रकाश में जो विवाह के विषय में लिखी गई है कि सामान्य और तात्कालिक स्थिति के लिए क्या आदेश है यदि ध्यान पूर्वक पढ़ा जाएगा तो बात अवश्य स्पष्ट हो जागी कि विवाह केवल एक ही करना है, यदि एक से अधिक किया जाएगा जैसा कि लिख रखा है कि चार विवाह तक की अनुमति है वह अनुचित है चार विवाह केवल तात्कालिक स्थिति में है क्योंकि ईश्वर ने पुरुष और स्त्री लगभग बराबर बराबर बनाए है,

آیات قرآن کی روشنی میں جو نکاح کے بارے میں لکھا گیا ہے کہ عام حالات اور ہنگامی حالات کے لئے کیا حکم ہے اگر بغور سمجھ کر پڑھا جائے گا تو ضرور بات صاف ہو جائے گی کہ نکاح صرف ایک ہی کرنا ہے اگر ایک سے زیادہ کیا جائے گا جیسا کہ لکھ رکھا ہے کہ چار تک نکاح کی اجازت ہے وہ غلط ہے. چار نکاح صرف ہنگامی حالات میں ہیں کیونکہ اللہ نے آدمی اور عورت تقریباً برابر برابر بنائے ہیں.

मुहम्मद स0 के लिए जो लिखा मिलता है कि आपने 23,8,9 या 13 या 15 किए वह कुरआन के आदेश और ईशदूत के स्थान के अनुसार नही है, मुहम्मद स0 के विवाह में एक समय में केवल चार पत्नीयां ही रही है और वह भी विवशता की स्थिति में क्योंकि जब सूरत निसा की आयत तीन अवतरित हुई उस समय आपके विवाह में जीवित पत्नी तीन थी एक विवाह श्रीमति ज़ैनब से विवशता के आधीन करना पड़ा, इसका विवरण मैंने अपनी पुस्तक "नामूस-ए-रसूल" में अंकित किया है, साथ ही कुछ कथन और इतिहास से भी लिख दिया जाए

محمدؐ کے لئے جو لکھا ملتا ہے کہ آپ نے ۲۳/نکاح کئے، آٹھ، نو یا ۱۳ یا ۱۵ کئے وہ قرآن کے احکام اور مقام نبوت کے مطابق نہیں ہے. محمدؐ کے نکاح میں بیک وقت صرف چار بیوی ہی رہی ہیں اور وہ بھی مجبوری کی حالت میں. کیونکہ جب سورت نساء کی آیت ۳ نازل ہوئی اس وقت آپ کے نکاح میں حیات بیوی تین تھیں. ایک نکاح حضرت زینب سے مجبوری کے تحت کرنا پڑا. اس کی تفصیل میں نے اپنی کتاب ناموس رسولؐ میں درج کی ہے. ساتھ ہی کچھ حدیث اور تاریخ سے بھی لکھ دیا جائے.

अहादीस (कथन) में आया है कि तायफ का रईस गीलान जब इस्लाम लाया तो उसकी नौ पत्नीयां थी, नबी ने उसे आदेश दिया कि चार पत्नी रखले शेष को छोड़ दे, इसी प्रकार एक दूसरा व्यक्ति (नोफिल बिन मआविया) की पांच पत्नी थी आपने आदेश दिया कि उनमें से एक को छोड़ दे, इससे सिद्ध हुआ कि चार पत्नी केवल तात्कालिक स्थिति के लिए है जिससे वेवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों की समस्या का समाधान हो, सामान्य स्थिति में केवल एक पत्नी ही की अनुमति है हर बात को कुरआन के प्रकाश में देखा जाना उचित है,

احادیث میں آیا ہے کہ طائف کا رئیس غیلان جب اسلام لایا تو اس کی نو بیویاں تھیں. نبی نے اسے حکم دیا کہ چار بیویاں رکھ لے باقی کو چھوڑ دے. اسی طرح ایک دوسرا شخص (نوفل بن معاویہ) کی پانچ بیویاں تھیں آپ نے حکم دیا کہ ان میں سے ایک کو چھوڑ دے. اس سے ثابت ہوا کہ چار بیوی صرف ہنگامی حالت کے لئے ہیں جس سے بیوہ عورتوں اور یتیم بچوں کا مسئلہ حل ہو. عام حالت میں صرف ایک بیوی ہی کی اجازت ہے. ہر بات کو قرآن کی روشنی میں دیکھا جانا درست ہے.

और स्त्रियों को उनके मेहर अर्थात विवाह के समय जो धन देना स्वीकार किया उसको प्रसन्नता से दे दिया करो, हां, यदि वह अपनी इच्छा से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दे तो उसे उल्लास से खाओ (4)

اور عورتوں کو ان کے مہر خوشی سے دے دیا کرو. ہاں اگر وہ اپنی خوشی سے اس میں سے کچھ چھوڑ دیں تو اسے شوق سے کھاؤ (۴)

और (धर्म वालो!) अपने वह धन जिनका ईश्वर ने तुम्हें ग्रहीता (अमीन) बनाया है (अर्थात अनाथ बच्चों के माल जो तुम्हारे पास धरोहर है वह) वे समझ अनाथों को समर्पण न करना और उनमें से उन्हें तुम भोजन भी कराते रहना और कपड़े भी पहनाते रहो, और याद रखना कि उनसे सदैव परिचित अर्थात अच्छी बात करते रहना (5)

اور (ایمان والو!) وہ مال جن کا اللہ نے تمہیں امین بنایا ہے (یعنی یتیم بچوں کے مال جو تمہارے پاس امانت ہیں وہ) بے سمجھ یتیموں کے حوالے نہ کرنا. اور ان میں سے انہیں تم کھانا بھی کھلاتے رہنا اور کپڑے بھی پہناتے رہو. اور یاد رکھنا کہ ان میں ہمیشہ معروف یعنی اچھی بات کرتے رہنا (۵)

और अनाथों की परीक्षा लेते रहो और पशिक्षण और अभ्यास कराते रहो उनके विवाह की आयु तक पहुंच जाने तक व्यस्क हो जाने के बाद यदि तुम उनमें विवेक देखो तो उन्हें उनके माल सौंप दो, एसा कभी न करना की न्याय की सीमा का उल्लंघन करके इस भय से उनके माल जल्दी जल्दी खा जाओ कि वह बड़े होकर अपने अधिकार की मांग करेंगे, अनाथ का अभिभावक मालदार हो वह संयम से काम लें, और जो निर्धन हो वह परिचित ढंग से खाए फिर जब उनके माल उनको समर्पण करने लगो तो लोगों को साक्षी बना लो और लेखा

اور یتیموں کو آزماتے رہو اور تربیت دیتے اور مشق کراتے رہو ان کی عمر نکاح کو پہنچ جانے تک. بالغ ہو جانے کے بعد اگر تم ان میں ہوشیاری دیکھو تو انہیں ان کے اموال سونپ دو ایسا کبھی نہ کرنا کہ حد انصاف سے تجاوز کرکے اس خوف سے ان کے مال جلدی جلدی کھا جاؤ کہ وہ بڑے ہو کر اپنے حق کا مطالبہ کریں گے. یتیم کا سرپرست مالدار ہو وہ پرہیزگاری سے کام لے اور جو غریب ہو وہ معروف طریقے سے کھائے پھر جب ان کے مال ان کے حوالے کرنے لگو تو لوگوں کو اس پر گواہ بنالو اور حساب لینے کے

लेने के लिए ईश्वर काफी है (6) (7:34)

لئے اللہ کافی ہے(۶)[۳۴:۱۷]

पुरुषों के लिए उस धन में भाग है जो माता पिता और निकट वर्ती नाते दारों ने छोड़ा हो और स्त्रीयों के लिए भी उस धन में भाग है जो माता पिता और निकटवर्ती नातेदारों ने छोड़ा हो चाहे थोड़ा हो या बहुत और यह भाग ईश्वर की ओर से निश्चित है. (7) (4:33)

مردوں کے لئے اس مال میں حصہ ہے جو ماں باپ اور قریبی رشتہ داروں نے چھوڑا ہو۔اورعورتوں کے لئے بھی اس مال میں حصہ ہے جو ماں باپ اورقریبی رشتہ داروں نے چھوڑا ہو، خواہ تھوڑا ہو یا بہت ، اور یہ حصہ (اللہ کی طرف سے)مقرر ہے(۷)(۳۳:۴)

और बंटवारे के समय परिवार के निकटवर्ती लोग और अनाथ और निर्धन आए तो उस माल में से उनको कुछ दो और उनके साथ अच्छी बात करो (8) लोगों को इस बात का विचार करके डरना चाहिए कि यदि वह स्वंय अपने पीछे बेबस अनाथ सन्तान छोड़ते तो मरते समय उन्हें अपने बच्चों के बारे में कैसी कुछ शंका होती अतः चाहिए कि वह ईश्वर का भय करें और जची तुली बात कहा करें. (9)
निःसंदेह जो लोग अत्याचार के साथ अनाथों के धन खाऐंगे वास्तव में वह अपने पेट अग्नि से भरेंगे और वह अवश्य नर्क की भड़कती हुई अग्नि में झौंके जाऐंगे. (10)

اور جب تقسیم کے وقت قریبی کنبہ کے لوگ اور یتیم اور مسکین آئیں تو اس مال میں سے ان کو کچھ دو اور ان کے ساتھ اچھی بات کرو(۸)
لوگوں کواس بات کا خیال کر کے ڈرنا چاہیے کہ اگر وہ خود اپنے پیچھے بے بس اولاد چھوڑتے تو مرتے وقت انہیں اپنے بچوں کے حق میں کیسے کچھ اندیشے ہوتے، پس چاہیے کہ وہ اللہ کا خوف کریں اور جچی تلی بات کہا کریں(۹)
بے شک جو لوگ ظلم کے ساتھ یتیموں کے مال کھائیں گے درحقیقت وہ اپنے پیٹ آگ سے بھریں گے اور وہ ضرور جہنم کی بھڑکتی ہوئی آگ میں جھونکے جائیں گے(۱۰)

नोट-अनाथ के बारे में कुरआन की कुछ और आयतें लिखी जा रही हैं.

نوٹ:۔یتیم کے بارے میں قرآن کی کچھ اور آیتیں لکھی جا رہی ہیں...

(2:83) और जब हम ने बनी इसराईल से वचन लिया कि ईश्वर के सिवा किसी की पूजा न करना और माता पिता और नातेदारों और अनाथों और निर्धनों के साथ भलाई करते रहना....................

(۸۳:۲)اور جب ہم نے بنی اسرائیل سے عہد لیا کہ اللہ کے سوا کسی کی عبادت نہ کرنا اور ماں باپ اور رشتہ داروں اور یتیموں اور محتاجوں کے ساتھ بھلائی کرتے رہنا...

(2:220) (विचार करो) दुनिया और परलोक में, और तुम से अनाथों के विषम में ज्ञात करेंगे कह देना उन का सुधार बहुत अच्छा काम है.

(۲۲۰:۲) (غور کرو) دنیا اور آخرت میں،اور تم سے یتیموں کے بارے میں دریافت کریں گے کہہ دینا ان کی اصلاح بہت اچھا کام ہے.

(4:36) और ईश्वर ही की पूजा करो और उस के साथ किसी वस्तु को साझी न बनाओ और माता पिता और निकट वर्तीयों और अनाथों और निर्धनों और नातेदार प्रतीवासी और अपरिचित प्रति वासीयों और मित्रों और यात्रियों और जो लोग तुम्हारे अधिकार में हो सब के साथ उपकार करो और ईश्वर घमण्ड करने वालों बड़ाई मारने वालों को मित्र नही रखता.

(۳۶:۴)اور اللہ ہی کی عبادت کرو اور اس کے ساتھ کسی چیز کو شریک نہ بناؤ اور ماں باپ اور قرابت داروں اور یتیموں اور محتاجوں اور رشتہ دار ہمسایوں اور اجنبی ہمسایوں اور رفقائے پہلو اور مسافروں اور جو لوگ تمہارے قبضے میں ہوں سب کے ساتھ احسان کرو اور اللہ تکبر کرنے والوں، بڑائی مارنے والوں کو دوست نہیں رکھتا.

(4:127) वह उन अनाथ स्त्रीयों के विषम में है जिन को तुम उन का अधिकार तो देते नही और इच्छा रखते हो कि उन के साथ विवाह करलो और बेकस बच्चों के बारे में और यह भी आदेश देता है कि अनाथों के विषय में न्याय पर स्थापित रहो और जो भलाई तुम करोगे ईश्वर उस को जानता है.

(۱۲۷:۴)......وہ ان یتیم عورتوں کے بارے میں ہے جن کو تم ان کا حق تو دیتے نہیں ،اور خواہش رکھتے ہو کہ ان کے ساتھ نکاح کرو۔اور بے کس بچوں کے بارے میں اور یہ بھی حکم دیتا ہے کہ یتیموں کے بارے میں انصاف پر قائم رہو۔اور جو بھلائی تم کرو گے اللہ اس کو جانتا ہے.

(6:153) और अनाथ के धन के पास भी न जाना परन्तु ऐसी विधि से कि बहुत ही अच्छा हो यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए

(۱۵۳:۶)اور یتیم کے مال کے پاس بھی نہ جانا مگر ایسے طریق سے کہ بہت ہی اچھا ہو۔یہاں تک کہ وہ جوانی کو پہنچ جائے.

(12:34) और अनाथ के धन के पास न जाना परन्तु अच्छी विधि से यहां तक कि वह ज्वानी को पहुंच जाए और वचन को पूरा करो कि वचन के विषय में अवश्य प्रश्न होगा. (66:2)

(۳۴:۱۷)اور یتیم کے مال کے پاس نہ جانا مگر اچھے طریقے سے. یہاں تک کہ وہ جوانی کو پہنچ جائے،اور عہد کو پورا کرو کہ عہد کے بارے میں ضرور سوال ہوگا(۲:۶۶)

(89:17) सुनो तुम अनाथ की सेवा नही करते.
(89:18) और न निर्धन को भोजन खिलाने की प्रेरणा देते हो.
(89:19) और मृतक संपत्ति के माल को समेट कर खा जाते हो.
(89:20) भला उस ने तुम्हें अनाथ पाकर स्थान नही दिया.

(۸۹:۱۷)سنو تم یتیم کی خاطر نہیں کرتے
(۸۹:۱۸)اور نہ مسکین کو کھانا کھلانے کی ترغیب دیتے ہو
(۸۹:۱۹)اور میراث کے مال کو سمیٹ کر کھا جاتے ہو
(۸۹:۲۰)اور مال کو بہت عزیز رکھتے ہو

(93:6) भला उसने तुम्हें अनाथ पाकर स्थान नही दिया

(93:7) और तुम्हें सत्य की खोज में पाया तो सीधा मार्ग दिखाया

(93:8) और आपको धर्म शास्त्र का उपेक्षित पाया तो सम्पन्न कर दिया धर्म शास्त्र देकर जो धर्म नही जानता वह भी अनाथ है,

(93:9) तो तुम भी अनाथ पर अन्याय न करना,

ऊपर जो आयात कुरआन से अंकित की गई है उनमें अनाथ के विषय में स्पष्टीकरण है कि उनका धन जो उनको मिलना है उन तक पहुंचा दो यदि ऐसा न किया तो नर्क की आग में जाने के लिए तैयार रहो, किन्तु अपरिचित किन कारणों से अनाथ को उसके अधिकार से वंचित कर दिया गया है, अर्थात अनाथ पौते को दादा के मरने पर उसके अधिकार से वंचित कर दिया है, जो उस अनाथ पौते के पिता के जीवित होने पर दादा के मरने के बाद अधिकार मिलता,

उदाहरणतः ज़ैद के दो लड़के है और दोनों के संतान है, ज़ैद के जीवन में ज़ैद का एक पुत्र मर गया और उसने अपना एक पुत्र छोड़ा, ज़ैद के उस पुत्र की मृत्यु के कुछ दिनों के बाद ज़ैद का देहान्त हो जाता है, तो ज़ैद का जो पुत्र मर गया था उसके पुत्र अर्थात ज़ैद के पौते को कुछ नही दिया जाता,

परन्तु दूसरा पार्श्व यह है कि यदि ज़ैद के जीवन में ज़ैद का वह अनाथ पौता मृतक हो जाता है तो उस अनाथ पौते के छोड़े धन से पिता का (1/6) भाग दादा अर्थात ज़ैद को दिया जाना निश्चित है, तर्क यह दिया जाता है कि उस अनाथ पौते का पिता जीवित नही है अतः पिता के स्थान पर जीवित दादा अर्थात ज़ैद आ गया, और यह प्रसंग स्थानापन्न का माना गया जो ठीक है अर्थात दादा पौते के मध्य एक आवरण पौते के पिता का था वह आवरण पिता के मरने के बाद समाप्त हो गया, और पौते के पिता के स्थान पर दादा आ गया, परन्तु यह नियम अनाथ पौते के प्रसंग में लागू नही किया?

जब ज़ैद का पुत्र मृतक हो गया और उस मृतक लड़के ने अपना एक पुत्र छोड़ा तो ज़ैद के पुत्र का आवरण जो पौते और दादा के बीच था समाप्त हो गया, और वह अनाथ पौता अपने पिता के स्थान पर स्थापित होकर दादा की सम्पत्ति में उस भाग का अधिकारी हो गया जो उसके पिता को मिलना था यह ईश्वर का आदेश है उसको तोड़ना बहुत बड़ा अन्याय है, दादा की सम्पत्ति में यदि पौते को अधिकार दिया जाता है तो यह उस पर दया नही है अपितु यह उसका अधिकार है जो ईश्वर ने निश्चित किया है, जिसका विवरण आगे आ रहा है,

बहुत से आदमी उस अनाथ पौते पर करूणा के आधार पर उत्तरदान का उल्लेख करते है कि ऐसे प्रसंग में दादा अनाथ पौते के हित में उत्तरदान कर दे किन्तु यह विचार एक प्रकार से ईश्वर के नियम से विमुखता है ईश्वर ने उसका अधिकार निश्चित किया है और हम उस अधिकार को समाप्त कर रहे है, अपनी ओर से नवीन नियम बनाकर जबकि उस व्यक्ति को जो उत्तराधिकारी है सामान्य स्थिति में उत्तर पत्र नही किया जा सकता, जिसको मुहम्मद स0 ने अपने शब्दों में कहा है- उत्तराधिकारी को उत्तर पत्र नही, दादा पिता के स्थान पर कैसे आया इसके विषय में ईश्दूत का कथन प्रस्तुत है-

(858) श्रीमान अब्दुल्लाह बिन अबू मलेका कहते है कि कूफे वालों ने श्रीमान अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के लिए लिखा कि दादा की मीरास का आदेश बताया जाए उन्होंने उत्तर दिया कि जिस अस्तित्व के विषय में ईशदूत ने कहा है कि यदि इस समुदाय से मैं किसी को खलील बनाता

(۹۳:۶) بھلا اس نے تمہیں یتیم پا کر جگہ نہیں دی

۹۳:۷) اور تمہیں حق کی تلاش میں پایا تو سیدھا ستہ دکھایا

(۹۳:۸) اور آپ کو شریعت کا حاجت مند پایا تو غنی کر دیا شریعت دے کر جو دین نہیں جانتا وہ بھی یتیم ہے۔

(۹۳:۹) تو تم بھی یتیم پر ستم نہ کرنا

اوپر جو آیات قرآن سے درج کی گئی ہیں ان میں یتیم کے بارے میں وضاحت ہے کہ ان کا مال جو ان کو ملنا ہے ان تک پہنچا دو اگر ایسا نہ کیا تو دوزخ کی آگ میں جانے کے لئے تیار رہو لیکن نا معلوم کن وجوہات سے یتیم کو اس کے حق سے محروم کر دیا گیا ہے. یعنی یتیم پوتے کو دادا کے مرنے پر اس حق سے محروم کر دیا ہے جو اس یتیم پوتے کے باپ کے زندہ ہونے پر دادا کے مرنے کے بعد حق ملتا.

مثلاً زید کے دو لڑکے ہیں اور دونوں کے اولاد ہے. زید کی زندگی میں زید کا ایک لڑکا مر گیا. اور اس نے اپنا ایک لڑکا چھوڑا. زید کے اس لڑکے کی موت کے کچھ دنوں کے بعد زید کا انتقال ہو جاتا ہے. تو زید کا پورا مال اس زندہ لڑکے کو دے دیا جاتا ہے. زید کا جو لڑکا مر گیا تھا اس کے لڑکے یعنی زید کے پوتے کو کچھ نہیں دیا جاتا. مگر دوسرا پہلو یہ ہے.

کہ اگر زید کی زندگی میں زید کا وہ یتیم پوتا فوت ہوتا ہے تو اس یتیم پوتے کے ترکے میں سے باپ کا (۱/۶) حصہ دادا یعنی زید کو دیا جانا طے ہے. دلیل یہ دی جاتی ہے کہ اس یتیم پوتے کا باپ زندہ نہیں ہے. اس لئے باپ کی جگہ زندہ دادا یعنی زید آ گیا. اور یہ مسئلہ قائم مقامی مانا گیا جو ٹھیک ہے. یعنی دادا پوتے کے درمیان ایک حجاب پوتے کے باپ کا تھا وہ حجاب باپ کے مرنے کے بعد ختم ہو گیا. اور پوتے کے باپ کی جگہ دادا آ گیا. مگر یہ قاعدہ یتیم پوتے کے بارے میں لاگو نہیں کیا؟

جب زید کا لڑکا فوت ہو گیا اور اس فوت شدہ لڑکے نے اپنا ایک لڑکا چھوڑا تو زید کے بیٹے کا حجاب جو پوتے اور دادا کے درمیان تھا ختم ہو گیا اور وہ یتیم پوتا اپنے باپ کی جگہ پر قائم ہو کر دادا کی جائداد میں اس حصہ کا حقدار ہو گیا جو اس کے باپ کو ملنا تھا یہ اللہ کا حکم ہے اس کو توڑنا بہت بڑا ظلم ہے. دادا کی جائداد میں اگر پوتے کو حق دیا جاتا ہے تو یہ اس پر رحم نہیں ہے بلکہ یہ اس کا وہ حق ہے جو اللہ نے مقرر کیا ہے. جس کی تفصیل آگے آ رہی ہے.

بہت سے آدمی اس یتیم پوتے پر ترس کھا کر وصیت کا ذکر کرتے ہیں کہ ایسے معاملے میں دادا یتیم پوتے کے حق میں وصیت کر دے. لیکن یہ رائے ایک طرح سے اللہ کے قانون سے انحراف ہے. اللہ نے اس کا حق مقرر کیا اور ہم اس حق کو ختم کر رہے ہیں اپنی طرف سے نیا قانون بنا کر جب کہ اس آدمی کو جو وارث ہے عام حالت میں وصیت نہیں کی جا سکتی. جس کو محمدؐ نے اپنے الفاظ میں ادا کیا ہے. وارث کو وصیت نہیں دادا باپ کی جگہ کیسے آیا اس کے بارے میں حدیث رسول پیش ہے.

(۸۵۸) حضرت عبداللہ بن ابوملیکہ فرماتے ہیں کہ اہل کوفہ نے حضرت عبداللہ بن زبیر کے لئے لکھا کہ دادا کی میراث کا حکم بتایا جائے انہوں نے جواب دیا کہ جس ہستی کے بارے میں رسول اللہؐ نے فرمایا ہے کہ اگر اس امت سے میں کسی کو

तो उन्हीं को खलील बनाता अर्थात अबू बकर को उन्होंने दादा को पिता के स्थान पर रखा है, अर्थात श्री अबू बकर ने (बुखारी अरबी उर्दू, पेज-378 जिल्द दो हदीस नं0 857, किताबुल अम्बिया)

एक पुस्तक का संदर्भ- इब्न अब्बास र0 कहते हैं कि मैंने रसूल के साथियों से अच्छे लोग नहीं देखे, उन्होंने महामना से कुल 13 प्रश्न ज्ञात किये, आपसे बेकार के प्रश्न नहीं करते थे अपितु आवश्यकता अनुसार प्रश्न करते आप उस का उत्तर देते थे बाद आप की सेवा में आते तो आप उन पर निर्णय देते थे लोगों को अच्छे कार्य करते देखते तो उत्साह बढ़ाते जब असभ्य कार्य देखते तो अप्रिय करते श्री अबुबकर या उमर र0 को जब किसी विषय के बारे में हदीस ज्ञात न होती तो और लोगों से प्रश्न कर लेते, सहाबा को विशेषता इस लिए जमा करते, महा मना अबुबकर से एक बार दादी की दाय ज्ञात की कहा इस विषय में मैंने कोई हदीस आहजरत स0 से नहीं सुनी फिर ज़ौहर की नमाज़ पढ़के घोषणा की कि तुम लोगों में से किसी को दादी की दाय के विषय में कोई हदीस ज्ञात है श्री मुगीरा ने निवेदन किया मुझे जानकारी है कहा कितनी निवेदन किया छटा भाग ज्ञात किया और किसी को ज्ञात है तो मुहम्मद बिन सलमा ने इस की पुष्टि की और श्री अबुबकर ने छटा भाग दिला दिया इसी प्रकार श्री उमर का व्यवहार भी रहा संदर्भ पुस्तक आसार इमाम बाब इजतिहाद पेज, {193:194}

नोट- हदीस और पुस्तक के संदर्भ में अन्तर है अबुबकर के विषय में मुहम्मद को ज्ञात था कि वह दादा को पिता के स्थान पर मानते हैं ऐसे ही दादी परन्तु पुस्तक आसार इमाम के संदर्भ में यह है कि श्री अबुबकर इस बारे में न जानते थे, दूसरे सहाबा से ज्ञात किया तब छटा भाग दिलाया किन्तु यह तो प्रमाणित ही है कि दादा पिता के स्थान पर है ऐसे ही अनाथ पोता भी मृतक पिता के स्थान पर आ जाता है प्रसंग बराबर-बराबर है दादा पौते में जो आवरण पिता या पुत्र के कारण से होता है वह मृत्यु के बाद समाप्त हो जाता है और दादा पौता आमने सामने आ जाते हैं जैसे पिता पुत्र,

मृतक सम्पति व दाय किस का अधिकार है उस के निश्चित करने का अधिकार केवल ईश्वर को है जो कर दिया और उस का स्पष्टीकरण यदि आवश्यक्ता है तो वह मुहम्मद स0 को करना है जो कर दिया, किसी समस्या के विषय में कुरआन के विरुद्ध सामान्य सम्मति या पूर्वजो से संतान तक का एक मत होना कोई तर्क नहीं बन सकता विभाजन मृतक सम्पत्ति सम्बन्धित कुरआनी आदेशों का वाचन करने से ज्ञात होता है कि नातों में जो आमने सामने होते हैं उन्हें एक दूसरे की मृतक सम्पत्ति पहुंचाती है, कुरआन में जो मृतक सम्पत्ति के सर्व प्रथम अधिकारी हैं वह लगभग आठ हैं, मृतक के पिता-माता, पत्नी या पति जो जीवित हो बेटी-बेटे किसी के मरने पर उसकी छोड़ी सम्पत्ति इन्हीं के निर्धारित भागों के अनुसार दी जाती है, पुत्र के लिए भिन्न की दशा में कोई भाग का लेख नहीं है किन्तु अनुपात की दशा में उस मरने वाले की पूत्री से दो गुना दिया जाना निश्चित है, हां कलाला की स्थिति में भाई-बहन को भी अंश मिलता है,

यह भी ईश्वर ने कुरआन में बता दिया है कि मृतक सम्पत्ति का अधिकार एक दूसरे के लिए है, उदाहरणतः पिता मरा तो पुत्र उसकी सम्पत्ति पाऐंगे, परन्तु यदि पहले पुत्र मर जाए तो पुत्र की सम्पत्ति में पिता को उसका भाग दिया जाएगा ऐसे ही माता का विषय है, ऐसे ही पत्नी और पति का विषय है, मृतक सम्पत्ति में अधिकार दोनों और लागू होता है, सूरत निसा की आयत 176 में कलाला भाई की मृतक सम्पत्ति उसकी बहन का अधिकार है तो कलाला बहन की मृतक

خلیل بناتا تو انہیں کو خلیل بناتا یعنی ابوبکر. انہوں نے دادا کو باپ کے درجے میں رکھا ہے یعنی حضرت ابوبکر نے (بخاری عربی اردو۔جلد دوم،صفحہ ۳۷۸،حدیث ۸۵۷، کتاب انبیاء)

ایک کتاب کا حوالہ۔ ابن عباسؓ فرماتے ہیں کہ میں نے اصحاب رسول سے بہتر لوگ نہیں دیکھے انہوں نے آنحضور سے کل تیرہ مسائل پوچھے. آپؐ سے غیر مفید سوالات نہیں کرتے تھے بلکہ حسب ضرورت استفسار کرتے. آپؐ اس کا جواب دیتے تھے. مقدمات آپ کی خدمت میں آتے تو آپؐ ان پر فیصلہ فرمادیتے تھے. لوگوں کو اچھے کام کرتے دیکھتے تو ہمت افزائی فرماتے. جب ناشائستہ عمل دیکھتے تو ناپسند فرماتے. حضرت ابوبکرؓ و عمرؓ کو جب کسی مسئلہ کے بارے میں احادیث معلوم نہ ہوتیں تو اور لوگوں سے سوال کر لیتے. صحابہ کرام کو بالخصوص اس لئے جمع فرماتے. حضرت ابوبکرؓ سے ایک مرتبہ دادی (جدہ) کی میراث پوچھی گئی. فرمایا اس سلسلہ میں میں نے کوئی حدیث آنحضورؐ سے نہیں سنی پھر ظہر کی نماز ادا کر کے اعلان فرمایا کہ تم لوگوں میں سے کسی کو جدہ کی میراث کے متعلق کیا کوئی حدیث معلوم ہے. حضرت مغیرہ نے عرض کیا مجھے معلوم ہے. فرمایا کس قدر عرض کیا چھٹا حصہ. پوچھا اور کسی کو معلوم ہے. تو محمد بن سلمٰی نے اس کی تصدیق کی اور حضرت ابوبکرؓ نے چھٹا حصہ دلوادیا اس طرح حضرت عمر کا عمل بھی رہا. حوالہ کتاب آثار امام باب اجتہاد ص ۱۹۳،۱۹۴۔

نوٹ:۔ حدیث اور کتاب کے حوالے میں فرق ہے. ابوبکرؓ کے بارے میں محمد کو علم تھا کہ وہ دادا کو باپ کی جگہ مانتے ہیں. ایسے ہی دادی. مگر کتاب آثار امام کے حوالے میں یہ ہے کہ حضرت ابوبکرؓ اس بارے میں نا جانتے تھے دوسرے صحابہ سے معلوم کیا تب چھٹا حصہ دلایا. لیکن یہ تو ثابت ہی ہے کہ دادا باپ کی جگہ پر ہے. ایسے ہی یتیم پوتا بھی مرحوم باپ کی جگہ پر آجاتا ہے. معاملہ برابر برابر ہے. دادا پوتے میں جو حجاب باپ بیٹے کی وجہ سے ہوتا ہے وہ وفات کے بعد ختم ہو جاتا ہے اور دادا پوتا آمنے سامنے آجاتے ہیں. جیسے باپ بیٹا.

ترکہ و میراث کس کا حق ہے اس کو طے کرنے کا حق صرف اللہ کو ہے جو کر دیا اور اس کی وضاحت اگر ضرورت ہے تو وہ محمد کو کرنا ہے جو کر دیا. کسی مسئلہ کے بارے میں قرآن کے خلاف اجماع عام یا سلف سے خلف تک کا ایک رائے ہونا کوئی حجت نہیں بن سکتا. تقسیم میراث سے متعلق احکامات قرآنی کا مطالعہ کرنے سے پتہ چلتا ہے کہ رشتوں میں جو آمنے سامنے ہوتے ہیں انہیں ایک دوسرے کی میراث پہنچتی ہے. قرآن میں جو ترکہ کے اوّلین حقدار ہیں وہ تقریباً آٹھ ہیں. متوفی کے باپ ماں بیوی یا شوہر میں جو زندہ ہو اور بیٹی بیٹے. کسی کے مرنے پر اس کی چھوڑی میراث انہیں ان کے متعینہ حصوں کے مطابق دی جاتی ہے بیٹے کے لئے کسر کی شکل میں کوئی حصہ مذکور نہیں ہے لیکن تناسب کی شکل میں اسے مرنے والے کی بیٹی سے دوگنا دیا جانا طے ہے. ہاں کلالہ کی حالت میں بھائی بہن کو بھی حصہ ملتا ہے.

یہ بھی اللہ نے قرآن میں بتا دیا ہے کہ میراث کا حق ایک دوسرے کے لئے ہے. مثلاً باپ مرا تو بیٹے اس کی میراث پائیں گے لیکن اگر پہلے بیٹا مر جائے تو بیٹے کی میراث میں باپ کو اس کا حصہ دیا جائے گا. ایسے ہی ماں کا معاملہ ہے. ایسے ہی بیوی اور شوہر کا معاملہ ہے. میراث میں استحقاق دونوں جانب نافذ ہوتا ہے. سورہ ''نساء'' کی آیت ۱۷۶ میں کلالہ بھائی کی میراث اس کی بہن کا حق ہے تو

सम्पत्ति में भाई का अधिकार है, किसी की भागीदारी एक निष्ट नही है,

अतः यह बात निर्णित है कि पैत्रिक सम्पत्ति से किसी अधिकारी की निर्धनता या धनी या अनाथ का कोई सम्बन्ध नही हुआ करता और आमने सामने के नातेदार एक दूसरे की मृतक सम्पत्ति में अपने निश्चित भाग पाने का अधिकार रखते है, ईश्वर के रसूल का कथन है कि एक क्षण का मनन हजार वर्ष की पूजा से अच्छा है, स्वयं कुरआन में कुरआन पर चिन्तन का आह्वान किया गया है, अपितु यूं भी कहा गया है कि उन लोगों के हृदयों पर ताले लगे हुए है जो कुरआन में चिन्तन नही करते, (47:24)

मृतक सम्पत्ति के अधिकारियों के निश्चित करने में चिन्तन से ही काम लिया गया है, अन्यथा पिता के लिए जो भाग निश्चित है, वह दादा को न दिया जाता, माता के न होने पर माता वाला भाग दादी को न दिया जाता, इसी प्रकार पुत्र न होने की दशा में पुत्र का भाग पौतो को पहुंचता है,

कुरआन ने दादा पौते का जो भाग निश्चित किया है उसको एक निष्ट लागू किया जाता है अर्थात यदि अनाथ पौता मरे तो उसकी मृतक सम्पत्ति में दादा छटा भाग पाऐगा, किन्तु यदि दादा पहले मर जाए और उस अनाथ पौते का कोई चचा या ताया जीवित हो तो अनाथ पौता मृतक दादा की मृतक सम्पत्ति से वंचित रखा जाए? अनाथ पौते की मृतक सम्पत्ति दादा को भाग दिलाने में उसके यह जीवित चचा ताया बिल्कुल बाधक न बने? यह अधिकार एक निष्ट लागू हुआ मीरास के विषय में जिसका कोई स्थान नज़र नही आता,

दादा का कुरआन में कोई भाग निश्चित नही है वह तो अपने मरे पुत्र का निश्चित भाग पाता है, अनाथ पौते का यह पिता अपने पुत्र की मृतक सम्पत्ति में अपने पिता को भाग दिला जाए परन्तु अपने पिता की मृतक सम्पत्ति में अपनी संतान को अंश पाने से रोक दे? ऐसा तो कोई नियम नही, अल अकरब फ्ल अकरब के तौर पर अनाथ पौता और दादा बिल्कुल आमने सामने होते है उनके मध्य कोई आवरण नही होता, अनाथ पौते के जीवित चचा ताया अपनी सन्तान के आवरण होते है, अतः जिस प्रकार पहले से मरे हुए व्यक्ति का अंश लगाकर उसके जीवित पिता अर्थात दादा को दिलाया जाता है ऐसे ही और इसी नियम अल अकरब (निकटता) फ्ल अकरब से यदि दादा पहले मर जाता है तो अनाथ पौतो को पहले से मरे हुए पिता का अंश लगाकर उसकी संतान में विभाजित किया जाना अनिवार्य है,

यह प्रसंग दया कृपा का नही है अधिकार का है, अनाथ पौते को दादा की मृतक सम्पत्ति से वंचित करना यह धर्म शास्त्र का नियम नही अपितु एक काल्पनिक और अत्याचार पूर्ण निर्णय है जो घरों से न्यायालय तक लागू चला आता है, धर्म विधान ने तो कुरआन और सुन्नत को कसौटी निर्धारित किया है, अनाथ पौते की वंचन के लिए इन मौलिक मूल पुस्तक से कोई तर्क प्रस्तुत नही किया जाता और अस्हाबए रसूल भी कुरआन व सुन्नह का अनुकरण करने वाले थे उनसे भी कोई प्रमाण नही मिलता, अतः दादा की मृतक सम्पत्ति में अनाथ पौते के स्वत्व का विवेचन होना चाहिए न कि उसकी अनाथी का प्रकटीकरण करके उसके लिए दयालुता की भीक मांगी जाए अनाथ का जो अधिकार है उसको वह दिलाया जाए

अनाथ पौते की मृतक सम्पत्ति में दादा को जो सम्पत्ति मिलती है वह अनाथ पौते के मृतक पिता का स्थानापन्न अंश होता है, अतः उसे दादा के अतिरिक्त दादा के किसी उत्तराधिकारी को नही दिया जा सकता, दादा भी यदि जीवित न होगा तो समाप्त हो जाएगा, यही नियम दादा की सम्पत्ति में अनाथ पौते के लिए निश्चित है,

धर्म विधान के प्रसंग व विषय में पुस्तक व सुन्नाह, इज्मा सहाबा कराम से अनदेखी करते हुए इज्मा मौक सामान्य से

کلالہ بہن کی میراث میں بھائی کا حق ہے. کسی کی حصہ داری یکطرفہ نہیں ہے.

اس لئے یہ بات طے شدہ ہے کہ میراث سے کسی حقدار کی امیری غریبی یا یتیمی کا کوئی تعلق نہیں ہوا کرتا اور آمنے سامنے کے رشتہ دار ایک دوسرے کی میراث میں اپنے طے شدہ حصہ پانے کا حق رکھتے ہیں. اللہ کے رسول کا فرمان ہے کہ ایک لمحہ کا غور وفکر ہزار سال کی عبادت سے بہتر ہے. خود قرآن میں تدبر فی القرآن کی دعوت دی گئی ہے. بلکہ یوں بھی فرمایا گیا ہے کیا ان لوگوں کے دلوں پہ تالے لگے ہوئے ہیں جو قرآن میں غور وفکر نہیں کرتے (۲۴:۴۷)

میراث کے حقداروں کو طے کرنے میں غور وفکر سے ہی کام لیا گیا ہے. ورنہ باپ کے لئے جو حصہ مقرر ہے وہ دادا کو نہ دیا جاتا. ماں کے نہ ہونے پہ ماں والا حصہ دادی نہ پاتی. اسی طرح بیٹا نہ ہونے کی صورت میں بیٹے کا حصہ پوتوں کو پہنچتا ہے.

قرآن نے دادا پوتے کا جو حق مقرر کیا ہے اس کا یکطرفہ نفاذ کیا جاتا ہے یعنی اگر یتیم پوتا مرے تو اس کی میراث میں دادا چھٹا حصہ پائے گا. لیکن اگر دادا پہلے مر جائے اور اس یتیم پوتے کے کوئی چچا یا تایا زندہ ہوں تو یتیم پوتا مرحوم دادا کی میراث سے محروم رکھا جائے؟ یتیم پوتے کی میراث دادا کو حصہ دلانے میں اس کے یہ زندہ چچا تائے بالکل آڑے نہیں آتے؟ یہ حق کا یکطرفہ نفاذ ہوا میراث کے ضمن میں جس کی کوئی گنجائش نظر نہیں آتی.

دادا کا قرآن میں کوئی حصہ مقرر نہیں ہے وہ تو اپنے مرے بیٹے کا مقرر حصہ پاتا ہے. یتیم پوتے کا یہ باپ اپنے بیٹے کی میراث میں اپنے باپ کو حصہ دلا جائے مگر اپنے باپ کی میراث میں اپنی اولاد کو حصہ پانے سے باز رکھے؟ ایسا تو کوئی اصول نہیں الاقرب فالاقرب کے طور پر یتیم پوتا اور دادا بالکل آمنے سامنے ہوتے ہیں ان کے درمیان کوئی حجاب نہیں ہوتا. یتیم پوتے کے زندہ چچا تائے اپنی اولاد کے حجاب ہوتے ہیں. اس لئے جس طرح پہلے سے مرے ہوئے آدمی کا حصہ لگا کر اس کے زندہ باپ یعنی دادا کو دلایا جاتا ہے. بعینہ اس طرح اور اسی اصول الاقرب فالاقرب سے اگر دادا پہلے مر جاتا ہے تو یتیم پوتوں کو پہلے سے مرے ہوئے باپ کا حصہ لگا کر اس کی اولاد میں تقسیم کیا جانا ضروری ہے.

یہ معاملہ رحم وکرم کا نہیں ہے حق کا ہے یتیم پوتے کو دادا کی میراث سے محروم کرنا یہ شرعی مسئلہ نہیں بلکہ ایک قیاسی ظالمانہ فیصلہ ہے، جو گھروں سے عدالت تک نافذ چلا آتا ہے. شرع نے تو قرآن اور سنت کو معیار مقرر کیا ہے. یتیم پوتے کی محرومی کے لئے ان بنیادی ماخذات سے کوئی دلیل پیش نہیں کی جاتی اور اصحاب رسول بھی قرآن وسنت کی پیروی کرنے والے تھے ان سے بھی کوئی دلیل نہیں ملتی، اس لئے دادا کی میراث میں یتیم پوتے کے حق کی بحث ہونی چاہیے نہ کہ اس کی یتیمی کا اظہار کر کے اس کے لئے رحمدلی کی بھیک طلب کی جائے. یتیم کا جو حق ہے اس کو وہ دلایا جائے یتیم پوتے کی میراث میں دادا کو جو ترکہ ملتا ہے وہ یتیم پوتے کے متوفی باپ کا قائم مقامی حصہ ہوتا ہے اس لئے اسے دادا کے علاوہ دادا کے کسی اور وارث کو نہیں دیا جا سکتا دادا بھی اگر زندہ نہ ہوگا تو ساقط ہو جائے گا. یہی اصول دادا کی جائداد میں یتیم پوتے کے لئے مقرر ہے.

شریعت کے مسائل ومعاملات میں کتاب وسنت، اجماع صحابہ کرام سے صرف نظر کرتے ہوئے اجماع عام سے متاثر ہو کر غیر معقول بات کو معقول

प्रभावित हो कर असाध्य बात को साध्य कहना अनुचित है, यह कहना ठीक और उचित है कि पौता अस्तु अपने पिता के माध्यम से ही दादा के माल में अधिकारी हो सकता है न कि प्रत्यक्ष, अनाथ पौते का दादा भी तो अनाथ पौते की सम्पत्ति में उस पौते के मृत पिता के माध्यम से अधिकारी बनाया जाता है न कि प्रत्यक्ष, दादा का अनाथ पौते की सम्पत्ति में अपना कोई स्वतंत्र अंश नही होता, वही छटा भाग जो उसके पिता को मिलता, पिता के जीवित होने के कारण से पिता का पिता अर्थात दादा पा जाता है, यह अधिकार की बात है और कुरआन का निर्णय, यही निर्णय अनाथ पौते के लिए भी है,

अनाथ पौते के पालन पोषण के लिए दादा को यह परामर्श देते है कि वह उत्तरदान का अधिकार का प्रयोग करते हुए उनके लिए सम्पत्ति के (1/3) के मध्य उत्तरदान करता जाए, ऐसा परामर्श देने वाले कई प्रकट दोष का व्यवहार करते है, प्रथम यह कि अनाथ पौते को दादा की सम्पत्ति के अंश से अलग रखकर उसके धन को अपहरण करने की प्रेरणा देने का पाप मौल लेते है, उदाहरणतः जैद के दो पुत्र थे उन दोनों को आधा आधा मिलता, परन्तु एक पुत्र मरता है और उसके एक पुत्र होता है तो पौते को आधा अंश मिलना था परन्तु उत्तरदान करने से उसको (1/3) ही मिला तो शेष अंश अपयोजन हो गया,

दूसरा अनाथ का धन न खाने के ईश्वर के आदेश की अनदेखी करके नर्क में प्रविष्ट होते है तीसरे यह कि ईशदूत के कथन, कि उत्तराधिकारी के लिए सामान्य स्थिति में उत्तरदान न की जाए, के विरुद्ध कर्म करके प्रतिकूल सुन्नाह का क्रियात्मक कर्म कर जाते है,

सरकारे मदीना की हदीस हर समय दृष्टि में रहनी चाहिए कि जिसने उत्तराधिकारी को पैत्रिक सम्पत्ति से वंचित किया ईश्वर उसको स्वर्ग की दाय से वंचित करेगा, हुजूर स० की यह हदीस कल्पना के सारे द्वार बन्द करते हुए कुरआन में चिन्तन की प्रेरणा देती है,

अन्त में यह आवेदन है कि अब तक अनाथ के साथ जो अन्याय होता आ रहा है उसको बन्द होना चाहिए और कुरआन व सुन्नाह के अनुसार दादा की मृतक सम्पत्ति में से अनाथ पौते को अधिकार मिलना चाहिए इसी में कल्याण है अन्यथा इस चैतावनी के अन्तर्गत जिसमें कहा गया है कि अनाथ पर अत्याचार करने वाले को यह विचार करना चाहिए कि कहीं मैं मर जाऊं और मेरे बाद मेरे अनाथ बच्चे ऐसे ही अत्याचार के आखेट होकर कहीं दर दर की ठोकरें खाते न फिरे या दूसरे अनाथों को देखकर ही शिक्षा प्राप्त करें, ईश्वर हमें हर बुराई से बचा दे (तकब्बल)

अकरब फल अकरब- अकरब (निकटतम) का अर्थ है वह व्यक्ति जिसके और उसके उत्तराधिकारी के मध्य कोई और भागीदार बाधक न हो, मसलन जैद बकर का निकटतम है परन्तु यदि बकर अपने पिता के जीवन में मर चुका हो तो जैद अपने पौते उमर का निकट वर्ती हो जाएगा,

जैद
बकर
उमर

کہنا نا مناسب ہے. یہ کہنا بجا اور درست ہے کہ پوتا بہر حال اپنے باپ کے واسطے سے ہی دادا کے مال میں حقدار ہو سکتا ہے نہ کہ براہ راست. یتیم پوتے کا دادا بھی تو یتیم پوتے کی میراث میں اس پوتے کے متوفی باپ کے واسطے سے حقدار بنایا جاتا ہے. نہ کہ براہ راست. دادا کا یتیم پوتے کی میراث میں اپنا کوئی آزادانہ حصہ ہوتا ہی نہیں. وہی چھٹا حصہ جو اس کے باپ کو ملتا باپ کے زندہ نہ ہونے کی وجہ سے باپ کا باپ یعنی دادا پا جاتا ہے یہ حق کی بات ہے اور قرآن کا فیصلہ یہی فیصلہ یتیم پوتے کے لئے بھی ہے یتیم پوتے کی پرورش کے لئے دادا کو یہ مشورہ دیتے ہیں کہ وہ وصیت کا اختیار استعمال کرتے ہوئے ان کے لئے مال کے ایک تہائی کے اندر وصیت کرتا جائے ایسا مشورہ دینے والے کئی فاش غلطیوں کا ارتکاب کرتے ہیں. اوّل یہ کہ یتیم پوتے کو دادا کی میراث کے حصہ سے الگ رکھ کر اس کے مال کو غصب کرنے کی ترغیب دینے کا گناہ مول لیتے ہیں. مثلاً زید کے دولڑکے تھے ان دونوں کو آدھا آدھا ملتا. لیکن ایک لڑکا مرتا ہے اور اس کے ایک لڑکا ہوتا ہے تو پوتے کو اپنے باپ کا آدھا حصہ ملتا تھا مگر وصیت کرنے سے اس کو (۳/۱) ہی ملا تو باقی حصہ تو غصب ہو گیا.

دوئم یتیم کا مال نہ کھانے کے احکام الٰہی کی ان دیکھی کر کے دوزخ میں داخل ہوتے ہیں. تیسرے یہ کہ رسولؐ کے فرمان کہ وارث کے حق میں (عام حالت میں) وصیت نہ کی جائے کے برخلاف اقدام کر کے خلاف سنت کا عملی اقدام کر گذرتے ہیں.

سرکار مدینہ کی یہ حدیث ہمہ وقت پیش نظر رہنی چاہیے کہ جس نے وارث کو میراث سے محروم کیا اللہ اس کو جنت کی میراث سے محروم کرے گا. حضورؐ کی یہ حدیث قیاس کے سارے دروازے بند کرتے ہوئے تدبر فی القرآن کی دعوت دیتی ہے.

آخیر میں یہ عرض ہے کہ اب تک یتیم کے ساتھ جو ظلم ہوتا آ رہا ہے اس کو بند ہونا چاہیے اور قرآن وسنت کے مطابق دادا کی میراث میں سے یتیم پوتے کو حق ملنا چاہیے. اسی میں خیر ہے ورنہ اس وعید کے تحت جس میں کہا گیا ہے یتیم پر ظلم کرنے والے کو یہ سوچنا چاہیے کہ کہیں میں مر جاؤں اور میرے بعد میرے یتیم بچے ایسے ہی ظلم کا شکار ہو کر کہیں در در کی ٹھوکر کھاتے نہ پھریں. یا دوسرے یتیموں کو دیکھ کر ہی عبرت حاصل کریں. اللہ ہمیں ہر بُرائی سے بچا دے (تقبل)

اقرب فالاقرب:۔ اقرب کے معنیٰ ہیں وہ آدمی جس کے اور اس کے وارث کے درمیان کوئی اور حصہ دار حائل نہ ہو. مثلاً زید بکر کا اقرب ہے لیکن اگر بکر اپنے باپ کی زندگی میں مر چکا ہو تو زید اپنے پوتے عمر کا اقرب ہو جائے گا۔

زید
بکر
عمر

मुसलमानो! तुम पर निषिद्ध कर दी गई 1. तुम्हारी माताऐं (माता-पिता की माताऐं भी) 2. तुम्हारी पुत्रियां (और पुत्रों पुत्रियों की पुत्रियां भी) 3. तुम्हारी बहने 4. तुम्हारी फूफियां भी 5. तुम्हारी खालाऐं 6. तुम्हारी भतीजियां 7. तुम्हारी भांजियां 8. तुम्हारी दूध पिलाने वाली माताऐं 9. दूध शरीक बहनें 10. तुम्हारी पत्नीयों की माताऐं 11. तुम्हारी पत्नीयों की पुत्रियां जो तुम्हारे यहां पालन पोषण होता है हां यदि मैथुन न किया हो तो उनसे विवाह करने में तुम पर कोई पाप नही 12. और तुम्हारे सगे पुत्रों की स्त्रियां भी तुम पर अवैध है 13. और दो बहनों से इकट्ठा विवाह करना भी अवैध है (इससे पहले) जो हो चुका निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दया करने वाला है (23)

مسلمانو! تم پر حرام کردی گئیں (۱) تمہاری مائیں (ماں باپ کی مائیں بھی) (۲) تمہاری بیٹیاں (اور بیٹوں بیٹیوں کی بیٹیاں بھی) (۳) تمہاری بہن (۴) تمہاری پھوپھیاں (۵) تمہاری خالائیں (۶) تمہاری بھتیجیاں (۷) تمہاری بھانجیاں (۸) تمہاری دودھ پلانے والی مائیں (۹) دودھ شریک بہن (۱۰) تمہاری بیویوں کی مائیں (۱۱) تمہاری بیویوں کی لڑکیاں جو تمہارے یہاں پرورش پاتی ہیں اگر تم نے ان بیویوں سے مباشرت کی ہو۔ ہاں اگر مباشرت نہ کی ہو تو ان سے نکاح کرنے میں تم پر کوئی گناہ نہیں (۱۲) اور تمہارے صلبی بیٹوں کی عورتیں بھی تم پر حرام ہیں (۱۳) اور دو بہنوں سے اکٹھا نکاح کرنا بھی حرام ہے (اس سے پہلے) جو ہو چکا بے شک اللہ بخشنے والا رحم والا ہے (۲۳)

नोट- इल्लामाक़द सलफ से यह अर्थ लिया जाता है कि गत धर्म शास्त्रों में अधिक विवाह करने की अनुमती थी सामान्य स्थिति में परन्तु यह मिथ्या है क्योंकि जो धर्म शास्त्र और धर्म मुहम्मद स0 को दियागया है वही गत ईशदूतों को दिया गया था

(42:13) ईश्वर ने तुम्हारे लिए वही धर्म नियम निश्चित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह को आदेश दिया था और जो वही के द्वारा हमने तेरी ओर प्रेषित किया है, और जिसका आदेश हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया था कि इस धर्म को स्थापित रखना और इसमें फूट न डालना....

और ईश्वर का धर्म शास्त्र और धर्म बदलता नही (10:69, 6:115, 5:29)

(6:115) आपके ईश्वर का कथन सच्चाई और न्याय की दृष्टि से पूर्ण है उसके कथन को कोई बदलने वाला नही.

(6:21) क्या उन लोगों ने ऐसे (ईश्वर के) साझी (नियुक्त कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धर्म विधान नियुक्त कर दिए हैं जो ईश्वर के प्रेषित किये हुए नही है, इस आयत से यह भी सिद्ध हुआ कि धर्म के नियम ईश्वर के बनाए हुए है और किसी को यह अधिकार नही कि वह शास्त्र नियामक हो.

نوٹ:- [الا ما قد سلف] سے یہ مطلب لیا جاتا ہے کہ سابقہ شریعتوں میں زائد نکاح کرنے کی اجازت تھی عام حالت میں مگر یہ غلط ہے۔ کیونکہ جو شریعت اور دین محمدؐ کو دیا گیا ہے وہی سابقہ انبیا کو دی گئی تھی۔

(۴۲:۱۳) اللہ نے تمہارے لئے وہی دین شریعت مقرر کردیا ہے جس کے قائم کرنے کا اس نے نوح کو حکم دیا تھا اور بذریعہ وحی ہم نے تیری طرف بھیج دیا ہے اور جس کا تاکیدی حکم ہم نے ابراہیم اور موسیٰ اور عیسیٰ کو دیا تھا کہ اس دین کو قائم رکھنا اور اس میں پھوٹ نہ ڈالنا۔۔۔

اور اللہ کی شریعت اور دین و بات بدلتی نہیں (۱۰:۶۴، ۶:۱۱۵، ۵:۲۹)

(۶:۱۱۵) آپ کے رب کا کلام سچائی اور انصاف کے اعتبار سے کامل ہے اس کے کلام کو کوئی بدلنے والا نہیں

(۶:۲۱) کیا ان لوگوں نے ایسے اللہ کے شریک (مقرر کر رکھے) ہیں جنہوں نے ایسے احکام دین مقرر کردئے ہیں جو اللہ کے فرمائے ہوئے نہیں ہیں اس آیت سے یہ بھی ثابت ہوا کہ دین کے قانون اللہ کے بنائے ہوئے ہیں اور کسی کو یہ حق نہیں کہ وہ شارع ہو

पाराह 5, वलमुहसनात

और शादीशुदा स्त्रियां भी निशिद्ध है अतिरिक्त जो मुस्लिम विवाहिता स्त्रियों के जो मुसलमान होकर तुम्हारे दाहिने हाथ अर्थात तुम्हारी सुरक्षा में आ जाऐं (परन्तु तुम उनकी परीक्षा कर लो 60:10 और उनसे विवाह कर लो 4:25) यह ईश्वर ने तुम पर अनिवार्य कर दिया है लिख दिया है और उपरोक्त वर्णित स्त्रियों के अतिरिक्त शेष सब औरतें तुम्हारे लिए वैध है (प्रतिबन्ध यह है कि तुम उनसे विवाह की इच्छा अपने मालों के साथ करो, और विवाह का उद्देश्य पूरी आयु विवाह के बन्धन में रहना हो केवल पानी बहाना न हो (अर्थात केवल तात्कालिक तौर पर यौन सम्बन्धी तृप्ति उद्देश्य विवाह न हो) फिर उन स्त्रियों में से जिससे विवाह का लाभ उठाओ तो उनके मेहर जो निर्धारित किए गए हों उन्हें दे दिया करो और इस विषय में तुम पर कोई बाधा नही कि मेहर निश्चित हो चुकने के बाद किसी बात पर तुम आपस में सहमत हो जाओ (अर्थात कुछ धन तुम्हारी

پارہ پانچ۔والمحصنٰت

اور شادی شدہ عورتیں بھی حرام ہیں سوائے نو مسلم بیاہی ہوئی عورتوں کے جو مسلمان ہو کر تمہارے داہنے ہاتھ یعنی تمہاری حفاظت میں آجائیں (مگر تم ان کا امتحان کرلو۔۶۰:۱۰۔اور ان سے نکاح کرلو۔۴:۲۵۔) یہ اللہ نے تم پر فرض کردیا ہے لکھ دیا ہے اور مذکورہ بالا عورتوں کے سوا باقی تمام عورتیں تمہارے لئے حلال ہیں (شرط) یہ ہے کہ تم ان سے نکاح کی طلب اپنے مالوں کے ساتھ کرو اور غرض نکاح عمر بھر نکاح میں رہنا ہو صرف پانی بہانا نہ ہو (یعنی صرف وقتی طور پر جنسی تسکین غرض نکاح نہ ہو) پھر ان عورتوں سے جس سے نکاح کا فائدہ اٹھاؤ تو ان کے مہر جو مقرر کئے گئے ہوں انہیں دے دیا کرو۔ اور اس امر میں تم پر کوئی حرج نہیں کہ مہر مقرر ہو چکنے کے بعد کسی بات پر تم آپس میں راضی ہو جاؤ (یعنی کچھ رقم تمہاری بیویاں تمہیں اپنی خوشی سے

पत्नीयां तुम्हें अपनी प्रसन्नता से वापस कर दें या तुम कुछ और बढ़ा दो) निःसन्देह ईश्वर बढ़कर जानने वाला है और युक्ति वाला है (24) {2:236, 10:98, 60:10}

नोट- आयत में एक शब्द "फमसतमता तुम" आया है इसका अर्थ यह है कि जिनसे विवाह का लाभ उठाओ, किन्तु इस शब्द को लेकर एक दल ने इससे मुता सिद्ध किया है और आज तक मुता कर रहे हैं और करते रहेंगे किन्तु इस मुता के बारे में अहादीस भी मिलती है कि मुहम्मद स० ने अनुमति दी थी, यदि अनुमति दी तो अवश्य वह ईश्वर के आदेश से होगी फिर इनकार हुआ तो वह इनकार भी ईश्वर के आदेश से होना अनिवार्य है और दोनों आदेश कुरआन में होने अनिवार्य हैं अब चिन्तन किया जाये वास्तविकता क्या है?

आयत में "फ़ीमा तराज़ेयतुम बिही मिम्बादिल फ़रीज़ती" के शब्द "फमसतमततातुम बिही मिनहुन्ना फआतु हुन्ना उजूरहुन्ना फ़रीज़तन" के बाद आए हैं और जिनमें आपसी सहमतति के साथ निर्धारित मेहर के धन में से कुछ वापस ले लेने को वैध बताया है, इससे भी "फमसतमतातुम" का अर्थ चिरस्थायी विवाह सिद्ध होता है, कोई तथा कथित समय बद्ध विवाह (मुता) सिद्ध नहीं होता क्योंकि जो स्त्री एक दिन या एक साल के लिए विवाह मुता करती है और मेहर का धन प्राप्त करती है अर्थात उस समय की पारिश्रमिक और जिसने समय के बाद विवाह से आप ही स्वतंत्र हो जाना है उसे अपने एक दिन या एक वर्ष के पति के साथ क्या खाक प्रेम होगा कि वह अपने निर्धारित मेहर पारिश्रमिक में से कुछ वापस दे या ऐसे ही पति.

मुता की परिभाषा यह बताई गई है कि यह एक समयबद्ध विवाह होता है जो समय समाप्त होते ही बिना तलाक के टूट जाता है, उदाहरणार्थ एक साल,छः माह, एक माह या एक दिन इत्यादि मुसलमानों की पर्याप्त संख्या कहती है कि इस्लाम के आरम्भ में इस प्रकार के विवाह की आज्ञा थी जिसकी अनुमति ईशदूत ने दी, अवलोकन हो-

बुखारी प्रति द्वितीय किताबुत्तफसीर ।728

श्रीमान अब्दुल्लाह बिन मसऊद र० कहते हैं कि हम धर्म युद्ध के लिए ईशदूत के साथ थे और हमारे साथ पत्नीयां न थी, गर्मी और शक्ति के कारण स्त्रियों से जुदाई सहन न हो रही थी, हमने कहा कि क्या हम अपने आपको खस्सी न कर लें, आप स० ने हमें ऐसा करने से रोका और उसके बाद हमें आज्ञा दे दी कि थोड़े समय के लिए किसी स्त्री से विवाह कर लिया जाए आपने फिर इस आयत का वाचन किया, अवैध न करो वह सुथरी वस्तुऐं जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए वैध की हैं (5:8)

नीचे मुत्ता इमाम मालिक का संदर्भ प्रस्तुत है इसमें मुहम्मद स० की ओर सम्बन्धित किया गया है कि उन्होंने समयबद्ध विवाह को चार बार वैध किया और चार बार अवैध (ईश्वर की शरण) मुत्ता इमाम मालिक अनुवादित मुद्रणालय आराम बाग, कराची पेज 450 पंक्ति एक से दस पर अंकित है,

अइम्मा अरबा अर्थात चारो नायक और सर्व साधारण के निकट मुता अवैध है इस्लाम के आरम्भ में मुता ठीक था फिर खैबर के दिन अवैध हुआ फिर उमराह कज़ा में वैध हुआ फिर मक्काह की विजय के दिन अवैध हुआ फिर औतास युद्ध में वैध हुआ फिर अवैध हुआ, फिर तबूक युद्ध में वैध हुआ फिर हज्जतुल वदाआ में अवैध हुआ, इस बार बार की वैधता और अवैधता से लोगों को भ्रम शेष रहा, कतिपय लोग समय बद्ध विवाह करते थे धन के साथ कतिपय नहीं करते थे, यहां तक कि मुहम्मद स० की मृत्यु हो गई और श्रीमान अबुबकर र०

واپس کر دیں یا تم کچھ اور بڑھا دو) بے شک اللہ تعالیٰ بڑھ کر جاننے والا اور حکمت والا ہے (۲۴) [۲:۲۳۶،۱۰:۹۸،۶۰:۱۰]

نوٹ :۔آیت میں ایک لفظ [فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ] آیا ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ جن سے نکاح کا فائدہ اٹھاؤ لیکن اس لفظ کو لے کر ایک فرقے نے اس سے متعہ ثابت کیا ہے اور آج تک متعہ کر رہے ہیں اور کرتے رہیں گے.لیکن اس متعہ کے بارے میں احادیث بھی ملتی ہیں کہ محمدؐ نے اجازت دی تھی اگر اجازت دی تھی تو ضرور وہ اللہ کے حکم سے ہوگی.پھر انکار ہوا تو وہ انکار بھی اللہ کے حکم سے ہونا ضروری ہے اور دونوں حکم قرآن میں ہونے ضروری ہیں اب غور کیا جائے حقیقت کیا ہے.

آیت میں [فِيْمَا تَرَاضَيْتُمْ بِهٖ مِنْ م بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ] کے الفاظ [فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً] کے بعد آئے ہیں اور جن میں باہمی رضامندی کے ساتھ مقررہ زرمہر میں سے کچھ واپس لے لینے کو جائز قرار دیا گیا ہے.اس سے بھی [فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ] کا معنی دائمی نکاح ثابت ہوتا ہے.کوئی نام نہاد معیادی نکاح (متعہ نامی) ثابت نہیں ہوتا کیونکہ جو عورت ایک دن یا ایک سال کے لئے نکاح متعہ کرتی ہے اور زرمہر حاصل کرتی ہے یعنی اس مدت کی اجرت اور جس نے معیاد کے بعد نکاح سے خود بخود آزاد ہو جانا ہے اسے اپنے ایک دن یا ایک سال کے شوہر کے ساتھ کیا خاک محبت ہوگی کہ وہ اپنے مقررہ مہر اجرت میں سے کچھ واپس دے یا ایسے ہی شوہر.

متعہ کی تعریف یہ بیان کی گئی ہے کہ یہ ایک میعادی نکاح ہوتا ہے جو میعاد ختم ہوتے ہی بلا طلاق کے ٹوٹ جاتا ہے مثلاً ایک سال، چھ ماہ، ایک ماہ، یا ایک دن.مسلمانوں کی کافی تعداد کہتی ہے کہ اوائل اسلام میں اس قسم کے نکاح کی اجازت تھی جس کی اجازت رسول نے دی.ملاحظہ ہو.

بخاری جلد دوئم، کتاب التفسیر (۱۷۲۸)

حضرت عبداللہ بن مسعودؓ فرماتے ہیں کہ ہم جہاد کی غرض سے نبیؐ کے ہمراہ تھے اور ہمارے ساتھ عورتیں نہ تھیں. بوجہ حرارت وقوت عورتوں سے جدائی برداشت نہیں ہوتی تھی.ہم نے کہا کہ کیا ہم اپنے آپ کو خصی نہ کر لیں.آپ نے ہمیں ایسا کرنے سے روکا.اور اس کے بعد ہمیں اجازت مرحمت فرمائی کہ تھوڑی مدت کے لئے کسی عورت سے نکاح کر لیا جائے آپ نے پھر اس آیت کی تلاوت کی.حرام نہ ٹھہراؤ وہ ستھری چیزیں جو اللہ نے تمہارے لئے حلال کیں ہیں (۵:۸۷)

ذیل میں موطا امام مالک کا حوالہ پیش ہے اس میں محمدؐ کی طرف منسوب کیا گیا ہے کہ انہوں نے متعہ کو چار بار حلال کیا اور چار بار حرام (نعوذ). موطا امام مالک مترجم مطبوعہ آرام باغ کراچی کے ص۔۴۵۰،سطر ا تا ۱۰، درج ہے

ائمہ اربعہ اور جمہور کے نزدیک متعہ ناجائز ہے.اوائل اسلام میں متعہ درست تھا پھر خیبر کے روز حرام ہوا پھر عمرہ قضا میں درست ہوا پھر فتح مکہ کے دن حرام ہوا پھر جنگ اوطاس میں درست ہوا پھر حرام ہوا. پھر جنگ تبوک میں درست ہوا پھر حجتہ الوداع میں حرام ہوا.اس بار بار کی حلت وحرمت سے لوگوں کو شبہ باقی رہا.بعض لوگ متعہ کرتے تھے بعض نہیں کرتے تھے، مال کے ساتھ. یہاں تک کہ محمدؐ کی وفات ہوئی اور حضرت ابوبکرؓ کی خلافت میں بھی ایسا ہی رہا.اس کے

के शासन में भी ऐसा ही रहा, इसके बाद महामना उमर र0 ने इसकी अवैधता स्पष्ट मंच में बयान की तब से लोगों ने मुता करना छोड़ दिया, किन्तु कतिपय सहाबा इसकी वैधता के स्वीकार कर्ता रहे, जैसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (अर्थात मुफस्सिरे कुरआन!?) अबु सईद मआविया असमा बिन्ते अबूबकर, अब्दुल्ला बिन अब्बास (अर्थात मुफस्सिरे कुरआन!?) उमर बिन हवेरस और सलमा बिन अल अकू और एक दल ताबईन में भी समयबद्ध विवाह मुता की वैधता का स्वीकार कर्ता हुआ है, यह तो रहा हदीसों कथनों का उल्लेख अब कुरआन को भी अवलोकन करें इसमें क्या है,

सूरतुल मूमिनून-23, आयत 5- और जो अपने लज्जा के स्थान की सुरक्षा करते हैं

6- अतिरिक्त अपनी पत्नीयों के या उन स्त्रियों के जो उनकी सुरक्षा में हैं (विवाह के बाद) सूरत अल मआरिज 70 आयत 29 जो अपनी लज्जा के स्थान की सुरक्षा करते हैं अतिरिक्त अपनी पत्नीयों या अपनी सुरक्षा वाली स्त्रियों के जिनसे विवाह हुआ हो इसके अतिरिक्त और स्थान मैथुन अवैध है,

हदीस (कथनों) में अंकित है कि युद्ध के अवसर पर नबी स0 ने मुसलमानों के कहने पर मुता की अनुमति दी युद्ध मदीने में आरम्भ हुआ और सूरत अलमूमिनून और अलमआरिज मक्का में अवतरित हो चुकी थी जिनको ईशदूत और सहरबा ने पढ़ा था और कुरआन में यह भी अंकित है कि ऐ मुहम्मद और मुहम्मद के साथियों और प्रलय तक आने वाले आस्तिक व्यक्तियों तुम कुरआन का अनुकरण करो, यदि कुरआन के विरुद्ध कर्म करोगे तो तुम्हारा कोई सहायक न दुनिया में होगा और न प्लोक में और विमुख होने वाले को नर्क में डाला जाएगा, इतना पढ़ने के बाद कैसे सहाबा मुता की अनुमति मांगते और कैसे मुहम्मद स0 आज्ञा देते अतः सहाबा ने अनुमति नहीं मांगी,

भला जो पूरे के पूरे कुरआन का अनुकरण करने वाले थे वह कैसे इस अनुचित कार्य की अनुमति मांगते, यदि वह लोग कभी भूल से ऐसी मांग करते भी तो मुहम्मद स0 किसी भी मूल्य पर अनुमति देने वाले न थे,

अब इस हदीस कथन पर चिन्तन किया जाये जिसमें अंकित है कि सहाबा ने पत्नीयों से दूर होने के कारण यह अनुमति मांगी थी, इसलिए कि उनसे गर्मी सहन न हो रही थी काम व्याकुल कर रहा था, उन्होंने इस का उपचार यह सोचा कि ख़स्सी हो जाएं परन्तु ईशदूत ने कहा कि तुम स्त्रियों से समय के लिए पारिश्रमिक पर विवाह कर लो उन्होंने कर लिया, उपचार बहुत सरल बतायागया, व्याकुलता दूर हो गई, विचारणीय बात यह है कि क्या सहाबा के साथ-साथ इतनी स्त्रियां थी जो सहाबा को मिल गई, क्या सहाबा के पास इतना अधिक धन था जो उस धन को देकर उन स्त्रियों से मुता हो जाता था? क्या सहाबा इतने इच्छापूजक थे कि उनसे गिनती के कुछ दिन भी स्त्रियों के बिना काटने कठिन हो जाते थे, जबकि लिखा मिलता है कि उनको पेट भर भोजन भी न मिलता था, पेट से पत्थर बांधने पड़ते थे और अधिकांश वृत रखते थे, ऐसी दशा में क्या काम इतना व्याकुल कर सकता है? और जब मुसलमानों की सेना वहां से चलती थी तो उन स्त्रियों को छोड़ आती थी, फिर दूसरे स्थान पर स्त्रियों को खोजकर मुता करते थे या वह स्त्रियां ही वहां पहुंच जाती थी?

मैथुन होने के बाद उन स्त्रियों को गर्भ भी हो जाता होगा फिर उन बच्चों का क्या होता होगा? हां एक बात और वह यह कि युद्ध तो शत्रु से होता है तो उस शत्रु क्षेत्र में इच्छा पूर्ति मुता के लिए स्त्रियां कैसे मिल सकती थी? क्योंकि वहां तो सब शत्रु होते हैं और

بعد حضرت عمرؓ نے اس کی حرمت بر سر منبر بیان کی تب سے لوگوں نے متعہ کرنا چھوڑ دیا۔ مگر بعض صحابہ اس کے جواز کے قائل رہے جیسے جابر بن عبداللہ، عبداللہ بن مسعود (یعنی مفسر قرآن!؟) ابوسعید، معاویہ اسماء بنت ابوبکر، عبداللہ بن عباس (یعنی مفسر قرآن!؟) عمر بن حویرث اور سلمہ بن الاکوع اور ایک جماعت تابعین میں سے بھی متعہ کے جواز کی قائل ہوئی ہے۔ یہ تو رہا حدیثوں کا بیان اب قرآن کو بھی ملاحظہ کریں اس میں کیا ہے۔

سورہ المومنون (۲۳) آیت ۵/ اور جو اپنی شرمگاہوں کی حفاظت کرتے ہیں۔

۶/ سوائے اپنی بیویوں کے یا ان عورتوں کے جو ان کی ملک یمین ہیں (نکاح کے بعد) سورہ المعارج (۷۰) آیت ۲۹/ جو اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرتے ہیں بجز اپنی بیویوں یا اپنی ملک یمین عورتوں کے جن سے نکاح ہوا ہے اس کے علاوہ اور جگہ مباشرت حرام ہے۔

حدیث میں درج ہے کہ جنگ کے موقع پر نبی نے مسلمانوں کے کہنے پر متعہ کی اجازت دی جنگیں مدینہ میں شروع ہوئیں اور سورت المومنون اور المعارج مکہ میں نازل ہو چکی تھیں جن کو نبی اور صحابہ نے پڑھا تھا اور قرآن میں یہ بھی درج ہے کہ اے محمدؐ اور محمدؐ کے ساتھیوں اور قیامت تک آنے والے مومن انسانوں تم قرآن کی پیروی کرو۔ اگر قرآن کے خلاف عمل کرو گے تو تمہارا کوئی مددگار نہ دنیا میں ہوگا اور نہ آخرت میں۔ اور خلاف ورزی کرنے والے کو دوزخ میں ڈالا جائے گا۔ اتنا پڑھنے کے بعد کیسے صحابہ متعہ کی اجازت مانگتے اور کیسے محمدؐ اجازت دیتے۔ اس لئے صحابہ نے اجازت طلب نہیں کی۔

بھلا جو پورے کے پورے قرآن پر عمل کرنے والے تھے وہ کیسے اس غلط کام کی اجازت مانگتے۔ اگر وہ لوگ کبھی بھول سے ایسا مطالبہ کرتے بھی تو محمدؐ کسی بھی قیمت پر اجازت دینے والے نہ تھے۔

اب اس حدیث پر غور کیا جائے جس میں درج ہے کہ صحابہ نے بیویوں سے دور ہونے کی وجہ سے یہ اجازت مانگی تھی اس لئے کہ ان سے گرمی برداشت نہ ہو رہی تھی۔ نفس پریشان کر رہا تھا۔ انہوں نے اس کا علاج یہ سوچا کہ خصی ہو جائیں۔ مگر نبی نے کہا کہ تم عورتوں سے میعاد کے لئے اجرت پر نکاح کر لو انہوں نے کر لیا۔ علاج بہت آسان بتایا گیا۔ پریشانی دور ہو گئی۔ غور طلب بات یہ ہے کہ کیا صحابہ کے ساتھ ساتھ اتنی عورتیں چلتی تھیں یا اس علاقے میں اتنی عورتیں تھیں جو صحابہ کو مل گئیں کیا صحابہ کے پاس اتنی زیادہ رقم تھی جو اس رقم کو دے کر ان عورتوں سے متعہ ہو جاتا تھا؟ کیا صحابہ اتنے نفس پرست تھے کہ ان سے گنتی کے چند دن بھی عورتوں کے بغیر کاٹنے مشکل ہو جاتے تھے۔ جب کہ لکھا یہ ملتا ہے کہ ان کو پیٹ بھر کھانا بھی نہ ملتا تھا۔ پیٹ سے پتھر باندھنے پڑتے تھے اور زیادہ تر روزے رکھتے تھے۔ ایسی حالت میں کیا نفس اتنا پریشان کر سکتا ہے؟ اور جب مسلمانوں کا لشکر وہاں سے چلتا تھا تو ان عورتوں کو چھوڑ آتا تھا پھر دوسری جگہ عورتوں کو تلاش کر کے متعہ کرتے تھے یا وہ عورتیں ہی وہاں پہنچ جاتی تھیں؟

مباشرت ہونے کے بعد ان عورتوں کو حمل بھی ہو جاتا ہوگا، پھر ان بچوں کا کیا ہوتا ہوگا؟ ہاں ایک بات اور وہ یہ کہ جنگ تو دشمن سے ہوتی ہے تو اس دشمن علاقے میں متعہ کے لئے عورتیں کیسے مل سکتی تھیں؟ کیوں کہ وہاں تو سب دشمن ہوتے ہیں اور اگر عورتیں مل بھی جائیں تو وہ سب دشمن ہوں گیں تو آپ جواب

यदि स्त्रियां मिल भी जाएं तो वह सब शत्रु होंगी तो आप उत्तर दे सकते हैं कि वह स्त्रियां क्या करेंगी? क्या मुहम्मद और सहाबा इस बात को भी नही जानते थे और उन शत्रु स्त्रियों को अपनी सेना में बुलाकर इच्छा पूजन करते थे? (ईश्वर की शरण)

इन सब बातों को पढ़ने के बाद एक समझदार व्यक्ति क्या कहेगा? और विरोधी क्या और एक सत्य का खोजी व्यक्ति क्या करेगा? समझदार और धर्मवादी व्यक्ति यही कहेगा कि यह लिखा बकवास है, कुरआन और नबी के स्थान के विपरीत है सहाबा का चरित्र और हर धर्म वादी व्यक्ति के चरित्र के विरुद्ध है कोई आस्तिक इस कर्म को नही कर सकता और न ही मुहम्मद स0 इस गन्दे कर्म मुता वैश्यवृत्ति इच्छा पूजन की अनुमति दे सकते थे, उन्होंने कभी अनुमति नही दी, जो समयबद्ध मुता कर रहा है वह इसलाम से निष्कासित है,

ऐसे लेख को विरोधी पढ़ेगा तो वह इसको लेकर अपमान जनक लेख लिखेगा और मुसलमान विरोध प्रदर्शन करेंगे और झगड़ा होगा और सत्य का खोजी घृणा के साथ दूर हो जाएगा, अतः ऐसे चरित्र को बिगाड़ने वाले लेखों कथनों तफ्सीरों को पुस्तकों से निष्कासित कर दिया जाए और घोषणा कर दी जाए कि यह मुहम्मद स0 के कथन नही हैं न ही किसी आस्तिक ने उन पर व्यवहार किया जो ऐसा कर रहा है उसका इसलाम कुरआन और मुहम्मद स0 से कोई सम्बन्ध नही है, भला अवैध कर्म करने को मुहम्मद कैसे अनुमति देते?

सहाबा कराम की कुरआन में बड़ी प्रशंसा है ईश्वर उनसे प्रसन्न हो गया, वह ईश्वर से प्रसन्न अर्थात उसके ईशदूत और धर्म से प्रसन्न और कार्यरत इस कारण से ही ईश्वर ने उनको सफल किया और वह दुनिया पर छा गए थे, आज भी सफलता इसी में है कि हम ईश्वर को प्रसन्न कर लें उसके सत्य धर्म पर व्यवहार करके जो मुहम्मद स0 ने बताया है,

क्या कभी हमने विचार किया है कि उन आस्तिक अस्तित्वों के बारे में क्या लिखा है एक ऐसे समय के लिए जिस समय में हर आदमी को ईश्वर की प्रसन्नता आवश्यक होती है, अर्थात धर्म युद्ध के अवसर पर धर्म का अधिपत्य या शहादत इसके अतिरिक्त उनका और कोई उद्देश्य नही होता, हां यदि वह कपटि होते हैं तो वह ईश्वर की प्रसन्नता नही चाहते अपितु शैतान की प्रसन्नता चाहते हैं, जो मुता के विषय में लिख रखा है कि मुता की अनुमति मांगी, यह बिल्कुल मिथ्या है, उन महात्मा गणों को बदनाम करना है और कोई भी आस्तिक कुरआन के विरुद्ध कोई पग नही उठा सकता, अतः आस्तिक ईश्वर की प्रसन्नता ही में अपना पूरा जीवन व्यतीत करता है शैतान की प्रसन्नता के लिए नही इसलाम में मुता के लिए कोई स्थान नही है न पहले था न कभी इसको वैध किया गया,

और जो कोई तुम में से इस बात की शक्ति न रखे कि वह विवाह करे कुलीन स्वतंत्र भद्र आस्तिक स्त्रियों से तो वह नास्तिक समाज से आई हुई नवीन मुस्लिम महिला जो तुम्हारी रक्षा में हो और तरुणी विवाह के योग्य हो आस्तिक महिलाओं से विवाह करे (जिनकी परीक्षा हो चुकी हो 60:10) सत्य यह है कि ईश्वर तुम्हारे विश्वास को अच्छी प्रकार जानता है, तुम सब आपस में सहजातीय हो फिर तुम नास्तिक समाज से आई हुई नवीन मुस्लिम स्त्रियों के साथ उनके अभिभावकों की अनुमति के साथ विवाह कर लो (गुप्त विवाह या मुता न करना) और उनके मेहर परिचित विधि से चुकता करना, वह स्थाई विवाह में रखी जाने वाली हो न केवल सामयिक मस्ती झाड़ने वाली और न गुप्त यारी करने वाली हो फिर जब वह विवाह कर

دے سکتے ہیں کہ وہ عورتیں کیا کریں گیں؟ کیا محمدؐ اور صحابہ اس بات کو بھی نہیں جانتے تھے اوران دشمن عورتوں کو اپنے لشکر میں بلا کر نفس پرستی کرتے تھے (نعوذ)

ان سب باتوں کو پڑھنے کے بعد ایک سمجھدار آدمی کیا کہے گا اور مخالف کیا، اور ایک حق کا متلاشی آدمی کیا کرے گا؟ سمجھدار اور ایمان دار آدمی یہی کہے گا کہ یہ لکھا بکواس ہے قرآن اور نبی کے مقام کے خلاف ہے صحابہ کی خصلت اور ہر ایمان دار آدمی کے کردار کے خلاف ہے. کوئی مومن اس کام کو نہیں کرسکتا اور نہ ہی محمدؐ اس گندے کام متعہ نفس پرستی کی اجازت دے سکتے تھے انہوں نے کبھی اجازت نہیں دی جو متعہ کررہا ہے وہ اسلام سے خارج ہے.

ایسی تحریروں کو مخالف پڑھے گا تو وہ اس کو لے کر توہین آمیز مضمون لکھے گا اور مسلمان احتجاج کریں گے اور جھگڑا ہوگا. اور حق کا متلاشی نفرت کے ساتھ دور ہو جائے گا. اس لئے ایسی اخلاق شوز تحریروں احادیثوں تفسیروں کو کتابوں سے خارج کردیا جائے اور اعلان کر دیا جائے کہ یہ محمدؐ کے قول نہیں ہیں. نہ ہی کسی مومن نے ان پر عمل کیا جو ایسا کررہا ہے اس کا اسلام قرآن اور محمدؐ سے کوئی واسطہ نہیں ہے متعہ نہ کبھی حلال تھا اور نہ ہی آج حلال ہے بھلا حرام کام کرنے کو محمدؐ کیسے اجازت دیتے؟

صحابہ کرام کی قرآن میں بڑی تعریف ہے اللہ ان سے راضی ہوگیا وہ اللہ سے راضی یعنی اس کے نبی اور دین سے راضی اور عامل اس وجہ سے ہی اللہ نے ان کو کامیاب کیا اور وہ دنیا پر چھا گئے تھے. آج بھی کامیابی اسی میں ہے کہ ہم بھی اللہ کو راضی کرلیں اس کے سچے دین پر عمل کر کے جو محمدؐ نے بتایا ہے.

کیا کبھی ہم نے غور کیا ہے کہ ان مومن ہستیوں کے بارے میں کیا لکھا ہے ایک ایسے وقت کے لئے جس وقت میں ہر آدمی کو اللہ کی رضا درکار ہوتی ہے. یعنی جہاد کے موقع پر دین کا غلبہ یا شہادت اس کے علاوہ ان کا اور کوئی مقصد نہیں ہوتا. ہاں اگر وہ منافق ہوتے ہیں تو وہ اللہ کی رضا نہیں چاہتے بلکہ شیطان کی رضا چاہتے ہیں. جو متعہ کے بارے میں لکھ رکھا ہے کہ متعہ کی اجازت مانگی یہ بالکل غلط ہے ان پاک نفوس کو بدنام کرنا ہے. اور کوئی بھی مومن قرآن کے خلاف کوئی قدم نہیں اُٹھا سکتا. اس لئے مومن اللہ کی رضا ہی میں اپنی پوری زندگی گذارتا ہے. شیطان کی رضا کے لئے نہیں اسلام میں متعہ کے لئے کوئی گنجائش نہیں ہے. نہ پہلے تھی نہ کبھی اس کو جائز کیا گیا.

اور جو کوئی تم میں سے اس چیز کی طاقت نہ رکھے کہ وہ نکاح کرے خاندانی آزاد مومنہ شریف عورتوں سے تو وہ کافر معاشرے سے آئی ہوئی نو مسلمہ خواتین جو تمہاری حفاظت میں ہوں اور نوجوان نکاح کے لائق ہوں مومنہ عورتوں سے نکاح کرے (جن کا امتحان ہو چکا ہو۔۶۰:۱۰۔) حقیقت یہ ہے کہ اللہ تمہارے ایمان کو اچھی طرح جانتا ہے تم سب آپس میں ایک دوسرے کے ہم جنس ہو. پھر تم کافر معاشرہ سے آئی ہوئی نو مسلمہ عورتوں کے ساتھ ان کے مالک حاکم کی اجازت کے ساتھ نکاح کرلو (چھپا نکاح یا متعہ نہ کرنا) اور ان کے مہر معروف طریقے کے مطابق ادا کرنا. وہ نکاح دوام میں رکھی جانے والی ہوں نہ

ले फिर यदि वह निर्लज्जता करे तो उनके लिए उस दण्ड से आधा दण्ड निश्चित किया जाता है जो कुलीन विवाहिता स्वतंत्र भद्र महिलाओं के लिए निश्चित है यह आदेश तुम में से उसके लिए है जिसे यौन सम्बन्धी अनुचित कार्य करने की आशंका हो और यदि सन्तोष करो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (25) {24:31,32}

नोट- क्या मा मलाकत ऐमान या मा मलाकत यमीन से तात्पर्य दासी या दास है? इन शब्दों से दास दासियों का तर्क अनुचित लिया जाता है स्पष्ट रहे कि दास दासी की कल्पना कुरआन के शत प्रतिशत विपरीत है, समाज में दास दासी की आयात के केवल दो मार्ग है, प्रथम यह कि गुण्डे लोग बच्चों को अपहरण करके ले जाते रहे है और उनको बेचते रहे है, वह बच्चे दास दासियों के स्थान पर कार्य करते रहे हैं, दूसरा मार्ग है युद्ध बन्दियों को दास दासी बनाने का, किन्तु कुरआन ने इन दोनों मार्गों को समाप्त किया है,

1- और हमने सम्मान दिया है मानव की सन्तान को 17:70, ईश्वर ने जिसको सम्मान दिया हो उसको हीन करना बहुत बड़ा पाप है अतः यह मार्ग भी बन्द हो गया,

2- पस जब तुम्हारी उन नास्तिकों से मुठभेड़ हो अर्थात युद्ध हो तो प्रथम कार्य गर्दन मारना है यहां तक कि जब तुम उनको अच्छी प्रकार कुचल दो तब बन्दीयों को बलिष्ट बांधों, इसके बाद युद्ध अपने शस्त्र डाल दें तो तुम्हें अधिकार है उपकार करके छोड़ दो या प्रतिदान लेकर 47:4 अर्थात शान्ति होने पर,

यह है कुरआन का आदेश, युद्ध बन्दियों के प्रति अर्थात उनको हर स्थिति में मुक्ति मिलनी है,

मा मलाकत ऐमान क्या है? इस पर चिन्तन अनिवार्य है आयत 47:4 में स्पष्ट अंकित है कि जब तुम बन्दी बान्ध लो और युद्ध समाप्त हो जाए तो उन बन्दियों को मुक्ति प्रतिदान लेकर स्वतंत्र कर दो या जिस पर धन नही है उसको उपकार करके छोड़ दो, या अपने बन्दी भी दूसरे पक्ष के पास हो सकते है उनसे विनिमय होगा, मानो हर स्थिति में स्वतंत्र करना और कराना है, इस्लाम ने दासता के चलन को समाप्त किया है फिर यह दासी और दासों का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता,

पश्चिम ने 1800 ई० में इस समस्या पर ध्यान दिया है जहां प्राचीन काल से दासों का चलन था इस्लाम ने उनको मुक्त करने का एक उपाये और बताया है कि प्रायश्चित की विधि पर व्यवहार में आता है उनके लिए जो पहले से दास चले आ रहे थे, आज भी जो ऋणी है उसको दास ही समझा जाता है, इस्लाम ने उसको स्वतंत्र कराने का आदेश दिया है, अर्थात उसका कर्ज चुकता कर दो, अस्तु ईश्वर ने हर पार्श्व को उज्ज्वल किया है कही झोल नही रखा और सबसे बड़ी बात तो उपकार करना है,

इन मुक्त किये हुए स्त्री पुरुष में बहुत ऐसे भी हो सकते है जो मुस्लिम समाज और शिक्षा से प्रभावित हो गए हों और इस्लाम स्वीकार कर लिया हो या वैसे ही रहे हो और वह नास्तिक समाज में जाने को तैयार न हो और उनका वहां कोई सहारा भी शेष न रहा हो तो ऐसी स्थिति में वह इस्लामी राज्य के आधीन क्षेत्र में रहेंगे और उनको शासन अपने अधिकार अर्थात अपनी सुरक्षा में ले लेगा और

صرف وقتی مستی جھاڑنے والی اور نہ چھپے یاری کرنے والی ہوں. پھر جب وہ نکاح کرلیں پھر اگر وہ بے حیائی کریں تو ان کے لئے اس سزا سے نصف سزا مقرر کی جاتی ہے جو خاندانی شادی شدہ آزاد شریف عورتوں کے لئے مقرر ہے یہ حکم تم میں سے اس کے لئے ہے جسے جنسی بے راہ روی کا اندیشہ ہو اور اگر صبر کرو تو یہ تمہارے لئے بہت اچھا ہے اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۲۵) [۳۲،۳۱:۲۴]

نوٹ:۔ کیا ماملکت ایمان یا ماملکت یمین سے مراد لونڈی غلام ہیں؟ ان الفاظ سے مراد لونڈی غلام کی دلیل غلط پکڑی جاتی ہے. واضح رہے کہ لونڈی غلام کا تصور قرآن کے صد فیصد خلاف ہے. معاشرے میں لونڈی غلام کی درآمد کے صرف دو راستے ہیں. پہلا یہ کہ غنڈے لوگ بچوں کو اغوا کر کے لے جاتے ہیں اور ان کو بیچ دیتے رہے ہیں. وہ بچے لونڈی غلاموں کی جگہ کام کرتے رہے ہیں. دوسرا راستہ ہے جنگی قیدیوں کو لونڈی غلام بنانے کا. لیکن قرآن نے ان دونوں راستوں کو ختم کیا ہے.

(۱) اور ہم نے عزت دی آدم کی اولاد کو (۷۰:۱۷)

اللہ نے جس کو عزت دی ہو اس کو ذلیل کرنا بہت بڑا گناہ ہے اس لئے یہ راستہ بھی بند ہو گیا.

(۲) پس جب تمہاری ان کافروں سے مڈبھیڑ ہو تو پہلا کام گردنیں مارنا ہے. یہاں تک کہ جب تم ان کو اچھی طرح کچل دو تب قیدیوں کو مضبوط باندھ لو. اس کے بعد لڑائی اپنے ہتھیار ڈال دے تو تمہیں اختیار ہے احسان کر کے چھوڑ دو یا فدیہ لے کر (۴:۴۷) یعنی امن ہونے پر

یہ ہے قرآن کا حکم جنگی قیدیوں کے بارے میں یعنی ان کو ہر حال میں رہائی ملنی ہے

ماملکت ایمان کیا ہے؟ اس پر غور ضروری ہے. آیت (۴:۴۷) میں صاف درج ہے کہ جب تم قیدی باندھ لو اور لڑائی ختم ہو جائے یعنی لڑائی ہتھیار ڈال دے امن ہو جائے تو ان قیدیوں کو فدیہ لے کر آزاد کر دو یا جس پر رقم نہیں ہے اس کو احسان کر کے چھوڑ دو. یا اپنے قیدی بھی دوسرے فریق کے پاس ہو سکتے ہیں ان سے تبادلہ ہوگا. گویا ہر حال میں آزاد کرنا اور کرانا ہے. اسلام نے غلامی کے رواج کو ختم کیا ہے. پھر یہ کنیز اور غلاموں کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا.

مغرب نے ۱۸۰۰ء میں اس مسئلے پر توجہ دی ہے. جہاں زمانہ قدیم سے غلاموں کا رواج تھا، اسلام نے ان کو آزاد کرنے کا ایک طریقہ اور بتایا ہے جو کفارے کے طور پر عمل میں آتا ہے ان کے لئے جو پہلے سے غلام چلے آرہے تھے آج بھی جو قرض دار ہے اس کو غلام ہی سمجھا جاتا ہے. اسلام نے اس کو بھی آزاد کرانے کا حکم دیا ہے یعنی اس کا قرض ادا کر دو. بہر حال اللہ نے ہر پہلو کو روشن کیا ہے کہیں جھول نہیں رکھا اور سب سے بڑی بات تو احسان کرنا ہے.

ان رہا کئے ہوئے مرد یا عورتوں میں سے بہت ایسے بھی ہو سکتے ہیں جو مسلم معاشرہ اور تعلیم سے متاثر ہو گئے ہوں اور اسلام قبول کر لیا ہو یا ویسے ہی رہے ہوں اور وہ کافر معاشرہ میں جانے کو تیار نہ ہوں اور ان کا وہاں کوئی سہارا بھی باقی نہ رہا ہو. تو ایسی حالت میں وہ اسلامی حکومت کے زیر نگیں علاقہ میں رہیں گے اور ان کو حکومت اپنی ولایت یعنی اپنی حفاظت و عہد میں لے لے گی. اور ان میں

उनमे जो पुरुष या स्त्री आपस में या पहले से रहने वाले से विवाह करना चाहें जैस आयत 4:25 में बताया गया है तो वह उस मर्द के साथ विवाह कर सकती है ऐसे ही उनका नर भी अधिकारी की अनुमति के साथ उस अधिकारी की जिसको शासन ने उस विभाग का अधिकारी नियुक्त किया है विवाह कर सकता है, ऐसी स्थिति में भी केवल एक विवाह का औचित्य है और 4:3 में भी केवल एक विवाह की अनुमति है सामान्य स्थिति में सूरत नूर आयत 33 में भी ऐसी स्त्रि को विवाह करने की आज्ञा है, अर्थात विवाह के योग्य व्यस्क स्त्री यदि विवाह करना चाहें तो तुम उसे मत रोको, क्या तुम अपने सांसारिक लाभ के लिए उनको इस वैध कार्य से रोकोगे तो तुम स्वयं पापी होंगे,

यह है मा मलाकत ऐमान का कुरआनी अर्थ अर्थात जो तुम्हारे दाहिने हाथ में हो अर्थात तुम्हारी देखभाल में हो तुम्हारे वचन में हो, वह दास दासी अनुचरी बनकर नही रहेंगे अपितु स्वतंत्र होंगे केवल शासन की देखभाल होगी ताकि उनको कोई व्याकुल न करें, और जब उनकी पूरी परीक्षा हो जाएगी और वह अपने को निष्ठवान सिद्ध कर देंगे तो फिर वह तुम्हारी बराबर के नागरिक होंगे उनके भी वही अधिकार होंगे जो तुम्हारे है कोई अन्तर न होगा अन्तर यदि होगा तो केवल कर्म से होगा,

आयत (4:25, 23:5,6,7 और 70:29,30,31) के अनुसार बिना विवाह के अनुचारी से मैथुन करना अवैध है जबकि आयत में कहा गया है कि विवाह करो उन स्त्रियों से जो तुम्हारी सुरक्षा में हो और नियमानुसार उनके मेहर (जो धन निश्चित किया है) चुकता करो परन्तु काम पूजकों ने अनुचरी का नाम दे दिया है और विवाह से नकार किया है और अन्याय यह किया है कि मुहम्मद स0 को भी इस कुरआन के विरुद्ध कार्य में सम्मिलित कर लिया है यह लिखकर कि आपके यहां भी अनुचरी थी जिनके साथ आप बिना विवाह मैथुन करते थे और उनसे बच्चे उत्पन्न होने को भी लिख दिया,

यदि बिना विवाह को अनुचरी से मैथुन की अनुमति होती तो 4:25 में यह प्रतिबन्ध न होता कि यदि तुम को कुलीन स्वतंत्र स्त्री न मिले तो मा मलाकत से विवाह करो उनके मेहरों के साथ अधिकारी की अनुमति से, कहा यह जाता कि यदि कुलीन स्त्री न मिले तो मा मलाकत ऐमान से ही अपनी इच्छा पूर्ति कर लो विवाह का प्रतिबन्ध न होता, जबकि आयत में विवाह का प्रतिबन्ध है, अतः बिना विवाह के मैथुन अवैध है, इस अनुचित कार्य को उचित करने के लिए मुहम्मद को भी बदनाम किया है जबकि मुहम्मद स0 के यहां बिना विवाह के कोई अनुचरी न थी, इस्लाम में अनुचरि के लिए कोई स्थान नही, यदि घर का काम काज के लिए कोई स्त्री रखी जाएगी तो वह कर्मचारी के पद से रहेगी उससे मैथुन का कोई प्रश्न नही, वह एक कर्मचारी है न कि अनुचरी, हर विषय पर कुरआन के प्रकाश में विचार करना चाहिए न कि किसी रवायत या इतिहास की पुस्तकों से, अतः बिना विवाह के किसी स्त्री को रखने की अनुमति नही दी जा सकती न ही किसी ने दी है,

मा मलाकत ऐमान के तीन कुरआनी अर्थ प्रस्तुत है, मा मलाकत ऐमान का अर्थ है वह वस्तु जिसके स्वामी हुए तुम्हारे दाहिने हाथ, अर्थात जो वस्तु तुम्हारी सुरक्षा में हो,

1, कुरआन के अवतरित होने से पहले जो क्रय किए हुए पुरुष स्त्री थे वह दास की स्थिति (पद) से रह रहे थे और उनमें जो स्त्री थी उनसे यौन सम्बन्ध स्थापित किथे समय के चलन के अनुसार कुरआन ने उनको तोड़ा नहीं क्योंकि अधिकांश उनमें सन्तान वाली थी, अपितु इस्लाम ने यह किया कि उनके विवाह उन्ही व्यक्तियों से करा दिए और उनको पत्नी के अधिकार प्रदान किये, 4:3में तात्कालिक स्थिति के लिए

جومرد یا عورتیں آپس میں یا پہلے سے رہنے والے سے نکاح کرنا چاہیں جیسا آیت (۴:۲۵) میں بتایا گیا ہے تو وہ اس مرد کے ساتھ نکاح کر سکتی ہے ایسے ہی ان کا آدمی بھی حاکم کی اجازت کے ساتھ اس حاکم کی جس کو حکومت نے اس محکمے کا حاکم مقرر کیا ہے۔ نکاح کر سکتا ہے ایسی صورت میں بھی صرف ایک نکاح کا جواز ہے اور (۴:۳) میں بھی صرف ایک نکاح کی اجازت ہے عام حالت میں۔ سورت نور آیت ۳۳ ر میں بھی ایسی عورت کو نکاح کرنے کی اجازت ہے۔ یعنی نکاح کے لائق جوان عورت اگر نکاح کرنا چاہے تو تم اسے مت روکو۔ کیا تم اپنے دینوی فائدے کے لئے ان کو اس جائز کام سے روکو گے تو تم خود گنہگار رہو گے۔

یہ ہے ماملکت ایمان کا قرآنی مفہوم یعنی جو تمہارے داہنے ہاتھ میں ہوں یعنی جو تمہارے زیر نگرانی تمہارے میثاق میں ہوں۔ وہ غلام اور کنیز بن کر نہیں رہیں گے۔ بلکہ آزاد ہوں گے صرف حکومت کی دیکھ بھال ہوگی تاکہ ان کو کوئی پریشان نہ کرے اور جب ان کا پورا امتحان ہو جائے گا اور وہ اپنے کو وفادار ثابت کر دیں گے تو پھر وہ تمہاری برابر کے شہری ہوں گے ان کے بھی وہی حق ہوں گے جو تمہارے ہیں۔ کوئی فرق نہ ہوگا فرق اگر ہوگا تو صرف عمل سے ہوگا۔

آیت (۴:۲۵، ۲۳:۵،۶،۷) اور (۷۰:۲۹،۳۰،۳۱) کے مطابق بلا نکاح کے کنیز سے مباشرت کرنا حرام ہے۔ جب کہ آیت میں کہا گیا ہے کہ نکاح کرو ان عورتوں سے جو تمہاری حفاظت میں ہوں اور قاعدے کے مطابق ان کے مہر ادا کرو مگر نفس پرستوں نے کنیز کا نام دے دیا ہے اور نکاح سے انکار کیا ہے اور ظلم یہ بھی کیا کہ محمدؐ کو بھی اس خلاف قرآن عمل میں شامل کر لیا یہ لکھ کر کہ آپ کے یہاں بھی کنیزیں تھیں جن کے ساتھ آپ بنا نکاح مباشرت کرتے تھے اور ان سے بچے پیدا ہونے کو بھی لکھ دیا۔

اگر بغیر نکاح کنیز سے مباشرت کی اجازت ہوتی تو (۴:۲۵) میں یہ قید نہ ہوتی کہ اگر تم کو خاندانی آزاد عورت نہ ملے تو ماملکت ایمان سے نکاح کرو ان کے مہروں کے ساتھ حاکم کی اجازت سے۔ کہا یہ جاتا کہ اگر خاندانی عورت نہ ملے تو ماملکت ایمان سے ہی اپنی خواہش پوری کر لو نکاح کی شرط نہ ہوتی جب کہ آیت میں نکاح کی شرط ہے اس لئے بغیر نکاح کے مباشرت حرام ہے اس غلط کام کو صحیح کرنے کے لئے محمدؐ کو بھی بدنام کیا ہے جب کہ محمدؐ کے یہاں بغیر نکاح کے کوئی کنیز نہ تھی اسلام میں کنیز کے لئے کوئی گنجائش نہیں اگر گھر کے کام کاج کے لئے کوئی عورت رکھی جائے گی تو وہ ملازمہ کی حیثیت سے رہے گی اس سے مباشرت کا کوئی سوال نہیں وہ ایک ملازمہ ہے نہ کہ کنیز۔ ہر مسئلہ پر قرآن کی روشنی میں غور کرنا چاہیے نہ کہ کسی روایت یا تاریخ کی کتابوں سے اس لئے بغیر نکاح کے کسی عورت کو رکھنے کی اجازت نہیں دی جا سکتی نہ ہی کسی نے دی ہے۔

ماملکت کے تین مفہوم پیش ہیں۔ ماملکت ایمان کا معنی ہے وہ چیز جس کے مالک ہوئے تمہارے داہنے ہاتھ یعنی جو چیز تمہاری حفاظت میں ہو۔

(۱) زمانہ نزول قرآن سے پہلے جو خریدے ہوئے مرد عورت تھے وہ مملوک کی حیثیت سے رہ رہے تھے اور ان میں جو عورتیں تھیں ان سے جنسی تعلقات قائم کئے تھے رواج زمانہ کے مطابق۔ قرآن نے ان کو توڑا نہیں کیونکہ اکثر ان میں اولاد والی تھیں بلکہ اسلام نے یہ کیا کہ ان کے نکاح انہیں آدمیوں سے کرا دیے۔ اور ان کو بیوی کے حقوق عطا کئے۔ (۴:۳) میں ہنگامی حالات کے لئے چار نکاح

चार विवाह तक की अनुमति के साथ और फिर कहा यदि तुम को भय हो कि न्याय न हो सकेगा तो केवल एक अनुवांशिक स्त्री या एक मा मलाकत ऐमान से विवाह करो, इस्लाम ने क्रय करके दास बनाने का आदेश नहीं दिया अपितु स्वतंत्र करने का आदेश दिया है क्रय करके 5:89

2- दूसरे नम्बर पर मा मलाकत ऐमान से कुरआन में उन स्त्रियों से अभिप्राय है जो गैर मुस्लिम समाज से मुसलमान होकर और देश त्याग करके मुसलमानों के पास आ जाऐ इसको भलीभांति प्रकार समझने के लिए 4:23,24 पर विचार अनिवार्य है जिनमें स्त्रियों की सूची जिनसे विवाह नही हो सकता जिसमें विवाह वाली स्त्री भी है परन्तु विवाह वाली उन स्त्रियों से विवाह वैध है जो मा मलाकत ऐमानाकुम हों यह वह स्त्रियां है जो नास्तिक समाज में पति रखती हों किन्तु मुसलमान हो जाए और देश त्याग करके मुस्लिम समाज में आ जाऐ ऐसी स्त्रियों के लिए कुरआन की आयत 60:10 में आदेश है कि उनकी परीक्षा कर लिया करो कही ऐसा न हो कि वह जासूस हो जब उनकी परीक्षा हो जाए और ठीक सिद्ध हों तो उनसे विवाह कर सकते हो (4:24) नियमानुसार बिना विवाह के यौन सम्बन्ध मैथुन वैध नही है.

प्रचलित धर्म ज्ञान में मा मलाकत ऐमान से जो बिना निकाह यौन सम्बन्ध स्थापित करने की जो कल्पना बना ली है वह न केवल यह कि अनुचित है अपितु इससे इस्लाम, कुरआन और मुहम्मद स0 की महानता कलंकित होती है.

3- मा मलाकत ऐमान से कुरआन ने उन कर्मचारियों को कहा है जो पारिश्रमिक पर काम काज करते हैं 16:71, 30:28

मा मलाकत ऐमान के इन तीन अर्थों से यह कही सिद्ध नही होता कि मा मलाकत ऐमान से बिना विवाह के मैथुन हो सकता है कदापि नही, बिना विवाह मैथुन को वैध करने वालों को ईश्वर के सम्मुख जाने का भय होना चाहिए कि महाप्रलय में क्या उत्तर होगा क्या कुरआन ने इस कुकर्म की अनुमति दी है? नही दी.

(उपरोक्त वर्णित नियमों के स्पष्टीकरण के द्वारा) ईश्वर संकल्प करता है कि वह तुम पर उन आस्तिकों की रीति नीति स्पष्ट करे जो तुम से पहले हो चुके हैं और उन्ही आचार व्यवहार को बताए और इस प्रकार वह तुम पर कृपा करे और ईश्वर बहुत जानने वाला और युक्ति वाला है (26)

नोट- "सुनानुललजीना मिन कबलिकुम" के शब्दों में इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जो नियम तुम पर लागू किए गए है वह कोई नवीन नही है अपितु यह पहले उम्मतों पर भी लागू थे, अर्थात जो नियम व धर्म तुम को दिया गया है वह पहले समुदायों को भी दिया गया था 42:13, तब ही तो कहा गया है कि ईश्वर तुम को पहले लोगों की रीति नीति बताए जिनकी खोज में मुहम्मद स0 और दूसरे आस्तिक थे फिर ईश्वर ने उनको सत्य रीति नीति दे दी (93:7)

और ईश्वर चाहता है कि तुम पर कृपा करे और जो लोग अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं वह चाहते हैं कि तुम सीधे मार्ग से भटक कर दूर जा पड़ो (27)

ईश्वर चाहता है कि तुम से (भार को) हलका करे और मनुष्य निर्बल उत्पन्न किया गया है (28)

नोट- भार हलका करने का अर्थ यह है कि इस्लाम से पहले इस मानव ने अपने ऊपर बहुत से प्रतिबन्ध लगा रखे थे और इसके बहुत पूज्य थे ईश्वर ने उन सबको समाप्त किया, इस कुरआन के द्वारा और इन्सान का भार जिसमें दबा जा रहा था हलका कर दिया.

تک کی اجازت کے ساتھ۔اور پھر کہا اگر تم کو خوف ہو کہ انصاف نہ ہو سکے گا تو صرف ایک خاندانی عورت یا ایک ماملکت ایمان سے نکاح کرو۔اسلام نے خرید کر کے غلام بنانے کا حکم نہیں دیا بلکہ آزاد کرنے کا حکم دیا ہے خرید کر (۸۹:۵)

(۲) دوسرے نمبر پر ماملکت ایمان سے قرآن نے وہ عورتیں مراد لی ہیں جو غیر مسلم معاشرہ سے مسلمان ہو کر اور ہجرت کر کے مسلمانوں کے پاس آجائیں۔اس کو اچھی طرح سمجھنے کے لئے (۲۳،۲۴:۴) پر غور ضروری ہے جن میں ان عورتوں کی فہرست ہے جس سے نکاح نہیں ہو سکتا۔جس میں نکاح والی عورت بھی ہے۔مگر نکاح والی ان عورتوں سے نکاح جائز ہے جو ماملکت ایمان کم ہوں یہ وہ عورتیں ہیں جو کافر معاشرہ میں شوہر رکھتی ہوں۔لیکن مسلمان ہو جائیں اور ہجرت کر کے مسلم معاشرے میں آجائیں۔ایسی عورتوں کے لئے قرآن کی آیت (۱۰:۶۰) میں حکم ہے کہ ان کا امتحان کر لیا کرو کہیں ایسا نہ ہو کہ وہ جاسوس ہوں جب ان کا امتحان ہو جائے اور ٹھیک ثابت ہوں تو ان سے نکاح کر سکتے ہو (۲۴:۴) قائدے کے مطابق بغیر نکاح کے مباشرت جائز نہیں ہے۔

رائج فقہوں میں ماملکت ایمان سے جو بلا نکاح جنسی تعلقات قائم کرنے کا تصور دیا گیا ہے وہ نہ صرف یہ کہ غلط ہے بلکہ اس سے اسلام اور قرآن اور محمدؐ کی عظمت داغ دار ہوتی ہے۔

(۳) ماملکت ایمان سے قرآن نے وہ ملازم مراد لئے ہیں جو اجرت پر کام کاج کرتے ہیں (۷۱:۱۶،۲۸:۳۰)

ماملکت ایمان کے ان تین مفہوم سے یہ کہیں ثابت نہیں ہوتا کہ ماملکت ایمان سے بلا نکاح کے مباشرت ہو سکتی ہے۔ہر گز نہیں بلا نکاح مباشرت کو جائز کرنے والوں کو اللہ کے حضور جانے کا خوف ہونا چاہیے کہ حشر میں کیا جواب ہوگا کیا قرآن نے اس فعل بد کی اجازت دی ہے؟ نہیں دی۔

(مذکورہ بالا قوانین کی وضاحت کے ذریعہ) اللہ ارادہ کرتا ہے کہ وہ تم پر ان مومنوں کے طریقے واضح کرے جو تم سے پہلے گزر چکے ہیں اور انہیں طریقوں کو بتائے اور اس طرح وہ تم پر مہربانی کرے اور اللہ بہت جاننے والا اور حکمت والا ہے (۲۶)

نوٹ:۔[سنن الذین من قبلکم] کے الفاظ میں اس بات کی وضاحت کر دی گئی ہے کہ جو قانون تم پر لاگو کئے گئے ہیں وہ کوئی نئے نہیں ہیں۔بلکہ یہ پہلی امتوں پر بھی لاگو تھے یعنی جو شریعت اور دین تم کو دیا گیا ہے وہی پہلی امتوں کو بھی دیا گیا تھا (۱۳:۴۲) تب ہی تو کہا گیا ہے کہ اللہ تم کو پہلے لوگوں کے طریقے بتائے جن کی تلاش میں محمدؐ اور دوسرے مومن تھے پھر اللہ نے ان کو ہدایت دے دی (۷:۹۳)

اور اللہ چاہتا ہے کہ تم پر مہربانی کرے اور جو لوگ اپنی خواہشوں کے پیچھے چلتے ہیں وہ چاہتے ہیں کہ تم سیدھے راستے سے بھٹک کر دور جا پڑو (۲۷)

اللہ چاہتا ہے کہ تم سے (بوجھ کو) ہلکا کرے اور انسان کمزور پیدا کیا گیا ہے (۲۸)

نوٹ:۔بوجھ ہلکا کرنے کا مطلب یہ ہے کہ اسلام سے پہلے اس انسان نے اپنے اوپر بہت سی پابندی لگا رکھی تھیں اور اس کے بہت معبود تھے اللہ نے ان سب کو ختم کیا۔اس قرآن کے ذریعہ اور انسان کا بوجھ جس میں دبا جا رہا تھا ہلکا کر دیا۔

वह एक सजदा जिसे तू गरां समझता है
हजार सजदों से देता है इन्सान को निजात (इक़बाल)

وہ ایک سجدہ جسے تو گراں سمجھتا ہے
ہزار سجدوں سے دیتا ہے انساں کو نجات ۔اقبال

आज मुसलमान ने उससे अधिक भार लाद लिया है,

آج مسلمان نے اس سے زیادہ بوجھ لاد لیا ہے

आस्तिको! एक दूसरे का धन अनुचित न खाओ हां यदि आपस की सहमति से व्यापार का लेन देन हो (और इससे माली लाभ हो जाए तो वह उचित है) और अपने आपको वध न करो, कुछ शंका नहीं कि ईश्वर तुम पर कृपालु है (29) {2:54, 7:150, 20:91}
और उसकी कृपा यह है कि तुम को सरल नियम दिए इसलिए उस पर व्यवहार करो यदि विमुखता करोगे तो उसकी कृपा से दूर हो जाओगे और जो कोई अत्याचार व अतिक्रमण से ऐसा करेगा (अर्थात दूसरों का माल अनुचित विधि से खाएगा) उसे हम समीप नर्क की अग्नि में डाल देंगे, ईश्वर के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है (30)

مومنو! ایک دوسرے کا مال ناحق نہ کھاؤ ہاں اگر آپس کی رضا مندی سے تجارت کا لین دین ہو (اور اس سے مالی فائدہ ہو جائے تو وہ جائز ہے) اپنے آپ کو ہلاک نہ کرو کچھ شک نہیں کہ اللہ تم پر مہربان ہے (۲۹) [۲:۵۴، ۷:۱۵۰، ۲۰:۹۱] اور اس کی رحمت یہ ہے کہ تم کو آسان شریعت دی اس لئے اس پر عمل کرو اگر روگردانی کرو گے تو اس کی مہربانی سے دور ہو جاؤ گے۔
اور جو کوئی ظلم و زیادتی سے ایسا کرے گا (یعنی دوسروں کا مال ناجائز طریقے سے کھائے گا) اسے ہم عن قریب دوزخ کی آگ میں ڈال دیں گے اللہ کے لئے یہ کوئی مشکل کام نہیں ہے (۳۰)

नोट- अवैध विधि से माल खाना वध करना है और आपस में दुश्मनी हो जाती है जिससे समाप्त न होने वाली लड़ाई आरम्भ हो जाती है जो एक अर्थ में नर्क की अग्नि ही है {4:10, 59:20}

نوٹ:۔ ناجائز طریقے سے مال کھانا قتل کرنا ہے اور آپس میں دشمنی ہو جاتی ہے جس سے ناختم ہونے والی لڑائی شروع ہو جاتی ہے جو ایک معنی میں دوزخ کی آگ ہی ہے (۴:۱۰، ۵۹:۲۰)

यदि तुम बड़े पापों से (अर्थात व्यापार लेन देन आदि के आवरण में एक दूसरे का आर्थिक वध अथवा दूसरे बड़े पापों से) रुक जाओ जिससे तुमको वर्जित किया गया है तो हम तुम सबकी दुर्दशा दूर कर देंगे (अर्थात इस विश्वास पात्रता और संवेदना के बरताओ से प्रयोजन की हर वस्तु भोजन, वस्त्र, रक्षा, इलाज आदि नियमानुसार प्राप्त होना आरम्भ हो जाएगी, और आपस में प्रेम उत्पन्न होगा जो तुम्हारी शक्ति को बढ़ा देगा जिससे शत्रु भयभीत होंगे) और हम तुम्हें सम्मान के स्थान में प्रविष्ट करेंगे (अर्थात दुनिया और प्रलोक में सम्मानित रहोगे, प्रलोक भी दुनिया से ही बनती है, उस समय जब दुनिया में ईश्वर के आदेश पर जीवन व्यतीत किया जाए तो ईश्वर अपने सदाचारी भक्तों की सहायता करता है और उनको सम्मान और शक्ति मिलती है (31) {5:65, 42:37, 53:32}

اگر تم بڑے گناہوں سے (یعنی تجارت لین دین وغیرہ کے پردے میں ایک دوسرے کا اقتصادی قتل نیز دوسرے کبائر سے) باز آجاؤ جن سے تم کو منع کیا گیا ہے تو ہم تم سب کی بدحالیاں دور کر دیں گے (یعنی اس ایمان داری اور ہمدردی کے برتاؤ سے ضرورت کی ہر چیز خوراک، لباس، حفاظت، علاج وغیرہ باقاعدہ آسانی سے میسر آنی شروع ہو جائے گی اور آپس میں محبت پیدا ہوگی جو تمہاری طاقت کو بڑھا دے گی جس سے دشمن خوف زدہ ہوں گے) اور ہم تمہیں عزت کے مقام میں داخل کریں گے (یعنی دنیا اور آخرت میں باعزت رہو گے آخرت بھی دنیا سے ہی بنتی ہے اس وقت جب دنیا میں اللہ کے حکم پر زندگی گزاری جائے تو اللہ اپنے نیک بندوں کی مدد کرتا ہے اور ان کو عزت اور طاقت ملتی ہے (۳۱) [۵:۶۵، ۴۲:۳۷، ۵۳:۳۲]

और उस वस्तु की इच्छा न करो जिसे देकर ईश्वर ने तुम में से कतिपय को कतिपय पर श्रेष्ठता प्रदान की है पुरुषों के लिए भाग है उसमें जिसे उन्होंने श्रम से कमाया हो और स्त्रियों के लिए अंश है उसमें जिसे उन्होंने श्रम से कमाया हो और ईश्वर से उसका कृपा दया मांगो, निःसन्देह ईश्वर हर एक वस्तु को उत्तम जानने वाला है (32)

اور اس چیز کی تمنا نہ کرو جسے دے کر اللہ نے تم میں سے بعض کو بعض پر فوقیت عطا فرمائی ہے. مردوں کے لئے حصہ ہے اس میں جیسے انہوں نے محنت سے کمایا ہو، اور عورتوں کے لئے حصہ ہے اس میں جسے انہوں نے محنت سے کمایا ہو اور اللہ سے اس کا فضل مانگو. بے شک اللہ ہر ایک چیز کو خوب جاننے والا ہے (۳۲) [۲۰:۵۳]

और जो माल माता-पिता और नातेदार छोड़ मरे तो (तो अधिकारियों में बांट दो) हमने हर एक के अधिकारी निश्चित कर दिए है और जिन लोगों से तुम वचन कर चुके हो उनको भी उनका अंश दो, निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु को देख रहा है (33) {2:180} वचन का अर्थ वसियत है

اور جو مال ماں باپ اور رشتہ دار چھوڑ مریں تو (حق داروں میں تقسیم کر دو کہ) ہم نے ہر ایک کے حقدار مقرر کر دئے ہیں اور جن لوگوں سے تم عہد کر چکے ہو ان کو بھی ان کا حصہ دو بے شک اللہ ہر چیز کو دیکھ رہا ہے (۳۳) [۲:۱۸۰] عہد کا مطلب وصیت ہے

पुरुष स्त्री पर व्यवस्थापक अर्थात रक्षक सहारा देने

مرد عورت پر قوام ہیں یعنی محافظ سہارا دینے والے نگراں

ہیں اس بنا پر کہ اللہ نے بعض کو بعض سے افضل بنایا ہے اور اس لئے بھی کہ مرد اپنا مال خرچ کرتے ہیں تو جو نیک بیویاں ہیں وہ اطاعت شعار ہوتی ہیں اور مردوں کے پیچھے اللہ کی حفاظت و نگرانی میں ان کے حقوق کی حفاظت کرتی ہیں جن عورتوں سے تمہیں سرکشی کا اندیشہ ہو انہیں سمجھاؤ، خواب گاہوں میں ان سے الگ رہو۔ اگر اس پر بھی باز نہ آئیں تو زدوکب کرو۔ اور اگر فرمانبردار ہو جائیں تو پھر ان کو ایذا دینے کا کوئی بہانہ مت ڈھونڈو۔ بے شک اللہ سب سے اعلیٰ اور جلیل القدر ہے (۳۴) [۴:۱۵،۳۳،۱۲۸]

वाले नियंत्रक हैं, इस आधार पर कि ईश्वर ने कतिपय को कतिपय से श्रेष्ठ बनाया है, और इसलिए भी कि पुरुष अपना धन व्यय करते हैं तो जो शीलवान पत्नीयां हैं वह आज्ञाकारी होती हैं और पुरुषों के पीछे ईश्वर की रक्षा व देखभाल में उनके अधिकारों की रक्षा करती हैं और जिन स्त्रियों से तुम्हें अवज्ञा की शंका हो उन्हें समझाओ और उनके साथ सोना छोड़ दो और यदि इस पर भी न माने तो मारो और यदि आज्ञाकारी हो जाऐं तो फिर उनको पीड़ा देने का कोई बहाना मत खोजो निःसन्देह ईश्वर सबसे उच्चतर और महानुभाव है (34) {4:15,33,128}

اگر تم کو معلوم ہو کہ میاں بیوی میں ان بن ہے تو ایک منصف مرد کے خاندان میں سے اور ایک منصف عورت کے خاندان میں سے مقرر کرو۔ وہ اگر صلح کرا دینی چاہیں گے تو اللہ ان میں موافقت کر دے گا۔ کچھ شک نہیں کہ اللہ سب کچھ جانتا ہے اور سب باتوں سے خبردار ہے (۳۵)

यदि तुम को ज्ञात हो कि पति पत्नी में अनबन है तो एक पंच पुरुष के परिवार से और एक न्याय-कर्ता स्त्री के परिवार से नियुक्त करो वह यदि समझौता करा देना चाहेंगे तो ईश्वर उनमें अनुकूलता उत्पन्न कर देगा, कुछ शंका नहीं ईश्वर सब कुछ जानता है और सब बातों से अवगत है (35)

نوٹ:۔ آج جو طلاق دی جارہی ہیں وہ قرآن کے خلاف دی جارہی ہیں اللہ نے طلاق کا طریقہ یہ بتایا ہے کہ اگر ان بن دیکھو تو منصف مقرر کرو اور وہ صلح کی کوشش کریں، اگر صلح ہو جاتی ہے تو ٹھیک ہے اگر نہیں ہوتی ہے تو ان منصفوں کے بیان کے مطابق طلاق کا کام شروع ہوگا اور پھر ایک قاضی ہوگا اور طلاق عدت کے لئے ہوگی جو تین ماہ ہے ان تین ماہ میں طلاق دینے والا رجوع کر سکتا ہے اور زندگی میں دوبارہ رجوع کر سکتا ہے اور اس وقت ہی منصف یہ طے کر دیں گے کہ یہ طلاق ہے یا خلع۔

नोट- आज जो तलाक दी जा रही है वह कुरआन के विरुद्ध दी जा रही है, ईश्वर ने तलाक की विधि यह बताई है कि यदि अनबन देखो तो पंच नियुक्त करो और वह समझौता का प्रयत्न करें, यदि समझौता हो जाता है तो ठीक है यदि नहीं होता तो उन व्यक्तियों के कथन के अनुसार तलाक का कार्य आरम्भ होगा और फिर एक न्यायाधीश भी होगा और तलाक इद्दत के लिए होगी जो तीन माह है इस तीन माह में तलाक देने वाला प्रत्यागमन (रुजू) कर सकता है और जीवन में दो बार प्रत्यागमन कर सकता है और उस समय ही न्यायाधीश यह निर्णय कर देंगे कि यह तलाक है या खुला,

اور اللہ کی فرمانبرداری کرو۔ اور اس کے ساتھ کسی بھی چیز (زندہ یا مردہ انسان کو جن کو قانون بنانے والا نہ مانا جائے کسی جانور کسی قبر یا کسی بت یا استھان) کو شریک نہ ٹھہرانا (۶:۴۲) اور نیک سلوک کرنا اپنے ماں باپ کے ساتھ اور اپنے قرابتداروں کے ساتھ اور بے سہارا لوگوں کے ساتھ اور ان کے ساتھ جن کا کاروبار (کسی بھی وجہ سے) ساکن ہو جائے اور ہم سایہ قرابتدار کے ساتھ ہم سایہ اجنبی کے ساتھ۔ اور دور کے ہمسایہ کے ساتھ اور مسافر کے ساتھ اور اپنے ملازمین کے یا جو تمہارے حفاظت میں ہوں کے ساتھ حسن سلوک کرنا بے شک اللہ اترانے والے اور فخر کرنے والے کو پسند نہیں کرتا (۳۶) [۴۲:۲۱، ۹:۳۱، ۶:۱۵۹، ۳۰:۳۱،۳۲]

और ईश्वर की आज्ञा पालन करो और उसके साथ किसी भी वस्तु जीवित या मृतक व्यक्ति को जिन्न को नियम बनाने वाला न माना जाए किसी जानवर किसी समाधी या किसी मूर्ति या (स्थान) को साझी न बनाना 42:6, और अच्छा व्यवहार करना अपने माता-पिता के साथ और अपने सगोत्री के साथ और बेसहारा लोगों के साथ और उनके साथ जिनका कारोबार (किसी भी कारण से) रुक जाए और प्रतिवासी सगोत्री के साथ प्रतिवासी अपरिचित के साथ और दूर के प्रतिवासी के साथ और यात्री के साथ और कर्मचारियों के साथ या जो तुम्हारी सुरक्षा में हो के साथ उत्तम व्यवहार करना, निःसन्देह ईश्वर इतराने वाले और घमण्ड करने वाले को पसन्द नहीं करता (36) {42:21, 9:31, 6:159, 30:31,32}

جو خود بھی بخل کرتے ہیں اور دوسروں کو بھی بخل کرنے کا مشورہ دیتے ہیں اور اللہ نے جو دولت انہیں اپنے فضل سے دے رکھی ہے اسے چھپا کر رکھتے ہیں (تا کہ کسی کو دینا نہ پڑے) ایسے نافرمان لوگوں کے لئے ہم نے ذلت کا عذاب تیار کر رکھا ہے (۳۷)

जो स्वयं भी कृपणता करते हैं और दूसरों को भी कृपणता करने का परामर्श देते हैं और ईश्वर ने जो धन उन्हें अपनी कृपा दया से दे रखा है उसे छुपा के रखते हैं (ताकि किसी को देना न पड़े) ऐसे कृतघ्न अवज्ञाकार लोगों के लिए हम ने अपमान का दण्ड तैयार कर रखा है (37)

(اور ان لوگوں کے لئے بھی) جو لوگوں کو دکھانے کے لئے اپنا مال خرچ کرتے ہیں وہ نہ اللہ پر ایمان رکھتے ہیں اور نہ روز آخرت پر (وہ لوگ شیطان کے ساتھی ہیں) اور جس کا ساتھی شیطان ہوا تو اسے بہت ہی برا ساتھی ملا (۳۸) [۷:۸،۹،۱۶]

(और उन लोगों के लिए भी) जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल व्यय करते हैं वह न ईश्वर पर विश्वास रखते हैं और न महा प्रलय पर (वह लोग शैतान के साथी हैं) और जिसका साथी शैतान हुआ तो उसे बहुत ही बुरा साथी मिला (38) {7:8,9,16}

और यदि वह लोग ईश्वर पर और महा प्रलय पर विश्वास लाते और जो कुछ ईश्वर ने उनको दिया है उसमें से व्यय करते हैं तो उनकी क्या हानि होती और ईश्वर उनको अधिक जानता है (39)

ईश्वर कण बराबर भी अत्याचार नहीं करता यदि किसी ने एक सत्कर्म किया है वह उसे अधिक करता है और अपनी ओर से उसको बहुत बड़ा प्रतिदान देगा (40) {10:24, 6:160}

फिर (प्रलय के दिन) जब हम हर उम्मत में से (उस काल का) साक्षी लाएंगे, और (ऐ ईशदूत) आपको हम उन (आपके काल के लोगों) पर साक्षी लाएंगे (कि ईश्वर का प्रेषित किया हुआ नियम सब लोगों तक पहुंच चुका था) (41) {5:67}

उस (प्रलय के) दिन वह लोग जिन्होंने नकार किया, अर्थात उस नियम की अवज्ञा की, जो ईश्वर ने अपने ईशदूत के द्वारा अवतरित किया है, वह कामना करेंगे कि काश उन पर पृथ्वी बराबर हो जाएं क्योंकि वह उस दिन ईश्वर से कोई भी वस्तु छुपा न सकेंगे (सब कुछ खुलकर स्पष्ट हो जाएगा) (42)

नोटः- ईशदूत वही (ईश्वरीय वाणी) का अनुकरण करते हैं 6:50, 10:15, 46:9, अतः ईशदूत का अनुकरण कुरआन का अनुकरण है 36:65 सब बातें स्पष्ट हो जाएंगी.

ऐ लोगो! जो आस्था लाए हो जब तुम (सुकारा) उन्मत्त हो तो नमाज़ के निकट न जाओ (इसलिए तुम हर बड़ाई घमण्ड और वांशिक भेद को छोड़कर) नमाज़ में सम्मिलित हो जाओ ऐसी स्थिति में जो तुम नमाज़ में पढ़ रहे हो वह तुम्हारी बुद्धि में आ रहा है और उसके अनुसार नमाज़ से बाहर आकर व्यवहार करोगे (जिससे तुम पर दया की जाएगी) और इसी प्रकार जनाबत की स्थिति में भी यहां तक कि स्नान कर लो, जब स्नान कर लो तब नमाज़ पढ़ो, किन्तु यदि तुम किसी बिना रुके तीव्र यात्रा पर हो (अभियान) और किसी कारणवश स्नान अनिवार्य हो जाए और स्नान करने और तयम्मुम करने का अवसर न हो तो नमाज़ समय पर पढ़ो क्योंकि नमाज़ अपने निश्चित समय के साथ अनिवार्य है 4:103 और कभी ऐसा हो कि तुम रोगी हो या यात्रा में हो या तुम से किसी को स्वपन दोष हो गया हो अर्थात स्राव आ गया हो या तुम ने स्त्रीयों से मैथुन किया हो फिर पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से काम लो और उससे अपने मुखू को और होथों पर मल लो निःसंदेह ईश्वर नम्रता से काम लेने वाला और क्षमा करने वाला है, (43) {5:6, 22:2, 15:72}

नोट- आयत 43 का भाव लिखने में प्रचलित अनुवादों से कुछ हट कर मार्ग अपनाया गया है? आयत में अंकित चन्द शब्द हैं उन पर कुछ लिखा जा रहा है हो सकता है इससे आयत का भाव स्पष्ट हो जाए

(1) सुकारा ईश्वर कहता है कि उन्माद की स्थिति में नमाज़ के निकट न जाओ? अतः जो कुछ तुम मुख से पढ़ रहे हो उसे जान लो उन्माद सुरा आदि का भी होता है परन्तु सुरा इस्लाम में वर्जित है और यह आदेश नमाज़ का प्रलय तक रहेगा अतः सुरा का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता अब देखना यह है कि सुकारा से तात्पर्य क्या है, नींद का अधिपत्य भी सुकारा है धन का उन्माद भी होता है ज्वानी व सुन्दरता का भी उन्माद होता है गोत्र वंश का भी उन्माद होता है शासन की

اور اگر وہ لوگ اللہ پر اور روز آخرت پر ایمان لاتے اور جو کچھ اللہ نے ان کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرتے تو ان کا کیا نقصان ہوتا اور اللہ ان کو خوب جانتا ہے (۳۹)

اللہ ذرہ بھر بھی ظلم نہیں کرتا اگر کسی نے ایک نیکی کی ہے تو وہ اسے زیادہ کرتا ہے اور اپنی طرف سے اس کو بہت بڑا اجر دے گا (۴۰) [۱۰:۲۴، ۶:۱۶۰]

پھر (قیامت کے دن) جب ہم ہر امت میں سے (اس زمانہ کا) گواہ لائیں گے، اور (اے رسولؐ) آپ کو ہم ان (آپ کے زمانے کے لوگوں) پر گواہ لائیں گے (کہ اللہ کا نازل کیا ہوا ضابطہ حیات سب لوگوں تک پہنچ چکا تھا) (۴۱) [۵:۶۷]

اس (قیامت کے) دن وہ لوگ جنہوں نے انکار کیا، یعنی اس ضابطے کی نافرمانی کی، جو اللہ نے اپنے رسول کے ذریعہ نازل فرمایا ہے وہ آرزو کریں گے کہ کاش ان پر زمین برابر ہو جائے کیونکہ وہ اس دن اللہ سے کوئی بھی چیز چھپا نہ سکیں گے (سب کچھ کھل کر عیاں ہو جائے گا) (۴۲)

نوٹ:۔ رسول وحی کی اتباع کرتے ہیں (۶:۵۰، ۱۰:۱۵، ۴۶:۹) اس لئے رسول کی اتباع قرآن کی اتباع ہے ۳۶:۶۵ سب باتیں ظاہر ہو جائیں گی۔

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو جب تم سکرای مدہوش ہو تو صلوٰۃ کے قریب نہ جاؤ (اس لئے تم ہر فخر و غرور نسلی برتری کو چھوڑ کر) صلوٰۃ میں شامل ہو جاؤ ایسی حالت میں جو تم صلوٰۃ میں پڑھ رہے ہو وہ تمہارے ذہن میں آ رہا ہے اور اس کے مطابق نماز سے باہر آ کر عمل کرو گے (جس سے تم پر رحم کیا جائے گا) اور اسی طرح جنابت کی حالت میں بھی یہاں تک کہ غسل کر لو (جب غسل کر لو تب نماز پڑھو لیکن اگر تم کسی بغیر رکے تیز سفر پر ہو اور کسی وجہ سے غسل واجب ہو جائے اور غسل کرنے اور تیمم کرنے کا موقع نہ ہو تو نماز وقت پڑھو۔ کیونکہ نماز اپنے مقرر وقت کے ساتھ فرض ہے (۴:۱۰۳) اور کبھی ایسا ہو کہ تم بیمار ہو یا سفر میں ہو یا تم میں سے کسی کو احتلام ہو گیا ہو یعنی رساؤ آ گیا ہو یا تم نے عورتوں سے مباشرت کی ہو پھر پانی نہ ملے تو پاک مٹی سے کام لو اور اس سے اپنے چہروں اور ہاتھوں پر مسح کر لو بے شک اللہ نرمی سے کام لینے والا اور بخشش کرنے والا ہے (۴۳) [۵:۶، ۲۲:۲، ۱۵:۷۲]

نوٹ:۔ آیت ۴۳ کا مفہوم لکھنے میں رائج ترجموں سے کچھ ہٹ کر طریقہ اختیار کیا گیا ہے؟ آیت میں درج چند لفظ ہیں ان پر کچھ لکھا جا رہا ہے ہو سکتا ہے اس سے آیت کا مفہوم صاف ہو جائے

(۱) سکرای۔ اللہ فرماتا ہے کہ نشے سکرای کی حالت میں نماز کے قریب نہ جاؤ؟ اس لئے کہ جو کچھ تم زبان سے پڑھ رہے ہو اسے جان لو نشہ شراب وغیرہ کا بھی ہوتا ہے مگر شراب اسلام میں حرام ہے اور یہ حکم نماز کا قیامت تک رہے گا۔ اس لئے شراب کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ سکرای سے مراد کیا ہے۔ نیند کا غلبہ بھی سکرای ہے۔ دولت کا نشہ بھی ہوتا ہے جوانی و خوبصورتی کا بھی نشہ ہوتا

शक्ति का भी उन्माद होता है कोई कठोर तम शारिरिक कष्ट कोई मानसिक कलेश और किसी तीव्र भावना के कारण भी उन्माद होता है अतः ईश्वर का आदेश है कि तुम नमाज़ के लिए इन सब उन्मादों से दूर होकर आओ इस का अर्थ यह हुआ कि जब व्यक्ति के मन में ऐसी कोई बात न होगी तो वह विनीत बन कर नमाज़ में खड़ा होगा, उस पर नमाज़ से बाहर आकर व्यवहार करेगा तो ईश्वर उस पर दया करेगा, और यदि उस नमाज़ी ने बाहर आकर आयत के अनुसार कर्म न किया तो वह उन्माद में था,

सुकारा का यह अर्थ निकालना अनुचित है जब उन्माद दूर हो जाएगा तब नमाज़ के निकट आओ यदि यही अर्थ हो तो बहुत से व्यक्ति हर समय ही उन्माद की स्थिति में रहे ओर औचित्य प्रस्तुत करें कि हम ईश्वर के आदेश के अनुसार नमाज़ नही पढ़ रहे, परन्तु यह बात कदापि नही है अपितु हर प्रकार के मानसिक विकार को छोड़ देने की बात है, ईश्वर बता रहा है कि जिस व्यवस्था में तुम सम्मिलित हो उसमें गर्व व अभिमान से कार्य नही चलेगा, अपितु मेरी आज्ञाकारी से काम चलेगा, और वह है कुरआन पर कर्म करना जो इसमें अंकित है उसको जानो और नमाज़ में कुरआन ही पढ़ा जाता है एक आयत है जिसमें प्रलय का उल्लेख है उसमें आदमियों को ऐसे बताया है जैसे सुकारा,

(22:2) जिस दिन तुम उसे देखोगे स्थिति यह होगी कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे से अचेत हो जाएगी, हर गर्भवती का गर्भ गिर जाएगा और लोग तुम को सुकारा चकित दिखाई देंगे, यद्यपि वह उन्माद में न होंगे अपितु ईश्व की यातना ही कुछ ऐसी कठोर होगी,

(15:72) तेरी सौगंध ऐ नबी! उस समय उन पर एक उन्माद सा (सुकारा) चढ़ा हुआ था जिसमें वह आपे से बाहर हुए जाते थे,

इन दो आयतों में सुकारा का शब्द है यहां पर इनका अर्थ पढ़ने के बाद बुद्धि में आ जाना चाहिए सुकारा का अर्थ क्या है वह उन्माद नही जो शराब का होता है, अपितु उन्मत्त होना है किसी दूसरे उन्माद के कारण से, जैसे जब कोई आदमी अपनी शक्ति के कारण किसी को कुछ नही समझता और मनमानी करता है उस पर किसी शिक्षा का प्रभाव नही होता तो उसको कहा जाता है कि यह अपनी शक्ति के उन्माद में उन्मत्त है आकाश को थूक रहा है यद्यपि वह सुरा के उन्माद में नही होता,

(2) आबिरीः- शब्द आबिरी से अर्थ सब अनुवादों में सामान्य यात्रा ली है या मस्जिद से गमन, जबकि सामान्य यात्रा के लिए आयत में कुछ शब्दों के बाद ही (अलासफरिन) आया है अतः आबिरी से तात्पर्य सामान्य यात्रा नही है, अपितु बिना रुके वह तीव्र यात्रा है जिसमें और लोग भी सम्मिलित हों और केवल स्टेण्ड पर ही रुके जैसे आजकल वायु यान या शत्रु का भय हो तो ऐसी स्थिति में भी तीव्रता के साथ घोड़े या किसी दूसरी सवारी को दौड़ाना पड़ता है, कभी पैदल भी यह स्थिति आ सकती है और आज कल मोटर गाड़ियां है उनमें भी यात्रा होती है, यदि तयम्मुम या स्नान के लिए आदमी रुकता है तो उसे शत्रु पकड़ लेगा, पस ऐसी स्थिति में जो तीव्र यात्रा है उसके लिए शब्द आबिरी आया है न कि सामान्य यात्रा के लिए

(3) अलगाइतः- इस शब्द का अनुवाद लगभग हर आलिम ने मल-मूत्र से निवृत्त किया है, यदि यह मान लिया जाए जैसा कि माना जाता है तो विवशता के अतिरिक्त आदमी जब भी मल-मूत्र त्यागने को जाएगा

ہے حسب ونسبت کا بھی نشہ ہوتا ہے حکومت کی طاقت کا بھی نشہ ہوتا ہے. کوئی شدید جسمانی تکلیف کوئی ذہنی کوفت اور کسی شدید جذبہ کی وجہ سے بھی نشہ ہوتا ہے اس لئے اللہ فرماتا ہے کہ تم نماز کے لئے ان سب نشوں سے دور ہو کر آؤ اس کا مطلب یہ ہوا کہ جب آدمی کے دماغ میں ایسی کوئی بات نہ ہوگی تو وہ عاجز بن کر نماز میں کھڑا ہوگا اور جو نماز میں پڑھا جا رہا ہوگا. اس پر نماز سے باہر آ کر عمل کرے گا تو اللہ اس پر رحم کرے گا. اور اگر اس نمازی نے باہر آ کر آیت کے مطابق عمل نہ کیا تو وہ نشے میں تھا.

سکرای کا یہ مطلب نکالنا غلط ہے کہ جب نشہ دور ہو جائے تب نماز کے قریب آؤ. اگر یہی مطلب ہو تو بہت سے آدمی ہر وقت ہی نشہ کی حالت میں رہیں اور جواز پیش کریں کہ ہم اللہ کے حکم کے مطابق نماز نہیں پڑھ رہے، مگر یہ بات ہرگز نہیں ہے بلکہ ہر طرح کے دماغی فتور کو چھوڑ دینے کی بات ہے. اللہ بتا رہا ہے کہ جس نظام میں تم داخل ہو اس میں فخر وغرور سے کام نہیں چلے گا. بلکہ میری فرمانبرداری سے کام چلے گا. اور وہ ہے قرآن پر عمل کرنا جو اس میں درج ہے اس کو جانو اور نماز میں قرآن ہی پڑھا جاتا ہے، ایک آیت ہے جس میں حشر کا ذکر ہے اس میں آدمیوں کو ایسے بتایا ہے جیسے سکارٰی.

(۲:۲۲) جس روز تم اُسے دیکھو گے حال یہ ہوگا کہ ہر دودھ پلانے والی اپنے دودھ پیتے بچے سے غافل ہو جائے گی. ہر حاملہ کا حمل گر جائے گا اور لوگ تم کو مدہوش سکرای نظر آئیں گے. حالانکہ وہ نشے میں نہ ہوں گے بلکہ اللہ کا عذاب ہی ایسا سخت ہوگا.

(۱۵:۷۲) تیری جان کی قسم اے نبی اس وقت ان پر ایک نشہ سا (سکرائی) چڑھا ہوا تھا جس میں وہ آپے سے باہر ہوئے جاتے تھے.

ان دو آیتوں میں سکرای کا لفظ ہے یہاں پر ان کا مطلب پڑھنے کے بعد عقل میں آ جانا چاہیے سکرای کا مطلب کیا ہے. وہ نشہ نہیں جو شراب کا ہوتا ہے بلکہ مدہوش ہونا ہے کسی دوسرے نشے کی وجہ سے. جیسے جب کوئی آدمی اپنی طاقت کی وجہ سے کسی کو کچھ نہیں سمجھتا اور من مانی کرتا ہے. اس پر کسی نصیحت کا اثر بھی نہیں ہوتا تو اس کو کہا جاتا ہے کہ یہ اپنی طاقت کے نشے میں مدہوش ہے آسمان کو تھوک رہا ہے حالانکہ وہ شراب کے نشے میں نہیں ہوتا.

(۲) عابری:۔ لفظ عابری سے مراد سب ترجموں میں عام سفر لیا ہے یا مسجد سے گزرنا، جب کہ عام سفر کے لئے آیت میں چند لفظوں کے بعد ہی (علی سفر) آیا ہے اس لئے عابری سے مراد عام سفر نہیں ہے بلکہ بغیر ٹھہرے وہ تیز سفر ہے جس میں اور لوگ بھی شامل ہوں. اور سوائے اسٹینڈ کے اور کہیں نہ رکیں. جیسے آج کل ہوائی جہاز یا دشمن کا خوف ہو تو ایسی حالت میں بھی بہت تیزی کے ساتھ گھوڑے یا کسی دوسری سواری کو دوڑانا پڑتا ہے، کبھی پیدل بھی یہ حالت آ سکتی ہے اور آج کل موٹر گاڑیاں ہیں ان میں بھی سفر ہوتا ہے اگر تیمم یا غسل کے لئے آدمی رکتا ہے تو اسے دشمن پکڑ لے گا پس ایسی حالت میں جو تیز سفر ہے اس کے لئے لفظ عابری آیا ہے نہ کہ عام سفر کے لئے.

(۳) الغائط:۔ اس لفظ کا ترجمہ تقریباً ہر عالم نے رفع حاجت کیا ہے، اگر یہ مان لیا جائے جیسا کہ مانا جاتا ہے تو مجبوری کے علاوہ آدمی جب بھی رفع حاجت کو

उसके बाद तुरन्त ही स्पर्श स्त्री अर्थात मैथुन की भांति स्नान करना पड़ेगा परन्तु कोई नही करता, तो क्या हर आदमी हर समय अपवित्र रहता है? और वह बिना स्नान के ही नमाज़ ईश्वरोपासना कर रहा है? परन्तु ऐसा नही है, आयत को ध्यान पूर्वक देखने के बाद इस शब्द का अर्थ स्वप्न दोष आता है, क्योंकि स्वप्न दोष के बाद व्यक्ति स्नान करता है.

और स्वप्न दोष की स्थिति में अर्थात स्वप्न में व्यक्ति जो मैथुन में होता है उससे व्यक्ति उन्मत्त होता है मानो उसने डुबकी गोता लगाया है जैसे बोल-चाल में कहते है कि जवानी की मादकता में उन्मत्त है, जवानी की उन्माद में डूबा हुआ है.

चूंकिजब जागृति की स्थिति में आदमी मैथुन करता है तो समय आने पर मैथुन से तुरन्त अलग हो सकता है परन्तु स्वप्न की स्थिति में जब वह मैथुन करता है तो सम्भवतः अलग होना कठिन होता है और स्वप्न दोष हो जाता है क्योंकि वह उन्मत्ता में डूबा होता है और डुबकी गोता लगाता है और रिसाव हो जाता है जैसे गहराई वाली नर्म भूमि से रिसाव होता है और यह स्थिति पुरुष व स्त्री दोनों को प्रस्तुत होती है. शब्द कोष में अलगाइत का एक अर्थ डुबकी गोता लगाना या गोता देना भी अंकित है और नीची भूमि जिसमें अधिक पानी हो तो वहां रिसाव भी होता रहता है जो नर्म होती है इस प्रकाश में शब्दों का अर्थ लेना चाहिए

इस आयत के विषय में जो अवतरित होने का कारण लिखा है कि लोग मदिरा पीकर नमाज़ पढ़ते थे और शब्द मिथ्या अदा हो जाते थे यह मिथ्या है इस पर चिन्तन होना अनिवार्य है, इस्लाम में वह प्रविष्ट होता था जो पूरी प्रकार इस्लाम पर कार्य करने को तैयार होता था और मुहम्मद स0 उसको इस्लाम के आदेश बताते थे, ऐसे ही नही कि केवल कलमा पढ़ा दिया और छोड़ दिया और वह जैसे पहले करता था करता रहा और फिर उन मुसलमानों की स्थिति पर तो विचार करो कि वह क्या थे वह वह थे जिनसे ईश्वर प्रसन्न हो गया था अतः वह इस्लाम में जब प्रविष्ट होते थे जब उसको जान लेते थे और उनके मन इस पर व्यवहार करने को तैयार होते थे ऐसे ही नही, अतः अवतरित होने का कारण विचारणीय है.

(ऐ श्रोता) क्या तूने उन लोगों की ओर नही देखा? जिन्हें पुस्तक का कुछ अंश दिया गया है वह पथ भ्रष्टता क्रय करते है, और चाहते है कि तुम भी मार्ग से भटक जाओ (44)

और ईश्वर तुम्हारे शत्रुओं से अधिक अवगत है और ईश्वर ही प्रयाप्त कार्य बनाने वाला और प्रयाप्त सहायक है (45)

अर्थात यहूद जिनकी स्थिति यह है कि बातों को ठीक स्थान से हटा देते है, और कहेंगे हमने सुन लिया और नही माना, और सुनिये इसके बिना कि तू सुना जाए और ज़बान को तोड़ मरोड़ कर और धर्म में व्यंग्य के मार्ग से राईना कहते है और यदि (यूं) कहते कि हमने सुन लिया, और मान लिया और सुनिए और हम पर दृष्टि करो तो अच्छा होता, और बात भी बहुत ठीक होती परन्तु ईश्वर ने उनके इनकार के कारण उन पर धिक्कार कर रखी है तो वह कुछ थोड़े ही विश्वास लाएँगे (46)

ऐ वह लोगो! जो पुस्तक दिए गए हो इस पुस्तक पर भी विश्वास लाओ जो हमने अवतरित की है (मुहम्मद स0 पर) प्रमाणित करने वाली है उस (बिना अपभ्रंश पुस्तक की) जो तुम्हारे पास थी, उस

جائے گا اس کے بعد فوراً ہی لمس عورت کی طرح غسل کرنا پڑے گا مگر کوئی نہیں کرتا تو کیا ہر آدمی ہر وقت ناپاک رہتا ہے؟ اور وہ بغیر غسل کے ہی نماز پڑھ رہا ہے؟ مگر ایسا نہیں ہے، آیت کو غور سے دیکھنے کے بعد اس لفظ کا مطلب احتلام آتا ہے کیونکہ احتلام کے بعد آدمی غسل کرتا ہے۔

اور احتلام کی حالت میں یعنی خواب میں آدمی جو مباشرت میں ہوتا ہے اس سے آدمی مدہوش ہوتا ہے گویا اس نے غوطہ لگایا ہے. جیسے بول چال میں کہتے ہیں کہ یہ جوانی کی مستی میں مدہوش ہے، جوانی کی مستی میں ڈوبا ہوا ہے.

چونکہ جب آدمی بیداری کی حالت میں مباشرت کرتا ہے تو وقت ضرورت پر مباشرت سے فوراً الگ ہوسکتا ہے. مگر حالت خواب میں جب وہ مباشرت کرتا ہے تو غالباً الگ ہونا مشکل ہوتا ہے اور احتلام ہو جاتا ہے. کیونکہ وہ مدہوشی میں غرق ہو جاتا ہے اور غوطہ لگاتا ہے اور ریساؤ ہو جاتا ہے. جیسے نشیب والی نرم زمین سے ریساؤ ہوتا ہے اور یہ حالت مرد عورت دونوں کو پیش آتی ہے. لغت میں الغائط کا ایک مطلب غوطہ لگانا یا غوطہ دینا بھی درج ہے اور پست زمین جس میں زیادہ پانی ہو تو وہاں ریساؤ بھی ہوتا رہتا ہے جو نرم ہوتی ہے اس روشنی میں لفظوں کا مطلب لینا چاہیے.

اس آیت کے بارے میں جو شان نزول لکھا ہے کہ لوگ شراب پی کر نماز پڑھتے تھے اور الفاظ غلط ادا ہو جاتے تھے یہ غلط ہے. اس پر غور کرنا ضروری ہے اسلام میں وہ داخل ہوتا تھا جو پوری طرح اسلام پر عمل کرنے پر تیار رہتا تھا اور محمدؐ اس کو اسلام کے احکام بتاتے تھے ایسے ہی نہیں کہ صرف کلمہ پڑھا دیا اور چھوڑ دیا اور وہ جیسے پہلے کرتا تھا کرتا رہا اور پھر ان مسلمانوں کی حالت پر بھی تو غور کرو کہ وہ کیا تھے. وہ وہ تھے جن سے اللہ راضی ہوگیا تھا اس لئے وہ اسلام میں جب داخل ہوتے تھے جب اس کو جان لیتے تھے اور ان کے ذہن اس پر عمل کرنے کو تیار ہوتے تھے ایسے ہی نہیں اس لئے شان نزول محل نظر ہے.

(اے مخاطب) کیا تو نے انہیں نہیں دیکھا؟ جنہیں کتاب کا کچھ حصہ دیا گیا ہے وہ گمراہی خریدتے ہیں، اور چاہتے ہیں کہ تم بھی راہ سے بھٹک جاؤ (۴۴)

اور اللہ تمہارے دشمنوں سے خوب واقف ہے اور اللہ ہی کافی کارساز ہے اور کافی مددگار ہے (۴۵)

یعنی یہود جن کا حال یہ ہے کہ باتوں کو اصل مقام و محل سے ہٹا دیتے ہیں، اور کہیں گے ہم نے سن لیا اور نہیں مانا. اور سنیے اس کے بغیر کہ تو سنا جائے اور زبان کو توڑ مروڑ کر اور دین میں طعن کی راہ سے راعنا کہتے ہیں اور اگر (یوں) کہتے کہ ہم نے سن لیا، اور مان لیا اور سنئے اور ہم پر نظر کرو تو بہتر ہوتا. اور بات بھی بہت درست ہوتی لیکن اللہ نے ان کے کفر کے سبب ان پر لعنت کر رکھی ہے تو وہ کچھ تھوڑے ہی ایمان لائیں گے (۴۶)

اے وہ لوگو! جو کتاب دیئے گئے ہو اس کتاب پر بھی ایمان لاؤ جو ہم نے نازل کی ہے (محمدؐ پر) تصدیق کرنے والی ہے اس (غیر محرف کتاب کی) جو تمہارے پاس تھی اس

समय से पहले कि हम मुख बिगाड़कर पीछे फेर दें अर्थात अपमानित हो जाएं या उन पर हमारी ओर से फटकार पड़े, जैसी सबत वालों पर पड़ी थी और ईश्वर का आदेश पूरा लागू होकर रहता है (47) {2:65, 3:72, 4:154}

وقت سے پہلے کہ ہم چہرے مسخ کرکے پیچھے پھیر دیں یعنی بے عزت ہوجاؤ یا ان پر ہماری طرف سے پھٹکار پڑے جیسی سبت والوں پر پڑی تھی اور اللہ کا حکم نافذ ہوکر رہتا ہے (۴۷) [۲:۶۵، ۳:۷۲، ۴:۱۵۴]

निःसन्देह ईश्वर क्षमा नही करेगा यह कि अनेकेश्वर वाद किया जाए साथ उसके (उसके अस्तित्व गुण या आदेश में 18:26 अनेकेश्वर वाद बहुत बड़ा अन्याय है 31:13) और वह क्षमा करेगा उसके लिए जो (पश्चाताप करके भविष्य के लिए अपना सुधार करके) स्वयं चाहता है वास्तविकता यह है कि जो कोई ईश्वर के साथ अनेकेश्वर वाद करेगा तो निःसन्देह वह ईश्वर के लिए मिथ्या रोप बांधकर बहुत बड़ा पाप करता है (48) {22:3,4:72,6:89,6:22,7:70;7:172;11:9;13:33;16:27, 28;17:72से77;24:55;26:210से214;39:8,64से67;40:84,85;40:69 से76;98:5,6;23:84से92;29:61से66}

नोट- इन्सान जिनको ईश्वर के अतिरिक्त अपना अभिभावक बनाता है उनको तो ईश्वर ने कोई अधिकार नहीं दिया सब अधिकार ईश्वर के पास हैं 45:13

بے شک اللہ نہیں معاف کرے گا یہ کہ شرک کیا جائے ساتھ اس کے (اس کی ذات صفات یا حکم میں۔ ۱۸:۲۶۔ شرک بہت بڑا ظلم ہے۔ ۳۱:۱۳۔) اور وہ معاف کرے گا اس کے لئے جو (توبہ کرکے آئندہ کے لئے اپنی اصلاح کرکے) خود چاہتا ہے حقیقت یہ ہے کہ جو کوئی اللہ کے ساتھ شرک کرے گا تو بے شک وہ اللہ کے ذمہ افترا باندھ کر بہت بڑا گناہ کرتا ہے (۴۸) [۲۲:۳، ۴:۷۲، ۶:۸۹؛ ۶:۲۲؛ ۷:۷۰؛ ۷:۱۷۲؛ ۱۱:۹؛ ۱۳:۳۳؛ ۱۶:۲۷، ۲۸؛ ۱۷:۷۲ سے ۷۷؛ ۲۴:۵۵؛ ۲۶:۲۱۰ سے ۲۱۴؛ ۳۹:۸، ۶۴ سے ۶۷؛ ۴۰:۸۴، ۸۵؛ ۴۰:۶۹ سے ۷۶؛ ۹۸:۵، ۶؛ ۲۳:۸۴ سے ۹۲؛ ۲۹:۶۱ سے ۶۶]

نوٹ:۔ انسان جن کو اللہ کے علاوہ اپنا کارساز بناتا ہے ان کو تو اللہ نے کوئی اختیار نہیں دیا سب اختیار اللہ کے پاس ہیں۔ ۴۵:۱۳۔

(ऐ रसूल) क्या आपने उन लोगों पर विचार नही किया जो अपने आपको पवित्र ठहराते हैं अपितु ईश्वर उन्हें पवित्र ठहराता है जो स्वयं पवित्र होना चाहे और सत्य यह है कि उन पर कण भर भी अत्याचार नही किया जाएगा (49)

(اے رسول!) کیا آپ نے ان لوگوں پر غور نہیں کیا جو اپنے آپ کو پاکیزہ ٹھہراتے ہیں بلکہ اللہ انہیں پاک ٹھہراتا ہے جو خود پاک ہونا چاہے اور حقیقت یہ ہے کہ ان پر ذرہ بھر بھی ظلم نہیں کیا جائے گا (۴۹)

देखो! वह ईश्वर पर कैसा खुला लांछना बांध रहे हैं उनके स्पष्ट पापी होने का यह एक प्रमाण प्रयाप्त है (कि वह अच्छे कर्म से हटकर अपने आपको एक मोक्ष दी हुई जाति समझते हैं) (50)

دیکھو! وہ لوگ اللہ پر کیسا صریح بہتان باندھ رہے ہیں ان کے کھلے ہوئے گناہ گار ہونے کی یہی دلیل کافی ہے (کہ وہ اچھے عمل سے ہٹ کر اپنے آپ کو ایک نجات یافتہ قوم سمجھتے ہیں) (۵۰)

क्या आपने उन लोगों को नही देखा जिन्हें पुस्तक से अंश दिया गया है वह विश्वास लाते हैं मूर्तियों और उद्दण्ड शक्तियों पर जो ईश्वर की सीमाएं तोड़ने वाले हैं और वह उन लोगों के सम्बन्ध में जिन्होंने ईश्वर के नियमों का इनकार किया है कहते हैं कि यह लोग उनसे जो विश्वास लाए हैं अधिक सीधे मार्ग पर हैं (51)

کیا آپ نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جنہیں کتاب سے حصہ دیا گیا ہے وہ ایمان لاتے ہیں بتوں اور سرکش طاقتوں پر جو اللہ کی حدیں توڑنے والے ہیں۔ اور وہ ان لوگوں کے متعلق جنہوں نے ضابطہ الٰہی کا انکار کیا ہے کہتے ہیں کہ یہ لوگ ان سے جو ایمان لائے ہیں زیادہ سیدھے راستے پر ہیں (۵۱)

वही वह लोग हैं और जिन पर ईश्वर की फटकार पड़ी उसका सहायक तुम कहीं न पाओगे (52)

وہی وہ لوگ ہیں جن پر اللہ کی پھٹکار پڑی ہے اور جس پر اللہ کی پھٹکار پڑی اس کا مددگار تم کہیں نہ پاؤ گے (۵۲)

क्या उनको राज्य में से कुछ अंश मिल गया है यदि ऐसा हो तो फिर उस समय वह न देंगे लोगों को तिल भर भी (53)

کیا ان کو حکومت میں سے کچھ حصہ مل گیا ہے۔ اگر ایسا ہو تو پھر اس وقت وہ نہ دیں گے لوگوں کو تل بھر بھی (۵۳)

फिर क्या वह दूसरों से इसलिए द्वेष करते हैं कि ईश्वर ने उन्हें अपने कृपा दया से दया की है (वह नही चाहते कि जिस प्रसाद से वह वंचित कर दिए गए हैं वह दूसरों को मिले) यदि उनका यह विचार है तो उनको ज्ञात होना चाहिए कि हमने सन्तान इब्राहीम को पुस्तक और युक्ति और बड़ा देश दिया (54)

پھر کیا وہ دوسروں سے اس لئے حسد کرتے ہیں کہ اللہ نے انہیں اپنے فضل سے نواز دیا ہے (وہ نہیں چاہتے کہ جس نعمت سے وہ محروم کردئے گئے ہیں وہ دوسروں کو ملے) اگر ان کا یہ خیال ہے تو ان کو معلوم ہونا چاہیے کہ ہم نے اولاد ابراہیم کو کتاب اور حکمت اور ملک عظیم عطا کیا (۵۴)

अतः कोई इस (पुस्तक और मुहम्मद स0) पर श्रृद्धा लाया और किसी ने इससे विमुखता की और विमुखता करने वालों के लिए नर्क की अग्नि प्रयाप्त है (55) {33:26}

پس کوئی اس (کتاب اور محمدؐ) پر ایمان لایا اور کسی نے اس سے روگردانی کی اور روگردانی کرنے والوں کے لئے جہنم کی آگ کافی ہے (۵۵) [۳۳:۲۶]

जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया उनको हम निकट ही अग्नि में प्रविष्ट करेंगे जब उनकी त्वचा पक जाएगी तो हम और खालें बदल

جن لوگوں نے ہماری آیتوں کا انکار کیا ان کو ہم عنقریب آگ میں داخل کریں گے۔ جب ان کی کھالیں پک جائیں گیں تو ہم اور کھالیں بدل دیں گے تاکہ عذاب

देंगे ताकि पीड़ा चखते रहें. वह सब पर अधिपति है और उसका हर कार्य युक्ति और विधि के साथ होता है (56) (यह दण्ड पुस्तक वालों के पापियों की है)

और जो आस्था लाए और अच्छे कर्म करते रहे उनको हम ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. वह उनमें सदैव रहेंगे वहां उनके लिए पवित्र साथी होंगे और उनको हम अपनी कृपा के साये में प्रविष्ट करेंगे (57)

ईश्वर तुम को आदेश देता है कि धरोहर वालों की धरोहर (और उनके अधिकार) उनको समर्पण कर दिया करो और जब लोगों में न्याय करने लगो तो न्याय से निर्णय करो (जब न्यायाधीश बनो और न्यायाधीश के समर्पित सेवा में नियुक्तियां भी होती हैं तो उस व्यक्ति को नियुक्त करो जो अधिकारी हो जिसका अधिकार न हो उसकी नियुक्ति न करो अत्याचार से बचो ईश्वर पापी को पसन्द नही करता ईश्वर तुम्हें बहुत अच्छा उपदेश देता है. निःसन्देह ईश्वर सुनता और देखता है (58)

मुसलमानो! ईश्वर की आज्ञापलन करो रसूल के द्वारा और ईशदूत की आज्ञापालन करो (जैसा ईश्वर ने आदेश दिया है) और जो तुम में शासक हैं उनकी भी और यदि किसी बात में तुम में मतभेद हो जाए तो उसको लौटा दो ईश्वर और ईशदूत की ओर यदि ईश्वर और परलोक पर विश्वास रखते हो यह बहुत अच्छा है और इसका फल भी अच्छा है (कि आपसी झगड़ो से बच जाओगे) (59) {4:83, 49:4}

नोट- समस्या शासक या प्रतिनिधित्व भी एक मतभेद वाली समस्या है और इस समस्या से जितनी हानि मुस्लिम जगत को पहुंची है मेरे विचार से और से नही क्योंकि एक दल प्रतिनिधित्व का अधिकार मुहम्मद स० के बाद केवल अली र० और उनकी सन्तान का मानता है और यह हो न सका, तो हर काल में झगड़ा होता रहा और अब भी यह एक बड़ा विवाद है जिससे ईश्वर रुष्ट है.

कथनानुसार शियाओं के शासन का अधिकार केवल और केवल अली और उनकी संतान का है और सिद्ध करते हैं कि मुहम्मद स० ने कहा कि ऐ मुसलमानो! आज्ञापालन करो ईश्वर की और ईशदूत की और शासक की तो एक सहाबी ने निवेदन किया कि ऐ ईशदूत हम ईश्वर को जान गए और रसूल को जान गए, शासक (उलिल अमर) को न जाने तो मुहम्मद स० ने कहा कि शासक (अमीर) से तात्पर्य मेरे बाद मेरे बारा इमाम शासक हैं श्री अली र० से आरम्भ होकर इमाम मेहदी पर समाप्त होते हैं.

दूसरा कथन यह है कि मुहम्मद स० ने खुम्मे गदीर में ईश्वर के आदेश से बहुत बड़ी संख्या के सामने अन्तिम हज की वापसी पर अली को अपना उत्तराधिकारी और ग्रहीता नियुक्त किया था और सारे सहाबा से अली के हाथ पर प्रतिज्ञा ली थी कि मेरे बाद अली र० ईश्वर के आदेश से तुम्हारे शासक होंगे जिनको ईश्वर ने नियुक्त किया है जो इस आदेश का उल्लंघन करेगा वह पापी होगा. इस जनसमूह में पहले तीनों शासक भी थे, अबूबकर, उमर व उस्मान र०.

देखो कितना कठिन प्रसंग ईश्वर ने अपने रसूल को आदेश देकर समाधान कर दिया इससे यह सिद्ध हुआ कि ईशदूतों की भांति ईश्वर अपने अग्रगण्यों को भी नियुक्त करता है, जब नायक भी ईश्वर ने नियुक्त कर दिए तो उनकी आज्ञापलन भी ईश्वर और रसूल की

چکھتے رہیں. وہ سب پر غالب ہے اور اس کا ہر کام حکمت اور مصلحت کے ساتھ ہوتا ہے (۵۶) [یہ سزا اہل کتاب کے منکروں کی ہے]

اور جو ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کو ہم ایسے باغوں میں داخل کریں گے جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ ہمیشہ رہیں گے وہاں ان کے لئے پاک صاف ساتھی ہوں گے اور ان کو ہم اپنی رحمت کے سایہ میں داخل کریں گے (۵۷)

اللہ تم کو حکم دیتا ہے کہ امانت والوں کی امانت (اور ان کے حق) ان کے حوالے کر دیا کرو اور جب لوگوں میں فیصلہ کرنے لگو تو انصاف سے فیصلہ کرو (جب قاضی بنو اور قاضی کے سپرد ملازمتوں میں تقرر بھی ہوتے ہیں تو اس آدمی کا تقرر کرو جو اہل ہو غیر اہل کا تقرر نہ کرو ظلم سے بچو اللہ ظلم کو پسند نہیں کرتا) اللہ تمہیں بہت اچھی نصیحت کرتا ہے بے شک اللہ سنتا اور دیکھتا ہے (۵۸)

مسلمانو! اللہ کی اطاعت کرو رسول کے ذریعہ اور رسول کی اطاعت کرو (جیسا اللہ نے حکم دیا ہے) اور جو تم میں صاحب حکومت ہیں ان کی بھی. اور اگر کسی بات میں تم میں اختلاف ہو جائے تو اس کو واپس کرو اللہ اور رسول کی طرف، اگر اللہ اور روز آخرت پر ایمان رکھتے ہو یہ بہت اچھا ہے، اور اس کا انجام بھی اچھا ہے (کہ خانہ جنگی سے بچ جاؤ گے) (۵۹) [۴:۸۳، ۴۹:۶]

نوٹ: ۔ مسئلہ اوّلی الامر یا خلافت بھی ایک اختلافی مسئلہ ہے اور اس مسئلہ سے جتنا نقصان عالم اسلام کو پہنچا ہے میرے خیال سے اور سے نہیں. کیونکہ ایک گروہ خلافت کا حق محمدؐ کے بعد صرف علیؓ اور ان کی اولاد کا مانتا ہے اور یہ ہو نہ سکا تو ہر زمانہ میں جھگڑا ہوتا رہا اور اب بھی یہ ایک زبردست تنازعہ ہے جس نے امت مسلمہ کے ٹکڑے کر دیے ہیں جس سے اللہ ناراض ہے.

بقول شیعہ حضرات خلافت کا حق صرف اور صرف علیؓ اور اولاد علی کا ہے اور ثابت کرتے ہیں کہ محمدؐ نے فرمایا کہ اے مسلمانو! اطاعت کرو اللہ کی اور رسول کی اور اولی الامر کی. تو ایک صحابی نے عرض کیا کہ اے اللہ کے رسولؐ ہم اللہ اور رسول کو جان گئے اولی الامر کو نہ جانے تو محمدؐ نے کہا کہ اولی الامر سے مراد میرے بعد میرے بارہ امام ہیں جو حضرت علیؓ سے شروع ہو کر امام مہدی پر ختم ہوتے ہیں.

دوسری روایت یہ ہے کہ محمدؐ نے خم غدیر میں اللہ کے حکم سے بہت بڑی تعداد کے سامنے آخری حج کی واپسی پر علیؓ کو اپنا خلیفہ اور وصی مقرر کیا تھا اور سارے صحابہ سے علیؓ کے ہاتھ پر بیعت لی تھی کہ میرے بعد علیؓ اللہ کے حکم سے تمہارے امیر ہوں گے جن کو اللہ نے مقرر کیا ہے. جو اس حکم کی خلاف ورزی کرے گا وہ گنہگار ہوگا. اس مجمع میں پہلے تین خلفاء بھی تھے ابوبکرؓ، عمرؓ و عثمانؓ.

دیکھو کتنا مشکل مسئلہ اللہ نے اپنے رسول کو حکم دے کر حل کر دیا. اس سے یہ ثابت ہوا کہ رسولوں کی طرح اللہ اپنے اماموں کو بھی نامزد کرتا ہے. جب امام بھی اللہ نے مقرر کر دیے تو ان کی اطاعت بھی اللہ اور رسولوں کی طرح کرنی

भाँति करनी अनिवार्य है, परन्तु खेद, बाद को मुसलमानों ने ईश्वर और ईशदूत के आदेश को न माना (ईश्वर की शरण) और अपनी इच्छा से कार्य किया और अली र0 को शासन से वंचित कर दिया जो एक बड़ी घृणा वाली बात है, परन्तु क्या वास्तविकता भी यही है इस पर भी विचार करना अनिवार्य है वह यह कि जब ईश्वर किसी अपने भक्त को नियुक्त करता है तो उसकी आज्ञापालन अनिवार्य है वह किसी स्थिति में अवलंबित नहीं होती और न ही वह नेता जो नियुक्त किया हुआ है किसी विवाद में प्रतिवादी की स्थिति में ईश्वर और ईशदूत की विधायिका में पेश हो सकता है, क्योंकि वह अवोध हुआ, अपितु हर विवाद ईशदूत की विधायिका या ईशदूत के बाद इमामों की न्याय पालिका में प्रस्तुत होगा, और नेता ईश्वर के नियम के अनुसार इसका समाधान करेगा,

किन्तु इन कथनों के विपरीत ईश्वर की पुस्तक में पढ़ लिया जिसमें है कि ऐ आस्तिको! आज्ञापालन करो ईश्वर की और ईशदूत की और शासक (उलिल अमर) की जो तुम में से हो परन्तु विवाद की स्थिति में आज्ञापालन केवल ईश्वर और ईशदूत की शेष रहती है शासक की समाप्त हो जाती है, अपितु ऐसी स्थिति में शासक भी प्रतिवादी के मान से ईश्वर की विधायिका में जहां पर ईशदूत की प्रथा भी आदेशक होगी उपस्थित होगा, यदि शासक या अमीर को ईश्वर ने नियुक्त किया होता तो शासक की आज्ञापालन निलम्बित न होती, तो सिद्ध हुआ कि शासक को ईश्वर ने नियुक्त नहीं किया, ईश्वर ने केवल अपने ईशदूतों को ही नियुक्त किया है या एक राजा श्री तालूत का नाम मिलता है जिसको ईश्वर के आदेश से नियुक्त किया गया था, उसके अतिरिक्त और किसी इमाम या राजा को नियुक्त नहीं किया,

और विशेषतया मुहम्मद स0 के बाद किसी ईशदूत को भी नियुक्त नहीं किया इमाम या राजा का भी कोई प्रश्न नहीं,

इस आयत से शिया लोगों की रिवायत (कथन) मिथ्या हो जाते हैं जिनमें यह कहा जाता है कि ईश्वर ने अपने इमामों को नियुक्त किया है यदि ईश्वर नियुक्त करता तो अवश्य आदेश देता कि उलिल अमर अर्थात नायक की आज्ञापालन हर स्थिति में अनिवार्य है, जैसे ईश्वर और ईशदूत की, परन्तु ईश्वर ने शासक उलिल अमर की आज्ञापालन निलम्बित कर दी, विवाद की स्थिति में, अतः शासक को न ईश्वर ने नियुक्त किया और न ही ईश्वर के आदेश से मुहम्मद स0 ने जो नियुक्त करने को मानता है वह झूठ बोलता है उसको अपनी आस्था पर विचार करना चाहिए,

क्या तुम ने उन लोगों (की कपट पूर्ण गतिविधि) पर विचार नहीं किया जिनका दावा तो यह है कि वह इस पुस्तक पर आस्था रखते हैं जो तुम पर अवतरित हुई और उन सब पुस्तकों पर भी उनका इमान है जो तुम से पहले अवतरित की गई, किन्तु चाहते यह है कि अपने वाद (तुम्हारे अतिरिक्त) उद्दण्ड व्यक्तियों के सामने प्रस्तुत करें, यद्यपि उनको आदेश दिया जा चुका है कि उस (इस्लाम के शत्रु) का आदेश न माने (अपितु ईश्वर के रसूल का अनुकरण करें) और शैतान तो यह चाहता है कि यह भटक कर (सत्य मार्ग से) बहुत दूर जा पड़े (60)

और जब उनसे कहा जाएगा कि ईश्वर का आदेश मानो और ईशदूत के निर्णय को स्वीकार करो तो तुम उन कपटियों को देखोगे कि तुम से दूर ही रहना चाहेंगे (61)

फिर जब स्वयं उन्हीं की करतूतों से उन पर कोई संकट पड़ेगा तो उनकी दशा कैसी हो जाएगी उस समय वह तुम्हारे पास आएंगे और शपथ खाएंगे और कहेंगे (हमें आपके निर्णय से कब इनकार है)

ضروری ہے۔مگر افسوس بعد کو مسلمانوں نے اللہ اور رسول کے حکم کو نہ مانا (نعوذ) اور اپنی مرضی سے کام کیا اور علیؓ کو خلافت سے محروم کر دیا جو ایک بڑی کراہت والی بات ہے۔مگر کیا حقیقت بھی یہی ہے اس پر بھی غور کرنا ضروری ہے۔وہ یہ کہ جب اللہ کسی اپنے بندے کو مقرر کرتا ہے تو اس کی اطاعت ضروری ہے۔وہ کسی صورت میں معطل نہیں ہوتی اور نہ ہی وہ امام جو مقرر کیا ہوا ہے کسی تنازعہ میں فریق ثانی کی حیثیت سے اللہ اور رسول کے قانونی دربار میں پیش ہو سکتا ہے۔کیونکہ وہ معصوم ہوا۔بلکہ ہر تنازعہ رسول کے دربار یا رسول کے بعد اماموں کی عدالت میں پیش ہوگا۔اور وہ امام قانون الٰہی کے مطابق اس کا حل کرے گا۔

مگر ان روایتوں کے خلاف اللہ کی کتاب میں پڑھ لیا جس میں ہے کہ اے ایمان والو! اطاعت کرو اللہ کی اور رسول کی اور صاحب امر کی جو تم میں سے ہوں۔مگر تنازعہ کی صورت میں اطاعت صرف اللہ اور رسول کی باقی رہتی ہے۔صاحب امر کی ختم ہو جاتی ہے بلکہ ایسی صورت میں امیر بھی فریق ثانی کی حیثیت سے اللہ کے قانونی دربار میں جہاں پر رسول کی سنت بھی کارفرما ہوگی، حاضر ہوگا۔اگر امیر کو اللہ نے مقرر کیا ہوتا تو امیر کی اطاعت معطل نہ ہوتی۔تو ثابت ہوا کہ صاحب امر کو اللہ نے مقرر نہیں کیا۔اللہ نے صرف اپنے رسولوں کو ہی نامزد کیا ہے یا ایک بادشاہ حضرت طالوت کا نام ملتا ہے جس کو اللہ کے حکم سے مقرر کیا گیا تھا اس کے علاوہ اور کسی امام بادشاہ کو مقرر نہیں کیا۔

اور خاص طور سے محمدؐ کے بعد کسی نبی کو بھی مقرر نہیں کیا امام یا بادشاہ کا کوئی سوال نہیں۔

اس آیت سے شیعہ حضرات کی روایت باطل ہو جاتی ہیں جن میں یہ کہا جاتا ہے کہ اللہ نے اپنے اماموں کو مقرر کیا ہے اگر اللہ مقرر کرتا تو ضرور حکم دیتا کہ اولی الامر یعنی امام کی اطاعت ہر صورت میں ضروری ہے جیسے اللہ اور رسول کی مگر اللہ نے صاحب امر اولی الامر کی اطاعت معطل کر دی تنازعہ کی صورت میں اس لئے اولی امر کو نہ اللہ نے مقرر کیا اور نہ ہی اللہ کے حکم سے محمدؐ نے، جو مقرر کرنے کو مانتا ہے وہ جھوٹ بولتا ہے اس کو اپنے عقیدے پر غور کرنا چاہیے۔

کیا تم نے ان لوگوں (کی منافقانہ روش) پر نظر نہیں کی جن کا دعویٰ تو یہ ہے وہ اس کتاب پر ایمان رکھتے ہیں جو تم پر نازل ہوئی اور ان تمام کتابوں پر بھی ان کا ایمان ہے جو تم سے پہلے نازل کی گئیں۔لیکن چاہتے یہ ہیں کہ اپنے مقدمات (تمہارے بجائے) سرکش آدمیوں کے سامنے پیش کریں۔حالانکہ ان کو حکم دیا جا چکا ہے کہ اس (اسلام کے دشمن) کا حکم نہ مانیں (بلکہ اللہ کے رسول کی پیروی کریں) اور شیطان تو یہ چاہتا ہے کہ وہ بھٹک کر (راہ حق سے) بہت دور جا پڑیں (۶۰)

اور جب ان سے کہا جائے گا کہ اللہ کا حکم مانو اور رسول کے فیصلہ کو تسلیم کرو تو تم ان منافقوں کو دیکھو گے کہ تم سے دور ہی رہنا چاہیں گے (۶۱)

پھر جب خود انہیں کی کرتوتوں سے ان پر کوئی مصیبت پڑے گی تو ان کی حالت کیسی ہو جائے گی۔اس وقت وہ تمہارے پاس آئیں گے اور قسمیں کھائیں گے اور کہیں

हमने तो जो कुछ किया उसका उद्देश्य भलाई और पक्षों में मेल मिलाप कराना था (62)

उन लोगों के मनों में जो कुछ है ईश्वर उसको जानता है तुम उनकी बातों का कुछ ध्यान न करो और उन्हें उपदेश करो और उनसे ऐसी बातें कहो जो उनके हृदयों पर प्रभाव कर जाऐं (63)

और हमने जो रसूल भेजा है इसलिए भेजा है कि ईश्वर के विधान और आदेश के अनुसार उसका आदेश माना जाए और वह लोग जब अपने प्रति अत्याचार कर बैठें यदि तुम्हारे पास आऐं और ईश्वर से क्षमा मांगे और ईशदूत भी उनके लिए क्षमा मांगे तो ईश्वर को क्षमा करने वाला महरबान पाऐंगे (64) {24:47,53}

(अतः ऐ रसूल!) तुम्हारे पालनहार की साक्ष्य है कि वह लोग जब तक अपने विवादों में तुम्हें न्यायाधीश न बनाऐं और जो न्याय तुम कर दो उससे अपने दिल में तंग न हों अपितु उसको प्रसन्नता से मान लें तब तक वह आस्तिक नहीं होंगे (65) {17:60, 33:33,52, शजरा 2:54, 4:29, 20:50}

और यदि यह कि हम उन पर अनिवार्य कर दें कि अपने व्यक्तियों के साथ लड़ो (जो मुसलमानों के शत्रु हैं) या सत्य मार्ग में अपना घर छोड़कर देश त्याग कर जाओ उनमें चन्द आदमियों के अतिरिक्त अमल नहीं करते, यदि वह लोग इस शिक्षा पर कर्मिष्ठ होते जो उनको दी जा रही है तो उनके लिए अधिक उत्तम होता और उनके पग दृढ़ता से जम जाते (66)

और हम उनको अपने यहां से महान प्रतिदान प्रदान करते (67)

और (सफलता और सौभाग्य के) सीधे मार्ग पर लगा देते (68)

जो लोग ईश्वर और उसके ईशदूत की आज्ञापालन करेंगे तो वह उन लोगों के साथ होंगे अर्थात अम्बिया और सिद्दकीन, शहीदों और सदाचारियों के साथ होंगे जिन पर ईश्वर ने पुरस्कार किया है और कैसे भाग्यवान हैं वह लोग जिनके ऐसे अच्छे साथी हों (69) {3:146, 57:19}

वह ईश्वर की कृपा है (जो उसके सदाचारियों के लिए निर्धारित हैं) और (इन्सान के सत्कर्मों के जानने के लिए) ईश्वर का ज्ञान प्रयाप्त है (70)

आस्तिको! शत्रु का सामना करने के लिए अपने बचाओ के लिए शस्त्र सदैव तैयार रखो फिर जब तुम निकला करो चाहे टुकड़ियों में होकर या सेना की भांति (71)

तुम में ऐसा व्यक्ति भी उपस्थित है जो लड़ने से जी चुराता है और देर लगाता है और यदि तुम पर कोई आपत्ति आती है तो कहता हे कि ईश्वर ने मुझ पर बड़ी दया की कि मैं उन लोगों के साथ नहीं गया (72)

और यदि तुम पर ईश्वर की कृपा हो तो इस प्रकार बोल उठे मानो तुम्हारे और उसके बीच प्रेम

گے (ہمیں آپ کے فیصلہ سے کب انکار ہے) ہم نے تو جو کچھ کیا اس کا مقصد بھلائی اور فریقین میں میل ملاپ کرانا تھا (۶۲)

ان لوگوں کے دلوں میں جو کچھ ہے اللہ اس کو جانتا ہے تم ان کی باتوں کا کچھ خیال نہ کرو، اور انہیں نصیحت کرو اور ان سے ایسی باتیں کہو جو ان کے دلوں میں اثر کر جائیں (۶۳)

اور ہم نے جو رسول بھیجا ہے اس لئے بھیجا ہے کہ اللہ کے قانون اور حکم کے مطابق اس کا حکم مانا جائے اور وہ لوگ جب اپنے حق میں ظلم کر بیٹھیں اگر تمہارے پاس آئیں اور اللہ سے بخشش مانگیں اور رسول بھی ان کے لئے بخشش طلب کریں تو اللہ کو معاف کرنے والا اور مہربان پائیں گے (۶۴) [۲۴:۴۷،۵۳]

پس (اے رسول) تمہارے رب کی شہادت ہے کہ وہ لوگ جب تک اپنے تنازعات میں تمہیں منصف نہ بنائیں اور جو فیصلہ تم کر دو اس سے اپنے دل میں تنگ نہ ہوں بلکہ اس کو خوشی سے مان لیں تب تک وہ مومن نہیں ہوں گے (۶۵)
[۱۷:۶۰، ۳۳:۳۳،۵۲، شجرہ ۲:۵۴، ۴:۲۹، ۲۰:۵۰]

اور اگر یہ کہ ہم ان پر فرض کر دیں کہ اپنے آدمیوں کے ساتھ لڑو (جو مسلمانوں کے دشمن ہیں) یا راہ حق میں اپنا گھر چھوڑ کر ہجرت کر جاؤ ان میں چند آدمیوں کے سوا سب انکار کر جائیں اگر وہ لوگ اس نصیحت پر کاربند ہوتے جو ان کو دی جا رہی ہیں تو ان کے لئے زیادہ بہتر ہوتا اور ان کے قدم مضبوطی سے جم جاتے (۶۶)

اور ہم ان کو اپنے یہاں سے اجر عظیم بھی عطا فرماتے (۶۷)

اور (کامیابی اور سعادت کے) سیدھے راستے پر لگا دیتے (۶۸)

جو لوگ اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کریں گے تو وہ ان لوگوں کے ساتھ ہوں گے یعنی انبیاء اور صدیقین، شہداء اور صالحین کے ساتھ ہوں گے جن پر اللہ نے انعام فرمایا ہے اور کیسے خوش نصیب ہیں وہ لوگ جس کے ایسے اچھے ساتھی ہوں (۶۹) [۳:۱۴۶، ۵۷:۱۹]

وہ اللہ کا فضل ہے (جو اس کے نیک بندوں کے لئے مخصوص ہے) اور (انسان کی نیکیوں کو جاننے کے لئے) اللہ کا علم کافی ہے (۷۰)

مومنو! دشمن کے مقابلہ کے لئے اپنے بچاؤ کے لئے ہتھیار ہمیشہ تیار رکھو پھر جب تم نکلا کرو خواہ دستوں کی صورت میں یا اجتماعی فوج کی صورت میں (۷۱)

تم میں ایسا شخص بھی موجود ہے جو لڑنے سے جی چراتا ہے اور دیر لگاتا ہے اور اگر تم پر کوئی مصیبت آتی ہے تو کہتا ہے اللہ نے مجھ پر بڑا احسان کیا کہ میں ان لوگوں کے ساتھ نہیں گیا (۷۲)

اور اگر تم پر اللہ کا فضل ہو تو اس طرح بول اٹھے گویا تمہارے

का कोई नाता था ही नही, काश मैं भी उनके साथ होता तो मुझे बड़ा लाभ होता (73)

جو لوگ آخرت کے بدلے دنیا کی زندگی کو (اللہ کے ہاتھ) بیچ چکے ہیں (یعنی سچے مسلمان ہیں) ان کا فرض ہے کہ وہ اللہ کی راہ میں جنگ کریں جو شخص اللہ کی راہ میں جنگ کرے گا تو چاہے وہ قتل کیا جائے یا غالب آئے (ہر حال میں) عن قریب ہم اسے بہت بڑا اجر دیں گے (۷۴) [۹:۱۱۱:۲:۱۵۴]

اور اس کے درمیان محبت کا کوئی رشتہ تھا ہی نہیں کاش میں بھی ان کے ساتھ ہوتا تو مجھے بڑا فائدہ پہنچتا (۷۳)

जो लोग परलोक के बदले दुनिया के जीवन को (ईश्वर के हाथ) विक्रय कर चुके हैं (अर्थात सच्चे मुसलमान हैं) उनका कर्तव्य है कि वह ईश्वर के मार्ग में युद्ध करें जो व्यक्ति ईश्वर की राह में युद्ध करेगा तो चाहे वह वध किया जाए या अधिपति आए (हर दशा में) निकट ही हम उसे बहुत बड़ा प्रतिदान देंगे (74) {9:111}

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ईश्वर के मार्ग में युद्ध नही करना चाहते, यद्यपि बहुत से विवश नर और विवश नारी और विवश बच्चे पुकार कर रहे हैं ऐ ईश्वर हमें इस नगरी से जहां के लोग अत्याचारी हैं निकाल ले और अपनी ओर से किसी (न्यायी और दयालु दल) को हमारा समर्थक बना और अपनी ही ओर से किसी को हमारा सहायक नियुक्त कर (75)

اور تمہیں کیا ہوگیا ہے کہ تم اللہ کی راہ میں جنگ کرنا نہیں چاہتے حالانکہ بے بس عورتیں اور بے بس بچے فریاد کر رہے ہیں اے اللہ ہمیں اس بستی سے جہاں کے لوگ ظالم ہیں نکال لے اور اپنی طرف سے کسی (عادل اور رحم دل گروہ) کو ہمارا حامی بنا اور اپنی ہی طرف سے کسی کو ہمارا مددگار مقرر کر (۷۵)

जो आस्तिक हैं वह ईश्वर के लिए युद्ध करते हैं, और जो नास्तिक हैं वह मूर्तियों के लिए युद्ध करते हैं सो तुम शैतान के सहायकों से युद्ध करो (और भयभीत न हो) क्योंकि शैतान का दांव बोदा है (76)

جو مومن ہیں وہ اللہ کے لئے لڑتے ہیں، اور جو کافر ہیں وہ بتوں کے لئے لڑتے ہیں، سو تم شیطان کے مددگاروں سے لڑو (اور ڈرو مت) کیونکہ شیطان کا داؤ بودا ہے (۷۶)

भला तुमने उन लोगों को नही देखा जिनको (पहले यह) आदेश दिया गया था कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रहो और नमाज़ (शान्ति) स्थापित करते रहो और दान देते रहो (और भली बात कहते रहो) फिर जब उन पर धर्म युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो कतिपय लोग उनमें से लोगों से यूं डरने लगे जैसे ईश्वर से डरा करते हैं अपितु उससे अधिक और बड़-बड़ाने लगे कि ऐ ईश्वर तूने हम पर धर्म युद्ध (शीघ्र) क्यों अनिवार्य कर दिया। थोड़ा समय और हमें क्यों छूट न दी (ऐ रसूल उन से) कह दो कि दुनिया का लाभ बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी वस्तु तो सदाचारियों के लिए (मोक्ष) परलोक है और तुम पर धागे बराबर भी अत्याचार नही किया जाएगा (77)

بھلا تم نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جن کو (پہلے یہ) حکم دیا گیا تھا کہ اپنے ہاتھوں کو (جنگ سے) روکے رہو اور نماز (امن) قائم کرتے رہو اور زکوٰۃ دیتے رہو (اور بھلی بات کہتے رہو) پھر جب ان پر جہاد فرض کر دیا گیا تو بعض لوگ ان میں سے لوگوں سے یوں ڈرنے لگے جیسے اللہ سے ڈرا کرتے ہیں بلکہ اس سے بھی زیادہ اور بڑبڑانے لگے کہ اے اللہ تو نے ہم پر جہاد (جلدی) کیوں فرض کر دیا تھوڑی مدت اور ہمیں کیوں مہلت نہ دی (اے رسول ان سے) کہدو کہ دنیا کا فائدہ بہت تھوڑا ہے اور بہت اچھی چیز تو پرہیزگار کے لئے (نجات) آخرت ہے اور تم پر دھاگے برابر بھی ظلم نہیں کیا جائے گا (۷۷)

तुम जहां कहीं भी हो यद्यपि तुम पुष्ट दुर्गों में भी हो, तो मौत तुम्हें अवश्य पा लेगी, और (उनकी स्थिति यह है कि यदि उन्हें कोई भलाई पहुंचते तो कहेंगे कि यह ईश्वर की ओर से (आई) है और यदि उन्हें कोई कष्ट पहुंचे तो कहेंगे कि (ऐ रसूल) यह आपकी ओर से है (अर्थात यह आपके अनुचित उपाए का परिणाम है) आप कह दीजिएगा कि भलाईयां और कष्ट सब ईश्वर की ओर से (अर्थात तुम्हारे कर्मों के अनुसार ईश्वर के अपरिवर्तनीय नियम के अनुसार आती) हैं फिर उस जाति को क्या हो गया कि वह इस बात पर भी विचार नही करते कि समझें (कि भलाई और बुराई सब ईश्वर के अपरिवर्तनीय नियम के अनुसार आती है) (78)

تم جہاں کہیں بھی ہو اگرچہ تم مضبوط قلعوں میں بھی ہو تو موت تمہیں ضرور پا لے گی اور (ان کی حالت یہ ہے کہ) اگر انہیں کوئی بھلائی پہنچے تو کہیں گے کہ یہ اللہ کی طرف سے (آئی) ہے اور اگر انہیں کوئی تکلیف پہنچے تو کہیں گے کہ (اے رسول) یہ آپ کی طرف سے ہے (یعنی یہ آپ کی غلط تدبیروں کا نتیجہ ہے) آپ کہہ دیجئے گا کہ بھلائیاں اور تکلیفیں سب اللہ کی طرف سے (یعنی تمہارے عملوں کے مطابق اللہ کے قانون سے آتی) ہیں پھر اس قوم کو کیا ہوگیا کہ وہ اس بات پر بھی غور نہیں کرتے کہ سمجھیں (کہ بھلائی اور برائی سب اللہ کے غیر متبدل قانون کے مطابق آتی ہیں) (۷۸)

(भलाई और बुराई का सम्बन्ध ईश्वर के प्रतिदान के नियम से है अतः) तुम्हें जो भलाई पहुंचती है वह ईश्वर की ओर से (तुम्हारे अच्छे कर्म का परिणाम) है और जो बुराई पहुंचती है वह (ईश्वर के नियमा-

(بھلائی اور برائی کا تعلق اللہ کے قانون مکافات سے ہے لہٰذا) تمہیں جو بھلائی پہنچتی ہے وہ اللہ کی طرف سے (تمہارے اچھے عمل کا نتیجہ) ہے اور جو برائی پہنچتی ہے وہ

बुसार ही) तुम्हारे दुराचरण का परिणाम है और (ऐ रसूल) हमने तुम्हें लोगों की ओर रसूल बनाकर भेजा है (और तुम्हारे रसूल होने पर) ईश्वर का साक्ष्य पर्याप्त है (79) {4:31}

(اللہ کے قانون کے مطابق ہی) تمہاری بدکرداری کا نتیجہ ہے اور (اے رسول) ہم نے تمہیں لوگوں کی طرف رسول بنا کر بھیجا ہے (اور تمہارے رسول ہونے پر) اللہ کی گواہی کافی ہے (۷۹) [۴:۳۱]

नोट- उन लोगों का यह कहना अनुचित है कि युद्ध ओहद में ईशदूत के कारण से संकट आया, ईशदूत ने अपने कर्तव्य के पालन में बाणधारियों को आदेश दे दिया था कि अपने स्थान से न हटें किन्तु जब उन्होंने ईशदूत की अवज्ञा की और छोड़े हुए माल के संग्रह करने के लिए मोर्चा छोड़ कर चले गए तो पराजय का उत्तरदायी कौन हुआ? ईशदूत या स्वयं वह लोग जिन्होंने ईशदूत की अवज्ञा की? वही लोग उत्तरदायी हैं जिन्होंने अवज्ञा की.

نوٹ:۔ ان لوگوں کا یہ کہنا غلط ہے کہ جنگ احد میں رسول کی وجہ سے مصیبت آئی رسول نے اپنے فرض کی ادائیگی میں تیراندازوں کو حکم دے دیا تھا کہ اپنی جگہ سے نہ ہٹیں لیکن جب انہوں نے رسول کی نافرمانی کی اور چھوڑے ہوئے مال کے اکٹھا کرنے کے لئے مورچہ چھوڑ کر چلے گئے تو شکست کا ذمہ دار کون ہوا؟ رسولؐ یا خود وہ لوگ جنہوں نے رسول کی نافرمانی کی؟ وہی لوگ ذمہ دار ہیں جنہوں نے نافرمانی کی۔

जो व्यक्ति ईशदूत की आज्ञाकारी करेगा तो निःसन्देह उसने ईश्वर की आज्ञा पालन की और जो अवज्ञा करें तो तो ईशदूत तुम्हें हमने उनका निरीक्षक बनाकर नहीं भेजा (80) {6:57, 12:40,67, 18:26, 8:20, 9:59, 62,74}

جو شخص رسول کی فرمانبرداری کرے گا تو بے شک اس نے اللہ کی فرمانبرداری کی اور جو نافرمانی کرے تو اے رسول تمہیں ہم نے ان کا داروغہ بنا کر نہیں بھیجا (۸۰) [۶:۵۷، ۱۲:۴۰، ۶۷، ۱۸:۲۶، ۸:۲۰، ۹:۵۹، ۶۲، ۷۴]

वह लोग तुम्हारे सामने बड़े सम्मान से कहेंगे आपका आदेश सिर आंखों पर किन्तु जब तुम्हारे पास से उठकर जाएंगे तो उनमें से कुछ लोग रातों को अपनी मंत्रणा परिषद जमाएंगे और जो कुछ तुम ने उन्हें आदेश दिया है उसके विरुद्ध मंत्रणा करेंगे और ईश्वर उनकी रातों की परिषदों के परामर्श (उनके कर्मपत्र में) लिखता जा रहा है (उनकी हर बुराई उनके सामने आएगी) तुम उनको उनकी दशा पर छोड़ दो और ईश्वर पर भरोसा करो और ईश्वर ही प्रयाप्त सहायक है (81)

وہ لوگ تمہارے سامنے بڑے ادب سے کہیں گے آپ کا حکم سر آنکھوں پر، لیکن جب تمہارے پاس سے اٹھ کر جائیں گے تو ان میں سے کچھ لوگ راتوں کو اپنی مجلسیں جمائیں گے اور جو کچھ تم نے انہیں حکم دیا ہے اس کے خلاف مشورے کریں گے اور اللہ ان کی راتوں کی مجلسوں کے مشورے (ان کے نامہ اعمال میں) لکھتا جا رہا ہے (ان کی ہر برائی ان کے سامنے آئے گی) تم ان کو ان کے حال پر چھوڑ دو اور اللہ پر بھروسہ کرو اور اللہ ہی کافی کارساز ہے (۸۱)

तो क्या वह कुरआन में विचार ही नहीं करते (यद्यपि वह ईश्वर का कथन है) यदि वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो इसकी बहुत सी बातें आपस में विरोधाभास होतीं (82)

تو کیا وہ لوگ قرآن میں غور ہی نہیں کرتے (حالانکہ وہ اللہ کا کلام ہے) اگر وہ اللہ کے علاوہ کسی اور کی طرف سے ہوتا تو اس کی بہت سی باتیں آپس میں مختلف ہوتیں (۸۲)

और जब उनके पास शान्ति या भय की कोई सूचना पहुंचेगी तो वह उसे विख्यात कर देंगे ऐसा न करते हुए यदि उसको ईशदूत और अपने नेताओं उलिल अमर के पास पहुंचाए तो पुष्टि करने वाले उसका अन्वेषण कर लेंगे, और यदि तुम पर ईश्वर की दया और कृपा न होती (अर्थात ईश्वर ने उपदेश भरी पुस्तक न दी होती) तो कुछ लोगों के अतिरिक्त सब शैतान के उद्योजक हो जाते (83) {4:59, 49:6}

اور جب ان کے پاس امن یا خوف کی کوئی خبر پہنچے گی تو وہ اسے مشہور کر دیں گے ایسا نہ کرتے ہوئے اگر اس کو رسول اور اپنے سرداروں اولی الامر کے پاس پہنچائیں تو تحقیق کرنے والے اس کی تحقیق کر لیں گے اور اگر تم پر اللہ کا فضل اور مہربانی نہ ہوتی (یعنی اللہ نے یہ نصیحت بھری کتاب نہ دی ہوتی) تو چند لوگوں کے علاوہ سب شیطان کے پیروکار ہو جائیں (۸۳) [۴:۵۹، ۴۹:۶]

(ऐ रसूल/ वह लोग तुम्हारा साथ दें या न दें) तुम ईश्वर के मार्ग में युद्ध के लिए तैयार रहो, तुम अपने सिवा और किसी के उत्तरदायी नहीं हो, (हां सच्चे और साहसी वीर) मुसलमानों को युद्ध की प्रेरणा देते रहो (उपस्थित व्याकुलताऐं अधिक देर तक न रहेंगी) शीघ्र ही ईश्वर नास्तिकों का बल तोड़ देगा युद्ध बन्द कर देगा ईश्वर (तुम्हारे शत्रुओं से) अधिक बलवान है और (उन्हें कठोर यातना) देने वाला है (84)

(اے رسول! وہ لوگ تمہارا ساتھ دیں یا نہ دیں) تم اللہ کی راہ میں جنگ کے لئے تیار رہو تم اپنے علاوہ کسی اور کے ذمہ دار نہیں ہو (ہاں سچے اور جانباز) مسلمانوں کو جنگ کی ترغیب دیتے رہو (موجودہ پریشانیاں زیادہ دیر تک نہ رہیں گی) جلد ہی اللہ منکرین حق کا زور توڑ دے گا لڑائی بند کر دے گا اللہ (تمہارے دشمنوں سے) زیادہ طاقتور ہے اور (انہیں) سخت سزا دینے والا ہے (۸۴)

(लोगो! भलाई के काम में ईशदूत का हाथ बटाओ और उनके धर्म पर व्यवहार करो याद रखो) जो व्यक्ति सत्कर्म में दूसरों का सहायक होगा अर्थात

(لوگو! بھلائی کے کام میں رسول کا ہاتھ بٹاؤ اور ان کے دین پر عمل کرو یاد رکھو) جو انسان نیکی کے کام میں دوسروں

सत्कर्म की अनुशंसा करेगा उसको (उसको सत्कर्म का) अंश मिलेगा, और जो व्यक्ति बुराई के कर्मों में दूसरों का साथ देगा अर्थात बुराई की अनुशंसा करेगा उसको उसकी बुराई का अंश मिलेगा (अब सोच लो ईशदूत का साथ देते हो या शैतान का) ईश्वर हर वस्तु पर दृष्टि रखता है (85)

(ऐ आस्तिको!) जब कोई तुम्हें प्रणाम करके आशीर्वाद दे तो तुम उसको उत्तम ढंग से प्रणाम कर उत्तर दो या उसी प्रकार प्रणाम करके आशीर्वाद दो ईश्वर हर वस्तु का लेखा लेने वाला है (86)

वह ईश्वर (कौन कहता है) ईश्वर नहीं, सुनो! निःसन्देह ईश्वर है वह तुम सब को महा प्रलय के दिन संग्रह करेगा जिसके आने मं कोई शंका नही और ईश्वर की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है (87) {5:3,67, 11:12, 18:6, 39:23, 45:6, 52:34, 53:59, 31:6}

आस्तिको! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम कपटियों के विषय में दो दलों में बंटना चाहते हो? यद्यपि ईश्वर के नियम ने उनके दुर्व्यवहार के आधार पर उन्हें (फिर नास्तिकता की ओर) लौटा दिया है क्या तुम चाहते हो राह पर लाओ उसको जिसको पथ भ्रष्ट किया ईश्वर के नियम ने, और जिसको भ्रष्ट करे ईश्वर का नियम तो उसके लिए कोई सत्य पर आने का मार्ग न पाओगे (88)

वह चाहते हैं कि जिस प्रकार उन्होंने नास्तिकता का मार्ग स्वीकार किया है तुम भी उन्हीं की भांति नास्तिक हो जाओ और तुम सब एक ही भांति के हो जाओ अतः ऐसे लोगों में से उस समय तक किसी को मित्र न बनाना जब तक कि वह ईश्वर के धर्म के लिए (गत दृष्टिकोण से पूरी तरह) धर्म निमित्त पलायन न कर जाएं (और उनकी परीक्षा भी कर लेना 60:10) फिर यदि वह इससे विमुख हो तो उन्हें बन्दी बना लो उन्हें जहां पाओ वध करो और उनमें से किसी को मित्र न बनाओ (यदि वह अशान्ति करें या उपद्रव करें) (89)

नोट- इस आयत और 33:60,61 में कपटियों के दमन के लिए ईश्वर आदेश दे रहा है कि वह आदेश जब ही हो सकता है जब उन कपटियों की पहचान हो गई हो, अतः ईश्वर की बताई हुई पहचान से मुहम्मद स0 ने उनकी पहचान कर ली थी और ईश्वर के आदेश के अनुसार उनको दण्ड दिया था क्योंकि ईश्वर का आदेश यही था किन्तु एक दल यह कहता है कि मुहम्मद स0 के जीवन में आप पर कपटि छाये रहे कपट को छुपाये रखा यहां तक मुहम्मद स0 की मृत्यु के बाद कपटी ही सिंहासन पर अधिकार प्राप्त हो गए (ईश्वर की शरण) स्पष्ट रहे कि यदि यह दृष्टिकोण माना जाए तो खतरा है क्योंकि 4:89 के अनुसार मुहम्मद स0 और सहाबा पर अनिवार्य कर दिया गया था कि कपटियों को बन्दी बनाकर वध कर दो,

किन्तु पूर्व वर्णित दृष्टि कोण के अनुसार मुहम्मद स0 और सहाबा ने इस आदेश की अवहेलना की (ईश्वर की शरण) अतः 4:89 के अनुसार या तो मुहम्मद स0 के बारे में मुहम्मद स0 की मृत्यु तक कपटियों की उपस्थिति के दृष्टि कोण से पश्चाताप करना अनिवार्य है अन्यथा मुहम्मद स0 की चिन्ता करना अनिवार्य होगी, क्योंकि ईश्वर के आदेशानुसार कपटियों को बन्दी और वध नहीं किया, क्योंकि कपटी 4:89 के अनुसार गुप्त नहीं थे जिसमें कहा गया है कि तुम को क्या

کا مددگار ہوگا یعنی نیکی کی شفارش کرے گا اس کو (اس کی نیکی کا) حصہ ملے گا اور جو شخص برائی کے کاموں میں دوسروں کا ساتھ دے گا یعنی برائی کی شفارش کرے گا اس کو اس کی برائی کا حصہ ملے گا (اب سوچ لو رسول کا ساتھ دیتے ہو یا شیطان کا) اللہ ہر چیز پر نظر رکھتا ہے (۸۵)

(اے ایمان والو!) جب کوئی تمہیں سلام کر کے دعا دے تو تم اس سے بہتر طریقہ سے سلام کا جواب دو یا اسی طرح سلام کر کے دعا دو اللہ ہر چیز کا حساب لینے والا ہے (۸۶)

وہ اللہ (کون کہتا ہے) اللہ نہیں، سنو بے شک اللہ ہے وہ تم سب کو قیامت کے دن جمع کر لے گا جس کے آنے میں کوئی شبہ نہیں اور اللہ کی بات سے بڑھ کر سچی بات اور کس کی ہو سکتی ہے (۸۷) [۵:۳،۶۷، ۱۱:۱۲، ۱۸:۶، ۳۹:۲۳، ۴۵:۶، ۵۲:۳۴، ۵۳:۵۹، ۳۱:۶]

مسلمانو! تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ تم منافقوں کے متعلق دو گروہ میں بٹنا چاہتے ہو؟ حالانکہ اللہ کے قانون نے ان کی بداعمالیوں کی بنا پر انہیں (پھر کفر کی طرف) لوٹا دیا ہے کیا تم چاہتے ہو راہ پر لاؤ اس کو جس کو گمراہ کیا اللہ کے قانون نے اور جس کو گمراہ کرے اللہ کا قانون تو اس کے لئے کوئی ہدایت پر آنے کا راستہ نہ پاؤ گے (۸۸)

وہ چاہتے ہیں کہ جس طرح انہوں نے کفر کی راہ اختیار کی ہے تم بھی انہیں کی طرح کفر کی راہ اختیار کر لو۔ اور سب ایک ہی طرح کے ہو جاؤ۔ پس ایسے لوگوں میں سے اس وقت تک کسی کو دوست نہ بنانا جب تک کہ وہ اللہ کے دین کے لئے (سابقہ نظریات سے پوری طرح) ہجرت نہ کر جائیں (اور ان کا امتحان بھی کر لینا۔۶۰:۱۰) پھر اگر وہ اس سے روگردانی کریں (امن کو غارت کریں فساد پھیلائیں) تو انہیں گرفتار کرو انہیں جہاں پاؤ قتل کرو اور ان میں سے کسی کو اپنا دوست اور مددگار نہ بنانا (۸۹)

نوٹ:۔ اس آیت اور (۳۳:۶۰،۶۱) میں منافقین کی سرکوبی کے لئے اللہ حکم دے رہا ہے۔ یہ حکم جب ہی ہو سکتا ہے جب ان منافقین کی شناخت ہو گئی ہو۔ اس لئے اللہ کی بتائی ہوئی نشانیوں سے محمدؐ نے ان کی شناخت کر لی تھی اور اللہ کے حکم کے مطابق ان کو سزا دی تھی کیونکہ اللہ کا حکم یہی تھا لیکن ایک گروہ یہ کہتا ہے کہ محمدؐ کی زندگی میں آپ پر منافق چھائے رہے نفاق کو چھپائے رکھا حتیٰ کہ محمدؐ کی وفات کے بعد منافق ہی مسند خلافت پر قابض ہو گئے (نعوذ باللہ) واضح رہے کہ اگر یہ نظریہ مانا جائے تو خطرہ ہے کیونکہ (۴:۸۹) کے مطابق محمدؐ اور صحابہ پر فرض کر دیا گیا تھا کہ منافقوں کو گرفتار کر کے قتل کر دو۔

لیکن مذکورہ نظریہ کے مطابق محمدؐ اور صحابہ نے اس حکم کی خلاف ورزی کی۔ استغفر اللہ۔ اس لئے (۴:۸۹) کے مطابق یا تو محمدؐ کے بارے میں محمدؐ کی وفات تک منافقوں کی موجودگی کے نظریہ سے توبہ کرنا لازم ہے ورنہ محمدؐ کی فکر کرنا ہوگی کیونکہ اللہ کے حکم کے مطابق منافقوں کو قتل اور گرفتار نہیں کیا۔ کیونکہ منافق (۴:۸۸) کے مطابق چھپے ہوئے نہیں تھے جس میں کہا گیا ہے کہ تم کو کیا ہو گیا کہ

تم منافقوں کے بارے میں دوگروہ میں بٹنا چاہتے ہو.پس منافق مخفی نہیں تھے بلکہ سامنے آگئے تھے اس لئے جو گروہ صحابہ کو منافق مانتا ہے وہ غلطی پر ہے،صحابہ مومن تھے اس لئے ان کو منافق کہنے والوں کو توبہ کرنی چاہیے اور جو اختلاف ہے اس کو ختم کر کے ایک واحد ملت کی شکل میں آنا چاہیے.جس کا حکم اللہ اور رسول نے دیا ہے.جس سے اللہ کی مدد آسکے (۴۷:۳۰) میں اللہ نے منافق کی پہچان بتادی ہے(۴۷:۳۰)اور یقیناً آپ انہیں ان کی بات کے ڈھب سے پہچان لیں گیں.

हो गया है कि तुम कपटियों के विषय में दो दलों के बंटना चाहते हो, पस कपटी छुपे नहीं थे अपितु सामने आ गए थे, अतः जो दल सहाबा को कपटी मानता है वह त्रुटि पर है, सहाबा आस्तिक थे अतः उनको कपटि कहने वालों को पश्चाताप करना चाहिए और जो मतभेद है उसको समाप्त करके एक अद्वितीय सम्प्रदाय की आकृति में आना चाहिए जिसका आदेश ईश्वर और ईशदूत ने दिया है, जिससे ईश्वर की सहायता आ सके, 47:30 में ईश्वर ने कपटियों की पहचान बता दी है, (47:30) और निःसन्देह आप उन्हें उनकी बात के ढब से पहचान लेंगे.

(یہ حکم ان منافقین کے لئے ہے جو دشمن سے مل کر تم سے جنگ کرر ہے ہیں) مگر جو لوگ ایسے لوگوں سے جا ملے ہوں جن میں اور تم میں (صلح کا) عہد ہو یا اس حال میں کہ ان کے دل تمہارے ساتھ یا اپنی قوم کے ساتھ لڑنے سے رک گئے ہوں اور تمہارے پاس آجائیں اور اللہ چاہتا تو ان کو تم پر غالب کر دیتا تو وہ تم سے ضرور لڑتے،پھر اگر وہ تم سے (جنگ کرنے سے) کنارہ کشی کریں اور لڑیں نہیں اور تمہاری طرف صلح بھیجیں تو اللہ نے تمہارے لئے ان پر (زبردستی کرنے کی) کوئی سبیل مقرر نہیں کی (۹۰)

(यह आदेश उन कपटियों के लिए है जो शत्रु से मिलकर तुम से युद्ध कर रहे हैं) किन्तु जो लोग ऐसे लोगों से जा मिले हो जिनमें और तुम में (संधि की) प्रतिज्ञा हो या इस दशा में कि उनके हृदय तुम्हारे साथ या अपनी जाति के साथ लड़ने से रुक गए हों और तुम्हारे पास आ जाएं और ईश्वर चाहता तो उनको तुम पर अधिपति कर देता तो तुम से अवश्य लड़ते, फिर यदि वह तुम से (युद्ध करने से) पृथकता करें और लड़ें नहीं और तुम्हारी ओर संधि भेजे तो ईश्वर ने तुम्हारे लिए उन पर (बलात करने की) कोई सबील मार्ग नियुक्त नहीं की (90)

تم کچھ اور لوگ ایسے بھی پاؤ گے جو یہ چاہتے ہیں کہ تم سے بھی امن سے رہیں اور اپنی قوم سے بھی امن میں رہیں. لیکن جب فتنہ انگیزی کو بلائے جائیں تو اس میں اوندھے منہ گر پڑیں تو ایسے لوگ تم سے (لڑنے سے) کنارہ کشی نہ کریں اور تمہاری طرف پیغام صلح نہ بھیجیں اور اپنے ہاتھ نہ روکیں تو ان کو پکڑو اور جہاں پاؤ قتل کرو وہ وہ لوگ ہیں جن کے خلاف جنگ کرنے کی تمہیں کھلی اجازت ہے(۹۱)

तुम कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे जो यह चाहते हैं कि तुम से भी शान्ति से रहे और अपनी जाति से भी शान्ति में रहें किन्तु जब अशान्ति करने के लिए बुलाए जाएं तो उसमें औंधे मुख गिर पड़े तो ऐसे लोग तुम से (लड़ने से) पृथक न हो जाएं और तुम्हारी ओर संधि का संदेश न भेजे और अपने हाथ न रोकें तो उनको पकड़ो और जहां पाओ वध करो वह वह लोग है जिनके विरुद्ध युद्ध करने की तुम्हें खुली आज्ञा है (91)

اور کسی مومن کے لئے جائز نہیں ہے کہ وہ کسی مومن کو مارڈالے مگر بھول کر اور جو بھول کر مومن کو قتل کردے تو ایک مومن غلام آزاد کردے اور مقتول کے وارثوں کو خون بہادے ہاں اگر وہ معاف کردیں، اگر مقتول تمہارے دشمن کی جماعت سے ہو اور وہ خود مومن ہو تو صرف ایک مسلمان غلام آزاد کرنا چاہیے اور اگر مقتول ایسے لوگوں میں سے ہو جن میں اور تم میں صلح کا عہد ہو تو وارثانِ مقتول کو خون بہادینا اور ایک مسلمان غلام آزاد کرنا چاہیے.اور جس کو یہ میسر نہ ہو وہ متواتر دو مہینے کے روزے رکھے. یہ کفارہ اللہ کی طرف سے قبول توبہ کے لئے ہے اور اللہ سب کچھ جانتا اور حکمت والا ہے(۹۲)

और किसी आस्तिक के लिए वैध नहीं है कि वह किसी आस्तिक को मार डाले, परन्तु भूल कर और जो भूल कर आस्तिक का वध कर दे तो एक आस्तिक दास स्वतंत्र कर दे, और वधित के अभिभावकों को अर्थ दण्ड दें हां यदि वह क्षमा कर दे यदि वधित तुम्हारे शत्रु दल से हो और वह स्वयं आस्तिक हो तो केवल एक मुसलमान दास स्वतंत्र करना चाहिए और यदि वधित ऐसे लोगों में से हो जिनमें और तुम में संधि का वचन हो तो वधित के अभिभावकों को अर्थ दण्ड देना और एक मुसलमान दास स्वतंत्र करना चाहिए और जिसको यह उपलब्ध न हो वह लगातार दो महीने के व्रत रखे, यह प्रायश्चित ईश्वर की ओर से पश्चाताप ताप के स्वीकार के लिए है, और ईश्वर सब कुछ जानता और युक्ति वाला है (92)

اور جو شخص مومن کو قصداً قتل کردے گا تو اس کی سزا دوزخ ہے جس میں وہ ہمیشہ رہے گا اور اللہ اس پر غضب ناک ہوگا اور اس پر لعنت کرے گا اور ایسے شخص کے لئے اس نے بڑا سخت عذاب تیار کر رکھا ہے(۹۳)[۳:۱۰۲،۱۰۳، ۹:۱۷، ۴۸:۲۹]

और जो व्यक्ति आस्तिक को जानबूझ कर वध कर देगा तो उसका दण्ड नर्क है जिसमें वह सदैव रहेगा, और ईश्वर उस पर क्रुद्ध होगा और उस पर धिक्कार करेगा और ऐसे व्यक्ति के लिए उसने बड़ा कठोर दण्ड तैयार कर रखा है (93) {3:102,103, 9:17, 48:29}

नोट:- इन आयात (चिन्हों) के प्रकाश में इस्लाम के इतिहास का अवलोकन किया जाए जिसमें दो युद्ध उल्लेखनीय हैं, जमल और सिफ्फ़ीन, इन दोनों युद्धों में लगभग अस्सी हजार मुसलमान मारे गए अब प्रश्न यह है कि क्या वह युद्ध धोके से हुए या जानबूझ कर? धोके से तो माना नही जा सकता यदि मान लिया जाए तो युद्ध के बाद किसी भी इतिहास में यह लिखा नही मिलता कि पक्षों ने हत्या दण्ड दिया हो तो युद्ध को जानबूझ कर ही स्वीकार करना पड़ेगा,

नوٹ:۔ان آیات کی روشنی میں اسلام کی تاریخ کا جائزہ لیا جائے جس میں دو جنگ قابل ذکر ہیں. جنگ جمل اور جنگ صفین.ان دونوں جنگوں میں تقریباً اسّی ہزار مسلمان مارے گئے.اب سوال یہ ہے کیا وہ جنگ دھوکے سے ہوئیں یا جان بوجھ کر؟ دھوکے سے تو مانا نہیں جاسکتا اگر یہ مان لیا جائے تو جنگ کے بعد کسی بھی تاریخ میں یہ لکھا نہیں ملتا کہ فریقین نے قصاص ادا کیا ہو تو جنگ کو جان بوجھ کر ہی تسلیم کرنا پڑے گا.

तो अब यह निश्चित करना होगा कि उनमें कौन आस्तिक थे और कौन नास्तिक, किन्तु यह भी निश्चित नही हो सकता विषय ईश्वर के कथन के प्रकाश में वही सामने आता है कि सब मोमिन थे 9:100, 48:29, 4:92,93 से स्पष्ट है कि वह आस्तिक थे, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो गया था, जब वह आस्तिक थे और एक दूसरे को जानबूझ कर वध कर रहे थे तो क्या वह सब नर्क में जाऐंगे? (ईश्वर क्षमा करे),

تو اب یہ طے کرنا ہوگا کہ ان میں کون مومن تھا اور کون کافر.لیکن یہ بھی طے نہیں ہوسکتا. بات اللہ کے کلام کی روشنی میں یہی سامنے آتی ہے کہ وہ سب مومن تھے (۹:۱۰۰، ۴۸:۲۹، ۴:۹۲، ۹۳) سے ظاہر ہے کہ وہ مومن تھے اللہ ان سے راضی ہوگیا تھا.جب وہ مومن تھے اور ایک دوسرے کو جان بوجھ کر قتل کررہے تھے تو کیا وہ سب دوزخ میں جائیں گے؟ استغفر اللہ۔

क्या कभी इस बात पर विचार किया है कि हम ने क्या लिखा और क्या पढ़ा? कुरआन के प्रकाश में ऐसे आस्तिक ऐसा आशंका पूर्ण युद्ध नही कर सकते थे, और न ही करेंगे, अतः वह दोनों युद्ध नही हुए यहां पर इतिहास में छान-बीन की आवश्यकता है कुरआन के प्रकाश में क्योंकि कुरआन की एक छोटी आयत की तुलना में किसी भी इतिहास और कथन की कोई कीमत नही है, कुरआन की आयत सत्य है, और आयत के विपरीत जो लिखा है वह अनुचित है ईश्वर हम को सत्य मानने की क्षमता दे,

کیا کبھی اس بات پر غور کیا ہے کہ ہم نے کیا لکھا اور کیا پڑھا؟ قرآن کی روشنی میں ایسے مومن ایسی خطرناک جنگ نہیں کرسکتے تھے.اور نہ ہی کریں گے.اس لئے وہ دونوں جنگ نہیں ہوئیں. یہاں پر تاریخ میں نظر ثانی کی ضرورت ہے قرآن کی روشنی میں کیونکہ قرآن کی ایک چھوٹی سی آیت کے مقابلہ میں کسی بھی تاریخ اور روایت کی کوئی قیمت نہیں ہے قرآن کی آیت حق ہے.اور آیت کے خلاف جو لکھا ہے وہ غلط ہے اللہ ہم کو حق ماننے کی توفیق دے.

अगली आयत में ईश्वर आदेश दे रहा है कि जब तुम युद्ध के लिए निकलो तो छान-बीन कर लो कि कौन मोमिन मित्र है और नास्तिक शत्रु, इस आदेश के होते हुए क्या अली र० श्रीमति आयशा र० व मआविया र० ने छान-बीन नही की? छान-बीन अवश्य हुई थी और की, अतः यह युद्ध नही हुआ,

اگلی آیت میں اللہ حکم دے رہا ہے کہ جب تم جنگ کے لئے نکلو تو تحقیق کرلو کہ کون مومن دوست ہے اور کون کافر.اس حکم کے ہوتے ہوئے کیا علیؓ وعائشہؓ اور معاویہؓ نے تحقیق نہیں کی؟ تحقیق ضرور ہوئی تھی اور کی اس لئے یہ جنگ محل نظر ہے جنگ نہیں ہوئی.

आस्तिको! जब तुम ईश्वर की राह में बाहर निकला करो तो पुष्टि कर लिया करो और जो व्यक्ति तुम से प्रणाम करे तो उससे यह न कहो कि तुम आस्तिक नही हो और इससे तुम्हारा स्वार्थ यह हो कि दुनिया के जीवन का लाभ प्राप्त करो सो ईश्वर के पास बहुत से धन लाभ हैं, तुम भी तो पहले ऐसे ही थे फिर ईश्व ने तुम पर उपकार किया तो पुष्टि कर लिया करो, और जो क्रिया तुम करते हो ईश्वर को सब की सूचना है (94) {8:41,69, 49:6, 4:83}

مومنو! جب تم اللہ کی راہ میں باہر نکلا کرو تو تحقیق کرلیا کرو اور جو شخص تم سے سلام کہے تو اس سے یہ نہ کہو کہ تم مومن نہیں ہو اور اس سے تمہاری غرض یہ ہو کہ دنیا کی زندگی کا فائدہ حاصل کرو.سو اللہ کے پاس بہت سے فائدے مال ہیں تم بھی تو پہلے ایسے ہی تھے پھر اللہ نے تم پر احسان کیا تو تحقیق کرلیا کرو.اور جو عمل تم کرتے ہو اللہ کو سب کی خبر ہے (۹۴) [۸:۴۱، ۶۹، ۴۹:۶، ۴:۸۳]

आस्तिकों में से जो लोग बिना किसी आपत्ति के घर में बैठने वाले हैं और वह जो ईश्वर के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ धर्म युद्ध करने वाले हैं वह परस्पर बराबर नही हैं ईश्वर ने अपने मालों और जानों के साथ धर्म युद्ध करने वालों को घरों में बैठे रहने वालों पर श्रेणी के कारण श्रेष्ठता दी है यद्यपि ईश्वर ने पूर्ण आस्तिकों के साथ उनके कर्मों के अनुसार भलाई का वचन कर रखा है सत्य यह है कि ईश्वर ने धर्म युद्ध करने वालों को बैठ रहने वालों पर प्रतिदान के कारण प्रमुखता प्रदान की है, (95)

مومنوں میں سے جو لوگ بغیر کسی عذر کے گھروں میں بیٹھنے والے ہیں اور وہ جو اللہ کی راہ میں اپنے مالوں اور اپنی جانوں کے ساتھ جہاد کرنے والے ہیں وہ باہم برابر نہیں ہیں.اللہ نے اپنے مالوں کے ساتھ اور اپنی جانوں کے ساتھ جہاد کرنے والوں کو گھروں میں بیٹھ رہنے والوں پر مدارج کی رو سے فضیلت دی ہے.حالانکہ اللہ نے تمام مومنوں کے ساتھ ان کے اعمال کے مطابق بھلائی کا وعدہ کر رکھا ہے حقیقت یہ ہے کہ اللہ نے جہاد کرنے والوں کو بیٹھ رہنے والوں پر اجر کی رو سے فضیلت عطا فرمائی ہے (۹۵)

अर्थात ईश्वर की ओर से पदों में और क्षमा में

یعنی اللہ کی طرف سے درجات میں اور بخشش میں اور رحمت

और कृपा में श्रेष्ठता है और ईश्वर बड़ा क्षमा करने वाला और कृपालु है (96)

जो लोग अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे है जब फरिश्ते उनके प्राण ग्रहण करने लगते है तो उनसे ज्ञात करते है कि तुम किस स्थिति में थे, वह कहते है कि हम देश में असमर्थ व अशक्त थे फिरश्ते कहते है क्या ईश्वर का देश विशाल नही था कि तुम उसमें देश त्याग कर जाते ऐसे लोगों का ठिकाना नर्क है और वह बुरा स्थान है (97)

हां जो पुरुष और नारियां और बच्चे अशक्त है कि न तो कोई उपाए कर सकते है और न मार्ग जानते है (98)

तो आशा है कि ईश्वर उन्हें क्षमा कर दे ईश्वर क्षमा करने वाला और पापों का क्षमा करने वाला है (99)

और जो कोई ईश्वर के मार्ग में देश त्याग कर जाए उसे बहुत से निवास स्थान और बहुत से विशाल साधन प्राप्त होंगे और जो कोई अपने घर से ईश्वर और उसके ईशदूत की ओर देश त्याग करके निकले फिर उसकी मृत्यु हो जाए तो ईश्वर पर उसका प्रतिदान सिद्ध हो गया, वह बहुत बड़ा क्षमा करने वाला और दया वाला है (100) {5:106, 2:239}

और जब तुम लोग यात्रा के लिए देश में निकलो तो कोई पाप नही तुम पर यदि नमाज़ में कम कर दो, या यदि तुम को भय हो कि नास्तिक तुम्हें सताएंगे तब भी नमाज़ कम कर दो, क्योंकि वह खुल्लम खुल्ला तुम्हारी शत्रुता पर तुले है (101)

और ऐ नबी जब तुम मुसलमानों के मध्य हो और (युद्ध की स्थिति में हो अभी युद्ध आरम्भ न हुआ हो) और उन्हें नमाज़ पढ़ाने खड़े हो तो चाहिए कि उनमें से एक दल तुम्हारे साथ खड़ा हो और अपने शस्त्र लिए रहे फिर जब वह सजदा कर लें तो पीछे चले जाएँ और दूसरा दल जिसने अभी नमाज़ नही पढ़ी है आकर तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और वह भी अपने शस्त्र लिए रहें क्योंकि नास्तिक इस ताक में है कि तुम अपने शस्त्रों और सामान की ओर से थोड़ा अचेत हो तो वह तुम पर सहसा टूट पड़ें, अपितु यदि तुम वर्षा के कारण व्याकुलता अनुभूत करो या रोगी हो तो शस्त्र रख देने में कोई हानि नही, परन्तु फिर भी सतर्क रहो, विश्वास रखो कि ईश्वर ने नास्तिकों के लिए अपमानित करने वाला दण्ड तैयार कर रखा है (102)

फिर जब नमाज़ से निवृत्त हो जाओ तो खड़े और बैठे और लेटे हर दशा में ईश्वर को याद करो और जब संतुष्टि हो जाए तो पूरी नमाज़ पढ़ो, नमाज़ वास्तव में ऐसा कर्तव्य है जो समय के पालन के साथ आस्तिकों पर अनिवार्य है (1030) {2:238, 239}

میں فضیلت ہے اور اللہ بڑا بخشنے والا اور مہربان ہے(۹۶)

جو لوگ اپنی جانوں پر ظلم کر رہے ہیں جب فرشتے ان کی جان قبض کرنے لگتے ہیں تو ان سے پوچھتے ہیں کہ تم کس حال میں تھے وہ کہتے ہیں کہ ہم ملک میں عاجز و ناتوان تھے فرشتے کہتے ہیں کیا اللہ کا ملک فراخ نہیں تھا کہ تم اس میں ہجرت کر جاتے. ایسے لوگوں کا ٹھکانا دوزخ ہے اور وہ بُری جگہ ہے(۹۷)

ہاں جو مرد اور عورتیں اور بچے بے بس ہیں کہ نہ تو کوئی چارہ کر سکتے ہیں اور نہ راستہ جانتے ہیں (۹۸)

تو امید ہے کہ اللہ انہیں معاف کر دے اللہ درگزر کرنے والا اور گناہوں کا معاف کرنے والا ہے(۹۹)

اور جو کوئی اللہ کی راہ میں ہجرت کر جائے اسے بہت سی قیام گاہیں اور بہت سے وسیع ذرائع میسر آئیں گے. اور جو کوئی اپنے گھر سے اللہ اور اس کے رسول کی طرف ہجرت کر کے نکلے پھر اس کی موت آجائے تو اللہ کے ذمہ اس کا اجر ثابت ہو گیا. وہ بہت بڑا بخشنے والا اور رحمت والا ہے (۱۰۰)[۵:۱۰۶، ۲:۲۳۹]

اور جب تم لوگ سفر کے لئے ملک میں نکلو تو کوئی گناہ نہیں تم پر اگر نماز میں قصر کم کر دو. یا اگر تم کو خوف ہو کہ کافر تمہیں ستائیں گے تب بھی نماز کم کر دو. کیونکہ وہ کھلم کھلا تمہاری دشمنی پر تلے ہیں (۱۰۱)

اور اے نبیؐ جب تم مسلمانوں کے درمیان ہو اور (حالت جنگ میں ہو ابھی جنگ شروع نہ ہوئی ہو) اور انہیں نماز پڑھانے کھڑے ہو تو چاہیے کہ ان میں سے ایک گروہ تمہارے ساتھ کھڑا ہو اور اپنے اسلحہ لئے رہے. پھر جب وہ سجدہ کر لے تو پیچھے چلا جائے اور دوسرا گروہ جس نے ابھی نماز نہیں پڑھی ہے آکر تمہارے ساتھ نماز پڑھے. اور وہ بھی اپنے اسلحہ لئے رہے کیونکہ کفار اس تاک میں ہیں کہ تم اپنے ہتھیار اور اپنے سامان کی طرف سے ذرا غافل ہو تو وہ تم پر یکبارگی ٹوٹ پڑیں. البتہ اگر تم بارش کی وجہ سے تکلیف محسوس کرو یا بیمار ہو تو ہتھیار رکھ دینے میں کوئی حرج نہیں مگر پھر بھی چوکنے رہو یقین رکھو کہ اللہ نے کافروں کے لئے رسوا کن عذاب تیار کر رکھا ہے(۱۰۲)

پھر جب نماز سے فارغ ہو جاؤ تو کھڑے اور بیٹھے اور لیٹے ہر حال میں اللہ کو یاد کرتے رہو اور جب اطمینان نصیب ہو جائے تو پوری نماز پڑھو. نماز درحقیقت ایسا فرض ہے جو پابندی وقت کے ساتھ اہل ایمان پر لازم ہے (۱۰۳)

[۲:۲۳۸، ۲۳۹]

नोट- आयत 101 में यात्रा और भय की दशा में नमाज़ कम करने का आदेश दिया जा रहा है यह कुछ नही बताया कि किस समय में कम करो और किसमें कम न करो अपितु एक सामान्य आदेश है, इससे यह सिद्ध हो रहा है कि यात्रा या भय जिस समय भी हो उस समय में नमाज़ कम करनी है वह समय फजर (प्रातः) भी हो सकता है जोहर, असर, वक्त गुरूब और ईशा भी हो सकता है, और यह भी हो सकता है कि एक या एक से अधिक दिनों तक यह स्थिति यात्रा रहे, तो ऐसी स्थिति में जो भी नमाज़ का समय आएगा उन सब में अंकित आदेश के अनुसार नमाज़ कम करनी है, किन्तु केवल जोहर, असर और ईशा में ही कम करते है फजर और वक्त गुरूब में क्यों नही करते? जब कि कम का एक सामान्य आदेश है, परन्तु इन दो समय में ईश्वर के आदेश की अवहेलना हो रही है? ईश्वर के आदेश का पालन अनिवार्य है हर समय और हर दशा में नमाज़ कसर ही पढ़नी है,

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि समय गुरूब (मग़रिब) और फजर में कम कैसे करें जबकि समय गुरूब में तीन रकआत और फजर में दो रकआत पढ़ी जाती है, अर्थात डेढ़ और एक कैसे करें, इस समस्या का निर्णय आयत स्वयं कर रही है और बुखारी की अनेक हदीस भी इसका निर्णय कर रही है, आयत ओर हदीस के प्रकाश में हर समय में चार रकआत ही सिद्धहो रही है कसर में दो रकआत और भय में मुकतदी एक रकआत पढ़ेंगे,

इब्ने कसीर ने लिखा है कि यात्रा की दो रकआत है और भय की एक, वैसे वास्तव में भय की एक ही सिद्ध हो रही है,

नमाज़ के समय पांच है और रकआत चार हर समय में और यात्रा में दो है, हर समय में कुरआन से यह सिद्ध हो रहा है कि मुसलमानों ने मुहम्मद स० के पीछे अर्थात आपकी इमामत में एक रकआत पढ़ी और मुहम्मद स० ने दो रकआत पढ़ी, यदि कुरआन से देखा जाए तो मुकतदी (अनुवर्ती) की एक ही सिद्ध हो रही है इमाम की दो, भय की स्थिति में, शान्ति की स्थिति में इमाम और अनुवर्ती की दो है,

हदीस बुखारी का प्रमाण भी प्रस्तुत है अवलोकन हो, हदीस प्रति प्रथम किताबुस्सलात क्रम सं० 340, पेज-217, पारा-2

(340) उम्मुल मोमिनीन सय्यदह आयशा र० रवायत करती है कि ईश्वर ने (पहले पहल) जब नमाज़ अनिवार्य की थी तो दो रकआतें थी, अन्यात्रा और यात्रा (दोनों) में यात्रा की नमाज़ तो स्थिर रही परन्तु अन्यात्रा में वृद्धि कर दी गई,

अबवाब तकसीरुस्सलात पारा-4, पेज 435, नं० 1025

(1025) सय्यदा आयशा र० रवायत करती है कि आरम्भ में नमाज़ दो रकआत अनिवार्य की गई फिर यात्रा में तो स्थिर रही परन्तु अन्यात्रा में पूरी (चार) कर दी गई, मैंने उरवाह से कहा आयशा ने यह क्या कहा? उत्तर दिया अर्थापन किया है जिस प्रकार उस्मान र० ने किया था,

अबवाब तकसीरुस्सलात पारा-5, पेज 438, नं० 1035

(1035) हफ्स बिन आसिम रवायत करते है उन्होंने इब्न उमर को कहते सुना मैं रसूल स० के साथ रहा आप यात्रा में दो रकआत से अधिक नही पढ़ते थे और अबु बकर, उमर और उस्मान भी ऐसा ही करते थे,

बुखारी प्रति द्वितिय किताबुल मनकिब पारा-15, पेज 488, नं० 1114

(1114) श्रीमति आयशा र० कहती है कि पहले हर नमाज़ की दो

نوٹ:۔آیت ۱۰۱ر میں سفر اور خوف کی حالت میں نماز کم کرنے کا حکم دیا جارہا ہے یہ کچھ نہیں بتایا کہ کس وقت میں کم کرو اور کس میں کم نہ کرو بلکہ ایک عام حکم ہے اس سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ سفر یا خوف جس وقت بھی ہو اس وقت میں نماز کم کرنی ہے وہ وقت فجر بھی ہو سکتا ہے ظہر، عصر، وقت غروب اور عشاء بھی ہو سکتا ہے اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ ایک یا ایک سے زیادہ دنوں تک یہ حالت سفر رہے تو ایسی حالت میں جو بھی نماز کا وقت آئے گا ان سب میں درج حکم کے مطابق نماز قصر کرنی ہے لیکن صرف ظہر، عصر اور عشاء میں ہی قصر کرتے ہیں. فجر اور وقت غروب میں کیوں نہیں کرتے؟ جب کہ قصر کا ایک عام حکم ہے مگر ان دو وقتوں میں اللہ کے حکم کی خلاف ورزی ہو رہی ہے؟ اللہ کے حکم کی پابندی ہونا ضروری ہے ہر وقت اور ہر حالت میں نماز قصر ہی پڑھنی ہے اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ وقت غروب اور فجر میں کم کیسے کریں. جب کہ وقت غروب میں تین رکعت اور فجر میں دو رکعت پڑھی جاتی ہیں. یعنی ڈیڑھ اور ایک کیسے کریں. اس مسئلہ کا فیصلہ آیت خود کر رہی ہے اور بخاری کی متعدد حدیث بھی اس کا فیصلہ کر رہی ہیں. آیت اور حدیث کی روشنی میں ہر وقت میں چار رکعت ہی ثابت ہو رہی ہیں. قصر میں دو رکعت اور خوف میں مقتدی ایک رکعت پڑھیں گے.

ابن کثیرؒ نے لکھا ہے کہ سفر کی دو رکعت ہیں اور خوف کی ایک. ویسے حقیقت میں خوف کی ایک ہی ثابت ہو رہی ہے.

نماز کے وقت پانچ ہیں اور رکعت چار ہر وقت میں اور سفر میں دو ہیں. ہر وقت میں قرآن سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ مسلمانوں نے محمدؐ کے پیچھے یعنی آپ کی امامت میں ایک رکعت پڑھی محمدؐ نے دو رکعت پڑھیں. اگر قرآن سے دیکھا جائے تو مقتدی کی ایک ہی ثابت ہو رہی ہے امام کی دو حالت خوف میں. امن کی حالت میں امام اور مقتدی کی دو ہیں.

حدیث بخاری کا ثبوت بھی پیش ہے ملاحظہ ہو. بخاری جلد اوّل، کتاب الصلوٰۃ ۳۴۰ رص ۲۱۷ پارہ ۲

(۳۴۰) ام المومنین سیدہ عائشہؓ روایت کرتی ہیں کہ اللہ نے (پہلے پہل) جب نماز فرض کی تھی تو دو رکعتیں تھیں حضر اور سفر (دونوں) میں سفر کی نماز تو برقرار رہی مگر حضر میں اضافہ کر دیا گیا.

ابواب تقصیر الصلوٰۃ پارہ ۴رص ۴۳۵، نمبر ۔۱۰۲۵

(۱۰۲۵) سیدہ عائشہؓ روایت کرتی ہیں ابتداء میں نماز دو رکعت فرض کی گئی پھر سفر میں تو برقرار رہی لیکن حضر میں پوری (چار) کر دی گئی. میں نے عروہ سے کہا عائشہ نے یہ کیا کہا؟ جواب دیا تاویل کی ہے جس طرح عثمانؓ نے کی تھی.

ابواب تقصیر الصلوٰۃ پارہ ۵رص ۴۳۸ نمبر ۔۱۰۳۵

(۱۰۳۵) حفص بن عاصم روایت کرتے ہیں. انہوں نے ابن عمر کو کہتے سنا میں رسولؐ کے ساتھ رہا، آپ سفر میں دو رکعت سے زیادہ نہیں پڑھتے تھے. اور ابوبکر، عمر اور عثمان بھی ایسا ہی کرتے تھے.

بخاری جلد دوئم کتاب المناقب پارہ ۱۵رص ۴۸۸، نمبر ۔۱۱۱۴

(۱۱۱۴) حضرت عائشہؓ فرماتی ہیں کہ پہلے ہر نماز کی دو رکعتیں فرض ہوئی تھیں جب نبیؐ نے ہجرت کی تو چار رکعتیں فرض فرما دی گئیں. اور سفر کی نماز اپنی پہلی حالت پر رہی. عبدالرزاق نے بھی معمر سے اسی طرح روایت کی ہے. کتاب

रकआत अनिवार्य हुई थी जब नबी ने देश त्याग किया तो चार रकआते अनिवार्य कर दी गई और यात्रा की नमाज़ अपनी पहली स्थिति पर रही, अब्दुलर्रज़ाक ने भी मुअम्मर से इसी प्रकार रिवायत की है,

आयत में नमाज़ कम करने का आदेश है अतः मुहम्मद स0 ने आदेश के अनुसार यात्रा में दो रकआत पढ़ी, रसूल ने ईश्वर का कोई आदेश नही तोड़ा, तो सिद्ध हुआ नमाज़ में हर समय चार रकआत है इस स्थिति में ही ईश्वर का आदेश पूरा हो सकता है, अर्थात समय गुरूब (मग़रिब) और फज्र (प्रातः) में कसर दो रकआत पढ़ सकते है अन्यथा नही, और हमें हर दशा में ईश्वर का आदेश पूरा करना है, अतः कुरआन और हदीस से चार रकआतें हर समय में सिद्ध है तो चार ही पढ़नी चाहिए और कसर में दो जैसा रसूल ने पढ़ी है, मग़रिब में तीन और फज्र में दो कुरआन और हदीस से मिथ्या सिद्ध हो रही है, अतः अपनी त्रुटि को ठीक करके हर समय में चार और कसर में दो पढ़नी चाहिए और भय में एक,

کتاب صلوۃ الخوف اورابواب تفصیر الصلوۃ میں اوربھی حدیثیں ہیں۔

آیت میں نماز کم کرنے کا حکم ہے۔اس لئے محمدؐ نے حکم کے مطابق سفر میں دورکعت پڑھیں۔رسولؐ نے اللہ کا کوئی حکم نہیں توڑا تو ثابت ہوا نماز میں ہروقت میں چاررکعت ہیں اس صورت میں ہی اللہ کا حکم پورا ہوسکتا ہے۔اس لئے وقت غروب اورفجر میں قصر دورکعت ہیں اس کے علاوہ اورنہیں۔اورہمیں ہرحال میں اللہ کا حکم پورا کرنا ہے۔اس لئے قرآن اورحدیث سے چار رکعتیں ہروقت میں ثابت ہیں۔تو چارہی پڑھنی چاہیئے اورقصر میں دوجیسا کہ رسولؐ نے پڑھی ہیں۔ وقت غروب میں تین اورفجر میں دوقرآن اورحدیث سے غلط ثابت ہورہی ہیں۔ اس لئے اپنی غلطی کودرست کرکے ہروقت میں چاراورقصر میں دوپڑھنی ہیں اور خوف میں ایک۔

शत्रुओं का पीछा करने में आलस्य न करना (जब उनको पराजय हो जाए) यदि तुम व्याकुल होते हो तो जिस प्रकार तुम व्याकुल हो इसी प्रकार वह भी व्याकुल होते है, और तुम ईश्वर से ऐसी आशाऐं रखते हो जो वह नही रखते और ईश्वर सब जानता है और युक्ति वाला है (104)

دشمن قوم کا پیچھا کرنے میں سستی نہ کرنا (جب ان کوشکست ہوجائے) اگرتم بےآرام ہوئے ہوتو جس طرح تم بےآرام ہوئے ہواسی طرح وہ بھی بےآرام ہوتے ہیں اورتم اللہ سے ایسی امیدیں رکھتے ہوجووہ نہیں رکھتے اوراللہ سب جانتا ہےاورحکمت والا ہے(۱۰۴)

हमने यह पुस्तक (कुरआन) तुम पर सच्चाई के साथ अवतरित की है ताकि तुम ईश्वर के अवतरित किये हुए आदेश के अनुसार लोगों के मध्य निर्णय करो और कपट करने वालों दुष्टों की ओर से वितर्क न करना (105)

ہم نے یہ کتاب (قرآن) تم پرسچائی کے ساتھ نازل کی ہے تاکہ تم اللہ کے نازل کئے ہوئے فرمان کے مطابق لوگوں کے درمیان فیصلہ کرو۔اورخیانت کرنے والے بےایمانوں کی طرف سے بحث نہ کرنا (۱۰۵)

और ईश्वर से क्षमा मांगना निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (106)

اوراللہ سے بخشش مانگنا بےشک اللہ بخشنے والامہربان ہے (۱۰۶)

और उन लोगों की ओर से वितर्क मत करना जो अपने ही भाई बन्दों का स्वत्व हरण करते हैं निःसन्देह ईश्वर ऐसे लोगों को पसंद नही करता जो कपटी हो पापों के अभ्यस्त हों (107)

اوران لوگوں کی طرف سے بحث مت کرنا جواپنے ہی بھائی بندوں کی حق تلفی کریں گے۔ بےشک اللہ ایسےلوگوں کوپسند نہیں کرتا۔جوخیانت کارہوں گناہ کےعادی ہوں (۱۰۷)

वह लोगों से तो छुप सकते है परन्तु ईश्वर से नही छुप सकते, यद्यपि जब वह रातों को ऐसी बातों का परामर्श करेंगे जिसको वह पसंद नही करता तो वह उनके साथ हुआ करता है और ईश्वर उनके सब कर्मों को घेरे हुए है (108)

وہ لوگوں سےتو چھپ سکتے ہیں مگراللہ سےنہیں چھپ سکتے حالانکہ جب وہ راتوں کوایسی باتوں کامشورہ کریں گےجس کووہ پسند نہیں کرتا تووہ ان کےساتھ ہوا کرتا ہےاوراللہ ان کےتمام کاموں پراحاطہ کئے ہوئے ہے(۱۰۸)

भला तुम लोग दुनिया के जीवन में तो उन लोगों की ओर से वितर्क कर लेते हो महाप्रलय को उनकी ओर से ईश्वर के साथ कौन झगड़ेगा और कौन उनका वकता बनेगा (109)

بھلاتم لوگ دنیا کی زندگی میں توان لوگوں کی طرف سے بحث کرلیتے ہوقیامت کوان کی طرف سےاللہ کےساتھ کون جھگڑےگااورکون ان کاوکیل بنے گا(۱۰۹)

और जो कोई (ऐसा) बुरा कर्म करेगा (जिससे दूसरो को हानि हो) या वह अपने आप पर अत्याचार करें फिर (यदि वह अच्छे कर्मों के द्वारा उस बुरे कर्म के बुरे फल से) बचना चाहें तो वह ईश्वर को बचाने वाला दयालु पाएगा (110)

اور جوکوئی (ایسا) بُراعمل کرےگا (جس سے دوسروں کا نقصان ہو) وہ اپنے آپ پرظلم کرے پھر (اگروہ اچھےعمل کےذریعہ اس بُرےعمل کےبُرےاثرات سے) بچنا چاہے تووہ اللہ کوبچانےوالا مہربان پائےگا(۱۱۰)

नोट- जो आदमी अनुचित कार्य करता है तो उस अशुद्धता को उचित करने का मार्ग भी ईश्वर ने बता दिया है, जैसे आदमी रोगी होता है तो उसका उपाए करता है और जिस कारण से रोग हुआ है उस कारण को भी छोड़ता है यह नही हो सकता कि उपाए करता रहे और संयम न करे तो ठीक नही होगा बस यही विधि ईश्वर ने बताई है कि 16:119, फिर निःसन्देह तेरा स्वामी उन लोगों के लिए जो मूर्खता से

نوٹ:۔ جوآدمی غلط کام کرتا ہےتواس غلطی کودرست کرنے کاطریقہ بھی اللہ نے بتادیا ہےجیسےآدمی بیماررہوتا ہےتواس کاعلاج کرتا ہےاورجس وجہ سےبیماررہوا ہے اس وجہ کوبھی چھوڑتا ہے یہ نہیں ہوسکتا کہ علاج کرتارہےاورپرہیز نہ کرےتوٹھیک نہیں ہوسکتا۔بس یہی طریقہ اللہ نےبتایا ہےکہ (۱۶:۱۱۹) پھربےشک تیرارب ان

बुरे कर्म कर बैठे फिर उसके बाद पश्चाताप कर लें और अपना सुधार कर लें तो निःसन्देह तेरा रब उसके बाद क्षमा करने वाला और दया करने वाला है यह है पश्चाताप की विधि इसके विपरीत यदि हम मुख से तो तोबा करते रहें और अपना सुधार न करें अर्थात बुराई करना न छोड़ें तो ईश्वर क्षमा नही करेगा और आज बहुधा यही हो रहा है पश्चाताप भी कर रहे हैं और पाप भी करते जाते हैं तो क्षमा नही मिलेगी, क्षमा तो सुधार से मिलेगी (4:54, 7:153)

لوگوں کے لئے جو ناوانی سے بُرے عمل کر بیٹھیں پھر اس کے بعد توبہ کر لیں اور اپنی اصلاح کر لیں تو بے شک تیرا رب اس کے لئے غفور رحیم ہے. یہ ہے توبہ کا طریقہ اس کے خلاف اگر ہم زبان سے تو توبہ توبہ کرتے رہیں اور اپنی اصلاح نہ کریں یعنی بُرائی کرنا نہ چھوڑیں تو اللہ معاف نہیں کرے گا. اور آج اکثر یہی ہو رہا ہے توبہ بھی کر رہے ہیں اور گناہ بھی کرتے جاتے ہیں تو معافی نہیں ملے گی. معافی تو اصلاح سے ملے گی[۶:۵۴،۷:۱۵۳]

और जो पाप करता है तो उसकी विपत्ति उसी पर होती है वह सब कुछ जानने वाला और युक्ति वाला है (111)

اور جو گناہ کرتا ہے تو اس کا وبال اسی پر ہوتا ہے وہ سب کچھ جاننے والا اور حکمت والا ہے(۱۱۱)

और जो व्यक्ति कोई पाप तो स्वयं करे किन्तु उसका आरोप किसी निर्दोष पर रख दे तो उसने दोषारोपण और स्पष्ट पाप का भार अपने सर रख लिया (112) {12:70,89}

اور جو شخص کوئی قصور تو خود کرے لیکن اس کا الزام کسی بے گناہ پر رکھ دے تو اس نے بہتان اور صریح گناہ کا بوجھ اپنے سر رکھ لیا(۱۱۲)[۱۲:۸۹،۱۲:۷۰]

और (ऐ ईशदूत) यदि आप पर ईश्वर की कृपा दया (अवतरित वही) की आकृति में न होती तो उनमें से कपटियों का एक दल तो संकल्प करेगा कि तुम को पथ भ्रष्ट करे सत्य मार्ग से, सत्य यह है कि नही बहकाऐंगे वह परन्तु अपने ही लोगों को बहकाऐंगे और वह आपको कोई साधारण सी हानि नहीं पहुंचाऐंगे, क्योंकि ईश्वर ने आप पर अपनी युक्ति वाली पुस्तक अवतरित की है (जिसमें युक्ति के पूर्ण सिद्धान्त अवतरित कर दिए हैं जिन पर व्यवहार करके आप उनकी हानि से सुरक्षित रहेंगे) क्योंकि ईश्वर ने आपको वह कुछ सिखा दिया है जो आप नही जानते थे सत्य यह है कि (यह युक्ति भरी पुस्तक का अवतरण) आप पर ईश्वर की बहुत बड़ी दया है (113) {2:151, 108:1}

اور (اے رسول) اگر آپ پر اللہ کا فضل و رحمت (بصورت نزول وحی) نہ ہوتا تو ان میں سے (منافقوں کا ایک گروہ تو ارادہ کرے گا کہ تم کو گمراہ کرے راہ حق سے. حقیقت یہ ہے کہ نہیں بہکائیں گے وہ مگر اپنے ہی لوگوں کو بہکائیں گیں اور وہ آپ کو کوئی معمولی سا ضرر بھی نہیں پہنچائیں گے کیونکہ اللہ نے آپ پر اپنی حکمت والی کتاب نازل فرمائی ہے (جس میں حکمت کے تمام اصول نازل کر دیے ہیں جن پر عمل کر کے آپ ان کے ضرر سے محفوظ رہیں گے) کیونکہ اللہ نے آپ کو وہ کچھ سکھا دیا ہے جو آپ نہیں جانتے تھے حقیقت یہ ہے کہ (یہ نزول کتاب و حکمت) آپ پر اللہ کا بہت بڑا فضل ہے(۱۱۳)[۲:۱۵۱،۱۰۸:۱]

नोट- पुस्तक व युक्ति एक वस्तु है दो नही और वही खफी युक्ति और उसकी गुप्त बात विधि है (36:1,2; 2:15)

نوٹ:۔ کتاب و حکمت ایک چیز ہے دو نہیں [۲:۱۵۱،۳۶:۱:۲] اور وحی خفی حکمت اور اس کی پوشیدہ بات مصلحت ہے

उनके अधिकांश मंत्रणाओं में मंगल नही हां उचित परामर्श उसका है जो परामर्श के साथ दान दे यदि दान न हो तो परिचित विधि के साथ परामर्श दे और इन परामर्शों और दान का उद्देश्य मानवता का सुधार और भलाई हो और जो कोई ईश्वर की प्रसन्नता प्रापती के लिए ऐसा करेगा तो हम उसे अवश्य उसको बहुत बड़ा फल देंगे (114) {58:12}

<u>ان کے بہت سے مشوروں میں خیر نہیں ہاں درست مشورہ اس کا ہے جو مشورے کے ساتھ صدقہ دے اگر صدقہ نہ ہو تو معروف طریقے کے ساتھ مشورہ دے اور ان مشوروں اور صدقوں کی غرض نوع انسان کی اصلاح اور بھلائی ہو اور جو کوئی اللہ کی رضا جوئی کے لئے ایسا کرے گا تو ہم اسے ضرور اس کا بہت بڑا اجر دیں گے(۱۱۴)[۵۸:۱۲]</u>

और जो व्यक्ति सीधा मार्ग ज्ञात होने के बाद ईशदूत का विरोध करेगा और आस्तिकों के मार्ग के अतिरिक्त और मार्ग पर चलेगा तो हमारा नियम उसको वह दे देगा जो वह ग्रहण करेगा और हम उसको नर्क में प्रविष्ट करेंगे और वह बुरा स्थान है (115)

اور جو شخص سیدھا راستہ معلوم ہونے کے بعد رسول کی مخالفت کرے گا اور مومنوں کے راستے کے علاوہ اور راستے پر چلے گا تو ہمارا قانون اس کو وہ حوالہ کر دے گا جو وہ اختیار کرے گا اور ہم اس کو جہنم داخل کریں گے اور وہ بُری جگہ ہے(۱۱۵)

निःसन्देह ईश्वर क्षमा नही करता यह कि अनेकेश्वर वाद किया जाए साथ उसके और क्षमा करता है इसके अतिरिक्त के पापों (के दण्ड से) जो (पश्चाताप और अपना सुधार करके) स्वयं बचना चाहता है और सत्य यह है कि जो कोई ईश्वर के साथ अनेकेश्वर वाद करे तो वह दूर की पथ भ्रष्टता में पथभ्रष्ट हो जाता है (116) {4:119, 6:54,151, 7:32, 17:29,41, 4:48, 23:31}

بے شک اللہ معاف نہیں کرتا یہ کہ شرک کیا جائے ساتھ اس کے اور معاف کرتا ہے اس کے علاوہ کے جرائم (کی سزا سے) جو (توبہ اور اپنی اصلاح کر کے) خود بچنا چاہتا ہے اور حقیقت یہ ہے کہ جو کوئی اللہ کے ساتھ شریک ٹھہرائے تو وہ دور کی گمراہی میں گمراہ ہو جاتا ہے(۱۱۶)[۴:۱۱۹،۶:۵۴،۱۵۱،۷:۳۲،۱۷:۲۹،۴۱،۴:۴۸،۲۳:۳۱]

वह लोग देवियों के आगे हाथ उठाकर प्रार्थना करते हैं और शैतान को सहायता के लिए पुकारते हैं (117) {9:31}

जिस पर ईश्वर के नियम ने धिक्कार की है कहने लगा मैं तेरे बन्दों से एक निर्धारित अंश ले लिया करूंगा और उनको पथ भ्रष्ट करता रहूंगा और आशाऐं दिलाता रहूंगा और यह शिक्षा देता रहूंगा कि पशुओं के कान चीरते रहे और कहता रहूंगा कि वह ईश्वर की बनाई हुई आकृतियों को बदलते रहें और जिस व्यक्ति ने ईश्वर को छोड़कर शैतान को मित्र बनाया वह स्पष्ट हानि में पड़ गया (119)

वह उनको वचन देता रहेगा और आशाऐं दिलाता रहेगा और जो कुछ शैतान उन्हें वचन देगा वह धोका ही धोका होगा (120)

(जो उसके धोके में आऐंगे) वह वह लोग है जिनका स्थान नर्क है और वह वहां छुटकारा न पाऐंगे (121)

जो लोग आस्था लाऐं और सत्कर्म करते रहें उनको हम उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह सदैव उसमें रहेंगे यह ईश्वर का वचन सच्चा है और ईश्वर से अधिक बात का सच्चा कौन हो सकता है (122)

(मोक्ष) न तो तुम्हारी कामनओं पर है और न पुस्तक धारियों की कामनाओं पर जो व्यक्ति बुरे कर्म करेगा उसे उसी का फल दिया जाएगा और वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी को समर्थक न पाएगा और न सहायक (123)

और जो शुभ कार्य करेगा पुरुष हो या स्त्री और वह आस्तिक भी हो तो ऐसे लोग स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उनका तिल बराबर भी स्वत्व हरण न होगा (124)

और उस व्यक्ति से अच्छा किसका धर्म हो सकता है जिसने ईश्वर के आदेश को स्वीकार किया और वह सदाचारी भी हो, और इब्राहीम के धर्म का उद्योजक हो जो सबसे हट कर एक ईश्वर का हो रहा था और ईश्वर ने इब्राहीम को अपना मित्र बना लिया था (125)

और आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है सब ईश्वर का ही है और ईश्वर हर वस्तु को घेरे हुए है (26)

(ऐ रसूल!) आपसे लोग अनाथ स्त्रियों के बारे में आदेश ज्ञात करेंगे कह देना कि ईश्वर तुम को उनके बारे में आदेश देता है (वही) जो पढ़ा गया है ऊपर तुम्हारे इसी पुस्तक में (सूरत के आरम्भ में-4:37) उन अनाथ स्त्रियों के बारे में वह यह कि जिन्हें तुम उनका अधिकार नही देते जो उनके लिए निर्धारित किया गया है अर्थात मेहर आदि और तुम उनसे विवाह की इच्छा रखते हो यद्यपि उनके साथ कुछ अनाथ बच्चे भी है, और ईश्वर आदेश देता है कि उनके साथ न्याय करो और उनकी भलाई के लिए जो कुछ करोगे उसमें से कोई बात ईश्वर के

وہ لوگ دیویوں کے آگے دست سوال دراز کرتے ہیں اور شیطان مردود کو مدد کے لئے پکارتے ہیں (۱۱۷)[۹:۳۱]

جس پر اللہ کے قانون نے لعنت کی ہے. کہنے لگا میں تیرے بندوں سے ایک مقرر حصہ لے لیا کروں گا (۱۱۸)

اور ان کو گمراہ کرتا رہوں گا اور امیدیں دلاتا رہوں گا اور یہ سکھاتا رہوں گا کہ جانوروں کے کان چیرتے رہیں اور کہتا رہوں گا کہ وہ اللہ کی بنائی ہوئی صورتوں کو بدلتے رہیں. اور جو شخص اللہ کو چھوڑ کر شیطان کو دوست بنائے گا وہ صریح نقصان میں پڑ گیا (۱۱۹)

وہ ان کو وعدے دیتا رہے گا اور امیدیں دلاتا رہے گا اور جو کچھ شیطان انہیں وعدے دے گا وہ دھوکا ہی دھوکا ہوگا (۱۲۰)

(جو اس کے دھوکے میں آئیں گے) وہ وہ لوگ ہیں جن کی جگہ جہنم ہے اور وہ وہاں چھٹکارہ نہ پائیں گے (۱۲۱)

جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کو ہم باغوں میں داخل کریں گے جن کے نیچے نہریں جاری ہوں گی وہ ہمیشہ اس میں رہیں گے یہ اللہ کا وعدہ سچا ہے اور اللہ سے زیادہ بات کا سچا کون ہوسکتا ہے (۱۲۲)

(نجات) نہ تو تمہاری آرزوؤں پر ہے اور نہ اہل کتاب کی آرزوؤں پر جو شخص بُرے عمل کرے گا اسے اسی کا بدلہ دیا جائے گا اور وہ اللہ کے سوا نہ کسی کو حمایتی پائے گا اور نہ مددگار (۱۲۳)

اور جو نیک کام کرے گا مرد ہو یا عورت اور وہ صاحب ایمان بھی ہو تو ایسے لوگ جنت میں داخل ہوں گے ان کی تل برابر بھی حق تلفی نہ کی جائے گی (۱۲۴)

اور اس شخص سے اچھا کس کا دین ہوسکتا ہے جس نے اللہ کے حکم کو قبول کیا اور وہ نیک بھی ہو اور ابراہیم کے دین کا پیروکار ہو جو سب سے الگ ہٹ کر ایک اللہ کا ہو رہا تھا اور اللہ نے ابراہیم کو اپنا دوست بنا لیا تھا (۱۲۵)

اور آسمان اور زمین میں جو کچھ ہے سب اللہ کا ہی ہے اور اللہ ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے (۱۲۶)

(اے رسول!) آپ سے لوگ یتیم عورتوں کے بارے میں حکم معلوم کریں گے کہہ دینا کہ اللہ تم کو ان کے بارے میں فتویٰ دیتا ہے (وہی) جو پڑھا گیا ہے اوپر تمہارے اسی کتاب میں (سورت کے شروع میں ۔۴:۳) ان یتیم عورتوں کے بارے میں وہ یہ کہ جنہیں تم ان کا حق نہیں دیتے جو ان کے لئے مقرر کیا گیا ہے یعنی مہر وغیرہ اور تم ان سے نکاح کی رغبت رکھتے ہو حالانکہ ان کے ساتھ کچھ یتیم بچے بھی ہیں اور اللہ حکم دیتا ہے کہ ان کے ساتھ انصاف کرو اور ان کی بھلائی کے لئے جو کچھ کرو گے اس میں سے کوئی بات اللہ کے علم سے باہر نہ

رہے گا ی (۱۲۷) [۴:۳]

اور اگر کسی عورت کو اپنے شوہر سے زیادتی کا اندیشہ ہو تو میاں بیوی پر کچھ گناہ نہیں کہ آپس میں کسی قرارداد پر صلح کرلیں اور صلح اچھی ہے اور طبیعتیں تو بخل کی طرف مائل ہوتی ہیں اور اگر تم نیکوکاری اور پرہیزگاری کرو گے تو اللہ تمہارے سب کاموں سے واقف ہے (۱۲۸) [۴:۳۴، ۴:۳۴]

تم ہرگز طاقت نہیں رکھتے کہ ایک سے زائد بیویوں کے درمیان عدل کرسکو اور اگرچہ حرص کرو تم (اس لئے نکاح ایک ہی کرنا ہے اور اگر ۴:۳ کے مطابق ایسا وقت آئے کہ ایک سے زائد نکاح کرنے پڑیں تو) اس وقت ایسا بھی نہ کرنا کہ ایک ہی طرف ڈھل جاؤ اور دوسری کو ایسا چھوڑ دو گویا کہ وہ ادھر میں لٹک رہی ہے اور ضروری ہے کہ آپس میں موافقت کرو اور پرہیزگاری کرو تو اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۱۲۹) [۴:۳، ۴:۲۵]

اور اگر موافقت صلح نہ ہوسکے اور میاں بیوی ایک دوسرے سے جدا ہو جائیں تو اللہ ہر ایک کو اپنی دولت سے غنی کردے گا اور اللہ بڑی کشائش والا حکمت والا ہے (۱۳۰)

اور جو کچھ آسمانوں میں اور جو کچھ زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے اور جن لوگوں کو تم سے پہلے کتاب دی گئی تھی ان کو بھی اور (اے محمدؐ) تم کو بھی ہم نے تاکیدی حکم دیا ہے کہ اللہ سے ڈرتے رہو اور اگر کفر کرو گے تو (جان لو) جو کچھ آسمانوں میں اور جو کچھ زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے اور اللہ بے پروا اور حمد و ثنا کے لائق ہے (۱۳۱)

اور (پھر سن لو) جو کچھ آسمانوں میں اور جو کچھ زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے اور اللہ ہی کارساز کافی ہے (۱۳۲)

لوگو! اگر وہ چاہے تو تم کو فنا کردے اور (تمہاری جگہ) اور لوگوں کو پیدا کردے اور اللہ ہر چیز کے پیمانے مقرر کرنے والا ہے (۱۳۳)

جو شخص دنیا کے فائدے کا طالب ہے تو اللہ کے پاس دنیا اور آخرت (دونوں) کے لئے اجر ہیں اور اللہ سنتا دیکھتا ہے (۱۳۴)

اے ایمان والو! انصاف پر قائم رہو اور اللہ کے لئے سچی گواہی دو خواہ تمہارا یا تمہارے ماں باپ اور رشتہ داروں کا نقصان ہی ہو۔ اگر کوئی امیر ہے یا فقیر تو اللہ ان کا خیرخواہ ہے تو تم خواہش نفس کے پیچھے چل کر عدل کو نہ چھوڑنا اگر تم جھوٹی شہادت دوگے یا شہادت سے بچنا چاہو گے تو اللہ تمہارے سب کاموں سے واقف ہے (۱۳۵)

مومنو! اللہ پر اور اس کے رسول پر اور جو کتاب اس نے اپنے

ज्ञान से बाहर न रहेगी (127) {4:3}

और यदि किसी स्त्री को अपने पति से अन्याय की आशंका हो तो पति-पत्नी पर कुछ पाप नहीं कि आपसे में किसी प्रस्ताव पर सहमति कर लें और सहमति अच्छी है और स्वभाव तो कृपणता की ओर आकृष्ट होता है और यदि तुम सुकर्मी और संयम बरतोगे तो ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है (128) {4:34}

तुम कदापि शक्ति नहीं रखते कि एक से अधिक पत्नीयों के मध्य न्याय कर सको और चाहे तुम लोलुपता करो (इसलिए विवाह एक ही करना है और यदि 4:3 के अनुसार ऐसा समय आए कि एक से अधिक विवाह करने पड़े तो) उस समय ऐसा भी न करना कि एक ही ओर झुक जाओ और दूसरी को ऐसा छोड़ दो मानो के वह अधर में लटक रही है और अनिवार्य है कि आपस में सहमति करो और संयम करो तो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (129) {4:3, 4:25}

और यदि सहमति संधि न हो सके और पति-पत्नी एक दूसरे से पृथक हो जाएं तो ईश्वर हर एक को अपनी सम्पत्ति से सम्पन्न कर देगा और ईश्वर बड़ा विस्तार वाला और युक्ति वाला है (130)

और जो कुछ आकाशों में और जो पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है और जिन लोगों को तुम से पहले पुस्तक दी गई थी उनको भी और (ऐ मुहम्मद स0) तुम को भी हमने चैतावनी के साथ आदेश दिया है कि ईश्वर से डरते रहो और यदि इनकार करोगे तो (जान लो) जो कुछ आकाशों में और जो कुछ पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है और ईश्वर चिन्ता रहित और प्रशंसा योग्य है (131)

और (फिर सुन लो) जो कुछ आकाशों में और जो कुछ पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है और ईश्वर ही सहायक प्रयाप्त है (132)

लोगो यदि वह चाहे तो तुम को नाश कर दे और (तुम्हारी जगह) और लोगों को उत्पन्न कर दे और ईश्वर हर वस्तु के माप नियम निर्धारित करने वाला है (133)

जो व्यक्ति दुनिया का लाभ चाहता है तो ईश्वर के पास दुनिया और परलोक (दोनों) के लिए प्रतिदान है और ईश्वर सुनता देखता है (134)

ऐ आस्तिको! न्याय पर स्थापित रहो और ईश्वर के लिए सच्ची साक्ष्य दो चाहे तुम्हारा या तुम्हारे माता-पिता और नातेदारों की हानि हो, यदि कोई धनी है या निर्धन तो ईश्वर उनका हितैषी है तो तुम काम वासना के पीछे चलकर न्याय को न छोड़ देना यदि तुम झूठी साक्ष्य दोगे या साक्ष्य से बचना चाहोगे तो ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है (135)

आस्तिको! ईश्वर पर और उसके ईशदूत पर और

जो पुस्तक उसने अपने ईशदूत (मुहम्मद स0) पर अवतरित की हैं और जो पुस्तकें इससे पहले अवतरित की थी सब पर आस्था लाओ, और जो व्यक्ति ईश्वर और उसके फरिश्तों और उसकी पुस्तकों और उसके ईशदूतों और प्रलय के दिन से इनकार करेगा वह मार्ग से भटक कर दूर जा गिरा (136)

नोट- आयत में पांच बातों पर आस्था लाने का आदेश दिया है यदि इन पांच में से एक का भी इनकार करेगा तो वह आस्तिक नही हो सकता.

(1) ईश्वर पर आस्थाः- हर आस्तिक पर अनिवार्य है कि रचेता स्वामी वही है, इस विश्व में उसका विधान हर पल प्रचलित है जगत की हर वस्तु इन विधानों की श्रृंखला में जकड़ी हुई कार्यरत है (57:1, 59:1, 61:1, 64:1) उसके अस्तित्व में कोई साझी नही (112:1) उसके गुणों में कोई सहयोगी नही (37:180) उसके आदेश में कोई साझी नही (6:57, 12:40,67, 18:26) अतः सबके लिए अनिवार्य है कि एक विधान पर व्यवहार करना, अनेक दल धर्म शास्त्र अनुचित है अनेक दलों की दशा में लोग ईश्व को एक स्वीकार नही कर रहे.

(2) फरिश्तों पर आस्थाः- ईश्वर की उत्पन्न की हुई विश्व की हर शक्ति मानव के लिए बैगार में लगा दी गई है उनको ईश्वर के साथ साझी करना पाप है उनमें से किसी को सजदा करना पाप है, उन शक्तियों को ईश्वर की बताई हुई विधि से प्रयोग करना है अर्थात उनके गुणों के अनुसार उनसे काम लेना है, और इस विश्व में उन शक्तियों के अतिरिक्त ईश्वर के फरिश्ते कार्यरत है उनको स्वीकार करना है ईश्वर ने उनके समर्पित जो कार्य कर रखा है वह कर रहे है और मानव की सहायता भी करते है इन्सान के लिए जगत की शक्तियों से कार्य लेने के लिए मार्ग प्रशस्त करते है (2:24, 7:11, 15:29, 17:61, 18:50, 20:116, 38:72)

(3) पुस्तकों पर आस्थाः- ईश्वर की अवतरित की हुई सब पुस्तकों पर इस प्रकार विश्वास लाए कि सब सत्य है सब में एक पूर्ण जीवन व्यतीत करने का विधान कुरआन वाला ही अवतरित किया गया था (42:13, 4:26) अपने अपने समय पर सब अकेली अकेली अनुसरण योग्य पुस्तक थी (11:17, 42:12) और इस समय अकेला कुरआन बिना किसी सहयोगी के अनुसरण योग्य नायक इमाम है (7:3)

(4) विश्वास ईशदूतों पर- ईश्वर के सब ईशदूतों पर इस प्रकार विश्वास लाए कि सबके सब एक से ईशदूत थे (2:285) उनमें से कोई भी घटिया प्रकार का रसूल नही था, उनमें का हर ईशदूत एक से एक बढ़कर था (2:253) ईश्वर के सब के सब ईशदूत सफल और प्रभुत्व-शाली थे (58:21) सब के सब ईश्वर के शत प्रतिशत आज्ञाकारी और मानवों में अभिनन्दन योग्य थे (21:26,27) किन्तु सब के सब मुहम्मद सहित ईश्वर के बन्दे और मानव थे (14:11, 17:93, 18:110, 41:6) सब के सब ईश्वर की वाणी के आबद्ध थे, नबी पर कुरआन अवतरित होता था और उसके अनुसरण का आदेश (9:106, 6:50, 10:15,109,15, 33:2, 46:9)

(5) महाप्रलय पर विश्वासः- महा प्रलय के दिन पर इस प्रकार विश्वास लाए कि मृत्यु के बाद हम को इस जीवन के कर्मों का उत्तर देने के लिए अवश्य पुनः जीवित किया जाना है, चाहे हमारी हड्डियां भी गल-सड़कर चूर्ण विचूर्ण हो चुकी हो (2:28, 23:16,82, 34:7, 37:16, 75:3,4)

आस्था की क्रियात्मक पुष्टि- परन्तु याद रहे कि इन पांच मौलिक बातों पर केवल मौखिक कथनी श्रृद्धा स्वीकार न होगी आस्था की पुष्टि हर

رسول (محمدؐ) پر نازل کی ہے اور جو کتابیں اس سے پہلے نازل کی تھیں سب پر ایمان لاؤ اور جو شخص اللہ اور اس کے فرشتوں اور اس کی کتابوں اور اس کے رسولوں اور روز قیامت سے انکار کرے گا وہ راستے سے بھٹک کر دور جا گرا (۱۳۶)

نوٹ:۔ آیت میں پانچ باتوں پر ایمان لانے کا حکم دیا ہے اگر ان پانچ میں سے ایک کا بھی انکار کرے گا تو وہ مومن نہیں ہوسکتا.

(۱) ایمان باللہ۔ ہر مومن پر لازم ہے کہ اللہ پر اس طرح ایمان لائے کہ اس دنیا کا خالق و مالک وہی ہے اس کائنات میں اس کے قانون ہر آن جاری و ساری ہیں. کائنات کی ہر چیز ان قانون کی زنجیروں میں جکڑی ہوئی مصروف عمل ہے (۵۷:۱، ۵۹:۱، ۶۱:۱، ۶۴:۱) اس کی ذات میں کوئی شریک نہیں (۱۱۲:۱) اس کی صفات میں کوئی شریک نہیں (۳۷:۱۸۰) اس کے حکم میں کوئی شریک نہیں (۶:۵۷، ۱۲:۴۰، ۶۷، ۱۸:۲۶) اس لئے سب کے لئے ایک قانون پر عمل کرنا ہے مختلف فرقے فقہ غلط ہے مختلف فرقوں کی شکل میں لوگ اللہ کو ایک تسلیم نہیں کرر ہے۔

(۲) ایمان بالملائکہ۔ اللہ کی پیدا کردہ ہر کائناتی قوت انسان کے لئے مسخر (بیگاری) کردی گئی ہیں ان کو اللہ کی ذات میں شریک کرنا گناہ ہے ان میں سے کسی کو سجدہ کرنا گناہ ہے ان قوتوں کو اللہ کے بتائے ہوئے طریقے سے استعمال کرنا ہے. یعنی ان کی صفات کے مطابق ان سے کام لینا ہے اور اس کائنات میں ان طاقتوں کے علاوہ اللہ کے فرشتے سرگرم عمل ہیں. ان کو تسلیم کرنا ہے اللہ نے ان کے سپرد جو کام کر رکھا ہے وہ کرر ہے ہیں اور انسان کی مدد بھی کرتے ہیں. انسان کے لئے کائناتی قوتوں سے کام لینے کے لئے راہ ہموار کرتے ہیں (۲:۲۴، ۷:۱۱، ۱۵:۲۹، ۱۷:۶۱، ۱۸:۵۰، ۲۰:۱۱۶، ۳۸:۷۲)

(۳) ایمان بالکتب۔ اللہ کی نازل کی ہوئی تمام کتابوں پر اس طرح ایمان لائے کہ سب برحق ہیں. سب کے اندر واحد مکمل ضابطہ حیات قرآن والا ہی نازل کیا گیا تھا (۴۲:۱۳، ۴:۲۶) اپنے اپنے وقت پر یہ اکیلی اکیلی واجب الاتباع امام تھیں (۱۱:۱۷، ۴۲:۱۲) اور اس وقت اکیلا قرآن بلاشرکت غیرے واجب الاتباع امام ہے (۷:۳)

(۴) ایمان بالرسل ۔ اللہ کے تمام رسولوں پر اس طرح ایمان لائے کہ سب کے سب ایک سے رسول تھے (۲:۲۸۵) ان میں سے کوئی بھی گھٹیا قسم کا رسول نہیں تھا ان میں کا ہر رسول ایک سے ایک بڑھ کر تھا (۲:۲۵۳) اللہ کے سب کے سب رسول کامیاب و غالب تھے (۵۸:۲۱) سب کے سب اللہ کے سو فیصد فرمانبردار اور نوع انسان میں واجب التکریم تھے. (۲۱:۲۶، ۲۷) لیکن سب کے سب محمدؐ سمیت اللہ کے بندے اور بشر تھے (۱۴:۱۱، ۱۷:۹۳، ۱۸:۱۱۰، ۴۱:۶) سب کے سب وحی الٰہی کے پابند تھے نبی پر قرآن نازل ہوتا تھا اور اس کی پیروی کا حکم (۹:۱۰۶، ۶:۵۰، ۱۰:۱۵، ۱۰۹، ۱۵، ۳۳:۲، ۴۶:۹)

(۵) ایمان یوم الآخر۔ آخرت کے دن پر اس طرح ایمان لائے کہ موت کے بعد ہم کو اس زندگی کے اعمال کی جوابدہی کے لئے ضرور ضرور دوبارہ پیدا کیا جانا ہے، خواہ ہماری ہڈیاں بھی گل سڑ کر ریزہ ریزہ ہوچکی ہوں (۲:۲۸، ۲۳:۱۶، ۸۲، ۳۴:۷، ۳۷:۱۶، ۷۵:۳، ۴)

आस्तिक का कर्म करेगा, ईश्वर, फरिश्ते, पुस्तकें, ईशदूतों और परलोक पर मौखिक विश्वास और व्यवहारतः इनकार हो तो ऐसा विश्वास किसी काम नही आएगा, ईश्वर के यहां ऐसी श्रृद्धा का कोई मूल्य नही, उदाहरणार्थ- ईश्वर पर आस्था के बाद यदि कोई व्यक्ति व्यवहारतः ईश्वर के अतिरिक्त के आदेश को मानकर उस पर क्रिया करे और ईश्वर के अतिरिक्त को दुनिया के विषय में कर्ता धर्ता मान कर ईश्वर के अतिरिक्त से प्रार्थनाऐं करता रहे तो ईश्वर पर ऐसी आस्था रखने वालों के बारे में आदेश हुआ है-

(12:106) उनमें से अधिकांश ईश्वर को मानते हैं परन्तु इस प्रकार कि उसके साथ दूसरों को साझी करते हैं इसलिए मौखिक मानना बेकार है,

ایمان کی عملی تصدیق.لیکن یادر ہے کہ ان پانچ بنیادی شیقوں پر محض زبانی کلامی ایمان قبول نہ ہوگا.ایمان کی تصدیق ہر مومن کا عمل کرے گا.اللہ، ملائکہ، کتب، رسولوں اور آخرت پر زبانی ایمان اور عملاً انکار ہوتو ایسا ایمان کسی کام نہیں آئے گا.اللہ کے یہاں ایسے ایمان کی کوئی قیمت نہیں.مثال کے طور پر اللہ پر ایمان کے بعد اگر کوئی شخص عملاً غیر اللہ کو دنیا کے امور میں متصرف مان کر غیر اللہ سے مرادیں مانگتا رہے تو ایمان باللہ کے ایسے دعویداروں کے متعلق ارشاد ہوا ہے

(۱۰۶:۱۲) ان میں سے اکثر اللہ کو مانتے ہیں مگر اس طرح کہ اس کے ساتھ دوسروں کو شریک کرتے ہیں اس لئے زبانی ماننا بیکار ہے.

जो लोग विश्वास लाए फिर नास्तिक हो गए फिर अस्तिक हुए फिर नास्तिक हो गए फिर नास्तिकता में बढ़ते गए उनको ईश्वर न तो बख्शेगा और न सीधा मार्ग दिखाएगा (137) {2:229,230}

उन कपटियों को पीड़ा देने वाले दण्ड की सूचना दे दी, (138)

جولوگ ایمان لائے پھر کافر ہو گئے پھر ایمان لائے پھر کافر ہو گئے پھر کفر میں بڑھتے گئے ان کو اللہ نہ تو بخشے گا اور نہ سیدھا راستہ دکھائے گا (۱۳۷)[۲۳۰،۲۲۹:۲]

ان منافقوں کو دردناک عذاب کی خبر دے دو (۱۳۸)

नोट- कथनो की पुस्तको में धर्म च्युत को वध का दण्ड है जो एक बार मुसलमान होकर फिर इस्लाम छोड़ दे तो उस को वध कर दिया जाएगा यह नियम आयत 137 के विरुध है और जगत विधि के भी विरुध है ईश्वर ने इस्लाम छोड़ने वाले को वध करने को नही कहा अपितु यह कहा है कि ईश्वर उन को क्षमा नही करेगा और पीड़ा देने वाला दण्ड होगा सीधा मार्ग न मिलेगा दूसरी आयत में भी यह सुचना दी है कि जो लोग श्रद्धा लाने के बाद नास्तिक हो गए उन के सत्य कर्म नष्ट हो गए ईश्वर उन को दण्ड देगा, {3:90,2:108 4:137} के अनुसार उन को पथ भृष्ट कहा है,

{5:5,63:3-4} आदि में यह कहा कि वह इस्लाम स्वीकार करने के बाद धर्म च्युत हो गए अतः उन के कर्म नष्ट हो गए मुसलमानों को उनसे बचकर रहना है, और परलोक में उनको पीड़ा देने वाला दण्ड है, इन बातों के अतिरिक्त उनको वध करने को नही कहा,

نوٹ:۔کتب روایات میں مرتد کو قتل کی سزا ہے جو ایک بار مسلمان ہو کر پھر اسلام چھوڑ دے تو اس کو قتل کر دیا جائے گا یہ قانون آیت ۱۳۷ کے خلاف ہے اور دستور زمانہ کے بھی خلاف ہے اللہ نے اسلام چھوڑنے والے کو قتل کرنے کو نہیں کہا بلکہ یہ کہا ہے کہ اللہ ان کو معاف نہیں کرے گا اور دردناک عذاب ہوگا.سیدھا راستہ نہ ملے گا دوسری آیت میں بھی یہ خبر دی ہے کہ جولوگ ایمان لانے کے بعد کافر ہو گئے ان کے اعمال برباد ہو گئے اللہ ان کو سزا دے گا (۳:۹۰،۲:۱۰۸،۴:۱۳۷) کے مطابق ان کو بھٹکا ہوا کہا ہے (۵:۵،۶۳:۳،۶۳:۴) وغیرہ میں یہ کہا کہ وہ ایمان لانے کے بعد مرتد ہو گئے.اس لئے ان کے عمل برباد ہو گئے.مسلمانوں کو ان سے بچ کر رہنا ہے اور آخرت میں ان کو دردناک عذاب ہے ان باتوں کے علاوہ ان کو قتل کرنے کو نہیں کہا.

अब देखिए जगत की रीति, यदि मुसलमान यह अधिकार रखते हैं कि धर्म च्युत को वध कर देना चाहिए तो यह अधिकार दूसरो को भी देना पड़ेगा अर्थात जो व्यक्ति अपना गत धर्म छोड़कर मुसलमान हो जाए और होते हैं तो उनको यह अधिकार है कि जो उनका आदमी मुसलमान हो गया है वह उसको वध कर दे, न्याय की बात है परन्तु यह नियम बिल्कुल अनुचित है "ला इकराहा फिद्दीन" धर्म में कोई बलात नही जो व्यक्ति जो धर्म स्वीकार करना चाहे वह स्वतंत्र है करे अतः धर्म च्युत को वध करने का दण्ड कुरआन के विरुध है जगत की रीति भी अनुचित बताती है, धर्म च्युत को वध नही किया जाएगा,

اب دیکھئے دنیا کا دستور.اگر مسلمان یہ حق رکھتے ہیں کہ مرتد کو قتل کر دینا چاہیے تو یہ حق دوسروں کو بھی دینا پڑے گا یعنی آدمی اپنا سابقہ مذہب چھوڑ کر مسلمان ہو جائے اور ہوتے ہیں تو ان کو یہ حق ہے کہ جو ان کا آدمی مسلمان ہو گیا ہے وہ اس کو قتل کر دیں.انصاف کی بات ہے مگر یہ قانون بالکل غلط ہے لا اکراہ فی الدین.دین میں کوئی زبردستی نہیں جو آدمی جو دین اختیار کرنا چاہے وہ آزاد ہے کرے.اس لئے مرتد کو قتل کرنے کی سزا قرآن کے خلاف ہے دستور زمانہ بھی غلط بتاتا ہے مرتد کو قتل نہیں کیا جائے گا.

जो अस्तिको को छोड़ कर नास्तिको को मित्र बनाते हैं, क्या वह उनके यहां सम्मान प्रप्त करना चाहते हैं तो याद रखें सम्मान तो सारा ईश्वर के नियम का पालन करने में है, (139)

और ईश्वर ने तुम्हारे लिए अपनी प्रस्तक में (यह ओदेश अवतरित किया है) कि जब तुम (कहीं) सुनो कि ईश्वर की आयतों का इनकार हो रहा है, और उन की हंसी उड़ायी जाती है, तो जब तक वह लोग और बाते न करने लगें उन के पास मत बैठे अन्यथा तुम भी उन जैसे हो जाओगे कुछ शंका नही कि ईश्वर कपटियों और नास्तिकों सब को नर्क में संग्रह करने वाला है, (140)

جو مومنوں کو چھوڑ کر کافروں کو دوست بناتے ہیں کیا وہ ان کے یہاں عزت حاصل کرنی چاہتے ہیں تو یاد رکھیں عزت تو ساری اللہ کے قانون کی پابندی کرنے میں ہے (۱۳۹)

اور اللہ نے تمہارے لئے اپنی کتاب میں (یہ حکم) نازل کیا ہے کہ جب تم (کہیں) سنو کہ اللہ کی آیتوں سے انکار ہو رہا ہے اور ان کی ہنسی اڑائی جاتی ہے تو جب تک وہ لوگ اور باتیں نہ کرنے لگیں ان کے پاس مت بیٹھو.ورنہ تم بھی ان جیسے ہو جاؤ گے.کچھ شک نہیں کہ اللہ منافقوں اور کافروں سب کو دوزخ میں اکٹھا کرنے والا ہے (۱۴۰)

में संग्रह करने वाला है. (140)
उन (कपटियों) की यह दशा है कि तुम्हारी समस्या पर गहरी दृष्टि रखते है यदि तुम्हें ईश्वर की ओर से विजय मिलती है तो कहते है क्या हम तुम्हारे साथ न थे और यदि नास्तिकों का पल्ला भारी होता है तो उनसे कहते हैं क्या हम तुम पर अधिपति न थे और तुमको मुसलमानों से बचाया नही, तो ईश्वर तुम में प्रलय के दिन न्याय कर देगा, और ईश्वर नास्तिकों को आस्तिकों पर कदापित अधिपत्य नही देगा (141)
वह कपटि ईश्वर को धोका देना चाह रहे है यद्यपि ईश्वर उनके धोके का प्रभाव स्वयं उन्ही पर डाल रहा है और जब वह नमाज़ को खड़े होते है तो आलसी और शिथिल होकर लोगों को दिखाने को और ईश्वर की याद ही नही करते परन्तु वह कम (क्योंकि वह नमाज़ में उन्माद की स्थिति में होते है ईश्वर के आदेशों का पालन नही करते) (142)
नास्तिकता और आस्तिकता के मध्य विचलित है (कि किधर जाऐं) न उन (मुसलमानों) की ही ओर है और न उन (नास्तिकों) ही की ओर है (उन्हें ईश्वर के नियम ने उनके कपटाचार की चाल के कारण पथ भ्रष्ट कर दिया है और जिसे ईश्वर का नियम पथ भ्रष्ट कर दे तो तुम उसके लिए कोई मार्ग नही निकाल सकते (143) {10:108}
ऐ आस्तिको! मुसलमानों को छोड़ कर उन नास्तिकों को अपना मित्र न बनाओ (जो तुम्हारे शत्रु है और तुम्हें मिटाने पर तुले बैठे हैं) क्या तुम चाहते हो कि ईश्वर का स्पष्ट आरोप अपने ऊपर ले लो? (144)
इसमें कोई शंका नही कि कपटि नर्क में सबसे निचले भाग में पहुंचेंगे और तुम किसी को उनका सहायक न पाओगे (145)
हां, जिन्होंने पश्चाताप किया और अपनी दशा को ठीक किया और ईश्वर की पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ा और विशेष ईश्वर के आज्ञाकारी हो गए तो ऐसे लोग आस्तिकों के दल में होंगे और ईश्वर समीप आस्तिकों को बड़ा फल देगा (146) {3:103, 19:12, 4:126; 39:2,3}

اُن (منافقوں) کا یہ حال ہے کہ تمہارے معاملات پر گہری نظر رکھتے ہیں اگر تمہیں اللہ کی طرف سے فتح ملتی ہے تو کہتے ہیں کیا ہم تمہارے ساتھ نہ تھے اور اگر کافروں کا پلہ بھاری ہوتا ہے تو ان سے کہتے ہیں کیا ہم تم پر غالب نہیں تھے اور تم کو مسلمانوں سے بچایا نہیں. تو اللہ تم میں قیامت کے دن فیصلہ کر دے گا اور اللہ کافروں کو مومنوں پر ہرگز غلبہ نہیں دے گا (۱۴۱)
وہ منافق اللہ کو دھوکا دینا چاہ رہے ہیں حالانکہ اللہ ان کے دھوکے کا اثر خود انہیں پر ڈال رہا ہے. اور جب وہ نماز کو کھڑے ہوتے ہیں تو سست اور کاہل ہو کر لوگوں کو دکھانے کو. اور اللہ کو یاد ہی نہیں کرتے. مگر بہت کم (اللہ کے احکام کی پابندی نہیں کرتے کیونکہ وہ نماز میں نشے کی حالت میں ہوتے ہیں) (۱۴۲)
کفر و ایمان کے درمیان مذبذب ہیں (کہ کدھر جائیں) نہ ان (مسلمانوں) کی ہی طرف ہیں اور نہ ان (کافروں) ہی کی طرف ہیں (انہیں اللہ کے قانون نے ان کی منافقانہ چال کی وجہ سے گمراہ کر دیا ہے) اور جسے اللہ کا قانون ہی گمراہ کر دے تو تم اس کے لئے کوئی راہ نہیں نکال سکتے (۱۴۳) [۱۰:۱۰۸]
اے ایمان والو! مسلمانوں کو چھوڑ کر ان کافروں کو اپنا دوست نہ بناؤ (جو تمہارے دشمن ہیں اور تمہیں مٹانے پر تلے بیٹھے ہیں) کیا تم چاہتے ہو کہ اللہ کا کھلا ہوا الزام اپنے اوپر لے لو؟ (۱۴۴)
اس میں کوئی شک نہیں کہ منافق دوزخ کے سب سے نچلے طبقے میں پہنچیں گے اور تم ان کا کسی کو مددگار نہ پاؤ گے (۱۴۵)
ہاں جنہوں نے توبہ کی اور اپنی حالت کو درست کیا اور اللہ کی کتاب کو مضبوط پکڑا اور خاص اللہ کے فرمانبردار ہو گئے تو ایسے لوگ مومنوں کے گروہ میں ہوں گے اور اللہ عن قریب مومنوں کو بڑا ثواب دے گا (۱۴۶) [۳:۱۰۳، ۱۹:۱۲، ۴:۱۲۶، ۳۹:۲،۳]

नोट- (4:146, 39:2,3, 30:31,32) इन आयात को पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि वातसिमू बिल्लाही से क्या अर्थ है इसका तात्पर्य है कि ईश्वर की पुस्तक कुरआन में जो नियम आदेश अंकित है उन पर दृढ़ता के साथ कार्य किया जाऐ और हर प्रकार के मतभेद चाहे वह धार्मिक हों या संसारिक हों से बचा जाए इसलिए कि ईश्वर ने मतभेद करने वाले को अनेकेश्वर वादी बताया है और मुहम्मद की उम्मत से निष्कासित किया है, (6:160, 30:31,32) और अनेकेश्वर वादी की सहायता न दुनिया में होती है और न प्रलोक में, अतः पुस्तक के अनुसार हर प्रकार के मतभेद से बचकर ईश्वर की पुस्तक पर कार्य अनिवार्य है.

نوٹ:۔ (۴:۱۴۶، ۳۹:۲،۳، ۳۰:۳۱،۳۲) ان آیات کو پڑھنے سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ واعتصموا باللہ سے کیا مراد ہے اس سے مراد یہ ہے کہ اللہ کی کتاب قرآن میں جو قانون احکام درج ہیں ان پر مضبوطی کے ساتھ عمل کیا جائے اور ہر طرح کے اختلاف چاہے وہ دینی ہوں یا دنیوی ہوں سے بچا جائے اس لئے کہ اللہ نے اختلاف کرنے والے کو مشرک بتایا ہے (۳۰:۳۱،۳۲) اور محمدؐ کی امت سے خارج کیا ہے (۶:۱۶۰، ۳۰:۳۱،۳۲) اور مشرک کی مدد نہ دنیا میں ہوتی ہے اور نہ آخرت میں اس لئے کتاب کے مطابق ہر طرح کے اختلاف سے بچ کر اللہ کی کتاب پر عمل ضروری ہے.

लोगो! यदि तुम ईश्वर की निधि का आदर करो और ईश्वर पर (सच्चा) विश्वास रखो तो ईश्वर को क्या पड़ी है कि वह तुम्हें कष्ट दे और ईश्व आदर करने वाला और ज्ञाता है (147)

لوگو! اگر تم اللہ کی نعمتوں کی قدر کرو اور اللہ پر (سچا) ایمان رکھو تو اللہ کو کیا پڑی ہے کہ وہ تمہیں عذاب دے. اور اللہ قدر دان اور جاننے والا ہے (۱۴۷)

नहीं अभिरूचि ईश्वर को कि कोई किसी को प्रत्यक्षतः बुरा कहे बात के साथ अर्थात किसी की बुराई स्पष्ट न की जाए परन्तु उस व्यक्ति को (आज्ञा है) कि जिस पर अत्याचार हो (और वह अपनी सहायता के लिए ऐसा कर सकता है) और ईश्वर सब कुछ सुनने वाला है और जानने वाला है (148) {42:40,45}

نہیں پسند کرتا اللہ کہ کوئی کسی کو اعلانیہ برا کہے بات کے ساتھ یعنی کسی کی بُرائی ظاہر نہ کی جائے مگر اس شخص کو (اجازت ہے) کہ جس پر ظلم ہو (اور وہ اپنی دادرسی کے لئے ایسا کرسکتا ہے) اور اللہ سب کچھ سننے والا ہے اور جاننے والا ہے (۱۴۸) [۴۵،۴۰:۴۲]

यदि तुम लोग भलाई स्पष्ट करोगे या छुपा कर तो ईश्वर भी क्षमा करने वाला है और अनुमान करने वाला है (149)

اگر تم لوگ بھلائی ظاہر کرو گے یا چھپا کر کرو گے یا بُرائی سے درگزر کرو گے تو اللہ بھی معاف کرنے والا ہے اور اندازہ کرنے والا ہے (۱۴۹)

जो लोग ईश्वर से और उसके रसूल से नास्तिकता कर रहे हैं और ईशदूत में अन्तर करना चाहते हैं (अर्थात आस्था बनाते हैं कि ईश्वर का आदेश यह है और ईशदूत का यह है अर्थात कुरआन के मध्य जो स्पष्ट आदेश है उस पर कर्म नहीं करते और कहते हैं इस पर व्यवहार अनिवार्य है ईश्वर का आदेश निरस्त हो गया तो यह अन्तर हुआ और बड़ा अत्याचार) और कहते हैं कि हम कतिपय रसूलों को मानते हैं और कतिपय को नहीं मानते और चाहते हैं इसके मध्य अर्थात आस्तिकता और नास्तिकता के मध्य कोई मार्ग स्वीकार करें (150)

جو لوگ اللہ سے اور اس کے رسول سے کفر کر رہے ہیں اور اللہ اور اس کے رسولوں میں فرق کرنا چاہتے ہیں (یعنی عقیدہ بناتے ہیں کہ اللہ کا حکم یہ ہے اور رسول کا یہ ہے یعنی قرآن کے اندر جو صاف حکم ہے اس پر عمل نہیں کرتے اور کہتے ہیں کہ اس کے بارے میں رسول نے یہ حکم دیا ہے اس پر عمل ضروری ہے اللہ کا حکم منسوخ ہوگیا تو یہ فرق ہوا اور بڑا ظلم) اور کہتے ہیں کہ ہم بعض رسولوں کو مانتے ہیں اور بعض کو نہیں مانتے اور چاہتے ہیں کہ اس کے درمیان یعنی ایمان اور کفر کے درمیان کوئی راستہ اختیار کریں (۱۵۰)

निःसन्देह वह लोग नास्तिक हैं और नास्तिकों के लिए हमने अपमानित करने वाला कष्ट तैयार कर रखा है (151)

بلا شبہ وہ لوگ کافر ہیں اور کافروں کے لئے ہم نے ذلت کا عذاب تیار کر رکھا ہے (۱۵۱)

और जो लोग कि ईश्वर और उसके सब ईशदूतों पर आस्था लाएं और आस्था लाने में उन्होंने उनमें से किसी एक के मध्य अन्तर नहीं किया ईश्वर उनके कार्य के अनुसार उनको फल अवश्य देगा और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (52)

اور جو لوگ کہ اللہ اور اس کے سب رسولوں پر ایمان لائے اور ایمان لانے میں انہوں نے ان میں سے کسی ایک کے درمیان فرق نہیں کیا اللہ ان کے کام کے مطابق ان کو اجر ضرور دے گا اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۱۵۲)

(ऐ ईशदूत!) पुस्तक वाले आप से मांग करेंगे कि तुम (अपने ईशदूत होने के प्रमाण में) उन पर आकाश से एक लिखी लिखाई पुस्तक अवतरित करा दो (यह कोई नई बात न होगी उनके पूर्वज) मूसा अ० से इससे भी बड़ी-बड़ी मांगे कर चुके हैं उन्होंने कहा था मूसा ईश्वर को हमारे सामने ले आओ ताकि हम उसे देख लें उनकी इस अवज्ञा के अपराध में उन पर बिजली गिरी और अतिरिक्त यह कि (सत्य धर्म का) उज्ज्वल प्रमाण उनके पास आ चुका था फिर भी वह बछड़े की पूजा करने लगे इस पर भी हमने उनको क्षमा किया और मूसा को खुला अधिपत्य (और खुला प्रमाण) दिया (153)

(اے رسول!) اہل کتاب آپ سے فرمائش کریں گے کہ تم (اپنے رسول ہونے کے ثبوت میں) ان پر آسمان سے ایک لکھی لکھائی کتاب نازل کرادو (یہ کوئی نئی بات نہ ہوگی ان کے آباؤ اجداد) موسیٰ سے اس سے بھی بڑی بڑی فرمائش کر چکے ہیں انہوں نے کہا تھا موسیٰ! اللہ کو ہمارے سامنے لے آؤ تاکہ اسے دیکھ لیں ان کی اس سرکشی کے جرم میں ان پر بجلی گری اور باوجود یہ کہ (دین حق کی) روشن دلیلیں ان کے پاس آچکی تھیں پھر بھی وہ بچھڑے کی پوجا کرنے لگے۔ اس پر بھی ہم نے ان سے درگزر کیا اور موسیٰ کو کھلا غلبہ (اور صریح دلیل) دیا (۱۵۳)

और हमने बनी इसराईल से वचन लेने के लिए तूर पर्वत उन पर ऊंचा किया (अर्थात) वचन लेते समय वह लोग पर्वत के आंचल में थे और उन्हें आदेश दिया कि द्वार में विनीत के साथ प्रविष्ट होना और यह भी आदेश दिया कि सब्त के दिन में आदेश की अवज्ञा न करना यहां तक कि हमने उनसे पक्का वचन लिया (154) {4:47, 2:58,59}

اور ہم نے بنی اسرائیل سے عہد لینے کے لئے کوہ طور ان پر بلند کیا (یعنی) عہد لیتے وقت وہ لوگ پہاڑ کے دامن میں تھے اور انہیں حکم دیا کہ دروازے میں عاجزی کے ساتھ داخل ہونا اور یہ بھی حکم دیا کہ سبت کے دن میں حکم کی خلاف ورزی نہ کرنا غرض ہم نے ان سے مضبوط عہد لیا (۱۵۴) [۴۷:۴، ۵۹،۵۸:۲]

(किन्तु उन्होंने वचन को तोड़ा) तो उनके वचन तोड़ देने और ईश्वर की आयतों से इनकार करने और ईशदूतों से अनुचित लड़ने, विरोध करने और यह कहने के कारण कि हमारे हृदयों पर परदे पड़े हुए

(لیکن انہوں نے عہد کو توڑا) تو ان کے عہد توڑ دینے اور اللہ کی آیتوں سے کفر کرنے اور انبیاء سے ناحق لڑنے مخالفت کرنے اور یہ کہنے کے سبب کہ ہمارے دلوں پر

है (हम किसी दूसरे की बात स्वीकार नहीं करेंगे) अपितु उनके इनकार के कारण ईश्वर के नियम ने उनके हृदयों पर मोहर कर दी है तो वह कम ही आस्था लाते हैं (155)

پردے پڑے ہوئے ہیں (ہم کسی دوسرے کی بات قبول نہیں کریں گے) بلکہ ان کے کفر کے کارن (وجہ) اللہ کے قانون نے ان کے دلوں پر مہر کر دی ہے تو وہ کم ہی ایمان لاتے ہیں (۱۵۵)

और यह मोहर उनके इनकार के कारण और मरयम पर एक दोषारोपण लगाने के कारण लगी (156) {2:59}

اور یہ مہران کے کفر کے سبب اور مریم پر ایک بہتان عظیم باندھنے کے سبب لگی ہے (۱۵۶)[۲:۵۹]

और यह कहने लगे कि हमने मरयम के पुत्र ईसा को जो ईश्वर का ईशदूत (कहता था) वध कर दिया (किन्तु ऐसा नहीं है) न तो उन्होंने उसे वध किया और न सूली पर चढ़ाकर वध किया अपितु वह भ्रम में पड़ गये हैं (कठिन हो गया है) और जिन लोगों ने उसके विषय में मतभेद किया (अर्थात ईसाईयों ने कहा कि वह सूली पर चढ़ाए गए और फिर जीवित हो गए) वह भी भ्रम में पड़े हुए हैं उनके पास भी गुमान और अनुमान के अतिरिक्त कोई सत्य ज्ञान नहीं है जबकि यहूदियों ने ईसा को कदापि वध नहीं किया (157)

اور یہ کہنے لگے کہ ہم نے مریم کے بیٹے عیسیٰ کو جو اللہ کا رسول (کہتا تھا) قتل کر دیا۔ (لیکن ایسا نہیں ہے) نہ تو انہوں نے اسے قتل کیا اور نہ سولی پر چڑھا کر ہلاک کیا بلکہ وہ شبہ میں پڑ گئے ہیں (مشکل ہو گیا ہے) اور جن لوگوں نے اس کے بارے میں اختلاف کیا (یعنی عیسائیوں نے کہا کہ وہ سولی پر چڑھائے گئے اور پھر زندہ ہو گئے) وہ بھی شک میں پڑے ہوئے ہیں ان کے پاس بھی گمان اور ظن کے سوا کوئی یقینی علم نہیں ہے بہر حال یہودیوں نے عیسیٰ کو ہرگز قتل نہیں کیا (۱۵۷)

अपितु ईश्वर ने उनको पूर्णतया अपनी रक्षा में लेकर अपनी ओर से श्रेष्ठता प्रदान की अर्थात उनको चमका दिया (158) {94:4}

بلکہ اللہ نے ان کو پوری طرح اپنی حفاظت میں لے کر اپنی طرف سے بلندی عطا کی یعنی ان کو چمکا دیا (۱۵۸)[۹۴:۴]

नोट- इस धारा में अंकित "रफआहू" का अर्थ देखने के लिए आयत (37:99, 19:57, 37:97,99, 8:30, 61:14} जिनमें श्रेष्ठ करने पलायन करने और ईश्वर की रक्षा अंकित है अतः ईश्वर ने श्रीमान ईसा को जीवित नहीं उठाया अपितु उनको अपने समय पर मृत्यु दी और उनको उच्चतर किया, अर्थात शत्रु उनको अपमानित हीन करना चाहते थे किन्तु आज ईसा का नाम मुहम्मद स० के साथ ऊंचा और उज्ज्वल है मृत्यु की आयत (3:35) और (5:117) देखो और (61:14) में ईसा के अधिपत्य की सूचना है इन सब वास्तविकताओं को देखने के बाद यह कहना कि ईसा को ईश्वर ने जीवित उठा लिया और वह महाप्रलय के निकट वापस आकर उम्मत मुहम्मद की सहायता करेंगे और उन पर सब पुस्त वाले आस्था लाएंगे उनकी मृत्यु से पहले तो यह कुरआन के विपरीत है

نوٹ:۔ اس آیت میں درج ''رَفَعَہٗ'' کا مطلب دیکھنے کے لئے آیت (۳۷:۹۹، ۱۹:۵۷، ۳۷:۹۷، ۹۹، ۸:۳۰، ۶۱:۱۴) جن میں بلند کرنے ہجرت کرنے اور اللہ کی حفاظت درج ہے اس لئے اللہ نے حضرت عیسیٰ کو زندہ نہیں اٹھایا بلکہ ان کو اپنے وقت پر موت دی اور ان کو بلند کیا یعنی دشمن ان کو ذلیل کرنا چاہتے تھے لیکن آج عیسیٰ کا نام محمدؐ کے ساتھ بلند اور روشن ہے۔ وفات کی آیت (۳:۵۵) اور (۵:۱۱۷) دیکھو اور (۶۱:۱۴) میں عیسیٰ کے غلبہ کی خبر ہے ان سب حقیقتوں کو دیکھنے کے بعد یہ کہنا کہ عیسیٰ کو اللہ نے زندہ اٹھا لیا اور وہ قرب قیامت واپس آ کر امت محمدؐ کی مدد کریں گے اور ان پر سب اہل کتاب ایمان لائیں گے ان کی موت سے پہلے تو یہ قرآن کی خلاف ورزی ہے۔

और निःसन्देह जो वास्तव में पुस्तक धारी है वह निःसन्देह इल्ला (ईसा और कुरआन की भविष्य वणी के अनुसार) आस्था लाएगा उस पर अर्थात मुहम्मद स० पर अपनी मृत्यु से पहले और वह प्रलय के दिन उन पर शाक्षी होंगे (159) {4:14तो 7, 36:15,47, 3:55, 3:84,85, 42:13, 61:6}

اور بے شک جو حقیقت میں اہل کتاب ہے وہ یقیناً اِلَّا (عیسیٰ اور قرآن کی پیش گوئی کے مطابق) ایمان لائے گا اس پر یعنی محمدؐ پر اپنی موت سے پہلے اور وہ قیامت کے دن ان پر گواہ ہوں گے (۱۵۹)[۴:۱۴تا۷، ۳۶:۱۵، ۴۷، ۳:۵۵، ۸۴، ۸۵، ۴۲:۱۳، ۶۱:۶]

नोट-पहले यह विचार किया जाए धारा में शब्द पुस्तक वाले आया है इससे तात्पर्य कौन पुस्तक वाले हैं जिस समय कुरआन अवतरित हो रहा था उस समय कुरआन ने यहूद और नसारा को पुस्तक वाले कहा है यद्यपि मुसलमान भी पुस्तक वाले हैं परन्तु उस समय सम्बोधन यहूद और नसारा से था और उस समय पुस्तक वालों में दो दल थे एक ईमानदार और एक कपटि जिनकी कुरआन ने पहचान बता दी है यह कह कर कि उन पुस्तक वालों में से जो कपटि हैं वह तो यही चाहते हैं कि तुम को भी सत्य मार्ग से पथ भ्रष्ट कर दें आयत प्रस्तुत है-

نوٹ:۔ پہلے یہ غور کیا جائے آیت میں لفظ اہل کتاب آیا ہے اس سے مراد کون اہل کتاب ہیں جس وقت قرآن نازل ہو رہا تھا اس وقت قرآن نے یہود اور نصاریٰ کو اہل کتاب کہا ہے۔ حالانکہ مسلمان بھی اہل کتاب ہیں مگر اس وقت خطاب یہود اور نصاریٰ سے تھا۔ اور اس وقت ان اہل کتاب میں دو طبقے تھے ایک ایمان دار اور ایک منافق جن کی قرآن نے نشان دہی کر دی ہے یہ کہہ کر کہ ان اہل کتاب میں سے جو بے ایمان ہیں وہ تو یہی چاہتے ہیں کہ تم کو بھی راہ حق سے بے راہ کر دیں آیت پیش ہے۔

(2:120) यहूदी और ईसाई तुम से कदापि प्रसन्न न होंगे जब तक तुम उनके मार्ग पर न चलने लगो,

(۲:۱۲۰) یہودی اور عیسائی تم سے ہرگز راضی نہ ہوں گے جب تک تم ان کے طریقے پر نہ چلنے لگو۔

(3:69) (ऐ धर्म वादियो!) पुस्तक वालों में से एक दल चाहता है कि किसी प्रकार तुम्हें सत्य मार्ग से हटा दें......... (3:70,100, 5:48,

(۳:۶۹) (اے اہل ایمان مسلمانو!) اہل کتاب میں سے ایک گروہ چاہتا ہے کہ کسی طرح تمہیں راہ راست سے ہٹا دے......(۳:۷۰، ۱۰۰، ۵:۴۸،

6:117,124,13:37,17:73) इस जमात में पुस्तक वालों के उस वर्ग का उल्लेख है जो भ्रष्ट थे और दूसरों को भी भ्रष्ट करने की प्रेरणा देते थे.

पुस्तक वालों का एक वर्ग सदाचारी था धाराएं या मंत्र अवलोकन हो.

(17:107,108,109) ऐ ईशदूत स0 इन लोगों से कह दो कि तुम इसे मानो या न मानो जिन लोगों को इससे पहले ज्ञान दिया गया है उन्हें जब यह कुरआन सुनाया जाता है तो वह मुख के बल सजदे में गिर जाते हैं और पुकार उठते हैं पवित्र है हमारा ईश्वर, उस का वचन पूरा होना ही है और वह मुख के बल रोते हुए गिर जाते हैं और इस कुरआन को सुनकर उनकी विनम्रता और बढ़ जाती है.

(5:83) जब वह इस वाणी को सुनते हैं जो ईशदूत पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि सत्य परिचिति के प्रभाव से उनकी आंखें आंसुओं से भीग जाती हैं वह बोल उठते हैं कि रब हम विश्वास लाए हमारा नाम साक्ष्य देने वालों में लिख ले.

(5:84) और वह कहते हैं कि अंततः क्यों न हम ईश्वर पर विश्वास लाए और जो सत्य हमारे पास आया है उसे क्यों न मान लें अर्थात कुरआन और मुहम्मद स0 को जबकि हम इस बात की इच्छा रखते हैं कि हमारा रब हमें सदाचारी लोगों में सम्मिलित कर ले (5:85, 29:47) इत्यादि

यह रहा एहले किताब का आस्तिक वर्ग यह दो वर्ग हैं पुस्तक वालों में से जो कुरआन के अवतरित होते समय उपस्थित थे जिनको ईश्वर ने सम्बोधन किया है और दोनों की पहचान बता दी है.

इसके अतिरिक्त दुनिया में जितनी भी ईश्वर की अवतरित की हुई पुस्तकें हैं और ईशदूत उनके लेने वाले हैं उन सब पुस्तकों में एक अन्तिम रसूल मुहम्मद स0 की सूचना है और इस सूचना को हर ईशदूत ने अपनी जाति को बताया है किन्तु समय के उतार चढ़ाव के साथ साथ उन पुस्तक वालों ने हठ में आकर लगभग वह भाग जिसमें मुहम्मद स0 की सूचना थी अपनी पुस्तकों से निकाल दिया है और विचित्र बात यह है कि कुरआन वालों ने भी लगभग कुरआन की ऐसी धाराओं के अनुवादों में फेर बदल किया है जिनकी जानकारी मैं दे रहा हूं

पहली पुस्तकें इस समय अपनी उस स्थिति में नहीं हैं जिसमें अवतरित हुई थी इस समय तो केवल कुरआन का अरबी लेख अपनी मूल दशा में सुरक्षित है जिसकी सुरक्षा का वचन ईश्वर ने किया है यद्यपि अनुवाद बहुत स्थान पर कुरआन का भी बदल दिया गया है जैसे श्रीमान ईसा से सम्बन्धित धाराओं में था और दूसरी धाराओं का अतः इस कुरआन का प्रमाण ही प्रस्तुत है अवलोकन हो-

सूरत अस्सफ 61 आयत 6- और जब कहा ईसा मरयम के पुत्र ने ऐ बनी इसराईल मैं भेजा हुआ आया हूं ईश्वर का तुम्हारी ओर सत्य करता हूं उसको जो सुरक्षा के मध्य है तौरैत से और शुभ सूचना देता हूं एक ईशदूत की जो आएगा मेरे बाद उसका नाम है अहमद फिर जब उनके पास आया स्पष्ट चिन्ह लेकर बोले यह खुला जादू है.

(3:81) और जब लिया वचन ईश्वर ने नबी के द्वारा ईशदूतों के लिए (बनी इसराईल पुस्तक वालों से) कि जो कुछ मैंने तुम को दिया है पुस्तक और ज्ञान, फिर आए तुम्हारे पास कोई ईशदूत इसको प्रमाणित करता हुआ तो उस पर विश्वास लाओगे और उसकी सहायता करोगे, कहा क्या तुमने वचन किया? और इस पर मेरी ओर से वचन का भारी उत्तरदायित्व उठाते हो, उन्होंने कहा हां हम प्रण करते हैं, ईश्वर ने

(۶:۱۱۷، ۱۲۴، ۱۳:۳۷، ۱۷:۷۳) ان آیات میں اہل کتاب کے اس طبقے کا ذکر ہے جو غلط کار تھے اور دوسروں کو بھی بے راہ کرنے کی ترغیب دیتے تھے اہل کتاب کا ایک طبقہ ایماندار تھا آیات ملاحظہ ہوں.

(۱۷:۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹) اے نبیؐ ان لوگوں سے کہہ دو کہ تم اسے مانو یا نہ مانو جن لوگوں کو اس سے پہلے علم دیا گیا ہے انہیں جب یہ قرآن سنایا جاتا ہے تو وہ منہ کے بل سجدے میں گر جاتے ہیں اور پکار اٹھتے ہیں پاک ہے ہمارا رب. اس کا وعدہ پورا ہونا ہی ہے اور وہ منہ کے بل روتے ہوئے گر جاتے ہیں اور اس قرآن کو سن کر ان کا خشوع اور بڑھ جاتا ہے.

(۵:۸۳) جب وہ اس کلام کو سنتے ہیں جو رسول پر اترا ہے تو تم دیکھتے ہو کہ حق شناسی کے اثر سے ان کی آنکھیں آنسوؤں سے تر ہو جاتی ہیں وہ بول اٹھتے ہیں کہ پروردگار ہم ایمان لائے ہمارا نام گواہی دینے والوں میں لکھ لے.

(۵:۸۴) اور وہ کہتے ہیں کہ آخر کیوں نہ ہم اللہ پر ایمان لائیں اور جو حق ہمارے پاس آیا ہے اسے کیوں نہ مان لیں. یعنی قرآن اور محمدؐ کو جب کہ ہم اس بات کی خواہش رکھتے ہیں کہ ہمارا رب ہمیں صالح لوگوں میں شامل کر لے (۵:۸۵، ۲۹:۴۷، ۲۹:۴۷) وغیرہ

یہ رہا اہل کتاب کا مومن طبقہ یہ دو طبقہ ہیں اہل کتاب میں سے جو نزول قرآن کے وقت موجود تھے جن کو اللہ نے خطاب کیا ہے اور دونوں کی شناخت بتادی ہے.

علاوہ ازیں دنیا میں جتنی بھی اللہ کی نازل کی ہوئی کتابیں ہیں اور جو نبی ان کے لینے والے ہیں ان سب کتابوں میں ایک آخری نبی محمدؐ کی خبر ہے اور اس خبر کو ہر نبی نے اپنی قوم کو بتایا ہے لیکن زمانہ کے اتار چڑھاؤ کے ساتھ ساتھ ان کتاب والوں نے ضد میں آکر تقریباً وہ حصہ جس میں محمدؐ کی خبر تھی اپنی کتابوں سے نکال دیا ہے اور عجیب بات یہ ہے کہ قرآن والوں نے بھی تقریباً قرآن کی ایسی آیات کے ترجموں میں پھیر بدل کیا ہے جن کی نشان دہی میں کر رہا ہوں.

پہلی کتابیں اس وقت اپنی اس حالت میں نہیں ہیں جس میں نازل ہوئیں تھیں اس وقت تو صرف قرآن کا عربی متن اپنی اصلی حالت میں محفوظ ہے جس کی حفاظت کا وعدہ اللہ نے کیا ہے تاہم ترجمہ بہت جگہ پر قرآن کا بھی بدل دیا گیا ہے جیسے حضرت عیسیٰ سے متعلق آیات میں یا اور دوسری آیات کا اس لئے اس قرآن کا ثبوت پیش ہے ملاحظہ ہو.

سورت الصف ۶۱/آیت ۔۶/اور جب کہا عیسیٰ مریم کے بیٹے نے اے بنی اسرائیل میں بھیجا ہوا آیا ہوں اللہ کا تمہاری طرف. سچا کرتا ہوں اس کو جو حفاظت کے درمیان ہے توریت سے اور بشارت دیتا ہوں ایک رسول کی جو آئے گا میرے بعد اس کا نام ہے محمدؐ. پھر جب ان کے پاس آیا کھلے نشان لے کر بولے یہ کھلا جادو ہے.

(۳:۸۱) اور جب لیا اقرار اللہ نے نبی کے ذریعہ نبیوں کے لئے (بنی اسرائیل اہل کتاب سے) کہ جو کچھ میں نے تم کو دیا ہے کتاب اور علم پھر آئے تمہارے پاس کوئی نبی اس کی تصدیق کرتا ہوا تو اس پر ایمان لاؤ گے اور اس کی مدد کرو گے. فرمایا کیا تم نے اقرار کیا؟ اور اس پر میری طرف سے عہد کی بھاری ذمہ داری اٹھاتے ہو انہوں نے کہا ہاں ہم اقرار کرتے ہیں. اللہ نے فرمایا اچھا تو گواہ رہو اور

कहा अच्छा तो साक्षी रहो और मैं भी साक्षी हूं तुम्हारे साथ, इसके बाद जो प्रण से फिर जाए वही दुराचारी है,

यह रही कुरआन की भविष्यवाणी अब वह अनुवाद भी अवलोकन हो जो धारा 159 का आलिमों ने लिखा है-

(1) और कोई पुस्तक वाला नहीं होगा परन्तु उनकी मृत्यु से पहले उन पर विश्वास लाएगा और वह प्रलय के दिन उन पर साक्षी होंगे मौलाना फतेह मुहम्मद जालन्धारी साहब,

(2) और जो दल है पुस्तक वालों में से उस पर विश्वास लाएगा उसकी मृत्यु से पहले और प्रलय के दिन होगा उनका बताने वाला-मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब,

(3) और पुस्तक वालों में से कोई ऐसा न होगा जो उसकी मृत्यु से पहले उस पर विश्वास न ले आएगा- मौलाना मोदूदी साहब, इनका दूसरा अनुवाद भी है अर्थात अपनी मृत्यु से पहले,

(4) और कोई पुस्तक वालों से नहीं रहता मगर वह ईसा की अपनी मृत्यु से पहले अवश्य पुष्टि कर लेता है मौलाना अशरफ अली थानवी साहब,

(5) और जितने दल हैं पुस्तक वालों के सो ईसा पर विश्वास लावेंगे उसकी मृत्यु से पहले और प्रलय के दिन होगा उन पर साक्षी- मौलाना मेहमूदुल हसन साहब,

व्याख्याः- महामना ईसा जीवित उपस्थित है आकाश पर जब दज्जाल उत्पन्न होगा तब इस संसार में पदार्पण लाकर उसे वध करेंगे और यहूद और नसारा उन पर विश्वास लाएंगे निःसन्देह ईसा जीवित हैं मरे न थे और प्रलय के दिन श्रीमान ईसा उनकी स्थिति और कर्मों को स्पष्ट करेंगे....

पांच ज्ञानियों का अनुवाद पढ़ा और उस पर जो व्याख्या अंकित है वह भी लिख दी गई, अनुवाद में है कि ईसा की मृत्यु से पहले सब पुस्तक वाले उस पर विश्वास लाएंगे, केवल अशरफ अली साहब ने लिखा है कि अपनी मृत्यु से पहले ईसा पर विश्वास लाएंगे और व्याख्या में पुस्तक वालों के सभी वर्गों को उस पर विश्वास लाना लिखा है और बात भी ठीक लगती है कि जब ईसा ईशदूत है और जीवित है आएंगे तो मुसलमान भी तो पुस्तक वाले हैं क्या वह भी उन पर आस्था लाएंगे तो मुहम्मद स0 का क्या होगा क्या कभी विचार किया है? वैसे मुसलमानों का विश्वास है कि ईसा अ0 नबी हैं,

अब धारा 159 पर बात कर ली जाए वह यह कि धारा में पुस्तक वालों का शब्द है जिसके लिए कहा गया है कि वह विश्वास लाएंगे उस पर धारा में किसी का नाम नहीं केवल अनुमान से ही श्री ईसा को मान लिया है क्या यह अनुमान उचित है यदि यह उचित है तो इमाम अबुहनीफा पर भी तो यही आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने अनुमान से कार्य किया है जो अनुचित है,

यदि श्रीमान ईसा को ही मान लिया जाए तो जिस समय यह आयत अवतरित हुई थी उस समय पुस्तक वाले यहूद और नसारा को ही कहा गया है नसारा अर्थात ईसाई तो ईसा पर आस्था लाए हुए थे वह तो उनको ईशदूत स्वीकार करते ही हैं यह अलग बात है कि उनके लाए हुए सत्य धर्म से दूर हैं तो उनके विश्वास लाने की बात बुद्धि में नहीं आती, यदि श्रीमान ईसा के आने तक ईसाई ईसा अ0 पर विश्वास नहीं रखते तो कैसे ईसाई हैं? यहूद तो उनके जीवन में जब वह इस संसार में उनके सामने विद्यमान थे तब ही उन पर विश्वास लाकर ईशदूत स्वीकार नहीं करते थे फिर प्रलय के निकट आस्था लाने का क्या अर्थ, और उस समय तक जो पुस्तक वाले मृतक हो जाएंगे उनके विषय में क्या विचार है, क्या वह सत्य पर होंगे या न,

میں بھی گواہ ہوں تمہارے ساتھ اس کے بعد جو عہد سے پھر جائے وہی فاسق ہے.

یہ رہی قرآن کی پیش گوئی اب وہ ترجمہ بھی ملاحظہ ہو جو آیت (۱۵۹) کا عالموں نے لکھا ہے۔

(۱) اور کوئی اہل کتاب نہیں ہوگا مگر ان کی موت سے پہلے ان پر ایمان لائے گا اور وہ قیامت کے دن ان پر گواہ ہوں گے (مولانا فتح محمد جالندھری صاحب)

(۲) اور جو فرقہ ہے کتاب والوں میں سو اس پر یقین لاویں گے اس کی موت سے پہلے اور قیامت کے دن ہوگا ان کا بتانے والا (مولانا شاہ عبدالقادر صاحب)

(۳) اور اہل کتاب میں سے کوئی ایسا نہ ہوگا جو اس کی موت سے پہلے اس پر ایمان نہ لے آئے گا (مولانا مودودی صاحب) ان کا دوسرا ترجمہ بھی ہے یعنی اپنی موت سے پہلے.

(۴) اور کوئی اہل کتاب سے نہیں رہتا مگر وہ عیسیٰ کی اپنی موت سے پہلے ضرور تصدیق کر لیتا ہے (مولانا اشرف علی تھانوی صاحب)

(۵) اور جتنے فرقے ہیں اہل کتاب کے سو عیسیٰ پر یقین لاویں گے اس کی موت سے پہلے اور قیامت کے دن ہوگا ان پر گواہ (مولانا محمود الحسن صاحب)

تفسیر۔ حضرت عیسیٰ زندہ موجود ہیں آسمان پر جب دجال پیدا ہوگا تب اس جہاں میں تشریف لا کر اسے قتل کریں گے اور یہود اور نصاریٰ ان پر ایمان لائیں گے. بے شک عیسیٰ زندہ ہیں مرے نہ تھے اور قیامت کے دن حضرت عیسیٰ ان کے حالات و اعمال کو ظاہر کریں گے.....

پانچ عالموں کا ترجمہ پڑھا اور اس پر جو تفسیر درج ہے وہ بھی لکھ دی گئی ترجمہ میں ہے کہ عیسیٰ کی موت سے پہلے سب اہل کتاب اس پر ایمان لائیں گے صرف اشرف علی صاحب نے لکھا ہے کہ اپنی موت سے پہلے عیسیٰ پر ایمان لائیں گے اور تفسیر میں اہل کتاب کے سبھی فرقوں کو اس پر ایمان لانا لکھا ہے اور بات بھی ٹھیک لگتی ہے کہ جب عیسیٰ نبی ہیں اور زندہ ہیں آئیں گے تو مسلمان بھی تو اہل کتاب ہیں کیا وہ بھی ان پر ایمان لائیں گے؟ تو محمدؐ کا کیا ہوگا. کیا کبھی غور کیا ہے؟ ویسے مسلمانوں کا یقین ہے کہ عیسیٰ نبی ہیں.

اب آیت (۱۵۹) پر بات کر لی جائے وہ یہ کہ آیت میں اہل کتاب کا لفظ ہے جس کے لئے کہا گیا ہے کہ وہ ایمان لائیں گے اس پر آیت میں کسی کا نام نہیں صرف قیاس سے ہی حضرت عیسیٰ کو مان لیا ہے. کیا یہ قیاس درست ہے اگر یہ درست ہے تو امام ابوحنیفہ پر بھی تو یہی الزام لگایا جاتا ہے کہ انہوں نے قیاس سے کام لیا ہے جو غلط ہے.

اگر حضرت عیسیٰ کو ہی مان لیا جائے تو جس وقت یہ آیت نازل ہوئی تھی اس وقت اہل کتاب یہود اور نصاریٰ کو ہی کہا گیا ہے نصاریٰ یعنی عیسائی تو عیسیٰ پر ایمان لائے ہوئے تھے وہ تو ان کو اللہ کا نبی تسلیم کرتے ہی ہیں یہ الگ بات ہے کہ ان کے لائے ہوئے حق دین سے دور ہیں تو ان کے ایمان لانے کی بات عقل میں نہیں آتی اگر حضرت عیسیٰ کے آنے تک عیسائی عیسیٰ پر ایمان نہیں رکھتے تو کیسے عیسائی ہیں؟ یہود تو ان کی زندگی میں جب وہ اس دنیا میں ان کے سامنے موجود تھے تب ہی ان پر ایمان لا کر نبی تسلیم نہ کرتے تھے اور ان کے قتل کا ارادہ رکھتے تھے پھر قرب قیامت ایمان لانے کا کیا مطلب اور اس وقت تک جو اہل کتاب مرجائیں گے ان کے بارے میں کیا خیال ہے. کیا وہ حق پر ہوں گے

यदि थे तो फिर विश्वास लाने का क्या अर्थ?

रहा प्रश्न कुरआन वाले पुस्तक वालों का वह तो श्रीमान ईसा0 अ0 को ईश्वर का सत्य नबी स्वीकार कर रहे हैं जैसा कि ईश्वर का आदेश है फिर उन पर प्रलय के निकट विश्वास लाने से क्या अर्थ? यदि है और सब ही विश्वास लाऐंगे तो अन्तिम नबी महामना ईसा अ0 हुए (ईश्वर की शरण) इन बातों में से कोई बात भी सत्य नही है सत्य क्या है वह प्रस्तुत है अवलोकन हो-

सूरत अस्सफ (61:6) में कहा है कि मेरे बाद एक ईशदूत आएगा उसका नाम मुहम्मद स0 होगा, उस पर विश्वास लाना, श्रीमान ईसा के यह शब्द कुरआन में अंकित है, इधर सूरत आले इमरान की धारा 81 में वचन लेने की बात है और कुरआन में वह आयात भी अंकित है जिनमें पुस्तक वाले आस्तिकों की सूचना दी है कि वह जब कुरआन को सुनते है तो उस पर विश्वास लाते है और जो कपटि है वह आस्था वालों को भी बहकाते है बहकाते रहेंगे, इस प्रकाश में यह बात सामने आई कि धारा 159 में जो सूचना है वह उन पुस्तक वालों की है जो धर्म वादी थे या होंगे, वह लोग जब कुरआन सुनते थे और मुहम्मद स0 को देखते थे तो तुरन्त विश्वास लाते थे इन सूचनाओं के अनुसार जो श्रीमान ईसा और सब ईशदूतों ने दी है और हर पुस्तक में अंकित है (4:136,174,175, 5:65से69, 7:35) कुरआन में भी आपने पढ़ लिया,

वास्तविकता यह सामने आई कि जो धर्म वादी पुस्तक वाला था वह मुहम्मद स0 पर विश्वास लाया अपने मरने से पहले और प्रलय तक हर काल में जो भी सदाचारी मनुष्य होगा जिसमें मनन करने की क्षमता होगी वह मुहम्मद स0 पर आस्था लाता रहेगा जो क्रम चल रहा है किन्तु यह मनन चिन्तन का विषय है अन्तिम बात कहने की यह है कि मुसलमानों से अनुरोध है कि वह इस विषय में विचार करें और सत्य को स्वीकार करें क्या ईसा अ0 के वह शब्द नही पढ़े जिनमें है कि मेरे बाद मुहम्मद आएगा, ईसा के बाद मुहम्मद, तो क्या प्रलय के निकट ईसा अ0 के बाद अहमद स0 आऐंगे क्या अभी तक मुहम्मद नही आए? क्योंकि कुरआन मुहम्मद के आने की सूचना ईसा के बाद दे रहा है और मुसलमानों ने ईसा को जीवित मान रखा है और पुनः आने पर उनको मृत्यु आएगी तो तब ही तो "बाद" होगा, और तब मुहम्मद स0 को आना है क्या इन बातों पर विचार किया है कि यह ईसा के जीवित होने का षड्यंत्र क्या है, अतः बात यह सामने आई जो सत्य है कि ईसा की मृत्यु हो गयी और उनके बाद ही मुहम्मद स0 आए थे अब ईसा को नही आना (4:162)

आयात में अंकित है कि प्रलय में वह उन पर साक्ष्य देगा इसको भी श्रीमान ईसा से जोड़ा गया है तो जब प्रलय के निकट सब पुस्तक वाले ईसा पर आस्था लाऐंगे तो फिर कैसी गवाही होगी, अच्छी या बुरी यह भी बताया जाए किन्तु यह साक्ष्य भी महामना मुहम्मद ही देंगे उन पुस्तक वालों के प्रसंग में जो उन पर विश्वास लाऐं अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हम को साझने की क्षमता दे

अतः वह लोग जो यहूद हुए उनके अपने अत्याचार के कारण वह उन पवित्र वस्तुओं से वंचित हो गए थे या वंचित कर दिए गए थे इस कारण कि वह लोगों को ईश्वर के मार्ग से अधिक रोकते थे (160) {6:145,147}

धारा पर (6:145) पर लिखा जाएगा,

और इस कारण से वंचित किया था कि निषिद्ध करने के बाद भी सूद लेते थे और इस कारण भी

یا نہ اگر تھے تو پھر ایمان لانے کا کیا مطلب ہے

رہا سوال قرآن والے اہل کتاب کا وہ تو حضرت عیسیٰ کو اللہ کا برحق نبی تسلیم کرر ہے ہیں جیسا کہ اللہ کا حکم ہے پھر ان پر قرب قیامت ایمان لانے سے کیا مطلب ؟ اگر ہے اور سب ہی ایمان لائیں گے تو آخری نبی حضرت عیسیٰ ہوئے (نعوذ) ان باتوں میں سے کوئی بات بھی سچ نہیں ہے. حقیقت کیا ہے وہ پیش ہے ملاحظہ ہو.

سورت الصف (۶:۶۱) میں کہا ہے کہ میرے بعد ایک نبی آئے گا اس کا نام محمد. ہوگا. اس پر ایمان لانا حضرت عیسیٰ کے یہ الفاظ قرآن میں درج ہیں ادھر سورت آل عمران کی آیت (۸۱) میں عہد لینے کی بات ہے اور قرآن میں وہ آیات بھی درج ہیں جن میں اہل کتاب مومنین کی خبر دی ہے کہ وہ جب قرآن کو سنتے ہیں تو اس پر ایمان لاتے ہیں اور جو منافق ہیں وہ ایمان والوں کو بھی بہکاتے ہیں بہکاتے رہیں گے. اس روشنی میں بات یہ سامنے آئی کہ آیت (۱۵۹) میں جو خبر ہے وہ ان اہل کتاب کی ہے جو ایمان دار تھے یا ہوں گے وہ لوگ جب قرآن سنتے تھے اور محمدؐ کو دیکھتے تھے تو فوراً ایمان لاتے تھے اور خبروں کے مطابق جو حضرت عیسیٰ اور سب نبیوں نے دی ہے اور ہر کتاب میں درج ہے (۴:۱۳۶، ۱۷۴، ۱۷۵، ۵:۶۵تا۶۹؛ ۷:۳۵) قرآن میں بھی آپ نے پڑھ لیا.

حقیقت یہ سامنے آئی کہ جو ایمان دار اہل کتاب تھا وہ محمدؐ پر ایمان لایا اپنے مرنے سے پہلے اور قیامت تک ہر زمانے میں جو بھی نیک آدمی ہوگا جس میں غور کرنے کی صلاحیت ہوگی وہ محمدؐ پر ایمان لاتا رہے گا جو سلسلہ چل رہا ہے لیکن یہ غور وفکر کی بات ہے آخری بات کہنے کی یہ ہے کہ مسلمانوں سے اپیل ہے کہ وہ اس معاملہ میں غور کریں اور حقیقت کو تسلیم کریں کیا عیسیٰ کے وہ الفاظ نہیں پڑھے جن میں ہے کہ میرے بعد محمد آئے گا. عیسیٰ کے بعد محمد. تو کیا قرب قیامت عیسیٰ کے بعد محمدؐ آئیں گے ابھی تک محمد نہیں آئے؟ کیونکہ قرآن محمد کے آنے کی خبر عیسیٰ کے بعد دے رہا ہے اور مسلمانوں نے عیسیٰ کو زندہ تسلیم کر رکھا ہے اور دوبارہ آنے پر ان کو موت آئے گی تو تب ہی تو بعد ہوگا اور تب محمدؐ کو آنا ہے کیا ان باتوں پر غور کیا ہے کہ یہ عیسیٰ کے زندہ ہونے کی سازش کیا ہے. اس لئے بات یہ سامنے آئی جو حقیقت ہے کہ عیسیٰ کا انتقال ہوگیا اور ان کے بعد ہی محمدؐ آئے تھے اب عیسیٰ کو نہیں آنا (۴:۱۶۲)

آیت میں درج ہے کہ قیامت میں وہ ان پر گواہی دے گا اس کو بھی حضرت عیسیٰ سے جوڑا گیا تو جب قرب قیامت سب اہل کتاب عیسیٰ پر ایمان لائیں گے تو پھر کیسی گواہی ہوگی اچھی یا بُری یہ بھی بتانی چاہیے لیکن یہ گواہی بھی حضرت محمدؐ ہی دیں گے ان اہل کتاب کے بارے میں جو ان پر ایمان لائے. اب تو اللہ سے یہی دعا ہے کہ ہم کو سمجھنے کی توفیق دے

پس وہ لوگ جو یہود ہوئے ان کے اپنے ظلم کی وجہ سے وہ ان پاک چیزوں سے محروم ہو گئے تھے یا محروم کر دیے گئے تھے اس سبب کہ وہ لوگوں کو اللہ کی راہ سے بہت روکتے تھے (۱۶۰) [۶:۱۴۵، ۱۴۷۔ آیت پر ۶:۱۴۵، پر لکھا جائے گا)

اور اس سبب سے بھی محروم کیا تھا کہ منع کرنے کے بعد بھی سود لیتے تھے اور اس سبب بھی کہ لوگوں کا مال ناحق کھاتے

कि लोगों का धन अनुचित खाते थे और उनमें से जो नास्तिक हैं उनके लिए हमने कष्ट देने वाला दण्ड तैयार कर रखा है (161)

परन्तु जो लोग उनमें से ज्ञान में पक्के हैं और जो आस्तिक हैं वह उस पुस्तक पर जो तुम पर अवतरित हुई और जो पुस्तकें तुम से पहले अवतरित हुई (सब पर) आस्था लाते हैं और सलात स्थापित करते हैं और दान देते हैं और ईश्वर और परलोक को मानते हैं उनको हम निकट ही बड़ा प्रतिदान देंगे (162) {3:7}

(और ऐ मुहम्मद स0) हमने तुम्हारी ओर इसी प्रकार वही प्रेषित की है जिस प्रकार नूह और उनके बाद वाले नबीयों की ओर पेषित की थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और संतान याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की ओर भी हमने वही भेजी थी और दाऊद को हमने जबूर दी थी (163) {26:192,196, 42:13,51, 12:3}

और बहुत से ईशदूत हैं तुम से पहले जिनका उल्लेख तुम से कर चुके हैं और बहुत से रसूल हैं जिनका वर्णन तुम से नहीं किया और मूसा से तो ईश्वर ने वार्ता की अपने ढंग से (164)

सब ईशदूतों को शुभ सूचना सुनाने वाले और भयभीत करने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों को ईश्वर पर आरोप का अवसर न रहे और ईश्वर प्रभुत्वशाली युक्ति वाला है (165)

किन्तु मैं ईश्वर साक्ष्य देता हूं इस पुस्तक के साथ जो आप पर अवतरित की है कि ईश्वर ने अपने ज्ञान के अनुसार अवतरित की है और साक्ष्य देते हैं फरिश्ते भी और ईश्वर का साक्षी होना ही प्रयाप्त है (166)

जिन लोगों ने इनकार किया और (लोगों को) ईश्वर के मार्ग से रोका वह मार्ग से भटक कर दूर पा पड़े (167)

जो लोग नास्तिक हुए और अन्याय करते रहे ईश्वर उनको क्षमा करने वाला नहीं और न उन्हें मार्ग ही दिखाएगा (168)

हां, (वह देखेंगे तो) नर्क का मार्ग देखेंगे जिसमें वह सदैव रहेंगे और यह ईश्वर को सरल है (169)

लोगो! ईश्वर का रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य बात लेकर आया है तो उन पर विश्वास लाओ तुम्हारे प्रति अच्छा है और यदि इनकार करोगे तो जो कुछ आकाशों में और पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है (तुम्हारे इनकार करने से उसको कोई हानि नहीं) और ईश्वर जानने वाला युक्ति वाला है (170) {3:101}

ऐ पुस्तक वालो अपने धर्म में सीमा से न बढ़ो और ईश्वर के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ न कहो मसीहा मरयम का पुत्र ईसा ईश्वर का रसूल था वह उसके वाक्य मंगल सूचना (कुन) का प्रकट

تھے اور ان میں سے جو کافر ہیں ان کے لئے ہم نے درد دینے والا عذاب تیار کر رکھا ہے (۱۶۱)

مگر جو لوگ ان میں سے علم میں پکے ہیں اور جو مومن ہیں وہ اس کتاب پر جو تم پر نازل ہوئی اور جو کتابیں تم سے پہلے نازل ہوئیں (سب پر) ایمان لاتے ہیں اور صلوٰۃ قائم کرتے ہیں اور زکوٰۃ دیتے ہیں اور اللہ اور روز آخرت کو مانتے ہیں ان کو ہم عنقریب اجر عظیم دیں گے (۱۶۲) [۳:۷]

(اور اے محمدؐ) ہم نے تمہاری طرف اسی طرح وحی بھیجی ہے جس طرح نوحؑ اور ان کے بعد والے نبیوں کی طرف بھیجی تھی، اور ابراہیم اور اسمٰعیل اور اسحاق اور یعقوب اور اولاد یعقوب اور عیسیٰ اور ایوب اور یونس اور ہارون اور سلیمان کی طرف بھی ہم نے وحی بھیجی تھی اور داؤد کو ہم نے زبور دی تھی (۱۶۳) [۲۶:۱۹۲،۱۹۶، ۴۲:۱۳،۵۱، ۱۲:۳]

اور بہت سے رسول ہیں تم سے پہلے جن کے حالات ہم تم سے بیان کر چکے ہیں اور بہت سے رسول ہیں جن کے حالات تم سے بیان نہیں کئے اور موسیٰ سے تو اللہ نے کلام کیا اپنے طریقے سے (۱۶۴)

سب رسولوں کو خوشخبری سنانے والے اور ڈرسنانے والے بنا کر بھیجا تاکہ رسولوں کے آنے کے بعد لوگوں کو اللہ پر الزام کا موقع نہ رہے اور اللہ غالب حکمت والا ہے (۱۶۵)

لیکن میں اللہ گواہی دیتا ہوں اس کتاب کے ساتھ جو آپ پر نازل کی ہے کہ مجھ اللہ نے اسے اپنے علم کے مطابق نازل کیا ہے اور گواہی دیتے ہیں فرشتے بھی اور اللہ کا گواہ ہونا ہی کافی ہے (۱۶۶)

جن لوگوں نے کفر کیا اور (لوگوں کو) اللہ کے رستے سے روکا وہ رستے سے بھٹک کر دور جا پڑے (۱۶۷)

جو لوگ کافر ہوئے اور ظلم کرتے رہے اللہ ان کو بخشنے والا نہیں اور نہ انہیں راستہ ہی دکھائے گا (۱۶۸)

ہاں (وہ دیکھیں گے تو) دوزخ کا رستہ دیکھیں گے جس میں وہ ہمیشہ رہیں گے اور یہ اللہ کو آسان ہے (۱۶۹)

لوگو! اللہ کا رسول تمہارے پاس تمہارے پروردگار کی طرف سے حق بات لے کر آیا ہے تو ان پر ایمان لاؤ تمہارے حق میں اچھا ہے اور اگر کفر کرو گے تو جو کچھ آسمانوں میں اور زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے (تمہارے کفر کرنے سے اس کا کوئی نقصان نہیں) اور اللہ جاننے والا حکمت والا ہے (۱۷۰) [۳:۱۰۱]

اے اہل کتاب اپنے دین میں حد سے نہ بڑھو اور اللہ کے بارے میں حق کے سوا کچھ نہ کہو مسیح مریم کا بیٹا عیسیٰ اللہ کا رسول تھا وہ اس کے کلمہ بشارت (کن) کا ظہور تھا جو مریم

होना था जो मरयम की ओर प्रेषित किया गया था और एक आत्मा था तो ईश्वर और उसके ईशदूतों पर विश्वास लाओ और यह न कहो (कि ईश्वर) तीन हैं (इस आस्था से) रुक जाओ यह तुम्हारे (लिए) अच्छा है ईश्वर ही है पूज्य अकेला और इससे पवित्र है कि उसके सन्तान हो जो कुछ आकाशों और जो कुछ पृथ्वी में है सब उसी का है और ईश्वर ही सहायक पर्याप्त है (171)

मसीह इस बात से लज्जा अनुभूत नही करेगा कि ईश्वर के भक्त है और न सम्मानित फरिश्ते ही और जो व्यक्ति ईश्वर का भक्त होने को लज्जा जाने और अवज्ञा करें तो ईश्वर सब को अपने पास संग्रह करेगा (172)

तो जो लोग विश्वास लाऐं और अच्छे शुभ कार्य करते है वह उनको पूरा फल देगा और अपनी दया से अधिक भी कृपा करेगा और जिन्होंने लज्जा व इनकार और घमण्ड किया उनको दण्ड देगा (173)

और वह ईश्वर के अतिरिक्त अपना समर्थक और सहायक न पाऐंगे (174)

लोगो! तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम्हारे पास प्रमाण आ चुका है और हमने तुम्हारी ओर उज्ज्वल चमकता हुआ प्रकाश भेज दिया (अर्थात कुरआन और मुहम्मद) (175) {4:170, 3:101, 6:104}

کی طرف القا کیا گیا تھا اور ایک روح تھے تو اللہ اور اس کے رسولوں پر ایمان لاؤ اور یہ نہ کہو (کہ اللہ) تین ہیں (اس اعتقاد سے) باز آؤ کہ یہ تمہارے حق میں اچھا ہے اللہ ہی ہے معبود واحد ہے اور اس سے پاک ہے کہ اس کے اولاد ہو جو کچھ آسمانوں اور جو کچھ زمین میں ہے سب اسی کا ہے اور اللہ ہی کارساز کافی ہے (۱۷۱)

مسیح اس بات سے عار محسوس نہیں کرے گا کہ اللہ کے بندے ہیں اور نہ مقرب فرشتے ہی اور جو شخص اللہ کا بندہ ہونے کو عار سمجھے اور سرکشی کرے تو اللہ سب کو اپنے پاس جمع کرے گا (۱۷۲)

تو جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے وہ ان کو پورا بدلہ دے گا اور اپنے فضل سے زیادہ بھی عنایت کرے گا اور جنہوں نے عار و انکار تکبر کیا ان کو وہ تکلیف دینے والا عذاب دے گا (۱۷۳)

اور وہ اللہ کے سوا اپنا حامی اور مددگار نہ پائیں گے (۱۷۴)

لوگو! تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس دلیل آچکی ہے اور ہم نے تمہاری طرف چمکتا ہوا نور بھیج دیا (یعنی قرآن اور محمدؐ) (۱۷۵) [۴:۱۷۰، ۳:۱۰۱، ۶:۱۰۴، ۱۴:۱، ۱۴:۱]

अतः जो लोग ईश्वर पर आस्था लाऐं और उसके धर्म की रस्सी को दृढ़ता से पकड़े रहे उनको वह अपनी करूणा और कृपा दयामें प्रविष्ट करेगा और अपनी ओर से सीधा मार्ग दिखाएगा (176)

(ऐ ईशदूत) लोग तुम से (कलाला के विषय में) आदेश ज्ञात करेंगे कह देना कि ईश्वर कलाला के बारे में यह आदेश देता है कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति मर जाए जो उसके सन्तान न हो और उसके बहन हो तो उसको भाई की मृतक सम्पत्ति में से आधा अंश मिलेगा और यदि बहन मर जाए और उसके सन्तान न हो तो उसकी पूर्ण सम्पत्ति का अधिकारी भाई होगा (जो बचेगा) और यदि दो बहन हो तो दोनों को भाई की सम्पत्ति में से दो तिहाई और यदि भाई बहन पुरुष स्त्री मिले जुले हो तो पुरुष का अंश दो स्त्रियों के अंश के बराबर है, ईश्वर तुम से इसलिए बताता है कि तुम भटको न फिरो और ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (177)

پس جو لوگ اللہ پر ایمان لائے اور اس کے دین کی رسّی کو مضبوط پکڑے رہے ان کو وہ اپنی رحمت اور فضل میں داخل کرے گا اور اپنی طرف سیدھا رستہ دکھائے گا (۱۷۶)

(اے رسول) لوگ تم سے کلالہ کے بارے میں) حکم دریافت کریں گے، کہہ دینا کہ اللہ کلالہ کے بارے میں یہ حکم دیتا ہے کہ اگر کوئی ایسا مرد مر جائے جو اس کے اولاد نہ ہو اور اس کے بہن ہو تو اس کو بھائی کے ترکہ میں آدھا حصہ ملے گا اور اگر بہن مر جائے اور اس کے اولاد نہ ہو تو اس کے تمام مال کا وارث بھائی ہوگا (جو بچے گا) اور اگر دو بہن ہوں تو دونوں کو بھائی کے ترکے میں سے دو تہائی اور اگر بھائی بہن مرد اور عورتیں ملے جلے ہوں تو مرد کا حصہ دو عورتوں کے حصہ کے برابر ہے اللہ تم سے اس لئے بیان کرتا ہے کہ تم بھٹکتے نہ پھرو اور اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۱۷۷)

{सूरत अलमायदा-5, मदनी}

سورت المائدہ ـ مدنی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ धर्म वालो! जो प्रण तुमने किसी से किया है उसे पूरा करो (यह ईश्वर का आदेश है) तुम्हारे लिए चार पाए पशुओं (जो चरने वाले है) वैध कर दिए गए है अतिरिक्त उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाऐं जाते है परन्तु अहराम (हज) में आखेट को वैध न जानना, ईश्वर जैसा चाहता है आदेश देता है (1)

اے ایمان والو! جو اقرار تم نے کسی سے کیا ہے اسے پورا کرو (یہ اللہ کا حکم ہے) تمہارے لئے چار پائے جانور (جو چرنے والے ہیں) حلال کردئے گئے ہیں. بجز ان کے جو تمہیں پڑھ کر سنائے جاتے ہیں مگر احرام (حج) میں شکار کو

{2:274}

आस्तिको! ईश्वर के नाम की वस्तुओं का अपमान न करना और न सम्मान वाले महीनों की और न भेंट काबा की और न उन पशुओं की (जो भेंट के हों) जिनके गलों में पट्टे बधे हों और न उन लोगों की जो प्रतिष्ठा के घर को जा रहे हों, अपने ईश्वर की कृपा और उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हों और जब अहराम उतार दें तो आखेट करो और लोगों की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम को प्रतिष्ठा वाली मस्जिद से रोका था तुम्हें इस बात पर तत्पर न करे कि तुम उन पर अत्याचार करने लगो और उपकार और सदाचारिता के कर्मों में एक दूसरे की सहायता किया करो और पाप और अत्याचार की बातों में सहायता न किया करो और ईश्वर से डरते रहो, कुछ शंका नही कि ईश्वर का दण्ड कठोर है (2)

और वर्जित है तुम पर मृत पशु और (बहता हुआ या जमा हुआ) रक्त और सुअर का मांस और जिस वस्तु पर ईश्वर के अतिरिक्त किसी और का नाम पुकारा जाए और जो पशु गला घुटकर मृत हो जाए और जो गिर कर मृत हो जाए और जो चोट लगकर मृत हो जाए और जो सींग लगकर मृत हो जाए और वह पशु भी अवैध है जिसको दरिन्दा (पशु) फाड़ खाऐ परन्तु जिसको तुम (मृत होने से पहले) वध कर लो और वह पशु भी अवैध है जो थान पर वध किया जाए और यह भी कि पांसों से भाग्य ज्ञात करो, यह सब पाप के कार्य है आज नास्तिक तुम्हारे धर्म से निराश हो गए है तो उनसे मत डरो और मुझ से ही डरते रहो आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म प्रभुत्व पूर्ण कर दिया और अपनी निधि कृपा कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द किया, हां जो व्यक्ति भूक से व्याकुल हो जाए और पाप की ओर आकृष्ट न हो तो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (3)

{16:115,116, 97:1,5, 30:1से4}

حلال نہ جاننا.اللہ جیسا چاہتا ہے حکم دیتا ہے(۱)[۲:۲۷۴)

مومنو!اللہ کے نام کی چیزوں کی بے حرمتی نہ کرنا اور نہ ادب والے مہینوں کی اور نہ نیاز کعبہ کی اور نہ ان جانوروں کی (جو نذر کے ہوں) جن کے گلوں میں پٹے بندھے ہوں اور نہ ان لوگوں کی جو عزت کے گھر کو جارہے ہوں.اپنے رب کے فضل اور اس کی خوشنودی کے طلبگار ہوں اور جب احرام اتارو تو شکار کرو اور لوگوں کی دشمنی اس وجہ سے کہ انہوں نے تم کو عزت والی مسجد سے روکا تھا تمہیں اس بات پر آمادہ نہ کرے کہ تم ان پر زیادتی کرنے لگو اور نیکی اور پرہیزگاری کے کاموں میں ایک دوسرے کی مدد کیا کرو اور گناہ اور ظلم کی باتوں میں مدد نہ کیا کرو اور اللہ سے ڈرتے رہو کچھ شک نہیں کہ اللہ کا عذاب سخت ہے(۲)

اور حرام ہیں تم پر مرا ہوا جانور اور (بہتا ہوا، جما ہوا) لہو اور سور کا گوشت اور جس چیز پر اللہ کے سوا کسی اور کا نام پکارا جائے اور جو جانور گلا گھٹ کر مر جائے اور جو چوٹ لگ کر مر جائے.اور جو گر کر مر جائے اور جو سینگ لگ کر مر جائے اور وہ جانور بھی حرام ہے جس کو درندے پھاڑ کھائیں.مگر جس کو تم (مرنے سے پہلے) ذبح کرلو.اور وہ جانور بھی حرام ہے جو تھان پر ذبح کیا جائے.اور یہ بھی کہ پانسوں سے قسمت معلوم کرو. یہ سب گناہ کے کام ہیں.آج کافر تمہارے دین سے ناامید ہو گئے ہیں تو ان سے مت ڈرو اور مجھ سے ہی ڈرتے رہو.آج ہم نے تمہارے لئے تمہارا دین غالب کامل کردیا اور اپنی نعمتیں تم پر پوری کردیں اور تمہارے لئے اسلام دین کو پسند کیا ہاں جو شخص بھوک میں بے قرار ہو جائے اور گناہ کی طرف مائل نہ ہو تو اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۳)[۱۶:۱۱۵،۱۱۶،۹۷:۱،۵،۳۰:۱تا۴)

नोट- उत्पीड़ीत मानवता पर दया खा कर ईश्वर ने अपने अन्तिम ईशदूत मुहरुम्मद स0 को अरब देश मक्काह में नियुक्त किया और अपना सत्य धर्म उन पर अवतरित करना आरम्भ किया और जब इस धर्म का निमंत्रण देना आरम्भ किया तो मक्काह के लोगो ने इस को कोई मुख्य विशेष महत्व न दिया और यह सोचा कि यह एक सामायिक बेकार का प्रसंग है इस धर्म को कोई स्वीकार नही करेगा और मुहम्मद स0 थक कर हताश हो कर कार्य को छोड़ देंगे, परन्तु जब देखा कि समझदार लोगो ने स्वीकार करना आरम्भ कर दिया है तो उन्होंने कठोरता और हिंसा के साथ लोगो को रोकने का प्रयत्न किया किन्तु उन की आशाओ के विपरीत लोगो ने इस धर्म को न छोड़ा और दूसरे व्यक्ति इस में सम्मिलित होने लगे अब अनेकेश्वर वादायों ने अधिक दमन किया जिस से विवश हो कर मुसलमानों को मक्काह से यसरब के लिए पलायन करना पड़ा क्योंकि वहां पर कुछ व्यक्तियों ने इस्लाम स्वीकार करके उन की सहस्यता का वचन किया, इस पलायन से भी मक्काह वालो ने यह सोचा कि इन मक्काह वालो को यसरब की जलावायू अनुकूल न आएगी और यह व्याकूल हो जाएंगे और सत्य धर्म को छोड़ देंगे परन्तु ऐसा न हुआ और यसरब मदीना में इस्लाम की शक्ति में

نوٹ:۔مظلوم انسانیت پر رحم کھا کر اللہ نے اپنے آخری نبی محمدؐ کو عرب کی سرزمین مکہ شہر میں معبوث فرمایا.اور اپنا دین حق ان پر نازل کرنا شروع کیا اور جب اس دین کی دعوت دینی شروع کی تو مکہ کے لوگوں نے اس کو کوئی خاص اہمیت نہ دی اور یہ سوچا کہ یہ ایک وقتی بیکار کا مسئلہ ہے.اس دین کو کوئی قبول نہیں کرے گا.اور محمدؐ تھک کر مایوس ہو کر اس کام کو چھوڑ دیں گے.مگر جب دیکھا کہ سمجھدار لوگوں نے قبول کرنا شروع کردیا ہے تو انہوں نے سختی اور تشدد کے ساتھ لوگوں کو روکنے کی کوشش کی لیکن ان کی امیدوں کے خلاف لوگوں نے اس دین کو نہ چھوڑا اور دوسرے لوگ اس میں شامل ہونے لگے.اب مشرکین نے زیادہ سختی کی جس سے مجبور ہو کر مسلمانوں کو مکہ سے یثرب کے لئے ہجرت کرنی پڑی کیوں کہ وہاں پر کچھ لوگوں نے اسلام قبول کر کے ان کی مدد کا وعدہ کیا.اس ہجرت سے بھی مکہ والوں نے یہ سوچا کہ ان مکہ والوں کو یثرب کی آب وہوا موافق نہ آئے گی اور یہ پریشان ہو جائیں گے اور دین حق کو چھوڑ دیں گے.مگر ایسا نہ ہوا اور یثرب مدینہ میں اسلام کی طاقت میں اضافہ ہوتا گیا.اس طاقت کو دیکھ کر مکہ والے زیادہ

उन्नति होती रही इस शक्ति को देख कर मक्काह वाले अधिक व्याकूल हुए और उन्होंने मुसलमानों को मिटाने के लिए मदीने पर आक्रमण कर दिय परन्तु इस युद्ध में भी मक्काह वालो को पराज्य मिली और निरन्तर मुसलमानों की शक्ति बढ़ती गई और दूसरे नास्तिक और अनेकेश्वर वादी निर्बल होते गए यहां तक कि एक शक्ति जो यहूदियों की थी वह भी वह भी समाप्त हो गई और मक्काह को भी मुसलमानो ने विज्य कर लिया, इन सफलताओं के कारण और मुसलमानों के धैर्य के करण और ईश्वर की सहायता से अरब जातियों में से कोई शक्ति धर्म वादियों के समक्ष न रही, (30:1से4)

अब तक अनेकेश्वर वादियों को इस्लाम के मिटने की जो आस लगी हुई थी अपना दम तोड़ चुकी थी और उन्हें विश्वास हो गया था कि दीन की इस आग का अन्जाम खाकस्तर नही टूटना जिसका मुकद्दर हो वह यह गोहर नही,

आरम्भ में धर्म इस्लाम जो एक कण नजर आ रहा था पन्द्रहा बीस वर्ष के समय में शत्रुओं की दृष्टि में वह किसी हिमालय पर्वत से भी बढ़कर सुदृढ़ और अनमिट और अटल हो चुका था, किन्तु यह सुयोग्य दिवस आस्तिकों की दृढ़ता के साथ सत्य धर्म को थामने और तत्परता के साथ इसके आदेशों पर व्यवहार करने के कारण ही प्राप्त हुआ था, और अब भय था कही ऐसा न हो कि शक्ति व प्रताप के उन्माद में आनन्दित होकर धर्म के आदेश में से किसी ओदश की ओर से कोई असावधानी व निर्भीकता ग्रहण कर ली जाए और जिस सोपान पर दृढ़ पग के साथ चढ़ने से उत्थान प्राप्त हुआ था उस से पग उठा लिए जाएं

इस लिए यहां आदेशों के वर्णन के सम्बंध में समय पर यह निर्देश दिया कि सावधान तुम्हें और तुम्हारे धर्म को अब नास्तिको से तो कोई भय नही है वह तो सत्य के इस दीपक को बुझाने से निराश हो चुके है अब यदि धर्म को कोई हानी पहुचाने का भय है तो स्वंय मुसलमानों से ही है कि इस के पालन से विमुख न हो जाओ, नास्तिकों से तो अब डरने की आवश्यकता नही है उन की शक्ति टूट चुकी है और भविष्य में भी तुम्हारे सामने आने में उन को पराज्य ही होनी है, अपितु मुझ से डरते रहो ऐसा न हो कि इस धर्म पर व्यावहार करने से आलस्य बरत कर मुझे अप्रसन्न कर दो और इस सम्मान व सत्ता से वंचित कर दिए जाओ, अतः अब इस पूर्ण धर्म पर कार्य परायण रहना जिस धर्म पर कार्य करने से तुम को यह स्थान प्राप्त हुआ है, उसी धर्म पर कार्यपरायण रहना,

जब तक मुसलमान ईश्वर के इस आदेश पर कार्य परायण रहे यह सफल रहे, परन्तु जब से मुसलमानो ने इस गतिविधि से विमुखता की उस दिन से शनैः शनैः निर्बल होते गए और आज स्थिति यह है कि पूरी दुनिया में इस के लिए कोई स्थान नही है यह तुच्छ हो चुका है इस के लिए केवल एक ही मार्ग है कि इस संपुर्ण धर्म पर व्यावहार करे जैसे सहाबा ने किया था, अर्थात कुरआन के हर नियम और आदेश पर कार्य और इस से आगे यह भी कि संयुक्त रहना दलों में न बटना और अपनी रक्षा आप करना आज पूरे इसलामी संसार में ऐकता नही है,

एक दूसरे को समाप्त करने पर तुले हुए है और इतने दल है जिन की कोई गणना नही हर दल अपने को सत्य पर मान रहा है दूसरे को पथ भ्रष्ट किन्तु कुरआन के प्रकाश में एक भी कुरआन व सुन्नत पर नहीं चल रहा ईश्वर हमें सच्चा आस्तिक संयुक्त बना दे, (तकब्बल)

तुम से लोग प्रश्न करेंगे कौन सी वस्तु उन के लिए वैध है कह देना कि सब पवित्र वस्तुऐं तुम को वैध है और वह भी वैध है जो तुम्हारे लिए उन आखेटक जानवरों ने पकड़ा हो जिन को तुम

پریشان ہوئے اورانہوں نے مسلمانوں کو مٹانے کے لئے مدینہ پر حملہ کر دیا.مگر اس جنگ میں بھی مکہ والوں کو شکست ملی اوردن بدن مسلمانوں کی طاقت بڑھتی گئی اوردوسرے کفار اورمشرکین کمزورہوتے گئے. یہاں تک کہ ایک طاقت جو یہودیوں کی تھی وہ بھی ختم ہوگئی.اورمکہ کوبھی مسلمانوں نے فتح کرلیا.ان فتوحات کی بدولت اورمسلمانوں کی ثابت قدمی کی وجہ اوراللہ کی مدد سے اقوام عرب میں سے کوئی طاقت اہل ایمان کی ہم پلہ نہ رہی.(۳۰:۱تا۴)

اب تک مشرکین کو دین اسلام کے مٹنے کی جوآس لگی ہوئی تھی اپنا دم توڑ چکی تھی اورانہیں یقین ہوگیا تھا کہ، دین کی اس آگ کاانجام خاکستر نہیں،ٹوٹنا جس کا مقدرہووہ یہ گوہرنہیں.

شروع میں دین اسلام جوایک ذرہ نظر آرہا تھا پندرہ بیس سال کے عرصے میں دشمنوں کی نظر میں وہ کسی کوہ گراں سے بھی بڑھ کرمستحکم اورانمٹ اوراٹل ہوچکا تھا.لیکن یہ روز سعید اہل اسلام کومضبوطی کے ساتھ دین حق کوتھامنے اورتندہی کے ساتھ اس کے احکام پرعمل کرنے کی بدولت ہی نصیب ہوا تھا.اوراب اندیشہ تھا کہیں ایسا نہ ہوکہ قوت وشوکت کے نشہ میں مست ہوکراحکام دین میں سے کسی حکم کی طرف سے کوئی غفلت ولاپرواہی اختیارکرلی جائے اورجس زینے پر ثابت قدمی کے ساتھ چڑھنے سے عروج حاصل ہوا تھا اس سے پاؤں اٹھالئے جائیں.

اس لئے یہاں بیان احکام کے ضمن میں بروقت یہ ہدایت دی کہ ہوشیار تمہیں اورتمہارے دین کواب کفار سے توکوئی خطرہ نہیں ہے وہ توحق کی اس شمع کو بجھانے سے مایوس ہوچکے ہیں اب اگر دین کوکوئی نقصان پہنچنے کا خطرہ ہے توخودتم مسلمانوں سے ہی ہے کہ اس کی پابندی سے منحرف نہ ہوجاؤ کفار سے تواب ڈرنے کی ضرورت نہیں ہے ان کا زورٹوٹ چکا ہے اورآئندہ بھی تمہارے مقابلہ میں ان کوشکست ہی ہے.البتہ مجھ سے ڈرتے رہو.ایسا نہ ہوکہ اس دین پر عمل کرنے سے سستی برت کرتم مجھے ناراض کردواوراس عزت اقتدار سے محروم کردئے جاؤ اس لئے اب اس مکمل دین پر کاربندرہنا جس دین پر عمل کرنے سے تم کو یہ مقام حاصل ہوا ہے اسی دین پر کاربندرہنا.

جب تک مسلمان اللہ کے اس حکم پرکاربندرہے یہ کامیاب رہے لیکن جب سے مسلمانوں نے اس روش سے روگردانی کی اس دن سے رفتہ رفتہ کمزور ہوتے گئے.اورآج حال یہ ہے کہ پوری دنیا میں اس کے لئے کوئی مقام نہیں ہے. یہ ذلیل ہوچکا ہے اس کے لئے صرف ایک ہی رستہ ہے کہ اس مکمل دین پر عمل کریں جیسے صحابہ نے کیا تھا یعنی قرآن کے ہرقانون اورحکم پرعمل اوراس سے آگے یہ بھی ہے کہ متحدرہنا فرقوں میں نہ بٹنا اوراپنی حفاظت آپ کرنا آج پورے عالم اسلام میں اتحادنظر نہیں آتا.

ایک دوسرے کوختم کرنے پر تلے ہوئے ہیں اوراتنے فرقے ہیں جن کا کوئی شمار نہیں ہرفرقہ اپنے کوحق پر مان رہا ہے دوسرے کوگمراہ لیکن قرآن کی روشنی میں ایک بھی قرآن وسنت پرگامزن نہیں ہے اللہ ہم کوسچا مومن متحد بنادے(تقبل)

تم سے لوگ سوال کریں گےکون سی چیزیں ان کے لئے حلال ہیں کہدینا کہ سب پاکیزہ چیزیں تم کوحلال ہیں اور وہ بھی حلال ہے جوتمہارے لئے ان شکاری جانوروں نے پکڑا ہوجن کوتم نے سدھار کھا ہواس علم سے جس کواللہ

ने साधा रखा हो उस ज्ञान से जिस को ईश्वर ने तुम्हें सिखाया है तो जो आखेट वह तुम्हारे लिए पकड़ रखे उस को खा लिया करो (और आखेटक जानवरों को छोड़ते समय) ईश्वर का नाम ले लिया करो और ईश्वर से डरते रहो निःसंदेह ईश्वर शीघ्र हिसाब लेने वाला है. (4)

आज तुम्हारे लिए सब पवित्र वस्तुऐं वैध कर दी गई और पुस्तक वाले आस्तिको का भोजन भी तुम को वैध है और तुम्हारा खाना उन को वैध है और पवित्र आस्तिक स्त्री पुस्तक वालो की वैध है जब कि उनका मेहर दे दो और उन से सतीत्व स्थापित रखना उद्देश्य हो न खुली बदकारी करनी और न छुपी मित्रता करनी और जो व्यक्ति धर्म का शत्रु हुआ उस के कर्म नष्ट हो गए और वह प्रलोक में हानी पाने वालो में होगा. (5) {4:25, 5:72-73}

نے تمہیں سکھایا ہے تو جو شکار وہ تمہارے لئے پکڑ رکھیں اس کو کھا لیا کرو (اور شکاری جانوروں کو چھوڑتے وقت) اللہ کا نام لے لیا کرو اور اللہ سے ڈرتے رہو بے شک اللہ جلد حساب لینے والا ہے (۴)

آج تمہارے لئے سب پاک چیزیں حلال کر دی گئیں اور اہل کتاب مومن کا کھانا بھی تم کو حلال ہے اور تمہارا کھانا ان کو حلال ہے. پاک دامن اہل کتاب مومن عورتیں بھی حلال ہیں جب کہ ان کا مہر دے دو. اور ان سے عفت قائم رکھنی مقصود ہو نہ کھلی بدکاری کرنی اور نہ چھپی دوستی کرنی. اور جو شخص ایمان کا دشمن ہوا اس کے عمل ضائع ہو گئے اور وہ آخرت میں نقصان پانے والوں میں ہوگا (۵)

[۴:۲۵، ۵:۷۲،۷۳]

नोट- पुस्तक वालो की स्त्री और खाना वैध है जो आयत बता रही है, अतः यह सत्य है, किन्तु कुरआन ने पुस्तक वालों की पहचान बता दी है जो कुरआन में अंकित है इस आदेश के अंतर्गत मुसलमान यहूदी और ईसाई स्त्रीयों से विवाह कर रहें है क्या यह वैध है? कुरआन ने यह भी बता दिया है कि अनेकेश्वर वादी और नास्तिक स्त्री और नास्तिक पुरुष से भी विवाह अवैध है और यह भी कुरआन ही ने बताया है कि जिस ने ईश्वर के साथ किसी को सम्मिलित किया वह अनेकेश्वर वादी है, और यह भी कुरआन ही में अंकित है कि ईसाईयों ने ईसा अ0 को ईश्वर के अस्तित्व में सम्मिलित करके अनेकेश्वर वाद किया और यहूदीयों ने उज़ेर अ0 को ईश्वर के अस्तित्व में सम्मिलित करके अनेकेश्वर वाद किया.

इस स्पष्टि करण के बाद क्या यहूदी और ईसाई अनेकेश्वर वादी नही हुए निःसंदेह वह अनेकेश्वर वादी है फिर उन की स्त्रीयों से विवाह कैसे वैध कर लिया? ऐसे व्यक्तियों की स्त्रीयों से विवाह अवैध है, और ईश्वर के नियम की अवहैलना है और उन में जो धर्म वादी है वह तो मुहम्मद स0 पर आस्था लाता है यद्यपि यदि कोई ऐसा यहूदी और ईसाई है जो किसी को ईश्वर के अस्तित्व में सम्मिलित नही करता तो उस को किसी सीमा तक पुस्तक वाला माना जा सकता है, किन्तु विवाह की बात तब भी विचारणीय है.

ऐसी स्त्रीयां यदि मुस्लिम समाज में आजाएंगी तो उन की सहानुभूति अपने धर्म वालों से होगी और वह मुस्लिम समाज के लिए हानी कारक सिद्ध होगी अतः इस कार्य को करने से बचा जाए कल्याण इसी में है और ईश्वर का आदेश भी यही है ईश्वर ने तो यहां तक कहा है कि जो स्त्रीयां आस्तिक पलायन करके तुम्हारी सुरक्षा में आ जाऐं उन की परिक्षा कर लो. {60:10, 5:17}

ईश्वर ने (4:25) में भी विवाह की एक विधि बताई है उस पर व्यवहार करने में कल्याण है परन्तु जो मुसलमान कर रहे है उस में कल्याण नही है.

نوٹ:۔ اہل کتاب کی عورتیں اور کھانا حلال ہے جو آیت بتا رہی ہے اس لئے یہ حق ہے لیکن قرآن نے اہل کتاب کی شناخت بتا دی ہے. جو قرآن میں درج ہے. اس حکم کے تحت مسلمان یہودی اور عیسائی عورتوں سے شادی کر رہے ہیں کیا یہ حلال ہے؟ قرآن نے یہ بھی بتا دیا ہے کہ مشرک اور کافر عورتوں سے نکاح حرام ہے اسی طرح مشرک اور کافر مردوں سے بھی نکاح حرام ہے اور یہ بھی قرآن نے ہی بتایا ہے کہ جس نے اللہ کے ساتھ کسی کو شریک کیا وہ مشرک ہے اور یہ بھی قرآن میں درج ہے کہ عیسائیوں نے عیسیٰ کو اللہ کی ذات میں شریک بنا کر شرک کیا اور یہود نے عزیز کو اللہ کی ذات میں شریک کر کے شرک کیا.

اس وضاحت کے بعد کیا یہودی اور عیسائی مشرک نہیں ہو گئے. یقیناً وہ مشرک ہوئے پھر ان کی عورتوں سے نکاح کیسے حلال کر لیا؟ ایسے افراد کی عورتوں سے نکاح حرام ہے اور اللہ کے قانون کی خلاف ورزی ہے اور ان میں جو ایمان دار ہے وہ تو محمدؐ پر ایمان لاتا ہے تاہم اگر کوئی ایسا یہودی اور عیسائی ہے جو کسی کو اللہ کی ذات میں شریک نہیں کرتا تو اس کو کسی حد تک اہل کتاب مانا جا سکتا ہے لیکن نکاح کی بات تب بھی محل نظر ہے.

ایسی عورتیں اگر مسلم معاشرے میں آ جائیں گی تو ان کی ہمدردی اپنے ہم مذہبوں سے ہوگی اور وہ مسلم معاشرے کے لئے نقصان دینے والی ثابت ہوگی. اس لئے اس کام کو کرنے سے بچا جائے خیر اسی میں ہے. اور اللہ کا حکم بھی یہی ہے اللہ نے تو یہاں تک کہا ہے کہ جو عورتیں ہجرت کر کے تمہاری سرپرستی میں آ جائیں ان کا امتحان کر لو (۶۰:۱۰، ۵:۱۷)

اللہ نے (۴:۲۵) میں بھی نکاح کا ایک طریقہ بتایا ہے اس پر عمل کرنے میں خیر ہے مگر جو مسلمان کر رہے ہیں اس میں خیر نہیں ہے.

आस्तिको जब तुम नमाज पढ़ने की इच्छा किया करो तो मुख और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और सिर का मसाह कर लिया करो और टखनों तक पांव का मसाह कर लिया करो और यदि स्नान की अपेक्षा हो तो स्नान करके पवित्र हो जाया करो, और यदि रोगी हो या यात्रा में हो या तुम में से किसी को स्वपन दोस हो गया हो या

مومنو! جب تم نماز پڑھنے کا قصد کیا کرو تو منہ اور کہنیوں تک ہاتھ دھو لیا کرو. اور سر کا مسح کر لیا کرو اور ٹخنوں تک پاؤں کا مسح کر لیا کرو. اور اگر نہانے کی حاجت ہو تو نہا کر پاک ہو جایا کرو. اور اگر بیمار ہو یا سفر میں ہو یا تم میں سے کسی کو احتلام ہو گیا ہو یا عورتوں سے ہم بستر ہوئے ہو اور

स्त्रीयों से मैथुन किया हो और तुम्हे पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी लो और उससे मुख और हाथों का मसाह (अर्थात तयम्मुम) कर लो ईश्वर तुम पर किसी प्रकार की तंगी नही करना चाहता, अपितु यह चाहता है कि तुम्हे पवित्र करे और अपनी दया तुम पर पूर्ण करे ताकि तुम आज्ञाकारी करो. (6) {4:43, 60:12; 80:27; 27:32, 2:187, 29:55}

और ईश्वर ने तुम पर जो उपकार किया है उनको याद करो और उस वचन को भी जिसका तुम से वचन लिया था, जब तुम ने कहा था कि हमने सुन लिया और स्वीकार किया, और ईश्वर से डरो कुछ शंका नही कि ईश्वर मनों की बातों तक से अवगत है. (7)

ऐ धर्म वालो! ईश्वर के लिए न्याय की साक्ष्य देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की शत्रुता तुम को इस बात पर तत्पर न करे कि न्याय छोड़ दो, न्याय किया करो कि यही संयम की बात है और ईश्वर से डरते रहो कुछ संदेह नही कि ईश्वर तुम्हारे सब कार्यों से अवगत है. (8) {70:33}

जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उन से ईश्वर ने प्रण किया है कि उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है. (9)

और जिन्होंने इनकार किया और हमारी धाराओं को झुटलाया वह नर्की है. (10)

ऐ धर्म वालो! ईश्वर ने जो तुम पर उपकार किया है उसको याद करो जब एक दल ने संकल्प किया कि तुम पर कठोरता करे तो उसने उनके आक्रमण को रोक दिया या रोक देगा और ईश्वर से डरते रहो और आस्तिक को ईश्वर पर ही भरोसा करना चाहिए (11)

और ईश्वर ने इसराईल की सन्तान से वचन लिया और उनमें हमारे आदेश से ईशदूत ने बारह नेता नियुक्त किये फिर यदि तुम नमाज़ स्थापित करते रहे और दान देते रहोगे और मेरे रसूलों की सहायता करोगे और ईश्वर को अच्छा ऋण दोगे तो मैं तुम से तुम्हारी दुर्दशा अर्थात निर्धनता दूर कर दूंगा, और तुम को ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करूंगा जिनके नीचे नहरें बह रही है फिर जिसने इसके बाद तुम में से इनकार किया वह सीधे मार्ग से भटक जाएगा. (12) {3:81, 4:29,30,31}

नोट- दुर्दशा अर्थात निर्धनता दूर कर दूंगा किन्तु सामान्य आस्था यह बना रखी है कि यह स्वर्ग के बारे में है अर्थात परलोक, परन्तु धारा के शब्द बता रहे है कि दुनिया के लिए अर्थात इस उपवन में प्रविष्ट करने के बाद ईश्वर कहता है कि यदि उसके बाद कोई नास्तिकता करता है तो वह भूला सीधा मार्ग तो विचार करो उस परलोक के स्वर्ग में प्रविष्ट होने के बाद कौन नास्तिक हो सकता है, नास्तिक और आस्तिक होने की सम्भावना तो इस दुनिया में ही है स्वर्ग मं प्रविष्ट होने के बाद तो

تمہیں پانی نہ ملے تو پاک مٹی لو اور اس سے منہ اور ہاتھوں کا مسح (یعنی تیمم) کرلو. اللہ تم پر کسی طرح کی تنگی نہیں کرنا چاہتا بلکہ یہ چاہتا ہے کہ تمہیں پاک کرے اور اپنی نعمتیں تم پر پوری کرے تا کہ تم فرمانبرداری کرو (۶) [۴:۴۳، ۶۰:۱۲؛ ۸۰:۲۷، ۲:۱۸۷، ۲۹:۵۵]

اور اللہ نے تم پر جو احسان کئے ہیں ان کو یاد کرو. اور اس عہد کو بھی جس کا تم سے قول لیا تھا جب تم نے کہا تھا کہ ہم نے سن لیا اور قبول کیا. اور اللہ سے ڈرو. کچھ شک نہیں کہ اللہ دلوں کی باتوں تک سے واقف ہے (۷)

اے ایمان والو! اللہ کے لئے انصاف کی گواہی دینے کے لئے کھڑے ہو جایا کرو. اور لوگوں کی دشمنی تم کو اس بات پر آمادہ نہ کرے کہ انصاف چھوڑ دو. انصاف کیا کرو. کہ یہی پرہیزگاری کی بات ہے اور اللہ سے ڈرتے رہو کچھ شک نہیں کہ اللہ تمہارے سب اعمال سے خبردار ہے (۸) [۷۰:۳۳]

جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان سے اللہ نے وعدہ کیا ہے کہ ان کے لئے بخشش اور اجر عظیم ہے (۹)

اور جنہوں نے کفر کیا اور ہماری آیتوں کو جھٹلایا وہ جہنمی ہیں (۱۰)

اے ایمان والو! اللہ نے جو تم پر احسان کیا ہے اس کو یاد کرو جب ایک جماعت نے ارادہ کیا کہ تم پر دست درازی کریں تو اس نے ان کے ہاتھ روک دئے یا ہاتھ روک دے گا اور اللہ سے ڈرتے رہو. اور مومنوں کو اللہ پر بھروسہ کرنا چاہیے (۱۱)

اور اللہ نے بنی اسرائیل سے عہد لیا اور ان میں ہمارے حکم سے نبی نے بارہ سردار مقرر کئے پھر اللہ نے فرمایا کہ میں تمہارے ساتھ ہوں. اگر تم نماز قائم کرتے رہے اور زکوٰۃ دیتے رہو گے اور میرے رسولوں پر ایمان لاؤ گے اور ان کی مدد کرو گے. اور اللہ کو قرض حسنہ دو گے تو میں تم سے تمہاری بدحالیاں یعنی غربت دور کردوں گا اور تم کو ایسے باغوں میں داخل کروں گا جن کے نیچے نہریں بہ رہی ہیں پھر جس نے اس کے بعد تم میں سے کفر کیا وہ سیدھے رستے سے بھٹک جائے گا (۱۲) [۳:۸۱، ۴:۲۹، ۳۰، ۳۱]

نوٹ:۔ بدحالیاں یعنی غربت دور کردوں گا. لیکن عام عقیدہ یہ بنا رکھا ہے کہ یہ جنت اخروی کے بارے میں ہے مگر آیت کے الفاظ بتا رہے ہیں کہ یہ دنیا کے لئے ہے یعنی اس جنت میں داخل کرنے کے بعد اللہ فرماتا ہے کہ اگر اس کے بعد کوئی منکر ہوتا ہے تو وہ بھولا سیدھی راہ. تو غور کرو اس اخروی جنت میں داخل ہونے کے بعد کون منکر ہو سکتا ہے کافر اور مومن ہونے کا امکان تو اس دنیا میں ہی ہے. جنت

कोई नास्तिक नही होगा, अतः इस धारा में स्वर्ग से तात्पर्य संसारिक उपवन सम्पन्नता है? इस सम्पन्नता से ही उन्मत्त होकर मानव पथ भ्रष्ट होता है और जो बुद्धिमान होता है वह ईश्वर के आदेशों पर बराबर कार्यरत रहता है और अन्तिम परिणाम जो उसके लिए लिखा है अर्थात स्वर्ग वह मिल जाएगा (5:13)

(परन्तु बनी इसराईल ने वचन तोड़ दिया) तो उन लोगों के प्रण तोड़ देने के कारण हमारे नियम ने उन पर धिक्कार किया और उनके हृदयों को कठोर कर दिया, वह लोग वाक्यों को अपने स्थान से बदल देते हैं और जिन बातों की उनको शिक्षा दी गई थी उनका भी एक अंश भुला बैठे और थोड़े व्यक्तियों के अतिरिक्त सदैव तुम उनकी दुष्टता की सूचना पाते रहते हो, तो उनको क्षमा करो और उपकार करो कि ईश्वर उपकार करने वालों को मित्र रखता है (13)

और जो लोग कहते हैं कि हम नसारा हैं हमने उनसे वचन लिया था परन्तु उन्होंने भी उस शिक्षा का जो उन से की गई थी एक अंश को विस्मृत कर दिया तो हमारे नियम ने उनके मध्य प्रलय तक शत्रुता और कपट डाल दिया, और जो कुछ वह करते रहेंगे ईश्वर निकट ही उनको उससे सूचित करेगा (14)

ऐ पुस्तक वालो! तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है कि जो तुम बहुत कुछ छुपाते थे वह उसमें से तुम्हें खोल-खोलकर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत से पापों को क्षमा कर देते हैं निःसन्देह तुम्हारे पास ईश्वर की ओर से प्रकाश जो उज्ज्वल पुस्तक है आ चुकी है (15) (इस पर विश्वास लाओ 4:159)

जिस प्रकाश से ईश्वर अपनी इच्छा पर चलने वालों को मुक्ति के मार्ग दिखाता है और अपने आदेश से अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है और उनको सीधे मार्ग पर चलाता है (16)

जो लोग इस बात को मानते हैं कि ईसा पुत्र मरयम ईश्वर है वह निःसन्देह नास्तिक हैं उनसे कह दो कि यदि ईश्वर ईसा इब्ने मरयम को और उनकी माता को और जितने लोग पृथ्वी में हैं सब को वध करना चाहे तो उसके आगे किसकी सत्ता चल सकती है? आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ इन दोनों में है सब पर ईश्वर ही का राज्य है वह जो चाहता है उत्पन्न करता है और ईश्वर हर वस्तु के नियम बनाने वाला है (17) {5:5}

और यहूद और नसारा कहते हैं कि हम ईश्वर के पुत्र हैं और उसके प्रिय हैं कहो कि फिर वह तुम्हारे दुराचारों के कारण तुम्हें कष्ट क्यों देता है अपितु तुम उसकी रचनाओं में से मानव हो, वह क्षमा करता है उसको जो चाहता है और दण्ड देता हे उसको जो चाहता है (अपने कर्मों से) और आकाश और पृथ्वी और जो कुछ इन दोनों में है सब पर ईश्वर ही का राज्य है और उसी की ओर लौटकर जाना है (18)

میں داخل ہونے کے بعد تو کوئی کافر نہیں ہوگا۔اس لئے اس آیت میں جنت سے مراد دینوی جنت خوشحالی ہے اس خوشحالی سے ہی مدہوش ہوکر آدمی غلط راہ اختیار کرتا ہے راہ بھٹکتا ہے اور جو عقل مند ہوتا ہے وہ اللہ کے قانون پر برابر عمل کرتا رہتا ہے اور آخری انجام جو اس کے لئے لکھا ہے یعنی جنت وہ مل جائے گی (۱۳:۵)

(مگر بنی اسرائیل نے عہد توڑ دیا) تو ان لوگوں کے عہد توڑ دینے کے سبب ہمارے قانون نے ان پر لعنت کی اور ان کے دلوں کو سخت کر دیا۔وہ لوگ کلمات کو اپنے مقام سے بدل دیتے ہیں اور جن باتوں کی ان کو نصیحت کی گئی تھی ان کا بھی ایک حصہ فراموش کر بیٹھے اور تھوڑے آدمیوں کے سوا ہمیشہ تم ان کی خیانت کی خبر پاتے رہتے ہو تو ان کو معاف کرو اور درگزر کرو ان سے کہ اللہ احسان کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے (۱۳)

اور جو لوگ کہتے ہیں کہ ہم نصاریٰ ہیں ہم نے ان سے عہد لیا تھا مگر انہوں نے بھی اس نصیحت کو جو ان سے کی گئی تھی ایک حصہ فراموش کر دیا ہمارے قانون نے ان کے اندر قیامت تک دشمنی اور کینہ ڈالدیا۔اور جو کچھ وہ کرتے رہیں گے اللہ عن قریب ان کو اس سے آگاہ کرے گا (۱۴)

اے اہل کتاب تمہارے پاس ہمارا رسول آگیا ہے کہ جو تم بہت کچھ چھپاتے تھے وہ اس میں سے تمہیں کھول کھول کر بتاتے ہیں اور تمہارے بہت سے قصور معاف کر دیتے ہیں بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور جو روشن کتاب ہے آچکی ہے (۱۵) (اس پر ایمان لاؤ۔۴:۱۵۹)

جس نور سے اللہ اپنی رضا پر چلنے والوں کو نجات کے رستے دکھاتا ہے اور اپنے حکم سے اندھیروں میں سے نکال کر روشنی کی طرف لےجاتا ہے اور ان کو سیدھے رستے پر چلاتا ہے (۱۶)

جو لوگ اس بات کے قائل ہیں کہ عیسیٰ ابن مریم اللہ ہیں وہ بے شک کافر ہیں ان سے کہدو کہ اگر اللہ عیسیٰ ابن مریم کو اور ان کی والدہ کو اور جتنے لوگ زمین میں ہیں سب کو ہلاک کرنا چاہے تو اس کے آگے کس کی پیش چل سکتی ہے؟ آسمانوں اور زمین اور جو کچھ ان دونوں میں ہے سب پر اللہ ہی کی بادشاہی ہے وہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے اور اللہ ہر چیز کے قانون بنانے والا ہے (۱۷) [۵:۵]

اور یہود اور نصاریٰ کہتے ہیں کہ ہم اللہ کے بیٹے ہیں اور اس کے پیارے ہیں کہو کہ پھر وہ تمہاری بداعمالیوں کے سبب تمہیں عذاب کیوں دیتا ہے۔بلکہ تم اس کی مخلوق میں انسان ہو۔وہ بخشتا ہے اس کو جو چاہتا ہے اور عذاب دیتا ہے اس کو جو چاہتا ہے (اپنے عملوں سے) اور آسمان اور زمین اور جو کچھ ان دونوں میں ہے سب پر اللہ ہی کی حکومت ہے اور اسی کی طرف لوٹ کر جانا ہے (۱۸)

ऐ अहले किताब ईशदूतों के आने का क्रम जो विच्छिन्न रहा तो उस विराम के बाद अब तुम्हारे पास ईशदूत आ गया है जो तुम से हमारे आदेश सुनाता है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना देने वाला या भय सुनाने वाला नही आया सो अब तुम्हारे पास शुभ सूचना और भय सुनाने वाला आ गया है और ईश्वर हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है (19)

اے اہل کتاب رسولوں کے آنے کا سلسلہ جو منقطع رہا تو اس وقفہ کے بعد اب تمہارے پاس رسول آ گیا ہے جو تم سے ہمارے احکام بیان کرتا ہے تا کہ تم یہ نہ کہو کہ ہمارے پاس کوئی خوشخبری دینے والا یا ڈر سنانے والا نہیں آیا سو اب تمہارے پاس خوشخبری اور ڈر سنانے والا آ گیا ہے اور اللہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے(۱۹)

(जाति की अवज्ञा को देखकर) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भ्राताओं तुम पर ईश्वर ने जो उपकार किए हैं उनको याद करो कि उसने तुम में से बहुतों को रसूल बनाया और तुम में से बहुत को राजा बनाया और तुम को इतना दिया कि संसार वालों में से किसी को नहीं दिया (20) {2:243}

(قوم کی نافرمانیوں کو دیکھ کر) جب موسیٰ نے اپنی قوم سے کہا کہ بھائیو! تم پر اللہ نے جو احسان کئے ہیں ان کو یاد کرو کہ اس نے تم میں سے بہتوں کو رسول بنایا اور تم میں سے بہت کو بادشاہ بنایا اور تم کو اتنا دیا کہ اہل عالم میں سے کسی کو نہیں دیا(۲۰)[۲:۲۴۳]

तो भ्राताओं! तुम पवित्र भूमि में जिसे ईश्वर ने तुम्हारे लिए लिख रखा है (इस प्रतिबद्धा पर कि) तुम प्रविष्ट हो जाओ और मुठभेड़ के समय पीठ न फेरना अन्यथा हानि में पड़ जाओगे (21)

تو بھائیو! تم ارض مقدس میں جسے اللہ نے تمہارے لئے لکھ رکھا ہے (اس شرط پر کہ) تم داخل ہو جاؤ اور مقابلہ کے وقت پیٹھ نہ پھیرنا. ورنہ نقصان میں پڑ جاؤ گے.(۲۱)

वह कहने लगे कि मूसा वहां तो बड़े शक्तिशाली लोग हैं और जब तक वह उस भूमि से निकल न जाऐं हम वहां नही जा सकते, हां यदि वह वहां से निकल जाऐं तो हम प्रविष्ट हो जाऐंगे (22)

وہ کہنے لگے کہ موسیٰ وہاں تو بڑے زبردست لوگ ہیں اور جب تک وہ اس زمین سے نکل نہ جائیں ہم وہاں نہیں جا سکتے. ہاں اگر وہ وہاں سے نکل جائیں تو ہم داخل ہو جائیں گے.(۲۲)

कहा दो लोगों ने जो ईश्वर से डरते थे जिन पर ईश्वर की दया थी कि उन पर द्वार के मार्ग से आक्रमण कर दो जब तुम द्वार में प्रविष्ट हो गए तो विजय तुम्हारी है और ईश्वर पर ही विश्वास रखो यदि तुम आस्तिक हो (23)

کہا دو لوگوں نے جو اللہ سے ڈرتے تھے جن پر اللہ کی عنایت تھی کہ ان پر دروازے کے رستے سے حملہ کر دو جب تم دروازے میں داخل ہو گئے تو فتح تمہاری ہے اور اللہ پر ہی بھروسہ رکھو اگر تم صاحب ایمان ہو(۲۳)

वह बोले कि मूसा जब तक वह लोग वहां हैं हम कभी वहां नही जा सकते तो तुम और तुम्हारा ईश्वर जाओ और लड़ो हम यहीं बैठे रहेंगे या तुम्हारा भाई हारून जाऐ) (24)

وہ بولے کہ موسیٰ جب تک وہ لوگ وہاں ہیں ہم کبھی وہاں نہیں جا سکتے تو تم اور تمہارا اللہ جاؤ اور لڑو ہم یہیں بیٹھے رہیں گے (یا تمہارا بھائی ہارون جائے)(۲۴)

मूसा ने कहा कि ईश्वर मैं अपने और अपने भाई के अतिरिक्त और किसी पर अधिकार नही रखता तू हम में और उन अवज्ञाकारों में विच्छेद कर दे (25)

موسیٰ نے کہا کہ اللہ میں اپنے اور بھائی کے سوا اور کسی پر اختیار نہیں رکھتا تو ہم میں اور ان نافرمان لوگوں میں جدائی کر دے(۲۵)

ईश्वर ने कहा (ऐसे अवज्ञाकारों की यही सजा है) कि निःसन्देह वह भूमि चालीस वर्ष उनके लिए वर्जित कर दी गई (इस समय में) वह लोग इसी वन में विक्षिप्त दुखी रहेंगे, किसी बस्ती में उन्हें आबाद होना प्राप्त न होगा, पस तू दुखी न हो इन अवज्ञाकारी लोगों पर (26) {2:243}

اللہ نے فرمایا (ایسے نافرمانوں کی یہی سزا ہے کہ) بے شک وہ سرزمین چالیس برس ان کے لئے ممنوع کر دی گئی (اس مدت میں) وہ لوگ اسی دشت میں سرگرداں رہیں گے کسی بستی میں انہیں آباد ہونا نصیب نہ ہوگا پس تو غمگین نہ ہو ان نافرمان لوگوں پر(۲۶)[۲:۲۴۳]

नोट- कुरआन में बनी इसराईल का उल्लेख काफी विस्तार से वर्णित हुआ है उनकी हर भ्रष्टता का वर्णन किया गया और अन्त में उन्होंने अपने नबी से यह तक कह दिया जब उनको धर्म युद्ध का आदेश दिया गया कि ऐ मूसा तू और तेरा ईश्वर जाकर युद्ध करो हम नही जाऐंगे हम यहां बैठे हैं इन अवज्ञाओं को अंततः कब तक सहन किया जाता और अब इन अवज्ञाकारों को दण्ड देने का समय भी आ गया था क्योंकि वह अवज्ञा करते करते उस स्थान पर पहुंच गए थे जहां के लिए

نوٹ: قرآن میں بنی اسرائیل کا بیان کافی تفصیل سے ذکر ہوا ہے ان کی ہر گمراہی کا ذکر کیا گیا اور آخر میں انہوں نے اپنے نبی سے یہ تک کہہ دیا جب ان کو جہاد کا حکم دیا گیا کہ اے موسیٰ تو اور تیرا رب جا کر لڑو ہم نہیں جائیں گے ہم یہاں بیٹھے ہیں ان نافرمانیوں کو آخر کب تک برداشت کیا جاتا اور اب ان نافرمانوں کو سزا دینے کا وقت بھی آ گیا تھا کیوں کہ وہ نافرمانی کرتے کرتے اس مقام پر پہنچ گئے تھے جہاں

ईश्वर कहता है कि अब उनके हृदयों पर ताले लग गए है और ईश्वर के नियम ने उनको भ्रष्ट बता दिया हो, जब यह स्थान आ गया और सुधार की कोई संभावना प्रतीत न हुई तो ईश्वर ने उन अवज्ञाकारों को समाप्त करने के लिए उनको एक वन में भटका दिया अर्थात शत्रु के भय के कारण वह वन में छुपते फिरे और वह उस वन में ऐसे फंसे कि वहां से निकलना प्राप्त न हुआ और वह वहां ही समाप्त हो गए तात्पर्य यह था कि वह अवज्ञाकार समाप्त कर दिए जाएँ जिससे उनकी दुष्टता नवीन सन्तान जो आगे आने वाली थी जिससे ईश्वर को काम लेना था उन पर इन दुष्टता का प्रभाव न पड़े और वह सच्चे आस्तिक बन कर उभरे और धर्म की सेवा करते हुए उत्पीड़ितों की सहायता करें यह नियम आदि से है और अनन्त तक रहेगा इसमें कोई परिवर्तन नही होगा क्योंकि ईश्वर के नियम और बात में कोई परिवर्तन नही होता, तो ऐसे ही हर काल में हर अवज्ञाकारी जाति के साथ होता रहेगा वह समाप्त होती रहेगी और ईश्वर की आज्ञाकारी जाति आगे आकर धर्म की सेवा करती रहेगी जिस सदाचारियों की सहायता ईश्वर करेगा,

کے لئے اللہ کہتا ہے کہ اب ان کے دلوں پر تالے لگ گئے ہیں اور اللہ کے قانون نے ان کو گمراہ قرار دیا جب یہ مقام آ گیا اور اصلاح کا کوئی امکان نظر نہ آیا تو اللہ نے ان نافرمانوں کو ختم کرنے کے لئے ان کو ایک دشت میں بھٹکا دیا یعنی دشمن کے خوف کی وجہ سے وہ دشت میں چھپتے پھرے اور وہ اس دشت میں ایسے پھنسے کہ وہاں سے نکلنا نصیب نہ ہوا۔ اور وہ وہاں ہی ختم ہو گئے مقصد یہ تھا کہ وہ نافرمان ختم کر دیے جائیں جس سے ان کی خباثت نئی نسل جو آگے آنے والی تھی جس سے اللہ کو کام لینا تھا ان پر اس خباثت کا اثر نہ پڑے اور وہ سچے مومن بن کر ابھریں اور دین کی خدمت کرتے ہوئے مظلوموں کی مدد کریں یہ قانون ازل سے ہے اور ابد تک رہے گا اس میں کوئی تبدیلی نہیں ہوگی کیونکہ اللہ کے قانون اور بات میں کوئی تبدیلی نہیں ہوتی. تو ایسے ہی ہر زمانے میں ہر نافرمان قوم کے ساتھ ہوتا رہے گا وہ ختم ہوتی رہے گی اور اللہ کی فرمانبردار قوم آگے آ کر دین کی خدمت کرتی رہے گی جس نیک قوم کے ساتھ اللہ کی مدد ہوگی.

जिस जाति के साथ ईश्वर ने बहुत पुरस्कार किए थे जिनका उल्लेख कुरआन में है परन्तु उस जाति को ही वन में भटका कर उनके पापों के कारण से समाप्त कर दिया तो यह ईश्वर की रीति है, ऐसे ही आज मुस्लिम जाति को सोचना चाहिए कि उनके साथ इतना अन्याय क्यों हो रहा है, इसका कारण केवल यही है कि इसने भी ईश्वर की अवज्ञा इस सीमा तक कर रखी है जिसको वर्णन करना भी कठिन है हर बुद्धि वाला व्यक्ति बता सकता है कुरआन के प्रकाश में,

جس قوم کے ساتھ اللہ نے بہت انعام کئے تھے جن کا ذکر قرآن میں ہے مگر اس قوم کو ہی جنگل میں بھٹکا کر ان کے گناہوں کی وجہ سے ختم کر دیا تو یہ اللہ کی سنت ہے ایسے ہی آج مسلم قوم کو سوچنا چاہیے کہ ان کے ساتھ اتنا ظلم کیوں ہو رہا ہے اس کی وجہ صرف یہی ہے کہ اس نے بھی اللہ کی نافرمانی اس حد تک کر رکھی ہے جس کو بیان کرنا بھی مشکل ہے ہر عقل مند آدمی نشان دہی کر سکتا ہے قرآن کی روشنی میں.

क्या आज मुस्लिम जाति कुरआन पर व्यवहार कर रही है? कुरआन से दूर हो गई जिसका यह परिणाम है कि यह हीन हो गई, यदि सम्मान चाहते हो तो वापस आ जाओ कुरआन पर यदि नही आते तो परिणाम सामने है,

کیا آج مسلم قوم قرآن پر عمل کر رہی ہے؟ قرآن سے دور ہو گئی جس کا یہ نتیجہ ہے کہ یہ ذلیل ہو گئی اگر عزت چاہتے ہو تو واپس آ جاؤ قرآن پر اگر نہیں آتے تو انجام سامنے ہے.

ऐ रसूल उन लोगों को आदम के दो पुत्रों की दशा सच्चाई के साथ सुनाओ जब उन दोनों ने आहुति प्रस्तुत की तो एक की आहुति स्वीकार हुई और दूसरे की स्वीकार नही हुई (इस पर भाई ने हसद द्वेष में जल कर कहा) मैं तुझे अवश्य वध कर डालूंगा उसने कहा कि ईश्वर सदाचारियों की भेंट स्वीकार करता है (27)

यदि तू हाथ चलाएगा मुझ पर मारने को मैं न हाथ चलाऊंगा तुझ पर मारने को (परन्तु बचाओ अवश्य करूंगा) मैं डरता हूं ईश्वर से जो स्वामी है सारे संसार का (28)

اے رسول ان لوگوں کو آدم کے دو بیٹوں کا حال سچائی کے ساتھ بتاؤ جب ان دونوں نے قربانی پیش کی تو ایک کی قربانی قبول ہوئی اور دوسرے کی قبول نہیں ہوئی (اس پر بھائی نے حسد میں جل کر کہا) میں تجھے یقیناً قتل کر ڈالوں گا اُس نے کہا کہ اللہ پرہیزگاروں کی نیاز قبول کرتا ہے (۲۷)

اگر تو ہاتھ چلائے گا مجھ پر مارنے کو میں نہ ہاتھ چلاؤں گا تجھ پر مارنے کو (مگر بچاؤ ضرور کروں گا) میں ڈرتا ہوں اللہ سے جو پروردگار ہے سارے جہان کا (۲۸)

अर्थात यदि तू मेरे मारने में पहल करेगा तो मैं पहल नही करूंगा परन्तु रक्षा अवश्य करूंगा और करना चाहिए ऐसे ही शत्रु के सामने गर्दन नही झुका देनी चाहिए

یعنی اگر تو میرے مارنے میں پہل کرے گا تو میں پہل نہیں کروں گا مگر دفع ضرور کروں گا اور کرنا چاہیے ایسے ہی دشمن کے سامنے گردن نہیں جھکا دینی چاہیے.

मैं चाहता हूं कि तू मेरा और अपना दोनों का पाप अपने ऊपर लाद ले ताकि तू नर्की होकर रहे और अत्याचारियों की यही सजा है (29)

अतः उसके जी ने उसको अपने भाई के वध पर तत्पर कर दिया, अतः उसने उसको वध कर डाला और विनष्ट होने वालों में हो गया (30)

फिर ईश्वर ने एक कव्वा भेजा जो भूमि कुरेदने लगा ताकि उसे बताए कि वह अपने भाई के शव को कैसे छुपाऐ इसके बाद वह कहने लगा मुझ से इतना भी न हो सका कि उस कव्वे के बराबर होता कि अपने भाई के शव को छुपा देता फिर वह

میں چاہتا ہوں کہ تو میرا اور اپنا دونوں کا گناہ اپنے اوپر لادے تا کہ تو دوزخی ہو کر رہے اور ظالموں کی یہی سزا ہے (۲۹)

پس اس کے نفس نے اس کو اپنے بھائی کے قتل پر آمادہ کیا چنانچہ اس نے اس کو قتل کر ڈالا اور تباہ کاروں میں ہو گیا (۳۰)

پھر اللہ نے ایک کوا بھیجا جو زمین کریدنے لگا. تا کہ اسے بتائے کہ وہ اپنے بھائی کی نعش کیسے چھپائے. اس کے بعد وہ کہنے لگا مجھ سے اتنا بھی نہ ہو سکا کہ اس کوے کے برابر ہوتا کہ اپنے بھائی کی نعش چھپا دیتا پھر وہ

लज्जित हुआ (31)

इसी कारण हमने बनी इसराईल पर यह आदेश अवतरित किया कि जो व्यक्ति किसी को (अनुचित) वध करेगा बिना किसी जी का बदला लेने या देश में विकार करने का दण्ड दिया जाने तो उसने मानो सम्पूर्ण लोगों को वध किया और जो उसके जीवन अर्थात जीवित करने का कारण बना तो मानो सम्पूर्ण लोगों के जीवन अर्थात जीवित करने का कारण हुआ, और उन लोगों के पास हमारे रसूल उज्ज्वल प्रमाण ला चुके है फिर इसके बाद भी उनमें बहुत से व्यक्ति देश में अत्याचार करने वाले है (32) {17:33}

شرمندہ ہوا (۳۱)

اسی وجہ سے ہم نے بنی اسرائیل پر یہ حکم نازل کیا کہ جو شخص کسی کو (ناحق) قتل کرے گا بغیر اس کے کہ جان کا بدلہ لیا جائے یا ملک میں خرابی کرنے کی سزا دی جائے تو اس نے گویا تمام لوگوں کو قتل کیا. اور جو اس کی زندگانی یعنی زندہ کرنے کا سبب بنا تو گویا تمام لوگوں کی زندگانی یعنی زندہ کرنے کا سبب ہوا. اور ان لوگوں کے پاس ہمارے رسول روشن دلیلیں لا چکے ہیں. پھر اس کے بعد بھی ان میں بہت سے لوگ ملک میں زیادتی کرنے والے ہیں (۳۲) [۱۷:۳۳]

नोट- धारा 27 में आदम के दो पुत्रों से अर्थ उपेक्षित नही है कि आदम के सगे पुत्र ही हों अपितु उनके वंश के दो व्यक्ति भी हो सकते है क्योंकि हर मानव को आदम का पुत्र कहा जात है,

उन दो पुत्रों ने जो आहुति प्रस्तुत की थी उनमें से एक की स्वीकार हो गई दूसरे की नही, कुरआन ने केवल इतना ही उल्लेख किया है, अब कैसे ज्ञात हो कि कौन स्वीकार हुई और कौन नही, बुद्धि यह बताती है कि जो व्यक्ति सदाचारी होता है उसका हर कार्य ईश्वर की इच्छा के अनुसार होता है और जो ईश्वर के इच्छानुसार होगा वह अवश्य स्वीकार होगा और जो व्यक्ति भ्रष्ट होता है और वह ईश्वर के लिए स्वीकार नही होता, अतः दोनों भाईयों में एक सदाचारी था उसकी आहुति कर्म स्वीकार हो गई और दूसरा भ्रष्ट था उसकी आहुति कर्म स्वीकार नही हुए थे, धारा भी यही बता रही है, सदाचारी और भ्रष्ट

इस स्वीकार होने और न होने के विषय में कुछ कथाऐं लिखी है जो स्वीकारणीय नही है, अतः हम को वहां तक ही बुद्धि के घोड़े दौड़ाने चाहिए जहां तक कुरआन रसूल की रीति साथ दे सके और बस,

نوٹ: ۔ آیت نمبر ۔ ۲۷، میں آدم کے دو بیٹوں سے مراد ضروری نہیں ہے کہ آدم کے صلبی فرزند ہی ہوں بلکہ ان کی نسل کے دو انسان بھی ہو سکتے ہیں کیونکہ ہر انسان کو ابن آدم ہی کہا گیا ہے تمام انسانوں کو بنی آدم کہا جاتا ہے.

ان دو بیٹوں نے جو قربانی پیش کی تھی ان میں سے ایک کی قبول ہو گئی دوسرے کی نہیں. قرآن نے صرف اتنا ہی ذکر کیا ہے اب کیسے پتہ چلے کہ کون قبول ہوئی اور کون نہیں. عقل یہ بتاتی ہے کہ جو آدمی نیک ہوتا ہے اس کا ہر کام اللہ کی مرضی کے مطابق ہوتا ہے اور جو اللہ کی مرضی کے مطابق ہوگا وہ ضرور قبول ہوگا. اور جو انسان فاسق ہوتا ہے اس کا ہر کام اللہ کی نافرمانی ہوتا ہے اور وہ اللہ کے لئے قبول نہیں ہوتا. اس لئے ان دونوں بھائیوں میں ایک نیک تھا اس کی قربانی عمل قبول ہوئی تھی. اور دوسرا فاسق تھا اس کی قربانی (عمل) قبول نہیں ہوئی تھی آیت بھی یہی بتا رہی ہے نیک اور فاسق.

اس قبول ہونے اور نہ ہونے کے بارے میں کچھ قصے لکھے ہیں جو قابل قبول نہیں ہیں. اس لئے ہم کو وہاں تک ہی عقل کے گھوڑے دوڑانے چاہیں جہاں تک قرآن اور سنت رسول ساتھ دے سکے اور بس.

उन लोगों की जो ईश्वर और उसके रसूल से युद्ध करें और देश में अशान्ति के लिए दोड़धूप करें (अर्थात जो विनाशकारी और दस्यु हों) कि उन्हें अवश्य वध किया जाए या उन्हें सूली दे दी जाए या विविध ओर से उनके हाथ और पॉव काट दिए जाऐं या उनको देश के दूसरे लोगों से अलग करके बन्दी बना दिया जाए यह तो दुनिया में उनका अपमान है और परलोक में उनके लिए बड़ा दण्ड तैयार है (33)

ان لوگوں کی جو اللہ اور اس کے رسول سے جنگ کریں اور ملک میں فساد کے لئے دوڑ دھوپ کریں (یعنی جو غارت گر اور ڈاکو ہوں) کہ انہیں لازماً قتل کیا جائے یا انہیں سولی دے دی جائے یا مخالف سمت سے ان کے ہاتھ اور پاؤں کاٹ دئے جائیں یا ان کو ملک کے دوسرے لوگوں سے الگ کر کے قید کر دیا جائے یہ تو دنیا میں ان کی رسوائی ہے اور آخرت میں ان کے لئے بڑا عذاب تیار ہے (۳۳)

इमाम अबु हनीफा का कहना भी यही है कि उसको बन्दी बना दिया जाए

(امام ابوحنیفہ کا موقف بھی یہی ہے کہ اس کو قید کر دیا جائے)

हां जिन लोगों ने इससे पहले कि तुम्हारे अधिकार में आ जाए पश्चाताप कर लें तो जान रखो कि ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (34) {5:39}

ہاں جن لوگوں نے اس سے پہلے کہ تمہارے قابو میں آجائیں توبہ کر لیں تو جان رکھو کہ اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۳۴) [۵:۳۹]

मुसलमानो (हर दशा में) ईश्वर की अवज्ञा के परिणाम से डरते रहो और उस तक पहुंचने के लिए (अच्छे कर्मों को) आधार बनाओ और उसके मार्ग में (हर प्रकार के) प्रयास करो ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो (35) {9:99, 17:57, 39:13}

مسلمانوں (ہر حال میں) اللہ کی نافرمانی کے نتائج سے ڈرتے رہو اور اس تک پہنچنے کے لئے (اچھے عمل کو) ذریعہ بناؤ اور اس کی راہ میں (ہر طرح کی) جد و جہد کرو تاکہ تمہیں فلاح حاصل ہو (۳۵) [۹:۹۹، ۱۷:۵۷، ۳۹:۱۳]

जिन लोगों ने इनकार का मार्ग ग्रहण कर रखा है यदि उनके अधिकार में दुनिया संसार की सारी

جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے اگر ان کے قبضہ میں دنیا جہاں کی ساری دولت ہو اور اتنی ہی اور کہیں سے

پاجائیں اور قیامت کے دن عذاب سے بچنے کے لئے سب کچھ دے دینا چاہیں تب بھی ان کی طرف سے یہ فدیہ قبول نہیں کیا جائے گا ان کے لئے دردناک عذاب ہے(۳۶)

सम्पत्ति हो और इतनी ही और कही से पा जाऐं और प्रलय के दिन देना चाहें तब भी उनकी ओर से यह प्रतिदान स्वीकार नही किया जाएगा उनके लिए पीड़ा दायक दण्ड है (36)

وہ دوزخ کی آگ سے بچنے کے لئے کوشش کریں گے لیکن وہاں سے نکل نہیں سکتے اور ان کے لئے ہمیشہ کا عذاب ہے(۳۷)

वह नर्क की आग से बचने के लिए प्रत्यन करेंगे किन्तु वहां से निकल नही सकते और उनके लिए सदैव का दण्ड है (37)

چور خواہ مرد ہو یا عورت اس کے ہاتھ کاٹ ڈالو یہ سزا ہے اس حرکت کی جس کے وہ مرتکب ہوئے اور اللہ کی طرف سے عذاب ہے اللہ سب پر غالب ہے اور اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں(۳۸)[۳۷:۱۷، ۲۹:۲۹، ۵:۳۴]

चोर चाहे पुरुष हो या स्त्री उसके हाथ काट डालो यह दण्ड है उस कर्म का जिसके वह अभियुक्त हुए और ईश्वर की ओर से दण्ड है ईश्वर सब पर अधिपति है और उसका कोई काम युक्ति से रहित नही (38) {37:17, 29:29, 5:34}

پس جس شخص نے اس ظلم یعنی چوری کے ارتکاب کے بعد توبہ کر لی اور اپنی اصلاح کر لی تو بے شک اللہ اس پر رحمت کے ساتھ متوجہ ہوگا بے شک اللہ بخشنے والا اور مہربان ہے(۳۹)

अतः जिस व्यक्ति ने उस अत्याचार अर्थात चोरी करने के बाद पश्चाताप कर लिया और अपना सुधार कर लिया तो निःसन्देह ईश्वर उस पर दया के साथ आकृष्ट होगा बे शक ईश्वर क्षमा करने वाला और दयालु है (39)

کیا تجھے معلوم نہیں کہ آسمانوں اور زمین میں بادشاہت صرف اللہ ہی کے لئے ہے۔اس لئے جو خود چاہے اپنے گناہوں کی وجہ سے اللہ کا قانون اسے عذاب دیتا ہے اور جو خود اپنے نیک عمل سے چاہتا ہے اس کو بخش دیتا ہے اللہ ہر چیز کے قانون بنانے والا ہے(۴۰)

क्या तुझे ज्ञात नही कि आकाशों और पृथ्वी में राज्य केवल ईश्वर ही के लिए है अतः जो स्वयं चाहे अपने पापों के कारण ईश्वर का नियम उसे दण्ड देता है और जो स्वयं अपने सत्कर्मों से चाहता है उसको क्षमा कर देता है ईश्वर हर वस्तु के नियम बनाने वाला है (40)

اے رسول تجھے وہ لوگ غم میں نہ ڈالیں جو کفر میں جوش اور تیزی دکھا رہے ہیں کہ ان کا ہر فرد دوسرے فرد سے کفر میں بازی لے جانا اور آگے بڑھ جانا چاہتا ہے۔جو ان منافقین میں سے ہیں جنہوں نے اپنے منہ سے کہا ہے کہ ہم ایمان لے آئے حالانکہ ان کے دلوں نے یقین نہیں کیا۔وہ ان لوگوں سے ہیں جو یہودی ہیں وہ غلط باتیں بنانے کے لئے جاسوسی کرتے ہیں اور ایسے لوگوں کے لئے جاسوس بنے ہیں جو ابھی تمہارے پاس نہیں آئے صحیح باتوں کو ان کے مقام سے بدل دیں گے اور کہیں گے کہ اگر تم کو یہی حکم ملے تو اسے قبول کر لینا اور اگر نہ ملے تو قبول نہ کرنا اور اگر کسی کو اللہ کا قانون گمراہ کر دے تو اس کے لئے تم کچھ بھی اللہ سے اختیار نہیں رکھتے یہ وہ لوگ ہیں جن کے دلوں کو اللہ کے قانون نے پاک کرنا نہیں چاہا ان کے لئے دنیا میں بھی ذلت ہے اور آخرت میں بھی بڑا عذاب ہے(۴۱)

ऐ रसूल तुझे वह लोग शोक में न डालें जो नास्तिकता में आवेश और तीव्रता दिखा रहे हैं कि उन का हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से नास्तिकता में पण ले जाना और आगे बढ़ जाना चाहता है, जो उन कपटियों में से हैं जिन्होंने अपने मुख से कहा है कि हम विश्वास ले आए यद्यपि उनके मनो ने विश्वास नही किया वह उन लोगो से हैं जो यहूदी हैं वह मिथ्या बातें बनाने के लिए गुप्तचरी करते हैं और ऐसे लोगो के लिए गुप्तचर बने हैं जो अभी तुम्हारे पास नही आए उचित बातों को उनके स्थान से बदल देंगे और कहेंगे कि यदि यही आदेश मिले तो स्वीकार कर लेना, और यदि न मिले तो स्वीकार न करना और यदि किसी को ईश्वर का नियम पथ भ्रष्ठ कर दे तो उस के लिए तुम कुछ भी ईश्वर से अधिकार नही रखते यह वह लोग हैं जिन के मनो को ईश्वर के नियम ने पवित्र करना नही चाहा उन लिए दुनिया में भी लज्जा है और परलोक में भी बड़ा दण्ड है, (41)

جھوٹی باتیں بنانے کے لئے وہ جاسوسی کرنے والے اور حرام مال کھانے والے ہیں اگر وہ تمہارے پاس کوئی مقدمہ لائیں تو تم کو اختیار ہے کہ فیصلہ کر دینا یا اعراض کرنا اور اگر ان سے اعراض کرو گے تو وہ تمہارا کچھ بھی نہیں بگاڑ سکیں گے اور اگر فیصلہ کرنا چاہو تو انصاف کا فیصلہ کرنا کہ اللہ انصاف کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے(۴۲)

झूठी बाते बनाने के लिए वह गुप्तचरी करने वाले और अवैध माल रखने वाले हैं, यदि वह तुम्हारे पास कोई वाद लाएं तो तुम को अधिकार है कि निर्णय कर देना या विमुखता करना और यदि उनसे विमुखता करोगे तो वह तुम्हारा कुछ भी नही बिगाड़ सकेंगे और यदि निर्णय करना चाहो तो न्याय का निर्णय करना कि ईश्वर न्याय करने वालो को मित्र रखता है, (42)

اور وہ تم سے اپنے مقدمات کیوں کر فیصل کرائیں گے

और वह तुम से अपने वाद क्यो कर निर्णय

कराऐंगे जबकि स्वंय उन के पास तौरात है जिसमें ईश्वर का आदेश लिखा हुआ है (वह उसे जानते हैं) फिर इसके बाद उससे फिर जाते हैं और वह लोग आस्था नही रखते. (43) {5:46}

جب کہ خود ان کے پاس تورات ہے جس میں اللہ کا حکم لکھا ہوا ہے (وہ اسے جانتے ہیں) پھر اس کے بعد اس سے پھر جاتے ہیں اور وہ لوگ ایمان ہی نہیں رکھتے (۴۳) [۴۶:۵]

निःसंदेह हमने तौरात अवतरित की जिसमें शिक्षा और प्रकाश है उस के अनुसार ईशदूत जो आज्ञाकारी थे यहूदीयों को आदेश देते रहे हैं और गुरुजन और पंडित भी क्योंकि वह ईश्वर की पुस्तक के रखवाले नियुक्त किए गए थे और उस पर साक्षी थे तो तुम लोगो से मत डरना और मुझ ही से डरना और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य न लेना और जो ईश्वर के अवतरित किए हुए आदेशो के अनुसार आदेश न दे तो ऐसे लोग नास्तिक है. (44)

بے شک ہم نے تورات نازل فرمائی جس میں ہدایت اور روشنی ہے. اسی کے مطابق انبیاء جو فرماں بردار تھے یہودیوں کو حکم دیتے رہے ہیں اور مشائخ اور علماء بھی کیونکہ وہ اللہ کی کتاب کے نگہبان مقرر کئے گئے تھے اور اس پر گواہ تھے تو تم لوگوں سے مت ڈرنا اور مجھ ہی سے ڈرنا اور میری آیتوں کے بدلے تھوڑی سی قیمت نہ لینا اور جو اللہ کے نازل فرمائے ہوئے احکام کے مطابق حکم نہ دے تو ایسے لوگ کافر ہیں (۴۴)

नोट- थोड़ा मूल्य लेने का अर्थ यह है कि ईश्वर के आदेश को कम मूल्य मत समझना मानो ईश्वर का आदेश तो यह है कि वादों में न्याय से निर्णय करना और हम उसके विरुद्ध कुछ रिश्वत लेकर या अपने नाते दार के लिए मिथ्या निर्णय कर दें इस आशा पर कि यह कोई बड़ा पाप नही यदि है भी तो अनुशंसा से समाप्त हो जाएगी. और मुझे स्वर्ग मो मिल ही जाएगा यह विचार क्यों आया इस का कारण केवल यही है कि उस की दृष्टि में ईश्वर की आयात का कोई मूल्य नही जिन में आदेश दिया जा रहा है कि सावधान न्याय करना अन्याय न करना यदि अनुचित करोगे तो तुम नास्तिक हो भ्रष्ट हो और अत्याचारी हो यह है ईश्वर की धाराओं के विक्रय करना.

نوٹ: تھوڑی قیمت لینے کا مطلب یہ ہے کہ اللہ کے احکام کو کم قیمت مت سمجھنا گویا اللہ کا حکم تو یہ ہے کہ مقدمات میں انصاف سے فیصلہ کرنا اور ہم اس کے خلاف کچھ رشوت لے کر یا اپنے رشتہ دار کے لئے غلط فیصلہ کر دیں اس امید پر کہ یہ کوئی بڑا گناہ نہیں. اگر ہے بھی تو شفاعت سے ختم ہو جائے گا. اور مجھے جنت تو مل ہی جائے گی یہ خیال کیوں آیا اس کی وجہ صرف یہی ہے کہ اس کی نظر میں اللہ کی آیات کی کوئی قیمت نہیں جن میں حکم دیا جا رہا ہے کہ خبردار انصاف کرنا، ناانصافی نہ کرنا اگر غلط کرو گے تو تم کافر ہو فاسق ہو اور ظالم ہو یہ ہے اللہ کی آیات کو فروخت کرنا.

और हमने उन लोगो के लिए तौरात में यह आदेश लिखा था अनिवार्य कर दिया था कि जी के बदले जी और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और आघातों का इसी प्रकार बदला है अर्थात कसास किन्तु जो व्यक्ति बदला क्षमा कर दे वह उसके लिए प्रायश्चित होगा और जो ईश्वर के अवतरित किए हुए आदेशो के अनुसार आदेश न दें तो ऐसे ही लोग अत्याचारी है अन्यायी है. (45) {2:178}

اور ہم نے ان لوگوں کے لئے تورات میں یہ حکم لکھا تھا فرض کر دیا تھا کہ جان کے بدلے جان اور آنکھ کے بدلے آنکھ اور ناک کے بدلے ناک اور کان کے بدلے کان اور دانت کے بدلے دانت اور سب زخموں کا اسی طرح بدلہ ہے یعنی قصاص لیکن جو شخص بدلہ معاف کر دے وہ اس کے لئے کفارہ ہوگا اور جو اللہ کے نازل کئے ہوئے احکام کے مطابق حکم نہ دیں تو ایسے ہی لوگ ظالم ہیں بے انصاف ہیں (۴۵) [۱۷۸:۲]

और उन ईशदूतो के बाद उन्ही के पद चिन्हों पर हमने ईसा पुत्र मरयम को भेजा जो पुष्टि करते हैं जो सुरक्षा के दरमियान है तौरात से उनको इनजील प्रदान की जिस में उपदेश और प्रकाश है और तौरात से जो रक्षा के मध्य है पहली पुस्तको की पुष्टि करती है. और सदाचारीयों को मार्ग बताती और शिक्षा उपदेश करती है. (46)

اور ان رسولوں کے بعد انہی کے آثار پر ہم نے عیسیٰ ابن مریم کو بھیجا جو تصدیق کرتے تھے تورات کی جو حفاظت کے درمیان ہے تورات سے اور ان کو انجیل عنایت کی جس میں ہدایت اور نور ہے اور تورات سے جو حفاظت کے درمیان ہے پہلی کتابوں کی تصدیق کرتی ہے اور پرہیز گاروں کو راہ بتاتی اور نصیحت کرتی ہے (۴۶)

और इनजील वालो को चाहिए कि जो आदेश ईश्वर ने उस के अनुसार आदेश दिया करें और जो ईश्वर के अवतरित किए हुए आदेशो के अनुसार आदेश न दें तो ऐसे लोग भ्रष्ट अर्थात अवज्ञाकारी है. (47)

اور اہل انجیل کو چاہیے کہ جو احکام اللہ نے اس میں نازل کئے ہیں اس کے مطابق حکم دیا کریں. اور جو اللہ کے نازل کئے ہوئے احکام کے مطابق حکم نہ دے تو ایسے لوگ فاسق یعنی نافرمان ہیں (۴۷)

और ऐ (ईशदूत) हमने तुम पर सच्ची पुस्तक अवतरित की है. जो अपने से पहली पुस्तक की पुष्टि करती है और उन की रक्षक और निर्देशक है अतः ईश्वर के अवतरित किए हुए के अनुसार उन के मध्य निर्णय करो और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़ कर उन की इच्छाओं का अनुकरण न करो हमने तुम से हर एक के लिए एक ही

اور (اے رسول) ہم نے تم پر سچی کتاب نازل کی ہے جو اپنے سے پہلی کتابوں کی تصدیق کرتی ہے اور جو حفاظت کے درمیان ہے اور ان کی محافظ اور نگہبان ہے لہٰذا اللہ کے نازل کئے ہوئے کے مطابق ان کے درمیان فیصلہ کرو اور

नियम और पथ निश्चित किया है और ईश्वर बलात करता तो जो उस ने नियम दिया है उस पर ही एकत्र कर देता (परन्तु उसने अधिकार दिया है जो जिसका दिल चाहे ग्रहण करे उसका उत्तर देना पड़ेगा और यदि जबरदस्ती करता तो यह अन्याय होता परन्तु ईश्वर अत्याचारी नही है, अतः स्वतंत्रता है, परन्तु उसका नियम सबके लिए एक ही है पृथक पृथक नही है जो कुरआन में है) परन्तु जो आदेश उसने दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा करना चाहता है, सो शुभ कार्यों में शीघ्रता करो तुम सबको ईश्वर की ओर लौटकर जाना है फिर जिन बातों में तुम को मतभेद था वह तुम को बता देगा (48) {2:2,178, 6:160}

नोट- आयत 48 के अनुवाद में अधिकांश ने यह लिखा है कि हर एक समप्रदाय के लिए पृथक- पृथक नियम पंथ निर्धारित किया है, किन्तु मैं यह समझता हूं कि ईश्वर ने हर काल में और हर समुदाय के लिए एक ही मार्ग घाट नियम निर्धारित किया है, विविध नही 42:13, 4:26 और भी धाराऐं है, अतः उचित भावार्थ यह है कि हर समुदाय के लिए एक ही नियम धर्म विधान घाट निर्धारित किया है और इस एक को लोग मानते नही, अतः इसमें ही परीक्षा है जो परीक्षा आयत से स्पष्ट है और यदि पृथक-पृथक को मान लिया जाए तो फिर अलग-अलग कर्म जो हो रहे है उस पर ईश्वर दण्ड क्यों देगा आश्चर्य पूर्ण बात है विविध धर्म शास्त्र स्वयं दिया और मतभेद पर दण्ड दे यह तो अन्याय है अतः ईश्वर ने विविध नियम नही दिया, अब जो इसके विपरीत करता है उसको दण्ड है,

جو سچائی تمہارے پاس آچکی ہے اسے چھوڑ کر ان کی خواہشوں کی پیروی نہ کرو ہم نے تم میں سے ہر ایک کے لئے ایک ہی دستور اور طریقہ مقرر کیا ہے.اور اللہ زبردستی کرتا تو جو اس نے دستور دیا ہے اس پر ہی جمع کر دیتا (مگر اس نے اختیار دیا ہے. جو جس کا دل چاہے اختیار کرے اس کا جواب دینا پڑے گا اور اگر زبردستی کرتا تو یہ ظلم ہوتا لیکن اللہ ظالم نہیں ہے اس لئے آزادی ہے مگر اس کا دستور سب کے لئے ایک ہی ہے الگ الگ نہیں ہے جو قرآن میں ہے) مگر جو حکم اس نے دیا ہے اس میں وہ تمہاری آزمائش کرنا چاہتا ہے سو نیک کاموں میں جلدی کرو. تم سب کو اللہ کی طرف لوٹ کر جانا ہے پھر جن باتوں میں تم کو اختلاف تھا وہ تم کو بتا دے گا (۴۸) [۲:۲،۱۷۸،۶:۱۶۰]

نوٹ:۔ آیت ۴۸/ کے ترجمہ میں اکثر نے یہ لکھا ہے کہ ہر ایک امت کے لئے الگ الگ دستور مقرر کیا ہے لیکن میں یہ سمجھا ہوں کہ اللہ نے ہر زمانہ میں اور ہر امت کے لئے ایک ہی راہ گھاٹ شریعت مقرر کیا ہے مختلف نہیں. (۴۲:۱۳، ۴:۲۶) اور بھی آیت ہیں اس لئے درست مفہوم یہ ہے کہ ہر امت کے لئے ایک ہی دستور شریعت گھاٹ مقرر کیا ہے اور اس ایک کو لوگ مانتے نہیں. اسی لئے اس میں ہی آزمائش ہے جو آزمائش آیت سے ظاہر ہے اور اگر الگ الگ کو مان لیا جائے تو پھر الگ الگ عمل جو ہو رہے ہیں اس پر اللہ عذاب کیوں دے گا. عجیب بات ہے مختلف شریعت خود دی اور اختلاف پر سزا دے یہ تو ظلم ہے اس لئے اللہ نے مختلف دستور نہیں دیا ایک دیا اب جو اس کے خلاف عمل کرتا ہے اس کو عذاب ہے

और जो आदेश ईश्वर ने अवतरित किया है उसी के अनुसार उनमें निर्णय करना और उनकी इच्छा का अनुकरण न करना और उनसे बचते रहना कि किसी आदेश से जो ईश्वर ने तुम पर अवतरित किया है उससे वह कही तुम को बहका न दें यदि वह कपटि न मानें तो जान लें कि ईश्वर चाहता है कि उनके कतिपय पापों के कारण उन पर विपत्ति अवतरित करे और अधिकांश लोग तो अवज्ञाकारी है (49) {7:3, 24:10}

اور جو حکم اللہ نے نازل کیا ہے اسی کے مطابق ان میں فیصلہ کرنا اور ان کی خواہشوں کی پیروی نہ کرنا اور ان سے بچتے رہنا کہ کسی حکم سے جو اللہ نے تم پر نازل کیا ہے اس سے وہ کہیں تم کو بہکا نہ دیں. اگر وہ منافق نہ مانیں تو جان لو کہ اللہ چاہتا ہے کہ ان کے بعض گناہوں کے سبب ان پر مصیبت نازل کرے اور اکثر تو نافرمان ہیں (۴۹) [۷:۳،۲۴:۱۰]

तो क्या वह लोग मूर्खता का निर्णय चाहते है यद्यपि उन लोगों के लिए जो सत्य पर विश्वास रखते है ईश्वर से उत्तम निर्णय करने वाला कौन हो सकता है (50)

تو کیا وہ لوگ جاہلیت کا فیصلہ چاہتے ہیں حالانکہ ان لوگوں کے لئے جو سچائی پر یقین رکھتے ہیں اللہ سے بہتر فیصلہ کرنے والا کون ہو سکتا ہے (۵۰)

ऐ आस्तिको! यहूद व नसारा को मित्र न बनाओ वह एक दूसरे के मित्र है और जो तुम में से इस आदेश से मुख फेरेगा अर्थात उनको मित्र बनाएगा तो वह उनमें से ही है, निःसन्देह ईश्वर का नियम अत्याचारियों को पथ प्रदर्शन नही देता, (51)

اے ایمان والو! یہود ونصاریٰ کو دوست نہ بناؤ وہ ایک دوسرے کے دوست ہیں اور جو تم میں سے اس حکم سے روگردانی کرے گا یعنی ان کو دوست بنائے گا تو وہ ان میں سے ہی ہے بے شک اللہ کا قانون ظالموں کو ہدایت نہیں دیتا (۵۱)

तो जिन लोगों के दिलों में रोग है तुम उनको देखोगे कि उनमें दौड़-दौड़ कर मिलेंगे और कहेंगे कि हमें भय है कि कही हम पर समय की विपत्ति न आ जाए सो निकट है कि ईश्वर निर्णय भेजे या अपने यहां से कोई और आदेश लाए फिर वह अपने मन की बातों पर लज्जित होकर रह जाऐंगे (52)

تو جن لوگوں کے دلوں میں مرض ہے تو تم ان کو دیکھو گے کہ ان میں دوڑ دوڑ کر ملیں گے اور کہیں گے کہ ہمیں خوف ہے کہ کہیں ہم پر زمانہ کی گردش نہ آ جائے سو قریب ہے کہ اللہ فیصلہ بھیجے یا اپنے یہاں سے کوئی اور امر لائے پھر وہ

और (उस समय) आस्तिक कहेंगे कि क्या यह वही हैं जो ईश्वर की शपथ खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, उनके कर्म नष्ट हो गए और वह क्षति में पड़ गए (53)

اپنے دل کی باتوں پر جو چھپاتے تھے شرمندہ ہو کر رہ جائیں گے (۵۲)

اور (اس وقت) مسلمان کہیں گے کہ کیا یہ وہی ہیں جو اللہ کی قسمیں کھایا کرتے تھے کہ ہم تمہارے ساتھ ہیں. ان کے عمل اکارت گئے اور وہ خسارے میں پڑ گئے (۵۳)

आस्तिको! तुम में से जो कोई अपने धर्म को छोड़कर विधर्मी हो जाएगा वह शीघ्र ही ऐसा दल उत्पन्न कर देगा, जिसको ईश्वर मित्र रखेगा और वह ईश्वर को मित्र रखेंगे आस्तिकों के प्रति कोमल होंगे नास्तिको के लिए बहुत कठोर ईश्वर के मार्ग में धर्म युद्ध (प्रयास) करेंगे और किसी की भर्त्सना उन्हें भयभीत न कर सकेगी यह ईश्वर की कृपा है वह चाहने वाले को देता है और ईश्वर बड़ा विस्तार वाला जानने वाला है, (54) {2:256}

مسلمانو! تم میں سے جو کوئی اپنے دین کو چھوڑ کر مرتد ہو جائے گا وہ جلد ہی ایسا گروہ پیدا کردے گا جس کو اللہ دوست رکھے گا اور وہ اللہ کو دوست رکھیں گے. مومنوں کے حق میں نرم ہوں گے. کافروں کے لئے بہت سخت. اللہ کی راہ میں جہاد کریں گے اور کسی ملامت کرنے والے کی ملامت انہیں ڈرا نہ سکے گی یہ اللہ کا فضل ہے وہ چاہنے والے کو دیتا ہے اور اللہ بڑی کشائش والا جاننے والا ہے (۵۴) [۲:۲۵۶]

तुम्हारा मित्र तो ईश्वर है और ईशदूत है और वह आस्तिक लोग है जो नमाज स्थापित करते है और दान देते है और झुकते है नम्रता करते है ईश्वर के आदेशो को मानते है, (54)

تمہارا دوست تو اللہ ہے اور رسول ہے اور وہ مومن لوگ ہیں جو نماز قائم کرتے ہیں اور زکوۃ دیتے ہیں اور جھکتے ہیں عاجزی کرتے ہیں اللہ کے حکموں کو مانتے ہیں (۵۵)

और जो कपटी लोग मुसलमानों को निर्बल जान कर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए कपटियों से मिलने के लिए ईश्वर व रसूल और आस्तिकों के दल से विमुखता करेंगे तो उन को जान लेना चाहिए कि वह अधिकार प्राप्त नही कर सकेंगे क्योंकि प्रभुत्व शाली तो ईश्वर का दल ही रहेगा भले ही वह थोड़ा हो, (56)

اور جو منافق لوگ مسلمانوں کو کمزور جان کر غلبہ حاصل کرنے کے لئے منافقوں سے ملنے کے لئے اللہ و رسول اور مومنوں کی جماعت سے روگردانی کریں گے تو ان کو جان لینا چاہیے کہ وہ غلبہ حاصل نہیں کر سکیں گے کیوں کہ غالب تو اللہ کی جماعت ہی رہے گی (بھلے ہی وہ قلیل ہو) (۵۶)

ऐ आस्तिकों! जिन लोंगो को तुम से पहले पुस्तके दी गई थी उनको और नास्तिको को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को व्यंग्य और खेल बना रखा है मित्र न बनाना और आस्कि हो तो ईश्वर के इस आदेश की अवज्ञा से डरते रहना, (57)

اے ایمان والو جن لوگوں کو تم سے پہلے کتابیں دی گئی تھیں ان کو اور کافروں کو جنہوں نے تمہارے دین کو ہنسی اور کھیل بنا رکھا ہے دوست نہ بناؤ اور مومن ہو تو اللہ کے اس حکم کی خلاف ورزی سے ڈرتے رہو (۵۷)

और जब तुम लोग नमाज के लिए अजान देते हो तो वह उसे भी व्यंग और खेल बनाते है यह इस लिए कि बुद्धि नही रखते, (58)

اور جب تم لوگ نماز کے لئے اذان دیتے ہو تو وہ اسے بھی ہنسی اور کھیل بناتے ہیں یہ اس لئے کہ عقل نہیں رکھتے (۵۸)

कहो कि ऐ पुस्तक वालों तुम हम में क्या बुराई देखते हो? अतिरिक्त इसके कि हम ईश्वर पर और जो पुस्तक हमारे लिए अवतरित हुई उस पर और जो पहले अवतरित हुई उन पर विश्वास लाते हैं क्या यह बुराई है? परन्तु तुम इसको बुरा मानते हो इस कारण कि तुम में अधिकांश भ्रष्ट है, (59)

کہو کہ اے اہل کتاب تم ہم میں کیا بُرائی دیکھتے ہو؟ سوا اس کے کہ ہم اللہ پر اور جو کتاب ہمارے لئے نازل ہوئی اس پر اور جو پہلے نازل ہوئیں ان پر ایمان لاتے ہیں کیا یہ بُرائی ہے؟ مگر تم اس کو بُرا مانتے ہو اس لئے کہ تم میں اکثر بدکردار ہیں (۵۹)

कहो कि मैं तुम्हें बताऊं कि ईश्वर के यहां इससे भी निकृष्टतम फल पाने वाले कौन है? वह लोग है जिन पर ईश्वर ने धिक्कार की और जिन पर वह क्रुद्ध हुआ और उन में से बन्दर और सुअर जैसे स्वभाव वाले बन गए और जिन्होंने शैतान की पूजा की, ऐसे लोगो का बुरा ठीकाना है और वह सीधे मार्ग से बहुत दूर है, (60)

کہو کہ میں تمہیں بتاؤں کہ اللہ کے یہاں اس سے بھی بدتر جزا پانے والے کون ہیں؟ وہ لوگ ہیں جن پر اللہ نے لعنت کی اور جن پر وہ غضبناک ہوا اور ان میں سے بندر اور سور جیسی خصلت والے بن گئے اور جنہوں نے شیطان کی پرستش کی. ایسے لوگوں کا بُرا ٹھکانا ہے اور وہ سیدھے رستے سے بہت دور ہیں (۶۰)

और जब वह लोग तुम्हारे पास आएंगे तो कहेंगे कि हम विश्वास ले आए यद्यपि नास्तिकता लेकर आएंगे और उसी को लेकर जाएंगे और जिन बातों

اور جب وہ لوگ تمہارے پاس آئیں گے تو کہیں گے کہ ہم ایمان لے آئے. حالانکہ کفر لے کر آئیں گے اور اسی کو

को गुप्त रखते हैं ईश्वर उसको भलि जानता है. (61)

ــلےکر جائیں گے.اور جن باتوں کو مخفی رکھتے ہیں اللہ ان کو خوب جانتا ہے(۶۱)

और तुम देखोगे कि उनमें अधिकांश पाप और बलात और अवैध खाने में शीघ्रता करते है निःसंदेह वह जो कुछ कर रहें है बुरा कर रहें है. (62)

اور تم دیکھو گے کہ ان میں اکثر گناہ اور زیادتی اور حرام کھانے میں جلدی کرتے ہیں بے شک وہ جو کچھ کر رہے ہیں بُرا کر رہے ہیں(۶۲)

भला उनके पंडित और सन्तो को क्या हो गया है कि उन्हें पाप की बातों और अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? निःसंदेह वह भी बुरा कर रहें हैं. (63)

بھلا ان کے علماء اور مشائخ کو کیا ہو گیا ہے کہ انہیں گناہ کی باتوں اور حرام کھانے سے کیوں نہیں روکتے؟ بلاشبہ وہ بھی بُرا کر رہے ہیں(۶۳)

और यहूदी कहते है कि ईश्वर का हाथ बंधा हुआ है उन्ही के हाथ बान्धे गए और धिक्कार पड़ी उन पर उस बकवास के कारण जो वह करते है कहो ईश्वर के हाथ तो विस्तृत है, जिस प्रकार (चाहता) है व्यय करता है सत्य यह है कि जो वाणी तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम पर अवतरित हुई है वह उन में से अधिकांश की अवज्ञा व मिथ्या भक्ति में उन्नती का कारण बन गई है, और हमने उन में महाप्रलय तक के लिए कलह और शत्रुता डालदी है, जब कभी वह युद्ध की ज्वाला भड़काते है ईश्वर उस को शांत करता है वह पृथ्वी में उपद्रव करने का प्रयत्न कर रहे है परन्तु ईश्वर उपद्रव करने वालों को कदापि पसन्द नही करता. (64)

اور یہود کہتے ہیں کہ اللہ کا ہاتھ بندھا ہوا ہے انہیں کے ہاتھ باندھے گئے.اور لعنت پڑی ان پر اُس بکواس کی بدولت جو وہ کرتے ہیں کہو اللہ کے ہاتھ تو کشادہ ہیں جس طرح چاہتا ہے خرچ کرتا ہے حقیقت یہ ہے کہ جو کلام تمہارے رب کی طرف سے تم پر نازل ہوا ہے وہ ان میں سے اکثر کی سرکشی و باطل پرستی میں اضافہ کا سبب بن گیا ہے اور ہم نے ان میں قیامت تک کے لئے عداوت اور دشمنی ڈال دی ہے جب کبھی وہ جنگ کی آگ بھڑکاتے ہیں اللہ اس کو ٹھنڈا کرتا ہے.وہ زمین میں فساد پھیلانے کی کوشش کریں گے مگر اللہ فساد برپا کرنے والوں کو ہرگز پسند نہیں کرتا (۶۴)

और यदि पुस्तक वाले आस्था लाते और सदाचारी होते तो हम उनसे उनकी निर्धनता दूर कर देते और उन्हें सुख सामग्री वाले उपवनों में प्रविष्ट करते. (65) {4:31;42:37;53:32}

اور اگر اہل کتاب ایمان لاتے اور پرہیزگار ہوتے تو ہم ان سے ان کی بُرائیاں بدحالیاں دور کر دیتے اور انہیں نعمت کے باغوں میں داخل کرتے(۶۵)[۴:۳۱، ۴۲:۳۷، ۵۳:۳۲]

यदि उन्होंने तौरात और इनजील और उन दूसरी पुस्तकों को स्थापित किया होता जो उन के स्वामी की ओर से उनके पास उनके लिए प्रेषित की गई थी ऐसा करते तो उनके लिए ऊपर से जीविका बरसती और नीचे पेरो तले से उबलती यद्यपि उनमें कुछ लोग सदाचारी भी है, किन्तु उनकी अधिकता अधिक भ्रष्ट है. (66) {3:113-115}

اگر انہوں نے توراۃ اور انجیل اور ان دوسری کتابوں کو قائم کیا ہوتا جو ان کے رب کی طرف سے ان کے پاس ان کے لئے بھیجی گئیں تھی.ایسا کرتے تو ان کے لئے اوپر سے رزق برستا اور نیچے پیروں طلے سے ابلتا اگرچہ ان میں کچھ لوگ راست رو بھی ہیں.لیکن ان کی اکثریت سخت بد عمل ہے(۶۶)[۳:۱۱۳،۱۱۵]

ऐ ईशदूत! जो कुछ तुम्हारे स्वामी की ओर से अवतरित किया गया है वह लोगो तक पहुंचा दो यदि तुमने ऐसा न किया तो उसका ईशदौत्य का कर्तव्य पूरित न किया ईश्वर तुम को लोगों की दुष्टता से बचाने वाला है विश्वास रखो कि वह नास्तिकों को सफलता का मार्ग न दिखलाएगा (67) {6:7,13:45,10:99,26:3, 28:56, 2:6-7 5:44, 32:48,15:94-95,33:48, 7:2, 20:130, 11:12, 5:3, 18:6}

اے رسول! جو کچھ تمہارے رب کی طرف سے نازل کیا گیا ہے وہ لوگوں تک پہنچا دو ۔اگر تم نے ایسا نہ کیا تو اس کی رسالت کا حق ادا نہ کیا.اللہ تم کو لوگوں کے شر سے بچانے والا ہے.یقین رکھو کہ وہ کافروں کو کامیابی کی راہ ہرگز نہ دکھائے گا(۶۷)[۶:۷، ۱۳:۴۵، ۱۰:۹۹، ۲۶:۳، ۲۸:۵۶، ۲:۶-۷، ۵:۴۴، ۳۲:۴۸، ۱۵:۹۴-۹۵، ۳۳:۴۸، ۷:۲، ۲۰:۱۳۰، ۱۱:۱۲، ۵:۳، ۱۸:۶]

(कहदो) कि पुस्तक वालों तुम कदापि किसी मूल पर नही हो जब तक कि तौरात और इनजील और उन दूसरी पुस्तकों को स्थापित न करो जो तुम्हारी ओर तुम्हारे ईश्वर की ओर से अवतरित की गई है और यह आदेश जो तुम पर अवतरित किया गया है उनमें से अधिकांश की उद्दण्डता और इनकार

(کہدو) کہ اے اہل کتاب تم ہرگز کسی اصل پر نہیں ہو جب تک کہ توراۃ اور انجیل اور ان دوسری کتابوں کو قائم نہ کرو جو تمہاری طرف تمہارے رب کی طرف سے نازل کی گئی ہیں اور یہ فرمان جو تم پر نازل کیا گیا ہے ان میں سے اکثر کی سرکشی اور انکار کو اور زیادہ بڑھا دے گا.مگر انکار

को और बढ़ा देगा परन्तु इनकार करने वालो की दशा पर अनुताप न करो. (68) {4:159 61:6 3 :81}

(सुनो) रसूल अरबी पर विश्वास लाने वाले हो या यहूदी साबी हो या नसारा जो भी ईश्वर और महाप्रलय पर विश्वास लाएगा और शुभ कर्म करेगा निःसंदेह उसके लिए न किसी भय का स्थान है न कलेश का. (69)

नोट- आयत 66 और 68 में नोट 1 और 2 में पुस्तक वालो से तौरात इनजील और पहली पुस्तकों को स्थापित करने को कहा गया है अर्थात उन पर विश्वास लाकर उन के अनुसार व्यवहार करना यदि उन पुस्तकों पर ही कुरआन के अतिरिक्त विश्वास और कर्म उद्देश्य होता तो फिर कुरआन की क्या आवश्यक्ता थी?

परन्तु उन पुस्तकों के बाद और उन नबियों के बाद एक ईशदूत अरबी मुहम्मद हुए और पुस्तक कुरआन अवतरित हुई जिसमें आदेश है कि अब वही व्यक्ति सफल होगा जो इस पुस्तक कुरआन पर मुहम्मद स0 के व्यवहार के अनुसार कर्म करेगा यदि उस पर व्यवहार न किया तो वह अत्याचार है भ्रष्ट है और नास्तिक है चाहे वह मुसलमान कहलाता हो या यहूदी, ईसाई सितारा परस्त या और कोई अब यह देखा जाए कि ऊपर का आदेश जो तौरात और इनजील स्थापित करने का है, इसका तर्क क्या है?

(3:81) याद करो जब ईश्वर ने नबी के द्वारा (बनी इसराईल से) आने वाले ईशदूत के लिए वचन किया था कि चूंकि हमने तुम्हें पुस्तक और युक्ति व बुद्धि देकर तुम पर कृपा की है, कल यदि कोई दूसरा ईशदूत तुम्हारे पास इस शिक्षा की पुष्टि करता हुआ आए जो पहले से तुम्हारे पास उपस्थित है तो तुम को उस पर विश्वास लाना होगा और उस की सहायता करनी होगी, यह आदेश देकर ईश्वर ने ज्ञात किया तुम इसका प्रण करते हो और इस पर मेरी ओर से वचन का उत्तर दायित्व उठाते हो उन्होने कहा हमने प्रण किया ईश्वर ने कहा अच्छा तो साक्षी रहो और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूं, इस के बाद अपने वचन से फिर जाए वही भ्रष्ट है.

(3:81) का अधिकांश अनुवाद शब्द "मिसाकन्नबीयीन" का यह किया गया है कि ईशदूतों से वचन किया जो अनुचित है, यदि ईशदूत से वचन मान लिया जाए तो विषय बड़ा जटिल हो जाता है जिससे लाभ उठाकर एक वर्ग कादियानी अपने को सत्य बताता है, उस का तर्क यह है कि इस अनुवाद में स्पष्ट है कि जब रसूलों से वचन लिया गया तो उन में मुहम्मद स0 भी थे तो उनके बाद भी नबी का आना सिद्ध होता है अतः मैं अर्थात मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी नबी (ईशदूत) हूं (ईश्वर की शरण) देखिये कण भर भूल से बात कहा गई अर्थात समाप्त ईशदौत्य के स्थान पर ईशदौत्य का जारी रहना आ गया जबकि इस शब्द का अर्थ है, ईशदूतों के लिए वचन लिया बनी इसराईल से जो सत्य है तो कादियानी ही व्यर्थ हो जाते है और धारा 66,68 में स्थापित करने का अर्थ स्पष्ट हो जाता है वह यह कि उन पहली पुस्तकों में अन्तिम ईशदूत मुहम्मद की सुचना है और आदेश है कि जब वह आऐं तो उन पर विश्वास लाना है (5:69) में भी सफलता मुहम्मद स0 के धर्म शास्त्र पर विश्वास लाकर व्यवहार करने में है अतः सिद्ध हुआ कि इनजील तौरात या दूसरी पुस्तकें उस समय तक स्थापित नही हो सकती जब तक मुहम्मद स0 और कुरआन पर विश्वास लाकर कर्म न करें जिस का पहली पुस्तकों में अदेश है और कुरआन में भी वही है जो पहली पुस्तकों में था, (42:13, 4:26) इसी प्रकार नमाज भी तब ही स्थापित होगी जब हम नमाज में पढ़े गए आदेशों

کرنے والوں کے حال پر افسوس نہ کرو(۶۸)[۴:۱۵۹، ۶۱:۶، ۳:۸۱]

(سنو!) رسول عربی پر ایمان لانے والے ہوں یا یہودی، صابی ہوں یا نصاریٰ۔ جو بھی اللہ اور روز آخر پر ایمان لائے گا اور نیک عمل کرے گا بے شک اس کے لئے نہ کسی خوف کا مقام ہے نہ رنج کا(۶۹)

نوٹ:۔ آیت ۶۶ اور ۶۸ میں نوٹ ۱ اور ۲ میں اہل کتاب سے تورات، انجیل اور پہلی کتابوں کو قائم کرنے کو کہا گیا ہے یعنی ان پر ایمان لا کر ان کے مطابق عمل کرنا۔ اگر ان کتابوں پر ہی قرآن کے علاوہ ایمان اور عمل مقصود ہوتا تو پھر قرآن کی کیا ضرورت تھی؟

مگر ان کتابوں کے بعد اور ان نبیوں کے بعد ایک نبی عربی محمدؐ ہوئے اور کتاب قرآن نازل ہوئی جس میں حکم ہے کہ اب وہی آدمی کامیاب ہوگا جو اس کتاب قرآن پر محمدؐ کے عمل کے مطابق عمل کرے گا۔ اگر اس پر عمل نہ کیا تو وہ ظالم ہے، فاسق ہے، اور کافر ہے چاہے وہ مسلمان کہلاتا ہو یا یہودی، عیسائی، ستارہ پرست یا اور کوئی اب یہ دیکھا جائے کہ اوپر کا حکم جو تورات اور انجیل قائم کرنے کا ہے اس کی دلیل کیا ہے۔

(۳:۸۱) یاد کرو جب اللہ نے نبی کے ذریعہ (بنی اسرائیل سے) آنے والے نبیوں کے لئے عہد لیا تھا کہ چونکہ ہم نے تمہیں کتاب اور حکمت دانش سے نوازا ہے کل اگر کوئی دوسرا رسول تمہارے پاس اس تعلیم کی تصدیق کرتا ہوا آئے جو پہلے سے تمہارے پاس موجود ہے تو تم کو اس پر ایمان لانا ہوگا اور اس کی مدد کرنی ہوگی۔ یہ ارشاد فرما کر اللہ نے معلوم کیا تم اس کا اقرار کرتے ہو اور اس پر میری طرف سے عہد کی بھاری ذمہ داری اٹھاتے ہو؟ انہوں نے کہا ہم نے اقرار کیا۔ اللہ نے فرمایا اچھا تو گواہ رہو اور میں بھی تمہارے ساتھ گواہ ہوں۔ اس کے بعد جو اپنے عہد سے پھر جائے وہی فاسق ہے۔

(۳:۸۱) کا اکثر ترجمہ لفظ (میثاق النبیین) کا یہ کیا ہے کہ نبیوں سے عہد لیا۔ جو غلط ہے۔ اگر نبیوں سے عہد لیا مان لیا جائے تو مسئلہ بڑا پیچیدہ ہو جاتا ہے جس سے فائدہ اٹھا کر ایک فرقہ قادیانی اپنے کو درست بتاتا ہے۔ اس کی دلیل یہ ہے کہ اس ترجمہ میں صاف ہے کہ جب نبیوں سے عہد لیا گیا تو ان میں محمدؐ بھی تھے تو ان کے بعد بھی نبی کا آنا ثابت ہوتا ہے اس لئے میں یعنی مرزا غلام احمد قادیانی نبی ہوں (نعوذ)۔

دیکھئے ذرا سی بھول سے بات کہاں گئی یعنی ختم نبوت کی جگہ نبوت کا جاری رہنا آ گیا۔ جب کہ اس لفظ کا مطلب ہے نبیوں کے لئے عہد لیا بنی اسرائیل سے جو حقیقت ہے تو قادیانی ہی باطل ہو جاتے ہیں۔ اور آیت ۶۶، ۶۸ میں قائم کرنے کا مطلب صاف ہو جاتا ہے وہ یہ کہ ان پہلی کتابوں میں آخری نبی محمدؐ کی خبر ہے اور حکم ہے کہ جب وہ آئیں تو ان پر ایمان لانا ہے۔ ۵:۶۹، میں بھی کامیابی محمدؐ کی شریعت پر ایمان لا کر عمل کرنے میں ہے۔ اس لئے ثابت ہوا کہ انجیل تورات یا دوسری کتابیں اس وقت تک قائم نہیں ہو سکتی جب تک محمدؐ اور قرآن پر ایمان لا کر عمل نہ کریں۔ جس کا پہلی کتابوں میں حکم ہے اور قرآن میں بھی وہی ہے جو پہلی کتابوں میں تھا (۴۲:۱۳، ۴:۲۶) اسی طرح نماز بھی تب ہی قائم ہوگی جب

पर अपने जीवन में कर्म करे और (4:159) में भी कहा गया है कि वास्तव में जो पुस्तक वाला है वह अपनी मृत्यु से पहले मुहम्मद स0 और कुरआन पर विश्वास लाएगा इसकी सूचना भी कुरआन में है, {17:107से109, 28:52-53, 5:82-85, 29:27, 61:6}

नोट- 2-3-4-5- के विषय में ईश्वर का आदेश है कि जो वही तुम पर की जा रही है उस को ज्यों का त्यों पहुंचा दो यदि न पहुंचाया तो कर्तव्य पूर्ण न किया इस कर्तव्य पूरा करने पर जो व्यक्ति रूष्ट हो कर आपको हानी पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे उनके लिए ईश्वर प्रयाप्त है क्यों कि ईश्वर के सम्मुख कोई नास्तिक सफल नही हो सकता इस आदेश के होते हुए ईशदूत ने अपना कर्तव्य पूर्ण किया यदि कोई यह विश्वास करे कि ईशदूत से इस आदेश के पूर्ण करने में त्रुटि हो गई तो निःसंदेह उसका विश्वास व्यर्थ है और ईश्वर उसको दण्ड देगा, क्योंकि उसने शक करके यह मनोभाव दिया कि ईशदूत ने ईशदौत्य का कर्तव्य पूर्ण नहीं किया, (ईश्वर की शरण)

किन्तु ऐसा विचार करना भी अनुचित है भला किसी कपट करने वाले अवज्ञाकारी को ईश्वर नबी बना सकता है? कदापि नही सत्य यह है कि हर ईशदूत ने ईश्वर के ओदश के अनुसार शत प्रतिशत अनुपालन किया कोई त्रुटि न की और इस कर्तव्य पूर्ण करने में नास्तितको की ओर से जो व्याकूलतायें आई ईश्वर ने उनको दूर किया किन्तु खेद है बुखारी पुस्तक के एक कथन से यह सिद्ध हो रहा है कि ईशदूत से (ईश्वर शरण) कर्तव्य पूर्ण नही हुआ? किन्तु मैं तो इस कथन को किसी मूल्य पर स्वीकार करने को तैयार नही हूं कि ईशदूत से कर्तव्य पूर्ण नहीं हुआ, अपितु यह कथन ही विचारणीय है कथन निम्नलिखित है,

श्रीमान इब्ने अब्बास से रिवायत है कि जब नबी का रोग सख्त हो गया तो आपने आदेश दिया कि मेरे लिखने की सामग्री लाओ मैं तुम्हारे लिए एक लेख पत्र लिखा दूं कि उसके बाद फिर तुम पथ भ्रष्ट न होंगे उमर र0 ने कहा कि नबी पर रोग अधिपति है और हमारे पास ईश्वर की पुस्तक है, वह हमें प्रयाप्त है फिर सहाबा ने मतभेद किया यहां तक कि कोलाहल अधिक हो गया तो आपने कहा कि मेरे पास से उठ जाओ और मेरे पास तुम को झगड़ना न चाहिए (यहां तक वर्णन करके) इब्ने अब्बास (अपनी जगह से) यह कहते हुए बाहर आ गये कि निःसंदेह कष्ट है और बड़ा कष्ट है रसूल और लिखने के मध्य क्या वस्तु बाधक हो गई सही बुखारी प्रतिपृथक बाबुलइलम कथन नं0 111

कथन पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि अन्तिम समय में मुहम्मद स0 वह वस्तु लिखना चाहते थे जो वास्विक्ता थी जिससे समुदाय सत्य मार्ग पर रहता कभी पथ भ्रष्ट न होता क्योंकि मुहम्मद स0 का हर कथन और कर्म वही के अनुसार होता था और वह लिखना भी वही के अनुसार था परन्तु खेद उमर र0 ने न लिखने दिया और दूसरे सहाबा भी उमर के साथ हो गए (ईश्वर की शरण) और मुहम्मद स0 का आदेश स्वीकार न किया इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि वह लोग रसूल के अनुकरण से बाहर हो गए जबकि ईश्वर का आदेश है कि ऐ आस्तिकों! मेरे आदेशानुसार रसूल का अनुकरण करो यदि न किया तो हानी उठाने वाले नास्तिक हो किन्तु जिन श्रीमानों के विषय में ईश्वर कहता है कि मैं उनसे प्रसन्न हो गया वह मुझसे प्रसन्न हो गए तो एसी स्थिति में अवहेलना करने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता,

दूसरी बात यह कि मुहम्मद स0 ने कोई भी आदेश जो ईश्वर की ओर से अवतरित हुआ तुरन्त ही ज्यों का त्यों लोगों तक पहुंचा दिया, बाद के लिए नही रखा, यदि ऐसा करते तो कर्तव्य ईशदौत्य पूर्ण नही होता, अतः कथन ही अनुचित है बस ईश्वर हम को बुद्धि से

ہم نماز میں پڑھے گئے حکموں پر اپنی زندگی میں عمل کریں اور (۱۵۹:۴) میں بھی کہا گیا ہے کہ حقیقت میں جو اہل کتاب ہے وہ اپنی موت سے پہلے محمدؐ اور قرآن پر ایمان لائے گا اس کی خبر بھی قرآن میں ہے (۱۷:۱۰۷ تا ۱۰۹، ۲۸:۵۲، ۵۳، ۸۲:۵، ۸۵، ۲۹:۲۷، ۶۱:۶]

نوٹ:۔ نمبر ۲، ۳، ۴، ۵ کے بارے میں اللہ کا ارشاد ہے کہ جو وحی تم پر کی جا رہی ہے اس کو جوں کا توں پہنچا دو۔ اگر نہ پہنچایا تو حق ادا نہ کیا۔ اس حق ادا کرنے پر جو لوگ ناراض ہو کر آپ کو نقصان پہنچانے کی کوشش کریں گے ان کے مقابلہ کے لئے اللہ کافی ہے کیونکہ اللہ کے مقابلہ میں کوئی کافر کامیاب نہیں ہو سکتا۔ اس حکم کے ہوتے ہوئے نبی نے پورا حق ادا کیا۔ اگر کوئی یہ یقین کرے کہ نبی سے اس حکم کے پورا کرنے میں کوتاہی ہو گئی تو یقیناً اس کا ایمان بیکار ہے اور اللہ اس کو سزا دے گا. کیونکہ اس نے شک کر کے یہ تاثر دیا کہ نبی نے رسالت کا حق ادا نہیں کیا (نعوذ)

لیکن ایسا خیال کرنا بھی باطل ہے بھلا کسی خیانت کرنے والے نافرمان کو اللہ نبی بنا سکتا ہے؟ ہرگز نہیں حقیقت یہ ہے کہ ہر نبی نے اللہ کے حکم کے مطابق صدفی صد پیروی کی کوئی کوتاہی نہ کی اور اس حق ادا کرنے میں کافروں کی طرف سے جو پریشانیاں آئیں اللہ نے ان کو دور کیا۔ مگر افسوس صد افسوس بخاری کی ایک روایت سے ثابت ہو رہا ہے کہ نبی سے (نعوذ) حق ادا نہیں ہوا؟ لیکن میں تو اس روایت کو کسی قیمت پر تسلیم کرنے کو تیار نہیں ہوں کہ نبی سے حق ادا نہیں ہوا۔ بلکہ یہ روایت ہی محل نظر ہے روایت درج ذیل ہے

حضرت ابن عباس سے روایت ہے کہ جب نبی کا مرض سخت ہو گیا تو آپ نے فرمایا کہ میرے پاس لکھنے کی چیز لاؤ تا کہ میں تمہارے لئے ایک نوشتہ یا لکھوا دوں کہ اس کے بعد پھر تم گمراہ نہ ہو گے عمرؓ نے کہا کہ نبی پر مرض غالب ہے اور ہمارے پاس اللہ کی کتاب ہے وہ ہمیں کافی ہے. پھر صحابہ نے اختلاف کیا یہاں تک کہ شور بہت ہو گیا. تو آپ نے فرمایا کہ میرے پاس سے اٹھ جاؤ. اور میرے پاس تم کو جھگڑنا نہ چاہیے. (یہاں تک بیان کر کے) ابن عباسؓ (اپنی جگہ سے) یہ کہتے ہوئے باہر آ گئے کہ بے شک مصیبت ہے اور بڑی مصیبت ہے رسول اور ان کے لکھنے کے درمیان کیا چیز حائل ہو گئی. [صحیح بخاری جلد اوّل باب العلم روایت ۱۱۱]

روایت کے پڑھنے سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ آخر وقت میں محمدؐ وہ چیز لکھنا چاہتے تھے جو حقیقت تھی جس سے امت راہ راست پر رہتی کبھی گمراہ نہ ہوتی. کیونکہ محمدؐ کا ہر قول اور فعل وحی کے مطابق ہوتا تھا اور وہ لکھنا بھی وحی کے مطابق تھا. مگر افسوس عمرؓ نے نہ لکھنے دیا اور دوسرے صحابہ بھی عمر کے ساتھ ہو گئے (نعوذ) اور محمدؐ کا حکم تسلیم نہ کیا۔ اس کا صاف مطلب یہ ہوا کہ وہ لوگ اطاعت رسول سے باہر ہو گئے جب کہ اللہ کا حکم ہے کہ اے ایمان والو! میرے حکم کے مطابق رسول کی اطاعت کرو۔ اگر نہ کی تو نقصان اٹھانے والے کافر ہو لیکن جن حضرات کے بارے میں اللہ فرما رہا ہے کہ میں ان سے راضی ہو گیا وہ مجھ سے راضی ہو گئے تو ایسی حالت میں خلاف ورزی کرنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا.

دوسری بات یہ ہے کہ محمدؐ نے کوئی بھی حکم جو اللہ کی طرف سے نازل ہوا فوراً ہی جوں کا توں لوگوں تک پہنچا دیا بعد کے لئے نہیں رکھا اگر ایسا کرتے تو حق رسالت ادا نہیں ہوتا اس لئے روایت ہی غلط ہے بس اللہ ہم کو عقل سے کام

काम लेने की क्षमता दे (33:48)

(33:48) और कदापि न दबो नास्तिकों व कपटियों से कोई चिन्ता न करो उनके कष्ट देने का और भरोसा करो ईश्वर पर, ईश्वर ही इसके लिए प्रयाप्त है कि मानव अपने प्रसंग उसको समर्पित करे,

बुखारी के इस कथन से यह मनोभाव मिल रहा है कि नबी कुछ लिखना चाहते थे परन्तु वहां पर कोलाहल हो गया और कोलाहल करने वालों के नेता उमर र० रहे, फिर उनको बाहर निकाल दिया गया जब सब को बाहर निकाल दिया गया था तो उस समय मुहम्मद स० वह वास्तविकता लिख देते जो लिखना चाहते थे और वास्तविकता ईश्वर की वही के अनुसार थी, परन्तु नही लिखी गई? उस समय ऐकान्त में लिखने से कौन रोक रहा था, यदि लिखते तो सामने आता, परन्तु वह सामने नही आया तो कर्तव्य ईशदौत्य पूरा नही हुआ, स्पष्ट प्रकट है और अच्छे कार्य को रोकने वाला उमर, तो उमर भी इस्लाम से निष्कासित हो गए चूंकि उन्होंने नबी का अनुकरण नही किया और उनके साथी भी अनुकम्पा रसूल से निष्कासित होकर इस्लाम से बाहर हो गए

देखिए पहले ईशदूत के ऊपर आरोप लगाया कि उनसे ईशदौत्य कर्तव्य चुकता न हुआ फिर सहाबा और विशेषतया उमर को इस्लाम से निष्कासित किया, क्या कभी इस पर विचार किया है? इस लिखने के सम्बन्ध में शिया लोगों का कहना यह है कि उस समय मुहम्मद श्रीमान अली र० के स्थानापन्नता के सम्बन्ध में लेख करना चाहते थे जो घोषणा उन्होंने खुमे ग़दीर में की थी परन्तु उमर ने नही लिखने दिया, वैसे देखा जाए तो उनके इस वाद के तर्क को निरस्त नहीं किया जा सकता क्योंकि कोई लेख सामने नही आया और मुहम्मद स० ने कहा था चूंकि बुखारी इमाम झूट नही बोल सकते उसकी हर बात सच्ची है इस कारण भी शिया लोगों का तर्क निरस्त योग्य नही, परन्तु वास्तविकता इससे बहुत दूर है, वह यह कि कपटाचारियों ने पहले अपने मन में एक अनुचित कार्य को सोचा और उसको मुहम्मद स० से सम्बन्धित किया और उस पर आपत्ति करने वाले के रूप में उमर को खड़ा किया या बहुत से ऐसे कार्य जो कुरआन में नही है न उनका आदेश मुहम्मद स० ने दिया न उनको कभी किया परन्तु वह भी उमर से सम्बन्धित किए जैसे रमज़ान में नमाज़ इशा के बाद बीस रकआत, आठ रकअत या छत्तीस रकअत नमाज़ तरावीह या जैसे तलाक मुगल्लज़ा इत्यादि या हदेबिया की संधि पर आपत्ति या परदे पर आपत्ति यह सब बातें उमर से सम्बन्धित करके यह मनोभाव दिया है कि उमर नबी की बात नही मानते थे या वह उस कार्य को भी प्रचलित करते थे जो मुहम्मद स० ने नही किया और वह व्यवहार में आ रहे हैं अतः वह कपटि थे और वह अली० के बड़े शत्रु थे और इन बातों को जो अनुचित सम्बन्धित की गई हैं बुखारी में अंकित कर दिया तो यह है वास्तविकता उन अनुचित बातों के प्रचलित होने की, अतः मुहम्मद स० ने कोई कलम कागज की याचना नही की, और उन्होंने हर बात जो ईश्वर ने वही की पहुंचा दी क्रिया से बता दिया न ही कभी उमर ने विरोध किया,

धारा (5:3) में है कि धर्म पूर्ण हो गया, यह धारा मुहम्मद स० की मृत्यु से महीनों पहले अवतरित हुई थी तो स्पष्ट है उस समय तक जो भी अवतरित हुआ था वह मुहम्मद स० ने सब लोगों तक पहुंचा दिया और अपने व्यवहार से बता दिया और कुरआन में लिख दिया और मृत्यु से पहले लिखा हुआ कुरआन पूरे इस्लामी क्षेत्र में पहुंचा दिया तब ही तो धर्म पूर्ण हुआ इसके बाद फिर मुहम्मद स० कौन सी अनिवार्य बात लिखना चाहते थे जो कुरआन में लिखने से रह गई थी? इससे भी कपटियों ने यह मनोभाव देने का प्रयत्न किया है कि कुरआन पूर्ण नही है और कुरआन मुहम्मद स० की मृत्यु के बाद लिखा गया (ईश्वर की शरण)

अतः धर्म पूर्ण होते ही कुरआन भी पूर्ण हो गया और कोई

لینے کی توفیق دے (۴۸:۳۳)

(۴۸:۳۳) اور ہرگز نہ دبو کفاروں منافقین سے کوئی پروا نہ کرو ان کی تکلیف دینے کی اور بھروسہ کرو اللہ پر اللہ ہی اس کے لئے کافی ہے کہ آدمی اپنے معاملات اس کے سپرد کرے۔

بخاری کی اس روایت سے یہ تاثر مل رہا ہے کہ نبی کچھ لکھنا چاہتے تھے مگر وہاں پر شور ہوگیا۔ اور شور کرنے والوں کے امیر عمرؓ رہے پھر ان کو باہر نکال دیا گیا۔ جب سب کو باہر نکال دیا گیا تھا تو اس وقت محمدؐ وہ حقیقت لکھ دیتے جو لکھنا چاہتے تھے اور وہ حقیقت اللہ کی وحی کے مطابق تھی۔ مگر نہیں لکھی گئی؟ اس وقت تنہائی میں لکھنے سے کون روک رہا تھا؟ اگر لکھتے تو وہ سامنے آتی لیکن وہ سامنے نہیں آئی تو حق رسالت ادا نہیں ہوا صاف ظاہر ہے اور اچھے کام کو روکنے والا عمر تو عمر بھی اسلام سے خارج ہو گئے۔ چونکہ انہوں نے نبی کی اطاعت نہیں کی۔ اور ان کے ساتھی بھی اطاعت رسول سے خارج ہو کر اسلام سے باہر ہو گئے۔

دیکھئے پہلے نبی کے اوپر الزام لگایا کہ ان سے حق رسالت ادا نہ ہوا پھر صحابہ اور خاص طور سے عمر کو اسلام سے خارج کیا۔ کیا کبھی اس پر غور کیا ہے؟ اس لکھنے کے بارے میں شیعہ حضرات کا کہنا یہ ہے کہ اس وقت محمد حضرت علیؓ کی خلافت کے بارے میں تحریر کرنا چاہتے تھے جو اعلان انہوں نے خم غدیر میں کیا تھا مگر عمر نے نہیں لکھنے دیا۔ ویسے دیکھا جائے تو ان کے اس دعوے کو مسترد بھی نہیں کیا جا سکتا، کیونکہ کوئی تحریر سامنے نہیں آئی اور محمدؐ نے کہا تھا چونکہ امام بخاری جھوٹ نہیں بول سکتے اس کی ہر بات سچی ہے اس لئے بھی شیعہ حضرات کا دعویٰ قابل رد نہیں۔ لیکن حقیقت اس سے بہت دور ہے وہ یہ کہ منافقوں نے پہلے اپنے ذہن میں ایک غلط کام کو سوچا اور اس کو محمدؐ سے منسوب کیا۔ اور اس پر اعتراض کرنے والے کی شکل میں عمر کو کھڑا کیا یا بہت سے ایسے کام جو قرآن میں نہیں ہیں نہ ان کا حکم محمدؐ نے دیا نہ ان کو کبھی کیا مگر وہ بھی عمرؓ سے منسوب کرائے کہ یہ عمر نے رائج کئے جیسے رمضان میں نماز عشاء کے بعد بیس رکعت، آٹھ رکعت یا چھتیس رکعت نماز تراویح یا جیسے طلاق مغلظہ وغیرہ۔ یا صلح حدیبیہ پر اعتراض یا پردے پر اعتراض یہ سب باتیں عمر سے منسوب کر کے یہ تاثر دیا ہے کہ عمر نبی کی بات نہیں مانتے تھے یا وہ اس کام کو بھی رائج کرتے تھے جو محمدؐ نے نہیں کیا اور وہ عمل میں آرہے ہیں۔ اس لئے وہ منافق تھے اور وہ علیؓ کے زبردست دشمن تھے اور ان باتوں کو جو غلط منسوب کی گئی ہیں بخاری میں درج کرا دیا تو یہ ہے حقیقت ان غلط باتوں کے رواج پانے کی لہٰذا محمدؐ نے کوئی قلم کاغذ طلب نہیں کیا۔ اور انہوں نے ہر بات جو اللہ نے وحی کی پہنچا دی عمل سے بتا دیا نہ ہی کبھی عمر نے مخالفت کی۔

آیت (۵:۳) میں ہے کہ دین مکمل ہو گیا یہ آیت محمدؐ کی وفات سے مہینوں پہلے نازل ہو گئی تھی۔ تو ظاہر ہے اس وقت تک جو بھی نازل ہوا تھا وہ محمدؐ نے سب لوگوں تک پہنچا دیا اور عمل سے بتا دیا اور قرآن میں لکھ دیا اور وفات سے پہلے لکھا ہوا تھا قرآن پورے عالم اسلام میں پہنچا دیا تب ہی تو دین مکمل ہوا اس کے بعد پھر محمدؐ کون سی ضروری بات لکھنا چاہتے تھے جو قرآن میں لکھنے سے رہ گئی تھی؟ اس سے بھی منافقوں نے یہ تاثر دینے کی کوشش کی ہے کہ قرآن مکمل نہیں ہے اور قرآن محمدؐ کی وفات کے بعد لکھا گیا (نعوذ)

اس لئے دین مکمل ہوتے ہی قرآن بھی مکمل ہو گیا اور کوئی ایسی بات

ऐसी बात नही रह गई थी जिसको मुहम्मद विशेषतया अन्त में लिखना चाहते थे इस प्रकार की बातें सब की सब मिथ्या हैं उचित वह है जो कुरआन में अंकित है.

نہیں رہ گئی تھی جس کو محمدؐ خاص طور سے آخیر وقت میں لکھانا چاہتے تھے اس قسم کی باتیں سب کی سب غلط ہیں درست وہ ہے جو قرآن میں درج ہے

हमने इसराईल के पत्रों से वचन भी लिया और उनकी ओर ईशदूत भी प्रेषित किए परन्तु जब कोई ईशदूत उनके पास ऐसी बातें लेकर आता जिनको उनके मन नही चाहते थे तो एक दल को झुठलाते और एक दल से झगड़ा करते (70)

ہم نے بنی اسرائیل سے عہد بھی لیا اوران کی طرف رسول بھی بھیجے لیکن جب کوئی رسول ان کے پاس ایسی باتیں لے کر آتا جن کو ان کے دل نہیں چاہتے تھے تو وہ ایک جماعت کو جھٹلاتے اور ایک جماعت سے جھگڑا کرتے (۷۰)

और यह विचार करते कि कोई विपत्ति नही आने की तो वह अन्धे और बहरे हो गए फिर ईश्वर ने उन पर कृपा की किन्तु फिर उनमें से बहुत से अन्धे और बहरे हो गए और ईश्वर उनके सब कर्मों को देख रहा है (71)

اور یہ خیال کرتے کہ کوئی آفت نہیں آنے کی تو وہ اندھے اور بہرے ہو گئے. پھر اللہ نے ان پر مہربانی کی. لیکن پھر ان میں سے بہت سے اندھے اور بہرے ہو گئے اور اللہ ان کے سب کاموں کو دیکھ رہا ہے (۷۱)

वह लोग वास्तव में नास्तिक हैं जो कहते हैं कि मरयम का पुत्र मसीह ईश्वर है यद्यपि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इसराईल ईश्वर ही की पूजा करो जो मेरा भी स्वामी है और तुम्हारा भी. जो व्यक्ति ईश्वर के साथ अनेकेश्वर वाद करेगा ईश्वर उस पर स्वर्ग को अवैध कर देगा और उसका स्थान नर्क है और अत्याचारियों का कोई सहायक नही है (72)

وہ لوگ بے شبہ کافر ہیں جو کہتے ہیں کہ مریم کے بیٹے مسیح اللہ ہیں. حالانکہ مسیح یہود سے یہ کہا کرتے تھے کہ اے بنی اسرائیل اللہ ہی کی عبادت کرو جو میرا بھی رب ہے اور تمہارا بھی. جو شخص اللہ کے ساتھ شرک کرے گا اللہ اس پر جنت کو حرام کر دے گا اور اس کا ٹھکانا دوزخ ہے اور ظالموں کا کوئی مددگار نہیں (۷۲)

वह लोग भी नास्तिक हैं जो इस बात के स्वीकार करता है कि ईश्वर तीन में का तीसरा है, यद्यपि वह ईश्वर तीन में का तीसरा नही है निःसन्देह ईश्वर अकेला है और सुनो! परन्तु वह लोग ऐसे कथन से नही रुके, तो उनमें जो नास्तिक हुए हैं वह कष्ट देने वाला दण्ड पाएंगे (73)

<u>وہ لوگ بھی کافر ہیں جو اس بات کے قائل ہیں کہ اللہ تین میں کا تیسرا ہے حالانکہ وہ اللہ تین میں کا تیسرا نہیں ہے؛ یقیناً اکیلا ہے اور سنو! مگر وہ لوگ ایسے قول سے باز نہیں آئے تو ان میں جو کافر ہوئے ہیں وہ تکلیف دینے والا عذاب پائیں گے (۷۳)</u>

तो वह लोग ईश्वर के आगे पश्चाताप नही करते और उससे पापों की क्षमा नही मांगते और ईश्वर तो क्षमा करने वाला दयालु है (74)

تو وہ لوگ اللہ کے آگے توبہ نہیں کرتے اور اس سے گناہوں کی معافی نہیں مانگتے اور اللہ تو بخشنے والا مہربان ہے (۷۴)

मसीह मरयम के पुत्र तो केवल रसूल हैं उनसे पहले बहुत से ईशदूत हो चुके हैं और उनकी माता सच्ची और आज्ञारी थी दोनों खाना खाते थे, देखो हम उन लोगों के लिए अपनी आयतें किस प्रकार खोल कर वर्णन करते हैं फिर देखो वह किधर उलटे जा रहे हैं (75)

مسیح ابن مریم تو صرف رسول ہیں ان سے پہلے بہت سے رسول گزر چکے ہیں اور ان کی والدہ سچی اور فرمانبردار تھیں. دونوں کھانا کھاتے تھے دیکھو ہم ان لوگوں کے لئے اپنی آیتیں کس طرح کھول کر بیان کرتے ہیں. پھر دیکھو وہ کدھر الٹے جا رہے ہیں (۷۵)

कहो कि तुम ईश्वर के अतिरिक्त किसी ऐसी वस्तु की क्यों पूजा करते हो जिसको तुम्हारे लाभ और हानि का कुछ भी अधिकार नही और ईश्वर ही सुनता जानता है (76)

کہو کہ تم اللہ کے سوا کسی ایسی چیز کی کیوں پوجا کرتے ہو جس کو تمہارے نفع اور نقصان کا کچھ بھی اختیار نہیں اور اللہ ہی سنتا جانتا ہے (۷۶)

कहो कि पुस्तक वालों अपने धर्म में अनुचित अत्युक्ति न करो और ऐसे लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जो पहले पथ भ्रष्ट हुए और भी अधिकांशों को पथ भ्रष्ट कर चुके और सीधे मार्ग से स्वयं भटक गए (77)

کہو کہ اہل کتاب اپنے دین میں ناحق مبالغہ نہ کرو. اور ایسے لوگوں کی خواہشوں کے پیچھے نہ چلو جو پہلے گمراہ ہوئے اور بھی اکثروں کو گمراہ کر چکے اور سیدھے رستے سے خود بھٹک گئے (۷۷)

जो लोग बनी इसराईल में नास्तिक हुए उन पर दाऊद अ० और ईसा इब्न मरयम की भाषा से धिक्कार की गई यह इसलिए कि अवज्ञा करते थे और सीमा का उलंघन करते थे. (78)

جو لوگ بنی اسرائیل میں کافر ہوئے ان پر داؤدؑ اور عیسیٰ ابن مریم کی زبان سے لعنت کی گئی یہ اس لئے کہ نافرمانی کرتے تھے اور وہ حد سے تجاوز کئے جاتے تھے (۷۸)

बुरे कर्मों से जो वह करते थे एक दूसरे को रोकते

بُرے کاموں سے جو وہ کرتے تھے ایک دوسرے کو روکتے

नहीं थे निःसंदेह वह बुरा करते थे. (79)
तुम उनमें से अधिकांश को देखोगे कि अवज्ञा करेंगे जो नास्तिक है उन्होंने जो कुछ आगे प्रेषित किया है वह बुरा है कि ईश्वर उनसे रूष्ट है और वह सदैव दण्ड में ग्रस्त रहेंगे. (80)
और यदि वह लोग ईश्वर पर ईश्वर के नबी पर और उस पर जो उस पर अर्थात मुहम्मद स० पर अवतरित हुआ विश्वास लाते तो उन को मित्र न बनाते पर उनमें बहुत लोग अवज्ञाकारी हैं (81) {5:88}
वास्तव में तुम धर्म वादियों का सबसे बढ़कर शत्रु यहूद और अनेकेश्वर वादियों को पाओगे और धर्म वालो की मित्रता में सबसे अधिक उन लोगो को पाओगे जो स्वंय को नसारा अर्थात सहायक कहते है यह इस कारण से कि उन में ज्ञाता और सन्त है (ईश्वर के भय से डरते हैं) और यह कि वह घमण्ड नही करते अर्थात वांशिक घमण्ड में ग्रस्त नही है. (82)

व इज़ासमिऊ (पारा-7)

और जब वह (ईसाई ज्ञाता व सन्त) इस वाणी को सुनते है जो ईश्वर के रसूल मुहम्मद स० पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आंखों से आंसू बहने लगते है क्योंकि इस वाणी की सच्चाई को पा लिया है, वह बोल उठते हैं हे ईश्वर! हम तेरे कथन पर आस्था ले आए पस (सच्चाई की) साक्ष्य देने वालों में हमारा नाम भी लिख ले (83) {4:159}
वह कहते है अन्ततः हम ईश्वर पर और उस कथन पर जो सत्य के साथ हमारे पास आया है विश्वास क्यों न लाएं और ईश्वर से इस बात की आशा क्यों न करें कि हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर ले (84)
सच बात कहने और स्वीकार करने के बदले में ईश्वर उन्हें ऐसे उपवन प्रदान करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह लोग सदैव उन उपवनों में रहेंगे सदाचारियों को ऐसा ही फल दिया जाता है (85)
परन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी धाराओं को झुठलाया वह नर्की है (86)
ऐ आस्तिको! ईश्वर ने जो पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए वैध की है उन्हें अवैध न करना और सीमा से आगे न बढ़ो (3:92, 66:1) सीमा से आगे बढ़ने वालों को ईश्वर मित्र नही रखता (87)
अतः जितनी वैध और पवित्र वस्तुऐं ईश्वर ने तुम्हें दे रखी है उन्हें खाओ और जिस ईश्वर पर तुम्हारा विश्वास है उसकी अवज्ञा से डरते रहो (88)
ईश्वर तुम्हारी संकल्प रहित शपथों पर तुम से पूछ नही करेगा, किन्तु पक्की शपथों पर पकड़ करेगा तो

نہیں تھے بلاشبہ وہ بُرا کرتے تھے(۷۹)
تم ان میں سے بہتوں کو دیکھو گے کہ نافرمانی کریں گے جو کافر ہیں انہوں جو کچھ آگے بھیجا ہے وہ بُرا ہے کہ اللہ ان سے ناخوش ہے اور وہ ہمیشہ عذاب میں مبتلا رہیں گے(۸۰)
اور اگر وہ لوگ اللہ پر اللہ کے نبی پر اور اس پر یعنی محمدؐ پر جو اترا ایمان لاتے تو ان کو رفیق نہ بناتے پر ان میں بہت لوگ بےحکم ہیں(۸۱)
یقیناً تم اہل ایمان کا سب سے بڑھ کر دشمن یہود اور مشرکین کو پاؤ گے اور تم اہل ایمان کی دوستی میں سب سے زیادہ قریب ان لوگوں کو پاؤ گے جو خود کو نصاریٰ یعنی مددگار کہتے ہیں یہ اس وجہ سے کہ ان میں عالم اور درویش ہیں (اللہ کے خوف سے ڈراتے ہیں) اور یہ کہ تکبر نہیں کرتے یعنی نسلی غرور میں مبتلا نہیں ہیں(۸۲)

پارہ ۔۷ ''واذاسمعوا''

اور جب وہ (عیسائی علماومشائخ) اس کلام کو سنتے ہیں جو اللہ کے رسول محمدؐ پر نازل ہوا ہے تو تم دیکھتے ہو کہ ان کی آنکھوں سے آنسو بہنے لگتے ہیں کیونکہ انہوں نے اس کلام کی سچائی کو پالیا ہے۔ وہ بول اٹھتے ہیں یا اللہ! ہم تیرے کلام پر ایمان لے آئے پس (سچائی کی) گواہی دینے والوں میں ہمارا نام بھی لکھ لے(۸۳)[۴:۱۵۹]
وہ کہتے ہیں آخر ہم اللہ پر اور اس کلام پر جو حق کے ساتھ ہمارے پاس آیا ہے ایمان کیوں نہ لائیں اور اللہ سے اس بات کی امید کیوں نہ کریں کہ ہمیں صالح لوگوں میں شامل کرلے(۸۴)
سچ بات کہنے اور قبول کرنے کے بدلے میں اللہ انہیں ایسے باغ عطا فرمائے گا جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی وہ لوگ ہمیشہ ان باغوں میں رہیں گے نیک کرداروں کو ایسا ہی بدلہ دیا جاتا ہے(۸۵)
لیکن جن لوگوں نے کفر کیا اور ہماری آیتوں کو جھٹلایا وہ دوزخی ہیں(۸۶)
اے ایمان والو! اللہ نے جو پاک چیزیں تمہارے لئے حلال کی ہیں انہیں حرام مت کرنا اور حد سے آگے نہ بڑھو (۳:۹۲، ۶۶:۱) حد سے آگے بڑھنے والوں کو اللہ دوست نہیں رکھتا(۸۷)
لہٰذا جتنی حلال اور پاکیزہ چیزیں اللہ نے تمہیں دے رکھی ہیں انہیں کھاؤ اور جس اللہ پر تمہارا ایمان ہے اس کی نافرمانی سے ڈرتے رہو(۸۸)
اللہ تمہاری بےارادہ قسموں پر تم سے مواخذہ نہیں کرے گا

उसका बदला दस रंकों को मध्य श्रेणी का खाना खिलाना है जो तुम अपने परिवार जनों को खिलाते हो या उनको कपड़ा देना या एक दास स्वतंत्र करना और जिसको यह उपलब्ध न हो तो तीन दिन के व्रत रखे यह तुम्हारी शपथों का बदला है जब तुम शपथ खालो तोड़ने पर और चाहिए कि अपनी शपथों की रक्षा करो इस प्रकार ईश्वर तुम्हारे लिए अपनी धाराऐं खोल-खोलकर वर्णन करता है ताकि तुम आज्ञाकारी करो (89) {66:2}

ऐ आस्तिको! दारू और जुआ और मूर्ति और पांसे अशुद्ध कार्य शैतानी कार्य है सो उनसे बचते रहना ताकि मुक्ति पाओ (90) {9:95,125,128}

शैतान तो यह चाहता है कि दारू और जुए के द्वारा तुम्हारे आपस में शत्रुता और वैर डलवा दे और तुम्हें ईश्वर की याद से और नमाज़ से रोक दे तो तुम को उन कार्यों से रुकना चाहिए (91)

और ईश्वर की और ईशदूत की आज्ञा पालन करते रहो और डरते रहो, यदि विमुखता करोगे तो जान रखो कि हमारे ईशदूत का दायित्व तो केवल संदेश को खोलकर पहुंचा देना है (92)

जो लोग आस्था लाऐं और सत्कर्म करने लगे (कुफ्र छोड़कर) उन पर वस्तुओं का कुछ पाप नही जो वह खा चुके कि उन्होंने संयम किया और विश्वास लाए फिर संयम किया और सत्कर्म किया और दृढ़ पग रहें और अच्छे काम करते रहें फिर जिन-जिन वस्तुओं से रोका जाए उन से रुके और ईश्वर के आदेश को मानें और सत्कर्म करें तो ईश्वर ऐसे सदाचारियों को मित्र रखता है (93)

आस्तिको! उस आखेट के द्वारा जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुंचे ईश्वर तुम्हारी परीक्षा करेगा ताकि ज्ञात हो जाए कि कौन ईश्वर से परोक्षतः डरता है और इस आदेश के बाद जो कोई उसकी निश्चित की होई सीमा से उल्लंघन करेगा उसके लिए पीड़ा देने वाला दण्ड है (94)

आस्तिको! तुम अहराम की स्थिति में हो तो आखेट के पशु को न मारो और तुम में से जो कोई जान बूझकर आखेट के पशु को मारेगा तो उसके बदले उसी प्रकार के पशुओं में से एक पशु जिसे दो न्यायिक निश्चित कर दें काबा पहुंचा कर बली करे या निर्धनों को भोजन कराये, यह उसके पापों का बदला है या फिर निर्धनों की संख्या के बराबर व्रत रखे ताकि वह अपने किए का स्वाद चखे, इस आदेश से पहले इस प्रकार की जो त्रुटि हुई उसे ईश्वर ने क्षमा कर दिया परन्तु जो कोई फिर ऐसी त्रुटि करेगा तो ईश्वर उससे बदला लेकर रहेगा,

لیکن پختہ قسموں پر مواخذہ کرے گا تو اس کا کفارہ دس محتاجوں کو اوسط درجے کا کھانا کھلانا ہے جو تم اپنے اہل وعیال کو کھلاتے ہو۔ یا ان کو کپڑے دینا یا ایک غلام آزاد کرنا اور جس کو یہ میسر نہ ہو وہ تین دن روزے رکھے یہ تمہاری قسموں کا کفارہ ہے جب تم قسم کھالو توڑنے پر اور چاہیے کہ اپنی قسموں کی حفاظت کرو۔ اس طرح اللہ تمہارے لئے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتا ہے تا کہ تم فرمانبرداری کرو(۸۹)[۲:٦٦]

اے ایمان والو! شراب اور جوا اور بت اور پانسے ناپاک کام اعمال شیطان سے ہیں سو ان سے بچتے رہنا تا کہ نجات پاؤ (۹۰)[۹:۹۵، ۱۲۵، ۱۲۸]

شیطان تو یہ چاہتا ہے کہ شراب اور جوئے کے ذریعہ تمہارے آپس میں دشمنی اور رنجش ڈلوادے اور تمہیں اللہ کی یاد سے اور نماز سے روک دے تو تم کو ان کاموں سے رکنا چاہیے(۹۱)

اور اللہ کی اطاعت اور رسول کی اطاعت کرتے رہو اور ڈرتے رہو اگر منہ پھیروگے تو جان رکھو کہ ہمارے رسول کے ذمہ تو صرف پیغام کا کھول کر پہنچادینا ہے(۹۲)

جولوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرنے لگے (کفر چھوڑ دیا) ان پر ان چیزوں کا کچھ گناہ نہیں جو وہ کھاچکے کہ انہوں نے پرہیز کیا اور نیکوکاری کی اور ثابت قدم رہیں اور اچھے کام کرتے رہیں پھر جن جن چیزوں سے روکا جائے ان سے رکیں اور اللہ کے حکم کو مانیں اور نیک کام کریں تو اللہ ایسے نیک لوگوں کو دوست رکھتا ہے(۹۳)

مسلمانو! اس شکار کے ذریعہ جس تک تمہارے ہاتھ اور نیزے پہنچیں اللہ تمہیں آزمائے گا تا کہ معلوم ہوجائے کہ کون اللہ سے غائبانہ ڈرتا ہے اور اس حکم کے بعد جو کوئی اس کی مقرر کی ہوئی حد سے تجاوز کرے گا اس کے لئے دردناک عذاب ہے(۹۴)

مسلمانو! تم احرام کی حالت میں ہو تو شکار کے جانور کو نہ مارو اور تم میں سے جو کوئی جان بوجھ کر شکار کے جانور کو مارے گا تو اس کے بدلے اسی طرح کے مویشی میں سے ایک جانور جسے دو انصاف والے طے کردیں کعبہ پہنچا کر قربان کرے یا مسکینوں کو کھانا کھلائے یہ اس کے گناہوں کا بدلہ ہے یا پھر مسکینوں کی تعداد کے برابر روزے رکھے تا کہ وہ اپنے کئے کا مزہ چکھے۔ اس حکم سے پہلے اس طرح کی جو غلطی ہوئی اسے اللہ نے معاف کردیا۔ لیکن جو کوئی پھر ایسی غلطی کرے گا تو اللہ اس سے بدلہ لے کر رہے گا اللہ سب پر

ईश्वर सब पर अधिकार प्राप्त है और सबसे बदला ले सकता है (95)

तुम्हारे लिए समुद्र और दरया का आखेट (मछली मीन) तुम्हारे लिए वैध कर दिया गया है तुम्हारे और यात्रियों के लाभ के लिए और थल का आखेट जब तक तुम अहराम की स्थिति में हो तुम पर अवैध है और ईश्वर से जिसके पास तुम संग्रह किये जाओगे डरते रहो (96)

ईश्वर ने काबा को जो मर्यादा का घर है को लोगों के लिए (सम्मेलन जीवनी के) स्थापना का साधन बनाया है और सम्मान के महीनों को और आहुति और उन पशुओं को जिनके गलों में पट्टे बन्धे हो उनको भी यह इसलिए कि तुम जान लो कि जो कुछ आकाशों में और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर सबको जानता है और यह कि ईश्वर को हर वस्तु का ज्ञान है (97) {2:125, 3:96}

जान रखो कि ईश्वर कठोर दण्ड देने वाला है और यह कि ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु भी है (98)

ईशदूत का कर्तव्य केवल संदेश पहुंचा देना है तुम जो कुछ स्पष्ट करो या छुपा कर करो ईश्वर सब कुछ जानता है (99) {5:67}

ऐ ईशदूत उनसे कह दो पवित्र और अपवित्र बराबर नहीं चाहे अपवित्र की अधिकता ऐ लोगों तुम्हें कितनी ही अच्छी लगे, पस ऐ लोगों जो बुद्धि रखते हो ईश्वर की अवज्ञा से बचते रहो आशा है कि तुम्हें सफलता प्राप्त हो (100)

आस्तिको! ऐसी वस्तुओं के विषय में मत प्रश्न करना कि यदि उनकी वास्तविकता तुम पर स्पष्ट कर दी जाए तो तुम्हें बुरी लगे (याद रखो) जब तक कुरआन प्रेषित किया जा रहा है (और वही का क्रम संचारित है) यदि तुम इस प्रकार के (व्यर्थ और अस्पष्ट प्रश्न) पूछते रहे तो (उनके उत्तर) तुम पर प्रकट कर दिए जाएंगे (और तुम धार्मिक जकड़ बन्दीयों में बन्दी हो जाओगे) अच्छा अब तो ईश्वर ने क्षमा किया (भविष्य में ऐसे प्रश्न न करना) ईश्वर क्षमा करने वाला है (101) {2:71,108}

नोट- जो कुछ ईश्वर को देना है वह देगा ईश्वर से भूल नहीं होती कि तुम लोग प्रश्न करके याद दिलाओ वह अच्छी प्रकार जानता है उसे क्या नियम देना है अतः जो ईशदूत के द्वारा दिया जा रहा है उनको सुनकर उन पर व्यवहार करो और प्रश्न न करो.

तुम से पहले लोगों ने भी ऐसे ही (व्यर्थ) प्रश्न किए थे फिर (जब उन्हें उनके उत्तर दिए गए) तो वह ईश्वर के आदेश के मानने से इनकार कर गए (102)

बहीरा, साईबा, वसीला और हाम में से किसी जानवर को देवताओं के नाम पर छोड़ना ईश्वर ने नियुक्त नहीं किया लेकिन जिन लोगों ने कुफ्र का मार्ग ग्रहण कर रखा है वह ईश्वर पर मिथ्यारोपण करते हैं और अधिकांश बुद्धि नहीं रखते (103)

जब उनसे कहा जाता है कि इस पुस्तक की ओर

غالب ہے اور سب سے بدلہ لے سکتا ہے(۹۵)

تمہارے لئے سمندر اور دریا کا شکار (مچھلی) تمہارے لئے حلال کردیا گیا ہے تمہارے اور مسافروں کے فائدے کے لئے اور خشکی کا شکار جب تک تم احرام کی حالت میں ہو تم پر حرام ہے اور اللہ سے جس کے پاس تم جمع کیے جاؤ گے ڈرتے رہو(۹۶)

اللہ نے کعبہ کو جو حرمت کا گھر ہے کو لوگوں کے لئے (اجتماع زندگی کے) قیام کا ذریعہ بنایا ہے اور عزت کے مہینوں کو اور قربانی کو اور ان جانوروں کو جن کے گلوں میں پٹے بندھے ہوں ان کو بھی، یہ اس لئے کہ تم جان لو کہ جو کچھ آسمانوں میں اور جو کچھ زمین میں ہے اللہ سب کو جانتا ہے اور یہ کہ اللہ کو ہر چیز کا علم ہے(۹۷)[۲:۱۲۵،۳:۹۶]

جان رکھو کہ اللہ سخت سزا دینے والا ہے اور یہ کہ اللہ بخشنے والا مہربان بھی ہے(۹۸)

نبی کا کام صرف پیغام پہنچا دینا ہے تم جو کچھ کھلے طور پر کرو یا چھپا کر کرو اللہ سب کچھ جانتا ہے(۹۹)[۵:۶۷]

اے رسول ان سے کہہ دو پاک اور ناپاک بہر حال برابر نہیں چاہے ناپاک کی کثرت اے لوگوں تمہیں کتنی ہی اچھی لگے پس اے لوگوں جو عقل رکھتے ہو اللہ کی نافرمانی سے بچتے رہو اور امید ہے کہ تمہیں فلاح نصیب ہو(۱۰۰)

مومنو! ایسی چیزوں کے بارے میں مت سوال کرنا کہ اگر ان کی حقیقت تم پر ظاہر کر دی جائے تو تمہیں بری لگے (یاد رکھو) جب تک قرآن نازل ہو رہا ہے (اور وحی کا سلسلہ جاری ہے) اگر تم اس طرح کے (لغو اور مہمل سوالات) پوچھتے رہے تو (ان کے جوابات) تم پر ظاہر کر دئے جائیں گے (اور تم مذہبی جکڑ بندیوں میں گرفتار ہو جاؤ گے) خیر اب تو اللہ نے معاف کیا (آئندہ ایسے سوالات نہ کرنا) اللہ بخشنے والا اور درگزر کرنے والا ہے(۱۰۱)[۲:۷۱،۱۰۸]

نوٹ:۔ جو کچھ اللہ کو دینا ہے وہ دے گا اللہ سے بھول نہیں ہوتی کہ تم لوگ سوال کر کے یاد دلاؤ وہ اچھی طرح جانتا ہے کیا قانون دینا ہے اس لئے جو رسول کے ذریعہ دیا جا رہا ہے ان کو سن کر ان پر عمل کرو اور سوالات نہ کرو۔

تم سے پہلے لوگوں نے بھی ایسے ہی (لغو) سوالات کئے تھے پھر (جب انہیں ان کے جوابات دئے گئے) تو وہ احکام الٰہی کے ماننے سے انکار کر گئے(۱۰۲)

بحیرہ، سائبہ، وصیلہ اور حام میں سے کسی جانور کو بتوں کے نام پر چھوڑنا اللہ نے مقرر نہیں کیا۔ لیکن جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ اللہ پر جھوٹ افترا کرتے ہیں اور وہ اکثر عقل نہیں رکھتے(۱۰۳)

جب ان سے کہا جاتا ہے کہ اس کتاب کی طرف آؤ جو اللہ

आओ जो ईश्वर ने अवतरित की है और ईश्वर के रसूल की ओर आओ तो वह लोग उत्तर देते हैं हमारे लिए वही रीति प्रयाप्त है जिन पर हमने अपने बाप दादा को चलते देखा है यदि उनके बड़े कुछ भी न जानते हों और जीवन के सीधे मार्ग पर भी न हो तब भी? (104)

نے نازل فرمائی ہے اور اللہ کے رسول کی طرف آؤ تو وہ لوگ جواب دیتے ہیں ہمارے لئے وہی رسوم کافی ہیں جن پر ہم نے باپ دادا کو چلتے دیکھا ہے اگر ان کے بڑے کچھ بھی نہ جانتے ہوں اور زندگی کے سیدھے رستے پر بھی نہ ہوں تب بھی (۱۰۴)

ऐ धर्म वालो! अपने जीवों की रक्षा करो जब तुम सीधे मार्ग पर होंगे तो कोई दुष्ट तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नही सकता. तुम सबको ईश्वर की ओर लौट कर जाना है उस समय वह तुम को तुम्हारे सब कामों से जो दुनिया में किए थे अवगत कर देगा (और उनका फल देगा) (105)

اے ایمان والو! اپنی جانوں کی حفاظت کرو. جب تم سیدھے رستے پر ہو گے تو کوئی گمراہ تمہارا کچھ بھی بگاڑ نہیں سکتا تم سب کو اللہ کی طرف لوٹ کر جانا ہے اس وقت وہ تم کو تمہارے سب کاموں سے جو دنیا میں کئے تھے آگاہ کرے گا (اور ان کا بدلہ دے گا) (۱۰۵)

मुसलमानो! जब तुम में से किसी की मृत्यु का समय आ जाए और वह उत्तर पत्र करना चाहें तो अपने में से दो विश्वस्त आदमी साक्षी बनाऐं जाऐं और यदि तुम यात्रा पर हो और तुम पर मृत्यु की विपत्ति आ जाए तो दूसरे क्षेत्र के दो साक्षी बना लिए जाऐं फिर यदि तुम्हें उन दूसरे क्षेत्र के व्यक्तियों की सच्चाई में कुछ भ्रम पड़ जाए तो उन्हें नमाज़ के बाद (मस्जिद में) रोक लो. वे ईश्वर की शपथ खाकर कहें हम किसी निजी लाभ के लिए अपनी साक्ष्य का कुछ बदला नही लेंगे चाहे हमारा नातेदार ही हो और न हम ईश्वर की साक्ष्य को छुपाऐंगे यदि ऐसा करेंगे तो पापी होंगे (106) {2:180, 4:101}

مسلمانو! جب تم میں سے کسی کی موت کا وقت آجائے اور وہ وصیت کرنا چاہے تو اپنے میں سے دو معتبر آدمی گواہ بنائے جائیں اور اگر تم سفر میں ہو اور تم پر موت کی مصیبت آجائے تو غیر علاقہ کے دو گواہ بنائے جائیں پھر اگر تمہیں ان غیر علاقہ کے آدمیوں کی سچائی میں کچھ شک پڑ جائے تو انہیں نماز کے بعد (مسجد میں) روک لو. وہ اللہ کی قسم کھا کر کہیں ہم کسی ذاتی فائدے کے لئے اپنی گواہی کا کچھ بدلہ نہیں لیں گے گو ہمارا رشتہ دار ہی ہو اور نہ ہم اللہ کی شہادت کو چھپائیں گے اگر ایسا کریں گے تو گنہگار ہوں گے (۱۰۶)[۲:۱۸۰، ۴:۱۰۱]

नोट:- कुछ अनुवादों में लिखा है अमुस्लिमों से यात्रा में साक्षी बना लो किन्तु धारा से कुछ और प्रकट हो रहा है क्योंकि आयत में है कि नमाज़ के बाद उनको रोक लो क्या अमुस्लिम नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाएगा? अतः उचित भाव यह है कि यदि तुम यात्रा में हो और अपने परिचित न मिलें तो दूसरे क्षेत्र के अनजान ही हों तो साक्षी बना लो.

نوٹ:۔ کچھ ترجموں میں لکھا ہے غیر مسلموں سے سفر میں گواہ بنالو لیکن آیت سے کچھ اور ظاہر ہو رہا ہے کیونکہ آیت میں ہے کہ نماز کے بعد ان کو روک لو. کیا غیر مسلم نماز پڑھنے مسجد میں آئے گا؟ اس لئے صحیح مفہوم یہ ہے کہ اگر تم سفر میں ہو اور اپنے جان کار نہ ملیں تو غیر علاقہ کے ان جان ہی ہوں تو گواہ بنالو.

फिर यदि ज्ञात हो जाए कि उन दोनों ने पाप प्राप्त किया है तो जिन लोगों का उन्होंने अधिकार मारना चाहा था तो उनमें से उनके स्थान पर दो साक्षी खड़े हों उनमें से जो बहुत निकट हो फिर शपथ खावें ईश्वर की कि हमारी साक्ष्य सत्य है उनकी साक्ष्य से और हम कोई अन्याय नही करेंगे ऐसा किया हो तो हम अन्यायी हैं (107)

پھر اگر معلوم ہو جائے کہ ان دونوں نے گناہ حاصل کیا ہے تو جن لوگوں کا انہوں نے حق مارنا چاہا تھا تو ان میں سے ان کی جگہ اور دو گواہ کھڑے ہوں ان میں سے جو بہت قریب ہوں پھر قسم کھاویں اللہ کی کہ ہماری گواہی حق ہے ان کی گواہی سے اور ہم کوئی زیادتی نہیں کریں گے ایسا کیا ہو تو ہم بے انصاف ہیں (۱۰۷)

इस प्रकार करने से कम शंका है साक्ष्य छुपाने की यह कि उचित साक्ष्य देंगे या इस बात से भय करें कि हमारी शपथ उनकी शपथ के बाद निरस्त कर दी जाएगी और ईश्वर से डरो और उसके आदेशों को सुनो और ईश्वर अवज्ञाकारों को पथ प्रदर्शन नही देता (108)

اس طرح کرنے سے کم خطرہ ہے شہادت چھپانے کا یہ کہ وہ صحیح صحیح شہادت دیں گے یا اس بات سے خوف کریں کہ ہماری قسمیں ان کی قسموں کے بعد رد کر دی جائیں گی اور اللہ سے ڈرو اور اس کے حکموں کو سنو اور اللہ نافرمان لوگوں کو ہدایت نہیں دیتا (۱۰۸)

जिस दिन ईश्वर ईशदूतों को संग्रह करेगा फिर उनसे ज्ञात करेगा कि तुम्हें क्या उत्तर मिला था वह निवेदन करेंगे कि हमें (उनके मनों की बात) कुछ ज्ञात नहीं तू ही परोक्ष की बातों से जानकार है (109)

جس دن اللہ رسولوں کو جمع کرے گا پھر ان سے پوچھے گا کہ تمہیں کیا جواب ملا تھا وہ عرض کریں گے کہ ہمیں کچھ معلوم نہیں تو ہی غیب کی بات سے واقف ہے (۱۰۹)

जब ईश्वर कहेगा ऐ ईसा इब्न मरयम मेरे उन उपकारों को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी

جب اللہ فرمائے گا اے عیسیٰ ابن مریم میرے ان احسانوں کو یاد کرو جو میں نے تم پر اور تمہاری والدہ پر کئے

माता पर किए जब मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हारी सहायता की तुम छोटे में और जवान होकर लोगों से बात करते थे और जब मैंने तुम को पुस्तक जो युक्ति ज्ञान है वह तौरात और इनजील सिखाई और जब तुम मेरे नियम के अनुसार मिट्टी से चिड़िया का पुतला बनाते थे और उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे नियम से परिन्दा स्वतंत्र हो जाता था और जन्म जात अन्धे और कुष्ट में ग्रस्त को मेरे आदेश से अच्छा कर देते थे और जब तुम मृतकों को मेरे आदेश से जीवित निकाल देते थे और जब मैंने बनी इसराईल को तुझ से अर्थात तुझे दुख पहुंचाने से रोक रखा जब कि तूने उनके सामने स्पष्ट चिन्ह प्रस्तुत किए थे तो उनमें से जिन लोगों ने इनकार किया बोले यह तो खुला जादू है (110)

جب میں نے روح القدوس سے تمہاری مدد کی تم چھوٹے میں اور جوان ہوکر لوگوں سے گفتگو کرتے تھے اور جب میں نے تم کو کتاب جو حکمت دانائی ہے وہ تورات اور انجیل سکھائی اور جب تم میرے قانون کے مطابق مٹی سے چڑیا کا پتلا بناتے تھے اور اس میں پھونک مارتے تھے تو وہ میرے قانون سے پرندہ آزاد ہوجاتا تھا. اور مادرزاد اندھے اور مبتلائے برص کو میرے حکم سے اچھا کردیتے تھے اور جب تم مردوں کو میرے حکم سے زندہ برآمد کردیتے تھے اور جب میں نے بنی اسرائیل کو تجھ سے یعنی تجھے آزار پہنچانے سے باز رکھا جب کہ تو نے ان کے سامنے واضح نشانیاں پیش کی تھیں تو ان میں سے جن لوگوں نے کفر کیا بولے یہ تو کھلا جادو ہے(۱۱۰)

नोट- इस आयत में अंकित चमत्कार पर विस्तार (धारा 3:46 से 49 तक) पेज 152 पर अंकित है।

نوٹ: ۔اس آیت میں درج معجزات پر تفصیل آیت ۳:۴۶ سے ۴۹ تک ص۱۵۲ پر درج ہے۔

और मैंने नबी के द्वारा शुद्ध आत्माओं को संकेत किया था कि मुझ पर और मेरे ईशदूत पर विश्वास लाओ तो उन्होंने कहा था हम विश्वास ले आए तू साक्षी रहना कि हम मुस्लिम हैं (111)

اور میں نے نبی کے ذریعہ حواریوں کو اشارہ کیا تھا کہ مجھ پر اور میرے رسول پر ایمان لاؤ تو انہوں نے کہا تھا ہم ایمان لے آئے تو گواہ رہنا کہ ہم مسلم ہیں (۱۱۱)

उस समय की कल्पना करो याद करो जब शुद्ध आदमियों ने निवेदन किया था कि ऐ ईसा पुत्र मरयम क्या तेरा ईश्वर हम पर आकाश से ख्वान अर्थात खाद्य सामग्री अपने प्रसाद अवतरित कर सकता है? कहा यदि तुम आस्तिक हो तो ईश्वर की अवज्ञा से बचो (112)

اس وقت کا تصور کرو یاد کرو جب حواریوں نے عرض کیا تھا کہ اے عیسیٰ ابن مریم کیا تیرا رب ہم پر عالم بالا سے خوان یعنی غذائیں اپنی نعمتیں نازل فرما سکتا ہے؟ فرمایا اگر تم مومن ہو تو اللہ کی نافرمانی سے بچو (۱۱۲)

उन्होंने कहा हमारी यह इच्छा है कि हम उसमें से खाएँ और हमारे हृदय शान्ति पाएँ और हम जान लें कि तुम ने हम से सत्य कहा है और हम इस पर साक्षी रहें (113)

انہوں نے کہا ہماری یہ خواہش ہے کہ ہم اس میں سے کھائیں اور ہمارے دل تسلی پائیں اور ہم جان لیں کہ تم نے ہم سے سچ کہا ہے اور ہم اس پر گواہ رہیں (۱۱۳)

तब ईसा इब्न मरयम ने प्रार्थना की कि ऐ हमारे स्वामी हम पर आकाश से ख्वान खाद्य सामग्री अवतरित कर कि हमारे अगलों और पिछलों के लिए प्रसन्नता हो और वह तेरी ओर से चिन्ह हो, और हमें जीविका दे तू उत्तम जीविका देने वाला है (114)

تب عیسیٰ ابن مریم نے دعا کی کہ اے ہمارے پروردگار ہم پر آسمان سے خوان کھانے کا سامان نازل فرما کہ ہمارے لئے عید قرار پائے یعنی ہمارے اگلوں اور پچھلوں کے لئے خوشی ہو. اور وہ تیری طرف سے نشانی ہو اور ہمیں رزق دے. تو بہتر رزق دینے والا ہے(۱۱۴)

ईश्वर ने कहा मैं तुम पर अवश्य ख्वान अवतरित करूंगा (क्योंकि मेरा वह निर्णय पहले से निश्चित है कि एक समय आएगा ईसा से उसके सहायक इसकी मांग करेंगे तब उनकी मांग पर मैं उन पर यह भोजन अवतरित करूंगा अब वह समय आ गया है तो करता हूं) किन्तु जो इसके बाद तुम में से इनकार करेगा उसे ऐसा दण्ड दूंगा कि संसार वालों में से किसी को ऐसा दण्ड न दिया होगा (115)

<u>اللہ نے کہا میں تم پر ضرور خوان نازل کروں گا (کیوں کہ میرا یہ فیصلہ پہلے سے مقرر ہے کہ ایک وقت آئے گا عیسیٰ سے اس کے حواری اس کی فرمائش کریں گے تب ان کی فرمائش پر میں ان پر یہ کھانا نازل کروں گا اب وہ وقت آ گیا ہے تو کرتا ہوں)لیکن جو اس کے بعد تم میں سے کفر کرے گا اسے ایسا عذاب دوں گا کہ اہل عالم میں کسی کو ایسا عذاب نہ دوں گا نہ دیا ہوگا (۱۱۵)</u>

और (उस समय को भी याद करो) जब ईश्वर कहेगा कि ऐ ईसा पुत्र मरयम! तुम ने लोगों से कहा था कि ईश्वर के साथ मुझे और मेरी माता को पूज्य नियुक्त करो (यद्यपि तुम ने ऐसा नही कहा मैं जानता हूं) वह कहेंगे कि तू पवित्र है मुझे

اور (اس وقت کو بھی یاد کرو) جب اللہ فرمائے گا کہ اے عیسیٰ ابن مریم! کیا تم نے لوگوں سے کہا تھا کہ اللہ کے ساتھ مجھے اور میری والدہ کو معبود مقرر کرو؟ (حالانکہ تم نے ایسا نہیں کیا میں جانتا ہوں)وہ کہیں گے کہ تو پاک ہے مجھے

कब अधिकार था के मैं ऐसी बात कहता जिसका मुझे कुछ अधिकार नही यदि मैंने ऐसा कहा होगा तो तुझ को ज्ञात होगा जो बात तेरे मन में है तू उसे जानता है और जो तेरे ज्ञान में है उसे मैं नही जानता, निःसन्देह तू परोक्ष ज्ञानी है (116) {5:73}

کب حق تھا کہ میں ایسی بات کہتا جس کا مجھے کچھ حق نہیں اگر میں نے ایسا کہا ہوگا تو تجھ کو معلوم ہوگا. جو بات میرے دل میں ہے تو اسے جانتا ہے اور جو تیرے ضمیر میں ہے اسے میں نہیں جانتا بے شک تو علام الغیوب ہے (۱۱۶) [۵:۷۳]

मैंने उनसे कुछ नही कहा अतिरिक्त उसके जिसका तू ने मुझे आदेश दिया है वह यह कि तुम ईश्वर की पूजा करो जो मेरा और तुम्हारा सबका ईश्वर है और जब तक मैं उनमें रहा उनका ज्ञान रखता था जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो तू उनका नियंत्रक था और तू हर वस्तु से अवगत (117) {3:55, 7:126, 10:46, 7:37, 13:40, 5:96}

میں نے ان سے کچھ نہیں کہا بجز اس کے جس کا تو نے مجھے حکم دیا ہے وہ یہ کہ تم اللہ کی عبادت کرو جو میرا اور تمہارا سب کا رب ہے اور جب تک میں ان میں رہا ان کی خبر رکھتا تھا جب تو نے مجھے وفات دے دی تو تو ان کا نگراں تھا اور تو ہر چیز سے خبردار ہے (۱۱۷) [۳:۵۵، ۷:۱۲۶، ۱۰:۴۶، ۷:۳۷، ۱۳:۴۰، ۵:۹۶]

यदि तू उनको दण्ड दे तो यह तेरे बन्दे हैं और यदि क्षमा कर दे तो (तेरी कृपा) निःसन्देह तू अधिकार प्राप्त और युक्ति वाला है (118)

اگر تو ان کو عذاب دے تو یہ تیرے بندے ہیں اور اگر بخش دے تو (تیری مہربانی) بے شک تو غالب اور حکمت والا ہے (۱۱۸)

ईश्वर कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई ही लाभ देगी, उनके लिए उपवन है जिनके नीचे नहरे बह रही है सदैव उनमें रहेंगे, ईश्वर उनसे प्रसन्न और वह ईश्वर से प्रसन्न है यह बड़ी सफलता है (119)

اللہ فرمائے گا کہ آج وہ دن ہے کہ سچوں کو ان کی سچائی ہی فائدہ دے گی. ان کے لئے باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہ رہی ہیں ہمیشہ ان میں بستے رہیں گے اللہ ان سے خوش ہے اور وہ اللہ سے راضی ہیں یہ بڑی کامیابی ہے (۱۱۹)

आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है सब पर ईश्वर ही का राज्य है और वह हर वस्तु के अनुमान बनाने वाला है (120)

آسمان اور زمین اور جو کچھ ان میں ہے سب پر اللہ ہی کی بادشاہت ہے اور وہ ہر چیز کے اندازے بنانے والا ہے (۱۲۰)

नोट- धारा में शब्द तवफ्फेतनी का अनुवाद और व्यक्तियों ने उठा लेना किया है इस कारण कि वह लोग ईसा को जीवित मान रहे हैं जबकि ईसा की मृत्यु हो चुकी है इसकी विवेचना पहले हो चुकी है अवलोकन हो तवफ्फेतनी का अर्थ इस आयत में वफात मृत्यु है.

نوٹ:۔ آیت میں لفظ "توفیتنی" کا ترجمہ اور لوگوں نے اٹھا لینا کیا ہے اس لئے کہ وہ لوگ عیسیٰ کو زندہ مان رہے ہیں جب کہ عیسیٰ کی موت ہو چکی ہے اس کی بحث پہلے ہو چکی ہے ملاحظہ ہو. توفیتنی کا مطلب اس آیت میں وفات موت ہے.

सूरतुल अनआम-6-मक्की

سورت الانعام ـ۶ ـ مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सब प्रसंशा ईश्वर के लिए है जिसने उत्पन्न किया आकाशों और पृथ्वी को और (संसार में) रख दिया स्थापित किया अन्धेरों और प्रकाश को फिर भी वह लोग जिन्होंने अपने ईश्वर से इनकार किया है और वस्तुओं को ईश्वर के बराबर करते है (1)

سب تعریف اللہ کے لئے ہے جس نے پیدا کیا آسمانوں اور زمین کو اور (عالم میں) رکھ دیا قائم کیا اندھیروں اور اجالے کو پھر بھی وہ لوگ جنہوں نے اپنے رب سے کفر کیا ہے اور چیزوں کو اللہ کے برابر کرتے ہیں (۱)

नोट- आयत में दो शब्द अन्धकारों और प्रकाश आए है, अन्धकारों बहुवचन है और प्रकाश एक वचन, सम्पूर्ण संसार में रात और दिन होते है रात अन्धेरी और दिन उज्ज्वल, दोनों एक वचन है, अतः धारा में अन्धकारों और प्रकाश से अर्थ सम्भवतः कुछ और हो सकता है विचार का स्थान है मैं यह समझा हूं कि ईश्वर ने दोनों के लिए शब्द खलाका भी प्रयोग नही किया, अपितु जआला किया है इन दोनों में भी अन्तर है अर्थात उत्पन्न करना और बनाना ठहराना स्थापित करना इत्यादि

संसार में दिन और रात के उजाले और अन्धकार के अतिरिक्त किसी और को भी अन्धकार और प्रकाश से सम्बन्धित करता है जो कुरआन में अंकित है, जो वाचक कुरआन से गुप्त नही है वह यह कि ईश्वर ने सीधा मार्ग अर्थात शुभ कर्मों को प्रकाश कहा है और भ्रष्ट शैतानी मार्गों को अन्धकार जुलमात कहा है चूंकि सीधा मार्ग केवल एक ही है अतः इसके लिए एक वचन का विभाग प्रयोग किया है और शैतानी मार्ग बहुत है जिनके लिए शब्द अन्धकारों बहुवचन का विभाग

نوٹ:۔ آیت میں دو لفظ "ظلمات" اور "نور" آئے ہیں ظلمات جمع اور نور واحد پورے عالم میں رات اور دن ہوتے ہیں رات اندھیری اور دن اجالا دونوں واحد ہیں. اس لئے آیت میں اندھیروں اور اجالے سے مراد غالباً کچھ اور ہو سکتا ہے. غور کا مقام ہے میں یہ سمجھا ہوں کہ اللہ نے دونوں کے لئے لفظ خلق بھی استعمال نہیں کیا بلکہ جعل کیا ہے ان دونوں میں بھی فرق ہے یعنی پیدا کرنا اور بنانا ٹھہرانا قائم کرنا وغیرہ.

عالم میں دن اور رات کے اجالے اور اندھیرے کے علاوہ قرآن کسی اور کو بھی ظلمات اور نور سے منسوب کرتا ہے جو قرآن میں درج ہیں جو قاری قرآن سے پوشیدہ نہیں ہے وہ یہ کہ اللہ نے صراط مستقیم کو نور کہا ہے اور غلط شیطانی راہوں کو اندھیرا ظلمات کہا ہے. چونکہ صراط مستقیم صرف ایک ہی ہے اس لئے اس کے لئے واحد کا صیغہ استعمال ہوا ہے اور شیطانی راہیں بہت ہیں جن کے لئے لفظ

प्रयोग हुआ है, अतः आयत में सीधा मार्ग प्रकाश और अनुचित मार्गो को अन्धकारों को बताया गया है जिसकी निशानदेही धारा के अन्त में कर दी है कि फिर भी नास्तिक लोग और वस्तुओं को ईश्वर के बराबर ठेहराते है मानों ईश्वर के अतिरिक्त मार्ग अन्धकार है और ईश्वर का मार्ग प्रकाश है इन बातों पर विचार किया जाए और कुरआन की आयात को बार-बार दोहराकर देखा जाए तो हर बात स्पष्ट हो जाएगी.

परन्तु यह तब हो सकता है जब व्यक्ति कुरआन को देखें और उन्माद से बाहर होकर देखें परन्तु सामान्य व्यक्ति को कुरआन से दूर कर दियाहै अतः व्यक्ति कुरआन को नही पढ़ता, केवल कुछ धाराओं को बिना समझे नमाज़ में पढ़ लेता है और समझता है कि कर्तव्य चुकता हो गया, परन्तु यह सोच मिथ्या है और भ्रष्टता जिसके लिए ईश्वर ने कहा है कि

क्या वह कुरआन पर मनन नही करते या उनके हृदयों पर अचेतना के ताले लगे हुए है (47:24)

और पालन करो इस उत्तम वस्तु की जो तुम्हारी और तुम्हारे ईश्वर की ओर से प्रेषित की गई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक कष्ट आ जाए और तुम्हें सूचना भी न हो (39:55)

ظلمات جمع کا صیغہ استعمال ہوا ہے۔اس لئے آیت میں صحیح راہ نور اور غلط راہیں ظلمات کو بتایا گیا ہے جس کی نشان دہی آیت کے آخر میں کردی ہے کہ پھر بھی کافر لوگ اور چیزوں کو اللہ کے برابر ٹھہراتے ہیں گویا اللہ کے علاوہ راہیں ظلمات ہےاور اللہ کی راہ نور ہےان باتوں پر غور کیا جائے اور قرآن کو تصریف آیات سے دیکھا جائےتو ہر بات صاف ہو جائے گی۔

مگر یہ تب ہو سکتا ہے جب انسان قرآن کو دیکھے اور نشے سے باہر ہو کر دیکھےمگر عام انسان کو قرآن سے دور کردیا ہےاس لئے آدمی قرآن کو نہیں پڑھتا صرف کچھ آیات بنا سوچے سمجھےنماز میں پڑھ لیتا ہےاور سمجھتا ہے کہ حق ادا ہو گیا مگر یہ سوچ غلط ہےاور گمراہی جس کے لئے اللہ نے کہا ہے کہ۔ کیا وہ قرآن پر غور نہیں کرتے یا ان کے دلوں پر غفلت کے تالے لگے ہوئے ہیں (۴۷:۲۴)

اور پیروی کرو اس بہترین چیز کی جو تمہاری طرف تمہارے پروردگار کی طرف سے نازل کی گئی ہےاس سے پہلے کہ تم پر اچانک عذاب آجائے اور تمہیں اطلاع بھی نہ ہو (۳۹:۵۵)

वही तो है जिसने तुम को मिट्टी से उत्पन्न किया फिर एक समय निश्चित कर दिया और एक निश्चित वचन उसके यहां है फिर भी तुम भ्रम करते हो (2) {4:1,21:104;7:34;10:49;13:30}

وہی تو ہے جس نے تم کو مٹی سے پیدا کیا پھر ایک وقت مقرر کردیا اور ایک مقررہ وعدہ اس کے یہاں ہے پھر بھی تم شک کرتے ہو (۲) [۴:۱، ۲۱:۱۰۴، ۷:۳۴، ۱۰:۴۹، ۱۳:۳۰]

आकाशों और पृथ्वी में वही एक ईश्वर है वह तुम्हारी हर बात जानता है चाहे वह गुप्त हो या प्रकट और तुम जो कर्म करते हो सबसे अवगत है (3)

آسمانوں اور زمین میں وہی ایک اللہ وہ تمہاری ہر بات جانتا ہے چاہے وہ چھپی ہو یا ظاہر اور تم جو عمل کرتے ہو وہ سب سے واقف ہے (۳)

और उनके सामने उनके रब के तर्कों में से जो भी तर्क आता है उससे मुख फैर लेते है (4)

اور ان کے سامنے ان کے رب کے دلائل میں سے جو بھی دلیل آتی ہے اس سے منہ پھیر لیتے ہیں (۴)

अतः जब उनके पास सत्य अर्थात कुरआन आ गया तो उन्होंने उसे भी झुटला दिया, सो जैसा कुछ वह लोग उपहास उड़ाते है उसका परिणाम उन्हें निकट ही ज्ञात हो जाएगा (5)

چنانچہ جب ان کے پاس حق یعنی قرآن آگیا تو انہوں نے اسے بھی جھٹلا دیا۔ سو جیسا کچھ وہ لوگ مذاق اڑاتے ہیں اس کا نتیجہ انہیں عن قریب معلوم ہو جائے گا (۵)

क्या उन्होंने देखा नही कि हमने उनसे पहले कितनी जातियों को वध कर दिया जिनके पग देश में ऐसे जमा दिए थे कि तुम्हारे पग भी ऐसे नही जमाऐ और उन पर आकाश से निरन्तर पानी बरसाया और नहरें भी बना दी जो उनके नीचे बह रही थी फिर उनको उनके पापों के कारण वधकर दिया और उनके बाद और समुदाय खड़े कर दिए अर्थात दूसरे समुदायों का आरम्भ हुआ (6) {2:106, 3:73,74, 16:102}

کیا انہوں نے دیکھا نہیں کہ ہم نے ان سے پہلے کتنی امتوں کو ہلاک کردیا جن کے پاؤں ملک میں ایسے جمادئے تھے کہ تمہارے پاؤں بھی ایسے نہیں جمائے اور ان پر آسمان سے لگاتار مینہ برسایا اور نہریں بھی بنادیں جو ان کے نیچے بہہ رہی تھیں پھر ان کو ان کے گناہوں کے سبب ہلاک کردیا۔ اور ان کے بعد اور امتیں کھڑی کردیں یعنی دوسری قوموں کا آغاز ہوا (۶) [۲:۱۰۶، ۳:۷۳، ۷۴، ۱۶:۱۰۲]

और यदि हम आप पर पत्र में लिखी कोई पुस्तक उतार देते और वह उसे अपने हाथों से छू लें तब भी नास्तिक यही कहेंगे कि यह खुला जादू है (7)

اور اگر ہم آپ پر کاغذ میں لکھی کوئی کتاب اتار دیتے اور وہ اسے اپنے ہاتھوں سے چھو لیں تب بھی کافر یہی کہیں گے کہ یہ تو کھلا جادو ہے (۷)

और कहते है कि इन पर फरिश्ता क्यों अवतरित न होता (जो इनकी पुष्टि करता) यदि हम फरिश्ता अवतरित करते तो काम ही निर्णित हो जाता फिर उन्हें छूट न मिलती (8) {2:102,210, 6:158, 25:11,22,30}

اور کہتے ہیں کہ ان پر فرشتہ کیوں نازل نہ ہوتا (جو ان کی تصدیق کرتا) اگر ہم فرشتہ نازل کرتے تو کام ہی فیصل ہو جاتا پھر انہیں مہلت نہ ملتی (۸) [۲:۱۰۲، ۲۱۰، ۶:۱۵۸، ۲۵:۱۱، ۲۲، ۳۰، ۵۵، ۴۳:۶۱]

और यदि हम किसी फरिश्ते को भेजते तो उसे पुरुष की आकृति में भेजते और जो भ्रम वह करते है फिर उसमें पड़ते (9) {6:50, 14:11, 17:93,

اور اگر ہم کسی فرشتے کو بھیجتے تو اسے مرد کی صورت میں بھیجتے اور جو شبہ وہ کرتے ہیں پھر اس میں پڑتے (۹) [۶:۵۰،

95, 18:110, 41:6}

[۱۴:۱۱، ۱۷:۹۳، ۹۵، ۱۸:۱۱۰، ۴۱:۶]

और (ऐ ईशदूत) आप से पहले भी बहुत से ईशदूतों का उपहास उड़ाया गया था अतः उन लोगों को जिन्होंने उनका उपहास उड़ाया था उसी वस्तु ने घेर लिया जिसका उपहास उड़ाया करते थे (10)

اور (اے نبی) آپؐ سے پہلے بھی بہت سے رسولوں کا مذاق اڑایا گیا تھا پس ان لوگوں کو جنہوں نے ان کا مذاق اڑایا تھا اس چیز نے گھیر لیا جس کا مذاق اڑایا کرتے تھے (۱۰)

उनसे कहो कि देश में चलो फिरो, फिर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या अन्त हुआ (11)

ان سے کہو کہ ملک میں چلو پھرو پھر دیکھ لو کہ جھٹلانے والوں کا کیا انجام ہوا (۱۱)

उनसे ज्ञात करो जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है किस का है? कहदो सब कुछ ईश्वर का है, उसने अपने ऊपर यह अनिवार्य कर लिया है कि वह अपने भक्तो पर दया करे, वह तुम सबको महाप्रलय के दिन जिस में कोई शंका नही अवश्य एकत्र करेगा, जिन लोगो ने अपने लिए हानि में डाल रखा है वह आस्था नही रखते, (12) {2:54, 7:156}

ان سے پوچھو جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے کس کا ہے؟ کہدو سب کچھ اللہ کا ہے اس نے اپنے اوپر یہ لازم کرلیا ہے یعنی اس کی یہ عادت ہے کہ وہ اپنے بندوں پر رحمت کرے وہ تم سب کو قیامت کے دن جس میں کچھ بھی شبہ نہیں ضرور جمع کرے گا جن لوگوں نے اپنے تئیں نقصان میں ڈال رکھا ہے وہ ایمان نہیں رکھتے (۱۲) [۶:۵۴، ۷:۱۵۶]

रात्री के अन्धेरे में और दिनके प्रकाश में जो कुछ उपस्थित है सब उसी का है वह सुनने वाला जानने वाला है, (13)

رات کے اندھیروں میں اور دن کے اجالے میں جو کچھ موجود ہے سب اسی کا ہے وہ سننے والا جاننے والا ہے (۱۳)

कहो क्या मैं ईश्वर को छोड़कर किसी और को सहायक बनाओं, कि वही तो आकाशों और पृथ्वी को पैदा करने वाला है और वही (सबको) खाना देता है और स्वंय किसी से खाना नही लेता कहदो कि मुझे आदेश हुआ है कि मैं सबसे पहला इस्लाम लाने वाला हूं और यह कि तुम अनेकेश्वर वादियों में न होना, (14)

کہو کیا میں اللہ کو چھوڑ کر کسی اور کو مددگار بناؤں کہ وہی تو آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے، اور وہی (سب کو) کھانا دیتا ہے اور خود کسی سے کھانا نہیں لیتا کہدو کہ مجھے حکم ہوا ہے کہ میں سب سے پہلا اسلام لانے والا ہوں اور یہ کہ تم مشرکوں میں نہ ہونا (۱۴)

कहदो कि यदि मैं अपने स्वामी की अवज्ञा करूं तो मुझे बड़े दिन के दण्ड का भय है, (15)

کہدو کہ اگر میں اپنے پروردگار کی نافرمانی کروں تو مجھے بڑے دن کے عذاب کا خوف ہے (۱۵)

जिस व्यक्ति से उस दिन दण्ड टाल दिया गया उस पर ईश्वर ने कृपा की और यह स्पष्ट सफलता है, (16)

جس شخص سے اس روز عذاب ٹال دیا گیا اس پر اللہ نے مہربانی کی اور یہ کھلی کامیابی ہے (۱۶)

और यदि ईश्वर का नियम तुम को कोई कठोरता पहुंचाए तो उसके अतिरिक्त उसको कोई दूर करने वाला नही और यदि उसका नियम प्रसाद प्रदान करे तो उसको रोकने वाला कोई नही और वह हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है, (17)

اور اگر اللہ کا قانون تم کو کوئی سختی پہنچائے تو اس کے سوا اس کو کوئی دور کرنے والا نہیں اور اگر اس کا قانون نعمت عطا کرے تو اس کو روکنے والا کوئی نہیں اور وہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۱۷)

उसको अपने भक्तों पर पूरा अधिकार है और वह ज्ञानी और अवगत है, (18)

اس کو اپنے بندوں پر پورا اختیار ہے اور وہ دانا اور خبردار ہے (۱۸)

ज्ञात कर कौन सी वस्तु बड़ी अर्थात महत्वपूर्ण है साक्ष्य की दृष्टि से? कह कि ईश्वर साक्षी है मेरे और तुम्हारे मध्य और मेरी ओर यह कुरआन वही किया गया है ताकि इसके द्वारा मैं तुम्हें और जिस व्यक्ति तक यह पहुच सके अवगत कर दूं, क्या तुम ईस बात की साक्ष्य देते हो कि ईश्वर के साथ और भी पूज्य है कहदो मैं तो साक्ष्य नही देता कहदो कि केवल वही एक पूज्य है जिन को तुम लोग सहयोगी बनाते हो उससे मैं अप्रसन्न हूं, (19)

پوچھ کونسی چیز بڑی یعنی اہم ہے شہادت کے لحاظ سے؟ کہہ کہ اللہ گواہ ہے میرے اور تمہارے درمیان اور میری طرف یہ قرآن وحی کیا گیا ہے تاکہ اس کے ذریعہ میں تمہیں اور جس شخص تک یہ پہنچ سکے آگاہ کردوں کیا تم اس بات کی شہادت دیتے ہو کہ اللہ کے ساتھ اور بھی معبود ہیں کہدو کہ میں تو شہادت نہیں دیتا کہدو کہ صرف وہی ایک معبود ہے اور جن کو تم شریک بناتے ہو میں ان سے بیزار ہوں (۱۹)

वह लोग जिन्हे हमने अपनी पुस्तक का ज्ञान दिया है वह एकेश्वर वाद सत्य और ईशदूत अरबी को जानते बुझते हैं जैसा कि वह अपने पुत्रों को जानते

وہ لوگ جنہیں ہم نے کتاب اللہ کا علم دیا ہے وہ توحید حق اور (رسول عربی) کو جانتے بوجھتے ہیں جیسا کہ وہ اپنے

पहचानते है वह लोग जिन्होंने अपनी जानो को नष्ट कर लिया है वह तो आस्था नही लाएंगे. (20)
और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसने ईश्वर पर कोई झूट घढ़ा या उसकी आयतों को झुटलाया निःसंदेह अत्याचारी लोग सफलता नही पाते. (21)
और जिस दिन हम सब लोगो को एकत्र करेंगे फिर अनेकेश्वर वादियों से ज्ञात करेंगे कि (आज) वह तुम्हारे साझी कहां है जिनका तुम्हे वाद था. (22)
उस समय उनके पास इसके अतिरिक्ति कोई आपत्ति न होगी कि झूट बोले और कहेंगे कि हमारा स्वामी ईश्वर है और हम अनेकेश्वर वादी न थे. (23)
देखो वह अपने ऊपर कैसा झूट बोलेंगे और उनसे वह सब वस्तुऐं लुप्त हो जाएंगी जिसे दुनिया में घढ़ा करते थे. (24)
और उनमें कतिपय ऐसे है जो आपकी ओर कान लगाएंगे, यद्यपि हमारे नियम के अनुसार उनके हृदयों पर आवरण पड़ गए है कि इसको समझ न सकें और यदि वह सम्पूर्ण चिन्ह भी देख लें तब भी तो उनपर विश्वास नही लाऐं यहां तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे वितर्क करने आएंगे तो नास्तिक यही कहेंगे कि यह कुरआन कुछ नही केवल पहले लोगो की कहानियां है. (25)
और वह लोग इससे दूसरो को भी रोकेंगे और इससे स्वंय भी दूर रहेंगे परन्तु (इन बातों से) अपने आपको वध करेंगे और परिणाम से अनभिज्ञ है. (26)
और यदि आप वह दृश्य देखें कि जब वह नर्क की आग पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे कि यदि हम लौटा दिए जाएं जो अपने रब की धाराओं को न झुटलाएं और मानने वालों में से हो जाएं (27)
हां वह जो कुछ पहले छुपाया करते थे (आज) उन पर स्पष्ट हो गया है और यदि वह (दुनिया में) लौटा भी जाएं तो जिन (कर्मो) से उनको रोका गया था वही करेंगे कुछ शंका नही कि वह झूट है. (28)
और उनका कथन है कि हमारा जो दुनिया का जीवन है बस यही है और हम फिर जीवित नही किए जाएंगे. (29)
और यदि आप उस समय देखो जब वह अपने ईश्वर के सामने खड़े किए जाएंगे और वह कहेगा क्या यह (जीवित होना) सत्य नही, तो कहेंगे क्यों नही ईश्वर की शपथ सत्य है, ईश्वर कहेगा अब इनकार के बदले दण्ड का स्वाद चखो (30)
जिन लोगों ने ईश्वर से मिलने को झुटलाया वह विनाश में पड़ गए यहां तक कि जब वह घड़ी

بیٹوں کو جانتے پہچانتے ہیں. وہ لوگ جنہوں نے اپنی جانوں کوتباہ کرلیا ہےوہ توایمان نہیں لائیں گے(۲۰)
اوراس سے بڑھ کر ظالم کون ہے جس نے اللہ پر کوئی جھوٹ گھڑا یا اس کی آیتوں کو جھٹلایا بے شک ظالم لوگ فلاح نہیں پاتے (۲۱)
اور جس دن ہم سب لوگوں کو جمع کریں گے پھر مشرکوں سے پوچھیں گے کہ (آج) وہ تمہارے شریک کہاں ہیں جن کا تمہیں دعویٰ تھا (۲۲)
اس وقت ان کے پاس اس کے علاوہ کوئی عذر نہ ہوگا کہ جھوٹ بولیں گے کہ ہمارا رب اللہ ہےاور ہم مشرک نہیں تھے(۲۳)
دیکھو وہ اپنے اوپر کیسا جھوٹ بولیں گےاوران سے وہ سب چیزیں غائب ہوجائیں گی جسے دنیا میں گھڑا کرتے تھے(۲۴)
اوران میں بعض ایسے ہیں جو آپ کی طرف کان لگائیں گے حالانکہ ہمارے قانون کے مطابق ان کے دلوں پر پردے پڑ گئے ہیں کہ اس کو سمجھ نہ سکیں اور کانوں میں ثقل پیدا ہوگیا ہےاوراگر وہ تمام نشانیاں بھی دیکھ لیں تب بھی تو ان پر ایمان نہ لائیں یہاں تک کہ جب تمہارے پاس تم سے بحث کرنے کو آئیں گے تو جو کافر ہیں کہیں گے یہ قرآن کچھ بھی نہیں صرف پہلےلوگوں کی کہانیاں ہیں(۲۵)
اور وہ لوگ اس سے دوسروں کو بھی روکیں گےاوراس سے خود بھی دور رہیں گے مگر (ان باتوں سے) اپنے آپ کو ہلاک کریں گےاورانجام سے وہ بےخبر ہیں(۲۶)
اور کاش آپ وہ منظر دیکھیں کہ جب وہ جہنم کی آگ پر کھڑے کئے جائیں گےتو کہیں گے کہ اے کاش ہم لوٹا دئے جائیں تو اپنے رب کی آیتوں کو نہ جھٹلائیں اور ماننے والوں میں سے ہوجائیں(۲۷)
ہاں وہ جو کچھ پہلے چھپایا کرتے تھے (آج) ان پر ظاہر ہوگیا ہےاوراگر وہ (دنیا میں) لوٹائے بھی جائیں تو جن (کاموں) سے اُن کو منع کیا گیا تھا وہی پھر کرنے لگیں کچھ شک نہیں کہ وہ جھوٹے ہیں(۲۸)
اوران کا قول ہے کہ ہماری جو دنیا کی زندگی ہے بس یہی ہےاور ہم پھر زندہ نہیں کئے جائیں گے(۲۹)
اور کاش آپ اس وقت دیکھو جب وہ اپنے رب کے سامنے کھڑے کئے جائیں گےاور وہ کہے گا کیا یہ (زندہ ہونا) حق نہیں تو کہیں گے کیوں نہیں پروردگار کی قسم حق ہےاللہ کہےگااب کفر کے بدلے عذاب کا مزہ چکھو(۳۰)
جن لوگوں نے اللہ سے ملنے کو جھٹلایا وہ تباہی میں پڑ گئے

अचानक आ जाएगी तो उस समय वह कहेंगे अनुताप हमसे इस विषय में कैसी कठोर त्रुटि हो गई, वह उस समय अपने पापों का भार अपनी पीठों पर लादे होंगे देखो कैसा बुरा भार है जिसे वह लाद रहे होंगे (31)

और यह दुनिया का जीवन तो एक खेल तमाशा है (यहां कष्ट हो या आराम सब व्यतीत हो जाएगा) परन्तु बहुत अच्छा घर तो परलोक है उनके लिए जो डरते है क्या तुम समझते नही (32)

हम को ज्ञात है कि उनकी बात आप को दुख पहुंचाएगी (परन्तु) वह आपको नही झुटलाते अपितु अन्यायी ईश्वर की आयतों से इनकार करेंगे (33)

और आपसे पहले भी ईशदूत झुटलाए जाते रहे है तो वह झुटलाने और दुख देने पर धैर्य करते रहे, यहां तक कि उनके पास हमारी सहायता पहुंचती रही, और ईश्वर की बातों को कोई भी बदलने वाला नही (तुम्हारे लिए भी हमारी सहायता आएगी) और आपको ईशदूतों के समाचार पहुंच चुके है (34) {2:214, 12:110}

और यदि उनकी विमुखता आप पर कठिन अनुभूत होती है तो यदि शक्ति हो तो पृथ्वी में कोई सुरंग ढूंढ निकालो या आकाश में सीढ़ी बना लो फिर उनके पास कोई चमत्कार लाओ और यदि ईश्वर चाहता तो सब को पथ प्रदर्शन पर एकत्र कर देता बस आप कदापि मूर्खो में न होना (35) {6:37,58}

बात यह है कि स्वीकार वही करते है जो सुनते भी हों (और जीवित हों) और मृतकों को तो ईश्वर (प्रलय ही को) उठाएगा फिर उसकी ओर लौटकर जाएंगे (36)

और कहते है कि उनके ईश्वर के पास से कोई चिन्ह क्यों अवतरित न हुआ कह दो कि चमत्कार उतारना ईश्वर का अधिकार है परन्तु अधिकांश लोग नही जानते (37)

और पृथ्वी में जो चलने फिरने वाला दाब्बाह (पशु) या दो परों से उड़ने वाला परिन्दा उनके भी तुम लोगों की भांति दल है हमने पुस्तक में लिखने में कोई त्रुटि नही की फिर सब अपने स्वामी की ओर एकत्र किये जाएंगे (38) {81:5}

और जिन लोगों ने हमारी धाराओं को झुटलाया वह बहरे और गूंगे है अन्धेरे में है और जिसको ईश्वर का नियम चाहे पथ भ्रष्ट कर दे और जिसको ईश्वर का नियम चाहे पथ प्रदर्शन पर चला दे (39)

یہاں تک کہ جب وہ گھڑی اچانک آجائے گی تو اس وقت وہ کہیں گے افسوس ہم سے اس معاملہ میں کیسی سخت غلطی ہوگئی وہ اس وقت اپنے گناہوں کا بوجھ اپنی پیٹھوں پر لادے ہوں گے دیکھو کیا بُرا بوجھ ہے جسے وہ لادرہے ہوں گے (۳۱)

اور یہ دنیا کی زندگی تو ایک کھیل تماشہ جیسی ہے (یہاں تکلیف ہو یا آرام سب گذر جائے گی) مگر بہت اچھا گھر تو آخرت کا گھر ہے ان کے لئے جو ڈرتے ہیں کیا تم سمجھتے نہیں (۳۲)

ہم کو معلوم ہے کہ ان کی باتیں آپ کو رنج پہنچائیں گی (مگر) وہ آپ کی تکذیب نہیں کریں گے بلکہ ظالم اللہ کی آیتوں سے انکار کریں گے (۳۳)

اورآپ سے پہلے بھی رسول جھٹلائے جاتے رہے ہیں تو وہ جھٹلانے اور ایذا پر صبر کرتے رہے یہاں تک کہ ان کے پاس ہماری مدد پہنچتی رہی اور اللہ کی باتوں کو کوئی بھی بدلنے والا نہیں (تمہارے لئے بھی ہماری مدد آئے گی) اورآپ کورسولوں کی خبریں پہنچ چکی ہیں (۳۴) [۲:۲۱۴، ۱۲:۱۱۰]

اور اگر ان کی روگردانی آپ پر شاق گزرتی ہے تو اگر طاقت ہو تو زمین میں کوئی سرنگ ڈھونڈ نکالو یا آسمان میں سیڑھی بنالو پھر ان کے پاس کوئی معجزہ لاؤ اور اگر اللہ چاہتا تو سب کو ہدایت پر جمع کردیتا۔ پس آپ ہرگز نادانوں میں نہ ہونا (۳۵) [۶:۳۷، ۵۸]

بات یہ ہے کہ قبول وہی کرتے ہیں جو سنتے بھی ہوں (اور زندہ ہوں) اور مردوں کو تو اللہ (قیامت ہی کو) اٹھائے گا پھر اسی کی طرف لوٹ کر جائیں گے (۳۶)

اور کہتے ہیں کہ ان کے پروردگار کے پاس سے کوئی نشانی کیوں نازل نہ ہوئی کہدو کہ نشانی اتارنا اللہ کا اختیار ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۳۷)

اور زمین میں جو چلنے پھرنے والا دابہ (حیوان) یا دو پروں سے اڑنے والا پرندہ ان کی بھی تم لوگوں کی طرح جماعتیں ہیں ہم نے کتاب میں لکھنے میں کوتاہی نہیں کی پھر سب اپنے پروردگار کی طرف جمع کئے جائیں گے (۳۸) [۸۱:۵]

اور جن لوگوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا وہ بہرے اور گونگے ہیں اندھیرے میں ہیں اور جس کو اللہ کا قانون چاہے گمراہ کردے اور جس کو اللہ کا قانون چاہے سیدھے راہ پر چلادے (۳۹)

नोट- अर्थात ईश्वर का नियम यह है कि जो बुरे कर्म करेगा वह पथ

نوٹ:۔اللہ کا قانون یہ ہے کہ جو بُرے کام کرے گا وہ گمراہ ہوجائے گا اور جو

भ्रष्ट हो जाएगा और जो अच्छे कर्म करेगा वह सीधा मार्ग पाएगा यही ईश्वर चाहता है, अपनी इच्छा से किसी को पथ भ्रष्ट या सदाचारी नही बनाता, सब कर्मों से अच्छे बुरे होते है जहां भी ऐसी धारा आए तो उनको इसी प्रकार देखना,

कहो भला देखो तो यदि तुम पर ईश्वर का कष्ट आ जाए या प्रलय आ उपस्थित हो तो क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त और को पुकारोगे? यदि सच्चे हो (तो बताओ) (40)

अपितु तुम उसी को पुकारोगे तो जिस दुख के लिए उसे पुकारोगे वह यही चाहता है कि उसे दूर कर देगा, और जिनको तुम साझी बनाते हो भूल जाओगे (41)

और हमने तुम से पहले बहुत सी जातियों की ओर ईशदूत भेजे फिर हम उन्हें कष्टों और पीड़ा में पकड़ते रहे ताकि नम्रता करें (42)

तो जब उन पर हमारी यातना आती रही क्यों नही नम्रता करते रहे, परन्तु उनके हृदय कठोर हो गए थे और जो काम वह करते थे शैतान उनको अच्छा कर दिखाता था (43)

फिर जब उन्होंने उस शिक्षा को जो उनको की गई थी विस्मृत कर दिया तो हमने उन पर हर वस्तु के द्वार खोल दिए यहां तक कि जब उन वस्तुओं से जो उनको दी गई थी प्रसन्न हो गए तो हमने उनको सहसा पकड़ लिया और वह उस समय निराश होकर रह गए (44)

फिर अत्याचारी लोगों की जड़ काट दी गई और सब प्रशंसा ईश्वर विश्व पालक के लिए ही है (45)

कहो कि भला देखो तो यदि ईश्वर का नियम तुम्हारे कान और आंखें छीन ले और तुम्हारे हृदयों पर मोहर लगा दे तो ईश्वर के सिवा कौन पूज्य है जो तुम्हें यह प्रसाद फिर दे? देखो हम किस किस प्रकार अपनी आयतें वर्णन करते है, फिर भी वह लोग विमुखता किए जाते है (46)

कहो कि भला बताओ तो यदि तुम पर ईश्वर का कष्ट अचानक या सूचित होने पर आए तो क्या अत्याचारियों के सिवा और भी वध होगा? (47)

और हम जो ईशदूत भेजते रहे है तो शुभ समाचार सुनाने और डराने को फिर जो व्यक्ति विश्वास लाए और सदाचारी हो जाए तो ऐसे लोगों को न भय होगा और न वह शोकाकुल होंगे (48)

और जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया उनकी अवज्ञा के कारण उन्हें यातना होगी (49)

कह दो कि मैं तुम से यह नही कहता कि मेरे पास ईश्वर के कोशागार हैं और न मैं परोक्ष जानता हूं और न तुम से यह कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं मैं तो केवल उस आदेश पर चलता हूं जो मुझ पर ईश्वर की ओर से आता है, कह दो

اچھے کام کرے گا وہ سیدھی راہ پائے گا یہی اللہ چاہتا ہے اپنی مرضی سے کسی کو گمراہ یا ہدایت یافتہ نہیں کرتا سب عملوں سے نیک وبد ہوتے ہیں جہاں بھی ایسی آیات آئیں تو ان کو اسی طرح دیکھنا۔

کہو بھلا دیکھو تو اگر تم پر اللہ کا عذاب آجائے یا قیامت آموجود ہو تو کیا تم اللہ کے سوا اور کو پکارو گے؟ اگر سچے ہو (تو بتاؤ) (۴۰)

بلکہ تم اسی کو پکارو گے تو جس دکھ کے لئے اسے پکارو گے وہ یہی چاہتا ہے کہ اسے دور کردے گا اور جس کو تم شریک بناتے ہو بھول جاؤ گے (۴۱)

اور ہم نے تم سے پہلے بہت سی امتوں کی طرف رسول بھیجے پھر ہم انہیں سختیوں اور تکلیفوں میں پکڑتے رہے تا کہ عاجزی کریں (۴۲)

تو جب ان پر ہمارا عذاب آتا رہا کیوں نہیں عاجزی کرتے رہے مگر ان کے دل تو سخت ہو گئے تھے اور جو کام وہ کرتے تھے شیطان ان کو اچھا کر دکھاتا تھا (۴۳)

پھر جب انہوں نے اسی نصیحت کو جو ان کو کی گئی تھی فراموش کر دیا تو ہم نے ان پر ہر چیز کے دروازے کھول دیئے۔ یہاں تک کہ جب ان چیزوں سے جو ان کو دی گئی تھیں خوش ہو گئے تو ہم نے ان کو ناگہاں پکڑ لیا اور وہ اس وقت مایوس ہو کر رہ گئے (۴۴)

پھر ظالم لوگوں کی جڑ کاٹ دی گئی اور سب تعریف اللہ رب العالمین کے لئے ہی ہے (۴۵)

کہو کہ بھلا دیکھو تو اگر اللہ کا قانون تمہارے کان اور آنکھیں چھین لے اور تمہارے دلوں پر مہر لگا دے تو اللہ کے سوا کون معبود ہے جو تمہیں یہ نعمتیں پھر بخشے؟ دیکھو ہم کس کس طرح اپنی آیتیں بیان کرتے ہیں، پھر بھی وہ لوگ روگردانی کئے جاتے ہیں (۴۶)

کہو کہ بھلا بتاؤ تو اگر تم پر اللہ کا عذاب بے خبری میں یا خبر آنے کے بعد آئے تو کیا ظالم لوگوں کے سوا اور بھی ہلاک ہوگا؟ (۴۷)

اور ہم جو رسول بھیجتے رہے ہیں تو خوشخبری سنانے اور ڈرانے کو پھر جو شخص ایمان لائے اور نیک ہو جائے تو ایسے لوگوں کو نہ کچھ خوف ہوگا اور نہ وہ غم زدہ ہوں گے (۴۸)

اور جنہوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا ان کی نافرمانیوں کی وجہ سے انہیں عذاب ہوگا (۴۹)

کہہ دو کہ میں تم سے یہ نہیں کہتا کہ میرے پاس اللہ کے خزانے ہیں اور نہ میں غیب جانتا ہوں اور نہ تم سے یہ کہتا ہوں کہ میں فرشتہ ہوں میں تو صرف اس حکم پر چلتا ہوں جو مجھ پر اللہ کی طرف سے آتا ہے کہہ دو بھلا اندھا اور آنکھ

भला अन्धा और आंख वाला बराबर होता है? तो फिर विचार नहीं करते (50) {7:203, 10:15, 46:9}

(ऐ ईशदूत) कुरआन के द्वारा उन लोगों को शिक्षा दो जो डरते हैं कि उन्हें अपने ईश्वर के सामने उपस्थित होना है जहां उसके अतिरिक्त न तो उनका कोई सहायक होगा और न अनुशंसा करने वाला आशा है कि वह लोग सदाचारी बन जाएं (51)

और जो लोग प्रातः और सायं अपने रब से प्रार्थना करते हैं और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं उनको (अपने पास से) मत निकालो उनके लेखा की कुछ उत्तरदायित्व तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब का उत्तर दायित्व उन पर कुछ नहीं, यदि उनको निकालोगे तो अत्याचारियों में हो जाओगे (52) {80:1,2}

बात यह है कि हम कतिपय की कतिपय से परीक्षा लेते हैं (निर्धनों को तुम्हारे पास देखकर नेता बुरा मानते हैं) और कहते हैं क्या यही लोग हैं जिन्हें ईश्वर ने हमारे मध्य से पुरस्कार के लिए चुन लिया है क्या ईश्वर आज्ञाकारों को नहीं जानता (53)

और जब आपके पास वह लोग आएं जो आस्था लाएं हमारी धाराओं पर तो आप उनसे कहो तुम पर सलामती हो ईश्वर की, ईश्वर ने अपने लिए यह निश्चित कर लिया है कि ऐसे आस्तिकों पर दया करें जो अनभिज्ञता से पाप कर बैठे हैं और शीघ्र ही सच्चे हृदय से पश्चाताप करके अपना सुधार कर लेते हैं, तो ईश्वर क्षमा करने वाला और बड़ा कृपालु है क्षमावान है (54)

और इसी प्रकार हम अपनी आयतें खोल खोलकर बयान करते हैं (ताकि लोग उन पर व्यवहार करें) और इसलिए कि पापियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए (55)

तुम उन लोगों से कह दो मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उनकी पूजा करूं जिन्हें तुम ईश्वर को छोड़कर पुकारते हो, कह दो मैं तुम्हारी काम इच्छाओं के पीछे कभी नहीं चल सकता, यदि मैं ऐसा करूं तो पथ भ्रष्ट हो जाऊं (56)

कह दो कि मैं तो अपने ईश्वर के उज्ज्वल तर्क पर हूं और तुम उसको झुठलाते हो, जिस वस्तु के लिए तुम जल्दी कर रहे हो वह मेरे पास नहीं है ऐसा आदेश तो ईश्वर के अधिकार में है आदेश उसका ही चलता है, वह सच्ची बात वर्णन करता है और वह सबसे अच्छा न्याय करने वाला है (57)

कह दो यदि वह यातना जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो मेरे अधिकार में होती तो मेरे और तुम्हारे मध्य प्रसंग चुका दिया जाता और ईश्वर अत्याचारियों को जानता है (58)

और उसी के पास परोक्ष की कुंजियां हैं जिनको उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता और उसे वनों और नदियों की सब वस्तुओं का ज्ञान है और कोई पत्ता नहीं झड़ता परन्तु वह उसको जानता है और

والا برابر ہوتا ہے؟ تو پھر غور نہیں کرتے؟ (۵۰) [۷:۲۰۳،۱۰:۱۵،۴۶:۹]

(اے رسول) قرآن کے ذریعہ ان لوگوں کو نصیحت کرو جو ڈرتے ہیں کہ انہیں اپنے رب کے سامنے حاضر ہونا ہے جہاں اس کے علاوہ نہ تو ان کا کوئی مددگار دوست ہوگا اور نہ شفاعت کرنے والا امید ہے کہ وہ لوگ متقی بن جائیں (۵۱)

اور جو لوگ صبح اور شام اپنے رب سے دعا کرتے ہیں اور اس کی رضا کے طالب ہیں ان کو (اپنے پاس سے) مت نکالو ان کے حساب کی جواب دہی تم پر نہیں اور تمہارے حساب کی جواب دہی ان پر کچھ نہیں۔ اگر ان کو نکالو گے تو ظالموں میں ہو جاؤ گے (۵۲) [۸۰:۱،۲]

بات یہ ہے کہ ہم بعض کو بعض سے آزماتے ہیں (غریبوں کو تمہارے پاس دیکھ کر سردار برا مانتے ہیں) اور کہتے ہیں کیا یہی لوگ ہیں جنہیں اللہ نے ہمارے درمیان سے انعام کے لئے چن لیا ہے۔ کیا اللہ فرمانبرداروں کو نہیں جانتا؟ (۵۳)

اور جب آپ کے پاس وہ لوگ آئیں جو ایمان لائیں ہماری آیتوں پر تو آپ ان سے کہو تم پر سلامتی ہو اللہ کی، اللہ نے اپنے لئے یہ طے کر لیا ہے کہ ایسے ایمان داروں پر رحمت کرے جو نادانی سے گناہ کر بیٹھتے ہیں اور جلد ہی سچے دل سے توبہ کر کے اپنی اصلاح کر لیتے ہیں تو اللہ بخشنے والا اور بڑا غفور الرحیم ہے (۵۴)

اور اسی طرح ہم اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتے ہیں (تاکہ لوگ ان پر عمل کریں) اور اس لئے کہ گناہگاروں کا رستہ ظاہر ہو جائے (۵۵)

تم ان لوگوں سے کہہ دو مجھے اس بات سے روک دیا گیا ہے کہ میں ان کی بندگی کروں جنہیں تم اللہ کو چھوڑ کر پکارتے ہو کہہ دو میں تمہاری نفسانی خواہشوں کے پیچھے کبھی نہیں چل سکتا اگر میں ایسا کروں تو گمراہ ہو جاؤں (۵۶)

کہہ دو کہ میں تو اپنے رب کی روشن دلیل پر ہوں اور تم اس کو جھٹلاتے ہو جس چیز کے لئے تم جلدی کر رہے ہو وہ میرے پاس نہیں ہے ایسا حکم تو اللہ کے اختیار میں ہے حکم اس کا ہی چلتا ہے وہ سچی بات بیان فرماتا ہے اور وہ سب سے اچھا فیصلہ کرنے والا ہے (۵۷)

کہہ دو اگر وہ عذاب جس کی تم جلدی مچا رہے ہو میرے قبضہ میں ہوتا تو میرے اور تمہارے درمیان معاملہ چکا دیا جاتا اور اللہ ظالموں کو جانتا ہے (۵۸)

اور اسی کے پاس غیب کی کنجیاں ہیں جن کو اس کے سوا کوئی نہیں جانتا اور اسے جنگلوں اور دریاؤں کی سب چیزوں کا علم ہے اور کوئی پتہ نہیں جھڑتا مگر وہ اس کو جانتا ہے اور

पृथ्वी के अन्धेरों में कोई दाना और कोई हरी या सूखी वस्तु नही है परन्तु उज्ज्वल पुस्तक में अंकित है (ईश्वर के ज्ञान में) (59) {7:188, 27:65, 73:26}

زمین کے اندھیروں میں کوئی دانہ اور کوئی ہری یا سوکھی چیز نہیں ہے مگر کتاب روشن میں ہے (علم الٰہی میں) (۵۹)
[۱۸۸:۷، ۶۵:۲۷، ۲۶:۷۳]

वही है जो रात्रि को तुम्हें मृत्यु देता है (अर्थात सुला देता है) और दिन में जो कुछ करते हो उसे जानता है फिर दूसरे दिन तुम्हें जगाकर कार्य में लगा देता है ताकि इसी प्रकार निश्चित समय पूरा हो जाए फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है, फिर जो कुछ तुम दुनिया में करते रहे हो सब कुछ बता देगा (60)

وہی ہے جو رات کو تمہیں موت دیتا ہے (یعنی سلا دیتا ہے) اور دن میں جو کچھ کرتے ہو اسے جانتا ہے پھر دوسرے دن تمہیں جگا کر کام میں لگا دیتا ہے تا کہ اسی طرح مقررہ مدت پوری ہو جائے پھر اسی کی طرف تمہیں لوٹنا ہے پھر جو کچھ تم دنیا میں کرتے رہے ہو سب کچھ بتا دے گا (۶۰)

वही अपने बन्दों पर पूरा अधिकार रखता है और तुम पर रक्षा करने वाली (शक्तियां) भेजता है अर्थात नियुक्त करता है (ताकि तुम्हारे कर्म भी लिख कर सुरक्षित करते रहें) यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उसका जीव ग्रहण कर लेते हैं और कोई त्रुटि नही करते (61)

وہی اپنے بندوں پر پورا اختیار رکھتا ہے اور تم پر حفاظت کرنے والی (طاقتیں) بھیجتا ہے یعنی مقرر کرتا ہے (تا کہ تمہارے اعمال بھی لکھ کر محفوظ کرتے رہیں) یہاں تک کہ جب تم میں سے کسی کی موت کا وقت آ جاتا ہے تو ہمارے فرشتے اس کی روح قبض کر لیتے ہیں اور کوئی کوتاہی نہیں کرتے (۶۱)

फिर सब के सब उसी की ओर लौटाए जाएंगे जो उनका वास्तविक स्वामी है याद रखो आदेश का अधिकार केवल उसी को है और बहुत शीघ्र लेखा जोखा लेने वाला है (62)

پھر سب کے سب اس کی طرف لوٹائے جاؤ گے جو ان کا مالک حقیقی ہے یاد رکھو حکم کا اختیار صرف اسی کو ہے اور وہ بہت جلد حساب لینے والا ہے (۶۲)

ज्ञात करो वह कौन है जो तुम्हें वनों और समुन्द्रों के अन्धकारों से मुक्ति देता है, जिससे कष्ट के समय तुम गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके प्रार्थना करते हो यदि ईश्वर हमें इस कष्ट से बचा लेगा तो हम अवश्य उसके आज्ञाकारी बन्दे हो जाएंगे (63)

پوچھو وہ کون ہے جو تمہیں بیابانوں اور سمندروں کی تاریکیوں سے نجات دیتا ہے جس سے مصیبت کے وقت تم گڑگڑا کر اور چپکے چپکے دعائیں مانگتے ہو اگر اللہ ہمیں اس مصیبت سے بچا لے گا تو ہم ضرور اس کے فرمانبردار بندے ہو جائیں گے (۶۳)

तुम कहो ईश्वर ही तुम्हें उस कष्ट से और हर प्रकार के दुख से मुक्ति देता है फिर भी तुम उसके साथ दूसरों को साझी करते हो (64)

تم کہو اللہ ہی تمہیں اس مصیبت سے اور ہر طرح کی تکلیف سے نجات دیتا ہے پھر بھی تم اس کے ساتھ دوسروں کو شریک کرتے ہو (۶۴)

तुम कहो ईश्वर इस बात का अधिकार रखता है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से तुम पर यातना भेजे या तुम्हें दलों में बांटकर एक दूसरे की शक्ति का स्वाद चखाए देखो हम किस प्रकार अपनी आयतों को उनके सामने प्रस्तुत करते हैं ताकि वह लोग समझें (65) {2:285, 6:160}

تم کہو اللہ اس بات کا اختیار رکھتا ہے کہ تمہارے اوپر سے یا تمہارے پیروں کے نیچے سے تم پر عذاب بھیجے یا تمہیں گروہوں میں تقسیم کر کے ایک دوسرے کی طاقت کا مزا چکھائے دیکھو ہم کس طرح اپنی آیتوں کو ان کے سامنے پیش کرتے ہیں تا کہ وہ لوگ سمجھیں (۶۵) [۲۸۵:۲، ۱۶۰:۶]

तुम्हारी जाति ने उसे (अर्थात कुरआन को) झुठलाया यद्यपि वह सत्य है तुम कह दो मैं तुम पर कोई प्रतिनिधि या निरीक्षक नही हूं (66)

تمہاری قوم نے اسے (یعنی قرآن کو) جھٹلا دیا حالانکہ وہ حق ہے تم کہہ دو میں تم پر کوئی وکیل یا داروغہ نہیں ہوں (۶۶)

हर समाचार के लिए एक समय निश्चित है और निकट तुम को ज्ञात हो जाएगा (67)

ہر خبر کے لئے ایک وقت مقرر ہے اور عن قریب تم کو معلوم ہو جائے گا (۶۷)

और जब तुम ऐसे व्यक्तियों को देखो जो हमारी आयात का उपहास उड़ा रहे हैं तो उनसे पृथक हट जाओ यहां तक कि वह दूसरी बातों में लग जाएं और जब कभी शैतान तुझे भूल में डाल दे (अर्थात ऐसे लोगों के पास भूल से बैठ जाओ) तो याद

اور جب تم ایسے آدمیوں کو دیکھو جو ہماری آیات کا مذاق اڑا رہے ہیں تو ان سے الگ ہٹ جاؤ۔ یہاں تک کہ وہ دوسری باتوں میں لگ جائیں اور جب کبھی شیطان تجھے بھول میں ڈال دے (یعنی ایسے لوگوں کے پاس بھول

आने पर ऐसे सदाचारी लोगों के पास से हट जाओ (68)

سے بیٹھ جاؤ) تو یاد آنے پر ایسے ظالم لوگوں کے پاس سے ہٹ جاؤ (۶۸)

और सदाचारी लोगों पर उन लोगों के लेखे की कुछ भी उत्तर दायित्व नहीं हां उपदेश करना ताकि वह भी सदाचारी हो जाएं (69)

اور نیک لوگوں پر اُن لوگوں کے حساب کی کچھ بھی جواب دہی نہیں . ہاں نصیحت کرنا تا کہ وہ بھی پرہیز گار ہو جائیں (۶۹)

और जिन लोगों ने अपने धर्म को खेल तमाशा बना रखा है और दुनिया की जिन्दगी ने उनको धोके में डाल रखा है, उनसे कुछ काम न रखो इस (कुरआन) के द्वारा शिक्षा करते रहो ताकि कोई अपने कर्मों के दण्ड में विनाश में न डाला जाए (उस दिन) ईश्वर के सिवा न तो कोई उसका मित्र होगा और न अनुशंसा करने वाला और यदि वह (हर वस्तु जो पृथ्वी पर है) बदला देना चाहे तो वह उससे स्वीकार न होगी वही वह लोग है कि अपने कर्मों के बदले में विनाश में डाले गए उनके पीने के लिए खोलता हुआ पानी और दुख देने वाला दण्ड है इसलिए कि कुफ्र करते थे (70)

शराबुन {16:69, 76:21}

اور جن لوگوں نے اپنے دین کو کھیل اور تماشا بنا رکھا ہے اور دنیا کی زندگی نے ان کو دھوکے میں ڈال رکھا ہے ان سے کچھ کام نہ رکھو (اس قرآن) کے ذریعہ نصیحت کرتے رہو تا کہ کوئی اپنے اعمال کی سزا میں ہلاکت میں نہ ڈالا جائے (اس روز) اللہ کے سوا نہ تو کوئی اس کا دوست ہوگا اور نہ شفارش کرنے والا. اور اگر وہ (ہر چیز جو زمین پر ہے) معاوضہ دینا چاہے تو وہ اس سے قبول نہ ہوگی وہی وہ لوگ ہیں کہ اپنے اعمال کے وبال میں ہلاکت میں ڈالے گئے. ان کے لئے پینے کو کھولتا ہوا پانی اور دکھ دینے والا عذاب ہے اس لئے کہ کفر کرتے تھے (۷۰) [شرابٌ ۱۶:۶۹، ۷۶:۲۱]

कहो क्या हम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं को पुकारें जो न हमारा भला कर सके न बुरा, और जब हमको ईश्वर ने सीधा मार्ग दिखा दिया तो हम उल्टे पांव फिर जाएं? जैसे किसी को जिन्नात ने जंगल में भुला दिया हो और वह विस्मित हो रहा हो और उसके कुछ मित्र हों जो उसको पथ प्रदर्शन की ओर बुलाऐं कि हमारे पास चला आ कह दो कि मार्ग तो वही है जो ईश्वर ने बताया है और हमें तो यह आदेश मिला है कि हम ईश्वर विश्वपालक के आज्ञाकारी हों (71)

کہو کیا ہم اللہ کے سوا ایسی چیز کو پکاریں جو نہ ہمارا بھلا کر سکے نہ بُرا. اور جب ہم کو اللہ نے سیدھا رستہ دکھا دیا تو ہم الٹے پاؤں پھر جائیں؟ جیسے کسی کو جنات نے جنگل میں بھلا دیا ہو اور وہ حیران ہو رہا ہو اور اس کے کچھ رفیق ہوں جو اس کو ہدایت کی طرف بلائیں کہ ہمارے پاس چلا آ. کہہ دو کہ رستہ تو وہی ہے جو اللہ نے بتایا ہے اور ہمیں تو یہ حکم ملا ہے کہ ہم اللہ رب العالمین کے فرمانبردار رہوں (۷۱)

और यह कि नमाज़ स्थापित करते रहो और उससे डरते रहो और वही तो है जिसके पास जमा किए जाओगे (72)

اور یہ کہ نماز قائم کرتے رہو اور اس سے ڈرتے رہو. اور وہی تو ہے جس کے پاس تم جمع کئے جاؤ گے. (۷۲)

और वही तो है जिसने आकाशों और पृथ्वी को युक्ति से एक निश्चित समय के लिए उत्पन्न किया है और जिस दिन वह समय आ जाएगा वह कहेगा कि हो जा तो प्रलय हो जाएगा, उसका कथन सत्य है और जिस दिन सूर फूंका जाएगा (और राजसभा होगी) उस दिन उसी का आदेश सत्य चलेगा वह लुप्त व विद्यमान सबका जानने वाला है और हर कार्य में युक्ति रखने वाला और अवगत है (73)

وہ وہی تو ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو تدبیر سے ایک وقت تک کے لئے پیدا کیا ہے اور جس دن وہ وقت آجائے گا وہ کہہ دے گا کہ ہو جا تو حشر ہو جائے گا. اس کا قول برحق ہے اور جس دن صور پھونکا جائے گا (اور دربار عام ہوگا) اس روز اسی کا حکم برحق چلے گا وہ غائب وحاضر کا جاننے والا ہے اور ہر کام میں حکمت رکھنے والا اور خبردار ہے (۷۳)

नोट- अर्थात दुनिया में इन्सान को कर्म करने का अवसर दिया गया है और इन्सान ईश्वर का विरोध करता है परन्तु ईश्वर उसको सत्कर्म करने पर विवश नहीं करता, परन्तु उस दिन उसको कोई अधिकार न होगा अपितु उस पर ईश्वर को अधिकार होगा, राज्य उसी का होगा,

نوٹ: یعنی دنیا میں انسان کو عمل کرنے کا موقع دیا گیا ہے اور انسان اللہ کی مخالفت کرتا ہے مگر اللہ اس کو نیک عمل کرنے پر مجبور نہیں کرتا. مگر اس دن اس کو کوئی اختیار نہ ہوگا بلکہ اس پر اللہ کو اختیار ہوگا بادشاہی اسی کی ہوگی.

और वह घटना याद करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा था क्या तुमने मूर्तियों को ईश्वर समझ रखा है? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी जाति को खुली भ्रष्टता में देखता हूं (74)

اور وہ واقعہ یاد کرو جب ابراہیم نے اپنے باپ آزر سے کہا تھا کیا تم نے بتوں کو اللہ سمجھ رکھا ہے؟ میں تو تمہیں اور تمہاری قوم کو کھلی گمراہی میں دیکھتا ہوں (۷۴)

और हम इसी प्रकार इब्राहीम को आकाशों और पृथ्वी के राज्य का प्रबन्ध दिखाते थे और इसलिए दिखाते थे कि वह विश्वास करने वालों में से हो जाए (75) {19:42ता49, 21:51ता70, 26:69 ता89}

اور ہم اسی طرح ابراہیم کو آسمانوں اور زمین کا نظام سلطنت دکھاتے تھے اور اس لئے دکھاتے تھے کہ وہ یقین کرنے والوں میں سے ہو جائے (۷۵) [۱۹:۴۲تا۴۹، ۲۱:۵۱تا۷۰، ۲۶:۶۹تا۸۹]

फिर जब उस पर रात्रि आई उसने देखा बोला यह

پھر جب اس پر رات چھا گئی اس نے یعنی آزر نے

मेरा रब अतः जब वह छुप गया तो इब्राहीम ने कहा मैं छुप जाने वालों को पसंद नही करता (76)

(آسمان پر ایک ستارہ دیکھا بولا یہ میرا رب ہے پس جب وہ چھپ گیا تو ابراہیم نے کہا میں چھپ جانے والوں کو پسند نہیں کرتا (٧٦)

फिर आजर ने चन्द्रमा को चमकते देखा तो बोला यह मेरा रब है (मैं इसकी पूजा करता हूं) अतः जब वह छुप गया तो इब्राहीम ने कहा मैं कहता हूं यदि मेरे ईश्वर ने मुझे सत्य मार्ग न दिखाया होता तो मैं भ्रष्ट लोगों में से हो जाता जो भटक रहे हैं (77)

پھر آزر نے چاند کو روشن دیکھا تو بولا یہ میرا رب ہے (میں اس کی عبادت کرتا ہوں) پس جب وہ چھپ گیا تو ابراہیم نے کہا میں کہتا ہوں اگر میرے رب نے مجھے راہ راست نہ دکھائی ہوتی تو میں گمراہ لوگوں میں سے ہو جاتا جو بھٹک رہے ہیں (٧٧)

इसके बाद जब आजर ने सूर्य को चमकता हुआ देखा तो बोला यह मेरा ईश्वर है यह मेरा सबसे बड़ा पूज्य है अतः जब वह छुप गया तो इब्राहीम ने कहा ऐ मेरी जाति निःसन्देह मैं तुम्हारे अनेकेश्वर वाद से अप्रसन्न हूं (उन वस्तुओं से अप्रसन्न हूं) जिन्हें तुम साझी कर रहे हो (78)

اس کے بعد جب آزر نے سورج کو چمکتا ہوا دیکھا تو بولا یہ میرا رب ہے یہ میرا سب سے بڑا معبود ہے پس جب وہ چھپ گیا تو ابراہیم نے کہا اے میری قوم بے شک میں تمہارے شرک سے بیزار ہوں (ان چیزوں سے بیزار ہوں) جنہیں تم شریک کر رہے ہو (٧٨)

निःसन्देह मैं उन सब (झूठे) पूज्यों से मुख मोड़कर उस अकेले ईश्वर की ओर आकृष्ट हो गया हूं जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया है और मैं उन लोगों में से नही हूं जो अनेकेश्वर वादी है (79) {16:123}

بے شک میں ان تمام (جھوٹے) معبودوں سے منہ موڑ کر اس واحد اللہ کی طرف متوجہ ہو گیا ہوں جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے اور میں ان لوگوں میں سے نہیں ہوں جو شرک ہیں (٧٩) [١٦:١٢٣]

और उनकी जाति उनसे विवाद करने लगी तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से ईश्वर के विषय में वितर्क करते हो उसने तो मुझ को सीधा मार्ग दिखा दिया है और जिन वस्तुओं को तुम उसका साझी बनाते हो मैं उनसे नही डरता, निःसन्देह मेरा स्वामी यही कुछ चाहता है कि उस सीधे मार्ग पर रहूं, मेरा ईश्वर अपने ज्ञान से हर वस्तु पर परिक्रमा किए हुए है क्या तुम विचार नही करते (80)

اور ان کی قوم ان سے بحث کرنے لگی تو انہوں نے کہا کہ تم مجھ سے اللہ کے بارے میں بحث کرتے ہو اس نے تو مجھ کو سیدھا رستہ دکھا دیا ہے اور جن چیزوں کو تم اس کا شریک بناتے ہو میں ان سے نہیں ڈرتا یقیناً میرا رب یہی کچھ چاہتا ہے کہ اس سیدھے رستے پر رہوں میرا رب اپنے علم سے ہر چیز پر احاطہ کئے ہوئے ہے کیا تم خیال نہیں کرتے (٨٠)

भला मैं उन वस्तुओं से जिनको तुम ईश्वर का समकक्ष बनाते हो क्यों कर डरूं जबकि तुम उससे नही डरते कि ईश्वर का साझी बनाते हो जिसका उसने कोई प्रमाण अवतरित नही किया, अब दोनों पक्षों में से कौन सा पक्ष शान्तिका अधिकारी है यदि समझ रखते हो तो बताओ (81)

بھلا میں ان چیزوں سے جن کو تم اللہ کا شریک بناتے ہو کیونکر ڈروں جب کہ تم اس سے نہیں ڈرتے کہ اللہ کا شریک بناتے ہو جس کو اس نے کوئی سند نازل نہیں کی. اب دونوں فریقوں میں سے کون سا فریق امن کا حق دار ہے اگر سمجھ رکھتے ہو تو بتاؤ (٨١)

जो लोग विश्वास लाए और अपने धर्म को अनेकेश्वर वाद के अत्याचार से मिश्रित नही किया उनके लिए शान्ति है और वही पथ प्रदर्शन पाने वाले है (82)

جو لوگ ایمان لائے اور اپنے ایمان کو شرک کے ظلم سے مخلوط نہیں کیا ان کے لئے امن ہے اور وہی ہدایت پانے والے ہیں (٨٢)

और यह हमारी उक्ति थी जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति के सम्मुख प्रदान की थी हम जिसके चाहते है अपने विधान के अनुसार मान उच्च करते है निःसन्देह तुम्हारा ईश्वर ज्ञानी और जानता है (83) {3:55}

اور یہ ہماری دلیل تھی جو ہم نے ابراہیم کو ان کی قوم کے مقابلہ میں عطا کی تھی ہم جس کے چاہتے ہیں اپنے قانون کے مطابق درجے بلند کرتے ہیں بے شک تمہارا رب دانا اور خبر دار ہے (٨٣) [٣:٥٥]

नोट- कुरआन के शब्दों में सबसे बड़ा पाप अनेकेश्वर वाद बताया गया और इतनी कठोरता की गई है कि और सब पाप क्षमा हो सकते है परन्तु अनेकेश्वर वाद क्षमा नही हो सकता, अतः ईश्वर ने किसी अनेकेश्वर वादी पापी को अपने कार्य के लिए नही चुना, अर्थात अपना ईशदूत नही बनाया, हर ईशदूत सदैव एकेश्वर वादी रहा, ईशदौत्य मिलने से पहले भी वह अनेकेश्वर वादी नही रहा, कुरआन की के मंत्र साक्षी है और कुरआन में महामना इब्राहीम के लिए बार-बार आया है कि वह

نوٹ۔ قرآن کے الفاظ میں سب سے بڑا گناہ شرک بتایا گیا ہے اور اتنی سختی کی گئی ہے کہ اور سب گناہ معاف ہو سکتے ہیں مگر شرک معاف نہیں ہو سکتا اس لئے اللہ نے کسی مشرک گناہ گار کو اپنے کام کے لئے نہیں چنا یعنی اپنا نبی نہیں بنایا ہر نبی ہمیشہ توحید پر رہا نبوت ملنے سے پہلے بھی وہ مشرک نہیں رہا قرآن کی آیات شاہد ہیں اور قرآن میں حضرت ابراہیم کے لئے بار بار آیا ہے کہ وہ مشرک نہ تھا اس

अनेकेश्वर वादी न थे, उसने कभी अनेकेश्वर वाद नही किया और आदेश हुआ भविष्य के आने वाले ईशदूतों और जातियों के लिए कि इब्राहीम के धर्म का अनुकरण करो वह अनेकेश्वर वादी न थे।

किन्तु सूरत अनआम की आयत 77,78,79 में अंकित शब्द हाज़ा रब्बी अर्थात यह मेरा ईश्वर है को श्रीमान इब्राहीम की ओर सम्बन्धित कर दिया गया है, जिन आयात में तारे, चाँद और सूर्य को देखकर कहा गया है हाज़ा रब्बी मानो उनको ईश्वर मान लिया तो इससे बड़ा और अनेकेश्वर वाद क्या हो सकता है, क्या कभी चिन्तन किया है जिस ईशदूत को ईश्वर बता रहा है कि वह अनेकेश्वर वाद करने वालों में से न था फिर भी हमने यह अनेकेश्वर वाद का सम्बन्ध इब्राहीम की ओर कर दिया, क्या यही कुरआन का समझना है?

जबकि आयत में किसी का नाम नही केवल हाज़ा रब्बी है जिस प्रकार सूरत बकरा की आयत (2:260) {विइज़ क़ाला इब्राहीमा रब्बी अरानी कैफ़ा तुहयिल मौता, क़ाला अवालम तूमिनू, क़ाला बला वला किन्नी लियत मइन्ना क़लबी, क़ाला फख़ुज़ अरबआतम्मिनत्तेरि फसुर हुन्ना......}

और याद करो जब कहा इब्राहीम ने ऐ रब मेरे बता दे मुझ को क्यों कर जीवित करेगा तू मृतकों अर्थात रूहानी मृतक जो इमान से दूर है कैसे जीवित करेगा (अर्थात आस्था स्वीकार करने वाला बनाएगा) कहा तूने विश्वास नही किया (कि यह धर्म स्वीकार कर लेंगे) कहा क्यों नही (मुझे इसका पक्का विश्वास है तूने मुझे इस कार्य के लिए ही प्रेषित किया है) किन्तु इस माध्यम से चाहता हूं कि विधि जानकर शान्ति हो जाए मेरे मन को, कहा (शान्ति चाहता है और विधि भी चाहता है) तो पकड़ ले चार जानवर उड़ने वाले फिर उनको परिचित कर ले.....

आयत में चार स्थान पर 'क़ाला' आया है केवल एक स्थान पर स्पष्टीकरण है, 'इज़क़ाला इब्राहीमा' कि यह क़ाला इब्राहीम की ओर से है परन्तु शेष तीन क़ाला से पहले या बाद में नही, कि यह किसकी ओर से है परन्तु आयत के शब्द और प्रसंग बता रहा है कि इसमें दूसरे और चौथे क़ाला की ज़मीर कर्ता ईश्वर की ओर लौट रही है और तीसरे क़ाला की ज़मीर इब्राहीम की ओर, इस प्रकार आयत में कोई उलझन नही कि अर्थ समझने में कोई व्याकुलता हो, ऐसे ही आयत (6:77,78,79) में नही आनी चाहिए परन्तु अज्ञात कारणो वश मंत्रों में अंकित हाज़ा रब्बी को श्रीमान इब्राहीम के शब्द मानकर अनुवाद और व्याख्या कर दी और कथन अहादीस में भी अंकित कर दिया और विश्वास यह दिला दिया कि कुरआन को हदीस से समझो, सीधे कुरआन समझ में आने वाली वस्तु नही है, मानो हदीस को कुरआन पर न्याया-धिकारी बना दिया, जबकि कुरआन हदीस पर निर्णायक है हदीस को कुरआन से समझा जाएगा, आयत 77,78,79 को जो अनुवाद मैंने किया है वह प्रचलित अनुवादों से विपरीत किया है जो पढ़ लिया होगा, यह विविध अनुवाद क्यों किया इसका स्पष्टीकरण करना अनिवार्य है,

सूरत मरयम आयत 21से50 सूरत अंबिया धारा 51से70, सूरत अश्शोरा धारा 69से89, सूरत अलअनकबूत धारा 16से18 और सूरत अज़्ज़ुख़रूफ धारा 24से25 में स्पष्ट है, महामना इब्राहीम अपने पिता और समुदाय को ईश्वर के धर्म का प्रचार कर रहे है और मूर्तियों की पूजा से वर्जित कर रहे है जिस पर जाति रूष्ट हो जाती है और आग में डालती है व पिता घर से निष्कासित करने को कहते है,

यह धर्म का प्रचार तब ही हो सकता है जब आप स्वयं इस्लाम को जानते हों ओर इस पर स्थापित हों स्थिर हों, इसकी वास्तविकता से परिचित हों, हर प्रकार के देवताओं से रूष्ट हों, केवल

نے کبھی شرک نہیں کیا اور حکم ہوا آئندہ کے آنے والے نبیوں اور امتوں کے لئے کہ ملت ابراہیم کی پیروی کرو وہ مشرک نہیں تھے.

لیکن سورت انعام کی آیت (٧٧،٧٨،٧٩) میں درج لفظ ھٰذا ربی یعنی یہ میرا رب ہے کو حضرت ابراہیم کی طرف منسوب کردیا گیا ہے جن آیات میں تارے چاند اور سورج کو دیکھ کر کہا گیا ہے ھٰذا ربی گویا ان کو اللہ مان لیا تو اس سے بڑا اور شرک کیا ہوسکتا ہے کیا کبھی غور کیا ہے کہ جس رسول کو اللہ بتا رہا ہے کہ وہ شرک کے کرنے والوں میں سے نہ تھا. پھر بھی ہم نے یہ شرک کی نسبت ابراہیم کی طرف کردی کیا یہی قرآن فہمی ہے؟

جب کہ آیت میں کسی کا نام نہیں صرف ھٰذا ربی ہے جس طرح سورہ بقرہ کی آیت (٢:٢٦٠)[وَاِذْقَالَ اِبْرٰاهِيْمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ط قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ط قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ......]

اور یاد کرو جب کہا ابراہیم نے اے پروردگار میرے بتادے مجھ کو کیونکر زندہ کرے گا مردے یعنی روحانی مردے جو ایمان سے دور ہیں کیسے زندہ کرے گا (یعنی ایمان قبول کرنے والا بنائے گا) کہا تو نے یقین نہیں کیا (کہ یہ ایمان قبول کرلیں گے) کہا کیوں نہیں (مجھے اس کا پکا یقین ہے تو نے مجھے اس کام کے لئے ہی مبعوث فرمایا ہے) لیکن اس واسطے چاہتا ہوں کہ طریقہ جان کر تسکین ہوجائے میرے دل کو کہا (اطمینان مطلوب ہے اور طریقہ بھی درکار ہے) تو پکڑ لے چار جانور اڑنے والے پھر ان کو ہلا لے..... مانوس کرلے

آیت میں چار جگہ قال آیا ہے صرف ایک جگہ وضاحت ہے اِذْ قَالَ ابراہیم کہ یہ قال ابراہیم کی طرف سے ہے مگر باقی تین قال سے پہلے یا بعد میں نہیں کہ یہ کس کی طرف سے ہیں مگر آیت کے الفاظ اور قرینہ بتا رہا ہے کہ اس میں دوسرے اور چوتھے قال کی ضمیر فاعل اللہ کی طرف راجع ہے اور تیسرے قال کی ضمیر ابراہیم کی طرف اس طرح آیت میں کوئی الجھن نہیں کہ مطلب سمجھنے میں کوئی پریشانی ہو. ایسے ہی آیت (٦: ٧٧،٧٨،٧٩) میں نہیں آنی چاہیے. مگر نہ معلوم کن وجوہات سے آیات میں درج ھٰذا ربی کو حضرت ابراہیم کے الفاظ مان کر ترجمہ اور تفسیر کردی اور احادیث میں بھی درج کردیا اور یقین یہ دلا دیا کہ قرآن کو حدیث سے سمجھو سیدھے قرآن سمجھ میں آنے والی چیز نہیں ہے گویا حدیث کو قرآن پر قاضی بنا دیا. جب کہ قرآن حدیث پر قاضی ہے حدیث کو قرآن سے سمجھا جائے گا. آیت ٧٨،٧٩،٨٠ کا جو مفہوم میں نے کیا ہے وہ رائج الوقت ترجمہ سے مختلف کیا ہے جو پڑھ لیا ہوگا. یہ مختلف مفہوم کیوں کیا اس کی وضاحت کرنی ضروری ہے

سورت مریم آیت ٢١ تا ٥٠ سورت انبیاء آیت ٥١ تا ٧٠ سورت اشعرأ آیت ٦٩ تا ٨٩ سورت العنکبوت آیت ١٦ تا ١٨ اور سورت الزخرف آیت ٢٤ تا ٢٥ میں ظاہر ہے حضرت ابراہیم اپنے والد اور قوم کو اللہ کے دین کی تبلیغ کررہے ہیں اور بتوں وغیرہ کی عبادت سے منع کررہے ہیں جس پر قوم ناراض ہوجاتی ہے اور آگ میں ڈالتی ہے والد گھر سے اخراج کے لئے کہتے ہیں.

یہ دین کی تبلیغ تب ہی ہوسکتی ہے جب آپ خود اسلام کو جانتے ہوں اور اس پر قائم ہوں حقیقت سے آگاہ ہوں ہر طرح کے باطل دیوتاؤں سے بیزار ہوں صرف ایک اللہ کے قائل ہوں اور یہ تب ہی ہوسکتا ہے جب اللہ نے ان کو

एक ईश्वर के स्वीकार कर्ता हों और यह तब ही हो सकता है जब ईश्वर ने उनको इन वास्तविकताओं से अवगत किया हो,

नियम की बात भी यही है जब व्यक्ति को स्वयं ही कोई मार्ग ज्ञात न हो तो वह उसके बारे में दूसरों को क्या जानकारी दे सकता है यदि बताएगा तो जैसे स्वयं अन्जान है ऐसे ही दूसरे भी भटक जाएंगे, अतः जानकारी अनिवार्य है,

उदाहरण के लिए कोई सरकारी या गैर सरकारी सेवा में जब किसी व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है तो उस व्यक्ति की परीक्षा ली जाती है कि यह व्यक्ति इस सेवा के योग्य है या नही, जब वह सफल हो जाता है तब उसकी नियुक्ति होती है, ऐसे ही नही कि किसी को भी मार्ग चलते पकड़ कर नियुक्त कर दिया जाए बड़ा सोच समझकर नियुक्ति होती है तब वह व्यक्ति ठीक कार्य करता है और इस परीक्षा से पहले वह व्यक्ति सरकारी या गैर सरकारी केन्द्र में इस कार्य की ट्रेनिंग प्राप्त करता है तब ही प्रार्थना करता है और उसको सफल होने पर सेवा दे दी जाती है, ऐसे ही ईश्वर ने अपने हर ईशदूत को प्रेषित करने से पहले प्रशिक्षण दिया और फिर कहा कि जाओ और जाति को भ्रष्टता से निकालो, अतः इब्राहीम को भी ईश्वर ने पहले प्रशिक्षण दिया और चूंकि उनके काल में समुदाय तारों का उपासक था उन्होंने सूर्य, चाँद और तारों को अपना रब बना लिया था, अतः इनकी जानकारी श्री इब्राहीम के लिए अनिवार्य थी कि इन नक्षत्रों का ज्ञान हो, अतः ईश्वर ने श्रीमान इब्राहीम को इन नक्षत्रों का ज्ञान दिया, इसके अतिरिक्त जो और ज्ञान अनिवार्य था वह भी दिया जो (6:76) में अंकित है, ऐसे ही अपने नबी को बिना ज्ञान के जाति में प्रचार को नही भेजा, ज्ञान इसलिए दिया कि जाति जिस बात के बारे में प्रश्न करे उसका उत्तर तुरन्त इब्राहीम जाति को दें इस ज्ञान के कारण जब इब्राहीम ने अपनी जाति से कहा कि यह जो तुम कर रहे हो अनुचित है और (6:75) में भी इब्राहीम ने अपने पिता आजर से कहा कि तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो यह तो अनुचित है,

इसी प्रकार की बातें और मंत्रों में भी अंकित हैं, जिनका संदर्भ मैं पहले लिख आया हूं, यह शिक्षा सुनकर आजर का रूष्ट होना अनिवार्य था, क्योंकि आजर जाति में एक पुजारी का मान रखता था, और इब्राहीम का पिता भी था, इसको इस शिक्षा में अपना अपमान अनुभूत हुआ, परन्तु इब्राहीम आजर का पुत्र था इसलिए आजर ने कहा कि पुत्र तू जिनको पत्थर की मूर्ति बता रहा हे वह वास्तव में मूर्ति हैं परन्तु जिनकी यह मूर्ति है वह चलते फिरते प्रभावशाली पूज्य है, मैं तुझे दिखाऊंगा तब तू मानेगा, मानो आजर इब्राहीम को समझाना चाहता था, और उस मार्ग से रोकना चाहता था जिस पर इब्राहीम चल रहा था जिस का प्रचार कर रहे थे,

इधर हमने और धाराओं के साथ जिसमें इब्राहीम की शिक्षा देने की बात है आयत (6:76) भी पढ़ ली जिसमें है कि

(6:76) और इब्राहीम को हम इसी प्रकार पृथ्वी व आकाश के राज्य का प्रबन्ध दिखाते थे और इसलिए दिखाते थे कि वह विश्वास करने वालों में से हो जाए यह है वह वास्तविकता अर्थात ईश्वर ने उनको सब ज्ञान दे दिया था और इस ज्ञान में ही सूर्य, चाँद, सितारों का ज्ञान भी था कि यह ईश्वर की रचना है जिनको इन्सानों के लाभ के लिए बनाया है, यह ईश्वर नही है तो इस ज्ञान मिलने के बाद इन सूर्य, चाँद, तारों को देखकर कैसे कह देते कि हाज़ा रब्बी, यह मेरा ईश्वर है यह शब्द इब्राहीम के नही हैं,

ان حقائق سے آگاہ کیا ہو۔

قاعدے کی بات بھی یہی ہے جب آدمی کو خود ہی کوئی راستہ معلوم نہ ہو تو وہ اس کے بارے میں دوسروں کو کیا بتا سکتا ہے اگر بتائے گا تو جیسے خود انجان ہے ایسے دوسرے بھی بھٹک جائیں گے اس لئے علم ضروری ہے۔

مثال کے طور پر کوئی سرکاری یا غیر سرکاری ملازمت میں جب کسی آدمی کا تقرر کیا جاتا ہے تو اس آدمی کا امتحان لیا جاتا ہے کہ یہ آدمی اس عہدے کے مناسب ہے یا نہیں جب وہ کامیاب ہو جاتا ہے تب اس کا تقرر ہوتا ہے ایسے ہی نہیں کہ کسی کو بھی راہ چلتے پکڑ کر تقرر کر دیا جائے بڑا سوچ سمجھ کر تقرر ہوتا ہے تب وہ آدمی ٹھیک کام کرتا ہے اور اس امتحان سے پہلے وہ آدمی سرکاری یا غیر سرکاری مراکز میں اس کام کی تربیت حاصل کرتا ہے جب اس عہدے کا اہل ہو جاتا ہے تب ہی درخواست کرتا ہے اور اس کو کامیاب ہونے پر ملازمت دے دی جاتی ہے۔ ایسے ہی اللہ نے اپنے ہر نبی کو مبعوث کرنے سے پہلے تربیت دی اور پھر کہا کہ جاؤ اور قوم کو گمراہی سے نکالو۔ اس لئے ابراہیم کو بھی اللہ نے پہلے تربیت دی اور چونکہ ان کے زمانہ میں قوم ستارا پرست تھی انہوں نے سورج چاند ستاروں کو اپنا رب بنا لیا تھا۔ اس لئے ان کی معلومات حضرت ابراہیم کے لئے ضروری تھی کہ ان ستاروں کی حقیقت معلوم ہو اس لئے اللہ نے حضرت ابراہیم کو ان ستاروں کی معلومات دی اس کے علاوہ جو اور معلومات تھیں وہ بھی دیں جو (۶:۷۶) میں درج ہیں ایسے ہی اپنے نبی کو بلا علم کے قوم میں تبلیغ کو نہیں بھیجا علم اس لئے دیا کہ قوم جس بات کے بارے میں سوال کرے اس کا جواب فوراً ابراہیم قوم کو دے اس علم کے سبب جب حضرت نے اپنی قوم سے کہا کہ یہ جو تم کر رہے ہو غلط ہے اور (۶:۷۵) میں بھی ابراہیم نے اپنے باپ آزر سے کہا کہ تم بتوں کو معبود بناتے ہو یہ تو غلط ہے۔

اس طرح کی باتیں اور آیات میں بھی درج ہیں جن کا حوالہ میں پہلے لکھ آیا ہوں یہ نصیحت سن کر آزر کا ناراض ہونا ضروری تھا کیونکہ آزر قوم میں ایک پجاری کی حیثیت رکھتا تھا۔ اور ابراہیم کا باپ بھی تھا اس کو اس نصیحت میں اپنی بے عزتی محسوس ہوئی مگر ابراہیم آزر کا لڑکا تھا۔ اس لئے بیٹے سے محبت بھی تھی اس محبت کی بنا پر آزر نے کہا کہ بیٹا تو جن کو پتھر کی مورتی بتا رہا ہے وہ حقیقت میں مورتی نہیں۔ مگر جن کی یہ مورتی ہیں وہ چلتے پھرتے باثر معبود ہیں میں تجھے دکھاؤں گا تب تو مانے گا گویا آزر ابراہیم کو سمجھانا چاہتا تھا اور اس راہ سے روکنا چاہتا تھا جس پر ابراہیم چل رہے تھے اور جس کی تبلیغ کر رہے تھے۔

ادھر ہم نے اور آیات کے ساتھ جس میں ابراہیم کو تعلیم دینے کی بات ہے آیت (۶:۷۶) بھی پڑھ لی جس میں ہے کہ

(۶:۷۶) اور ابراہیم کو ہم اسی طرح زمین و آسمان کا نظام سلطنت دکھاتے تھے اور اس لئے دکھاتے تھے کہ یقین کرنے والوں میں سے ہو جائے۔ یہ ہے وہ حقیقت یعنی اللہ نے ان کو سب علم دے دیا تھا۔ اور اس علم میں ہی سورج چاند ستاروں کا علم بھی تھا کہ یہ اللہ کی مخلوق ہیں جن کو انسانوں کے فائدے کے لئے بنایا ہے یہ رب نہیں ہیں تو اس علم ملنے کے بعد ان سورج چاند ستاروں کو دیکھ کر کیسے کہہ دیتے کہ ھٰذا ربی یہ میرا رب ہے۔ یہ لفظ ابراہیم کے نہیں ہیں۔

अतः आजर ने सहानुभूति से जो होती है रात्रि होने पर इब्राहीम को बुलाया और कहा जब तारा प्रकट हो गया कि देखो पुत्र जिनको तुम पत्थर की मूर्ति कहते हो वह इनकी मूर्ति है, मूल यह है, 'हाजा रब्बी' यह है मेरा रब जिसकी मूर्ति बना रखी है, यह चमक भी रहा है और चल भी रहा है, परन्तु श्रीमान इब्राहीम को ज्ञान हो चुका था वह आकाश व भूगर्भ शास्त्र वेत्ता हो चुके थे कि यह रब नहीं अपितु ईश्वर की उत्पन्न की हुई रचना है जो अपने समय पर उदय और अस्त होती है, इसलिए वह उस समय तक चुप रहे जब तक वह अस्त के निकट न पहुंचे, आजर ने भी समझा होगा कि मेरा जादू चल गया, किन्तु जब वह लुप्त हो गया तो इब्राहीम ने कहा कि देखो यह लुप्त हो गया और लुप्त होने वाला ईश्वर नहीं हो सकता, इसके बाद फिर आजर ने चाँद के उदय होने पर कहा देखो पुत्र यह मेरा रब है यह चमक रहा है किन्तु उसको भी अस्त होना था और वह भी छुपने लगा तो इब्राहीम ने कहा देखो मेरी जाति यह भी लुप्त हो गया और यदि मेरा ईश्वर मुझे ज्ञान न देता तो मैं भी तुम्हारी भांति पथ भ्रष्ट और अनेकेश्वर वादी हो जाता, अन्ततः मुझे ज्ञान आ चुका है, अतः यह रब नहीं यह तो ईश्वर की उत्पन्न की हुई इन्सानों को लाभ देने वाली रचना है, इसके बाद जब आजर ने सूर्य को देखा वह जगमगा रहा था तो आजर ने कहा देखो पुत्र यह है मेरा रब, यह है सबसे बड़ा रब, अब तो तुझे मानना पड़ेगा,

परन्तु जब वह लुप्त होने लगा, अतः उसको लुप्त होना ही था तो इब्राहीम ने कहा ऐ मेरी जाति जिनको तुम ईश्वर का साझी बना रहे हो मैं उनसे रूष्ट हूं और मैंने तो एकाग्रचित होकर अपना मुख उस शक्ति की ओर कर लिया है जिसने पूरे संसार को उत्पन्न किया है और मैं अनेकेश्वर वादियों में से नहीं हूं, इसके बाद समुदाय उनसे झगड़ने लगा डराने लगा कि तुम ने इन देवताओं का इनकार किया है अब तुम को यह समाप्त कर देंगे, मगर तुरन्त इब्राहीम ने कहा जिनसे तुम मुझे डरा रहे हो मैं उनसे डरने वाला नहीं हूं मुझे तो ईश्वर ने सीधे मार्ग पर चला दिया है और वह चाहता है कि मैं उस पर चलूं निःसन्देह मैं उस पर ही चलूंगा, मुझे ईश्वर के अतिरिक्त और किसी का भय नहीं है और भला मैं ईश्वर की इन रचनाओं से क्यों डरूं जिनके अधिकार में कुछ नहीं, ईश्वर के अधिकार में सब कुछ है, परन्तु तुम नहीं डरते ईश्वर से, विचार करो और डरो,

किन्तु वह बराबर मूर्ति पूजा पर जमे रहे और इब्राहीम अपना काम करते रहे और इसके बाद आयत 84 में ईश्वर कहता है कि यह था हमारा तर्क व उक्ती जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति के सम्मुख प्रदान की थी, हम जिसके चाहते हैं तर्क के साथ पद उच्च करते हैं (6:162)

यह है वह वास्तविकता जो लिखी गई अर्थात हाजा रब्बी श्रीमान इब्राहीम का कथन नहीं अपितु आजर का कथन है श्री इब्राहीम ने आजर के कथन का हर स्थान पर खण्डन किया है तर्क के साथ अतः अधिक और क्या लिखा जा सकता है विचार कीजिए और सत्य को स्वीकार कीजिए

और हमने उनको (इब्राहीम को) इस्हाक़ और याकूब प्रदान किए और सबको पथ प्रदर्शन दी और इससे पहले नूह को दिखाई थी और उनके वंश से हमने दाऊद, सुलेमान, अय्यूब, यूसुफ, मूसा, हारून को दिखाइ थी इसी प्रकार हम सदाचारियों को उनके शुभ कर्मों का फल देते हैं (84) {14:39, 11:71, 19:49}

और ज़करिया, याहया, ईसा और इल्यास को (सीधा मार्ग दिखाया वह सब सदाचारी थे) (85)

اس لئے آزر نے بطور ہمدردی جو ہوتی ہے رات ہونے پر ابراہیم کو بلا کر کہا جب تارا نمودار ہوگیا کہ دیکھو بیٹا جن کو تم پتھر کے بت کہتے ہو وہ ان کے بت ہیں اصل یہ ہیں۔ ھٰذا ربی یہ ہے میرا رب جس کی مورتی بنا کر رکھی ہے یہ چمک بھی رہا ہے اور چل بھی رہا ہے مگر حضرت ابراہیم کو علم ہو چکا تھا وہ ماہر فلکیات وزمین ہو چکے تھے کہ یہ رب نہیں بلکہ اللہ کی پیدا کی ہوئی ایک مخلوق ہے جو اپنے وقت پر طلوع اور غروب ہوتی ہے اس لئے وہ اس وقت تک خاموش رہے جب تک وہ غروب کے قریب پہنچے آزر نے بھی سمجھا ہوگا کہ میرا جادو چل گیا لیکن جب وہ غائب ہوگیا تو ابراہیم نے کہا کہ دیکھو یہ غائب ہوگیا اور غائب ہونے والا رب نہیں ہو سکتا اس کے بعد پھر آزر نے چاند کے طلوع ہونے پر کہا دیکھو بیٹا یہ میرا رب ہے یہ چمک رہا ہے لیکن اس کو بھی غروب ہونا تھا اور وہ بھی چھپنے لگا تو ابراہیم نے کہا کہ دیکھو میری قوم یہ بھی غائب ہوگیا اور اگر میرا رب مجھے علم نہ دیتا تو میں بھی تمہاری طرح گمراہ شرک ہو جاتا۔ چونکہ مجھے علم آچکا ہے اس لئے یہ رب نہیں یہ تو اللہ کی پیدا کی ہوئی انسانوں کو فائدہ دینے والی مخلوق ہے اس کے بعد جب آزر نے سورج کو دیکھا وہ جگمگا رہا تھا تو آزر نے کہا دیکھو بیٹا یہ ہے میرا رب یہ ہے سب سے بڑا رب اب تو تجھے ماننا پڑے گا۔

مگر جب وہ بھی غائب ہونے لگا چونکہ اس کو غائب ہونا ہی تھا تو ابراہیم نے کہا اے میری قوم جس کو تم اللہ کا شریک بنا رہے ہو میں ان سے بیزار ہوں اور میں نے تو یکسو ہو کر اپنا رُخ اس ذات کی طرف کر لیا ہے جس نے پوری کائنات کو پیدا کیا ہے اور میں مشرکوں میں سے نہیں ہوں۔ اس کے بعد قوم ان سے جھگڑنے لگی ڈرانے لگی کہ تم نے ان معبودوں کا انکار کیا ہے اب تم کو یہ ختم کر دیں گے۔ مگر فوراً ابراہیم نے کہا جن سے تم مجھے ڈرا رہے ہو میں ان سے ڈرنے والا نہیں ہوں مجھے تو اللہ نے سیدھے رستے پر چلا دیا ہے اور وہ چاہتا ہے کہ میں اس پر چلوں یقیناً میں اس پر ہی چلوں گا مجھے اللہ کے علاوہ اور کسی کا خوف نہیں ہے اور بھلا میں اللہ کی ان مخلوق سے کیوں ڈروں جن کے اختیار میں کچھ نہیں اللہ کے اختیار میں سب کچھ ہے مگر تم نہیں ڈرتے اللہ سے غور کرو اور ڈرو۔

لیکن وہ برابر بت پرستی پر جمے رہے اور ابراہیم اپنا کام کرتے رہے اور اس کے بعد آیت ۸۳ میں اللہ فرما رہا ہے کہ یہ تھی ہماری دلیل جو ہم نے ابراہیم کو ان کی قوم کے مقابلہ میں عطا کی تھی ہم جس کو چاہتے ہیں دلیل کے ساتھ درجے بلند کرتے ہیں [۶:۱۶۲]

یہ ہے حقیقت جو لکھی گئی یعنی ھٰذا ربی حضرت ابراہم کا قول نہیں بلکہ آزر کا قول ہے حضرت ابراہیم نے آزر کے قول کی ہر جگہ تردید کی ہے دلیل کے ساتھ اس سے زیادہ اور کیا لکھا جا سکتا ہے غور کیجئے اور حقیقت کو قبول کیجئے۔

اور ہم نے ان کو (ابراہیم کو) اسحاق اور یعقوب بخشے اور سب کو ہدایت دی اور اس سے پہلے نوح کو دکھائی تھی اُن کی نسل سے ہم نے داؤد سلیمانؑ ایوبؑ یوسفؑ موسیٰ ہارون کو دکھائی تھی اسی طرح ہم نیکوکاروں کو ان کی نیکی کا بدلہ دیتے ہیں (۸۴)[۱۴:۳۹،۱۱:۷۱،۱۹:۴۹]

اور زکریا یحییٰ عیسیٰ اور الیاس کو راہ یاب کیا وہ سب نیک تھے (۸۵)

नोट- आयत 85 में महामना इस्हाक और याकूब को इब्राहीम का पुत्र बताया गया है, यह कहकर कि हमने इब्राहीम को इस्हाक और याकूब दिए, मानो पुत्र, परन्तु हमारे यहां श्री याकूब को इब्राहीम को पोता (पौत्र) मानते हुए इस्हाक का पुत्र लिखा गया है, अपनी बात को सच सिद्ध करने के लिए यह कहा जा सकता है कि पोता भी पुत्र होता है अवश्य होता है परन्तु ईश्वर ने पोता नही कहा, पोते की अरबी (हफ़ीद) है और दादा की (जद्द) है तब भी मंत्रों को बार-बार दोहरा कर देखा जाए वास्तविकता क्या है?

(2:133) क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब याकूब के सिर पर मृत्यु आ खड़ी हुई उस समय उन्होंने अपने पुत्रों से कहा कि मेरे बाद किसकी पूजा करोगे, कहने लगे हम आपके ईश्वर की और आपके पिता इब्राहीम के ईश्वर की और (आप के बड़े भाई) इस्माईल और इस्हाक के पूज्य की पूजा करेंगे और हम उसके आज्ञाकारी हैं,

(19:49) फिर जब किनारे हुआ उनसे और जिनको वह पूजते थे ईश्वर के अतिरिक्त, प्रदान किया हमने उसको इस्हाक और याकूब और दोनों को नबी बनाया,

(29:27) और दिया हमने उसको इस्हाक और याकूब और रखी उसकी सन्तान में ईशदौत्य और पुस्तक और दिया हमने उसको इसका फल दुनिया में और वह परलोक में सदाचारियों में से है,

(21:72) और प्रदान किया हमने उसको इस्हाक और याकूब दिया पुरस्कार (अधिक नाफ़्ला) में और सबको किया सदाचारी,

(17:29) और रात्रि के कुछ भाग में तहज्जुद पढ़ा करो यह तुम्हारे लिए अधिक है (मज़ीद नाफ़्ला) है और आशा रखो कि तुम्हारा रब तुम को ऐसे स्थान पर खड़ा करेगा जहां से तुम्हारी सब प्रशंसा करेंगे,

(11:71,72) और उसकी पत्नी खड़ी थी तब वह हंस पड़ी अर्थात इस शुभ सूचना पर प्रसन्न हो गई फिर जो शुभ सूचना दी उसको इस्हाक और उस इस्हाक के बाद पीछे याकूब की, बोली ऐ विकार क्या मैं जनूंगी और मैं बुढ़िया हूं और मेरा पति बूढ़ा है यह तो एक विचित्र बात है, धारा (11:71,72) में स्पष्ट है कि महामना इब्राहीम की पत्नी को फ़रिश्तों ने शुभ सूचना दी इस्हाक की और उसके बाद याकूब की यह नही कहा कि हम तुम को इस्हाक पुत्र की शुभ चूना देते हैं और इस्हाक के लिए शुभ सूचना है याकूब की जो तुम्हारा पोत्र हफ़ीद होगा, परन्तु यह सूचना दोनों पुत्रों की इब्राहीम की पत्नी के लिए है, ज़मीर हा स्त्रिलिंग से अर्थात इस्हाक के बाद याकूब की (19:29) में भी इब्राहीम के लिए है कि हमने इस्हाक और याकूब दिए यहां भी यह नही है कि हमने दिया आपको इस्हाक और इस्हाक को याकूब, यही स्थिति (6:85) की है,

(19:29) में भी यही शब्द है वहां भी पोत्र हफ़ीद का उल्लेख नही (21:27) में इस्हाक के बाद याकूब को पुरस्कार (मज़ीद नाफ़्ला) बताया है, इस नाफ़्ला का समर्थन (17:79) में शब्द नाफ़्ला से हो रहा है जो ऊपर लिखी है कि तुम्हारे लिए नाफ़्ला है (मज़ीद अधिक) आयत (2:133) में स्पष्ट लिखा है कि तेरे पिता इब्राहीम के रब की पूजा करेंगे, वहां शब्द आबाइका है और (6:85, 11:71,72, 17:29, 19:29, 21:72, 29:27) को पढ़ने के बाद यही सिद्ध हो रहा है कि श्री याकूब महामना इब्राहीम के पुत्र हैं पौत्र नही, परन्तु हमारे यहां पर विशेष और साधारण पौता ही मान रहा है, जबकि पोता स्वीकार करना अनुचित है पोता स्वीकार करने का यह अर्थ होगा कि हम इतनी स्पष्ट और अचल मंत्रों (आयात) जो ऊपर लिखी गई हैं से इनकार कर रहे हैं और एक अनुरूप आयत (2:133) से इन अचल आयात को झुटला

نوٹ: ۔آیت ۸۵ میں حضرت اسحاق اور یعقوبؑ کو ابراہیم کا بیٹا بتایا گیا ہے یہ کہہ کر کہ ہم نے ابراہیم کو اسحاق اور یعقوب دیئے گویا بیٹے۔ مگر ہمارے یہاں حضرت یعقوب کو ابراہیم کا پوتا مانتے ہوئے اسحاق کا بیٹا لکھا گیا ہے اپنی بات کو سچ ثابت کرنے کے لئے یہ کہا جا سکتا ہے کہ پوتا بھی بیٹا ہوتا ہے ضرور ہوتا ہے مگر اللہ نے پوتا نہیں کہا پوتے کی عربی (حفید) ہے اور دادا کی (جد) ہے تب بھی تصریف آیات کے ذریعہ دیکھا جائے حقیقت کیا ہے۔

(۱۳۳:۲) کیا تم اس وقت موجود تھے جب یعقوب کے سر پر موت آ کھڑی ہوئی اس وقت انہوں نے اپنے بیٹوں سے کہا کہ میرے بعد کس کی عبادت کرو گے کہنے لگے ہم آپ کے معبود کی اور آپ کے باپ ابراہیم کے معبود کی اور آپ کے بڑے بھائی اسماعیل اور اسحاق کے معبود کی عبادت کریں گے اور ہم اس کے فرمانبردار ہیں۔

(۴۹:۱۹) پھر جب کنارے ہوا ان سے اور جن کو وہ پوجتے تھے اللہ کے سوا بخشا ہم نے اس کو اسحاق اور یعقوب اور دونوں کو نبی بنایا۔

(۲۷:۲۹) اور دیا ہم نے اس کو اسحاق اور یعقوب اور رکھی اس کی اولاد میں نبوت اور کتاب اور دیا ہم نے اس کو اس کا اجر دنیا میں اور وہ آخرت میں نیکوں میں سے ہے۔

(۷۲:۲۱) اور بخشا ہم نے اس کو اسحاق اور یعقوب دیا انعام (مزید نافلہ) میں اور سب کو کیا نیک بخت۔

(۲۹:۱۷) اور رات کے کچھ حصہ میں تہجد پڑھا کرو یہ تمہارے لئے زیادہ ہے (مزید نافلہ) ہے اور امید رکھو کہ تمہارا رب تم کو ایسی جگہ کھڑا کرے گا جہاں سے تمہاری سب تعریف کریں گے۔

(۷۱،۷۲:۱۱) اور اس کی عورت کھڑی تھی تب وہ ہنس پڑی یعنی اس خوشخبری پر خوش ہو گئی پھر جو خوشخبری دی اس کو اسحاق کی اور اسحاق کے بعد پیچھے یعقوب کی۔ بولی اے خرابی کیا میں جنوں گی اور میں بڑھیا ہوں اور میرا خاوند بوڑھا ہے یہ تو ایک عجیب چیز ہے۔

آیت (۷۱،۷۲:۱۱) میں صاف ہے کہ حضرت ابراہیم کی بیوی کو ضمیر ھا سے فرشتوں نے بشارت دی اسحاق کی اور اس کے بعد یعقوب کی یہ نہیں کہا کہ ہم تم کو اسحاق بیٹے کی بشارت دیتے ہیں اور اسحاق کے لئے بشارت ہے یعقوب کی جو تمہارا حفید ہوگا۔ مگر یہ بشارت دونوں لڑکوں کی ابراہیم کی بیوی کے لئے ہے ضمیر ھا مونث سے یعنی اسحاق کے بعد یعقوب کی (۲۹:۱۹) میں بھی ابراہیم کے لئے ہے کہ ہم نے اسحاق اور یعقوب دیے یہاں بھی یہ نہیں ہے کہ ہم نے دیا آپ کو اسحاق اور اسحاق کو یعقوب یہی حال (۸۵:۶) کا ہے (۲۷:۲۹) میں بھی یہی الفاظ ہیں وہاں بھی پوتے حفید کا ذکر نہیں (۲۷:۲۱) میں اسحاق کے بعد یعقوب کو انعام (مزید نافلہ) بتایا ہے۔ اس نافلہ کی تاکید (۷۹:۱۷) میں نافلہ لفظ سے ہو رہی ہے جو اوپر لکھی ہے کہ تمہارے رب کی عبادت کریں گے وہاں لفظ آبائک ہے اور (۸۵:۶، ۷۱،۷۲:۱۱، ۲۹:۱۷، ۲۹:۱۹، ۷۲:۲۱، ۲۷:۲۹) کو پڑھنے کے بعد یہی ثابت ہو رہا ہے کہ حضرت یعقوب ابراہیم کے بیٹے ہیں پوتے نہیں لیکن ہمارے یہاں پر خاص و عام پوتا ہی تسلیم کر رہا ہے۔ جب کہ پوتا تسلیم کرنا غلط ہے۔ پوتا تسلیم کرنے کا یہ مطلب ہوگا کہ ہم اتنی صاف اور محکم آیات جو اوپر لکھی گئی ہیں سے انکار کر رہے ہیں اور ایک متشابہ آیت (۱۳۳:۲) سے ان

रहे हैं यद्यपि (2:133) भी अनुरूप (मुताशावाह) नहीं हैं यदि देखा जाए फिर भी हम को चिन्तन तो करना चाहिए क्या इन अचल (मुहकम) आयात का इनकार कुरआन का इनकार नहीं हैं? इन अचल मंत्रों का इनकार करके हम को कुरआन का विरोधी नहीं होना चाहिए

यह पोते वाली बात कहां से और क्यों आ गई? इसका मुख्य कारण यह है कि हम ने बनी इसराईल और ईसाइयो से कथनो को कहीं कहीं आंखे बन्द करके स्वीकार कर लिया और उनसे ही यह बातें प्रचलित हो गई और आज सत्य बन कर श्रद्धा का भाग बन गई एक बार फिर विचार कर लें कि याकूब आ इब्राहीम अ० के पुत्र हैं न कि पौते इसरा लियात से आने की बात मैं आरम्भ में लिख आया हूं इब्राहीम से सम्बधित एक मिथ्या कथन के विषय में और लिख दिया जाए जिससे इब्राहीम की कथा की वस्तु स्थिति पूर्ण हो जाए

महामना इब्राहीम पर कथनो में एक आरोप झूट बोलने का लगाया हैं जो बुखारी पुस्तक में मुहम्मद स० से सम्बधित करके अंकित किया गया हैं जिसका मानना कथनानुसार ज्ञानियों के अनिवार्य हैं क्योंकि कथनों को कुरआन की व्याख्या और गुप्त ईश्वरीय आदेश स्वीकार कराया जाता हैं और इतना बल दिया जाता हैं कि यदि किसी ने किसी कथन के विषय में भूल से भी यह कह दिया कि इस कथन में कुछ शंका प्रतीत होती हैं तो उसका मंगल नहीं उस पर क्या-क्या आरोप लगाये जाते हैं कि उसका जीवन भार हो जाता हैं मानो वह हदीस कथन का विरोधी होकर इस्लाम से निस्कासित हो गया, किन्तु आरोप लगाने वालों ने यह विचार किया कि जिस कथन पर कण मात्र शंका से करने वाले को इस्लाम से निस्कासित कर रहे हो हदीस का विरोधी मानकर क्या इस कथन को सत्य मानकर कुरआन का तो विरोध नहीं हो रहा? इस बात पर भी विचार होना अनिवार्य हैं, परन्तु नहीं करते, मैंने ऊपर भी लिखा हैं कि कुरआन में यह अंकित हैं और कथन में यह अंकित हैं और बताया हैं कि सत्य क्या हैं अब में इब्राहीम अ० के झूट के विषय में लिख रहा हूं कि क्या वास्तव में इब्राहीम अ० ने झूट बोला था? यदि बोला था तो ईश्वर का कथन झूट सिद्ध हो रहा हैं (ईश्वर की शरण) अवलोकन हो, बुखारी प्रति दो किताबुल अम्बिया हदीस न (584) पेज (264)

श्री अबुहुरैराह र० से मरवी हैं कि रसूल अल्लाह ने फरमाया हजरत इब्राहीम ने कभी झूट नहीं बोला सिवाए तीन अवसरों पर (स्पष्टतः झूट ज्ञात होता हैं) जिस में से दो ईश्वर के सम्बन्ध में, (1)

(1) जबकि आप ने कहा मैं रोगी हूं (2) अपितु यह इनके बड़े ने किया होगा (3) तीसरे जब आप श्रीमती साराह को लिए देश छोड़कर जा रहें थे...... तो उनको आपने अपनी बहन बना दिया.........

पूरी हदीस अंकित नहीं की आप बुखारी में देख लें इस कथन में तीन झूट के लिए मुहम्मद स० ने कहा जो सत्य हैं क्योंकि मुहम्मद स० जो कहते थे वह ईश्वर के आदेश से कहते थे अतः इब्राहीम झूटे सिद्ध हो रहे हैं (ईश्वर की शरण)

प्रश्न उत्पन्न होता हैं फिर ईश्वर ने ऐसे झूटे व्यक्ति को ईशदूत बनाया? ज्ञात नहीं उन्होने और कहां-कहां झूट बोला होगा, इससे तो पूरा प्रसंग ही संदिग्ध हो जाता हैं परन्तु इस कथन के सम्मुख एक और वस्तु भी हैं जिसको देखना अनिवार्य हैं वह यह कि (19:41) और पुस्तक में इब्राहीम को याद करो निःसंदेह वह अत्यन्त सच्चे ईशदूत थे,

(4:87) "वमन असदकू मिनल्लाही हदीसा", और ईश्वर से बढ़कर बात

محکم آیات کو جھٹلا رہے ہیں حالانکہ (۱۳۳:۲) بھی متشابہ نہیں ہے اگر دیکھا جائے پھر بھی ہم کو غور کرنا چاہیے کیا ان محکم آیات کا انکار قرآن کا انکار نہیں ہے؟ ان محکم آیات کا انکار کر کے ہم کو منکر قرآن نہیں ہونا چاہیے۔

یہ پوتے والی بات کہاں سے اور کیوں آ گئی؟ اس کی خاص وجہ یہ ہے کہ ہم نے بنی اسرائیل اور عیسائیوں کی روایتوں کو کہیں کہیں آنکھ بند کر کے تسلیم کر لیا اور ان سے ہی یہ باتیں رواج پا گئیں اور آج حقیقت بن کر ایمان کا حصہ بن گئیں ایک بار پھر غور کریں کہ یعقوب ابراہیم کے بیٹے ہیں نہ کہ پوتے۔ اسرائیلیات سے آنے کی بات میں شروع میں لکھ آیا ہوں۔ ابراہیم سے متعلق ایک غلط روایت کے بارے میں اور لکھ دیا جائے جس سے یہ واقعہ ابراہیم پورا ہو جائے۔

حضرت ابراہیم پر روایات میں ایک الزام جھوٹ بولنے کا لگایا ہے جو بخاری میں محمدؐ سے منسوب کر کے درج کیا گیا ہے جس کا ماننا بقول علماء کے ضروری ہے کیونکہ روایات کو قرآن کی تفسیر اور خفی وحی تسلیم کرایا جاتا ہے اور اتنا زور دیا جاتا ہے کہ اگر کسی نے کسی روایت کے بارے میں بھول سے بھی یہ کہہ دیا کہ اس روایت میں کچھ شبہ معلوم ہوتا ہے تو اس کی خیر نہیں اس پر کیا کیا الزام لگائے جاتے ہیں کہ اس کا جینا بھاری ہو جاتا ہے۔ گویا وہ منکر روایت ہو کر اسلام سے خارج ہو گیا۔ لیکن الزام لگانے والوں نے یہ غور نہیں کیا کہ جس روایت پر ذرا سا شبہ کرنے والے کو اسلام سے خارج کر رہے ہو منکر حدیث مان کر کیا اس حدیث کو درست مان کر قرآن کا تو انکار نہیں ہو رہا؟ اس بات پر بھی غور ہونا ضروری ہے۔ مگر نہیں کرتے۔ میں نے اوپر بھی لکھا ہے کہ قرآن میں یہ درج ہے اور حدیث میں یہ درج ہے۔ اور بتایا ہے کہ درست کیا ہے اب میں ابراہیمؑ کے جھوٹ کے بارے میں لکھ رہا ہوں کہ کیا حقیقت میں ابراہیمؑ نے جھوٹ بولا تھا؟ اگر بولا تھا تو اللہ کا قول جھوٹ ثابت ہو رہا ہے (نعوذ)

ملاحظہ ہو۔ بخاری جلد دوئم کتاب الانبیا حدیث ۵۸۴، ص۔ ۲۶۴

حضرت ابوہریرہؓ سے مروی ہے کہ رسول اللہ نے فرمایا حضرت ابراہیمؑ نے کبھی جھوٹ نہیں بولا سوائے تین مواقع پر (بظاہر کذب معلوم ہوتے ہیں) جن میں دو اللہ کے متعلق

(۱) جب کہ آپ نے فرمایا میں بیمار ہوں

(۲) بلکہ یہ ان کے بڑے نے کیا ہوگا

(۳) تیسرے جب آپ حضرت سارہ کو لئے ملک چھوڑ کر جا رہے تھے... تو ان کو آپ نے اپنی بہن بتا دیا......

پوری حدیث درج نہیں کی آپ بخاری میں دیکھ لیں۔ اس روایت میں تین جھوٹ کے لئے محمدؐ نے فرمایا جو سچ ہے کیونکہ محمدؐ جو کہتے تھے وہ وحی سے کہتے تھے اس لئے ابراہیمؑ جھوٹے ثابت ہو رہے ہیں (نعوذ)

سوال پیدا ہوتا ہے پھر اللہ نے ایسے جھوٹے آدمی کو نبی بنا دیا؟ نہ معلوم انہوں نے اور کہاں کہاں جھوٹ بولا ہوگا اس سے تو پورا معاملہ ہی مشکوک ہو جاتا ہے لیکن اس روایت کے مقابلہ میں ایک اور چیز بھی ہے جس کو دیکھنا ضروری ہے وہ یہ کہ (۴۱:۱۹) اور کتاب میں ابراہیمؑ کو یاد کرو بے شک وہ نہایت سچے رسول تھے

(۸۷:۴) [وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا] اور اللہ سے بڑھ کر بات کا سچا

का सच्चा कौन होगा.

आयत (19:41) में ईश्वर इब्राहीम को सच्चा बता रहा है और साथ में आयत (4:87) में यह अंकित है कि ईश्वर से बढ़कर बात का सच्चा कौन होगा, परन्तु हदीस में देख लिया जिस में इब्राहीम को झूठा लिखा गया है यदि कथन को सच्चा मानते हैं जैसा कि विश्वास है ते कुरआन का इन्कार करना पड़ेगा जबकि कुरआन सत्य है और ईश्वर का कथन है, सच्चे नबी ने ईश्वर से लेकर इन्सानों को दिया है अतः कुरआन का इन्कार करना सत्य का इन्कार है और सत्य का इन्कार करने वाला आस्तिक नही है, रहा प्रश्न कथन का तो यह एक ऐसे कथा वाचक की साक्ष्य है जो निरपराध नही है, अतः कुरआन के सम्मुख मिथ्या रवायत को स्वीकार नही किया जाएगा, तो सिद्ध हुआ श्रीमान इब्राहीम सच्चे है ओर रवायत संदिग्ध है, ऐसी हदीस का इन्कार करने वाला हदीस का विरोधी नही है अपितु ऐसा मिथ्या रवायत को सत्य मानने वाला कुरआन का विरोधी है, ईश्वर हम को सत्य ओर मिथ्या में अन्तर करने की शक्ति दे

کون ہے؟

آیت ۱۹:۴۱ میں اللہ ابراہیم کو سچا بتا رہا ہے اور ساتھ میں آیت ۴:۸۷ میں یہ درج ہے کہ اللہ سے بڑھ کر بات کا سچا کون ہوگا. مگر حدیث میں دیکھ لیا جس میں ابراہیم کو جھوٹا لکھا گیا ہے اگر روایت کو سچا مانتے ہیں جیسا کہ عقیدہ ہے تو قرآن کا انکار کرنا پڑے گا. جب کہ قرآن حق ہے اور اللہ کا کلام ہے. سچے نبی نے اللہ سے لے کر انسانوں کو دیا ہے اس لئے قرآن کا انکار کرنا حق کا انکار ہے اور حق کا انکار کرنے والا مومن نہیں ہے. رہا سوال روایت کا تو یہ ایک غیر معصوم آدمی کی شہادت ہے اس لئے قرآن کے مقابلہ میں غلط روایت کو تسلیم نہیں کیا جائے گا. تو ثابت ہوا حضرت ابراہیم سچے ہیں اور روایت مشکوک ہے ایسی روایت کا انکار کرنے والا منکر حدیث نہیں ہے. بلکہ ایسی غلط روایت کو سچ ماننے والا منکر قرآن ہے اللہ ہم کو صحیح اور غلط میں فرق کرنے کی توفیق دے.

और इस्माईल और अलयसा और यूनुस और लूत को भी और हर एक को सम्पूर्ण संसार वालो पर हम ने श्रेष्ठ दी थी.(86)

اور اسماعیل اور الیسع اور یونس اور لوط کو بھی اور ہر ایک کو تمام جہان والوں پر ہم نے فضیلت دی (۸۶)

और उनके पूर्वज और उनके भाई बन्दो और सन्तान में से बहुतो को श्रेष्ठ प्रदान की थी और सीधा मार्ग उन पर खोल दिया था, (87)

اور ان کے اباؤ اجداد اور ان کے بھائی بندوں اور اولاد میں سے بہتوں کو برگزیدگی بخشی تھی اور سیدھی راہ ان پر کھول دی تھی (۸۷)

यह ईश्वर का पथप्रदर्शन है अपने अपने भक्तों से वह जिसको चाहता है इस पथप्रदर्शन के मार्ग पर चला देता है अर्थात बन्दा स्वंय प्रयास करता है वह भी अनेकेश्वर वाद करते तो जो कर्म वह करते थे नष्ट हो जातें, (88)

یہ اللہ کی ہدایت ہے اپنے بندوں سے وہ جس کو چاہتا ہے اس ہدایت پر چلا دیتا ہے یعنی بندہ خود کوشش کرتا ہے اور اگر وہ بھی شرک کرتے تو جو عمل وہ کرتے تھے ضائع ہو جاتے (۸۸)

वह लोग थे जिन्हें हमने पुस्तक जो युक्ति से पुर है और (अनेकेश्वरवादी अरब) इससे अर्थात मुहम्मद की पुस्तक और ईशदौत्य का इनकार करें तो (कोई चिन्ता नहीं) हमने उन्हें मानने के लिए ऐसे व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया है जो इनका इनकार करने वाला नही है, (89)

وہ وہ لوگ تھے جنہیں ہم نے کتاب جو حکمت سے پُر ہے اور نبوت عطا کی تھی. اگر یہ لوگ (مشرکین عرب) اس سے یعنی محمدؐ کی کتاب اور نبوت کا انکار کریں تو (کوئی پروانہیں) ہم نے انہیں ماننے کے لئے ایسے لوگوں کو مقرر کر دیا ہے جو ان کا انکار کرنے والے نہیں ہیں (۸۹)

वह वह लोग थे जिनको ईश्वर के तरीके का अनुकरण करो कह दो कि मैं तुमसे इस कुरआन का बदला नही मांगता यह तो संसार के लोगो के लिए केवल एक शिक्षा है, (90) {10:72, 11:29, 51, 26:145-164-180, 34:47, 38:85}

وہ وہ لوگ تھے جن کو اللہ نے ہدایت دی تو تم انہیں کے طریقے کی پیروی کرو. کہہ دو کہ میں تم سے اس قرآن کا صلہ نہیں مانگتا یہ تو جہان کے لوگوں کے لئے محض نصیحت ہے (۹۰)[۱۰:۷۲، ۱۱:۲۹، ۵۱، ۲۶:۱۴۵، ۱۶۴، ۱۸۰، ۳۴:۴۷، ۳۸:۸۵]

और लोगो ने ईश्वर को नही समझा जैसा कि उसे समझना अनिवार्य है अर्थात ईश्वर के नियम को जब उन्होंने कहा कि ईश्वर ने किसी व्यक्ति पर कोई भी वस्तु अवतरित नही की अर्थात कोई पुस्तक तो कहो किसने उतारी थी वह पुस्तक जिसे मूसा लाया था, जिस की स्थिति यह थी कि लोगो के लिए प्रकाश और मार्ग दर्शन है (ए यहूदी ज्ञानियों!) तुम उस पुस्तक को पन्ना पन्ना करते हो उनमें से कतिपय पन्नों के लेखों को प्रकट करते हो अधिकांश को लुप्त करते हो और तुमको वह बाते सिखाई जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज कह दो, (इस पुस्तक को) ईश्वर ही ने प्रेषित किया है, फिर उनको छोड़ दो कि अपनी बकवास में खेलते रहें (91)

اور لوگوں نے اللہ کو نہیں سمجھا جیسا کہ اسے سمجھنا ضروری ہے یعنی اللہ کے قانون کو جب انہوں نے کہا کہ اللہ نے کسی انسان پر کوئی بھی چیز نازل نہیں کی یعنی کوئی کتاب تو کہو کس نے اتاری تھی وہ کتاب جسے موسیٰ لایا تھا. جس کا حال یہ ہے کہ لوگوں کے لئے روشنی اور رہنمائی ہے (اے علما یہود) تم اس کتاب کو ورق ورق کرتے ہو. ان میں بعض اوراق کے مضامین کو ظاہر کرتے ہو اکثر کو چھپا دیتے ہو اور تم کو وہ باتیں سکھائی گئیں جن کو نہ تم جانتے تھے اور نہ تمہارے باپ دادا. کہہ دو (اس کتاب کو) اللہ ہی نے نازل کیا ہے پھر ان کو چھوڑ دو کہ اپنی بکواس میں کھیلتے رہیں (۹۱)

और यह पुस्तक है हमने उतारी अधिकता वाली है प्रमाणित करने वाली उस पुस्तक को जो रक्षा के मध्य है ताकि तुम मक्काह वालों को और उन लोगों को जो मक्काह के चारों ओर कही भी रहते हो सावधान करो और वह लोग जो परलोक पर विश्वास लाते हैं और वहीं अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं.(92)
{23:1से9,70:22से34,11:87,9:6}

اور یہ کتاب ہے ہم نے اتاری برکت والی ہے تصدیق کرنے والی ہے اس کتاب کی جو حفاظت کے درمیان ہے تا کہ تم اہل مکہ کو اور ان لوگوں کو جو مکہ کے گرد اگر دکہیں بھی رہتے ہوں متنبہ کرو اور وہ لوگ جو آخرت پر یقین کرتے ہیں وہی اس کتاب پر ایمان لاتے ہیں اور وہی اپنی صلوٰۃ کی حفاظت کرتے ہیں (۹۲)[۲۳:۱تا۹،۷۰:۲۲تا۳۴،۱۱:۸۷،۹:۶]

और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन हो सकता है जो ईश्वर पर झूट बोल कर आरोप लगाए या कहे कि मुझ पर वही अवतरित हुई यद्यपि उस पर कुछ भी वही न आई हो या जो व्यक्ति कहे मैं भी ऐसा कथन बना सकता हूं जैसा ईश्वर ने अवतरित किया है काश तुम उन अत्याचारीयों को उस दशा में देखों जब वह मृत्यु के अन्तिम क्षणों की कठोरता में गृस्त हों और फरिश्तें हाथ बढ़ा कर कह रहे हो लाओ निकालो अपनी जाने आज तुम्हें अपमान का दण्ड दिया जाएगा इस लिए कि तुम ईश्वर पर झूट आरोप रखते थे और और घमण्ड में आकर उसकी आयतों का इनकार करते थे. (93)
{3:24, 17:88 6:93, 8:31, 2:23}

اور اس سے بڑھ کر ظالم کون ہو سکتا ہے جو اللہ پر جھوٹ بول کر بہتان لگائے یا کہے کہ مجھ پر وحی نازل ہوئی حالانکہ اس پر کچھ بھی وحی نہ آئی ہو. یا جو شخص کہے میں بھی ایسا کلام بنا سکتا ہوں جیسا اللہ نے نازل کیا ہے کاش تم ان ظالموں کو اس حالت میں دیکھو جب وہ جان کنی کی سختیوں میں مبتلا ہوں اور فرشتے ہاتھ بڑھا کر کہہ رہے ہوں لاؤ نکالو اپنی جانیں آج تمہیں ذلت کا عذاب دیا جائے گا. اس لئے کہ تم اللہ پر جھوٹا الزام رکھتے تھے اور گھمنڈ میں آکر اس کی آیتوں کا انکار کرتے تھے (۹۳)[۳:۲۴،۱۷:۸۸،۶:۹۳،۸:۳۱،۲:۲۳]

जिस प्रकार हमने तुम को पहली बार अकेला उत्पन्न किया था उसी प्रकार आज तुम हमारे पास अकेले आए और वह सम्पूर्ण सामग्री जो हम ने तुम को दे रखी थी अपने पिछे दुनिया में ही छोड़ आए आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन अनुशंसकों को नही देखते जिनके विषय में तुम्हारा गुमान था कि वह तुम्हारे विषय के प्रबन्ध में ईश्वर के साझी हैं. आज मुम्हारे आपस के सारे नाते टूट गए और उनके विषय में जो कुछ तुम्हारा अनुमान था सब बेकार गया सब लुप्त हो गए(94)

جس طرح ہم نے تم کو پہلی بار اکیلا پیدا کیا تھا اسی طرح آج تم ہمارے پاس اکیلے آئے اور وہ تمام سامان جو ہم نے تم کو دے رکھا تھا اپنے پیچھے دنیا میں ہی چھوڑ آئے. آج ہم تمہارے ساتھ تمہارے ان شفارشیوں کو نہیں دیکھتے جن کے متعلق تمہارا گمان تھا کہ وہ تمہارے معاملات کے انتظام میں اللہ کے شریک ہیں. آج تمہارے آپس کے سارے رشتے ٹوٹ گئے. اور ان کے بارے میں جو کچھ تمہارا گمان تھا سب بے کار گیا سب گم ہو گئے (۹۴)

निःसंदेह ईश्वर ही दाने और गुठ्ली को फाड़कर उनसे वृक्ष उगाता है. वही जानदार को निर्जीव से निकालता है और वही निर्जिव को जीवधारी से निकालने वाला है वही तो ईश्वर है. फिर तुम कहां बहके फिरते हो. (95)

بے شک اللہ ہی دانے اور گٹھلی کو پھاڑ کر ان سے درخت اگاتا ہے وہی جاندار کو بے جان سے نکالتا ہے اور وہی بے جان کو جاندار سے نکالتا ہے وہی تو اللہ ہے پھر تم کہاں بہکے پھرتے ہو (۹۵)

वही प्रभात का प्रकाश फाड़ निकालता है. और उसी ने रात्रि को विश्राम के लिए बनाया और सूर्य और चन्द्रमा को लेखे के लिए बनाया है यह ईश्वर के निश्चित किये हुए अनुमान हैं जो अधिकार प्राप्त और ज्ञान वाला है. (96) {10:5,17:12}

وہی صبح کی روشنی پھاڑ نکالتا ہے اور اسی نے رات کو آرام کے لئے بنایا اور سورج اور چاند کو حساب کے لئے بنایا ہے. یہ اللہ کے مقرر کئے ہوئے اندازے ہیں جو غالب اور علم والا ہے (۹۶)[۱۰:۵،۱۷:۱۲]

वही तो है जिसने समुंद्रो और वनों के अन्धकार में तारों को तुहारे लिए मार्ग दर्शक बनाया उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं अपनी धाराएं खोल खोल कर वर्णन कर दी है. (97)

وہی تو ہے جس نے سمندروں اور بیابانوں کی تاریکیوں میں ستاروں کو تمہارے لئے راہنما بنایا. ان لوگوں کے لئے جو علم رکھتے ہیں ہم نے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کر دیں ہیں (۹۷)

वही है जिसने तुम्हें एक जान से उत्पन्न किया फिर तुम्हारे लिए ठहरने का स्थान है और फिर (मृत्यू के बाद) सोपने का स्थान है. जो लोग समझ से काम लेते है उनके लिए हमने अपनी स्मृतियां खोल-खोल कर वर्णन कर दी है. (98)

وہی ہے جس نے تمہیں ایک جان سے پیدا کیا پھر تمہارے لئے ٹھہرنے کی جگہ ہے اور پھر (مرنے کے بعد) سونپنے کی جگہ ہے جو لوگ سمجھ سے کام لیتے ہیں ان کے لئے ہم نے اپنی نشانیاں کھول کھول کر بیان کر دی ہیں (۹۸)

वही है जो आकाश से पानी बरसाता है फिर उसके द्वारा हर प्रकार के पौधे उगाता है फिर उसी से हरी हरी टहनियां निकालता है जिन से एक दूसरे से जुड़े हुए दाने प्रकट हो जाते है, इसी प्रकार खजूर के गाभे से लटकते हुए गुच्छे और अंगूर और जैतून और अनार के उपवन उत्पन्न कर दिए जो एक दूसरे से मिलते हुए भी है और पृथक पृथक भी है, विचार करो इन वृक्षो में फल उगते है फिर धीरे धीरे पककर तैयार होते है (तो कैसे अच्छे लगते है) इनमें उन लोगो के लिए जो ईमान रखते है ईश्वर की बड़ी ही स्मृतियां है, (99)

وہی ہے جو آسمان سے پانی برساتا ہے پھر اس کے ذریعہ ہر طرح کے پودے اگاتا ہے پھر اسی سے ہری ہری ٹہنیاں نکالتا ہے جن سے ایک دوسرے سے جڑے ہوئے دانے نمودار ہو جاتے ہیں. اسی طرح کھجور کے گابھے سے لٹکتے ہوئے گچھے اور انگور اور زیتون اور انار کے باغ پیدا کر دئے. جو ایک دوسرے سے ملتے ہوئے بھی ہیں اور الگ الگ بھی ہیں. غور کرو جب ان درختوں میں پھل لگتے ہیں. اور پھر آہستہ آہستہ پک کر تیار ہوتے ہیں (تو کیسے اچھے لگتے ہیں) ان میں ان لوگوں کے لئے جو ایمان رکھتے ہیں اللہ کی بڑی ہی نشانیاں ہیں (۹۹)

उन लोगों ने जिन्नो को ईश्वर का साझी बना लिया है यद्यपि जिन्नो को भी ईश्वर ही ने उत्पन्न किया है (यही नही अपितु) मुर्खता में पड़कर ईश्वर के पुत्र और पुत्री घढ़ ली है वह लोग ईश्वर के विषय में जो वर्णन करते है उसका अस्तित्व उससे पवित्र और ऊंचा है, (100)

ان لوگوں نے جنوں کو اللہ کا شریک بنالیا ہے حالانکہ جنوں کو بھی اللہ ہی نے پیدا کیا ہے (یہی نہیں بلکہ) انہوں نے جہالت میں پڑ کر اللہ کے لئے بیٹے بیٹیاں گھڑھ لی ہیں. وہ لوگ اللہ کے بارے میں جو کچھ بیان کرتے ہیں اس کی ذات اس سے پاک اور بلند ہے (۱۰۰)

वह आकाशो और पृथ्वी का उत्पन्न करने वाला है यह कैसे हो सकता है कि उसका कोई पुत्र हो, और क्यों कर हो सकता है उस का सहयोगी जोड़ा साथी और हर वस्तु उस की उत्पन्न की हुई है उसे हर वस्तु का ज्ञान है, (101)

वही ईश्वर तुम सबका ईश्वर है क्या वह कहते है, ईश्वर नही निःसंन्देह वह है वह हर वस्तु का रचेता है, अतः उसी की पूजा करो वह हर वस्तु का रक्षक है, (102)

आंखें उसे नही देख सकती (किन्तु) वह आंखों को देखता है वह बड़ा ही शूक्ष्मदर्शी है सबकी सूचना रखने वाला है, (103)

{7:143,10:7,8,11,17:14,42:11}

وہ آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے یہ کیسے ہوسکتا ہے کہ اس کا کوئی بیٹا ہو اور کیونکر ہوسکتا ہے اس کا شریک کار جوڑا ساتھی اور ہر چیز اس کی پیدا کی ہوئی ہے اسے ہر چیز کا علم ہے (۱۰۱)

وہی اللہ تم سب کا رب ہے کیا وہ کہتے ہیں اللہ نہیں یقیناً وہ ہے وہ ہر شی کا خالق ہے لہٰذا اسی کی عبادت کرو. وہ ہر چیز کا نگراں ہے (۱۰۲)

آنکھیں اسے نہیں دیکھ سکتیں (لیکن) وہ آنکھوں کو دیکھتا ہے وہ بڑا ہی باریک بین ہے اور سب کی خبر رکھنے والا ہے (۱۰۳) [۷:۱۴۳، ۱۰:۷،۸،۱۱، ۱۷:۱۴، ۴۲:۱۱]

लोगो! तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम्हारे पास ज्ञान चक्षू (पुस्तक) आ चुकी है अब जो कोई (इस पुस्तक को समझे और इस से हृदय व मस्तिष्क को उज्ज्वल करें तो उस का लाभ उसी को होगा और जो कोई इस से अंधा हो जाए तो उस का बवाल भी उसके सिर होगा, और मैं तुम पर कोई रक्षक और निरीक्षक नही हूं, (104) {7:203, 3:101,4:170,174,14:1}

لوگو! تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس بصیرت آموز (کتاب) آچکی ہے اب جو کوئی (اس کتاب کو سمجھے اور اس سے) دل دماغ کو روشن کرے تو اس کا فائدہ اسی کو ہوگا اور جو کوئی اس سے اندھا ہو جائے تو اس کا وبال بھی اس کے سر ہوگا اور میں تم پر کوئی نگراں اور محافظ تو ہوں نہیں (۱۰۴) [۷:۲۰۳، ۳:۱۰۱، ۴:۱۷۰،۱۷۴، ۱۴:۱]

और हम किस किस प्रकार अपनी आयतें वर्णन करते है ताकि लोग कहें (और अंगीकार करें) कि तुमने पढ़कर समझा दिया और इस लिए भी कि हम ज्ञानियों के सामने सत्य प्रकट कर दें (105)

तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम पर जो आदेश अवतरित किये जाते है उनका अनुकरण करो, कौन कहता है ईश्वर नही है निस्सन्देह वह है और अनेकेश्वर वादियों से कनारा कर लो, (106)

اور ہم کس کس طرح اپنی آیتیں بیان کرتے ہیں تا کہ لوگ کہیں (اور اقرار کریں) کہ تم نے پڑھ کر سمجھا دیا اور اسی لئے بھی کہ ہم اہل علم کے سامنے حقیقت آشکارا کر دیں (۱۰۵)

تمہارے رب کی طرف سے تم پر جو احکام نازل کئے جاتے ہیں ان کی پیروی کرو کون کہتا ہے اللہ نہیں ہے یقیناً وہ ہے اور مشرکوں سے کنارہ کرلو (۱۰۶)

यदि ईश्वर चाहता तो वह लोग अनेकेश्वर वाद न करते (वह नही चाहता कि जबरदस्ती करके स्वतंत्रता समाप्त कर दें जिसको जो अच्छा लगे करें) और हमने तुमको उन पर पाल नही बनाया और न उनकी ओर से तुम उत्तरदायी हो (कि उन्हें अनेकेश्वर वाद से रोक दो वह स्वतंत्र हैं), (107)

اگر اللہ چاہتا تو وہ لوگ شرک نہ کرتے (وہ نہیں چاہتا کہ زبردستی کر کے آزادی ختم کر دے. جس کو جو اچھا لگے کرے) اور ہم نے تم کو ان پر پاسباں نہیں بنایا اور نہ ان کی طرف سے تم ذمہ دار ہو (کہ شرک سے روک دو وہ آزاد ہیں) (۱۰۷)

और उन्हें बुरा न कहो जिन्हें अनेकेश्वर वादी ईश्वर के अतिरिक्त पुकारते हैं वह भी कहीं ईश्वर को अनादर से बेसमझे बुरा कह बैठें इस प्रकार हमने हर एक दल के कार्यों को उनकी दृष्टि में अच्छा कर दिखाया है फिर उनको अपने ईश्वर की ओर लौट कर जाना है तब वह उनको बताएगा कि वह क्या किया करते थे. (108)

اورانہیں بُرا نہ کہو جنہیں مشرکین اللہ کے علاوہ پکارتے ہیں وہ بھی کہیں اللہ کو بے ادبی سے بے سمجھے بُرا کہہ بیٹھیں اس طرح ہم نے ہرایک فرقے کے اعمال کو ان کی نظر میں اچھے کر دکھائے ہیں پھران کو اپنے پروردگار کی طرف لوٹ کر جانا ہے تب وہ ان کو بتائے گا کہ وہ کیا کیا کرتے تھے(۱۰۸)

और उन्होंने ईश्वर की बड़ी पक्की शपथें खाई है कि यदि उनके सामने कोई चमत्कार आ जाए तो अवश्य उस पर विश्वास ले आएंगे. तू कह चमत्कार तो ईश्वर के ही अधिकार में है. और तुम्हें क्या जानकारी (यह तो हमही जानते हैं) कि चमत्कार जब आ जाएगा तो वह विश्वास न लाएंगे. (109)[6:34]

اورانہوں نے اللہ کی بڑی پختہ قسمیں کھائی ہیں کہ اگر ان کے سامنے کوئی معجزہ آجائے تو وہ ضرور ضرور اس پر ایمان لے آئیں گے تو کہہ معجزات تو اللہ کے ہی قبضہ میں ہیں. اور تمہیں کیا خبر (یہ تو ہم ہی جانتے ہیں) کہ معجزہ جب آجائے گا تو وہ ایمان نہ لائیں گے(۱۰۹)[۳۴:۶]

और हमारा नियम उनके मनों और आंखों को उलट देगा जैसे वह इस (कुरआन) पर पहली बार विश्वास नहीं लाएं वैसे ही फिर न लाएंगे और उनको छोड़ देंगे कि अपनी अवज्ञा में बहकते रहें. (110) पारा 8 व लौ अन्नना

اور ہمارا قانون ان کے دلوں اور آنکھوں کو الٹ دے گا جیسے وہ اس (قرآن) پر پہلی دفعہ ایمان نہیں لائے (ویسے ہی پھر نہ لائیں گے) اوران کو چھوڑ دیں گے کہ اپنی سرکشی میں بھٹکتے رہیں(۱۱۰)

پارہ۔۸(ولَوْاَننا)

और यदि हम उन पर फरिश्ते भी उतार देते और मृतक भी उनसे बात करने लगते और हम सब वस्तुओं को उनके सामने उपस्थित कर देते तो भी वह विश्वास लाने वाले न थे, निस्संदेह ईश्वर का नियम यही है अर्थात यही चाहता है (और इस लिए यह चाहता है कि) बात यह है ि वह अधिकांश मुर्ख है. (111) {13:31,10:96,97}

اوراگر ہم ان پر فرشتے بھی اتار دیتے اور مردے بھی ان سے گفتگو کرنے لگتے اور ہم سب چیزوں کو ان کے سامنے لا موجود کردیتے تو بھی وہ ایمان لانے والے نہ تھے یقیناً اللہ کا قانون یہی ہے یعنی یہی چاہتا ہے (اوراس لئے یہ ہے کہ) بات یہ ہے کہ وہ اکثر نادان ہیں(۱۱۱)[۹۷،۹۶:۱۰،۳۱:۱۳]

और इसी प्रकार हमने शैतान (स्वभाव) इन्सानों और जिन्नों को हर ईशदूत का शत्रु बना दिया है वह धोका देने के लिए एक दूसरे के हृदय में चिकनी चुपड़ी बातें डाकते रहते हैं और यदि तुम्हारा ईश्वर बलात करता तो वह ऐसा न करते तो उनको और जो कुछ यह मिथ्यारोप कर रहे हैं उसे छोड़ दो (112) {22:52}

اوراسی طرح ہم نے شیطان (سیرت) انسانوں اور جنوں کو ہر رسول کا دشمن بنادیا ہے وہ دھوکا دینے کے لئے ایک دوسرے کے دل میں چکنی چپڑی باتیں ڈالتے رہتے ہیں اور اگر تمہارا پروردگار زبردستی چاہتا تو وہ ایسا نہ کرتے تو ان کو اور جو کچھ یہ افترا کر رہے ہیں اسے چھوڑ دو(۱۱۲)[۵۲:۲۲]

ताकि जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते (उन की बाते सुनकर) उनके मन उनकी ओर आकृष्ट हो जाए ओर उनकी बाते पसन्द करें और जैसे कुछ दुष्कर्म वह कर रहे हैं वैसे ही दुष्कर्म वह भी करने लगें (113)

تاکہ جو لوگ آخرت پر یقین نہیں رکھتے (ان کی باتیں سن کر) ان کے دل ان کی طرف مائل ہوجائیں اوران کی باتیں پسند کریں اور جیسی کچھ بدکاریاں وہ کر رہے ہیں ویسی ہی بدکاریاں وہ بھی کرنے لگیں(۱۱۳)

(कहो)क्या मैं ईश्वर को छोड़कर कोई और न्यायधीश खोजूं यद्यपि उसने अपनी पुस्तक पूरे विवरण के साथ तुम्हारी ओर अवतरित कर दी है. और जिन लोगो को हमने पुस्तक दी है वह जानते है कि कुरआन ईश्वर की ओर से सच्चाई के साथ अवतरित हुआ है. अतः तुम इसके बारे में शंका करने वालों में न होना. (114)

(کہو) کیا میں اللہ کو چھوڑ کر کوئی اور منصف تلاش کروں حالانکہ اس نے اپنی کتاب پوری تفصیل کے ساتھ تمہاری طرف نازل کردی ہے اور جن لوگوں کو ہم نے کتاب دی ہے وہ جانتے ہیں کہ قرآن اللہ کی طرف سے سچائی کے ساتھ نازل ہوا ہے پس تم اس کے بارے میں شک کرنے والوں میں نہ ہونا (۱۱۴)

और तेरे ईश्वर की बातें सच्चाई और न्याय में पूरी है उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह सुनता और जानता है. (115)

اور تیرے پروردگار کی باتیں سچائی اورانصاف میں پوری ہیں اس کی باتوں کو کوئی بدلنے والا نہیں اور وہ سنتا اور جانتا ہے(۱۱۵)

और अधिकांश लोग जो पृथ्वी पर बसते हैं यदि तुम उनका कहना मान लोगे तो वह तुम्हें ईश्वर का मार्ग भुला देंगे वह केवल कल्पना के पीछे चलते हैं और निरे अटकल के बाण चलाते हैं.(116)

اوراکثر لوگ جو زمین پر آباد ہیں اگر تم ان کا کہنا مان لو گے تو وہ تمہیں اللہ کا رستہ بھلا دیں گے وہ محض خیال کے پیچھے چلتے ہیں اور نرے اٹکل کے تیر چلاتے ہیں(۱۱۶)

तेरा ईश्वर उन लोगो को अच्छा जानता है जो उसके मार्ग से भटके हुए है और उनसे भी भलि-भाति अवगत है जो मार्ग पर चल रहे है. (117)

تیرا رب ان لوگوں کو اچھا جانتا ہے جو اس کے رستے سے بھٹکے ہوئے ہیں اور ان سے بھی خوب واقف ہے جو رستے پر چل رہے ہیں (۱۱۷)

सो जिस वैद्य पशु पर (वध के समय) ईश्वर का नाम लिया जाए यदि तुम उसकी आयतों पर विश्वास रखते हो तो खा लिया करो. (118)

سو جس حلال جانور پر (ذبح کے وقت) اللہ کا نام لیا جائے اگر تم اس کی آیتوں پر ایمان رکھتے ہو تو کھا لیا کرو (۱۱۸)

और क्या कारण है कि जिस पशु पर ईश्वर का नाम लिया जाए तुम उसे न खाओं यद्यपि जो वस्तुऐं उसने तुम्हारे लिए अवैध कर दी है वह वर्णन कर दी है उनको नही खाना चाहिए परन्तु वह भी जब तुमको कठोर आवश्यकता पड़ जाए तो खा सकते हो जब विवश हो जाओ और बहुत से लोग बेसमझे बुझें अपने मन की इच्छाओं से लोगों को बहका रहे है कुछ शंका नही कि ऐसे लोगो को जो सीमां से बाहर निकल जाते है तुम्हारा रब भलि-भाति जानता है. (119)

اور کیا سبب ہے کہ جس جانور پر اللہ کا نام لیا جائے تم اسے نہ کھاؤ حالانکہ جو چیزیں اس نے تمہارے لئے حرام ٹھہرا دیں ہیں وہ بیان کر دی ہیں ان کو نہیں کھانا چاہیے مگر وہ بھی جب تم کو سخت ضرورت پڑ جائے تو کھا سکتے ہو جب نا چار ہو جاؤ اور بہت سے لوگ بے سمجھے بوجھے اپنے نفس کی خواہش سے لوگوں کو بہکا رہے ہیں کچھ شک نہیں کہ ایسے لوگوں کو جو حد سے باہر نکل جاتے ہیں تمہارا رب خوب جانتا ہے (۱۱۹)

और प्रकट ओर लुप्त (हर प्रकार का) पाप छोड़ दो जो लोग पाप करते है वह निकट ही अपने किए का दण्ड पाऐंगे. (120)

اور ظاہری اور پوشیدہ (ہر طرح کا) گناہ ترک کر دو. جو لوگ گناہ کرتے ہیں وہ عنقریب اپنے کئے کی سزا پائیں گے (۱۲۰)

और जिस पशु पर ईश्वर का नाम न लिया गया हो उसे मत खाओ कि उसका खाना पाप है और शैतान अपने मित्रों के मनो में यह बात डालते है कि तुम से झगड़ा करें और यदि तुम लोग उनके कहें पर चले तो निःसंदेह तुम भी अनेकेश्वर वादी हुए(121) {22:52;6:118}

اور جس جانور پر اللہ کا نام نہ لیا گیا ہو اسے مت کھاؤ کہ اس کا کھانا گناہ ہے اور شیطان اپنے رفیقوں کے دلوں میں یہ بات ڈالتے ہیں کہ تم سے جھگڑا کریں اور اگر تم ان کے کہے پر چلے تو بے شک تم بھی مشرک ہوئے (۱۲۱)
[۱۱۸:۶،۵۲:۲۲]

और क्या वह व्यक्ति जो पहले मृत था अर्थात पथ प्रदर्शन के जीवन से वंचित था पस हमने उसे जीवन प्रदान किया अर्थात सत्य का जानकार किया और उसके लिए एक ऐसा प्रकाश प्रस्ताव किया जिसके साथ वह लोगों में चले फिरे उस व्यक्ति की भांति है जिसकी अंधकार में यह स्थिति है कि उनसे निकलने वाला नही. इसी प्रकार नास्तिक जो कर्म कर रहें है वह उन्हें अच्छे ज्ञात होते है.(122) {3:27;97:1,5}

اور کیا وہ شخص جو پہلے مردہ تھا یعنی ہدایت کی زندگی سے محروم تھا پس ہم نے اسے زندگی بخشی یعنی حق آشنا کیا. اور اس کے لئے ایک ایسا اجالا تجویز کیا جس کے ساتھ وہ لوگوں میں چلے پھرے. اس شخص کی طرح ہے جس کی تاریکیوں میں یہ حالت ہے کہ ان سے نکلنے والا نہیں. اسی طرح کافر جو عمل کر رہے ہیں وہ انہیں اچھے معلوم ہوتے ہیں (۱۲۲) [۳:۲۷،۹۷:۱،۵]

और इसी प्रकार हमने हर एक बस्ती में वहां के बड़े-बड़े पापीयों को लगा दिया है कि उसमें वह सत्य और सत्य वालों के विरूध युक्ति करें और वह स्वयं ही अपने विरूद्ध उपाय करते है और नही समझते. (123)

اور اسی طرح ہم نے ہر ایک بستی میں وہاں کے بڑے بڑے مجرمین کو لگا دیا ہے کہ اس میں وہ حق و اہل حق کے خلاف تدبیریں کریں اور وہ خود ہی اپنے خلاف تدبیریں کرتے ہیں اور نہیں سمجھتے (۱۲۳)

और जब उनके पास कोई आयत आती है तो कहते है कि जिस प्रकार का ईशदौत्य ईश्वर के रसूलों को मिला है जब तब इसी प्रकार का ईशदौत्य हमको न मिले हम कदापि विश्वास नही लाऐंगें उसको ईश्वर ही भलि-भाति जानता है कि वह अपना ईशदौत्य किसे प्रदान करें. जो लोग पाप करते है उनको ईश्वर के यहां अपमान और कठोर दण्ड होगा. इस लिए कि छल करते थे. (124)

اور جب ان کے پاس کوئی آیت آتی ہے تو کہتے ہیں کہ جس طرح کی رسالت اللہ کے رسولوں کو ملی ہے جب تک اسی طرح کی رسالت ہم کو نہ ملے ہم ہرگز ایمان نہیں لائیں گے. اس کو اللہ ہی خوب جانتا ہے کہ وہ اپنی رسالت کسے عنایت کرے. جو لوگ جرم کرتے ہیں ان کو اللہ کے یہاں ذلت اور عذاب شدید ہوگا. اس لئے کہ مکاریاں کرتے تھے (۱۲۴)

अतः जो व्यक्ति पथ प्रर्दशन पर चलना चाहता है तो ईश्वर का नियम उसके वक्ष को इस्लाम के लिए खोल देता है. और जो भ्रष्ट होना चाहता है तो ईश्वर के नियम के अनुसार उसका वक्ष तंग और घुटा हुआ हो जाता है (अर्थात वह स्वयं पथ

پس جو شخص ہدایت پر چلنا چاہتا ہے تو اللہ کا قانون اس کے سینے کو اسلام کے لئے کھول دیتا ہے اور جو گمراہ ہونا چاہتا ہے تو اللہ کے قانون کے مطابق اس کا سینہ تنگ اور گھٹا ہوا

भ्रष्टता में डूब जाता है और उसका दम फूलता है) मानो वह ऊंचाई पर चढ़ रहा है बहुत परिश्रम कर रहा है इसी प्रकार ईश्वर का नियम उन लोगों पर जो विश्वास नही लाते गंदगी नियुक्त कर देता है (125) {20:25,26; 39:22;56:3; 94:1}

ہو جاتا ہے (یعنی وہ خود گمراہی میں ڈوب جاتا ہے اور اس کا دم پھولتا ہے) گویا وہ بلندی پر چڑھ رہا ہے بہت محنت کر رہا ہے اس طرح اللہ کا قانون ان لوگوں پر جو ایمان نہیں لاتے گندگی مسلط کر دیتا ہے (۱۲۵) [۲۰:۲۵، ۲۶؛ ۳۹:۲۲؛ ۵۶:۳؛ ۹۴:۱]

और यही तेरे ईश्वर का सीधा मार्ग है जो लोग विचार करने वाले है उनके लिए हमने अपनी आयतें खोल खोलकर वर्णन कर दी है (126)

اور یہی تیرے رب کا سیدھا رستہ ہے جو لوگ غور کرنے والے ہیں ان کے لئے ہم نے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کر دی ہیں (۱۲۶)

उनके लिए उनके रब के पास शान्ति का घर है और वह उनका सहायक और मित्र है उनके शुभ कार्यों के कारण से जो वह करते रहे है (127)

ان کے لئے ان کے رب کے پاس سلامتی کا گھر ہے اور وہ ان کا حامی اور دوست ہے ان کے نیک کاموں کی وجہ سے جو وہ کرتے رہے ہیں (۱۲۷)

और जिस दिन ईश्वर उन सबको एकत्र करेगा उस रोज वह जिन्नों (अर्थात शरारती जिन्नात से) संबोधन करके कहेगा कि ऐ वर्ग जिन्न तुम ने मनुष्य जाति से बहुत लाभ प्राप्त किए तो जो इन्सानों में से उनके मित्र थे वह कहेंगे कि ईश्वर हम एक दूसरे से लाभ प्राप्त करते रहे और अब हम इस समय को पहुंच गए जो तूने अर्थात तेरे नियम ने हमारे लिए निश्चित किया था, ईश्वर कहेगा अच्छा अब आग तुम्हारा स्थान है सदैव उसमें रहोगे जो ईश्वर ने चाहा निःसन्देह वह होगा, निःसन्देह तुम्हारा ईश्वर ज्ञानी और सचेत है (128) {11:107}

اور جس روز اللہ ان سب کو جمع کرے گا اس روز وہ جنوں (یعنی شیاطین جنات سے) خطاب کر کے فرمائے گا کہ اے گروہ جن تم نے نوع انسانی سے بہت فائدے حاصل کئے تو جو انسانوں میں سے ان کے دوست تھے وہ کہیں گے کہ پروردگار ہم ایک دوسرے سے فائدہ حاصل کرتے رہے اور اب ہم اس وقت کو پہنچ گئے جو تو نے یعنی تیرے قانون نے ہمارے لئے مقرر کیا تھا اللہ فرمائے گا اچھا اب آگ تمہارا ٹھکانا ہے ہمیشہ اس میں رہو گے جو اللہ نے چاہا یقیناً وہ ہوگا بے شک تمہارا رب دانا اور خبردار ہے (۱۲۸) [۱۱:۱۰۷]

और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उनके कर्मों के कारण जो वह करते थे एक दूसरे पर नियुक्त कर देते हैं (129)

اور اسی طرح ہم ظالموں کو ان کے اعمال کے سبب جو وہ کرتے تھے ایک دوسرے پر مسلط کر دیتے ہیں (۱۲۹)

(इस अवसर पर ईश्वर उनसे यह भी ज्ञात करेगा) ऐ जिन्न व मानव के दलों क्या तुम्हारे पास स्वयं तुम में से ऐसे रसूल नही आए थे जो तुम को मेरी आयात सुनाते और उस दिन के परिणाम से डराते थे? वह कहेंगे हां हम अपने विरुद्ध स्वयं साक्ष्य देते हैं, आज दुनिया की जीवनी ने उन लोगों को भ्रम में डाल रखा है परन्तु उस समय वह स्वयं अपने विरुद्ध साक्ष्य देंगे कि वह नास्तिक थे (130)

(اس موقع پر اللہ ان سے یہ بھی پوچھے گا) اے گروہ جن و انس کیا تمہارے پاس خود تم میں سے ایسے رسول نہیں آئے تھے جو تم کو میری آیات سناتے اور اس دن کے انجام سے ڈراتے تھے؟ وہ کہیں گے ہاں ہم اپنے خلاف خود گواہی دیتے ہیں آج دنیا کی زندگی نے ان لوگوں کو دھوکے میں ڈال رکھا ہے مگر اس وقت وہ خود اپنے خلاف گواہی دیں گے کہ وہ کافر تھے (۱۳۰)

तुम्हारा ईश्वर नगरों को अन्याय के साथ नष्ट नही करता जबकि उनके निवासी तथ्य से अन्जान हों (131)

تمہارا رب بستیوں کو ظلم کے ساتھ تباہ نہیں کرتا جب کہ ان کے باشندے حقیقت سے ناواقف ہوں (۱۳۱)

और सब लोगों को पद कर्मों के अनुसार मिलेंगे और जो काम वह लोग करते हैं ईश्वर उनसे अन्जान नही है (132)

اور سب لوگوں کو درجے اعمال کے حساب سے ملیں گے اور جو کام وہ لوگ کرتے ہیں اللہ ان سے بے خبر نہیں ہے (۱۳۲)

और तुम्हारा ईश्वर निश्चिन्त है (और) दयावान है, यदि चाहे तो तुम्हें नष्ट कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे तुम्हारा उत्तराधिकारी बना दे जैसा तुम को भी दूसरे लोगों की सन्तान से उत्पन्न किया है (133)

اور تمہارا رب بے پروا (اور) صاحب رحمت ہے اگر چاہے تو تمہیں نابود کر دے اور تمہارے بعد جن لوگوں کو چاہے تمہارا جانشین بنا دے جیسا تم کو بھی دوسرے لوگوں کی نسل سے پیدا کیا ہے (۱۳۳)

निःसन्देह जो वादा तुम से किया जाता है वह आने वाला है और तुम ईश्वर को परास्त नहीं कर सकते (134)

بے شک جو وعدہ تم سے کیا جاتا ہے وہ آنے والا ہے اور تم اللہ کو مغلوب نہیں کر سکتے (۱۳۴)

कह दो कि लोगों तुम अपने स्थान पर कर्म किये

کہہ دو کہ لوگو! تم اپنی جگہ پر عمل کئے جاؤ میں (اپنی جگہ)

जाओ मैं (अपने स्थान) कर्म किए जाता हूं निकट ही तुम को ज्ञात हो जाएगा कि परलोक में (स्वर्ग) किस का घर होगा कुछ शंका नही पापी मुक्ति नही पाने के (135)

عمل کئے جاتا ہوں عن قریب تم کو معلوم ہو جائے گا کہ آخرت میں (جنت) کس کا گھر ہوگا کچھ شک نہیں ظالم نجات نہیں پانے کے (۱۳۵)

ईश्वर ने कृषि और पशुओं में से जो कुछ उत्पन्न किया है लोग उसका एक अंश ईश्वर के लिए निश्चित करते हैं और स्वयं ही अपनी ओर से कहते हैं कि यह ईश्वर के लिए है और यह हमारे सहयोगी बुतों का है, फिर (यह भी कहते हैं) कि जो अंश देवताओं के लिए है वह तो ईश्वर तक नही पहुंचता, परन्तु जो अंश ईश्वर के लिए है वह उनके सहयोगी तक पहुंच सकता है कैसा अनुचित निर्णय है जो वह लोग कर रहे हैं (136)

اللہ نے کھیتی اور مویشی میں سے جو کچھ پیدا کیا ہے لوگ اس کا ایک حصہ اللہ کے لئے مقرر کرتے ہیں اور خود ہی اپنی طرف سے کہتے ہیں کہ یہ اللہ کے لئے ہے اور یہ ہمارے شرکا بتوں کا ہے، پھر (یہ بھی کہتے ہیں) کہ جو حصہ بتوں کے لئے ہے وہ تو اللہ تک نہیں پہنچتا لیکن جو حصہ اللہ کے لئے ہے وہ ان کے شرکا تک پہنچ سکتا ہے. کیسا غلط فیصلہ ہے جو وہ لوگ کر رہے ہیں (۱۳٦)

और इसी प्रकार बहुत से अनेकेश्वरवादियों को उनके सहयोगियों ने उनके बच्चों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है ताकि उन्हें कष्ट में डाल दें और उनके धर्म को उन पर भ्रमित कर दें और यदि ईश्वर (बलात) चाहता तो वह ऐसा न करते (ईश्वर ने कर्म व विचार की स्वतंत्रता दी है) तो उनको छोड़ दो वह जाने और उनका झूट (137) {81:8,9}

اور اسی طرح بہت سے مشرکوں کو ان کے شریکوں نے ان کے بچوں کو جان سے مار ڈالنا اچھا کر دکھایا ہے تاکہ انہیں ہلاکت میں ڈال دیں اور ان کے دین کو ان پر مشتبہ بنا دیں. اور اگر اللہ (زبردستی) چاہتا تو وہ ایسا نہ کرتے (اللہ نے عمل و فکر کی آزادی دی ہے) تو ان کو چھوڑ دو وہ جانیں اور ان کا جھوٹ (۱۳۷) [۸۱:۸،۹]

और अपने विचार से यह भी कहते कि यह पशु और कृषि वर्जित है इसे उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसे हम चाहें कोई न खाऐं और कुछ पशु ऐसे हैं कि उनकी पीठ पर चढ़ना वर्जित कर दिया गया है, और कतिपय पशु ऐसे हैं जिन पर (वध के समय) ईश्वर का नाम नही लेते यह सब ईश्वर पर झूट है, वह निकट उनको उनके झूट का बदला देगा, (138)

اور اپنے خیال سے یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ چارپائے اور کھیتی منع ہے. اسے اس شخص کے سوا جسے ہم چاہیں کوئی نہ کھائے. اور کچھ چارپائے ایسے ہیں کہ ان کی پیٹھ پر چڑھنا منع کر دیا گیا ہے اور بعض مویشی ایسے ہیں جن پر (ذبح کے وقت) اللہ کا نام نہیں لیتے یہ سب اللہ پر جھوٹ ہے وہ عن قریب ان کو ان کے جھوٹ کا بدلہ دے گا (۱۳۸)

और यह भी कहते हैं कि जो बच्चा उन पशुओं के पेट में है वह विशेष हमारे पुरुषों के लिए है और हमारी स्त्रियों को वर्जित है और यदि वह बच्चा मरा हो तो सब उसमें साझी हैं, यह उनकी मन घड़ंत है निकट समीप ईश्वर उन्हें इसका दण्ड देगा, निःसन्देह वह बहुत बुद्धिमान और ज्ञान वाला है (139)

اور یہ بھی کہتے ہیں کہ جو بچہ ان مویشیوں کے پیٹ میں ہے وہ خالص ہمارے مردوں کے لئے ہے اور ہماری عورتوں کو حرام ہے اور اگر وہ بچہ مرا ہو تو سب اس میں شریک ہیں یہ ان کی من گھڑت ہے عن قریب اللہ انہیں اس کی سزا دے گا بے شک وہ حکیم اور علم والا ہے (۱۳۹)

निःसन्देह वह लोग वध और नष्ट हुए जिन्होंने अपनी संतान को मूर्खता से वध कर डाला और ईश्वर की प्रदान की हुई जीविका को ईश्वर पर मिथ्या रोप करते हुए अवैध कर लिया, वह लोग निःसन्देह भ्रष्ट हो गए और वह लोग सीधे मार्ग पर चलने वाले न थे (140) {81:8,9}

یقیناً وہ لوگ ہلاک و برباد ہوئے جنہوں نے اپنی اولاد کو جہالت اور نادانی سے قتل کر ڈالا اور اللہ کی بخشی ہوئی روزی کو اللہ پر افترا کرتے ہوئے حرام کر لیا وہ لوگ یقیناً گمراہ ہو گئے اور وہ لوگ سیدھی راہ پر چلنے والے نہ تھے (۱۴۰) [۸۱:۸،۹]

और ईश्वर ही तो है जिसने उपवन उत्पन्न किए छतरियों पर चढ़ाए हुए भी और जो छतरियों पर नही चढ़ाए हुए वह भी और खजूरें और कृषि जिनके भांति-भांति के फल होते हैं और ज़ैतून और अनार जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और नही भी मिलते, जब यह वस्तुऐं फलें तो उनके फल खाओ और जिस दिन उनको तोड़ो और काटो तो ईश्वर का अधिकार भी उसमें से चुकता करो और अनुचित मत उड़ाना कि ईश्वर अनुचित उड़ाने वालों को मित्र नही रखता (141) {8:41}

اور اللہ ہی تو ہے جس نے باغ پیدا کئے چھتریوں پر چڑھائے ہوئے بھی اور جو چھتریوں پر نہیں چڑھائے ہوئے وہ بھی اور کھجور اور کھیتی جن کے طرح طرح کے پھل ہوتے ہیں اور زیتون اور انار جو ایک دوسرے سے ملتے جلتے ہیں اور نہیں بھی ملتے جب یہ چیزیں پھلیں تو ان کے پھل کھاؤ اور جس دن ان کو توڑو اور کاٹو تو اللہ کا حق بھی اس میں سے ادا کرو اور بے جا نہ اڑانا کہ اللہ بے جا اڑانے والوں کو دوست نہیں رکھتا (۱۴۱) (۸:۴۱)

और पशुओं में भार उठाने वाले भी उत्पन्न किये और भूमि से लगे हुए (अर्थात छोटे-छोटे) भी ईश्वर की दी हुई जीविका खाओ और शैतान के पगों पर न चलो वह तुम्हारा खुला शत्रु है (142)

اور چار پایوں میں بوجھ اٹھانے والے بھی پیدا کئے اور زمین سے لگے ہوئے (یعنی چھوٹے چھوٹے) بھی۔ اللہ کا دیا ہوا رزق کھاؤ اور شیطان کے قدموں پر نہ چلو وہ تمہارا کھلا دشمن ہے (۱۴۲)

नोट- कृषि के साथ पशुओं का वर्णन करना (विमिन) से तो इन पशुओं में से भी दान देना अनिवार्य है वाव उतफ्फिया है.

نوٹ:۔ کھیتی کے ساتھ جانور کا ذکر کرنا (ومن) سے تو ان جانوروں میں سے بھی زکوٰۃ دینا ضروری ہے۔ وعطفیہ ہے۔

(यह बड़े-छोटे चार पाए) आठ प्रकार के है दो भेड़ों में से और दो बकरियों की प्रकार से. ऐ नबी उनसे ज्ञात करो कि ईश्वर ने इनके नर अवैध किए है या मादा या वह बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों? ठीक-ठीक ज्ञान के साथ मुझे बताओ यदि तुम सच्चे हो (143)

(یہ بڑے چھوٹے چار پائے) آٹھ قسم کے ہیں دو بھیڑوں میں سے اور دو بکریوں کی قسم سے۔ اے نبی ان سے پوچھو کہ اللہ نے ان کے نر حرام کئے ہیں یا مادہ۔ یا وہ بچے جو بھیڑوں اور بکریوں کے پیٹ میں ہوں؟ ٹھیک ٹھیک علم کے ساتھ مجھے بتاؤ اگر تم سچے ہو (۱۴۳)

और इसी प्रकार दो ऊंट की प्रकार से और दो गाय की प्रकार से (नर और मादा) ज्ञात करो उनके नर ईश्वर ने अवैध किये है या मादा, या वह बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों? क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब ईश्वर ने उनको अवैध होने का आदेश तुम को दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अन्यायी कौन होगा जो ईश्वर की ओर सम्बन्धित करके झूटी बात कहे ताकि ज्ञान के बिना लोगों का अनुचित मार्ग दर्शन करे. निःसन्देह ईश्वर ऐसे अत्याचारियों को सत्य मार्ग नहीं दिखाता (144)

اور اسی طرح دو اونٹ کی قسم سے اور دو گائے کی قسم سے (نر اور مادہ) پوچھو ان کے نر اللہ نے حرام کئے ہیں یا مادہ، یا وہ بچے جو اونٹنی اور گائے کے پیٹ میں ہوں؟ کیا تم اس وقت حاضر تھے جب اللہ نے ان کو حرام ہونے کا حکم تم کو دیا تھا؟ پھر اس شخص سے بڑھ کر ظالم کون ہوگا جو اللہ کی طرف منسوب کر کے جھوٹی بات کہے تا کہ علم کے بغیر لوگوں کی غلط رہنمائی کرے۔ یقیناً اللہ ایسے ظالموں کو راہ راست نہیں دکھاتا (۱۴۴)

कहो कि जो आदेश मुझ पर अवतरित हुए है मैं उनमें कोई वस्तु ऐसी जिसे खाने वाले खाएं अवैध नही पाता सिवाए उसके कि वह मृत पशु हो या या बहता हुआ रक्त या सवर का मास कि यह सब अपवित्र है या कोई पाप की वस्तु हो कि उस पर ईश्वर के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और यदि कोई विवश हो जाए परन्तु न तो अवज्ञा करें और न सीमा से बाहर निकल जाए तो तुम्हारा रब क्षमा करने वाला कृपालु है (145) {2:173;5:3;6:12,54;7:156;16:112,113,118}

کہو کہ جو احکام مجھ پر نازل ہوئے ہیں میں ان میں کوئی چیز جسے کھانے والے کھائیں حرام نہیں پاتا۔ بجز اس کے کہ وہ مرا ہوا جانور ہو یا بہتا ہوا خون یا سور کا گوشت کہ یہ سب ناپاک ہیں یا کوئی گناہ کی چیز ہو کہ اس پر اللہ کے سوا کسی اور کا نام لیا گیا ہو۔ اور اگر کوئی مجبور ہو جائے لیکن نہ تو نافرمانی کرے اور نہ حد سے باہر نکل جائے تو تمہارا رب بخشنے والا مہربان ہے (۱۴۵) [۲:۱۷۳، ۵:۳، ۶:۱۲، ۵۴، ۷:۱۵۶، ۱۶:۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۸]

और उन लोगों को जो यहूदी हुए हमारे नियम ने हर नाखुन वाले पशु (अर्थात गाय, ऊंट इत्यादी जिनका मूल्य अधिक होता है) से वंचित कर दिया था (प्राकृतिक निषिद्धी करण) और गाय बकरी में से उनकी चरबी जो स्वादिष्ट होती है से भी वंचित कर दिया. अतिरिक्त उसके जो उनकी पीठें या अन्तड़ियों में लगी हो या हड्डियों से लगी रह जाए (आंतों और ऐसी ही हड्डियों को फैंक दिया जाता है निर्धन लोग उनको उठाकर चरबी निकालते है और आंतों को खाते है और यह निर्धनता आती है अवज्ञा, दुष्कर्म स्वीकार करने से) यह वंचित होने की सजा हमने उनके विद्रोह के कारण से दी थी और यह जो कुछ हम कह रहे है बिल्कुल सत्य कह रहे है (146) {6:141}

اور ان لوگوں کو جو یہودی ہوئے ہمارے قانون نے ہر ناخن والا جانور (یعنی گائے اونٹ وغیرہ جن کی قیمت زیادہ ہوتی ہے) سے محروم کر دیا تھا (تحریم تکوینی) اور گائے بکری میں سے ان کی چربی جو لذیذ ہوتی ہے سے بھی محروم کر دیا۔ سوائے اس کے جو ان کی پیٹھوں یا انتڑیوں میں لگی ہو یا ہڈیوں سے لگی رہ جائے (آنتوں اور ایسی ہڈیوں کو پھینک دیا جاتا ہے غریب لوگ ان کو اٹھا کر چربی نکالتے ہیں اور آنتوں کو کھاتے ہیں اور یہ غربت آتی ہے فسق اور فجور اختیار کرنے سے) یہ سزا محروم ہونے کی ہم نے ان کی بغاوت کی وجہ سے دی تھی اور یہ جو کچھ ہم کہہ رہے ہیں بالکل سچ کہہ رہے ہیں (۱۴۶) [۶:۱۴۱]

नोट- आयात (3:93;6:146) में कहा गया है कि ऐ मुहम्मद स0 खाने की पवित्र वस्तुऐं जो तुम पर वैध है वह पहली जातियों पर भी वैध थी परन्तु (4:160) और (6:147) में अनुवाद किया गया है कि यहूद पर हमने नाखुन वाले पशु अवैध कर दिए थे.

प्रचलित अनुवाद अवलोकन हो-

نوٹ:۔ آیت (۳:۹۳، ۶:۱۴۶) میں فرمایا گیا ہے کہ اے محمدؐ کھانے کی پاک چیزیں جو تم پر حلال ہیں وہ پہلی قوموں پر بھی حلال تھیں مگر (۴:۱۶۰) اور (۶:۱۴۷) میں ترجمہ کیا گیا ہے کہ یہود پر ہم نے ناخن والے جانور حرام کر دئے تھے رائج ترجمہ ملاحظہ ہو۔

(6:147) और जिन लोगों ने यहूदियत स्वीकार की उन पर हमने सब नाखुन वाले पशु अवैध कर दिए थे और गाय और बकरी की चरबी भी सिवाए उसके जो उनकी पीठ या उनकी आंतों से लगी हो या हड्डी से लगी रहे जाए, यह हमने उनकी अवज्ञा का दण्ड उन्हें दिया था, और यह जो कुछ हम कह रहे हैं बिल्कुल सच कह रहे हैं, मौलाना मोदूदी और लगभग यही अनुवाद मौ० फतेह मुहम्मद जालंधरी, मौ० अशरफ अली थानवी, शाह रफीउद्दीन साहब, मौ० मेहमूदुलहसन, मौ० फरमान अली, शाह अब्दुल कादिर साहब इत्यादि ने किया है.

जब ईश्वर ने (3:93) और (6:146) में बता दिया कि जो पवित्र वस्तुएं ऐ मुहम्मद स० अब वैध हैं वह पहले भी वैध थी तो प्रश्न ही उत्पन्न नही, होता कि (4:160) और (6147) में ईश्वर उनको अवैध कर दे इस बात को देखने के लिए हमें आंखें खोल कर कुरआन को देखना पड़ेगा (3:93) की विवेचना सूरत आले इमरान में लिखी गई है जो पहले आचुकी है.

(28:12) और हमने बच्चे पर पहले ही दूध पिलाने वालियों के स्तन अवैध कर रखे थे अर्थात रोक लगा दी थी वंचित कर दिया था,

यद्यपि उन स्त्रीयों का दूध अवैध नही था, परन्तु यह ईश्वर की इच्छा थी कि महामना मूसा को वापस उनकी माता के पास पहुंचाना था और उन का पालन पोषण वास्तविक माता की गौद में ही कराना था जहां माता स्नेह मिलता है यदि मूसा और स्त्रीयों का दूध पी लेते तो माता के पास न जाते परन्तु ईश्वर को यह कार्य करना था सो हो गया,

यदि उन स्त्रीयों का दूध हराम था तो उनके बच्चों को भी अवैध होता और उनको न पिलाया जाता आज भी हर बच्चा किसी भी स्त्री का दूध पी लेता है, इसी प्रकार दूध पर जो रोक लगी थी उससे फिर औन की चाल को असफल करना था सो हो गई और फिरऔन को पता भी न चला यह है ईश्वर की इच्छा,

ऐसे ही श्रीमान यूसुफ का प्रसंग है जो अपने ढंग से होता गया दूसरे आदमी ही करते गए और करने वालों को पता भी न चला वह उन कार्यों को यूसुफ के प्रति बुरा जानकर करते रहे मगर वह यूसुफ के लिए अच्छे सिद्ध होते रहें इस लिए ईश्वर की निराली माया है

अब देखतें है कि पवित्र और अच्छी वस्तुओं से ईश्वर वंचित कैसे करता है और किस कारण? ईश्वर अपने भक्तों पर अत्याचार नही करता बन्दे स्वंय ही अपने ऊपर अन्याय करते है जिस कारण से वंचित होने का दण्ड मिलता है,

(3:14) वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नही सकते अधिक से अधिक बस कुछ सता सकते है यदि वह तुमसे लड़ेंगे तो सामने से पीठ दिखाएंगे, फिर ऐसे विवश होंगे कि कही से उन को सहायता न मिलेगी,

(3:13) वह जहां भी पाएगए उन पर आपमान की मार पड़ी कही ईश्वर की शरण था इन्सान की शरण मिलगई तो और बात है वह ईश्वर के क्रोध में घिर चुके है उन पर निर्धनता व पराज्य नियुक्त कर दी गई है और यह सब कुछ केवल इस लिए हुआ है कि वह

(١٤٧:٦) اور جن لوگوں نے یہودیت اختیار کی ان پر ہم نے سب ناخن والے جانور حرام کر دئے تھے اور گائے اور بکری کی چربی بھی بجز اس کے جو ان کی پیٹھ یا ان کی آنتوں سے لگی ہو یا ہڈی سے لگی رہ جائے. یہ ہم نے ان کی سرکشی کی سزا انہیں دی تھی اور یہ جو کچھ ہم کہہ رہے ہیں بالکل سچ کہہ رہے ہیں. مولانا مودودی. اور تقریباً یہی ترجمہ مولانا فتح محمد جالندھری، مولانا اشرف علی تھانوی، شاہ رفیع الدین صاحب، مولانا محمود الحسن، مولانا فرمان علی، شاہ عبدالقادر صاحب وغیرہ نے کیا ہے.

(٨٢:٤) میں درج ہے کہ قرآن میں اختلاف نہیں مگر ان آیات کے ترجموں میں اختلاف نظر آ رہا ہے (٨٢:٤) کی گواہی کے بعد یہ حقیقت سامنے آئی کہ قرآن میں اختلاف نہیں ہے مگر (٩٣:٣، ١٤٦:٦ اور ١٦٠:٤، ١٤٧:٦) میں جو ترجمہ سامنے آیا ہے اس سے اختلاف سامنے آ رہا ہے اب یہ دیکھا جائے کہ حقیقت کیا ہے.

جب اللہ نے (٩٣:٣ اور ١٤٦:٦) میں فرما دیا کہ جو پاک چیزیں اے محمدؐ اب حلال ہیں وہ پہلے حلال تھیں تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا کہ (١٦٠:٤ اور ١٤٧:٦) میں اللہ ان کو حرام کر دے. اس بات کو دیکھنے کے لئے ہمیں آنکھیں کھول کر قرآن کو دیکھنا پڑے گا (٩٣:٣) کی بحث سورت آل عمران میں لکھی گئی ہے. جو پہلے آ چکی ہے.

(١٢:٢٨) اور ہم نے بچے پر پہلے ہی دودھ پلانے والیوں کی چھاتیاں حرام کر رکھی تھیں یعنی روک لگا دی تھی محروم کر دیا تھا.

حالانکہ ان عورتوں کا دودھ حرام نہیں تھا. مگر یہ اللہ کی مشیت تھی کہ حضرت موسیٰ کو واپس ان کی ماں کے پاس پہنچانا تھا. اور ان کی پرورش حقیقی ماں کی گود میں ہی کرانی تھی جہاں ماں کا پیار ملتا ہے. اگر موسیٰ اور عورتوں کا دودھ پی لیتے تو ماں کے پاس نہ جاتے مگر اللہ کو یہ کام کرنا تھا سو ہو گیا.

اگر ان عورتوں کا دودھ حرام تھا تو ان کے بچوں پر بھی حرام ہوتا اور ان کو نہ پلایا جاتا. آج بھی ہر بچہ کسی بھی عورت کا دودھ پی لیتا ہے اس طرح دودھ پر جو روک لگی تھی اس سے فرعون کی تدبیر کو ناکارہ کرنا تھا سو ہو گئی اور فرعون کو پتہ بھی نہ چلا یہ ہے اللہ کی مشیت.

ایسے ہی حضرت یوسف کا معاملہ ہے جو اپنے طریقے سے ہوتا گیا. دوسرے آدمی ہی کرتے گئے اور کرنے والوں کو پتہ بھی نہ چلا. وہ ان کاموں کو یوسف کے حق میں بُرا سمجھ کر کرتے رہے مگر وہ یوسف کے حق میں اچھے ثابت ہوتے رہے اس لئے اللہ کی عجیب قدرت ہے.

اب دیکھتے ہیں کہ پاک اور اچھی چیزوں سے اللہ محروم کیسے کرتا ہے. اور کس وجہ سے؟ اللہ اپنے بندوں پر ظلم نہیں کرتا. بندے خود ہی اپنے اوپر ظلم کرتے ہیں جس کی وجہ سے محروم ہونے کی سزا ملتی ہے.

(١١١:٣) وہ تمہارا کچھ بگاڑ نہیں سکتے زیادہ سے زیادہ بس کچھ ستا سکتے ہیں اگر وہ تم سے لڑیں تو مقابلہ سے پیٹھ دکھائیں گے. پھر ایسے بے بس ہوں گے کہ کہیں سے ان کو مدد نہ ملے گی.

(١١٢:٣) وہ جہاں بھی پائے گئے ان پر ذلت کی مار پڑی کہیں اللہ کے ذمہ یا انسانوں کے ذمہ پناہ مل گئی تو اور بات ہے وہ اللہ کے غضب میں گھر چکے ہیں ان پر محتاجی و مغلوبی مسلط کر دی گئی ہے اور یہ سب کچھ صرف اس لئے ہوا ہے کہ وہ

ईश्वर की आयात का विरोध करते रहे और उन्होंने रसूलों से झगड़ा किया वह उनकी अवज्ञा और अत्याचारों का फल है. {6:141, 16:112,113}

(16:112) ईश्वर एक नगरी की उपमा देता है वह शान्ति और सन्तोष का जीवन व्यतीत कर रही थी, और हर ओर से उसको अधिकता की जीविका पहुंच रही थी कि उन्होंने ईश्वर के प्रसादों का अकृतज्ञता आरम्भ कर दिया तब ईश्वर ने उसके वासियो को उनकी करतूतों का यह स्वाद चखाया कि भूक और भय की विपत्ति उनपर छा गई,

(16:113) उनके पास उनकी अपनी जाति में से एक ईशदूत आया, परन्तु उन्होंने उसको झुटलाया अन्ततः यातना ने उन को आ लिया जब कि वह अत्याचारी हो चुके थे,

आयत (3:111-112) और (16:112-113-118) में स्पष्ट है कि उनकी अवज्ञा के कारण उनपर निर्धनता नियुक्त कर दी गई निर्धनता का क्या परिणाम होता है? वह यह कि हर अच्छी वस्तु को क्रय करके खाने की शक्ति समाप्त हो जाती है और होता यह है कि गली सड़ी वस्तुओं में से कुछ अंश निकाल कर खाना या अच्छे पशुओ को वध करने के बाद जब आदमी उन की आन्त आझड़ी फैंके देता है तो निर्धन वंचित आदमी उन में से चरबी आन्त इत्यादि निकाल कर अपने काम में लाता है अर्थात खाता है जो ईदूल अज़हा पर देखा जा सकता है अब देखा जाएगा {4:160, 3:12-13, और 16:112-113-118} में ईश्वर कहता है कि उन के अत्याचार के कारण से यह दण्ड दिया गया,

(6:141-147) में है कि उन की अवज्ञा के कारण से उन्हें यह दण्ड दिया गया, इस प्रकार कुरआन में बहुत मंत्र है जिनमें अवज्ञाकारी जातियों का उल्लेख है जिस अवज्ञा का परिणाम होता है ईश्वर की पवित्र वस्तुओ से वंचित हो जाना निर्धनता के कारण क्योंकि निर्धनता में व्यक्ति के पास धन नही रहता,

स्पष्ट है कि ईश्वर की ओर से घटित होने वाली निषिद्धि करण की दो प्रकार है, (1) निषिद्धि करण तशरीई (2) निःषिद्धी करण प्राकृतिक तहरीम-ए-तशरीई का अर्थ है कि ईश्वर बन्दे को किसी वस्तु से रूक जाने का आदेश दे जैसे बलात्कार चोरी, शराब पीना आदि और तहरीम तकवीनी का अर्थ यह है कि ईश्वर अपने बन्दों को किसी वस्तु से वंचित रखने या वंचित कर देने का निर्णय करें जैसे कि एक व्यक्ति आयु भर बेसन्तान रहा और एक के यहां सन्तान तो हुई परन्तु जीवित न रही, पहले आदमी को ईश्वर ने प्रसाद सन्तान से वंचित रहने का निर्णय किया और दूसरे को उस प्रसाद से वंचित कर देने का तहरीम तकवीनी निषिद्धि करण प्राकृतिक का एक स्थान यह है कि आदमी ईश्वर के नियम की अज्ञा करते करते उस स्थान पर पहुंच जाता है कि ईश्वर के प्रसादो से वंचित हो जाता है और उस पर निर्धनता और अपमान नियुक्त हो जाता है व्यक्ति के अपने अन्याय के कारण बस यही अपमान बनी ईसराईल का हुआ था और पवित्र और वैध वस्तुओं से वंचित हो गए थे,

इन दोनों निषिद्धियों में अन्तर यह है कि निषिद्धि करण तशरीई से ईश्वर ने बन्दों को वही के द्वारा जानकारी देने का प्रबन्ध किया और बन्दे उस ज्ञान को प्राप्त करने के भारित है और कोई प्राप्त न करें तो पापी है परन्तु निषिद्धिकरण प्राकृतिक (तहरीमे तकवीनी) से बन्दों को अवगत कराने का न प्रबन्ध किया गया है न बन्दे इस ज्ञान के प्राप्त करने के भारित है निषिद्धिकरण तशरीई को तो जान सकता है किन्तु तहरीमाते तकवीनीया की परिक्रमा उसकी शक्ति से बाहर है, परन्तु किसी सीमा तक उनको भी जान सकता है वह यह कि उसे ज्ञात है कि ईश्वर की अवज्ञा में क्या होता है और आज्ञाकारी में क्या बस यही एक विचार का स्थान है, परन्तु इन्सान चिन्तन नही करता और अज्ञात किस उन्माद में वह ईश्वर की अवज्ञा करता चला जाता है

اللہ کی آیات سے کفر کرتے رہے اور انہوں نے رسولوں سے جھگڑا کیا یہ اُن کی نافرمانی اور زیادتیوں کا انجام ہے (۶:۱۴۱، ۱۶:۱۱۲)

(۱۶:۱۱۲) اللہ ایک بستی کی مثال دیتا ہے وہ امن و اطمینان کی زندگی بسر کر رہی تھی اور ہر طرف سے اس کو فراغت کا رزق پہنچ رہا تھا کہ انہوں نے اللہ کی نعمتوں کا کفران شروع کر دیا تب اللہ نے اس کے باشندوں کو ان کے کرتوتوں کا یہ مزا چکھایا کہ بھوک اور خوف کی مصیبتیں ان پر چھا گئیں۔

(۱۶:۱۱۳) ان کے پاس اُن کی اپنی قوم میں سے ایک رسول آیا مگر انہوں نے اس کو جھٹلایا آخر کار عذاب نے ان کو آلیا۔ جب کہ وہ ظالم ہو چکے تھے۔

آیت (۳:۱۱۱،۱۱۲ اور ۱۶:۱۱۲،۱۱۳،۱۱۸) میں صاف ہے کہ ان کی نافرمانی کی وجہ سے ان پر محتاجی مسلط کر دی گئی محتاجی کا کیا نتیجہ ہوتا ہے؟ وہ یہ کہ ہر اچھی چیز کو خرید کر کھانے کی طاقت ختم ہو جاتی ہے۔ اور ہوتا یہ ہے کہ گلی سڑی چیزوں میں سے کچھ حصہ نکال کر کھانا یا اچھے جانوروں کو ذبح کرنے کے بعد جب آدمی ان کی آنت اوجھڑی پھینک دیتا ہے تو محتاج محروم آدمی ان میں سے چربی آنت وغیرہ نکال کر اپنے کام میں لاتا ہے یعنی کھاتا ہے جو اکثر عیدالاضحیٰ پر دیکھا جا سکتا ہے۔ اب دیکھا جائے (۴:۱۶۰، ۳:۱۱۱،۱۱۲ اور ۱۶:۱۱۲،۱۱۳،۱۱۸) میں اللہ فرماتا ہے کہ ان کے ظلم کی وجہ سے یہ سزا دی گئی۔

(۶:۱۴۱، ۱۴۷) میں ہے کہ ان کی سرکشی کی وجہ سے انہیں یہ سزا دی گئی اس طرح قرآن میں بہت آیات ہیں جن میں نافرمان قوموں کا ذکر ہے۔ جس نافرمانی کا انجام ہوتا ہے اللہ کی پاک حلال چیزوں سے محروم ہو جانا محتاجی کی وجہ سے کیونکہ محتاجی میں آدمی کے پاس رقم نہیں رہتی۔

واضح رہے کہ اللہ کی طرف سے واقع ہونے والی تحریم کی دو قسمیں ہیں (۱) تحریم تشریعی (۲) تحریم تکوینی تحریم تشریعی کا مطلب ہے کہ اللہ بندے کو کسی چیز سے باز رہنے کا حکم فرما دے جیسے زنا، چوری، شراب نوشی وغیرہ اور تحریم تکوینی کا مطلب یہ ہے کہ اللہ اپنے بندوں کو کسی چیز سے محروم رکھنے یا محروم کر دینے کا فیصلہ فرمائے جیسے کہ ایک آدمی عمر بھر لاولد رہا اور ایک کے یہاں اولاد تو ہوئی مگر زندہ نہ رہی۔ پہلے آدمی کو اللہ نے نعمت اولاد سے محروم رہنے کا فیصلہ فرمایا تھا اور دوسرے کو اس نعمت سے محروم کر دینے کا۔

تحریم تکوینی کا ایک مقام یہ ہے کہ آدمی قانون الٰہی کی خلاف ورزی کرتے کرتے اس مقام پر پہنچ جاتا ہے کہ اللہ کی نعمتوں سے محروم ہو جاتا ہے اور اس پر محتاجی اور ذلت مسلط ہو جاتی ہے آدمی کے اپنے ظلم کی وجہ سے بس یہی ذلت بنی اسرائیل کی ہو گئی تھی اور پاک اور حلال چیزوں سے محروم ہو گئے تھے

ان دونوں تحریموں میں فرق یہ ہے کہ تحریم تشریعی سے اللہ نے بندوں کو بذریعہ وحی واقف کرنے کا اہتمام کیا اور بندے اس علم کو حاصل کرنے کے مکلّف ہیں اور کوئی حاصل نہ کرے تو گناہ گار ہے لیکن تحریم تکوینی سے بندوں کو واقف کرانے کا نہ اہتمام فرمایا گیا ہے نہ بندے اس علم کے حصول کے مکلّف ہیں تحریم تشریعی کو تو جان سکتا ہے لیکن تحریمات تکوینیہ کا احاطہ اس کے امکان سے باہر ہے مگر کسی حد تک ان کو بھی جان سکتا ہے وہ یہ کہ اسے معلوم ہے کہ اللہ کی نافرمانی میں کیا ہوتا ہے اور فرمانبرداری میں کیا۔ بس یہی ایک غور کا مقام ہے۔ مگر انسان غور ہی نہیں کرتا اور نہ معلوم کس نشے میں وہ اللہ کی نافرمانی کرتا چلا جاتا ہے

और उसका अनुभव उस समय होता है जब उसका परिणाम उसके सामने आ जाता है पस यही वह स्थान है जिसके लिए ईश्वर कहता है कि मेरे बन्दो! उन्माद अचेतना की स्थिति में नमाज़ में न आओ, ज्ञान व चेतना में आओ, और अपनी नमाज़ की रक्षा करो अर्थात नमाज़ के अनुसार अपने जीवन के कर्म कर लो और अपनी पूरी जीवनी ही नमाज़ बना लो, क्योंकि नमाज़ ईश्वर की पूजा है और ईश्वर के आदेश के अनुसार व्यवहार करना भी पूजा है पूरे जीवन के कर्म नमाज़ है, ईश्वर कहता है कि मैंने जिन्न और इन्सान को अपनी पूजा के लिए बनाया है, अतः मस्जिद में नमाज़ पढ़ो और अपने कारोबार में नमाज़ स्थापित करो, ईश्वर ने नमाज़ स्थापित करने का आदेश दिया है, इन्सान यदि ईश्वर की अवज्ञा से बचकर आज्ञाकारी में जीवन व्यतीत करेगा तो तहरीम तकवीनी भी उसकी समझ में आ जाएगी और वह उन आशंकाओं से बच जाएगा जो अवज्ञा में आते हैं,

اوراس کواحساس اس وقت ہوتا ہے. جب اس کا نتیجہ اس کے سامنے آجاتا ہے پس یہی وہ مقام ہے جس کے لئے اللہ فرماتا ہے کہ میرے بندو! نشے غفلت کی حالت میں نماز میں نہ آؤ ہوش وحواس میں آؤ اور اپنی نماز کی حفاظت کرو. یعنی نماز کے مطابق اپنی زندگی کے عمل کرلو. اور اپنی پوری زندگی ہی نماز بنالو کیونکہ نماز اللہ کی عبادت ہے اور اللہ کے حکم کے مطابق عمل کرنا بھی عبادت ہے. پوری زندگی کے عمل نماز ہے. اللہ کہتا ہے کہ میں نے جن اور انسان کو اپنی عبادت کے لئے بنایا ہے اس لئے مسجد میں نماز پڑھو اور اپنے کاروبار میں نماز قائم کرو. اللہ نے نماز قائم کرنے کا حکم دیا ہے. انسان اگر اللہ کی نافرمانی سے بچ کر فرمانبرداری میں زندگی گزارے گا تو تحریم تکوینی بھی اس کی سمجھ میں آجائے گی اور وہ ان خطرات سے بچ جائے گا جو نافرمانی میں آتے ہیں.

तहरीम तकवीनी के परिणाम बन्दों पर कब लागू होते हैं? जब बन्दे ईश्वर के अवज्ञाकारी हो जाएं अतः ईश्वर के धर्म की तुलना में यहूद का विद्रोह और वर्जित कर्मों के करने पर उनके साहस का दुनिया में यह परिणाम निकला कि पृथ्वी में प्रभुत्व और शासन से वंचित होकर वह जाति दरिद्रता और निर्धनता में ग्रस्त हो गई इस कारण से यहूदियों को पवित्र भोजन का अर्जन कठिन हो गया, दूसरा कारण यह है कि विद्रोही बन्दों पर उनमें के विद्रोही ज्ञानी नियुक्त हो जाएं और वह छल पूर्ण नियम बनाकर ईश्वर की पवित्र और वैध वस्तुओं को अवैध कर दे (6:141)

تحریم تکوینی کے نتیجے:۔ بندوں پر کب لاگو ہوتے ہیں؟ جب بندے اللہ کے باغی ہوجائیں. اس لئے اللہ کے دین کے مقابلے میں یہود کی بغاوت اور ارتکاب محرمات پر ان کی جسارت کا دنیا میں نتیجہ یہ نکلا کہ زمین میں اقتدار اور فرماں روائی سے محروم ہوکر وہ قوم افلاس وتنگ دستی میں مبتلا ہوگئی اس وجہ سے عام یہود کو پاکیزہ غذاؤں کا حصول دشوار ہوگیا دوسری وجہ یہ ہے کہ باغی بندوں پر ان میں کے باغی علماء مسلط ہوجائیں اور وہ جعلی قانون بنا کر اللہ کی طیبات اور حلال چیزوں کو حرام کردیں (٦:١٤١)

उपरोक्त लेख और धाराओं को पढ़ने के बाद हर आदमी यही परिणाम निकालेगा कि यहूद जिन पवित्र और शुद्ध वस्तुओं से वंचित हो गए थे उनको ईश्वर ने अवैध नहीं किया था अपितु वह स्वयं अपने अत्याचार और उपद्रव पापाचार और इनकार के कारण से उस दशा को पहुंच गए थे कि उन पर निर्धनता और हीनता नियुक्त हो गई जिसकी वजह से पवित्र वस्तुऐं उनकी क्रय शक्ति से बाहर हो गई और वह उनसे वंचित हो गए जिसकी पुष्टि आगे वाली आयत कर रही है और (6:147) में कहा गया है कि यह उनकी अवज्ञा का दण्ड है और यह जो हम कह रहे हैं बिल्कुल सत्य है,

بالا مضمون اور آیات کو پڑھنے کے بعد ہر آدمی یہی نتیجہ اخذ کرے گا کہ یہود جن پاک اور طیب چیزوں سے محروم ہوگئے تھے ان کو اللہ نے حرام نہیں کیا تھا بلکہ وہ خود اپنے ظلم اور فساد، فسق وکفر کی وجہ سے اس حالت پر پہنچ گئے تھے کہ ان پر محتاجی ذلت مسلط ہوگئی جس کی وجہ سے پاک چیزیں ان کی طاقت خرید سے باہر ہوگئیں اور وہ ان سے محروم ہوگئے. جس کی تصدیق آگے والی آیت کررہی ہے اور (٦:١٤٧) میں بھی کہا گیا ہے کہ ان کی سرکشی کی سزا ہے اور یہ جو کچھ ہم کہہ رہے ہیں بالکل سچ ہے

और यदि वह लोग तुम को झुठलाएं तो कह दो तुम्हारा ईश्वर बड़ी विशाल दया वाला है और पापियों से उसका दण्ड फेरा नहीं जा सकता (147)

اور اگر وہ لوگ تمہاری تکذیب کریں تو کہدو تمہارا رب بڑی وسیع رحمت والا ہے اور مجرموں سے اس کا عذاب پھیرا نہیں جاسکتا (١٤٧)

जो लोग अनेकेश्वर वादी हैं अवश्य कहें कि यदि ईश्वर चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बड़े और न हम किसी वस्तु को अवैध करते ऐसी ही बातें बना बनाकर उनसे पहले लोगों ने भी सत्य को झुठलाया था यहां तक कि हमारे दण्ड का स्वाद चखकर रहे, उनसे कहो क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है जिसे हमारे सामने प्रस्तुत करो? तुम तो केवल गुमान पर चल रहे हो और निरी कल्पना करते हो (148)

جو لوگ مشرک ہیں ضرور کہیں گے کہ اگر اللہ چاہتا تو نہ ہم شرک کرتے اور نہ ہمارے بڑے اور نہ ہم کسی چیز کو حرام کرتے ایسی ہی باتیں بنا بنا کر ان سے پہلے لوگوں نے بھی حق کو جھٹلایا تھا یہاں تک کہ ہمارے عذاب کا مزہ چکھ کر رہے ان سے کہو کیا تمہارے پاس کوئی علم ہے جسے ہمارے سامنے نکالو؟ تم تو محض گمان پر چل رہے ہو اور نری قیاس آرائیاں کرتے ہو (١٤٨)

तो कह दो पस ईश्वर के लिए ही है पूर्ण उक्ति, अतः यदि वह चाहता (बलात) तो तुम सबको सीधे मार्ग चला देता (149)

تو کہدو پس اللہ کے لئے ہی ہے کامل حجت پس اگر وہ چاہتا (زبردستی) تو تم سب کو سیدھی راہ چلا دیتا (١٤٩)

नोट- किन्तु ईश्वर ने इन्सान को अधिकार वान व संकल्प वान प्राणी बनाया है ताकि ईश्वर के बलात व दमन के बिना इन्सान बुद्धि से काम लेकर ईश्वर के रसूल के मार्ग दर्शन में ठीक मार्ग धारण करे,

نوٹ:۔ لیکن اللہ نے انسان کو با اختیار و با ارادہ مخلوق بنایا ہے تاکہ اللہ کے جبر واکراہ کے بغیر انسان عقل سے کام لے کر اللہ کے رسول کی رہنمائی صحیح راہ اختیار کرے.

अवज्ञाकारी यही वाद करते हैं कि जिस पशु या भोजन को हम नहीं खा रहे यह ईश्वर ने ही अवैध कर दिया है, यह कथन भी

نافرمان یہی دعویٰ کرتے ہیں کہ جس جانور یا غذا کو ہم نہیں کھارہے یہ

उनका मिथ्या है क्या सत्य है वह आयत 151 में देखो,

उनसे कहो ले आओ अपने साक्षियों को जो बताएं कि ईश्वर ने यह वस्तुएं अवैध की हैं फिर यदि वह आकर साक्ष्य दें तो तुम उनके साथ साक्ष्य न देना और न उनकी इच्छाओं का अनुकरण करना, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो परलोक पर विश्वास नहीं लाते और मूर्तियों को अपने ईश्वर के बराबर बनाते हैं (150) {2:282;4:135}

नोट- देखिए किस शैली में ईश्वर ने अपनी बात को स्पष्ट किया है कि हम ने हर पवित्र वैध वस्तु सब पर वैध की है, कोई वस्तु और पशु जो वैध हो किसी पर अवैध नहीं किया, यदि कोई पवित्र और वैध वस्तु से वंचित है तो वह अपने अत्याचार, विद्रोह और इनकार के कारण से वंचित है जब भी कोइ जाति विद्रोह, अत्याचार व इनकार करेगी बदले में उस पर निर्धनता अपमान नियुक्त हो जाएगा और वह समुदाय पराधीन हो जाएगा चाहे वह किसी भी नबी की उम्मत अनुयायी हो, यह है कि वह विभिन्नता जो हमारे लिए कुरआन के अनुवादों में मिलती है कहीं लिख दिया कि हर पवित्र वस्तु वैध और कहीं लिख दिया कि अमुक अमुक पवित्र वस्तुएं हमने अवैध कर दी, यह सत्य नहीं है, अपितु सत्य वह है जो आयात के भावार्थ में लिख दिया गया है, अर्थात ईश्वर ने सब पवित्र वस्तुएं जो मुहम्मद के अनुयायीयों पर वैध की हैं वह पहले भी सब समुदायों पर वैध थी यदि किसी वस्तु से कोई वंचित है तो वह तहरीम-ए-तकवीनी के कारण से है जो स्वयं अपने पाप के कारण उन वस्तुओं से वंचित हो जाता है, अवैध नहीं होती, यदि वह फिर से ईश्वर की आज्ञाकारी करने लगता है तो फिर उसको सत्ता शासन मिल जाता है जिसके कारण उससे निर्धनता और दासता समाप्त होकर सम्पन्नता और स्वतंत्रता आ जाती है और वह पवित्र वस्तु को क्रय कर खा सकता है, आज भी दुनिया में यहूद उपस्थित हैं, आज वह हर नाखुन वाला पशु खा रहे हैं और दुनिया में हर प्रसाद के स्वामी हैं यदि ईश्वर ने उन पर अवैध कर दिए थे तो फिर किसने उन पर वैध कर दिए? बात वही है जो मैंने लिखी है अर्थात निर्धनता अवज्ञा से आती है और आदमी वंचित होता है,

आज यहूद आदमियों के सहारे के अन्तर्गत है इस बारे में (7:32) देखी जाए

(7:32) ऐ नबी उनसे कहो कि किसने ईश्वर की सज्जा को अवैध किया है जिसे ईश्वर ने अपने बन्दों के लिए निकाला है ओर किसने ईश्वर की दी हुई पवित्र वस्तुएं वर्जित कर दी, कहो यह सारी वस्तुएं दुनिया के जीवन में भी विश्वास लाने वालों के लिए है और परलोक में तो विशेष उनही के लिए होगी,

देखिए इस आयत में किस प्रकार बताया है कि ईश्वर की वैध पवित्र वस्तुएं दुनिया और परलोक में विश्वास लाने वालों के लिए हैं तो स्पष्ट हुआ कि अत्याचारियों के लिए ईश्वर की पवित्र वस्तुएं रोक दी जाती हैं (7:33) भी यही बता रही है,

हां, एक बात और है जो सामने आ सकती है वह यह कि आपत्ति करने वाला यह कह सकता है कि आज जो जाति अपने को धर्म वाला कहती है वह तो निर्धन और दास जैसी स्थिति में है और जिसको नास्तिक कहा जाता है वह उन पर नियुक्त है तो यह भी ईश्वर के कानून के अनुसार है जिसमें कहा गया है कि यदि तुम अवज्ञा करोगे तो तुम पर अत्याचारी जाति नियुक्त कर दी जाएगी और वह तुम को समाप्त कर देगी और जब तुम समाप्त हो जाओगे तो तुम्हारी जगह कोई दूसरी जाति खड़ी कर दी जाएगी जो धर्म वाली आज्ञाकारी होगी,

اللہ نے ہی حرام کر دی ہے یہ قول بھی ان کا غلط ہے کیا صحیح ہے وہ آیت ۱۵۱ میں دیکھو

ان سے کہو کہ لے آؤ اپنے گواہوں کو جو بتائیں کہ اللہ نے یہ چیزیں حرام کی ہیں پھر اگر وہ آ کر گواہی دیں تو تم ان کے ساتھ گواہی نہ دینا اور نہ ان کی خواہشوں کی پیروی کرنا جو ہماری آیتوں کو جھٹلاتے ہیں اور جو آخرت پر ایمان نہیں لاتے اور بتوں کو اپنے رب کے برابر ٹھہراتے ہیں

(۱۵۰)[۲:۲۸۲،۴:۱۳۵]

نوٹ:۔ دیکھئے کس انداز میں اللہ نے اپنی بات کو ظاہر کیا ہے کہ ہم نے ہر پاک حلال چیز سب پر حلال کی ہے کوئی چیز اور جانور جو حلال ہو کسی پر حرام نہیں کیا اگر کوئی پاک اور طیب چیز سے محروم ہے تو وہ اپنے ظلم وفساد کفر کی وجہ سے محروم ہے جب بھی کوئی قوم فساد ظلم وکفر کرے گی بدلے میں اس پر محتاجی ذلت مسلط ہو جائے گی اور وہ قوم غلام ہو جائے گی چاہے وہ کسی بھی نبی کی امت ہو. یہ ہے وہ تضاد جو ہمارے لئے قرآن کے ترجموں میں ملتا ہے کہیں لکھ دیا کہ ہر پاک طیب چیز حلال اور کہیں لکھ دیا کہ فلاں فلاں پاک چیزیں ہم نے حرام کر دیں یہ حقیقت نہیں ہے. بلکہ حقیقت وہ ہے جو آیات کے مفہوم میں لکھ دی گئی ہے یعنی اللہ نے سب پاک چیزیں جو امت محمدؐ پر حلال کی ہیں وہ پہلے بھی سب امتوں پر حلال تھیں اگر کسی چیز سے کوئی محروم ہے تو وہ تحریم تکوینی کی وجہ سے ہے جو خود اپنے گناہ کی وجہ سے ان چیزوں سے محروم ہو جاتا ہے حرام نہیں ہوتیں اگر وہ پھر سے اللہ کی فرمانبرداری کرنے لگتا ہے تو پھر اس کو حکومت مل جاتی ہے جس کے نتیجہ میں اس سے محتاجی اور غلامی ختم ہو کر خوشحالی اور آزادی آجاتی ہے اور وہ ہر پاک چیز کو خرید کر کھا سکتا ہے. آج بھی دنیا میں یہود موجود ہیں آج وہ ہر ناخن والے جانور کھا رہے ہیں اور دنیا کی ہر نعمت کے مالک ہیں اگر اللہ نے ان پر حرام کر دئے تھے تو پھر کس نے ان پر حلال کر دئے؟ بات وہی ہے جو میں نے لکھی ہے یعنی محتاجی مفلسی نافرمانی سے آتی ہے اور آدمی محروم ہوتا ہے.

آج یہود حبل من الناس کے تحت ہیں اس بارے میں (۷:۳۲) بھی دیکھی جائے

(۷:۳۲) اے نبی ان سے کہو کہ کس نے اللہ کی زینت کو حرام کر دیا ہے جسے اللہ نے اپنے بندوں کے لئے نکالا ہے اور کس نے اللہ کی بخشی ہوئی پاک چیزیں ممنوع کر دیں کہو یہ ساری چیزیں دنیا کی زندگی میں بھی ایمان لانے والوں کے لئے ہیں اور آخرت میں تو خالصۃً انہی کے لئے ہوں گی.

دیکھئے اس آیت میں کس طرح بتایا ہے کہ اللہ کی حلال پاک چیزیں دنیا اور آخرت میں ایمان لانے والوں کے لئے ہیں تو ظاہر ہوا کہ ظالموں کے لئے اللہ کی پاک چیزیں روک دی جاتی ہیں (۷:۳۳) بھی یہی بتا رہی ہے

ہاں ایک بات اور ہے جو سامنے آسکتی ہے وہ یہ کہ اعتراض کرنے والا یہ کہہ سکتا ہے کہ آج جو قوم اپنے کو ایمان والا کہتی ہے وہ تو مفلس اور غلام جیسی حالت میں ہے اور جس کو بے ایمان کہا جاتا ہے وہ ان پر مسلط ہے تو یہ بھی اللہ کے قانون کے مطابق ہے جس میں کہا گیا ہے کہ اگر تم نافرمانی کرو گے تو تم پر ظالم قوم مسلط کر دی جائے گی اور وہ تم کو ختم کر دے گی اور جب تم ختم ہو جاؤ گے تو تمہاری جگہ کوئی دوسری قوم کھڑی کر دی جائے گی جو ایمان دار فرمانبردار ہو گی.

चूंकि ईश्वर स्वयं किसी अत्याचारी जाति को दण्ड देने के लिए नही आता, वह एक दूसरे को आपस में लड़ाकर समाप्त कराता रहता है यदि न करे तो पृथ्वी का प्रबन्ध बिगड़ जाए और कोई वस्तु सुरक्षित न रहे, अतः यह सब कुछ उसके नियम के अनुसार हो रहा है, यदि इतनी व्याकुलता के बाद भी मुस्लिम जाति अपने कुरआन पर न आई तो निःसन्देह समाप्त हो जाएगी और ईश्वर किसी और को लाएगा जो उसकी रीति है उसमें कोई परिवर्तन न होगा,

چونکہ اللہ خود کسی ظالم قوم کو سزا دینے کے لئے نہیں آتا وہ ایک دوسرے کو آپس میں لڑا کر ختم کراتا رہتا ہے اگر نہ کرے تو زمین کا نظام بگڑ جائے اور کوئی چیز محفوظ نہ رہے،اس لئے یہ سب کچھ اس کے قانون کے مطابق ہو رہا ہے اگر اتنی پریشانی کے بعد بھی مسلم قوم اپنے قرآن پر نہ آئی تو یقیناً ختم ہو جائے گی اور اللہ کسی اور کو لائے گا جو اس کی سنت ہے اس میں کوئی تبدیلی نہ ہوگی۔

दुनिया में सम्मान के साथ रहने के लिए एक बहुत मोटी सी बात है जो सबकी समझ में आ जाएगी, आपस में धर्म के साथ संयुक्त रहना और अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त करना, परन्तु मुसलमान न तो एकताबद्ध है और न ही शक्ति है तो यह भी अवज्ञा है, दूसरे संयुक्त भी है और सबसे बड़ी बात यह है कि उनके पास शक्ति है निर्बल और अस्त व्यस्त को समाप्त कर दिया जाता है,

دنیا میں عزت کے ساتھ رہنے کے لئے ایک بہت موٹی سی بات ہے جو سب کی سمجھ میں آجائے گی آپس میں ایمان کے ساتھ متحد رہنا اور زیادہ سے زیادہ طاقت حاصل کرنا لیکن مسلمان نہ تو متحد ہیں اور نہ ہی طاقت ہے تو یہ بھی نافرمانی ہے دوسرے متحد بھی ہیں اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ ان کے پاس طاقت ہے کمزور اور منتشر کو ختم کر دیا جاتا ہے۔

कहो कि आओ मैं तुम्हें वह वस्तुएँ पढ़कर सुनाऊं जो तुम्हारे ईश्वर ने तुम पर अवैध कर दी है कि किसी वस्तु को ईश्वर का साझी न बनाना और माता-पिता से अच्छा व्यवहार करते रहना और निर्धनता से अपनी संतान को वध न करना, क्योंकि तुम को और उनको हम जीविका देते हैं, और निर्लज्जता के कर्म प्रकट हो या छुपे उनके पास न फटकना और किसी जान को जिसके वध को ईश्वर ने अवैध कर दिया है वध न करना परन्तु वैध ढंग से इन बातों की वह तुम्हें चेतावनी देता है ताकि तुम जानो (151) {7:32,33;17:29से41}

کہو کہ آؤ میں تمہیں وہ چیزیں پڑھ کر سناؤں جو تمہارے رب نے تم پر حرام کر دی ہیں کہ کسی چیز کو اللہ کا شریک نہ بنانا اور ماں باپ سے اچھا سلوک کرتے رہنا،اور ناداری سے اپنی اولاد کو قتل نہ کرنا کیونکہ تم کو اور ان کو ہم ہی رزق دیتے ہیں اور بے حیائی کے کام ظاہر ہوں یا پوشیدہ ان کے پاس نہ پھٹکنا اور کسی جان کو جس کے قتل کو اللہ نے حرام کر دیا ہے قتل نہ کرنا مگر جائز طور پر ان باتوں کی وہ تمہیں تاکید کرتا ہے تاکہ تم سمجھو (۱۵۱) [۷:۳۲،۳۳؛۱۷:۲۹تا۴۱]

और अनाथ के धन के पास भी न जाना परन्तु ऐसे ढंग से कि बहुत ही अच्छा हो यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए ओर नाप और तौल न्याय के साथ पूरी पूरी किया करो, हम किसी को कष्ट नही देते परन्तु उसकी क्षमतानुसार और जब कोई बात कहो तो न्याय के साथ कहो चाहे वह नातेदार ही हो और ईश्वर के वचन को पूर्ण करो इन बातों का ईश्वर तुम्हें आदेश देता है ताकि तुम शिक्षा स्वीकार करो, (152){66:2}

اور یتیم کے مال کے پاس بھی نہ جانا مگر ایسے طریق سے کہ بہت ہی پسندیدہ ہو یہاں تک کہ وہ جوانی کو پہنچ جائے اور ناپ اور تول انصاف کے ساتھ پوری پوری کیا کرو،ہم کسی کو تکلیف نہیں دیتے مگر اس کی طاقت کے مطابق اور جب کوئی بات کہو تو انصاف سے کہو گو وہ رشتہ دار ہی ہو اور اللہ کے عہد کو پورا کرو،ان باتوں کا اللہ تمہیں حکم دیتا ہے تاکہ تم نصیحت قبول کرو (۱۵۲) [۶۶:۲]

और यह कि मेरा सीधा मार्ग यही है तो तुम इसी पर चलना और दूसरे मार्गों पर न चलना कि ईश्वर के मार्ग से पृथक हो जाओगे, इन बातो का ईश्वर तुम्हे आदेश देता है ताकि तुम सदाचारी बनो,(153){17:22,से39}

اور یہ کہ میرا سیدھا رستہ یہی ہے تو تم اسی پر چلنا اور دوسرے رستوں پر نہ چلنا کہ اللہ کے رستے سے الگ ہو جاؤ گے ان باتوں کا اللہ تمہیں حکم دیتا ہے تاکہ تم پرہیزگار بنو (۱۵۳)

फिर हमने मूसा को पुस्तक दी थी ताकि उन लोगो पर जो सदाचारी है प्रसाद पूर्ण कर दें और हर वस्तु का वर्णन है और पथ प्रदर्शन और प्रसाद ताकि लोग अपने ईश्वर के समक्ष उपस्थित होने का विश्वास करें (154)

پھر ہم نے موسیٰ کو کتاب دی تھی تاکہ ان لوگوں پر جو نیک ہیں نعمت پوری کر دیں اور ہر چیز کا بیان ہے اور ہدایت اور رحمت تاکہ لوگ اپنے رب کے روبرو حاضر ہونے کا یقین کریں (۱۵۴)

ओर यह पुस्तक भी इसी प्रकार हे जिसे हमने अवतरित किया है अधिकता वाली है, अतः इस पर व्यवहार करो और ईश्वर की अवज्ञा से बचो ताकि तुम पर दया की जाए(155){10:109,33:2}

اور یہ کتاب بھی اسی طرح ہے جسے ہم نے نازل کیا ہے بابرکت ہے لہٰذا اس پر عمل کرو اور اللہ کی نافرمانی سے بچو تاکہ تم پر رحم کیا جائے (۱۵۵) [۱۰:۱۰۹،۳۳:۲]

(और इस लिए उतारी है) कि तुम यूं न कहो कि हमसे पहले दो ही दलो पर पुस्तके उतरी है और हम उनके समझने पढ़ने से वंचित थे, (156)

(اور اس لئے اتاری ہے) کہ تم یوں نہ کہو کہ ہم سے پہلے دو ہی گروہوں پر کتابیں اتری ہیں اور ہم ان کے پڑھنے سمجھنے سے بے خبر تھے (۱۵۶)

या कहो कि यदि हम पर भी पुस्तक अवतरित होती तो हम उन लोगो की तुलना में अधिक सीधे मार्ग

یا کہو کہ اگر ہم پر بھی کتاب نازل ہوتی تو ہم ان لوگوں کی

पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे ईश्वर की ओर से तर्क और मार्ग दर्शन और करूणा आ गई तो उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो ईश्वर की आयतो को झुठलाऐं और उनसे फिरे, जो लोग हमारी आयतो से फिरते है इस फिरने के कारण हम उनको शीघ्र बुरे कष्ट का दण्ड देगें. (157)

वह इसके सिवा और किस बात के प्रतीक्षम है कि उनके पास फरिश्ते आऐं या स्वंय तुम्हारे ईश्वर का कष्ट आए या तुम्हारे ईश्वर के चिन्ह आएं परन्तु जिस दिन तुम्हारे ईश्वर के चिन्ह आ जाऐगें तो जो व्यक्ति पहले विश्वास नही लाया होगा उस समय उसे आस्था लाना कुछ फायदा नही देगा, या अपने धर्म की स्थिति में शुभ कर्म न किए होगें, कह दो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी प्रतीक्षा करते है.(158) {43:61}

जो लोग अपने धर्म में वर्ग बनाऐगे और बहुत से दल हो जाऐगें (विरोध करके) उनसे तुम्हारा कोई काम नही उनका काम ईश्वर के समर्पित है फिर जो-जो वह करेगें वह उनको सब बताऐगा.(159) {2:85,6:65,9:31,30:31,32,42:21}

जो कोई शुभ कर्म लेकर आएगा उन को वैसे दस उपकार मिलेगें, और जो बुराई लाएगा उसे दण्ड वैसा ही मिलेगा, और उन पर अत्याचार नही किया जाएगा. (160)

कह दो मेरे ईश्वर ने मुझे सिधा मार्ग दिखा दिया है, धर्म इब्राहीम का जो एक ईश्वर ही की ओर के थे और अनेकेश्वर वादीयों में से न थे. (161)

(यह भी) कह दो कि मेरी नमाज और मेरी सारी उपासना और मेरा मरना और जीना सब ईश्वर विश्वपालक के लिए है. (162)

जिसका कोई साझी नही और मुझको इसी बात का आदेश मिला है और मैं सबसे प्रथम मुस्लिम हूं.(163)

कहो क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त और रब खोजूं और वही तो हर वस्तु का स्वामी है और जो कोई व्यक्ति कोई कर्म करता है वह उसी पर रहता है और कोई किसी दूसरे का भार न उठाएगा, फिर तुम सबको अपने ईश्वर के पास जाना है, फिर वह तुमको बता देगा जिस जिस वस्तु में तुम मत भेद करते थे. (164)

और वही तो है जिसने पृथ्वी में तुम को एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनाया और एक के दूसरे पर पद उंचे किए ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारी परिक्षा हो, निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर जल्द दण्ड देने वाला है और निःसंदेह वह क्षमा करने वाला दयालु है. (166){56:3,94:4}

نسبت کہیں سیدھے رستے پر ہوتے. سو تمہارے پاس تمہارے رب کی طرف سے دلیل اور ہدایت اور رحمت آ گئی تو اس سے بڑھ کر ظالم کون ہوگا جو اللہ کی آیتوں کو جھٹلائے اور ان سے پھرے. جو لوگ ہماری آیتوں سے پھرتے ہیں اس پھرنے کے سبب ہم اُن کو جلد بُرے عذاب کی سزا دیں گے(۱۵۷)

وہ اس کے سوا اور کس بات کے منتظر ہیں کہ ان کے پاس فرشتے آئیں یا خود تمہارے رب کا عذاب آئے یا تمہارے رب کی کچھ نشانیاں آئیں مگر جس روز تمہارے رب کی نشانیاں آ جائیں گی تو جو شخص پہلے ایمان نہیں لایا ہوگا اس وقت اسے ایمان لانا کچھ فائدہ نہ دے گا. یا اپنے ایمان کی حالت میں نیک عمل نہ کئے ہوں گے کہہ دو تم بھی انتظار کرو ہم بھی انتظار کرتے ہیں(۱۵۸)[۴۳:۶۱]

جو لوگ اپنے دین میں فرقے بنائیں گے اور بہت سے فرقے ہو جائیں گے (اختلاف کر کے) ان سے تمہارا کوئی کام نہیں ان کا کام اللہ کے سپرد ہے پھر جو جو وہ کریں گے وہ ان کو سب بتائے گا(۱۵۹)[۲:۸۵،۶:۶۵،۹:۳۱،۳۰:۳۱،۳۲،۴۲:۲۱]

جو کوئی نیکی لے کر آئے گا اس کو ویسی دس نیکیاں ملیں گی اور جو برائی لائے گا اسے سزا ویسی ہی ملے گی اور ان پر ظلم نہیں کیا جائے گا(۱۶۰)

کہہ دو مجھے میرے رب نے سیدھا رستہ دکھا دیا ہے دین ابراہیم کا جو ایک اللہ ہی کی طرف کے تھے اور مشرکوں میں سے نہ تھے(۱۶۱)

(یہ بھی) کہہ دو کہ میری نماز اور میری عبادت ساری اور میرا مرنا اور جینا سب اللہ رب العالمین کے لئے ہے(۱۶۲)

جس کا کوئی شریک نہیں اور مجھ کو اسی بات کا حکم ملا ہے اور میں سب سے اوّل مسلم ہوں(۱۶۳)

کہو کیا میں اللہ کے سوا اور رب تلاش کروں اور وہی تو ہر چیز کا مالک ہے اور جو کوئی شخص بھی کوئی عمل کرتا ہے وہ اسی پر رہتا ہے اور کوئی کسی دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گا، پھر تم سب کو اپنے رب کے پاس جانا ہے پھر وہ تم کو جتلائے گا جس جس چیز میں تم اختلاف کرتے تھے(۱۶۴)

اور وہی تو ہے جس نے زمین میں تم کو ایک دوسرے کا جانشین بنایا اور ایک کے دوسرے پر درجے بلند کئے تاکہ جو کچھ اس نے تمہیں دیا ہے اس میں تمہاری آزمائش ہو بے شک تمہارا رب جلد عذاب دینے والا ہے اور بے شک وہ بخشنے والا مہربان ہے(۱۶۵)[۵۶:۳،۹۴:۴]

सूरतुल एराफ-7 (मक्की)

سورت الاعراف۔۷ (مکی)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अलिफ लाम मीम साद, ऐ मुहम्मद (1)
यह पुस्तक जो तुम पर अवतरित हुई है इससे तुम्हारे हृदय में कोई झिझक न हो (यह अवतरित) इस लिए हुई है कि तुम इस के द्वारा से (लोगो को) डर सुनाओ और यह धर्म वालो के लिए शिक्षा है.(2){5:44,67,15:24,95,97,33:48}

المص۔اے محمد(۱) یہ کتاب جو تم پرنازل ہوئی ہے اس سے تمہارے دل میں کوئی جھجک نہ ہو (یہ نازل) اس لئے ہوئی ہے کہ تم اس کے ذریعہ سے (لوگوں کو) ڈرسناؤ اور یہ ایمان والوں کے لئے نصیحت ہے(۲)[۵:۴۴،۶۷،۱۵:۲۴،۹۵،۹۷،۳۳:۴۸]

लोगो! जो पुस्तक तुम्हारे लिए तुम्हारे ईश्वर के यहां से अवतरित हुई है इसका अनुकरण करो और इसके अतिरिक्त और रफ़ीकों का अनुकरण न करो परन्तु तुम कम ही शिक्षा स्वीकार करते हो. (3) {9:31,3:64}

لوگو! جو کتاب تمہارے لئے تمہارے رب کے یہاں سے نازل ہوئی ہے اس کی پیروی کرو اور اس کے سوا اور رفیقوں کی پیروی نہ کرو مگر تم کم ہی نصیحت قبول کرتے ہو (۳)[۹:۳۱،۳:۶۴]

नोट :- इस आयत में कुरआन के अनुकरण का आदेश दिया है, अतः मुहम्मद स0 ने भी इसका अनुरकण किया इससे ही प्रचार किया, अतः व्यक्ति को जो आस्तिक हो इस कुरआन की ही पैरवी करनी है, और किसी की नही, परन्तु आज मुस्लिम इस कुरआन का अनुकरण नही कर रहा और पुस्तकों की कर रहा है जो हानी वाली बात है अतः मुसलमानों को चिन्तन करना चाहिए कि सफलता ईश्वर किस के अनुकरण में बता रहा है और समय भी साक्षी है कि जब कुरआन का अनुकरण किया सफलता मिली जब इसको छोड़ दिया असफल हो गए

نوٹ:۔اس آیت میں قرآن کی پیروی کا حکم دیا ہے۔اس لئے محمدؐ نے بھی اس کی پیروی کی اس سے ہی تبلیغ کی اس لئے ہر انسان کو جو مومن ہو اس قرآن کی ہی پیروی کرنی ہے اور کسی کی نہیں۔لیکن آج مسلم اس قرآن کی پیروی نہیں کر رہا اور کتابوں کی کر رہا ہے جو نقصان والی بات ہے اس لئے مسلمان کو غور کرنا چاہیے کہ کامیابی اللہ کس کی پیروی میں بتا رہا ہے اور زمانہ بھی شاہد ہے کہ جب قرآن کی پیروی کی کامیابی ملی جب اس کو چھوڑ دیا ناکام ہو گئے۔

और कितनी ही बस्तियां हैं कि हमने (हमारे नियम ने) नष्ट कर डाली जिन पर हमारी यातना आती थी जबकि वह सोते थे या जब वह दोपहर को विश्राम करते थे. (4)

اور کتنی ہی بستیاں ہیں کہ ہم نے (ہمارے قانون) نے تباہ کر ڈالیں جن پر ہمارا عذاب آتا تھا جب کہ وہ سوتے تھے یا جب وہ قیلولہ دوپہر کو آرام کرتے تھے (۴)

तो जिस समय उन पर कष्ट आता था उनके मुख से यही निकलता था कि हम अत्याचार करते रहे अपने ऊपर. (5)

تو جس وقت ان پر عذاب آتا تھا ان کے منہ سے یہی نکلتا تھا کہ ہم ظلم کرتے رہے (اپنے اوپر) (۵)

नोट :-7:5 में अन्याय को स्वीकार कर रहे हैं परन्तु व्यर्थ, क्योंकि वह लोग अत्याचार करना नही छोड़ते थे अतः अन्यायी होने को स्वीकार करना उस समय काम देगा जब अत्याचार करना छोड़ कर शुभ कर्म कुरआन के अनुसार करने लगे, आज मुस्लिम जाति भी आयतें करीमा पढ़ कर अत्याचार को स्वीकार कर रही है परन्तु अत्याचार करना नही छोड़ रही और सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि कुरआन के विपरीत कर्म करते हैं, इसलिए कुरआन के विरूद्ध कर्म छोड़कर ही पश्चाताप माना जाएगा अन्यथा अत्याचारी होने को स्वीकार करते रहो कोई लाभ नही बरबाद होते रहोगे.

نوٹ:۔(۷:۵) میں ظلم کا اقرار کر رہے ہیں مگر بے کار کیونکہ وہ لوگ ظلم کرنا نہیں چھوڑتے تھے اس لئے ظالم ہونے کا اقرار کرنا اس وقت فائدہ دے گا جب ظلم کرنا چھوڑ کر نیک کام قرآن کے مطابق کرنے لگیں آج مسلم قوم بھی آیت کریمہ پڑھ کر ظلم کا اقرار کر رہی ہے مگر ظلم کرنا نہیں چھوڑ رہی ہے اور سب سے بڑا ظلم یہ ہے کہ قرآن کے خلاف عمل کرتے ہیں۔اس لئے خلاف قرآن عمل چھوڑ کر ہی توبہ مانی جائے گی۔ورنہ ظالم ہونے کا اقرار کرتے رہو کوئی فائدہ نہیں برباد ہوتے رہو گے۔

तो जिन लोगो की ओर ईशदूत भेजे गए हम उनसे भी ज्ञात करेंगे. (6)
फिर हम अपने ज्ञान से उनकी स्थिति का वर्णन करेंगे और हम कहीं अनुपस्थित नही थे (अर्थात उनकी पुस्तक लिखी जा रही है और उसको वह भी पढ़ लेगा और सुनाई भी जाएगी.(7) {17:13,14,75:17से19}

تو جن لوگوں کی طرف رسول بھیجے گئے ہم ان سے بھی پرسش کریں گے اور رسول سے بھی پوچھیں گے (۶)
پھر اپنے علم سے ان کے حالات عمل بیان کریں گے اور ہم کہیں غائب نہ تھے (یعنی ان کی کتاب لکھی جا رہی ہے اور اس کو وہ بھی پڑھ لے گا اور سنائی بھی جائے گی (۷)[۱۷:۱۳،۱۴،۷۵:۱۷تا۱۹]

उस दिन (कर्मों का) तुलना सत्य है तो जिन लोगो के भार भारी होंगे वह तो मुक्ति पाने वाले हैं. (8)
और जिनके भार हलके होंगे तो वही लोग हैं जिन्होनें अपने लिए हानि में डाला, इस लिए कि हमारी आयतो के बारे में अन्याय करते थे. (9)
और हम ही ने पृथ्वी में तुम्हारा ठिकाना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए जीविका उत्पन्न की (परन्तु)

اس روز (اعمال کا) تلنا حق ہے تو جن لوگوں کے وزن بھاری ہوں گے وہ تو نجات پانے والے ہیں (۸)
اور جن کے وزن ہلکے ہوں گے تو وہی لوگ ہیں جنہوں نے اپنے تئیں خسارے میں ڈالا اس لئے کہ ہماری آیتوں کے بارے میں بے انصافی کرتے تھے (۹)
اور ہم ہی نے زمین میں تمہارا ٹھکانہ بنایا اور اس میں تمہارے لئے سامان معیشت پیدا کئے (مگر تم کم ہی

तुम कम ही आज्ञाकारी करते हो. (10)

فرمانبرداری کرتے ہو(۱۰)

हमने तुम्हारी रचना का आरम्भ किया (अर्थात तुमको उत्पन्न किया मिट्टी से) फिर फरिश्तो से (अर्थात संसार की हर वस्तु से) कहा कि आदम को सज्दा करो (अर्थात वैगारी हो जाओ) इस आदेश पर सबने सज्दा किया परन्तु इबलीस ने नही किया.(11) {22:11}

ہم نے تمہاری تخلیق کی ابتدا کی (یعنی تم کو پیدا کیا مٹی سے) پھر تمہاری صورت بنائی پھر فرشتوں سے (یعنی کائنات کی ہر چیز سے) کہا کہ آدم کو سجدہ کرو (یعنی مسخر ہو جاؤ) اس حکم پر سب نے سجدہ کیا مگر ابلیس نے نہیں کیا(۱۱) [۲۲:۱۱]

नोट :- इसके विषय में सूरत बक़रा में लिखा जा चुका है, परन्तु संक्षेप में यहां लिखा जा रहा है कि रूप बनाने का अर्थ है प्रगतिशील विशेषता का वाहक आस्तित्व बनाया मानव की रचना के तुरन्त बाद ही मनुष्य को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं की खोज आरम्भ हो गई ईश्वर की दी हुई स्वभाव से मानव ने दूसरी रचना से कार्य लेना आरम्भ कर दिया और उन्नति करता रहा, कर रहा है और करता रहेगा, जबकि यह विशेषता और किसी रचना में नही है, जब आदम ने विराम के बाद (सुम्मा) उन वस्तुओं के नाम रख लिए जो उसके प्रयोग में आ रही थी तब ईश्वर ने आदम को फरिश्तों के सामने उत्तराधिकार के तौर पर आबाद रहने वाली रचना बनाकर प्रस्तुत किया, शब्द सुम्मा इस बात को प्रमाणित कर रहा है कि कुछ समय में मानव को यह ज्ञान आ गया तब प्रस्तुत किया सृजन के तुरन्त बाद ही नही.

نوٹ:۔اس کے بارے میں سورہ بقرہ میں لکھا جا چکا ہے مگر مختصراً یہ لکھا جا رہا ہے کہ صورت بنانے کا مطلب ہے ترقی پذیر خصوصیت کا حامل وجود بنایا. انسان کی پیدائش کے فوراً بعد ہی انسان کو اپنی ضرورت کی چیزوں کی تلاش شروع ہو گئی اللہ کی دی ہوئی جبلت سے انسان نے دوسری مخلوق سے کام لینا شروع کر دیا. اور ترقی کرتا رہا کر رہا ہے اور کرتا رہے گا. جب کہ یہ خصوصیت اور کسی مخلوق میں نہیں ہیں جب انسان نے وقفہ کے بعد (ثم) ان چیزوں کے نام رکھ لئے جو اس کے تصرف میں آ رہی تھیں تب اللہ نے انسان کو فرشتوں کے سامنے جانشینی کے طور پر آباد رہنے والی مخلوق بنا کر پیش کیا لفظ ثم اس بات پر دلالت کر رہا ہے کہ کچھ عرصے میں انسان کو یہ علم آ گیا تب پیش کیا تخلیق کے فوراً بعد ہی نہیں.

ईश्वर ने कहा जब स्वयं मैंने तुझे झुकने का आदेश दिया तो किस वस्तु ने तुझे झुकने से रोक दिया? इबलीस ने उत्तर दिया मैं आदम से उत्तम हूं तूने मुझे आग से उत्पन्न किया है और इसे मिट्टी से (12)

कहा तू स्थानान्तरित हो जा तुझे अधिकार नही कि यहां घमण्ड करे, पस निकल जा तू हीन है (13)

इबलीस ने कहा मुझे मेरे कार्य को उस दिन तक छूट दे जिस दिन लोग उठाए जाऐंगे (14)

اللہ نے کہا جب خود میں نے تجھے جھکنے کا حکم دیا تو کس چیز نے تجھے جھکنے سے روک دیا؟ ابلیس نے جواب دیا میں آدم سے بہتر ہوں تو نے مجھے آگ سے پیدا کیا اور اسے مٹی سے (۱۲)

فرمایا تو منتقل ہو جا تجھے حق نہیں کہ یہاں غرور کرے پس نکل جا تو ذلیل ہے (۱۳)

ابلیس نے کہا مجھے (میری تحریک کو) اس دن تک مہلت عطا کر جس دن لوگ اٹھائے جائیں گے (۱۴)

ईश्वर ने कहा तेरे काम को तो छूट है (किन्तु तुझे ज्ञात नही था अब ज्ञात हो गया कि मेरे नियम में पहले से ही तेरे कार्य की आयु महाप्रलय तक है इसलिए कि मेरा नियम बदला नही करता (15)

اللہ نے کہا تیرے کام کو تو مہلت ہی ہے (لیکن تجھے معلوم نہیں تھا اب علم ہو گیا کہ میرے قانون میں پہلے سے ہی تیرے کام کی عمر قیامت تک ہے اس لئے کہ میرا قانون بدلا نہیں کرتا (۱۵)

फिर इबलीस ने कहा कि जब मैं तेरे नियमानुसार तिरस्कृत हो गया हूं तो मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर उनको पथ भ्रष्ट करने के लिए बैठूंगा (16)

پھر ابلیس نے کہا کہ جب میں تیرے قانون کے مطابق ملعون ہو گیا ہوں تو میں بھی تیرے سیدھے رستے پر ان کو گمراہ کرنے کے لئے بیٹھوں گا (۱۶)

फिर उनके आगे से (अर्थात दोनों हाथों के बीच से) और पीछे से और दाएं से और बाएं से आऊंगा और तू उनमें से अधिकांश को आज्ञाकारी नही पाएगा (17)

ईश्वर ने कहा निकल जा यहां से तुच्छ पतित जो लोग उनमें से तेरा अनुकरण करेंगे मैं (उनसे और तुझ से) तुम सब से नर्क को भर दूंगा (18)

پھر ان کے آگے سے (یعنی دونوں ہاتھوں کے درمیان سے) اور پیچھے سے اور دائیں سے اور بائیں سے آؤں گا اور تو ان میں سے اکثر کو فرمانبردار نہیں پائے گا (۱۷)

اللہ نے فرمایا نکل جا یہاں سے ذلیل مردود جو لوگ ان میں سے تیری پیروی کریں گے میں (ان سے اور تجھ سے) تم سب سے جہنم کو بھر دونگا (۱۸)

और (फिर) आदम से कहा कि तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो सहो और जहां से चाहो खाओ पियो प्रयोग करो परन्तु इस शजर (अवज्ञा झगड़े के) पास न जाना अन्यथा पापी हो जाओगे (19) {2:35}

اور (پھر) آدم سے کہا کہ تم اور تمہاری بیوی جنت میں رہو سہو اور جہاں سے چاہو کھاؤ پیؤ استعمال کرو مگر اس شجر (نافرمانی جھگڑے) کے پاس نہ جانا ورنہ گنہگار ہو جاؤ گے (۱۹) [۲:۳۵]

नोट- आयत 7:19 और 2:35 में है कि आदम व हव्वा को स्वर्ग में साथ प्रविष्ट किया किन्तु तफ्सीरों और हदीसों व कथनों में लिखा है कि आदम स्वर्ग में अकेले प्रविष्ट किये वह वहां उदास रहते थे

نوٹ:۔آیت (۷:۱۹) اور (۲:۳۵) میں ہے کہ آدم وحوا کو جنت میں ساتھ داخل کیا لیکن تفاسیر اور احادیث وقصص میں لکھا ہے کہ آدم جنت میں اکیلے داخل کئے

तो एक दिन ईश्वर ने जब आदम सो रहे थे तो उनकी बाईं पसली निकाली और उससे उनका जोड़ा बनाया और उनके पास छोड़ दिया उसको देखकर आदम प्रसन्न हो गए परन्तु यह विचार गलत है उचित यह है कि ईश्वर ने आदम व हव्वा को एक साथ एक ही जाती अर्थात मिट्टी से बनाया और साथ ही उनको स्वर्ग में प्रविष्ट किया इसके अतिरिक्त और सब विचार मिथ्या हैं.

तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उनकी छुपी वस्तुएं जो उनसे छुपी थीं खोल दे अतः उसने कहा तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें इस शजर से केवल इसलिए रोका है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें स्थायी जीवन न मिल जाए (20)

और उन दोनों से शपथ खा कर कहा कि मैं तो तुम्हारा शुभ चिन्तक हूं (21)

इस प्रकार धोका देकर वह उन दोनों को धीरे-धीरे अपने छल पर ले आया अतः जब उन्होंने इस शजर का स्वाद चखा तो उनके सतर एक दूसरे के सामने खुल गए (अर्थात उनको अनुभव होने लगा) और वह अपने शरीरों को उपवन के पत्तों से ढांकने लगे तब उनके रब ने उनको पुकारा कि क्या मैंने तुमको इस शजर के पास जाने से रोका नहीं था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है. (22)

नोट- हमारे यहां एक आस्था यह भी है कि शतान ने पहले हव्वा को बहकाया और हव्वा ने आदम को यह भी मिथ्या है आयत में स्पष्ट है कि दोनों को बहकाया मैं भावार्थ में शजर को शजर ही लिख रहा हूं इसलिए कि आदम की घटना में शजर से अर्थ वृक्ष नहीं है अपितु और है इसका अर्थ देखने के लिए आयत {4:65, 17:60} देखो उनमें शजर का अर्थ विवाद झगड़ा, विरोध है जो मैंने सूरत बकरा में आदम की घटना में लिखा है.

दोनों निवेदन करने लगे कि ईश्वर हमने अपनी जानों पर अत्याचार किया है और अगर तूने हमें क्षमा नहीं किया होता और हम पर दया न की होती तो हम नष्ट हो जाते अब भी हमारी मोक्ष और हम पर दया कर. (23)

कहा स्थानान्तरित हो जाओ तुम एक दूसरे के शत्रु होंगे और तुम्हारे लिए एक विशेष समय तक पृथ्वी में ही निवास का स्थान है और जीविका है. (24) {2:241, 12:17, 16:80}

और कहा वहीं तुमको जीना और वहीं मरना है और उसी में से निकाला जाएगा. (25)

ऐ मानव की सन्तान हमने तुम्हारे लिए वस्त्र प्रस्तुत कर दिया है जो तुम्हारे सतर को छुपाता है और शोभा और सज्जा का साधन (और दूसरा वस्त्र) सदाचारिता का वस्त्र है (जो बुराईयों से बचाता है) और यही वस्त्र सबसे उत्तम है (इसलिए इस वस्त्र को न उतरने देना शैतान इस वस्त्र को ही उतरवाना चाहता है) यह ईश्वर के चिन्हों में है ताकि लोग शिक्षा प्राप्त करें. (26)

وہ وہاں اداس رہتے تھے تو ایک دن اللہ نے جب آدم سو رہے تھے تو ان کی بائیں پسلی نکالی اور اس سے ان کا جوڑا بنایا اور ان کے پاس چھوڑ دیا اس کو دیکھ کر آدم خوش ہو گئے. مگر یہ خیال غلط ہے. درست یہ ہے کہ اللہ نے آدم وحوا کو ایک ساتھ ایک ہی جنس یعنی مٹی سے بنایا اور ساتھ ہی ان کو جنت میں داخل کیا اس کے علاوہ اور سب عقیدے غلط ہیں.

تو شیطان دونوں کو بہکانے لگا تاکہ ان کی ستر کی چیزیں جو ان سے پوشیدہ تھیں کھول دے چنانچہ اس نے کہا تمہارے رب نے تمہیں اس شجر سے صرف اس لئے روکا ہے کہ کہیں تم فرشتے نہ بن جاؤ یا تمہیں دائمی زندگی نہ مل جائے (۲۰)

اور ان دونوں سے قسم کھا کر کہا کہ میں تو تمہارا خیر خواہ ہوں (۲۱)

اس طرح دھوکا دے کر وہ ان دونوں کو رفتہ رفتہ اپنے فریب پر لے آیا. پس جب انہوں نے اس شجر کا مزا چکھا تو ان کے ستر ایک دوسرے کے سامنے کھل گئے (یعنی ان کو احساس ہونے لگا) اور وہ اپنے جسموں کو جنت کے پتوں سے ڈھانکنے لگے تب ان کے رب نے ان کو پکارا کہ کیا میں نے تم کو اس شجر (کے پاس جانے) سے منع نہیں کیا تھا اور بتا نہیں دیا تھا کہ شیطان تمہارا دشمن ہے کھلا (۲۲)

نوٹ: ۔ ہمارے یہاں ایک عقیدہ یہ بھی ہے کہ شیطان نے پہلے حوا کو بہکایا اور حوا نے آدم کو. یہ بھی غلط ہے آیت میں صاف ہے کہ دونوں کو بہکایا. میں مفہوم میں شجر کو شجر ہی لکھ رہا ہوں. اس لئے کہ آدم کے واقعہ میں شجر سے مراد درخت نہیں ہے بلکہ اور ہے اس کا مطلب دیکھنے کے لئے آیت (۴:۶۵؛ ۱۷:۶۰) دیکھو. اُن میں شجر کا مطلب تنازعہ جھگڑا اختلاف ہے جو میں نے سورت بقرہ میں آدم کے واقعہ میں لکھا ہے.

دونوں عرض کرنے لگے کہ رب ہم نے اپنی جانوں پر ظلم کیا ہے اور اگر تو نے ہمیں بخشا نہیں ہوتا اور ہم پر رحم نہیں کیا ہوتا تو ہم تباہ ہو جاتے اب بھی ہماری مغفرت اور ہم پر رحم کر (۲۳)

فرمایا منتقل ہو جاؤ تم ایک دوسرے کے دشمن ہو گے اور تمہارے لئے ایک خاص مدت تک زمین میں ہی جائے قرار ہے اور سامان زیست ہے (۲۴) [۲:۲۴۱:۱۲:۱۷:۱۶:۸۰]

اور فرمایا وہیں تم کو جینا اور وہیں مرنا ہے اور اسی میں سے تم کو نکالا جائے گا (۲۵)

اے بنی آدم ہم نے تمہارے لئے لباس مہیا کر دیا ہے جو تمہاری ستر پوشی کرتا ہے اور زیب وزینت کا ذریعہ (اور دوسرا لباس) پرہیز گاری کا لباس ہے (جو برائیوں سے بچاتا ہے) اور یہی لباس سب سے بہتر ہے (اس لئے اس لباس کو نہ اترنے دینا شیطان اس لباس کو ہی اتروانا چاہتا ہے) یہ اللہ کی نشانیوں میں سے ہے تاکہ لوگ نصیحت حاصل کریں (۲۶)

ऐ आदम की सन्तान शैतान तुम्हें बहका न दे जिस प्रकार तुम्हारे माता पिता को उनवन से निकलना दिया था और उनका सदाचारीता वस्त्र उतरवा लिया था और उनसे बुराई करवादी थी अर्थात सतर खोल दिए थे अर्थात उनको विवेक आने लगा था (और वह उन बुराईयों को छुपाने लगे) वह और उसके भाई तुमको ऐसे स्थान से देखते रहते हैं जहां से तुम उनको नहीं देख सकते हमने शैतानों को उन्ही लोगों का मित्र बनाया है जो विश्वास नही रखते. (27)

اے بنی آدم شیطان تمہیں بہکا نہ دے جس طرح تمہارے ماں باپ کو جنت سے نکلوا دیا تھا اور ان کا پرہیز گاری کا لباس اتروا لیا تھا اور ان سے برائی کروا دی تھی یعنی ستر کھول دیئے تھے یعنی ان کو شعور آنے لگا تھا (اور وہ ان برائیوں کو چھپانے لگے) وہ اور اس کے بھائی تم کو ایسی جگہ سے دیکھتے رہتے ہیں جہاں سے تم ان کو نہیں دیکھ سکتے ہم نے شیطانوں کو انہی لوگوں کا رفیق بنایا ہے جو ایمان نہیں رکھتے (۲۷)

नोट- आयत में वस्त्र उतरवाने की बात है यदि कपड़े का वस्त्र माना जाए तो आदम व हव्वा पर उस समय कपड़े का वस्त्र कहां था जो शैतान ने उतरवा दिया था अतः आयत में वस्त्र का अर्थ सदाचारीता का वस्त्र ही अर्थ है जो आदम व हव्वा से त्रुटि हो गई थी और उस समय तक जो उन को विवेक नही था कि हम नंगे हैं यह बुद्धिहीनता का आवर्ण भी बुद्धि से उतर गया और उनको विवेक आने लगा और अपने गुप्तांगोको पत्तों से छुपाने लगे.

نوٹ:۔آیت میں لباس اتروانے کی بات ہے اگر کپڑے کا لباس مانا جائے تو آدم وحوا پر اس وقت کپڑے کا لباس کہاں تھا جو شیطان نے اتروا دیا تھا اس لئے آیت میں لباس کا مطلب لباس تقوا ہی مطلب ہے جو آدم وحوا سے غلطی ہوگئی تھی اور اس وقت تک جو ان کو شعور نہیں تھا کہ ہم ننگے ہیں یہ کم عقلی کا پردہ بھی عقل سے اتر گیا اور ان کو شعور ہونے لگا اور اپنی شرم گاہوں کو پتوں سے چھپانے لگے۔

और जब कोई निर्लज्जता का कार्य करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते देखा है और ईश्वर ने भी हमको यही आदेश दिया है कह दो कि ईश्वर निर्लज्जता के कार्य करने का कदापि आदेश नही देता भला तुम ईश्वर के प्रति ऐसी बात क्यों कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नही. (28)

اور جب کوئی بے حیائی کا کام کرتے ہیں تو کہتے ہیں کہ ہم نے اپنے بزرگوں کو اسی طرح کرتے دیکھا ہے اور اللہ نے بھی ہم کو یہی حکم دیا ہے کہہ دو کہ اللہ بے حیائی کے کام کرنے کا ہرگز حکم نہیں دیتا. بھلا تم اللہ کی نسبت ایسی بات کیوں کہتے ہو جس کا تمہیں علم نہیں (۲۸)

कह दो कि मेरे ईश्वर ने तो न्याय करने का आदेश दिया है और यह कि हर नमाज के समय सीधा मुख क्या करो (अर्थात ईश्वर की ओर ध्यान आकृष्ट रखो) और विशेष उसीकी पूजा करो और उसी को पुकारो उसने जिस प्रकार आरम्भ में उत्पन्न किया था उस प्रकार तुम फिर उत्पन्न होंगे. (29)

کہہ دو کہ میرے رب نے تو انصاف کرنے کا حکم دیا ہے اور یہ کہ ہر نماز کے وقت سیدھا رخ کیا کرو (یعنی اللہ کی طرف توجہ قائم رکھو) اور خاص اسی کی عبادت کرو اس کو پکارو اس نے جس طرح ابتدا میں پیدا کیا تھا اسی طرح تم پھر پیدا ہو گے (۲۹)

एक दल ने तो सीधा मार्ग ग्रहण किया परन्तु दूसरे दल पर पथ भ्रष्ट चिमट कर रह गई है. क्योंकि उन्होंने ईश्वर के अतिरिक्त शैतानों को अपना अभि-भावक बना लिया है और वह समझ रहे हैं कि हम सीधे मार्ग पर हैं. (30)

ایک گروہ نے تو سیدھا راستہ اختیار کیا مگر دوسرے گروہ پر گمراہی چسپاں ہو کر رہ گئی ہے. کیونکہ انہوں نے اللہ کے بجائے شیاطین کو اپنا سرپرست بنا لیا ہے اور وہ سمجھ رہے ہیں کہ ہم سیدھی راہ پر ہیں (۳۰)

ऐ आदम की सन्तान हर पूजा के अवसर पर अपनी शोभा से सुसज्जित रहो और खाओ और पियो और सीमा से उल्लंघन न करो ईश्वर सीमा से बढ़ने वालो को पसंद नही करता. (31)

اے بنی آدم ہر عبادت کے موقع پر اپنی زینت سے آراستہ رہو اور کھاؤ اور پیو اور حد سے تجاوز نہ کرو، اللہ حد سے بڑھنے والوں کو پسند نہیں کرتا (۳۱)

ज्ञात तो करो कि जो शोभा और खाने की पवित्र वस्तुएं ईश्वर ने अपने बन्दों के लिए उत्पन्न की हैं उनको अवैध किसने किया है? कहदो कि यह वस्तुएं दुनिया के जीवन में भी धर्म वालो के लिए हैं और प्रलय के दिन विशेष उन्ही का भाग होगा. इसी प्रकार ईश्वर अपनी धाराऐं समझने वालों के लिए खोलकर वर्णन करता है. (32)

پوچھو تو کہ جو زینت اور کھانے کی پاکیزہ چیزیں اللہ نے اپنے بندوں کے لئے پیدا کی ہیں ان کو حرام کس نے کیا ہے؟ کہہ دو کہ یہ چیزیں دنیا کی زندگی میں بھی ایمان والوں کے لئے ہیں اور قیامت کے دن خالص انہی کا حصہ ہوں گی. اسی طرح اللہ اپنی آیتیں سمجھنے والوں کے لئے کھول کر بیان کرتا ہے (۳۲)

कहदो कि मेरे ईश्वर ने तो निर्लज्जता की बातो को प्रकट हो या गुप्त और पापो को और अन्याय पूर्ण बलात करने को अवैध किया है और इसको भी कि तुम किसी को ईश्वर का सहयोगी बनाओ जिसको

کہہ دو کہ میرے رب نے تو بے حیائی کی باتوں کو ظاہر ہوں یا پوشیدہ اور گناہ کو اور ناحق زیادتی کرنے کو حرام کیا ہے اور اس کو بھی کہ تم کسی کو اللہ کا شریک بناؤ جس کی اس نے کوئی سند نازل نہیں کی اور اس کو بھی کہ اللہ کے بارے

उसने कोई प्रमाण अवतरित नही किया और इसका भी कि ईश्वर के विषम में ऐसी बाते कहो जिनक तुम्हें कुछ ज्ञान नही, (33) {6:151, 17:29-41}

میں ایسی باتیں کہو جن کا تمہیں کچھ علم نہیں (۳۳)[۶:۱۵۱؛ ۱۷:۲۹،۴۱]

हर समुदाय के लिए (पतन का) एक समय निश्चित है जब वह आजाता है तो न एक घड़ी देर होती है और न शीघ्रता, (34)

ہر امت کے لئے (زوال کا) ایک وقت مقرر ہے جب وہ آجاتا ہے تو نہ ایک گھڑی دیر ہو سکتی ہے اور نہ جلدی (۳۴)

ऐ आदम की सन्तान जब हमारे रसूल तुम्हारे पास आएं जो तुममें से हो तुम्हारे पास आए (जो हम आरम्भ में कह चुके है) और हमारी आयतें तुमको सुनाया करें (तो उनपर विश्वास लाया करो कि) जो व्यक्ति डरता रहेगा और अपनी दशा ठीक रखेगा तो ऐसे लोगों को न कुछ भय होगा और न वह शोक पूर्ण होंगे, (35)

اے بنی آدم جب ہمارے رسول جو تم میں سے ہوں تمہارے پاس آئیں (جو ہم نے آغاز میں فرما دیا تھا) اور ہماری آیتیں تم کو سنایا کریں (تو ان پر ایمان لایا کرو کہ) جو شخص ڈرتا رہے گا اور اپنی حالت درست رکھے گا تو ایسے لوگوں کو نہ کچھ خوف ہوگا اور نہ وہ غم زدہ ہوں گے (۳۵)[۳:۸۱]

और जो हमारी आयतों को झुठलाएंगे और उन का पालन नही करेंगे वही नर्की है कि सदैव उसमें रहेंगे, (36)

اور جو ہماری آیتوں کو جھٹلائیں گے اور ان سے سرتابی کریں گے وہی دوزخی ہیں کہ ہمیشہ اس میں رہیں گے (۳۶)

तो उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो ईश्वर पर झूट बान्धे या उसकी आयतों को झुठलाए उनको उनके भाग्य का लिखा मिलता ही रहेगा यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए जीव निकालने आएंगे तो कहेंगे कि जिन को तुम ईश्वर के अतिरिक्त पुकारते थे वह कहां है? वह कहेंगे (ज्ञात नहीं) कि वह हमसे कहां लुप्त हो गए और अंगीकार करेंगे कि निःसन्देह हम नास्तिक थे, (37) {5:11, 3:55, 10:46}

تو اس سے زیادہ ظالم کون ہوگا جو اللہ پر جھوٹ باندھے یا اس کی آیتوں کو جھٹلائے۔ ان کو ان کے نصیب کا لکھا ملتا ہی رہے گا۔ یہاں تک کہ جب اُن کے پاس ہمارے بھیجے ہوئے جان نکالنے آئیں گے تو کہیں گے کہ جن کو تم اللہ کے سوا پکارتے تھے وہ کہاں ہیں؟ وہ کہیں گے (معلوم نہیں) کہ وہ ہم سے کہاں غائب ہو گئے۔ اور اقرار کریں گے کہ بے شک ہم کافر تھے (۳۷)[۵:۱۱۷؛ ۳:۵۵؛ ۱۰:۴۶]

तो ईश्वर कहेगा कि जिन्नो और इन्सानों के जो दल तुमसे पहले हो चुके हैं उनही के साथ तुमभी प्रविष्ट नर्क हो जाओ जब एक दल जा प्रविष्ट होगा तो अपनी बहन (अर्थात अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर धिक्कार करेगा यहां तक कि जब सब उसमें प्रविष्ट हो जाएंगे तो पिछला वर्ग पहले के बारे में कहेगा कि ऐ ईश्वर इनही लोगों ने हमको पथ भ्रष्ट किया था तू इनको नर्क की अग्नि का दोगुना दण्ड दे ईश्वर कहेगा कि सबको दोगुना है परन्तु तुम जानते नही, (38)

تو اللہ فرمائے گا کہ جنوں اور انسانوں کی جو جماعتیں تم سے پہلے ہو گزری ہیں اُن ہی کے ساتھ تم بھی داخل جہنم ہو جاؤ۔ جب ایک جماعت جا داخل ہوگی تو اپنی بہن (یعنی اپنی جیسی دوسری جماعت) پر لعنت کرے گی یہاں تک کہ جب سب اس میں داخل ہو جائیں گے تو پچھلی جماعت پہلی کی نسبت کہے گی کہ اے رب ان ہی لوگوں نے ہم کو گمراہ کیا تھا تو ان کو آتش جہنم کا دگنا عذاب دے۔ اللہ فرمائے گا کہ سب کو دگنا ہے مگر تم جانتے نہیں (۳۸)

पहला दल पिछले दल से कहेगा तुम्हें हम पर किसी प्रकार की श्रेष्ठता नही मिली जैसी कुछ बुराई दुनिया में करते हो अब उसका स्वाद चखों, (39)

پہلی جماعت پچھلی جماعت سے کہے گی تمہیں ہم پر کسی طرح کی فوقیت نہیں ملی تو جیسی کچھ برائی دنیا میں کرتے رہے ہو اب اس کا مزہ چکھو (۳۹)

जिन लोगों ने हमारी धाराओं को झुठलाया और उनकी अवज्ञा की उनके लिए उच्चता के द्वार न खोले जाएंगे उनका स्वर्ग में प्रविष्ट होना ऐसा ही असंभव है जैसा सूई के नाके से ऊंट का निकल जाना और पापीयों को हम ऐसा ही दण्ड दिया करते हैं (40) {2:80-81-111-112-167-175-23, 2:25, 3:24-25, 62:5-7}

جن لوگوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا اور ان سے سرتابی کی ان کے لئے بلندی کے دروازے نہ کھولے جائیں گے ان کا جنت میں داخل ہونا ایسا ہی ناممکن ہے جیسا سوئی کے ناکے سے اونٹ کا نکل جانا اور گنہگاروں کو ہم ایسی ہی سزا دیا کرتے ہیں (۴۰)[۲:۸۰،۸۱،۱۱۱،۱۱۲،۱۶۷،۱۷۵،۲۳؛ ۲:۲۵؛ ۳:۲۴،۲۵؛ ۶۲:۵،۷]

ऐसे नास्तिको के लिए नीचे आग का बिछोना और ऊपर आग की चादर होगी हम अन्यायीयों को ऐसा ही दण्ड देते है, (41)

ایسے کافروں کے لئے نیچے آگ کا بچھونا اور اوپر آگ کی چادر ہوگی ہم ظالموں کو ایسی ہی سزا دیتے ہیں (۴۱)

और जो लोग आस्था लाए और सत्कर्म करते रहे हम किसी व्यक्ति को उस की शक्ति से अधिक कष्ट नही देते ऐसे ही लोग स्वर्ग वाले है और वह उसमें

اور جو لوگ ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے ہم کسی شخص کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتے ایسے

सदैव रहेंगे. (42)

और हमने उनके सीनो से द्वेष कपट खींच लिए है और उन स्वर्गीयों के नीचे नहर बह रही होंगी और कहेंगे कि ईश्वर का धन्यवाद है जिसने हमको यहां का मार्ग दिखाया और यदि ईश्वर हम को मार्ग न दिखाता तो हम मार्ग न पाते निःसंदेह हमारे ईश्वर के रसूल सत्य बात लेकर आए थे और मनादी कर दी जाएगी कि तुम उन कर्मों के बदले में जो करते थे इस स्वर्ग के स्वामी बना दिए गए हो. (43) {3:161}

ہی لوگ اہل جنت ہیں اور وہ اس میں ہمیشہ رہیں گے (۴۲)

اور ہم نے ان کے سینوں میں سے کینے کھینچ لئے ہیں ان جنتیوں کے نیچے نہریں بہ رہی ہوں گی اور کہیں گے کہ اللہ کا شکر ہے جس نے ہم کو یہاں کا رستہ دکھایا اور اگر اللہ ہم کو رستہ نہ دکھاتا تو ہم رستہ نہ پاتے بےشک ہمارے رب کے رسول حق بات لے کر آئے تھے اور منادی کر دی جائے گی کہ تم اُن اعمال کے صلے میں جو کرتے تھے اس جنت کے مالک بنا دئے گئے ہو (۴۳) [۳:۱۶۱]

और स्वर्ग वाले नर्क वालो से पुकार कर कहेंगे कि जो वचन हमारे ईश्वर ने हम से किया था हमने तो उसे सच्चा पाया भला जो वचन तुम्हारे ईश्वर ने तुम से किया था तुमने भी उसे सत्य पाया? वह कहेंगे हां तो उनमें एक पुकारने वाला पुकार देगा कि अत्याचारीयों पर ईश्वर की धिक्कार. (44) {17:60}

उन लोगों पर जो ईश्वर के मार्ग से रोकते और उसमें कजी ढूंढते और परलोक से इनकार कर रहें हैं. (45)

उन दोनों दलों के मध्य एक आवरण बाधक होगा जिसकी ऊंचाई (ऐराफ) पर कुछ लोग और होंगे वह हर एक को उनके लक्षण से पहचान लेंगे. और स्वर्ग वालों को पुकार कर कहेंगे कि आप पर ईश्वर की कृपा हो वह स्वर्ग वाले अभी प्रविष्ट तो नही हुवे परन्तु आशा वानहोंगे (ऊंचाई वाले तो स्वर्ग वाले होंगे ही वह लोग आशावनों को पुकारेंगे ओर वह लोग निःसंदेह स्वर्ग के अधिकारी होंगे. (46) {56:7-13, 35:32}

اور اہل جنت دوزخیوں سے پکار کر کہیں گے کہ جو وعدہ ہمارے رب نے ہم سے کیا تھا ہم نے تو اسے سچا پایا بھلا جو وعدہ تمہارے رب نے تم سے کیا تھا تم نے بھی اسے سچا پایا؟ وہ کہیں گے ہاں تو ان میں ایک پکارنے والا پکار دے گا کہ بےانصافوں پر اللہ کی لعنت (۴۴) [۱۷:۶۰]

ان لوگوں پر جو اللہ کی راہ سے روکتے اور اس میں کجی ڈھونڈتے اور آخرت سے انکار کر رہے ہیں (۴۵)

اُن دونوں گروہوں کے درمیان ایک پردہ حائل ہوگا جس کی بلندی (اعراف) پر کچھ لوگ اور ہوں گے وہ ہر ایک کو ان کی علامت سے پہچان لیں گے. اور اہل جنت کو پکار کر کہیں گے کہ آپ پر اللہ کی رحمت ہو وہ اہل جنت ابھی داخل تو نہیں ہوئے مگر امیدوار ہوں گے (اعراف والے تو جنت) والے ہوں گے ہی وہ لوگ امیدواروں کو پکاریں گے اور وہ یقیناً جنت کے حقدار ہوں گے (۴۶) [۵۶:۷-۱۳، ۳۵:۳۲]

और जब उन स्वर्ग के आशावानों की दृष्टि नर्क वालों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे ऐ रब हमें उन अत्चारीयों में सम्मिलित न करना. (47)

ऊंचाई वाले (नास्तिक) लोगों को जिन्हें उनकी सूरतों से पहचान करते होंगे पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारा दल ही काम आया और न तुम्हारा घमंड (48)

फिर वह नर्क वालों से ज्ञात करेंगे स्वर्ग वालो की ओर संकेत करके देखो क्या यह वही लोग है जिन के बारे में तुम शपथ खा खा कर कहते थे ईश्वर उन पर किसी प्रकार की कृपा न करेगा? (तो सुनो आज उनसे कहा जा रहा है कि आस्तिको) तुम स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ तुम्हें कुछ भय नही और न तुमको शोक होगा. (49)

اور جب ان جنت کے امیدواروں کی نگاہیں دوزخ والوں کی طرف پھریں گی تو کہیں گے اے رب ہمیں ان ظالم لوگوں میں شامل نہ کرنا (۴۷)

اہل اعراف (کافر) لوگوں کو جنہیں ان کی صورتوں سے شناخت کرتے ہوں گے پکاریں گے اور کہیں گے (کہ آج) نہ تو تمہاری جماعت ہی تمہارے کام آئی اور نہ تمہارا تکبر (۴۸)

پھر وہ دوزخیوں سے پوچھیں گے جنتیوں کی طرف اشارہ کر کے دیکھو کیا یہ وہی لوگ ہیں جن کے بارے میں تم قسمیں کھا کھا کر کہتے تھے اللہ اُن پر کسی طرح کی رحمت نہ کرے گا؟ (تو سنو آج ان سے کہا جا رہا ہے کہ مومنوں) تم جنت میں داخل ہو جاؤ تمہیں کچھ خوف نہیں اور نہ تم کو رنج ہوگا (۴۹)

और नर्की स्वर्ग के लोगों से कहेंगे कि कुछ पानी हम पर बहाओ या जो जीविका ईश्वर ने तुम्हें दी है उससे कुछ दो वह उत्तर देंगे कि ईश्वर ने स्वर्ग का पानी और जीविका नास्तिकों पर बन्द कर दिया है (50)

उन लोगों पर जिन्होंने अपने धर्म को खेल बना लिया और दुनिया के जीवन ने उनको धोके में डाल दिया तो जिस प्रकार वह लोग उस दिन के आने को भूले रहे और हमारी धाराओं से विरोधी हो रहे

اور دوزخی جنتیوں سے کہیں گے کہ کسی قدر ہم پر پانی بہاؤ یا جو رزق اللہ نے تمہیں عنایت کیا ہے اس سے کچھ دو. وہ جواب دیں گے کہ اللہ نے جنت کا پانی اور رزق کافروں پر بند کر دیا ہے (۵۰)

ان لوگوں پر جنہوں نے اپنے دین کو کھیل بنالیا اور دنیا کی زندگی نے ان کو دھوکے میں ڈال دیا تو جس طرح وہ لوگ اس دن کے آنے کو بھولے رہے اور ہماری آیتوں سے

थे इसी प्रकार आज हम भी उन्हें भुला देंगे (51)
और हमने उनके पास पुस्तक पहुंचा दी है जिसको ज्ञान व बुद्धि के साथ खोल खोलकर वर्णन कर दिया है वह आस्तिक लोगों के लिए पथ प्रदर्शन और दया है (52)
अब क्या वह लोग इसके सिवा किसी और बात के प्रतीक्षक हैं कि वह फल सामने आ जाए जिसकी यह पुस्तक सूचना दे रही है? जिस रोज वह फल सामने आ जाएगा तो वही लोग जिन्होंने उसे भूला रखा था वह बोल उठेंगे कि निःसन्देह हमारे रब के ईशदूत सत्य लेर आए थे, भला आज हमारे कोई अनुशंसक हैं कि हमारी अनुशंसा करें या हम फिर लौटा दिए जाएं कि जो कर्म हम करते थे (वह न करें अपितु) उनके अतिरिक्त और सत्कर्म करें, निःसन्देह उन लोगों ने अपनी हानि की, और जो कुछ मिथ्यारोपण किया करते थे उनसे सब जाता रहा (53) {10:39}
कुछ शंका नही तुम्हारा ईश्वर ही रब है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छे अय्याम (चरण) में उत्पन्न किया फिर अर्श पर (अर्थात राज सिंहासन पर) जा बैठा वही रात को दिन पर ढकता है और फिर दिन रात्रि के पीछे दौड़ा चला आता है और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को उत्पन्न किया, सब उसके आदेशानुसार कार्य में लगे हुए हैं देखो सब रचना भी उसी की है और आदेश भी उसी का है विश्व पालक बड़ी सम्पन्नता वाला है (54)
अपने ईश्वर से नम्रता से और चुपके चुपके प्रर्थाना किया करो वह सीमा से बढ़ने वालों को मित्र नही रखता (55)
और दुनिया पृथ्वी में सुधार के बाद भ्रष्ट न करना और ईश्वर से भय करते हुए और लालसा रखकर मांगते रहना, कुछ शंका नही कि ईश्वर की कृपा शुभ कर्म करने वालों से निकट है (56)
और वही तो है जो हवाओं को अपनी करूणा वर्षा के आगे आगे शुभ सूचना लिए हुए प्रेषित करता है फिर जब वह पानी से लदे हुए बादल उठा लेती है है तो उन्हें किसी मृतक भूमि की ओर चला देता है फिर बादल से वर्षा बरसा देते हैं फिर वर्षा से हर प्रकार के फल उत्पन्न करते हैं इसी प्रकार हम मृतकों को जीवित करके बाहर निकालेंगे ताकि तुम चिन्तन से काम लो (57)
जो धरती पवित्र है उसमें से पेड़ पौदे भी ईश्वर के नियमानुसार अच्छा निकलते हैं और जो विकृत है उसमें से जो निकलता है निकम्मा होता है, इसी प्रकार हम धाराओं को फेर-फेरकर वर्णन करते हैं आज्ञाकारी लोगों के लिए (58)
हमने नूह अ0 को उनकी जाति की ओर भेजा तो उन्होंने कहा ऐ मेरी जाति के लोगो! ईश्वर की पूजा करो इसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही, मुझे तुम्हारे विषय में बड़े दिन के दण्ड का डर है (59)

منکر ہو رہے تھے اسی طرح آج ہم بھی انہیں بھلا دیں گے (۵۱)
اور ہم نے اُن کے پاس کتاب پہنچا دی ہے جس کو علم و دانش کے ساتھ کھول کھول کر بیان کر دیا ہے وہ مومن لوگوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے (۵۲)
اب کیا وہ لوگ اس کے سوا کسی اور بات کے منتظر ہیں کہ وہ انجام سامنے آجائے جس کی یہ کتاب خبر دے رہی ہے؟ جس روز وہ انجام سامنے آجائے گا تو وہی لوگ جنہوں نے اسے بھلا رکھا تھا وہ بول اٹھیں گے کہ بے شک ہمارے رب کے رسول حق لے کر آئے تھے بھلا آج ہمارے کوئی شفارشی ہیں کہ ہماری شفارش کریں یا ہم پھر لوٹا دئے جائیں کہ جو عمل ہم کرتے تھے (وہ نہ کریں بلکہ) ان کے سوا اور نیک عمل کریں۔ بے شک ان لوگوں نے اپنا نقصان کیا اور جو کچھ افترا کیا کرتے تھے ان سے سب جاتا رہا (۵۳) [۳۹:۱۰]
کچھ شک نہیں تمہارا رب وہی رب ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ ایام (دور) میں پیدا کیا پھر عرش پر (یعنی حکمرانی کے تخت پر) جا ٹھہرا وہی رات کو دن پر ڈھانک دیتا ہے اور پھر دن رات کے پیچھے دوڑا چلا آتا ہے اور اسی نے سورج اور چاند اور ستاروں کو پیدا کیا سب اس کے حکم کے مطابق کام میں لگے ہوئے ہیں دیکھو سب مخلوق بھی اسی کی ہے اور حکم بھی اسی کا ہے رب العالمین بڑی برکت والا ہے (۵۴)
اپنے رب سے عاجزی سے اور چپکے چپکے دعائیں مانگا کرو وہ حد سے بڑھنے والوں کو دوست نہیں رکھتا (۵۵)
اور دنیا زمین میں اصلاح کے بعد خرابی نہ کرنا اور اللہ سے خوف کرتے ہوئے اور امید رکھ کر دعائیں مانگتے رہنا۔ کچھ شک نہیں کہ اللہ کی رحمت نیکی کرنے والوں سے قریب ہے (۵۶)
اور وہی تو ہے جو ہواؤں کو اپنی رحمت مینہ کے آگے آگے خوشخبری لئے ہوئے بھیجتا ہے۔ پھر جب وہ پانی سے لدے ہوئے بادل اٹھا لیتی ہیں تو انہیں کسی مردہ زمین کی طرف حرکت دیتا ہے پھر بادل سے مینہ برساتے ہیں پھر مینہ سے ہر طرح کے پھل پیدا کرتے ہیں۔ اسی طرح ہم مردوں کو زندہ کر کے باہر نکالیں گے تاکہ تم غور و فکر سے کام لو (۵۷)
جو زمین پاکیزہ ہے اس میں سے سبزہ بھی رب کے قانون کے مطابق اچھا نکلتا ہے اور جو خراب ہے اس میں سے جو نکلتا ہے ناقص ہوتا ہے۔ اسی طرح ہم آیتوں کو پھیر پھیر کر بیان کرتے ہیں فرمانبردار لوگوں کے لئے (۵۸)
ہم نے نوحؑ کو ان کی قوم کی طرف بھیجا تو انہوں نے کہا اے میری برادری کے لوگو اللہ کی عبادت کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں مجھے تمہارے بارے میں بڑے دن کے عذاب کا ڈر ہے (۵۹)

तो जो उनकी जाति में नेता थे वह कहने लगे कि हम तुम्हें खुली भ्रष्टता में देखते हैं (60)
उन्होंने कहा ऐ जाति मुझ में किसी प्रकार की पथ भ्रष्टता नहीं है अपितु मैं विश्व पालक का ईशदूत हूं (61)
तुम्हें अपने ईश्वर के सन्देश पहुंचाता हूं और तुम्हारा हित चाहता हूं और मुझको ईश्वर की ओर से ऐसी बात ज्ञात है जिनसे तुम बेखबर हो (62)
क्या तुम को इस बात से आश्चर्य हुआ है कि तुम में से एक व्यक्ति के हाथ तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम्हारे पास स्मरण पत्र आया ताकि वह तुम को सचेत कर दे और ताकि तुम सदाचारी बनो और ताकि तुम पर दया की जाए (63)
परन्तु उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने नूह को और जो उनके साथ नौका में सवार थे उनको तो बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उन्हें प्लावन कर दिया कुछ शंका नहीं कि वह अन्धे लोग थे (64)
और आपकी जाति की ओर उनके भाई हूद अ० को भेजा उन्होंने कहा कि भाईयो! ईश्वर की पूजा करो उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं, क्या तुम डरते नहीं (65)
तो उनकी जाति के सरदार जो नास्तिक थे कहने लगे कि तुम हमें मूढ़ दिखाते हो और हम तुम्हें झूठा जानते हैं (66)
उन्होंने कहा मेरी जाति! मुझ में मूढ़ता की कोई बात नहीं है अपितु मैं विश्व पालक का ईशदूत हूं (67)
मैं तुम्हें ईश्वर का सन्देश पहुंचाता हूं और तुम्हारा विश्वसनीय हितैषी हूं (68)
क्या तुम को इस बात से आश्चर्य हुआ है कि तुम में से एक व्यक्ति के हाथ तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम्हारे पास शिक्षा आई ताकि वह तुम्हें डराये और याद तो करो जब उसने तुम को नूह की जाति के बाद उनका उत्तराधिकारी बनाया और तुम को अधिक विस्तार दिया, अतः ईश्वर की कृपा को याद करो ताकि मोक्ष प्राप्त करो (69)
वह कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम अकेले ईश्वर ही की पूजा करें और जिन को हमारे पूर्वज पूजते चले आए हैं उनको छोड़ दें? तो यदि तुम सच्चे हो तो जिस वस्तु से हमें डराते हो उसे ले आओ (70)
हूद अ० ने कहा कि तुम्हारे ईश्वर की ओर से तुम पर कष्ट और प्रकोप निश्चित हो चुका है, क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के विषय में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं जिनका ईश्वर ने कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया, तो तुम भी प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूं (71)
फिर हमने हूद को और जो लोग उनके साथ थे

تو جو ان کی قوم میں سردار تھے وہ کہنے لگے کہ ہم تمہیں صریح گمراہی میں دیکھتے ہیں (۶۰)
انہوں نے کہا اے قوم مجھ میں کسی طرح کی گمراہی نہیں ہے بلکہ میں پروردگار عالم کا رسول ہوں (۶۱)
تمہیں اپنے رب کے پیغام پہنچاتا ہوں اور تمہاری خیر خواہی کرتا ہوں اور مجھ کو اللہ کی طرف سے ایسی باتیں معلوم ہیں جن سے تم بے خبر ہو (۶۲)
کیا تم کو اس بات سے تعجب ہوا ہے کہ تم میں سے ایک شخص کے ہاتھ تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس یاددہانی آئی تاکہ وہ تم کو ڈرائے اور تاکہ تم پرہیزگار بنو اور تاکہ تم پر رحم کیا جائے (۶۳)
مگر ان لوگوں نے اُن کی تکذیب کی تو ہم نے نوح کو اور جو ان کے ساتھ کشتی میں سوار تھے ان کو تو بچا لیا اور جن لوگوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا تھا انہیں غرق کر دیا کچھ شک نہیں کہ وہ اندھے لوگ تھے (۶۴)
اور قوم عاد کی طرف ان کے بھائی ہود کو بھیجا انہوں نے کہا کہ بھائیو! اللہ کی عبادت کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں کیا تم ڈرتے نہیں؟ (۶۵)
تو ان کی قوم کے سردار جو کافر تھے کہنے لگے کہ تم ہمیں احمق نظر آتے ہو اور ہم تمہیں جھوٹا خیال کرتے ہیں (۶۶)
انہوں نے کہا میری قوم! مجھ میں حماقت کی کوئی بات نہیں ہے بلکہ میں رب العالمین کا رسول ہوں (۶۷)
میں تمہیں اللہ کے پیغام پہنچا دیتا ہوں اور تمہارا امانت دار خیر خواہ ہوں (۶۸)
کیا تم کو اس بات سے تعجب ہوا ہے کہ تم میں سے ایک شخص کے ہاتھ تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس نصیحت آئی تاکہ وہ تمہیں ڈرائے اور یاد تو کرو جب اس نے تم کو قوم نوح کے بعد ان کا جانشین بنایا اور تم کو پھیلاؤ زیادہ دیا پس اللہ کی نعمتوں کو یاد کرو تاکہ نجات حاصل کرو (۶۹)
وہ کہنے لگے کیا تم ہمارے پاس اس لئے آئے ہو کہ ہم اکیلے اللہ ہی کی عبادت کریں اور جن کو ہمارے باپ دادا پوجتے چلے آئے ہیں ان کو چھوڑ دیں؟ تو اگر سچے ہو تو جس چیز سے ہمیں ڈراتے ہو اسے لے آؤ (۷۰)
ہود نے کہا کہ تمہارے رب کی طرف سے تم پر عذاب اور غضب مقرر ہو چکا ہے. کیا تم مجھ سے ایسے ناموں کے بارے میں جھگڑتے ہو جو تم نے اور تمہارے باپ دادا نے رکھ لئے ہیں. جن کی اللہ نے کوئی سند نازل نہیں کی. تو تم بھی انتظار کرو میں بھی تمہارے ساتھ انتظار کرتا ہوں (۷۱)
پھر ہم نے ہود کو اور جو لوگ ان کے ساتھ تھے ان کو نجات

उनको युक्ति दी और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनकी जड़ काट दी, और वह आस्था लाने वाले न थे (72)

और समूद की जाति की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, सालेह ने कहा कि ऐ जाति! ईश्वर ही की पूजा करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे ईश्वर की ओर से एक चमत्कार आ चुका है यही ईश्वर की ऊंटनी तुम्हारे लिए चमत्कार है तो इसे (स्वतंत्र) छोड़ दो कि ईश्वर की धरती में चरती फिरे और तुम इसे बुरी इच्छा से हाथ भी न लगाना अन्यथा बड़ा कष्ट तुम्हें पकड़ लेगा (73)

और याद करो ईश्वर के उपकार को जब उसने आद की जाति के बाद तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और धरती में इस प्रकार बसाया कि तुम मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को काट कर घर बनाते हो, अतः ईश्वर के प्रसादों को याद करो और ईश्वर की पृथ्वी में अवज्ञा और अशान्ति करते न फिरो (74)

उसकी जाति के घमण्डी और उद्दण्ड नेताओं ने उन निर्धन और बलहीन व्यक्तियों से कहा जो सालेह अ0 पर विश्वास ला चुके थे क्या तुम को इस बात का विश्वास है कि सालेह अपने ईश्वर की ओर से भेजा हुआ ईशदूत है उन (विश्वास वालों) ने उत्तर दिया कि हां जिस सन्देश के साथ वह भेजा गया है हम उस पर निःसन्देह विश्वास रखते हैं (75)

तो घमण्डी कहने लगे कि जिस वस्तु पर तुम विश्वास लाए हो हम तो उसको नहीं मानते (76)

फिर उन लोगों ने ऊंटनी को घायल करके मार डाला और अपने ईश्वर के आदेश से अवज्ञा की और कहने लगे कि सालेह जिस वस्तु से तुम हमें डराते थे यदि तुम ईशदूत हो तो उसे ले आओ (77)

तो उनको भूचाल ने आ पकड़ा और वह अपने घरों में औंधे पड़े रहे गए प्रातः को (78)

(यह विनाश देखकर) सालेह उनसे पृथक हो गए और कहा ऐ मेरी जाति के लोगो! मैंने अपने ईश्वर का संदेश तुम्हें पहुंचा दिया और तुम हित करने वालों को पसंद ही नहीं करते (79)

और लूत अ0 को भेजा जब कहा अपनी जाति को तुम ऐसी निर्लज्जता का कार्य करते हो कि तुम से पहले संसार वालों में से किसी ने ऐसा कार्य नहीं किया था (80)

तुम स्त्रियों को छोड़कर पुरुषों से अपनी कामेच्छा पूरी करते हो, सत्य यह है कि तुम बिल्कुल ही सीमा से निकल जाने वाले हो (81)

उसकी जाति का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि कहने लगे कि उन लोगों को नगर से निकाल बाहर करो यह व्यक्ति बड़े पवित्र व शुद्ध बनते हैं (82)

तो हमने उनको और उनके घर वालों (अर्थात उनके साथ विश्वास लाने वालों) को बचा लिया परन्तु

بخشی اور جنہوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا تھا ان کی جڑ کاٹ دی اور وہ ایمان لانے والے تھے ہی نہیں (۷۲)

اور قوم ثمود کی طرف ان کے بھائی صالح کو بھیجا. صالح نے کہا کہ اے قوم! اللہ ہی کی عبادت کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں. تمہارے پاس تمہارے رب کی طرف سے ایک معجزہ آ چکا ہے یہی اللہ کی اونٹنی تمہارے لئے معجزہ ہے تو اسے (آزاد) چھوڑ دو کہ اللہ کی زمین میں چرتی پھرے اور تم اسے بُری نیت سے ہاتھ بھی نہ لگانا ورنہ عذاب الیم تمہیں پکڑ لے گا (۷۳)

اور یاد کرو اللہ کے احسان کو جب اس نے قوم عاد کے بعد تمہیں اس کا جانشین بنایا اور زمین میں اس طرح بسایا کہ تم میدانوں میں محل بناتے ہو اور پہاڑوں کو کاٹ کر گھر بناتے ہو. لہٰذا اللہ کی نعمتوں کو یاد کرو. اور اللہ کی زمین میں فساد نہ کرتے پھرو (۷۴)

اس کی قوم کے مغرور اور سرکش سرداروں نے ان غریب اور کمزور آدمیوں سے کہا جو صالح پر ایمان لا چکے تھے. کیا تم کو اس بات کا یقین ہے کہ صالح اپنے رب کی طرف سے بھیجا ہوا رسول ہے ان (ایمان والوں) نے جواب دیا کہ ہاں جس پیغام کے ساتھ وہ بھیجا گیا ہے ہم اس پر بلاشبہ ایمان رکھتے ہیں (۷۵)

تو مغرور کہنے لگے کہ جس چیز پر تم ایمان لائے ہو ہم تو اس کو نہیں مانتے (۷۶)

پھر ان لوگوں نے اونٹنی کو زخمی کر کے مار ڈالا اور اپنے رب کے حکم سے سرکشی کی اور کہنے لگے کہ صالح جس چیز سے تم ہمیں ڈراتے ہو اگر تم رسول ہو تو اسے لے آؤ (۷۷)

تو ان کو زلزلہ نے آ پکڑا اور وہ اپنے گھروں میں اندھے پڑے رہ گئے صبح کو (۷۸)

(یہ بربادی دیکھ کر) صالح نے ان سے کنارہ کشی کر لی اور کہا اے میری قوم کے لوگو! میں نے اپنے رب کا پیغام تمہیں پہنچا دیا اور تم نصیحت کرنے والوں کو پسند ہی نہیں کرتے (۷۹)

اور لوط کو بھیجا جب کہا اپنی قوم کو تم ایسی بے شرمی کا کام کرتے ہو کہ تم سے پہلے اہل عالم میں سے کسی نے ایسی حرکت نہیں کی تھی (۸۰)

تم عورتوں کو چھوڑ کر مردوں سے اپنی خواہش پوری کرتے ہو حقیقت یہ ہے کہ تم بالکل ہی حد سے گزر جانے والے ہو (۸۱)

اس کی قوم کا جواب اس کے سوا کچھ نہ تھا کہ کہنے لگے کہ ان لوگوں کو بستی سے نکال باہر کرو یہ لوگ بڑے پاک صاف بنتے ہیں (۸۲)

تو ہم نے ان کو اور ان کے گھر والوں (یعنی ان کے ساتھ ایمان لانے والوں) کو بچا لیا مگر ان کی بیوی نہ بچی کہ وہ

उनकी पत्नी न बची कि वह पीछे रहने वालों में थी (83)
और हमने उन पर (पत्थरों की) एक वर्षा की तो देख लो पापियों का क्या बुरा परिणाम हुआ (84)
और मदयन की ओर उनके भाई शुऐब अ0 को भेजा उन्होंने कहा कि ऐ जाति ईश्वर ही की पूजा करो उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नही, तुम्हारे ईश्वर की ओर से चिन्ह आ चुका है तो तुम माप और तोल पूरी किया करो और लोगों को वस्तु कम न दिया करो, और पृथ्वी में सुधार के बाद विकार न करना यदि तुम धैर्य वादी हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे लिए उत्तम है (85)
और देखो, ऐसा न करो कि (धर्म के प्रचार को रोकने के लिए) हर मार्ग पर जा बैठे और जो व्यक्ति विश्वास लाए उसे डरा धमका कर ईश्वर के धर्म से रोको और उसमें कजी डालने का प्रयत्न करते हो याद करो जब तुम थोड़े थे उसने तुम्हारी संख्या बहुत बढ़ा दी और देख लो कि अशान्ति करने वालों का परिणाम कैसा हुआ (86)
और निःसन्देह तुम में से एक दल मेरे ईशदौत्य पर विश्वास ले आया है और एक दल विश्वास नही लाया तो धैर्य किए रहो, यहां तक कि ईश्वर हमारे तुम्हारे मध्य निर्णय कर दे और वह सबसे उत्तम निर्णय करने वाला है (87)
उनकी जाति में जो लोग नेता और बड़े व्यक्ति थे वह कहने लगे कि शुऐब अ0 हम तम को और जो लोग तुम्हारे साथ विश्वास लाए हैं उनको अपने नगर से निकाल देंगे या तुम हमारे धर्म में आ जाओ उन्होंने कहा चाहे हम (तुम्हारे धर्म से) अप्रसन्न ही हों तो भी? (88)
यदि तुम इसके बाद कि ईश्वर हमें इससे मुक्ति दे चुका है तुम्हारे धर्म में लौट जाएं तो निःसन्देह हमने ईश्वर पर झूट बांधा और हमारे लिए यह सम्भव नही कि हम उसमें लौट जाएं निःसन्देह हमारा ईश्वर यही चाहता है कि हम कदापि नही लोटेंगे हमारे ईश्वर का ज्ञान हर वस्तु को घेरे हुए है, हमारा ईश्वर पर ही भरोसा है ऐ रब हम में और हमारी जाति में न्याय के साथ निर्णय कर दे और तू सबसे उत्तम निर्णय करने वाला है (89)
और उनकी जाति में से नेता लोग जो नास्तिक थे कहने लगे कि यदि तुम ने शुऐब अ0 का अनुकरण किया तो निःसन्देह तुम हानि में पड़ गए (90)
फिर पकड़ा उनको भूचाल ने फिर रह गए अपने घरों में औंधे पड़े हुए प्रातः को (91)

پیچھے رہنے والوں میں تھی (۸۳)
اور ہم نے ان پر (پتھروں کا) مینہ برسایا تو دیکھ لو مجرموں کا کیا بُرا انجام ہوا (۸۴)
اور مدین کی طرف ان کے بھائی شعیبؑ کو بھیجا انہوں نے کہا کہ قوم اللہ ہی کی عبادت کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں. تمہارے رب کی طرف سے نشانی آ چکی ہے تو تم ماپ اور تول پوری کیا کرو اور لوگوں کو چیز کم نہ دیا کرو. اور زمین میں اصلاح کے بعد خرابی نہ کرنا. اگر تم صاحب ایمان ہو تو سمجھ لو کہ یہ بات تمہارے حق میں بہتر ہے (۸۵)
اور دیکھو ایسا نہ کرو کہ (دین کی اشاعت کو روکنے کے لئے) ہر رستہ پر جا بیٹھو اور جو شخص ایمان لائے اسے ڈرا دھمکا کر اللہ کے دین سے روکو اور اس میں کجی ڈالنے کی کوشش کرتے ہو. یاد کرو جب تم تھوڑے تھے اس نے تمہاری تعداد بہت بڑھا دی اور دیکھ لو کہ خرابی کرنے والوں کا انجام کیسا ہوا (۸۶)
اور بلاشبہ تم میں سے ایک جماعت میری رسالت پر ایمان لے آئی ہے اور ایک جماعت ایمان نہیں لائی تو صبر کئے رہو یہاں تک کہ اللہ ہمارے اور تمہارے درمیان فیصلہ کر دے اور وہ سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے (۸۷)
ان کی قوم میں جو لوگ سردار اور بڑے آدمی تھے وہ کہنے لگے کہ شعیبؑ ہم تم کو اور جو لوگ تمہارے ساتھ ایمان لائے ہیں ان کو اپنے شہر سے نکال دیں گے یا تم ہمارے مذہب میں آ جاؤ. انہوں نے کہا چاہے ہم (تمہارے دین سے) بیزار ہی ہوں تو بھی؟ (۸۸)
اگر ہم اس کے بعد کہ اللہ ہمیں اس سے نجات دے چکا ہے تمہارے مذہب میں لوٹ جائیں تو بے شک ہم نے اللہ پر جھوٹ باندھا اور ہمارے لئے یہ ممکن نہیں کہ ہم اس میں لوٹ جائیں. یقیناً ہمارا رب یہی چاہتا ہے کہ ہم ہرگز نہیں لوٹیں گے. ہمارے رب کا علم ہر چیز پر احاطہ کئے ہوئے ہے. ہمارا اللہ پر ہی بھروسہ ہے. اے رب ہم میں اور ہماری قوم میں انصاف کے ساتھ فیصلہ کر دے اور تو سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے (۸۹)
اور ان کی قوم میں سے سردار لوگ جو کافر تھے کہنے لگے کہ اگر تم نے شعیبؑ کی پیروی کی تو بے شک تم خسارے میں پڑ گئے (۹۰)
پھر پکڑا ان کو زلزلے نے پھر رہ گئے اپنے گھروں میں اوندھے پڑے ہوئے صبح کو (۹۱)

नोट- आयत 89 का:- लगभग हर अनुवाद में (इल्ला अंय्यशा अल्लाहु रब्बुना) का अनुवाद यह किया है कि इल्ला यह कि (हमारा रब ही ऐसा चाहे) अर्थात पलटा दे अब विचारणीय बात यह है कि जब ईश्वर ने सदाचारी लोगों को ईशदूत बनाया है तो उन्हें पूरे पथ प्रदर्शन जानकारी

نوٹ: آیت ۸۹ کا:۔ تقریباً ہر ترجمہ میں (اِلَّا اَنْ یَّشَآءَ اللّٰہُ رَبُّنَا) کا ترجمہ یہ کیا ہے کہ اِلَّا یہ کہ (ہمارا رب ہی ایسا چاہے) یعنی پلٹا دے. اب قابل غور بات یہ ہے کہ جب اللہ نے نیک لوگوں کو نبی بنایا ہے تو انہیں پوری ہدایت کے ساتھ

के साथ बनाया है यदि नबी ही वापस पथ भ्रष्टता में आ जाएं तो फिर क्या रह गया? अतः ईशदूत के लिए यह गुमान ही नही किया जा सकता कि ईश्वर उनको भी भ्रष्ट कर सकता है, निःसन्देह नही करेगा, और न ही ईशदूत वापस भ्रष्टता में जाएगा,

अतः इन शब्दों का भाव वह उचित है जो मैंने किया है अर्थात निःसन्देह वह चाहता है हमारा ईश्वर कि हम कभी भ्रष्टता में न पलटेंगे, इसी प्रकार जहां भी ऐसी आयत हो वहां भी यही भाव होगा, हां, एक सामान्य व्यक्ति तो पलट सकता है परन्तु वह भी कच्चे विश्वास वाला नहीं नहीं, अर्थात जहां इल्ला के बाद मा शाअल्लाह इत्यादि हो इसका अर्थ यह होता है कि जो कुछ कहा गया है इसके विपरीत कभी नहीं होगा,

بنایا ہے اگر نبی ہی واپس گمراہی میں آجائیں تو پھر کیا رہ گیا؟ اس لئے نبی کے لئے یہ گمان ہی نہیں کیا جاسکتا کہ اللہ ان کو بھی گمراہ کرسکتا ہے یقیناً نہیں کرے گا اور نہ ہی رسول واپس گمراہی میں جائے گا۔

اس لئے ان الفاظ کا مفہوم وہ ٹھیک ہے جو میں نے کیا ہے یعنی یقیناً یہ چاہتا ہے ہمارا رب کہ ہم کبھی گمراہی میں نہ پلٹیں گے۔ اسی طرح جہاں بھی ایسی آیت ہو وہاں بھی یہی مفہوم ہوگا۔ ہاں ایک عام آدمی تو پلٹ سکتا ہے مگر وہ بھی کچے ایمان والا نبی نہیں۔ یعنی جہاں اِلّا کے بعد ماشاءاللہ وغیرہ ہو تو اس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ جو کچھ کہا گیا ہے اس کے خلاف کبھی نہیں ہوگا۔

जिन व्यक्तियों ने शुऐब अ० को झुटलाया था वह ऐसे नष्ट हुए मानों वह उनमें कभी बसे ही न थे जिन लोगों ने शुऐब को झुटलाया वह हानि में पड़ गए (92)

جن لوگوں نے شعیبؑ کو جھٹلایا تھا وہ ایسے برباد ہوئے گویا وہ ان میں کبھی آباد ہی نہیں ہوئے تھے جن لوگوں نے شعیب کو جھٹلایا وہ خسارے میں پڑ گئے (۹۲)

तो शुऐब अ० इनमें से निकल आए और कहा कि भाईयो! मैंने तुमको अपने ईश्वर के सन्देश पहुंचा दिए हैं और तुम्हारा हित किया था, अब मैं उस जाति पर कैसे अनुताप करूं जो सत्य को स्वीकार करने से इनकार करती है (93)

تو شعیب ان میں سے نکل آئے اور کہا کہ بھائیو! میں نے تم کو اپنے رب کے پیغام پہنچا دئے ہیں اور تمہاری خیر خواہی کی تھی اب میں اس قوم پر کیسے افسوس کروں جو قبول حق سے انکار کرتی ہے (۹۳)

और जब हमने कोई ईशदूत किसी बस्ती में अपने नबीयों में से भेजा तो निःसन्देह वहां के रहने वालों को (जो विश्वास न लाए) दुखों और कष्टों में ग्रस्त किया ताकि वह नम्रता और विलाप करें (94)

<u>اور جب ہم نے کوئی رسول کسی بستی میں اپنے نبیوں میں سے بھیجا تو یقیناً وہاں کے رہنے والوں کو (جو ایمان نہ لائے) دکھوں اور مصیبتوں میں مبتلا کیا تاکہ وہ عاجزی اور زاری کریں (۹۴)</u>

फिर हमने उनकी दुरावस्था को सम्पन्नता से बदल दिया यहां तक कि वह बहुत फले फूले और कहने लगे कि इस प्रकार का दुख और आराम हमारे बड़ों को भी पहुंचता रहा है तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और वह (अपनी दशा में) अचेत थे (95)

پھر ہم نے ان کی بدحالی کو خوشحالی سے بدل دیا۔ یہاں تک کہ وہ خوب پھلے پھولے اور کہنے لگے کہ اس طرح کا رنج و راحت ہمارے بڑوں کو بھی پہنچتا رہا ہے۔ تو ہم نے ان کو اچانک پکڑ لیا اور وہ (اپنے حال میں) بے خبر تھے (۹۵)

यदि उन बस्तियों के लोग आस्था ले आते और सदाचारी हो जाते तो हम उन पर आकाश और पृथ्वी की अधिकता (के द्वार) खोल देते, परन्तु उन्होंने तो झुटलाया, सो उनके कर्म के दण्ड में हमने उनको पकड़ लिया (96)

اگر ان بستیوں کے لوگ ایمان لے آتے اور پرہیزگار ہوجاتے تو ہم ان پر آسمان اور زمین کی برکات (کے دروازے) کھول دیتے مگر انہوں نے تو جھٹلایا۔ سو ان کے اعمال کی سزا میں ہم نے ان کو پکڑ لیا (۹۶)

क्या नास्तिकों के रहने वाले इससे निश्चिन्त है कि उन पर हमारी यातना रात्रि को आए और वह सो रहे हो (97)

کیا بستیوں کے رہنے والے اس سے بے خوف ہیں۔ کہ ان پر ہمارا عذاب رات کو آئے اور وہ سو رہے ہوں (۹۷)

और क्या बस्ती वाले इससे निडर हैं कि उन पर हमारा कष्ट दिन चढ़े आए और वह खेल रहे हों (98)

اور کیا بستی والے اس سے نڈر ہیں کہ ان پر ہمارا عذاب دن چڑھے آنازل ہو اور وہ کھیل رہے ہوں (۹۸)

क्या वह ईश्वर की युक्तियों का भय नही रखते (सुन लो कि) ईश्वर की गुप्त युक्तियों से वही निडर होते हैं जो हानि उठाने वाले हैं (99)

کیا وہ اللہ کی تدبیروں کا ڈر نہیں رکھتے (سن لو کہ) اللہ کی چھپی تدبیروں سے وہی لوگ نڈر ہوتے ہیں جو نقصان اٹھانے والے ہیں (۹۹)

क्या उन लोगों को जो धरती को अधिकारियों की (मृत्यु के) बाद धरती के उत्तराधिकारी होते हैं यह काम सूझ का नही हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके पापों के कारण उन पर कष्ट डाल दें और इसी कारण उनके हृदयों पर हमारा नियम मोहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें, (100)

کیا ان لوگوں کو جو اہل زمین کے (مرجانے کے) بعد زمین کے وارث ہوتے ہیں۔ یہ کام موجب ہدایت نہیں ہوا کہ اگر ہم چاہیں تو ان کے گناہوں کے سبب اُن پر مصیبت ڈال دیں اور اسی سبب ان کے دلوں پر ہمارا قانون مہر لگا دے کہ کچھ سن ہی نہ سکیں (۱۰۰)

یہ بستیاں ہیں جن کے کچھ حالات ہم تم کو سناتے ہیں اور

यह बस्तियां है जिनके कुछ समाचार हम तुम को सुनाते है और उनके पास उनके रसूल चिन्ह लेकर आए परन्तु वह ऐसे नही थे कि जिस वस्तु को पहले झुटला चुके हो उसे मानले इसी प्रकार ईश्वर नास्तिकों के हृदयों पर मोहर लगा देते है अर्थात उसका नियम, (101)
हमने उन में बहुतो को ऐसा पाया कि वह अपने वचन पर स्थापित न थे और उनमें अधिकांश को पाया कि वह भ्रष्ट थे, (102)
फिर उनके बाद हमने मूसा को अपने चिन्हों के साथ फिर औन और उस के दरबारियों की ओर भेजा परन्तु उन्होंने उनके साथ अत्याचार किया तो देखो उन विकार करने वालो का परिणाम क्या हुआ (103)
और मूसा ने कहा ऐ फिर औन मैं विश्व पालक का ईश्दूत हूं, (104)
मुझ पर अनिवार्य है कि ईश्वर की ओर से जो कुछ कहूं सचही कहूं मैं तुम्हारे पास तुम्हारे ईश्वर की ओर से चिन्ह ले कर आया हूं सो बनी इसराईल को मेरे साथ जाने दें (105)
फिर औन ने कहा यदि तू चिन्ह लेकर आया है और तू सच्चा है तो ला दिखा, (106)
मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो अचानक वह स्पष्ट अजगर बन गई, (107)
और अपना हाथ बाहर निकाला तो वह देखने वालों के लिए सफेद चमकीला निकला, (108)
(यह देख कर) फिर औन के नेता कहने लगे यह बड़ा चालाक जादूगर है, (109)
इसका इरादा है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल दे बताओ तुम्हारा विचार क्या है, (110)
उन्होंने कहा कि इस समय मूसा और इसके भाई के विषय को स्थगित रखऐ और नगरों में हरकारे रवाना कर दीजिए (111)
कि तमाम माहिर जादूगरों को आपके पास ले आऐं (112)
और जादूगर फिर औन के पास आ पहुंचे और कहने लगे कि यदि हम सफल रहें तो हमे पुरस्कार दिया जाएगा? (113)
फिर औन ने कहा अवश्य मिलेगा और तुम को सम्मानित समासदो में सम्मिलित कर लिया जाएगा, (114)
जादूगरो ने कहा मूसा या तो तुम डालों या हम डालतें है, (115)
मूसा ने कहा तुमही डालो जब उन्होंने जादू की वस्तुएं डाली तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और अपने जादू से आतंक फैला दिया और बहुत बड़ा जादू किया, (116)
और हमने मूसा पर वही की कि तुमभी अपनी लाठी डाल दो जूंही उसने अपनी लाठी डाली तो अचानक ऐसा हुआ कि वह जादू के झूटे प्रदर्शन को निगल गई (117)

ان کے پاس ان کے رسول نشانیاں لے کر آئے مگر وہ ایسے نہیں تھے کہ جس چیز کو پہلے جھٹلا چکے ہوں اسے مان لیں اسی طرح اللہ کافروں کے دلوں پر مہر لگا دیتا ہے یعنی اس کا قانون (۱۰۱)
ہم نے ان میں بہتوں کو ایسا پایا کہ وہ اپنے عہد پر قائم نہ تھے اور ان میں اکثروں کو پایا کہ وہ فاسق تھے (۱۰۲)
پھر ان کے بعد ہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیوں کے ساتھ فرعون اور اس کے درباریوں کی طرف بھیجا مگر انہوں نے ان کے ساتھ زیادتی کی تو دیکھو ان خرابی کرنے والوں کا انجام کیا ہوا (۱۰۳)
اور موسیٰ نے کہا اے فرعون میں رب العالمین کا رسول ہوں (۱۰۴)
مجھ پر واجب ہے کہ اللہ کی طرف سے جو کچھ کہوں سچ ہی کہوں میں تمہارے پاس تمہارے رب کی طرف سے نشانی لے کر آیا ہوں سو بنی اسرائیل کو میرے ساتھ جانے دے (۱۰۵)
فرعون نے کہا اگر تو نشانی لے کر آیا ہے اور تو سچا ہے تو لا دکھا (۱۰۶)
موسیٰ نے اپنی لاٹھی ڈال دی تو یکا یک وہ صاف اژدہا بن گئی (۱۰۷)
اور اپنا ہاتھ باہر نکالا تو وہ دیکھنے والوں کے لئے سفید چمکیلا نکلا (۱۰۸)
(یہ دیکھ کر) فرعون کے سردار کہنے لگے یہ بڑا چالاک جادوگر ہے (۱۰۹)
اس کا ارادہ ہے کہ تم کو تمہارے ملک سے نکال دے بتاؤ تمہاری کیا رائے ہے (۱۱۰)
انہوں نے کہا کہ اس وقت موسیٰ اور اس کے بھائی کے معاملہ کو ملتوی رکھیے اور شہروں میں نقیب روانہ کر دیجئے (۱۱۱)
کہ تمام ماہر جادوگروں کو آپ کے پاس لے آئیں (۱۱۲)
اور جادوگر فرعون کے پاس آ پہنچے اور کہنے لگے کہ اگر ہم جیت گئے تو ہمیں صلہ عطا کیا جائے گا؟ (۱۱۳)
فرعون نے کہا ضرور ملے گا اور تم کو مقرب درباریوں میں شامل کر لیا جائے گا (۱۱۴)
جادوگروں نے کہا کہ موسیٰ یا تو تم ڈالو یا ہم ڈالتے ہیں (۱۱۵)
موسیٰ نے کہا تم ہی ڈالو۔ جب انہوں نے جادو کی چیزیں ڈالیں تو لوگوں کی آنکھوں پر جادو کر دیا اور اپنے جادو سے دہشت پھیلا دی اور بہت بڑا جادو کیا (۱۱۶)
اور ہم نے موسیٰ پر وحی کی کہ تم بھی اپنی لاٹھی ڈال دو۔ جونہی اس نے اپنی لاٹھی پھینکی تو اچانک ایسا ہوا کہ وہ جادوگروں کی جھوٹی نمائش کو نگل گئی (۱۱۷)

सत्य सिद्ध हो गया और जादूगरो ने जो करतब किये थे सब नष्ट हो गए (118)

حق ثابت ہوگیا اور جادوگروں نے جو کرتب کئے تھے سب نیست و نابود ہوگئے (۱۱۸)

इस प्रकार (फ़िरऔन और उसके दरबारी) परास्त होकर अपमानित हुए (119)

اس طرح (فرعون اور اس کے درباری) مغلوب ہوکر ذلیل و خوار ہوئے (۱۱۹)

और (यह देखकर) जादूगर सजदे में गिर पड़े (120)

اور (یہ دیکھ کر) جادوگر سجدے میں گر پڑے (۱۲۰)

उन्होंने कहा कि हम उस ईश्वर पर विश्वास ले आए जो सारे संसार का पालने वाला है (121)

انہوں نے کہا کہ ہم اس اللہ پر ایمان لے آئے جو سارے جہاں کا رب ہے (۱۲۱)

जो मूसा और हारून का रब है (124)

جو موسیٰ اور ہارون کا رب ہے (۱۲۲)

फ़िरऔन ने कहा जादूगरों से इससे पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूं तुम इस पर आस्था ले आए? निःसन्देह यह छल है जो तुमने मिलकर नगर में किया है ताकि नगर वालों को यहां से निकाल दो सो निकट ही जान लोगे (123) {20:71}

فرعون نے کہا جادوگروں سے اس سے پہلے کہ میں تمہیں اجازت دوں تم اس پر ایمان لے آئے؟ بے شک یہ فریب ہے جو تم نے مل کر شہر میں کیا ہے تاکہ شہر والوں کو یہاں سے نکال دو سو عنقریب جان لوگے (۱۲۳) [۲۰:۷۱]

मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ दूसरे ओर के पग काट दूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा (124)

میں تمہارے ایک طرف کے ہاتھ دوسرے طرف کے پاؤں کاٹ دوں گا پھر تم سب کو سولی چڑھادوں گا (۱۲۴)

नोट- आयत 123 में शब्द इज़न आया है जिस का अर्थ लिखा गया है आज्ञा फिर औन ने कहा कि तुम इस पर विश्वास ले आए पूर्व इस के कि मैं आज्ञा दूं तो क्या फ़िरऔन मूसा पर विश्वास लाने की आज्ञा दे देता निःसंदेह फिर औन आज्ञा नही देता परन्तु उसने यह शब्द बोला जिसका अर्थ यह है कि मेरी आज्ञा बिलकुल नही और न मेरे नियम में है कि तुम या और कोई मूसा के ईश्वर पर आस्था लाए चूंकि अपने राज्य तक हर व्यक्ति का प्रतिपालक मैं हूं बस यही अर्थ आयत (2:255) में शब्द इज़न का है जहां ईश्वर कह रहा है कि कौन है जो मेरी आज्ञा (इज़न) के बिना अनुशंसा कर सके अर्थात मेरी आज्ञा ही नही है क्योंकि मैं हर प्रकट गुप्त आगे पीछे को जानता हूं मेरा यह नियम नही है कि पापियों की अनुशंसा हो.

نوٹ: ۔آیت ۱۲۳ میں لفظ اذن آیا ہے جس کا مطلب لکھا گیا ہے اجازت یعنی فرعون نے کہا کہ تم اس پر ایمان لے آئے قبل اس کے کہ میں اجازت دوں. تو کیا فرعون موسیٰ پر ایمان لانے کی اجازت دے دیتا؟ یقیناً فرعون اجازت نہیں دیتا. مگر اس نے یہ لفظ بولا جس کا مطلب یہ ہے کہ میری اجازت بالکل نہیں اور نہ میرے قانون میں ہے کہ تم یا اور کوئی موسیٰ کے اللہ پر ایمان لائے. چونکہ اپنی بادشاہت تک ہر آدمی کا رب میں ہوں. بس یہی مطلب آیت (۲:۲۵۵) میں لفظ اذن کا ہے جہاں اللہ کہہ رہا ہے کہ کون ہے جو میری اجازت (اذن) کے بغیر شفاعت کر سکے. یعنی میری اجازت ہی نہیں ہے کیونکہ میں ہر ظاہر چھپے آگے پیچھے کو جانتا ہوں میرا یہ قانون نہیں ہے کہ مجرموں کی شفاعت ہو.

वह बोले कि हम अपने ईश्वर की ओर लोटकर जाने वाले है, (125)

وہ بولے کہ ہم اپنے رب کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں (۱۲۵)

इसके अतिरिक्त और हमारा क्या दोष है कि जब हमारे ईश्वर के चिन्ह हमारे पास आ गए तो हम उनपर विश्वास ले आए ऐ रब हम पर धैर्य का लाभ कर और हमें मृत्यु दे तो इस दशा में कि हम मुस्लिम हो, (126) {3:55, 5:117}

اس کے علاوہ اور ہمارا کیا قصور ہے کہ جب ہمارے رب کی نشانیاں ہمارے پاس آئیں تو ہم ان پر ایمان لے آئے! اے رب ہم پر صبر کا فیضان کر اور ہمیں موت دے تو اس حال میں کہ ہم مسلم ہوں (۱۲۶) [۳:۵۵، ۵:۱۱۷]

और फिर औन की जाती में जो नेता थे कहने लगे कि क्या तू मूसा और उसकी जाती को छोड़ देगा कि देश में विकार करें और तुमसे और तेरे देवताओ से मुख फेर ले? वह बोला कि हम उनके लड़को को वध करते रहेंगे और लड़कियों को जीवित रहने देंगे और निःसंदेह हम उन पर पूर्ण अधिकार रखतें हैं, (127)

اور قوم فرعون میں جو سردار تھے کہنے لگے کہ کیا تو موسیٰ اور اس کی قوم کو چھوڑ دے گا کہ ملک میں خرابی کریں اور تجھ سے اور تیرے معبودوں سے منہ پھر لیں؟ وہ بولا کہ ہم ان کے لڑکوں کو قتل کرتے رہیں گے اور لڑکیوں کو زندہ رہنے دیں گے اور بے شبہ ہم ان پر پورا اختیار رکھتے ہیں (۱۲۷)

मूसा ने अपनी जाती से कहा कि ईश्वर से सहयता मांगो और धैर्यवान रहो पृथ्वी तो ईश्वर की है वह अपने बच्चों में से जिसे चाहता है उसका स्वामी बनाता है और अन्त भला तो डरने वालों का है (128)

موسیٰ نے اپنی قوم سے کہا کہ اللہ سے مدد مانگو اور ثابت قدم رہو زمین تو اللہ کی ہے وہ اپنے بندوں میں سے جسے چاہتا ہے اس کا مالک بناتا ہے اور آخر بھلا تو ڈرنے والوں کا ہے (۱۲۸)

वह बोले तुम्हारे आने से पहले भी हम सताय जा रहे थे और तुम्हारे आने के बाद भी मूसा ने कहा निकट है कि तुम्हारा स्वामी तुम्हारे शत्रु को वध

وہ بولے تمہارے آنے سے پہلے بھی ہم ستائے جارہے تھے اور تمہارے آنے کے بعد بھی موسیٰ نے کہا قریب ہے کہ تمہارا پروردگار تمہارے دشمن کو ہلاک کردے اور اس کی

कर दे और उसके स्थान तुम्हें पृथ्वी में उसका उत्तराधिकारी बनाए फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो. (129)

جگہ تمہیں زمین میں اس کا جانشین بنائے پھر دیکھے کہ تم کیسے عمل کرتے ہو (۱۲۹)

और हमने फ़िरऔनियों को काल और फलों की हानि में पकड़ा ताकि शिक्षा प्राप्त करें. (130)

اور ہم نے فرعونیوں کو قحط سالی اور پھلوں کے نقصان میں پکڑا تاکہ نصیحت حاصل کریں (۱۳۰)

तो जब उनको सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इसके अधिकारी हैं और यदि कष्ट आता तो मूसा और उनके साथियों की अपशकुन बताते देखो उनकी अपशकुनी ईश्वर के नियम के अनुसार ईश्वर के यहां निश्चित है, किन्तु उनमें अधिकांश जानते नही. (131) {27:47, 36:19-18}

تو جب ان کو خوشحالی میسر ہوتی تو کہتے کہ ہم اس کے حق دار ہیں اور اگر سختی پہنچتی تو موسیٰ اور ان کے رفیقوں کی بدشگونی بتاتے. دیکھو ان کی بدشگونی اللہ کے قانون کے مطابق اللہ کے یہاں مقدر ہے لیکن ان میں اکثر نہیں جانتے (۱۳۱) [۲۷:۴۷، ۳۶:۱۸، ۱۹]

और कहने लगे कि तुम हमारे पास कोई चिन्ह लाओ ताकि उससे हम पर जादू करो, परन्तु हम तुम पर विश्वास लाने वाले नही हैं. (132)

اور کہنے لگے کہ تم ہمارے پاس کوئی نشانی لاؤ تا کہ اس سے ہم پر جادو کرو، مگر ہم تم پر ایمان لانے والے نہیں ہیں (۱۳۲)

तो हमने उन पर आंधियां और टिड्डीयां और जूऐं और मेंढ़क और रक्त कितने खुले चिन्ह भेजे परन्तु वह घमण्ड ही करते रहे और वह लोग थे ही पापी. (133)

تو ہم نے ان پر طوفان اور ٹڈیاں اور جوئیں اور مینڈک اور خون کتنی کھلی نشانیاں بھیجیں مگر وہ تکبر ہی کرتے رہے اور وہ لوگ تھے ہی گناہگار (۱۳۳)

और जब उन पर कष्ट आता तो कहते कि मूसा हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो जैसा उसने तुमसे वचन कर रखा है यदि तुम हमसे कष्ट टाल दोगे तो हम तुम पर विश्वास भी ले आएंगे और बनी ईसराईल को भी तुम्हारे साथ जाने देंगे (134)

اور جب ان پر عذاب آتا تو کہتے کہ موسیٰ ہمارے لئے اپنے پروردگار سے دعا کرو جیسا اس نے تم سے عہد کر رکھا ہے تم ہم سے عذاب ٹال دو گے تو ہم تم پر ایمان بھی لے آئیں گے اور بنی اسرائیل کو بھی تمہارے ساتھ جانے دیں گے (۱۳۴)

फिर जब हमने एक समय के लिए जिस तक उन्हें (अपने दुष्ट कर्मों के कारण) पहुंचाना था उनसे कष्ट टाल दिया तो उन्होंने उसी समय अपना वचन तोड़ दिया. (135)

پھر جب ہم نے ایک مدت کے لئے جس تک انہیں (اپنی بداعمالیوں کی وجہ سے) پہنچنا تھا ان سے عذاب ٹال دیا تو انہوں نے اسی وقت اپنا عہد توڑ دیا (۱۳۵)

तो हमने उनसे बदला लेकर ही छोड़ा कि उनको नदी में डुबो दिया इसलिए कि वह हमारी आयतों को झुटलाते और उनसे बेवफ़ाई करते थे. (136)

تو ہم نے ان سے بدلہ لے کر ہی چھوڑا کہ ان کو دریا میں ڈبو دیا. اس لئے کہ وہ ہماری آیتوں کو جھٹلاتے اور ان سے بے پروائی کرتے تھے (۱۳۶)

और जो लोग बलहीन समझेजाते थे उनको पृथ्वी के पूर्व और पश्चिम का स्वामी बना दिया जिसे हमने अधिकता दी थी और बनी ईसराईल के विषय में तेरे रब का अच्छा वचन पूरा हुआ इसलिए कि वह धैर्य वान रहे और हमने फ़िरऔन और उसकी जाति ने जो भवन बनाए थे और अंगूर के उपवन जो छतरियों पर चढ़ाने थे सबको हमने नष्ट कर दिया. (137)

اور جو لوگ کمزور سمجھے جاتے تھے ان کو زمین کے مشرق اور مغرب کا مالک بنا دیا جسے ہم نے برکت دی تھی اور بنی اسرائیل کے حق میں تیرے رب کا نیک وعدہ پورا ہو کر رہا اس لئے کہ وہ ثابت قدم رہے اور ہم نے فرعون اور اس کی قوم نے جو محل بنائے تھے اور انگور کے باغ جو چھتریوں پر چڑھاتے تھے سب کو ہم نے تباہ کر دیا (۱۳۷)

और हमने बनी ईसराईल को दरया के पार किया तो वह ऐसे लोगों के पास पहुंचे जो अपने बुतों की पूजा के लिए बेठे रहते थे (बनी ईसराईल कहने लगे कि मूसा जैसा उन लोगों के देवता हैं हमारे लिए भी एक देवता बना दो. मूसा ने कहा कि तुम बड़े ही मूर्ख हो (138)

اور ہم نے بنی اسرائیل کو دریا کے پار کیا تو وہ ایسے لوگوں کے پاس پہنچے جو اپنے بتوں کی عبادت کے لئے بیٹھے رہتے تھے (بنی اسرائیل) کہنے لگے کہ موسیٰ جیسے ان لوگوں کے معبود ہیں ہمارے لئے بھی ایک معبود بنا دو موسیٰ نے کہا کہ تم بڑے ہی جاہل لوگ ہو (۱۳۸)

वह लोग जिसमें (फंसे हुए) हैं वह नष्ट होने वाला है और जो कार्य वह करते है सब व्यर्थ है (139)

وہ لوگ جس میں (پھنسے ہوئے) ہیں وہ برباد ہونے والا ہے اور جو کام وہ کرتے ہیں سب باطل ہے (۱۳۹)

और यह भी कहा भला मैं ईश्वर के सिवा तुम्हारे लिए और पूज्य खोजूं यद्यपि उसने तुमको सम्पूर्ण संसार वालों पर सम्मान दिया है (140)

اور یہ بھی کہا بھلا میں اللہ کے سوا تمہارے لئے اور معبود تلاش کروں حالانکہ اس نے تم کو تمام اہل عالم پر فضیلت دی ہے (۱۴۰)

और वह समय जब हमने तुम को फ़िरऔनियों से मुक्ति दी वह लोग तुम को बड़ा दुख देते थे तुम्हारे पुत्रों को वध कर डालते थे और पुत्रियों को जीवित रहने देते थे और उसमें तुम्हारे रब की ओर से कठिन परीक्षा थी (141)

और पहले हमने मूसा से तीस रातों का वचन लिया था फिर दस रातें मिलाकर पूरी चालीस कर दिया तो उसके ईश्वर की चालीस रात की संख्या पूरी हो गई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे बाद तुम मेरी जाति में मेरे स्थानापन्न हो उनका सुधार करते रहना और शैतानों के मार्ग पर न चलना (142)

और जब मूसा हमारे निर्धारित किये हुए समय पर पहुंचे और उनके पालनहार ने उनसे वार्ता की तो कहने लगे कि ऐ रब दिखा कि मैं तेरा दर्शन करूं ईश्वर ने कहा कि तुम मुझे कदापि न देख सकोगे, हां, पर्वत की ओर देखते रहो यदि यह अपने स्थान पर स्थापित रहा तो तब तुम मुझको देख सकोगे तो जब उसके ईश्वर ने पर्वत पर तेज डाला तो उसको कण कण कर दिया और मूसा अचेत होकर गिर पड़े जब चेतना आई तो कहने लगे कि तेरा अस्तित्व पवित्र है और मैं तेरे समक्ष पश्चाताप करता हूं और जो आस्था लाने वाले हैं उनमें सबसे प्रथम हूं (143)

ईश्वर ने कहा (मूसा) मैंने तुम को अपने संदेश और अपनी वाणी से लोगों से श्रेष्ठ किया है तो जो मैंने तुम को प्रदान किया है उसे पकड़ रखो और आज्ञाकारी करो (144)

और हमने पट्टिकाओं में उनके लिए हर प्रकार की शिक्षा और हर वस्तु का विवरण लिख कर दिया (फिर आदेश किया कि) बल से पकड़े रहो और अपनी जाति से भी कह दो कि उन बातों को जो इसमें अंकित है बहुत उत्तम है पकड़े रहें, मैं निकट ही तुम को अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊंगा (145)

और जो लोग धरती में अनुचित घमण्ड करते हैं वह हमारी आयात से फिरे रहते हैं (अर्थात वह स्वीकार न करेंगे) यदि वह सब चिन्ह भी देख ले तब भी उन पर विश्वास न लाएंगे और यदि सत्य मार्ग देखेंगे तो उसे अपना मार्ग न बनाएंगे, और यदि पथ भ्रष्टता का मार्ग देखेंगे तो उसे अपना लेंगे, यह इसलिए कि उन्होंने हमारी धाराओं को झुटलाया और उनसे अचेत रहे (146)

जो लोग हमारी आयतों को और परलोक के आने को झुटलाएंगे उनके कर्म नष्ट हो जाएंगे वह जैसे कर्म करते हैं वैसा ही उनको फल मिलेगा (147) {2:7;4:155;9:127;51:9;61:5;83:14}

और मूसा की जाति ने मूसा के बाद अपने आभूषण का बछड़ा बना लिया (वह) एक शरीर (था) जिसमें से बैल की ध्वनि निकलती थी, उन लोगों ने यह न देखा कि वह न उनसे बात कर सकता है और न

اور وہ وقت جب ہم نے تم کو فرعونیوں سے نجات دی وہ لوگ تم کو بڑا دکھ دیتے تھے تمہارے بیٹوں کو قتل کر ڈالتے تھے اور بیٹیوں کو زندہ رہنے دیتے تھے اور اس میں تمہارے رب کی طرف سے سخت آزمائش تھی (۱۴۱)

اور پہلے ہم نے موسیٰ سے تیس راتوں کا وعدہ لیا تھا پھر دس راتیں ملا کر پورا چالیس کر دیا تو اس کے رب کی چالیس رات کی تعداد پوری ہو گئی اور موسیٰ نے اپنے بھائی ہارون سے کہا کہ میرے بعد تم میری قوم میں میرے جانشین ہو ان کی اصلاح کرتے رہنا اور شریروں کے رستے پر نہ چلنا (۱۴۲)

اور جب موسیٰ ہمارے مقرر کئے ہوئے وقت پر پہنچے اور ان کے رب نے ان سے کلام کیا تو کہنے لگے کہ اے رب دکھا کہ میں تیرا دیدار دیکھوں رب نے کہا کہ تم مجھے ہرگز نہ دیکھ سکو گے ہاں پہاڑ کی طرف دیکھتے رہو اگر یہ اپنی جگہ قائم رہا تو تم مجھ کو دیکھ سکو گے تو جب اس کے رب نے پہاڑ پر تجلی کی تو اس کو ریزہ ریزہ کر دیا اور موسیٰ بےہوش ہو کر گر پڑے۔ جب ہوش آیا تو کہنے لگے کہ تیری ذات پاک ہے اور میں تیرے حضور میں توبہ کرتا ہوں اور جو ایمان لانے والے ہیں ان میں سب سے اول ہوں (۱۴۳)

اللہ نے فرمایا (موسیٰ) میں نے تم کو اپنے پیغام اور اپنے کلام سے لوگوں سے ممتاز کیا ہے تو جو میں نے تم کو عطا کیا ہے اسے پکڑ رکھو اور فرمانبرداری کرو (۱۴۴)

اور ہم نے تختیوں میں ان کے لئے ہر قسم کی نصیحت اور ہر چیز کی تفصیل لکھوا کر دی (پھر ارشاد فرمایا کہ) زور سے پکڑے رہو اور اپنی قوم سے بھی کہہ دو کہ ان باتوں کو جو اس میں درج ہیں بہت بہتر ہیں پکڑے رہیں۔ میں عن قریب تم کو نافرمان لوگوں کا گھر دکھاؤں گا (۱۴۵)

اور جو لوگ زمین میں ناحق غرور کرتے ہیں وہ ہماری آیات سے پھرے رہتے ہیں (یعنی وہ قبول نہیں کریں گے) اگر وہ سب نشانیاں بھی دیکھ لیں تب بھی ان پر ایمان نہ لائیں گے۔ اور اگر راستی کا رستہ دیکھیں گے تو اسے اپنا رستہ نہ بنائیں گے۔ اور اگر گمراہی کی راہ دیکھیں گے تو اسے اپنا لیں گے۔ یہ اس لئے کہ انہوں نے ہماری آیات کو جھٹلایا اور ان سے غفلت کرتے رہے (۱۴۶)

اور جو لوگ ہماری آیتوں کو اور آخرت کے آنے کو جھٹلائیں گے ان کے اعمال ضائع ہو جائیں گے وہ جیسے عمل کرتے ہیں ویسا ہی ان کو بدلہ ملے گا (۱۴۷)[۲:۷،۴:۱۵۵، ۹:۱۲۷، ۵۱:۹، ۶۱:۵، ۸۳:۱۴]

اور قوم موسیٰ نے موسیٰ کے بعد اپنے زیور کا ایک بچھڑا بنا لیا (وہ) ایک جسم (تھا) جس میں سے بیل کی آواز نکلتی تھی۔ ان لوگوں نے یہ نہ دیکھا کہ وہ نہ ان سے بات کر سکتا ہے

उनको मार्ग दर्शन कर सकता है उसको उन्होंने पूज्य बना लिया और अपने प्रति अन्याय किया (148)

اور نہ ان کو رستہ دکھا سکتا ہے اس کو انہوں نے معبود بنالیا اور اپنے حق میں ظلم کیا (۱۴۸)

और जब उनको (अपनी त्रुटि का बोध हुआ तो लज्जा से) हाथ मलने लगे और उन्होंने देख लिया कि वह पथ भ्रष्ट हो गए हैं तो कहने लगे यदि हमारे रब ने पहले भी हम पर कृपा न की होती और हमारे पाप क्षमा न किए होते तो हम हानि उठाने वालों में हो जाते अतः अब भी आशा है कि वह दया करेगा. (149)

اور جب ان کو (اپنی غلطی کا احساس ہوا تو ندامت سے) ہاتھ ملنے لگے اور انہوں نے دیکھ لیا کہ وہ گمراہ ہو گئے ہیں تو کہنے لگے اگر ہمارے رب نے پہلے بھی ہم پر رحم نہ کیا ہوتا اور ہمارے قصور معاف نہ کئے ہوتے تو ہم نقصان اٹھانے والوں میں ہو جاتے اس لئے اب بھی امید ہے کہ وہ رحم کرے گا (۱۴۹)

और जब मूसा वापस आया अपनी जाति की और ईश्वर के नियम लेकर (तो वह जाति दशा जो मूर्ती पूजा कर रही थी देख कर) क्रोध किया और दुख के साथ कहा कि तुमने मेरे जाने के बाद कैसी अनुचित गति की? और कैसी अनुचित स्थानापन्नता की? क्या तुम्हें इतनी जल्दी थी कि अपने ईश्वर के आदेश की भी प्रतीक्षा न कर सके? और उसने पट्टिकाऐं एक ओर रख दी और अपने भाई हारून के सर के बालों को पकड़कर अपनी ओर खीचने लगे हारून ने कहा ऐ मेरी माता के पुत्र उन लोगों ने मुझे बलहीन जाना और निकट था कि वध कर डालें तो मेरे साथ ऐसा न कीजिए कि शत्रु हंसे और मुझे अन्यायियों में सम्मिलित न करो. (150)

اور جب موسیٰ واپس آیا اپنی قوم کی طرف احکام الٰہی لے کر (تو قوم کی حالت جو بت پرستی کر رہی تھی دیکھ کر) غصہ کیا اور افسوس کے ساتھ کہا کہ تم نے میرے جانے کے بعد کیسی نامعقول حرکت کی اور کیسی بُری جانشینی کی؟ کیا تمہیں اتنی جلدی تھی کہ اپنے رب کے حکم کا انتظار بھی نہ کر سکے؟ اور اس نے تختیاں ایک طرف رکھ دیں اور اپنے بھائی ہارون کے سر کے بالوں کو پکڑ کر اپنی طرف کھینچنے لگے ہارون نے کہا اے میرے ماں جائے بھائی ان لوگوں نے مجھے کمزور سمجھا اور قریب تھا کہ قتل کر ڈالیں تو میرے ساتھ ایسا نہ کیجئے کہ دشمن ہنسیں. اور مجھے ظالموں میں شامل نہ کیجئے (۱۵۰)

तब उन्होंने प्रार्थना की कि ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दें और हमें अपनी अनुकम्पा में प्रविष्ट कर तू सबसे बढ़कर दया करने वाला है. (151)

تب انہوں نے دعا کی کہ اے میرے رب مجھے اور میرے بھائی کو معاف کر دے اور ہمیں اپنی رحمت میں داخل کر تو سب سے بڑھ کر رحم کرنے والا ہے (۱۵۱)

इसमें कोई शंका नही की जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उनके ईश्वर का क्रोध शीघ्र अवतरित होगा. और दुनिया के जीवन में अपमान होगा हम ऐसे झूट बनाने वाले को ऐसी ही यातना देतें हैं. (152)

اس میں کوئی شک نہیں کہ جن لوگوں نے بچھڑے کو معبود بنایا ہے ان پر ان کے رب کا غضب جلد نازل ہوگا اور دنیا کی زندگی میں ذلت ہوگی ہم ایسے جھوٹ بنانے والوں کو ایسی ہی سزا دیتے ہیں (۱۵۲)

और जिन्होंने बुरे कर्म किए फिर इसके बाद पश्चाताप करली और विश्वास ले आए तो कुछ शंका नही कि तुम्हारा ईश्वर इसके बाद क्षमा करने वाला दयालू है. (153)

اور جنہوں نے بُرے کام کئے پھر اس کے بعد توبہ کر لی اور ایمان لے آئے تو کچھ شک نہیں کہ تمہارا رب اس کے بعد بخشنے والا مہربان ہے (۱۵۳)

और जब मूसा का आवेश दूर हुआ तो पट्टिकाएं उठा ली और जो कुछ उनमें लिखा था वह उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते है पथ प्रदर्शन और कृपा है. (154)

اور جب موسیٰ کا جوش دور ہوا تو تختیاں اٹھا لیں اور جو کچھ ان میں لکھا تھا وہ ان لوگوں کے لئے جو اپنے رب سے ڈرتے ہیں ہدایت اور رحمت ہے (۱۵۴)

और मूसा ने उस समय पर जो हमने निश्चित की थी अपनी जाति के सत्तर आदमी चुने जब उनको भूचाल ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब यदि तू चाहता है तो इनको और मुझको पहले ही से वध कर देता क्या तू उस कर्म के दण्ड में जो हममें से मुर्ख लोगों ने किया है हमें वध कर देगा यह तो तेरी परिक्षा है इससे तू उसको जो अशुभ कर्म करता है पथ भ्रष्ट कर देता है और जो अच्छे कर्म करता है उसे हिदायत देता है (अर्थात तेरा नियम) तू ही हमारा सहयक है तू हमें क्षमा कर दें और हम पर दया कर और तू सबसे उत्तम क्षमा करने वाला है (155)

اور موسیٰ نے اس میعاد پر جو ہم نے مقرر کی تھی اپنی قوم کے ستر آدمی منتخب کئے جب ان کو زلزلے نے پکڑا تو موسیٰ نے کہا اے رب اگر تو چاہتا تو ان کو اور مجھ کو پہلے ہی سے ہلاک کر دیتا کہ تو اس فعل کی سزا میں جو ہم میں سے بے عقل لوگوں نے کیا ہے ہمیں ہلاک کر دے گا یہ تو تیری آزمائش ہے اس سے تو اس کو جو بُرے عمل کرتا ہے گمراہ کر دیتا ہے اور جو اچھے عمل کرتا ہے اسے ہدایت دیتا ہے (یعنی تیرا قانون) تو ہی ہمارا کارساز ہے تو ہمیں بخش دے اور ہم پر رحم کر اور تو سب سے بہتر مغفرت کرنے والا ہے (۱۵۵)

और हमारे लिए इस दुनिया में भी मंगल लिख दे और परलोक में भी, हम तेरी ओर प्रत्यागमन हो चुके, कहा कि जो मेरा दण्ड है उसे तो जिस पर चाहता हूं नियमानुसार अवतरित करता हूं और जो मेरी दया है वह हर अच्छी वस्तु को सम्मिलित है मैंनेउस को उन लोगों के लिए लिख दिया है जो सदाचारीता करते और दान देते और हमारी आयतों पर विश्वास रखतें हैं, (156)

(आज यह कृपा उन लोगों का भाग है) जो इस ईशदूत नबी उम्मी का अनुकरण गृहण करें जिसका उल्लेख उन्हें अपने यहां तोरात और इनजील में लिखा हुआ मिलता है बुराई से रोकता है उनके लिए पवित्र वस्तुऐं वैध बताता है और अशुद्ध वस्तुऐं अवैध बताता है और उन पर से वह भार उतारता है जो उन पर लदे हुए थे (अर्थात उन के मुर्ख ज्ञानियों ने अपनी ओर से बना कर उनको दिए थे) और वह बंधन भी खोलता है जिस में उनको जकड़ दिया गया था, अतः जो लोग उस पर विश्वास लाएं और उस का समर्थन व सहयता करें और उस प्रकाश का अनुराण स्वीकार करें जो उस पर अवतरित किया गया है वही सफल होने वाले होंगे, (157) {3:75, 6:146, 76:4}

اور ہمارے لئے اس دنیا میں بھی بھلائی لکھ دے اور آخرت میں بھی، ہم تیری طرف رجوع ہو چکے فرمایا کہ جو میرا عذاب ہے اسے تو جس پر چاہتا ہوں قانون کے مطابق نازل کرتا ہوں اور جو میری رحمت ہے وہ ہر اچھی چیز کو شامل ہے میں نے اس کو ان لوگوں کے لئے لکھ دیا ہے جو پرہیزگاری کرتے اور زکوٰۃ دیتے اور ہماری آیتوں پر ایمان رکھتے ہیں (۱۵۶)

(آج یہ رحمت ان لوگوں کا حصہ ہے) جو اس رسول نبی اُمّی کی پیروی اختیار کریں گے جس کا ذکر انہیں اپنے یہاں تورات اور انجیل میں لکھا ہوا ملتا ہے وہ انہیں نیکی کا حکم دیتا ہے برائی سے روکتا ہے ان کے لئے پاک چیزیں حلال بتاتا ہے اور ناپاک چیزیں حرام بتاتا ہے اور ان پر سے وہ بوجھ اُتارتا ہے جو ان پر لدے ہوئے تھے (یعنی ان کے جاہل عالموں نے اپنی طرف سے بنا کر ان کو دئے تھے) اور وہ بندشیں بھی کھولتا ہے جس میں ان کو جکڑ دیا گیا تھا لہٰذا جو لوگ اس پر ایمان لائیں اور اس کی حمایت و نصرت کریں اور اس روشنی کی پیروی اختیار کریں گے جو اس پر نازل کی گئی ہے وہی فلاح پانے والے ہوں گے (۱۵۷)
[۳:۷۵، ۶:۱۴۶، ۷۶:۴)

नोट– मुसलमानों ने मुहम्मद स० को अनपढ़ माना है देखे कुरआन क्या कहता है?

सूरत बकरा आयत 78 और कतिपय उनमें उम्मी है कि सूचना नही रखते पुस्तक की अतिरिक्त झूटी कामनाओं की और उनके पास कुछ नही परन्तु कल्पना,

(2:79) सो विकार है उनको जो लिखते है पुस्तक अपने हाथ से फिर कह देते है यह ईश्वर की ओर से है ताकि लेवें उस पर थोड़ा सा मूल्य सो विकार है उनको अपने हाथों के लिखे से और विकार है उनको अपनी कमाई से आले इमरान 75 और कतिपय पुस्तक वालों में वह है कि यदि उनके पास धरोहर रखिए ढेर माल का तो दे दे तुमको और कतिपय उनमें वह है कि यदि उनके पास धरोहर रखे एक अशरफी तो न दे तुमको परन्तु जबकि तू रहे उसके सिर पर खड़ा यह इस वास्ते कि उन्होंने कह रखा है कि नही है इस पर उम्मी लोगों के लिए कुछ पाप वह झूट बोलते है ईश्वर पर और वह जानते है,

चूंकि बनी इसराईल में शिक्षा की कमी थी और वह उस समय धर्म और शास्त्र से अनभिज्ञ थे महामना मुहम्मद स० से पहले बनी इसमाईल में श्रीमान इसमाईल के बाद किसी नबी का प्रेषण नही हुआ जबकि इस समय में बनी इसमाईल के बीच बहुत से नबी आए और उन्हें पुस्तक भी मिली, इसके विपरीत बनी ईसमाईल को कुरआन से पहले पुस्तक भी नही मिली, इस कारण बनी इसमाईल को उम्मी बिना पुस्तक वाले कहते थे और यह शब्द बनी इसराईल अपमान के पहलू से प्रयोग करते थे, परन्तु बदवियत और उम्मियत व पुस्तक और धर्म शास्त्र से अपरिचय चूंकि वास्तविक रूप में उनके मध्य विधामान थी इस कारण से कुरआन में इस शब्द को उनके लिए विशिष्ट उपाधि के समान प्रयोग किया और मुहम्मद स० और सहाबा ने भी इस शब्द को बिना किसी आत्महीनता के प्रयोग किया, मानो बनी इसराईल के

نوٹ: مسلمانوں نے محمدؐ کو ان پڑھ لکھا ہے دیکھیں قرآن کیا کہتا ہے؟

سورت بقرہ آیت (۲:۷۸) اور بعض ان میں اُمّی ہیں کہ خبر نہیں رکھتے کتاب کی سوائے جھوٹی آرزوؤں کے اور ان کے پاس کچھ نہیں مگر خیالات۔

(۲:۷۹) سو خرابی ہے ان کو جو لکھتے ہیں کتاب اپنے ہاتھ سے پھر کہہ دیتے ہیں یہ اللہ کی طرف سے ہے تاکہ لیویں اس پر تھوڑا سا مول۔ سو خرابی ہے ان کو اپنے ہاتھوں کے لکھے سے اور خرابی ہے ان کو اپنی کمائی سے۔

آل عمران (۷۵) اور بعضے اہل کتاب میں وہ ہیں کہ اگر ان کے پاس امانت رکھے ڈھیر مال کا تو ادا کر دیں تجھ کو اور بعضے ان میں وہ ہیں کہ اگر ان کے پاس امانت رکھے ایک اشرفی تو ادا نہ کریں تجھ کو مگر جب کہ تو رہے اس کے سر پر کھڑا یہ اس واسطے کہ انہوں نے کہہ رکھا ہے کہ نہیں ہے ہم پر اُمّی لوگوں کے حق میں کچھ گناہ وہ جھوٹ بولتے ہیں اللہ پر اور وہ جانتے ہیں۔

چونکہ بنی اسماعیل میں تعلیم کی کمی تھی اور وہ اس وقت کی کتاب و شریعت سے ناآشنا تھے اور حضرت محمدؐ سے پہلے بنی اسماعیل میں حضرت اسماعیل کے بعد کسی نبی کی بعثت نہیں ہوئی جب کہ اس دوران بنی اسرائیل کے اندر بہت سے نبی آئے اور انہیں کتاب بھی ملی اس کے برعکس بنی اسماعیل کو قرآن سے پہلے کتاب بھی نہیں ملی۔ اس وجہ سے بنی اسرائیل بنی اسماعیل کو امی بغیر اہل کتاب کہتے تھے اور یہ لفظ بنی اسرائیل تحقیر کے پہلو سے استعمال کرتے تھے لیکن بدویت اور امیت کتاب و شریعت سے بیگانگی چونکہ بطور امر واقعہ ان کے اندر موجود تھی اس وجہ سے قرآن میں اس لفظ کو ان کے لئے بطور امتیازی لقب کے استعمال کیا۔ اور محمدؐ اور صحابہ نے بھی اس لفظ کو بلا کسی احساس کہتری کے استعمال کیا، گویا بنی

सम्मुख यह शब्द उनके लिए एक विशिष्ट उपाधि थी बनी इस्माईल के लिए उम्मी एक उपाधि के स्थान पर प्रयोग होता है इसका कारण यह है कि वह लोग पाठशाला की शिक्षा से अनभिज्ञ अपनी बदवियाना सादगी पर स्थापित थे और लिखना पढ़ना केवल अपने परिवार के पुरुषों से ही प्राप्त करते थे जो चलते फिरते और घर पर रहते हो जाती थी.

इस प्रकार यह शब्द विशिष्ट हो सकता है अरबों क लिए इस शब्द के प्रयोग का आरम्भ पुस्तक वालों से ही हुआ हो, किन्तु यह बात स्पष्ट है कि शब्द के प्रयोग में अरबों के लिए अपमान का कोई पार्श्व नही था अतः कुरआन ने इस शब्द को अरबों के लिए उनको पुस्तक वालों अर्थात यहूद व ईसाईयों से विभेदित करने के लिए प्रयोग किया है इस पार्श्व से मुहम्मद स0 के लिए नबी उम्मी की उपाधि प्रयोग हुई है न कि उन पढ़ होने के कारण नबी पढ़े लिखे थे इसका प्रमाण भी कुरआन में विधमान है दूसरी बात यह कि मक्काह को उम्मुल कुरा कहा जाता है जो कुरआन में अंकित है.

सूरत अलअनाम आयत 92 और इस लिए अवतरित की गई है कि इसके द्वारा तुम नगरों के इस केन्द्र (अर्थात उम्मुलकुरा) और इसके चारो ओर रहने वालो को सचेत कर दो.

सूरत शूरा आयत 7 हां इसी प्रकार ऐ नबी यह कुरआन अरबी हमने तुम्हारी ओर वही किया है ताकि तुम नगरो के केन्द्र (उम्मुलकुरा) और उसके चारो ओर रहने वालो को सचेत कर दो.

इस लिए भी उम्मुलकुरा (मक्काह) के रहने वालो को उम्मी कहा गया है जैसे चीन के रहने वाले को चीनी और अरब के रहने वाले को अरबी कहा जाता है.

आले इमरान आयत 20 फिर भी यदि तुझसे झगड़ा करें तो कहदे मैंने आधीन अपना मुख ईश्वर के आदेश पर और उन्होंने भी जो मेरे साथ है, कह दो पुस्तक वालों को और उम्मी (बिना पुस्तक वालो को) कि तुमभी आधीन होते हो फिर यदि वह आधीन हुए तो उन्होंने मार्ग पाया सीधा और यदि मुख मोड़े तो तेरा दायित्व केवल पहुंचा देना है और ईश्वर की दृष्टि में है बन्दे

सूरत जुमा आयत 2 वही है जिसने उठया अर्थात बनाया उम्मीयों में एक ईशदूत उनही में का पढ़कर सुनाता है उनको उसकी धाराएं और उनको संवारता है और सिखलाता है उनको पुस्तक और बुद्धि और इससे पहले थे वह खुली खोज में लुप्त हुए धर्म शास्त्र की.

उपरोक्त आयत को पढ़ने के बाद यह परिणाम सामने आता है कि उम्मी का अर्थ इन आयात में अनपढ़ कदापि नही, अपितु पुस्तक वालो की तुलना में बिना पुस्तक वाले और उम्मुल कुरा के रहने वालों से है, जैसा कि यहूदी कहते थे कि हम पुस्तक वाले है और अरबों पर कोई पुस्तक अवतरित नही हुई अतः यह उम्मी है और इनको कोई अधिकार नही है कि यह वाद करें कि हमारे मध्य एक नबी का प्रेषण हुआ है, ईशदौत्य और राज्य तो केवल हमारा ही अधिकार है इस पर ईश्वर ने कहा कि देखो जिनको तुम उम्मी अर्थात बिना पुस्तक वाले कहते हो उनमें ही नबी का प्रेषण किया गया है यह तो हमारी दया है हमारा प्रसाद है हम जिस पर चाहें दया करे और अब यह दया और प्रसाद उम्मीयों के लिए विशेष हो गया है.

(2:78,79) में कहा गया है कि उनमें कतिवय उम्मी है जो पुस्तक का ज्ञान नही रखते, बस अपने कुछ विचार रखते है उम्मी को अधिक सपष्ट करने के लिए इस्म मोसूला लिल्लज़ीना लाकर हर भ्रम को ही समाप्त कर दिया, यह इस्म मोसूला राजे हो रहा है उम्मीयों की ओर और कहा है कि दोष है उनको जो लिखते है पुस्तक अपने हाथ से, फिर कहते है,

اسرائیل کے بالمقابل یہ لفظ ان کے لئے ایک امتیازی لقب تھا. بنی اسماعیل کے لئے اُمّی بطور لقب استعمال ہوتا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ لوگ مدرسے کی تعلیم سے نا آشنا اپنی بدویانہ سادگی پر قائم تھے اور لکھنا پڑھنا صرف اپنے قبیلے کے افراد سے ہی حاصل کرتے تھے، جو چلتے پھرتے اور گھر پر رہتے ہو جاتی تھی.

اسی طرح یہ لفظ امتیازی ہو سکتا ہے عربوں کے لئے اس لفظ کے استعمال کا آغاز اہل کتاب سے ہی ہوا ہو لیکن یہ بات واضح ہے کہ اس لفظ کے استعمال میں عربوں کے لئے تحقیر کا کوئی پہلو نہیں تھا. چنانچہ قرآن نے اس لفظ کو عربوں کے لئے ان کو اہل کتاب یعنی یہود و عیسائیوں سے ممیز کرنے کے لئے استعمال کیا ہے. اس پہلو سے محمدؐ کے لئے نبی اُمّی کا لقب استعمال ہوا ہے نہ کہ ان پڑھ ہونے کی وجہ سے.

نبی پڑھے تھے اور اس کا ثبوت بھی قرآن میں موجود ہے دوسری بات یہ کہ مکہ کو ام القریٰ کہا جاتا ہے جو قرآن میں درج ہے.

سورہ انعام ۔ آیت ۹۲/ اور اس لئے نازل کی گئی ہے کہ اس کے ذریعہ تم بستیوں کے اس مرکز (یعنی ام القریٰ) اور اس کے گرد و پیش رہنے والوں کو خبردار کردو.

سورت شوریٰ ۔ آیت ۷/ ہاں اسی طرح اے نبی یہ قرآن عربی ہم نے تمہاری طرف وحی کیا ہے تا کہ تم بستیوں کے مرکز (ام القریٰ) اور اس کے اطراف میں رہنے والوں کو خبردار کردو.

اس لئے بھی ام القریٰ (مکہ) کے رہنے والوں کو اُمّی کہا گیا ہے جیسے چین کے رہنے والے کو چینی اور عرب کے رہنے والے کو عربی کہا جاتا ہے.

آل عمران ۔ آیت ۲۰/ پھر بھی اگر آپ سے جھگڑا کریں تو کہہ دے میں نے تابع کیا اپنا منہ اللہ کے حکم پر اور انہوں نے بھی جو میرے ساتھ ہیں کہہ دو کتاب والوں کو اور امی (غیر اہل کتاب کو) کہ تم بھی تابع ہوتے ہو. پھر اگر وہ تابع ہوئے تو انہوں نے راہ پائی سیدھی. اور اگر منہ پھریں تو آپ کے ذمہ صرف پہنچا دینا ہے اور اللہ کی نگاہ میں ہیں بندے.

سورت جمعہ ۔ آیت ۲/ وہی ہے جس نے اٹھایا امیوں میں ایک رسول ان ہی میں کا پڑھ کر سناتا ہے ان کو اس کی آیتیں اور ان کو سنوارتا ہے اور سکھلاتا ہے ان کو کتاب اور عقلمندی اور اس سے پہلے تھے وہ کھلی تلاش میں گم شدہ شریعت کی.

آیات بالا کو پڑھنے کے بعد یہ نتیجہ سامنے آتا ہے کہ اُمّی کا مطلب ان آیات میں ان پڑھ ہرگز نہیں، بلکہ اہل کتاب کے مقابلہ میں غیر اہل کتاب اور ام القرائی کے رہنے والوں سے ہے، جیسا کہ یہودی کہتے تھے کہ ہم اہل کتاب ہیں اور عربوں پر کوئی کتاب نازل نہیں ہوئی اس لئے یہ اُمّی ہیں. اور ان کو کوئی حق نہیں ہے کہ یہ دعویٰ کریں کہ ہمارے اندر ایک نبی مبعوث ہوا ہے. نبوت اور امارت تو صرف ہمارا ہی حق ہے اس پر اللہ نے فرمایا کہ دیکھو جن کو تم امی یعنی غیر اہل کتاب کہتے ہو ان میں ہی نبی مبعوث کیا گیا ہے یہ تو ہماری رحمت ہے ہمارا فضل ہے ہم جس پر چاہیں کریں اور اب یہ رحمت اور فضل اُمّیوں کے لئے خاص ہو گیا ہے.

(۲:۷۸،۷۹) میں کہا گیا ہے کہ ان میں بعض اُمّی ہیں جو کتاب کا علم نہیں رکھتے بس اپنے کچھ خیال رکھتے ہیں. اُمّی کی مزید وضاحت کرنے کے لئے اسم موصولہ للذین لا کر ہر شک کو ہی ختم کردیا. یہ اسم موصولہ راجع ہو رہا ہے امیوں کی طرف اور کہا ہے کہ خرابی ہے ان کو جو لکھتے ہیں کتاب اپنے ہاتھ سے پھر کہہ دیتے ہیں یہ

यह ईश्वर की ओर से है, देखिए इस आयत में कितने अच्छी प्रकार उम्मी को स्पष्ट कर दिया है, क्या अनपढ़ अपने हाथ से कुछ लिख सकता है? हाथ से वही लिखेगा जो पढ़ा होगा, अतः उम्मी का अर्थ अनपढ़ कदापि नही है, इस क्रम में और स्पष्टिकरण अवलोकन हो,

मुहम्मद स0 के विषय में अपने और पराए सब यही कहते है कि वह अनपढ़ थे केवल शब्द उम्मी को लेकर यद्यपि इसका स्पष्टिकरण ऊपर हो गया है, परन्तु और सुनिए क्या वास्तव में मुहम्मद स0 अनपढ़ थे,

सूरत फुरकान 25 आयत 5, और कहने लगे यह प्रतिया है पहलो की जिनको इसने लिख लिया है सो वही लिखवाई जाती है प्रातः और सायं,

सूरत अनकबूत 29 आयत 48, और इससे पहले (अर्थात कुरआन अवतरित होने से पहले) तुम कोई पुस्तक न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यदि यूं होता तो व्यर्थ वाले अवश्य शंका लाते,

उपरोक्त लिखित (25:5) में स्वयं मुहम्मद के विरोधी यह स्वीकार कर रहे है कि नबी ने पुरानी प्रतियों को लिख लिया है जो प्रातः और सायं दूसरो को लिखाई जाती है विरोधी तो मुहम्मद स0 को पढ़ा लिखा स्वीकार कर रहे है और रसूल के अनुयायी उनको अनपढ़ लिख रहे है? आयत (29:48) में ईश्वर साक्ष्य दे रहा है कि ऐ मुहम्मद आप नबूवत मिलने से पहले न लिखते थे न पढ़ते थे, यह इस लिए कि यदि ऐसा होता तो विरोधी अवश्य शंका करते कि नबी ने पहले से ही लिख लिया है ओर पढ़ लिया है और समय आने पर उन्होने घोषणा कर दी कि मैं नबी हूं, और यह पुस्तक है अतः मुहम्मद नबूवत मिलने से पहले लिखते पढ़ते न थे पहले का इनकार है नबूवत मिलने के बाद का नही है बाद के लिए स्वीकृति है कि आप ईशदौत्य मिलने के बाद लिखते पढ़ते थे,

इस सत्य जिसको नकारा नही जा सकता केवल शब्द उम्मी जिसका अर्थ भोलेपन से अनपढ़ लिख दिया गया है, से यह कह देना कि मुहम्मद स0 अनपढ़ थे उनकी महिमा में अशिष्टता है, हां कही इस शब्द का अर्थ अनपढ़ होगा परन्तु यहा अनपढ़ नही है,

आयत (62:2) में है कि वही तो है जिसने उम्मीयों के मध्य एक ईशदूत स्वयं उन ही में से उठाया इस आयत में लगभग पुरे मक्का वालो को उम्मी कहा गया है, तब ही तो कहा कि उम्मीयों में स्वयं उन्ही में से नबी उठाया इस आयत के प्रकाश में युद्ध बदर को देखिए जिसमें मक्का के आदमी जिनमें मुहम्मद स0 के परिवारी भी थे बन्दी हो गए थे और उन में अधिकांश को स्वतन्त्र करने का बदला यह निश्चित हुआ था कि हर व्यक्ति इतने व्यक्तियों को लिखना पढ़ना सिखा दे उन बन्दीयों ने यह काम किया और स्वतन्त्र हो गए अब विचारणीय बात यह है कि यदि अनपढ़ को उम्मी कहा गया है तो ईश्वर ने किन उम्मीयों में रसूल उठाया जो लिखना पढ़ना जानते थे, जो बन्दी हो गए थे विचार करें कि यह वही उम्मी थे जो उम्मुल कुरा मक्का के रहने वाले थे और वह पढ़े लिखे थे अतः मुहम्मद भी पढ़े लिखे थे, अन्तर केवल यह है कि उनकी शिक्षा किसी पाठशाला में नियमानुसार नही हुई थी, केवल अपने परिवार के व्यक्तियों के द्वारा हुई थी,

एक बात हुदेबिया की संधि की है जब रसूल शब्द लिखने पर मक्का वालो ने आपत्ति की तो मुहम्मद स0 ने अली र0 से कहा कि इस शब्द को काट कर मुहम्मद पुत्र अब्दुल्ला लिख दो तो अली ने इन्कार कर दिया, तब मुहम्मद ने अपने हाथ से रसूल शब्द काट कर वही लिख दिया जो मक्का वाले चाहते थे, अली भी तो मक्काह के रहने वाले थे अर्थात उम्मी थे फिर अली कैसे लिख रहे थे और मक्का के

اللہ کی طرف سے ہے دیکھئے اس آیت میں کتنے اچھی طرح اُمّی کی وضاحت کردی ہے کیا ان پڑھ اپنے ہاتھ سے کچھ لکھ سکتا ہے؟ ہاتھ سے وہی لکھے گا جو پڑھا ہوگا۔اس لئے اُمّی کا مطلب ان پڑھ ہرگز نہیں ہے اس سلسلے میں مزید وضاحت ملاحظہ ہو۔

محمدؐ کے بارے میں اپنے اور غیر سب یہ کہتے ہیں کہ وہ ان پڑھ تھے صرف لفظ اُمّی کو لے کر حالانکہ اس کی وضاحت اوپر ہو گئی ہے مگر اور سنئے کیا حقیقت میں محمدؐ ان پڑھ تھے۔

سورہ الفرقان ۔ ۲۵/آیت ۵/اور کہنے لگے یہ نقلیں ہیں پہلوں کی جن کو اس نے لکھ لیا ہے سو وہی لکھوائی جاتی ہیں صبح اور شام

سورہ العنکبوت ۲۹/آیت ۴۸/اور اس سے پہلے (یعنی قرآن نازل ہونے سے پہلے)تم کوئی کتاب نہ پڑھتے تھے اور نہ اپنے ہاتھ سے کچھ لکھتے تھے اگر یوں ہوتا تو باطل والے ضرور شک لاتے

مندرجہ بالا (۲۵:۵) میں خود محمدؐ کے مخالف یہ اقرار کر رہے ہیں کہ نبی نے پرانی نقلوں کو لکھ لیا ہے جو صبح اور شام دوسروں کو لکھائی جاتی ہیں مخالف تو محمدؐ کو پڑھا لکھا تسلیم کر رہے ہیں اور رسول کے امتی ان کو ان پڑھ لکھ رہے ہیں؟ آیت (۲۹:۴۸) میں اللہ شہادت دے رہا ہے کہ اے محمدؐ آپ نبوت ملنے سے پہلے نہ لکھتے تھے نہ پڑھتے تھے یہ اس لئے کہ اگر ایسا ہوتا تو مخالف ضرور شک کرتے کہ نبی نے پہلے سے ہی لکھ لیا ہے اور پڑھ لیا ہے اور وقت آنے پر انہوں نے اعلان کر دیا کہ میں نبی ہوں اور یہ کتاب ہے۔اس لئے محمدؐ نبوت ملنے سے پہلے لکھتے پڑھتے نہ تھے پہلے کا انکار ہے نبوت ملنے کے بعد کا انکار نہیں ہے بعد کے لئے اقرار ہے کہ آپ نبوت ملنے کے بعد لکھتے پڑھتے تھے۔

اس نا قابل تردید ثبوت ہوتے ہوئے صرف لفظ امی جس کا مطلب بھولے پن سے ان پڑھ لکھ دیا گیا ہے سے یہ کہہ دینا کہ محمدؐ ان پڑھ تھے ان کی شان میں گستاخی ہے ہاں کہیں اس لفظ کا مطلب ان پڑھ ہوگا مگر یہاں ان پڑھ نہیں ہے۔

آیت (۶۲:۲) میں ہے کہ وہی تو ہے جس نے امیوں کے اندر ایک رسول خود ان ہی میں سے اٹھایا اس آیت میں تقریباً پورے مکہ والوں کو امی کہا گیا ہے تب ہی تو کہا کہ امیوں میں خود انہی میں سے نبی اٹھایا۔اس آیت کے ذیل میں جنگ بدر کو دیکھئے جس میں مکہ کے افراد جن میں محمد کے خاندانی بھی تھے قید ہو گئے تھے اور ان میں اکثر کی رہائی کا فدیہ یہ مقرر ہوا تھا کہ ہر آدمی اتنے آدمیوں کو لکھنا پڑھنا سکھا دے۔اُن قیدیوں نے یہ کام کیا اور رہا ہو گئے۔اب غور طلب بات یہ ہے کہ اگر ان پڑھ کو امی کہا گیا ہے تو اللہ نے کن امیوں میں رسول اٹھایا جو لکھنا پڑھنا جانتے تھے جو قید ہو گئے تھے۔غور کریں کہ یہ وہی امی تھے جو ام القریٰ مکہ کے رہنے والے تھے اور وہ پڑھے لکھے تھے۔اس لئے محمدؐ بھی پڑھے لکھے تھے۔فرق صرف یہ ہے کہ ان کی تعلیم کسی مدرسے میں باقاعدہ نہیں ہوئی تھی، محض اپنے قبیلہ کے افراد کے ذریعہ ہوئی تھی۔

ایک بات صلح حدیبیہ کی ہے جب رسول لفظ لکھنے پر مکہ والوں نے اعتراض کیا تو محمدؐ نے علیؓ سے کہا کہ اس لفظ کو کاٹ کر محمدؐ بن عبداللہ لکھ دو تو علی نے انکار کر دیا۔تب محمدؐ نے اپنے ہاتھ سے رسول لفظ کاٹ کر وہی لکھ دیا جو مکہ والے

रहने वाले कई वही के लेखक भी थे, पहली वही के समय भी शब्द इक़रा अर्थात पढ़ आया है और यदि मुहम्मद स0 अनपढ़ थे तो कागज़ कलम अली से लेकर अपने हाथ से वही कैसे लिख दिया जो मक्का वाले चाहते थे और अली ने इन्कार कर दिया था?

इतने प्रमाणो के बाद यदि अब भी हम मुहम्मद स0 को अनपढ़ ही मानते रहे तो इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है कि हम कुरआन की उपेक्षा करके केवल रवायात कथन को मान रहे है जो ग़ैर मासूम रावी की साक्ष्य से अधिक और कुछ नही है और हम सत्य बात कहने का साहस और उसको समझने की क्षमता से वंचित हो गए है इस शब्द अनपढ़ को लेकर सलमान रूश्दी ने भी पूरे कुरआन और इस्लाम को शंका के घेरे में लाने का असफल प्रयत्न किया है (ईश्वर की शरण) पानी सरसे ऊंचा हो गया है क्या अब भी वह समय नही आया जब हम स्पष्ट शब्दो में यह घोषणा करें कि मुहम्मद स0 पढ़े लिखे थे अतः अनपढ़ नही थे अस्तु मैं तो पूरे विवेक के साथ यह घोषणा करता हूं कि नबी पढ़े लिखे थे दुनिया चाहे कुछ भी कहती रहे.

आयात में पवित्र वस्तुएं वैध बताने का अर्थ यह है कि जो वस्तुएं बनी इसराईल पर उनकी निर्धनता और विवशता के कारण से क्रय शक्ति से दूर हो गई थी अर्थात वंचित हो गए थे या उनके पंडितो ने मिथ्या आचरण से कार्य करके वैध को अवैध और अवैध को वैध कर दिया था जैसे आज मुसलमानों के यहां है कि एक दल किसी वस्तु को वैध बता रहा है दूसरा अवैध ऐसे ही वह ज्ञानी करते थे, यद्यपि उनके धर्मशास्त्र में भी वह वस्तुएं वैध थी जिनको मुहम्मद स0 बता रहे थे कि अमुक वस्तु जो तुम्हारे ज्ञानी ने अवैध कर दी है वह वैध है जो वैध कर रखी है वह अवैध है, भार उतारने का अर्थ है कि उन्होंने अपने धर्म शास्त्रीयों और संतो के कहने पर अपने ऊपर स्वयं बनाई हुई विधि को लाद लिया था जिस में बहुत कुछ बन्धन थे जैसे आज मुसलमानों में है, उनको भी मुहम्मद स0 ने बताया कि यह नियम जिसका तुम पालन कर रहे हो ईश्वर का प्रेषित किया हुआ नही है ईश्वर ने यह प्रेषित किया है जो कुरआन में है और यही पहले भी था, (42:13, 4:26) जो बहुत साफ है इसको मानो जिसकी घोषणा (7:156) में कर दी है, (2:177,47:4)

(ऐ मुहम्मद स0) कह दो कि लोगो मैं तुम सबकी ओर ईश्वर का भेजा हुआ हूं (अर्थात उसका ईशदूत हूं) जो आकाशों और पृथ्वी का राजा है कौन कहता है ईश्वर नही निःसंदेह ईश्वर है वही जीवन देता है और वही मृत्यू देता है तो ईश्वर पर और उसके रसूल नबी उम्मी पर जो ईश्वर पर और उसके तमाम कथन पर विश्वास रखते है आस्था लाओ, और उनका अनुकरण करो ताकि पथ प्रदर्शन पाओ, (158)

और मूसा की जाति में (कुरआन के प्रेषण के समय) कुछ लोग ऐसे भी है जो सत्य का मार्ग बताते है और उसी के साथ न्याय करते है, (159)

और हमने (बनी इसराईल की अधिकता के कारण) उनको (सरलता के लिए अपने आदेश से जो नबी को दिया था से) बारह दल बना दिए और जब मूसा से उनकी जाति ने पानी मांगा तो हमने उनकी ओर आदेश भेजा कि अपनी लाठी पत्थर पर

چاہتے تھے.علی بھی تو مکہ کے رہنے والے یعنی امی تھے پھر علی کیسے لکھ رہے تھےاور مکہ کے رہنے والے کئی کاتب وحی بھی تھے پہلی وحی کے وقت بھی لفظ اقرا یعنی پڑھ آیا ہے.اور اگر محمدؐ ان پڑھ تھے تو کاغذ قلم علی سے لے کر اپنے ہاتھ سے وہی کیسے لکھ دیا جو مکہ والے چاہتے تھےاور علی نے انکار کر دیا تھا؟

اتنے ثبوت کے بعد اگر اب بھی ہم محمدؐ کو ان پڑھ ہی مانتے رہےتو اس کے علاوہ اور کیا کہا جا سکتا ہے کہ ہم قرآن سے صرف نظر کر کے محض روایات کو مان رہے ہیں. جو غیر معصوم راوی کی شہادت سے زیادہ اور کچھ نہیں ہے.اور ہم حق بات کہنے کی جرات اور اس کو سمجھنے کی صلاحیت سے محروم ہو گئے ہیں اس لفظ ان پڑھ کو لے کر سلمان رشدی نے بھی پورے قرآن اور اسلام کو شک کے دائرے میں لانے کی ناکام اور ناپاک کوشش کی ہے(نعوذباللہ)پانی سر سے گزر چکا ہے کیا اب بھی وہ وقت نہیں آیا جب ہم دوٹوک الفاظ میں اعلان کریں کہ محمدؐ پڑھے لکھے تھے ان پڑھ نہیں تھے.بہرحال میں تو پورے شرح صدر کے ساتھ یہ اعلان کرتا ہوں کہ نبی پڑھے لکھے تھے دنیا خواہ کچھ بھی کہتی رہے.

آیت میں پاک چیزیں حلال بتانے کا مطلب یہ ہے کہ جو چیزیں بنی اسرائیل پر ان کی محتاجی اور مفلسی کی وجہ سے طاقت خرید سے دور ہو گئیں تھیں یعنی محروم ہو گئے تھے یا ان کے عالموں نے غلط روش سے کام لے کر حلال کو حرام اور حرام کو حلال کر لیا تھا جیسے آج مسلمانوں کے یہاں ہے کہ ایک فرقہ کسی چیز کو حلال بتا رہا ہے دوسرا حرام ایسے ہی وہ عالم کرتے تھے.حالانکہ ان کی شریعت میں بھی وہ چیزیں حلال تھیں جن کو محمدؐ بتا رہے تھے کہ فلاں چیزیں جو تمہارے عالم نے حرام کر دی ہے وہ حلال ہے جو حلال کر رکھی ہے وہ حرام ہے. بوجھ اتارنے کا مطلب ہے کہ انہوں نے اپنے فقیہ اور درویشوں کے کہنے پر اپنے اوپر خود بنائی ہوئی شریعت لاد لی تھی جس میں بہت کچھ بندشیں تھیں جیسے آج مسلمانوں میں ہیں ان کو بھی محمدؐ نے بتایا کہ یہ قانون جس کی تم پابندی کر رہے ہو اللہ کا نازل کردہ نہیں ہے اللہ نے یہ نازل کیا ہے جو قرآن میں ہے. اور یہی پہلے بھی تھا (۴۲:۱۳،۴:۲۶) جو بہت آسان ہے اس کو مانو جس کا اعلان (۷:۱۵۸) میں کر دیا ہے(۲:۱۷۷،۴۷:۴)

(اے محمدؐ) کہہ دو کہ لوگو! میں تم سب کی طرف اللہ کا بھیجا ہوا ہوں (یعنی اس کا رسول ہوں) جو آسمانوں اور زمین کا بادشاہ ہے کون کہتا ہے اللہ نہیں یقیناً اللہ ہے وہی زندگانی بخشتا ہے اور وہی موت دیتا ہے تو اللہ پر اور اس کے رسول نبی امی پر جو اللہ پر اور اس کے تمام کلام پر ایمان رکھتے ہیں ایمان لاؤ اور ان کی پیروی کرو تاکہ ہدایت پاؤ(۱۵۸)

اور قوم موسیٰ میں (نزول قرآن کے وقت) کچھ لوگ ایسے بھی ہیں جو حق کا رستہ بتاتے ہیں اور اسی کے ساتھ انصاف کرتے ہیں(۱۵۹)

اور ہم نے (بنی اسرائیل کی اکثریت کی وجہ سے) ان کو (آسانی کے لئے اپنے حکم سے جو نبی کو دیا تھا سے) بارہ جماعتیں بنا دیا اور جب موسیٰ سے ان کی قوم نے پانی طلب کیا تو ہم نے ان کی طرف وحی بھیجی کہ اپنی لاٹھی پتھر

मारो तो उस में से बारह स्रोत फूट निकले और सब लोगो ने अपना अपना घाट ज्ञात कर लिया (अर्थात हर एक दल को बता दिया गया कि तुम अमुक घाट से पानी लोगे) और हमने उन पर बादलो को मण्डप बनाए रखा और उन पर मन-व-सलवा उतारते रहे (और उनसे कहा कि) जो पवित्र वस्तुएं हम तुम्हे देते हैं उन्हे खाओ, परन्तु उन लोगो ने (अवज्ञा करके) हमारी हानि नही की अपितु अपना ही नुकसान किया. (160)

پر ماردو تو اس میں سے بارہ چشمے پھوٹ نکلے اور سب لوگوں نے اپنا اپنا گھاٹ معلوم کرلیا (یعنی ہر ایک جماعت کو بتا دیا گیا کہ تم فلاں گھاٹ سے پانی لوگے) اور ہم نے ان پر بادلوں کو سائبان بنائے رکھا اور ان پر من وسلویٰ اتارتے رہے (اور ان سے کہا کہ) جو پاکیزہ چیزیں ہم تمہیں دیتے ہیں انہیں کھاؤ مگر ان لوگوں نے (نافرمانی کرکے) ہمارا کچھ نقصان نہیں کیا بلکہ اپنا ہی نقصان کیا (۱۶۰)

नोट :- मूसा भूगर्भ शास्त्रवेत्ता भी थे उनको ज्ञात हो जाता था कि पानी किस धरती में सरलता से निकलता है और वहा पर धरती निम्न थी अतः ईश्वर के आदेशानुसार ऐसी भूमी पर अपनी लाठी मारी अर्थात सूराख किया जिससे पानी निकलने लगा.

نوٹ: ۔موسیٰ ماہر ارض بھی تھے ان کو معلوم ہوجاتا تھا کہ پانی کس زمین میں آسانی سے نکلتا ہے اور وہاں پر زمین نشیبی تھی اس لئے اللہ کے حکم کے مطابق ایسی زمین پر اپنا عصا مارا یعنی سوراخ کیا جس سے پانی ابلنے لگا.

माह जून 2003 ई0 में मैं ने बी0बी0सी0 की उर्दू सेवा में सूना था कि जब आन्ध्रा प्रदेश में पानी की बहुत कमी थी उस समय रीछ न दो स्थान धरती को लगभग छ फिट खोद दिया और पानी निकल आया इससे सिद्ध हुआ कि रीछ के अन्दर ईश्वर ने यह क्षमता रखी है ऐसे ही ईश्वर ने मूसा को यह ज्ञान दिया था उनको ज्ञात हो जाता था कि धरती में पानी किस स्थान कम दूरी पर है तिथि मुझे याद नही रही

ماہ جون ۲۰۰۳ء میں میں نے بی.بی.سی. کی اردو نشریات میں سنا تھا کہ جب آندھرا پردیش میں پانی کی بہت کمی تھی اس وقت ریچھ نے دو جگہ زمین کو تقریباً چھ فٹ کھودا. اور پانی نکل آیا اس سے ثابت ہوا کہ ریچھ کے اندر اللہ نے صلاحیت رکھی ہے ایسے ہی اللہ نے موسیٰ کو یہ علم دیا تھا ان کو معلوم ہوجاتا تھا کہ زمین میں پانی کس جگہ کم دوری پر ہے تاریخ مجھے یاد نہیں رہی.

और जब उनसे कहा गया कि इस नगर में निवास करो और जहां से चाहो खाओ पियो, परन्तु नगर में प्रविष्ट होते समय हित्तुन कहना और द्वार में नम्रता के साथ प्रविष्ट होना हम तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर देंगे और सत्कर्म करने वालो को और अधिक देंगे. (161){2:58,59,4:154}

اور جب ان سے کہا گیا کہ اس شہر میں سکونت اختیار کرلو اور جہاں سے چاہو کھاؤ پیو لیکن شہر میں داخل ہوتے وقت حطۃ کہنا اور دروازے میں عاجزی کے ساتھ داخل ہونا ہم تمہاری کمیوں کو معاف کردیں گے اور نیکی کرنے والوں کو اور زیادہ دیں گے (۱۶۱) [۲:۵۸،۵۹:۴:۱۵۴]

नोट :- हित्तुन का अर्थ यह है कि ईश्वर ने आदेश दिया कि जिस जाति पर तुम ने विजय प्राप्त की है उनके लिए कहो कि हमने तुमको क्षमा किया तुम शान्ति और संतोष से रहो जैसे मक्काह की विजय के दिन मुहम्मद स0 ने मक्काह वालो के साथ सलूक किया और बाद में आस्तिको ने नगरो को विजय करने के बाद वहां के निवासियों के साथ नम्रता का व्यवहार किया उन नागरिको को कोई कष्ट नही दिया, जब के अत्याचारी शासक नगरो को विजय करने के बाद नरसंहार करते हैं इनसानो को दास बनाते हैं, उनके साथ अभद्र व्यवहार करते हैं जो एक बड़ा अत्याचार है अतः ईश्वर ने आस्तिको को आदेश दिया कि तुम ऐसा व्यवहार करना जो न्याय का हो यह है हित्तुन का अर्थ.

نوٹ: ۔حطۃ کا مطلب یہ ہے کہ اللہ نے حکم دیا کہ جس قوم پر تم نے فتح حاصل کی ہے ان کے لئے کہو کہ ہم نے تم کو معاف کیا تم امن اور اطمینان سے رہو جیسے فتح مکہ کے دن محمدؐ نے مکہ والوں کے ساتھ سلوک کیا اور بعد میں مومن مسلمانوں نے شہروں کو فتح کرنے کے بعد وہاں کے باشندوں کے ساتھ نرمی کا سلوک کیا. ان باشندوں کو کوئی نقصان نہیں پہنچایا. جب کہ ظالم حکمراں شہروں کو فتح کرنے کے بعد قتل عام کرتے ہیں. انسانوں کو غلام بناتے ہیں ان کے ساتھ غیر انسانی سلوک کرتے ہیں جو ایک ظلم عظیم ہے اس لئے اللہ نے مومنوں کو حکم دیا کہ تم ایسا برتاؤ کرنا جو انصاف کا ہو یہ ہے حطۃ کا مطلب.

परन्तु उनमें जो अन्यायी थे उन्होने इस शब्द को जिसका उनको आदेश दिया गया था दल बदलकर इसके स्थान पर और शब्द कहना आरम्भ किया (अर्थात जिसमें अत्याचार करने का पार्श्व निकलता था और हित्तुन में क्षमा के लिए है वह क्षमा नही करना चाहते थे) तो हम ने उनपर आकाश से कष्ट भेजा इस लिए कि वह अत्याचार करते थे. (162)

مگر ان میں جو ظالم تھے انہوں نے اس لفظ کو جس کا ان کو حکم دیا گیا تھا بدل کر اس کی جگہ اور لفظ کہنا شروع کیا (یعنی جس میں ظلم کرنے کا پہلو نکلتا تھا اور حطۃ میں معافی کے لئے ہے وہ معافی نہیں کرنا چاہتے تھے) تو ہم نے ان پر آسمان سے عذاب بھیجا اس لئے کہ وہ ظلم کرتے تھے (۱۶۲)

और उनसे उन गांव वालों की दशा ज्ञात करो जो दरया किनारे था, जब वह लेगा सबत विश्राम के दिन के विषय में सीमा का उल्लंघन करने लगे उस समय कि उनके सबत विश्राम के दिन मीन न उनके सामने पानी के ऊपर आती और जब सबत का दिन न होता तो न आती और जब हम उन लोगो को उनकी अवज्ञा के कारण परिक्षा में डालने लगे. (163)

اور ان سے ان گاؤں والوں کا حال تو پوچھو جو لب دریا تھے جب وہ لوگ سبت کے دن کے بارے میں حد سے تجاوز کرنے لگے اس وقت کہ ان کے سبت آرام کے دن مچھلیاں ان کے سامنے پانی کے اوپر آتیں اور جب سبت کا دن نہ ہوتا تو نہ آتیں اسی طرح ہم ان لوگوں کو ان کی نافرمانیوں کے سبب آزمائش میں ڈالنے لگے (۱۶۳)

और जब उनमें से एक दल ने कहा कि तुम ऐसे लोगो को क्यों उपदेश करते हो जिनको ईश्वर बध करने वाला है या कठोर दण्ड देने वाला है तो उन्होने कहा इस लिए कि तुम्हारे रब के सामने क्षमा याचना कर सके और विचित्र नही कि वह सदाचारी हो जाएं (164)

اور جب ان میں سے ایک جماعت نے کہا کہ تم ایسے لوگوں کو کیوں نصیحت کرتے ہو جن کو اللہ ہلاک کرنے والا ہے یا سخت عذاب دینے والا ہے تو انہوں نے کہا اس لئے کہ تمہارے رب کے سامنے معذرت کرسکیں اور عجب نہیں کہ وہ پرہیز گاری اختیار کریں (۱۶۴)

जब उन्होने इन बातो को भुला दिया जिनकी उनको शिक्षा दी गई थी तो जो लोग बुराई से रोकते थे उनको हमने मुक्ति दी और जो अत्याचार करते थे उनको बुरी यातना में पकड़ लिया कि अवज्ञा किए जाते थे. (165)

جب انہوں نے ان باتوں کو فراموش کردیا جن کی ان کو نصیحت کی گئی تھی تو جو لوگ بُرائی سے منع کیا کرتے تھے ان کو ہم نے نجات دی اور جو ظلم کرتے تھے ان کو بُرے عذاب میں پکڑ لیا کہ نافرمانی کئے جاتے تھے (۱۶۵)

किन्तु जिन कार्यों से उनको रोका गया था जब वह उनको करने लगे तो हमने उनके लिए कहा कि जब तुम बन्दर तुच्छ बनना चाहते तो तो बन्दर जैसे हो जाओ. (166)

غرض جن اعمال سے ان کو منع کیا گیا تھا جب وہ ان کو کرنے لگے تو ہم نے ان کے لئے کہا کہ جب تم بندر ذلیل بنا چاہتے ہو تو بندر جیسے ہو جاؤ (۱۶۶)

और तुम्हारे ईश्वर ने अवज्ञा कारियों को सचेत कर दिया है कि वह उन पर प्रलय तक ऐसे लोगो को नियुक्त रखेगा जो उनको बुरी यातनाएं देते रहेंगे निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर शीघ्र दण्ड देने वाला और क्षमा करने वाला दयालु भी है. (167)

اور تمہارے رب نے نافرمانوں کو آگاہ کردیا ہے کہ وہ ان پر قیامت تک ایسے لوگوں کو مسلط رکھے گا جو ان کو بُری تکلیفیں دیتے رہیں۔ بے شک تمہارا رب جلد عذاب کرنے والا اور وہ بخشنے والا مہربان بھی ہے (۱۶۷)

और हमने उनको वर्ग वर्ग करके देश में अस्त-व्यस्त कर दिया कतिपेय उनमें से सदाचारी है और कुछ उनके विपरीत (अर्थात अत्याचारी) हमने उन्हें आराम और दुख दोनो स्थिति में डाल कर परिक्षा की ताकि वह लोग मान जाएं और आज्ञाकारी करें. (168)

اور ہم نے ان کو جماعت جماعت کرکے ملک میں منتشر کردیا بعض ان میں سے نیکوکار ہیں اور کچھ ان کے مختلف (یعنی بدکردار) ہم نے ان کو آرام اور تکلیف دونوں میں ڈال کر آزمایا تھا تاکہ وہ لوگ بُرائیوں سے رُک جائیں اور فرمانبرداری کریں (۱۶۸)

फिर उनके बाद बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी और पुस्तक के भी उत्तराधिकारी हुए वह लोग तुच्छ धन ले लेते है और कहते है कि हम को क्षमा मिल जाएगी और अगर फिर वही धन सामने आए तो लपक कर उसे ले लेते है क्या उन से पुस्तक का वचन नही लिया जा चुका है कि ईश्वर के नाम पर वही बात कहे जो सत्य हो और जो कुछ इस पुस्तक में है उसको उन्होने पढ़ लिया है और परलोक का घर तो सदाचारियों के लिए उत्तम है क्या तुम समझते नही. (169)

پھر ان کے بعد بُرے لوگ ان کے قائم مقام اور کتاب اللہ کے وارث ہوئے وہ لوگ ناقص مال لے لیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہم کو معافی مل جائے گی اور اگر پھر وہی مال سامنے آئے تو لپک کر اسے لے لیتے ہیں کیا ان سے کتاب کا عہد نہیں لیا جاچکا ہے کہ اللہ کے نام پر وہی بات کہیں جو حق ہو اور جو کچھ اس کتاب میں ہے اس کو انہوں نے پڑھ بھی لیا ہے اور آخرت کا گھر تو پرہیز گاروں کے لئے بہتر ہے کیا تم سمجھتے نہیں (۱۶۹)

और जो लोग पुस्तक को पक्का पकड़े हुए है और नमाज स्थापित करते है हम सदाचारियो का फल समाप्त नही करते. (170)

اور جو لوگ کتاب کو مضبوط پکڑے ہوئے ہیں اور نماز قائم کرتے ہیں ہم نیکوکاروں کا اجر ضائع نہیں کرتے (۱۷۰)

जब हमने उनके ऊपर पर्वत को भूचाल में डाला मानो वह एक मण्डप था और उन्होने विचार किया कि वह उन पर गिरता है तो (हम ने कहा कि) जो हमने तुम्हे दिया है उसे शक्ति से पकड़े रहो और जो इसमें लिखा है उस पर कर्म करते रहो ताकि बच जाओ. (171)

جب ہم نے ان کے اوپر پہاڑ کو زلزلے میں ڈالا گویا وہ ایک سائبان تھا اور انہوں نے خیال کیا کہ وہ ان پر گرتا ہے تو (ہم نے کہا کہ) جو ہم نے تمہیں دیا ہے اسے زور سے پکڑے رہو اور جو اس میں لکھا ہے اس پر عمل کرتے رہو تاکہ بچ جاؤ (۱۷۱)

और जब तेरे ईश्वर ने आदम की सन्तान से जो आदम की वंश से उत्पन्न होने वाली है पीठें से निकाला और वचन लिया था और स्वयं उन्हे उन पर साक्षी बनाया था (अर्थात उनके स्वभाव में यह बात डाल दी थी और ज्ञात किया) क्या मैं तुम्हारा

اور جب تیرے رب نے آدم کی اولاد سے جو آدم کی نسل سے پیدا ہونے والی ہے پشتوں سے نکالا اور عہد لیا تھا اور خود انہیں ان پر گواہ بنایا تھا (یعنی ان کی فطرت میں یہ

ईश्वर नही हूं? वह कहने लगे क्यों नही हम साक्षी है (यह वचन इस लिए कराया था) कि महा प्रलय के दिन कहने लगो कि हम को तो इसकी सूचना न थी. (172)

بات ڈال دی تھی اور پوچھا) کیا میں تمہارا رب نہیں ہوں؟ وہ کہنے لگے کیوں نہیں ہم گواہ ہیں (یہ اقرار اس لئے کرایا تھا) کہ قیامت کے دن کہنے لگو کہ ہم کوتو اس کی خبر نہیں تھی (۱۷۲)

यह कहो कि अनेकेश्वर वाद तो पहले हमारे बड़ो ने किया था और हमतो उनकी सन्तान थे उनके बाद उत्पन्न हुए (इसलिए उनकी चाल चलने पर विवश थे) तो क्या उन बुरे व्यक्तियों के पापो के बदले तू हमें वध कर देगा. (173) {7:155}

یا یہ کہو کہ شرک تو پہلے ہمارے بڑوں نے کیا تھا اور ہم تو ان کی اولاد تھے ان کے بعد پیدا ہوئے (اس لئے ان کی چال چلنے پر مجبور تھے) تو کیا ان بُرے آدمیوں کے جرم کے بدلے میں تو ہمیں ہلاک کردے گا (۱۷۳) [۷:۱۵۵]

और इसी प्रकार हम अपनी आयतों को खोल कर वर्णन करते हैं ताकि वह लोग समझें और आज्ञाकारी करें. (174)

اور اسی طرح ہم اپنی آیتوں کو کھول کھول کر بیان کرتے ہیں تاکہ وہ لوگ سمجھیں اور فرمانبرداری کریں (۱۷۴)

उन लोगों को उस व्यक्ति की अवस्था पढ़कर सुनाओ जिसे हमने अपनी आयात अर्थात जीवन व्यतीत करने का नियम (नबी के द्वारा) दिया था परन्तु उसने उसे उतार दिया (अर्थात उससे विमुख होकर उसको छोड़ दिया) पस शैतान उसके पीछे हो लिया और पथ भ्रष्ट हो जाए (175)

اُن لوگوں کو اس شخص کا حال پڑھ کر سناؤ جسے ہم نے اپنی آیات یعنی ضابطہ حیات (نبی کے ذریعہ) دیا تھا۔ لیکن اس نے اسے اتار دیا (یعنی اس سے روگردانی کرکے اس کو چھوڑ دیا) پس شیطان اس کے پیچھے ہولیا اور وہ گمراہ ہوجائے (۱۷۵)

और यदि हम चाहते तो अर्थात हमारा नियम देखता कि वह सदाचारी है तो उन आयतों से उनको उच्च कर दें परन्तु वह हीनता की ओर झुकता है अपनी इच्छा के पीछे चल पड़ता है तो उसकी उपमा कुत्ते की भांति हो गई कि यदि कठोरता करो तो जबान निकाले रहे और यूंही छोड़ दो तो भी जबान निकाले रहे यही उपमा उन लोभी लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो यह कथा वर्णन करो ताकि वह चिन्ता करें चिन्तन करें. लालची व्यक्तियों की इच्छा बुरी कमाई के लिए बढ़ती रहती हैं. (176) {37:62से67;44:43से50}

اور اگر ہم چاہتے یعنی ہمارا قانون دیکھتا کہ وہ نیک ہے تو اُن آیتوں سے اس کو بلند کردیں مگر وہ پستی کی طرف مائل ہوتا ہے۔ اور اپنی خواہش کے پیچھے چل پڑتا ہے تو اس کی مثال کتے کی سی ہوگئی کہ اگر سختی کرو تو زبان نکالے رہے اور یوں ہی چھوڑ دو تو بھی زبان نکالے رہے یہی مثال ان لالچی لوگوں کی ہے جنہوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا تو یہ قصہ بیان کرو تاکہ وہ فکر کریں۔ لالچی آدمیوں کی خواہش غلط کمائی کے لئے بڑھتی رہتی ہے (۱۷۶) [۳۷:۶۲ سے ۶۷؛ ۴۴:۴۳ تا ۵۰]

और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया (या करेंगे) उनकी उपमा बुरी है और वह अपनी ही क्षति करेंगे. (177)

اور جن لوگوں نے ہماری آیتوں کا انکار کیا (یا کریں گے) ان کی مثال بُری ہے اور وہ اپنا ہی نقصان کریں گے (۱۷۷)

जिसको ईश्वर का नियम पथ प्रदर्शन दे वही सीधे मार्ग पर है और जिसे पथ भ्रष्ट कर दे तो ऐसे ही लोग क्षति उठाने वाले हैं. (178)

جس کو اللہ کا قانون ہدایت دے وہی راہ یاب ہے اور جسے گمراہ کردے تو ایسے ہی لوگ نقصان اٹھانے والے ہیں (۱۷۸)

और हमारे नियम के अनुसार बहुत से जिन्न और इन्सान नर्क के लिए तैयार होते रहेगें. वह कौन हैं? उनके हृदय हैं किन्तु उनसे समझते नही और उनकी आंखे हैं परन्तु उनसे देखते नही और उनके कान हैं पर उनसे सुनते नही वह लोग पशुओं की भांति हैं अपितु उनसे भी भटके हुए वही हैं जो भूल में पड़े हुए हैं (ऐसे लोग हैं जो नर्की हैं) (179)

اور ہمارے قانون کے مطابق بہت سے جن اور انسان دوزخ کے لئے تیار ہوتے رہیں گے وہ کون ہیں؟ ان کے دل ہیں لیکن ان سے سمجھتے نہیں اور اُن کی آنکھیں ہیں مگر اُن سے دیکھتے نہیں اور ان کے کان ہیں پر ان سے سنتے نہیں وہ لوگ چارپایوں کی طرح ہیں بلکہ ان سے بھی بھٹکے ہوئے وہی وہ ہیں جو غفلت میں پڑے ہوئے ہیں (ایسے لوگ ہیں جو دوزخی ہیں) (۱۷۹)

और ईश्वर के सब नाम अच्छे हैं तो उस को उसके नामो से पुकारा करो और जो लोग उसके नामो में कजी करते हैं उनको छोड़ दो वह जो कुछ कर रहे हैं निकट ही उसका दण्ड पायेगें (180)

اور اللہ کے سب نام اچھے ہیں تو اس کو اس کے ناموں سے پکارا کرو اور جو لوگ اس کے ناموں سے کجی کرتے ہیں ان کو چھوڑ دو وہ جو کچھ کر رہے ہیں عنقریب اس کی سزا پائیں گے (۱۸۰)

और हमारी रचना में से एक दल ऐसा भी है जो सत्य का मार्ग बताता है और सत्य के साथ न्याय करता है (181)

اور ہماری مخلوق میں سے ایک جماعت ایسی بھی ہے جو حق کا رستہ بتاتی ہے اور حق کے ساتھ انصاف کرتے ہیں (۱۸۱)

और जिन लोगो ने हमारी आयात को भुलाया उनको क्रमशः इस प्रकार से पकड़ेगें कि उनको ज्ञात ही न होगा. (182)

اور جن لوگوں نے ہماری آیات کو جھٹلایا ان کو بتدریج اس طرح سے پکڑیں گے کہ ان کو معلوم ہی نہ ہوگا (۱۸۲)

और मेरे नियमानुसार उनको छूट मिली हुई है मेरी

اور میرے قانون کے مطابق ان کو مہلت ملی ہوئی ہے

युक्ति बलवान है (183)

क्या उन्होने विचार नही किया कि उन के साथी (मुहम्मद) को जुनून नही है वह स्पष्ट डर सुनाने वाले है (184)

क्या उन्होने आकाश ओर पृथ्वी के राज्य में और जो वस्तुएं ईश्वर ने उत्पन्न की है उन पर विचार नही किया, और इस बात पर कि अजब नही कि उनका समय निकट पहुंच गया हो तो इसके बाद वह और किस बात पर विश्वास लाएंगें? (185)

जिन लोगो को ईश्वर का नियम भ्रष्ट ठेहरा दे उसको कोई पथ प्रदर्शन देने वाला नही और वह उनको छोड़े रखता है कि अपनी अवज्ञा में पड़े रहे.(186)

लोग आप से महाप्रलय के विषय में ज्ञात करेंगें कि उसके आने का समय कब है कह देना कि उसका ज्ञान तो मेरे ईश्वर को ही है वही उसको उसके समय पर प्रकट कर देगा वह धरती व आकाश में एक भारी बात होगी, और अचानक आ जाएगी वह तुम से इस प्रकार ज्ञात करेंगें मानो तुम इससे भलि भांति अवगत हो कहो कि उसका ज्ञान तो ईश्वर ही को है परन्तु अधिकांश लोग नही जानते.(187) {33:63,79:42,43}

कह दो कि मैं अपने लाभ और क्षती का कुछ भी अधिकार नही रखता सुनो निःसंदेह होता वह है जो ईश्वर चाहे और यदि मैं परोक्ष की बाते जानता होता तो बहुत लाभ एकत्र कर लेता ओर मुझको कोई क्षती न पहुंचती मैं तो आस्तिकों को भय और शुभ समाचार सुनाने वाला हुं. (188) {6:59,27:65,73:26}

वह ईश्वर ही तो है जिसने तुम को एक व्यक्ति से उत्पन्न किया और उसी जाति अर्थात उसी मिट्टी से उसका जोड़ा बनाया ताकि उससे सुख प्राप्त करे, सो जब वह उसके पास जाता है तो उसे हलका सा गर्भ रह जाता है और वह उसके साथ चलती फिरती है फिर जब कुछ भार प्रतीत करती है तो दोनो अपने ईश्वर से प्रार्थना करते है, कि यदि तू हमें ठीक और पूर्ण बच्चा देगा तो हम तेरे आज्ञाकारी होगे. (189) {4:1,2:223}

जब वह उनको ठीक और पूर्ण बच्चा देता है तो उसमें जो उनको देता है उसका सहयोगी साझी बनाते है जो वह अनेकेश्वर वाद करते है ईश्वर इससे श्रेष्ट है (190)

क्या वह ऐसो को सहयोगी बनाते है जो कुछ उत्पन्न नही कर सकते और स्वयं उत्पन्न किए जाते है. (191)

और वह न उनकी सहायता की शक्ति रखते है और न अपनी ही सहायता कर सकते है. (192)

यदि तुम उनको सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारा कहा न माने तुम्हारे किए बराबर है कि तुम उनको बुलाओ या चुपके ही रहो. (193)

बेशक़ जिनको तुम ईश्वर के अतिरिक्त पुकारते हो

میری تدبیر مضبوط ہے(۱۸۳)

کیا انہوں نے غور نہیں کیا کہ ان کے رفیق (محمد) کو جنون نہیں ہے وہ ظاہر ڈر سنانے والے ہیں (۱۸۴)

کیا انہوں نے آسمان اور زمین کی بادشاہی میں اور جو چیزیں اللہ نے پیدا کی ہیں اُن پر نظر نہیں کی. اور اس بات پر کہ عجب نہیں کہ ان کا وقت قریب پہنچ گیا ہو تو اس کے بعد وہ اور کس بات پر ایمان لائیں گے؟ (۱۸۵)

جن لوگوں کو اللہ کا قانون گمراہ ٹھہرا دے اس کو کوئی ہدایت دینے والا نہیں اور وہ ان کو چھوڑے رکھتا ہے کہ اپنی سرکشی میں پڑے رہیں (۱۸۶)

لوگ آپ سے قیامت کے بارے میں معلوم کریں گے کہ اُس کے آنے کا وقت کیا ہے کہد ینا کہ اُس کا علم تو میرے رب ہی کو ہے وہی اس کو اس کے وقت پر ظاہر کر دے گا وہ زمین و آسمان میں ایک بھاری بات ہوگی اور اچانک آجائے گی وہ تم سے اس طرح دریافت کریں گے گویا تم اس سے بخوبی واقف ہو کہو کہ اس کا علم تو اللہ ہی کو ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۱۸۷)[۴۳،۴۲:۷۹،۶۳:۳۳]

کہد و کہ میں اپنے فائدے اور نقصان کا کچھ بھی اختیار نہیں رکھتا. (سنو) یقیناً ہوتا وہ ہے جو اللہ چاہے اور اگر میں غیب کی باتیں جانتا ہوتا تو بہت فائدے جمع کر لیتا اور مجھ کو کوئی تکلیف نہ پہنچتی میں تو مومنوں کو ڈر اور خوشخبری سنانے والا ہوں (۱۸۸)[۲۶:۷۳،۶۵:۲۷،۵۹:۶]

وہ اللہ ہی تو ہے جس نے تم کو ایک شخص سے پیدا کیا اور اسی جنس یعنی اسی مٹی سے اس کا جوڑا بنایا تا کہ اس سے راحت حاصل کرے سو جب وہ اس کے پاس جاتا ہے تو اسے ہلکا سا حمل رہ جاتا ہے اور وہ اس کے ساتھ چلتی پھرتی ہے پھر جب کچھ بوجھ معلوم کرتی ہے تو دونوں اپنے رب سے التجا کرتے ہیں کہ اگر تو ہمیں صحیح وسالم بچہ دے گا تو ہم تیرے فرمانبردار رہوں گے (۱۸۹)[۲۲۳:۲،۱:۴]

جب وہ ان کو صحیح وسالم بچہ دیتا ہے تو اس میں جو ان کو دیتا ہے اس کا شریک مقرر کرتے ہیں جو وہ شرک کرتے ہیں اللہ اس سے بلند ہیں (۱۹۰)

کیا وہ ایسوں کو شریک بناتے ہیں جو کچھ پیدا نہیں کر سکتے اور خود پیدا کئے جاتے ہیں (۱۹۱)

اور وہ نہ اُن کی مدد کی طاقت رکھتے ہیں اور نہ اپنی ہی مدد کر سکتے ہیں (۱۹۲)

اگر تم ان کو سیدھے رستے کی طرف بلاؤ تو تمہارا کہا نہ مانیں تمہارے لئے برابر ہے کہ تم ان کو بلاؤ یا چپکے ہو رہو (۱۹۳)

بے شک جن کو تم اللہ کے سوا پکارتے ہو تمہاری طرح کے

तुम्हारी भांति के बन्दे हैं तो तुम उनको पुकारो यदि सच्चे हो तो चाहिए कि वह तुम को उत्तर दें(194)
भला उनके पांव हैं जिनसे चले या हाथ हैं जिसे पकड़े या आंखे हैं जिनसे देखे, या कान हैं जिनसे सुनें? कह दो कि अपने सहयोगियों को बुला लो और मेरे बारे में युक्ति कर लो और मुझे छूट भी न दो. (195)
निःसंदेह मेरा सहायक ईश्वर है जिसने सत्य पुस्तक अवतरित की और वही एक हस्ती है जिसकी और सदाचारियों को मुख करना चाहिए (196)
और जिनको तुम ईश्वर के सिवा पुकारते हो वह न तुम्हारी सहायता की शक्ति रखते हैं और न स्वयं ही अपनी सहायता कर सकते हैं. (197)
और यदि तुम उनको सीधे मार्ग की ओर बुलाओं तो सुन न सकें और तुम उन्हे देखते हो कि आंखें खोल तुम्हारी ओर देख रहे हैं परन्तु कुछ नही देखते. (198)
आप नम्रता और क्षमा से काम लो और शुभ कर्म करने का आदेश दो और मूर्खों से अलग हो जाओ.(199)
और यदि शैतान की ओर से तुम्हारे हृदय में किसी प्रकार का वसवसा उत्पन्न हो तो ईश्वर से शरण मागो निःसंदेह वह सुन्ने वाला और सब कुछ जानने वाला है. (200)
जो लोग सदाचारी हैं जब उनको शैतान की ओर से कोई वसवसा उत्पन्न होगा तो चौंक पड़ेगे और देखने लगेगें और चिन्तन करेंगें. (201)
और उन (नास्तिकों) के भाई उन्हें पथ भ्रष्टता में खींचना चाहेगें और कोई कमी नही करेंगें. (202)
और जब तुम उनके पास कोई आयत नही लाते तो कहते हैं कि तुम ने क्यों नही बना ली कह दो मैं तो उस आदेश का अनुकरण करता हूं जो मेरे रब की ओर से मेरे पास आता है यह (कुरआन) तुम्हारे ईश्वर की ओर से ज्ञान और अन्तरदृष्टि और आस्तिको के लिए शिक्षा और दया है. (203)
और जब कुरआन पढ़ा जाए तो ध्यान से सुना करो और चुप रहा करो ताकि तुम पर दया की जाए (204)
और अपने ईश्वर को मन ही मन में नम्रता के साथ और भय से और उच्च ध्वनि की तुलना में निम्न ध्वनी से प्रातः और सायं याद करते रहो और अचेतो में से न होना. (205)
जो लोग तेरे ईश्वर के निकट हैं अर्थात सदाचारी हैं वह उसकी पूजा से अवज्ञा नही करते और उस पवित्र अस्तित्व को याद करते और उसके आगे सजदा करते रहते हैं. अर्थात उसी की आज्ञाकारी करते रहते हैं. (206)

بندے ہیں تو تم ان کو پکارو اگر سچے ہو تو چاہیے کہ وہ تم کو جواب دیں (۱۹۴)
بھلا ان کے پاؤں ہیں جن سے چلیں یا ہاتھ ہیں جس سے پکڑیں یا آنکھیں ہیں جن سے دیکھیں یا کان ہیں جن سے سنیں؟ کہہ دو کہ اپنے شریکوں کو بلالو اور میرے بارے میں تدبیر کرو اور مجھے مہلت بھی نہ دو (۱۹۵)
بے شک میرا مددگار اللہ ہی ہے جس نے کتاب برحق نازل کی اور وہی ایک ہستی ہے جس کی طرف نیک لوگوں کو رُخ کرنا چاہیے (۱۹۶)
اور جن کو تم اللہ کے علاوہ پکارتے ہو وہ نہ تمہاری مدد کی طاقت رکھتے ہیں اور نہ خود ہی اپنی مدد کر سکتے ہیں (۱۹۷)
اور اگر تم ان کو سیدھے رستے کی طرف بلاؤ تو سن نہ سکیں اور تم انہیں دیکھتے ہو کہ (بظاہر) آنکھیں کھولے تمہاری طرف دیکھ رہے ہیں مگر کچھ نہیں دیکھتے (۱۹۸)
آپ درگزر کو اختیار کرو اور نیک کام کرنے کا حکم دو اور جاہلوں سے کنارہ کرلو (۱۹۹)
اور اگر شیطان کی طرف سے تمہارے دل میں کسی طرح کا وسوسہ پیدا ہو تو اللہ سے پناہ مانگو بے شک وہ سننے والا اور سب کچھ جاننے والا ہے (۲۰۰)
جو لوگ پرہیزگار ہیں جب ان کو شیطان کی طرف سے کوئی وسوسہ پیدا ہوگا تو چونک پڑیں گے اور دیکھنے لگیں گے یعنی غور کریں گے (۲۰۱)
اور اُن (کفار) کے بھائی انہیں گمراہی میں کھینچنا چاہیں گے اور کوئی کوتاہی نہیں کریں گے (۲۰۲)
<u>اور جب تم ان کے پاس کوئی آیت نہیں لاتے تو کہتے ہیں کہ تم نے کیوں نہیں بنالی کہہ دو میں تو اس حکم کی پیروی کرتا ہوں جو میرے رب کی طرف سے میرے پاس آتا ہے (قرآن) تمہارے رب کی جانب سے دانش و بصیرت اور مومنوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے (۲۰۳)</u>
<u>اور جب قرآن پڑھا جائے تو توجہ سے سنا کرو اور خاموش رہا کرو تا کہ تم پر رحم کیا جائے (۲۰۴)</u>
اور اپنے رب کو دل ہی دل میں عاجزی کے ساتھ اور خوف سے اور بلند آواز کے مقابلہ پست آواز سے صبح اور شام یاد کرتے رہو اور غافلوں میں سے نہ ہونا (۲۰۵)
جو لوگ تیرے رب کے نزدیک ہیں یعنی نیک ہیں وہ اس کی عبادت سے سرکشی نہیں کرتے اور اس پاک ذات کو یاد کرتے اور اس کے آگے سجدہ کرتے رہتے ہیں یعنی اس کی فرمانبرداری کرتے رہتے ہیں (۲۰۶)

सूरत अनफाल मदनी

कालल मलाउ

ऐ रसूल! आपसे प्रश्न करेंगे कि राज्य को जो आय अधिक अर्थात निश्चित देय से अधिक हो या बिना श्रम के आये वह किस के पास जाएगी? उनसे कहना कि वह अधिक आय ईश्वर और रसूल (केवल राज्य) की होगी, पस तुम ईश्वर से डरो और अपने आपस के सम्बन्ध ठीक करो, और ईश्वर से डरो और ईश्वर और उसके ईशदूत की आज्ञा का पालन करो यदि तुम आस्तिक हो,

नोट :- अनफाल (अधिकता) बहुवचन है अधिक का अरबी भाषा में नफिल अधिक उस वस्तु को कहते है जो अनिवार्य अधिकार से अधिक हो जिसे एक बन्दा अपने ईश्वर के लिए अनिवार्य नमाज पढ़कर अपनी इच्छा से अधिक करता है जैसे नफिल नमाज और जब यह ईश्वर की ओर से होता है तो यह पुरस्कार होता है जैसे माल फै जिसका विवरण सूरत हशर में है अवलोकन हो सूरत हशर आयत 6से 10

आयत6 और जो माल ईश्वर उनके अधिकार से निकाल कर अपने ईशदूत की ओर पलटा दे वह ऐसे धन नही है जिन पर आपने अपने घोड़े-ऊँट दोड़ाए हो, अपितु ईश्वर अपने रसूल को जिन पर चाहता है नियुक्त कर देता है ईश्वर हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है,

(59:7) जो माल ईश्वर अपने ईशदूत को देहात वालो से दिलवा दे (बिना श्रम के) वह ईश्वर के और ईशदूत के और सगोत्र वाले को जिसको हाजत हो अनाथ और निर्धन का और यात्रीयों के लिए है ताकि जो लोग तुम में से धनी है उन्ही के हाथो में न फिरता रहे सो जो वस्तु तुमको रसूल दे वह ले लो और जिससे रोक दे उससे रुक जाओ, और ईश्वर से डरते रहो निःसंदेह ईश्वर कठोर दण्ड देने वाला है,

(59:8) और उन निर्धन देश छोड़ने वालो के लिए भी जो अपने घरो और मालो से निकाल दिए गए है और ईश्वर के कृपा दया और उसकी प्रसन्नता के इच्छुक है और ईश्वर और रसूल के सहायक है वही लोग सच्चे है,

(59:9) और उन लोगो के लिए भी है जो उन प्लायन करने वालो से पहले घर (अर्थात मदीने) में रहते और आस्था में (दृढ़) रहे (और) जो लोग प्लायन करके उनके पास आते है उनसे प्रेम करते है और जो कुछ उनको मिला उससे अपने दिल में कुछ इच्छा नही पाते, और उनको अपनी जानो से पृथक रखते है चाहे उनको स्वयं आवश्यकता ही हो, और जो व्यक्ति लोलुपता से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग उद्देश्य पाने वाले है,

(59:10) और (उनके लिए भी है) जो उनके बाद आने वाले है और प्रार्थना करेंगे कि ऐ रब हमारे और हमारे भाईयों के जो हमसे पहले विश्वास लाए है पाप क्षमा कर देना और आस्तिको की ओर से हमारे हृदय में कपट न उत्पन्न होने देना हे हमारे रब तू बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है,

यह है अनफाल की वास्तविकता और उसका व्यय परन्तु हमारे यहा अनफाल को माले गनिमत अर्थात जो युद्ध में लूट से हाथ आता है लिखा हे जब कि यहा लूट का कोई उल्लेख नही और न ही मुसलमान लूटेरा होता है, क्या एक मुसलमान किसी का माल लूट सकता है? कदापि नही युद्ध में भी वह माल एकत्र संग्रह किया जाएगा जो

سورت انفال[۸] (مدنی)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے رسول! آپ سے سوال کریں گے کہ حکومت کو جو آمدنی انفال یعنی مقررہ واجبات سے زیادہ ہو یا بلا محنت کے آئے وہ کس کے پاس جائے گی؟ ان سے کہنا کہ وہ زائد آمدنی اللہ اور رسول (فقط مملکت) کی ہوگی پس تم اللہ سے ڈرو اور اپنے آپس کے تعلقات درست کرو اور اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرو اگر تم مومن ہو(۱)

نوٹ:۔انفال جمع ہے نفل کی عربی زبان میں نفل اس چیز کو کہتے ہیں جو واجب فرض حق سے زائد ہو جسے ایک بندہ اپنے اللہ کے لئے فرض نماز پڑھ کر اپنی مرضی سے زیادہ کرتا ہے جیسے نفل نماز.اور جب یہ اللہ کی طرف سے ہوتا ہے تو انعام ہوتا ہے جیسے مال فے.جس کی تفصیل سورت حشر میں ہے ملاحظہ ہو.سورت حشر آیت ۶ سے ۱۰.

آیت ۶/اور جو مال اللہ ان کے قبضے سے نکال کر اپنے رسول کی طرف پلٹا دے وہ ایسے مال نہیں ہیں جن پر تم نے اپنے گھوڑے اور اونٹ دوڑائے ہوں بلکہ اللہ اپنے رسول کو جن پر چاہتا ہے مسلط کر دیتا ہے اللہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے

(۵۹:۷) جو مال اللہ نے اپنے رسول کو دیہات والوں سے دلوایا ہے (بغیر محنت کے) وہ اللہ کے اور رسول کے اور قرابت والے کے جس کو حاجت ہو یتیم اور مسکین اور مسافر کے لئے ہے تاکہ جو لوگ تم میں دولتمند ہیں انہی کے ہاتھوں میں نہ پھرتا رہے سو جو چیز تم کو رسول دیں وہ لے لو اور جس سے منع کر دیں (اس سے) باز رہو اور اللہ سے ڈرتے رہو بے شک اللہ سخت عذاب دینے والا ہے

(۵۹:۸) اور ان مفلس مہاجرین کے لئے بھی جو اپنے گھروں اور مالوں سے نکال دئے گئے ہیں اور اللہ کے فضل اور اس کی رضا مندی کے طالب ہیں اور اللہ اور رسول کے مددگار ہیں وہی لوگ سچے ہیں.

(۵۹:۹) اور ان لوگوں کے لئے بھی ہے جو ان مہاجروں سے پہلے گھر (یعنی مدینے) میں مقیم اور ایمان میں (مستقل) رہے (اور) جو لوگ ہجرت کرکے ان کے پاس آتے ہیں ان سے محبت کرتے ہیں اور جو کچھ ان کو ملا اس سے اپنے دل میں کچھ خواہش نہیں پاتے اور ان کو اپنی جانوں سے مقدم رکھتے ہیں.خواہ ان کو خود ضرورت ہی ہو.اور جو شخص حرص نفس سے بچا لیا گیا تو ایسے ہی لوگ مراد پانے والے ہیں.

(۵۹:۱۰) اور (ان کے لئے بھی ہے) جو ان کے بعد آنے والے ہیں اور دعا کریں گے کہ اے رب ہمارے اور ہمارے بھائیوں کے جو ہم سے پہلے ایمان لائے ہیں گناہ معاف فرمانا اور مومنوں کی طرف سے ہمارے دل میں کینہ نہ پیدا ہونے دینا اے ہمارے رب تو بڑا شفقت کرنے والا مہربان ہے.

یہ ہے انفال کی حقیقت اور اس کا خرچ مگر ہمارے یہاں انفال کو مال غنیمت یعنی جو جنگ سے لوٹ میں ہاتھ آتا ہے لکھا ہے جب کہ یہاں لوٹ کا کوئی ذکر نہیں اور نہ ہی مسلمان لٹیرا ہوتا ہے.کیا ایک مومن کسی کا مال لوٹ سکتا ہے؟ ہرگز نہیں جنگ میں بھی وہ مال اکٹھا کیا جائے گا جو شکست خوردہ لشکر اپنا مال

पराजित सेना अपना माल छोड़ कर भाग जाएगा, युद्ध समाप्त होने के बाद यदि उस माल को शत्रु सेना नही उठा सकती है तब मुसलमान उस माल को संग्रह करेगा और न ही अत्याचारी विजेता की भांति मुस्लिम सेना नगरो को लूटेगी, और न ही लोगो को दास बनाएगी युद्ध के अवसर पर लूट मार तो अत्याचारी करते है आस्तिक नही करता और आयत में तो युद्ध का उल्लेख भी नही है अधिक अनफाल का उल्लेख है फिर गनीमत लूट का माल कहा से लिख दिया, यह लूट का शब्द आपत्ति जनक है यह अनफाल वह धन है जो निश्चित आय से अधिक मिल जाए जैसे सूरत हशर में बताया गया है या कही से भू-निहित धन आदि मिल जाए या शासन अपने व्यय से खनिज पदार्थ निकाले वह भी सब शासन अर्थात राजकोष में जाएगा और जहा जैसे उसका व्यय बताया है वहां व्यय होगा इस लिए शब्द अनफाल पर विचार करो और सत्य को स्वीकार करो,

چھوڑ کر بھاگ جائے گا جنگ ختم ہونے کے بعد اگر اس مال کو دشمن لشکر نہیں اٹھا سکتا ہے تب مسلمان اس مال کو اکٹھا کرے گا اور نہ ہی ظالم فاتح کی طرح مسلم لشکر بستیوں کو لوٹے گا اور نہ ہی لوگوں کو غلام بنائے گا جنگ کے موقع پر لوٹ مار تو ظالم کرتے ہیں مومن نہیں کرتا. اور آیت میں تو جنگ کا ذکر بھی نہیں ہے زائد انفال کا ذکر ہے پھر غنیمت لوٹ کا مال کہاں سے لکھ دیا. یہ لوٹ کا لفظ قابل اعتراض ہے

یہ انفال وہ مال ہے جو مقررہ آمدنی سے زائد مل جائے جیسے سورہ حشر میں بتایا گیا ہے یا کہیں سے دفینہ وغیرہ مل جائے یا حکومت اپنے خرچے سے مادنیات نکالے وہ بھی سب حکومت یعنی بیت المال میں جائے گا اور جہاں جیسا اس کا خرچ بتایا ہے وہاں خرچ ہوگا اس لئے لفظ انفال پر غور کرو اور حقیقت کو تسلیم کرو.

आस्तिक तो वह है कि जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है तो उनके हृदय डर जाते है और जब उनको उसकी आयत पढ़कर सुनाई जाती है तो उनका धर्म बढ़ जाता है और वह अपने ईश्वर पर भरोसा रखते है, (2)

مومن تو وہ ہیں کہ جب اللہ کا ذکر کیا جاتا ہے تو ان کے دل ڈر جاتے ہیں اور جب ان کو اس کی آیات پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو ان کا ایمان بڑھ جاتا ہے اور وہ اپنے رب پر بھروسہ رکھتے ہیں (۲)

और नमाज स्थापित करते है और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से सत्य मार्ग में व्यय करते है, (3)

اور نماز قائم کرتے ہیں اور جو کچھ ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے راہ حق میں خرچ کرتے ہیں (۳)

वह लोग सच्चे आस्तिक है उनके ईश्वर के पास बड़े पद है और क्षमा और सम्मान की जीविका है, (4)

وہ لوگ سچے مومن ہیں ان کے رب کے پاس بڑے درجے ہیں اور بخشش اور عزت کی روزی ہے (۴)

जिस प्रकार आप के रब ने आपको युक्ति के साथ घर से अर्थात मदीने से निकाला (ऐसे ही आस्तिक निकले) परन्तु जो अपने मनो में कष्ट रखते हे उनको यह अप्रिय है (वह वह लोग होंगे जो आप के साथ संधि में सम्मिलित हुए है और यह समझ गए कि हम इस्लाम में प्रविष्ट हो गए यद्यपि वह अभी इस्लाम में नही आए) (5)

جس طرح آپ کے رب نے آپ کو تدبیر کے ساتھ گھر سے یعنی مدینہ سے نکالا (ایسے ہی مسلمان نکلے) مگر جو اپنے دل میں نفاق رکھتے ہیں ان کو یہ ناگوار ہے (وہ وہ لوگ ہوں گے جو آپ کے ساتھ معاہدے میں شامل ہوئے ہیں اور یہ سمجھ گئے کہ ہم اسلام میں داخل ہو گئے حالانکہ ابھی اسلام میں نہیں آئے) (۵)

प्रसंग बिल्कुल स्पष्ट है फिर भी वह लोग आपसे याचना करेंगें मानो मौत की और धकेले जाने वाले है और उसे देख रहे है, (6)

معاملہ بالکل واضح ہے پھر بھی وہ لوگ آپ سے فریاد کریں گے گویا موت کی طرف دھکیلے جانے والے ہیں اور اسے دیکھ رہے ہیں (۶)

(ऐ आस्तिको! नबी के द्वारा तुमसे वचन किया जा रहा था) याद करो वह अवसर जबकि ईश्वर तुमसे वचन कर रहा था कि दोनो दलो में से एक वैभव वाला तुम्हे मिल जाएगा (जिसका उल्लेख आयत 6 में किया गया है वह चाहते थे अर्थात नबी के जो साथी जो अभी इस्लाम में प्रविष्ट नही हुए थे कि निर्बल दल बिना वैभव वाला जो व्यापारी दल है वह मिले परन्तु ईश्वर की इच्छा यह थी कि सत्य आदेश को (नियम से) सत्य कर दिखाए और नास्तिको की जड़ काट दे (7)

(اے مومنوں نبی کے ذریعہ تم سے وعدہ کیا جا رہا تھا) یاد کرو وہ موقع جب کہ اللہ تم سے وعدہ کر رہا تھا کہ دونوں گروہوں سے ایک شان و شوکت والا تمہیں مل جائے گا (جس کا ذکر آیت ۶ میں کیا گیا ہے وہ چاہتے تھے یعنی نبی کے جو ساتھی جو ابھی اسلام میں داخل نہیں ہوئے تھے کمزور گروہ بے شان و شوکت والا جو تجارتی قافلہ ہے وہ ملے) مگر اللہ کا ارادہ یہ تھا کہ اپنے فرمان (قانون سے) حق کو حق کر دکھائے اور کافروں کی جڑ کاٹ دے (۷)

ताकि सत्य को सत्य सिद्ध कर दे और मिथ्या को मिथ्या कर दे चाहे पापियो को कितना ही बुरा लगे,(8)

تاکہ حق کو حق ثابت کر دے اور باطل کو باطل کر دے چاہے مجرموں کو کتنا ہی ناگوار ہو (۸)

नोट :- आयत के अनुवाद में अधिकांश ने यह लिखा है कि ईशदूत की इच्छा भी व्यापारी दल से युद्ध करने की थी परन्तु आयत के शब्द और नबी के विवेक से यह सिद्ध हो रहा है कि जब ईश्वर ने स्पष्ट कर दिया कि नास्तिको की जड़ काटनी है तो नबी इस आदेश को सुनने के बाद व्यापारी दल की ओर को क्यो मुख करने लगे थे और न ही नबी

نوٹ:۔ آیت کے ترجمے میں اکثر نے یہ لکھا ہے کہ نبی کا ارادہ بھی تجارتی قافلے سے مقابلہ کرنا تھا مگر آیت کے الفاظ اور نبی کی فراست سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ جب اللہ نے واضح کر دیا کہ کافروں کی جڑ کاٹنی ہے تو نبی اس ارشاد کو سننے کے بعد تجارتی قافلے کی طرف کو رخ کیوں کرنے لگے تھے. اور نہ ہی نبی سے یہ امید کی

से यह आशा की जा सकती है कि वह व्यापारी दल को लूटे उनका कार्य वीरता से सामना करना था न कि लूट खसोट अतः ईशदूत ने आरम्भ से ही सैनिक दल से संग्राम का निश्चय किया था हां कुछ व्यक्ति अवश्य चाहते होंगे जो आयत बता रही है कि व्यापारी दल को वश में किया जाए वह वह लोग थे जो उस समय तक इस्लाम में प्रविष्ट न हुए थे.

जب ईश्वर ने बता दिया कि सत्य-सत्य होकर रहेगा और असत्य की जड़ कटनी है भले ही पापीयों को कितना ही अप्रिय हो यह तब ही हो सकता था कि शत्रुओं की सैनिक शक्ति समाप्त हो जाए और यह शक्ति तब ही समाप्त हो सकती थी पब उन पर युद्ध के द्वारा चोट लगे अतः मुहम्मद स0 ने सैनिक दल से ही सामना करने का निर्णय किया न कि व्यापारी दल से.

جا سکتی ہے کہ وہ تجارتی قافلوں کو لوٹیں.ان کا کام بہادری سے مقابلہ کرنا تھا نہ کہ لوٹ کھسوٹ اس لئے نبی نے شروع سے ہی فوجی قافلہ سے مقابلہ کا ارادہ کیا تھا. ہاں کچھ آدمی ضرور چاہتے ہوں گے جو آیت بتا رہی ہے کہ تجارتی قافلے کو قابو میں کیا جائے وہ وہ لوگ تھے جو اس وقت تک اسلام میں داخل نہ ہوئے تھے.

جب اللہ نے بتا دیا کہ حق حق ہوکر رہے گا اور باطل کی جڑ کٹنی ہے بھلے ہی مجرموں کو کتنا ہی نا پسند ہو یہ تب ہی ہوسکتا تھا کہ دشمنوں کی فوجی طاقت ختم ہو جائے.اور یہ طاقت تب ہی ختم ہوسکتی تھی جب ان پر جنگ کے ذریعہ ضرب لگے.اس لئے محمدؐ نے فوجی گروہ سے ہی مقابلے کا فیصلہ کیا نہ کہ تجارتی قافلے سے.

जब तुम अपने ईश्वर से प्रार्थना करते थे तो उसने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली और कहा (जो निर्णय पहले से निश्चित था) कि हम हजार फरिश्तो से जो एक दूसरे के पीछे आते जाएंगे तुम्हारी सहायता करेंगे. (9)

جب تم اپنے رب سے دعا کرتے تھے تو اس نے تمہاری دعا سن لی اور کہا (جو فیصلہ پہلے سے طے تھا) کہ ہم ہزار فرشتوں سے جو ایک دوسرے کے پیچھے آتے جائیں گے تمہاری مدد کریں گے (۹)

(इसका यह अर्थ न था कि फरिश्ते युद्ध के स्थल में शत्रुओं से लड़ेंगें अपितु) उस सहायता का उद्देश्य इसके अतिरिक्त कुछ न था कि तुम्हारे लिए विजय की शुभ सूचना हो और तुम्हारे मन इससे संतुष्टि प्राप्त करें और सहायता तो ईश्वर ही की ओर से है निःसंदेह ईश्वर प्रभुत्वशाली युक्ति वाला है.(10)

(اس کا مطلب یہ نہ تھا کہ فرشتے میدان جنگ میں دشمنوں سے لڑیں گے بلکہ) اس مدد کا مقصد اس کے سوا کچھ نہ تھا کہ تمہارے لئے (فتح کی) خوشخبری ہو اور تمہارے دل اس سے اطمینان حاصل کریں.اور مدد تو اللہ ہی کی طرف سے ہے. بے شک اللہ غالب حکمت والا ہے (۱۰)

जब उसने सांत्वना के लिए अपनी ओर से तुम्हें ऐसी स्थिति में कर दिया मानो तुम्हे नीन्द आ गई हो (अर्थात पहली व्याकुलता और अपनी निर्बलता भूल गए और साहस वाले हो गए और अधिक यह किया कि) आकाश से पानी बरसा दिया ताकि तुमको उस वसवसे से जो शैतान की ओर से था पवित्र कर दें (शत्रु का भय जाता रहे) और तुम्हारे हृदय शक्तिशाली कर दे और उससे तुम्हारे पांव जम जाए (11) {74:5,3:154,8:9}

नोट- शैतानी वसवसा यह था कि शत्रु की संख्या अधिक थी और वह अच्छे स्थान में आकर ठेहर गए थे. उनको जो स्थान मिला वह रेत वाला था उनको चलने में व्याकूलता हो रही थी यह देखकर कुछ लोग विचार करते हो कि शयद हमारी हार हो जाएगी इस उकसाहट को दूर करने के लिए उनके मनों से संख्या आदि का विचार निकाल दिया और वर्षा कर दी जिससे नीची धरती में पानी भर गया जिससे शत्रु को व्याकूलता हो गई और जो रेत था वह जम गया और मुसलमानों को शान्ति हो गई और वर्षा से उनके पास पानी की कमी भी दूर हो गई. इन सब बातों ने मुसलमानों को साहस वाला बना दिया जो विचार मिथ्या अधिक आए थे वह सब भूल गए मानों नीन्द आ गई हो. यह है नीन्द आने का अर्थ अधिक स्पष्टीकरण सूरत यूसुफ में आएगा. और ईश्वर की इस सहयता को देखकर वह ऐसे लड़े मानों उनके साथ फरिशतें लड़ रहे हैं.

جب اس نے تسکین کے لئے اپنی طرف سے تمہیں ایسی حالت میں کر دیا گویا تمہیں نیند آ گئی ہو (یعنی پہلی پریشانی اور اپنی کمزوری بھول گئے اور ہمت والے ہو گئے اور مزید یہ کیا کہ) تم پر آسمان سے پانی برسا دیا تاکہ تم کو اس وسوسے سے جو شیطان کی طرف سے تھا پاک کر دے (دشمن کا خوف جاتا رہے) اور تمہارے دل مضبوط کر دے اور اس سے تمہارے پاؤں جم جائیں (۱۱) [۸:۹،۴۷:۵،۳:۱۵۴]

نوٹ:۔شیطانی وسوسہ یہ تھا کہ دشمن کی تعداد زیادہ تھی اور وہ اچھی جگہ میں آکر ٹھہر گئے تھے مسلمانوں کو جو جگہ ملی وہ ریت والی تھی ان کو چلنے میں پریشانی ہو رہی تھی یہ دیکھ کر کچھ لوگ خیال کرتے ہوں کہ شاید ہماری ہار ہو جائے اس وسوسے کو دور کرنے کے لئے ان کے ذہنوں سے تعداد وغیرہ کا خیال نکال دیا اور بارش کر دی جس سے نشیب والی جگہ میں پانی بھر گیا جس سے دشمن کو پریشانی ہو گئی اور جو ریت تھا وہ جم گیا اور مسلمانوں کو سکون ہو گیا. بارش سے ان کے پانی کی کمی بھی دور ہو گئی ان سب باتوں نے مسلمانوں کو ہمت والا بنا دیا جو خیالات باطل آئے تھے وہ سب بھول گئے گویا نیند آ گئی ہو یہ ہے نیند آنے کا مطلب مزید وضاحت سورت یوسف میں آئے گی.اور اللہ کی اس مدد کو دیکھ کر وہ ایسے لڑے گویا ان کے ساتھ فرشتے لڑ رہے ہیں.

जब तेरे ईश्वर ने फरिश्तों पर वही की थी कि मैं तुम्हारे साथ हूं, पस आस्तिकों को सांत्वना दो कि धैर्य से रहें मैं शीघ्र ही नास्तिकों के मनों में भय डाल दूंगा (और मुसलमानों से कहो कि ऐ मुसलमानो!) शत्रुओं की गर्दनों पर चोट लगाओ और उनके पोर पोर तोड़ डालो (12) (अर्थात उनकी शक्ति के साधनों को तहस नहस कर दो)

جب تیرے رب نے فرشتوں پر وحی کی تھی کہ میں تمہارے ساتھ ہوں پس مومنوں کو تسلی دو کہ ثابت قدم رہیں میں جلد ہی کافروں کے دلوں میں دہشت ڈال دوں گا (اور مسلمانوں سے کہو کہ اے مسلمانو!) دشمنوں کی گردنوں پر ضرب لگاؤ اور ان کے پور پور توڑ ڈالو (۱۲) (یعنی ان کی قوت کے ذرائع کو تہس نہس کر دو)

यह दण्ड इसलिए दिया गया कि उन्होंने ईश्वर और रसूल का विरोध किया और जो व्यक्ति ईश्वर और ईशदूत का विरोध करता है तो ईश्वर भी कठोर दण्ड देने वाला है (13)

یہ سزا اس لئے دی گئی کہ انہوں نے اللہ اور رسول کی مخالفت کی اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول کی مخالفت کرتا ہے تو اللہ بھی سخت عذاب دینے والا ہے (۱۳)

यह है तुम लोगों का दण्ड अब इसका स्वाद चखो, और तुम्हें ज्ञात हो कि सत्य का नकार करने वालों के लिए नर्क का दण्ड है (14)

یہ ہے تم لوگوں کی سزا اب اس کا مزہ چکھو اور تمہیں معلوم ہو کہ حق کا انکار کرنے والوں کے لئے دوزخ کا عذاب ہے (۱۴)

ऐ धर्म वालो जब युद्ध के क्षेत्र में तुम्हारा सामना नास्तिकों से हो जबकि वह तुम्हारी ओर बढ़ रहे हों तो पीठ मत फेरना (15)

اے اہل ایمان جب میدان جنگ مین منکروں سے تمہارا مقابلہ ہو جب کہ وہ تمہاری طرف بڑھ رہے ہوں تو پیٹھ نہ پھیرنا (۱۵)

और जो व्यक्ति युद्ध के दिन सिवाए इस स्थिति के कि कौशल करने के लिए हट जाए या अपनी सेना से मिलना चाहे यदि इसके अतिरिक्त युद्ध के क्षेत्र से पीठ फेरेगा तो (वह समझ ले) कि वह ईश्वर के क्रोध में घिर गया और उसका ठिकाना नर्क है और वह बहुत बुरा स्थान है (16)

اور جو شخص لڑائی کے دن سوائے اس حالت کے کہ ہنر کرنے کے لئے ہٹ جائے یا اپنی فوج سے ملنا چاہے اگر اس کے علاوہ میدان جنگ میں ان سے پیٹھ پھیرے گا تو (وہ سمجھ لے) کہ وہ اللہ کے غضب میں گرفتار ہو گیا اور اس کا ٹھکانا دوزخ ہے اور وہ بہت بُری جگہ ہے (۱۶)

(और मुसलमानो) उन नास्तिकों को कुछ तुम ने वध नही किया उनको तो ईश्वर ने वध किया और (ऐ रसूल) जब तुमने वाण मारा तो कुछ तुम ने नही मारा अपितु स्वयं ईश्वर ने वाण मारा यह इसलिए सहायता की ताकि प्रकट करे आस्तिकों को अच्छा प्रकट करना अर्थात सत्कर्म करें निःसन्देह ईश्वर (सब की) सुनता और जानता है (17)

(اور مسلمانوں) ان کفار کو کچھ تم نے قتل نہیں کیا ان کو تو اللہ نے قتل کیا اور (اے رسول) جب تم نے تیر مارا تو کچھ تم نے تیر نہیں مارا بلکہ خود اللہ نے تیر مارا یہ اس لئے مدد کی تا کہ ظاہر کرے مومنوں کو اچھا ظاہر کرنا یعنی اچھے عمل کریں بے شک اللہ (سب کی) مراد سنتا اور جانتا ہے (۱۷)

इसमें कुछ शंका नही कि ईश्वर नास्तिकों की युक्ति को निर्बल कर देने वाला है (18)

اس میں کچھ شک نہیں کہ اللہ کافروں کی تدبیر کو کمزور کر دینے والا ہے (۱۸)

(विरोधियो!) यदि तुम निर्णय चाहते थे तो तुम्हारे पास निर्णय आ चुका यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा है और यदि फिर अवज्ञा करोगे तो हम भी वही (तुम्हें दण्ड) देंगे और तुम्हारी सेना चाहे कितनी ही अधिक हो तुम्हारे कुछ भी काम न आएगी और ईश्वर तो आस्तिकों के साथ है (19)

(منکرو!) اگر تم فیصلہ چاہتے تھے تو تمہارے پاس فیصلہ آچکا۔ اگر تم باز آجاؤ تو تمہارے لئے بہتر ہے اور اگر پھر نافرمانی کرو گے تو ہم بھی وہی (تمہیں عذاب) کریں گے اور تمہاری جماعت چاہے کتنی ہی زیادہ ہو تمہارے کچھ بھی کام نہ آئے گی۔ اور اللہ تو مومنوں کے ساتھ ہے (۱۹)

ऐ आस्तिको! ईश्वर और उसके ईशदूत के आदेश पर चलो और उससे विमुखता न करो और तुम सुनते और जानते हो (20)

اے ایمان والو! اللہ اور اس کے رسول کے حکم پر چلو اور اس سے روگردانی نہ کرو اور تم سنتے اور جانتے ہو (۲۰)

और उन लोगों जैसे न होना जो कहते है कि हमने सुन लिया परन्तु (वास्तव में) नही सुनते (21)

اور ان لوگوں جیسے نہ ہونا جو کہتے ہیں کہ ہم نے سن لیا مگر (حقیقت میں) نہیں سنتے (۲۱)

कुछ शंका नही कि ईश्वर के निकट सब जीव धारियों में निकृष्टतम लोग वह है जो बहरे है अर्थात नही समझते और न मानते (22) {8:55; 10:100; 7:179}

کچھ شک نہیں کہ اللہ کے نزدیک تمام جانداروں میں بدترین لوگ وہ ہیں جو بہرے ہیں گونگے ہیں یعنی جو کچھ نہیں سمجھتے اور نا مانتے (۲۲) [۸:۵۵؛ ۱۰:۱۰۰؛ ۷:۱۷۹]

और यदि ईश्वर का नियम उनमें नेकी देखता तो उनको सुनने की क्षमता देता किन्तु वह लोग सत्य को स्वीकार करने की क्षमता खो चुके है यदि ईश्वर उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुख फेरकर भाग जाएं (23)

اور اگر اللہ کا قانون ان میں نیکی دیکھتا تو ان کو سننے کی توفیق بخشتا۔ لیکن وہ لوگ قبول حق کی صلاحیت کھو چکے ہیں اگر اللہ انہیں سنا بھی دے تو بھی وہ منہ پھیر کر بھاگ جائیں (۲۳)

मुसलमानो! ईश्वर और उसके रसूल की पुकार पर उपस्थित हूं कहो जबकि वह पुकारे उस वस्तु की ओर (जो रूहानी मौत से निकाल कर) जीवित (जाति) बना दे और जान लो कि (कतिपय समय) ईश्वर का नियम (उसके नियमानुसार) इन्सान और उसके हृदय के मध्य (अर्थात उसकी इच्छाओं में) बाधक हो जाता है

مسلمانو! اللہ اور اس کے رسول کی پکار پر لبیک کہو جب کہ وہ پکارے اس چیز کے لئے (جو روحانی موت سے نکال کر) زندہ (قوم) بنا دے اور جان لو کہ (بعض اوقات) اللہ کا قانون (اپنے قانون کے مطابق) انسان اور اس کے دل کے درمیان (یعنی اس کے ارادوں میں) حائل ہو جاتا ہے (اور انسان

(और इन्सान जो करना चाहता है नही कर सकता जो नही करना चाहता है वह कर लेता है अतः अपने हृदय की रक्षा करो) और (जान लो कि एक दिन) उसके सामने संग्रह किए जाओगे (24)

جو کرنا چاہتا ہے نہیں کرسکتا جو نہیں کرنا چاہتا وہ کرگزرتا ہے۔اس لئے اپنے دل کی حفاظت کرو)اور(جان لوکہ ایک روز)اس کے حضور جمع کیے جاؤ گے(۲۴)

और उस विपत्ति से डरो जो विशेषता के साथ उन्ही लोगों पर घटित न होगी जो तुम में पापी हैं (अपितु उसकी लपेट में बहुत से सदाचारी भी आ जाएंगे) याद रखो कि ईश्वर (अत्याचारियों को) कठोर दण्ड देने वाला है (25)

اور اس فتنے سے ڈرو جو خصوصیت کے ساتھ انہی لوگوں پر واقع نہ ہوگا جو تم میں گنہگار ہیں (بلکہ اس کی لپیٹ میں بہت سے بے گناہ بھی آجائیں گے) یاد رکھو کہ اللہ (ظالموں کو) سخت عذاب دینے والا ہے (۲۵)

(मुसलमानो!) वह समय याद करो जब तुम (मक्काह में थे) तुम्हारी संख्या बहुत कम थी और देश में तुम बलहीन विचार किये जाते थे और तुम्हे (हर समय) यह शंका रहती थी कि (मक्काह वाले) तुम्हें उचकले जाएंगे (अर्थात तुम्हारा अस्तित्व ही समाप्त कर देंगे) ऐसे समय में ईश्वर ने तुम्हें (मदीने में) शरण दी और अपनी सहायता से तुम्हें शक्तिशाली दल बना दिया और पवित्र वस्तुएं खाने को दी ताकि तुम ईश्वर की आज्ञाकारी करो (26)

(مسلمانو!) وہ وقت یاد کرو جب (تم مکہ میں تھے) تمہاری تعداد بہت کم تھی۔اور ملک میں تم کمزور خیال کیے جاتے تھے اور تمہیں (ہر وقت) یہ ڈر لگا رہتا تھا کہ (اہل مکہ) تمہیں اچک لے جائیں گے (یعنی تمہارا وجود ہی ختم کردیں گے) ایسے وقت میں اللہ نے تمہیں (مدینہ میں) پناہ دی اور اپنی مدد سے تمہیں طاقت ور جماعت بنادیا۔اور پاکیزہ چیزیں کھانے کو دیں تاکہ تم اللہ کی فرمانبرداری کرو(۲۶)

मुसलमानो! न तो ईश्वर व रसूल के साथ कपट करो और न स्वयं आपस में (एक दूसरे के साथ) कपट करो धरोहरों में और यह तो तुम जानते ही हो (कि कपट कितना बड़ा पाप है) (27)

مسلمانو! نہ تو اللہ ورسول کے ساتھ خیانت کرو اور نہ خود آپس میں (ایک دوسرے کے ساتھ) خیانت کرو امانتوں میں اور یہ تو تم جانتے ہی ہو (کہ خیانت کتنا بڑا گناہ ہے) (۲۷)

और याद रखो कि तुम्हारा माल और सन्तान बड़ी परीक्षा है (यदि तुम इस परीक्षा में पूरे उतरे तो) और यह जान लो कि ईश्वर के पास बड़ा फल है (28)

اور یاد رکھو کہ تمہارا مال اور اولاد بڑی آزمائش ہے (اگر تم اس آزمائش میں پورے اترے تو) اور یہ جان لو کہ اللہ کے پاس بڑا اجر ہے (۲۸)

मुसलमानों यदि तुम ईश्वर की अवज्ञा से बचोगे तो ईश्वर तुम में (सत्य और झूट में) अन्तर करने की शक्ति उत्पन्न कर देगा और तुम्हारी दुर्दशा दूर कर देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा ईश्वर बड़ी कृपा दया का स्वामी है (29)

مسلمانو! اگر تم اللہ کی نافرمانی سے بچو گے تو اللہ تم میں (حق وباطل میں) فرق کرنے کی طاقت پیدا کردے گا اور تمہاری بدحالیاں دور کردے گا اور تمہارے گناہوں کو بخش دے گا اللہ بڑے فضل کا مالک ہے (۲۹)

(ऐ रसूल! वह समय तो तुम्हें याद होगा) जब (कुफ्फ़ार मक्काह) इस सोच में थे कि तुम्हें बन्दी बना लें या बध कर दें या देश निकाला कर दे वह अपनी चालों में लगे थे और ईश्वर (तुम्हारी रक्षा के लिए) अपनी युक्ति कर रहा था और इश्वर से उत्तम युक्ति करने वाला कौन हो सकता है (30)

(اے رسول! وہ وقت تو تمہیں یاد ہوگا) جب (کفار مکہ) اس فکر میں تھے کہ تمہیں قید کردیں یا قتل کرڈالیں یا جلاوطن کردیں۔وہ اپنی چالوں میں لگے تھے اور اللہ (تمہاری حفاظت کے لئے) اپنی تدبیریں کررہا تھا اور اللہ سے بہتر تدبیر کرنے والا کون ہوسکتا ہے (۳۰)

और जब उनको हमारी आयात पढ़कर सुनाई जाती है तो कहते है कि हमने सुन लिया, यदि हम चाहें तो इस प्रकार का कथन हम भी कह दें और यह है ही क्या केवल अगले लोगों की कथाऐं है (31) {2:23; 6:93; 17:88}

اور جب ان کو ہماری آیات پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو کہتے ہیں ہم نے سن لیا ہے اگر ہم چاہیں تو اسی طرح کا کلام ہم بھی کہدیں اور یہ ہے ہی کیا صرف اگلے لوگوں کی کہانیاں ہیں (۳۱) [۲:۲۳; ۶:۹۳; ۱۷:۸۸]

और (यह कह कर) जब उन्होंने कहा कि ऐ ईश्वर यदि यह कुरआन तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा या कोई और कष्ट देने वाला दण्ड भेज (32)

اور (یہ کہہ کر) جب انہوں نے کہا کہ اے اللہ اگر یہ قرآن تیری طرف سے حق ہے تو ہم پر آسمان سے پتھر برسا یا کوئی اور تکلیف دینے والا عذاب بھیج (۳۲)

यह क्यों कर हो सकता है कि तुम उनमें हो और ईश्वर उन पर कष्ट अवतरित करे? और यह भी नही हो सकता कि वह क्षमा मांग रहे हों और ईश्वर उन्हें दण्ड दे (33)

یہ کیوں کر ہوسکتا ہے کہ تم ان میں ہو اور اللہ ان پر عذاب نازل کرے؟ اور یہ بھی نہیں ہوسکتا کہ وہ معافی مانگ رہے ہوں اور اللہ انہیں عذاب دے (۳۳)

और अब (जबकि तुम उनमें नही हो अर्थात

اور اب (جب کہ تم ان میں نہیں ہو یعنی ہجرت کرلی) کوئی

प्लायन कर लिया) कोई कारण नही कि ईश्वर उन्हें दण्ड न दे जबकि वह मुसलमानों को मस्जिद सम्मान वाली में नमाज़ पढ़ने से रोकते हैं और वह उस मस्जिद के प्रबन्धक भी नही हैं, उसके प्रबन्धक तो केवल सदाचारी हो सकते हैं किन्तु उनमें अधिकांश नही जानते (34)

وجہ نہیں کہ اللہ انہیں عذاب نہ دے جب کہ وہ مسلمانوں کو مسجد حرام میں نماز پڑھنے سے روکتے ہیں اور وہ اس مسجد کے متولی بھی نہیں ہیں. اس کے متولی تو صرف پرہیز گار ہو سکتے ہیں لیکن ان میں اکثر نہیں جانتے (۳۴)

और उन लोगों नमाज़ काबा के पास सीटियां बजाने के अतिरिक्त कुछ न थी तो तुम ऐ नास्तिकों जो कुफ्र करते थे अब उसके बदले कष्ट का स्वाद चखो (35)

اور ان لوگوں کی نماز خانہ کعبہ کے پاس سیٹیاں اور تالیا بجانے کے سوا کچھ نہ تھی تو تم اے کافرو! جو کفر کرتے تھے اب اس کے بدلے عذاب (کا مزہ چکھو) (۳۵)

और जो लोग नास्तिक हैं वह अपना माल इसलिए व्यय कर रहे हैं कि लोगों को ईश्वर के मार्ग (अर्थात लोगों को रसूल पर विश्वास लाने) से रोकें तो अभी वह लोग व्यय करते रहेंगे, फिर वह दिन आ जाएगा जब वह माल व्यय करना उन पर संताप बन कर छा जाएगा और वह लोग परास्त हो जाएँगे, और जिन लोगों ने कुफ्र का मार्ग स्वीकार किया है वह नर्क की ओर हांके जाएँगे (36)

اور جو لوگ کافر ہیں وہ اپنا مال اس لئے خرچ کر رہے ہیں کہ لوگوں کو اللہ کی راہ (یعنی لوگوں کو رسول پر ایمان لانے) سے روکیں تو ابھی وہ لوگ خرچ کرتے رہیں گے پھر وہ دن آجائے گا جب یہ مال خرچ کرنا اُن پر حسرت بن کر چھا جائے گا اور وہ لوگ مغلوب ہو جائیں گے اور جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی ہے وہ دوزخ کی طرف ہانکے جائیں گے (۳۶)

ताकि ईश्वर अशुद्ध को शुद्ध से पृथक कर दे और जितने अशुद्ध हैं सब को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे फिर सबको नर्क में झोंक दे वही लोग वध होने वाले हैं (37)

تا کہ اللہ ناپاک کو پاک سے الگ کر دے اور جتنے ناپاک ہیں سب کو ایک دوسرے پر رکھ کر ایک ڈھیر بنا دے پھر سب کو دوزخ میں جھونک دے وہی لوگ تباہ ہونے والے ہیں (۳۷)

ऐ रसूल नास्तिकों से कह दो कि यदि वह अपने कर्मों से रुक जाएं तो जो हो चुका वह उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा और यदि फिर वही कर्म करेंगे तो अगले लोगों का जो हो चुका है (वही उनके साथ होगा रीति जारी है) (38)

اے رسول کفار سے کہدو کہ اگر وہ اپنے افعال سے رک جائیں تو جو ہو چکا وہ انہیں معاف کر دیا جائے گا اور اگر پھر وہی حرکات کریں گے تو اگلے لوگوں کا جو ہو چکا ہے (وہی اُن کے ساتھ ہوگا طریقہ جاری ہے) (۳۸)

और उन लोगों से लड़ते रहो यहां तक कि उपद्रव शेष न रहे और धर्म सब ईश्वर का ही हो जाए (अर्थात शान्ति हो जाए जो ईश्वर चाहता है) और यदि मान जाएं तो ईश्वर उनके कामों को देख रहा है (39) और यदि विमुखता करें तो जान रखो कि ईश्वर तुम्हारा समर्थक है और वह अच्छा समर्थक और अच्छा सहायक है (40)

اور ان لوگوں سے لڑتے رہو یہاں تک کہ فتنہ باقی نہ رہے اور دین سب اللہ کا ہی ہو جائے (یعنی امن ہو جائے جو اللہ چاہتا ہے) اور اگر مان جائیں تو اللہ ان کے کاموں کو دیکھ رہا ہے (۳۹) اور اگر روگردانی کریں تو جان رکھو کہ اللہ تمہارا حمایتی ہے اور وہ اچھا حمایتی ہے اور اچھا مددگار ہے (۴۰)

{पारा 10 वालमू}

پارہ [۱۰] واعلمو

और जान लो जो माल मिले तुम्हें किसी मद (खाता) से जो तुम को निश्चिन्त अर्थात सम्पन्न कर दे तो ईश्वर के लिए है उसमें से पांचवा अंश और वह रसूल के और सगोत्री के और अनाथ के और निर्धन के और यात्री के लिए है यदि तुम ईश्वर पर और उस वस्तु पर आस्था लाएहो जो हमने उतारी अपने बन्दे पर जिस दिन निर्णय हुआ अर्थात ईश्वर की सहायता आई जब दो सैना भिड़ी और ईश्वर सब वस्तुओं के नियम बनाने वाला है (41)

اور جان لو جو مال ملے تمہیں کسی بھی مد سے جو تم کو بے پروا یعنی غنی کر دے تو اللہ کے لئے ہے اس میں سے پانچواں حصہ اور وہ رسول کے اور قرابت والے کے اور یتیم کے اور محتاج کے اور مسافر کے لئے ہے اگر تم اللہ پر اور اس چیز پر ایمان لائے ہو جو ہم نے اتاری اپنے بندے پر جس دن فیصلہ ہوا یعنی اللہ کی مدد آئی جب دو فوجیں بھڑیں اور اللہ سب چیزوں کے قانون بنانے والا ہے (۴۱)

नोट- इस आयत का अनुवाद जो इस समय पढ़ने में आ रहा है वह यह है अवलोकन हो

(8:41) और जान लो कि जो वस्तु तुम (कुफ्फार) से लूटकर लाओ उसमें से पांचवा अंश ईश्वर का है.......... फतेह मुहम्मद जालन्धरी लगभग यही अनुवाद हर ज्ञानी ने किया है और व्याख्या में भी लूट का माल ही लिखा है अब देखा यह जाए क्या वास्तव में इस धारा से लूट का अर्थ प्रकट होता है और क्या मुस्लिम लुटेरे होते हैं? क्या मुहम्मद स0 इस कर्म की आज्ञा दे सकते थे?

نوٹ:۔ اس آیت کا جو ترجمہ اس وقت پڑھنے میں آ رہا ہے وہ یہ ہے ملاحظہ ہو۔

(۴۱:۸) اور جان رکھو کہ جو چیز تم (کفار سے) لوٹ کر لاؤ اس میں سے پانچواں حصہ اللہ کا ہے..... فتح محمد۔ جالندھری، تقریباً یہی ترجمہ ہر عالم نے کیا ہے اور تفسیر میں بھی لوٹ کا مال ہی لکھا ہے اب دیکھا جائے کیا حقیقت میں اس آیت سے لوٹ کا مطلب ظاہر ہوتا ہے اور کیا مسلم لٹیرے ہیں؟ کیا محمدؐ اس عمل کی اجازت دے سکتے تھے؟

हमारे यहां एक बड़ा पक्का विश्वास यह है कि कुरआन में नमाज़ दान इत्यादि का विवरण नही है विवरण अहादीस (कथनों) में है जो मुहम्मद स0 ने बयान की है, यह बात सूरत हशर की आयात 7 से ली जाती है जिसमें है कि जो कुछ तुम्हें रसूल दे वह लेलो और जिससे रोक दे उससे रूक जाओ इस आयत के बारे में सूरत हशर में लिखा जाएगा परन्तु याद रहे कि वैसे तो यह आयत माल फैके विषय में है परन्तु इस से धर्म का प्रसंग भी यदि निकाला जाए तो विचार अनिवार्य है मुहम्मद ने उससे रोका है जिससे कुरआन ने रोका है और उसको देंगे जिसके देने का कुरआन ने आदेश दिया है "वमा यनतिकु अनिल हवा इन हुवा इल्ला वहयुंयूहा" (53:3-4) देखा जाए क्या कुरआन में जकात (दान) आदि का विवरण है या नही कुरआन से स्पष्ट होता है कि हर अनिवार्य वस्तु का विवरण है,

(6:155) फिर हमने मूसा को पुस्तक दी पूरा करने को जो उसपर सदाचारी है और हर वस्तु का विवरण है और शिक्षा और कृपा है,

(111:12) उनकी कथा में बुद्धि मानों के लिए शिक्षा है यह (कुरआन) ऐसी बात नही है जो (अपने मन से) बनाई गई हो अपितु जो (पुस्तक) इससे पहले (अवतरित हुई) है उनकी पुस्टि है और हर वस्तु का विवरण (करने वाला है) और आस्तिकों के लिए शिक्षा और कृपा है,

इन आयात में कहा गया है कि हर वस्तु का विवरण है और हमसे कहा जाता है कि उनका विवरण मुहम्मद स0 ने बयान किया है देखा जाए दान का क्या विवरण बताया है और किस मूल स्थान से,

जिस विवरण पर आज व्यवहार किया जा रहा है वह यह है कि आदमी के पास साढ़े सात तोले सोना या साढ़े बावन तोले चान्दी हो और उस पर वर्ष बीत जाए तो उसमें से 2½% दान में देना है, अब आप स्वयं ही बताएं क्या इन दोनों के मूल्य बराबर है? इन दोनों के मूल्य में बहुत अन्तर है साढ़े सात तोले सोना लगभग पैंतालीस हजार और चान्दी लगभग पांच हजार रुपये की है जिसमें बहुत अन्तर है तो क्या ईश्वर या नबी ऐसा अनुमान निश्चित कर सकते है? जबकि ईश्वर की बात में अन्तर नही होता (4:82) इस अन्तर से सिद्ध हुआ कि यह मुहम्मद स0 का निश्चित किया हुआ नही है,

कुरआन में ईश्वर के मार्ग में व्यय करने के लिए दो शब्द आए है ज़कात और सदक़ात और लगभग यह शब्द कुरआन में इतने ही बार आया है जितनी बार नमाज़ का आया है दोनों साथ-साथ है जहां सलात का वर्णन है वही ज़कात का वर्णन है अतः यह प्रसंग बहुत महत्वपूर्ण और अनिवार्य है तो ऐसी स्थिति में इसका विवरण कुरआन में होना अनिवार्य है और यह भी उचित है कि मुहम्मद स0 का पूरा व्यवहार कुरआन पर था और आप पर कुरआन ही अवतरित हुआ था न कि कुछ और अवलोकन हो,

(10:109) और ऐ नबी तुम उसका अनुकरण करो जो तुम्हारी ओर वही के द्वारा भेजा जा रहा है,

(10:15) ऐ नबी उनसे कहो मेरा यह काम नही है कि अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूं मैं तो बस उस वही का अनुकरण करता हूं जो मेरे पास भेजी जाती है, आप पर क्या अवतरित हुआ देखें

(6:19) और यह कुरआन मेरी ओर वही के द्वारा भेजा गया है ताकि

ہمارے یہاں ایک بڑا پختہ عقیدہ یہ ہے کہ قرآن میں نماز زکوۃ وغیرہ کی تفصیل نہیں ہے. تفصیل احادیث میں ہے جو محمدؐ نے بیان کی ہے یہ قول سورہ حشر کی آیت ۷ سے اخذ کیا جاتا ہے. جس میں ہے کہ "اور جو کچھ تمہیں رسول عطا کریں وہ لےلو اور جس سے منع کریں باز رہو اس آیت کے بارے میں سورت حشر میں لکھا جائے گا لیکن یہ یاد رہے کہ ویسے تو یہ آیت مال فئے کے بارے میں ہے مگر اس سے دین کا مسئلہ بھی اگر نکالا جائے تو غور تو ضروری ہے محمدؐ اس سے روکے گیں جس کو قرآن نے روکا ہے اور اس کو دیں گے جس کو دینے کا حکم قرآن نے دیا ہے. وما ینطق عن الھوی. ان ھو الا وحی یوحی (۵۳:۳،۴) دیکھا جائے کیا قرآن مین زکوۃ وغیرہ کی تفصیل ہے یا نہیں. قرآن سے ظاہر ہوتا ہے کہ ہر ضروری چیز کی تفصیل ہے.

(۶:۱۵۵) پھر ہم نے موسیٰ کو کتاب دی پورا احسان کرنے کو اس پر جو نیک ہے اور ہر چیز کی تفصیل ہے اور ہدایت اور رحمت ہے.

(۱۱۱:۱۲) ان کے قصہ میں عقلمندوں کے لئے عبرت ہے یہ (قرآن) ایسی بات نہیں ہے جو (اپنے دل سے) بنائی گئی ہو بلکہ جو (کتابیں) اس سے پہلے (نازل ہوئی) ہیں ان کی تصدیق ہے اور ہر چیز کی تفصیل (کرنے والا) اور مومنوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے.

ان آیات میں کہا گیا ہے کہ ہر چیز کی تفصیل ہے اور ہم سے کہا جاتا ہے کہ زکوۃ، نماز وغیرہ کی تفصیل نہیں ہے. ان کی تفصیل محمدؐ نے بیان کی ہے دیکھا جائے زکوۃ کی کیا تفصیل بتائی ہے اور کس ماخذ سے.

جس تفصیل پر آج عمل کیا جا رہا ہے وہ یہ ہے کہ آدمی کے پاس ساڑھے سات تولے سونا یا ساڑھے باون تولے چاندی ہو اور اس پر ایک سال گزر جائے تو اس میں سے ڈھائی فیصد زکوۃ میں دینا ہے اب آپ خود ہی بتائیں کیا ان دونوں کی قیمت برابر ہے؟ ان دونوں کی قیمت میں بہت فرق ہے ساڑھے سات تولے سونا تقریباً پینتالیس ہزار اور چاندی تقریباً پانچ ہزار کی ہے. جس میں بہت فرق ہے. تو کیا اللہ یا نبی ایسا نصاب مقرر کر سکتے ہیں؟ جب کہ اللہ کی بات میں فرق نہیں ہوتا (۴:۸۲) اس فرق سے ثابت ہوا کہ یہ محمدؐ کا مقرر کیا ہوا نہیں ہے۔

قرآن میں اللہ کی راہ میں خرچ کرنے کے لئے دو لفظ آئے ہیں زکوۃ اور صدقات اور تقریباً یہ لفظ قرآن میں اتنی ہی بار آیا ہے جتنی بار نماز کا آیا ہے۔ دونوں ساتھ ساتھ ہیں جہاں صلوۃ کا ذکر ہے وہیں زکوۃ کا ذکر ہے اس لئے یہ معاملہ بہت اہم اور ضروری ہے تو ایسی حالت میں اس کی تفصیل قرآن میں ہونا ضروری ہے اور یہ بھی درست ہے کہ محمدؐ کا پورا عمل قرآن پر تھا اور آپ پر قرآن ہی نازل ہوا تھا نہ کہ کچھ اور. ملاحظہ ہو۔

(۱۰:۱۰۹) اور اے نبی تم اُس کی پیروی کرو جو تمہاری طرف وحی کے ذریعہ بھیجا جارہا ہے

(۱۰:۱۵) اے نبی ان سے کہو میرا یہ کام نہیں ہے کہ اپنی طرف سے اس میں کوئی تغیر کروں میں تو بس اُس وحی کا پیروکار ہوں جو میرے پاس بھیجی جاتی ہے. آپ پر کیا نازل ہوا دیکھو.

(۶:۱۹) اور یہ قرآن میری طرف بذریعہ وحی بھیجا گیا ہے تا کہ تمہیں اور جس جس

तुम्हें और जिस जिस को यह पहुंचे सबको सचेत कर दूं.

आयात बाला से स्पष्ट हो गया कि मुहम्मद स0 पर यह कुरआन ही अवतरित हुआ और इसका ही अनुकरण का आदेश दिया जा रहा है यदि मुहम्मद स0 उन आदेशों के अतिरिक्त कुछ करते तो उसके लिए क्या आदेश है देखें.

सूरत अलहाक्का 69, आयत 43, यह विश्वपालक की ओर से अवतरित हुआ है (69:44) और यदि इस नबी ने स्वयं घड़कर कोई बात हमारी ओर सम्बधित की होती (69:45) तो हम उसको पकड़ते दाहिने हाथ से अर्थात पूरी शक्ति से (69:47) फिर तुम में से कोई (हमें) इस काम से रोकने वाला न था.

इन आयात को भी देखें कितनी कठोर चेतावनी है कि नबी कुरआन को न बदलने वाले थे और न ही इसके विपरीत कार्य करने वाले थे और न अनुयायीयों को इसके प्रतिकूल कुछ बताने वाले थे. अतः कुरआन में जकात इत्यादि का विवरण देखकर मुहम्मद स0 ने कार्य किया था और बताया था अवलोकन हो कुरआन कहां तक हमारा मार्ग दर्शन करता है, क्योंकि ईश्वर ने अपने बन्दों को अन्धेरे में नही छोड़ा उसने पूरी जानकारी दी जिसपर मुहम्मद स0 ने व्यवहार किया और बताया और आस्तिकों ने कार्य किया परन्तु आज हमारे सामने कुछ बातें कुरआन के विपरीत आ रही है और कहा जाता है कि यह बाते मुहम्मद स0 ने बतायी है.

परन्तु ऐसा नहीं है कुरआन में हर आवश्यक वस्तु का विवरण है यदि दान और नमाज आदि की नही तो फिर यह अनिवार्य नही है परन्तु यह अनिवार्य है अतः इनका विवरण भी निःसंदेह कुरआन में है ऊपर निवेदन कर चुका हूं कि ईश्वर के मार्ग में व्यय के लिए दो शब्द आऐ है सदका और जकात जकात की मात्रा निश्चित की है और सदके की मात्रा निश्चित नही की यह आवश्यक्ता के अनुसार या आसानी के अनुसार दिया जाएगा जकात धर्म दाय के बारे में देखें.

सूरत अनफाल की आयत 41 पढ़ ली है जिसमें प्रचलित अनुवाद भी पढ़ लिया जो मैंने समझा है वह भी पढ़ लिया.

प्रचलित अनुवाद पर पहली आपत्ति तो यह सामने आती है कि क्या मुहम्मद स0 और मुसलमान लूट करते थे? उनको तो कुरआन ने हित्तुन का आदेश दिया है अर्थात क्षमा और उपकार करना जैसा विजय मक्काह के दिन देखा गया तो क्या मुहम्मद ने मक्काह को लूटा? कदापि नही लूटा अपितु एक सामन्य क्षमा दी और मुसलमान ने कोई भी वस्तु नही उठाई हां कभी ऐसा भी हो सकता है कि विरोधी सैना की पराज्य हो जाए और वह अपना कुछ सामान युद्ध के क्षेत्र में छोड़ जाए क्योंकि पराज्य के बाद तो शत्रु को भागना ही ठीक रहता है वह अपना सामान नही उठाता यदि सामान उठाएगा तो मारा जाएगा अतः वह छूट जाता है उस छुटे हुए सामान को मुसलिम सेना उठा लेती है लूटती नही यदि न उठाए तो वहां पड़ा-पड़ा बेकार हो जाएगा या अनुचित प्रयोग हो जाएगा, अतः विवशता में उठाता है वह न लूट है और न डाका चोरी अतः उस का खाना वैध है और उसका पांचवा अंश अर्थात 20% राज्य का होगा उसका छोड़ा हुआ सामान तो हर सैना उठाती है चाहे वह किसी भी धर्म की हो हां अत्याचारी व्यक्ति विजय के बाद लूट मार करते हैं परन्तु मुसलमान नही करते.

यह बटवारा उस समय होगा जब मुस्लिम सैना स्वेच्छा से लड़ने आई हो उनका वेतन न हो यदि उनका वेतन होगा तो फिर ऐसा धन पूरा राज्य के कोष में जाएगा आयत में क्या आया है वह देखा जाए.

کو یہ پہنچے سب کو متنبہ کر دوں.

آیت بالا سے وضاحت ہوگئی کہ محمدؐ پہ یہ قرآن ہی نازل ہوا اور اس کی ہی پیروی کا حکم دیا جار ہا ہے اگر محمدؐ ان احکام کے علاوہ کچھ کرتے تو اس کے لئے کیا حکم ہے دیکھیں

سورت الحاقۃ ۶۹/آیت ۴۳/ یہ رب العالمین کی طرف سے نازل ہوا ہے (۶۹:۴۴) اور اگر اس نبی نے خود گھڑ کر کوئی بات ہماری طرف منسوب کی ہوتی (۶۹:۴۵) تو ہم اس کو پکڑتے داہنے ہاتھ سے یعنی پوری طاقت سے (۶۹:۴۶) اور اس کی رگِ گردن کاٹ ڈالتے (۶۹:۴۷) پھر تم میں سے کوئی (ہمیں) اس کام سے روکنے والا نہ تھا.

ان آیت کو بھی دیکھیں کتنی سخت وعید ہے کہ نبی قرآن کو نہ بدلنے والے تھے اور نہ ہی اس کے خلاف عمل کرنے والے تھے اور نہ امت کو اس کے خلاف کچھ بتانے والے تھے.اس لئے قرآن میں زکوۃ وغیرہ کی تفصیل دیکھ کر محمدؐ نے عمل کیا تھا اور بتایا تھا ملاحظہ ہو قرآن کہاں تک ہماری رہنمائی کرتا ہے کیونکہ اللہ نے اپنے بندوں کو اندھیرے میں نہیں چھوڑا اس نے پوری تفصیل دی جس پر محمدؐ نے عمل کیا اور بتایا اور نیک مسلمانوں نے عمل کیا.مگر آج ہمارے سامنے کچھ باتیں قرآن کے خلاف آرہی ہیں اور کہا جاتا ہے کہ محمدؐ نے بتائیں ہیں.

مگر ایسا نہیں ہے قرآن میں ہر ضروری چیز کی تفصیل ہے اگر زکوۃ اور نماز وغیرہ کی نہیں تو پھر یہ ضروری نہیں ہیں مگر یہ ضروری اور فرض ہیں اس لئے ان کی تفصیل بھی یقیناً قرآن میں ہے. میں اوپر عرض کر چکا ہوں کہ اللہ کی راہ میں خرچ کے لئے دو لفظ آئے ہیں صدقہ اور زکوۃ.زکوۃ کی تعداد اللہ نے اپنی کتاب میں مقرر کی ہے اور صدقہ کی تعداد مقرر نہیں کی یہ ضرورت کے مطابق یا آسانی کے مطابق دیا جائے گا.زکوۃ کے بارے میں دیکھیں.

سورت انفال کی آیت ۴۱/ پڑھ لی ہے جس میں رائج الوقت ترجمہ بھی پڑھ لیا اور جو میں نے سمجھا ہے وہ بھی پڑھ لیا.رائج الوقت ترجمہ پر پہلا اعتراض تو یہ سامنے آتا ہے کہ کیا محمدؐ اور مسلمان لوٹ کرتے تھے؟ ان کو تو قرآن نے ھطۃ کا حکم دیا ہے یعنی معافی درگزر احسان کرنا جیسا فتح مکہ کے دن دیکھا گیا تو کیا محمدؐ نے مکہ کو لوٹا؟ ہرگز نہیں لوٹا بلکہ ایک عام معافی دی اور کسی مسلمان نے کوئی چیز بھی نہیں اُٹھائی ہاں کبھی ایسا ہو سکتا ہے کہ لشکر مخالف کو شکست ہو جائے اور وہ اپنا کچھ سامان میدان جنگ میں چھوڑ جائے کیونکہ شکست کے بعد تو دشمن کو بھاگنا ہی ٹھیک رہتا ہے وہ اپنا سامان نہیں اٹھاتا.اگر سامان اٹھائے گا تو مارا جائے گا اس لئے وہ چھوٹ جاتا ہے اس چھوٹے ہوئے سامان کو مسلم لشکر اٹھالیتا ہے لوٹتا نہیں.اگر نہ اٹھائے تو وہ وہاں پڑا پڑا بیکار ہو جائے گا یا اس کا غلط استعمال ہو جائے گا اس لئے مجبوری میں اٹھاتا ہے.وہ نہ لوٹ ہے اور نہ ڈاکہ چوری.اس لئے اس کا کھانا جائز ہے اور اس کا پانچواں حصہ یعنی 20% حکومت کا ہوگا.چھوڑا ہوا سامان تو ہر فوج اٹھاتی ہے چاہے وہ کسی بھی مذہب کی ہو ہاں ظالم آدمی جیت کے بعد لوٹ مار کرتے ہیں مگر مسلمان نہیں کرتے.

یہ بٹوارا اس وقت ہوگا جب مسلم لشکر رضا کارانہ لڑنے آیا ہو ان کی تنخواہ نہ ہو اگر ان کی تنخواہ ہوگی تو پھر ایسا مال پورا حکومت کے بیت المال میں جائے گا.آیت میں کیا آیا ہے وہ دیکھا جائے

आयत में आया है कि जानलो जब तुमको इतना धन मिले कि तुम धनि निश्चित हो जाओ और वह किसी भी खाते से मिले तो उसका पांचवा अंश राजकोष का है यदि आयत में शब्द मिनशैइन के स्थान पर मिन हरबिन या मिन कतालिन होता तो माना जा सकता था कि यह युद्ध से मिले माल के लिए है और इन शब्दों से लूट भी मानी जा सकती थी, परन्तु यह शब्द नही है अपितु मिनशैइन है तो सिद्ध हुआ कि जो भी व्यक्ति वैध कार्य करता है चाहे वह व्यापार करे चाहे नोकरी चाहे कृषि कोई भी कार्य करे और उससे उसको इतनी आय हो जाए कि वह निश्चित हो जाए तो तुरन्त पांचवा भाग 20% धर्म दाय में देना है एक वर्ष की प्रतीक्षा नही होगी जैसा नियम बना रखा है उस धन पर जीवन में एक बार ही 20% देना है शेष 80% पर ईश्वर कोई मांग नही करता वह आदमी का अपना है बड़ी प्रसन्नता से खा सकता है फिर जान ले वह 20% एक बार है बार-बार नही माल आने पर तुरन्त लिखा गया है और यही 20% धर्मादाय है 2½ नही, इसका प्रमाण भी प्रस्तुत है,

सूरत अल अनाम 6 आयत 142- वह ईश्वर ही है जिस ने उपवन उत्पन्न किए छतरियों पर चढ़ाए हुए भी और छतरियों पर नही चढ़ाए हुए भी और खजूर और खेती जिसके भांति भांति के फल होते है और जेतुन और अनार जो (कतिपय बातों में) एक दूसरे से मिलते जुलते है और नही भी मिलते जब यह वस्तुए फलें तो उनके फल खाओ और जिस दिन काटो और तोड़ो तो ईश्वर का अधिकार भी उसमें चुकता करो (धर्म दाय) और बेजा न उड़ाना कि ईश्वर बेजा उड़ाने वालों को मित्र नहीं रखता, (6:143) और पशुओं में भार उठाने वाले भी उत्पन्न किए और भूमी से लगे हुए भी बस ईश्वर की दी हुई जीविका खाओ और शैतान के पद चिन्हों पर न चलो वह तुम्हारा खुला शत्रु है (इन में से भी दान देना है) यह रहा आदेश माल आते ही तुरन्त जकात देने का फिर एक साल प्रतीक्षा किस बात की और किस नियम से यदि है तो प्रस्तुत किया जाए

यह तो रहा स्थायी धर्मा दाय का आदेश सदका दान का क्या आदेश है और क्यों वह इस लिए कि कभी कभी जाति पर ऐसा समय भी आ जाता है कि स्थायी धर्मा दाय व आय से व्यय पूरा नही हो पाता उदाहरणतः कोई तूफान आजाए था किसी क्षेत्र में काल पड़ जाए या अचानक कोई बड़ी जंग आरम्भ हो जाए तो जाति का कर्तव्य हो जाता है कि अपने शासन का साथ दे यदि साथ न दिया तो हो सकता है धन की कमी से शत्रु का सामना न हो सके और देश और जाति दास हो जाए तो फिर क्या होगा अतः ऐसे समय पर जाति आगे बढ़े और दिल खोल कर सदका दे हंगामी स्थिति में कभी कभी अबुबकर र० व उमर र० उसमान की रीति का भी अनुकरण करना होगा कुरआन से प्रमाण प्रस्तुत है अवलोकन हो सूरत बकरा 219 और लोग आपसे ज्ञात करेंगे कि कितना व्यय करें आप कह दें कि जितना आसान हो ईश्वर इसी प्रकार आदेशों को स्पष्ट करता है,

सूरत अलफुरकान 25 आयत 67 जो व्यय करते है तो न दुरुपयोग करते है न कृपणता अपितु उनका व्यय दोनों के मध्य संतुलन पर स्थापित रहता है,

सूरत बनी इसराईल 17 आयत 29 न तो अपना हाथ गर्दन से बान्धा रखो और न उसे बिलकुल ही खुला छोड़ दो कि धिक्कारित और विवश बन कर रह जाओ,

آیت میں آیا ہے کہ جان لو جب تم کو اتنا مال ملے کہ تم غنی بے پروا ہو جاؤ اور وہ کسی بھی مد و چیز سے ملے تو اس کا پانچواں حصہ بیت المال کا ہے۔اگر آیت میں لفظ من شَیءٍ کی جگہ پر من حرب یا من قتالٍ ہوتا تو مانا جا سکتا تھا کہ یہ جنگ سے ملے مال کے لئے ہے اور ان الفاظ سے لوٹ بھی مانی جا سکتی تھی۔مگر یہ لفظ نہیں ہے بلکہ من شَیءٍ ہیں تو ثابت ہوا کہ جو بھی آدمی جائز کام کرتا ہے چاہے وہ تجارت کرے چاہے ملازمت کرے چاہے کاشت کرے یا کوئی ہنر کا کام کرے بہر حال کوئی بھی کام کرے اور اس سے اس کو اتنی آمدنی ہو جائے کہ وہ بے پروا ہو جائے تو فوراً پانچواں حصہ 20% زکوٰۃ میں دینا ہے ایک سال کا انتظار نہیں ہوگا جیسا قانون بنا رکھا ہے اس مال پر زندگی میں ایک بار ہی 20% دینا ہے باقی 80% پر اللہ کوئی مطالبہ نہیں کرتا وہ آدمی کا اپنا ہے بڑی خوشی سے کھا سکتا ہے پھر جان لیں وہ 20% ایک بار ہے بار بار نہیں۔مال آنے پر فوراً لکھا گیا ہے اور یہی 20% مستقل زکوٰۃ ہے 2½% نہیں۔اس کا ثبوت بھی پیش ہے۔

سورت انعام ۶/آیت ۱۴۲/ وہ اللہ ہی ہے جس نے باغ پیدا کئے چھتریوں پر چڑھائے ہوئے بھی اور چھتریوں پر نہیں چڑھائے ہوئے بھی اور کھجور اور کھیتی جس کے طرح طرح کے پھل ہوتے ہیں اور زیتون اور انار جو (بعض باتوں میں) ایک دوسرے سے ملتے جلتے ہیں اور نہیں بھی ملتے۔جب یہ چیزیں پھلیں تو ان کے پھل کھاؤ اور جس دن کاٹو اور توڑو تو اللہ کا حق بھی اس میں سے ادا کرو (زکوٰۃ) اور بے جا نہ اڑانا کہ اللہ بے جا اڑانے والوں کو دوست نہیں رکھتا۔

(۱۴۳:۶) اور چارپایوں میں بوجھ اٹھانے والے بھی پیدا کئے اور زمین سے لگے ہوئے بھی بس اللہ کا دیا ہوا رزق کھاؤ اور شیطان کے قدموں پر نہ چلو وہ تمہارا کھلا دشمن ہے (ان میں سے بھی زکوٰۃ ادا کرنی ہے) یہ رہا حکم مال آتے ہی فوراً زکوٰۃ ادا کرنے کا پھر ایک سال انتظار کس بات کا اور کس قانون سے۔اگر ہے تو پیش کیا جائے۔

یہ تو رہا مستقل زکوٰۃ کا حکم۔اب صدقہ کا کیا حکم ہے اور کیوں وہ اس لئے کہ کبھی کبھی قوم پر ایسا وقت بھی آجاتا ہے کہ مستقل زکوٰۃ و آمدنی سے خرچ پورا نہیں ہو پاتا مثلاً کوئی توفان آجائے یا کسی علاقہ میں قحط پڑ جائے یا اچانک کوئی بڑی جنگ شروع ہو جائے تو ایسے وقت میں حکومت قوم سے مطالبہ کرے گی تو قوم کا فرض ہو جاتا ہے کہ اپنی حکومت کا ساتھ دے۔اگر ساتھ نہ دیا تو ہو سکتا ہے مال کی کمی سے دشمن کا مقابلہ نہ ہو سکے اور ملک اور قوم غلام ہو جائے تو پھر کیا ہوگا اس لئے ایسے وقت پر قوم آگے بڑھے اور دل کھول کر صدقہ دے۔ہنگامی حالات میں کبھی کبھی سنت ابوبکرؓ یا عمرؓ یا عثمانؓ پر بھی عمل کرنا ہوگا قرآن سے ثبوت پیش ہے ملاحظہ ہو۔

سورہ بقرہ ۲۱۹/ اور لوگ آپ سے دریافت کریں گے کہ کتنا خرچ کیا کریں آپ فرما دیجئے کہ جتنا آسان ہو اللہ اس طرح احکام کو صاف صاف بیان کرتا ہے۔

سورت الفرقان ۲۵/آیت ۶۷/ جو خرچ کرتے ہیں تو نہ فضول خرچ کرتے ہیں نہ بخل بلکہ ان کا خرچ دونوں انتہاؤں کے درمیان اعتدال پر قائم رہتا ہے۔

سورہ بنی اسرائیل ۱۷/آیت ۲۹/ نہ تو اپنا ہاتھ گردن سے باندھ رکھو اور نہ اسے بالکل ہی کھلا چھوڑ دو کہ ملامت زدہ اور عاجز بن کر رہ جاؤ۔

इन आयात में तात्कालिक समय के व्यय करने को बताया है जो आसान हो या आवश्यकता से अधिक हो वह देना है यह तब जब आवश्यक हो और जो स्थिर धर्मा दाय है वह (9:41) से सिद्ध है इसी प्रकार जैसे दोपहर का सूर्य प्रकट है इन आयात के होते हुए मुहम्मद स० 2½ प्रतिशत कैसे निश्चित कर देते क्या वह ईश्वर के आदेश के बिना कोई बात अपनी ओर से कहते थे? ऐसा तो उन के बारे में सोचना ही पाप है इसलिए धर्मादाय का विषय अपने स्थान पर बड़ा स्पष्ट और सीधा है यदि इस पर व्यवहार किया जाता तो कम्योनेजम का अस्तित्व ही न होता और इस्लाम का ही प्रमुत्व रहता कम्योनेजम तो लोगों ने विवश होकर प्रचलित किया जब उनकी आवश्यक्ता पूरी न हुई और दूसरी ओर धनी लोग आनन्द कर रहे हैं उन्होंने इस्लाम के नियमों को तोड़ मरोड़ कर अपनी मन मानी कर ली है और बहुत से बन्धन लगा दिए हैं.

उनसे विवश होकर उन्होंने कम्योनेजम स्थापित किया यद्यपि अब कम्यानेजम भी साथ नही दे रहा है साथ देने के लिए केवल इस्लाम ही है यदि इस पर ठीक कार्य किया जाए और वह यह कि हर आदमी की आवश्यकता को पूरा करना चाहिए वह स्थिर 20% से पूरी हो या और आगे उठकर हंगामी स्थिति के आधीन बजट की कमी को पूरा करने के लिए दान देना हो और उसकी विधि भी है अर्थात हर राज्य का आय और व्यय के स्रोत होते हैं उनकी कमी बेशी से हर वर्ष टैक्स लगता है या छूट दी जाती है, ऐसे ही इस्लाम ने नियम बताया है और उसमें कोई परिवर्तन न होगा और मुहम्मद स० ने भी कुरआन पर कर्म किया है और यही कुरआन दिया है और इसके विपरीत से रोका है अतः हम को भी यही मार्ग ग्रहण करना चाहिए यदि हम यह मार्ग ग्रहण करते हैं तो सारी व्याकुलता दूर हो जाएगी अन्यथा नही.

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति धनी है और उसके पास कुछ निर्धन आदमी रहते हैं वह धनी आदमी उनका ध्यान नही रखता और हो सकता है उस निर्धन ने भोजन न खाया हो तो ऐसी स्थिति में उसको नीन्द नही आएगी, और वह कुछ सोचने पर विवश होगा और वह यह कि मैं अपना और अपने बच्चों का पेट कैसे भरूं हो सकता है उसके सामने वह धनी आदमी ही आ जाए और वह उसके घर पर ही कुछ और आदमियों के साथ आक्रमण कर दे और अशान्ति हो जाए इसके विपरीत धनी आदमी उनका ध्यान रखता तो वह भूके न रहते और पेट भरने पर वह रात को सोते भी और किसी समय आवश्यकता पड़ने पर उस धनी व्यक्ति के लिए सहायक भी सिद्ध होते और हर आशंका को अपने ऊपर लेते तो इस स्थिति में वह धनी व्यक्ति सुरक्षित रहता, अतः जो आदेश ईश्वर ने अपने नबी के द्वारा दिए हैं वह बहुत अच्छे हैं उन पर व्यवहार होना चाहिए यही इस्लाम है और सब व्यर्थ है, आयत में है कि उस दिन अपने बन्दे पर अवतरित किया, तो यह ईश्वर की सहायता और तृप्ति थी जिसको यह कहकर बताया गया है कि यदि तुम धैर्यवान रहे तो हम तुम्हारी सहायता फरिश्तों के द्वारा करेंगे और सहायता तो सबकी सब ईश्वर ही की होती है.

याद करो वह समय जबकि तुम वादी के इस ओर थे और वह दूसरे किनारे पर पड़ाव डाले हुए थे और यात्री दल तुम से नीचे (तट) की ओर था यदि कहीं पहले से तुम्हारे और उनके मध्य आमने सामने का प्रस्ताव हो चुका होता तो तुम अवश्य उस अवसर पर पहलू तही कर जाते, परन्तु जो कुछ सामने आया वह इसलिए था कि जिस बात

ان آیات میں ہنگامی حالات کے وقت خرچ کرنے کو بتایا ہے جو آسان ہو یا ضرورت سے زیادہ ہو وہ دینا ہے یہ تب جب ضرورت ہو اور جو مستقل زکوٰۃ ہے وہ (۴۱:۸) سے ثابت ہے اسی طرح جیسے دوپہر کا سورج ظاہر ہے ان آیات کے ہوتے ہوئے محمدؐ 2½ فیصد کیسے مقرر کر دیتے کیا وہ اللہ کے حکم کے بغیر کوئی بات اپنی طرف سے کہتے تھے؟ ایسا تو ان کے بارے میں سوچنا ہی گناہ ہے اس لئے زکوٰۃ کا مسئلہ اپنی جگہ پر بڑا صاف اور سیدھا ہے اگر اس پر عمل کیا جاتا تو کمیونیزم کا وجود ہی نہ ہوتا۔ اور اسلام کا ہی غلبہ رہتا کمیونیزم تو لوگوں نے مجبوری میں رائج کیا جب ان کی ضرورت پوری نہ ہوئی اور دوسری طرف امیر لوگ مزے کر رہے ہیں انہوں نے اسلام کے اصولوں کو توڑ مڑوڑ کر اپنی من مانی کر لی ہے اور بہت سی قید لگا دی ہیں۔

ان سے مجبور ہو کر انہوں نے کمیونیزم قائم کیا۔ حالانکہ اب کمیونیزم بھی ساتھ نہیں دے پا رہا ساتھ دینے کے لئے صرف اسلام ہی ہے اگر اس پر صحیح عمل کیا جائے اور وہ یہ کہ ہر آدمی کی ضرورت کو پورا کرنا چاہئے وہ مستقل 20% سے پوری ہو یا اور آگے اٹھ کر ہنگامی حالات کے تحت بجٹ کی کمی کو پورا کرنے کے لئے صدقات دینا ہو اور اس کا طریقہ بھی ہے یعنی ہر حکومت کی آمدنی اور خرچ کی مد ہوتی ہیں ان کی کمی بیشی سے ہر سال ٹیکس لگتا ہے یا چھوٹ دی جاتی ہے ایسے ہی اسلام نے قاعدہ بتایا ہے اور اس میں کوئی تبدیلی نہ ہوگی۔ اور محمدؐ نے بھی قرآن پر عمل کیا ہے اور یہی قرآن دیا ہے اور اس کے خلاف سے روکا ہے اس لئے ہم کو بھی یہی راہ اختیار کرنی چاہیے اگر ہم یہ راہ اختیار کرتے ہیں تو ساری پریشانیاں دور ہو جائیں گی ورنہ نہیں۔

مثال کے طور پر ایک آدمی مالدار ہے اور اس کے پاس کچھ غریب آدمی رہتے ہیں وہ مالدار آدمی ان کا خیال نہیں رکھتا اور ہو سکتا ہے کہ اس غریب نے کھانا نہ کھایا ہو تو ایسی حالت میں اس کو نیند نہیں آئے گی اور وہ کچھ سوچنے پر مجبور ہوگا وہ یہ کہ میں اپنا اور اپنے بچوں کا پیٹ کیسے بھروں۔ ہو سکتا ہے اس کے سامنے وہ مالدار آدمی ہی آ جائے اور وہ اس کے گھر پر ہی کچھ اور بھوکے آدمیوں کے ساتھ حملہ کر دے اور فساد ہو جائے اس کے برعکس اگر وہ مالدار آدمی ان کا خیال رکھتا تو وہ بھوکے نہ رہتے اور پیٹ بھرنے پر وہ رات کو سوتے بھی اور کسی وقت ضرورت پڑنے پر اس مالدار آدمی کے لئے مددگار بھی ثابت ہوتے اور ہر خطرے کو اپنے اوپر لیتے تو اس حالت میں وہ مالدار آدمی محفوظ رہتا۔ اس لئے جو احکام اللہ نے اپنے نبی کے ذریعہ دئے ہیں وہ بہت اچھے ہیں ان پر عمل ہونا چاہئے یہی اسلام ہے اور سب باطل ہے۔

آیت میں ہے کہ اس دن اپنے بندے پر نازل فرمائی۔ تو یہ اللہ کی مدد اور تسکین تھی جس کو یہ کہہ کر بتایا گیا ہے کہ اگر تم ثابت قدم رہے تو ہم تمہاری مدد فرشتوں کے ذریعہ کریں گے اور مدد تو سب کی سب اللہ ہی کی ہوتی ہے۔

یاد کرو وہ وقت جب کہ تم وادی کے اس جانب تھے اور وہ دوسرے کنارے پر پڑاؤ ڈالے ہوئے تھے اور قافلہ تم سے نیچے (ساحل) کی طرف تھا اگر کہیں پہلے سے تمہارے اور ان کے درمیان مقابلہ کی قرارداد ہو چکی ہوتی تو تم ضرور اس موقع پر پہلو تہی کر جاتے لیکن جو کچھ پیش آیا وہ اس

का निर्णय ईश्वर कर चुका था उसे प्रकट कर दे ताकि जिसे वध होना है वह उज्ज्वल प्रमाण के साथ वध हो और जिसे जीवित रहना हो वह उज्ज्वल प्रमाण के साथ जीवित रहे निःसन्देह ईश्वर सुनने वाला और जानने वाला है (42)

और याद करो वह समय जबकि ऐ नबी ईश्वर उनको तुम्हारे स्वपन में कम दिखा रहा था और यदि बहुत करके दिखाता तो तुम लोग जी छोड़ देते और (जो) काम (उपस्थित था उस) में झगड़ने लगते, परन्तु ईश्वर ने बचा लिया, निःसन्देह वह वक्षों की बातों तक से अवगत है (43)

और उस समय जब तुम एक दूसरे के आमने सामने हुए तो शत्रु तुम्हारी दृष्टि में थोड़े दीख रहे थे और तुम उनके लिए थोड़े दीख रहे थे, यह इसलिए हो रहा था कि ईश्वर को जो कार्य करना था वह हो जाए और सब कामों का प्रत्यागमन ईश्वर ही की ओर है (44)

आस्तिको! जब किसी दल से तुम्हारा आमना सामना हो तो धैर्यवान रहो और ईश्वर को बहुत याद करो ताकि सफलता प्राप्त करो (45)

और ईश्वर और रसूल के आदेश पर चलो और आपस में झगड़ा न करो (ऐसा करोगे तो) तुम कायर हो जाओगे और तुम्हारा प्रताप जाता रहेगा, और धैर्य से काम लो कि ईश्वर धैर्य करने वालों का सहायक है (46)

और उन लोगों की भांति न हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए निकले और लोगों के सामने (अपनी झूठी वरिताका) प्रदर्शन करते हुए निकले और लोगों को ईश्वर के सत्य मार्ग से रोकते हैं और जो कर्म वह कर रहे हैं ईश्वर उन पर परिक्रमा किए हुए है (47)

और जब शैतान ने उनके कर्म उनको सुन्दर कर दिखाए और कहा कि आज के दिन लोगों में कोई तुम पर अधिपति न होगा और मैं तुम्हारा मित्र हूं (परन्तु) जब दोनों सेनाएं एक दूसरे के आमने सामने हुई तो पीठ फैर कर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कोई सम्बन्ध नहीं मैं तो ऐसी वस्तुऐं देख रहा हूं जो तुम नहीं देख सकते मुझे ईश्वर से भय लगता है और ईश्वर कठोर दण्ड करने वाला है (48)

उस समय कपटी जिनके मनों में रोग था कहने लगे कि उन लोगों को उनके धर्म ने घमण्डी कर रखा है और जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखता है तो ईश्वर अधिपति युक्ति वाला है (49)

और काश तुम उस समय देखो जब फरिश्ते विरोधियों की जानें निकालते हैं उनके मुखों और पीठों पर मारते हैं और कहते हैं कि दण्ड अग्नि का स्वाद चखना (50)

यह उन कर्मों का दण्ड है जो तुम्हारे हाथों ने (अर्थात तुम ने) आगे भेजे हैं और यह जान रखो

لئے تھا کہ جس بات کا فیصلہ اللہ کر چکا تھا اسے ظہور میں لے آئے تا کہ جسے ہلاک ہونا ہے وہ دلیل روشن کے ساتھ ہلاک ہو اور جسے زندہ رہنا ہو وہ دلیل روشن کے ساتھ زندہ رہے یقیناً اللہ سننے اور جاننے والا ہے(۴۲)

اور یاد کرو وہ وقت جب کہ اے نبی اللہ ان کو تمہارے خواب میں تھوڑا دکھا رہا تھا۔اور اگر بہت کر کے دکھاتا تو تم لوگ جی چھوڑ دیتے اور (جو) کام (درپیش تھا اس) میں جھگڑنے لگتے۔لیکن اللہ نے بچالیا بے شک وہ سینوں کی باتوں تک سے واقف ہے(۴۳)

اور اس وقت جب تم ایک دوسرے کے مقابل ہوئے تو دشمن تمہاری نظر میں تھوڑے دکھ رہے تھے اور تم ان کے لئے تھوڑے نظر آ رہے تھے یہ اس لئے ہو رہا تھا کہ اللہ کو جو کام کرنا تھا وہ ہو جائے اور سب کاموں کا رجوع اللہ ہی کی طرف ہے(۴۴)

مومنو! جب کسی جماعت سے تمہارا مقابلہ ہو تو ثابت قدم رہو اور اللہ کو بہت یاد کرو تا کہ مراد حاصل کرو(۴۵)

اور اللہ اور رسول کے حکم پر چلو اور آپس میں جھگڑا نہ کرو کہ (ایسا کرو گے تو) تم بزدل ہو جاؤ گے اور تمہارا اقبال جاتا رہے گا اور صبر سے کام لو کہ اللہ صبر کرنے والوں کا مددگار ہے(۴۶)

اور ان لوگوں کی طرح نہ ہو جانا جو اپنے گھروں سے اتراتے ہوئے نکلے اور لوگوں کے سامنے (اپنی جھوٹی بہادری کی) نمائش کرتے ہوئے نکلے اور لوگوں کو اللہ کی راہ سے روکتے ہیں اور جو اعمال وہ کر رہے ہیں اللہ ان پر احاطہ کئے ہوئے ہے(۴۷)

اور جب شیطان نے ان کے اعمال ان کو خوش نما کر دکھائے اور کہا کہ آج کے دن لوگوں میں کوئی تم پر غالب نہ ہوگا اور میں تمہارا رفیق ہوں (لیکن) جب دونوں فوجیں ایک دوسرے کے مقابل ہوئیں تو پسپا ہو کر چل دیا۔اور کہنے لگا کہ مجھے تم سے کوئی واسطہ نہیں میں تو ایسی چیزیں دیکھ رہا ہوں جو تم نہیں دیکھ سکتے مجھے اللہ سے ڈر لگتا ہے اور اللہ سخت عذاب کرنے والا (۴۸)

اس وقت منافق جن کے دلوں میں مرض تھا کہنے لگے کہ ان لوگوں کو ان کے دین نے مغرور کر رکھا ہے اور جو شخص اللہ پر بھروسہ رکھتا ہے تو اللہ غالب حکمت والا ہے(۴۹)

اور کاش تم اس وقت دیکھو جب فرشتے منکروں کی جانیں نکالتے ہیں ان کے مونہوں اور پیٹھوں پر مارتے ہیں اور کہتے ہیں کہ عذاب آتش کا مزہ چکھنا(۵۰)

یہ ان (اعمال) کی سزا ہے جو تمہارے ہاتھوں نے (یعنی تم نے) آگے بھیجے ہیں اور یہ (جان رکھو) کہ اللہ بندوں پر ظلم نہیں کرتا(۵۱)

جیسا حال فرعونیوں اور ان سے پہلے لوگوں کا (ہوا تھا ویسا

कि ईश्वर बन्दों पर अन्याय नही करता (51)
जैसी दशा फ़िरऔनियों और उनसे पहले लोगों की हुई थी वैसी ही उनकी हुई कि) उन्होंने ईश्वर की आयतों से विरोध किया तो ईश्वर ने उनके पापों के दण्ड में उनको पकड़ लिया निःसन्देह ईश्वर शक्ति शाली कठोर दण्ड देने वाला है (52)
यह इसलिए कि जो प्रसाद ईश्वर किसी जाति को दिया करता है जब तक वह स्वयं अपने मनों की दशा न बदल डाले ईश्वर उसे नही बदला करता और इसलिए कि ईश्वर सुनता जानता है (53)
जैसी स्थिति फ़िरऔनियों और उनसे पहले लोगों की हुई थी उन्होंने अपने ईश्वर की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के कारण बध कर डाला और फ़िरऔनियों को तल्लीन कर डाला वह सब अत्याचारी थे (54)
ईश्वर के निकट बुरे जानवर वह इन्सान है जिन्होंने कुफ़्र का मार्ग गृहण कर रखा है वह लोग कदापि आस्था नही लाऐंगे (55) {10:100;7:179}
(ऐ रसूल!) उनमें से जिन लोगों से तुमने वचन किया परन्तु वह बार-बार अपने वचन को तोड़ते हैं और ईश्वर से नही डरते (56)
यदि तुम उनको युद्ध में पाओ तो उन्हें ऐसा दण्ड दो कि जो लोग उनके पीछे चल रहे हैं वह उनको देखकर भाग जाएं विचित्र नहीं कि उनको शिक्षा हो (57)
और यदि तुमको किसी जाति से कपट का भय हो तो (उन का वचन) उन्ही की ओर फैंक दो बराबर (का उत्तर दो) कुछ शंका नही कि ईश्वर कपटियों को मित्र नही रखता (58)
और नास्तिक यह विचार न करें कि वह सफल हो गए वह कभी (अपनी चालों से धर्म वादियों को) विवश नही कर सकते (59)
और तुम लोग जहां तक तुम्हारा वश चले अधिक से अधिक शक्ति और तैयार बन्धे रहने वाले घोड़े उन शत्रुओं की मुठभेड़ के लिए प्रस्तुत रखो ताकि उसके द्वारा ईश्वर के और अपने शत्रुओं को और उन दूसरे शत्रुओं को भयभीत कर दो जिन्हें तुम नही जानते परन्तु ईश्वर जानता है और ईश्वर के मार्ग में जो कुछ तुम व्यय करोगे उसका पूरा पूरा बदला तुम्हारी ओर पलटा दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कदापि अन्याय न होगा (60)
और यदि वह लोग संधि की ओर आकृष्ट हो तो तुम भी उसकी ओर आकृष्ट हो जाओ और ईश्वर पर विश्वास रखो कुछ शंका नही कि वह सब कुछ सुनता और जानता है (61) {47:35}
और यदि वह चाहें कि तुम को धोका दें तो ईश्वर तुम को प्रयाप्त है वही तो है जिसने तुम को अपनी सहायता से और मुसलमानों से शक्ति दी (62) {9:40}
और उनके मनों में प्रेम उत्पन्न कर दिया और यदि

ہی ان کا ہوا کہ)انہوں نے اللہ کی آیتوں سے کفر کیا تو اللہ نے ان کے گناہوں کی سزا میں ان کو پکڑ لیا بے شک اللہ زبردست سخت عذاب دینے والا ہے(۵۲)
یہ اس لئے کہ جو نعمت اللہ کسی قوم کو دیا کرتا ہے جب تک وہ خود اپنے دلوں کی حالت نہ بدل ڈالیں اللہ اسے نہیں بدلا کرتا اور اس لئے کہ اللہ سنتا جانتا ہے(۵۳)
جیسا حال فرعونیوں اور ان سے پہلے لوگوں کا ہوا تھا انہوں نے اپنے رب کی آیتوں کو جھٹلایا تو ہم نے ان کے گناہوں کے سبب ہلاک کر ڈالا اور فرعونیوں کو ڈبو ڈالا اور وہ سب ظالم تھے(۵۴)
اللہ کے نزدیک بدترین جانور وہ انسان ہیں جنہوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ لوگ ہرگز ایمان نہیں لائیں گے(۵۵)[۱۰:۱۰۰;۷:۱۷۹]
(اے رسول!) ان میں سے جن لوگوں سے تم نے عہدو پیان کیا مگر وہ بار بار اپنے عہد کو توڑتے ہیں اور اللہ سے نہیں ڈرتے(۵۶)
اگر تم ان کو لڑائی میں پاؤ تو انہیں ایسی سزا دو کہ جو لوگ ان کے پیچھے چل رہے ہوں وہ ان کو دیکھ کر بھاگ جائیں عجب نہیں کہ ان کو عبرت ہو(۵۷)
اور اگر تم کو کسی قوم سے دغا بازی کا خوف ہو تو (ان کا عہد) انہیں کی طرف پھینک دو برابر (کا جواب دو) کچھ شک نہیں کہ اللہ دغابازوں کو دوست نہیں رکھتا(۵۸)
اور کافر یہ خیال نہ کریں کہ وہ بازی لے گئے وہ کبھی (اپنی چالوں سے ایمان والوں کو) عاجز نہ کر سکیں گے(۵۹)
اور تم لوگ جہاں تک تمہارا بس چلے زیادہ سے زیادہ طاقت اور تیار بندھے رہنے والے گھوڑے ان دشمنوں کے مقابلہ کے لئے مہیا رکھو تا کہ اس کے ذریعہ سے اللہ کے اور اپنے دشمنوں کو اور ان دوسرے دشمنوں کو خوف زدہ کر دو جنہیں تم نہیں جانتے مگر اللہ جانتا ہے اور اللہ کی راہ میں جو کچھ تم خرچ کرو گے اس کا پورا پورا بدل تمہاری طرف پلٹایا جائے گا اور تمہارے ساتھ ہرگز ظلم نہ ہوگا(۶۰)
اور اگر وہ لوگ صلح کی طرف مائل ہوں تو تم بھی اس کی طرف مائل ہو جاؤ اور اللہ پر بھروسہ رکھو۔ کچھ شک نہیں کہ وہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے(۶۱)[۴۷:۳۵]
اور اگر وہ چاہیں کہ تم کو فریب دیں تو اللہ تم کو کفایت کرے گا وہی تو ہے جس نے تم کو اپنی مدد سے اور مسلمانوں سے تقویت دی(۶۲)[۹:۴۰]
اور ان کے دلوں میں الفت پیدا کردی۔ اور اگر تم دنیا بھر کی دولت خرچ کرتے تب بھی ان کے دلوں میں الفت پیدا

तुम दुनिया भर का धन व्यय करते तब भी उनके हृदयों में प्रेम उत्पन न कर सकते थे परन्तु ईश्वर ही ने उनमें प्रेम डाल दिया निःसन्देह वह शक्ति शाली (और) युक्ति वाला है (63)
ऐ नबी! ईश्वर की सहायता तेरे लिए और उन लोगों के लिए जो तेरा अनुकरण कर रहे हैं प्रयाप्त है (64)
ऐ नबी मुसलमानों को युद्ध के लिए तत्पर करो यदि तुम में बीस व्यक्ति धैर्यवान रहने वाले होंगे तो दो सौ विरोधियों पर अधिकार प्राप्त रहेंगे और यदि सौ (ऐसे) होंगे तो हजार पर प्रभुत्वशाली रहेंगे इसलिए कि सत्य का विरोध करने वाले ऐसे लोग हैं कि कुछ भी समक्ष नही रखते (65)
अच्छा अब ईश्वर ने तुम्हारा भार हल्का किया और उसे ज्ञात था कि अभी तुम में निर्बलता है पस यदि तुम में से सौ धैर्य वान हो तो वह दो सौ पर और हजार आदमी ऐसे हो तो वह दो हजार पर ईश्वर के आदेश से नियम से अधिपति होंगे और उन लोगों के साथ ईश्वर है जो धैर्यवान है (66)

نہ کر سکتے تھے مگر اللہ ہی نے ان میں الفت ڈال دی بے شک وہ زبردست (اور) حکمت والا ہے (۶۳)
اے نبی! اللہ کی مدد تیرے لئے اور ان لوگوں کے لئے جو تیری پیروی کررہے ہیں کافی ہے (۶۴)
اے نبی مسلمانوں کو جنگ کے لئے آمادہ کرو اگر تم میں بیس آدمی ثابت قدم رہنے والے ہوں گے تو دوسو منکروں پر غالب رہیں گے. اور اگر سو (ایسے) ہوں گے تو ہزار پر غالب رہیں گے. اس لئے کہ منکر حق ایسے لوگ ہیں کہ کچھ بھی سمجھ نہیں رکھتے (۶۵)
اچھا اب اللہ نے تمہارا بوجھ ہلکا کیا اور اسے معلوم تھا کہ ابھی تم میں کمزوری ہے پس اگر تم میں سے سو صابر ہوں تو وہ دوسو پر اور ہزار آدمی ایسے ہوں تو وہ دو ہزار پر اللہ کے حکم سے قانون سے غالب آئیں گے اور اللہ ان لوگوں کے ساتھ ہے جو صبر کرنے والے ہیں (۶۶)

नोट- धारा 8:65 में ईश्वर स्पष्ट कर रहा हूं कि बीस आस्था वाले दो सौ विरोधियों पर भारी रहेंगे अर्थात एक और दस का अनुपात है परन्तु बाद में 8:66 में कमी की यह कहकर कि अभी तुम में निर्बलता है अतः सो आदमी दो सौ पर भारी रहेंगे अर्थात एक और दो का अनुपात है, इससे यह सिद्ध हो रहा है कि उस समय मुसलमानों की शक्ति धन व शस्त्र इत्यादि से बलहीन थी, अतः यह कमी की गई परन्तु आदेश पहला ही शेष रहेगा, ईश्वर यह चाहता है कि आस्तिको! जो निर्बलता तुम में इस समय है उसको शीघ्र से शीघ्र दूर कर लो तुम्हारे अन्दर इतनी शक्ति होनी चाहिए और तुम्हारे शस्त्र इतने नवीन होने चाहिए कि तुम्हारे एक आदमी के सामने दस शत्रु आते भी भयभीत हो और यह तब ही होगा जब तुम आयात (8:60) के अनुसार अपने पास हर समय आवश्यकता के अनुसार शस्त्र रखो,

दुनिया में यदि बन्दूक की आवश्यकता हो तो वह पहले तेरे हाथ में हो, यदि राकेट की आवश्यकता हो तो वह तेरे पास हो यदि परमाणु बम की आवश्यकता हो तो वह ऐ आस्तिक तेरे पास हो तात्पर्य यह है कि सैनिक शक्ति तेरे पास सबसे अच्छी हो तब ही तेरा एक आदमी दस पर भारी होगा, मगर दुख है कि आज पूरी दुनिया में देखिए कही भी कोई भी मुस्लिम राज्य पूरा नही उतरता, इसके विपरीत यह हो रहा है कि एक छोटा सा देश इसराईल अपने से सौ गुना शक्ति पर अधिपति है तो क्या ईश्वर की इच्छा यही है, कदापि नही, ईश्वर की सहायता आस्तिक के साथ है जो ईश्वर के बताए हुए नियमानुसार कर्म करे इसराईल या अमरिका या दूसरे राज्यों ने 8:60 के अनुसार कर्म किया तो वह इस उद्देश्य में सफल है और जो भी करेगा वह सफल रहेगा, परन्तु मुस्लिम जाति ने हर पग पर ईश्वर की अवज्ञा की, जैसे कभी बनी इसराईल ने की थी, उस पर हीनता, निर्धनता और दरिद्रता छा गई थी, जिससे वह दास पराधीन हो गए थे, आज यही स्थिति इस मुस्लिम जाति की है यदि आज भी कुरआन पर क्रिया हो तो वही बात सामने आएगी जो ईश्वर चाहता है अर्थात एक और दस यह तो एक उपमा दी है धैर्यवान आस्तिक तो एक भी बहुत शत्रुओं पर भारी है जैसा इतिहास में मिलता है कि श्रीमान खालिद र० ने साठ आस्तिकों से साठ हजार शत्रुओं को युद्ध क्षेत्र से भगाया था और शत्रु हीन होकर भागे थे,

نوٹ:۔ آیت (۸:۶۵) میں اللہ ظاہر کررہا ہوں کہ قانون یہ ہے کہ بیس ایمان والے دوسو منکروں پر بھاری رہیں گے یعنی ایک اور دس کی نسبت ہے لیکن بعد میں (۸:۶۶) میں کمی کی یہ کہہ کر کہ ابھی تم میں کمزوری ہے اس لئے سو آدمی دوسو پر غالب رہیں یعنی ایک اور دو کی نسبت ہے. اس سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ اس وقت مسلمانوں کی طاقت دولت وہتھیار وغیرہ سے کمزور تھی اس لئے یہ تخفیف کی گئی مگر حکم پہلا ہی باقی رہے گا. اللہ یہ چاہتا ہے کہ مومنوں جو کمزوری تم میں اس وقت ہے اس کو جلد سے جلد دور کرلو تمہارے اندر اتنی طاقت ہونی چاہیے اور تمہارے ہتھیار اتنے جدید ہونے چاہیے کہ تمہارے ایک آدمی کے مقابلہ میں دس دشمن آتے بھی گھبرائیں. اور یہ تب ہی ہوگا جب تم آیت (۸:۶۰) کے مطابق اپنے پاس ہر وقت ضرورت کے مطابق ہتھیار رکھو.

دنیا میں اگر بندوق کی ضرورت ہو تو وہ پہلے تیرے ہاتھ میں ہو. اگر راکٹ کی ضرورت ہو تو وہ تیرے پاس ہو. اگر ایٹم بم کی ضرورت ہو تو اے مومن وہ تیرے پاس ہو. غرض یہ ہے کہ فوجی طاقت تیرے پاس سب سے اچھی ہو تب ہی تیرا ایک آدمی دس پر غالب ہوگا. مگر افسوس آج پوری دنیا میں دیکھئے کہیں بھی کوئی بھی مسلم حکومت پوری نہیں اترتی. اس کے خلاف یہ ہو رہا ہے کہ ایک چھوٹا سا ملک اسرائیل اپنے سے سوگنا طاقت پر غالب ہے تو کیا اللہ کی منشا یہی ہے؟ ہرگز نہیں اللہ کی مدد مومن کے ساتھ ہے جو اللہ کے بتائے ہوئے قانون کے مطابق عمل کرے. اسرائیل یا امریکہ یا دوسرے ممالک نے (۸:۶۰) کے مطابق عمل کیا تو اس مقصد میں کامیاب ہیں اور جو بھی کرے گا وہ کامیاب رہے گا. مگر مسلم قوم نے ہر قدم پر اللہ کی نافرمانی کی. جیسے کبھی بنی اسرائیل نے کی تھی. اس پر ذلت ومسکنت محتاجی طاری ہوگئی تھی جس سے وہ غلام ہو گئے تھے. آج یہی حالت اس مسلم قوم کی ہے. اگر آج بھی قرآن پر عمل ہو تو وہی بات سامنے آئے گی جو اللہ چاہتا ہے یعنی ایک اور دس یہ تو ایک مثال دی ہے صابر مومن تو ایک بھی کافی دشمنوں پر بھاری ہے. جیسا تاریخ میں ملتا ہے کہ حضرت خالدؓ نے ساٹھ مومنوں سے ساٹھ ہزار دشمنوں کو میدان جنگ سے بھگا دیا تھا. دشمن ذلیل ہو کر بھاگے تھے

आज यह स्थिति इस मुस्लिम जाति की क्यों है? इसका केवल एक ही कारण है वह यह कि इसने कुरआन को छोड़ दिया, कुरआन में धर्म पूर्ण है कोई कमी नही, परन्तु इस जाति ने पूर्ण धर्म में इजतिहाद करके पृथक पृथक दल बना लिए और अनेकेश्वर वादी हो गए (30:32;6:160;4:152) जबकि पूर्ण धर्म में इजतिहाद की आवश्यकता नही धर्म तो पूर्ण है जहां इजतिहाज की आवश्यकता है वहां यह न कर सका अर्थात आयत (60, 65, 69) के अनुसार सैनिक शक्ति प्रस्तुत करना और जाति को संयुक्त रखना जो ईश्वर कहता है कि रस्सी को बलिष्ट पकड़ो मतभेद न करो अन्यथा तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी, और आज इस जाति का सम्मान समाप्त हो गया है, इसका स्पष्ट अर्थ है कि हमने ईश्वर की अवज्ञा की है, ईश्वर अपनी दया करे और हम को बुद्धि से काम लेने की क्षमता दे आयत (3:200) में शब्द (राबितू) भी हमको यह शिक्षा दे रहा है,

यह तो रहा मुस्लिम देश के विषय में यदि मुसलमान किसी गैर इस्लामी देश में रहता है और वहां उसको बराबर के अधिकार है कोई व्याकुलता नही और दूसरे तथाकथित मुस्लिम देश ईश्वर के आदेश की अवहेलना कर रहे है अर्थात अशान्ति कर रहे है तथा कथित जहाद के नाम पर तो ऐसी स्थिति में प्रजातन्त्र देश में रहने वाले मुसलमान को अपनी क्षमता पूरी की पूरी अपने प्रजातन्त्र देश के लिए अर्पण कर देनी है जिसमें वह रहता है और हर प्रकार से सैनिक सामग्री बनोनमें सहायता करनी है जैसे आज कल अपने भारत में जनाब अब्दुल कलाम साहब या मतीन ज़ुबैरी साहब कर रहे है या जैसे अब्दुल हमीद साहब, उस्मान साहब इत्यादि ने किया था,

यही देश की सेवा है इसके विपरीत यदि हमने देश का विरोध किया देश के विरुद्ध जासूसी की देश में अशान्ति की तो देश बलहीन हो जाएगा तो हमारा सम्मान भी नष्ट होगा, अतः अपनी पूरी क्षमता से अपने देश की सेवा करनी है, यही ईश्वर का आदेश है यदि ईश्वर के आदेश की अवहेलना की तो हम कैसे मुसलमान है, हमारा धर्म तब ही पूर्ण है जब हम अपने देश बन्धुओं के साथ रहकर काम करें भले ही देश के कुछ सरफिरे आदमी हम को विद्रोही मान रहे हो, हमको अपने देश प्रेम का प्रमाण अपने व्यवहार से देना है, हमारे इस व्यवहार को देखकर वह सरफिरे आदमी स्वयं ही हमारा लोहा मान लेंगे, यदि वह न भी मानें तब भी कोई अन्तर नही, दूसरे न्यायी व्यक्ति अवश्य उनको सचेत करेंगे और हमारे साथ होंगे,

मैं अपने भारत के शासकों से एक निवेदन करना चाहता हूं, वह यह कि आज दुनिया में केवल एक ही शक्ति सर्व श्रेष्ट है वह है अमरिका, अमरिका पूरे संसार को अपना दास बनाना चाहता है जिसके लिए उसने अपना कार्य आरम्भ कर रखा है और कर रहा है, वह यह भी चाहेगा कि भारत को भी परास्त कर दे और उसने अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमारे देश में आतंकवाद करा रखा है उसका माप दोहरा है, अतः भारत को उससे सावधान रहना है और अपने पास हर प्रकार का सैनिक सामान प्रस्तुत करना है चाहे वह परमाणु बम हो या राकेट मीजाईल हो, यह सब समय आने से पहले ही हमारे पास होना चाहिए और इस काम को पूरा करने के लिए अभी जनाब अब्दुल कलाम और उन जैसे निपुण आदमी जीवित है और उनका साथ देने के लिए और भी बहत है, और श्री अटल बिहारी वाजपई साहब प्रधानमंत्री की प्रशन्सा भी करनी होगी कि उन्होंने जनाब अब्दुल कलाम साहब की सेवाओं को देखकर उनका सम्मान किया, अर्थात देश का राष्ट्रपति बना दिया, यह बाजपई साहब का कार्य प्रशंसा योग्य है

آج یہ حالت اس مسلم قوم کی کیوں ہے؟ اس کی صرف ایک ہی وجہ ہے وہ یہ کہ اس نے قرآن کو چھوڑ دیا قرآن میں دین مکمل ہے کوئی کمی نہیں مگر اس قوم نے مکمل دین میں اجتہاد کر کے الگ الگ فرقے بنالئے اور مشرک ہو گئے (۳۰:۳۲،۶:۱۶۰،۴:۱۵۲) جب کہ مکمل دین میں اجتہاد کی ضرورت نہیں دین تو مکمل ہے۔ جہاں اجتہاد کی ضرورت ہے وہاں یہ نہ کرسکا یعنی آیت (۶۰، ۶۵، ۶۹) کے مطابق فوجی طاقت مہیا کرنا اور قوم کو ایک جگہ متحد رکھنا۔ جو اللہ کہتا ہے کہ رسی کو مضبوط پکڑلو اختلاف نہ کرو ورنہ تمہاری ہوا اکھڑ جائے گی۔ اور آج اس قوم کی ہوا اکھڑی ہوئی ہے اس کا صاف مطلب ہے کہ ہم نے اللہ کی نافرمانی کی ہے۔ اللہ اپنا رحم کرے۔ اور ہم کو عقل سے کام لینے کی توفیق دے آیت (۳:۲۰۰) میں لفظ 'رابطو' بھی ہم کو یہی سبق دے رہا ہے۔

یہ تو رہا مسلم ملک کے بارے میں اگر مسلمان کسی غیر اسلامی ملک میں رہتا ہے اور وہاں اس کو برابر کے حقوق ہیں کوئی پریشانی نہیں اور دوسرے نام نہاد مسلم ملک اللہ کے حکم کی خلاف ورزی کر رہے ہیں یعنی فساد پیدا کر رہے ہیں نام نہاد جہاد کے نام پر تو ایسی حالت میں جمہوری ملک میں رہنے والے مسلمان کو اپنی صلاحیت پوری کی پوری اپنے جمہوری ملک کے لئے وقف کردینی ہے جس میں وہ رہتا ہے اور ہر طرح سے فوجی ساز و سامان بنانے میں مدد کرتی ہے جیسے آج کل اپنے بھارت میں جناب عبدالکلام صاحب یا متین زبیری صاحب کررہے ہیں۔ یا جیسے عبدالحمید صاحب، عثمان صاحب وغیرہ نے کیا تھا۔

یہی ملک کی خدمت ہے اس کے خلاف اگر ہم نے ملک کی مخالفت کی ملک کے خلاف جاسوسی کی ملک میں فساد کیا تو ملک کمزور ہو جائے گا تو ہماری عزت بھی خراب ہوگی اس لئے اپنی پوری طاقت سے اپنے ملک کی خدمت کرنی ہے۔ یہی اللہ کا حکم ہے اگر اللہ کے حکم کی خلاف ورزی کی تو ہم کیسے مسلمان ہیں۔ ہمارا ایمان تب ہی مکمل ہے جب ہم اپنے برادران وطن کے ساتھ رہ کر کام کریں بھلے ہی ملک کے کچھ غدار سرپھرے آدمی ہم کو غدار مان رہے ہوں۔ ہم کو اپنی حب الوطنی کا ثبوت اپنے عمل سے دینا ہے۔ ہمارے اس عمل کو دیکھ کر وہ سرپھرے آدمی خود ہی ہمارا لوہا مان لیں گے۔ اگر وہ نہ بھی مانیں تب بھی کوئی فرق نہیں دوسرے ایماندار آدمی ضروران کو متنبہ کریں گے۔ اور ہمارے ساتھ ہوں گے۔

میں اپنے بھارت کے سربراہوں سے ایک عرض کرنا چاہتا ہوں وہ یہ کہ آج دنیا میں صرف ایک ہی طاقت سپر ہے وہ ہے امریکہ۔ امریکہ پوری دنیا کو اپنا غلام بنانا چاہتا ہے جس کے لئے اس نے اپنا کام شروع کر رکھا ہے اور کر رہا ہے۔ وہ یہ بھی چاہے گا کہ بھارت کو بھی زیر کر لے۔ اور اس نے اپنے اس مقصد کو پورا کرنے کے لئے ہمارے ملک میں دہشت گردی کرا رکھی ہے۔ اس کا پیمانہ دہرا ہے اس لئے بھارت کو اس سے ہوشیار رہنا ہے۔ اور اپنے پاس ہر طرح کا فوجی سامان مہیا کرنا ہے۔ چاہے وہ ایٹم بم ہو یا راکٹ میزائل ہو۔ یہ سب وقت آنے سے پہلے ہی ہمارے پاس ہونا چاہیے۔ اور اس کام کو پورا کرنے کے لئے ابھی جناب عبدالکلام اور ان جیسے ہوشیار آدمی زندہ ہیں اور ان کا ساتھ دینے کے لئے اور بھی بہت ہیں۔ اور جناب اٹل بہاری باجپئی صاحب وزیراعظم کی تعریف بھی کرنی ہوگی کہ انہوں نے جناب عبدالکلام کی خدمات کو دیکھ کر ان کی عزت افزائی کی یعنی ملک کا صدر بنا دیا۔ یہ باجپئی صاحب کا کام قابل تعریف ہے اور وہ بہت

और वह बहुत अच्छी क्षमताओं के स्वामी है.

इन कार्यों के साथ हमको यह भी करना है कि हर एक का सम्मान करें किसी पर मिथ्या आरोप न लगाऐं यदि कोई किसी पर आरोप आता है तो पहले उसकी छान-बीन करें सिद्ध होने पर उसको दण्ड दें परन्तु किसी निर्दोष को केवल जाति धर्म के आधार पर शंका के घैरे में लाकर दण्ड न दें इससे देश बलहीन होगा. मुझे आशा है कि इस अनुरोध पर विचार होगा.

اچھی صلاحیتوں کے مالک ہیں.

ان کاموں کے ساتھ ہم کو یہ بھی کرنا ہے کہ ہرایک کی قدر کریں کسی پر غلط الزام نہ لگائیں اگر کوئی کسی پر الزام آتا ہے تو پہلے اس کی چھان بین کریں ثابت ہونے پر اس کو سزادیں لیکن کسی بے قصور کو صرف قومیت دھرم کی بنا پر شک کے گھیرے میں لاکر سزا نہ دیں اس سے ملک کمزور ہوگا مجھے امید ہے کہ اس اپیل پر غور ہوگا.

यहां तक कि जब पृथ्वी में शत्रु परास्त व बलहीन हो जाएं और वह अपनी विरोधी गति विधियों से रुक जाएं और शान्ति स्थापित करने का उद्देश्य पूरा हो जाए तो फिर नबी के लिए यह उचित नही है कि उसके पास बन्दी रहें उनको मुक्त करना है. क्या बन्दियों को अपने पास रख कर तुम दुनिया के लाभ चाहते हो यद्यपि ईश्वर की दृष्टि में परलोक है और ईश्वर अधिपति और ज्ञानी है (68) {4:47}

یہاں تک کہ جب زمین میں دشمن مغلوب وکمزور ہو جائیں اوروہ اپنی مخالفانہ کارروائیوں سے رُک جائیں اور امن قائم کرنے کا مقصد پورا ہوجائے تو پھر نبی کے لئے یہ لائق نہیں ہے کہ اس کے پاس قیدی رہیں ان کو چھوڑنا ہے کیا قیدیوں کو اپنے پاس رکھ کر تم دنیا کے فائدے چاہتے ہو حالانکہ اللہ کے پیش نظر آخرت ہےاور اللہ غالب اور حکیم ہے (٦٧)[٤:٤٧]

यदि ईश्वर का आदेश पहले से न होता तो जो तुम ने लिया है उसके बदले तुमको बड़ा दण्ड देता. (59) {3:161}

اگر اللہ کا حکم پہلے سے نہ ہوتا جو تم نے لیا ہے اس کے بدلے تم پر بڑا عذاب ہوتا (٦٨)[٣:١٦١]

तो जो माल परिहार अर्थात निश्चित करने वाला माल किसी भी खाते से तुम्हें मिला है (अर्थात जो शत्रु छोड़ कर भाग गया या बन्दियों से प्राण मूल्य या किसी कार्य से कमाया) उसे खाओ वह वैध और पवित्र है (परन्तु लूट-खसोट नही जैसे अत्याचारी लोग करते है तुम मुस्लिम हो क्षमा से काम लो) और ईश्वर से डरते रहो निःसंदेह ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (69) {8:41}

تو جو مال غنیمت یعنی بے پروا کرنے والا مال کسی بھی مد سے تمہیں ملا ہے (یعنی جو دشمن چھوڑ کر بھاگ گیا یا بندیوں سے فدیہ یا کسی کام سے کمایا) اسے کھاؤ وہ جائز اور پاک ہے (لیکن لوٹ کھسوٹ نہیں جیسے ظالم لوگ کرتے ہیں تم مسلم ہو درگزر سے کام لو) اور اللہ سے ڈرتے رہو بے شک اللہ بخشنے والا مہربان ہے (٦٩)[٨:٤١]

ऐ रसूल! युद्ध बन्दियों में से जो तुम्हारे अधिकार में थे उनसे कह दो कि यदि ईश्वर का नियम तुम्हारे मनों में भलाई ज्ञात करेगा अर्थात तुम सदाचारी बन कर शान्ति स्थापित करोगे तो जो तुमसे लिया गया है उससे उत्तम तुम्हें देगा और तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा और ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है (70)

اے رسول! جنگی قیدیوں میں سے جو تمہارے قبضہ میں تھے ان سے کہدو کہ اگر اللہ کا قانون تمہارے دلوں میں نیکی معلوم کرے گا تو یعنی تم نیک بن کر امن قائم کروگے جو تم سے لیا گیا ہے اس سے بہتر تمہیں دے گا. اور تمہارے گناہ بھی معاف کردے گا. اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے (٧٠)

यदि वह लोग तुमसे विश्वास घात करना चाहेंगे तो वह पहले ही ईश्वर से विश्वास घात कर चुके हैं तो उसने उनको तुम्हारे अधिकार में कर दिया और ईश्वर दाना हिकमत वाला है (71)

اگر وہ لوگ تم سے دغا کرنا چاہیں گے تو وہ پہلے ہی اللہ سے دغا کر چکے ہیں تو اس نے اُن کو تمہارے قبضے میں کر دیا. اور اللہ دانا حکمت والا ہے (٧١)

जो लोग आस्था लाए पलायन किया और पापों से भी पलायन की और ईश्वर के मार्ग में प्राण व माल से युद्ध (प्रयास) किया और वह लोग जिन्होंने देश त्याग करने वालों को स्थान दिया और उनकी सहायता की ऐसे ही लोग एक दूसरे के मित्र व सहायक है और वह लोग जो ईमान तो लाए परन्तु पलायन नही किया तो जब तक वह पलायन न करें तुम पर उनकी सहायता का कोई भार नही फिर भी यदि वह धर्म के विषय में तुम्हारी सहायता चाहें तो तुम पर अनिवार्य है कि उनकी सहयता करो और जिन लोगों से तुम्हारी संधि हो उनके विरुद्ध तुम उनकी सैनिक सहयता न करो जिन्होंने अभीतक पलायन नही किया है (संधि का पालन हर स्थिति में अनिवार्य है) और याद रखो ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों को देख रहा है (72)

جو لوگ ایمان لائے ہجرت کی اور اللہ کی راہ میں جان ومال سے جہاد کیا اور وہ لوگ جنہوں نے مہاجرین کو جگہ دی اور ان کی مدد کی ایسے ہی لوگ ایک دوسرے کے رفیق ومددگار رہیں. اور وہ لوگ جو ایمان تو لے آئے لیکن ہجرت نہیں کی تو جب تک وہ ہجرت نہ کریں تم پر ان کی مدد کی کوئی ذمہ داری نہیں. پھر بھی اگر وہ دین کے معاملہ میں تمہاری مدد چاہیں تو تم پر لازم ہے کہ ان کی مدد کرو اور جن لوگوں سے تمہارا معاہدہ ہے ان کے خلاف تم ان کی فوجی مدد نہ کرو. جنہوں نے ابھی تک ہجرت نہیں کی ہے (معاہدے کی پابندی ہر حال میں لازم ہے) اور یاد رکھو اللہ تمہارے سب کاموں کو دیکھ رہا ہے (٧٢)

और नास्कि एक दूसरे के मित्र व सहायक है यदि तुम भी आपस में ऐसा न करोगे (अर्थात वैध विधि

اور کافر ایک دوسرے کے رفیق و مددگار ہیں اگر تم بھی آپس میں ایسا نہ کروگے (یعنی جائز طریقے سے ایک

से एक दूसरे के मित्र व सहायक न बनोगे तो शत्रु के षड्यंत्र से) देश में अशान्ति हो जाएगी और बड़ा विकार फैलेगा. (73)

دوسرے کے رفیق ومددگار نہ بنوگے تو دشمنوں کی شازشوں سے) ملک میں فتنہ برپا ہوجائے گا اور بڑی خرابی پھیلے گی (۷۳)

और जो लोग आस्था लाए और देश से पलायन कर गए और ईश्वर के मार्ग में प्रयास धर्म युद्ध करते रहे और जिन्होंने स्थान दिया और उनकी सहायता की वह लोग है जो सच्चे आस्तिक है उनके लिए क्षमा और सम्मान की जीविका है (74)

اور جولوگ ایمان لائے اور وطن سے ہجرت کر گئے اور اللہ کی راہ میں جدوجہد کرتے رہے اور جنہوں نے جگہ دی اوران کی مدد کی وہ وہ لوگ ہیں جو سچے مومن ہیں ان کے لئے بخشش اور عزت کی روزی ہے (۷۴)

और जो लोग बाद में विश्वास लाए और देश से पलायन कर गए और तुम्हारे साथ होकर धर्म युद्ध करते रहे वह भी तुम ही मेंसे है, और सम्बन्धि ईश्वर के आदेशानुसार एक दूसरे के अधिक अधिकारी है कुछ शंका नही कि ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (75)

اور جولوگ بعد میں ایمان لائے اور وطن سے ہجرت کر گئے اور تمہارے ساتھ ہوکر جہاد کرتے رہے وہ بھی تم ہی میں سے ہیں .اور رشتے دار اللہ کے حکم کی رو سے ایک دوسرے کے زیادہ حق دار ہیں کچھ شک نہیں کہ اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۷۵)

सूरत तोब 9 मदनी

سورت توبہ (۹) مدنی

मुसलमानों! जिन अनेकेश्वर वादियों के साथ तुमने (सन्धि का) वचन किया था अब ईश्वर और उसके ईशदूत की ओर से भार मुक्त होने की घोषणा है (1)

مسلمانو! جن مشرکین کے ساتھ تم نے (صلح کا) معاہدہ کیا تھا اب اللہ اور اس کے رسول کی طرف سے بری الذمہ ہونے کا اعلان ہے (۱)

तो (अनेकेश्वर वादियों! तुम) पृथ्वी में चार महीने चल फिर लो और जान रखो कि तुम ईश्वर को विवश न कर सकोगे और यह भी कि ईश्वर विरोधीयों को अपमानित करने वाला है (2)

تو (مشرکو! تم) زمین میں چار مہینے چل پھر لو اور جان رکھو کہ تم اللہ کو عاجز نہ کرسکو گے .اور یہ بھی کہ اللہ منکروں کو رسوا کرنے والا ہے (۲)

और हज के दिन ईश्वर और उसके ईशदूत की ओर से लोगों को सूचित किया जाता है कि ईश्वर अनेकेश्वर वादियों से स्पष्ट है और उसका रसूल भी पर यदि तुम पश्चाताप कर लो तो तुम्हारे लिए अच्छा है और यदि मुख फेर लो तो जान लो कि तुम ईश्वर को परास्त नहीं कर सकोगे और नास्तिकों को कष्ट देने वाले दण्ड की सूचना सुना दो (3)

اور حج اکبر کے دن اللہ اور اس کے رسول کی طرف سے لوگوں کو آگاہ کیا جاتا ہے کہ اللہ مشرکوں سے بیزار ہے اور اس کا رسول بھی پس اگر تم توبہ کرلو تو تمہارے حق میں بہتر ہے اور اگر منہ پھیر لو تو جان لو کہ تم اللہ کو ہرا نہیں سکو گے اور منکروں کو دکھ دینے والے عذاب کی خبر سنا دو (۳)

नोट- इन आयात में ईश्वर और रसूल की आज्ञा पालन खुल कर सामने आई अर्थात जो आज्ञापालन ईश्वर की है वही ईशदूत की है ईश्वर और रसूल की आज्ञापालन पृथक नही है रसूल वह काम करते थे जो ईश्वर का आदेश है यदि पृथक पृथक है तो बताओ आयात में ईश्वर का अनुकरण या आदेश तो सामने आ गया परन्तु रसूल का क्या आदेश था सामने नही आया क्या था अतः दोनों एक है.

نوٹ:۔ان آیات میں اللہ اور رسول کی اطاعت کھل کر سامنے آئی یعنی جو اطاعت اللہ کی ہے وہی رسول کی ہے اللہ اور رسول کی اطاعت الگ الگ نہیں ہیں.رسول وہ کام کرتے تھے جو اللہ کا حکم ہے اگر الگ الگ ہیں تو بتاؤ آیات میں اللہ کی اطاعت یا حکم تو سامنے آ گیا مگر رسول کا کیا حکم تھا سامنے نہیں آیا، کیا تھا.اس لئے دونوں ایک ہیں.

हां जिन अनेकेश्वर वादियों से तुमने वचन किया था फिर उन्होंने इसमें किसी प्रकार की कमी नही की और तुम्हारे सामने किसी और की सहायता भी नही की हो तो जिस समय तक उनके साथ वचन किया हो उसे पूरा करो ईश्वर सदाचारीयों को मित्रता रखता है, (4)

ہاں جن مشرکوں سے تم نے معاہدہ کیا تھا پھر انہوں نے اس میں کسی طرح کی کمی نہیں کی.اور تمہارے مقابلہ میں کسی اور کی مدد بھی نہیں کی ہو تو جس مدت تک ان کے ساتھ عہد کیا ہوا سے پورا کرو.اللہ پرہیزگاروں کو دوست رکھتا ہے (۴)

फिर जब सम्मान के माह बीत जाएें तो उन अनेकेश्वर वादियों को (जिन से युद्ध हो रहा है या सन्धि समाप्त की और अपनी हरकत से नही रुकते तो) जहां कहीं पाओ वध करो, और पकड़लो और घैर लो और हर घात के स्थान उनकी ताक में बैठे रहो, फिर यदि वह युद्ध से पश्चाताप करले और संधि शान्ति स्थापित करें और अच्छे कर्मों को करें भलाई का आदेश करें (और पवित्रता गृहण करते

پھر جب عزت کے مہینے گزر جائیں تو ان مشرکوں کو (جن سے جنگ ہورہی ہے یا معاہدہ ختم کیا اور اپنی حرکت سے باز نہیں آتے تو) جہاں کہیں پاؤ قتل کرو.اور پکڑلو اور گھیر لو. اور ہر گھات کی جگہ ان کی تاک میں بیٹھے رہو.پھر اگر وہ جنگ سے توبہ کرلیں اور صلح قائم کریں اور اچھے کاموں کو

हुए दूसरे को भी पवित्र बनाएं) और शान्ति और सन्धि को स्थापित करने में जो व्यय हो उस व्यय का अंश दे तो उनका मार्ग छोड़ दो (अर्थात फिर उनसे युद्ध नही होगा और शान्ति स्थापित की जाएगी, निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है (5) (18:81;19:13 पवित्रता) 58:13 भलाई का आदेश {31:17,4:90}

नोट- शब्द सलात पर सलात का जो अर्थ पढ़ने में आता है वह नमाज़ आता है जो मस्जिद में या कही भी पढ़ी जाती है और इसको इस्लाम का एक मुख्य धर्म स्तंभ माना जाता है और वास्तव में भी एक महत्व पूर्ण स्तंभ धर्म है यदि कोई नमाज़ नही पढ़ता है तो उसका धर्म व विश्वास शंका में है, अतः नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है परन्तु शब्द सलात का अर्थ कुरआन से कुछ और भी सिद्ध हो रहा है जो बड़ा महत्वपूर्ण है जिसको हमने महत्व नही दिया और इसको महत्व न देने से ही कुछ भ्रान्तियां उत्पन्न हो रही है, और विरोधी बहुत आपत्ति करते है जैसे सूरत तोबा आयत 5 में पढ़ होगा, जब सम्मान के मास बीत जाए तो अनेकेश्वर वादियों को जहां पाओ बध करो, और पकड़ लो और हर घात के स्थान पर उनकी ताक में बैठे रहो, फिर यदि वह पश्चाताप कर लें और नमाज़ पढ़ने और जकात देने लगें तो उनका मार्ग छोड़ दो निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है मोलाना फतेह मुहम्मद जालन्धरी, शाह अब्दुल कादिर साहब, मोलाना मोदूदी साहब का अनुवाद यही है उन्होंने एक नोट लगाया है अवलोकन हो 5 अर्थात केवल कुफ्र व शिर्क से तोबा कर लेने से विषय समाप्त नही हो जाएगा अपितु उन्हें नमाज़ स्थापित करनी और जकात देनी होगी, अन्यथा यह नही माना जाएगा कि उन्होंने कुफ्र छोड़कर इस्लाम ग्रहण कर लिया है मानों मुसलमान होना ही है?

और मोलाना फरमान अली साहब मोलाना अहमद रज़ा खान साहब, मोलाना, अशरफ अली साहब, मो0 रफी उद्दीन साहब, मौ0 महमूदुल हसन साहब और मरमाड्यूक पिखथाल साहब इत्यादि सब ने यही अनुवाद किया है और तफसीर भी मौ0 मोदूदी जैसी ही की है इससे स्पष्ट हो गया कि उनको इस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा? परन्तु यह तो अन्याय होगा, जबकि कुरआन कहता है ला इकराह फिद्दीन धर्म में अन्याय नही लकुम दीनुकुम वलियदीन, अब देखा जाए कि शब्द सलात का अर्थ क्या केवल नमाज़ पढ़ना ही है या कुछ और भी है कुरआन के प्रकाश में अवलोकन हो जो मैंने समझा है,

सूरत हूद 11 आयत 87- उन्होंने कहा शुऐब क्या तुम्हारी सलात अर्थात तुम्हारी जीवन विधि जीवन व्यतीत करने की शैली तुम्हें यह सिखाती है आदेश देती है कि जिन देवताओं को हमारे पूर्वज पूजते चले आए है हम उन्हें छोड़ दें या यह कि हमें इतना भी अधिकार नही कि अपने धन में जिस प्रकार चाहे करे? तो क्या तुम ही एक कोमल हृदय और सत्यवादी व्यक्ति रह गए हो,

सूरत तोबा आयत 103, ऐ नबी तुम उनके धन में से दान लेकर उन्हें पवित्र करो और उन्हें बढ़ाओ और उनके लिए दया की प्रार्थना करो क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना (सलात) उनके लिए तृप्ति का कारण होगा तो एक अर्थ प्रार्थना भी है,

सूरत मरयम आयत 59 फिर उनके बाद वह अयोग्य लोग उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने नमाज़ (सलात) को नष्ट किया और काम वासना का अनुकरण किया पस निकट है कि पथ भ्रष्टता के परिणाम से दो चार हो, इस आयत में सलात के प्रतिकूल काम वासना बताई है अतः सलात सज्जनता हुई,

सूरतुल मूमिनून आयत 1 से 11 तक

کریں بھلائی کا حکم کریں (اور پاکیزگی اختیار کرتے ہوئے دوسروں کو بھی پاک بنائیں) اور اس صلح کو قائم کرنے میں جو خرچ ہو اس خرچ کا حصہ دیں تو ان کی راہ چھوڑ دو (یعنی پھر ان سے جنگ نہیں ہوگی اور امن قائم کیا جائے گا بے شک اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۵) [۱۸:۸۱:۱۹:۱۳ پاکیزگی] ۵۸:۱۳ بھلائی کا حکم [۳۱:۱۷،۴:۹۰]

نوٹ: لفظ صلوٰۃ پر: صلوٰۃ کا جو مطلب پڑھنے میں آتا ہے وہ نماز آتا ہے جو مسجد میں یا کہیں بھی پڑھی جاتی ہے اور اس کو اسلام کا ایک اہم رکن دین مانا جاتا ہے اور حقیقت میں بھی ایک اہم رکن دین ہے اگر کوئی نماز نہیں پڑھتا ہے تو اس کا اسلام و ایمان خطرے میں ہے اس لئے نماز پڑھنا ضروری ہے مگر لفظ صلوٰۃ کا مطلب قرآن سے کچھ اور بھی ثابت ہو رہا ہے جو بڑا اہم ہے جس کو ہم نے اہمیت نہیں دی اور اس کو اہمیت نہ دینے سے ہی کچھ غلط فہمیاں پیدا ہو رہی ہیں اور مخالف کافی اعتراض کرتے ہیں. جیسا کہ کچھ آیتوں کے ترجمے سے ظاہر ہو رہا ہے جیسے سورہ توبہ آیت ۵/ میں پڑھا ہوگا جب عزت کے مہینے گزر جائیں تو مشرکوں کو جہاں پاؤ قتل کرو اور پکڑ لو اور گھیر لو اور ہر گھات کی جگہ ان کی تاک میں بیٹھے رہو. پھر اگر وہ توبہ کرلیں اور نماز پڑھنے اور زکوٰۃ دینے لگیں تو ان کی راہ چھوڑ دو. بے شک اللہ بخشنے والا مہربان ہے. مولانا فتح محمد جالندھری، شاہ عبدالقادر صاحب، مولانا مودودی صاحب کا ترجمہ یہی ہے انہوں نے ایک نوٹ لگایا ہے ملاحظہ ہو.

۵: یعنی محض کفر و شرک سے توبہ کر لینے پر معاملہ ختم نہیں ہو جائے گا بلکہ انہیں نماز قائم کرنی اور زکوٰۃ دینی ہوگی ورنہ یہ نہیں مانا جائے گا کہ انہوں نے کفر چھوڑ کر اسلام اختیار کرلیا ہے گویا مسلمان ہونا ہی ہے؟

اور مولانا فرمان علی صاحب، مولانا احمد رضا خان صاحب، مولانا اشرف علی صاحب، مولانا رفیع الدین صاحب و مولانا محمود الحسن صاحب اور مرماڈیوک پکھتال صاحب وغیرہ سب نے یہی ترجمہ کیا ہے اور تفسیر بھی مولانا مودودی جیسی ہی کی ہے. اس سے صاف ظاہر ہو گیا کہ ان کو اسلام قبول کرنا پڑے گا؟ مگر یہ تو زبردستی ہو گئی جب کہ قرآن کہتا ہے لا اکراہ فی الدین لکم دینکم ولی دین. اب دیکھا جائے کہ لفظ صلوٰۃ کا مطلب کیا صرف نماز پڑھنا ہی ہے یا کچھ اور بھی ہے قرآن کی روشنی میں ملاحظہ ہو، جو میں نے سمجھا ہے.

سورت ہود ۱۱/ آیت ۸۷/ انہوں نے کہا شعیب کیا تمہاری صلوٰۃ یعنی تمہارا ضابطہ حیات زندگی گذارنے کا طریقہ تمہیں یہ سکھاتا ہے حکم دیتا ہے کہ جن معبودوں کو ہمارے بزرگ پوجتے چلے آئے ہیں ہم انہیں چھوڑ دیں یا یہ کہ ہمیں اتنا بھی اختیار نہیں کہ اپنے مال میں جس طرح چاہیں تصرف کریں؟ تو کیا تم ہی ایک نرم دل اور راست باز انسان رہ گئے ہو.

سورت توبہ آیت ۱۰۳/ اے نبیؐ تم ان کے اموال میں سے صدقہ لے کر انہیں پاک کرو اور انہیں بڑھاؤ اور اُن کے حق میں دعائے رحمت کرو. کیوں کہ تمہاری دعا (صلوٰۃ) ان کے لئے وجہ تسکین ہوگی. ایک معنی دعا بھی ہے.

سورت مریم آیت ۵۹/ پھر ان کے بعد وہ ناخلف لوگ ان کے جانشین ہوئے جنہوں نے نماز (صلوٰۃ) کو ضائع کیا اور خواہشات نفس کی پیروی کی. پس قریب ہے کہ وہ گمراہی کے انجام سے دوچار ہوں گے. اس آیت میں صلوٰۃ کی ضد خواہشات نفس بتائی ہے. اس لئے صلوٰۃ شرافت ہوئی.

سورت المومنون آیت ۱/ سے ۱۱/ تک.

1) निःसन्देह सफलता पाई विश्वास लाने वालों ने
2) जो अपनी नमाज़ में (सलात) विनम्रता स्वीकार करते हैं
3) और जो अनुचित बातों से मुख मोड़े रहते हैं
4) और जो धर्मादाय देते हैं
5) और जो अपने लज्ज्य के स्थान की रक्षा करते हैं
6) परन्तु अपनी पत्नीयों से या (स्वतंत्र पत्नी न होने की दशा में) मामलाकत ऐमानाकुम से विवाह करने के बाद उनसे मैथुन करने से) उन्हें भर्त्सना नही.
7) और जो इनके अतिरिक्त औरों के इच्छुक हों वह सीमा से निकल जाने वाले हैं
8) और जो अपनी धरोहरों और अपने वचनों का ध्यान रखते हैं
9) और जो नमाज़ों का पालन करते हैं
10) वह वह लोग हैं जो उत्तराधिकारी हैं
11) जो स्वर्ग की दाय प्राप्त करेंगे और उसमें सदैव रहेंगे.

इन आयात में सलात का अर्थ पूरे जीवन के सत्कर्मों से लिया गया है और इसी सलात में नमाज़ पढ़ना भी है परन्तु मूल तथ्य सम्पूर्ण शुभ कार्य है.

सूरत हज आयत 39- जिन मुसलमानों से युद्ध किया जाता है (अवैध) उनको आज्ञा है (कि वह भी लड़ें) क्योंकि उन पर अत्याचार हो रहा है और निःसन्देह ईश्वर उनकी सहायता पर शक्तिमान है.

(22:40) वह वह लोग हैं जो अपने घरों से अनुचित निकाले गए (उन्होंने कुछ दोष नही किया) हां यह कहते हैं कि हमारा रब ईश्वर है और यदि ईश्वर लोगों को एक दूसरे से न हटाता रहता तो तकये और पाठशाला और पूजा घर और मस्जिदें जिसमें ईश्वर का बहुत सा जप किया जाता है गिराई जा चुकी होती और जो व्यक्ति ईश्वर की सहायता करता है ईश्वर उसकी अवश्य सहायता करता है. निःसन्देह ईश्वर शक्तिशाली बल वाला है

(22:41) यह वह लोग हैं जिनको यदि हम देश में शासन दें तो सलात स्थापित करेंगे और धर्मादाय देंगे और शुभ कार्य करने का आदेश देंगे और बुरे कार्यों से मना करेंगे और सब कार्यों का परिणाम ईश्वर ही के अधिकार में है.

सूरत नूर, आयत 55- जो लोग तुम में से विश्वास लाए और शुभ कार्य करते रहे उनसे ईश्वर का वचन है कि उनको देश का शासक बना देगा (तब वह सलात स्थापित करेगा 22:41) जैसा उनसे पहले लोगों को शासक बनाया था और उनके धर्म को जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है सुदृढ़ व स्थाई कर देगा और भय के बाद उनको शान्ति प्रदान करेगा. वह मेरी पूजा करेंगे (अर्थात ईश्वर के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करेंगे) और मेरे साथ किसी वस्तु को सहयोगी न बनाएंगे और जो इसके बाद इनकार करेगा तो ऐसे लोग दुराचरण वाले हैं

आयत (22:41; 24:55) से सिद्ध हो गया कि ईश्वर राज्य और शान्ति उसको देता है जो आस्था लाकर शुभ कार्य करता है तो वह सलात स्थापित करता है पूजा करता है यहां पर पूजा और सलात स्थापित करने का अर्थ पूरे जीवन को ईश्वर के आदेश के आधीन करना है. नमाज़ तो पहले ही वह पढ़ रहा था तब ही तो ईश्वर ने उनको राज्य दिया अतः यहां पर सलात का अर्थ शुभ कार्य शान्ति स्थापित करना है और शान्ति स्थापित करने पर जो व्यय होगा उसमें देने को जकात कहते हैं अन्यथा बिना धन के शान्ति स्थापित कैसे होगी?

इन आयात में यह भी अंकित है कि ईश्वर अच्छे व्यक्तियों के द्वारा बुरे व्यक्तियों को हटाता रहता है तो यह उस समय ही होगा जब अच्छे

(۱)یقیناً فلاح پائی ہے ایمان لانے والوں نے
(۲)جو اپنی نماز میں خشوع اختیار کرتے ہیں
(۳)اور جو بے ہودہ باتوں سے منہ موڑے رہتے ہیں
(۴)اور جو زکوٰۃ ادا کرتے ہیں
(۵)اور جو اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرتے ہیں
(۶)مگر اپنی بیویوں سے یا (آزاد بیوی نہ ہونے کی صورت میں) مامَلکت ایمانکم سے (نکاح کرنے کے بعد ان سے مباشرت کرنے سے) انہیں ملامت نہیں
(۷)اور جو ان کے سوا اوروں کے طالب ہوں وہ حد سے نکل جانے والے ہیں
(۸)اور جو اپنی امانتوں اور اپنے عہدوں کا پاس رکھتے ہیں
(۹)اور جو نمازوں کی پابندی کرتے ہیں
(۱۰)وہ وہ لوگ ہیں جو وارث ہیں
(۱۱)جو فردوس کی میراث حاصل کریں گے اور اس میں ہمیشہ رہیں گے

ان آیات میں صلوٰۃ کا مطلب پوری زندگی کے نیک عملوں سے لیا گیا ہے اور اس صلوٰۃ میں نماز پڑھنا بھی ہے اصل حقیقت پورے نیک عمل ہیں

سورت الحج آیت ۳۹/جن مسلمانوں سے لڑائی کی جاتی ہے (ناجائز) ان کو اجازت ہے (کہ وہ بھی لڑیں) کیونکہ ان پر ظلم ہو رہا ہے اور اللہ یقیناً ان کی مدد پر قادر ہے

(۲۲:۴۰)وہ وہ لوگ ہیں جو اپنے گھروں سے ناحق نکال دیے گئے (انہوں نے کچھ قصور نہیں کیا) ہاں یہ کہتے ہیں کہ ہمارا رب اللہ ہے اور اگر اللہ لوگوں کو ایک دوسرے سے نہ ہٹاتا رہتا تو تکیے اور مدرسے اور عبادت خانے اور مسجدیں جس میں اللہ کا بہت سا ذکر کیا جاتا ہے گرائی جا چکی ہوتیں، اور جو شخص اللہ کی مدد کرتا ہے اللہ اس کی ضرور مدد کرتا ہے بے شک اللہ زبردست ہے زور والا ہے.

(۲۲:۴۱) یہ وہ لوگ ہیں جن کو اگر ہم ملک میں حکومت دیں تو صلوٰۃ قائم کریں اور زکوٰۃ دیں گے اور نیک کام کرنے کا حکم دیں گے اور برے کاموں سے منع کریں گے اور سب کاموں کا انجام اللہ ہی کے اختیار میں ہے.

سورت النور، آیت ۵۵/جو لوگ تم میں سے ایمان لائے اور نیک کام کرتے رہے ان سے اللہ کا وعدہ ہے کہ ان کو ملک کا حاکم بنا دے گا (تب وہ صلوٰۃ قائم کریں گے ۲۲:۴۱) جیسا ان سے پہلے لوگوں کو حاکم بنایا تھا اور ان کے دین کو جسے اس نے ان کے لئے پسند کیا ہے مستحکم و پائدار کر دے گا اور خوف کے بعد ان کو امن بخشے گا. وہ میری عبادت کریں گے (یعنی اللہ کے حکم کے مطابق زندگی بسر کریں گے) اور میرے ساتھ کسی چیز کو شریک نہ بنائیں گے اور جو اس کے بعد کفر کرے گا تو ایسے لوگ بدکردار ہیں.

آیت (۲۲:۴۱؛ ۲۴:۵۵) سے ثابت ہو گیا کہ اللہ حکومت اور امن اس کو دیتا ہے جو ایمان لا کر نیک عمل کرتا ہے تو وہ صلوٰۃ قائم کرتا ہے. عبادت کرتا ہے یہاں پر عبادت اور صلوٰۃ قائم کرنے کا مطلب پوری زندگی کو اللہ کے حکموں کے تابع کرنا ہے نماز تو پہلے ہی وہ پڑھ رہا تھا تب ہی تو اللہ نے ان کو حکومت دی. اس لئے یہاں پر صلوٰۃ کا مطلب نیک عمل امن سلامتی قائم کرنا ہے اور امن قائم کرنے پر جو خرچ ہوگا اس میں دینے کو زکوٰۃ کہتے ہیں ورنہ بغیر پیسے کے امن قائم کیسے ہوگا؟

ان آیات میں یہ بھی درج ہے کہ اللہ اچھے آدمیوں کے ذریعہ برے آدمیوں کو

व्यक्ति युद्ध के द्वारा बुरे व्यक्तियों को हटाता रहता है तो यह उस समय ही होगा जब अच्छे व्यक्ति युद्ध के द्वारा बुरे व्यक्तियों कोह टा देंगे क्या बिना युद्ध के बुरे व्यक्ति रुकेंगे?

सूरत मआरिज आयत 22 से 35 तक

22) परन्तु वह मुसल्ली (जो अपना पूर्ण जीवन ईश्वर के नियमानुसार व्यतीत करता है शान्ति के साथ)

23) सलात पर सदैव स्थापित रहता है (अर्थात ईश्वर के आदेशानुसार)

24) और जिनके धन में अंश निश्चित है

25) मांगने वालों का और वंचित का

26) और जो महा प्रलय को सच मानते हैं

27) और जो अपने ईश्वर के दण्ड से भय रखते हैं

28) निःसन्देह उनके ईश्वर का दण्ड है ही ऐसा कि उससे निडर न हुआ जाए

29) जो अपने गुप्त अंगों की रक्षा करते हैं

30) परन्तु अपने जोड़ों (या कुलीन जोड़ा न होने के कारण) मा मलाकत ऐमाना कुम से (जिनसे विवाह किया हो उनके पास जाने से) उन्हें भर्त्सना नही

31) और जो लोग उनके सिवा और के इच्छुक हो वह सीमा से निकल जाने वाले हैं

32) और जो अपनी धरोहरों और वचनों को याद रखते हैं

33) और जो अपनी शपथों पर स्थापित रहते हैं

34) और जो सलात की अर्थात कर्तव्य का ज्ञान रखते हैं

35) वही लोग स्वर्ग में सम्मान व आदर से होंगे

इन आयात में भी सलात का अर्थ ईश्वर के आदेश का पालन बताया गया है जिसमें शान्ति स्थापित करना भी है और अपना पूरा जीवन सलात बनाना है,

सूरत माऊन- भला तुम ने उस व्यक्ति को देखा जो प्रतिदान अर्थात न्याय के दिन को झुटलाएगा यह वही दुर्भाग्य वाला है जो अनाथ को धक्के देगा और निर्धन को भोजन खिलाने के लिए प्रेरणा नही देगा तो ऐसे नमाजियों (मुसल्लीयून) का नाश है जो अपनी सलात (कर्तव्य) से अनभिज्ञ रहते हैं जो दिखावा करेंगे और बरतने की वस्तु मांगने पर न दें, इस सूरत में भी सलात का अर्थ बताया गया है चिन्तन करें सूरत हूद की आयत 87 जो पहले लिखी गई है उसमें भी सलात का अर्थ बताया गया है कि सलात किस को कहते है उसमें भी अच्छे चरित्र और ईमानदारी को ही सलात कहा है,

अधिकांश आयात में सलात स्थापित करने का आदेश आया है अब देखा यह जाए कि सलात या नमाज़ स्थापित कैसे होती है,

सूरत बक़रा, आयत 177- सत्कर्म यही नही है कि तुम पूर्व या पश्चिम (को काबा समझ कर उन) की ओर मुख कर लो अपितु मूल भलाई यह है कि लोग ईश्वर पर और फरिश्तों और पुस्तकों पर और रसूलों पर आस्था लाएँ और धन जिसको प्रिय रखते है नातेदारों और अनाथों और निर्धनों और यात्रियों और मांगने वालो को दे और गर्दनों (के छुड़ाने) में व्यय करें और ईश्वर के पूर्ण आदेशों को अर्थात सलात स्थापित करें और ज़कात दें जब वचन कर लें तो उसको पूरा करें और कष्ट और पीड़ा में और युद्ध के समय दृढ़ पग रहें वही लोग है जो सच्चे है और वही है जो ईश्वर से डरने वाले है,

नमाज़ मस्जिद में जमात के साथ या तन्हा कही भी समय

ہٹاتا رہتا ہے تو یہ اس وقت ہی ہوگا جب اچھے آدمی جنگ کے ذریعہ بُرے آدمیوں کو ہٹادیں گے کیا بغیر جنگ کے بُرے آدمی باز رہیں گے؟

سورت معارج آیت ۲۲ سے ۳۵ تک

(۲۲) مگر وہ مصلّی (وہ جو اپنی پوری زندگی اللہ کے قانون کے مطابق گزرتا ہے امن وامان کے ساتھ)

(۲۳) صلوٰۃ پر ہمیشہ قائم رہتا ہے (یعنی اللہ کے حکم پر

(۲۴) اور جن کے مال میں حصہ مقرر ہے

(۲۵) مانگنے والوں کا اور محروم کا

(۲۶) اور جو روز جزا کو سچ سمجھتے ہیں

(۲۷) اور جو اپنے رب کے عذاب سے خوف رکھتے ہیں

(۲۸) بےشک ان کے رب کا عذاب ہے ہی ایسا کہ اس سے بےخوف نہ ہوا جائے

(۲۹) جو اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرتے ہیں

(۳۰) مگر اپنی بیویوں (یا خاندانی بیوی نہ ہونے کی وجہ سے) ماملکت ایمانکم سے (جن سے نکاح کیا ہو ان کے پاس جانے پر) انہیں ملامت نہیں

(۳۱) اور جو لوگ ان کے سوا اور کے طالب ہوں وہ حد سے نکل جانے والے ہیں

(۳۲) اور جو اپنی امانتوں اور اقراروں کا پاس کرتے ہیں

(۳۳) اور جو اپنی شہادتوں پر قائم رہتے ہیں

(۳۴) اور جو اپنی صلوٰۃ کی خبر رکھتے ہیں

(۳۵) وہی لوگ جنت میں اکرام وعزت سے ہوں گے۔

ان آیات میں بھی صلوٰۃ کا مطلب اللہ کے حکم کی پابندی بتایا گیا ہے جس میں سلامتی قائم کرنا بھی ہے اور اپنی پوری زندگی صلوٰۃ بنانا ہے۔

سورۃ ماعون بھلا تم نے اس شخص کو دیکھا جو روز جزا یعنی انصاف کے دن کو جھٹلائے گا یہ وہی بدبخت ہے جو یتیم کو دھکے دے گا اور فقیر کو کھانا کھلانے کے لئے ترغیب نہیں دے گا تو ایسے نمازیوں (مصلیوں) کی خرابی ہے جو نماز صلوٰۃ کی طرف سے غافل رہتے ہیں جو ریاکاری کریں گے۔اور برتنے کی چیز مانگنے پر نہ دیں۔ اس سورت میں بھی صلوٰۃ کا مطلب بتایا گیا ہے کیا ہے غور ضروری ہے۔سورت ہود کی آیت ۸۷ جو پہلے لکھی گئی ہے اس میں بھی صلوٰۃ کا مطلب بتایا گیا ہے کہ صلوٰۃ کس کو کہتے ہیں اس میں بھی اچھا خلاق اور ایمانداری کو ہی صلوٰۃ کہا ہے۔

زیادہتر آیات میں صلوٰۃ قائم کرنے کا حکم آیا ہے اب دیکھا یہ جائے کہ صلوٰۃ یا نماز قائم کیسے ہوتی ہے۔

سورہ بقرہ آیت ۱۷۷ ارنیکی یہ نہیں ہے کہ تم مشرق ومغرب (کو قبلہ سمجھ کر ان) کی طرف منہ کرلو بلکہ اصل نیکی یہ ہے کہ لوگ اللہ اور فرشتوں پر اور کتابوں پر اور رسولوں پر ایمان لائیں اور مال جس کو عزیز رکھتے ہیں رشتہ داروں اور یتیموں اور محتاجوں اور مسافروں اور مانگنے والوں کو دیں اور گردنوں (کے چھڑانے) میں خرچ کریں (اور اللہ کے تمام حکموں کو یعنی صلوٰۃ کو قائم کریں) اور زکوٰۃ دیں جب عہد کرلیں تو اس کو پورا کریں اور سختی اور تکلیف میں اور جنگ کے وقت ثابت قدم رہیں۔وہی لوگ ہیں جو سچے ہیں اور وہی ہیں جو اللہ سے ڈرنے والے ہیں۔

نماز مسجد میں جماعت کے ساتھ یا تنہا کہیں بھی وقت کی پابندی کے

के प्रतिबद्धा के साथ पढ़ी जाती है जो इस्लाम का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है हर मुसलमान पर अनिवार्य है यदि नही पढ़ता है तो पापी है, प्रश्न उत्पन्न होता है कि सलात स्थापित कैसे होती है सलात को स्थापित इस प्रकार किया जाएगा उदाहरणतः नमाज़ पढ़ते समय आयत पढ़ी वअकिमुलवज़ना बिलकिस्तीवला तख़सिरूल मिज़ान (55:9) और न्याय के साथ ठीक-ठीक तोलो और तोल कम न करो, या और आयात हैं जैसे यही आयत (2:177) है जिसमें जीवन व्यतीत करने के नियम हैं उनको पढ़ा यदि नमाज़ से बाहर आकर इन आयात के अनुसार कार्य किया नाप तोल पूरी की वचन को पूरा किया सच बोला दूसरों की सहायता की शान्ति स्थापित की, शान्ति स्थापित करने में व्यय किया, अर्थ यह कि हर कार्य नमाज़ में पढ़ी आयात के अनुसार किया तो नमाज़ स्थापित हो गई, इन्सान की पूरी जिन्दगी के कार्य सलात हैं अब सलात स्थापित करने को एक ओर कोण से देखें, सूरत माइदा-

(5:65) और यदि पुस्तक वाले विश्वास लाते और सदाचारी होते तो हम उनसे उनकी बुराई निर्धनता दूर कर देते और उन्हें सुख सामग्री के उपवनों में प्रविष्ट करते

(5:66) यदि उन्होंने तोरात को और इन्जील को और दूसरी पुस्तकों को स्थापित किया होता जो उनके रब की ओर से उनके पास भेजी गई थी ऐसा करते तो उनके लिए ऊपर से जीविका बरसाती और नीचे पगों के नीचे से उबलता यद्यपि उनमें कुछ लोग सत्यवादी भी हैं परन्तु उनकी अधिकता भ्रष्ट है (3:113,115)

(5:68) (कह दो) कि ऐ पुस्तक वालों तुम कदापि मूल पर नही हो जब तक कि तोरात को और इन्जील और उन दूसरी पुस्तकों को स्थापित न करो जो तुम्हारी ओर तुम्हारे रब की ओर से प्रेषित की गई हैं, और (यह कुरआन) जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है इससे उन में से अधिकांश की अवज्ञा और कुफ्र और बढ़ेगा तो तुम नास्तिकों पर अनुताप न करो,

आयत (5:66,68) में पुस्तक वालों से तोरात इन्जील और पहली और बाद वाली पुस्तकों को स्थापित करने को कहा गया है अर्थात उन पर विश्वास लाकर उनके अनुसार व्यवहार करना यदि उन पुस्तकों पर ही कुरआन के अतिरिक्त विश्वास और कर्म उद्देश्य होता तो फिर कुरआन और मुहम्मद की क्या आवश्यकता थी? कुरआन और मुहम्मद पर विश्वास लाने का क्या तर्क है तो वह भी प्रस्तुत है,

(3:81) याद करो जब ईश्वर के नियम ने ईश दूत के द्वारा उनकी उम्मतों से आने वाले नबीयों के विषय में वचन लिया था कि चूंकि हमने तुम्हें पुस्तक और युक्ति बुद्धि से सम्मानित किया है कल यदि कोई दूसरा रसूल तुम्हारे पास इस शिक्षा को प्रमाणित करता हुआ आए जो पहले से तुम्हारे पास विद्यमान हो तो तुम को उस पर आस्था लानी होगी और उसकी सहायता करनी होगी, यह उपदेश देकर ईश्वर ने ज्ञात किया क्या तुम इसका वचन देते हो और इस पर मेरी ओर से प्रण का भारी उत्तरदायित्व उठाते हो? उन्होंने कहा हमने वचन किया, ईश्वर ने कहा अच्छा तो साक्षी रहो और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूं, इसके बाद जो अपने वचन से फिर जाए वही अवज्ञाकारी है,

(4:159) और जो वास्तव में पुस्तक वाला है वह निःसन्देह विश्वास लाएगा अपनी मौत से पहले उस पर अर्थात मुहम्मद पर और प्रलय के दिन मुहम्मद स0 उन पर साक्षी होंगे,

(61:6) सूरत अस्सफ़, और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी ओर ईश्वर का ईशदूत हूं अपने से पहली पुस्तक तोरात जो सुरक्षा के मध्य है पुष्टि करता हूं और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूं जो मेरे बाद आएँगे, उनका नाम मुहम्मद है फिर जब

ساتھ پڑھی جاتی ہے جو اسلام کا ایک اہم رکن ہے ہر مسلمان پر فرض ہے اگر نہ پڑھتا ہے تو گنہگار ہے سوال پیدا ہوتا ہے کہ صلوٰۃ قائم کیسے ہوتی ہے۔

صلوٰۃ کو قائم اس طرح کیا جائے گا مثلاً نماز پڑھتے وقت آیت پڑھی واقیموا الوزن بالقسط ولاتخسروا المیزان (۵۵:۹) اور انصاف کے ساتھ ٹھیک ٹھیک تولو اور تول کم نہ کرو یا اور آیات ہیں جیسے یہی آیت (۲:۱۷۷) ہے جس میں زندگی گذارنے کے قانون ہیں ان کو پڑھا اگر نماز سے باہر آکر ان آیات کے مطابق کام کیا ناپ تول پوری کی عہد کو پورا کیا سچ بولا دوسروں کی مدد کی امن قائم کیا امن قائم کرنے میں خرچ دیا۔ مطلب یہ کہ ہر کام نماز میں پڑھی آیات کے مطابق کیا تو نماز قائم ہوگئی انسان کی پوری زندگی کے معاملات صلوٰۃ ہیں اب صلوٰۃ قائم کرنے کو ایک اور رُخ سے دیکھیں۔ سورت المائدہ (۵:۶۵) اور اگر اہل کتاب ایمان لاتے اور پرہیز گار ہوتے تو ہم ان سے ان کی بُرائی بدحالیاں دور کر دیتے اور انہیں نعمت کے باغوں میں داخل کرتے۔

(۵:۶۶) اگر انہوں نے توراۃ کو اور انجیل کو اور دوسری کتابوں کو قائم کیا ہوتا جو ان کے رب کی طرف سے ان کے پاس ان کے لئے بھیجی گئیں تھی ایسا کرتے تو ان کے لئے اوپر سے رزق برستا اور نیچے پیروں تلے سے ابلتا اگر چہ ان میں کچھ لوگ راست رو بھی ہیں لیکن ان کی اکثریت بدعمل ہے (۳:۱۱۳،۱۱۵)

(۵:۶۸) (کہہ دو) کہ اے اہل کتاب تم ہرگز کسی اصل پر نہیں ہو۔ جب تک کہ توراۃ اور انجیل اور ان دوسری کتابوں کو قائم نہ کرو جو تمہاری طرف تمہارے رب کی طرف سے نازل کی گئی ہیں۔ اور (یہ قرآن) جو تمہارے رب کی طرف سے تم پر نازل ہوا ہے اس سے ان میں سے اکثر کی سرکشی اور کفر اور بڑھے گا تو تم قوم کفار پر افسوس نہ کرو۔

آیت (۵:۶۶،۶۸) میں اہل کتاب سے توراۃ انجیل اور پہلی اور بعد والی کتابوں کو قائم کرنے کو کہا گیا ہے یعنی ان پر ایمان لاکر ان کے مطابق عمل کرنا۔ اگر ان کتابوں پر ہی قرآن کے علاوہ ایمان اور عمل مقصود ہوتا تو پھر قرآن کی کیا ضرورت تھی؟ قرآن اور محمدؐ پر ایمان لانے کی کیا دلیل ہے تو وہ بھی پیش ہے۔

(۳:۸۱) یاد کرو جب اللہ کے قانون نے انبیاء کے ذریعے ان کی امتوں سے آنے والے نبیوں کے بارے میں عہد لیا تھا کہ چونکہ ہم نے تمہیں کتاب اور حکمت دانش سے نوازا ہے کل اگر کوئی دوسرا رسول تمہارے پاس اس تعلیم کی تصدیق کرتا ہوا آئے جو پہلے سے تمہارے پاس موجود ہے تو تم کو اس پر ایمان لانا ہوگا اور اس کی مدد کرنی ہوگی یہ ارشاد فرما کر اللہ نے معلوم کیا کیا تم اس کا اقرار کرتے ہو۔ اور اس پر میری طرف سے عہد کی بھاری ذمہ داری اٹھاتے ہو؟ انہوں نے کہا ہم نے اقرار کیا۔ اللہ نے فرمایا اچھا تو گواہ رہو اور میں بھی تمہارے ساتھ گواہ ہوں۔ اس کے بعد جو اپنے عہد سے پھر جائے وہی فاسق ہے۔

(۴:۱۵۹) اور جو حقیقت میں اہل کتاب ہے وہ یقیناً ایمان لائے گا اپنی موت سے پہلے اس پر یعنی محمدؐ پر اور قیامت کے دن محمدؐ ان پر گواہ ہوں گے۔

(۶۱:۶) سورت الصف:۔ اور یاد کرو جب عیسٰی بن مریم نے کہا اے بنی اسرائیل میں تمہاری طرف اللہ کا رسول ہوں اپنے سے پہلی کتاب توراۃ جو حفاظت کے درمیان ہے تصدیق کرتا ہوں اور ایک رسول کی بشارت سناتا ہوں جو میرے بعد آئیں گے ان کا نام محمد ہے۔ پھر جب محمد ان کے پاس روشن نشانیاں لے کر آئے

मुहम्मद उनके पास उज्ज्वल चिन्ह लेकर आए तो बोले यह खुलाजादू है.

उपरोक्त आयात पढ़ने से यह बात सिद्ध हो गई कि तौरात और इन्जील या पहली पुस्तकों या कुरआन को स्थापित करने का अर्थ यह है कि उनमें जो आदेश अंकित है उन पर व्यवहार करना यदि ईश्वर के आदेशानुसार उन पर कर्म किया तो सब पुस्तकें स्थापित हो गई और न किया तो कोई भी पुस्तक स्थापित नहीं हुई, पुस्तकों के स्थापित करने का उद्देश्य यह कदापि नहीं है कि उनको किसी भवन की भांति खड़ा किया जाए अपितु उनके अनुसार कर्म किया जाए ऐसे ही सलात की बात है यदि सलात में पढ़ी हुई आयात के अनुसार व्यवहार किया तो नमाज़ सलात स्थापित हो गई अन्यथा नहीं और कुरआन में इन्सान से यह मांग की गई है कि ईश्वर की पुस्तकों के अनुसार कर्म करो और कुरआन में है कि ईमानदारी के साथ हर अच्छा काम करो हर बुरे काम से बचो और हर एक की सहायता करो देश में शान्ति स्थापित करो अस्तु हर प्रकार से ईश्वर का आज्ञाकारी होना है.

इसी प्रकार जब श्रीमान शुऐब ने अपनी जाति से पुस्तक पर व्यवहार करने को कहा तो जाति ने उनसे कहा क्या तेरा जीवन व्यतीत करने का विधान सलात हम को मनमानी करने से रोकेगा? हम तो यह जान रहे थे कि तेरी सलात केवल पूजा की सीमा तक है परन्तु अब तो यह ज्ञात हुआ कि यह सलात तो जीवन के हर अनुभाग पर व्याप्त है इसलिए तेरे इस सलाती व्यवस्था को मानना कठिन है हम नहीं मानेंगे, जैसी आज कल हम नमाज़ पढ़ रहे हैं यदि ऐसी नमाज़ का अभियाचन होता तो वह भी सम्भवतः मान लेते परन्तु उनको ज्ञात था कि यह सलात कुछ और है और वह देश में शान्ति स्थापित करना और शान्ति तब ही स्थापित होती है जब आदमी धर्मवादी होता है पापों से बचता है यह है सलात की वास्तविकता न कि जबरदस्ती मुसलमान बनाना.

अतः सूरत तोबा की आयत 5 का जो अनुवाद ज्ञानियों ने किया है वह अनुचित है, आयत में सलात शब्द का अर्थ शान्ति स्थापित करना संधि करना है और इस संधि को स्थापित करने के लिए धर्मादाय देना और भलाई का आदेश करना है न कि नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना यदि नमाज़ नहीं पढ़ते तो उनको मारो, मानो जबरदस्ती किसी को मुसलमान बनाना? ऐसा तो कदापि नहीं है, जबरदस्ती किसी को मुसलमान बनाना पाप है अपनी इच्छा से जो मुसलमान हो वह ठीक है अन्यथा नहीं ऐसे ही अनुचित अनुवादों पर दूसरे आपत्ति कर रहे हैं किसी सीमा तक उनकी आपत्ति उचित है, परन्तु आयत का भाव कुछ और है जो मैंने किया है अवलोकन करें.

जो लोग ऐसे अनुवादों पर आपत्ति कर रहे हं उनसे भी यह कहना है कि कुरआन में मूल लेख को देखें सूरत तोबा आयत 5 का भाव जो उचित है वह फिर अवलोकन हो.

फिर जब सम्मान के मास समाप्त हो जाएं तो उन अनेकेश्वर वादियों को (जिन से युद्ध हो रहा है या संधी समाप्त की है) जहां कहीं पाओ वध करो और पकड़ लो और घेर लो, और हर घात के स्थान उनकी ताक में बैठे रहो, फिर यदि वह युद्ध उद्दण्डता और रक्तपात से पश्चातापी होकर शान्ति स्थापित अर्थात सलात स्थापित करने के लिए संधी कर ले और उस संधी को स्थापित करने में जो व्यय हो उस व्यय जकात का भाग दें सत्कर्मों का आदेश करें तो उनका मार्ग छोड़ दो (अर्थात फिर उनसे युद्ध नहीं होगा और शान्ति स्थापित की जाएगी जो सलात है, जो (11:87) से स्पष्ट है कि सलात से क्या अभिप्राय है) निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है,

यह है अर्थ (9:5) का यदि यह अनुवाद किया जाता तो किसी को इन

تو بولے یہ کھلا جادو ہے.

مندرجہ بالا آیات کے پڑھنے سے یہ بات ثابت ہوگئی کہ توراۃ اور انجیل یا پہلی کتابوں یا قرآن کو قائم کرنے کا مطلب یہ ہے کہ ان میں جو احکام درج ہیں ان پر عمل کرنا اگر اللہ کے حکم کے مطابق ان پر عمل کیا تو سب کتابیں قائم ہوگئیں اور نہ کیا تو کوئی بھی کتاب قائم نہ ہوئی. کتابوں کے قائم کرنے کا مقصد یہ ہرگز نہیں ہے کہ ان کو کسی عمارت کی طرح کھڑا کیا جائے بلکہ ان کے مطابق عمل کیا جائے. ایسے ہی صلوٰۃ کی بات ہے اگر صلوٰۃ میں پڑھی گئی آیات کے مطابق عمل کیا تو نماز صلوٰۃ قائم ہوگئی ورنہ نہیں اور قرآن میں انسان سے یہ مطالبہ کیا گیا ہے کہ اللہ کی کتابوں کے مطابق عمل کرو اور قرآن میں ہے کہ ایمانداری کے ساتھ ہر اچھا کام کرو ہر برے کام سے بچو اور ہر ایک کی مدد کرو ملک میں امن قائم کرو بہر حال ہر طرح سے اللہ کا فرمانبردار ہونا ہے.

اسی طرح جب حضرت شعیب نے اپنی قوم سے کتاب پر عمل کرنے کو کہا تو قوم نے ان سے کہا کیا تیرا ضابطہ حیات صلوٰۃ ہم کو من مانی کرنے سے روکے گا؟ ہم تو یہ جان رہے تھے کہ تیری صلوٰۃ صرف عبادت کی حد تک ہے مگر اب تو یہ معلوم ہوا کہ یہ صلوٰۃ تو زندگی کے ہر شعبہ پر حاوی ہے اس لئے تیرے اس صلوٰتی نظام کو ماننا مشکل ہے ہم نہیں مانیں گے.

جیسی آج کل ہم نماز پڑھ رہے ہیں اگر ایسی نماز کا ہی مطالبہ ہوتا تو وہ بھی غالباً مان لیتے مگر ان کو معلوم تھا کہ یہ صلوٰۃ کچھ اور ہے اور وہ ملک میں امن قائم کرنا اور امن تب ہی قائم ہوتا ہے جب آدمی ایمان دار رہوتا ہے گناہوں سے بچتا ہے یہ ہے صلوٰۃ کی حقیقت نہ کہ زبردستی مسلمان بنانا.

اس لئے سورت توبہ کی آیات ۵/ کا جو ترجمہ عالموں نے کیا ہے وہ غلط ہے آیت میں صلوٰۃ لفظ کا مطلب امن قائم کرنا صلح کرنا اور اس صلح کو قائم کرنے کے لئے زکوٰۃ دینا اور اچھائیوں کا حکم کرنا ہے نہ کہ نماز پڑھنا اور زکوٰۃ دینا. اگر نماز نہیں پڑھتے تو ان کو مارو گویا زبردستی مسلمان بنانا؟ ایسا ہرگز نہیں ہے زبردستی کسی کو مسلمان بنانا گناہ ہے اپنی مرضی سے جو مسلمان ہو وہ ٹھیک ہے ورنہ نہیں. ایسے ہی غلط ترجموں پر غیر اعتراض کر رہے ہیں کسی حد تک ان کا اعتراض درست ہے مگر آیت کا مفہوم کچھ اور ہے جو میں نے کیا ہے ملاحظہ کریں.

جو لوگ ایسے ترجموں پر اعتراض کر رہے ہیں ان سے بھی یہ کہنا ہے کہ وہ قرآن میں اصل عربی متن کو دیکھیں سورۃ توبہ آیت ۵/ کا مفہوم جو صحیح ہے وہ پھر ملاحظہ ہو.

پھر جب عزت کے مہینے گزر جائیں تو ان مشرکوں کو (جن سے جنگ ہو رہی ہے یا معاہدہ ختم کیا ہے) جہاں کہیں پاؤ قتل کرو اور پکڑ لو اور گھیر لو اور ہر گھات کی جگہ ان کی تاک میں بیٹھے رہو. پھر اگر وہ جنگ سرکشی اور خونریزی سے تائب ہو کر امن و امان قائم کرنے کے لئے صلح کر لیں اور اس صلح کے قائم کرنے میں جو خرچ ہو اس خرچ زکوٰۃ کا حصہ دیں اچھائیوں کا حکم کریں تو ان کی راہ چھوڑ دو (یعنی پھر ان سے جنگ نہیں ہوگی اور امن قائم کیا جائے گا جو صلوٰۃ ہے جو (۱۱:۸۷) سے ظاہر ہے کہ صلوٰۃ سے کیا مراد ہے) بے شک اللہ بخشنے والا مہربان ہے.

یہ ہے مطلب (۹:۵) کا اگر یہ ترجمہ کیا جاتا تو کسی کو ان آیات اور

आयात और कुरआन पर आपत्ति करने का साहस न होता स्वयं हमने ही मिथ्या अनुवाद करके दूसरों को अवसर दिया कहीं अनफाल और गनीमत का अनुवाद लूट कर दिया है यह भी अनुचित है अब मैं कुछ श्लोक गीता से प्रस्तुत कर रहा हूं इस आशा पर कि श्रीमान आचार्य गिरीराज किशोर जी इनको पढ़कर मनन करें और अपनी पुस्तक में लिखे सन्दर्भ को देखकर कुरआन पर आपत्ति करना छोड़ दें तो अच्छा है मेल मिलाप की एक बात सामने आए

गीता से पहले एक सामान्य बात पर ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूं वह यह कि हर देश अपनी सीमाओं की रक्षा और देश के अन्दर शान्ति स्थापित करने के लिए हर समय हर प्रकार से सावधान रहता है और इस सावधानी के लिए अपने पास शक्ति भी रखता है यदि इस काम में असावधानी होती है तो शत्रु आक्रमण करके दास बना लेता है और देश के अन्दर अत्याचारी उपद्रव करते है, अतः हर देश अपनी रक्षा में सावधान रहता है ऐसे ही आज अपना भारत भी कर रहा है जो अनिवार्य है क्या यह सुरक्षा करना और रक्षा करते समय हमला करने वाले को मारना अनुचित है? यदि है तो फिर अपनी सारी सेना को समाप्त करके बैठ जाओ और शान्ति शान्ति का जप करना आरम्भ करो जैसे कभी भारत का जप था और चीन ने आक्रमण करके काफ़ी क्षेत्र हड़प कर लिया था,

क्या इस शान्ति के जप से शत्रु चला जाएगा? कदापि नही, अपितु वह देश को दास बना लेगा अतः शत्रु की घात में बैठना उसको मारना अशान्ति नहीं हिंसा नही अपितु अहिंसा है और शान्ति को स्थापित रखना है और यही सलात का एक भाग है जिसको स्थापित करने के लिए आयात में है (9:5) में मस्जिद वाली सलात के लिए नही है वह तो मुसलमान होने पर पढ़नी है क्या मेरे भारत का यह सुरक्षा वाला काम अनुचित है? आचार्या जी मुझे बताएं? मेरा भारत जो भी कर रहा है वह कुरआन के अनुसार कर रहा है अतः कुरआन की आयात पर आपत्ति अनुचित है अब श्लोक अवलोकन हो, गीता-

अध्याय-1, श्लोक 41, हे कृष्ण पाप के अधिक बढ़ जाने से कुल की स्त्रियां अत्यन्त दूषित हो जाती हैं और हे वार्ष्णेय स्त्रियों के दूषित हो जाने पर वर्ण शंकर उत्पन्न होता है।।

श्लोक 47, संजय बोले, रण भूमि में शोक से उद्विग्न मन वाले अर्जुन इस प्रकार कहकर बाण सहित धनुष को त्याग कर रथ के पिछले भाग में बैठ गए

अध्याय-2, श्लोक 2, श्री भगवान बोले हे अर्जुन! तुझे इस असमय में यह मोह किस हेतु से प्राप्त हुआ? क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आचारित है न स्वर्ग को देने वाला है और न कीर्ति को प्रिय बनाने वाला है

श्लोक 3, अतः हे अर्जुन! नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझ में यह उचित नही जान पड़ता हे परंतप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो जा।।

श्लोक 4, अर्जुन बोले हे मधू सूदन! मैं रणभूमि में किस प्रकार वाणों से भीष्म पितामह और द्रोणा चार्य के विरुद्ध लड़ूंगा? क्योंकि हे अरिसूदन! वे दोनों ही पूजनीय हैं।।

श्लोक 5, इसलिए इन महानुभाव गुरूजनों को न मार कर मैं इस लोक में भिक्षा का अन्न भी खाना कल्याण कारक समझता हूं क्योंकि गुरूजनों को मार कर भी इस लोक में रूधिर से सने हुए अर्थ और काम रूप भोगों को ही तो भोगूंगा,

श्लोक 6, हम यह भी नही जानते कि हमारे लिए युद्ध करना और न करना इन दोनों में से कौन अच्छा है, अथवा यह भी नही जानते कि

قرآن پر اعتراض کرنے کی ہمت نہ ہوتی خودہم نے ہی غلط تراجم کر کے دوسروں کو موقعہ دیا کہیں انفال اور غنیمت کا ترجمہ لوٹ کردیا ہے یہ بھی غلط ہے اب میں کچھ اشلوک گیتا سے پیش کر رہا ہوں اس امید پر کہ جناب آچاریہ گری راج کشور جی ان کو پڑھ کر غور کریں اور اپنی کتاب میں لکھے کو دیکھ کر قرآن پر اعتراض کرنا چھوڑ دیں تو اچھا ہے میل ملاپ کی ایک بات سامنے آئے.

گیتا سے پہلے میں ایک عام بات پر دھیان دلانا چاہتا ہوں وہ یہ کہ ہر ملک اپنی سرحدوں کی حفاظت اور ملک کے اندر امن قائم کرنے کے لئے ہر وقت ہر طرح سے چوکس رہتا ہے اور اس چوکسی کے لئے اپنے پاس طاقت بھی رکھتا ہے. اگر اس کام میں سستی ہوتی ہے تو دشمن حملہ کر کے غلام بنا لیتا ہے اور اندرون ملک ظالم فساد کرتے ہیں. اس لئے ہر ملک اپنی حفاظت میں چوکس رہتا ہے ایسے ہی آج اپنا بھارت بھی کر رہا ہے. جو ضروری ہے کیا یہ حفاظت کرنا اور حفاظت کرتے ہوئے حملہ کرنے والے کو مارنا غلط کام ہے؟ اگر ہے تو پھر اپنی ساری فوج کو ختم کر کے بیٹھ جاؤ اور شانتی شانتی کا جپ کرنا شروع کردو جیسے کبھی بھارت کا جپ تھا اور چین نے حملہ کر کے کافی رقبہ ہڑپ لیا تھا.

کیا اس شانتی کے جپ سے دشمن چلا جائے گا؟ ہرگز نہیں بلکہ وہ ملک کو غلام بنا لے گا. اس لئے دشمن کی گھات میں بیٹھنا اس کو مارنا اشانتی نہیں ہنسا نہیں بلکہ اہنسا ہے اور شانتی کو قائم رکھنا ہے اور یہی صلوٰۃ کا ایک حصہ ہے جس کو قائم کرنے کے لئے آیت میں ہے (۹:۵) میں مسجد والی صلوٰۃ کے لئے نہیں ہے. وہ تو مسلمان ہونے پر پڑھنی ہے کیا میرے بھارت کا یہ حفاظت والا کام غلط ہے؟ آچاریہ جی مجھے بتائیں؟ میرا بھارت جو بھی کر رہا ہے وہ قرآن کے مطابق کر رہا ہے اس لئے قرآن کی آیات پر اعتراض غلط ہے اب اشلوک ملاحظہ ہوں. گیتا

ادھیائے ۔۱، اشلوک ۴۱، ہے کرشن پاپ کے ادھک بڑھ جانے سے کل کی عورتیں زیادہ دوست ہو جاتی ہیں اور ہے وارسنے عورتوں کے دوست ہو جانے پر ورن شنکر پیدا ہوتا ہے.

اشلوک ۴۷، سنجے بولے رن بھومی میں غم زدہ ارجن اس پرکار کہہ کر بان سہت دھنش کو تیاگ کر رتھ کے پچھلے بھاگ میں بیٹھ گئے.

ادھیائے ۔۲، اشلوک ۲، شری بھگوان بولے ہے ارجن! تجھے اس وقت یہ موہ کس لئے حاصل ہوا؟ کیونکہ نہ تو یہ اچھے انسانوں دوارہ آچرت ہے اور نہ ہی سورگ کے دینے والا ہے اور نہ مقبول بنانے والا ہے.

اشلوک ۳، اس لئے ہے ارجن نامردوں کو پراپت نہ ہو تجھ میں یہ اچھا معلوم نہیں ہوتا ہے ہے پرنتپ دل کی تچھ کمزوری کو چھوڑ کر جنگ کے لئے کھڑا ہو

اشلوک ۴، ارجن بولے ہے مدھوسودن! میں رن بھومی میں کس طرح تیروں سے بھیشم پتامہ اور درونا چاریہ کے خلاف لڑوں گا؟ کیونکہ ہے اری سودن! وے دونوں ہی قابل احترام ہیں.

اشلوک ۵، اس لئے ان قابل احترام استادوں کو نہ مار کر میں اس دنیا میں بھیک مانگ کر کھانا بھی اچھا سمجھتا ہوں. کیونکہ ان قابل احترام ہستیوں کو مار کر بھی اس لوک میں خون سے سنے ہوئے ارتھ اور کام روپ بھوگوں کو ہی تو بھوگوں گا.

اشلوک ۶، ہم یہ بھی نہیں جانتے کہ ہمارے لئے جنگ کرنا اور نہ کرنا ان دونوں میں سے کون اچھا ہے اتھوا یہ بھی نہیں جانتے انہیں ہم جیتیں گے یا ہم کو وہ جیتیں

उन्हें हम जीतेंगे या हम को वह जीतेंगे और जिनको मार कर हम जीना भी नही चाहते, वे ही हमारे धृत निकटवर्ती राष्ट्र के पुत्र हमारे मुकाबले में खड़े है.

इश्लोक 18, इस नाश रहित अप्रेमेय नित्य स्वरूप जीवात्मा के ये सब शरीर नाशवान कहे गए हैं इसलिए हे भारतवंशी अर्जुन! तू युद्ध कर।

इश्लोक 31, तथा अपने धर्म को देखकर भी तू भय करने योग्य नही है अर्थात तुझे भय नही करना चाहिए क्योंकि क्षत्रियों के लिए धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर दूसरा कोई कल्याण कारी कर्तव्य नही है.

इश्लोक 32, हे पार्थ! अपने आप प्राप्त हुए और खुले हुए स्वर्ग के द्वार रूप इस प्रकार के युद्ध को भाग्यवान क्षत्रिय लोग ही पाते है.

इश्लोक 33, यदि तू इस धर्म युक्त युद्ध को नही करेगा तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा.

इश्लोक 34, तथा सब लोग तेरी बहुत काल तक रहने वाली अपकीर्ति का भी कथन करेंगे और माननीय पुरुष के लिए अपकीर्ति मरण से भी बढ़कर है.

इश्लोक 37, या तो युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा संग्राम में जीतकर पृथ्वी का राज्य भोगेगा, इस कारण हे अर्जुन तू युद्ध के लिए निश्चय करके खड़ा हो जा.

इश्लोक 38, हार जीत, लाभ हानि और सुख दुख को बराबर मान के इसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नही होगा.

आचार्य जी आप इन इश्लोकों को पढ़कर मनन करें कि आचार्य जी आपकी जो आपत्ति कुरआन की आयतों पर है जिनको आप कुरआन से निकलवाना चाहते है क्या वह उचित है? यदि ईमानदारी से विचार करोगे तो निःसन्देह आपको कहना पड़ेगा कि वह आयात जिन पर आप आपत्ति कर रहे है वह आयात देश और धर्म हित में बहुत ठीक है. जैसा कि गीता के इश्लोकों से भी स्पष्ट है और यदि अब भी आपको यही प्रतीत हो रहा है कि यह मिथ्या है तो आपको कौन समझाए इस प्रकार आप कुरआन पर आपत्ति नही कर रहे अपितु गीता पर भी आपकी आपत्ति है जो शायद आपको पक्षपात विद्वेष में नजर नही आ रहा है.

जब आप मेरा यह परामर्श जो ठीक है नही मानते तो यही हो सकता है कि आप स्वयं अपने नेताओं को आदेश दें कि देश की सीमाओं से अपनी सेनाओं को हटाकर बैठ जाएं और देश के अन्दर जो पुलिस है उसको समाप्त कर दें इससे आपकी दृष्टि में हिन्सा और अशान्ति हो रही है फिर देखिए कि क्या होता है पूरा देश अपने हाथ से निकल जाएगा और हम दास हो जाऐंगे, क्या यह ठीक होगा? कदापि यह ठीक नही है, अतः शत्रु को कुचलने के लिए और विद्रोह को समाप्त करने के लिए कुरआन की आयात और गीता के इश्लोक के अनुसार वह काम करते है जो इनमें अंकित है उन पर आपत्ति करना न्याय नही है आप कुरआन और गीता को समझें.

वैसे कही कही आयतों के अनुवाद भी कुछ अनुचित हो गए है परन्तु उनका अरबी लेख अपने स्थान पर ठीक है जिन अनुवादों को आपने भी लिखा है जैसे आयत (9:5) है परन्तु सब आयतों का अनुवाद अनुचित नही है, वह अपने स्थान पर उचित है, गीता से मेल खाता है अतः आप कुरआन का अरबी लेख देखें फिर बात करें.

आज सम्पूर्ण संसार में कुरआन की आयात के अनुसार ही रक्षा का कार्य हो रहा है और सैनिक प्रबन्ध चल रहा है जो पहली पुस्तकों से भी सिद्ध है पक्षपात को छोड़कर चिन्तन करें.

گے اور جن کو مار کر ہم جینا نہیں چاہتے. وے ہی ہمارے نزدیکی دھرت راشٹر کے پتر ہمارے مقابلہ میں کھڑے ہیں.

اشلوک ۱۸، اس ناش رہت اپر مئے نتئے سروپ جیواتما کے یہ سب شریر ناش وان کہے گئے ہیں اس لئے ہے بھرت ونشی ارجن! تو جنگ کر.

اشلوک ۳۱، تتھا اپنے دھرم کو دیکھ کر بھی تو ڈر کرنے قابل نہیں ہے ارتھات تجھے خوف نہیں کرنا چاہیے کیونکہ چھتری کے لئے دھارمک جنگ سے بڑھ کر کوئی دوسرا اچھا کام نہیں.

اشلوک ۳۲، ہے پارتھ! اپنے آپ پراپت ہوئے اور کھلے ہوئے سورگ کے دوار روپ اس پرکار کے یودھ کو بھاگئے وان چھتری لوگ ہی پاتے ہیں.

اشلوک ۳۳، اگر تو اس دھارمک جنگ کو نہیں کرے گا تو سودھرم اور کیرتی کو کھو کر پاپ کو پراپت ہوگا.

اشلوک ۳۴، تتھا سب لوگ تیری بہت کال تک رہنے والی اپ کیرتی کا بھی کتھن کریں گے. اور اچھے آدمیوں کے لئے اپ کیرتی مرنے سے بھی بڑھ کر ہے

اشلوک ۳۷، یا تو تو جنگ میں مارا جا کر سورگ کو پراپت ہوگا یا جنگ جیت کر زمین کا راج یہ کرے گا. اس لئے ہے ارجن تو جنگ کا پکا ارادہ کر کے کھڑا ہو جا

اشلوک ۳۸، جیت ہار فائدہ نقصان اور سکھ دکھ برابر مان کر اس کے بعد جنگ کے لئے تیار ہو جا. اس طرح جنگ کرنے سے تو پاپ کو پراپت نہیں ہوگا.

آچاریہ جی آپ ان اشلوکوں کو پڑھ کر غور کریں کہ آپ کے جو اعتراض قرآن کی آیتوں پر ہیں جن کو آپ قرآن سے نکلوانا چاہتے ہیں کیا وہ درست ہیں؟ اگر ایمانداری سے غور کرو گے تو یقیناً آپ کو کہنا پڑے گا کہ وہ آیات جن پر آپ اعتراض کر رہے ہیں وہ دیش اور دھرم ہت میں بہت ٹھیک ہیں جیسا کہ گیتا کے اشلوکوں سے بھی ظاہر ہے اور اگر اب بھی آپ کو یہی نظر آرہا ہے کہ یہ غلط ہیں تو آپ کو کون سمجھائے اس طرح آپ قرآن پر اعتراض نہیں کر رہے بلکہ گیتا پر بھی آپ کا اعتراض ہے جو شائد آپ کو ضد میں نظر نہیں آرہا ہے.

جب آپ میرا یہ مشورہ جو ٹھیک ہے نہیں مانتے تو یہی ہو سکتا ہے کہ آپ خود اپنے نیتاؤں کو یہ آدیش دیں کہ ملک کی سرحدوں سے اپنی فوجوں کو ہٹا کر بیٹھ جائیں اور اندروں ملک جو پولس ہے اس کو بھی ختم کر دیں اس سے آپ کی نظر میں ہنسا اور فساد ہو رہا ہے پھر دیکھئے کہ کیا ہوتا ہے پورا ملک اپنے ہاتھ سے نکل جائے گا اور ہم غلام ہو جائیں گے کیا یہ ٹھیک ہوگا؟ ہرگز یہ ٹھیک نہیں ہے. اس لئے دشمن کو اپنے سے دور رکھنے اور ملک کے اندر بغاوت کو کچلنے کے لئے قرآن کی آیات اور گیتا کے اشلوکوں کے مطابق وہ کام کرتے ہیں جو ان میں درج ہیں ان پر اعتراض کرنا انصاف نہیں ہے آپ قرآن اور گیتا کو سمجھیں.

ویسے کہیں کہیں آیتوں کا ترجمہ بھی کچھ غلط ہو گیا ہے مگر ان کا عربی متن اپنی جگہ پر ٹھیک ہے جن ترجموں کو آپ نے بھی لکھا ہے جیسے آیت (۹:۵) ہے مگر سب آیتوں کا ترجمہ غلط نہیں ہے وہ اپنی جگہ پر ٹھیک ہے گیتا سے میل کھاتا ہے اس لئے آپ قرآن کا عربی متن دیکھیں اور پھر بات کریں.

آج پوری دنیا میں قرآن کی آیات کے مطابق ہی حفاظت کا کام ہو رہا ہے اور فوجی نظام چل رہا ہے جو پہلی کتابوں سے بھی ثابت ہے تعصب کو چھوڑ کر غور کریں.

मैंने सलात का अर्थ मस्जिद में पढ़ी जाने वाली नमाज़ के साथ-साथ ईश्वर के हर आदेश का पालन भी लिखा है, इसका तर्क क्या है प्रस्तुत है अवलोकन हो, वैसे पहले भी लिखा जा चुका है किन्तु संक्षिप्त में और लिख दूं.

आयत (19:59) में लिखा है कि उन्होंने अपनी सलात को नष्ट कर दिया (11:87) में है कि जाति ने कहा ऐ शुऐब क्या तेरी सलात अर्थात तेरा जीवन व्यतीत करने का विधान यह सिखाता है कि हम अपनी मनमानी न करें और सारे देवताओं को छोड़ दें केवल एक ईश्वर को मान लें (11:88) में स्पष्ट है कि मैं सुधार करूं तो सलात का अर्थ सुधार करना भी है.

(23:1से11 और 70:22से35) और सूरत माऊन में इन्सान की सलात बताई है अर्थात सम्पूर्ण जीवन में दिन रात के कर्म जो ईश्वर की इच्छा के हैं वह सलात सामने आती है और (22:41) में है कि यह वह लोग हैं जिन्हें हम पृथ्वी में सत्ता दें तो नमाज़ सलात स्थापित करेंगे, नमाज़ पढ़ने पर ही तो ईश्वर उनसे प्रसन्न होगा और सत्ता देगा, तब वह सलात स्थापित करेंगे, अर्थात ईश्वर के आदेशानुसार कर्म और 24:55 से भी यह ही स्पष्ट है.

तो सिद्ध हुआ कि जिस सलात के स्थापित करने को कहा गया है वह ईश्वर के आदेशों का पालन है जीवन का कोई कोण इससे छूटने वाला नहीं और इस सलात में ही यह है अर्थात पृथ्वी में शान्ति स्थापित करना विद्रोहियों को कुचलना देश को अन्दरूनी और बाहरी खतरों से सुरक्षित रखना निर्धनों की सहायता करना और इस कार्य को करने में जो व्यय आए उसको देना, इत्यादि भी सलात है और इस सलात से ही (9:5) और इस जैसी आयात में तात्पर्य है न कि मुसलमान बनाकर मस्जिद वाली नमाज़ पढ़ना, ला इकराह फ़िद्दीन लकुम दिनुकुम वलीयादीन, (75:30,31;96:9,10) में सलात का अर्थ स्पष्ट है, 31:17 ऐ मेरे पुत्र तू नमाज़ स्थापित रखना अच्छे कर्मों का उपदेश करते रहना... इस आयत में ज़कात के स्थान पर अच्छे कर्म आया है अतः ज़कात का एक अर्थ अच्छे कर्म भी है.

میں نے صلوٰۃ کا مطلب مسجد میں پڑھی جانے والی نماز کے ساتھ ساتھ اللہ کے ہر احکام کی پابندی بھی لکھا ہے اس کی دلیل کیا ہے پیش ہے ملاحظہ ہو ویسے پہلے بھی لکھا جا چکا ہے مگر مختصراً اور لکھ دوں.

آیت (۵۹:۱۹) میں لکھا ہے کہ انہوں نے اپنی صلوٰۃ کو ضائع کر دیا (۸۷:۱۱) میں ہے کہ قوم نے کہا اے شعیب کیا تیری صلوٰۃ یعنی تیرا زندگی گزارنے کا طریقہ یہ سکھاتا ہے کہ ہم اپنی من مانی نہ کریں اور سارے معبودوں کو چھوڑ دیں صرف ایک اللہ کو مان لیں (۸۸:۱۱) میں صاف ہے کہ میں اصلاح کروں تو صلوٰۃ کا مطلب اصلاح کرنا بھی ہے (۲۳:۱ سے ۱۱) اور (۷۰:۲۲ سے ۳۵) اور سورت ماعون میں انسان کی صلوٰۃ بتائی ہے یعنی پوری زندگی میں دن رات کے عمل جو اللہ کی رضا کے ہیں وہ صلوٰۃ سامنے آتی ہے اور (۴۱:۲۲) میں ہے کہ یہ وہ لوگ ہیں جنہیں ہم زمین میں اقتدار دیں تو نماز صلوٰۃ قائم کریں گے نماز پڑھنے پر ہی تو اللہ ان سے خوش ہوگا اور اقتدار دے گا تب وہ صلوٰۃ قائم کریں گے یعنی اللہ کے حکم کے مطابق عمل اور (۵۵:۲۴) سے بھی یہ ہی ظاہر ہے.

تو ثابت ہوا کہ جس صلوٰۃ کے قائم کرنے کو کہا گیا ہے وہ اللہ کے احکام کی پابندی ہے زندگی کا کوئی گوشہ اس سے چھوٹنے والا نہیں اور اس صلوٰۃ میں ہی یہ ہے یعنی زمین میں امن قائم کرنا باغیوں کو کچلنا ملک کو اندرونی اور باہری خطروں سے محفوظ رکھنا غریبوں کی مدد کرنا اور اس کام کو کرنے میں جو خرچ آئے اس کو ادا کرنا وغیرہ بھی صلوٰۃ ہے اور اس صلوٰۃ سے ہی (۵:۹) اور اس جیسی آیات میں مراد ہے نہ کہ زبردستی مسلمان بنا کر مسجد والی نماز پڑھانا۔ [لا اکراہ فی الدین لکم دینکم ولی دین] [۷۵:۳۰،۳۱؛۹۶:۹،۱۰] میں صلوٰۃ کا مطلب صاف ہے (۱۷:۳۱) اے پیارے بیٹے! تو نماز قائم رکھنا اچھے کاموں کی نصیحت کرتے رہنا.... اس آیت میں زکوٰۃ کی جگہ اچھے کام آیا ہے اس لئے زکوٰۃ کا ایک مطلب امر بالمعروف بھی ہے۔

और यदि कोई अनेकेश्वर वादी तुमसे शरण चाहे तो उसको शरण दो यहां तककि वह ईश्वर का कलाम सुन ले तो उसको उसके ठिकाने पर पहुंचा दो इसलिए कि वह अनभिज्ञ है. (6)

भला अनेकेश्वर वादियों के लिए ईश्वर और उसके रसूल के निकट संधि क्यों कर (स्थापित) रह सकती है हां जिन लोगों के साथ तुमने मस्जिद सम्मानित के निकट संधि की है यदि वह (अपने वचन) पर स्थापित रहें तो तुमभी स्थापित रहो निःसंदेह ईश्वर सदाचारियों को मित्र रखता है (7)

परन्तु उनके अतिरिक्त दूसरे अनेकेश्वर वादीयों के साथ कोई संधि कैसे हो सकती है जबकि उनकी स्थिति यह है कि तुम पर अधिकार पर जाएं तो न तुम्हारे विषय में नाते का संकोच करें न किसी संधि के भार का? वह अपनी भाषा में तुमको प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं परन्तु उनके मन इनकार करते हैं और उनमें अधिकांश दुराचारी हैं. (8) {42:23}

اور اگر کوئی مشرک تم سے پناہ چاہے تو اس کو پناہ دو یہاں تک کہ وہ اللہ کا کلام سن لے تو اس کو اس کے ٹھکانے پر پہنچا دو اس لئے کہ وہ بے خبر ہیں (۶)

بھلا مشرکوں کے لئے اللہ اور اس کے رسول کے نزدیک عہد کیونکر (قائم) رہ سکتا ہے ہاں جن لوگوں کے ساتھ تم نے مسجد محترم کے نزدیک عہد کیا ہے اگر وہ (اپنے عہد) پر قائم رہیں تو تم بھی قائم رہو بے شک اللہ پرہیزگاروں کو دوست رکھتا ہے (۷)

مگر ان کے سوا دوسرے مشرکین کے ساتھ کوئی عہد کیسے ہو سکتا ہے جب کہ ان کا حال یہ ہے کہ تم پر قابو پا جائیں تو نہ تمہارے معاملہ میں کسی قرابت کا لحاظ کریں نہ کسی معاہدہ کی ذمہ داری کا؟ وہ اپنی زبانوں سے تم کو راضی کرنے کی کوشش کرتے ہیں مگر دل ان کے انکار کرتے ہیں اور ان میں اکثر فاسق ہیں (۸) [۴۲:۲۳]

वह ईश्वर की आयतों के बदले थोड़ा सा लाभ प्राप्त करते हैं और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं कुछ शंका नहीं कि जो काम वह करते हैं बुरे हैं (9)

وہ اللہ کی آیتوں کے بدلے تھوڑا سا فائدہ حاصل کرتے ہیں اور لوگوں کو اللہ کے رستے سے روکتے ہیں کچھ شک نہیں کہ جو کام وہ کرتے ہیں بُرے ہیں (۹)

वह लोग किसी आस्तिक के प्रति न तो सम्बन्धों का ध्यान रखते है न संधि का और वह वह है जो सीमा का उल्लंघन करने वाले है (10)
यदि वह लोग (अपनी बुरी करतूतो से) पश्चाताप करले (अर्थात उनको छोड़ दें) और संधि शांति का वातावरण स्थापित करें और यदि मुसलमान हो जाएं तो नमाज़ स्थापित करें और धर्मादाय दें तो वह भी तुम्हारे वैधानिक धार्मिक बन्धु है, और समझने वाले लोगों के लिए हम अपनी आयतें खोल कर वर्णन करने वाले है, (11)

وہ لوگ کسی مومن کے حق میں نہ تو رشتہ داری کا پاس کرتے ہیں نہ عہد کا اور وہ وہ ہیں جو حد سے تجاوز کرنے والے ہیں (١٠)
اگر وہ لوگ (اپنی بری حرکتوں سے) توبہ کرلیں (یعنی ان کو چھوڑ دیں) اور صلح سلامتی کا ماحول قائم کریں اور اگر مسلمان ہو جائیں تو نماز قائم کریں اور زکوٰۃ دیں تو وہ بھی تمہارے قانونی دینی بھائی ہیں اور سمجھنے والے لوگوں کے لئے ہم اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرنے والے ہیں (١١)

और यदि संधि का वचन करने के बाद अपना वचन तोड़ दे और तुम्हारे धर्म में व्यंग्य करने लगें तो उन कुफ्र के नेताओ से युद्ध करो, उनकी शपथों का कोई विश्वास नही विचित्र नही कि वह रुक जाएं (12)

اور اگر صلح کا عہد کرنے کے بعد اپنا عہد توڑ دیں اور تمہارے دین میں طعنے کرنے لگیں تو ان کفر کے سرداروں سے جنگ کرو۔ ان کی قسموں کا کچھ اعتبار نہیں ممکن ہے کہ اس طرح وہ بھی باز آجائیں (١٢)

(मुसलमानों!) क्या तुम ऐसे लोगों से नही लड़ोगे जिन्होंने अपनी शपथों को तोड़ डाला और ईश्वर के रसूल को देश से बाहर निकालने का षड्यंत्र किया और युद्ध में पहल भी उन्ही की ओर से हुई क्या तुम उनसे डर गए? यदि तुम आस्तिक हो तो ईश्वर इसका अधिक अधिकारी है कि तुम्हारे हृदय में उसका भय हो, (13)
(मुसलमानों!) उनसे लड़ो ईश्वर उनको तुम्हारे हाथो दण्ड देगा और उन्हें अपमानित करेगा और उनके विरुद्ध तुम्हारी सहयता करेगा और आस्तिकों के मनों से सारे दुख दर्द दूर कर देगा, (14)

(مسلمانو!) کیا تم ایسے لوگوں سے نہیں لڑو گے جنہوں نے اپنی قسموں کو توڑ ڈالا اور اللہ کے رسول کو وطن سے باہر نکالنے کی سازش کی اور لڑائی میں پہل بھی انہیں کی طرف سے ہوئی کیا تم ان سے ڈر گئے؟ اگر تم مومن ہو تو اللہ اس کا زیادہ حق دار ہے کہ تمہارے دلوں میں اس کا خوف ہو (١٣)
(مسلمانو!) ان سے لڑو اللہ ان کو تمہارے ہاتھوں عذاب دے گا اور انہیں رسوا کرے گا اور ان کے خلاف تمہاری مدد کرے گا اور ایمان والوں کے دلوں سے سارے دکھ دور کر دے گا (١٤)

और उनके मनों से क्रोध दूर कर देगा और जिसको चाहेगा ईश्वर अपनी दया से कृपा करेगा ईश्वर सब कुछ जानता है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही (15)

اور ان کے دلوں سے غصہ دور کر دے گا اور جس کو چاہے گا اللہ اپنی رحمت سے نوازے گا اللہ سب کچھ جانتا ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (١٥)

क्या तुम यह समझे बेठे हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे यद्यपि अब तक ईश्वर ने तुममें से उन्हें प्रमुख नही किया अर्थात उनको देखा जाएगा जो मुजाहिद है और ईश्वर और उसके रसूल और आस्तिकों के सिवा किसी को घनिष्ठ मित्र नही बनाया और ईश्वर तुम्हारे कार्यों से अवगत है (16)
अनेकेश्वर वादियों को यह अधिकार नही कि वह ईश्वर की मस्जिदों को आबाद करें जबकि वह स्वंय अपने कुफ्र का साक्ष्य दे रहे है उन लोगों के सब कर्म व्यर्थ है और वह सदैव नर्क में रहेंगे, (17)
ईश्वर की मस्जिदों को आबाद करने का अधिकार उन्ही लोगों को है जो ईश्वर और प्रलय के दिन पर विश्वास रखते हैं नमाज़ स्थापित करते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त किसी से नही डरते, आशा की जाती है कि वही वह लोग है जो पथ प्रदर्शन पाने वालों में होंगे, (18)
क्या तुमने हाजीयों को पानी पिलाना और मस्जिदे सम्मानित का महंत बनने को उस व्यक्ति के कर्मों जैसा समझ लिया है, जो ईश्वर पर और परलोक पर विश्वास रखता है और ईश्वर के मार्ग में धर्म

کیا تم یہ سمجھے بیٹھے ہو کہ تم چھوڑ دئے جاؤ گے حالانکہ اب تک اللہ نے تم میں سے انہیں ممتاز نہیں کیا یعنی ان کو دیکھا جائے گا جو مجاہد ہیں اور اللہ اور اس کے رسول اور مومنوں کے سوا کسی کو دلی دوست نہیں بنایا اور اللہ تمہارے کاموں سے واقف ہے (١٦)
مشرکوں کو یہ حق نہیں کہ وہ اللہ کی مسجدوں کو آباد کریں جب کہ وہ خود اپنے اوپر کفر کی گواہی دے رہے ہیں ان لوگوں کے سب اعمال بے کار ہیں اور وہ ہمیشہ دوزخ میں رہیں گے (١٧)
اللہ کی مسجدوں کو آباد کرنے کا حق انہیں لوگوں کو ہے جو اللہ اور قیامت کے دن پر ایمان رکھتے ہیں نماز قائم کرتے ہیں اور اللہ کے علاوہ کسی سے نہیں ڈرتے امید کی جاتی ہے کہ وہ وہ لوگ ہیں جو ہدایت پانے والوں میں ہوں گے (١٨)
کیا تم نے حاجیوں کو پانی پلانا اور مسجد محترم کی مجاوری کرنے کو اس شخص کے اعمال جیسا خیال کیا ہے جو اللہ پر اور روز آخرت پر ایمان رکھتا ہے اور اللہ کی راہ میں جہاد کرتا ہے؟ وہ لوگ اللہ کے نزدیک برابر نہیں ہیں اور اللہ

युद्ध करता है? वह लोग ईश्वर के निकट बराबर नही हैं और ईश्वर अन्यायी लोगों को मार्ग दर्शन नही करता (19)

जो लोग विश्वास लाए और पलायन किया और ईश्वर के मार्ग में धन और जान से धर्म युद्ध करते रहे ईश्वर के यहां उनके पद बहुत बड़े हैं और वही उद्देश्य प्राप्त करने वाले हैं (20)

उनका ईश्वर उनको अपनी दया की और प्रसन्नता की और स्वर्ग की शुभ सूचना देता है जिसमें उनके लिए सदैव रहने वाले प्रसाद होंगे (21)

वह उनमें सदैव रहेंगे ईश्वर के निकट निःसन्देह बहुत बड़ा फल है (22)

ऐ आस्था वालो! यदि तुम्हारे (माता) पिता और (बहन) भाई धर्म की तुलना में कुफ्र को पसन्द करें तो उनसे मित्रता न रखो इस स्पष्ट आदेश के बाद जो इस आदेश की अवहेलना करेगा तो वही अत्याचारी हैं (23)

कह दो कि यदि तुम्हारे पिता और पुत्र और भाई और स्त्रियां और परिवार के व्यक्ति और धन जो तुम कमाते हो और व्यापार जिसके बन्द होने से डरते हो और भवन जिनको पसन्द करते हो ईश्वर और उसके रसूल के और ईश्वर के मार्ग में धर्म युद्ध करने से तुम्हें अधिक प्रिय हैं तो रुके रहो यहां तक कि ईश्वर अपनी यातना भेजे और ईश्वर अवज्ञाकारी लोगों को पथ प्रदर्शन नही देता (24)

ईश्वर ने बहुत अवसरों पर तुम को सहायता दी है और हुनैन के दिन जब कि तुम को अपनी संख्या पर घमण्ड था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और धरती अतिरिक्त अपनी विस्तार के तुम पर तंग हो गई और स्वीकार किया फिर तुमने पीठ फेर कर भागना (25)

फिर ईश्वर ने अपनी ओर से सांत्वना अवतरित की अपने नबी पर और आस्तिकों पर और अपनी वह सेना भेजी जिसे तुम नहीं देख रहे थे और नास्तिकों को पूरा दण्ड दिया उन नास्तिकों का यही बदला है (26)

फिर ईश्वर का नियम जिसे चाहेगा उसके अपने अच्छे कर्मों पर पश्चाताप स्वीकार करेगा और ईश्वर बहुत बड़ा क्षमा करने वाला और बहुत बड़ा दया करने वाला है (27)

ऐ अस्तिको! अनेकेश्वर वादी अशुद्ध हैं (अर्थात अनेकेश्वर वादी रसूम और इस्लाम की शत्रुता ने उनकी आत्मा को अशुद्ध कर दिया है) अतः इस वर्ष के बाद वह काबा (में होने वाली बैठक) के पास न आने पाएं और यदि तुम को निर्धनता का डर हो तो ईश्वर चाहेगा तो तुम को अपनी कृपा से धनी कर देगा, निःसन्देह ईश्वर सब कुछ जानता और युक्ति वाला है (28) (नजिस) {5:90,95,9:125,10:100}

नोट-आयात में अनेकेश्वर वादियों को अशुद्ध बताया है अर्थात उनकी आत्मा और सोच अशुद्ध हो गई है और वह हर धर्म वादी के लिए अपने हृदयों में कपट रखते हैं हर प्रकार से हानि पहुंचाना चाहते हैं, उनको कुछ भी करना पड़े वह समय आने पर मित्र भी बन जाऐंगे और देखने में मुसलमान भी परन्तु उनकी एक पहचान बता दी गई है इससे उनको पहचान लो उनकी हानि से बचने के लिए पहचान यह है कि

ظالم لوگوں کی رہنمائی نہیں کرتا (۱۹)

جو لوگ ایمان لائے اور ہجرت کی اور اللہ کی راہ میں مال اور جان سے جہاد کرتے رہے اللہ کے یہاں ان کے درجے بہت بڑے ہیں اور وہی مراد پانے والے ہیں (۲۰)

ان کا پروردگار ان کو اپنی رحمت کی اور خوشنودی کی اور جنت کی خوشخبری دیتا ہے جن میں ان کے لئے ہمیشہ رہنے والی نعمتیں ہوں گی (۲۱)

وہ ان میں ہمیشہ رہیں گے اللہ کے نزدیک یقیناً بہت بڑا اجر ہے (۲۲)

اے ایمان والو! اگر تمہارے (ماں) باپ اور (بہن) بھائی ایمان کے مقابلہ میں کفر کو پسند کریں تو ان سے دوستی نہ رکھو اس کھلے حکم کے بعد جو اس حکم سے روگردانی کرے گا تو وہی ظالم ہیں (۲۳)

کہہ دو کہ اگر تمہارے باپ اور بیٹے اور بھائی اور عورتیں اور خاندان کے آدمی اور مال جو تم کماتے ہو اور تجارت جس کے بند ہونے سے ڈرتے ہو اور مکانات جس کو پسند کرتے ہو اللہ اور اس کے رسول سے اللہ کی راہ میں جہاد کرنے سے تمہیں زیادہ عزیز ہیں تو ٹھہرے رہو یہاں تک کہ اللہ اپنا عذاب بھیجے اور اللہ نافرمانوں کو ہدایت نہیں دیتا (۲۴)

اللہ نے بہت سے موقعوں پر تم کو مدد دی ہے اور حنین کے دن جب کہ تم کو اپنی کثرت پر غرور تھا تو وہ تمہارے کچھ بھی کام نہ آئی۔ اور زمین باوجود فراخی کے تم پر تنگ ہوگئی اور اختیار کیا تم نے پیٹھ پھیر کر بھاگنا (۲۵)

پھر اللہ نے اپنی طرف سے تسکین اپنے نبی پر اور مومنوں پر اتاری اور اپنے وہ لشکر بھیجے جنہیں تم نہیں دیکھ رہے تھے اور کافروں کو پوری سزا دی ان کفار کا یہی بدلہ تھا (۲۶)

پھر اللہ کا قانون جسے چاہے گا اس کے اپنے اچھے عمل پر توبہ قبول فرمائے گا اور اللہ بہت بڑا بخشنے والا اور بہت بڑا رحم کرنے والا ہے (۲۷)

اے ایمان والو! مشرک نجس ہیں (یعنی مشرکانہ رسوم اور اسلام دشمنی نے ان کی روح کو ناپاک کر دیا ہے) لہٰذا اس برس کے بعد وہ خانہ کعبہ (میں ہونے والی شوریٰ) کے پاس نہ آنے پائیں اور اگر تم کو مفلسی کا ڈر ہو تو اللہ چاہے گا تو تم کو اپنے فضل سے غنی کر دے گا بے شک اللہ سب کچھ جانتا اور حکمت والا ہے (۲۸) (نجس) [۵:۹۰،۹۵، ۹:۱۲۵، ۱۰:۱۰۰]

نوٹ:۔ آیت میں مشرکوں کو نجس بتایا ہے یعنی ان کی روح اور سوچ ناپاک ہوگئی ہے اور وہ ہر ایمان والے کے لئے اپنے دلوں میں کینہ رکھتے ہیں ہر طرح سے نقصان پہنچانا چاہتے ہیں چاہے ان کو کچھ بھی کرنا پڑے وہ وقت آنے پر دوست بھی بن جائیں گے اور بظاہر مسلمان بھی۔ مگر ان کی ایک پہچان بتا دی گئی ہے اس

سے ان کو پہچان لوان کے نقصان سے بچنے کے لئے، پہچان یہ ہے کہ ان کی بول چال، چال چلن سے پہچان لو گے(۴۷:۳۰)

اب ضروری ہوگیا ہے کہ وہ اس سال کے بعد مسجد حرام میں داخل نہ ہوں؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ اب تمہارے لئے ایک اسلامی حکومت قائم ہوگئی ہے اور جس طرح ہر حکومت اپنے حکومت کے کام چلانے کے لئے اپنے پروگرام بناتی ہے کہ آئندہ سال کسی سے دوستی کی جائے گی کن شرائط کے ساتھ اور کس سے جنگ ہوگی کن حالات میں اور کیا کیا ہتھیار بنانے ہیں ہتھیار بنانے کے کارخانے کہاں ہوں گے ان ہتھیاروں کو کہاں رکھا جائے گا۔ دشمنوں کی نگرانی کیسے ہوگی۔ خفیہ محکمہ کس علاقے میں کن خفیہ لفظوں کے ساتھ اپنی سرگرمی رکھے گا کس پر نظر رکھنی ہے۔ بہرحال ہر طرح کے پروگرام بنیں گے۔ اس لئے اس علاقے اور اس میٹنگ میں صرف مومن ہی جا سکتا ہے اگر مشرک جائے گا تو وہ ان رازوں کو ظاہر کر دے گا ان پر جن کے ساتھ اس کو ہمدردی ہوگی۔

حج کے موقعہ پر ہر حاجی پر ایسی پابندی تو لگانی بڑی مشکل ہے تو پھر اللہ کا حکم کیسے پورا ہوگا؟ اس کے لئے کرنا یہ ہے کہ ہر علاقے سے عام حاجیوں کے علاوہ کچھ ایسے آدمی چن کر الگ حج کے لئے روانہ ہوں گے جو اس علاقے کی نمائندگی کریں گے اور جن پر پورا یقین ہوگا کہ یہ مخلص مومن ہیں غداری نہیں کریں گے کیونکہ اس نشست گاہ میں سارے حاجیوں کو تو جگہ نہیں ملے گی۔ اور ہر آدمی جانتا ہے کہ جو اہم میٹنگ ہوتی ہے اس میں چنے ہوئے آدمی ہی جاتے ہیں ایسے ہی یہ میٹنگ ہے۔ اس طرح حکومت کا پروگرام طے ہوگا اور اس کو راز میں رکھا جائے گا اور حکومت فیل نہ ہوگی۔

باقی جو آدمی حج کے لئے جائیں گے وہ اپنا حج کریں گے اور جو ان کو بتایا جائے گا جو بتانا ضروری ہوگا جس کے ظاہر ہونے سے حکومت پر کوئی برا اثر نہ پڑتا ہو۔ یہ ہے مشرکوں کو اس اہم میٹنگ میں روکنے کا مقصد۔

اگر کوئی حکومت یہ چاہے کہ حج میں کوئی مشرک نہ جائے تو یہ ناممکن ہے کیونکہ حج کے لئے ہر ملک سے آدمی آئے گا۔ آپ کیسے جانیں گے کہ ان میں کون مشرک ہے اور کون مومن۔ دوسرے ملک میں بھی مسلمان رہتے ہیں وہاں سے بھی حج کے لئے آئیں گے اور وہاں کی حکومت کسی جاسوس کو حاجی بنا کر بھیج دے گی۔ اس لئے جہاں پر پابندی کو کہا ہے وہ خاص جگہ ہے اور وہ وہی ہے جس کو دارالشوریٰ کہتے ہیں دارالشوریٰ میں صرف چنے ہوئے تصدیق شدہ آدمی ہی جائیں گے اور وہ حج بھی کریں گے۔

اس سے یہ بھی ثابت ہوا کہ مسلم حکومت صرف ایک ہی امیر کے تحت رہے گی الگ الگ حکومت سنت کے خلاف ہے جیسے آج ہے آج مسلم حکومتوں میں بہت دشمنی ہے تو اس دشمنی کے ہوتے ہوئے بھی اس پابندی پر عمل نہ ہو سکے گا۔ کیونکہ بہت سے مسلم ممالک کی غیر مسلموں سے دوستی ہے اور مسلموں سے دشمنی ایسی حالت میں ان پروگراموں کو اس مسلم حکومت کے آدمی اپنے دوست ممالک کو بتادیں گے اور وہ غیر مسلم ممالک ان مسلم ملکوں سے مل کر نقصان پہنچائیں گے اس لئے بڑے غور فکر کے بعد ہر کام کرنا چاہیے اور اللہ کا ہر کام مصلحت لئے ہوئے ہے اور یہی مصلحت وحی خفی ہے۔

جس طرح قرآن کے بہت سے حکموں کی خلاف ورزی مسلمان

उनकी बोल-चाल, चाल-चलन से पहचान लोगे (47:30)

अब अनिवार्य हो गया है कि वह इस वर्ष के बाद सम्मान वाली मस्जिद में प्रविष्ट न हों? इसका कारण यह है कि अब तुम्हारे लिए एक इस्लामी राज्य स्थापित हो गया है, और जिस प्रकार हर राज्य अपने राज्य का प्रबन्ध करने के लिए अपने कार्य कर्म बनाता है कि भविष्य में किससे मित्रता की जाएगी किन प्रतिबन्धों के साथ और किससे युद्ध होगा किन स्थितियों में और क्या क्या शस्त्र बनाने हैं शस्त्र बनाने के लिए शिल्प शाला कहां होंगे, उन शस्त्रों को कहां रखा जाएगा शत्रुओं की देखभाल कैसे होगी, गुप्त चर विभाग किस क्षेत्र में किन गुप्त शब्दों के साथ अपना प्रयास रखेगा, किस पर दृष्टि रखनी है अस्तु हर प्रकार के कार्य कर्म बनेंगे अतः इस क्षेत्र और सभा में केवल आस्तिक ही जा सकता है यदि अनेकेश्वर वादी जाएगा तो वह उन भेदों को प्रकट कर देगा उन पर जिनके साथ उसकी सहानुभूति होगी,

हज के अवसर पर हर हाजी पर ऐसा प्रतिबन्ध लगाना बड़ा कठिन है तो फिर ईश्वर का आदेश कैसे पूरा होगा? इसके लिए करना यह है कि हर क्षेत्र से सामान्य हाजियों के अतिरिक्त कुछ ऐसे आदमी चुन कर पृथक हज के लिए प्रेषित किए जाएंगे जो उस क्षेत्र की नुमाइन्दगी करेंगे और जिन पर पूरा विश्वास होगा कि यह विश्वास पात्र आस्तिक हैं विश्वास घात नही करेंगे, क्योंकि उस सभा में सारे हाजियों को तो स्थान नही मिलेगा और हर व्यक्ति जानता है कि जो महत्वपूर्ण सभा होती है उसमें चुने हुए व्यक्ति ही जाते हैं ऐसे ही यह सभा है इस प्रकार राज्य का कार्य कर्म बनेगा और उसको गुप्त रखा जाएगा और शासन असफल न होगा,

शेष जो व्यक्ति हज के लिए जाएंगे वह अपना हज करेंगे और जो उनको बताया जाएगा जो बताना अनिवार्य होगा जिसके प्रकट होने से राज्य पर कोई बुरा प्रभाव न पड़ता हो, यह है अनेकेश्वर वादियों की इस महत्वपूर्ण सभा में रोकने का अर्थ,

यदि कोई राज्य यह चाहे कि हज में कोई अनेकेश्वर वादी न जाए तो यह सम्भव नही है क्योंकि हज के लिए हर देश से आदमी आएगा आप कैसे जानेंगे कि इनमें कौन अनेकेश्वर वादी है और कौन आस्तिक दूसरे देश में भी मुस्लिम रहते हैं, वहां से भी हज के लिए आएंगे और वहां का राज्य किसी गुप्तचर को हाजी बनाकर भेज देगा, अतः जहां पर प्रतिबन्ध को कहा है वह महत्वपूर्ण स्थान है और वह वही है जिसको मंत्रणा भवन कहते हैं मंत्रणा भवन में केवल चुने हुए प्रमाणित व्यक्ति ही जाएंगे और वह हज भी करेंगे,

इससे यह भी सिद्ध हुआ कि मुस्लिम राज्य केवल एक ही नायक के आधीन रहेगा पृथक-पृथक राज्य नियम के विपरीत है जैसे आज है आज मुस्लिम राज्यों में बहुत शत्रुता है तो इस शत्रुता के होते हुए भी इस प्रतिबन्ध पर कार्य न हो सकेगा, क्योंकि बहुत से मुस्लिम देशों की गैर मुस्लिमों से मित्रता है और मुस्लिमों से शत्रुता ऐसी स्थिति में उन कार्य कर्मों को वह मुस्लिम राज्य के व्यक्ति अपने मित्र देशों को बता देंगे और वह गैर मुस्लिम देश उन मुस्लिम देशों से मिलकर हानि पहुंचाएंगे अतः बड़े मनन चिन्तन के बाद हर कार्य करना चाहिए और ईश्वर का हर कार्य उद्देश्य लिए हुए होता है, और यही युक्ति वही खफी है,

जिस प्रकार कुरआन के बहुत से आदेशों की अवहेलना

मुसलमान कर रहे हैं इस प्रकार ही इस आयत की भी अवहेलना हो रही है अतः मुस्लिमों के साथ ईश्वर की सहायता नही है ईश्वर की सहायता जब ही आती है जब पूरे इस्लाम पर कार्य किया जाता है अधूरे इस्लाम पर कार्य से ईश्वर की सहायता नही होती, अतः जितना शीघ्र हो सके पूर्ण इस्लाम पर कर्म करना आरम्भ कर दिया जाए अनेकेश्वर वादियों के दाखिले पर प्रतिबन्ध इस लिए भी है कि वह बुत परस्ती करते हैं, यदि उन को दाखिले की अनुमति होगी तो वह मूर्तीपूजा को जारी रखने का प्रयत्न करेंगे.

کررہے ہیں اس طرح ہی اس آیت کی بھی خلاف ورزی ہو رہی ہے اس لئے مسلمانوں کے ساتھ اللہ کی مدد نہیں ہے اللہ کی مدد جب ہی آتی ہے جب پورے اسلام پر عمل کیا جاتا ہے۔ادھورے اسلام پر عمل سے اللہ کی مدد نہیں ہوتی اس لئے جتنا جلد ہو سکے پورے اسلام پر عمل کرنا شروع کر دیا جائے مشرکوں کے داخلہ پر پابندی اس لئے بھی ہے کہ وہ بت پرستی کرتے ہیں اگر ان کو داخلے کی اجازت ہوگی تو وہ بت پرستی کو جاری رکھنے کی کوشش کریں گے.

जिन लोगों को पुस्तक दी गई है जो न तो ईश्वर पर आस्था रखते है न प्रलय के दिन पर और न उन वस्तुओं को अवैध समझते है जिन्हें ईश्वर ने रसूल के द्वारा (उनकी पुस्तकों में) अवैध किया है और न ईश्वर के सच्चे धर्म शान्ति का अनुकरण करते है उनसे भी युद्ध करो यहां तक कि वह अवज्ञा अशान्ति फैलाना छोड़ दें और प्रसन्नता से तुम्हारे देश में रहते हुए धरती का लगान दें कास्तकार बन कर और घमण्ड न करें शान्ति से रहें. (29)

جن لوگوں کو کتاب دی گئی ہے جو نہ تو اللہ پر ایمان رکھتے ہیں نہ آخرت کے دن پر اور نہ ان چیزوں کو حرام سمجھتے ہیں جنہیں اللہ نے رسول کے ذریعہ (ان کی کتابوں میں) حرام کیا ہے اور نہ اللہ کے سچے دین سلامتی کی پیروی کرتے ہیں ان سے بھی جنگ کرو یہاں تک کہ وہ سرکشی کو چھوڑ دیں اور خوشی سے تمہارے ملک میں رہتے ہوئے زمین کا لگان دیں کاشتکار بن کر اور تکبر نہ کریں امن سے رہیں (۲۹)

यहूदी कहते है कि उज़ैर ईश्वर का पुत्र है और ईसाई कहते है मसीह ईश्वर का पुत्र है यह उनकी बातें केवल मुख से निकली हुई है उनसे पहले नास्तिकों ने जैसी बातें कही थी वह लोग उनका अनुकरण कर रहे है उनको ईश्वर नष्ट करे वह कहां बहके जो रहे है. (30)

उन्होंने अपने पण्डितों और सन्तों को ईश्वर के साथ रब बना रखा है और मसीह पुत्र मरयम को भी (रब बना रखा है) यद्यपि उनको यह आदेश दिया गया था कि अकेले ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा न करें, परन्तु वह कहते है ईश्वर नही है तो सुनो निःसंदेह ईश्वर है और वह उन लोगों के साझी निर्धारित करने से पवित्र है. (31) {3:79, 4:117, 5:159, 16:50-51, 30:31-32, 42:21 15:18,87 3:64, 7:3}

یہودی کہتے ہیں کہ عزیر اللہ کا بیٹا ہے اور عیسائی کہتے ہیں مسیح اللہ کا بیٹا ہے یہ ان کی باتیں صرف منہ سے نکلی ہوئی ہیں ان سے پہلے کافروں نے جیسی باتیں کہی تھیں وہ لوگ ان کی نقل کر رہے ہیں ان کو اللہ ہلاک کرے وہ کہاں بہکے جا رہے ہیں (۳۰)

انہوں نے اپنے علماء اور مشائخ کو اللہ کے ساتھ رب بنا رکھا ہے اور مسیح ابن مریم کو بھی (رب بنا رکھا ہے) حالانکہ ان کو یہ حکم دیا گیا تھا کہ اللہ واحد کے سوا کسی کی عبادت نہ کریں لیکن وہ کہتے ہیں اللہ نہیں ہے تو سنو یقیناً اللہ ہے اور وہ اُن لوگوں کے شریک مقرر کرنے سے پاک ہے (۳۱) [۳:۷۹؛۴:۱۱۷؛۵:۱۵۹؛۱۶:۵۰،۵۱؛۳۰:۳۱،۳۲؛۴۲:۲۱؛۱۵:۱۸،۸۷؛۳:۶۴؛۷:۳]

वह चाहता है कि ईश्वर के नूर को अपने मुख से बुझा दें और ईश्वर अपने प्रकाश को पूर्ण किए बिना रहने का नही यद्यपि नास्तिकों को बुरा ही लगे (32) {24:31}

वही तो है जिसने अपने रसूल को सत्य धर्म दे कर इस आदेश के साथ प्रेषित किया कि इस सत्य धर्म को सम्पूर्ण धर्मों अर्थात लोगों के अपने बनाए हुए विधानों पर प्रभुत्वशाली प्रकट करें यद्यपि नास्तिकों को बुरा लगे. (33) अर्थात अब किसी दूसरे स्वंय बनाए हुए विधान पर व्यवहार न होगा {24:35}

وہ چاہتے ہیں کہ اللہ کے نور کو اپنے منہ سے بجھا دیں اور اللہ اپنے نور کو پورا کئے بغیر رہنے کا نہیں اگرچہ کافروں کو بُرا ہی لگے (۳۲) [۲۴:۳۵]

وہی تو ہے جس نے اپنے رسول کو دین حق دے کر اس ہدایت کے ساتھ بھیجا کہ اس دین حق کو تمام دینوں یعنی لوگوں کے اپنے بنائے ہوئے قانونوں پر غالب ظاہر کرے اگرچہ کافروں کو بُرا لگے (۳۳) یعنی اب کسی دوسرے خود بنائے ہوئے قانون پر عمل نہ ہوگا [۲۴:۳۵]

आस्तिकों! बहुत से ज्ञानी और सन्त लोगों का धन अनुचित खाते है और उनको ईश्वर के मार्ग से रोकते है और जो लोग सोना और चांदी संग्रह करते है और उसको ईश्वर के मार्ग में व्यय नही करते उनको उस दिन की बड़ी यातना की सूचना सुना दो (34)

जिस दिन वह माल नर्क की अग्नि में गर्म किया जाएगा फिर उससे उन कृपणों की ललाट और पहलू और पीठों को दागा जाएगा (और कहा

مومنو! بہت سے عالم اور مشائخ لوگوں کا مال ناحق کھاتے ہیں اور ان کو اللہ کی راہ سے روکتے ہیں اور جو لوگ سونا اور چاندی جمع کرتے ہیں اور اس کو اللہ کے راستے میں خرچ نہیں کرتے ان کو اس دن کے عذاب الیم کی خبر سنا دو (۳۴)

جس دن وہ مال دوزخ کی آگ میں گرم کیا جائے گا پھر اس سے ان بخیلوں کی پیشانیاں اور پہلو اور پیٹھیں داغی

जाएगा कि) यह वही है जो तुमने अपने लिए एकत्र किया था सो जो तुम संग्रह करते थे अब उसका स्वाद चखो (35)
जिस दिन से ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया है उसी दिन से ईश्वर की पुस्तक प्राकृति में महीनों की संख्या बारह है (लिखी हुई) इन बारह महीनों में चार महीने सम्मान के है यही धर्म का सीधा मार्ग है तो इन महीनों में (युद्ध करके) अपने ऊपर अत्याचार न करो और तुम सब के सब संयुक्त होकर अनेकेश्वर वादीयों से युद्ध करो जिस प्रकार वह सब तुमसे युद्ध करते है (परन्तु अवज्ञा न करना) और जान लो कि ईश्वर उन्ही लोगों का साथ देता है जो सदाचारी है (36) {4:23}

جائیں گی (اورکہاجائے گا کہ) یہ وہی ہے جوتم نے اپنے لئے جمع کیا تھا سو جوتم جمع کرتے تھے اب اس کا مزہ چکھو (۳۵)
جس روز سے اللہ نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے اسی دن سے اللہ کی کتاب کائنات میں مہینوں کی گنتی بارہ ہے (لکھی ہوئی) ان بارہ مہینوں میں چار مہینے حرمت کے ہیں یہی دین کا سیدھا رستہ ہے تو ان مہینوں میں (جنگ کر کے) اپنے اوپر ظلم نہ کرو، اور تم سب کے سب متحد ہو کر مشرکوں سے جنگ کرو جس طرح وہ سب تم سے جنگ کرتے ہیں (لیکن نافرمانی نہ کرنا) اور جان لو کہ اللہ انہیں لوگوں کا ساتھ دیتا ہے جو پرہیزگار ہیں (۳۶) [۴:۲۳]

शान्ति के किसी महीने को हटा कर पीछे कर देना कुफ्रे में वृद्धि करना है इससे नास्तिक भ्रम में पड़े रहते है एक वर्ष तो उसको वैध समझते है और दूसरे साल अवैध ताकि सम्मान के महीने की संख्या जो ईश्वर ने निर्धारित की है गणना पूरी कर लें, और जो ईश्वर ने वर्जित किया है उसको वैध कर लें, उनके बुरे कर्म उनको भले दिखाई देते है और ईश्वर का नियम नास्तिकों को मार्ग दर्शन नही देता, (37)

امن کے کسی مہینے کو ہٹا کر آگے پیچھے کر دینا کفر میں اضافہ کرنا ہے اس سے کافر گمراہی میں پڑے رہتے ہیں ایک سال تو اس کو حلال سمجھتے ہیں اور دوسرے سال حرام تاکہ ادب کے مہینوں کی تعداد جو اللہ نے مقرر کی ہے گنتی پوری کرلیں، اور جو اللہ نے منع کیا ہے اس کو جائز کرلیں ان کے برے اعمال ان کو بھلے دکھائی دیتے ہیں اور اللہ کا قانون کافروں کو ہدایت نہیں دیتا (۳۷)

ऐ लोगो! जो विश्वास लाए हो तुम्हारे लिए यह ठीक ही नही है कि जब तुम से ईश्वर के मार्ग में निकलने के लिए कहा जाएगा तो क्या तुम भूमि से चिमट कर रह जाओगे? क्या तुम परलोक की तुलना में दुनिया के जीवन को पसन्द कर सकते हो? यदि ऐसा है तो तुम्हें ज्ञात हो कि दुनिया के जीवन की यह सब सामग्री प्रलय में बहुत थोड़ी निकलेगी (38) अतः तुम अवश्य निकलोगे,
और तुम जानते हो कि यदि तुम न उठोगे तो ईश्वर तुम्हें पीड़ा देने वाला दण्ड देगा, और तुम्हारे स्थान पर किसी और दल को उठाएगा, और तुम ईश्वर का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे (यद्यपि तुम आस्तिक हो ईश्वर की अवज्ञा कभी नही करोगे और उसके आदेश के अनुसार हर दशा में युद्ध के लिए निकले हो और निकलोगे क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे लिए यही नियम निर्धारित किया है) ईश्वर हर वस्तु के नियम निर्धारित करने वाला है (और जब से निकलना छोड़ दिया अपमानित हो गए (39)

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو تمہارے لئے یہ مناسب ہی نہیں ہے کہ جب تم سے اللہ کی راہ میں نکلنے کے لئے کہا جائے گا تو تم زمین سے چمٹ کر رہ جاؤ گے؟ کیا تم آخرت کے مقابلہ میں دنیا کی زندگی کو پسند کر سکتے ہو؟ زندگی کا یہ سب سروسامان آخرت میں بہت تھوڑا نکلے گا (۳۸) اس لئے تم ضرور نکلو گے ‘
اور تم جانتے ہو کہ اگر تم نہ اٹھو گے تو اللہ تمہیں دردناک سزا دے گا اور تمہاری جگہ کسی اور گروہ کو اٹھائے گا اور تم اللہ کا کچھ بھی نہ بگاڑ سکو گے (حالانکہ تم مومن ہو اللہ کی نافرمانی کبھی نہیں کرو گے اور اس کے حکم کے مطابق ہر حال میں جنگ کے لئے نکلے ہو اور نکلو گے کیونکہ اللہ نے تمہارے لئے یہی ضابطہ مقرر کیا ہے) اللہ ہر چیز کے قانون مقرر کرنے والا ہے (اور جب سے نکلنا چھوڑ دیا ذلیل ہو گئے) (۳۹)

क्या ऐसा हो सकता है कि तुम रसूल की सहायता न करोगे? परन्तु तुम नबी की सहायता अवश्य करोगे जैसा कि (8:62) से प्रकट होता है और ईश्वर तो उनका सहायक है ही (और वह समय तुम को याद होगा) जब उनको नास्तिकों ने घर से निकाल दिया जब निकले तो उस समय वह साथ दो ही व्यक्ति थे जिनमें (एक अबुबकर थे) और दूसरे (स्वयं रसूल) जब वह दोनों गुफा (सूर) में थे, उस समय रसूल अपने साथी को सांत्वना देते थे इसलिए कि साथी को यह भय था कि रसूल को कोई कष्ट न पहुंच जाए तो रसूल ने कहा क्योंकि रसूल को ईश्वर पर पूरा विश्वास था कि तुम शोक न करो, ईश्वर हमारे साथ है तो ईश्वर ने उन पर सांत्वना अवतरित की और उनकी ऐसी सैनाओं से सहायता दी जो तुम को चितवन न आते थे और नास्तिकों की बात को पराजित कर दिया और बात तो ईश्वर ही की श्रेष्ठ है और ईश्वर शक्तिशाली युक्ति वाला है (40) {8:62,30}

کیا ایسا ہو سکتا ہے کہ تم رسول کی مدد نہ کرو گے؟ مگر تم نبی کی مدد ضرور کرو گے۔ جیسا کہ (۸:۶۲) سے ظاہر ہوتا ہے اور اللہ تو ان کا مددگار ہے ہی (اور وہ وقت تم کو یاد ہوگا) جب ان کو کافروں نے گھر سے نکال دیا جب نکلے تو اس وقت وہ ساتھ دو ہی شخص تھے جن میں (ایک ابوبکر تھے) اور دوسرے (خود رسول) جب وہ دونوں غار سور میں تھے اس وقت رسول اپنے رفیق کو تسلی دیتے تھے کہ اس لئے کہ ساتھی کو یہ ڈر تھا کہ رسول کو کوئی گزند نہ پہنچ جائے تو رسول نے کہا کیوں کہ رسول کو اللہ پر پورا یقین تھا کہ تم غم نہ کرو اللہ ہمارے ساتھ ہے تو اللہ نے ان پر تسلی نازل فرمائی اور اُن کو ایسے لشکروں سے مدد دی جو تم کو نظر نہ آتے تھے اور کافروں کی بات کو پست کر دیا اور بات تو اللہ ہی کی بلند ہے اور اللہ زبردست حکمت والا ہے (۴۰) [۸:۶۲، ۳۰]

(आस्तिको!) हलके हो या भारी अपने घरों से निकलो और ईश्वर के मार्ग में धन और जी से परिश्रम करो यदि समझो तो यह तुम्हारे लिए बहुतअच्छा है (41)

(مسلمانو!) ہلکے ہو یا بھاری اپنے گھروں سے نکلو اور اللہ کی راہ میں مال اور جان سے جہاد کرو. اگر سمجھو تو یہ تمہارے حق میں بہت بہتر ہے (۴۱)

ऐ नबी! यदि लाभ मिलना सरल होता और यात्रा भी सुगम होती तो वह तुम्हारे साथ चल देते, परन्तु यात्रा उनको दूर दिखाइ दी और कठिन हो गई, अब वह ईश्वर की शपथ खाकर कहेंगे कि यदि हम शक्ति रखते तो आपके साथ अवश्य निकल पड़ते, वह अपने आपको विनाश में डाल रहे है, ईश्वर उत्तम जानता है कि वह झूटे है (42)

اے نبی! اگر فائدہ ملنا آسان ہوتا اور سفر بھی ہلکا ہوتا تو وہ تمہارے ساتھ چل دیتے لیکن مسافت اُن کو دور نظر آئی اور مشکل ہوگئی اب وہ اللہ کی قسم کھا کر کہیں گے کہ اگر ہم طاقت رکھتے تو آپ کے ساتھ ضرور نکل پڑتے وہ اپنے آپ کو ہلاکت میں ڈال رہے ہیں اللہ خوب جانتا ہے کہ وہ جھوٹے ہیں (۴۲)

ऐ नबी ईश्वर ने आपके लिए यह अनुकम्पा और दया कर रखी है क्षमा किया (अर्थात आज्ञा तो दे रखी है कि जिसको चाहो आज्ञा दो और जिसको चाहो न दो स्थिति को देखकर (24:62) परन्तु तुम ने उन्हें शीघ्र आज्ञा क्यों दे दी? (तुम स्वयं आज्ञा न देते वह तो स्वयं ही जाते) और तुम पर स्वयं ही प्रकट हो जाता कि कौन लोग सच्चे है और झूटों को भी तुम जान लेते (43) {47:30}

اے نبی اللہ نے تمہارے لئے یہ رحمت اور شفقت کر رکھی ہے (یعنی اجازت تو دے رکھی ہے کہ جس کو چاہو اجازت دو اور جس کو چاہو نہ دو حالات کو دیکھ کر ۲۴:۶۲) مگر تم نے انہیں جلدی اجازت کیوں دے دی؟ (تم خود رخصت نہ دیتے وہ تو خود ہی جاتے) اور تم پر خود ہی ظاہر ہو جاتا کہ کون لوگ سچے ہیں اور جھوٹوں کو بھی تم جان لیتے (۴۳) [۴۷:۳۰]

जो लोग ईश्वर और परलोक पर आस्था रखते है वह तो कभी तुम से प्रार्थना न करेंगे कि उन्हें अपनी जान और माल के साथ धर्म युद्ध करने से पृथक रखा जाए ईश्वर सदाचारियों को उत्तम जानता है (44)

جو لوگ اللہ اور روز آخرت پر ایمان رکھتے ہیں وہ تو کبھی تم سے درخواست نہ کریں گے کہ انہیں اپنی جان و مال کے ساتھ جہاد کرنے سے معاف رکھا جائے اللہ متقیوں کو خوب جانتا ہے (۴۴)

(हर बात स्पष्ट होती जा रही है ईश्वर ने अपने नबी को अन्धाकार में नही रखा)
आज्ञा वही लोग मांगते हैं जो ईश्वर पर और पिछले दिन पर विश्वास नही रखते और उनके मन भ्रम में पड़े हुए है सो वह अपने भ्रम में डांवा डोल हो रहे हैं (45)

(ہر بات صاف ہوتی جا رہی ہے اللہ نے اپنے نبی کو تاریکی میں نہیں رکھا) اجازت وہی لوگ مانگتے ہیں جو اللہ پر اور پچھلے دن پر ایمان نہیں رکھتے اور ان کے دل شک میں پڑے ہوئے ہیں. سو وہ اپنے شک میں ڈانواں ڈول ہو رہے ہیں (۴۵)

और यदि वह निकलने का संकल्प करते तो उसके लिए सामान तैयार करते (परन्तु उनका इरादा नही था तैयारी न की) अतः ईश्वर के नियम ने उनका उठना पसन्द ही न किया अतः उन्हें गतिविधि से ही रोक दिया और कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे रहो (46)

اور اگر وہ نکلنے کا ارادہ کرتے تو اس کے لئے سامان تیار کرتے (لیکن ان کا ارادہ نہیں تھا تیاری نہ کی) اس لئے اللہ کے قانون نے ان کا اٹھنا پسند ہی نہ کیا اس لئے انہیں حرکت سے ہی روک دیا اور کہہ دیا گیا کہ تم بیٹھنے والوں کے ساتھ بیٹھے ہی رہو (۴۶)

यदि वह लोग निकल भी पड़ते तो तुम्हारे लिए विकार उत्पन्न करते और प्रयास करते कि तुम्हारे बीच अशांति व उपद्रव उत्पन्न हो जाए उनके गुप्तचर भी तुम में मिले हुए हैं ईश्वर उन अत्याचारियों को अच्छा जानता है (47)

اگر وہ لوگ نکل بھی پڑتے تو تمہارے لئے خرابی پیدا کرتے اور کوشش کرتے کہ تمہارے درمیان فتنہ وفساد پیدا ہو جائے. ان کے جاسوس بھی تم میں ملے ہوئے ہیں اللہ ان ظالموں کو خوب جانتا ہے (۴۷)

और यह सत्य है कि उन लोगों ने इससे पहले भी अशान्ति व उपद्रव उत्पन्न करने का प्रयास किया था और तुम्हारे विरुद्ध भांति भांति से उलट फेर करते रहे हैं अन्ततः सत्य प्रकट हो गया और (उनकी चालों के अतिरिक्त) ईश्वर का आदेश नियम प्रभुत्वशाली रहा यद्यपि वह बुरा मानते रहे (48)

اور یہ حقیقت ہے کہ ان لوگوں نے اس سے پہلے بھی فتنہ وفساد برپا کرنے کی کوشش کی تھی اور تمہارے خلاف طرح طرح سے الٹ پھیر کرتے رہے ہیں آخر کار حق ظاہر ہو گیا اور (ان کی چالوں کے باوجود) اللہ کا حکم غالب رہا اگرچہ وہ بُرا مانتے رہے (۴۸)

उनमें कोई ऐसा भी है जो कहता है कि मुझे आज्ञा दीजिए और मुझे अशांति में न डालिए देखों वह विपत्ति में पड़ गए है और नर्क सब नास्तिकों को घेरे हुए है (49)

ان میں کوئی ایسا بھی ہے جو کہتا ہے مجھے اجازت دیجئے اور مجھے فتنہ میں نہ ڈالئے. دیکھو وہ آفت میں پڑ گئے ہیں اور دوزخ سب کافروں کو گھیرے ہوئے ہے (۴۹)

यदि तुम्हें कोई भलाई पहुंच जाए तो उन्हें बुरा लगे और यदि कोई कष्ट आ जाए तो कहने लगे हमने तो इससे बचने के लिए पहले ही से प्रबन्ध कर

اگر تمہیں کوئی بھلائی پہنچ جائے تو انہیں بُرا لگے اور اگر کوئی مصیبت پیش آ جائے تو کہنے لگیں ہم نے تو اس سے بچنے کے لئے پہلے ہی سے انتظام کر لیا تھا اور خوشی مناتے

लिया था और हर्ष मानते हुए लौट जाऐंगे (50)

कह दो कि हम को कोई कष्ट नही पहुंच सकता परन्तु वही जो ईश्वर के नियम ने हमारे लिए लिख दिया है वही हमारा स्वामी व सहायक है और आस्तिकों को ईश्वर ही का भरोसा रखना चाहिए (51)

कह दो कि तुम हमारे लिए जिस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो (कि हम बध कर दिए जाऐं) वह इसके सिवा क्या है कि हमारे लिए दो भलाईयों में से एक है (धर्म योद्धा या शहीद) और हम तुम्हारे लिए इस बात की प्रतीक्षा में है कि ईश्वर अपने पास से तुम पर कोई कष्ट अवतरित करे या हमरे हाथों से दिलवाए तो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करते हैं (52)

कहदोकि तुम (धान) हर्ष से व्यय करो या रूष्टता से तुमसे कदपि स्वीकार न किया जाएगा तुम अवज्ञा कारी लोग हो (53)

उन लोगों का व्यय करना इस कारण स्वीकार नही किया गया कि उन लोगों ने ईश्वर और रसूल के आदेश को मानने से इनकार कर दिया, और नमाज़ में भी सम्मिलित होते हैं तो आलसी व शिथिल हो कर और व्यय भी करते हैं तो हृदय की अप्रियता के साथ (54)

तुम उनके माल और औलाद से आश्चर्य न करना, ईश्वर चाहता है कि उन वस्तुओं से दुनिया के जीवन में उनको दण्ड दे और उनकी जान निकले तो वह काफिर ही हो (55)

और ईश्वर की शपथ खाते हैं कि हम तुम ही में से हैं, यद्यपि वह तुममें से नही हैं सत्य यह है कि वह डरपोक हैं (56)

और यदि उनको कोई बचाओ का स्थान (दुर्ग आदि) या गुफा या छुप रहने का कोई बिल मिल जाए तो वह उस ओर रस्सियां तुड़ाते हुए भाग कर उसमें शरण ले लें, (57)

और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि दान (के विभाजन) में तुम पर आरोप लगाते हैं यदि उनको उसमें से मिल जाए तो प्रसन्न रहें और यदि न मिले तो झट रूष्ट हो जाए (58) {59:7}

यदि ऐसा होता कि जो कुछ ईश्वर और ईश्वर के रसूल ने उन्हें दिया था उस पर प्रसन्न हो जाते और कहते कि हमारे लिए ईश्वर प्रयाप्त है ईश्वर अपनी कृपा से हमें प्रदान करेगा अपने रसूल के द्वारा हम तो ईश्वर ही से आस लगाए बैठे हैं (59) {597}

दान तो निर्धनों और अश्रितों और दान के कार्य के कर्मचारियों का अधिकार है और उन लोगों का जिन की हृदय ग्रहिता करना हो (अर्थात किसी को किसी प्रकार की सांसारिक हानी हो - जानी या माली तो उस को सहायता दी जाती है) और दासों को स्वतंत्र करने में और ऋण ग्राहीयों के लिए और ईश्वर के मार्ग में और पात्रीयों की सहायता में ईश्वर की ओर से नियुक्त कर दिए गए हैं और ईश्वर जानने वाला युक्ति वाला है (60)

उनमें से कुछ लोग हैं जो अपनी बातों से नबी को दुख देते हैं और कहते हैं यह व्यक्ति कान है, अर्थात कानों का कच्चा है और (अधिक सुनता

ہوئے لوٹ جائیں گے(۵۰)

کہدو کہ ہم کو کوئی مصیبت نہیں پہنچ سکتی مگر وہی جو اللہ کے قانون نے ہمارے لئے لکھ دی ہے وہی ہمارا آقا وکارساز ہے اور مومنوں کو اللہ ہی کا بھروسہ رکھنا چاہیے(۵۱)

کہدو کہ تم ہمارے حق میں جس بات کا انتظار کر رہے ہو (کہ ہم قتل کردئے جائیں) وہ اس کے سوا کیا ہے کہ ہمارے لئے دو بھلائیوں میں سے ایک ہے (غازی یا شہید) اور ہم تمہارے حق میں اس بات کے منتظر ہیں کہ اللہ اپنے پاس سے تم کو کوئی سزا دے یا ہمارے ہاتھوں سے دلوائے تو تم بھی انتظار کرو ہم بھی تمہارے ساتھ انتظار کرتے ہیں(۵۲)

کہدو کہ تم (مال) خوشی سے خرچ کرو یا ناخوشی سے تم سے ہرگز قبول نہ کیا جائے گا تم نافرمان ہو(۵۳)

ان لوگوں کا خرچ کرنا اس لئے قبول نہیں کیا گیا کہ ان لوگوں نے اللہ اور رسول کے احکام کو ماننے سے انکار کردیا اور نماز میں بھی شریک ہوتے ہیں تو سست وکاہل ہوکر اور خرچ بھی کرتے ہیں تو دل کی ناگواری کے ساتھ(۵۴)

تم ان کے مال اور اولاد سے تعجب نہ کرنا اللہ چاہتا ہے کہ ان چیزوں سے دنیا کی زندگی میں ان کو عذاب دے اور ان کی جان نکلے تو وہ کافر ہی ہوں(۵۵)

اور اللہ کی قسمیں کھاتے ہیں کہ ہم تم ہی میں سے ہیں حالانکہ وہ تم میں سے نہیں ہیں اصل یہ ہے کہ وہ ڈرپوک ہیں(۵۶)

اگر ان کو کوئی بچاؤ کی جگہ (مثلاً قلعہ) یا غار یا چھپ رہنے کا کوئی سوراخ مل جائے تو وہ اس طرف رسیاں تڑاتے ہوئے بھاگ کر اس میں پناہ لے لیں(۵۷)

اور ان میں کچھ ایسے بھی ہیں کہ صدقات (کی تقسیم) میں تم پر الزام لگاتے ہیں اگر ان کو اس میں سے مل جائے تو خوش رہیں اگر نہ ملے تو جھٹ خفا ہو جائیں(۵۸)[۵۹:۷]

اگر ایسا ہوتا کہ جو کچھ اللہ اور اللہ کے رسول نے انہیں دیا تھا اس پر راضی ہو جاتے اور کہتے کہ ہمارے لئے اللہ کافی ہے اللہ اپنے فضل سے ہمیں عطا فرمائے گا اپنے رسول کے ذریعہ ہم تو اللہ ہی سے لو لگائے بیٹھے ہیں(۵۹)[۵۹:۷]

صدقات تو مفلسوں اور محتاجوں اور کارکنان صدقات کا حق ہے اور ان لوگوں کا جن کی تالیف قلب منظور ہو (یعنی کسی کو کسی طرح کا دینوی نقصان ہو جانی یا مالی تو اس کو امداد دی جاتی ہے) اور غلاموں کے آزاد کرنے میں اور قرضداروں کے لئے اور اللہ کی راہ میں اور مسافروں کی مدد میں اللہ کی طرف سے مقرر کردئے گئے ہیں اور اللہ جاننے والا حکمت والا ہے(۶۰)

ان میں سے کچھ لوگ ہیں جو اپنی باتوں سے نبی کو دکھ دیتے ہیں اور کہتے ہیں یہ شخص کان ہے (یعنی کانوں کا کچا

है) कहो वह तुम्हारी भलाई के लिए ऐसा है, (और सत्य बात सुन कर स्वीकार करता है) ईश्वर पर विश्वास रखता है और सर्वथा करुणा है उन लोगों के लिए जो तुममें से आस्तिक है और जो लोग ईश्वर के रसूल को दुख देते है उनके लिए दुख देने वाले दण्ड है (61)

ہےاور زیادہ سنتا ہے) کہو وہ تمہاری بھلائی کے لئے ایسا ہے (اور حق بات سن کر قبول کرتا ہے) اللہ پر ایمان رکھتا ہےاور اہل ایمان پر اعتماد رکھتا ہےاور سراسر رحمت ہےان لوگوں کے لئے جو تم میں سے ایمان دار ہیں اور جو لوگ اللہ کے رسول کو دکھ دیتے ہیں ان کے لئے دردناک سزا ہے(۶۱)

नोट- वह कान का कच्चा है का अर्थ यह है कि वह सुनने वाला है मुहम्मद स0 ने अपने चारो ओर की स्थिति की जानकारी के लिए एक व्यवस्था स्थापित की थी और उस व्यवस्था में सहाबा कराम जो सच्चे थे कपटियों की सत्य सूचनाएं मुहम्मद स0 को लाकर दिया करते थे जो वह मुहम्मद स0 और मुसलमानों के विरुद्ध परामर्श करते थे उन समाचारों से कपटियों की पोल खुलती थी और उनकी धुर्त्तता से सुचित होकर मुहम्मद स0 उनसे बचाओ का प्रबन्ध करते थे इस बात पर कपटि मुहम्मद स0 को कहते थे कि यह तो सुनी सुनाई बातों पर कार्य करते है, अर्थात कानो का कच्चा है जो कोई कही से सूचना लाकर देता है उस पर विश्वास करता है और यह भी कहते थे कि इसको हर बात का पता चल जाता है, क्या इसके कान बड़े है मुहम्मद स0 ने यह व्यवस्था इसलिए स्थापित की है कि किसी आशंका के आने से पहले ही इसकी सूचना पाकर उससे बचने का प्रबद्ध किया जाए तो यह आस्तिकों के लिए अनुकम्पा है देखिए मुहम्मद स0 ने क्या व्यवस्था स्थापित की थी जिस पर दुनिया ने अपना गुप्तचर विभाग स्थापित किया है और लाभकारी है,

نوٹ: ۔وہ کان ہےیا کان کا کچا ہےکا مطلب یہ ہے کہ وہ سننےوالا ہےمحمدؐ نے گرد وپیش کے حالات کی معلومات کے لئے ایک نظام قائم کیا تھا اور اس نظام میں صحابہ کرام جو سچے تھے منافقین کی صحیح خبریں محمدؐ کو لا کر دیا کرتے تھے جو وہ محمد اور مسلمانوں کے خلاف مشورے کرتے تھے ان خبروں سے منافقوں کی پول کھلتی تھی اور ان کی مکاریوں سے آگاہ ہو کر محمدؐ ان سے بچاؤ کا انتظام کرتے تھے اس بات پر منافق محمدؐ کو کہتے تھے کہ یہ تو سنی سنائی باتوں پر عمل کرتے ہیں یعنی کانوں کا کچا ہے۔ جو کوئی کہیں سے خبر لا کر دیتا ہے اس پر یقین کرتا ہےاور یہ بھی کہتے تھے کہ اس کو ہر بات کا پتہ چل جاتا ہے کیا اس کے کان بڑے ہیں یعنی کان ہے اس پر اللہ نے یہ کہا ہے کہ محمدؐ نے یہ نظام اس لئے قائم کیا ہے کہ کسی خطرے کے آنے سے پہلے ہی اس کی خبر پا کر اس سے بچنے کا انتظام کیا جائے۔ تو یہ مومنین کے لئے رحمت ہے دیکھئے محمدؐ نے کیسا نظام قائم کیا تھا جس پر دنیا نے اپنا خفیہ محکمہ قائم کیا ہےاور مفید ہے۔

आस्तिको! वह लोग ईश्वर की शपथें खाकर तुम्हें प्रसन्न करना चाहेंगे यद्यपि यदि वह आस्तिक होते तो उन्हें ज्ञात होता कि ईश्वर और उसका ईशदूत इस बात के अधिक अधिकारी है कि उनको प्रसन्न किया जाए (62)

مومنو! وہ لوگ اللہ کی قسمیں کھا کر تمہیں راضی کرنا چاہیں گے حالانکہ اگر وہ مومن ہوتے تو انہیں معلوم ہوتا کہ اللہ اور اس کا رسول اس بات کے زیادہ حقدار ہیں کہ ان کو راضی کیا جائے(۶۲)

क्या वह लोग अब तक इतनी बात भी नही समझ सके कि जो कोई ईश्वर और उसके रसूल का सामना करता है तो उसके लिए नर्क की आग तैयार है उसमें वह सदैव रहेगा, यह बड़ी रुसवाई है (63)

کیا وہ لوگ اب تک اتنی بات بھی نہیں سمجھ سکے کہ جو کوئی اللہ اور اس کے رسول کا مقابلہ کرتا ہےتو اس کے لئے جہنم کی آگ تیار ہے اس میں وہ ہمیشہ رہےگا یہ بڑی رسوائی ہے(۶۳)

कपटि डरते रहते है कि उन (के रसूल) पर कही कोई ऐसी सूरत अवतरित न हो जाए कि उनके मन की बातों को उन पर प्रकट कर दें कह दो कि हंसी किए जाओ, जिस बात से तुम डरते हो ईश्वर उसको अवश्य ही प्रकट कर देगा (64)

منافق ڈرتے رہتے ہیں کہ ان (کے رسول) پر کہیں کوئی ایسی سورت نازل نہ ہو جائے کہ ان کے دل کی باتوں کو ان پر ظاہر کردے۔ کہدو کہ ہنسی کئے جاؤ جس بات سے تم ڈرتے ہو اللہ اس کو ضرور ظاہر کردے گا(۶۴)

और यदि तुम उनसे ज्ञात करो तो कहेंगे कि हम तो यूं ही बात चीत और दिल्लगी करते थे, कहो क्या तुम ईश्वर और उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसी करते थे (65)

اور اگر تم ان سے دریافت کرو تو کہیں گے کہ ہم تو یوں ہی بات چیت اور دل لگی کرتے تھے کہو کیا تم اللہ اور اس کی آیتوں اور اس کے رسول سے ہنسی کرتے تھے(۶۵)

बहाने मत बनाओ तुम शान्ति का अनुबन्ध को गृहण करने के बाद उससे विमुख हो चुके हो, यदि हम तुम में से एक दल को (जो पश्चाताप कर ले अर्थात अनुबन्ध में प्रविष्ट हो जाए) को क्षमा कर दें तो दूसरे दल (जो अपने अनुबन्ध तोड़ने पर जमा रहे) को दण्ड भी देंगे क्योंकि वह पाप करता रहा है (66)

بہانے مت بناؤ تم معاہدہ میں داخل ہونے کے بعد اس سے منحرف ہو چکے ہو اگر ہم تم میں سے ایک جماعت کو (جو توبہ کر لے یعنی معاہدہ امن میں داخل ہو جائے) کو معاف کردیں تو دوسری جماعت (جو اپنی معاہدہ شکنی کفر پر جمی رہے) کو سزا بھی دیں گے کیونکہ وہ گناہ کرتے رہے ہیں(۶۶)

कपटि नर और कपटि नारी एक दूसरे के सह जाति (एक ही स्वभाव के हैं) है बुराई का आदेश देंगे अच्छी बातों से रोकेंगें और व्यय करने से अपनी मुट्ठियां बन्द रखेंगे उन्होंने ईश्वर को भुला रखा है अतः ईश्वर ने भी भुला दिया, सत्य यह है कि

منافق مرد اور منافق عورتیں ایک دوسرے کے ہم جنس (ایک ہی مزاج کے ہیں) ہیں برائی کا حکم دیں گے اچھی باتوں سے روکیں گے اور خرچ کرنے سے اپنی مٹھیاں بند رکھیں گے انہوں نے اللہ کو بھلا رکھا ہے اس لئے اللہ نے بھی

कपटि अवज्ञाकार है (67)
ईश्वर ने कपटि पुरुषों और कपटि स्त्रीयों और नास्तिकों से नर्क की अग्नि का वचन किया है, जिसमें वह सदैव रहेंगे, और यही उनके योग्य है उन पर ईश्वर की धिक्कार है उनके लिए ऐसा दण्ड है जो कभी समाप्त न होगा, (68)
(कपटियों!) तुम्हारी दशा भी वैसी ही है जैसी उन लोगों की थी जो तुमसे पहले हो चुके है वह शक्ति में तुमसे बहुत बढ़ कर और धन और सन्तान में तुमसे कही अधिक थे, सो उन्होंने अपने भाग्य का लाभ उठा लिया सो जिस प्रकार तुमसे पहले लोग अपने भाग्य से लाभ उठा चुके है तुमने भी अपने भाग्य से लाभ उठा लिया, और जिस प्रकार मिथ्या पूजा की बातों में वह डूबे रहे इसी प्रकार तुम भी डूबे रहे वही वह लोग है, जिनके कर्म दुनिया और परलोक में नष्ट हो गए और वही लोग हानी उठाने वाले है, (69)
क्या कपटियों के पास उन लोगों की सूचनाएं नही पहुंची जो उन से पहले हो चुके है, जाति नूह जाति आद जाति समूद जाति इब्राहीम मद्यन के लोग और वह लोग जिन की बस्तियां उलट दी गई थी? उन जातियों के पास उन के रसूल खुली हुई स्मृतियां लेकर आए (परन्तु उन्होंने न माना) और ईश्वर ऐसा न है कि उन पर अत्याचार करें परन्तु वह स्वंय ही अपने ऊपर अन्याय करने वाले थे (70)
आस्तिक पुरुष और आस्तिक स्त्रीयां एक दूसरे के मित्र है नेकी का आदेश देते है बुराई से रोकते है नमाज़ स्थापित करते है, दान देते है ईश्वर और उसके ईशदूत की आज्ञा मानते है वही लोग है जिन पर निकट ही ईश्वर कृपा करेगा, निःसंदेह ईश्वर सब पर अधिकार प्राप्त है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही (71)
ईश्वर ने आस्तिक पुरुषों और आस्तिक स्त्रीयों के लिए उपवनों का वचन किया है जिनके नीचे नहरे बह रही है वह उनमें सदैव रहेंगे, उनके रहने के लिए सदैव का स्वर्ग है अच्छे भवन होंगे, और उन सबसे बढ़ कर ईश्वर की प्रसन्नता वही सबसे बड़ी सफलता है (72)
ऐ रसूल! काफिरो और कपटियों से कठोरता के साथ युद्ध करो और उनका स्थान नर्क है और वह बहुत बुरा स्थान है (73)
वह ईश्वर की शपथे खा कर कहते है कि उन्होंने कुछ नही कहा यद्यपि उन्होंने कुफ्र का शब्द कहा और वह शान्ति का अनुबन्ध करने के बाद विमुख हो गए (अर्थात संधि करने के बाद संधि से निकल गए) और ऐसी बात का प्रयत्न कर चुके है जिस पर अधिकार नही पा सके और उन्होंने (आस्तिकों में) क्या बुराई देखी है अतिरिक्त इसके कि ईश्वर ने अपनी कृपा से और उसके ईशदूत ने उनको धनी कर दिया है तो यदि वह लोग पश्चाताप कर लें

انہیں بھلا دیا حقیقت یہ ہے کہ منافق نافرمان ہیں (۶۷)
اللہ نے منافق مردوں اور منافق عورتوں اور کافروں سے آتش جہنم کا وعدہ کیا ہے جس میں وہ ہمیشہ رہیں گے اور یہی ان کے لائق ہے ان پر اللہ کی لعنت ہے ان کے لئے ایسا عذاب ہے جو کبھی ختم نہ ہوگا (۶۸)
(منافقو!) تمہارا حال بھی ویسا ہی ہے جیسا ان لوگوں کا تھا جو تم سے پہلے گزر چکے ہیں وہ طاقت میں تم سے بہت بڑھ کر اور مال واولاد میں تم سے کہیں زیادہ تھے سو انہوں نے اپنے حصہ کا فائدہ اٹھالیا سو جس طرح تم سے پہلے لوگ اپنے حصہ سے فائدہ اٹھا چکے ہیں تم نے بھی اپنے حصہ سے فائدہ اٹھالیا. اور جس طرح باطل پرستی کی باتوں میں وہ ڈوبے رہے اسی طرح تم بھی ڈوبے رہے. وہ وہ لوگ ہیں جن کے اعمال دنیا اور آخرت میں اکارت گئے اور وہی لوگ نقصان اٹھانے والے ہیں (۶۹)
کیا منافقوں کے پاس ان لوگوں کی خبریں نہیں پہنچی جو ان سے پہلے ہو چکے ہیں. قوم نوح قوم عاد قوم ثمود قوم ابراہیم مدین کے لوگ اور وہ لوگ جن کی بستیاں الٹ دی گئیں تھیں؟ ان قوموں کے پاس ان کے رسول کھلی ہوئی نشانیاں لے کر آئے (مگر انہوں نے نہ مانا) اور اللہ ایسا نہ ہے کہ ان پر ظلم کرے مگر وہ خود ہی اپنے اوپر ظلم کرنے والے تھے (۷۰)
مومن مرد اور مومن عورتیں ایک دوسرے کے دوست ہیں نیکی کا حکم دیتے ہیں برائی سے روکتے ہیں نماز قائم کرتے ہیں زکوٰۃ ادا کرتے ہیں اور اللہ اس کے رسول کی اطاعت کرتے ہیں وہی لوگ ہیں جن پر عنقریب اللہ رحم فرمائے گا بے شک اللہ سب پر غالب ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۷۱)
اللہ نے مومن مردوں اور مومن عورتوں کے لئے باغوں کا وعدہ کیا ہے جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں وہ ان میں ہمیشہ رہیں گے. ان کے رہنے کے لئے ہمیشہ کی جنت ہیں اچھے مکانات ہوں گے اور ان سب سے بڑھ کر اللہ کی رضا مندی وہی سب سے بڑی کامیابی ہے (۷۲)
اے رسول! کافروں اور منافقوں سے سختی کے ساتھ جہاد کرو اور ان کا ٹھکانہ جہنم ہے اور وہ بہت بُری جگہ ہے (۷۳)
وہ اللہ کی قسمیں کھا کر کہتے ہیں کہ انہوں نے کچھ نہیں کیا حالانکہ انہوں نے کفر کا کلمہ کہا اور وہ سلامتی کا معاہدہ کرنے کے بعد منحرف ہو گئے (یعنی صلح کرنے کے بعد صلح سے نکل گئے) اور ایسی بات کا قصد کر چکے ہیں جس پر قدرت نہیں پا سکے. اور انہوں نے (مسلمانوں میں) کیا بُرائی دیکھی ہے سوا اس کے کہ اللہ نے اپنے فضل سے اور اس کے

(उस उपद्रव से जो वह करते हैं) तो यह उनके लिए अच्छा होगा और यदि मुख फेर ले तो ईश्वर उनको दुनिया और परलोक में दुख देने वाला दण्ड देगा, और धरती में उनका कोई सहायक और मित्र न होगा. (74)

رسول نے ان کو دولت مند کردیا ہے تو اگر وہ لوگ توبہ کرلیں (اس فساد سے جو وہ کرتے ہیں) تو یہ ان کے حق میں اچھا ہوگا۔اور اگر منہ پھیرلیں تو اللہ ان کو دنیا اور آخرت میں دکھ دینے والا عذاب دے گا۔اور زمین میں ان کا کوئی دوست اور مددگار نہ ہوگا (۷۴)

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने ईश्वर से प्रण किया था कि यदि वह हमें अपनी कृपा से (धन) देगा तो हम अवश्य दान करेंगे और हम सदाचारियों में हो जाएंगे (75)

اوران میں ایسے بھی ہیں جنہوں نے اللہ سے عہد کیا تھا کہ اگر وہ ہمیں اپنے فضل سے (مال) عطا کرے گا تو ہم ضرور خیرات کریں گے اور ہم نیک کرداروں میں ہو جائیں گے (۷۵)

परन्तु जब ईश्वर ने उन्हें अपने कृपा दया से दिया तो उसमें कृपणता करने लगे और अपने वचन से विमुखता करके फिर गए (76)

لیکن جب اللہ نے انہیں اپنے فضل سے دیا تو اس میں بخل کرنے لگے اور اپنے عہد سے روگردانی کر کے پھر گئے (۷۶)

(उनकी अवज्ञा का) यह फल निकला कि ईश्वर ने उनके मनों में उस दिन तक के लिए कपट उत्पन्न कर दिया जब वह ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत होंगे इसलिए कि उन्होंने ईश्वर से जो वचन किया था उसे पूरा नहीं किया और इसलिए भी कि वह झूठ बोला करते थे (77)

(ان کی سرکشی کا) نتیجہ یہ نکلا کہ اللہ نے ان کے دلوں میں اس روز تک کے لئے نفاق ڈال دیا جب وہ اللہ کے روبرو حاضر ہوں گے۔اس لئے کہ انہوں نے اللہ سے جو عہد کیا تھا اسے پورا نہیں کیا اور اس لئے بھی کہ وہ جھوٹ بولا کرتے تھے (۷۷)

क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं कि ईश्वर उनके भेदों और मंत्रणाओं तक से अवगत है यह कि ईश्वर सबसे बड़ा परोक्ष ज्ञानी है (78)

کیا انہیں یہ نہیں معلوم کہ اللہ ان کے بھیدوں اور مشورہ تک سے واقف ہے اور یہ کہ اللہ سب سے بڑا غیب داں ہے (۷۸)

जो (सम्पन्न) मुसलमान दिल खोल के दान करते हैं और जो (निर्धन) केवल इतना ही कमाते हैं जितनी श्रमवृत्ति करते हैं और थोड़ी सी कमाई में से भी व्यय करते हैं उन पर जो कपटि हैं उनका उपहास उड़ाते हैं और हंसते हैं (किन्तु सत्य यह है कि) ईश्वर उनकी ओर से उनको स्वयं अपमानित कर रहा है (कि अपमान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं) उनके लिए कष्ट देने वाला दण्ड है (79)

جو (خوش حال) مسلمان دل کھول کر خیرات کرتے ہیں اور جو (غریب) صرف اتنا ہی کما سکتے ہیں جتنی مزدوری کرتے ہیں اور تھوڑی سی کمائی میں سے بھی خرچ کرتے ہیں ان پر جو منافق ہیں ان کا مذاق اڑاتے ہیں اور ہنستے ہیں (لیکن حقیقت یہ ہے کہ) اللہ ان کی طرف سے ان کو خود ذلیل کر رہا ہے (کہ ذلت کی زندگی گذار رہے ہیں) ان کے لئے دردناک عذاب ہے (۷۹)

ऐ नबी तुम चाहे ऐसे लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या न करो यदि तुम सत्तर बार भी उन्हें क्षमा कर देने की प्रार्थना करोगे तो ईश्वर उन्हें कदापि क्षमा न करेगा, इसलिए कि उन्होंने ईश्वर और उसके ईशदूत के साथ इनकार किया और ईश्वर कपटियों को मुक्ति का मार्ग नहीं देता (80) {9:84,95,96;63:6}

اے نبی تم خواہ ایسے لوگوں کے لئے معافی کی درخواست کرو یا نہ کرو اگر تم ستر بار بھی انہیں معاف کر دینے کی درخواست کرو گے تو اللہ انہیں ہرگز معاف نہ کرے گا اس لئے کہ انہوں نے اللہ اور اس کے رسول کے ساتھ کفر کیا اور اللہ منافقوں کو راہ نجات نہیں دیتا (۸۰) [۹:۸۴،۹۵،۹۶؛۶۳:۶]

(जिन लोगों ने बहाने बनाए थे उन बहानों पर) जिन लोगों को पीछे रह जाने की आज्ञा दे दी गई थी वह ईश्वर के रसूल का साथ न देने और घर बैठे रहने पर प्रसन्न हुए और उन्हें अच्छा न लगा कि ईश्वर के मार्ग में जान व माल से धर्म युद्ध करें उन्होंने लोगों से कहा कि इस कठोर गरमी में न निकलो, उनसे कहो कि नर्क की अग्नि इससे अधिक गर्म है काश उन्हें इसका ज्ञान होता (81)

(جن لوگوں نے بہانے بنائے تھے ان بہانوں پر) جن لوگوں کو پیچھے رہ جانے کی اجازت دے دی گئی تھی وہ اللہ کے رسول کا ساتھ نہ دینے اور گھر بیٹھے رہنے پر راضی ہوئے اور انہیں گوارہ نہ ہوا کہ اللہ کی راہ میں جان و مال سے جہاد کریں انہوں نے لوگوں سے کہا کہ اس سخت گرمی میں نہ نکلو ان سے کہو کہ جہنم کی آگ اس سے زیادہ گرم ہے کاش انہیں اس کا شعور ہوتا (۸۱)

अब चाहिए कि वह लोग हंसना कम करें और रोएं अधिक इसलिए कि जो दुष्टता वह करते रहे हैं उसका फल ऐसा ही है (82)

اب چاہئے کہ وہ لوگ ہنسنا کم کریں اور روئیں زیادہ اس لئے کہ جو بدی وہ کماتے رہے ہیں اس کی سزا ایسی ہی ہے (۸۲)

यदि ईश्वर उनके किसी दल के बीच तुम्हें वापस ले जाए और भविष्य में उनमें से कोई दल धर्म युद्ध के लिए निकलने की अनुमति मांगे तो स्पष्ट कह देना, अब तुम मेरे साथ कदापि नहीं चल सकते और न मेरे, साथ में किसी शत्रु से लड़ सकते हो, तुमने बैठ रहने वालों को पसन्द किया था तो अब

اگر اللہ ان کے کسی گروہ کے درمیان تمہیں واپس لے جائے اور آئندہ ان میں سے کوئی گروہ جہاد کے لئے نکلنے کی تم سے اجازت مانگے تو صاف کہہ دینا اب تم میرے ساتھ ہرگز نہیں چل سکتے۔اور نہ میرے ساتھ میں کسی دشمن سے لڑ سکتے ہو تم نے بیٹھ رہنے والوں کو پسند کیا تھا تو اب گھر

घर बैठने वालों ही के साथ बैठे रहो (८३)

(ऐ नबी ऐसे व्यक्तियों को मुसलमान न समझो) और उनमें से जो कोई मरे उसकी नमाज़ अर्थी भी तुम कदापि न पढ़ना, और न कभी उनकी समाधि पर खड़े होना, क्योंकि उन्होंने ईश्वर और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया है और वह मरे हैं इस दशा में कि पापी थे (८४)

नोट- सूरत तौबा की इन आयात के विषय में जो हदीस प्रचलित हैं उनमें से एक लिख रहा हूं जो बुखारी में जिल्द दोम पेज ८०२ पर बाब ८०९ हदीस नं० १७८३, और उनमें किसी की मृत्यु पर नमाज़ न पढ़ना और न उसकी कबर पर खड़े होना,

(१७८३) श्रीमान इब्ने उमर र० कहते हैं कि जब अब्दुल्लाह बिन उबेई रईस कपटि की मृत्यु हुई तो अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला बिन उबेई अर्थात उसका पुत्र रसूल की सभा में उपस्थित हो गया, अतः आप ने अपना मुबारक कुर्ता उसे प्रदान कर दिया और आदेश दिया कि उसे इसका कफन दिया जाए फिर जब आप उसकी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए तो श्री उमर बिन खत्ताब ने आप स० का आंचल थाम लिया और निवेदन किया कि आप स० इसकी नमाज़ अर्थी पढ़ेंगे जो कपटि है और इसके लिए क्षमा की प्रार्थना करने से तो ईश्वर ने आपको मना किया है, आपने इरशाद फरमाया कि ईश्वर ने तो मुझे अधिकार दिया है या मुझे सूचना दी है अर्थात कहा है कि तुम इनकी क्षमा चाहो या न चाहो यदि तुम सत्तर बार इनकी क्षमा चाहोगे तो ईश्वर कदापि उन्हें नही क्षमा करेगा, (आयत ८०) फिर आपने फरमाया कि मैं इसके लिए सत्तर से अधिक बार क्षमा मांगूगा, रावी का कथन है कि फिर रसूल स० ने उसकी नमाज़ अर्थी पढ़ाई और हमने भी आपके साथ पढ़ी, फिर ईश्वर ने यह आयत अवतरित की और उनमें से किसी की अर्थी पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उनकी समाधि पर खड़े होना, बेशक उन्होंने ईश्वर और रसूल के साथ कुफ्र किया और वह अवज्ञा की दशा में ही मरे (आयत ८४) हदीस १७८१-१७८२ भी लगभग इसी विषय से वर्णन है, मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अनुवाद पर इन आयातों की तफसीर में यही लिखा है,

इन रिवायात से यह बात निश्चित ढंग से सिद्ध है कि उस समय तक सूरत तौबा की कम से कम आयत नं० ८० अवतरित हो चुकी थी और इस आयत के शब्द और उनका सामूहिक अर्थ से यह आदेश भी निकल कर सामने आता है जिसके आधीन रसूल को कपटियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया है, अतः नमाज़ अर्थी क्षमा का अंश है, अतः रसूल को कपटियों की नमाज़ अर्थी पढ़ने से भी रोक दिया गया है, इस रिवायात में यह भी कहा गया है कि जब रसूल स० अब्दुल्ला बिन उबेई की नमाज़ अर्थी पढ़ने खड़े हुए तो उमर र० ने आपका आंचल थाम लिया और निवेदन किया कि आप इसकी नमाज़ अर्थी पढ़ेंगे? जो कपटि है और इसके लिए क्षमा की प्रार्थना करने से तो ईश्वर ने आपको रोक दिया है, किन्तु जैसा कि रिवायात में कहा गया है, रसूल स० ने उमर के निवेदन को स्वीकार नहीं किया और आयत ८० के आदेश को आदेश न मानते हुए केवल एक सूचना माना और कहा कि मैं इसके लिए सत्तर बार से अधिक क्षमा मांगूगा, रावी आगे कहता है कि फिर रसूल स० ने अब्दुल्ला इब्न उबेई की नमाज़ अर्थी पढ़ाई और हमने भी आप के साथ पढ़ी रावी कहता है कि फिर ईश्वर ने आयत ८४ अवतरित की जिसके द्वारा रसूल को कपटियों की नमाज़ अर्थी पढ़ने से और उनकी समाधी पर खड़े होने से रोक

بیٹھنے والوں ہی کے ساتھ بیٹھے رہو (۸۳)

(اے نبی ایسے آدمیوں کو مسلمان نہ سمجھو) اور ان میں سے جو کوئی مرے اس کی نماز جنازہ بھی تم ہرگز نہ پڑھنا اور نہ کبھی ان کی قبر پر کھڑے ہونا۔ کیوں کہ انہوں نے اللہ اور اس کے رسول کے ساتھ کفر کیا ہے اور وہ مرے ہیں اس حال میں کہ وہ فاسق تھے (۸۴)

نوٹ:۔ سورہ توبہ کی ان آیات کے بارے میں جو احادیث مروی ہیں ان میں سے ایک لکھ رہا ہوں۔ جو بخاری میں جلد دوم (ص ۸۰۲) پر باب ۸۰۹ قولہٖ ولا تصل علی احد منھم ابداً ولا تقم علی قبرہٖ حدیث نمبر ۱۷۸۳۔ اور ان میں کسی کی میت پر نماز نہ پڑھنا اور نہ اس کی قبر پر کھڑے ہونا۔

۱۷۸۳ حضرت ابن عمرؓ فرماتے ہیں کہ جب عبداللہ بن ابی رئیس منافق کی وفات ہوئی تو عبداللہ بن عبداللہ بن ابی یعنی اس کا بیٹا رسول کی بارگاہ میں حاضر ہوگیا چنانچہ آپ نے اپنا مبارک کرتا اسے عطا فرما دیا اور حکم دیا کہ اسے اس کا کفن دیا جائے پھر جب آپ اس کی نماز پڑھانے کے لئے کھڑے ہوئے تو حضرت عمر بن خطاب نے آپؐ کا دامن تھام لیا اور عرض کیا کہ آپؐ اس کی نماز جنازہ پڑھیں گے جو منافق ہے اور اس کے لئے دعائے مغفرت کرنے سے تو اللہ تعالیٰ نے آپ کو منع فرمایا ہے آپ نے ارشاد فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے تو مجھے اختیار دیا ہے یا مجھے خبر دی ہے یعنی فرمایا ہے کہ تم ان کی معافی چاہو یا نہ چاہو اگر تم ستر بار ان کی معافی چاہو گے تو اللہ ہرگز انہیں نہیں بخشے گا۔ (آیت ۔۸۰) پھر آپ نے فرمایا کہ میں اس کے لئے ستر سے زیادہ بار معافی طلب کرلوں گا۔ راوی کا بیان ہے کہ پھر رسولؐ نے اس کی نماز جنازہ پڑھائی اور ہم نے بھی آپ کے ساتھ پڑھی پھر اللہ نے یہ آیت نازل فرمائی اور ان میں سے کسی کی میت پر کبھی نماز نہ پڑھنا اور نہ ان کی قبر پر کھڑے ہونا۔ بے شک انہوں نے اللہ اور رسول کے ساتھ کفر کیا اور وہ نافرمانی کی حالت میں ہی مرے (آیت ۸۴) حدیث ۱۷۸۱۔۱۷۸۲ بھی تقریباً اس مضمون سے عبارت ہیں۔

مولانا محمود الحسن صاحب کے ترجمہ پر ان آیتوں کی تفسیر میں یہی لکھا ہے، ان روایات سے یہ امر قطعی طور پر ثابت ہے کہ اُس وقت تک سورہ توبہ کی کم از کم آیت نمبر ۸۰ نازل ہو چکی تھی اور اس آیت کے الفاظ اور ان کا مجموعی مفہوم سے یہ حکم بھی نکل کر سامنے آتا ہے جس کے تحت رسول کو منافقین کے لئے دعائے مغفرت کرنے سے روک دیا گیا ہے چونکہ نماز جنازہ دعائے مغفرت کا حصہ ہے اس لئے رسول کو منافقین کی نماز جنازہ پڑھانے سے بھی روک دیا گیا اس روایت میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ جب رسولؐ عبداللہ بن ابی کی نماز جنازہ پڑھانے کھڑے ہوئے تو عمرؓ نے آپ کا دامن تھام لیا اور عرض کیا کہ آپ اس کی نماز جنازہ پڑھیں گے؟ جو منافق ہے اور اس کے لئے دعائے مغفرت کرنے سے تو اللہ نے آپ کو منع فرمایا ہے۔ لیکن جیسا کہ روایت میں کہا گیا ہے، رسولؐ نے عمر کی گذارش کو قبول نہیں فرمایا اور آیت نمبر ۸۰ کے حکم کو حکم نہ مانتے ہوئے صرف ایک خبر مانا اور فرمایا کہ میں اس کے لئے ستر بار سے زیادہ معافی طلب کروں گا راوی آگے بیان کرتا ہے کہ پھر رسولؐ نے عبداللہ ابن ابی کی نماز جنازہ پڑھائی اور ہم نے بھی آپ کے ساتھ پڑھی راوی کہتا ہے کہ پھر اللہ نے آیت ۸۴ نازل فرمائی جس کے ذریعہ رسول کو منافقین کی نماز جنازہ پڑھنے سے اور ان کی قبر پر کھڑے ہونے

दिया गया.

इस प्रसंग में मौलाना मोदूदी ने तफ़हीमुल कुरआन में लिखा है कि तबूक से वापसी पर कुछ अधिक समय व्यतीत न हुआ था कि अब्दुल्ला बिन उबई कपटियों का नेता मर गया, उसके पुत्र अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला जो सच्चा आस्तिक था नबी की सेवा में उपस्थित हुए और कफन में लगाने के लिए आपका कुर्ता मांगा आपने पूर्णतः प्रसन्नता से प्रदान कर दिया, फिर उन्होंने प्रार्थना की कि आप स० ही नमाज़ अर्थी पढ़ाऐं, आप इसके लिए तैयार हो गए श्रीमान उमर ने आग्रह के साथ निवेदन किया कि या रसूल अल्ला, आप इस व्यक्ति पर नमाज़ अर्थी पढ़ेंगे जो यह और यह कर चुका है परन्तु मुहम्मद स० उनकी यह सब बातें सुन कर मुस्कुराते रहे और अपनी करूणा के आधार पर जो मित्र व शत्रु सबके लिए सामान्य थी, आपने इस निकृष्ट -तम के प्रति क्षमा के लिए प्रार्थना करने में संकोच न किया, अन्ततः जब आप नमाज़ पढ़ाने खड़े हो ही गए तो यह आयत अवतरित हुई और सीधे ईश्वर के आदेश से आपको रोक दिया गया.

मोदूदी साहब ने नमाज़ पढ़ाने का इनकार किया है तो इससे सिद्ध हुआ कि मोदूदी साहब ने उस रिवायत का इनकार किया है जिसमें नमाज़ पढ़ाने का उल्लेख है परन्तु किसी ने मोदूदी साहब को हदीस का विरोधी नही कहा? दूसरी बात यह कि आयत में स्पष्ट इनकार है फिर नबी को उस स्थान पर क्यों खड़ा कर दिया जहां से ईश्वर को रोकना पड़ा?

ऊपर की दोनों रिवायतों में कितना विरोधाभाष है प्रथम रिवायत में जिसके रावी इब्न उमर है कहा गया है कि रसूल ने अब्दुल्ला इब्न उबेई की नमाज़ अर्थी पढ़ी और फिर निषेध की आयत अवतरित हुई, जबकि मौलाना मोदूदी लिखते है कि जैसे ही रसूल नमाज़ पढ़ाने खड़े हुए आयत नं० 84 अवतरित हुई और आपको नमाज़ पढ़ाने से रोक दिया गया अर्थात आप ने नमाज़ नही पढ़ाई.

अस्तु उपरोक्त लिखी रिवायतों से यह बात सामने आती है कि उमर कपटि की नमाज़ अर्थी पढ़ाने के विरुद्ध थे और कहते थे कि कपटि के लिए क्षमा की प्रार्थना करने से ईश्वर ने रसूल को मना किया है, जबकि रसूल ने इसके विपरीत उस कपटि के लिए क्षमा की प्रार्थना की और नमाज़ अर्थी पढ़ाने के लिए खड़े हो गए या पढ़ा दी. यदि इन रिवायतों को सत्य मान लिया जाए तो एक गम्भीर स्थिति से दो चार होना पड़ेगा, और मानना पड़ेगा कि उमर की क्षमता और बुद्धि व विवेक ईश्वर की इच्छा को समझने में बहुत उच्च थी जबकि रसूल से (ईश्वर की शरण) इस प्रसंग में कोई कमी हो गई. ऐसे ही कई दूसरे स्थानों पर कुरआन की आयात के अवतरित होने को वर्णन करते समय उमर की मंत्रणा का उल्लेख किया गया है, इससे उमर की बुद्धि व विवेक और दूरदर्शता और विवेक शीलता से सम्बन्ध प्रशंसा व स्तुति के कोण तो अवश्य उजागर होते हैं परन्तु रसूल के गौरव के विपरीत कोण भी निकलता है.

दूसरे यह कि इब्ने उमर की रिवायत में है कि उमर कह रहे हैं कि या रसूल अल्ला आपको ईश्वर ने कपटि के लिए क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया है, और कपटियों से धर्म युद्ध कराने को कहा है (तौबा अहज़ाब) और पहचान भी बता दी है (47:30) इन सब बातों के होते हुए फिर नबी कपटि की नमाज़ पढ़ाएं? प्रश्न ही उत्पन्न नही होता. अब्दुल्ला बिन उबेई को तो वध हो जाना चाहिए था क्योंकि वह खुला कपटि था न कि क्षमा की प्रार्थना. इसका अर्थ यह हुआ कि उस समय तक सूरत तौबा की आयत नम्बर 80 अवतरित हो चुकी थी फिर आप सोचें कि रसूल कुरआन के आदेशों या शिक्षा के विपरीत कोई

سے منع کردیا گیا.

اس مسئلے پر مولانا مودودی تفہیم القرآن میں رقم طراز ہیں کہ تبوک سے واپسی پر کچھ زیادہ مدت نہ گذری تھی کہ عبداللہ بن ابی رئیس المنافقین مرگیا، اس کے بیٹے عبداللہ بن عبداللہ جو مخلص مسلمانوں میں سے تھے نبی کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کفن میں لگانے کے لئے آپ کا کرتا مانگا آپ نے کمال فراغ دلی سے عطا کردیا. پھر انہوں نے درخواست کی کہ آپ ہی نماز جنازہ پڑھائیں، آپ اس کے لئے تیار ہوگئے. حضرت عمرؓ نے باصرار عرض کیا کہ یا رسول اللہ آپ اس شخص پر نماز جنازہ پڑھیں گے جو یہ اور یہ کرچکا ہے مگر محمدؐ ان کی یہ سب باتیں سن کر مسکراتے رہے اور اپنی رحمت کی بنا پر جو دوست دشمن سب کے لئے عام تھی، آپ نے اس بدترین کے حق میں دعائے مغفرت کرنے میں تامل نہ کیا. آخر جب آپ نماز پڑھانے کھڑے ہو ہی گئے تو یہ آیت نازل ہوئی اور براہ راست حکم خداوندی سے آپ کو روک دیا گیا.

مودودی صاحب نے نماز پڑھانے کا انکار کیا ہے تو اس سے ثابت ہوا کہ مودودی صاحب نے اس روایت کا انکار کیا ہے جس میں نماز پڑھانے کا ذکر ہے لیکن کسی نے مودودی صاحب کو منکر حدیث نہیں کہا؟ دوسری بات یہ کہ آیت میں صاف انکار ہے پھر نبی کو اس مقام پر کیوں کھڑا کردیا جہاں سے اللہ کو روکنا پڑا؟

اوپر کی دونوں روایتوں میں کتنا فرق ہے اوّل روایت میں جس کے راوی ابن عمر ہیں کہا گیا ہے کہ رسول نے عبداللہ ابن آبی کی نماز جنازہ پڑھی اور پھر ممانعت کی آیت نازل ہوئی، جب کہ مولانا مودودی لکھتے ہیں کہ جیسے ہی رسول نماز پڑھانے کھڑے ہوئے آیت نمبر ۸۴ نازل ہوئی اور آپ کو نماز پڑھانے سے روک دیا گیا یعنی آپ نے نماز جنازہ نہیں پڑھائی.

بہرحال مندرجہ بالا روایتوں سے یہ بات سامنے آتی ہے کہ عمر منافق کی نماز جنازہ پڑھانے کے خلاف تھے اور کہتے تھے کہ منافق کے لئے دعائے مغفرت کرنے سے اللہ نے رسول کو منع کیا ہے جب کہ رسول نے اس کے برعکس اُس منافق کے لئے دعائے مغفرت کی اور نماز جنازہ پڑھانے کے لئے کھڑے ہوگئے یا پڑھادی. اگر ان روایتوں کو درست مان لیا جائے تو ایک سنگین صورت حال سے دوچار ہونا پڑے گا. اور ماننا پڑے گا کہ عمر کی صلاحیت اور فہم وفراست اللہ کی مرضی کے سمجھنے میں بہت بلندی تھی جب کہ رسول سے (نعوذ باللہ) اس سلسلہ میں کوئی کوتاہی ہوئی. ایسے ہی کئی دیگر مقامات پر قرآنی آیات کی شان نزول بیان کرتے وقت عمر کی رائے کا ذکر کیا گیا ہے. اس سے عمر کی فہم وفراست دوراندیشی اور معاملہ فہمی سے متعلق تعریف وتوصیف کے گوشے تو ضرور اجاگر ہوئے ہیں لیکن شان رسول کے منافی پہلو بھی نکلتا ہے.

دوسرے یہ کہ ابن عمر کی روایت میں ہے کہ عمر کہہ رہے ہیں کہ یا رسول اللہ آپ کو اللہ نے منافق کے لئے دعائے مغفرت کرنے سے منع کیا ہے اور منافقوں سے جہاد کرنے کو کہا ہے (توبہ احزاب) اور پہچان بھی بتادی ہے (۴۷:۳۰) ان سب باتوں کے ہوتے ہوئے پھر نبی منافق کی نماز پڑھائیں؟ سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. عبداللہ بن ابی کو تو قتل ہوجانا چاہئے تھا. کیوں کہ وہ کھلا منافق تھا نہ کہ دعائے مغفرت اس کا مطلب یہ ہوا کہ اس وقت تک سورہ توبہ کہ

कार्य कर सकते थे? (ईश्वर की शरण) इसी आयत ८० में कपटियों को ईश्वर व रसूल का विरोधी और अवज्ञाकारी कहा गया है, तो ऐसी स्थिति में रसूल ऐसे व्यक्तियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने की सोच भी नही सकते थे? अपितु उनको वध करते ईश्वर के आदेशानुसार और किया भी है.

तीसरे यह कि ईश्वर परोक्षा ज्ञानी है, उसको पहले से ही ज्ञान था कि नबी को भविष्य में किस प्रकार की घटना व स्थिति सामने आने है अतः ईश्वर ने अपने नबी को वही के द्वारा स्पष्ट आदेश पारित किए थे जो कुरआन का अंश है, ताकि नबी को समय आने पर किसी व्याकुलता व विवशता का सामना न हो आयात के सन्दर्भ से ज्ञात होता है कि सूरत तौबा की आयात नं० ८० से ८४ तक तो एक साथ ही अवतरित हुई, परन्तु इनको तो मानना ही पड़ेगा, यदि ऐसा न भी हो तो भी आयात ८० के आदेश ही कपटि के प्रति क्षमा की प्रार्थना करने और नमाज़ अर्थी पढ़ने के निषद के लिए प्रयाप्त है.

इसके अतिरिक्त हमें विचार करना चाहिए कि इतिहास की पुस्तकों और कथनों से ऐसी किसी बात की प्रेरणा नही होती जिसके आधार पर रसूल को अब्दुल्ला बिन उबेई जैसे कपटि के प्रति क्षमा की प्रार्थना करने के लिए या प्रेरणा होती, अतः ज्ञात हुआ कि रसूल ने कपटि की नमाज़ अर्थी नही पढ़ाई और न उसके लिए क्षमा की प्रार्थना की और इस विषय की सभी रिवायतें मिथ्या और मनघढ़न्त हैं और हमें उनको कठोरता के साथ निरस्त करना चाहिए रहा प्रश्न अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला का नबी से अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करने और नमाज़ अर्थी पढ़ने की प्रार्थना करना तो यह भी एक विचित्र सी बात है क्या अब्दुल्ला को ईश्वर का वह आदेश कि कपटियों से धर्म युद्ध करो उनको वध करो उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो उनसे दान न लो ज्ञात न था? यदि हां तो उनकी प्रार्थना को माना जा सकता है, और यदि ज्ञात था और ज्ञात था क्योंकि उनको सच्चा आस्तिक लिखा है और नबी के साथ रहते थे तो ऐसी स्थिति में अब्दुल्ला कभी भी नबी से क्षमा की प्रार्थना करने को नही कह सकते थे और न ही कहा यदि वह आस्तिक थे यह कथन ही विचारणीय है.

آیت نمبر ۸۰ نازل ہو چکی تھی پھر آپ سوچیں کہ رسول قرآن کے احکام یا ہدایت کے خلاف کوئی کام کر سکتے تھے؟ (نعوذ باللہ) اس آیت ۸۰ میں منافقین کو منکرین اللہ و رسول اور نافرمان کہا گیا ہے تو ایسی صورت میں رسول ایسے لوگوں کے حق میں دعائے مغفرت کرنے کی سوچ بھی نہیں سکتے تھے؟ بلکہ ان کو قتل کرتے اللہ کے حکم کے مطابق اور کیا ہے۔

تیسرے یہ کہ اللہ عالم الغیب ہے اس کو پہلے سے ہی علم تھا کہ نبی کو آئندہ کس طرح کے واقعات و حالات پیش آنے ہیں، اس لئے اللہ نے اپنے نبی کو وحی کے ذریعہ واضح احکام جاری فرمائے تھے جو قرآن کا حصہ ہیں تا کہ نبی کو بر وقت کسی پریشانی و معذوری کا سامنا نہ ہو۔ آیات کے سیاق و سباق سے معلوم ہوتا ہے کہ سورہ توبہ کی آیات نمبر ۸۰ لغایت ۸۴ تک تو ایک ساتھ ہی نازل ہوئی ہیں حالانکہ ان کے ساتھ اور بھی نازل ہوئیں مگر ان کو تو ماننا ہی پڑے گا، اگر ایسا نہ بھی ہو تو بھی آیت نمبر ۸۰ کے احکام ہی منافق کے حق میں دعائے مغفرت کرنے اور نماز جنازہ پڑھنے کی مخالفت کے لئے کافی ہیں اس کے علاوہ ہمیں غور کرنا چاہیے کہ کتب تاریخ و احادیث سے ایسی کسی بات کی نشان دہی نہیں ہوتی جس کی بنا پر رسول کو عبداللہ بن ابی جیسے غالی منافق کے حق میں دعائے مغفرت کرنے کے لئے رغبت یا تحریک ہوتی۔ پس معلوم ہوا کہ رسول نے منافق کی نماز جنازہ نہیں پڑھائی اور نہ اس کے حق میں دعائے مغفرت کی اور اس سلسلہ کی جملہ روایتیں غلط اور موضوع ہیں اور ہمیں ان کو سختی سے رد کرنا چاہیے۔

رہا سوال عبداللہ بن عبداللہ کا نبی سے اپنے باپ کے لئے دعائے مغفرت کرنے اور نماز جنازہ پڑھانے کی درخواست کرنا تو یہ بھی ایک عجیب سی بات ہے کیا عبداللہ کو اللہ کا وہ حکم کہ منافقوں سے جہاد کرو ان کو قتل کرو ان کے لئے دعائے مغفرت نہ کرو ان سے صدقات نہ لو معلوم نہ تھا؟ اگر ہاں تو ان کی درخواست کو مانا جا سکتا ہے اور اگر معلوم تھا اور معلوم تھا کیونکہ ان کو مخلص مومن لکھا ہے اور نبی کے ساتھ رہتے تھے تو ایسی حالت میں عبداللہ کبھی بھی نبی سے دعائے مغفرت کرنے کو نہیں کہہ سکتے تھے اور نہ ہی کہا اگر وہ مومن تھے یہ روایات ہی محل نظر ہیں۔

और उनके माल और सन्तान से आश्चर्य न करना उन वस्तुओं से ईश्वर यह चाहता है कि उनको दुनिया में दण्ड करें और जब उनकी जान निकले तो वह नास्तिक ही हो (८५)

اور ان کے مال اور اولاد سے تعجب نہ کرنا ان چیزوں سے اللہ یہ چاہتا ہے کہ ان کو دنیا میں عذاب کرے اور جب ان کی جان نکلے تو وہ کافر ہی ہوں (۸۵)

और जब कोई सूरत अवतरित होती है कि ईश्वर पर विश्वास लाओ और उसके रसूल के साथ (मिलकर) युद्ध करो तो उनमें जो लोग धनी है वह तुम से अनुमति मांगते है और कहते है हमें छोड़ दीजिए जो लोग घरों में बैठे है हम भी उनके साथ बैठे रहे (८६)

اور جب کوئی سورت نازل ہوتی ہے کہ اللہ پر ایمان لاؤ اور اس کے رسول کے ساتھ (مل کر) جہاد کرو تو ان میں جو لوگ دولت مند ہیں وہ تم سے اجازت مانگتے ہیں اور کہتے ہیں ہمیں چھوڑ دیجئے۔ جو لوگ گھروں میں بیٹھے ہیں ہم بھی ان کے ساتھ بیٹھ رہیں (۸۶)

वह लोग इस बात से प्रसन्न है कि घरों में रह जाने वाली स्त्रियों के साथ वह भी बैठ रहे उनके हृदयों पर (अवज्ञा करने से) मोहर लग गई है, (इसलिए) उनकी समझ में कोई बात नही आती (८७)

وہ لوگ اس بات سے خوش ہیں کہ گھروں میں رہ جانے والی عورتوں کے ساتھ وہ بھی بیٹھ رہیں ان کے دلوں پر (نافرمانی کرنے سے) مہر لگ گئی ہے (اس لئے) ان کی سمجھ میں کوئی بات نہیں آتی (۸۷)

परन्तु ईश्वर के रसूल ने और उन लोगों ने जो उनके साथ आस्था लाए अपने धन से और अपनी

لیکن اللہ کے رسول نے اور ان لوگوں نے جو ان کے ساتھ ایمان لائے اپنے مال سے اور اپنی جانوں سے جہاد

जानों से धर्म युद्ध किया वही वह लोग है जिनके लिए सत्कर्म है और वही सफल और उद्देश्य पाने वाले है (88)

کیا وہی وہ لوگ ہیں جن کے لئے نیکیاں ہیں اور وہی کامیاب اوربامراد ہیں(۸۸)

ईश्वर ने उनके लिए ऐसा स्वर्ग तैयार कर रखा है जिसके नीचे नहरें बह रही हैं वह बहुत बड़ी सफलता है सदैव उसमें रहेंगे (89)

اللہ نے ان کے لئے ایسی جنت تیار کر رکھی ہے جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں وہ بہت بڑی کامیابی ہے ہمیشہ اس میں رہیں گے(۸۹)

और कुछ बद्दू असमर्थता बताते हुए आए ताकि उन्हें भी (घर बैठे रहने की) अनुमति दी जाए और वह लोग ईश्वर और रसूल से झूट बोले थे वह भी बैठ रहे सो उनमें से जिन्होंने अवज्ञा का मार्ग स्वीकार किया उनको दुख देने वाला दण्ड दिया जाएगा (90)

اور کچھ بدو عذر کرتے ہوئے آئے تا کہ انہیں بھی (گھر بیٹھ رہنے کی) اجازت دی جائے اور وہ لوگ اللہ اور رسول سے جھوٹ بولے تھے وہ بھی بیٹھے رہے سوان میں سے جنہوں نے نافرمانی کی راہ اختیار کی ان کو دردناک عذاب دیا جائے گا(۹۰)

निर्बलों पर रोगियों पर और उन लोगों पर जिनके पास व्यय करने को कुछ नहीं है कोई आरोप नहीं यदि वह धर्म युद्ध में सम्मिलित नहीं होते यदि वह हृदय से ईश्वर और उसके रसूल के शुभ चिन्तक हों इस प्रकार का आरोप सदाचारियों पर नहीं होता ईश्वर बड़ा क्षमा करने वाला और कृपा वाला है (91)

کمزوروں پر بیماروں پر اور ان لوگوں پر جن کے پاس خرچ کرنے کو کچھ نہیں ہے کوئی الزام نہیں اگر وہ جہاد میں شریک نہیں ہوتے بشرطیکہ وہ دل سے اللہ اور اس کے رسول کے خیرخواہ ہوں اس طرح کا الزام پرہیزگاروں پر نہیں ہوتا اللہ بڑا بخشنے والا رحمت والا ہے(۹۱)

और न उन लोगों पर कुछ आरोप है (जिनके पास सवारी नहीं) वह तेरे पास आए ताकि आप उनके लिए सवारी का प्रबन्ध कर दें और जब आपने उनसे कहा मैं तुम्हारे लिए सवारी का प्रबन्ध नहीं कर सकता तो वह लौट गए परन्तु वह आंखों से इस दुख से आंसू बहाते हुए लौट गए कि उनके पास व्यय उपस्थित नहीं है (92) (पहले से ऐसा ही होता रहा है)

اور نہ ان لوگوں پر کچھ الزام ہے (جن کے پاس سواری نہیں) وہ تیرے پاس آئے تا کہ آپ ان کے لئے سواری کا انتظام کردیں. اور جب آپ نے ان سے کہا میں تمہارے لئے سواری کا انتظام نہیں کرسکتا تو وہ لوٹ گئے. لیکن وہ آنکھوں سے اس غم میں آنسو بہاتے ہوئے لوٹ گئے کہ ان کے پاس خرچ موجود نہیں ہے(۹۲) (پہلے سے ایسا ہی ہوتا رہا ہے)

आरोप तो उन पर है जो धनी होने के बावजूद तुम से आज्ञा मांगे उन्होंने यही पसन्द किया कि वह घरों में रह जाने वाली स्त्रियों के साथ बैठे रहें (परन्तु उनकी अवज्ञा के कारण) ईश्वर के नियम ने उनके हृदयों पर मोहर लगा दी थी अब कोई बात उनकी समझ में ही नहीं आती (93)

الزام تو ان پر ہے جو مالدار ہونے کے باوجود تجھ سے اجازت مانگیں انہوں نے یہی پسند کیا کہ وہ گھروں میں رہ جانے والی عورتوں کے ساتھ بیٹھے رہیں (لیکن ان کی نافرمانی کی وجہ سے) اللہ کے قانون نے ان کے دلوں پر مہر لگادی کہ اب کوئی بات ان کی سمجھ میں ہی نہیں آتی (۹۳)

(मुसलमानों) जब तुम वापसी पर उनकी ओर लोटोगे तो वह लोग तुम्हारे पास आकर बहाने प्रस्तुत करेंगे, ऐ रसूल तुम उनसे कह देना बहाने मत बनाओ हम कदापि तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, ईश्वर ने तुम्हारे सब समाचार बता दिए हैं भविष्य में ईश्वर और उसका रसूल देखेगा कि तुम किस प्रकार के कार्य करते हो फिर तुम उस ईश्वर की ओर लोटाए जाओगे जो प्रकट और छुपी हर प्रकार की बातें जानता है फिर वह तुम को बताएगा कि तुम दुनिया में किस प्रकार के कार्य करते रहे हो (94)

(مسلمانو!) جب تم واپسی پر ان کی طرف لوٹو گے تو وہ لوگ تمہارے پاس آکر عذر کریں گے اے رسول تم ان سے کہہ دینا بہانے مت بناؤ ہم ہرگز تمہاری بات نہیں مانیں گے. اللہ نے تمہارے سب حالات بتادیئے ہیں. آئندہ اللہ اور اس کا رسول دیکھے گا کہ تم کس طرح کے کام کرتے ہو. پھر تم اس اللہ کی طرف لوٹائے جاؤ گے. جو ظاہر اور پوشیدہ ہر طرح کی باتیں جانتا ہے پھر وہ تم کو بتائے گا کہ تم دنیا میں کس طرح کے کام کرتے رہے ہو(۹۴)

जब तुम लौटकर उनसे मिलोगे तो वह ईश्वर की शपथ खाएंगे ताकि तुम उनको क्षमा करो, पस उनकी ओर से मुख फैर लेना वह अशुद्ध है और उनका ठिकाना नर्क है, यह उन्ही कर्मों का फल है जो वह करते रहे हैं (95) {5:90; 9:28,125}

جب تم لوٹ کر ان سے ملو گے تو وہ اللہ کی قسمیں کھائیں گے تا کہ تم ان سے درگزر کرو. پس ان کی طرف سے رُخ پھیر لینا وہ ناپاک ہیں اور ان کا ٹھکانہ دوزخ ہے. یہ انہیں اعمال کا نتیجہ ہے جو وہ کرتے رہے ہیں (۹۵)[۵:۹۰؛ ۹:۲۸،۱۲۵]

वह तुम्हारे सामने शपथ खाएंगे ताकि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ तो (सुन लो) यदि तुम प्रसन्न हो गए तो ईश्वर ऐसे पापियों और अवज्ञाकारों से

وہ تمہارے سامنے قسمیں کھائیں گے تا کہ تم ان سے راضی ہو جاؤ تو (سن لو) اگر تم راضی ہو بھی گئے تو اللہ ایسے

प्रसन्न न होगा (96) {9:80,84,114}

मरूस्थल में रहने वाले बद्दू नास्तिकता और कपट में बड़े ही कठोर है और इसलिए है कि जो उपदेश ईश्वर ने अपने रसूल पर अवतरित किया है उनसे अभी अवगत नही है और ईश्वर सब कुछ जानने वाला है उसका कोई काम युक्ति से रहित नही है (97)

उन बद्दूवों में ऐसे भी है जो कुछ व्यय करेंगे उसे अर्थ दण्ड समझेंगे और प्रतीक्षक है कि तुम पर कोई आकाश से कष्ट अवतरित हो परन्तु विपत्ति के बुरे दिन स्वयं उन पर ही आने वाले है ईश्वर सुनता और जानता है (98)

बद्दूवों में कुछ ऐसे भी है जो ईश्वर पर और प्रलय पर विश्वास रखते है और जो कुछ व्यय करते है उसे ईश्वर की समीपता और रसूल के आशीर्वाद का साधन समझते है तो सुन लो वह निःसन्देह उनके लिए ईश्वर की समीपता का साधन है निकट ही ईश्वर उन्हें अपनी कृपा में प्रविष्ट करेगा निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दया करने वाला है (99) {2:157; 9:103; 5:35; 17:57}

पलायन करने वाले और सहायता करने वालों में से जो लोग अग्रसरता करके पहले विश्वास लाए और जिन लोगों ने सच्चाई के साथ उनका अनुकरण किया उनसे ईश्वर प्रसन्न हुआ और वह ईश्वर से राजी हुए और ईश्वर ने उनके लिए उपवन तैयार कर रखे है जिनके नीचे नहरे बह रही है वह सदैव उनमें रहेंगे वह बहुत बड़ी सफलता है (100)

और उन बद्दूवी जातियों में से जो तुम्हारे आस-पास बसे हुए है कुछ कपटि है और स्वयं मदीने वालों में भी कुछ कपट पर अड़े हुए है, तुम उन्हें नही जानते (परन्तु) हम उन्हें भलिभांति जानते है हम उन्हें दो बार दण्ड देंगे, फिर वह दण्ड की ओर लौटाए जाएंगे (101)

और दूसरे (वह हैं) जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया, उन्होंने अच्छे और बुरे कर्मों को मिला लिया, हो सकता है कि ईश्वर उनका पश्चाताप स्वीकार कर लें, वह बहुत बड़ा क्षमा करने वाला है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही है (102)

ऐ नबी तुम उनके धनों में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उससे (उनके निर्धनों को पवित्रता दीजिए अर्थात सहायता शुभ कर्मों के मार्ग में उन्हें बढ़ाओ) और उनके लिए दया की प्रार्थना करो, क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना उनके लिए सांत्वना का साधन होगी ईश्वर सब कुछ सुनता और जानता है (103) {2:157; 6:99; 33:43,56;5:44,46; 24:41,55; 64:8; 37:181; 58:22}

नोट- सांत्वना का साधन क्यों होगी इसलिए कि ईश्वर का यह आदेश है कि ऐ मुहम्मद स0 आप पापियों और कपटियों से न तो दान, धर्मादाय लो और न उनके लिए मंगल कामना करो, तो इस आदेश के बाद न तो आप उनसे धर्मादाय लेते थे और न उनके लिए क्षमा की

فاسقوں اورنافرمان لوگوں سے راضی نہ ہوگا (۹۶) [۹:۸۰،۸۴،۱۱۴]

صحرانشین بدو کفر اور نفاق میں بڑے ہی سخت ہیں اور اس لئے ہیں کہ جو احکام اللہ نے اپنے رسول پر نازل کئے ہیں ان سے ابھی واقف نہیں ہیں اور اللہ سب کچھ جاننے والا ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں ہے (۹۷)

ان بدوؤں میں ایسے بھی ہیں جو کچھ خرچ کریں گے اسے تاوان سمجھیں گے اور منتظر ہیں کہ تم پر کوئی آفت سماوی نازل ہو. لیکن گردش کے بُرے دن خود ان ہی پر آنے والے ہیں اللہ سنتا اور جانتا ہے (۹۸)

بدوؤں میں کچھ ایسے بھی ہیں جو اللہ پر اور روز آخرت پر ایمان رکھتے ہیں اور جو کچھ خرچ کرتے ہیں اسے اللہ کے تقرب اور رسول کی دعا کا ذریعہ سمجھتے ہیں تو سن لو وہ یقیناً ان کے لئے قرب الٰہی کا ذریعہ ہے عن قریب اللہ انہیں اپنی رحمت میں داخل کرے گا. بے شک اللہ بخشنے والا رحم کرنے والا ہے (۹۹) [۲:۱۵۷؛ ۹:۱۰۳؛ ۵:۳۵؛ ۱۷:۵۷]

مہاجرین اور انصار میں سے جو لوگ سبقت کر کے پہلے ایمان لائے اور جن لوگوں نے راست بازی کے ساتھ ان کی پیروی کی ان سے اللہ راضی ہوا اور وہ اللہ سے راضی ہوئے اور اللہ نے ان کے لئے باغ تیار کر رکھے ہیں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں وہ ہمیشہ ان میں رہیں گے وہ بہت بڑی کامیابی ہے (۱۰۰)

اور ان بدوی قبائل میں سے جو تمہارے آس پاس بسے ہوئے ہیں کچھ منافق ہیں اور خود اہل مدینہ میں بھی کچھ نفاق پر اڑے ہوئے ہیں تم انہیں نہیں جانتے (لیکن) ہم انہیں خوب جانتے ہیں ہم انہیں دو مرتبہ عذاب دیں گے. پھر وہ عذاب کی طرف لوٹائے جائیں گے (۱۰۱)

اور دوسرے (وہ ہیں) جنہوں نے اپنے گناہوں کا اعتراف کرلیا. انہوں نے اچھے اور بُرے اعمال کو ملا لیا. ہو سکتا ہے کہ اللہ ان کی توبہ قبول کرلے وہ بہت بڑا بخشنے والا ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں ہے. (۱۰۲)

اے نبی تم ان کے اموال میں سے صدقہ لے کر انہیں پاک کرو (اور اس سے ان کے غریبوں کو پاکی دیجئے یعنی مدد اور نیکی کی راہ میں انہیں بڑھاؤ) اور ان کے حق میں دعائے رحمت کرو، کیونکہ تمہاری دعا ان کے لئے وجہ تسکین ہوگی اللہ سب کچھ سنتا اور جانتا ہے (۱۰۳) [۲:۱۵۷؛ ۶:۹۹؛ ۳۳:۴۳،۵۶؛ ۵:۴۴،۴۶؛ ۲۴:۴۱،۵۵؛ ۶۴:۸؛ ۳۷:۱۸۱؛ ۵۸:۲۲]

نوٹ:۔ وجہ تسکین کیوں ہوگی. اس لئے کہ اللہ کا یہ حکم ہے کہ اے محمدؐ آپ کافروں اور منافقوں سے نہ تو صدقات زکوٰۃ لو اور نہ ان کے لئے دعائے خیر کرو تو اس حکم کے بعد نہ تو آپ ان سے زکوٰۃ لیتے تھے اور نہ ان کے لئے دعائے خیر

प्रार्थना करते थे, परन्तु जब किसी से धन लेकर मंगल कामना करते थे तो उनको ज्ञात हो जाता था कि हम कपटि नहीं हैं और उनको सांत्वना होती थी, यह है अर्थ सांत्वना का साधन वह व्यक्ति प्रसन्न हो जाते थे,

کرتے تھے لیکن جب کسی سے مال لے کر دعائے خیر کرتے تھے تو ان کو معلوم ہو جاتا تھا کہ ہم منافق نہیں ہیں اور ان کو تسکین ہوتی تھی یہ ہے مطلب تسکین کا ذریعہ وہ لوگ خوش ہو جاتے تھے۔

क्या वह लोग नहीं जानते कि ईश्वर ही अपने बन्दों से पश्चाताप स्वीकार करता है और दान लेता है और निःसन्देह ईश्वर ही पश्चाताप स्वीकार करने वाला कृपालु है (104)

کیا وہ لوگ نہیں جانتے کہ اللہ ہی اپنے بندوں سے توبہ قبول کرتا ہے اور صدقات لیتا ہے اور بے شک اللہ ہی توبہ قبول کرنے والا مہربان ہے (۱۰۴)

और उनसे कह दो कि कर्म किये जाओ ईश्वर और उसका रसूल और आस्तिक तुम्हारे कर्मों को देख लेंगे, और तुम परोक्ष और प्रकट के जानने वाले के पास लौटाए जाओगे, फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम को बता देगा (105)

اور ان سے کہدو کہ عمل کئے جاؤ اللہ اور اس کا رسول اور مومن تمہارے عملوں کو دیکھ لیں گے۔ اور تم غائب اور حاضر کے جاننے والے کے پاس لوٹائے جاؤ گے پھر جو کچھ تم کرتے رہے ہو وہ سب تم کو بتا دے گا (۱۰۵)

और कुछ लोग हैं जिनका कार्य ईश्वर को समर्पित है चाहे उनको दण्ड दे या क्षमा कर दे और ईश्वर जानने वाला युक्ति वाला है (106)

اور کچھ اور لوگ ہیں جن کا کام اللہ کے سپرد ہے چاہے ان کو عذاب دے یا معاف کر دے اور اللہ جاننے والا حکمت والا ہے (۱۰۶)

और कुछ लोग और हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई इसलिए कि (सत्य कार्य को) हानि पहुंचाए और कुफ्र करें और धर्म वालों में फूट डाले और उस व्यक्ति के लिए सुरक्षित स्थान बनाएं जो इससे पहले ईश्वर और उसके रसूल के विरुद्ध युद्ध कर चुका है, वह अवश्य शपथ खा खाकर कहेंगे कि हमारा संकल्प तो मंगल के सिवा किसी दूसरे कार्य का न था, परन्तु ईश्वर शाक्षी है कि वह निश्चित झूटे हैं (107)

اور کچھ لوگ اور ہیں جنہوں نے ایک مسجد بنائی اس لئے کہ (دعوت حق کو) نقصان پہنچائیں اور کفر کریں اور اہل ایمان میں پھوٹ ڈالیں اور اس شخص کے لئے کمین گاہ بنائیں جو اس سے پہلے اللہ اور اس کے رسول کے خلاف لڑ چکا ہے وہ ضرور قسمیں کھا کھا کر کہیں گے کہ ہمارا ارادہ تو بھلائی کے سوا کسی دوسری چیز کا نہ تھا مگر اللہ گواہ ہے کہ وہ قطعی جھوٹے ہیں (۱۰۷)

तुम उस (मस्जिद) में कभी खड़े भी न होना अपितु वह मस्जिद जिसका आधार पहले दिन से संयम पर रखा गया है इस योग्य है कि उसमें जाया करो उसमें ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को पसन्द करते हैं और ईश्वर पवित्र रहने वालों को ही पसन्द करता है (108)

تم اس (مسجد) میں کبھی کھڑے بھی نہ ہونا۔ البتہ وہ مسجد جس کی بنیاد پہلے دن سے تقویٰ پر رکھی گئی ہے اس قابل ہے کہ اس میں جایا کرو۔ اس میں ایسے لوگ ہیں جو پاک رہنے کو پسند کرتے ہیں اور اللہ پاک رہنے والوں کو ہی پسند کرتا ہے (۱۰۸)

बताओ वह व्यक्ति अच्छा है जिसने अपनी इमारत का आधार ईश्वर के भय और उसकी प्रसन्नता पर रखा था वह व्यक्ति जिसने अपने भवन का आधार गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखा और वह उसको लेकर नर्क में जा गिरी ईश्वर का नियम ऐसे पापियों पर पथ प्रदर्शन का मार्ग नहीं खोलता(109)

بتاؤ وہ شخص اچھا ہے جس نے اپنی عمارت کی بنیاد اللہ کے خوف اور اس کی رضامندی پر رکھی یا وہ شخص جس نے اپنی عمارت کی بنیاد گر جانے والی کھائی کے کنارے پر رکھی اور وہ اس کو لے کر دوزخ میں جا گری اللہ کا قانون ایسے ظالموں پر ہدایت کی راہ نہیں کھولتا (۱۰۹)

यह भवन जो उन्होंने बनाया है सदैव उनके हृदयों में खटकता रहेगा परन्तु यह कि उनके हृदय टुकड़े टुकड़े हो जाऐं और ईश्वर सब कुछ जानने वाला है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नहीं (110)

یہ عمارت جو انہوں نے بنائی ہے ہمیشہ ان کے دلوں میں کھٹکتی رہے گی مگر یہ کہ ان کے دل ٹکڑے ٹکڑے ہو جائیں اور اللہ سب کچھ جاننے والا ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۱۱۰)

वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने आस्तिकों से उनके जानो और उनके माल स्वर्ग के बदले क्रय कर लिए हैं वह ईश्वर की राह में युद्ध करते और मारते और मरते हैं उनसे (स्वर्ग का वचन) ईश्वर का दायित्व एक पक्का वचन है तौरात और इन्जील और कुरआन में और कौन है जो ईश्वर से बढ़कर अपने वचन का पूरा करने वाला हो? पस आनन्द मनाओ अपने उस सोदे पर जो तुम ने ईश्वर से किया है

حقیقت یہ ہے کہ اللہ نے مومنوں سے ان کے نفس اور ان کے مال جنت کے بدلے خرید لئے ہیں وہ اللہ کی راہ میں لڑتے اور مارتے اور مرتے ہیں ان سے (جنت کا وعدہ) اللہ کے ذمہ ایک پختہ وعدہ ہے توراۃ اور انجیل اور قرآن میں اور کون ہے جو اللہ سے بڑھ کر اپنے عہد کا پورا کرنے والا ہو؟ پس خوشیاں مناؤ اپنے اس سودے پر جو تم نے اللہ

और यह वह है जो बड़ी सफलता है(111)(48:10)
(जिन लोगों ने ईश्वर से जान व माल का सौदा किया है वह यह है पापों से) पश्चाताप करने वाले पूजा करने वाले ईश्वर की प्रशंसा करने वाले धर्म प्राप्त करने या शिक्षा देने के लिए ईश्वर के मार्ग में यात्रा पर्यटन करने वाले, झुकने वाले सजदा करने वाले उपकार का आदेश करने वाले, बुराई से रोकने वाले और ईश्वर की निश्चित की हुई सीमाओं की रक्षा करने वाले और ऐ रसूल आस्तिकों को स्वर्ग की शुभ सूचना सुना दो (112)

سے کیا ہے اور یہ وہ ہے جو بڑی کامیابی ہے(۱۱۱)[۴۸:۱۰]
(جن لوگوں نے اللہ سے جان و مال کا سودا کیا ہے وہ یہ ہیں گناہوں سے) توبہ کرنے والے عبادت کرنے والے اللہ کی حمد و ثنا کرنے والے دین حاصل کرنے یا تعلیم دینے کے لئے اللہ کی راہ میں سفر سیاحت کرنے والے رکوع کرنے والے سجدہ کرنے والے نیکی کا حکم دینے والے، برائی سے روکنے والے اور اللہ کی ٹھہرائی ہوئی حدبندیوں کی حفاظت کرنے والے اور اے رسول مومنوں کو جنت کی خوشخبری سنادو(۱۱۲)

यह बात रसूल और मुसलमानों को शोभा नहीं देती कि वह अनेकेश्वर वादियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें चाहे वह उनके सम्बन्धी ही हों जबकि उन पर यह बात प्रकट हो चुकी कि वह नर्की है (113)
और इब्राहीम ने जो अपने मुशरिक पिता के लिए प्रार्थना की थी इसका कारण यह था कि उसने अपने पिता से जो वचन किया था उसे पूरा करना था परन्तु जब उस पर यह बात प्रकट हो गई कि वह (इब्राहीम का पिता) ईश्वर का शत्रु है तो वह उससे अप्रसन्न हो गया, निःसन्देह इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय और सहनशील मानव था (114) (60:4)

یہ بات رسول اور مسلمانوں کو زیب نہیں دیتی کہ وہ مشرکوں کے لئے دعائے مغفرت کریں چاہے وہ ان کے رشتہ دار ہی ہوں جب کہ ان پر یہ بات ظاہر ہو چکی کہ وہ دوزخی ہیں(۱۱۳)
اور ابراہیم نے جو اپنے مشرک باپ کے لئے دعا کی تھی اس کا سبب یہ تھا کہ اس نے اپنے باپ سے جو وعدہ کیا تھا اسے پورا کرنا تھا لیکن جب اس پر یہ بات ظاہر ہوگئی کہ وہ (ابراہیم کا باپ) اللہ کا دشمن ہے تو وہ اس سے بیزار ہوگیا۔ بے شک ابراہیم بڑا نرم دل اور بردبار انسان تھا(۱۱۴)[۶۰:۴]

ईश्वर की यह प्रकृति नहीं है कि वह किसी समुदाय को पथ प्रदर्शन देकर फिर पथ भ्रष्ट कर दे जब तक कि वह उसको यह न बता दे कि उसे किन वस्तुओं से बचना चाहिए निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (115)
निःसन्देह यह ईश्वर ही का अस्तित्व है जिसका राजसी प्रभुत्व सम्पूर्ण आकाशों और पृथ्वी पर है वही जीवित करता है वह मृत्यु देता है, ईश्वर के अतिरिक्त न तो तुम्हारा कोई सहायक है न अभिभावक (116)
निःसन्देह ईश्वर ने रसूल पर करूणा कृपा की अपनी अनुकम्पा की और देश त्यागने वालों और अभिभावकों पर भी जिन्होंने कठिनाई और निर्धनता और बेसरो सामान की स्थिति में उसका अनुकरण किया, जब निकट था कि एक दल के हृदय डगमगा जाएं परन्तु ईश्वर ने अपनी कृपा विशेष से ध्यान दिया वास्तविकता यह है कि ईश्वर ममता रखने वाला कृपा करने वाला है (117)

اللہ کی یہ عادت نہیں ہے کہ وہ کسی قوم کو ہدایت دے کر پھر گمراہ کردے جب تک کہ وہ اس کو یہ نہ بتادے کہ اسے کن چیزوں سے بچنا چاہیے، یقیناً اللہ ہر چیز سے واقف ہے(۱۱۵)
بے شک یہ اللہ ہی کی ذات ہے جس کا شاہانہ اقتدار تمام آسمانوں اور زمین پر ہے وہی جلاتا ہے وہی مارتا ہے اللہ کے سوا نہ تو تمہارا کوئی مددگار ہے نہ کارساز(۱۱۶)
بے شک اللہ نے رسول پر شفقت مہربانی کی اپنی رحمت سے نوازا اور مہاجرین اور انصار پر بھی جنہوں نے عسرت وتنگی اور بے سروسامانی کی حالت میں اس کے پیچھے قدم اٹھایا جب قریب تھا کہ ایک گروہ کے دل ڈگمگا جائیں لیکن اللہ نے اپنی رحمت خاص سے توجہ فرمائی حقیقت یہ ہے کہ اللہ شفقت رکھنے والا اور رحم فرمانے والا ہے(۱۱۷)

और वह तीन सहाबा भी जो विलंबित स्थिति में छोड़ दिए गए थे (उस कृपा से वंचित न रहे) जब दशा यह थी कि पृथ्वी अपनी सारी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई थी, और वह स्वयं भी अपनी जान से अक्षम हो गए थे और जान चुके थे अब ईश्वर के सिवा कहीं उनका ठिकाना नहीं, पस ईश्वर ने अपनी कृपा के साथ उन पर दया की ताकि वह पश्चाताप करें, निःसन्देह ईश्वर ही है जो पश्चाताप स्वीकार करता है और दयालु है (118)

اور وہ تین صحابہ بھی جو معلق حالت میں چھوڑ دیے گئے تھے (اس رحمت سے محروم نہ رہے) جب حالت یہ تھی کہ زمین اپنی ساری وسعت کے باوجود ان پر تنگ ہوگئی تھی اور وہ خود بھی اپنی جان سے عاجز آ گئے تھے اور جان چکے تھے اب اللہ کے سوا کہیں ان کا ٹھکانہ نہیں۔ پس اللہ نے اپنی رحمت کے ساتھ ان پر مہربانی کی تاکہ وہ توبہ کریں بے شک اللہ ہی ہے جو توبہ قبول کرتا ہے اور مہربان ہے(۱۱۸)

मुसलमानो! ईश्वर की अवज्ञा से बचो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ (119)
मदीने के रहने वालो और देहाती दलों के लिए यह बात उचित नहीं है कि वह ईश्वर के रसूल से पीछे रह जाएं और न यह कि अपनी जानो को उनकी

مسلمانو! اللہ کی نافرمانی سے ڈرو اور سچے لوگوں کے ساتھ ہو جاؤ(۱۱۹)
مدینہ کے باشندوں اور دیہاتی قبائل کے لئے یہ بات مناسب نہیں ہے کہ وہ اللہ کے رسول سے پیچھے رہ جائیں

जान से अधिक प्रिय रखें (अपितु नबी का साथ देना ईश्वर का आदेश है और आस्तिक ईश्वर का आदेश पूरा करता है अतः जो आस्तिक है वह पीछे नही रह सकता) यह इसलिए कि ऐसा कभी न होगा कि ईश्वर के मार्ग में भूख प्यास और जिस्मानी कष्ट की कोई पीड़ा वह झेलें और सत्य को झुठलाने वालों को जो मार्ग अप्रिय है उस पर कोई पग वह उठाऐं जो नास्तिकों को क्रोध दिलाए और किसी शत्रु से वह बदला लें और इसके बदले उनके लिए एक शुभ कर्म न लिखा जाए निःसन्देह ईश्वर के यहां उपकारियों का प्रतिदान मारा नही जाता (120)

اور نہ یہ کہ اپنی جانوں کو ان کی جان سے زیادہ عزیز رکھیں (بلکہ نبی کا ساتھ دینا اللہ کا حکم ہے اور مومن اللہ کا حکم پورا کرتا ہے اس لئے جو مومن ہے وہ پیچھے نہیں رہ سکتا) یہ اس لئے کہ ایسا کبھی نہ ہوگا کہ اللہ کی راہ میں بھوک پیاس اور جسمانی مشقت کی کوئی تکلیف وہ جھیلیں اور منکرین حق کو جو راہ ناگوار ہے اس پر کوئی قدم وہ اٹھائیں جو کافروں کو غصہ دلائے اور کسی دشمن سے وہ انتقام لیں اور اس کے بدلے ان کے حق میں ایک عمل صالح نہ لکھا جائے یقیناً اللہ کے یہاں محسنوں کا اجر مارا نہیں جاتا (۱۲۰)

और (इसी प्रकार) वह जो व्यय करते हैं थोड़ा या बहुत या कोई मैदान पार करते हैं तो यह सब कुछ उनके लिए लिख लिया जाता है ताकि ईश्वर उनको उनके कर्मों का बहुत अच्छा बदला दे जो वह करते रहे (121)

اور (اس طرح) وہ جو خرچ کرتے ہیں تھوڑا یا بہت یا کوئی میدان طے کرتے ہیں تو یہ سب کچھ ان کے لئے لکھ لیا جاتا ہے تا کہ اللہ ان کو ان کے اعمال کا بہت اچھا بدلہ دے جو وہ کرتے رہے (۱۲۱)

और यह तो हो नही सकता कि आस्तिक सबके सब निकल आएं तो यूं क्यों न किया कि हर दल में से कुछ व्यक्ति निकल जाएं ताकि धर्म का ज्ञान प्राप्त करके जाति की ओर वापस आऐं तो उनको डर सुनाऐं ताकि वह लोग बुराईयों से बचें (122)

اور یہ تو ہو نہیں سکتا کہ مومن سب کے سب نکل آئیں تو یوں کیوں نہ کیا کہ ہر جماعت میں سے چند آدمی نکل جائیں تا کہ دین کا علم حاصل کر کے سمجھ پیدا کریں اور جب اپنی قوم کی طرف واپس آئیں تو ان کو ڈرسنائیں تا کہ وہ لوگ برائیوں سے بچیں (۱۲۲)

ऐ आस्तिको! अपने निकट रहने वाले नास्तिकों से युद्ध करो और चाहिए कि वह तुम में कठोरता पाऐं और जान रखो कि ईश्वर सदाचारियों के साथ है (123)

اے ایمان والو! اپنے نزدیک رہنے والے کافروں سے جنگ کرو اور چاہیے کہ وہ تم میں سختی پائیں اور جان رکھو کہ اللہ پرہیزگاروں کے ساتھ ہے (۱۲۳)

और जब कोई सूरत अवतरित होती है तो कतिपय कपटि उनसे (व्यंग के तौर पर) पूछते हैं कि कहो तुम में से किसके विश्वास में इससे बढ़ौतरी हुई जो लोग विश्वास लाए हैं उनके विश्वास में वास्तव में वृद्धि ही हुई है वह इससे प्रसन्न हैं (124)

اور جب کوئی سورت نازل ہوتی ہے تو بعض منافق ان سے (مذاق کے طور پر) پوچھتے ہیں کہ کہو تم میں سے کس کے ایمان میں اس سے اضافہ ہوا؟ جو لوگ ایمان لائے ہیں ان کے ایمان میں حقیقت میں اضافہ ہی کیا ہے وہ اس سے خوش (۱۲۴)

और जिन लोगों के हृदयों में रोग है इस सूरत ने उनमें उनके मल के साथ और मल बढ़ा दिया और वह मरे भी तो काफ़िर (125) {9:28,90,95}

اور جن لوگوں کے دلوں میں روگ ہے اس سورت نے ان میں ان کی گندگی کے ساتھ اور گندگی بڑھا دی اور وہ مرے بھی تو کافر (۱۲۵)[۹:۲۸،۹۰،۹۵]

क्या वह देखते नही कि वह हर वर्ष एक या दो बार कष्ट में फंसाए जाते हैं फिर भी पश्चाताप नही करते और न शिक्षा प्राप्त करते हैं (126)

کیا وہ دیکھتے نہیں کہ وہ ہر سال ایک دو بار بلا میں پھنسائے جاتے ہیں پھر بھی توبہ نہیں کرتے اور نہ نصیحت پکڑتے ہیں (۱۲۶)

और जब कोई सूरत अवतरित होती है तो एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं भला तुम्हें कोई देखता है? फिर चल देते हैं ईश्वर के नियम ने उनके मनों को फैर रखा है क्योंकि वह ऐसे लोग हैं कि समझ से काम नही लेते (127)

اور جب کوئی سورت نازل ہوتی ہے تو ایک دوسرے کی طرف دیکھنے لگتے ہیں بھلا تمہیں کوئی دیکھتا ہے؟ پھر چل دیتے ہیں اللہ کے قانون نے ان کے دلوں کو پھیر رکھا ہے کیونکہ وہ ایسے لوگ ہیں کہ سمجھ سے کام نہیں لیتے (۱۲۷)

(लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल आए हैं तुम्हारी पीड़ा उनको कठिन ज्ञात होती है और तुम्हारी भलाई को बहुत चाहते हैं और आस्तिकों पर अत्यन्त ममता करने वाला कृपालु है (128)

(لوگو!) تمہارے پاس تم ہی میں سے ایک رسول آئے ہیں تمہاری تکلیف ان کو گراں معلوم ہوتی ہے اور تمہاری بھلائی کو بہت چاہتے ہیں اور مومنوں پر نہایت شفقت کرنے والا مہربان ہے (۱۲۸)

फिर यदि वह लोग फिर जाऐं तो कह दो कि ईश्वर

پھر اگر وہ لوگ پھر جائیں تو کہدو کہ اللہ میرے لئے کافی

मेरे लिए प्रयाप्त है कौन कहता है कि ईश्वर नही है तो सुनो निःसन्देह वह है उसी पर मेरा भरोसा है और वही विशाल सिंहासन का स्वामी है (129)

ہے کون کہتا ہے کہ اللہ نہیں ہے سنو یقیناً وہ ہے اسی پر میرا بھروسہ ہے اور وہی عرش عظیم کا مالک ہے (۱۲۹)

सूरत यूनुस (10) मक्की

سورت یونس (۱۰) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स0 यह उस पुस्तक की आयते है जो युक्ति और ज्ञान से परिपूर्ण है (1)

اے محمدؐ یہ اس کتاب کی آیتیں ہیں جو حکمت ودانش سے لبریز ہے (۱)

क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक व्यक्ति के पास आदेश भेज दिया कि सब व्यक्तियों को डराऐ और विश्वास ले आए उनको यह शुभ सूचना सुनाए कि उनके रब के पास उनको पूरा फल और पद मिलेगा नास्तिकों ने कहा कि यह व्यक्ति तो निःसन्देह खुला जादूगर है (2)

کیا ان لوگوں کو اس بات سے تعجب ہوا کہ ہم نے اُن میں سے ایک شخص کے پاس وحی بھیج دی کہ سب آدمیوں کو ڈرائے اور جو ایمان لے آئے ان کو یہ خوشخبری سنائے کہ ان کے رب کے پاس ان کو پورا اجر ومرتبہ ملے گا کافروں نے کہا کہ یہ شخص تو بلاشبہ صریح جادوگر ہے (۲)

लोगो! तुम्हारा स्वामी तो वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छै (आयाम) चर्णों में उत्पन्न किया फिर राज सिंहासन पर शोभामान होकर विश्व का प्रबन्ध चला रहा है कोई अनुशंसा करने वाला नही है परन्तु उस समय कि वह स्वयं किसी को आज्ञा दे वही ईश्वर तुम्हारा रब है, अतः तुम उसी की पूजा करो फिर क्या तुम चेतना में न आओगे (3) {2:28; 22:47;27:28;32:4;41:49,50;70:40}

لوگو! تمہارا پروردگار تو وہی ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ (ایام) ادوار میں پیدا کیا پھر تخت سلطنت پر جلوہ گر ہو کر کائنات کا انتظام چلا رہا ہے کوئی شفاعت کرنے والا نہیں ہے مگر اس وقت کہ وہ خود کسی کو اجازت دے وہی اللہ تمہارا رب ہے لہٰذا تم اسی کی عبادت کرو پھر کیا تم ہوش میں نہ آؤ گے (۳) [۲:۲۸؛۲۲:۴۷؛۲۷:۲۸؛۳۲:۴؛۴۱:۴۹،۵۰؛۷۰:۴۰]

उसी के पास तुम सबको लौटकर जाना है ईश्वर का वचन सत्य है वही रचना को पहली बार उत्पन्न करता है फिर वही उसको दोबारा उत्पन्न करेगा, ताकि विश्वास वालो और शुभ कार्य करने वालो को न्याय के साथ बदला दे और जो नास्तिक है उनके लिए पीने को अत्यन्त गर्म पानी और कष्ट देने वाला दण्ड होगा क्योंकि वह (ईश्वर की आयात का इनकार करते थे) (4) {41:50;2:28}

اسی کے پاس تم سب کو لوٹ کر جانا ہے اللہ کا وعدہ سچا ہے وہی خلقت کو پہلی بار پیدا کرتا ہے پھر وہی اس کو دوبارہ پیدا کرے گا تاکہ ایمان والوں اور نیک کام کرنے والوں کو انصاف کے ساتھ بدلہ دے۔ اور جو کافر ہیں ان کے لئے پینے کو نہایت گرم پانی اور درد دینے والا عذاب ہوگا۔ کیونکہ وہ (اللہ کی آیات کا) انکار کرتے تھے (۴) [۴۱:۵۰؛۲:۲۸]

वही है जिसने सूरज को चमकता हुआ (आग का गोला) बनाया और चान्द को (सूर्य के प्रकाश से) प्रकाश मान किया और चन्द्रमा के पड़ाव नियत किये ताकि तुम वर्षों (और महीनों) की गिनती ज्ञात करो और संख्यान ज्ञात करो, ईश्वर ने यह सब एक प्रबन्ध के अधीन बनाया है, समझने वालों के लिए वह अपनी आयतें खोल खोलकर कर बयान करता है (5) {6:96;17:12; 2:164; 3:191}

وہی ہے جس نے سورج کو چمکتا ہوا (آگ کا گولا) بنایا اور چاند کو (سورج کی روشنی سے) منور کیا اور چاند کی منزلیں مقرر کی تاکہ تم برسوں (اور مہینوں) کی گنتی معلوم کرو اور حساب معلوم کرو اللہ نے یہ سب ایک نظام کے تحت بنایا ہے سمجھنے والوں کے لئے وہ اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان فرماتا ہے (۵) [۶:۹۶؛۱۷:۱۲؛۲:۱۶۴؛۳:۱۹۱]

निःसन्देह रात दिन के एक दूसरे के पीछे आने जाने में और उन सब वस्तुओं में जो उसने आकाशों और पृथ्वी में उत्पन्न की है उन लोगों के लिए चिन्ह है जो सदाचारी और संयमी है (6)

بے شک رات دن کے ایک دوسرے کے پیچھے آنے جانے میں اور ان تمام چیزوں میں جو اس نے آسمانوں اور زمین میں پیدا کی ہیں ان لوگوں کے لئے نشانیاں ہیں جو متقی اور پرہیزگار ہیں (۶)

जिन लोगों को हम से मिलने की आशा नही और दुनिया के जीवन से प्रसन्न और उसी पर सन्तुष्ट हो बैठे है और हमारे चिन्हों से अचेत हो रहे है (7)

جن لوگوں کو ہم سے ملنے کی امید نہیں اور دنیا کی زندگی سے خوش اور اسی پر راضی ہو بیٹھے ہیں اور ہماری نشانیوں سے غافل ہو رہے ہیں (۷)

उनका स्थान उनके बुरे कर्मों के कारण जो वह करते रहे है नर्क होगा (8)

ان کا ٹھکانا ان کے اعمال بد کی وجہ سے جو وہ کرتے رہے ہیں دوزخ ہوگا (۸)

निःसन्देह जो लोग विश्वास लाए और उन्होंने शुभ

یقیناً جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے نیک کام کئے ان کا

कार्य किए उनका रब उनको उनके विश्वास के कारण सफलता का मार्ग खोल देगा, और ऐसे स्वर्ग में प्रवेश करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी. (9)

رب ان کو ان کے ایمان کے سبب کامیابی کی راہ کھول دے گا اور ایسی جنت میں داخل کرے گا جس کے نیچے نہریں بہ رہی ہوں گے(۹)

वहां वह लोग (ईश्वर की निधियों को देखकर) पुकार उठेंगे ऐ ईश्वर तेरा अस्तित्व पवित्र है, और आपस में उनका उपहार यह होगा तुम पर शान्ति हो और उनकी अंतिम पुकार यह होगी हर प्रकार की प्रशंसा ईश्वर के लिए है जो सारे संसार का पालन हार है (10)

وہاں وہ لوگ (اللہ کی نعمتوں کو دیکھ کر) پکار اُٹھیں گے اے اللہ تیری ذات پاک ہے اور آپس میں ان کا تحفہ یہ ہوگا تم پر سلامتی ہو اور ان کی آخری صدا یہ ہوگی ہر طرح کی تعریف اللہ کے لئے ہے جو سارے جہاں کا پالنہار ہے(۱۰)

और यदि ईश्वर लोगों की बुराई में जल्दी करता जिस प्रकार वह (इन्सान) मंगल मांग में जल्दी करता है तो उनकी अवधि पूरी हो चुकी होती सो जिन लोगों को हम से मिलने की आशा नही उन्हें हम छोड़े रखते हैं कि अपनी अवज्ञा में बहकते रहें (11)

اور اگر اللہ لوگوں کی بُرائی میں جلدی کرتا جس طرح وہ طلب خیر میں جلدی کرتے ہیں تو ان کی میعاد پوری ہو چکی ہوتی۔سو جن لوگوں کو ہم سے ملنے کی امید نہیں انہیں ہمارا قانون چھوڑے رکھتا ہے کہ اپنی سرکشی میں بھٹکتے رہیں(۱۱)

और जब इन्सान को कष्ट पहुंचता है तो लेटा और बैठा और खड़ा हमें पुकारता है फिर जब हम उसको उस कष्ट से दूर कर देते हैं तो इस प्रकार गमन हो जाता है कि मानो किसी कष्ट पहुंचने पर हमें कभी पुकारा ही न था इसी प्रकार सीमा से निकल जाने वालों को उनके कर्म जो वह करते थे सुसज्जित करके दिखाए गए हैं (12) {10:22,23}

اور جب انسان کو تکلیف پہنچتی ہے تو لیٹا اور بیٹھا اور کھڑا ہمیں پکارتا ہے پھر جب ہم اس کو اس تکلیف سے دور کردیتے ہیں تو اس طرح گزر جاتا ہے کہ گویا کسی تکلیف پہنچنے پر ہمیں کبھی پکارا ہی نہ تھا اسی طرح حد سے نکل جانے والوں کو ان کے عمل جو وہ کرتے تھے آراستہ کر کے دکھائے گئے ہیں(۱۲)[۲۳،۲۲:۱۰]

तुम से पहले कितनी उम्मतें गमन हो चुकी हैं जब उन्होंने अत्याचार का मार्ग अपनाया तो हमने उन्हें वध कर डाला, उनके पास उनके रसूल खुले चिन्ह ले कर आए थे, परन्तु वह ऐसे न थे कि विश्वास ले आते पापियों को हम इसी प्रकार उनके पापों का बदला देते हैं (13)

تم سے پہلے کتنی امتیں گزر چکی ہیں جب انہوں نے ظلم کی راہ اختیار کی تو ہم نے انہیں ہلاک کرڈالا۔ان کے پاس ان کے رسول کھلی نشانیاں لے کر آئے تھے۔لیکن وہ ایسے نہ تھے کہ ایمان لے آتے مجرموں کو ہم اسی طرح ان کے جرموں کا بدلہ دیتے ہیں(۱۳)

फिर उन लोगों के वध के बाद हमने तुमको उनका उत्तराधिकारी बनाया ताकि देखें कि तुम कैसे कार्य करते हो (14)

پھر ان لوگوں کی ہلاکت کے بعد ہم نے تم کو ان کا جانشین بنایا تاکہ دیکھیں کہ تم کیسے کام کرتے ہو(۱۴)

जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाएँगी तो वह लोग जिनको आशा नहीं (रसूल से) कहेंगे (चूंकि इस कुरआन में हमारे देवताओं की बुराई है अतः) तुम इस कुरआन के अतिरिक्त कोई और कुरआन ले आओ (जिसमें हमारे देवताओं की बुराई न हो) कह दो कि मुझको अधिकार नही है कि मैं उसे अपनी ओर से बदल दूं मैं तो उस आदेश का आबद्ध हूं जो मेरी ओर वही किया जाता है, यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूं (और इस कुरआन का एक अक्षर भी बदल दूं) तो मुझे डर लगता है कि कही मुझ पर यातना का बहुत बुरा दिन न आजाए (15) {3:16}

جب ان کے سامنے ہماری آیتیں پڑھ کر سنائی جائیں گی تو وہ لوگ جن کو (مرنے کے بعد) ہمارے سامنے آنے کی امید نہیں (رسول سے) کہیں گے (چونکہ اس قرآن میں ہمارے بتوں کی بُرائی ہے اس لئے) تم اس قرآن کے علاوہ کوئی اور قرآن لے آؤ (جس میں ہمارے بتوں کی بُرائی نہ ہو) کہدینا کہ مجھ کو اختیار نہیں ہے کہ اسے اپنی طرف سے بدل دوں میں تو اس حکم کا پابند ہوں جو میری طرف وحی کیا جاتا ہے۔اگر میں اپنے رب کی نافرمانی کروں (اور اس قرآن کا ایک حرف بھی بدل دوں) تو مجھے ڈر لگتا ہے کہ کہیں مجھ پر عذاب کا بہت بُرا دن نہ آجائے(۱۵)[۱۶:۳]

यह भी कह दो कि यदि ईश्वर चाहता ता (न तो) मैं ही यह (पुस्तक) तुमको पढ़ कर सुनाता और न वही तुम्हें इससे अवगत कराता, मैं इससे पहले तुम में एक आयू रहा हूं (और कभी एक वाक्य भी मिथ्या न कहा तुमने मुझे विश्वसनीय और सत्य वादी कहा) भला तुम समझते नही (16)

(یہ بھی) کہدو کہ اگر اللہ چاہتا تو (نہ تو) میں ہی یہ (کتاب) تم کو پڑھ کر سناتا اور نہ وہی تمہیں اس سے واقف کراتا۔میں اس سے پہلے تم میں ایک عمر رہا ہوں (اور کبھی ایک کلمہ بھی غلط نہ کہا تم نے مجھے امین اور صادق کہا) بھلا تم سمجھتے نہیں(۱۶)

अच्छा तो बताओ उससे बढ़ कर अन्यायी कौन होगा जो अपनी ओर से झूट घढ़ कर ईश्वर पर

اچھا تو بتاؤ اس سے بڑھ کر ظالم کون ہوگا جو اپنی طرف سے جھوٹ گھڑ کر اللہ پر افترا کرے یا جو اللہ کی آیات کو

मिथ्यारोप करे या जो ईश्वर की आयात को झुटलाए निःसंदेह पापी सफलता नही पाएंगे (17)

جھٹلائے بے شک گنہگار فلاح نہیں پائیں گے (١٧)

और जो ईश्वर को छोड़ कर ऐसी वस्तुओ की पूजा करते है जो न उन्हें हानी पहुंचा सकती है और न लाभ और वह लोग कहते है यह तो ईश्वर के समक्ष हमारे अनुशंसक है उनसे ज्ञात करो क्या तुम ईश्वर को ऐसी बातों की सूचना दे रहें हो जिसका अस्तित्व उसे न आकाशों में ज्ञात होता है और न पृथ्वी में? वह जैसा अनेकेश्वर वाद कर रहें है उसका आस्तित्व इससे पवित्र और उच्च है (18) [3:10, 21:28-29]

اور وہ اللہ کو چھوڑ کر ایسی چیزوں کی پرستش کرتے ہیں جو نہ انہیں نقصان پہنچا سکتی ہے اور نہ نفع اور وہ لوگ کہتے ہیں یہ تو اللہ کے حضور ہمارے شفارشی ہیں ان سے پوچھو کیا تم اللہ کو ایسی باتوں کی خبر دے رہے ہو جس کا وجود اسے نہ آسمانوں میں معلوم ہوتا ہے اور نہ زمین میں؟ وہ جیسا شرک کر رہے ہیں اس کی ذات اس سے پاک اور بلند ہے (١٨) [٣:١٠، ٢١:٢٨-٢٩]

और जो सब लोग है निःसंदेह वह सब एक ही समुदाय अर्थात मिल्लत थे फिर मत भेद करके पृथक पृथक हो गए और यदि एक बात जो तुम्हारे रब की ओर से पहले हो चुकी है न होती तो जिन बातों में वह विभेद करते है, उनमें निर्णय कर दिया जाता (19)

اور جو سب لوگ ہیں یقیناً وہ سب ایک ہی امت یعنی ملت تھے پھر اختلاف کر کے جدا جدا ہو گئے اور اگر ایک بات جو تمہارے رب کی طرف سے پہلے ہو چکی ہے نہ ہوتی تو جن باتوں میں وہ اختلاف کرتے ہیں ان میں فیصلہ کر دیا جاتا (١٩)

और नास्तिक कहते है इसके रब की ओर से इसे कोई चिन्ह चमत्कार क्यों न दिया गया? तुम कह दो कि परोक्ष का ज्ञान तो ईश्वर को ही है सो तुम प्रतीक्षा करो मैं भी प्रतीक्षा करता हूं (20)

اور کافر کہتے ہیں اس کے رب کی طرف سے اسے کوئی نشانی (معجزہ) کیوں نہ دی گئی؟ تم کہہ دو کہ غیب کا علم تو اللہ ہی کو ہے سو تم انتظار کرو میں بھی تمہارے ساتھ انتظار کرتا ہوں (٢٠)

नोट- कुरआन में अनेक आयात ऐसी है जिनमें नास्तिकों की ओर से चमत्कार की मांग की गई है, और बार बार नास्तिको के इस कथन का उल्लेख किया है "यह कैसा रसूल है? चमत्कार क्यों नही दिखाता?" और हर बार कुरआन का उत्तर कुछ इस प्रकार का रहा कि चमत्कार रसूल के अधिकार में नही है वह कैसे दिखा दे इससे यह बात सिद्ध हो गई कि मुहम्मद स० ने कभी चमत्कार नही दिखाया, परन्तु उनका सबसे बड़ा चमत्कार यह कुरआन है जिसकी पुष्टि स्वंय कुरआन की आयात कर रही है और यह भी मिथ्या है कि आप ने चन्द्रमा के दो टुकड़े कर दिए इस विषय में सूरत कमर में लिखा जाएगा,

نوٹ: قرآن میں متعدد آیات ایسی ہیں جن میں کافروں کی طرف سے معجزے کی فرمائش کی گئی ہے اور بار بار کافروں کا یہ جملہ نقل کیا گیا ہے "یہ کیسا رسول ہے؟ معجزہ کیوں نہیں دکھاتا؟" اور ہر بار قرآن کا جواب کچھ اس طرح کا رہا کہ معجزہ رسول کے اختیار میں نہیں ہے وہ کیسے دکھا دے اس سے یہ بات ثابت ہو گئی کہ محمدؐ نے کبھی معجزہ نہیں دکھایا ان کا سب سے بڑا معجزہ یہ قرآن ہے جس کی تصدیق خود قرآن کی آیت کر رہی ہے اور یہ بھی غلط ہے کہ آپ نے چاند کے دو ٹکڑے کر دئے اس کے بارے میں سورت قمر میں لکھا جائے گا۔

और जब हम लोगों को कष्ट पहुंचने के बाद अपनी कृपा का स्वाद चखाते है तो वह हमारी आयतों में हीले करने लगते है, कह दो कि ईश्वर बहुत जल्द उपाय करने वाला है, और जो चाल तुम चलते हो हमारे फरिश्ते उनको लिखते जाते है (21)

اور جب ہم لوگوں کو تکلیف پہنچنے کے بعد اپنی رحمت کا مزہ چکھاتے ہیں تو وہ ہماری آیتوں میں حیلے کرنے لگتے ہیں کہہ دو کہ اللہ بہت جلد تدبیر کرنے والا ہے اور جو چال تم چلتے ہو ہمارے فرشتے ان کو لکھتے جاتے ہیں (٢١)

वही तो है जो तुम्हें थल और जल में भ्रमण व पर्यटन की क्षमता देता है, अतः जब ऐसा होता है कि तुम पोत में स्वार होते हो और पोत अनुकूल वायू पा कर तुम्हें ले चलता है और यात्री प्रसन्न होते है, कि अचानक हवा के तीव्र झोंके प्रकट हो जाते है और हर ओर से लहरें उन पर आवेश मारती हुई आने लगती है, और यात्री विचार करने लगते है कि लहरों में घिर गए उस समय वह पूरे शुद्ध हृदय के साथ ईश्वर को ही पुकारने लगते है, यदि तू हमें इस चक्रवात से बचा ले तो निःसंदेह हम तेरे आज्ञा कारी हो जाएंगे (22)

وہی تو ہے جو تمہیں خشکی اور تری میں سیر و سیاحت کی توفیق دیتا ہے چنانچہ جب ایسا ہوتا ہے کہ تم جہاز میں سوار ہوتے ہو اور جہاز موافق ہوا پا کر تمہیں لے چلتے ہیں اور مسافر خوش ہوتے ہیں کہ اچانک ہوا کے تیز جھونکے نمودار ہو جاتے ہیں اور ہر طرف سے لہریں ان پر جوش مارتی ہوئی آنے لگتی ہیں اور مسافر خیال کرنے لگتے ہیں کہ لہروں میں گھر گئے اس وقت وہ پورے خلوص کے ساتھ اللہ ہی کو پکارنے لگتے ہیں اگر تو ہمیں اس توفان سے بچا لے تو یقیناً ہم تیرے فرمانبردار ہو جائیں گے (٢٢)

परन्तु जब वह उनको मुक्ति दे देता है तो देश में अनुचित उत्पात करने लगते है लोगों तुम्हारे उत्पात का कष्ट तुम्हारी ही जानों पर होगा तुम दुनिया के जीवन के लाभ उठा लो फिर तुमको हमारे ही पास लौट कर आना है, उस समय हम तुमको बताएंगे

لیکن جب وہ ان کو نجات دے دیتا ہے تو ملک میں ناحق شرارت کرنے لگتے ہیں لوگو! تمہاری شرارت کا وبال تمہاری ہی جانوں پر ہو گا تم دنیا کی زندگی کے فائدے اٹھا لو پھر تم کو ہمارے ہی پاس لوٹ کر آنا ہے اس وقت ہم

जो कुछ तुम करते हो (23)

تم کو بتائیں گے جو کچھ تم کرتے رہے ہو (۲۳)

दुनिया के जीवन की उपमा तो ऐसी है जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया और उससे पृथ्वी पल्लवित हो गई और वनस्पति जो इन्सानों और चौपायों को भोजन का काम देती है उग आई और पृथ्वी अपने हरे भरे पौदो से सुसज्जित हो गई और धरती वालो को विश्वास हो गया कि अब वह हमारे अधिकार में है कि अचानक रात के समय या दिन के समय हमारा ओदश (यातना) आ पहुंची और हमारे नियम ने सारी उपज इस प्रकार नष्ट कर दी मानो एक दिन पहले वहां कुछ था ही नही जो लोग मनन करते है उनके लिए हम अपने हम अपने चिन्ह इसी प्रकार खोल खोल कर वर्णन करते है (24)

دنیا کی زندگی کی مثال تو ایسی ہے جیسے ہم نے آسمان سے پانی برسایا اور اس سے زمین شاداب ہوگئی اور نباتات جو انسانوں اور چوپایوں کی غذا کا کام دیتی ہیں اُگ آئیں اور زمین اپنے ہرے بھرے پودوں سے آراستہ ہوگئی اور زمین والوں کو یقین ہوگیا کہ اب وہ ہمارے قبضہ میں ہے کہ اچانک رات کے وقت یا دن کے وقت ہمارا حکم (عذاب) آپہنچا اور ہمارے قانون نے ساری فصل اس طرح برباد کردی گویا ایک دن پہلے وہاں کچھ تھا ہی نہیں جو لوگ غور کرتے ہیں ان کے لئے ہم اپنی نشانیاں اسی طرح کھول کھول کر بیان کرتے ہیں (۲۴)

नोट- दुनिया के जीवन की सफलताओ और मन मोहकता का हाल यही है, यह तात्कालिक और सामयिक होते है, उन में दृढ़ता और स्थिरता नही होती कोई सुख कैसा ही हो स्थाई नही होता कल जो दशा थी आज नही रही आज जो स्थिति है कल न रहेगी, कोई सुख ऐसा नही है जो किसी दुख की सूचना सिद्ध न हो सच कहा है कवि ने

क्या भरोसा जिन्दगानी का ☆ आदमी बुलबुला है पानी का।

अतः इन्सान का कर्तव्य है कि वह उन्ही वस्तुओं से सम्पर्क रखे जिसका फल सदैव रहने वाला हो,

نوٹ:۔دنیا کی زندگی کی کامرانیوں اور دل فریبیوں کا حال یہی ہے یہ ہنگامی اور وقتی ہوتے ہیں ان میں ثبات اور قیام نہیں ہوتا.کوئی عیش کیسا ہی ہو پائدار نہیں ہوتا کل جو حالت تھی آج نہیں رہی آج جو حالت ہے کل نہ رہے گی کوئی عیش ایسا نہیں ہے جو کسی غم کا پیش خیمہ ثابت نہ ہو سچ کہا ہے شاعر نے۔

کیا بھروسہ زندگانی کا ☆ آدمی بلبلہ ہے پانی کا

اس لئے انسان کا فرض ہے کہ وہ انہی چیزوں سے واسطہ رکھے جس کا نتیجہ دوامی ہو.

ईश्वर इन्सान को शान्ति के भवन की ओर बुलाता है और (उसके बन्दों में से) जो चाहता है उसको जीवन के सीधे मार्ग की ओर लगा देता है (25)

اللہ انسان کو سلامتی کے گھر کی طرف بلاتا ہے اور (اس کے بندوں میں سے) جو چاہتا ہے اس کو زندگی کے سیدھے رستہ کی طرف لگا دیتا ہے (۲۵)

जिन लोगों ने भलाई का मार्ग स्वीकार किया उनके लिए भलाई है और अधिक यह कि उनके मुखों पर स्याही और अपमान न छाएगा, वह स्वर्ग के अधिकारी है जहां वह सदैव रहेंगे (26)

جن لوگوں نے بھلائی کا طریقہ اختیار کیا ان کے لئے بھلائی ہے اور مزید یہ کہ ان کے چہروں پر سیاہی اور ذلت نہ چھائے گی وہ جنت کے حقدار ہیں جہاں وہ ہمیشہ رہیں گے (۲۶)

जिन लोगों ने बुरे काम किए उनकी बुराई का बदला वैसा ही होगा जैसी बुराई उन्होंने की होगी और उनके मुखों पर अपमान और अपयश छाया होगा और ईश्वर से उन्हें बचाने वाला कोई न होगा उनके चेहरों पर इस प्रकार कालक छा जाएगी जैसे अंधेरी रात का एक टुकड़ा उन पर उढ़ा दिया गया हो वह लोग नर्की है नर्क ही में रहेंगे (27)

جن لوگوں نے بُرے کام کئے ان کی بُرائی کا بدلہ ویسا ہی ہوگا جیسی بُرائی انہوں نے کی ہوگی اور ان کے چہروں پر ذلت اور رسوائی چھائی ہوگی اور اللہ سے انہیں بچانے والا کوئی نہ ہوگا ان کے چہروں پر اس طرح کالک چھا جائے گی جیسے اندھیری رات کا ایک ٹکڑا ان پر اڑھا دیا گیا ہو وہ لوگ دوزخی ہیں دوزخ ہی میں رہیں گے (۲۷)

और जिस दिन हम उन सबको एकत्र करेंगे फिर अनेकेश्वर वादियों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे साझी अपने अपने स्थान पर ठेरे रहो तो हमारा नियम उनमें मतभेद डाल देगा और उनके साझी कहेंगे कि तुम हमको तो नही पूजा करते थे (28)

اور جس دن ہم ان سب کو جمع کریں گے پھر مشرکوں سے کہیں گے کہ تم اور تمہارے شریک اپنی اپنی جگہ ٹھیرے رہو تو ہمارا قانون ان میں تفرقہ ڈال دے گا اور ان کے شریک کہیں گے کہ تم ہم کو تو نہیں پوجا کرتے تھے (۲۸)

हमारे और तुम्हारे मध्य ईश्वर ही शाक्षी प्रयाप्त है हम तुम्हारी पूजा से निश्चित बेखबर थे (29)

ہمارے اور تمہارے درمیان اللہ ہی گواہ کافی ہے ہم تمہاری پرستش سے بالکل بے خبر تھے (۲۹)

वहां हर व्यक्ति (कर्म) जो उसने आगे भेजे होंगे को देख लेगा और वह अपने सच्चे स्वामी की ओर लौटाए जाएंगे और जो कुछ वह दोषारोपण बान्धा करते थे सब उनसे जाता रहेगा (30)

وہاں ہر شخص (اعمال) جو اس نے آگے بھیجے ہوں گے کو دیکھ لے گا اور وہ اپنے سچے مالک کی طرف لوٹائے جائیں گے اور جو کچھ وہ بہتان باندھا کرتے تھے سب ان سے جاتا رہے گا (۳۰)

(उन से) ज्ञात करो कि तुम को आकाश और पृथ्वी

(ان سے) پوچھو کہ تم کو آسمان اور زمین میں رزق کون دیتا

में जीविका कौन देता है या तुम्हारे कानों और आंखों का स्वामी कौन है और बेजान से जानदार कौन उत्पन्न करता है और जानदार से बेजान को कौन पैदा करता है और दुनिया के कार्यों का प्रबन्ध कौन करता है? तुरन्त कह देंगे कि ईश्वर तो कहो कि फिर तुम डरते क्यों नही (31)

यही तो ईश्वर तुम्हारा सत्य रब है अब बताओ सत्य बात जान लेने के बाद उसको न मानना पथ भ्रष्टता नही तो और क्या है निःसन्देह पथ भ्रष्टता है तो तुम कहां फिरे जाते हो? (32)

इसी प्रकार ईश्वर का आदेश उन अवज्ञाकारियों के प्रति सिद्ध होकर रहा कि वह विश्वास न लाएंगे (33)

उनसे ज्ञात करो क्या तुम्हारे साझी में कोई ऐसा भी है जो पहली बार रचना को उत्पन्न करे फिर उसको दोबारा बनाऐं कह दो कि ईश्वर ही है जो पहली बार पैदा करता है और वही जो फिर दोहराएगा तो तुम कहां बहके जा रहे हो (34)

उनसे ज्ञात करो क्या तुम्हारे साझीयों में कोई ऐसा भी है जो सत्य की ओर मार्ग दर्शन करता है कहो यह ईश्वर ही है जो सत्य की ओर मार्ग दर्शन करता है और जो सत्य की ओर मार्ग दर्शन करे वह इस बात का अधिकारी है कि उसका अनुकरण किया जाए या वह कि जब तक कोई उसे मार्ग न बताए मार्ग न पाए तो तुम को क्या हुआ है कैसा न्याय करते हो? (35)

और उनमें के अधिकांश अनुमान का अनुकरण करते हैं और निःसन्देह अनुमान सत्य की तुलना में कुछ भी उपयोगी नही हो सकता, निःसन्देह ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अवगत है (36)

और यह कुरआन ऐसा नही कि ईश्वर के सिवा कोई इसको अपनी ओर से बना लाए हां यह ईश्वर का कथन है जो पुस्तकें इस से पहली सुरक्षा के बीच है उनकी पुष्टि करता है और उन्ही पुस्तकों का (इसमें) विस्तार है इसमें कुछ संदेह नही कि यह विश्व पालक की ओर से (अवतरित हुआ) है (37)

क्या वह लोग कहते है कि रसूल ने इसको अपनी ओर से बना लिया है कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी इस प्रकार की एक सूरत विधि बना लाओ और ईश्वर के सिवा जिनको तुम बुला सको बुला लो (38) {2:23;6:94;17:88}

इसके विषय में नोट (2:23) पर अवलोकन हो (13:11) बात यह है कि जिस वस्तु की परिक्रमा नही कर सके और इसका परिणाम भी उनके सामने नही आया उसे उन्होंने झुठला दिया बिल्कुल इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पहले गुज़र हो चुके हैं तो देखो अत्याचारियों का कैसा अन्त हुआ? (39) {3:12;7:53; 9:33; 48:28}

और उनमें से कुछ तो ऐसे है कि इस पर विश्वास ले आएंगे और कुछ ऐसे है कि विश्वास नही लाएंगे

ہے یا تمہارے کانوں اور آنکھوں کا مالک کون ہے اور بے جان سے جان دار کون پیدا کرتا ہے اور جان دار سے بے جان کو کون پیدا کرتا ہے اور دنیا کے کاموں کا انتظام کون کرتا ہے؟ فوراً کہدیں گے کہ اللہ تو کہو کہ پھر تم ڈرتے کیوں نہیں (۳۱)

یہی اللہ تو تمہارا رب حقیقی ہے اب بتاؤ حق بات جان لینے کے بعد اس کو نہ ماننا گمراہی نہیں تو اور کیا ہے یقیناً گمراہی ہے تو تم کہاں پھرے جاتے ہو؟ (۳۲)

اسی طرح اللہ کا فرمان ان نافرمانوں کے حق میں ثابت ہو کر رہا کہ وہ ایمان نہ لائیں گے (۳۳)

ان سے پوچھو کیا تمہارے شرکا میں کوئی ایسا بھی ہے جو پہلی بار مخلوق کو پیدا کرے پھر اس کو دوبارہ بنائے؟ کہدو کہ اللہ ہی ہے جو پہلی بار پیدا کرتا ہے اور وہی ہے جو پھر دہرائے گا تو تم کہاں بہکے جارہے ہو (۳۴)

ان سے پوچھو کیا تمہارے شریکوں میں کوئی ایسا بھی ہے جو حق کی طرف رہنمائی کرتا ہے کہو یہ اللہ ہی ہے جو حق کی طرف رہنمائی کرتا ہے اور جو حق کی طرف رہنمائی کرے وہ اس بات کا حق دار ہے کہ اس کی پیروی کی جائے۔ یا وہ کہ جب تک کوئی اسے رستہ نہ بتائے رستہ نہ پائے تو تم کو کیا ہوا ہے کیسا انصاف کرتے ہو؟ (۳۵)

اور ان میں کے اکثر صرف ظن کی پیروی کرتے ہیں اور یقیناً ظن حق کے مقابلہ میں کچھ بھی کارآمد نہیں ہو سکتا بے شک اللہ تمہارے اعمال سے واقف ہے (۳۶)

اور یہ قرآن ایسا نہیں کہ اللہ کے سوا کوئی اس کو اپنی طرف سے بنا لائے ہاں یہ اللہ کا کلام ہے جو کتابیں اس سے پہلی حفاظت کے درمیان ہیں ان کی تصدیق کرتا ہے اور انہی کتابوں کی (اس میں) تفصیل ہے اس میں کچھ شک نہیں کہ یہ رب العالمین کی طرف سے (نازل ہوا) ہے (۳۷)

کیا وہ لوگ کہتے ہیں کہ رسول نے اس کو اپنی طرف سے بنالیا ہے کہدو کہ اگر سچے ہو تو تم بھی اس طرح کی ایک سورت ضابطہ بنالاؤ اور اللہ کے سوا جن کو تم بلا سکو بلا لو (۳۸)[۲:۲۳؛۶:۹۴؛۱۷:۸۸] اس کے بارے میں نوٹ ۲:۲۳ پر ملاحظہ ہو (۱۳:۱۱)

بات یہ ہے کہ جس چیز کا احاطہ نہیں کر سکے اور اس کا نتیجہ بھی ان کے سامنے نہیں آیا اسے انہوں نے جھٹلا دیا، بالکل اسی طرح ان لوگوں نے بھی جھٹلا دیا تھا جو ان سے پہلے گزر چکے ہیں تو دیکھو ظالموں کا کیسا انجام ہوا؟ (۳۹)

[۳:۱۲؛۷:۵۳؛۹:۳۳؛۴۸:۲۸]

اور ان میں سے کچھ تو ایسے ہیں کہ اس پر ایمان لے آئیں اور کچھ ایسے ہیں کہ ایمان نہیں لائیں گے اور تمہارا رب

और तुम्हारा रब दुष्टों से भली भांति अवगत है (40)

شریروں سے خوب واقف ہے(۴۰)

और यदि यह तुम को झुटलाऐं तो कह दो कि मुझ को मेरे कर्म और तुम को तुम्हारे कर्मों का बदला मिलेगा तुम मेरे कर्मों के उत्तरदायी नही हो और मैं तुम्हारे कर्मों का उत्तरदायी नही (41)

اور اگر یہ تمہاری تکذیب کریں تو کہدو کہ مجھ کو میرے اعمال اور تم کو تمہارے اعمال کا بدلہ ملے گا تم میرے عملوں کے جواب دہ نہیں ہو اور میں تمہارے عملوں کا جواب دہ نہیں ہوں(۴۱)

और उनमें कतिपय ऐसे हैं कि तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरो को सुनाओगे यद्यपि कुछ भी समझते न हो (42)

اور ان میں بعض ایسے ہیں کہ تمہاری طرف کان لگاتے ہیں تو کیا تم بہروں کو سناؤ گے اگر چہ کچھ بھی سمجھتے نہ ہوں (۴۲)

और कतिपय ऐसे हैं कि तुम्हारी ओर देखते हैं तो क्या तुम अन्धों को मार्ग दिखाओगे यद्यपि कुछ भी देखते न हो (43)

اور بعض ایسے ہیں کہ تمہاری طرف دیکھتے ہیں تو کیا تم اندھوں کو راستہ دکھاؤ گے اگر چہ کچھ بھی دیکھتے نہ ہوں (۴۳)

ईश्वर तो लोगों पर अन्याय नही करता परन्तु लोग ही अपने ऊपर अन्याय करते हैं (44)

اللہ تو لوگوں پر ظلم نہیں کرتا لیکن لوگ ہی اپنے اوپر ظلم کرتے ہیں (۴۴)

जिस दिन ईश्वर उन्हें अपने सामने एकत्र करेगा उन्हें ऐसा अनुभूत होगा मानो इससे अधिक नही रहे जैसे दुनिया में घड़ी भर को ठहर गए और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे निःसन्देह जिन्होंने ईश्वर के सामने उपस्थित होने को झुटलाया वह अवश्य घाटे में हैं और पथ प्रदर्शन पर न थे (45) {23:113;30:55, 56;46:35;70:44}

جس روز اللہ انہیں اپنے سامنے جمع کرے گا انہیں ایسا محسوس ہوگا گویا اس سے زیادہ نہیں رہے جیسے دنیا میں گھڑی بھر کوئی ٹھہر گئے اور آپس میں ایک دوسرے کو پہنچانیں گے یقیناً وہ لوگ جنہوں نے اللہ کے سامنے حاضر ہونے کو جھٹلایا وہ ضرور گھاٹے میں ہیں اور ہدایت پر نہ تھے(۴۵)[۲۳:۱۱۳؛۳۰:۵۵،۵۶؛۴۶:۳۵؛۷۰:۴۴]

और यदि हम तुम्हें दिखा दें कुछ उस में से जो उन्हें वचन दे रहे हैं या तुम्हें पहले ही जीवन के दिन पूरे करके मृत्यु दें फिर हमारी ओर उन्हें लौटना है फिर उनका कोई कर्म ईश्वर से छुपा हुआ नही है (46) {5:117;46:55}

اور اگر ہم تمہیں دکھا دیں کچھ اس میں سے جو انہیں وعدہ دے رہے ہیں یا تمہیں پہلے ہی زندگی کے دن پورے کر کے وفات دیں پھر ہماری طرف انہیں لوٹنا ہے پھر ان کا کوئی عمل اللہ سے چھپا ہوا نہیں ہے(۴۶)[۵:۱۱۷؛۴۶:۵۵]

और हर एक समुदाय की ओर रसूल भेजा गया जब उनका रसूल आता है तो उनमें न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है और उन पर कुछ अन्याय नही किया जाता (47) {61:6;10:45}

اور ہر ایک امت کی طرف رسول بھیجا گیا جب ان کا رسول آتا ہے تو ان میں انصاف کے ساتھ فیصلہ کر دیا جاتا ہے اور ان پر کچھ ظلم نہیں کیا جاتا (۴۷)[۶۱:۶؛۱۰:۴۵]

वह कहेंगे कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वचन दण्ड कब आएगा (48)

اور وہ کہیں گے کہ اگر تم سچے ہو تو یہ وعدہ عذاب کب آئے گا (۴۸)

तुम कह देना मैं तो स्वयं अपनी जान के लाभ और हानि का भी मालिक नही हूं निःसन्देह वही होता है जो ईश्वर चाहता है हर समुदाय (के पतन) का एक समय निश्चित है जब वह आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं न आगे (49) {12:31;3:93;11:107,108;39:68}

تم کہدینا میں تو خود اپنی جان کے نفع اور نقصان کا مالک نہیں ہوں یقیناً وہی ہوتا جو اللہ چاہتا ہے ہر امت (کے زوال) کا ایک وقت مقرر ہے جب وہ وقت آجاتا ہے تو نہ ایک گھڑی پیچھے رہ سکتے ہیں نہ آگے (۴۹)[۱۲:۳۱؛۳:۹۳؛۱۱:۱۰۷،۱۰۸؛۳۹:۶۸]

कह दो कि भला देखो तो यदि उस का दण्ड तुम पर अचानक आ जाए रात को या दिन को तो फिर पापी किस बात की जल्दी करेंगे (50)

کہدو کہ بھلا دیکھو تو اگر اس کا عذاب تم پر اچانک آجائے رات کو یا دن کو تو پھر گنہگار کس بات کی جلدی کریں گے (۵۰)

क्या उस समय विश्वास लाओगे जब वह आ जाएगा, तब कहा जाएगा और अब विश्वास लाए? इसी के लिए तो तुम जल्दी किया करते थे (यह वही कष्ट है) (51)

کیا اس وقت ایمان لاؤ گے جب وہ آجائے گا تب کہا جائے گا اور اب ایمان لائے؟ اسی کے لئے تو تم جلدی کیا کرتے تھے (یہ وہی عذاب ہے)(۵۱)

फिर उन पापियों से कहा जाएगा अब सदैव के दण्ड का स्वाद चखो आज तुम उन्ही कर्मों का बदला पाओगे जो करते रहे हो (52)

پھر ان ظالموں سے کہا جائے گا اب دائمی عذاب کا مزہ چکھو آج تم انہی اعمال کا بدلہ پاؤ گے جو کرتے رہے ہو(۵۲)

(ऐ रसूल) वह तुम से समाचार लेंगे आया यह बात सत्य है तुम कह देना हां ईश्वर की शपथ यह बात सत्य है और तुम ईश्वर को विवश नहीं कर सकोगे (53)

(اے رسول) وہ تم سے خبر لیں گے کہ آیا یہ بات سچ ہے تم کہہ دینا ہاں اللہ کی قسم یہ بات سچ ہے اور تم اللہ کو عاجز نہیں کرسکو گے (۵۳)

और यदि हर एक अवज्ञाकारी व्यक्ति के पास सम्पूर्ण संसार की वस्तुएं हों और बचने के लिए बदले में सब दे डाले और जब वह कष्ट को देखेंगे तो लज्जा को छुपाएंगे और उनमें न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और उन पर अत्याचार न होगा (54)

اور اگر ہر ایک نافرمان شخص کے پاس روئے زمین کی تمام چیزیں ہوں اور بچنے کے لئے بدلے میں سب دے ڈالے اور جب وہ عذاب کو دیکھیں گے تو ندامت کو چھپائیں گے اور ان میں انصاف کے ساتھ فیصلہ کردیا جائے گا اور ان پر ظلم نہیں ہوگا (۵۴)

लोगो! कान खोलकर सुन लो आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है वह ईश्वर के लिए है और यह भी सुन लो कि ईश्वर का कष्ट का वचन सत्य है (जब आ जाएगा तो किसी प्रकार टाले न टलेगा) परन्तु उनमें अधिकांश ऐसे हैं जो जानते नहीं हैं (55)

لوگو! کان کھول کر سن لو، آسمانوں اور زمین میں جو کچھ ہے سب اللہ ہی کے لئے ہے اور یہ بھی سن لو کہ اللہ کے عذاب کا وعدہ حق ہے (جب آجائے گا تو کسی طرح ٹالے نہ ٹلے گا) مگر ان میں زیادہ تر ایسے ہیں جو جانتے نہیں ہیں (۵۵)

वह नियमानुसार जीवित करता है और वही नियमानुसार मृत्यु देता है और उसी की ओर तुम को लौटकर जाना है (56)

وہ قانون کے مطابق جلاتا ہے اور وہی قانون کے مطابق موت دیتا ہے اور اسی کی طرف تم کو لوٹ کر جانا ہے (۵۶)

लोगो! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास (एक पुस्तक) आ गई (जिसमें इन्सान के लिए) शिक्षा और हृदयों की सब बीमारियों का उपाय है और विश्वास वालों के लिए शिक्षा और अनुकम्पा है (57) {17:82}

لوگو! تمہارے رب کی طرف سے تمہارے پاس (ایک کتاب) آگئی (جس میں انسان کے لئے) نصیحت اور دلوں کی تمام بیماریوں کا علاج ہے اور ایمان والوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے (۵۷) [۱۷:۸۲]

कह दो कि (यह पुस्तक) ईश्वर की कृपा दया और उसकी दया से अवतरित हुई है तो चाहिए कि लोग इससे प्रसन्न हो यह उससे कहीं उत्तम है जो वह संग्रह करते हैं (58)

کہہ دو کہ (یہ کتاب) اللہ کے فضل اور اس کی مہربانی سے نازل ہوئی ہے، تو چاہئے کہ لوگ اس سے خوش ہوں یہ اس سے کہیں بہتر ہے جو وہ جمع کرتے ہیں (۵۸)

(ऐ रसूल! उनसे) कहो क्या तुम ने इस बात पर विचार किया कि ईश्वर ने तुम्हारी जीविका के लिए जो वस्तुऐं उत्पन्न की हैं तुम ने (अपने अन्ध विश्वास से) कतिपय को अवैध और कतिपय को वैध मान लिया है उनसे ज्ञात करो क्या ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा दे रखी है या तुम ईश्वर के नाम पर झूठी बात कह रहे हो (59) {66:1;57:25; 5:1;2:57;16:116;18:62,63;10:60}

(اے رسول! ان سے) کہو کیا تم نے اس بات پر بھی غور کیا کہ اللہ نے تمہاری روزی کے لئے جو چیزیں پیدا کی ہیں تم نے (اپنے وہم کی بنا پر) بعض کو حرام اور بعض کو حلال فرض کرلیا ہے، ان سے پوچھو کیا اللہ نے تمہیں اجازت دے رکھی ہے یا تم اللہ کے نام پر جھوٹی بات کہہ رہے ہو (۵۹) [۶۶:۱، ۵۷:۲۵، ۵:۱، ۲:۵۷، ۱۶:۱۱۶، ۱۸:۶۲، ۶۳، ۱۰:۶۰]

और जो लोग ईश्वर के नाम पर झूट बोल कर मिथ्या रोपण करते हैं उन्होंने प्रलय को क्या समझ रखा है? निःसन्देह ईश्वर लोगों पर कृपालु है परन्तु अधिकांश लोग आज्ञाकारी नहीं करते (60)

और तुम जिस स्थिति में होते हो या कुरआन में से कुछ पढ़ते हो या तुम लोग कोई और काम करते हो जब उसमें कार्यरत होते हो हम तुम्हारे सामने अर्थात देखते होते हैं और तुम्हारे रब से कण बराबर भी कोई वस्तु छुपी नहीं होती न पृथ्वी में और न आकाश में और कोई वस्तु जो कण से छोटी हो या बड़ी परन्तु सब उज्ज्वल पुस्तक में (लिखी हुई है) (61) {3:92;10:61;11:107, 108;87:7,6;32:8;34:2,7}

اور جو لوگ اللہ کے نام پر جھوٹ بول کر افترا کرتے ہیں انہوں نے قیامت کو کیا سمجھ رکھا ہے؟ بے شک اللہ لوگوں پر مہربان ہے لیکن اکثر لوگ فرمانبرداری نہیں کرتے (۶۰)

اور تم جس حال میں ہوتے ہو یا قرآن میں سے کچھ پڑھتے ہو یا تم لوگ کوئی (اور) کام کرتے ہو جب اس میں مصروف ہوتے ہو ہم تمہارے سامنے یعنی دیکھتے ہوتے ہیں اور تمہارے رب سے ذرہ برابر بھی کوئی چیز پوشیدہ نہیں ہوتی ہے نہ زمین میں اور نہ آسمان میں اور کوئی چیز جو ذرہ سے چھوٹی ہو یا بڑی مگر کتاب روشن میں (لکھی ہوئی ہے) (۶۱) [۳:۹۲، ۱۰:۶۱، ۱۱:۱۰۷، ۱۰۸، ۸۷:۷، ۶، ۳۲:۸، ۳۴:۲، ۷]

सुन लो विश्वास करो कि जो लोग ईश्वर के चहीते

سن لو یقین کرو کہ جو لوگ اللہ کے چہیتے ہیں ان کو نہ تو کسی قسم

کا خوف ہوگا اور نہ کسی بات کا غم (۶۲)

है उनको न तो किसी प्रकार का भय होगा और न किसी बात का दुख (62)

یعنی جو لوگ ایمان لائے اور ہر طرح کی بُرائیوں سے بچتے رہے (۶۳)

अर्थात जो लोग विश्वास लाए और हर प्रकार की बुराईयों से बचते रहे (63)

ان کے لئے دنیا کی زندگی میں بھی خوش خبری ہے اور آخرت میں بھی اللہ کی باتیں بدلتی نہیں یہی تو بڑی کامیابی ہے (۶۴)

उनके लिए दुनिया के जीवन में भी शुभ सूचना है और परलोक में भी ईश्वर की बातें बदलती नही यही तो बड़ी सफलता है (64)

(اے رسول!) ان کی بکواس سے آزردہ نہ ہو (کیونکہ) ہر طرح کی عزت اللہ ہی کے لئے ہے (وہ تمہیں عزت دے گا اور تمہارے دشمنوں کو ذلیل کرے گا) وہ سب کی سنتا اور سب کچھ جانتا ہے (۶۵)

(ऐ रसूल!) उनकी बकवास से दुखी न हो (क्योंकि) हर प्रकार का सम्मान ईश्वर ही के लिए है (वह तुम्हें सम्मान देगा और तुम्हारे शत्रुओं को अपमानित करेगा) वह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है (65)

اچھی طرح سن لو وہ تمام مخلوق جو آسمانوں میں ہیں اور جو زمین میں ہیں سب اللہ ہی کے (زیر فرمان) ہیں اور جو لوگ اللہ کے سوا اپنے بنائے ہوئے شریکوں کو پکارتے ہیں وہ صرف ظن کے پیچھے چلتے ہیں اور محض اٹکلیں دوڑا رہے ہیں (۶۶) [۱۰:۳۶]

अच्छी प्रकार सुन लो वह सब रचनाऐं जो आकाशों में है और जो पृथ्वी में है सब ईश्वर ही के (अधीन) हैं जो लोग ईश्वर के अतिरिक्त अपने बनाए हुए साझीयों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे चलते हैं और केवल अटकलें दौड़ाते हैं (66) {10:36}

وہی تو ہے جس نے تمہارے لئے رات بنائی تاکہ اس میں آرام کرو اور دن روشن بنایا (تاکہ اس میں کام کرو) جو لوگ سننے کی طاقت رکھتے ہیں ان کے لئے ان میں نشانیاں ہیں (۶۷)

वही तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि उसमें आराम करो और दिन उज्जवल बनाया (ताकि उसमें कार्य करो) जो लोग सुनने की शक्ति रखते है उनके लिए उनमें चिन्ह है (67)

لوگ کہتے ہیں اللہ نے بیٹا بنالیا ہے اس کی ذات (اس سے) پاک ہے اور وہ بے نیاز ہے جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے سب اسی کا ہے اس طرح کی (بے بنیاد بات کہنے کی) تمہارے پاس کیا دلیل ہے؟ تم اللہ کے لئے ایسی بات کیوں کہتے ہو جو جانتے نہیں (۶۸)

लोग कहते है कि ईश्वर ने पुत्र बना लिया है इसका अस्तित्व (इससे) पवित्र है और वह लालसा रहित है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है सब उसका है इस प्रकार की (आधार रहित बात कहने की) तुम्हारे पास क्या तर्क है? तुम ईश्वर के लिए ऐसी बात क्यों कहते हो जो जानते नही (68)

کہہ دو کہ جو لوگ اللہ پر جھوٹ باندھتے ہیں فلاح نہیں پائیں گے (۶۹)

कह दो कि जो लोग ईश्वर पर झूट बांधाते है सफल नही होते (69)

(ان کے لئے) جو فائدے ہیں وہ دنیا میں ہیں پھر ان کو ہماری ہی طرف لوٹ کر آنا ہے اس وقت ہم ان کو عذاب شدید چکھائیں گے کیونکہ وہ کفر کرتے تھے (۷۰)

(उनके लिए) जो लाभ है वह दुनिया में है फिर उनको हमारी ही ओर लौट कर आना है उस समय हम उनको कठोर दण्ड का स्वाद चखाऐंगे क्योंकि वह इनकार किया करते थे (70)

اور ان کو نوحؑ کا قصہ پڑھ کر سنا دو جب انہوں نے اپنی قوم سے کہا کہ اے قوم! اگر تم کو میرا تم میں رہنا اور اللہ کی آیتوں سے نصیحت کرنا ناگوار ہو تو میں اللہ پر بھروسہ رکھتا ہوں تم اپنے شریکو کے ساتھ مل کر میرے خلاف کارروائی کرو اور اپنے شریکوں کو بھی بلا لو پھر تم نے میرے خلاف جو منصوبہ تیار کیا ہو اس پر اچھی طرح غور کرلو کہ کوئی پہلو نظر سے نہ رہ جائے پھر میرے خلاف جو کچھ کرنا ہو کر گزرو اور مجھے ذرا بھی مہلت نہ دو (۷۱)

और उनको नूह की कथा सुना दो जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि ऐ जाति! यदि तुम को मेरा तुम में रहना और ईश्वर की आयतों से शिक्षा करना अप्रिय हो तो मै ईश्वर पर भरोसा रखता हूं तुम अपने साझीयों के साथ मिल कर मेरे विरुद्ध कार्यवाही करो और अपने साझीयों को भी बुला लो फिर तुमने मेरे विरुद्ध जो योजना तैयार की हो उस पर अच्छी प्रकार विचार कर लो कि कोई पार्श्व दृष्टि से न रह जाएफिर मेरे विरुद्ध जो कुछ करना हो कर लो और मुझे कुछ भी छूट न दो (71)

اور اگر تم نے منہ پھیر لیا تو (تم جانتے ہو کہ) میں نے تم سے کچھ معاوضہ نہیں مانگا میرا معاوضہ تو اللہ کے ذمہ ہے اور مجھے حکم ہوا ہے کہ میں فرمانبرداروں میں رہوں (۷۲)

और यदि तुमने मुख फेर लिया तो तुम जानते हो कि मैं ने तुम से कुछ प्रतिकार नही मांगा मेरा प्रति कर तो ईश्वर का दायित्व है और मुझे आदेश हुआ है कि मैं आज्ञाकारों में रहूं (72)

لیکن ان لوگوں نے ان کو جھٹلایا تو ہم نے ان کو اور جو لوگ ان کے ساتھ کشتی میں سوار تھے سب کو بچالیا اور انہیں

परन्तु उन लोगों ने उनको झुटलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ नाव में सवार थे सबको

बचा लिया और उन्हें (पृथ्वी में) उत्तराधिकारी बना दिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उनको प्लावन कर दिया तो देख लो कि जो लोग डराए गए थे उनका कैसा अन्त हुआ? (73)
फिर हमने नूह के बाद और ईशदूत अपनी अपनी जाति की ओर प्रेषित किए तो वह उनके पास खुले चिन्ह लेकर आए परन्तु वह लोग ऐसे न थे कि जिस बात को पहले झुटला चुके थे उस पर विश्वास ले आते इसी प्रकार हम अत्याचार करने वालो के हृदयों पर मोहर लगा देते हैं (74)
फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपने चिन्ह देकर फिरऔन और उसके नेताओ के पास भेजा तो उन्होंने घमण्ड किया और वह पापी लोग थे. (75)
तो जब उनके पास हमारे यहां से सत्य आया तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है (76)
मूसा ने कहा क्या तुम सत्य के प्रति जब वह तुम्हारे पास आया यह कहते हो कि यह जादू है, यद्यपि जादूगर सफलता नही पाते (77)
वह बोले क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि जिस मार्ग पर हम अपने बड़ो को पाते रहें है उससे हमको फेर दो और इस देश में तुम दोनों ही की प्रधानता हो जाए? और हम तुम पर विश्वास लाने वाले नही हैं (78)
और फिरऔन ने आदेश दिया कि सब ज्ञाता जादूगरों को हमारे पास ले आओ (79)
जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो तुमको डालना हो डालो (80)
जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला मूसा ने उनसे कहा कि जो वस्तुएं तुम (बनाकर) लाए हो जादू है ईश्वर इसको अभी नष्ट कर देगा ईश्वर दुर्जनों के कार्य संवारा नही करता (81)
और ईश्वर अपने नियम से सच को सच ही कर देगा यद्यपि पापी बुरा ही माने (82)
तो मूसा पर कोई विश्वास न लाया परन्तु उसकी जाति में से कुछ लड़के (और वह भी) फिरऔन और उसके सभा सदो से डरते डरते कि कहीं वह उनको कष्ट में न फंसा दे और फिरऔन देश में बड़ा दमन कारी था और इसमें शंका नही कि घमण्ड में सीमा से अधिक बढ़ा हुआ था (83)
और मूसा ने कहा कि जाति! यदि तुम ईश्वर पर विश्वास लाए हो तो यदि तुम आज्ञाकारी हो तो उस पर भरोसा रखो (84)
तो वह बोले कि हम ईश्वर ही पर भरोसा रखते हैं, ऐ हमारे रब हमको अत्याचारियों के हाथ से परीक्षा में न डालना (85)
और अपनी दया से ऐसा कर कि हम नास्तिकों के

(زمین میں) جانشین بنادیا اور جن لوگوں نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا ان کو غرق کردیا تو دیکھ لو کہ جو لوگ ڈرائے گئے تھے ان کا کیسا انجام ہوا؟ (۷۳)
پھر نوح کے بعد ہم نے اور رسول اپنی اپنی قوم کی طرف بھیجے تو وہ ان کے پاس کھلی نشانیاں لے کر آئے مگر وہ لوگ ایسے نہ تھے کہ جس چیز کو پہلے جھٹلا چکے تھے اس پر ایمان لے آتے اسی طرح ہم زیادتی کرنے والوں کے دلوں پر مہر لگادیتے ہیں (۷۴)
پھر ان کے بعد ہم نے موسیٰ اور ہارون کو اپنی نشانیاں دے کر فرعون اور اس کے سرداروں کے پاس بھیجا تو انہوں نے تکبر کیا اور وہ گنہگار لوگ تھے (۷۵)
تو جب ان کے پاس ہمارے یہاں سے حق آیا تو کہنے لگے کہ یہ تو صریح جادو ہے (۷۶)
موسیٰ نے کہا کیا تم حق کے بارے میں جب وہ تمہارے پاس آیا یہ کہتے ہو کہ یہ جادو ہے حالانکہ جادوگر فلاح نہیں پانے کے (۷۷)
وہ بولے کیا تم ہمارے پاس اس لئے آئے ہو کہ جس راہ پر ہم اپنے بڑوں کو پاتے رہے ہیں اس سے ہم کو پھیر دو اور اس ملک میں تم دونوں ہی کی سرداری ہو جائے؟ اور ہم تم پر ایمان لانے والے نہیں ہیں (۷۸)
اور فرعون نے حکم دیا کہ سب کامل جادوگروں کو ہمارے پاس لاؤ (۷۹)
جب جادوگر آئے تو موسیٰ نے ان سے کہا کہ جو تم کو ڈالنا ہو ڈالو (۸۰)
جب انہوں نے (اپنی رسیوں اور لاٹھیوں کو) ڈالا تو موسیٰ نے کہا کہ جو چیزیں تم (بنا کر) لائے ہو جادو ہے اللہ اس کو ابھی نابود کردے گا اللہ شریروں کے کام سنوارا نہیں کرتا (۸۱)
اور اللہ اپنے قانون سے سچ کو سچ ہی کردے گا اگرچہ گنہگار برا ہی مانیں (۸۲)
تو موسیٰ پر کوئی ایمان نہ لایا مگر اس کی قوم میں سے چند لڑکے (اور وہ بھی) فرعون اور اس کے درباریوں سے ڈرتے ڈرتے کہ کہیں وہ ان کو آفت میں نہ پھنسا دے اور فرعون ملک میں بڑا جابر تھا اور اس میں شک نہیں کہ غرور میں حد سے زیادہ بڑھا ہوا تھا (۸۳)
اور موسیٰ نے کہا کہ قوم! اگر تم اللہ پر ایمان لائے ہو تو اگر تم فرمانبردار رہو تو اسی پر بھروسہ رکھو (۸۴)
تو وہ بولے کہ ہم اللہ ہی پر بھروسہ رکھتے ہیں اے ہمارے رب ہم کو ظالموں کے ہاتھ سے آزمائش میں نہ ڈالنا (۸۵)
اور اپنی رحمت سے ایسا کر کہ ہم کافروں کے ہاتھ سے

हाथ से मुक्ति पाजाऐं (86)

और हमने मूसा और उसके भाई की ओर वही भेजी कि अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ और अपने घरो को किबला बना लो और नमाज़ पढ़ो और आस्तिकों को शुभ सूचना सुना दो (87)

और मूसा ने कहा ऐ रब तेरे नियम ने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया के जीवन में सज्जा और धन से कृपा कर रखी है इसका परिणाम यह है कि वह इस माल से लोगों को तेरी राह से भटका रहें है, ऐ ईश्वर उनका धन नष्ट कर दे और वह इस स्थान पर पहुंच गए है, कि उनके ह्रदयों पर मोहर लग गई है वह आस्था न लाएंगे यहां तक कि कष्ट देने वाला दण्ड देख लें (88)

ईश्वर ने उत्तर में कहा तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार की गई दृढ़ पग रहो और उन लोगों की पद्धति का अनुकरण कदापि न करना जो ज्ञान नही रखते (89)

और जब हमने बनी इसराईल को समुन्द्र के पार उतार दिया तो फ़िरऔन और उसकी सेना ने अत्याचार और उद्दण्डता से उनका पीछा किया यहां तककि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो पुकार उठा मैं विश्वास लाया कि जिस ईश्वर पर बनी इसराईल विश्वास लाए यद्यपि मैं अब तक कहता था कि कोई ईश्वर नहीं परन्तु वह ईश्वर है और मैं आज्ञाकारों में हूं निःसंदेह वह है, (90)

(उत्तर मिला) अब विश्वास लाता है यद्यपि तू पहले अवज्ञा करता रहा और दुष्ट बना रहा? (91)

अच्छा आज हम (तुझे तो नही) तेरे शरीर को (समुन्द्र की लहरो से) बचाए लेते है ताकि तेरे बाद आने वाली सन्तानों के लिए तू (अर्थात तेरा शव ईश्वर के शक्ति का) एक चिन्ह हो (ताकि लोग देखे कि यह शव उसी घमन्डी फ़िरऔन का है जो कहा करता था "अना रब्बूकुमुलआला" मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं) किन्तु अधिकांश लोग ऐसे ही है जो हमारी निशानियों से अनभिज्ञ है (92) {30:3-4}

और यह सत्य है कि हमने बनी इसराईल के लिए उत्तम स्थान दिया था और उनको खाने के लिए पवित्र वस्तुए प्रस्तुत कर दी थी फिर जब जब मत भेद करते थे तो उनके पास ज्ञान आ जाता था निःसंदेह जिन बातों में वह मत भेद करते रहे है तुम्हारा रब प्रलय के दिन उनमें उन बातों का निर्णय कर देगा (93)

ऐ मुहम्मद स0 (यदि लोगों को इस पुस्तक में भ्रम हो) जो पुस्तक आप पर अवतरित की है वह लोग उन लोगों से ज्ञात कर लें जो उन पुस्तकों को पढ़ते रहे है जो आपसे पहले अवतरित हुई और विश्वास करो कि तुम्हारे रब की ओर से तेरे पास सत्य आ पहुंचा तो तुम्हारे साथी कदापि शंका करने वालो में से न हों (94)

{53:11-14-17, 6:86-90, 43:45, 25:93, 43:45, 25:93}

आस्तिकों! उन लोगों में से न होना जिन्होंने ईश्वर

نجات پاجائیں(۸۶)

اور ہم نے موسیٰ اور اس کے بھائی کی طرف وحی بھیجی کہ اپنے لوگوں کے لئے مصر میں گھر بناؤ اور اپنے گھروں کو قبلہ ٹھہراؤ اور نماز پڑھو اور مومنوں کو خوشخبری سنادو(۸۷)

اور موسیٰ نے کہا اے رب تیرے قانون نے فرعون اور اس کے سرداروں کو دنیا کی زندگی میں زینت اور اموال سے نواز رکھا ہے اس کا نتیجہ یہ ہے کہ وہ اس مال سے لوگوں کو تیری راہ سے بھٹکا رہے ہیں۔ اے اللہ ان کے مال غارت کردے اور وہ اس مقام پر پہنچ گئے ہیں کہ ان کے دلوں پر مہر لگ گئی ہے وہ ایمان نہ لائیں گے یہاں تک کہ دردناک عذاب بھی دیکھ لیں(۸۸)

اللہ نے جواب میں فرمایا تم دونوں کی دعا قبول کی گئی ثابت قدم رہو اور ان لوگوں کے طریقے کی ہرگز پیروی نہ کرنا جو علم نہیں رکھتے(۸۹)

اور جب ہم نے بنی اسرائیل کو سمندر کے پار اتار دیا تو فرعون اور اس کے لشکر نے ظلم اور سرکشی سے ان کا پیچھا کیا یہاں تک کہ جب فرعون ڈوبنے لگا تو پکار اٹھا میں ایمان لایا کہ جس اللہ پر بنی اسرائیل ایمان لائے حالانکہ میں اب تک کہتا تھا کہ کوئی اللہ نہیں مگر وہ اللہ ہے اور میں فرمانبرداروں میں ہوں بے شک وہ ہے(۹۰)

(جواب ملا) اب ایمان لاتا ہے حالانکہ تو پہلے نافرمانی کرتا رہا اور مفسدوں میں رہا؟(۹۱)

خیر آج ہم (تجھے تو نہیں) تیرے جسم کو (سمندر کی لہروں سے) بچائے لیتے ہیں تاکہ تیرے بعد آنے والی نسلوں کے لئے تو (یعنی تیری لاش اللہ کی قدرت کی) ایک نشانی ہو (تاکہ لوگ دیکھیں کہ یہ لاش اسی متکبر فرعون کی ہے جو کہا کرتا تھا انا ربکم الاعلیٰ میں تمہارا سب سے بڑا رب ہو) لیکن زیادہ تر لوگ ایسے ہی ہیں جو ہماری نشانیوں سے بے خبر ہیں(۹۲)[۳۰:۳،۴]

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے بنی اسرائیل کے لئے عمدہ جگہ دی اور ان کو کھانے کے لئے پاکیزہ چیزیں مہیا کردی تھیں پھر جب اختلاف کرتے تھے تو ان کے پاس علم آجاتا تھا بے شک جن باتوں میں وہ اختلاف کرتے رہے ہیں تمہارا رب قیامت کے دن ان میں ان باتوں کا فیصلہ کردے گا(۹۳)

اے محمدؐ اگر لوگوں کو اس کتاب میں شک ہو جو کتاب آپ پر نازل کی ہے تو وہ لوگ ان لوگوں سے دریافت کرلیں جو ان کتابوں کو پڑھتے رہے ہیں جو آپ سے پہلے نازل ہوئیں اور یقین کرو کہ تیرے رب کی طرف سے تیرے پاس حق آپہنچا تو تمہارے ساتھی ہرگز شک کرنے والوں میں سے نہ ہوں(۹۴)

[۵۳:۱۱،۱۴،۱۷، ۶:۸۶،۹۰، ۴۳:۴۵، ۲۵:۹۳، ۴۳:۴۵، ۲۵:۹۳]

اے ایمان والو! ان لوگوں میں نہ ہونا جنہوں نے اللہ کی

की धाराओ को झुटलाया अन्यथा तुमभी हानी उठाने वालो में हो जाओगे (95)	آیتوں کو جھٹلایا ورنہ تم بھی نقصان اٹھانے والوں میں ہو جاؤ گے (۹۵)
जिन लोगों पर उनकी अवज्ञा के कारण से तेरे रब का आदेश दण्ड पारित हो चुका है वह कदापि विश्वास न लाएंगे (96) {9:111, 13:31}	جن لوگوں پر ان کی نافرمانیوں کی وجہ سے تیرے رب کا حکم عذاب صادر ہو چکا ہے وہ ہرگز ایمان نہ لائیں گے (۹۶)[۹:۱۱۱،۱۳:۳۱]
(वह उस स्थान पर पहुंच गए हैं) यदि सारी निशानियां उनके सामने आजाए चाहे वह दुख देने वाला कष्ट ही हो को देख लें विश्वास न लाएंगे (97)	(وہ اس مقام پر پہنچ گئے ہیں) اگر ساری نشانیاں ان کے سامنے آجائیں چاہے وہ دردناک عذاب ہی ہو کو دیکھ لیں (ایمان نہ لائیں گے) (۹۷)
तो कोई नगरी की उपमा है जो कष्ट देखकर विश्वास लाई हो और उसका विश्वास उसके लिए लाभकारी सिद्ध हुआ हो? तो सुनों! निःसंदेह वह यूनुस अ0 की जाति थी वह जाति जब विश्वास ले आई तो अलबत्ता हमने उस पर से दुनिया के जीवन में अपमान का दण्ड टाल दिया था और उसको एक समय तक जीवन का लाभ दिया था (98) {21: 87-88}	تو کوئی بستی کی مثال ہے جو عذاب دیکھ کر ایمان لائی ہو اور اس کا ایمان اس کے لئے نفع بخش ثابت ہوا ہو؟ تو سنو! بے شک وہ یونس کی قوم تھی وہ قوم جب ایمان لے آئی تھی تو البتہ ہم نے اس پر سے دنیا کی زندگی میں رسوائی کا عذاب ٹال دیا تھا اور اس کو ایک مدت تک زندگی کا فائدہ دیا تھا (۹۸)[۲۱:۸۷،۸۸]
और यदि तुम्हारा ईश्वर चाहता (बल से) तो जितने लोग पृथ्वी में हैं सबके सब विश्वास ले आते (ईश्वर ने सबको अधिकार दिया है) तो क्या तुम लोगों पर जबरदस्ती करना चाहते हो कि वह आस्तिक हो जाए (लोगों को स्वतंत्रता है) (99) {2: 256}	اور اگر تمہارا رب چاہتا (زبردستی) تو جتنے لوگ زمین میں ہیں سب کے سب ایمان لے آتے (اللہ نے سب کو اختیار دیا ہے) تو کیا تم لوگوں پر زبردستی کرنا چاہتے ہو کہ وہ مومن ہو جائیں (لوگوں کو آزادی ہے) (۹۹)[۲:۲۵۶]
किसी इन्सान को यह अधिकार नही दिया कि ईश्वर के नियम के बिना था विरुद्ध विश्वास ले आए (अर्थात उसका विधान इस्लाम है उस पर ही विश्वास माना जाएगा) जो लोग बुद्धि से काम नही लेते उन्हें वह (कुफ्र की) अशुद्धि में डाल कर विश्वास की पवित्रता से वंचित कर देता है ऐसे अशुद्ध प्रवृति वाले मानव ईमान नही ला सकते (100)	کسی انسان کو یہ اختیار نہیں دیا کہ اللہ کے قانون کے بغیر یا خلاف ایمان لے آئے (یعنی اس کا قانون اسلام ہے اس پر ہی ایمان مانا جائے گا) جو لوگ عقل سے کام نہیں لیتے انہیں وہ (کفر کی) ناپاکی میں ڈال کر ایمان کی پاکی سے محروم کر دیتا ہے (ایسے ناپاک فطرت والے انسان ایمان نہیں لا سکتے) (۱۰۰)
(ऐ रसूल! उनसे) कहो जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है उन सब पर दृष्टि डालो (तुम्हें ईश्वरीय शक्तिके चिन्ह हर ओर दिखाई देंगे) परन्तु जो लोग विश्वास (की सम्पत्ति) से वंचित है उनके लिए न कोई चिन्ह लाभ दायक है और न डराने वालों की ताड़ना (101)	(اے رسول! ان سے) کہو جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے ان سب پر نظر ڈالو (تمہیں اللہ کی قدرت کی نشانیاں ہر طرف دکھائی دیں گی) لیکن جو لوگ ایمان (کی دولت) سے محروم ہیں ان کے لئے نہ کوئی نشانی سودمند ہے اور نہ ڈرانے والوں کی تنبیہ (۱۰۱)
तो वह लोग इसके सिवा और किस बात के प्रतीक्षक है कि उन पर भी पहले लोगों की भांति (यातना) के बुरे दिन आए तुम उनसे कहो अच्छा प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूं (102)	تو وہ لوگ اس کے سوا اور کس بات کے منتظر ہیں کہ ان پر بھی گزرے ہوئے لوگوں کی طرح (عذاب) کے بُرے دن آئیں۔ تم ان سے کہو اچھا انتظار کرو میں بھی تمہارے ساتھ انتظار کر رہا ہوں (۱۰۲)
फिर जब सत्य का इनकार करने वालो पर कष्ट आ जाता है तो हम अपने रसूलों को और उन लोगों को जो विश्वास लाए उस से बचा लेते हैं (इसी प्रकार का हमारा नियम है) और हमने अपने ऊपर यह बात अनिवार्य कर ली है अर्थात यह हमारा नियम है कि आस्था वालों को बचा लिया करें (103)	پھر (جب منکرین حق پر عذاب آجاتا ہے تو) ہم اپنے رسولوں کو اور ان لوگوں کو جو ایمان لائے اس سے بچا لیتے ہیں (اسی طرح کا ہمارا قانون ہے) اور ہم نے اپنے اوپر یہ بات لازم کر لی ہے یعنی یہ ہمارا قانون ہے کہ ایمان والوں کو بچا لیا کریں (۱۰۳)
कहदो कि लोगों! यदि तुमको मेरे धर्म में किसी प्रकार का भ्रम हो तो (सुन रखोकि) जिन लोगों की तुम ईश्वर के सिवा पूजा करते हो मैं उनकी पूजा नही करता अपितु मैं ईश्वर की पूजा करता हूं जो तुम्हारी आतमाएं ग्रहण हर लेता है और मुझको यही आदेश हुआ कि विश्वास लाने वालों में हूं (104) {3:55, 5:117, 1:136}	کہہ دو کہ لوگو! اگر تم کو میرے دین میں کسی طرح کا شک ہو تو (سن رکھو کہ) جن لوگوں کی تم اللہ کے سوا عبادت کرتے ہو میں ان کی عبادت نہیں کرتا بلکہ میں اللہ کی عبادت کرتا ہوں جو تمہاری روحیں قبض کر لیتا ہے اور مجھ کو یہی حکم ہوا کہ ایمان لانے والوں میں ہوں (۱۰۴)[۳:۵۵،۵:۱۱۷،۱:۱۳۶]

और मुझे यह भी आदेश दिया गया है कि हर ओर से हट कर अपना मुख ईश्वर के धर्म की ओर कर लूं और अनेकेश्वर वादीयों में से न हो जाऊं (105)

(اور مجھے یہ بھی حکم دیا گیا ہے کہ)ہرطرف سے ہٹ کر اپنا رُخ اللہ کے دین کی طرف کرلوں اورشرکوں میں سے نہ ہوجاؤں (۱۰۵)

और ईश्वर को छोड़ कर ऐसोंको (सहयता के लिए) न पुकारना जो तुम्हें न लाभ पहुंचा सकें न हानी यदि आपने ऐसा किया तो वास्तव में आप की गणना भी अत्याचारियों में हो जाएगी, (106)

اوراللہ کوچھوڑ کرایسوں کو(مدد کے لئے) نہ پکارنا جوتمہیں نہ تو نفع پہنچاسکیں نہ نقصان اگر آپ نے ایسا کیا تو یقیناً آپ کا شمار بھی ظالموں میں ہو جائے گا(۱۰۶)

यदि ईश्वर के नियम से आपको कोई दुख पहुंचे तो उसे दूर करने वाला उसके अतिरिक्त कोई नही और यदि उसके कृपा दया नियम से आपको कोई भलाई पहुंचे तो उसे रोकने वाला भी कोई नही, वह अपने बन्दों में से उस पर कृपा दया करता है जो अपने कर्म से कृपा दया लेना चाहता है और वह क्षमा करने वाला कृपालु है (107)

اگر اللہ کے قانون سے آپ کو کوئی دکھ پہنچے تو اسے دور کرنے والا اس کے سوا کوئی نہیں اور اگر اس کے فضل قانون سے آپ کوکوئی بھلائی پہنچے تواسے روکنے والا بھی کوئی نہیں وہ اپنے بندوں میں سے اس پر فضل کرتا ہے جواپنے عمل سے فضل لینا چاہےاوروہ بخشنے والامہربان ہے(۱۰۷)

कहदो कि लोगों तुम्हारे रब के यहां से तुम्हारे पास सत्य आचुका है तो जो कोई पथ प्रदर्शन प्राप्त करता है तो पथ प्रदर्शन से अपने ही लिए भलाई करता है, और जो पथ भ्रष्टता स्वीकार करता है तो भ्रष्टता से अपनी ही हानी करता है और मैं तुम्हारा प्रतिनिधि नही हूं (108)

کہدو کہ لوگوں تمہارے رب کے یہاں سے تمہارے پاس حق آ چکا ہےتو جوکوئی ہدایت حاصل کرتا ہےتوہدایت سے اپنے ہی حق میں بھلائی کرتا ہے۔اور جوگمراہی اختیار کرتا ہےتو گمراہی سے اپنا ہی نقصان کرتا ہے۔اور میں تمہارا وکیل نہیں ہوں (۱۰۸)

और (ऐ रसूल!) तुम्हें वही के द्वारा जो आदेश दिया जा रहा है उसका अनुकरण करो और (कष्टो का) साहस के साथ सामना करो अर्थात धैर्य करो यहां तककि ईश्वर (तुम्हारे और नास्तिको के बीच) निर्णय करे और वही सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है (109)

اور(اے رسول)تمہیں وحی کے ذریعہ جوحکم دیاجارہا ہے اس کی پیروی کرواور(تکلیفوں کا) ہمت کے ساتھ مقابلہ کرویعنی صبر کرو۔یہاں تک کہ اللہ (تمہارےاورکافروں کے درمیان)فیصلہ کرےاوروہی سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے(۱۰۹)

सूरत हूद (11) मक्की

سورت ھود(۱۱) مکی

ऐ मुहम्मद स0 यह वह (ईश्वर की) पुस्तक है जिसकी धाराऐं (अपने अर्थ और भाव के अनुसार) अचल है इनका विस्तार ईश्वर की ओर से वर्णन कर दिया गया है जिसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही और जिसको हर बात की सूचना है (1)

اے محمدؐ یہ وہ (اللہ کی) کتاب ہے جس کی آیتیں (اپنے معانی اورمفہوم کے اعتبار سے)مستحکم کی ہیں ان کی تفصیل اس اللہ کی طرف سے بیان کردی گئی ہیں جس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں اورجس کو ہر بات کی خبر ہے(۱)

नोट- कुरआन हर प्रकार से पूर्ण है यह अपने विवरण के लिए किसी कथन का आश्रित नही वही गुप्त का यह अर्थ कदापि नही कि ईश्वर मुहम्मद स0 को कुरआन की आयात का अर्थ समझाने के लिए एक अप्रकट वही अवतरित करता था कि मुहम्मद स0 को कुरआन की परिभाषा ज्ञात हो जाए कुरआन में ईश्वर ने सब विवरण वर्णन कर दिया है और मुहम्मद स0 ने उनके अनुसार ही कहा और कर्म किया, छुपी वही का अर्थ है औचित्य या युक्ति,

نوٹ: ۔قرآن ہرطرح سے مکمل ہے یہ اپنی تفصیل کے لئے کسی روایت کامحتاج نہیں۔وحی خفی کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ اللہ محمدؐ کوقرآن کی آیات کا مطلب سمجھانے کے لئے ایک چھپی ہوئی وحی نازل کرتا تھا کہ محمدؐ کوقرآن کی اصطلاحات معلوم ہوجائیں قرآن میں اللہ نےتفصیل بیان کردی ہےاورمحمدؐ نے ان کے مطابق ہی فرمایااورعمل کیا۔وحی خفی کا مطلب ہے مصلحت یا حکمت۔

(ईश्वर का आदेश है कि) ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा न करो विश्वास करो कि मैं तुम्हारे लिए ईश्वर की ओर से डराने वाला और समाचार देने वाले के पद पर नियुक्त हूं (2)

(اللہ کاحکم ہے کہ)اللہ کے سوا کسی کی بندگی نہ کرو۔یقین کرو کہ میں تمہارے لئے اللہ کی طرف سے نذیر اوربشیر (کی حیثیت سے مامور)ہوں (۲)

और यह कि अपने स्वामी से क्षमा मांगो और (हर बुराई को छोड़कर) उसके नियम की ओर आकृष्ट हो जाओ पश्चाताप करो वह तुमको एक निश्चित अवधी तक जीवन के लाभो से लाभानवित करेगा, और उन लोगों को जो अधिक सत्कर्म करेंगे, उनके प्रयत्नों का अधिक प्रतिदान देगा, परन्तु यदि तुमने विमुखता की (और ईश्वर की बात न मानी) तो मुझे डर है कि तुम पर एक बड़े दिन की यातना अवतरित हो (3)

اور یہ کہ اپنے رب سے معافی مانگواور(اور برائیوں کوچھوڑ کر)اس کے قانون کی طرف متوجہ ہوجاؤتوبہ کرو،وہ تم کو ایک مقرر وقت تک زندگی کے فائدوں سے بہرہ مند کرے گااوران لوگوں کو جو زیادہ نیکی کریں گےان کی کوششوں کا زیادہ اجر دے گا۔لیکن اگر تم نے روگردانی کی (اوراللہ کی بات نہ مانی)تو مجھے ڈر ہے کہ تم پرایک بڑے دن کاعذاب نازل ہو(۳)

तुम सबको ईश्वर की ओर लोटना है वह हर वस्तु के अनुमान बनाने की क्षमता रखता है (4)

تم سب کو اللہ کی طرف لوٹنا ہے وہ ہر چیز کے انداز ے بنانے کی قدرت رکھتا ہے(۴)

देखो! वह लोग अपने वक्षों को दोहरा करते है कि अपने भेदों को ईश्वर से छुपाएं तो सुनलो जिस समय वह वस्त्रों को अपने ऊपर डाल लेते है (तब भी) वह खुली छुपा हर बात को जानता है वह तो वक्षों के भीतर के भेदों से भी अवगत है (5) {77:7}

دیکھو!وہ لوگ اپنے سینوں کو دوہرا کرتے ہیں کہ اپنے بھیدوں کو اللہ سے چھپائیں تو سن لو جس وقت وہ کپڑوں کو اپنے اوپر ڈال لیتے ہیں(تب بھی) وہ کھلی چھپی ہر بات کو جانتا ہے وہ تو سینوں کے اندر کے بھیدوں سے بھی واقف ہے(۵)[۷:۷۷]

वमामिन दाब्बातिन ।2

پارہ ۱۲۔وَمَا مِن دَآبَّۃٍ ۔

और धरती पर चलने फिरने वाला ऐसा कोई जानवर जानदार नही है जिस की जीविका (का प्रबन्ध) ईश्वर का दायित्व न हो वह उसके स्थान को जहां भी जानता है, जहां वह रहता है और उस स्थान को भी जानता है वह सोंपा जाता है सारी बाते (ईश्वर के ज्ञान की) उज्जवल पुस्तक में (लिखी हुई) है (6)

اور زمین پر چلنے پھرنے والا ایسا کوئی جانور جاندار نہیں ہے جس کی روزی (کا انتظام) اللہ کے ذمہ نہ ہو۔ وہ اس کی جگہ کو بھی جانتا ہے جہاں وہ رہتا ہے اور اس کی جگہ کو بھی جانتا ہے جہاں وہ سونپا جاتا ہے ساری باتیں (علم الٰہی کی) روشن کتاب میں (لکھی ہوئی) ہیں (۶)

और वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छ अय्याम में (अर्थात छे दीर्घ चेर्णा में) उतपन्न किया (उसमें एक चर्ण वह था जब पृथ्वी पानी में डुबी हुई थी) उस समय उसका राज्य पानी पर था (फिर एक समय वह आया जब उसने तुमको उत्पन्न किया) ताकि तुम्हें परिक्षा में डाले और देखे कि) तुममें से कौन अच्छे कर्म करता है (हे ईशदूत) यदि तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (पुनः) जीवित किये जाओगे तो जिन लोगों ने नास्तिकता का मार्ग ग्रहण कर रखा है वह निःसंदेह कह देंगे कि यह तो स्पष्ट जादू है (7) {79:27से33}

اور وہی ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ ایام (یعنی چھ طویل دوروں میں) پیدا کیا (اس میں ایک دور وہ تھا جب زمین پانی میں ڈوبی ہوئی تھی) اس وقت اس کی حکومت پانی پر تھی (پھر ایک وقت وہ آیا جب اس نے تم کو پیدا کیا) تاکہ تمہیں آزمائش میں ڈالے (اور دیکھے کہ) تم میں سے کون اچھے عمل کرتا ہے (اے رسول) اگر تم کہو کہ تم لوگ مرنے کے بعد دوبارہ اٹھائے جاؤ گے تو جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ یقیناً کہہ دیں گے یہ تو کھلا جادو ہے(۷)[۷۹:۲۷ سے ۳۳]

और यदि निश्चित समय तक हम उनसे कष्ट रोक दे तो कहेंगे कि कौन सी वस्तु कष्ट को रोके हुए है? देखो जिस दिन वह उन पर घटित होगा (फिर) टलने का नही और जिस वस्तु के साथ वह उपहास किया करते थे वह उनको घेर लेगी (8)

اور اگر مدت مقررہ تک ہم ان سے عذاب روک دیں تو کہیں گے کہ کونسی چیز عذاب کو روکے ہوئے ہے؟ دیکھو جس روز وہ ان پر واقع ہوگا (پھر) ٹلنے کا نہیں اور جس چیز کے ساتھ وہ مذاق کیا کرتے تھے وہ ان کو گھیر لے گی (۸)

यदि हम मानव को अपनी कृपा का स्वाद चखाएं और फिर वापस ले लें तो वह (धैर्य के स्थान पर) निराश और कृतघन हो जाता है (9)

اگر ہم انسان کو اپنی رحمت کا مزہ چکھائیں اور پھر واپس لے لیں تو وہ (صبر کے بجائے) مایوس اور ناشکرا ہو جاتا ہے(۹)

और यदि दुख (दुर्दशा) के बाद सम्पन्नता का स्वाद चखाएं तो (अबोध) हो जाता है चलो सारी कठनाईयां (दुर्दशाएं) मुझसे दूर हो गई (अब किस बात का भय) निःसंदेह इन्सान हर्ष मनाने वाला और घमण्ड करने वाला है (10) {3:193, 4:31, 7:95, 10:12-22-23, 29:65, 31:32}

اور اگر دکھ (بدحالی) کے بعد خوشحالی کا مزہ چکھائیں تو (غافل ہو جاتا ہے اور خوش ہو کر) کہنے لگتا ہے چلو ساری مصیبتیں (بدحالیاں) مجھ سے دور ہو گئیں (اب کس بات کا غم) بے شک انسان خوشی منانے والا اور فخر کرنے والا ہے(۱۰)[۳:۱۹۳؛ ۴:۳۱؛ ۷:۹۵؛ ۱۰:۱۲،۲۲،۲۳؛ ۲۹:۶۵؛ ۳۱:۳۲]

हां जिन्होंने धैर्य किया और शुभ कर्म किये ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है (11)

ہاں جنہوں نے صبر کیا اور نیک عمل کئے ایسے ہی لوگ ہیں جن کے لئے بخشش اور بہت بڑا اجر ہے(۱۱)

आयत ।2 का अर्थ लिखने से पहले कुछ धाराएं लिखी जा रही है जिनको पढ़ने के बाद धारा का भाव ठीक सामने आजाएगा,

آیت ۱۲ کا مطلب لکھنے سے پہلے چند آیتیں لکھی جارہی ہیں جن کو پڑھنے کے بعد آیت کا مفہوم ٹھیک سامنے آجائے گا۔

सूरत माएदा आयत 3............ आज नास्तिक तुम्हारे धर्म से निराश हो गए तो उनसे मत डरो और मुझही से डरते रहो और आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण अधिपति कर दिया और अपनी निधियां पूर्ण कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म पसन्द किया,

سورت مائدہ آیت ۳......آج کافر تمہارے دین سے ناامید ہو گئے۔تو ان سے مت ڈرو اور مجھ ہی سے ڈرتے رہو اور آج ہم نے تمہارے لئے تمہارا دین کامل کر دیا اور اپنی نعمتیں تم پر پوری کر دیں اور تمہارے لئے اسلام کو دین پسند کیا۔

धारा 67, ऐ ईशदूत जो आदेश ईश्वर की ओर से तुम पर अवतरित हो रहे है सब लोगों को पहुंचा दो, यदि ऐसा न करोगे तो ईश्वर के संदेश पहुंचाने में असमर्थ रहे (अर्थात ईशदौत्य का कर्तव्य पूर्ण न किया) और

آیت ۶۷۔اے رسول جو حکم اللہ کی طرف سے تم پر نازل ہو رہے ہیں سب لوگوں کو پہنچا دو۔اور اگر ایسا نہ کرو گے تو اللہ کے پیغام پہنچانے میں قاصر رہے

ईश्वर तुमको लोगों से बचाएगा निःसंदेह ईश्वर इनकार करने वालो को पथ प्रदर्शन नही देता.

सूरत कहफ आयत 6 पस यदि वह लोग इस बात पर विश्वास न लाए तो क्या आप उनके पीछे इसी दुख में अपनी जान वध कर डालेंगे.

सूरत ताहा आयत 13 पस उनकी बातों पर धैर्य कर और अपने स्वामी की पवित्रता और प्रशंसा वर्णन करता रह

सूरत ऐराफ आय 2 यह एक पुस्तक है जो आपके पास इस लिए प्रेषित की गई है कि आप इसके द्वारा डराऐं सो आपके हृदय में इससे तंगी न हो और शिक्षा है विश्वास वालो के लिए

सूरत अहज़ाब 48 और नास्तिकों और कपटियों का कहना न मानना और जो कष्ट (उनकी ओर से पहुंचे) उसका विचार भी न करना ईश्वर पर भरोसा किए रहो और ईश्वर काफ़ी है कार्य बनाने वाला सूरत यूनुस आयत 15 और जब उनके सामने हमारी धाराएं पढ़ी जाती हैं जो स्पष्ट है तो वह लोग जिनको हमारे पास आने की आशा नही है यूं कहते हैं कि इसके सिवा कोई दूसरा कुरआन लाओ, या इसमें कुछ बदल दो, आप यूं कह दीजिए कि मुझे यह अधिकार नही कि में अपनी ओर से इसमें बदल दूं बस में तो इसी का अनुकरण करूंगा जो मेरे पास वही के द्वारा पहुंचा है, यदि मैं अपने स्वामी की अवज्ञा करूं तो में एक बड़े दिन के कष्ट का भय रखता हूं

आयत 16 आप यूं कह दीजिए कि यदि ईश्वर को स्वीकार होता तो न में तुमको वह पढ़कर सुनाता और न ईश्वर तुमको इसकी सूचना देता क्योंकि में इससे पहले तो आयु के एक बड़े भाग तक तुममें रह चुका हूं फिर क्या तुम बुद्धि नही रखते.

आयत 41 और यदि आपको झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरे लिए मेरा कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म तुम मेरे कर्म से बुरी हो और में तुम्हारे कर्म से मुक्त हूं

आयत 93 हे मुहम्मद स० (यदि लोगों को इस पुस्तक में भ्रम हो) जो पुस्तक आप पर अवतरित की है तो वह लोग उन लोगों से ज्ञात कर लें जो उन पुस्तकों को पढ़ते रहे हैं जो आपसे पहले अवतरित हुई और विश्वास करो कि आपके स्वामी की ओर से आप के पास सत्य पहुंचा तो आप के साथी कदापि भ्रम करने वालों में से न हो.

सूरत हुद आयत 17 भला मनन करो जो लोग अपने ईश्वर की ओर से उज्जवल प्रमाण रखते हो (अर्थात ईश्वर ने उन्हें बुद्धि व विवेक और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया हो) और साथ ही एक आसमानी साक्षी (कुरआन उसकी सच्चाई की) साक्ष्य दे रहा हो उसकी ओर से और इससे पहले मूसा की पुस्तक (कुरआन और मुहम्मद के कर्म उसका साक्ष्य दे चुकी हो) जो नायक और कृपा है (क्या ऐसी स्थिति में लोग कुरआन का इनकार कर सकते हैं नही (यही वह लोग) हैं जो इस पर विश्वास लाते हैं और जो कोई और वर्गों में से इससे इनकार करेगा तो (वह समझ ले कि) उसका स्थान नर्क है तो तुम इस कुरआन से भ्रम में न होना यह आप के रब की ओर से सत्य है परन्तु अधिक लोग विश्वास नही लाते (36: 12)

सूरत निसा आयत 113 यदि ईश्वर की कृपा व दया आप पर न होती तो उनके एक वर्ग ने आपको बहकाने का संकल्प ही कर लिया था किन्तु वास्तव में वह अपने को ही पथ भ्रष्ट करते हैं, वह आपका कुछ नही बिगाड़ सकते ईश्वर ने आप पर युक्ति वाली पुस्तक उतारी है और आपको वह सिखाया है जिसे आप नही जानते थे और ईश्वर का आप पर भारी कृपा दया है.

(یعنی پیغمبری کا فرض ادا نہ کیا) اور اللہ تم کو لوگوں سے بچائے رکھے گا۔ بے شک اللہ منکروں کو ہدایت نہیں کرتا۔

سورت کھف آیت ۶۔ پس اگر وہ لوگ س بات پر ایمان نہ لائیں تو کیا آپ ان کے پیچھے اسی رنج میں اپنی جان ہلاک کر ڈالیں گے۔

سورت طٰہٰ آیت ۱۳۔ پس ان کی باتوں پر صبر کر اور اپنے پروردگار کی تسبیح اور تعریف بیان کرتا رہ

سورت اعراف آیت ۲۔ یہ ایک کتاب ہے جو آپ کے پاس اس لئے بھیجی گئی ہے کہ آپ اس کے ذریعہ سے ڈرائیں، سو آپ کے دل میں اس سے بالکل تنگی نہ ہو۔ اور نصیحت ہے ایمان والوں کے لئے۔

سورت احزاب آیت ۴۸۔ اور کافروں اور منافقوں کا کہنا نہ مانیے اور جو ایذا (ان کی طرف سے پہنچے) اس کا خیال بھی نہ کرنا۔ اللہ پر بھروسہ کئے رہو۔ اور اللہ کافی ہے کام بنانے والا

سورت یونس آیت ۱۵۔ اور جب ان کے سامنے ہماری آیتیں پڑھی جاتی ہیں جو بالکل صاف صاف ہیں۔ تو وہ لوگ جن کو ہمارے پاس آنے کی امید نہیں ہے یوں کہتے ہیں کہ اس کے سوا کوئی دوسرا قرآن لاؤ یا اس میں کچھ ترمیم کر دیجئے۔ آپ یوں کہہ دیجئے کہ مجھے یہ حق نہیں کہ میں اپنی طرف سے اس میں ترمیم کر دوں۔ پس میں تو اسی کا اتباع کروں گا۔ جو میرے پاس وحی کے ذریعہ پہنچا ہے اگر میں اپنے رب کی نافرمانی کروں تو میں ایک بڑے دن کے عذاب کا اندیشہ رکھتا ہوں۔

آیت ۱۶۔ آپ یوں کہہ دیجئے کہ اگر اللہ کو منظور ہوتا تو نہ میں تم کو وہ پڑھ کر سناتا اور نہ اللہ تم کو اس کی اطلاع دیتا۔ کیونکہ میں اس سے پہلے تو ایک بڑے حصہ عمر تک تم میں رہ چکا ہوں پھر کیا تم عقل نہیں رکھتے۔

آیت ۴۱۔ اور اگر آپ کو جھٹلاتے رہیں تو یہ کہہ دیجئے کہ میرے لئے میرا عمل اور تمہارے لئے تمہارا عمل تم میرے عمل سے بری ہو اور میں تمہارے عمل سے بری ہوں۔

آیت ۹۴۔ اے محمدؐ (اگر لوگوں کو اس کتاب میں شک ہو) جو کتاب آپ پر نازل کی ہے تو وہ لوگ ان لوگوں سے دریافت کر لیں جو ان کتابوں کو پڑھتے رہے ہیں جو آپ سے پہلے نازل ہوئیں اور یقین کرو کہ آپ کے رب کی طرف سے آپ کے پاس حق آپہنچا تو آپ کے ساتھی ہرگز شک کرنے والوں میں سے نہ ہوں۔

سورت ھود آیت ۱۷۔ بھلا غور کرو جو لوگ اپنے رب کی طرف سے روشن دلیل رکھتے ہوں (یعنی اللہ نے انہیں عقل و شعور اور کتابی علم عطا کیا ہو) اور ساتھ ہی ایک آسمانی گواہ (قرآن اور محمدؐ کے عمل اس کی سچائی کی) گواہی دے رہا ہو اس کی طرف سے اور اس سے پہلے موسیٰ کی کتاب (قرآن کی گواہی دے چکی ہو) جو امام اور رحمت ہے (کیا ایسی حالت میں لوگ قرآن کا انکار کر سکتے ہیں، نہیں) یہی وہ لوگ ہیں جو اس پر ایمان لاتے ہیں اور جو کوئی اور فرقوں میں سے اس سے انکار کرے گا تو (وہ سمجھ لے کہ) اس کا ٹھکانا دوزخ ہے تو تم اس قرآن سے شک میں نہ ہونا یہ آپ کے رب کی طرف سے حق ہے۔ لیکن اکثر لوگ یمان نہیں لاتے (۱۲:۳۶)

سورت نساء آیت ۱۱۳۔ اگر اللہ کا فضل و کرم آپ پر نہ ہوتا تو ان کی ایک جماعت نے آپ کو بہکانے کا قصد کر ہی لیا تھا۔ مگر دراصل وہ اپنے آپ کو ہی گمراہ کرتے ہیں۔ وہ آپ کا کچھ نہیں بگاڑ سکتے۔ اللہ نے آپ پر حکمت والی کتاب اتاری ہے اور آپ کو وہ سکھایا ہے جسے آپ نہیں جانتے تھے۔ اور اللہ کا آپ پر بھاری فضل ہے

सूरत अनआम आयत 15 आप कह दीजिए कि मैं यदि अपने रब का कहना न मानूं तो मैं एक बड़े दिनके कष्ट से डरता हूं

आयत 35 और यदि आपको उनका विरोध बुरा लगता है तो यदि आप को यह शक्ति है कि धरती में कोई सुरंग या आकाश में कोई सीढ़ी ढूंढलो फिर कोई चमत्कार ले आओ तो करो और यदि ईश्वर को स्वीकार होता जबरदस्ती करना तो उन सबको सत्य मार्ग पर संग्रह कर देता सो आप नादानों में से न हो जाना,

सूरत बनी इसराईल आयत 73 वह लोग आपको इस वही से जो हमने आप पर प्रेषित की है बहकाना चाहते है कि आप इसके अतिरिक्त कुछ और ही हमारे नाम से घढ़ लें तब तो आपको वह लोग अपना सहायक और मित्र बना लेते,

धारा 74 यदि हम आपको दृढ़ पग न रखते तो बहुत सम्भाव था कि उनकी ओर कुछ आकृष्ट हो ही जाते,

धारा 75 फिर तो हम भी आपको दोहरा कष्ट दुनिया का करते और दोहरा ही मौत का फिर आप तो अपने लिए हमारे सम्मुख किसी को सहायक भी न पाते,

सूरत अज्जुमर आयत 13 कहदो! कि मैं तो निर्मल करके केवल अपने रब ही की पूजा करता हूं,

सूरत शुरा आयत 15 पस आप लोगों को इस ओर बुलाते रहो और जो कुछ आपसे कहा गया है उसी पर दृढ़ता से जम जाए और उनकी इच्छाओं पर न चले,

सूरत अलहाक्का धारा 94 और यदि यह हम पर कोई भी बात बना लेता,

(45) तो अलबत्ता हम इसको पूरी शक्ति से पकड़ते दाहिने हाथ से,

(46) फिर इसकी शहरग काट देते,

(47) फिर तुममें से कोई भी उससे रोकने वाला न होता,

सूरत उत्तकवीर धारा 24 और वह नबी अर्थात मुहम्मद स0 परोक्ष की बातों को बताने में कृपण भी नही है

सूरत अलकलम धारा 9 वह तो चाहते है कि आप स्वंय थोड़े ढ़ीले हो तो वह भी ढ़ीले पड़ जाए

(51) और नास्तिक आस लगाए है कि निकट अपनी तीव्र आंखों और मुखो से आपको फुसला दे जब कभी कुरआन सुनते है और कह देते है यह तो वास्तव में उन्मत्त है

सूरत यासीन धारा 76 पस आपको उनकी बात शोकाकुल न करे हम उनकी गुप्त और प्रकट सब बातों को जानते है

सूरत अलमाएदा धारा 49 आप उनके विष्य वाद में ईश्वर की प्रेषित वही के अनुसार ही आदेश किया कीजिए उनकी इच्छाओं का अनुकरण न करना और उनसे सावधान रहना कि कही वह आपको ईश्वर के अवतरित किये हुए किसी आदेश से इधर उधर न करें {46:10, 6:33, 86:15, 25:33, 2:120-145, 17:86}

उपरोक्त धाराओ को पढ़ने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मुहम्मद स0 किसी भी मूल्य पर ईश्वर के आदेश को छोड़ने वाले नही थे चाहे नास्तिक कितनी ही कौशिश करते जो धाराओ में प्रकट है फिर आयत न 12 में फलाअल्लाह का तारिकुन का अनुवाद ऐसा क्यों कर दिया जिससे यह प्रकट हो रहा है कि शायद मुहम्मद स0 भी कुरआन से कुछ छोड़ सकते थे और अपने अनुवाद को उचित सिद्ध करने के लिए बहुत से नियम ऐसे मुहम्मद स0 की ओर सम्बन्धित कर रखे है जो कुरआन के विरुद्ध है, क्या यह कार्य विषय मुहम्मद स0 से सम्भाव

سورت انعام، آیت ۱۵۔ آپ کہہ دیجئے کہ میں اگر اپنے رب کا کہنا نہ مانوں تو میں ایک بڑے دن کے عذاب سے ڈرتا ہوں۔

آیت ۳۵۔ اور اگر آپ کو اُن کا اعراض گراں گزرتا ہے تو اگر آپ کو یہ قدرت ہے کہ زمین میں کوئی سرنگ یا آسمان میں کوئی سیڑھی ڈھونڈ لو پھر کوئی معجزہ لے آؤ تو کرو، اور اگر اللہ کو منظور ہوتا زبردستی کرنا تو ان سب کو راہ راست پر جمع کر دیتا سو آپ نادانوں میں سے نہ ہو جانا۔

سورت بنی اسرائیل، آیت ۷۳۔ وہ لوگ آپ کو اس وحی سے جو ہم نے آپ پر اتاری ہے بہکانا چاہتے ہیں کہ آپ اس کے سوا کچھ اور ہی ہمارے نام سے گھڑ لیں تب تو آپ کو وہ لوگ پناو لی دوست بنا لیتے۔

(۷۴) اگر ہم آپ کو ثابت قدم نہ رکھتے تو بہت ممکن تھا کہ ان کی طرف کچھ مائل ہو ہی جاتے۔

آیت ۷۵۔ پھر تو ہم بھی آپ کو دوہرا عذاب دنیا کا کرتے اور دوہرا ہی موت کا پھر آپ تو اپنے لئے ہمارے مقابلے میں کسی کو مددگار بھی نہ پاتے۔

سورت الزمر، آیت ۱۳۔ کہہ دیجئے! کہ میں تو خالص کر کے صرف اپنے رب ہی کی عبادت کرتا ہوں۔

سورت شوریٰ، آیت ۱۵۔ پس آپ لوگوں کو اسی طرف بلاتے رہیں۔ اور جو کچھ آپ سے کہا گیا ہے اس پر مضبوطی سے جم جائیں اور ان کی خواہشوں پر نہ چلیں۔

سورت الحاقہ، آیت ۴۴۔ اور اگر یہ ہم پر کوئی بھی بات بنا لیتا

(۴۵) تو البتہ ہم اس کو پوری طاقت سے پکڑتے داہنے ہاتھ سے

(۴۶) پھر اُس کی شہ رگ کاٹ دیتے

(۴۷) پھر تم میں سے کوئی بھی اس سے روکنے والا نہ ہوتا

سورت التکویر، آیت ۲۴۔ اور وہ نبی یعنی محمدؐ غیب کی باتوں کو بتانے میں بخیل بھی نہیں ہیں۔

سورت القلم آیت ۹۔ وہ تو چاہتے ہیں کہ آپ خود ذرا ڈھیلے ہوں تو وہ بھی ڈھیلے پڑ جائیں

(۵۱) اور کافر امید لگائے ہیں کہ عنقریب اپنی تیز نگاہوں اور زبانوں سے آپ کو پھسلا دیں جب کبھی قرآن سنتے ہیں اور کہہ دیتے ہیں یہ تو ضرور دیوانہ ہے

سورت یٰسین، آیت ۷۶۔ پس آپ کو ان کی بات غمناک نہ کرے، ہم ان کی پوشیدہ اور علانیہ سب باتوں کو جانتے ہیں۔

سورت المائدہ، آیت ۴۹۔ آپ ان کے معاملات میں اللہ کی نازل کردہ وحی کے مطابق ہی حکم کیا کیجئے ان کی خواہشوں کی تابعداری نہ کیجئے اور ان سے ہوشیار رہیے کہ کہیں وہ آپ کو اللہ کے اتارے ہوئے کسی حکم سے اِدھر اُدھر نہ کریں۔

[۴۶:۱۰:۶:۳۳:۸۶:۱۵:۲۵:۳۳:۲:۱۲۰،۱۴۵،۱۷:۸۶]

آیات بالا کو پڑھنے کے بعد یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ محمدؐ کسی بھی قیمت پر اللہ کی وحی کو چھوڑنے والے نہیں تھے چاہے کافر کتنی ہی کوشش کرتے جو آیات میں ظاہر ہے پھر آیت نمبر ۱۲ میں فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ کا ترجمہ ایسا کیوں کر دیا جس سے یہ ظاہر ہو رہا ہے کہ شاید محمدؐ بھی قرآن سے کچھ چھوڑ سکتے تھے اور اپنے ترجمے کو صحیح ثابت کرنے کے لئے بہت سے قانون ایسے محمدؐ کی طرف کو منسوب کر رکھے ہیں جو قرآن کے خلاف ہیں کیا یہ امر محمدؐ سے ممکن ہے؟ ہرگز نہیں اب ذیل میں

है? कदापि नही अब निम्न में ज्ञानियों का किया हुआ अनुवाद लिख रहा हूं बाद में वह भाव लिखूंगा जो इन उपरोक्त धाराओ के प्रकाश में है.

इस समय प्रचलित अनुवाद शायद तुम कुछ वस्तु वही में से जो तुम्हारे पास आती है छोड़ दो और इस (विचार) से तुम्हारा हृदय तंग हो कि (नास्तिक) यह कहने लगे कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नही आया, ऐ मुहम्मद स० आपतो केवल उपदेश करने वाले हो और ईश्वर हर वस्तु का रक्षक है फतेह मुहम्मद

देखिए इस अनुवाद से यही विदित हो रहा है कि शायद मुहम्मद स० ने कुछ छोड़ दिया हो या संकल्प किया हो अब में नबी की प्रतिष्ठा के अनुसार धारा से जो विदित होता है वह लिख रहा हूं

नास्तिक लोग कहेंगे कि यह कैसा नबी है कि इस पर न तो कोई कोष उतरा और न इसके साथ कोई फरिश्ता आया, वह इस आशा पर यह कहेंगे कि आप तंग होकर शायद कुछ वही से छोड़ कि आप तंग होकर शायद कुछ वही से छोड़ दो और कुछ बढ़ा दो तंग करने और इन्कार करने से वह यही आश लगाए बेठे हे (परन्तु आप ऐसा नही करेंगे) आप तो केवल डराने वाले हो, सो धैर्य के साथ अपना कार्य करते रहो, और ईश्वर हर वस्तु का रक्षक है. (12) {27:87}

नोट- धारा 12 का अनुवाद करते हुए ज्ञानियों ने शायद मुहम्मद स० से सम्बन्धित किया है शायद आप कुछ छोड़ दें जबकि शायद की दिशा नास्तिकों की ओर है अर्थात वह यह आशा कर रहे थे कि यदि हम मुहम्मद को तंग करें और धर्म का इनकार करें तो शायद मुहम्मद स० तंग होकर वही में से हमारे कहने के अनुसार कुछ छोड़ दें परन्तु उनका यह विचार अनुचित मिथ्या था मुहम्मद स० वही को छोड़ने वोल न थे,

क्या वह लोग कहते है कि इस व्यक्ति ने जीवन व्यतीत करने के नियम अपने मन से बनाकर कुरआन बना लिया है? उनसे कहो यदि तुम अपने इस वाद में सच्चे हो तो जो जीवन व्यतीत करने का नियम कुरआन में है इस जैसे दस नियम चिन्ह ही तुम बनाकर प्रस्तुत करो और ईश्वर के अतिरिक्त जिस जिसको (इस कार्य में सहायता के लिए) बुला सकते हो बुला लो (13)

फिर (ऐ सत्य के इनकार करने वालो! यदि तुम्हारे देवता) तुम्हारी पुकार का उत्तर न दें (और तुम दस चिन्ह नियम भी न बना सको) तो जान लो कुरआन ईश्वर ही के ज्ञान से उतरा है और कहते है कि कोई ईश्वर नही तो सुनो निःसंदेह वह है फिर क्या तुम इस सत्य को स्वीकार करते हो, (14)

जो लोग केवल दुनिया और इसकी शोभा के इच्छुक है (और सारे प्रयास इस लिए हो कि दुनिया मिले) तो हम उनके प्रयासों का पूरा पूरा बदला इसी (दुनिया) में दे देते है ऐसा नही होता कि उनके दुनिया के कर्मों के फलों में किसी प्रकार की कमी की जाए (15)

परन्तु याद रहे कि यह वह लोग है जिन के लिए प्रलोक में आग के सिवा कुछ न होगा और जो कुछ उन्होंने दुनिया में बनाया सब अकारत जाएगा और जो कुछ वह करते रहें है सब नष्ट हो जाएगा, (16)

भला मनन तो करो जो लोग अपने स्वामी की ओर

میں عالموں کا کیا ہوا ترجمہ لکھ رہا ہوں بعد میں وہ مفہوم لکھوں گا جو ان آیات بالا کی روشنی میں ہے.

رائج الوقت ترجمہ شاید تم کچھ چیز وحی میں سے جو تمہارے پاس آتی ہے چھوڑ دو اور اس (خیال) سے تمہارا دل تنگ ہو کہ (کافر) یہ کہنے لگیں کہ اس پر کوئی خزانہ کیوں نہیں نازل ہوا یا اس کے ساتھ کوئی فرشتہ کیوں نہیں آیا. اے محمدؐ آپ تو صرف نصیحت کرنے والے ہو اور اللہ ہر چیز کا نگہبان ہے. فتح محمد

دیکھئے اس ترجمہ سے یہی ظاہر ہو رہا ہے کہ شاید محمدؐ نے کچھ چھوڑ دیا ہو یا ارادہ کیا ہو اب میں نبی کی شان کے مطابق آیت سے جو ظاہر ہوتا ہے وہ لکھ رہا ہوں.

کافر لوگ کہیں گے کہ یہ کیسا نبی ہے کہ اس پر نہ تو کوئی خزانہ اترا اور نہ اس کے ساتھ کوئی فرشتہ آیا. وہ اس امید پر یہ کہیں گے کہ آپ تنگ ہو کر شاید کچھ وحی سے چھوڑ دو اور کچھ بڑھا دو. تنگ کرنے اور انکار کرنے سے وہ یہی امید لگائے بیٹھے ہیں (مگر آپ ایسا نہیں کریں گے) آپ تو صرف ڈرانے والے ہو سو صبر کے ساتھ اپنا کام کرتے رہو اور اللہ ہر چیز کا نگہبان ہے (۱۲) [۸۷:۲۷]

نوٹ: ۔آیت ۱۲ کا ترجمہ کرتے ہوئے عالموں نے شاید کو محمدؐ سے منسوب کیا ہے کہ شاید آپ کچھ چھوڑ دیں جب کہ اس شاید کا رُخ کافروں کی اور ہے یعنی وہ یہ امید کر رہے تھے کہ اگر ہم محمدؐ کو تنگ کریں اور دین کا انکار کرتے رہیں تو شاید محمدؐ تنگ ہو کر وحی میں سے ہمارے کہنے کے مطابق کچھ چھوڑ دیں مگر ان کا یہ خیال غلط تھا محمدؐ وحی کو چھوڑنے والے نہ تھے.

کیا وہ لوگ کہتے ہیں کہ اس شخص نے یہ ضابطہ حیات اپنے جی سے بنا کر قرآن بنا لیا ہے؟ ان سے کہو اگر تم اپنے اس دعوے میں سچے ہو تو جو ضابطہ حیات قرآن میں ہے اس جیسے دس قانون ہی تم بنا کر پیش کرو اور اللہ کے علاوہ جس جس کو (اس کام میں مدد کے لئے) بلا سکتے ہو بلا لو (۱۳)

پھر (اے منکرین حق! اگر تمہارے معبود) تمہاری پکار کا جواب نہ دیں (اور تم دس نشان ضابطے بھی نہ بنا سکو) تو جان لو قرآن اللہ ہی کے علم سے اترا ہے اور کہتے ہیں کہ کوئی اللہ نہیں تو سنو! یقیناً وہ ہے پھر کیا تم اس حقیقت کو تسلیم کرتے ہو (۱۴)

جو لوگ صرف دنیا اور اس کی زینت کے طالب ہیں (اور ساری کوشش اس لئے ہو کہ دنیا ملے) تو ہم ان کی کوششوں کا پورا پورا بدلہ اسی (دنیا) میں دے دیتے ہیں ایسا نہیں ہوتا کہ ان کے دنیا کے اعمال کے نتائج میں کسی طرح کی کمی کی جائے (۱۵)

لیکن یاد رہے کہ یہ وہ لوگ ہیں جن کے لئے آخرت میں آگ کے سوا کچھ نہ ہوگا اور جو کچھ انہوں نے دنیا میں بنایا سب اکارت ہو جائے گا اور جو کچھ وہ کرتے رہے ہیں سب ملیا میٹ ہو جائے گا (۱۶)

بھلا غور تو کرو جو لوگ اپنے پروردگار کی طرف سے روشن

से उज्जवल प्रमाण रखते हो (अर्थात ईश्वर ने उन्हें बुद्धि व विवेक और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया हो) और साथ ही एक आसमानी साक्षी (कुरआन और मुहम्मद के कुरआनी कर्म उसकी सच्चाई की) साक्ष्य दे रहे हो उसकी ओर से और इससे पहले मूसा अ0 की पुस्तक (कुरआन की साक्ष्य दे चुकी हो) जो नायक और कृपा है (क्या ऐसे लोग कुरआन का इनकार कर सकते है नही) वही वह लोग है जो इस पर विश्वास लाते है और जो दलो में से इससे इनकार करेंगे तो (वह समझ ले कि) उसका स्थान नर्क है तो तुम इस कुरआन से भ्रम में न होना, यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है परन्तु अधिकांश लोग विश्वास नही लाते (17) {36:12, 46:12}

دلیل رکھتے ہوں (یعنی اللہ نے انہیں عقل وشعور اور کتابی علم عطا کیا ہو) اور ساتھ ہی ایک آسمانی گواہ (قرآن اور محمدؐ کے قرآنی عمل اس کی سچائی کی) گواہی دے رہے ہوں اس کی طرف سے اور اس سے پہلے موسیٰ کی کتاب (قرآن کی گواہی دے چکی ہو) جو امام اور رحمت ہے (کیا ایسے لوگ قرآن کا انکار کر سکتے ہیں نہیں) وہی وہ لوگ ہیں جو اس پر ایمان لاتے ہیں اور جو کوئی فرقوں میں سے اس سے انکار کرے گا تو (وہ سمجھ لے کہ) اُس کا ٹھکانہ دوزخ ہے تو تم اس قرآن سے شک میں نہ ہونا. یہ تمہارے رب کی طرف سے حق ہے. لیکن اکثر لوگ یمان نہیں لاتے (۱۷) [۱۲:۴۶:۱۲:۳۶]

और उससे बढ़कर अन्यायी कौन होगा जो झूट बोल कर ईश्वर पर दोषारोपण करे? ऐसे लोग ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे और साक्षी साक्ष्य देंगे कि यही लोग है जो अपने ईश्वर पर झूट बोले थे तो सुन लो अत्याचारियों पर ईश्वर की धिक्कार है (18)

اور اس سے بڑھ کر ظالم کون ہوگا جو جھوٹ بول کر اللہ پر بہتان باندھے؟ ایسے لوگ اللہ کے سامنے پیش کیے جائیں گے اور گواہ گواہی دیں گے کہ یہی لوگ ہیں جو اپنے رب پر جھوٹ بولے تھے تو سن لو ظالموں پر اللہ کی لعنت ہے (۱۸)

जो (ईश्वर के बन्दों को) उसके मार्ग से रोकते है और (उसके धर्म में) कजी उत्पन्न करते है और परलोक से भी इनकार करते है (19)

جو (اللہ کے بندوں کو) اس کے راستے سے روکتے ہیں اور (اس کے دین میں) کجی پیدا کرتے ہیں اور آخرت سے بھی انکار کرتے ہیں (۱۹)

वह लोग धरती में (कही भाग कर ईश्वर को) हरा नही सकते और न ईश्वर के सिवा उनका कोई सहायक हो सकता है उनको दोगुना कष्ट दिया जाएगा क्योंकि यह (अपनी हट धर्मी से) न तो (सच्ची बात) सुन सकते थे और न देख सकते थे (20) {22:46}

وہ لوگ زمین میں (کہیں بھاگ کر اللہ کو) ہرا نہیں سکتے اور نہ اللہ کے سوا ان کا کوئی مددگار ہو سکتا ہے. اُن کو دوگنا عذاب دیا جائے گا. کیونکہ وہ (اپنی ہٹ دھرمی سے) نہ تو (سچی بات) سن سکتے تھے اور نہ دیکھ سکتے تھے (۲۰) [۴۶:۲۲]

वही वह लोग है जिन्होंने अपने को घाटे में डाला और जो कुछ वह दोषारोपण किया करते थे उनसे जाता रहा (21)

وہی وہ لوگ ہیں جنہوں نے اپنے کو خسارے میں ڈالا اور جو کچھ وہ افترا کیا کرتے تھے ان سے جاتا رہا (۲۱)

निःसंदेह वह लोग प्रलोक में सबसे अधिक हानी पाने वाले है (22)

بلاشبہ وہ لوگ آخرت میں سب سے زیادہ نقصان پانے والے ہیں (۲۲)

परन्तु जो लोग विश्वास लाए शुभ कर्म किए और अपने ईश्वर के आगे नम्रता से झुके रहे वह स्वर्ग के वारिस है सदैव उसमें रहेंगे (23)

لیکن جو لوگ ایمان لائے نیک کام کیے اور اپنے رب کے آگے عاجزی سے جھکے رہے وہ جنت کے وارث ہیں ہمیشہ اس میں رہیں گے (۲۳)

दोनों दलों (अर्थात नास्तिक व आस्तिक) की उपमा ऐसी है जैसे एक तो (अर्थात नास्तिक) अन्धा बहरा है और एक (अर्थात आस्तिक देखने सुनने वाला है, फिर बताओ क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? फिर तुम सोचते क्यों नहीं (24)

دونوں فرقوں (یعنی کافر ومومن) کی مثال ایسی ہے جیسے ایک تو (یعنی کافر) اندھا بہرا ہے اور ایک (یعنی مومن) دیکھنے سننے والا ہے پھر بتاؤ کیا دونوں برابر ہو سکتے ہیں؟ پھر تم سوچتے کیوں نہیں (۲۴)

और हमने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा (तो उन्होंने कहा) कि में तुमको स्पष्ट डर सुनाने आया हूं, (25)

اور ہم نے نوح کو ان کی قوم کی طرف بھیجا (تو انہوں نے کہا) کہ میں تم کو کھول کھول کر ڈر سنانے آیا ہوں (۲۵)

कि ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा न करो, मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दण्ड का भय है, (26)

کہ اللہ کے سوا کسی کی عبادت نہ کرو. مجھے تمہارے بارے میں عذاب علیم کا خوف ہے (۲۶)

इस पर उसेकी जाति के नेताओं ने जो नास्तिकता पर अड़े थे कहा हमें तो इसके सिवा कोई बात दिखाई नही देती कि तुम निःसंदेह हमारी ही भांति के व्यक्ति हो और जो कोई तुम्हारा अनुकरण कर रहे है उनमें भी वह लोग दिखते है जो क्षुद्रतम हैऔर वे सोचे समझे (तुम्हारे पीछे हो लिए) और

اس پر اس کی قوم کے سرداروں نے جو کفر پر اڑے تھے کہا ہمیں تو اس کے سوا کوئی بات نظر نہیں آتی کہ تم یقیناً ہماری ہی طرح کے آدمی ہو اور جو کوئی تمہاری پیروی کر رہے ہیں ان میں وہی لوگ نظر آتے ہیں جو ادنیٰ درجے کے ہیں اور

हम नही समझते कि तुम लोग हमसे अच्छे और श्रेष्ठ हो अपितु हमारा तो यह विचार है कि तुम झूटे हो (27)

بے سوچے سمجھے (تمہارے پیچھے ہو لئے) اور ہم نہیں سمجھتے کہ تم لوگ ہم سے بہتر اور افضل ہو بلکہ ہمارا تو یہ خیال ہے کہ تم جھوٹے ہو (۲۷)

नूह अ0 ने कहा ऐ मेरी जाति के लोगो! क्या तुमने इस बात पर भी विचार किया कि मैं अपने रब की ओर से एक उज्जवल तर्क पर हूं और उसने अपनी ओर से मुझ पर करुणा अवतरित की हो (अर्थात जीवन की सीधी राह मुझे दिखादी हो) परन्तु वह तुम्हें चितवन न आती हो तो क्या मैं तुम्हें जबरदस्ती वह मार्ग दिखा दूं यद्यपि तुम उससे अप्रसन्न हो रहे हो (28)

نوحؑ نے کہا اے میری قوم کے لوگو! کیا تم نے اس بات پر بھی غور کیا کہ میں اپنے رب کی طرف سے ایک روشن دلیل پر ہوں اور اس نے اپنی طرف سے مجھ پر رحمت نازل کی ہو (یعنی زندگی کی سیدھی راہ مجھے دکھادی ہو) مگر وہ تمہیں نظر نہ آتی ہو تو کیا میں تمہیں زبردستی وہ راہ دکھادوں حالانکہ تم اس سے ناخوش ہو رہے ہو (۲۸)

और हे जाति! मैं इस (शिक्षा) के बदले तुमसे धन दौलत का इच्छुक नही हूं, मेरा प्रतिफल तो ईश्वर का दायित्व है और जो लोग आस्था लाए हैं मैं उनको निकालने वाला भी नही हूं वह तो अपने रब से मिलने वाले हैं मैं देखता हूं कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो (29)

اور اے قوم! میں اس (نصیحت) کے بدلے تم سے مال و زر کا خواہاں نہیں ہوں، میرا صلہ تو اللہ کے ذمہ ہے اور جو لوگ ایمان لائے ہیں میں ان کو نکالنے والا بھی نہیں ہوں۔ وہ تو اپنے رب سے ملنے والے ہیں میں دیکھتا ہوں کہ تم لوگ نادانی کرر ہے ہو (۲۹)

ऐ मेरी जाति! यदि मैं उन धर्म वादी निर्धनों को अपने पास से निकाल दूं तो ईश्वर की यातना से (बचाने के लिए) कौन मेरी सहायता कर सकता है भला तुम मनन क्यों नही करते (30)

اے میری قوم! اگر میں ان (ایمان دار غریبوں کو) اپنے پاس سے نکال دوں تو اللہ کے عذاب سے (بچانے کے لئے) کون میری مدد کر سکتا ہے بھلا تم غور کیوں نہیں کرتے (۳۰)

और मैं तुमसे यह नही कहता कि मेरे पास ईश्वर के कोष हैं, न यह कहता हूं कि मैं परोक्ष की बाते जानता हूं और यह भी नही कहता कि मैं फरिश्ता हूं और न उन लोगों के बारे में जिनको तुम घृणा की दृष्टि से देखते हो यह कहता हूं कि ईश्वर उनको भलाई (अर्थात शुभ कर्मों का फल) नही देगा जो उनके मनों में है उसे ईश्वर भलि भांति जानता है, यदि मैं ऐसा कहूं तो मैं अन्यायीयों में से हो जाओ (31)

اور میں تم سے یہ نہیں کہتا کہ میرے پاس اللہ کے خزانے ہیں نہ یہ کہتا ہوں کہ میں غیب کی باتیں جانتا ہوں اور یہ بھی نہیں کہتا کہ میں فرشتہ ہوں اور نہ ان لوگوں کی نسبت جن کو تم حقارت کی نظر سے دیکھتے ہو یہ کہتا ہوں کہ اللہ ان کو بھلائی (یعنی نیک عمل کی جزا) نہیں دے گا، جو ان کے دلوں میں ہے اسے اللہ خوب جانتا ہے، اگر میں ایسا کہوں تو میں ظالموں میں سے ہو جاؤں (۳۱)

उन लोगों ने कहा ऐ नूह अ0! तूने हमसे झगड़ा किया और तेरा झगड़ा बढ़ता ही गया (अब इन बातों से कोई लाभ नही) यदि तू सच्चा है तो जिस कष्ट से तू हमें डरा रहा है उसे हमारे सामने ले आ (32)

ان لوگوں نے کہا اے نوحؑ! تو نے ہم سے جھگڑا کیا، اور تیرا جھگڑا بڑھتا ہی گیا (اب ان باتوں سے کوئی فائدہ نہیں) اگر تو سچا ہے تو جس عذاب سے تو ہمیں ڈرا رہا ہے اسے ہمارے سامنے لے آ (۳۲)

नूह ने कहा कि उसको तो ईश्वर ही चाहेगा तो प्रेषित करेगा और तुम (उसको किसी प्रकार) प्राप्त नही कर सकते (33)

نوح نے کہا کہ اس کو تو اللہ ہی چاہے گا تو نازل کرے گا اور تم (اس کو کسی طرح) ہرا نہیں سکتے (۳۳)

और यदि मैं यह चाहूं कि तुम्हारी भलाई करूं और ईश्वर का नियम यह चाहे कि तुम्हें पथ भ्रष्ट करे तो मेरी शिक्षा तुमको कुछ लाभ नही दे सकती वही तुम्हारा ईश्वर है और तुम्हें उसी की ओर लोट कर जाना है, (34)

اور اگر میں یہ چاہوں کہ تمہاری بھلائی کروں اور اللہ کا قانون یہ چاہے کہ تمہیں گمراہ کرے تو میری نصیحت تم کو کچھ فائدہ نہیں دے سکتی وہی تمہارا رب ہے اور تمہیں اسی کی طرف لوٹ کر جانا ہے (۳۴)

क्या वह कहते हैं कि इस व्यक्ति ने यह सब कुछ स्वंय धड़ लिया है? उनसे कहो यदि मैं ने यह स्वंय धड़ा है तो मुझपर अपने अपराध का भार है, और जो अपराध तुम कर रहे हो उसके भार से मैं मुक्त हूं (35)

کیا وہ کہتے ہیں کہ اس شخص نے یہ سب کچھ خود گھڑ لیا ہے؟ ان سے کہو اگر میں نے یہ خود گھڑا ہے تو مجھ پر اپنے جرم کی ذمہ داری ہے اور جو جرم تم کر رہے ہو اس کی ذمہ داری سے میں بری ہوں (۳۵)

और नूह की ओर वही की गई कि तेरी जाति में से जो लोग विश्वास ला चुके हैं अब कोई और विश्वास न लाएगा, अतः वह लोग जो कार्य कर रहें हैं उस पर दुख न करो (36)

اور نوح کی طرف وحی کی گئی کہ تیری قوم میں سے جو لوگ ایمان لا چکے ہیں اب کوئی اور ایمان نہ لائے گا لہٰذا وہ لوگ جو کام کر رہے ہیں اس پر افسوس نہ کرو (۳۶)

और एक नाव हमारे आदेश से हमारी देख रेख में

اور ایک کشتی ہمارے حکم سے ہماری نگرانی میں بنا اور جو

बना और जो लोग अत्याचारी है उनके विषय में हम से कुछ न कहना क्योंकि वह अवश्य पलावन कर दिए जाएंगे (37)

لوگ ظالم ہیں ان کے بارے میں ہم سے کچھ نہ کہنا کیونکہ وہ ضرورغرق کردے جائیں گے(۳۷)

तो नूह अ0 ने नाव बनानी आरम्भ कर दी और जब उनकी जाति का कोई नेता उसके पास से गमन होता तो उसका उपहास उड़ाता नूह उत्तर देता यदि तुम उपहास उड़ा रहे हो तो इसी प्रकार हम भी उपहास उड़ाएंगे (38)

تو نوحؑ نے کشتی بنانی شروع کردی اور جب ان کی قوم کا کوئی سرداراس کے پاس سے گزرتا تواس کا مذاق اڑاتا نوح جواب دیتا اگرتم مذاق اڑارہے ہوتواسی طرح ہم بھی مذاق اڑائیں گے(۳۸)

और तुमको शीघ्र ज्ञात हो जाएगा कि किस पर अपमानित करने वाला कष्ट आता है और किस पर सदैव का कष्ट अवतरित होता है (39)

اورتم کوجلدمعلوم ہوجائے گا کہ کس پررسوا کرنے والاعذاب آتا ہےاور کس پر ہمیشہ کاعذاب نازل ہوتا ہے(۳۹)

यहां तककि जब हमारा आदेश कष्ट आ पहुंचे और प्रकृति का तनूर आवेश मारने लगे अर्थात पास की पहाड़यों से पानी आने लगे और सैलाब बन जाए तो हमने उस समय के लिए (नूह अ0 को) आदेश दिया कि हर प्रकार में से जोड़ा जोड़ा अर्थात दो दो जानवर एक नर और एक नारी ले लेना, और जिन लोगों के विषय में आदेश हो चुका है उनको छोड़कर अपने घर वालों और जो दूसरे विश्वास लाए है उनको नाव में स्वार कर लेना और उनके साथ विश्वास बहुत ही कम लोग लाए थे (40)

یہاں تک کہ جب ہمارا حکم عذاب آپہنچے اورفطرت کا تنور جوش مارنے لگے یعنی اردگرد کی پہاڑیوں سے پانی آنے لگے اور سیلاب کی شکل اختیار کرلے تو ہم نے اس وقت کے لئے (نوحؑ کو)حکم دیا کہ ہرقسم میں سے جوڑا جوڑا یعنی دودو جانور ایک نر اور ایک مادہ لے لینا.اورجن لوگوں کی نسبت حکم ہوچکا ہےان کو چھوڑکراپنے گھروالوں اور جو دوسرے ایمان لائے ہیں ان کو کشتی میں سوار کرلینااوران کے ساتھ ایمان بہت ہی کم لوگ لائے تھے(۴۰)

और समय आने पर नूह अ0 ने कहा (उन सबसे जो विश्वास लाए थे) नाव पर स्वार हो जाओ, ईश्वर के नाम से इसका चलना और ठेहरना है निःसंदेह मेरा स्वामी बड़ा क्षमा करने वाला और कृपा वाला है (41)

اور وقت آنے پر نوحؑ نے کہا (ان سب سے جو ایمان لائے تھے) کشتی پر سوار ہوجاؤ.اللہ کے نام سے اس کا چلنا اورٹھہرنا ہے.بے شک میرا رب بڑا بخشنے والااوررحم والا ہے(۴۱)

और नाव उन लोगों को लेकर चलने लगी ऐसी उग्र वर्षा में जिसकी लेहरे पर्वत की भांति उठ रही थी, उस समय नूह ने अपने पुत्र को पुकारा जो उनसे दूरी पर था ऐ मेरे पुत्र! हमारे साथ नाव में स्वार हो जाओ और नास्तिकों के साथ न रह (42)

اورکشتی ان لوگوں کو لے کر چلنے لگی ایسے طوفان میں جس کی موجیں پہاڑ کی طرح اٹھ رہیں تھیں اس وقت نوح نے اپنے بیٹے کو پکارا جوان سے فاصلے پر تھا.اے میرے بیٹے! ہمارے ساتھ کشتی میں سوار ہوجاؤ اور کافروں کے ساتھ نہ رہ(۴۲)

उसने उत्तर दिया मैं पर्वत पर शरण ले लूंगा वह मुझे पानी से बचालेगा, नूह ने कहा कि आज ईश्वर के कष्ट से बचाने वाला कोई नही परन्तु निःसंदेह वह बचेगा जिस पर ईश्वर ने दया की है इतने में दोनों के बीच लहर बाधक हो गई और वह डूबने वालो में था, (43) {54:11}

اس نے جواب دیا میں پہاڑ پر پناہ لےلوں گا وہ مجھے پانی سے بچالے گا،نوح نے کہا کہ آج اللہ کے عذاب سے بچانے والاکوئی نہیں.مگر یقیناوہ بچے گا جس پر اللہ نے رحم کیا ہے.اتنے میں دونوں کے درمیان لہر حائل ہوگئی اور وہ ڈوبنے والوں میں تھا(۴۳)[۵۴:۱۱]

और आदेश दिया गया कि ऐ धरती अपना पानी निगल जा और ऐ आकाश थम जा तो पानी शुष्क हो गया और कार्य पूरा हो गया, और नाव जूदी पर्वत पर ठहर गई और कह दिया गया कि अत्याचारी जाति के लिए ईश्वर की कृपा से दूरी है (44)

اورحکم دیا گیا کہ اے زمین اپنا پانی نگل جا اور اے آسمان تھم جا تو پانی خشک ہوگیا اور کام پورا ہوگیا اور کشتی کوہ جودی پرٹھہرگئی اور کہدیا گیا کہ ظالم قوم کے لئے اللہ کی رحمت سے دوری ہے(۴۴)

और (जब नूह अ0 ने अपने पुत्र को डूबते हुए देखा तो अपने) रब को पुकारा और कहा ऐ रब मेरा पुत्र भी तो मेरे घर वालों में से है और तेरा वचन सत्य है और तू सबसे अच्छा न्याय करने वाला है (45)

اور(جب نوحؑ نے اپنے بیٹے کو ڈوبتے ہوئے دیکھا تو اپنے) رب کو پکارا اورکہا اے رب میرا بیٹا بھی تو میرے گھروالوں میں سے ہےاور تیرا وعدہ سچا ہےاورتو سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے(۴۵)

ईश्वर ने कहा ऐ नूह! वह तेरे घर वालों में नही है निःसंदेह उसके कर्म अनुचित है अर्थात उचित नही है बस जिन बातों का तूझे ज्ञान नही है उसके विषय में मुझसे प्रश्न न कर मैं तूझे उपदेश देता हूं कि मूर्खों में से न हो जा (46)

اللہ نےفرمایا.اے نوحؑ!وہ تیرے گھروالوں میں سے نہیں ہے بےشک اس کے عمل غیر صالح ہیں یعنی اچھے نہیں ہیں پس جن باتوں کا تجھے علم نہیں ہےاس کے بارے میں مجھ سے سوال نہ کر میں تجھے نصیحت کرتا ہوں کہ جاہلوں میں سے نہ ہوجا(۴۶)

नूह अ0 ने कहा हे ईश्वर! मैं तेरी शरण मांगता हूं

نوحؑ نےعرض کیا اےاللہ!میں تیری پناہ مانگتا ہوں کہ ایسی

कि ऐसी वस्तु का तुझसे प्रश्न करूं जिसकी वास्तविकता का मुझे ज्ञान नही (मैं तुझसे इस भूल पर क्षमा चाहता हूं) यदि तूने मुझको क्षमा न किया और मुझ पर दया न की तो मैं हानि उठाने वालों में से हो जाऊंगा (47)

چیز کا تجھ سے سوال کروں جس کی حقیقت کا مجھے علم نہیں (میں تجھ سے اس بھول پر معافی مانگتا ہوں) اگر تو نے مجھ کو نہ بخشا اور مجھ پر رحم نہ کیا تو میں نقصان اٹھانے والوں میں سے ہو جاؤں گا (۴۷)

आदेश हुआ ऐ नूह उतर मंगल के साथ हमारी ओर से (सम्पन्नता के साथ तुझ पर और कितने दलों पर तेरे साथ वालों में और कितने और दलों को हम लाभ देंगे परन्तु फिर पहुंचेगी हमारी ओर से दुख की मार उनके पापो के कारण (48)

حکم ہوا اے نوح اتر سلامتی کے ساتھ ہماری طرف سے اور برکتوں کے ساتھ تجھ پر اور کتنے فرقوں پر تیرے ساتھ والوں میں اور کتنے اور فرقوں کو ہم فائدہ دیں گے مگر پھر پہنچے گی ہماری طرف سے دکھ کی مار ان کے گناہوں کی وجہ سے (۴۸)

(ऐ रसूल!) यह (नूह की कथा) परोक्ष की सूचनाओं में से है जिसे हम वही के द्वारा आप की ओर प्रेषित करते है इससे पहले न तो आपको इसका ज्ञान था और न आपकी जाति को अतः धैर्य करो और विश्वास करो अच्छा फल सदाचारियों ही के लिए है. (49)

(اے رسول!) یہ (نوح کا قصہ) غیب کی خبروں میں سے ہے جسے ہم وحی کے ذریعہ آپ کی طرف بھیجتے ہیں اس سے پہلے نہ تو آپ کو اس کا علم تھا اور نہ آپ کی قوم کو. لہٰذا صبر کرو اور یقین کرو اچھا انجام پرہیزگاروں ہی کے لئے ہے (۴۹)

और हमने जाति आद के पास उनके भाई हूद को भेजा हूद ने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! ईश्वर की पूजा करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही तुम (अनेकेश्वर वाद करके ईश्वर पर) केवल दोषारोपण करते हो (50)

اور ہم نے قوم عاد کے پاس ان کے بھائی ہود کو بھیجا. ہود نے کہا اے میری قوم کے لوگو! اللہ کی بندگی کرو. اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں. تم (شرک کر کے اللہ پر) صرف بہتان باندھتے ہو (۵۰)

ऐ मेरी जाति के लोगों! मैं इस उपदेश का तुमसे कोई पारिश्रमिक नही मांगता मेरा प्रतिदान तो ईश्वर का दायित्व है जिसने मुझे उत्पन्न किया है भला तुम समझते क्यों नही (51)

اے میری قوم کے لوگو! میں اس نصیحت کا تم سے کوئی اجرت نہیں مانگتا میری اجرت تو اللہ کے ذمہ ہے. جس نے مجھے پیدا کیا ہے بھلا تم سمجھتے کیوں نہیں (۵۱)

ऐ मेरी जाति! अपने रब से क्षमा मांगो और उसके आगे पश्चाताप करो वह तुम पर आकाश से मूसला धार वर्षा की भांति (जीविका की वर्षा करेगा तुम्हारे शुभ कर्मों के कारण) और तुम्हारी शक्ति पर शक्ति बढ़ाता रहेगा अतः विमुखता करके अपराधी न बनों (52)

اے میری قوم! اپنے رب سے معافی مانگو اور اس کے آگے توبہ کرو. وہ تم پر آسمان سے موسلادھار بارش کی طرح (رزق کی بارش کرے گا تمہارے نیک عملوں کی وجہ سے) اور تمہاری طاقت پر طاقت بڑھاتا رہے گا. اس لئے روگردانی کر کے مجرم نہ بنو (۵۲)

वह बोले ऐ हूद इसके विषय में तुम हमारे पास कोई स्पष्ट तर्क नही लाए और हम केवल आपके कहने से अपने देवताओ को छोड़ने वाले नही है और न तुम पर विश्वास लाने वाले है (53)

وہ بولے اے ہود اس کے بارے میں تم ہمارے پاس کوئی کھلی دلیل نہیں لائے اور ہم صرف تمہارے کہنے سے اپنے معبودوں کو چھوڑنے والے نہیں ہیں. اور نہ تم پر ایمان لانے والے ہیں (۵۳)

हम तो यह समझते है कि निःसंदेह तुम्हें हमारे किसी देवता ने आसेब पहुंचा कर (दीवाना कर दिया है) उन्होंने कहा कि मैं ईश्वर को साक्षी बनाता हूं और तुम भी साक्षी रहो कि तुम ईश्वर को छोड़कर ईश्वर का साझी बनाते हो मैं तो उनसे अप्रसन्न हूं (54)

ہم تو یہ سمجھتے ہیں کہ یقیناً تمہیں ہمارے کسی معبود نے آسیب پہنچا کر (دیوانہ کر دیا ہے) انہوں نے کہا کہ میں اللہ کو گواہ بناتا ہوں اور تم بھی گواہ رہو کہ تم اللہ کو چھوڑ کر اللہ کا شریک بناتے ہو میں تو ان سے بیزار ہوں (۵۴)

(अर्थात उनसे जिनकी ईश्वर के सिवा पूजा करते हो यदि यह पाप है तो) तो तुम सब मिलकर मेरे विषय में जो उपाय कर सकते हो अवश्य करो और मुझे छूट न दो (फिर देखो कि ईश्वर किसके साथ है) (55)

(یعنی ان سے جن کی اللہ کے سوا عبادت کرتے ہو اگر یہ جرم ہے تو) تو تم سب مل کر میرے بارے میں جو تدبیر کر سکتے ہو ضرور کرو اور مجھے مہلت نہ دو (پھر دیکھو کہ اللہ کس کے ساتھ ہے) (۵۵)

मेरा भरोसा ईश्वर पर है जो मेरा और तुम्हारा दोनों का रब है पृथ्वी पर जो भी चलने फिरने वाला है निःसंदेह उसके अधिकार में है, सब की चोटी उसके हाथ में है निःसंदेह मेरे रब ने मुझे सीधे मार्ग पर चलाया है इस लिए जो भी सीधे सीधे मार्ग पर चलेगा उसको मेरा रब मिलेगा क्योंकि वह मार्ग चलने वालों को मित्र रखता है और वह सीधे

میرا بھروسہ اللہ پر ہے جو میرا اور تمہارا دونوں کا رب ہے زمین پر جو بھی چلنے پھرنے والا ہے یقیناً اس کے قبضہ میں ہے سب کی چوٹی اس کے ہاتھ میں ہے. بے شک میرے رب نے مجھے صراط مستقیم پر چلایا ہے اس لئے جو بھی سیدھی راہ پر چلے گا اس کو میرا رب ملے گا کیوں کہ وہ سیدھی راہ چلنے والوں کو دوست رکھتا ہے اور وہ سیدھی راہ پر

मार्ग पर ही मिलता है वह अत्याचारी नही है (56)
यदि तुम विमुखता करोगे तो करना मुझे जो सन्देश देकर प्रेषित किया है वह मैंने तुम तक पहुंचा दिया है और मेरा रब तुम्हारे स्थान पर और लोगों को ला बसाएगा और तुम उसका कुछ भी नही बिगाड़ सकते निःसंदेह मेरा रब हर वस्तु का रक्षक है (57)
और जब हमारा आदेश (कष्ट) आ पहुंचा तो हमने हूद को और जो लोग उनके साथ विश्वास लाए थे उनको अपनी कृपा से बचा लिया और उन्हें कठोर कष्ट से मुक्ति दी (58)
यह (वही) आद है जिन्होंने अपने रब की धाराओ से इनकार किया और उसके ईशदूतों की अवज्ञा की और हर उद्दण्ड व घमण्डी के आदेश का अनुकरण किया (59)
तो इस दुनिया में भी उनके पीछे धिक्कार लगी रही और प्रलय के दिन भी (लगी रहेगी) तो सुन रखो आपने अपने ईश्वर की अवज्ञा की और यह भी सुन रखो कि हूद की जाति आद पर फटकार पड़ी (60)
और हमने जाति समूद की ओर उनके भाई सालेह को प्रषित किया तो उन्होंने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! ईश्वर की पूजा करो उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नही उसी ने तुमको धरती से (तुम्हारा विकास धरती से उत्पन्न वस्तुओ से किया) पालन पोषण किया और इसमें ही बसाया अतः उससे अपने पापो की क्षमा मांगो और उसके आगे पश्चाताप करो विश्वास करो मेरा रब (हम सब के) निकट है और प्रार्थना स्वीकार करने वाला है (61)
उन्होंने कहा कि सालेह इससे पहले तो हम सबको तुझसे बड़ी आशाएं थी (अब तुझे क्या हो गया है कि) तू हमें उन वस्तुओ की पूजा से रोकता है जिन्हें हमारे पूर्वज पूजते आये है? तू जिस बात की ओर हमें बुला रहा है हमें उसमें अधिक शंका है (62)
सालेह ने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! क्या तुमने इस बात पर भी विचार किया कि यदि मैं अपने ईश्वर की ओर से स्पष्ट तर्क पर हूं उसी ने अपनी ओर से मुझे अनुकम्पा (अर्थात ईशदौत्य प्रदान की हो तो यदि मैं (इतनी निधियों के बाद) उसकी अवज्ञा करूं तो उस के सामने मेरी सहायता कौन करेगा? (तुम इन अनुचित बातों से) मुझे हानी की ओर ले जाना चाहते हो (63)
ऐ मेरी जाति के लोगों! देखो यह ईश्वर के नाम पर छोड़ी हुई ऊंटनी तुम्हारी परिक्षा के लिए एक चिन्ह है तो इसको छोड़ दो ताकि ईश्वर की धरती में चरती फिरे इसे किसी प्रकार का कष्ट न देना अन्यथा कष्ट के आने में देर न लगेगी (64) {2: 278, 23:54}

परन्तु उन्होंने उसकी कौंचे काट कर बध कर डाला तब सालेह ने कहा कि अपने घरों में तीन दिन (और) लाभ उठालो यह वचन है कि झूटा न होगा. (65)

ہی ملتا ہے۔وہ ظالم نہیں ہے(۵۶)
اگر تم روگردانی کرو گے تو کرنا مجھے جو پیغام دے کر بھیجا گیا ہے وہ میں نے تم تک پہنچا دیا ہے اور میرا رب تمہاری جگہ اور لوگوں کو لا بسائے گا اور تم اس کا کچھ بھی نہیں بگاڑ سکتے یقیناً میرا رب ہر چیز کا نگران ہے (۵۷)
اور جب ہمارا حکم (عذاب) آ پہنچا تو ہم نے ہود کو اور جو لوگ ان کے ساتھ ایمان لائے تھے ان کو اپنی مہربانی سے بچا لیا اور انہیں عذاب شدید سے نجات دی (۵۸)
وہ (وہی) عاد ہیں جنہوں نے اپنے رب کی آیتوں سے انکار کیا اور اس کے رسولوں کی نافرمانی کی اور ہر سرکش ومتکبر کے حکم کی پیروی کی (۵۹)
تو اس دنیا میں بھی ان کے پیچھے لعنت لگی رہی اور قیامت کے دن بھی (لگی رہے گی) تو سن رکھو عاد نے اپنے رب کی نافرمانی کی اور یہ بھی سن رکھو کہ ہود کی قوم عاد پر پھٹکار پڑی (۶۰)
اور ہم نے قوم ثمود کی طرف ان کے بھائی صالح کو بھیجا تو انہوں نے کہا اے میری قوم کے لوگو! اللہ کی بندگی کرو. اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں اسی نے تم کو زمین سے (تمہاری نشونما زمین کی پیدا اشیاء سے کی) پرورش کیا اور اس میں ہی آباد کیا. لہٰذا اس سے اپنے گناہوں کی معافی مانگو اور اس کے آگے توبہ کرو. یقین کرو میرا رب (ہم سب کے) قریب ہے اور دعا قبول کرنے والا ہے(۶۱)
انہوں نے کہا کہ صالح اس سے پہلے تو ہم سب کو تیری ذات سے بڑی امیدیں تھیں (اب تجھے کیا ہو گیا ہے کہ) تو ہمیں ان چیزوں کی پوجا سے روکتا ہے جنہیں ہمارے بزرگ پوجتے آئے ہیں؟ تو جس بات کی طرف ہمیں بلا رہا ہے ہمیں اس میں زیادہ شبہ ہے(۶۲)
صالح نے کہا اے میری قوم کے لوگو! کیا تم نے اس بات پر بھی غور کیا کہ اگر میں اپنے رب کی طرف سے کھلی دلیل پر ہوں اس نے اپنی طرف سے مجھے رحمت (یعنی نبوت) عطا کی ہو تو اگر میں (اتنی نعمتوں کے بعد) اس کی نافرمانی کروں تو اس کے سامنے میری مدد کون کرے گا؟ تم (ان شرکانہ باتوں سے) مجھے نقصان کی طرف لے جانا چاہتے ہو(۶۳)
اے میری قوم کے لوگو! دیکھو یہ اللہ کے نام پر چھوڑی ہوئی اونٹنی تمہاری آزمائش کے لئے ایک نشانی ہے تو اس کو چھوڑ دو تا کہ اللہ کی زمین میں چرتی پھرے اسے کسی طرح کی تکلیف نہ دینا ورنہ عذاب کے آنے میں دیر نہ لگے گی (۶۴)[۵۴:۲۳،۲۷۸:۲]
مگر انہوں نے اس کی کونچیں کاٹ کر ہلاک کر ڈالا تب صالح نے کہا کہ اپنے گھروں میں تین دن (اور) فائدے اٹھالو. یہ وعدہ ہے کہ جھوٹا نہ ہوگا (۶۵)

फिर जब हमारा आदेश (कष्ट) आ गया तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उनके साथ विश्वास लाए थे अपनी कृपा से बचा लिया और उस दिन अर्थात प्रलय के अपमान से भी बचा लेंगे, निःसंदेह हमारा ईश्वर शक्ति शाली और प्रभुत्व प्राप्त है (66)

پھر جب ہمارا حکم (عذاب) آ گیا تو ہم نے صالح کو اور ان لوگوں کو جو ان کے ساتھ ایمان لائے تھے اپنی مہربانی سے بچا لیا اور اس دن یعنی قیامت کی رسوائی سے بھی بچا لیں گے. بے شک تمہارا رب طاقت ور اور زبردست ہے (۶۶)

और जिन लोगों ने अन्याय किया था उनको एक शक्ति शाली कड़क ने आ लिया प्रातः हुई तो सब अपने भवनों में औंधे पड़े हुए थे (67)

اور جن لوگوں نے ظلم کیا تھا ان کو ایک زور کی کڑک نے آ لیا جب صبح ہوئی تو سب اپنے گھروں میں اوندھے پڑے ہوئے تھے (۶۷)

(और इस प्रकार वध हो गए) मानों उन घरों में कभी बसे ही न थे तो सुन रखो कि समूद ने अपने ईश्वर की अवज्ञा की और सुन लो समूद पर (ईश्वर की) फटकार है (68)

(اور اس طرح ہلاک ہو گئے) گویا ان گھروں میں کبھی بسے ہی نہ تھے تو سن رکھو کہ ثمود نے اپنے رب کی نافرمانی کی اور سن لو ثمود پر (اللہ کی) پھٹکار ہے (۶۸)

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्तें) इब्राहीम के पास शुभ सूचना लेकर आए तो सलाम कहा तो उन्होंने भी (उत्तर में) सलाम कहा थोड़ी ही देरे में इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आऐ (69)

اور ہمارے بھیجے ہوئے (فرشتے) ابراہیم کے پاس خوشخبری لے کر آئے تو سلام کہا تو انہوں نے بھی (جواب میں) سلام کہا تھوڑی ہی دیر میں ابراہیم ایک بھنا ہوا بچھڑا لے آئے (۶۹)

जब इब्राहीम ने देखा कि उनके हाथ भोजन की ओर बढ़ते ही नहीं उनको अपरिचित समझ कर मन में चिन्ता किया फ़रिश्तों ने कहा शंका न करो हम लूत की जाति की ओर भेजे गए हैं (70)

جب ابراہیم نے دیکھا کہ ان کے ہاتھ کھانے کی طرف بڑھتے ہی نہیں تو ان کو اجنبی سمجھ کر دل میں اندیشہ کیا. فرشتوں نے کہا اندیشہ نہ کرو ہم قوم لوط کی طرف بھیجے گئے ہیں (۷۰)

इब्राहीम की पत्नी (सारह भी वहीं) खड़ी थी (जब उसे ज्ञात हुआ कि यह डाकू नहीं है अपितु फ़रिश्ते हैं) तो उनकी शंका दूर हो गयी और प्रसन्न हो गई और उनके मुख पर मुसकुराहट आ गई तोहम ने उसे अर्थात इब्राहीम की पत्नी को (अपने फ़रिश्तो के द्वारा) इस्हाक की और इस्हाक के बाद याकूब की शुभ सूचना दी (71) {51:29}

ابراہیم کی بیوی (سارہ بھی وہیں) کھڑی تھیں (جب اسے معلوم ہوا کہ یہ ڈاکو نہیں ہیں بلکہ فرشتے ہیں) تو ان کا ڈر دور ہو گیا اور خوش ہو گئیں اور ان کے چہرے پر مسکراہٹ آ گئی تو ہم نے اسے یعنی ابراہیم کی بیوی کو (اپنے فرشتوں کے ذریعہ) اسحاق کی اور اسحاق کے بعد یعقوب کی خوشخبری دی (۷۱) [۵۱:۲۹]

वह बोली ऐ हे! यह कैसे हो सकता है कि मेरे बच्चा उत्पन्न हो मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरा पति भी बूढ़ा है यह तो बड़ी विचित्र बात है (72)

وہ بولی اے ہے؟ یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ میرے بچہ پیدا ہو میں تو بڑھیا ہوں اور یہ میرا شوہر بھی بوڑھا ہے یہ تو بڑی عجیب بات ہے (۷۲)

उन्होंने कहा क्या तुम ईश्वर के निर्णय पर आश्चर्य करती हो? ऐ घर वालो! तुम पर ईश्वर की दया और उसकी सम्पन्नता हैं वह हर प्रकार की प्रशन्सा और महत्ता का अधिकारी है. (73) {27:7-49,28: 29, 29:32-33, 37:76}

انہوں نے کہا کیا تم اللہ کے فیصلہ پر تعجب کرتی ہو؟ اے اہل بیت تم پر اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں ہیں وہ ہر طرح کی تعریف اور بزرگی کا حق دار ہے (۷۳) [۲۷:۷-۴۹، ۲۸:۲۹، ۲۹:۳۲-۳۳، ۳۷:۷۶]

फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और (सन्तान की) शुभ सूचना भी मिल गई तो हमसे (अर्थात हमारे फ़रिश्तों से) जाति लूत के बारे में आग्रह करने लगा (ताकि उनसे कष्ट टल जाए (74)

پھر جب ابراہیم سے خوف دور ہو گیا اور (اولاد کی) خوش خبری بھی مل گئی تو ہم سے (یعنی ہمارے فرشتوں سے) قوم لوط کے بارے میں اصرار کرنے لگا (تا کہ ان سے عذاب ٹل جائے) (۷۴)

निःसंदेह इब्राहीम बड़े सहन शील कोमल हृदय वाले और प्रत्यागमन करने वाले थे (75)

بے شک ابراہیم بڑے تحمل والے نرم دل اور رجوع کرنے والے تھے (۷۵)

(फ़रिश्तों ने कहा) ऐ इब्राहीम इस बात को जाने दो वह तुम्हारे रब का आदेश कष्ट आ पहुंचा है और उन लोगों पर कष्ट आने वाला है जो कभी न टलेगा (76)

(فرشتوں نے کہا) اے ابراہیم اس بات کو جانے دو تمہارے رب کا حکم عذاب آ پہنچا ہے اور ان لوگوں پر عذاب آنے والا ہے جو کبھی نہیں ٹلے گا (۷۶)

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए तो वह उनके आने से प्रसन्न नहीं हुआ अपितु व्याकूल हो गया और कहने लगे कि आज का दिन बड़ी कठिनाई का दिन है (77)

اور جب ہمارے فرشتے لوط کے پاس آئے تو وہ ان کے آنے سے خوش نہیں ہوا بلکہ پریشان ہو گیا اور کہنے لگا کہ آج کا دن بڑی مشکل کا دن ہے (۷۷)

(जब लूत की जाति ने अतिथियों के आने की सूचना सुनी) तो लूत के पास दौड़ते हुए आए वह लोग पहले ही से बुरे कर्मों के अभ्यस्त हो रहे थे लूत ने उनसे कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! यह मेरी जाति की पुत्रीयां (जिन्हें तुमने छोड़ रखा है) तुम्हारे लिए पवित्र हैं (उनकी ओर आकृष्ट हो जाओ) ईश्वर से डरो और मेरे अतिथियों के विषय में मुझे अपमानित न करो क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं है? (78)

(جب لوط کی قوم نے مہمانوں کے آنے کی خبر سنی) تو لوط کے پاس دوڑتے ہوئے آئے وہ لوگ پہلے ہی سے بُرے کاموں کے عادی ہو رہے تھے. لوط نے ان سے کہا اے میری قوم کے لوگو! یہ میری (قوم کی) بیٹیاں (جنہیں تم نے چھوڑ رکھا ہے) تمہارے لئے پاک ہیں (ان کی طرف توجہ کرو) اللہ سے ڈرو اور میرے مہمانوں کے بارے میں مجھے رسوا نہ کرو کیا تم میں کوئی بھلا آدمی نہیں ہے؟ (۷۸)

उन लोगों ने कहा (ऐ लूत) तुझे अच्छी प्रकार ज्ञात है कि हमें तेरी (जाति की) पुत्रीयों से कोई सम्बन्ध नहीं और तू यह भी जानता है कि हमारा क्या संकल्प है (79) {15:72}

ان لوگوں نے کہا (اے لوط) تجھے اچھی طرح معلوم ہے کہ ہمیں تیری (قوم کی) بیٹیوں سے کوئی سروکار نہیں اور تو یہ بھی جانتا ہے کہ ہمارا کیا ارادہ ہے (۷۹) [۱۵:۷۲]

(जाति के इस बल प्रयोग को देख कर लूत ने कहा कि ऐ जाति क्या तुम यह समझ रहे हो कि) मुझमें तुम्हारे मुकाबले की शक्ति नहीं या कोई पुष्ट सहारा दुर्ग नहीं जिसकी शरण पकड़ लूं (तो तुम्हारा यह समझना अनुचित है मेरा सहायक ईश्वर है) (80) {37:171,172, 58:21}

(قوم کی اس سینہ زوری کو دیکھ لوط نے کہا کہ اے قوم کیا تم یہ سمجھ رہے ہو کہ) مجھ میں تمہارے مقابلہ کی طاقت نہیں یا کوئی مضبوط سہارا قلعہ نہیں جس کی پناہ پکڑلوں (تو تمہارا یہ سمجھنا غلط ہے میرا مددگار اللہ ہے) (۸۰) [۳۷:۱۷۱،۱۷۲، ۵۸:۲۱]

फरिश्तों ने कहा लूत (भयभीत न हो) हम तुम्हारे रब के भेजे हुए फरिश्ते हैं तो वह लोग कदापि तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे तो कुछ रात रहे से अपने घर वालों को लेकर चल देना और तुम में से कोई पीछे फिर कर न देखे मगर हां तेरी पत्नी (वह पीछे रह जाएगी) और जो कष्ट उन लोगों पर पड़ने वाला है वह तेरी पत्नी पर भी पड़ेगी, उन पर कष्ट आने का समय प्रातः का है और क्या प्रातः कुछ दूर है (81)

فرشتوں نے کہا لوط (گھبراؤ نہیں) ہم تمہارے رب کے بھیجے ہوئے فرشتے ہیں تو وہ لوگ ہرگز تم تک نہیں پہنچ سکیں گے تو کچھ رات رہے سے اپنے گھر والوں کو لے کر چل دینا اور تم میں سے کوئی پیچھے پھر کر نہ دیکھے مگر ہاں تیری بیوی (وہ پیچھے رہ جائے گی) اور جو آفت ان لوگوں پر پڑنے والی ہے وہ تیری بیوی پر بھی پڑے گی. ان پر عذاب آنے کا وقت صبح کا ہے اور کیا صبح کچھ دور ہے (۸۱)

फिर जब हमारा कष्ट आ पहुंचा तो हमने उस नगरी की सम्पूर्ण उच्चतर को निम्नता में बदल दिया (अर्थात ऊंचे ऊंचे भवनों को गिराकर धरती के बराबर कर दिया) और उसमें आग के पके हुए पत्थर लगातार बरसाए (82)

پھر جب ہمارا عذاب آ پہنچا تو ہم نے اس بستی کی تمام بلندیاں پستی میں بدل دیں (یعنی اونچی اونچی عمارتیں گرا کر زمین کے برابر کر دیں) اور اس میں آگ کے پکے ہوئے پتھر لگاتار برسائے (۸۲)

जिन पर तुम्हारे ईश्वर के यहां से चिन्ह किए हुए थे, और वह (यातना आज भी अत्याचारियों से कुछ दूर नहीं (83)

جن پر تمہارے رب کے یہاں سے نشان کئے ہوئے تھے اور وہ (عذاب آج بھی) ظالموں سے کچھ (دور نہیں) (۸۳)

और हमने मद्यन वालों की ओर उनके भाई शुऐब अ० को प्रेषित किया उसने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! ईश्वर की बन्दगी करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं और नाप तोल में कमी न किया करो मैं देख रहा हूं कि तुम सम्पन्न लोग हो मैं डरता हूं कि कहीं तुम पर कष्ट का ऐसा दिन न आजाए जो तुम सबको घेर ले (84)

اور ہم نے مدین والوں کی طرف ان کے بھائی شعیبؑ کو بھیجا اس نے کہا اے میری قوم کے لوگو! اللہ کی بندگی کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں اور ناپ تول میں کمی نہ کیا کرو میں دیکھ رہا ہوں کہ تم خوش حال ہو میں ڈرتا ہوں کہ کہیں تم پر عذاب کا ایسا دن نہ آ جائے جو تم سب کو گھیر لے (۸۴)

ऐ मेरी जाति के लोगों! नाप और तोल न्याय के साथ पूरी किया करो और लोगों को उनकी वस्तुऐं कम न दिया करो और देश में अशान्ति फैलाते न फिरो (85)

اے میری قوم کے لوگو! ناپ اور تول انصاف کے ساتھ پوری پوری کیا کرو اور لوگوں کو ان کی چیزیں کم نہ دیا کرو اور ملک میں فساد پھیلاتے نہ پھرو (۸۵)

यदि तुम्हें मेरी बात का विश्वास हो तो ईश्वर का दिया हुआ व्यापार का लाभ ही तुम्हारे लिए उत्तम है (मैंने तुमको समझादिया अब यदि तुम नहीं मानते) तो मैं तुम पर रक्षक तो हूं नहीं (86) {11:116}

اگر تمہیں میری بات کا یقین ہو تو اللہ کا دیا ہوا تجارت کا نفع ہی تمہارے لئے بہتر ہے (میں نے تم کو سمجھا دیا اب اگر تم نہیں مانتے) تو میں تم پر نگہبان تو ہوں نہیں (۸۶) [۱۱:۱۱۶]

उन्होंने कहा शुऐब क्या तुम्हारी सलात अर्थात तुम्हारे जीवन व्यतीत करने की विधि धर्म जीवन व्यतीत करने की शैली तुम्हें यह सिखाते हैं आदेश देते हैं कि जिन देवताओं को हमारे पूर्वज पूजते

انہوں نے کہا شعیب کیا تمہاری صلوٰۃ یعنی تمہارا زندگی گزارنے کا طریقہ دین ضابطہ حیات تمہیں یہ سکھاتا ہے

चले आए हैं हम उन्हें छोड़ दें या यह कि हमें इतना भी अधिकार नही कि अपनी सम्पत्ति में जिस प्रकार चाहें व्यवहार करें? तो क्या तुमही एक कोमल हृदय और सत्य वादी व्यक्ति रह गए हो? (८७)

नोट- इस आयत पर विवेचना आयत 9:5 पर लिखी गई है और कुछ यहां भी लिख रहा हूं आयत में शब्द सलात आया है इसका एक अर्थ तो वह नमाज़ है जो हम प्रतिदिन पांच समय पढ़ते हैं, और यही नमाज़ व्यक्ति को जीवन में ईश्वर के नियमों के पालन की प्रेरणा देती है यदि व्यक्ति होश में आकर नमाज़ पढ़े निःसंदेह सलात अनुचित कर्मों से रोकती है और इस नियम को जीवन व्यतीत करने का विधान कहते हैं और इसी जीवन विधान के बारे में उन अत्याचारियों ने महा महिन से कहा था कि क्या तेरा जीवन का विधान धर्म हम को मन मानी करने से रोक रहा है, हम तो यह जान रहे थे कि तेरी सलात धर्म केवल पूजा की सीमा तक है, परन्तु अब तो ज्ञात हुआ कि यह सलात धर्म तो जीवन के हर कोण पर व्याप्त है अतः तेरी व्यवस्था को मानना कठिन दीख रहा है हम नही मानते.

حکم دیتا ہے کہ جن معبودوں کو ہمارے بزرگ پوجتے چلے آئے ہیں ہم انہیں چھوڑ دیں یا یہ کہ ہمیں اتنا بھی اختیار نہیں کہ اپنے مال میں جس طرح چاہیں تصرف کریں؟ تو کیا تم ہی ایک نرم دل اور راست باز انسان رہ گئے ہو؟ (۸۷)

اس آیت پر بحث (۹:۵) پر لکھی گئی ہے اور کچھ یہاں بھی لکھ رہا ہوں۔

نوٹ:۔ آیت میں لفظ صلوٰۃ آیا ہے اس کا ایک مطلب تو وہ نماز ہے جو ہم روز پانچ وقت پڑھتے ہیں اور یہی نماز آدمی کو زندگی میں اللہ کے قانون کی پابندی کی ترغیب دیتی ہے اگر آدمی ہوش میں آ کر نماز پڑھے بے شک صلوٰۃ بُرے کاموں سے روکتی ہے۔ اور اس قانون کو ضابطہ حیات کہتے ہیں۔ اور اسی ضابطہ حیات کے بارے میں ان ظالموں نے حضرت سے کہا تھا کہ کیا تیرا ضابطہ حیات صلوٰۃ دین ہم کو من مانی کرنے سے روک رہا ہے۔ ہم تو یہ جان رہے تھے یہ تیری صلوٰۃ دین صرف عبادت کی حد تک ہے مگر اب تو معلوم ہوا کہ یہ صلوٰۃ دین تو زندگی کے ہر گوشے پر حاوی ہے اس لئے تیرے نظام کو ماننا مشکل نظر آ رہا ہے ہم نہیں مانتے۔

शुऐब ने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! देखो यदि मैं अपने रब की ओर से उज्जवल तर्क पर हूं और वह मुझे अच्छी जीविका या जीवन व्यतीत करने का अच्छा नियम दे रहा है तो मैं यह नही चाहता कि जिस बात से तुम्हें रोकूं स्वंय वही करने लगूं मैं इसके सिवा कुछ नही चाहता कि जहां तक मेरे बश में हो तुम्हारे सुधार का प्रयत्न करूं और मुझे क्षमता का मिलना ईश्वर ही से है मैं उस पर भरोसा रखता हूं और उसी के नियम की ओर प्रत्यागमन करता हूं (८८)

شعیب نے کہا اے میری قوم کے لوگو! دیکھو اگر میں اپنے رب کی طرف سے روشن دلیل پر ہوں اور وہ مجھے اچھی سے اچھی روزی یا زندگی گذارنے کا احسن ضابطہ دے رہا ہے تو میں یہ نہیں چاہتا کہ جس بات سے تمہیں روکوں خود وہی کرنے لگوں میں اس کے سوا کچھ نہیں چاہتا کہ جہاں تک میرے بس میں ہو تمہاری اصلاح کی کوشش کروں اور مجھے توفیق کا ملنا اللہ ہی سے ہے میں اسی پر بھروسہ رکھتا ہوں اور اسی کے قانون کی طرف رجوع کرتا ہوں (۸۸)

ऐ मेरी जाति! मेरी शत्रुता कही तुम्हें ऐसे कार्य पर तत्पर न कर दे कि वैसी ही आपदा में बन्दी हो जाओ जैसी आपदा जाति नूह जाति हूद या जाति सालेह पर पहुंच चुकी है, और जाति लूत (की बरबादी का समय तो) तुमसे कुछ ऐसा दूर नही (८९)
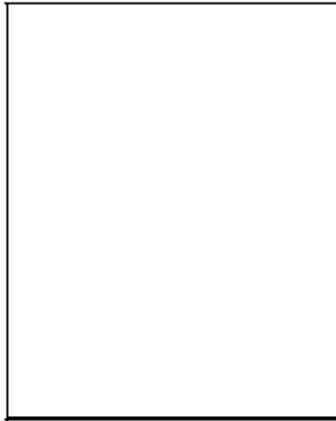
اے میری قوم! میری دشمنی کہیں تمہیں ایسے کام پر نہ آمادہ کردے کہ ویسی ہی مصیبت میں گرفتار ہو جاؤ جیسی مصیبتیں قوم نوح، قوم ہود، یا قوم صالح پر پڑ چکی ہیں۔ اور قوم لوط (کی تباہی کا زمانہ تو) تم سے کچھ ایسا دور نہیں (۸۹)

अतः अपने ईश्वर से क्षमा मांगो उसके आगे पश्चाताप करो, निःसंदेह मेरा रब दया करने वाला और बड़ा स्नेह करने वाला है (९०)

لہٰذا اپنے رب سے معافی مانگو اس کے آگے توبہ کرو بے شک میرا رب رحم کرنے والا اور بڑی محبت کرنے والا ہے (۹۰)

उन लोगों ने कहा ऐ शुऐब तुम जो कुछ कहते हो उसमें से अधिकांश बाते तो हमारी समझ ही में नही आती, और हम यह भी देख रहे हैं कि तुम हममें निर्बल आदमी हो यदि तुम्हारी जाति का (भय) न होता तो हम तुम्हें शिलाओं से मारते और हमारे सामने तुम्हारा कोई मान नही(९१)

ان لوگوں نے کہا اے شعیب! تم جو کچھ کہتے ہو اس میں سے اکثر باتیں تو ہماری سمجھ ہی میں نہیں آتیں اور ہم یہ بھی دیکھ رہے ہیں کہ تم ہم میں کمزور آدمی ہو۔ اگر تمہاری برادری کا (ڈر) نہ ہوتا تو ہم تمہیں سنگسار کر دیتے اور ہمارے مقابلہ میں تمہاری کوئی حیثیت نہیں (۹۱)

शुऐब ने कहा हे मेरी जाति! क्या तुम पर ईश्वर से बढ़कर मेरी जाति का दबाऊ है? और तुम्हारे समीप ईश्वर का कोई मान ही न रहा कि उसे पीठ पीछे डाल दिया याद रखो जो कुछ तुम कर रहे हो वह मेरे रब के ज्ञान से बाहर नही है (९२)

شعیب نے کہا اے میری قوم! کیا تم پر اللہ سے بڑھ کر میری برادری کا دباؤ ہے؟ اور تمہارے نزدیک اللہ کی کوئی حیثیت ہی نہ رہی کہ اسے پیٹھ پیچھے ڈال دیا۔ یاد رکھو جو کچھ تم کر رہے ہو وہ میرے رب (کے علم) سے باہر نہیں ہے (۹۲)

ऐ जाति! तुम अपने स्थान पर कार्य किये जाओ मैं अपने स्थान पर कार्य कर रहा हूं तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा कि अपमानित करने वाला कष्ट किस पर आता है और झूठा कौन है? तुम भी प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूं (९३)

اے قوم! تم اپنی جگہ پر کام کئے جاؤ میں اپنی جگہ پر کام کر رہا ہوں تمہیں جلد ہی معلوم ہو جائے گا کہ رسوا کرنے والا عذاب کس پر آتا ہے اور جھوٹا کون ہے؟ تم بھی انتظار کرو میں بھی تمہارے ساتھ انتظار کرتا ہوں (۹۳)

फिर जब हमारा आदेश (कष्ट आया तो हमने

پھر جب ہمارا فرمان (عذاب) آیا تو ہم نے اپنی رحمت

अपनी दया से शुऐब को और उन लोगों को जो उनके साथ विश्वास लाए थे बचा लिया और जो लोग अत्याचारी थे उन्हें धमाके की ध्वनी ने आ पकड़ा तो वह प्रातः को अपने घरों में औंधे पड़े रह गए (94)

मानों उन घरों में कभी बसे ही न थे सुन रखो मद्यन पर ऐसी फटकार पड़ी जैसी समूद पर पड़ी थी (और आगे को भी हर अवज्ञाकारी पर ऐसी ही पड़ेगी) (95)

और यह सत्य है कि मूसा को हमने अपने चिन्हों और अपने उज्जवल प्रमाण के साथ भेजा था (96)

फ़िरऔन और उसके नेताओं की ओर परन्तु वह फ़िरऔन ही के आदेश पर चले और फ़िरऔन का आदेश उचित न था (97)

वह महाप्रलय के दिन अपनी जाति के आगे आगे चलेगा और उनको नर्क में जा उतारेगा और वह बहुत ही बुरी जगह है जहां वह उतारे जाऐंगे (98)

इस दुनिया में भी उनके पीछे धिक्कार लगा दी गई और प्रलय के दिन भी जो पुरुस्कार उनको मिलेगा वह बुरा है (99)

(ऐ रसूल!) यह प्राचीन नगरों में से कुछ के समाचार हैं जो हम आपसे वर्णन कर रहे हैं उनमें से कुछ तो शेष हैं और कुछ का विनष्ट हो गया (100)

और हमने उन पर अन्याय नहीं किया अपितु उन्होंने स्वंय अपने ऊपर अन्याय किया अतः जब तेरे रब का आदेश कष्ट आ पहुंचा तो जिन देवताओ को वह ईश्वर के सिवा पुकारा करते थे कुछ भी काम न आए और विनाश के सिवा और किसी प्रकार का लाभ न पहुंचा सके (101)

और तेरे रब के नियम की पकड़ ऐसी ही (कठोर) होती है, जब वह अत्याचार करने वाले नगरों को पकड़ता है निःसंदेह उसकी पकड़ बड़ी पीड़ा देने वाली और कठोर है (102)

इन कथाओ में उस व्यक्ति के लिए बड़ी ही शिक्षा है जो प्रलोक के कष्ट से डरता है यह वह दिन होगा जब सम्पूर्ण व्यक्ति संग्रह किए जाएंगे और वही वह दिन होगा जिसमें सब ईश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएंगे. (103)

और हम उसके लाने में एक निश्चित समय तक देर कर रहें हैं. (104)

जब वह दिन आजाएगा तो किसी व्यक्ति का यह साहस न होगा कि ईश्वर की आज्ञा के बिना बोल सके. फिर उनमें से कुछ दुर्भाग्य वाले होंगे और कुछ शुभ भाग्य वाले. (105) {21:27}

तो जो दूर भाग्य वाले होंगे वह नर्क में डाल दिए जाएंगे उसमें उनको चिल्लाना और धाड़ना होगा (106)

जब तक आकाश और पृथ्वी स्थापित है वह लोग उसी में रहेंगे. निःसंदेह तेरे रब का नियम जो चाहता है करता है (अर्थात तेरे रब का नियम यही चाहता है कि पापी सदैव नर्क में रहेंगे) निःसंदेह

سے شعیب کو اور ان لوگوں کو جو ان کے ساتھ ایمان لائے تھے بچا لیا اور جو لوگ ظالم تھے انہیں دھماکے کی آواز نے آ پکڑا تو وہ صبح کو اپنے گھروں میں اوندھے پڑے رہ گئے (۹۴)

گویا ان گھروں میں کبھی بسے ہی نہ تھے تو سن رکھو مدین پر ایسی پھٹکار پڑی جیسی ثمود پر پڑی تھی (اور آگے کو بھی ہر نافرمان پر ایسی ہی پڑے گی) (۹۵)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیاں اور روشن دلیل کے ساتھ بھیجا تھا (۹۶)

فرعون اور اس کے سرداروں کی طرف مگر وہ فرعون ہی کے حکم پر چلے اور فرعون کا حکم درست نہ تھا (۹۷)

وہ قیامت کے دن اپنی قوم کے آگے آگے چلے گا اور ان کو دوزخ میں جا اتارے گا اور وہ بہت ہی بُری جگہ ہے جہاں وہ اتارے جائیں گے (۹۸)

اس دنیا میں بھی ان کے پیچھے لعنت لگا دی گئی اور قیامت کے دن بھی جو انعام ان کو ملے گا وہ بُرا ہے (۹۹)

(اے رسول!) یہ پُرانی بستیوں میں سے چند کے حالات ہیں جو ہم آپ سے بیان کر رہے ہیں ان میں سے کچھ تو باقی ہیں اور کچھ کا تہس نہس ہو گیا (۱۰۰)

اور ہم نے ان پر ظلم نہیں کیا بلکہ انہوں نے خود اپنے اوپر ظلم کیا چنانچہ جب تیرے رب کا حکم عذاب آ پہنچا تو جن معبودوں کو وہ اللہ کے سوا پکارا کرتے تھے کچھ بھی کام نہ آئے اور ہلاکت کے سوا اور کسی طرح کا فائدہ نہ پہنچا سکے (۱۰۱)

اور تیرے رب کے قانون کی پکڑ ایسی ہی (سخت) ہوتی ہے جب وہ ظلم کرنے والی آبادیوں کو پکڑتا ہے بے شک اس کی پکڑ بڑی دردناک اور بڑی سخت ہے (۱۰۲)

ان واقعات میں اس شخص کے لئے بڑی ہی عبرت ہے جو آخرت کے عذاب سے ڈرتا ہے. یہ وہ دن ہوگا جب تمام انسان جمع کئے جائیں گے اور وہی وہ دن ہوگا جس میں سب (اللہ کے سامنے) حاضر کئے جائیں گے (۱۰۳)

اور ہم اس کے لانے میں ایک وقت مقرر تک تاخیر کر رہے ہیں (۱۰۴)

جب وہ دن آجائے گا تو کسی انسان کی یہ مجال نہ ہوگی کہ اللہ کی اجازت کے بغیر بول سکے پھر ان میں سے کچھ بد بخت ہوں گے اور کچھ نیک بخت (۱۰۵) [۲۱:۲۷]

تو جو بد بخت ہوں گے وہ دوزخ میں ڈال دیے جائیں گے اس میں ان کو چلانا اور دھاڑنا ہوگا (۱۰۶)

<u>جب تک آسمان اور زمین قائم ہیں وہ لوگ اسی میں رہیں گے یقیناً تیرے رب کا قانون جو چاہتا ہے کرتا ہے (یعنی تیرے رب کا قانون یہی چاہتا ہے کہ گناہ گار ہمیشہ دوزخ میں رہیں گے) بے شک</u>

तेरा रब पूरा अधिकार रखता है जो चाहे करे (निर्धारित नियामानुसार) (107) {6:128}

تیرارب پورااختیاررکھتا ہے جو چاہے کرے(مقررہ قانون کے مطابق)(۱۰۷)[۶:۱۲۸]

रहे वह लोग जो शुभ भाग्य वाले होंगे तो वह स्वर्ग में जाएंगे और वह वहां सदैव रहेंगे जब तक धरती व आकाश स्थापित है निःसंदेह तेरा रब जो चाहता है करता है (अर्थात तेरा रब यही चाहता है कि सदाचारी सदा स्वर्ग में रहेंगे) यह ऐसी दया होगी जिसका क्रम कभी समाप्त न होगा (न नर्क में जाने वाला नर्क से निकलेगा और न स्वर्ग में जाने वाला स्वर्ग से निकलेगा) (108) {87:6-7, 6:128, 12:31, 22:88, 39:68, 78:76}

رہےوہ لوگ جونیک بخت ہوں گےتووہ جنت میں جائیں گےاوروہ وہاں ہمیشہ رہیں گے جب تک زمین وآسمان قائم ہیں. یقیناً تیرارب جو چاہتا ہے کرتا ہے (یعنی تیرارب یہی چاہتا ہے کہ نیک بخت ہمیشہ ہمیشہ جنت میں رہیں گے) یہ ایسی بخشش ہوگی جس کا سلسلہ کبھی ختم نہ ہوگا(نہ دوزخ میں جانےوالا دوزخ سے نکلے گا اور نہ جنت میں جانے والا جنت سے نکلے گا (۱۰۸)[۸۷:۶-۷، ۶:۱۲۸؛ ۱۲:۳۱؛ ۲۲:۸۸؛ ۳۹:۶۸؛ ۷۸:۷۶]

नोट- प्रचलित अनुवादों में जो आयत 107,108 का अनुवाद किया है उससे यह मनोभाव मिलता है कि नर्क में जाने वाले वहां से निकल जाएंगे और ऐसे ही शब्द आयत 108 में लिख दिए हैं जिनसे प्रकट होता है कि स्वर्ग से भी निकाले जाएंगे मैंने जो समझा है वह ऊपर लिखा है विचार करो.

نوٹ:۔ رائج الوقت تراجم میں جوآیت ۱۰۷،۱۰۸ کا ترجمہ کیا ہےاس سے یہ تاثر ملتا ہے کہ دوزخ میں جانے والے وہاں سے نکل جائیں گے.اورایسے ہی الفاظ آیت ۱۰۸ میں لکھ دیے ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ جنت سے بھی نکالے جائیں گے میں نے جو سمجھا ہےوہ اوپر لکھا ہےغور کرو.

ऐ रसूल! वह लोग जो (ईश्वर के अतिरिक्त) की पूजा करते हैं उससे तुम भ्रम में न पड़ना वह (उसी प्रकार) पूजा करते हैं जिस प्रकार पहले उनके माता पिता पूर्वज पूजा करते आए हैं और हम उन को उनके कर्मों का अंश पूरा पूरा देने वाले हैं जिस में किसी प्रकार की कमी न होगी (109)

اےرسول!وہ لوگ جو(غیراللہ کی)پرستش کرتے ہیں اس سےتم شبہ میں نہ پڑنا.وہ(اسی طرح)پرستش کرتے ہیں جس طرح پہلےان کے باپ داداپرستش کرتے آئے ہیں اور ہم ان کوان کےاعمال کا حصہ پوراپورا دینے والے ہیں.جس میں کسی طرح کی کمی نہ ہوگی (۱۰۹)

और हमने मूसा अ० को पुस्तक दी तो उसमें विरोध किया गया और यदि तेरे ईश्वर की ओर से पहले से एक बात निश्चित न हो गई होती (अर्थात यह कि व्यक्ति को विचार व कर्म की स्वतंत्रता दी गई है जिसका परिणाम निश्चित समय से पहले प्रकट नही होता) तो उनके मध्य निर्णय कर दिया जाता और वह तो उससे बड़े भ्रम में पड़े हुए है (110)

اورہم نےموسیٰ کوکتاب دی تواس میں اختلاف کیا گیا. اوراگرتیرےرب کی طرف سے پہلے سےایک بات طے نہ ہوگئی ہوتی (یعنی یہ کہ انسان کوفکروعمل کی آزادی دی گئی ہےجس کا نتیجہ مقررہ وقت سے پہلے ظاہرنہیں ہوتا) توان کے درمیان فیصلہ کردیا جاتا اوروہ تواس سے بڑےشبہ میں پڑےہوئے ہیں(۱۱۰)

और विश्वास करो कि समय आने पर तेरा रब उनका पूरा पूरा बदला देगा. निःसंदेह जो कर्म वह करते हैं वह उससे अवगत है (111)

اوریقین کروکہ وقت آنےپرتیرارب ان کاپوراپورابدلہ دےگا بےشک جوعمل وہ کرتے ہیں وہ اس سے واقف ہے(۱۱۱)

सोऐ नबी! जिस बात का आपको आदेश होता है उस पर तुम जमे रहो और वह भी जो पश्चातापी होकर आपके साथ हो गए हैं अर्थात आपके धर्म पर आगाए हैं स्थापित रहें और वह सीमा से आगे न बढ़े निःसंदेह वह तुम्हारे सब कर्मों को देख रहा है (112)

سواےنبی!جس بات کا تمہیں حکم ہوتا ہےاس پرتم جمے رہواوروہ لوگ بھی جوتائب ہوکرتمہارےساتھ ہو گئے ہیں یعنی آپ کے دین پرآگئے ہیں قائم رہیں اوروہ حد سے آگے نہ بڑھیں.بےشک وہ تمہارےسب اعمال کودیکھ رہا ہے(۱۱۲)

और जो लोग (अवज्ञा करके अपने ऊपर) अन्याय कर रहें हैं उनकी ओर आकृष्ट न होना ऐसा न हो कि कहीं आपको भी आग छू जाए और ईश्वर के सिवा तुम्हारे मित्र नहीं हैं फिर (उससे पृथक होकर) कहीं से तुम सहायता न पाओगे (113)

اور جولوگ(نافرمانی کرکےاپنےاوپر)ظلم کررہے ہیں ان کی طرف مائل نہ ہونا.ایسا نہ ہوکہ کہیں آپ کوبھی آگ چھوجائے اوراللہ کےسواتمہارےدوست نہیں ہیں پھر (اس سےالگ ہوکر) کہیں سےتم مدد نہ پاؤ گے(۱۱۳)

और दिन के दोनों किनारों (अर्थात प्रातः और सांय के समय में) और रात्री के कुछ (पहले) भाग में नमाज़ पढ़ा करो. कुछ शंका नहीं कि शुभ कर्म (मानव को) पापों से दूर कर देते हैं रोक देते हैं यह उनके लिए शिक्षा है जो आदेश स्वीकार करते हैं (114)

اوردن کے دونوں کناروں (یعنی صبح اورشام کے اوقات میں)اوررات کی چند(پہلی)ساعات میں نمازپڑھا کرو. کچھ شک نہیں کہ نیکیاں (انسان کو) گناہوں سے دور کردیتی ہیں روک دیتی ہیں یہ ان کے لئے نصیحت ہےجونصیحت قبول کرتے ہیں(۱۱۴)

और (सत्य मार्ग में जो कष्ट आएं) धैर्य व दृढ़ता से उनका सामना करो (तुम उसका प्रतिदान पाओगे) ईश्वर सदाचारियों का प्रतिदान नष्ट नहीं करता. (115)

اور(راہ حق میں جومصیبتیں آئیں)صبرواستقلال سےان کامقابلہ کرو(تم اس کا اجرپاؤگے)اللہ نیک کرداروں کا اجرضائع نہیں کرتا(۱۱۵)

फिर ऐसा क्यों न हुआ कि जो जातियां तुमसे पहले हो चुकी हैं उनमें से कुछ ऐसे समझदार और इमानदार भी होते जो लोगों को देश में अशान्ति उत्पन्न करने से रोकते, परन्तु ऐसे बहुत कम थे जिनको हमने उनमें से बचा लिया था और जो उत्पाचारी थे वह उन्हीं बातों के पीछे लगे रहे जिनमें विलास व सुख था और वह पापों में डुबे हुए थे, (116)

پھر ایسا کیوں نہ ہوا کہ جو قومیں تم سے پہلے گزر چکی ہیں ان میں سے کچھ ایسے سمجھدار اور ایماندار بھی ہوتے جو لوگوں کو ملک میں فساد برپا کرنے سے روکتے لیکن ایسے بہت کم تھے جن کو ہم نے ان میں سے بچالیا تھا۔اور جو ظالم تھے وہ اپنی باتوں کے پیچھے لگے رہے جن میں عیش وآرام تھا اور وہ گناہوں میں ڈوبے ہوئے تھے(۱۱۶)

और आप का रब ऐसा नही है कि नगरों को नष्ट करें जबकि वहां के निवासी सदाचारी हो, (117)

اور آپ کا رب ایسا نہیں ہے کہ بستیوں کو ہلاک کرے جب کہ وہاں کے باشندے نیک ہوں(۱۱۷)

यदि आप का ईश्वर चाहता तो सम्पूर्ण व्यक्तियों को एक दल बना देता (और दुनिया में विभिन्न दल न होते परन्तु ईश्वर ने हर व्यक्ति को बुद्धि दे कर स्वतंत्र कर दिया है जो चाहे करे ईश्वर किसी को सदाचारी व दूराचारी नही बनाता यदि ऐसा होता तो ईश्वर अत्याचारी माना जाता परन्तु ईश्वर न्यायी है उसने सबको छूट दी है जो जिसका मन चाहे करे परिणाम आजाएगा) परन्तु वह सदैव मत भेद करते रहेंगे (अत्याचारी यही करते हैं) (118) {10:108, 41:40, 37:92,39:41,18:29, 73:19,76:29}

اگر تیرا رب چاہتا تو تمام انسانوں کو ایک امت بنا دیتا (اور دنیا میں مختلف فرقے نہ ہوتے لیکن اللہ نے ہر آدمی کو عقل دے کر آزاد کردیا ہے جو چاہے کرے اللہ کسی کو زبردستی نیک و بد نہیں بناتا ۔اگر ایسا ہوتا تو اللہ ظالم مانا جاتا لیکن اللہ عادل ہے اس نے سب کو چھوٹ دی ہے جو جس کا دل چاہے کرے نتیجہ آجائے گا) لیکن وہ ہمیشہ اختلاف کرتے رہیں گے (ظالم یہی کرتے ہیں) (۱۱۸) [۱۰:۱۰۸، ۴۱:۴۰، ۳۷:۹۲، ۳۹:۴۱، ۱۸:۲۹، ۷۳:۱۹، ۷۶:۲۹]

परन्तु वह लोग जिन पर तेरे ईश्वर की अनुकंपा होगी (वह मत भेद न करेंगे) और ईश्वर ने इसी लिए उनको उत्पन्न किया है, अतः आपके रब का यह आदेश पूरा होगा कि मैं उन सम्पूर्ण जिन्नों और इन्सानों से नर्क को भर दूंगा (जो पापों में डूबे हुए थे और मत भेद करते थे (119)

مگر وہ لوگ جن پر تیرے رب کا کرم ہوگا (وہ اختلاف نہ کریں گے) اور اللہ نے اسی لئے ان کو پیدا کیا ہے. چنانچہ تیرے رب کا یہ فرمان پورا ہوگا کہ میں ان تمام جنوں اور انسانوں سے جہنم کو بھر دوں گا (جو گناہوں میں ڈوبے ہوئے تھے اور اختلاف کرتے تھے)(۱۱۹)

और ईशदूतों के वह सब समाचार जो हम तुमसे वर्णन करते हैं उनसे हम आपके हृदय को स्थिर रखते हैं और इन समाचारों में तुम्हारे पास सत्य पहुंच गया और आस्तिकों के लिए शिक्षा और उपदेश है (120) {14:37,22:46, 25:32,33:4}

اور رسولوں کے وہ سب حالات جو ہم تم سے بیان کرتے ہیں ان سے ہم تمہارے دل کو قائم رکھتے ہیں اور ان حالات میں تمہارے پاس حق پہنچ گیا اور مومنوں کے لئے نصیحت اور عبرت ہے(۱۲۰)[۱۴:۳۷، ۲۲:۴۶، ۲۵:۳۲، ۳۳:۴]

और जो लोग विश्वास नही लाते उनसे कहदो कि तुम अपने स्थान पर कर्म किए जाओ हम अपने स्थान पर कर्म किए जाते हैं (121)

और परिणाम की तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी प्रतीक्षा करते हैं (122)

और आकाशों और पृथ्वी की गुप्त वस्तुओं का ज्ञान ईश्वर ही को है और सम्पूर्ण कर्मों का प्रत्यागमन उसी की ओर है तो उसीकी पूजा करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम कर रहें हो तुम्हारा ईश्वर उससे अनभिज्ञ नही (तुम्हारा कर्म एक दिन तुम्हारे सामने आएगा, (123)

اور جو لوگ ایمان نہیں لاتے ان سے کہدو کہ تم اپنی جگہ پر عمل کئے جاؤ ہم اپنی جگہ پر عمل کئے جاتے ہیں(۱۲۱)

اور نتیجہ کا تم بھی انتظار کرو ہم بھی انتظار کرتے ہیں(۱۲۲)

اور آسمانوں اور زمین کی چھپی چیزوں کا علم اللہ ہی کو ہے اور تمام امور کا رجوع اسی کی طرف ہے تو اسی کی عبادت کرو اور اسی پر بھروسہ رکھو اور جو کچھ تم کر رہے ہو تمہارا رب اس سے بے خبر نہیں (تمہارا عمل ایک دن تمہارے سامنے آئے گا)(۱۲۳)

सूरत यूसुफ (12) मक्की

سورت یوسف (۱۲) مکی

बिस्मिल्ला हिर्रहमां निर्रहीम

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स०! यह उज्ज्वल और स्पष्ट पुस्तक की आयतें हैं (1)

हमने इस कुरआन को अरबी में अवतरित किया है ताकि तुम समझ सको (2)

(ऐ रसूल!) इस कुरआन के द्वारा जिसे हमने आप पर अवतरित क्या है आपको एक अच्छी उत्तम कथा सुनाते हैं यद्यपि इससे पहले आप इस कथा से अनभिज्ञ थे (3) {39:23}

जब यूसुफ ने अपने पिता से कहा पिता मैंने स्वप्न

اے محمدؐ! یہ روشن اور واضح کتاب کی آیتیں ہیں(۱)

ہم نے اس قرآن کو عربی میں نازل کیا ہے تاکہ تم سمجھ سکو(۲)

(اے رسول!) اس قرآن کے ذریعہ جسے ہم نے آپ پر نازل کیا ہے آپ کو ایک بہترین قصہ سناتے ہیں حالانکہ اس سے پہلے آپ اس قصہ سے بے خبر تھے(۳)[۳۹:۲۳]

جب یوسف نے اپنے باپ سے کہا ابا جان! میں نے

में ग्यारह नक्षत्र और सूर्य और चन्द्रमा को देखा है और ऐसा देखता हूं कि मानों वह मुझे सजदा कर रहें हो अर्थात मेरी आज्ञापालन कर रहे हो (4)

पिता ने कहा हे पुत्र! अपने स्वपन का वर्णन अपने भाईयों से न करना (अन्यथा वह शैतान के बहकाने से) तेरे विरुद्ध छल कपट की चाल चलेंगे, और यह सत्य है कि शैतान मानव का खुला शत्रु है (5)

और (इस स्वपन से यह समझ ले कि) इसी प्रकार आपका ईश्वर आपको (लोगों में) प्रमुख करेगा और बातों के समझने की शक्ति प्रदान करेगा (अर्थात इस सजदे का अर्थ क्या है) और तेरे ऊपर और याकूब की सन्तान पर अपनी निधि उसी भांति पूरी करेगा जिस प्रकार इससे पूर्व वह तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक पर कर चुका है, निःसंदेह तेरा ईश्वर ज्ञानी और नीतिज्ञ है (6) {12:22,100}

जिन लोगों ने यूसुफ और उसके भाईयों के बारे में (ईशदूत से) प्रश्न किया है उसके लिए इस कथा में (शोच के लिए) बड़े ही चिन्ह है (7)

जब यूसुफ के भाईयों ने वार्तालाप की कि हमारे पिता को यूसुफ और उसका भाई हमसे अधिक प्रिय है यद्यपि हमारा पूरा दल है निःसंदेह हमारे पिता खुली त्रुटि पर है (8)

(तो ऐसा करो कि) यूसुफ को मार डाले, या किसी देश में फेंक आए तो हमारे पिता का पूरा ध्यान हमारी ओर हो जाएगा और इसके बाद (पिता की दया से) हमारे कार्य ठीक होजाएंगे और हम अच्छे हो जाएंगे (9)

उनमें से एक कहने वाले ने कहा यूसुफ को वध न करो, (अर्थ तो यह है कि वह पिता के पास से हट जाए अतः) यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी अंधे कूप में डाल दो (ताकि) कोई आता जाता यात्री दल उसे निकाल ले जाए (10)

(इस परामर्श के बाद सबके सब पिता के पास आए और) कहने लगे पिताजी! क्या कारण है कि आप यूसुफ के विषय में हमारा विश्वास नही करते यद्यपि हम उसके सच्चे शुभ चिंतक है (11)

कल हमारे साथ उसे जंगल में जाने दीजिए कि खाए पिए खेले कूदे और हम इसके रक्षक है (12)

उन्होंने कहा मुझे इस कल्पना से कष्ट होता है कि तुम उसे अपने साथ ले जाओ और मुझे चिंता है कही तुम उससे अचेत हो जाओ और उसे भेड़िया खा जाए (13)

वह कहने लगे कि यदि हमारी उपस्थिति में कि हम एक शक्ति शाली दल है उसे भेड़या खा गया तो हम बड़े हानी में पड़ गए (14)

(संक्षिप्त यह कि याकूब ने यूसुफ को उसके भाईयों के साथ जाने की आज्ञा दे दी) अतः जब वह लोग उसको ले गए और सबने इस बात पर सहभाति

خواب میں گیارہ ستارے اور سورج اور چاند کو دیکھا ہے اور ایسا دیکھتا ہوں کہ گویا وہ مجھے سجدہ کر رہے ہیں (یعنی میری فرمانبرداری کرر ہے ہوں)(۴)

باپ نے کہا اے بیٹا! اپنے خواب کا ذکر اپنے بھائیوں سے نہ کرنا (ورنہ وہ شیطان کے ورغلانے سے) تیرے خلاف مکروفریب کی چال چلیں گے، اور یہ حقیقت ہے کہ شیطان انسان کا کھلا دشمن ہے (۵)

اور (اس خواب سے یہ سمجھ لو کہ) اسی طرح آپ کا پروردگار آپ کو (لوگوں میں) ممتاز کرے گا اور باتوں کے سمجھنے کی توفیق دے گا (یعنی اس سجدے کا مطلب کیا ہے) اور تیرے اوپر اور آل یعقوب پر اپنی نعمت اُسی طرح پوری کرے گا جس طرح اس سے پہلے وہ تیرے بزرگوں ابراہیم اور اسحاق پر کر چکا ہے، یقیناً تیرا رب علیم اور حکیم ہے (۶) [۱۰۰،۲۲:۱۲]

جن لوگوں نے یوسف اور اس کے بھائیوں کے بارے میں (رسول سے) سوال کیا ہے ان کے لئے اس قصہ میں (عبرت کے لئے) بڑی ہی نشانیاں ہیں (۷)

جب یوسف کے بھائیوں نے گفتگو کی کہ ہمارے باپ کو یوسف اور اس کا بھائی ہم سے زیادہ پیارے ہیں حالانکہ ہم ایک طاقت ور جماعت ہیں یقیناً ہمارے باپ صریح غلطی پر ہیں (۸)

(تو ایسا کریں کہ) یوسف کو مار ڈالیں. یا کسی ملک میں پھینک آئیں تو ہمارے باپ کی ساری توجہ ہماری طرف ہوجائے گی اور اس کے بعد (باپ کی توجہ سے) ہمارے معاملات درست ہوجائیں گے اور ہم اچھے ہوجائیں گے (۹)

ان میں سے ایک کہنے والے نے کہا یوسف کو قتل مت کرو. (مطلب تو یہ ہے کہ وہ باپ کے پاس سے ہٹ جائے لہٰذا) اگر تمہیں کچھ کرنا ہی ہے تو اسے کسی اندھے کوئیں میں ڈال دو (تاکہ) کوئی آتا جاتا قافلہ اسے نکال لے جائے (۱۰)

(اس مشورے کے بعد سب کے سب باپ کے پاس آئے اور) کہنے لگے اباجان! کیا سبب ہے کہ آپ یوسف کے بارے میں ہمارا اعتبار نہیں کرتے حالانکہ ہم اس کے سچے خیر خواہ ہیں (۱۱)

کل ہمارے ساتھ اسے جنگل میں جانے دیجئے کہ کھائے پیئے کھیلے کودے اور ہم اس کے محافظ ہیں (۱۲)

انہوں نے کہا مجھے اس خیال سے تکلیف ہوتی ہے کہ تم اسے اپنے ساتھ لے جاؤ اور مجھے اندیشہ ہے کہیں تم اس سے غافل ہوجاؤ اور اسے بھیڑیا کھا جائے (۱۳)

وہ کہنے لگے کہ اگر ہماری موجودگی میں کہ ہم ایک طاقت ور جماعت ہیں اسے بھیڑیا کھا گیا تو ہم بڑے نقصان میں پڑ گئے (۱۴)

(مختصر یہ کہ یعقوب نے یوسف کو اس کے بھائیوں کے ساتھ جانے کی اجازت دے دی) چنانچہ جب وہ لوگ

कर ली कि यूसुफ को अंधे कूप में डाल दें (और उन्होंने अपनी योजना के अनुसार उसको कूप में डाल दिया) तो हमने यूसुफ की ओर वही प्रेषित की (हताश न हो, यह कष्ट कुछ दिन है, एक समय ऐसा भी आने वाला है जब) तू तुम्हें इस (अन्याय पूर्ण) व्यवहार से अवगत करेगा (अभी) उन्हें इसका विवेक नही अचेतना में है (कि क्या होने वाला है (15)

اس کو لے گئے اور سب نے اس بات پر اتفاق کرلیا کہ یوسف کو اندھے کنویں مین ڈال دیں (اورانہوں نے اپنی اسکیم کے مطابق اس کو کنویں میں ڈال دیا) تو ہم نے یوسف کی طرف وحی بھیجی کہ (مایوس نہ ہو، یہ مصیبت چند روز ہے ایک وقت ایسا بھی آنے والا ہے جب) تو انہیں اس (ظالمانہ) سلوک سے آگاہ کرے گا (ابھی) انہیں اس کا شعور نہیں غفلت میں ہیں (کہ کیا ہونے والا ہے) (۱۵)

यूसुफ को कूप में डालने के बाद) वह लोग रात्री के समय रोते पीटते पिता के पास आए (16)

(یوسف کو کنویں میں ڈالنے کے بعد) وہ لوگ رات کے وقت روتے پیٹتے باپ کے پاس آئے (۱۶)

और कहने लगे कि पिता जी! हम दोड़ की प्रतियोगिता में लग गए थे ओर यूसुफ को अपने सामग्री के पास छोड़ गए थे तो भेड़या (उधर से आ निकला और) यूसुफ को खा गया और (हम जानते हैं कि) आप हमारी बात का विश्वास न करेंगे चाहे हम सच्चे ही हों (17) {2:241, 7:24, 16:80}

(اور کہنے لگے کہ ابا جان! ہم دوڑ کے مقابلہ میں لگ گئے تھے اور یوسف کو اپنے سامان کے پاس چھوڑ گئے تھے تو بھیڑیا (ادھر سے آنکلا اور) یوسف کو کھا گیا اور (ہم جانتے ہیں کہ) آپ ہماری بات کا یقین نہ کریں گے چاہے ہم سچے ہی ہوں (۱۷) [۲:۲۴۱، ۷:۲۴، ۱۶:۸۰]

फिर अपनी बात को सिद्ध करने के लिए) वह यूसुफ के कुरते पर (किसी पशु का) लहू लगा कर लाए याकूब (कुरता देखते ही सब कुछ समझ गए और) बोले (नही ऐसा नही है) अपितु तुम अपने जी से यह बात बना लाए हो (अच्छा अब मेरे लिए इसके अतिरिक्त कोई उपाय नही है कि) धैर्य और धन्य वाद (के साथ इस कष्ट को सहन करू) और जो कुछ तुम कह रहे हो उसके प्रति ईश्वर से सहायता मांगू (18)

(پھر اپنی بات کو ثابت کرنے کے لئے) وہ یوسف کے کرتے پر (کسی جانور کا) خون لگا کر لائے یعقوب (کرتا دیکھتے ہی سب کچھ سمجھ گئے اور) بولے (نہیں ایسا نہیں ہے) بلکہ تم اپنے جی سے یہ بات گھڑھ کر لائے ہو (خیر! اب میرے لئے اس کے سوا کوئی چارہ کار نہیں ہے کہ) صبر وشکر (کے ساتھ اس مصیبت کو برداشت کروں) اور جو کچھ تم کہہ رہے ہو اس کے بارے میں اللہ سے مدد مانگوں (۱۸)

नोट- जो कुरता भाई लाए थे वह सुरक्षित था कही से फटा न था, यदि भेड़या खाता तो कुरता फटा होता अतः कुरते को देख कर याकूब ने जान लिया कि पुत्रों का कहना मिथ्या है ओर तब ही कहा कि तुम झूट बोल रहे हो, परन्तु मैं इसको ईश्वर को समर्पण करता हूं वही मेरी सहायता करेगा,

نوٹ:۔ جو کرتا بھائی لائے تھے وہ سالم تھا کہیں سے پھٹا نہ تھا، اگر بھیڑیا کھاتا تو کرتا پھٹا ہوتا، اس لئے کرتے کو دیکھ کر یعقوب نے سمجھ لیا کہ لڑکوں کا کہنا غلط ہے اور تب ہی کہا تم جھوٹ بول رہے ہو، مگر میں اس کو اللہ کے حوالہ کرتا ہوں وہی میری مدد کرے گا۔

(जिस कूप में यूसुफ को डाला गया था) उस पर एक यात्री दल आया, यात्री दल वालों ने पानी के लिए अपना पानी लाने वाला भेजा, उसने अपना डोल लटकाया (और यह विचार करके कि पानी भर गया उसने डोल ऊपर खीचने का निश्चय किया परन्तु डोल भारी था, क्योंकि यूसुफ ने पकड़ लिया था न खीचा गया तो सक्के ने जब देखा कि डोल से लड़का लटक रहा है) तो वह पुकार उठा वाह रे भाग्य! यह (कैसा सुन्दर) लड़का है फिर यात्री दल ने उसको छुपा लिय कि इसको कोई देख न ले) परन्तु वह लोग जो कुछ कर रहे थे ईश्वर को सब की सूचना दी (19)

(جس کنویں میں یوسف کو ڈالا گیا تھا) اس پر ایک قافلہ آیا، قافلہ والوں نے پانی کے لئے اپنا سقا بھیجا، اس نے اپنا ڈول لٹکایا (اور یہ خیال کر کے کہ پانی بھر گیا اس نے ڈول اوپر کھینچنے کا ارادہ کیا لیکن ڈول بھاری تھا کیوں کہ یوسف نے پکڑ لیا تھا نہ کھنچا گیا تو سقے نے جب دیکھا کہ ڈول میں لڑکا لٹک رہا ہے) تو وہ پکار اٹھا واہ رے قسمت! یہ (کیسا خوبصورت) لڑکا ہے پھر قافلہ والوں نے اس کو قیمتی سرمایہ سمجھ کر اسے چھپالیا (کہ اس کو کوئی دیکھ نہ لے) مگر وہ لوگ جو کچھ کررہے تھے اللہ کو سب کی خبر تھی (۱۹)

फिर उन्होंने यूसुफ को बहुत कम दामों पर (गिनती के कुछ दरहमों के बदले मिस्र में) बेच डाला और वह उसके मूल्य के विषय में कुछ अधिक की आशा न रखते थे (20)

پھر انہوں نے یوسف کو بہت کم داموں پر (گنتی کے چند درہموں کے بدلے مصر میں) بیچ ڈالا اور وہ اس کی قیمت کے بارے میں کچھ زیادہ کے امیدوار نہ تھے (۲۰)

और मिस्र में जिस व्यक्ति ने यूसुफ को क्रय किया था (वह उस की सुन्दरता और धैर्य व बुद्धि से इतना प्रभावित हुआ कि) उसने अपनी पत्नी से कहा इस लड़के को सम्मान से रखना हो सकता है कि इससे हमें कोई लाभ पहुंचे या हम इसे अपना पुत्र बना लें (देखो) इस प्रकार हमने यूसुफ अ0 को पृथ्वी देश में सम्मान का स्थान दिया ताकि उसे

اور مصر میں جس آدمی نے یوسف کو خرید لیا تھا (وہ اس کی خوبصورتی اور صبر وعقل سے اتنا متاثر ہوا کہ) اس نے اپنی بیوی سے کہا اس لڑکے کو عزت سے رکھنا ہوسکتا ہے کہ اس سے ہمیں کوئی فائدہ پہنچے۔ یا ہم اسے اپنا بیٹا بنالیں (دیکھو) اس طرح ہم نے یوسف کو زمین ملک میں عزت کا مقام

बातों का परिणाम और अर्थ सिखाएं ईश्वर को अपने कार्य में पूरा अधिकार है किन्तु बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते (21)

بخشا تا کہ اسے باتوں کا نتیجہ اور مطلب نکالنا سکھادیں. اللہ کو اپنے کام میں پورا پورا اختیار ہے لیکن اکثر لوگ اس بات کو نہیں جانتے (۲۱)

और जब यूसुफ ज्वानी को पहुंचा तो हमने उसको शासन (की क्षमता) और ज्ञान व बुद्धि मत्ता (की निधि) प्रदान की (यह कोई नई बात नही थी) हम सदाचारीयों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं (22) {12:6,100}

اور جب یوسف اپنی جوانی کو پہنچا تو ہم نے اس کو حکمرانی (کی استعداد) اور علم ودانائی (کی نعمت) بخشی (یہ کوئی نئی بات نہیں تھی) ہم نیکوکاروں کو اسی طرح بدلہ دیا کرتے ہیں (۲۲) [۱۲:۶، ۱۰۰]

और जिस स्त्री के घर में यूसुफ अ0 रहते थे वह उस पर (मोहित हो गई) डोरे डालने लगी (कि वह ब्याकूल होकर उसकी बात मान ले) अतः (एक दिन) उसने (घर के) द्वार बन्द कर लिए और (यूसुफ से) बोली लो आजाओ यूसुफ अ0 ने कहा ईश्वर की शरण (मुझसे ऐसी आशा मत रखो) तेरा पति मेरा स्वामी है उसने मुझे अपने घर में) सम्मान के साथ रखा है (मैं किसी दशा में उसकी धरोहर में विश्वास घात नही कर सकता) अत्याचारी (जो अपने स्वामी के साथ कपट करें कभी) सफलता नही पा सकते (23)

اور جس عورت کے گھر میں یوسف رہتے تھے وہ اس پر (فریفتہ ہوگئی) ڈورے ڈالنے لگی (کہ وہ بے قابو ہو کر اس کی بات مان لے) چنانچہ (ایک دن) اس نے (گھر کے) (دروازے بند کر لئے اور (یوسف سے) بولی لو آجاؤ، یوسف نے کہا معاذاللہ (مجھ سے ایسی امید مت رکھ) تیرا شوہر میرا آقا ہے اس نے مجھے (اپنے گھر میں) عزت کے ساتھ رکھا ہے (میں کسی حال میں اس کی امانت میں خیانت نہیں کرسکتا) ظالم (جو اپنے آقا کے ساتھ خیانت کریں کبھی) فلاح نہیں پاسکتے (۲۳)

(परन्तु) वह स्त्री (अपने संकल्प से न रुकी और) यूसुफ के पीछे पड़ गई (और दशा ऐसी हो गई कि) यदि यूसुफ अपने ईश्वर का प्रमाण न देख लेता तो वह भी उस स्त्री की ओर आकृष्ट हो जाता (परन्तु ईश्वर ने उसे बचा लिया) ऐसा इस लिए हुआ ताकि हम बुराई और निर्लज्जता की बातों को उससे दूर रखे निःसंदेह वह हमारा प्रमुख बन्दों में था (24)

(مگر) وہ عورت (اپنے ارادے سے باز نہ آئی اور) یوسف کے پیچھے پڑگئی (اورحالت ایسی ہوگئی کہ) اگر یوسف اپنے رب کی دلیل نہ دیکھ لیتا تو وہ بھی اس عورت کی طرف مائل ہو جاتا (لیکن اللہ نے اسے بچالیا) ایسا اس لئے ہوا تاکہ ہم برائی اور بے حیائی کی باتوں کو اس سے دور رکھیں بے شک وہ ہمارے خاص بندوں میں سے تھا (۲۴)

(जब नारी का आग्रह और बढ़ा तो यूसुफ अ0 उससे पीछा छुड़ाने के लिए भागा और स्त्री उसको पकड़ने के लिए दोड़ी स्थिति यह कि) दोनों द्वार की ओर भागे स्त्री ने यूसुफ अ0 का कुरता पीछे से खींच कर फाड़ डाला अचानक दोनों ने देखा कि औरत का पति द्वार के पास (खड़ा है स्त्री ने अपना पाप छुपाने के लिए पती से) कहा जो ब्यक्ति तेरी पत्नी के साथ बुरा संकल्प करें तो उसका क्या दण्ड होना चाहिए? यही कि इसको बंदी ग्रह में डाला जाए या पीड़ा देने वाला दण्ड दिया जाए (25)

(جب عورت کا اصرار اور بڑھا تو یوسف اس سے پیچھا چھڑانے کے لئے بھاگا اور عورت اس کو پکڑنے کے لئے دوڑی غرض یہ کہ) دونوں دروازے کی طرف بھاگے. عورت نے یوسف کا کرتا پیچھے سے کھینچ کر پھاڑ ڈالا. اچانک دونوں نے دیکھا کہ عورت کا شوہر دروازے کے پاس (کھڑا) ہے عورت نے (اپنا جرم چھپانے کے لئے شوہر سے) کہا جو شخص تیری بیوی کے ساتھ برا ارادہ کرے تو اس کو کیا سزا ہونی چاہیے؟ یہی کہ اس کو قید میں ڈالا جائے یا دردناک سزا دی جائے (۲۵)

(यह सुनकर) यूसुफ अ0 ने कहा इसीने मुझे अपनी ओर आकृष्ट करना चाहा था, फिर उस स्त्री के परिवार में से एक निर्णय करने वाले ने यह निर्णय किया कि यदि इसका कुरता आगे से फटा है तो स्त्री सच्ची है और यूसुफ झूटा है (26)

(یہ سن کر) یوسف نے کہا اسی نے مجھے اپنی طرف مائل کرنا چاہا تھا. پھر اس عورت کے قبیلے میں سے ایک فیصلہ کرنے والے نے یہ فیصلہ کیا کہ اگر اس کا کرتا آگے سے پھٹا ہے تو عورت سچی ہے اور یوسف جھوٹا ہے (۲۶)

और यदि इसका कुरता पीछे से फटा हो तो यह स्त्री झूटी है और वह सच्चा है (27)

اور اگر اس کا کرتا پیچھے سے پھٹا ہو تو یہ عورت جھوٹی ہے اور وہ سچا ہے (۲۷)

फिर जब देखा तो यूसुफ अ0 का कुरता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा यह तुम्हारी मक्कारी है निःसंदेह तुम स्त्रीयों के छल बहुत शक्ति शाली होते है (28)

پھر جب دیکھا تو یوسف کا کرتا پیچھے سے پھٹا ہوا ہے تو اس نے کہا یہ تمہاری مکاری ہے یقیناً تم عورتوں کی مکاریاں بڑی زبردست ہوتی ہیں (۲۸)

(फिर यूसुफ से कहा) ऐ यूसुफ इस बात का विचार न करना और (स्त्री से कहा) तू अपने पापों की क्षमा मांग इसमें कोई शंका नहीं कि तू ही अपराधी है (29)

(پھر یوسف سے کہا) اے یوسف اس بات کا خیال نہ کرنا اور (عورت سے کہا) تو اپنے گناہوں کی معافی مانگ اس میں کوئی شک نہیں کہ تو ہی خطا کار ہے (۲۹)

फिर (जब इस बात का नगर में चरचा फैला तो) नगर की स्त्रीयां (आपस में एक दूसरे से) कहने लगी देखो अजीज की पत्नी अपने दास पर डोरे डालने लगी कि उसे अपनी ओर आकृष्ट करे और उसका प्रेम उसके मन में धर कर गया है हम देखती है कि वह स्पष्ट पथ भ्रष्टता में है (30)

پھر (جب اس بات کا شہر میں چرچا پھیلا تو) شہر کی عورتیں (آپس میں ایک دوسرے سے) کہنے لگیں دیکھو عزیز کی بیوی اپنے غلام پر ڈورے ڈالنے لگی کہ اسے اپنی طرف مائل کرے اور اس کی محبت اس کے دل میں گھر کر گئی ہے ہم دیکھتی ہیں کہ وہ صریح گمراہی میں ہے (۳۰)

उसने जो उन स्त्रीयों की धुर्त्तता की बातें सुनी तो उनको बुलावा भेज दिया और उनके लिए एक सभा सजाई और भोज में हर एक के आगे फल काटने की एक एक छुरी रख दी फिर उसने यूसुफ से कहा अब इन के सामने बाहर आओ, जब उन स्त्रीयों ने उसे देखा तो उसको बड़ा सुन्दर पाया और वह सबभी उस पर मोहित हो गई और उन्होंने भी अपना स्वार्थ निकालना चाहा परन्तु (यूसुफ ने मना कर दिया तब उन स्त्रीयों ने धमकी दी कि ऐ यूसुफ यदि तूने हमारी बात न मानी तो हम सब आत्म हत्या कर लेंगी) और धमकी के स्वरूप उन्होंने अपने हाथ काट लिए (परन्तु यूसुफ न माने) तब उन स्त्रीयों ने कहा कि ईश्वर की शपथ यह आदमी नही है यह तो निःसंदेह एक प्रतिष्ठित फरिश्ता है (मानव के भेस में) (31), इल्ला {3:93, 10:49}

اس نے جو ان عورتوں کی مکارانہ باتیں سنیں تو ان کو بلاوہ بھیج دیا اور ان کے لئے محفل سجائی اور ضیافت میں ہر ایک کے آگے پھل تراشنے کی ایک ایک چھری رکھ دی پھر اس نے یوسف سے کہا اب ان کے سامنے باہر آؤ. جب ان عورتوں نے اسے دیکھا تو اس کو بڑا حسین پایا اور وہ سب بھی اس پر فریفتہ ہوگئیں اور انہوں نے بھی اپنا مطلب نکالنا چاہا (مگر یوسف نے منع کر دیا تب ان عورتوں نے دھمکی دی کہ اے یوسف اگر تو نے ہماری بات نہ مانی تو ہم سب خودکشی کر لیں گی) اور بطور دھمکی انہوں نے اپنے ہاتھ کاٹ لئے (مگر یوسف نہ مانے) تب ان عورتوں نے کہا کہ حاش للہ یہ آدمی نہیں ہے یہ تو یقیناً ایک معزز فرشتہ ہے (انسانی بھیس میں) (۳۱) اِلّا [۳:۹۳، ۱۰:۴۹]
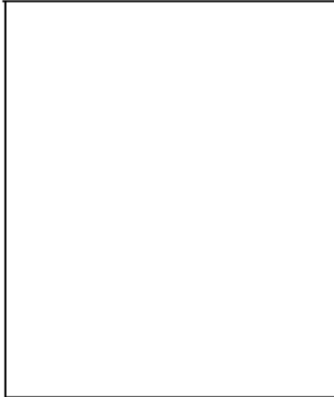
नोट- स्त्रीयों ने आत्म विस्मृत (बेखुदी) से फलों के स्थान पर अपने हाथ नही काटे थे अपितु मोहित होकर धमकी स्वरूप अपने हाथ काटे थे कि या तो मान जाओ अन्यथा हम आत्म हत्या कर लेंगी, और यह आरोप तुम पर आएगा इस अर्थ की पुष्टि इसी सूरत की आयतें जो आगे आ रही है कर रही है जिसमें यूसुफ ने बंदी गृह में रहते हुए ज्ञात किया था {32-34-50-51}
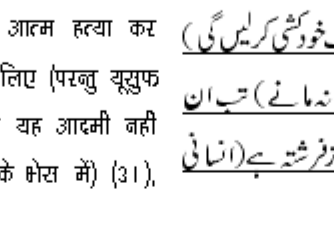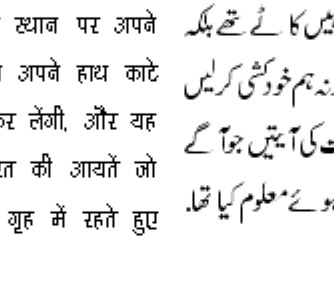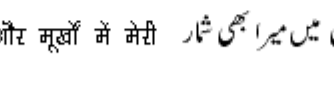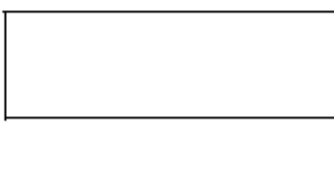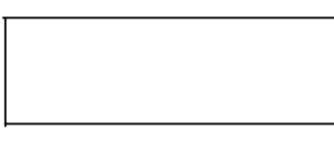
لے نوٹ:۔عورتوں نے بےخودی سے پھلوں کی جگہ اپنے ہاتھ نہیں کاٹے تھے بلکہ فریفتہ ہو کر بطور دھمکی اپنے ہاتھ کاٹے تھے کہ یا تو مان جاؤ ورنہ ہم خودکشی کر لیں گیں اور یہ الزام تم پر آئے گا اس مطلب کی تصدیق اسی سورت کی آیتیں جو آگے آرہی ہیں کر رہی ہیں جس میں یوسف نے جیل میں رہتے ہوئے معلوم کیا تھا. [۳۲،۳۴،۵۰،۵۱]

तब स्त्री ने कहा (देखो) यह है वह व्यक्ति जिसके विषय में तुम मुझे लान छन देती थी हां यह सत्य है कि मैंने इसको अपनी ओर आकृष्ट करना चाहा (जैसा तुमने किया और यह भी सत्य है कि यह) परन्तु यह बचा रहा और यदि यह वह काम न करेगा जो मैं कहती हूं तो निरुद्ध कर दिया जाएगा ओर अपमानित होगा (32)

تب عورت نے کہا (دیکھو) یہ ہے وہ شخص جس کے بارے میں تم مجھے طعنہ دیتی تھیں ہاں یہ حقیقت ہے کہ میں نے اس کو اپنی طرف مائل کرنا چاہا (جیسا تم نے کیا اور یہ بھی حقیقت ہے کہ یہ) مگر یہ بچا رہا اور اگر یہ وہ کام نہ کرے گا جو میں کہتی ہوں تو قید کر دیا جائے گا اور ذلیل ہوگا (۳۲)

यूसुफ ने प्रार्थना की कि स्वामी जिस कार्य की ओर वह स्त्रीयां मुझे बुलाती है इसके स्थान पर मुझे निरुद्ध होना पसन्द है और यदि तू मुझ से उन सब की धुर्त्तता को न हटाएगा तो (हो सकता है कि) मुझे आकृष्ट करने के लिए अधिक व्याकूल करें और मूर्खों में मेरी भी गिनती हो जाए (इस लिए मुझे जल्दी बचा) (33)

یوسف نے دعا کی کہ پروردگار جس کام کی طرف وہ عورتیں مجھے بلاتی ہیں اس کی نسبت مجھے قید پسند ہے اور اگر تو مجھ سے ان سب کے فریب کو نہ ہٹائے گا تو (ہوسکتا ہے کہ) مجھے مائل کرنے کے لئے زیادہ پریشان کریں. اور نادانوں میں میرا بھی شمار ہو جائے اس لئے مجھے جلدی بچا (۳۳)

तो उसके स्वामी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उससे उन स्त्रीयों की धुर्त्तता को दूर रखा निःसंदेह वह सब की सुनता और सब कुछ जानता है (34) {12:31}

تو اس کے رب نے اس کی دعا قبول کر لی اور اس سے ان عورتوں کے مکر کو دور رکھا بےشک وہ سب کی سنتا اور سب کچھ جانتا ہے (۳۴) [۱۲:۳۱]

फिर इसके बावजूद कि वह लोग (यूसुफ में पवित्रता के) चिन्ह देख चुके थे फिर भी उन्हें यही उचित ज्ञात हुआ कि यूसुफ को कुछ समय के लिए निरुद्ध कर दें (35)

پھر باوجود اس کے کہ وہ لوگ (یوسف میں پاکدامنی کی) نشانیاں دیکھ چکے تھے پھر بھی انہیں یہی مناسب معلوم ہوا کہ یوسف کو کچھ عرصہ کے لئے قید کریں (۳۵)

और उनके साथ दो और युवक भी करागार में प्रविष्ट हुए एकने उनमें से कहा कि (मैं स्वपन में) देखता हूं कि मदिरा (के लिए अंगूर) निचोड़ राह हूं,

اور ان کے ساتھ دو اور جوان بھی داخل زنداں ہوئے ایک نے ان میں سے کہا کہ (میں خواب میں) دیکھتا ہوں

दूसरे ने कहा कि मैं यह देखता हूं कि अपने सिर पर रोटियां उठाएं हूं और पक्षी उनमें से खा रहे हैं इनका स्वपन फल बता दीजिए कि हम आपको सदाचारी देखते हैं (36)

यूसुफ ने कहा (मैं विचार कर रहा हूं) इससे पहले कि तुम्हारे पास जो भोजन आने वाला है वह आने नहीं पाएगा कि मैं उससे पहले तुमको इसका स्वपन फल बता दूंगा, यह उन बातों में से है जिस की मेरे स्वामी ने मुझे शिक्षा दी है जो लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते और परलोक से इनकार करते हैं मैं उनका धर्म छोड़े हुए हूं (37)

मैंतो अपने पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक और याकूब के धर्म पर चलता हूं हमसे यह नहीं हो सकता कि किसी वस्तु को ईश्वर के साथ साझी बनाएं यह ईश्वर की कृपा है हम पर भी और लोगों पर भी है, परन्तु अधिकांश लोग आज्ञापालन नहीं करते(38)

हे मेरे कारागार के साथयों! भला बहुत से पृथक-पृथक स्वामी अच्छे हैं या एक ईश्वर जो सब पर अधिकारी है? (39)

तुम ईश्वर को छोड़कर जिन की पूजा करते हो निःसंदेह वह नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं ईश्वर ने इसका कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया, आदेश किसी का नहीं केवल ईश्वर का है, उसका आदेश है कि उसके अतिरिक्त किसी की पूजा न करो यही सीधा धर्म है परन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते (40)

ऐ मेरे कारागार के साथियों! (अपने स्वपन का स्वपन फल सुनों) तुममें से एक (जिसने देखा कि वह अंगूर निचोड़ रहा है) वह मुक्त होकर अपने स्वामी को मदिरा पिलाएगा और जो दूसरा है वह सूली दिया जाएगा और पक्षी उसका सिर नोच कर खाएंगे तुम जिस विषय में मुझसे ज्ञात करते थे उसका निर्णय हो चुका है (41)

और यूसुफ ने उन दोनों में से उस बन्दी से जिसके प्रति उसने विचार किया था कि वह मुक्त हो जाएगा कहा जब अपने स्वामी के पास जाए तो उससे मेरा उल्लेख करना परन्तु शैतान ने उसका अपने स्वामी से उल्लेख करना भुला दिया, अतः यूसुफ कई वर्षों तक कारागार में रहा (42)

फिर (कई वर्षों बाद) राजा ने कहा मैं स्वपन में क्या देखता हूं कि सात मोटी गाएं हैं जिनको सात दुर्बल गाएं खा रही हैं और सात बाले हरी हैं और सात शुष्क ऐ मेरे नेताओ! यदि तुम स्वपन का स्वपन फल बता सकते हो तो मेरे स्वप्न का स्वप्न फल बताओ (43)

वह बोले यह तो अव्यवस्थित से स्वपन (ज्ञात होते) हैं और हम ऐसे अव्यवस्थित स्वपनों का अर्थ नहीं

کہ شراب (کے لئے انگور) نچوڑ رہا ہوں. دوسرے نے کہا کہ میں یہ دیکھتا ہوں کہ اپنے سر پر روٹیاں اٹھائے ہوں. اور پرندے ان میں سے کھا رہے ہیں ان کی تعبیر بتا دیجئے کہ ہم آپ کو نیکوکار دیکھتے ہیں (٣٦)

یوسف نے کہا (میں غور کر رہا ہوں) اس سے پہلے کہ تمہارے پاس جو کھانا آنے والا ہے وہ آنے نہیں پائے گا کہ میں اس سے پہلے تم کو اس کی تعبیر بتا دوں گا یہ ان باتوں میں سے ہے جس کی میرے رب نے مجھے تعلیم دی ہے جو لوگ اللہ پر ایمان نہیں رکھتے اور روز آخرت سے انکار کرتے ہیں میں ان کا مذہب چھوڑے ہوئے ہوں (٣٧)

میں تو اپنے بزرگ ابراہیم اور اسحاق اور یعقوب کی ملت پر چلتا ہوں. ہم سے یہ نہیں ہو سکتا کہ کسی چیز کو اللہ کے ساتھ شریک بنائیں یہ اللہ کا فضل ہے ہم پر بھی اور لوگوں پر بھی ہے لیکن اکثر لوگ شکر نہیں کرتے (٣٨)

اے میرے قید خانے کے ساتھیوں! بھلا بہت سے الگ الگ آقا اچھے ہیں یا ایک اللہ جو سب پر غالب ہے؟ (٣٩)

تم اللہ کو چھوڑ کر جن کی پوجا کرتے ہو یقیناً وہ نام ہی نام ہیں جو تم نے اور تمہارے بزرگوں نے رکھ لئے ہیں اللہ نے اس کی کوئی سند نازل نہیں کی حکم کسی کا نہیں صرف اللہ کا ہے اس کا حکم ہے کہ اس کے علاوہ کسی کی عبادت نہ کرو یہی سیدھا دین ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (٤٠)

اے میرے قید خانے کے ساتھیو! (اپنے خواب کی تعبیر سنو) تم میں سے ایک (جس نے دیکھا کہ وہ انگور نچوڑ رہا ہے) وہ رہا ہو کر اپنے آقا کو شراب پلایا کرے گا. اور جو دوسرا ہے وہ سولی دیا جائے گا اور پرندے اس کا سر نوچ کر کھائیں گے. تم جس بارے میں مجھ سے پوچھتے تھے اس کا فیصلہ ہو چکا ہے (٤١)

اور یوسف نے ان دونوں میں سے اس قیدی سے جس کے بارے میں اس نے خیال کیا تھا کہ وہ نجات پا جائے گا کہا جب اپنے آقا کے پاس جائے تو اس سے میرا ذکر کرنا لیکن شیطان نے اس کا اپنے آقا سے ذکر کرنا بھلا دیا. اس لئے یوسف کئی برس تک قید خانے میں رہا (٤٢)

پھر (کئی سال بعد) بادشاہ نے کہا میں خواب میں کیا دیکھتا ہوں کہ سات موٹی گائیں ہیں جن کو سات دبلی گائیں کھا رہی ہیں اور سات بالیں ہری ہیں اور سات خشک. اے میرے سردارو! اگر تم خواب کی تعبیر بتا سکتے ہو تو میرے خواب کی تعبیر بتاؤ (٤٣)

وہ بولے یہ تو پریشان سے خواب (معلوم ہوتے) ہیں اور

जानते (44)

ہم ایسے پریشان خوابوں کی تعبیر نہیں جانتے (۴۴)

और उन दोनों बन्दीयों में से जो मुक्त कर दिया गया था, और जिसे एक काल के बाद (यूसुफ की) बात याद आई उसने कहा मैं इस स्वपन का स्वपन फल बता सकता हूं तुम मुझे (कारागार) जाने दो (45)

اوران دونوں قیدیوں میں سے جو رہا کر دیا گیا تھا اور جسے ایک عرصے کے بعد (یوسف کی) بات یاد آئی اس نے کہا میں اس خواب کی تعبیر بتا سکتا ہوں تم مجھے (قید خانہ) جانے دو (۴۵)

(अतः वह कारागार में आया) और कहा ऐ यूसुफ! ऐ सच्चे मित्र! हमें इस स्वपन का फल बता दो कि सात मोटी गायों को सात दुबली गाय निगल रही हैं और सात बालें हरी हैं और सात सूखी ताकि मैं (उन) लोगों के पास जा कर (उन्हें स्वपन का स्वपन फल बता सकूं) और वह लोग (तुम्हारा मूल्य) जान लें (46)

(چنانچہ وہ قید خانہ میں آیا) اور کہا اے یوسف! اے سچے دوست! ہمیں اس خواب کی تعبیر بتا دو کہ سات موٹی گایوں کو سات دبلی گائیں نگل رہی ہیں. اور سات بالیں ہری ہیں اور سات سوکھی تاکہ میں (ان) لوگوں کے پاس جا کر (انہیں خواب کی تعبیر بتا سکوں) اور وہ لوگ (تمہاری قدر) جان لیں (۴۶)

यूसुफ ने कहा (स्वपन फल यह है तुम सात वर्षों तक बराबर कृषि करते रहोगे (अच्छी उपज होगी) तो जो अन्न काटो उसे बालों में ही रहने देना (ताकि विकृत न होने पाए) केवल थोड़ा सा अन्न जो तुम्हारे खाने के लिए अनिवार्य हो अलग कर लिया करना (47)

یوسف نے کہا (تعبیر یہ ہے) تم سات برس تک برابر کھیتی کرتے رہو گے (خوب پیداوار ہوگی) تو جو غلہ کاٹو اسے بالوں میں ہی رہنے دینا (تاکہ خراب نہ ہونے پائے) صرف تھوڑا سا غلہ جو تمہارے کھانے کے لئے ضروری ہو الگ کر لیا کرنا (۴۷)

फिर (जब सात वर्ष बीत जाएंगे तो) उसके बाद (शुष्क साली के) सात कठिन वर्ष आएंगे तो वह उस अन्न के भण्डार को जो तुमने संग्रह कर रखा होगा खा जाएंगे, केवल थोड़ा सा रह जाएगा जो तुम सावधानी से रख छोड़ोगे (48)

پھر (جب سات سال گزر جائیں گے تو) اس کے بعد (خشک سالی کے) سات سخت سال آئیں گے وہ اس غلہ کے ذخیرہ کو جو تم نے جمع کر رکھا ہوگا کھا جائیں گے صرف تھوڑا سا رہ جائے گا جو تم (احتیاط سے رکھ چھوڑو گے) (۴۸)

फिर उसके बाद एक वर्ष ऐसा आएगा कि अच्छी वर्षा होगी और लोग (फलों और दानों से) आसव और तैल निकालेंगे (49)

پھر اس کے بعد ایک سال ایسا آئے گا کہ خوب بارش ہوگی اور لوگ (پھلوں اور دانوں سے) عرق اور تیل نکالیں گے (۴۹)

(फल सुन कर राजा ने) उसने आदेश दिया कि यूसुफ को (तुरन्त) मेरे पास लाओ अतः जब सन्देश वाहक यूसुफ के पास पहुंचा तो यूसुफ ने कहा तू अपने स्वामी के पास वापस जा और (मेरी ओर से) उससे ज्ञात कर कि उन स्त्रीयों की क्या स्थिति थी जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे (मैं चाहता हूं कि यह प्रसंग स्पष्ट हो जाए) निःसंदेह मेरा रब उनके छल कपट से भलि भांति अवगत है (50) {12:31 -33-34-51}
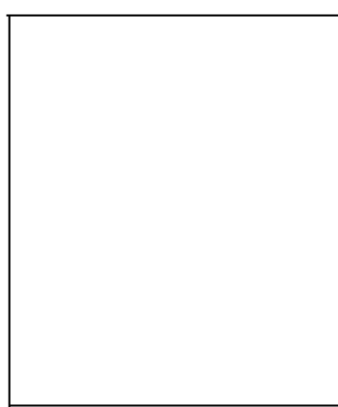
(تعبیر سن کر بادشاہ نے) اس نے حکم دیا کہ یوسف کو (فوراً) میرے پاس لاؤ. چنانچہ جب قاصد یوسف کے پاس پہنچا تو یوسف نے کہا تو اپنے آقا کے پاس واپس جا اور (میری طرف سے) اس سے دریافت کر کہ ان عورتوں کا کیا حال معاملہ تھا جنہوں نے اپنے ہاتھ کاٹ لئے تھے. (میں چاہتا ہوں کہ یہ معاملہ صاف ہو جائے) بے شک میرا رب ان کے مکروفریب سے خوب واقف ہے (۵۰) [۱۲:۳۱،۱۲:۳۳،۳۴،۵۱]

नोट- आयत से स्पष्ट है कि एक अजीज़ मिस्र की पत्नी ही यूसुफ पर मोहित न थी अपितु सब स्त्रियां ही मोहित हो गई थी और उन्होंने धमकी देने को हाथ काटे थे.

نوٹ:۔ آیت سے صاف ظاہر ہے کہ ایک عزیز مصر کی بیوی ہی یوسف پر فریفتہ نہ تھی بلکہ سب عورتیں ہی فریفتہ ہو گئیں تھیں اور انہوں نے دھمکی دینے کو ہاتھ کاٹے تھے.

(यह सुनकर राजा ने स्त्रीयों को बुलाया) और कहा स्पष्ट रूप से बताओ तुम्हारा क्या प्रसंग है जब तुमने यूसुफ को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहा था? वह बोली ईश्वर की शपथ हमने उसमें बुराई की कोई बात नही पाई (उन स्त्रीयों का उत्तर सुन कर) अजीज़ की पत्नी बोल उठी अब जबकि सत्य बात प्रकट हो गई तो (मैं स्वीकार करती हूं कि) मैंने ही उसको अपनी ओर आकृष्ट करना चाहा था परन्तु (वह सुरक्षित रहा) निःसंदेह वह सच्चा है. (51)

(یہ سن کر بادشاہ نے ان عورتوں کو بلایا) اور کہا صاف صاف بتاؤ تمہارا کیا معاملہ ہے جب تم نے یوسف کو اپنی طرف مائل کرنا چاہا تھا؟ وہ بولیں اللہ کی قسم ہم نے اس میں برائی کی کوئی بات نہیں پائی (ان عورتوں کا جواب سن کر) عزیز کی بیوی بول اٹھی اب جب کہ سچی بات ظاہر ہو گئی تو (میں اقرار کرتی ہوں کہ) میں نے ہی اس کو اپنی طرف مائل کرنا چاہا تھا. لیکن (وہ محفوظ رہا) بے شک وہ سچا ہے (۵۱)

नोट- आयत 51 भी यह स्पष्ट कर रही है कि एक स्त्री मोहित नही थी अपितु सब ही थी और यूसुफ ने सबसे ज्ञात करने को कहा था जिसके लिए आयात में जमीर हुन्ना, कुन्ना बहुवचन की है.

نوٹ:۔ آیت ۵۱ بھی یہ ظاہر کر رہی ہے کہ ایک عورت فریفتہ نہیں تھی بلکہ سب ہی تھیں اور یوسف نے بھی سب سے معلوم کرنے کو کہا تھا جس کے لئے آیات میں ضمیر ھن کن جمع کی ہیں.

(यूसुफ ने कहा कि मैंने) यह मैंने इस लिए कहा ताकि अजीज़ मिस्र को ज्ञात हो जाए कि मैंने उस की पीठ पीछे उसकी धरोहर में विश्वासघात नही किया और यह कि (दुनिया वाले जान ले कि) ईश्वर विश्वास घात करने वालों पर कभी (सफलता का) मार्ग नही खोलता (और यह भी जान लें कि कपटियों को सफलता नहीं मिलती) (52)

(یوسف نے کہا کہ میں نے) یہ میں نے اس لئے کہا تا کہ عزیز مصر کو معلوم ہو جائے کہ میں نے اس کی پیٹھ پیچھے اس کی امانت میں خیانت نہیں کی اور یہ کہ (دنیا والے جان لیں کہ) اللہ خیانت کرنے والوں پر کبھی (کامیابی کی) راہ نہیں کھولتا (اور یہ بھی جان لیں کہ دغابازوں کو کامیابی نہیں ملتی) (۵۲)

पारा वमा उबर्रिकउ 13

پارہ۔[۱۳] وماابرئ

(अजीज की पत्नी ने कहा) और में अपने जी की पवित्रता का वाद नही करती क्योंकि तामस मन (व्यक्ति को) बुराई ही सीखाता रहता है क्या है परन्तु यह कि मेरा ईश्वर दया करे निःसंदेह मेरा ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है (53)

(عزیز کی بیوی نے کہا) اور میں اپنے نفس کی پاکی کا دعویٰ نہیں کرتی کیونکہ نفس امارہ (انسان کو) برائی ہی سکھاتا رہتا ہے مگر یہ کہ میرا پروردگار رحم کرے۔ بے شک میرا پروردگار بخشنے والا مہربان ہے (۵۳)

और (जब यूसुफ अ0 की पवित्रता का ज्ञान हो गया तो राजा पर यूसुफ के चरित्र का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि) उसने आदेश दिया कि उसे मेरे पास लाओ मैं उसे अपना विशिष्ट सभा सद बनाऊंगा फिर जब उनसे बात चीत की तो कहा कि आज से तुम हमारे यहां अधिकार वाले और विश्वास योग्य हो (54)

اور (جب یوسف کی پاکدامنی کا علم ہو گیا تو بادشاہ پر یوسف کے کردار کا اتنا گہرا اثر پڑا کہ) اس نے حکم دیا کہ اسے میرے پاس لاؤ میں اسے اپنا مصاحب خاص بناؤں گا پھر جب ان سے گفتگو کی تو کہا کہ آج سے تم ہمارے یہاں صاحب اختیار اور صاحب اعتبار ہو (۵۴)

यूसुफ ने कहा मुझे इस देश के कोषागारों पर अधिकार प्राप्त नियुक्त कर दीजिए क्योंकि में रक्षा भी कर सकता हूं और व्यवस्था का ज्ञान भी रखता हूं (55)

یوسف نے کہا مجھے اس ملک کے خزانوں پر مختار کر دیجئے کیونکہ میں حفاظت بھی کر سکتا ہوں اور انتظامی علم بھی رکھتا ہوں (۵۵)

और इसी प्रकार हमने मिस्र देश में यूसुफ अ0 के पग जमा दिए सत्ता दी जहां चाहते थे रहते थे और हम अपनी कृपा उस पर करते है जो चाहता है अपने शुभ कर्मों से और सदाचारियों के पारिश्रमिक नष्ट नही करते. (56)

اور اسی طرح ہم نے ملک مصر میں یوسف کے قدم جمادئے اقتدار دیا۔ جہاں چاہتے تھے رہتے تھے اور ہم اپنی رحمت اس پر کرتے ہیں جو چاہتا ہے اپنے نیک عمل سے اور نیکوکاروں کے اجر کو ضائع نہیں کرتے (۵۶)

और जो लोग ईश्वर पर विश्वास रखते है और (उस की) अवज्ञा से बचते है उनके लिए प्रलोक का फल इससे कही अच्छा है (57)

اور جو لوگ اللہ پر ایمان رکھتے ہیں اور (اس کی) نافرمانی سے بچتے رہتے ہیں ان کے لئے آخرت کا اجر اس سے کہیں بہتر ہے (۵۷)

(अकाल का प्रभाव किनआन में भी हुआ इस लिए) यूसुफ अ0 के भाई (अन्न क्रय करने के लिए मिस्र में) उसके पास आए यूसुफ अ0 ने उन्हें पहचान लिया परन्तु वह यूसुफ अ0 को नहीं पहचान सके (58)

(قحط سالی کا اثر کنعان میں بھی ہوا اس لئے) یوسف کے بھائی (غلہ خریدنے کے لئے مصر میں) اس کے پاس آئے۔ یوسف نے انہیں پہچان لیا لیکن وہ یوسف کو نہیں پہنچان سکے (۵۸)

फिर जब उसने उनका सामान तैयार करवा दिया तो चलते समय उनसे कहा पिता की ओर से अपने सोतेले भाई को मेरे पास लाना देखते नही हो कि मैं किस प्रकार पैमाने भर कर देता हूं और कैसा अच्छा अतिथि सत्कार करता हूं (59)

پھر جب اس نے ان کا سامان تیار کروا دیا تو چلتے وقت ان سے کہا باپ کی طرف سے اپنے سوتیلے بھائی کو میرے پاس لانا۔ دیکھتے نہیں ہو کہ میں کس طرح پیمانہ بھر کے دیتا ہوں اور کیسا اچھا مہمان نواز ہوں (۵۹)

और यदि तुम उसे न लाओगे तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई अन्न नही है अपितु तुम मेरे निकट भी न आना (60)

اور اگر تم اسے نہ لاؤ گے تو میرے پاس تمہارے لئے کوئی غلہ نہیں ہے بلکہ تم میرے قریب بھی نہ آنا (۶۰)

उन्होंने कहा हम प्रयास करेंगे कि पिता जी उसे भेजने पर सहमत हो जाएं और हम ऐसा अवश्य करेंगे (61)

انہوں نے کہا ہم کوشش کریں گے کہ والد صاحب اسے بھیجنے پر راضی ہو جائیں اور ہم ایسا ضرور کریں گے (۶۱)

यूसुफ अ0 ने अपने कर्मचारियों को संकेत किया कि उन लोगों ने जो अन्न के मूल्य में धन दिया है वह चुपके से उनके सामान में ही रख दो यह यूसुफ अ0 ने इस आशा पर किया कि घर पहुंच कर वह अपना वापस किया हुआ धन पहचान ले और विचित्र नही कि फिर आए (धन वापस करने और

یوسف نے اپنے ملازموں کو اشارہ کیا کہ ان لوگوں نے جو غلے کی قیمت میں مال دیا ہے وہ چپکے سے ان کے سامان میں ہی رکھ دو۔ یہ یوسف نے اس امید پر کیا کہ گھر پہنچ کر وہ اپنا واپس کیا ہوا مال پہچان لیں اور عجب نہیں کہ پھر آئیں (مال واپس کرنے اور بھائی کو لانے کے تقاضہ سے یعقوبؑ بھی سمجھ جائیں اور

निश्चित होकर मेरे भाई को मेरे पास भेज दें (62) {12:65}

بےفکر ہوکر میرے بھائی کو میرے پاس روانہ کردیں)(۶۲)[۱۲:۶۵]

जब वह अपने पिता के पास गए तो कहा पिता जी भविष्य में हमको अन्न देने से इनकार कर दिया गया है, अतः आप हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए (भाई को साथ लाने को कहा है) ताकि हम अन्न लेकर आएं और इसकी रक्षा के हम उत्तर दायी हैं (63)

جب وہ اپنے باپ کے پاس گئے تو کہا ابا جان آئندہ ہم کو غلہ دینے سے انکار کردیا گیا ہے. لہٰذا آپ ہمارے ساتھ ہمارے بھائی کو بھیج دیجئے (بھائی کو ساتھ لانے کو کہا ہے) تاکہ ہم غلہ لےکر آئیں اور اس کی حفاظت کے ہم ذمہ دار ہیں (۶۳)

पिता ने उत्तर दिया कि मैं इसके बारे में तुम पर वैसा ही भरोसा करूं जैसा इससे पहले इसके भाई यूसुफ के विषय में कर चुका हूं? ईश्वर ही उत्तम रक्षक है और वह सबसे बढ़कर दया करने वाला है (64)

باپ نے جواب دیا کہ میں اس کے بارے میں تم پر ویسا ہی بھروسہ کروں جیسا اس سے پہلے اس کے بھائی یوسف کے بارے میں کرچکا ہوں؟ اللہ ہی بہتر محافظ ہے اور وہ سب سے بڑھ کر رحم کرنے والا ہے (۶۴)

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपनी पूंजी पाई जो उन्हें वापस कर दी गई थी उस पूंजी को देखकर बोले ऐ हमारे पिता (इस पूंजी के वापस आने में हमारा कोई दोष नही है) हमने सीमा को नही तोड़ा अर्थात हम नियम का विरोध नही करेंगे (कि अन्न का मूल्य न देते हुए वापस ले आते) वह तो ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने स्वयं ही जानकर हमारी ओर वापस कर दी है (या भूल से आ गई है उससे ज्ञात कर लिया जाएगा) अब हम अपने घर वालों के लिए अन्न फिर लाएंगे और अपने भाई की देखभाल करेंगे और एक ऊँट का भार अधिक लाएंगे और वह अन्न (जो हम पहले लाए हैं) बहुत कम है वह माप मिलता तो बहुत आसान है (65) {12:62}

اور جب انہوں نے اپنا سامان کھولا تو اپنی پونجی پائی جو انہیں واپس کردی گئی تھی اس پونجی کو دیکھ کر بولے اے ہمارے ابا (اس پونجی کے واپس آنے میں ہمارا کوئی قصور نہیں ہے) ہم نے حدود شکنی یعنی ہم قانون کی خلاف ورزی نہیں کریں گے (کہ غلہ کی قیمت نہ دیتے ہوئے واپس لے آتے) یہ تو ایسا جان پڑتا ہے کہ انہوں نے خود ہی جان کر ہماری طرف واپس کردی ہے (یا بھول سے آگئی ہے ان سے معلوم کرلیا جائےگا) اب ہم اپنے اہل وعیال کے لئے غلہ پھر لائیں گے اور اپنے بھائی کی نگہبانی کریں گے اور ایک بار شتر زیادہ لائیں گے اور یہ غلہ (جو ہم پہلے لائے ہیں) بہت تھوڑا ہے یہ ناپ ملتا تو بہت آسان ہے (۶۵)[۱۲:۶۲، ۱۲:۵۴]

याकूब अ0 ने कहा मैं उसे कदापि तुम्हारे साथ न जाने दूंगा जब तक तुम ईश्वर के नाम पर मुझसे यह प्रण न करो कि तुम उसे अवश्य मेरे पास वापस लाओगे? परन्तु यह कि तुम घैर ही लिए जाव जब उन्होंने पिता से पक्का प्रण कर लिया तो याकूब अ0 ने कहा हमने जो प्रण किया है उसका ईश्वर रक्षक है (66)

یعقوبؑ نے کہا میں اُسے ہرگز تمہارے ساتھ نہ جانے دوں گا جب تک تم اللہ کے نام پر مجھ سے یہ عہد نہ کرو کہ تم اسے ضرور میرے پاس واپس لاؤگے. مگر یہ کہ تم گھیر ہی لئے جاؤ جب انہوں نے باپ سے پکا وعدہ کرلیا تو یعقوبؑ نے کہا ہم نے جو قول وقرار کیا ہے اس کا اللہ نگہبان ہے (۶۶)

जब याकूब अ0 अपना पुत्र उनके साथ भेजने को (सहमत हो गए तो उपदेश दिया) और कहा कि पुत्रों एक ही द्वार से प्रविष्ट न होना अपितु पृथक पृथक द्वारों से प्रविष्ट होना, परन्तु ईश्वर के आदेश से होने वाली किसी बात से मैं तुम्हें नही बचा सकता, निःसंदेह आदेश उसी का है मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए (67)

جب یعقوبؑ اپنا بیٹا ان کے ساتھ بھیجنے کو راضی ہو گئے تو نصیحت کی اور کہا کہ بیٹا ایک ہی دروازے سے داخل نہ ہونا بلکہ جدا جدا دروازوں سے داخل ہونا. مگر اللہ کے حکم سے ہونے والی کسی بات سے میں تمہیں نہیں بچا سکتا. بےشک حکم اسی کا ہے میں اسی پر بھروسا رکھتا ہوں اور بھروسا کرنے والوں کو اسی پر بھروسا کرنا چاہیے (۶۷)

नोट- महामना याकूब अ0 ने अपने पुत्रों को नगर में एक द्वार से प्रविष्ट होने से मना किया? आयत 59 से 67 तक पढ़ने से विदित होता है कि महा मना याकूब अ0 ने यह जान लिया था कि अजीज मिस्र मेरा पुत्र यूसुफ है जो कारण है वह निम्न लिखित है 1, छोटे भाई को मिस्र लाने की चेतावनी 2, न लाने पर अन्न न देने और निकट न आने की बात 3, जो पूंजी दी थी वह वापस कर देना, यह इस लिए कि श्रीमान याकूब जान लें और मनन करें वह यह कि अजीज मिस्र को बिन यामीन से क्या अभिरुचि थी जबकि प्रत्यक्षतः वह जानते भी न थे वह मिस्र में और बिन यामीन किनआन में बस यही एक बात महत्वपूर्ण है बाते दूसरी भी महत्व पूर्ण हैं इन सब बातों पर विचार करने के बाद याकूब अ0 ने जान लिया था तब ही अपने छोटे पुत्र को उनके साथ प्रेषित करने पर सहमत हो गए थे यदि विश्वास न होता तो कदापि अपने छोटे पुत्र को उनके साथ भेजने पर सहमत न होते, क्यों

نوٹ: حضرت یعقوبؑ نے اپنے لڑکوں کو شہر میں ایک دروازے سے داخل ہونے سے منع کیا؟ آیت ۵۹ سے ۶۷ تک پڑھنے سے ظاہر ہوتا ہے کہ حضرت یعقوبؑ نے یہ جان لیا تھا کہ عزیز مصر میرا بیٹا یوسف ہے جو وجوہات ہیں وہ درج ذیل ہیں.

۱چھوٹے بھائی کو مصر لانے کی تاکید

۲نہ لانے پر غلہ نہ دینے اور قریب نہ آنے کی بات

۳جو پونجی دی تھی وہ واپس کردینا. یہ اس لئے کہ حضرت یعقوبؑ جان لیں اور غور کریں. وہ یہ کہ عزیز مصر کو بن یامین سے کیا دلچسپی تھی جب کہ بظاہر وہ جانتے بھی نہ تھے. وہ مصر میں اور بن یامین کنعان میں. بس یہی ایک بات اہم ہے باتیں دوسری بھی اہم ہیں. ان سب باتوں پر غور کرنے کے بعد یعقوبؑ نے جان لیا تھا تب ہی اپنے چھوٹے لڑکے کو ان کے ساتھ روانہ کرنے پر راضی ہو گئے تھے. اگر

कि इससे पहले वह महामना यूसुफ अ० के साथ धोका कर चुके थे और आकर कहा था कि यूसुफ अ० को भेड़या खा गया और कुरता लाकर दे दिया कुरते को देखकर ही महामना ने जान लिया था कि यूसुफ को भेड़ये ने नही खाया यदि भेड़या खाता तो कुरता फटता, परन्तु कुरता सुरक्षित पूर्ण था,

चूंकि आस्तिक एक बिल से दो बार धोका नही खाता अतः यदि महामना को विश्वास न होता तो किसी भी मूल्य पर छोटे पुत्र को भेजने पर सहमत न होते याकूब अ० को यह विश्वास तो था कि यूसुफ जीवित हैं परन्तु यह ज्ञात न था कि वह कहां हैं अब ज्ञात हो गया,

विश्वास कराने के लिए ही यूसुफ अ० ने यह सब किया था, इधर से याकूब अ० ने भी एक संदेश दिया कि पृथक पृथक होकर नगर में प्रविष्ट होना जिससे मार्ग में ही यूसुफ अपने छोटे भाई से एकान्त में मिल ले और बता दे कि ऐ भाई अब चिन्ता न कर मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं और यही हुआ मार्ग में ही भेंट हो गई यह है अस्तिक का विवेक एक नबी ने दूसरे नबी को संकेतों में विश्वास दिला दिया कि मैं यूसुफ हूं और इधर से भी यही उत्तर गया कि पुत्र मैंने जान लिया कि तुम यूसुफ ही हो इस लिए ही मैंने इन कपटियों के साथ अपने छोटे पुत्र को तुमसे मिलने को भेज दिया है यदि विश्वास न आता तो किसी भी मूल्य पर न भेजता अब तक तो यह बातें संकेतों में हो रही हैं परन्तु ऐ पुत्र अब यह वियोग अधिक लम्बा ना हो अपितु शीघ्र मिलन हो ना चाहिए जैसे तुम दोनों भाई मिल रहे हो,

`परन्तु ईश्वर को जो स्वीकृत होता है जो उस के ज्ञान की पुस्तक में लिखा जा चुका है वह पूरा होता है, और पूरा करने वाले व्यक्ति ही होते हैं वह यह कि यूसुफ के भाईयों ने एक और दुष्ट कर्म करने का निश्चय कर लिया जिसका उल्लेख आयत 8 में है देखो वह यह कि बिन यामीन को भी पिता से पृथक कर दें और वह उनको अवसर मिल गया, उन्होंने उनके सामान में शाही प्याला रखने की योजना बनाई और समय आने पर कर दिया यह योजना इस लिए बनी कि ईश्वर यह चाहता था कि यूसुफ के भाई रंगे होथों पकड़े जाएं और दोनों पापों को स्वीकार करें एक साथ और पश्चातापि हो और यह सब कुछ जो यूसुफ के भाई कर रहे थे उनकी अचेतना का ही परिणाम था,

पाठकों को एक बात से अवश्य बेचैनी उत्पन्न हो रही होगी कि जब याकूब को यह ज्ञात हो गया था कुरता देखकर कि यूसुफ जीवित है तो फिर खोज क्यों न की इसका उत्तर सूरत के अन्त में लिख जाएगा कि महामना ने अपने प्रिय पुत्र की खोज क्यों न की और धारा 67, 68 से भी कुछ विदित हो रहा है कि याकूब अ० को ज्ञान हो गया था कि अजीज़ मिस्र यूसुफ है,

और जब वह लोग मिस्र में इस प्रकार प्रविष्ट हुए जिस प्रकार उनके पिता ने आदेश दिया था तो यह उनकी एक युक्ति थी यदि ईश्वर का आदेश न हो तो युक्ति भी कुछ काम नही आ सकती बात केवल इतनी थी कि याकूब अ० के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ था जिसे उसने पूरा कर दिया निःसंदेह वह ज्ञानी था जिसे हमने ज्ञान दिया था (अर्थात वह यूसुफ को जान गए थे ईश्वर के दिए हुए ज्ञान से) परन्तु अधिकांश लोग इसकी वास्तविक्ता नही जानते (यूसुफ के भाई यूसुफ को देख कर भी न जाने यह उनकी अचेतना ही तो थी (68)

और जब वह लोग यूसुफ अ० के पास पहुंचे तो यूसुफ ने अपने भाई को मार्ग में ही बता दिया कि

یقین نہ ہوتا تو ہرگز اپنے چھوٹے بیٹے کو ان کے ساتھ بھیجنے پر راضی نہ ہوتے کیوں کہ اس سے پہلے وہ حضرت یوسف کے ساتھ دھوکا کر چکے تھے اور آ کر کہا تھا کہ یوسف کو بھیڑیا کھا گیا اور کرتا لا کر باپ کو دے دیا۔ کرتے کو دیکھ کر ہی حضرت نے جان لیا تھا کہ یوسف کو بھیڑیے نے نہیں کھایا اگر بھیڑیا کھاتا تو کرتا پھٹتا مگر کرتا سالم تھا۔

چونکہ مومن ایک بل سے دوبار دھوکا نہیں کھاتا۔ اس لئے اگر حضرت کو یقین نہ ہوتا تو کسی بھی قیمت پر چھوٹے بیٹے کو بھیجنے پر راضی نہ ہوتے یعقوبؑ کو یہ یقین تو تھا کہ یوسف زندہ ہے مگر یہ پتہ نہ تھا کہ وہ کہاں ہے اب معلوم ہو گیا۔

یقین کرانے کے لئے ہی یوسف نے یہ سب کیا تھا۔ ادھر سے یعقوبؑ نے بھی ایک پیغام دیا کہ الگ الگ ہو کر شہر میں داخل ہونا جس سے راستے میں ہی یوسف اپنے چھوٹے بھائی سے تنہائی میں مل لے اور بتا دے کہ اے بھائی اب فکر نہ کرو میں تمہارا بھائی یوسف ہوں اور یہی ہوا۔ راستے میں ہی ملاقات ہو گئی۔ یہ ہے مومن کی فراست ایک نبی نے دوسرے نبی کو اشاروں میں یقین دلا دیا کہ میں یوسف ہوں اور ادھر سے بھی یہی جواب گیا کہ بیٹا میں نے جان لیا کہ تم یوسف ہی ہو اس لئے ہی میں نے ان دغابازوں کے ساتھ اپنے چھوٹے بیٹے کو تم سے ملنے کو بھیج دیا ہے اگر یقین نہ آتا تو کسی بھی قیمت پر نہ بھیجتا۔ اب تک تو یہ باتیں اشاروں میں ہو رہی ہیں مگر اے بیٹا اب یہ مفارقت زیادہ لمبی نہ ہو بلکہ جلد ملاقات ہونی چاہیے جیسے تم دونوں بھائی مل رہے ہو۔

لیکن اللہ کو جو منظور ہوتا ہے جو اس کے علم کی کتاب میں لکھا جا چکا ہے وہ پورا ہوتا ہے اور پورا کرنے والے انسان ہی ہوتے ہیں وہ یہ کہ یوسف کے بھائیوں نے ایک اور حرکت کرنے کا ارادہ کر لیا جس کا ذکر آیت ۸ میں ہے دیکھو وہ یہ کہ بن یامین کو بھی باپ سے الگ کر دیں اور وہ ان کو موقع مل گیا۔ انہوں نے ان کے سامان میں شاہی پیالہ رکھنے کا پلان بنایا اور وقت آنے پر کر دیا۔ یہ پلان اس لئے بنا کہ اللہ یہ چاہتا تھا کہ یوسف کے بھائی رنگے ہاتھوں پکڑے جائیں اور دونوں جرموں کا اقرار ایک ساتھ کریں اور نادم ہوں اور دونوں بھائی ایک جگہ ہوں۔ اور یہ سب کچھ جو یوسف کے بھائی کر رہے تھے ان کی غفلت کا ہی نتیجہ تھا۔

قارئین کو ایک بات سے ضرور بے چینی پیدا ہو رہی ہوگی کہ جب یعقوب کو یہ معلوم ہو گیا تھا کرتا دیکھ کر کہ یوسف زندہ ہے تو پھر تلاش کیوں نہ کیا اس کا جواب سورت کے آخیر میں لکھا جائے گا کہ حضرت نے اپنے پیارے بیٹے کو کیوں تلاش نہ کیا اور آیت ۶۷، ۶۸ سے بھی کچھ ظاہر ہو رہا ہے کہ یعقوبؑ کو علم ہو گیا تھا کہ عزیز مصر یوسف ہے۔

اور جب وہ لوگ مصر میں اس طرح داخل ہوئے جس طرح ان کے باپ نے حکم دیا تھا تو یہ ان کی ایک تدبیر تھی اگر اللہ کا حکم نہ ہو تو تدبیر بھی کچھ کام نہیں آ سکتی بات صرف اتنی تھی کہ یعقوب کے دل میں ایک خیال پیدا ہوا تھا جسے اس نے پورا کر دیا۔ بے شک وہ صاحب علم تھا جسے ہم نے علم دیا تھا (یعنی وہ یوسف کو جان گئے تھے اللہ کے دیے ہوئے علم سے) لیکن اکثر لوگ اس کی حقیقت نہیں جانتے (یوسف کے بھائی یوسف کو دیکھ کر بھی نہ جانے یہ ان کی غفلت ہی تو تھی) (۶۸)

اور جب وہ لوگ یوسف کے پاس پہنچے تو یوسف نے اپنے بھائی کو راستے میں ہی بتا دیا کہ میں تیرا وہی بھائی ہوں (جو

मैं तेरा वही भाई हूं (जो खो गया था) अब तू उन बातों का दुख न कर जो वह लोग करते रहे हैं (69)

کھویا گیا تھا) اب تو اُن باتوں کا غم نہ کر جو وہ لوگ کر تے رہے ہیں (۶۹)

जब यूसुफ ने भाईयो के सामान तैयार कर दिया और लदने को हुआ तो (किसी भाई ने अवसर पा कर परामर्श से) राजकीय कटोरा अपने छोटे भाई के सामान में रख दिया (फिर जब कटोरा न मिला) तो पुकारने वाले ने पुकार कर कहा ऐ यात्री दल वालों! क्या तुम चोर हो? (70) {12:75-83-89, 4:112}

جب یوسف نے بھائیوں کا سامان تیار کردیا اور لا نے کو ہوا تو (کسی بھائی نے موقع پا کر مشورے سے) شاہی پیالہ اپنے چھوٹے بھائی کے سامان میں رکھ دیا (پھر جب وہ پیالہ نہ ملا) تو پکارنے والے نے پکار کر کہا اے قافلے والو! کیا تم چور ہو؟ (۷۰) [۱۲:۷۵،۸۳،۸۹، ۴:۱۱۲]

नोट- प्रचलित अधिकांश अनुवादों में कटोरा रखने का कार्य महामना यूसुफ का बताया गया है और ईश्वर की सहायता अनुमोदन के साथ विचारणीय बात यह है क्या ईशदूत से इस अनुचित कर्म की आशा की जा सकती है कि स्वयं अनुचित कर्म कर के आरोप दूसरों पर रख दे और बिना पुष्टि के ही चोर सिद्ध कर दें? कुरआन से निर्णय लिया जाए क्या आदेश है,

نوٹ:۔ رائج الوقت اکثر تراجم میں پیالہ رکھنے کا کام حضرت یوسف کا بتایا گیا ہے اور اللہ کی تائید کے ساتھ غور طلب بات یہ ہے کیا رسول سے اس غلط کام کی امید کی جا سکتی ہے کہ خود غلط کام کر کے الزام دوسروں پر رکھ دے اور بنا تصدیق کے ہی چور ثابت کر دے؟ قرآن سے فیصلہ لیا جائے کیا حکم ہے.

(4:112) और जो व्यक्ति कोई त्रुटि या पाप करे फिर उसे किसी निर्दोष के सिर थोपे तो उसने एक बड़े दोषारोपण और पाप को अपने ऊपर लाद लिया,

(۴:۱۱۲) اور جو شخص کوئی خطا یا گناہ کرے پھر اسے کسی بے قصور کے سر تھوپے تو اس نے ایک بڑے بہتان اور صریح گناہ کو اپنے اوپر لاد لیا.

कितनी स्पष्ट शैली में बताया गया है कि स्वयं अपराध करके किसी निर्दोष के सिर थोपने वाला बड़ा अन्यायी है तो ऐसी स्थिति में यूसुफ अ० स्वयं कटोरा रखकर भाईयों को चोर क्यों बनाते वास्तव में यह कार्य उन भाईयों का ही था जिन्होंने पहले यूसुफ को अपने मार्ग से हटाया और अब छोटे भाई को हटाना चाहते थे (12:8) उनको ज्ञात था कि चोरी का दण्ड चोर को बन्दी बनाता है यही सोचकर कटोरा भाई के सामान में रख दिया जिससे भाई चोरी के दण्ड में बन्दी हो जाए और फिर हम ही रह जाएं और पिता का पूरा प्रेम हमारी ओर हो जाए जो लिखा गया है उसकी पुष्टि इसी सूरत की आयात कर रही है {12:70-80-89}

کتنے صاف انداز میں بتایا گیا ہے کہ خود گناہ کر کے کسی بے قصور کے سر تھوپنے والا بڑا ظالم ہے تو ایسی حالت میں یوسف خود پیالہ رکھ کر بھائیوں کو چور کیوں بناتے. حقیقت میں یہ کام ان بھائیوں کا ہی تھا جنہوں نے پہلے یوسف کو اپنے راستے سے ہٹایا اور اب چھوٹے بھائی کو ہٹانا چاہتے تھے ۱۲:۸. ان کو معلوم تھا کہ چوری کی سزا میں چور کو قید کرنا ہے یہی سوچ کر پیالہ بھائی کے سامان میں رکھ دیا جس سے بھائی چوری کی سزا میں قید ہو جائے اور پھر ہم ہی رہ جائیں. اور باپ کی پوری محبت ہماری طرف ہو جائے جو لکھا گیا ہے اس کی تصدیق اسی سورت کی آیات کر رہی ہیں [۱۲:۷۰،۸۰،۸۹]

वह पुकारने वालों की ओर मुड़े और ज्ञात किया तुम्हारी क्या वस्तु खो गई है (71)

وہ پکارنے والوں کی طرف مڑے اور پوچھا تمہاری کیا چیز کھوگئی ہے (۷۱)

वह बोले कि राजा के (पानी पीने का) गिलास खोया गया है और जो व्यक्ति उसको ले आए उसके लिए एक भार ऊंट (पुरस्कार) है और मैं उस का प्रतिभू हूं (72)

وہ بولے کہ بادشاہ کے (پانی پینے کا) گلاس کھویا گیا ہے اور جو شخص اس کو لے آئے اس کے لئے ایک بار شتر (انعام) ہے اور میں اس کا ضامن ہوں (۷۲)

उन लोगों ने कहा ईश्वर की शपथ तुम जानते हो कि हम इस देश में इस लिए नहीं आए कि विकार करें और हम चोर नहीं हैं (73)

ان لوگوں نے کہا اللہ کی قسم تم جانتے ہو کہ ہم اس ملک میں اس لئے نہیں آئے کہ خرابی کریں اور نہ ہم چور ہیں (۷۳)

बोले यदि तुम झूटे निकले (चोरी सिद्ध होने पर) तो उसका क्या दण्ड है (74)

بولے اگر تم جھوٹے نکلے (چوری ثابت ہونے پر) تو اس کی سزا کیا ہے (۷۴)

उन्होंने कहा चोर का दण्ड यह है कि जिसकी बोरी से चोरी का माल निकले वही उसकी सजा है (अर्थात चोरी के अपराध में पकड़ लिया जाए) हम ऐसे अन्यायीयों को यही दण्ड दिया करते हैं (75)

انہوں نے کہا چور کی سزا یہ ہے کہ جس کی بوری سے چوری کا مال نکلے وہی اس کی سزا ہے (یعنی چوری کے جرم میں پکڑا لیا جائے) ہم ایسے ظالموں کو یہی سزا دیا کرتے ہیں (۷۵)

तब यूसुफ ने अपने भाई से पहले उनकी बोरयों की खोज लेना आरम्भ किया फिर उसके भाई की बोरी से लुप्त कटोरा निकला (कटोरा निकलने पर भाईयों का उद्देश्य पूरा हो गया अर्थात छोटा भाई चोर सिद्ध हो गया) तब उन भाईयों ने कहा कि इसी प्रकार हमने यूसुफ के लिए बुरी योजना की थी, यदि भाई कटोरा भाई के सामान में ना रखते तो यूसुफ का यह काम न था कि राजा के नियम में अपने भाई को

تب یوسف نے اپنے بھائی سے پہلے ان کی بوریوں کی تلاشی لینا شروع کی. پھر اس کے بھائی کی بوری سے گم شدہ پیالہ برآمد ہوا (گلاس برآمد ہونے پر بھائیوں کا مقصد پورا ہوگیا یعنی چھوٹا بھائی چور ثابت ہوگیا) تب ان بھائیوں نے کہا کہ اسی طرح ہم نے یوسف کے لئے بُری تجویز کی تھی. اگر بھائی گلاس بھائی کے سامان میں نہ رکھتے تو یوسف کا یہ کام نہ

पकड़ता निःसंदेह ईश्वर की इच्छा यही थी (और कर भाई रहे थे) हम जिसके मान उच्च करना चाहते हैं कर देते हैं और एक ज्ञान रखने वाला ऐसा है जो हर ज्ञानी से उच्च है (76)

नोट- गिलास रखने के अपराध को अनुवादों में यूसुफ का कर्म ईश्वर की सहमति इच्छा से बताया गया है मानों अपराध ईश्वर ने कराया (ईश्वर की शरण) जबके वाक्य (कजालिका किदना लियूसुफ) से स्पष्ट विदित हो रहा है कि यह काम भाईयों ने किया जिसके लिए उन्होंने कहा कि ऐसा ही छल हमने यूसुफ के लिए किया था, इस धारा में यह भी शब्द है कि (इल्ला अईयशा अल्लाह) निःसंदेह ईश्वर की इच्छा यही थी जो हो गया इन शब्दों को देखने के लिए पूरी सूरत पर दृष्टि अनिवार्य है ईश्वर के कार्य ऐसे होते हैं जिसका किसी को ज्ञान नही होता और वह हो जाते हैं ऐसे ही यूसुफ के भाईयों को कुछ ज्ञान न था कि यूसुफ को हम कूप में डाल रहे हैं तो इसका क्या होगा, जब कूप में डाला तब ही ईश्वर ने यूसुफ से कहा एक समय आएगा जब तू उनको यह अपराध बताएगा वह अपने दुष कर्म के परिणाम से अनजान है यदि वह न डालते तो यूसुफ मिस्र आकर इस पद पर नियुक्त न होते मिस्र आकर उनकी हर प्रकार से सदाचारीता नैतिकता सामने आई जिससे उनको बहुत सम्मान मिला ऐसे ही भाईयों ने (12:8) के अनुसार छोटे भाई को यूसुफ की रक्षा में पहुंचा दिया अर्थात अब भाई भाई के पास हो गया अब सोतेले भाईयों से कोई आशंका शेष न रही और अब समय भी निकट आ गया था कि यूसुफ अपना भेद खोल दे

बड़े भाई छोटे भाई को इससे पूर्व भी हानी पहुंचा सकते थे, परन्तु ऐसा न हुआ और जब छोटे भाई को बड़े भाई के पास आना था तब भाईयों के मस्तिक में यह बात आई कि उसको यहां चोरी के आरोप में पकड़वा दो यह है ईश्वर का समर्थन न के अनुचित कार्य कराकर आरोप दूसरो पर रखा दें

सामान में गिलास किसने रखा था इस की पुष्टि के लिए (12:8,80,90) को देखा जाए जिस में भाईयों ने कहा था कि हमारे पिता को हमारे दो भाईयों से अधिक प्रेम है और यूसुफ अ० ने भाईयों से कहा कि तुमको ज्ञात है तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था, आयात अपने स्थान पर लिखी जाएगी,

تھا کہ بادشاہ کے قانون میں اپنے بھائی کو پکڑتا۔ یقیناً اللہ کی مرضی یہی تھی (اور کر بھائی رہے تھے) ہم جس کے درجے بلند کرنا چاہتے ہیں کر دیتے ہیں اور ایک علم رکھنے والا ایسا ہے جو ہر صاحب علم سے بالاتر ہے (۷۶)

نوٹ:۔ گلاس رکھنے کے جرم کو ترجموں میں یوسف کا کام اللہ کی تائید مرضی سے بتایا گیا ہے گویا جرم اللہ نے کرایا (نعوذ باللہ) جب کہ جملہ (کذالک کدنا لیوسف) سے صاف ظاہر ہو رہا ہے کہ یہ کام بھائیوں نے کیا جس کے لئے انہوں نے کہا کہ ایسا ہی مکر ہم نے یوسف کے لئے کیا تھا اس آیت میں یہ بھی لفظ ہے کہ (الا ان یشا اللہ) یقیناً اللہ کی مرضی یہی تھی جو ہو گیا ان لفظوں کو دیکھنے کے لئے پوری سورت پر نظر ضروری ہے اللہ کے کام ایسے ہوتے ہیں جس کا کسی کو علم نہیں ہوتا اور وہ ہو جاتے ہیں۔ ایسے ہی یوسف کے بھائیوں کو کچھ علم نہ تھا کہ یوسف کو ہم کنویں میں ڈال رہے ہیں تو اس کا کیا ہوگا۔ جب کنویں میں ڈالا تب ہی اللہ نے یوسف سے کہا ایک وقت آئے گا جب تو ان کو یہ حرکت بتائے گا۔ وہ اپنے فعل کے انجام سے بے خبر ہیں۔ اگر وہ نہ ڈالتے تو یوسف مصر آکر اس عہدے پر فائز نہ ہوتے مصر آکر ان کی ہر طرح سے ایمانداری اخلاق سامنے آ گیا۔ جس سے ان کو بہت عزت ملی ایسے ہی بھائیوں نے (۸:۱۲) کے مطابق چھوٹے بھائی کو یوسف کی حفاظت میں پہنچا دیا۔ یعنی اب بھائی بھائی کے پاس ہو گیا۔ اب سوتیلے بھائیوں سے کوئی خطرہ باقی نہ رہا اور اب وقت بھی قریب آ گیا تھا کہ یوسف اپنا راز کھول دے۔

بڑے بھائی چھوٹے بھائی کو اس سے پہلے بھی نقصان پہنچا سکتے تھے لیکن ایسا نہ ہوا اور جب چھوٹے بھائی کو بڑے بھائی کے پاس آنا تھا تب بھائیوں کے دماغ میں یہ بات آئی کہ اس کو یہاں چوری میں پکڑوا دو۔ یہ ہے اللہ کی تائید۔ نہ کہ غلط کام کرا کر الزام دوسروں پر رکھا دے۔

سامان میں گلاس کس نے رکھا تھا اس کی تصدیق کے لئے (۸:۱۲، ۸۰، ۹۰) کو دیکھا جائے جس میں بھائیوں نے کہا تھا کہ ہمارے باپ کو ہمارے دو بھائیوں سے زیادہ محبت ہے اور یوسف نے بھائیوں سے کہا کہ تم کو معلوم ہے تم نے یوسف اور اس کے بھائی کے ساتھ کیا کیا تھا۔ آیات اپنی جگہ پر لکھی جائیں گی۔

(यूसुफ के भाईयों ने) कहा कि यदि इस ने चोरी की हो तो कोई आश्चर्य की बात नही कि इससे पहले इसका भाई (यूसुफ) चोरी कर चुका है यूसुफ ने इस बात को अपने मन में छुपा लिया और उन पर प्रकट न होने दिया (केवल इतना कहा) तुम बुरे लोग हो और जो तुम वर्णन कर रहे हो ईश्वर इसे भली भांति जानता है (77)

(برادران یوسف نے) کہا کہ اگر اس نے چوری کی ہو تو کوئی تعجب کی بات نہیں کہ اس سے پہلے اس کا بھائی (یوسف) چوری کر چکا ہے۔ یوسف نے اس بات کو اپنے دل میں چھپا لیا اور ان پر ظاہر نہ ہونے دیا (صرف اتنا کہا) تم بُرے لوگ ہو اور جو تم بیان کر رہے ہو اللہ سے خوب جانتا ہے (۷۷)

वह कहने लगे कि ऐ अजीज इसके पिता बहुत बूढ़े हैं और इससे अधिक प्रेम करते हैं (इसको छोड़ दो) और हममें से इसके बदले किसी को रख लीजिए हम देखते हैं कि आप उपकार करने वाले हैं (78)

وہ کہنے لگے کہ اے عزیز اس کے والد بہت بوڑھے ہیں اور اس سے بہت محبت کرتے ہیں (اس کو چھوڑ دو) اور ہم میں سے اس کی جگہ کسی کو رکھ لیجئے ہم دیکھتے ہیں کہ آپ احسان کرنے والے ہیں (۷۸)

यूसुफ ने कहा ईश्वर की शरण! यह कैसे हो सकता है कि हम किसी दूसरे को पकड़ ले उसको छोड़कर जिसके पास हमारा सामान निकला है यदि ऐसा करें तो हम अत्याचारी हैं (79)

یوسف نے کہا اللہ کی پناہ! یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ ہم کسی دوسرے کو پکڑ لیں، اس کو چھوڑ کر جس کے پاس ہمارا سامان نکلا ہے اگر ایسا کریں تو ہم ظالم ہیں (۷۹)

फिर जब वह यूसुफ से निराश हो गए तो एक अलग स्थान पर परामर्श करने लगे सबसे बड़े ने कहा क्या नही जानते कि तुम्हारे पिता ने (बिन यमीन के बारे में) ईश्वर के नाम पर तुमसे पक्का वचन लिया है और (याद करो) इससे पहले यूसुफ के बारे में तुम कितना अत्याचार कर चुके हो तो जब तक मेरे पिता आज्ञा न दें मैं इस स्थान से न हिलूंगा या ईश्वर मेरे लिए कोई दूसरा निर्णय कर दें और वह सबसे उत्तम निर्णय करने वाला है, (80)

پھر جب وہ یوسف سے مایوس ہوگئے تو ایک الگ جگہ مشورہ کرنے لگے. سب سے بڑے نے کہا کیا نہیں جانتے کہ تمہارے والد نے (بن یامین کے بارے میں) اللہ کے نام پر تم سے پکا عہد لیا ہے اور (یاد کرو) اس سے پہلے یوسف کے بارے تم کتنی زیادتی کر چکے ہو. تو جب تک میرے باپ اجازت نہ دیں میں اس جگہ سے نہ ہلوں گا. یا اللہ میرے لئے کوئی دوسرا فیصلہ کردے اور وہ سب سے بہتر فیصلہ کرنے والا ہے (۸۰)

नोट- इस वाक्य ने स्पष्ट कर दिया कि सामान में गिलास भाईयों ने रखा था न कि यूसुफ ने अर्थात इस अपराध गिलास रखने वाले से पहले भी यूसुफ को कूप में डाला था,

نوٹ:۔ لے اس جملے نے صاف کردیا کہ سامان میں گلاس بھائیوں نے رکھا تھا نہ کہ یوسف نے یعنی اس قصور گلاس رکھنے والے سے پہلے بھی یوسف کو کنویں میں ڈالا تھا.

तुम लोग पिता की ओर जाओ और उनसे कहो कि तुम्हारे पुत्र ने चोरी की (और वह निरुद्ध हो गया) और हमने चोरी करते देखा नही, जो बात हमारे ज्ञान में आई वह हमने आपको बता दी और हम कोई परोक्ष को जानने वाले और उसके याद रखने वाले तो नहीं हैं (81)

تم لوگ باپ کی طرف لوٹ کر جاؤ اور ان سے کہو کہ تمہارے بیٹے نے چوری کی (اور وہ قید ہوگیا) اور ہم نے چوری کرتے دیکھا نہیں جو بات ہمارے علم میں آئی وہ ہم نے آپ کو بتادی اور ہم کوئی غیب داں اور اس کے یاد رکھنے والے تو ہیں نہیں (۸۱)

और आप उस नगरी (के लोगों) से ज्ञात कर लें जिसमें हम ठेहरे हुए थे और उस यात्री दल से ज्ञात कर लें जिसके साथ हम आए हैं, और विश्वास कीजिए कि हम सच कह रहें हैं (82)

اور آپ اس بستی (کے لوگوں) سے دریافت کرلیں جس میں ہم ٹھہرے ہوئے تھے اور اس قافلے سے پوچھ لیں جس کے ساتھ ہم آئے ہیں. اور یقین کیجئے کہ ہم سچ کہہ رہے ہیں (۸۲)

पिता ने यह कथा सुनकर कहा वास्तव में तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिए एक और बड़ी बात को सरल बना दिया, अच्छा इस पर भी धैर्य करूंगा अर्थात अपने साहस के साथ कष्टों का सामना करूंगा और भलि भांति करूंगा क्या सुदर (बईद) है कि ईश्वर उन सबको (बहुत जल्द) मुझसे ला मिलाए वह सब कुछ जानता है और उसके सब कार्य युक्ति पर आधारित हैं (83)

باپ نے یہ داستان سن کر کہا دراصل تمہارے ذہن نے تمہارے لئے ایک اور بڑی بات کو سہل بنادیا، اچھا اس پر بھی صبر کروں گا یعنی اپنی ہمت کے ساتھ مصائب کا مقابلہ لے کروں گا اور بخوبی کروں گا کیا بعید ہے کہ اللہ ان سب کو (بہت جلد) مجھ سے لا ملائے. وہ سب کچھ جانتا ہے اور اس کے سب کام حکمت پر مبنی ہیں (۸۲)

नोट- इसी प्रकार जब पहली बार यूसुफ के विषय में याकूब अ0 से कहा था कि यूसुफ को भेड़िया खा गया तब भी याकूब अ0 ने यही शब्द कहे थे अब थोड़ा विचार किया जाए कि एक नबी प्रतिज्ञा कर रहा है कि धैर्य करूंगा और वास्तव में नबी धैर्य वान होते हैं धैर्य ही करना चाहिए न कि शोक पर रोना आरम्भ कर दें और इतना रोएं कि आंखें जीर्ण होकर सफेद हो जाएं जैसा कि अनुवादों व तफसीरों में लिखा मिलता है कि याकूब ने शोक यूसुफ में रो रोकर आंखे जीर्ण कर ली थी? मानों वह ईशदौत्य का कार्य छोड़ कर रोते ही रहे होंगे? नही अपितु उन्होंने पूरे धैर्य से काम लिया और ईश्वर पर भरोसा किया और ईशदौत्य कार्य निष्पादन करते रहे धैर्य का अर्थ ही साहस के साथ कष्टों का सामना करना है न कि रोना,

لے نوٹ:۔ اسی طرح جب پہلی بار یوسف کے بارے میں یعقوبؑ سے کہا تھا کہ یوسف کو بھیڑیا کھا گیا تب بھی یعقوبؑ نے یہی الفاظ کہے تھے اب ذرا غور کیا جائے کہ ایک نبی عہد کر رہا ہے کہ صبر کروں گا اور حقیقت میں نبی صابر ہوتے ہیں صبر ہی کرنا چاہیے نہ کہ غم پر رونا شروع کردیں اور اتنا روئیں کہ آنکھیں خراب ہوکر سفید ہوجائیں جیسا کہ تراجم وتفاسیر میں لکھا ملتا ہے کہ یعقوب نے غم یوسف میں رو رو کر آنکھیں خراب کرلیں تھیں؟ گویا وہ نبوت کا کام چھوڑ کر روتے ہی رہے ہوں گے؟ نہیں بلکہ انہوں نے پورے صبر سے کام لیا اور اللہ پر بھروسہ کیا اور کار نبوت انجام دیتے رہے صبر کا مطلب ہی جوانمردی کے ساتھ مصائب کا مقابلہ کرنا ہے نہ کہ رونا.

फिर वह उनकी ओर से मुख फेर कर बैठ गए और कहने लगे ऐ यूसुफ और वह नियंत्रण ही कर रहे थे इन घटनाओं को सुन कर याकूब को इस व्याकूलता से मुक्ति मिली और इस हर्ष से उनकी आंखे चमक उठीं (अर्थात जिन आंखो में अब तक जुदाई का खेद टपक रहा था अब हर्ष से चमक आगई मानों सफेद हो गई) मानों वह देख रहे हैं कि मेरा यूसुफ मिलने वाला है और वह दुख से भर रहें थे (और स्थिति यह थी कि) वह दुख पर नियंत्रण कर रहे थे (84)

پھر وہ ان کی طرف سے منہ پھیر کر بیٹھ گئے اور کہنے لگے اے یوسف! اور وہ ضبط ہی کر رہے تھے ان واقعات کو سن کر یعقوب کو اس پریشانی سے نجات ملی اور اس خوشی سے ان کی آنکھیں چمک اٹھیں (یعنی جن آنکھوں میں اب تک جدائی کی حسرت ٹپک رہی تھی اب خوشی سے چمک آگئی گویا سفید ہوگئیں) گویا وہ دیکھ رہے ہیں کہ میرا یوسف ملنے والا ہے اور وہ غم سے بھر رہا تھا (حال یہ تھا کہ) وہ غم کو ضبط کر رہے تھے (۸۴)

पुत्रों ने कहा ईश्वर की शपथ आप तो बस यूसुफ

بیٹوں نے کہا واللہ آپ تو بس یوسف ہی کو یاد کرتے رہتے

ही को याद करते रहते हैं दशा यह आ सकती है कि इस दुख में अपने को धुला देंगे या अपनी जान वध कर लेंगे (85)

ہیں نوبت یہ آسکتی ہے کہ اس غم میں اپنے کو گھلا دیں گے یا اپنی جان ہلاک کرلیں گے (۸۵)

नोट- यदि याकूब अ० की आंखे दुख से रोते रोते सफेद हो गई थी तो कहा यह जाता कि आप ने अपने को शोक में धुला लिया जबकि कहा गया है कि आप अपने को धुला लेंगे या वध हो जाएंगे, इससे भी सिद्ध हो रहा है कि आपको शोक तो अवश्य था परन्तु इतना भी नही था कि रोते रोते अपनी आंखे ही सफेद कर ली थी मानों ज्योति समाप्त हो गई थी.

نوٹ:۔اگر یعقوبؑ کی آنکھیں غم سے روتے روتے سفید پڑگئیں تھیں تو کہا یہ جاتا کہ آپ نے اپنے کو غم میں گھلا لیا. جب کہ کہا گیا ہے کہ آپ اپنے کو گھلا لیں گے یا ہلاک ہوجائیں گے. اس سے بھی یہ ثابت ہورہا ہے کہ آپ کو غم تو ضرور تھا مگر اتنا بھی نہیں تھا کہ روتے روتے اپنی آنکھیں ہی سفید کرلیں تھیں گویا روشنی ختم ہوگئی تھی.

याकूब ने कहा (मेरे पुत्रों!) मैं अपने दुख दर्द की दुहाई ईश्वर से करता हूं और उस ईश्वर की ओर से जो बाते मैं जानता हूं तुम नही जानते (और फिर उन्होंने विश्वास के साथ कहा) (86)

یعقوب نے کہا (میرے بیٹو!) میں اپنے دکھ درد کی فریاد اللہ سے کرتا ہوں اور اس اللہ کی طرف سے جو باتیں میں جانتا ہوں تم نہیں جانتے (اور پھر انہوں نے یقین کے ساتھ کہا) (۸۶)

(याकूब अ० ने कहा) मेरे पुत्रों! जाकर यूसुफ और उसके भाई के खोजों (वह निःसंदेह मिल जाएंगे) ईश्वर की करूणा (रूह) से निराश न हो उसकी करूणा से तो बस नास्तिक ही निराश हुआ करते हैं (87)

(یعقوبؑ نے کہا) میرے بچو! جا کر یوسف اور اس کے بھائی کو تلاش کرلو (وہ یقیناً مل جائیں گے) اللہ کی رحمت سے مایوس نہ ہو اس کی رحمت سے تو بس کافر ہی مایوس ہوا کرتے ہیں (۸۷)

नोट- नबी के विवेक ने जान लिया था कि अजीज मिस्र और कोई नही अपितु मेरा यूसुफ है और उसके पास मेरा छोटा पुत्र सुरक्षा के साथ है महामना जान गए थे तब ही तो लड़कों से कहा था कि जाओ दोनों का पता करो वह तुमको मिल जाएंगे मैं अवगत हो गया हूं ईश्वर ने सूचना दे दी है.

نوٹ:۔ نبی کی فراست نے جان لیا تھا کہ عزیز مصر اور کوئی نہیں بلکہ میرا یوسف ہے اور اس کے پاس میرا چھوٹا بیٹا حفاظت کے ساتھ ہے حضرت جان گئے تھے تب ہی تو لڑکوں سے کہا تھا کہ جاؤ دونوں کا پتہ کرو وہ تم کو مل جائیں گے میں باخبر ہوگیا ہوں اللہ نے خبر دے دی ہے.

जब वह लोग यूसुफ के पास पहुंचे तो कहा ऐ अजीज़ हम और हमारे घर वाले बड़ी कठिनाई में ग्रस्त हैं हम इस बार थोड़ी पूंजी लाए हैं (इसे स्वीकार कीजिए) और अन्न की पूरी तोल हमें दे दीजिए और (इसे) दान (समझ कर) हमें दी दीजिए ईश्वर दान करने वालों को (बड़ा) पारि श्रमिक देता है (88)

جب وہ لوگ یوسف کے پاس پہنچے تو کہا اے عزیز! ہم اور ہمارے گھر والے بڑی سختی میں مبتلا ہیں ہم اس مرتبہ تھوڑی پونجی لائے ہیں (اسے قبول کیجئے اور) غلہ کی پوری تول عنایت کیجئے اور (اسے) خیرات (سمجھ کر) ہمیں دے دیجئے اللہ خیرات کرنے والوں کو (بڑا) اجر دیتا ہے (۸۸)

नोट- आयत में स्वंय ईशदूत की सन्तान अपने मुख से दान मांग रही है तो इससे सिद्ध हुआ कि निर्धनता की दशा में आदम की सन्तान चाहे वह कोई हो दान धर्मादाय दी जा सकती है इस के विपरीत हमारे यहां आस्था कुछ और है इस पर यह आपत्ति हो सकती है कि याकूब अ० का धर्म विधान और मुहम्मद स० का धर्म विधान पृथक पृथक है परन्तु यह कथन मिथ्या है कुरआन यह कहता है कि जो धर्म विधान हमने पहले ईशदूतों को दिया था ऐ मुहम्मद स० वही धर्म विधान आप को दिया है {42:13, 87:18-19, 26:196,197, 46:9, 4:26, 6:83से90, 4:87}

نوٹ:۔آیت میں خود نبی کی اولاد اپنی زبان سے خیرات مانگ رہی ہے تو اس سے ثابت ہوا کہ غربت کی حالت میں اولاد آدم چاہے وہ کوئی ہو کو خیرات زکوٰۃ دی جاسکتی ہے اس کے باوجود ہمارے یہاں عقیدہ کچھ اور ہے. اس پر یہ اعتراض ہوسکتا ہے کہ یعقوبؑ کی شریعت اور محمدؐ کی شریعت الگ الگ ہیں لیکن یہ قول غلط ہے قرآن یہ کہتا ہے کہ جو شرع ہم نے پہلے نبیوں کو دی تھی اے محمدؐ وہ شرع تم کو دی ہے [۴۲:۱۳؛ ۸۷:۱۸،۱۹؛ ۲۶:۱۹۶،۱۹۷؛ ۴۶:۹؛ ۴:۲۶؛ ۶:۸۳تا۹۰؛ ۴:۸۷]

यह सुनकर महामना यूसुफ अ० से न रहा गया नबी की करूणा आवेश में आ गई और अब समय भी आ गया था कि अपने को प्रकट कर दें क्योंकि भाईयों की जीर्ण दशा देख कर आपका हृदय भर (आया) यूसुफ ने कहा तुम्हें कुछ याद है कि तुमने यूसुफ और उस के भाई बिन यमीन के साथ क्या किया था जब कि तुम मुर्ख अचेतना में थे? (89) {12:8-70, 12:76-80-15, 4:112}

(یہ سن کر حضرت یوسف سے نہ رہا گیا نبی کی رحمت بھائیوں کی خراب حالت دیکھ کر جوش میں آ گئی اور اب وقت بھی آ گیا تھا کہ اپنے کو ظاہر کردیں کیوں کہ بھائیوں کی خراب حالت دیکھ کر آپ کا دل بھر آیا) یوسف نے کہا تمہیں کچھ یاد ہے کہ تم نے یوسف اور اس کے بھائی بن یامین کے ساتھ کیا کیا تھا جب کہ تم غفلت میں تھے؟ (۸۹) [۱۲:۸،۷۰؛ ۱۲:۷۶،۸۰،۱۵؛ ۴:۱۱۲]

वह चौंक कर बोले अच्छा आप यूसुफ हैं? उसने कहा हां मैं यूसुफ हूं और यह मेरा भाई है, ईश्वर ने हम पर बड़ा उपकार किया सत्य यह है कि यदि कोई संयम और धैर्य से काम ले तो ईश्वर के यहां ऐसे सदाचारी लोगों का प्रतिदान मारा नहीं जाता (90)

وہ چونک کر بولے اچھا آپ یوسف ہیں؟ اس نے کہا ہاں میں یوسف ہوں اور یہ میرا بھائی ہے. اللہ نے ہم پر بڑا احسان فرمایا. حقیقت یہ ہے کہ اگر کوئی تقویٰ اور صبر سے کام لے تو اللہ کے یہاں ایسے نیک لوگوں کا اجر مارا نہیں جاتا (۹۰)

उन्होंने कहा ईश्वर की शपथ तुमको ईश्वर ने हम पर श्रेष्ठता दी और निःसंदेह हम अपराधी हैं (91)

انہوں نے کہا اللہ کی قسم تم کو اللہ نے ہم پر فضیلت بخشی اور بے شک ہم خطا کار ہیں (۹۱)

नोट- गिलास किसने रखा इन दोनों धाराओ से पुष्टि हो गई है क्या? यूसुफ ने ज्ञात किया कि तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया इसके उत्तर में भाईयों ने स्वीकार किया कि हम अपराधी हैं यदि छोटे भाई के सामान में गिलास भाई न रखते तो उत्तर में दोनों बातों का अंगीकार न करते हुए यह कहना था कि हमने यूसुफ के साथ तो छल किया था, परन्तु गिलास हमने नही रखा यह न कहते हुए उन्होंने दोनों अपराधों को अंगीकार किया तो सिद्ध हुआ कि गिलास यूसुफ ने नही रखा था और वास्तव में कोई भी सदाचारी व्यक्ति अपराध स्वंय करके दूसरों पर आरोप नही रखने का कहां एक नबी नबी का स्थान देखते हुए हमारे उलमा कराम धाराओं का अनुवाद करते और व्याख्या करते न कि यहूद के कथनों से {12:8-70 -76-80, 12:15-90-91}

نوٹ:۔ گلاس کس نے رکھا ان دونوں آیتوں سے تصدیق ہو رہی ہے کیا؟ یوسف نے معلوم کیا کہ تم نے یوسف اور اس کے بھائی کے ساتھ کیا کیا۔اس کے جواب میں بھائیوں نے اقرار کیا کہ ہم خطا کار ہیں اگر چھوٹے بھائی کے سامان میں گلاس بھائی نہ رکھتے تو جواب میں دونوں باتوں کا اقرار نہ کرتے ہوئے یہ کہنا تھا کہ ہم نے یوسف کے ساتھ تو فریب کیا تھا مگر گلاس ہم نے نہیں رکھا یہ نہ کہتے ہوئے انہوں نے دونوں قصوروں کا اقرار کیا تو ثابت ہوا کہ گلاس یوسف نے نہیں رکھا تھا۔اور حقیقت میں کوئی بھی نیک آدمی غلطی خود کر کے دوسروں پر الزام نہیں رکھنے کا۔کہاں ایک نبی نبی کا مقام دیکھتے ہوئے ہمارے علماکرام آیتوں کا ترجمہ کرتے اور تفسیر کرتے نہ کہ یہود کی روایات سے۔[۱۲:۸، ۷۰، ۷۶، ۸۰، ۱۵، ۹۰، ۹۱]

यूसुफ अ0 ने कहा आज तुम पर कोई पकड़ नही ईश्वर तुम्हें क्षमा करे वह सबसे बढ़कर दया करने वाला है (92)

یوسف نے کہا آج تم پر کوئی گرفت نہیں اللہ تمہیں معاف کرے۔ وہ سب سے بڑھ کر رحم فرمانے والا ہے (۹۲)

नोट-यह है 'हित्तुन' का अर्थ और यही मुहम्मद स0 और सहाबा कराम ने विज्य मक्का और दूसरी फतूहात के अवसर पर किया था और मुसलमानों को यही आदेश है.

نوٹ:۔ یہ ہے حطۃ کا مطلب اور یہی محمدؐ اور صحابہ کرام نے فتح مکہ اور دوسری فتوحات کے موقع پر کیا تھا اور مسلمانوں کو یہی حکم ہے۔

यूसुफ ने कहा जाओ मेरा यह कुरता ले जाओ और मेरे पिता के सामने प्रस्तुत कर देना वह विश्वास करने वालों में से हो जाएंगे (कि यह कुरता मेरे यूसुफ का है) और अपने सब परिवार को मेरे पास ले आओ (93)

یوسف نے کہا جاؤ میرا یہ کرتا لے جاؤ اور میرے والد کے منہ کے سامنے پیش کر دینا وہ یقین کرنے والوں میں سے ہو جائیں گے (کہ یہ کرتا میرے یوسف کا ہے) اور اپنے سب اہل وعیال کو میرے پاس لے آؤ (۹۳)

जब यात्री दल (मिस्र से) चला तो उनके पिता ने (किनआन में) कहा मैं यूसुफ की सुगन्ध अनुभूत कर रहा हूं तुम लोग यह न कहने लगो कि मैं बुढ़ापे में सठया गया हूं (94)

جب قافلہ (مصر سے) چلا تو ان کے باپ نے (کنعان میں) کہا میں یوسف کی خوشبو محسوس کر رہا ہوں تم لوگ یہ نہ کہنے لگو کہ میں بڑھاپے میں سٹھیا گیا ہوں (۹۴)

घर के लोग बोले ईश्वर की शपथ आप अभी तक अपनी पुरानी खोज में हैं (95)

گھر کے لوگ بولے اللہ کی قسم آپ ابھی تک اپنی پرانی تلاش میں ہیں (۹۵)

फिर जब शुभ सूचना लाने वाला आया तो उसने यूसुफ का कुरता याकूब अ0 के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया और वह विश्वास करने वाले पाए गए (कुरता देखकर जब पूरा नेत्र विश्वास आ गया कि वही मेरा यूसुफ है जिसको मैंने समझा था) तब उसने कहा मैं तुमसे कहता न था कि मैं ईश्वर की ओर से वह कुछ जानता हूं जो तुम नही जानते (96)

پھر جب خوشخبری لانے والا آیا تو اس نے یوسف کا کرتا یعقوبؑ کے سامنے پیش کر دیا اور وہ یقین کرنے والے پائے گئے (کرتا دیکھ کر جب پورا عین الیقین آ گیا کہ وہی میرا یوسف ہے جس کو میں نے سمجھا تھا) تب اس نے کہا میں تم سے کہتا نہ تھا کہ میں اللہ کی طرف سے وہ کچھ جانتا ہوں جو تم نہیں جانتے (۹۶)

सब बोल उठे पिता जी हमारे अपराधों की क्षमा की प्रार्थना करें वास्तव में हम अपराधी हैं (97)

سب بول اٹھے ابا جان ہمارے گناہوں کی بخشش کی دعا کریں واقعی ہم خطا کار ہیں (۹۷)

याकूब अ0 ने कहा मैं अपने रब से तुम्हारे पापों की शीघ्र क्षमा की प्रार्थना करूंगा वह बड़ा क्षमा करने वाला और रहीम है (98)

یعقوبؑ نے کہا میں اپنے رب سے تمہارے گناہوں کی جلد معافی کی درخواست کروں گا وہ بڑا معاف کرنے والا اور رحیم ہے (۹۸)

नोट- इससे पहले दो ईशदूतों की बात दूर रह कर संकेतों से हो रही थी और उन संकेतो का यह परिणाम हुआ कि महामना याकूब अ0 ने अपने छोटे पुत्र को बिला आशंका व भय अपराधी पुत्रों के साथ प्रेषित कर दिया फिर उन्ही पुत्रों से कहा जाओ दोनों को खोजो वह मिल जाएंगे और वह मिल गए उधर से पूरा विश्वास दिलाने के लिए यूसुफ

نوٹ:۔ اس سے پہلے دو نبیوں کی بات دور رہ کر اشاروں سے ہو رہی تھی اور ان اشاروں کا یہ نتیجہ ہوا کہ حضرت یعقوبؑ نے اپنے چھوٹے بیٹے کو بلا خوف وخطر خطا کار بیٹوں کے ساتھ روانہ کر دیا پھر انہیں بیٹیوں سے کہا جاؤ دونوں کو تلاش کرو وہ مل جائیں گے اور وہ مل گئے۔ادھر سے پورا یقین دلانے کے لئے جو یوسف نے

ने एक और संदेश प्रेषित किया अर्थात अपना कुरता इस कुरते पर कुछ समृद्धता के चिन्ह थे दूसरी बात यह कि वही भाई पहले एक कुरतो पिता के पास ले गए थे और कहा था कि यूसुफ को भेड़या खा गया, परन्तु याकूब ने उनकी बात पर विश्वास नही किया था चूंकि कुरता फटा नही था, इसबार भी यूसुफ के जीवित होने के प्रमाण के लिए वही भाई पिता के पास कुरता लेकर आ रहें हैं जिस पर पिता विश्वास कर लेंगे.

ایک اور پیغام روانہ کیا یعنی اپنا کرتا.اس کرتے پر کچھ نشانات امارت تھے دوسری بات یہ کہ وہی بھائی پہلے ایک کرتا باپ کے پاس لے گئے تھے اور کہا تھا کہ یوسف کو بھیڑیا کھا گیا.لیکن یعقوب نے ان کی بات پر یقین نہیں کیا تھا.چونکہ کرتا پھٹا نہیں تھا.اس بار بھی یوسف کے زندہ ہونے کے ثبوت کے لئے وہی بھائی باپ کے پاس کرتا لےکر آرہے ہیں جس پر باپ یقین کرلیں گے.

जब वह लोग मिस्र से कुरता ले कर किन आन को चले थे तो याकूब ने कहा कि मैं यूसुफ की सुगंध अनुभूत कर रहा हूं? इसलिए कि याकूब को आभास हो चुका था कि अब यूसुफ अधिक दिनों तक मुझे अनजान न रहने देगा, अब की बार अवश्य अपनी विश्वासनिय सूचना देगा, अतः याकूब ने अनुमान करके कि इतने दिनों में मेरे पुत्र मिस्र पहुचेंगे और कितना रुक कर चलेंगे यह सब अनुमान करके तब कहा था कि मैं यूसुफ की सुगंध अनुभूत कर रहा हूं यह सुनकर घर वालों ने कहा कि भला इतने दिनों तक यूसुफ का कुछ पता नही चला यूसुफ कहां जीवित होगा यदि जीवित होता तो अता आता आप अपनी उस पुरानी खोज में हैं न कि पुरानी सनक पराचीन विकार में, जैसा कि हर अनुवाद में लिखा गया है.

جب وہ لوگ مصر سے کرتا لےکر کنعان کو چلے تھے تو یعقوبؑ نے کہا کہ میں یوسف کی خوشبو محسوس کررہا ہوں؟اس لئے کہ یعقوب کو احساس ہو چکا تھا کہ اب یوسف زیادہ دنوں تک مجھے بےخبر نہ رہنے دےگا.اب کی بار ضرور اپنی یقینی خبر دےگا.اس لئے یعقوبؑ نے یہ اندازہ کرکے کہ اتنے دنوں میں میرے بیٹے مصر پہنچیں گے اور کتنا رک کر چلیں گے.یہ سب اندازہ کرکے تب کہا تھا کہ میں یوسف کی خوشبو محسوس کررہا ہوں.یہ سن کر گھر والوں نے کہا کہ بھلا اتنے دنوں تک یوسف کا کچھ پتہ نہیں چلا یوسف کہاں زندہ ہوگا اگر زندہ ہوتا تو آتا.اس لئے آپ اپنی اسی پرانی تلاش میں ہیں نہ کہ پرانے خبط میں.قدیم غلطی میں جیسا کہ عام ترجموں میں لکھا گیا ہے.

जब शुभ सूचना लाने वाला आया और कुरता सामने प्रस्तुत किया तो महामना को नेत्र विश्वास आ गया कि मेरा यूसुफ जीवित है और मिस्र का शासक है, और फिर कहा कि देखो मैं न कह रहा था कि यूसुफ की सुगंध अनुभूत कर रहा हूं, और यह सब कुछ उस ज्ञान के आधार पर कहा था जो मेरे ईश्वर ने मुझे दिया है, उस बुद्धि से ही मैंने यह जान लिया था जिससे आप लोग अनजान है.

جب خوشخبری لانے والا آیا اور کرتا سامنے پیش کیا تو حضرت کو اب عین الیقین آگیا کہ میرا یوسف زندہ ہے اور مصر کا حاکم ہے اور پھر کہا کہ دیکھو میں نہ کہہ رہا تھا کہ یوسف کی خوشبو محسوس کررہا ہوں اور یہ سب کچھ اس علم کی بنا پر کہا تھا جو میرے اللہ نے مجھے دیا ہے.اس عقل سے ہی میں نے یہ جان لیا تھا جس سے آپ لوگ بےخبر ہیں.

(यूसुफ की इच्छानुसार याकूब अ० और उसके परिवार के लोग मिस्र की ओर चल दिए फिर जब वह लोग नगर से बाहर) यूसुफ से मिले तो उसने अपने माता पिता को (सम्मान से) अपने पास स्थान दिया और कहा नगर की ओर चलो ईश्वर ने चाहा तो वहां आप आराम से रहेंगे (99)

(یوسف کی خواہش کے مطابق یعقوب اور اس کے خاندان کے لوگ مصر کی طرف روانہ ہوگئے تھے پھر جب وہ لوگ شہر سے باہر)یوسف سے ملے تو اس نے اپنے والدین کو (عزت سے)اپنے پاس جگہ دی اور کہا شہر کی طرف چلئے اللہ نے چاہا تو وہاں آپ آرام سے رہیں گے(۹۹)

(नगर में प्रविष्ट होने के बाद) यूसुफ ने अपने माता पिता को अपने पास सिंहासन पर बिठाया और (सब ने यह विश्वास दिलाया कि आपने जो नियम बनाए हैं हम सब उनका सम्मान करेंगे और सब उस नियम के आधीन हो गए और मिस्र वालों ने यूसुफ के माता पिता भाईयों का सम्मान किया और उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि हम उनके साथ कोई विदेशी जैसा व्यवहार नही करेंगे) तब यूसुफ ने कहा पिता जी यह स्वपन फल है मेरे उस स्वपन का जो मैंने पहले बचपन में देखा था मेरे रब ने उसे यर्थाथ बना दिया, उसकी कृपा है कि उसने मुझे कारागार से निकाला और आप लोगों को मरुस्थल से लाकर मुझसे मिलाया यद्यपि शैतान मेरे और मेरे भाईयों के बीच विकार डाल चुका था सत्य यह है कि मेरा रब अदृश्य उपाय से अपनी इच्छा पूरी करता है (जिसको कोई इन्सान पहले से नही जानता हां जो ईश्वर के सदाचारी बन्दे होते हैं वह उन घटनओ पर धैर्य से काम लेते हैं और ईश्वर से उम्मीदें रखते हैं यह सब अच्छा ही होगा, और अपना कर्तव्य जो ईश्वर ने उनको समर्पित किया है बराबर करते रहते हैं जैसा याकूब अ० यूसुफ अ० ने किया) निःसंदेह वह ज्ञानी और नीतिज्ञ हैं (100) {12:22,6}

(شہر میں داخل ہونے کے بعد)یوسف نے اپنے والدین کو اپنے پاس تخت پر بٹھایا اور(سب نے یہ یقین دلایا کہ آپ نے جو قانون بنائے ہیں ہم سب ان کا احترام کریں گے اور سب اس قانون کے تابع ہو گئے اور اہل مصر یوسف کے والدین بھائیوں کی تعظیم بجا لائے اور انہوں نے یہ یقین دلایا کہ ہم ان کے ساتھ کوئی غیر ملکی جیسا سلوک نہیں کریں گے)تب یوسف نے کہا ابا جان یہ تعبیر ہے میرے اس خواب کی جو میں نے پہلے بچپن میں دیکھا تھا.میرے رب نے اسے حقیقت بنادیا.اس کا احسان ہے کہ اس نے مجھے قید خانے سے نکالا اور آپ لوگوں کو صحرا سے لاکر مجھ سے ملایا.حالانکہ شیطان میرے اور میرے بھائیوں کے درمیان فساد ڈال چکا تھا.واقعہ یہ ہے کہ میرا رب غیر محسوس تدبیروں سے اپنی مشیت پوری کرتا ہے(جس کو کوئی انسان پہلے سے نہیں جانتا.ہاں جو اللہ کے نیک بندے ہوتے ہیں وہ ان واقعات پر صبر سے کام لیتے ہیں اور اللہ سے امید رکھتے ہیں یہ سب اچھا ہی ہوگا.اور اپنا فرض جو اللہ نے ان کے سپرد کیا ہے برابر انجام دیتے رہتے ہیں جیسا یعقوبؑ و یوسفؑ نے کیا)بے شک وہ

सदाचारी मानव सदैव ईश्वर की आज्ञाकारी करते हैं इसलिए वह व्याकूलतओं से निकल जाते हैं और अवज्ञा उन में समाप्त हो जाते हैं.

علیم اور حکیم ہے(۱۰۰)[۱۲:۲۲:۶،۲] نیک آدمی ہمیشہ اللہ کی فرمانبرداری کرتے ہیں اس لئے وہ پریشانیوں سے نکل جاتے ہیں اور نافرمان ان میں ختم ہو جاتے ہیں۔

ऐ मेरे रब तूने मुझे शासन दिया और मुझको बातों की गहराई तक पहुंचना सिखाया पृथ्वी व आकाश के बनाने वाले तू ही दुनिया और परलोक में मेरा अभिभावक है मेरी समापित अर्थात मृत्यू इस्लाम पर कर और अपने सदाचारी बन्दों में मुझे मिला (101)

اے میرے رب تو نے مجھے حکومت بخشی اور مجھ کو باتوں کی تہہ تک پہنچنا سکھایا۔ زمین وآسمان کے بنانے والے تو ہی دنیا اور آخرت میں میرا سرپرست ہے میرا خاتمہ یعنی موت اسلام پر کر اور اپنے نیک بندوں میں مجھے ملا (۱۰۱)

(ऐ नबी) यह समाचार परोक्ष में से हैं जो हम तुम्हारी ओर प्रेषित करते है, और जब यूसुफ के भाईयों ने अपनी बात पर सहमती की थी और वह (यूसुफ और बिन यामीन के साथ) छल कर रहे थे तो तुम उनके पास न थे (102)

(اے نبیؐ) یہ خبریں غیب میں سے ہیں جو ہم تمہاری طرف بھیجتے ہیں اور جب برادران یوسف نے اپنی بات پر اتفاق کیا تھا وہ (یوسف اور بن یامین کے ساتھ) فریب کر رہے تھے تو تم ان کے پاس نہ تھے(۱۰۲)

और बहुत से आदमी चाहे तुम (कितनी ही) इच्छा करो विश्वास लाने वाले नही है (103)

اور بہت سے آدمی گو تم (کتنی ہی) خواہش کرو ایمان لانے والے نہیں ہیں(۱۰۳)

और तुम उनसे इस (सुधार करने का) कुछ बदला भी तो नही मांगते यह (कुरआन) निःसंदेह सम्पूर्ण संसार के लिए शिक्षा है (104)

اور تم ان سے اس (اصلاح کرنے کا) کا کچھ بدلہ بھی تو نہیں مانگتے یہ (قرآن) یقیناً تمام عالم کے لئے نصیحت ہے(۱۰۴)

आकाशों और पृथ्वी में (ईश्वर की प्रभुत्ता की) कितनी ही स्मृतियां है जिन पर उनका गमन होता है परन्तु वह उन पर ध्यान नही देते (105)

آسمانوں اور زمین میں (اللہ کی قدرت کی) کتنی ہی نشانیاں ہیں جن پر ان کا گزر ہوتا ہے لیکن وہ ان پر دھیان نہیں دیتے(۱۰۵)

और उनमें से अधिकांश ईश्वर पर विश्वास नही रखते और निःसंदेह वह अनेकेश्वर वाद करते है (106)

اور ان میں سے اکثر اللہ پر ایمان نہیں رکھتے اور یقیناً وہ شرک کرتے ہیں(۱۰۶)

क्या वह इससे निडर हैं कि ईश्वर का दण्ड अवतरित हो कर उनको ढांप ले या उन पर अचानक महा प्रलय आ जाए और उन्हें सूचना भी न हो (107)

کیا وہ اس سے بے خوف ہیں کہ اللہ کا عذاب نازل ہو کر ان کو ڈھانپ لے یا اُن پر اچانک قیامت آجائے اور انہیں خبر بھی نہ ہو(۱۰۷)

कहो मेरा मार्ग तो यह है मैं ईश्वर की ओर बुलाता हूं और मेरे अनुगामी सब बुद्धि और अंर्तदृष्टि पर है और ईश्वर पवित्र है, और मैं अनेकेश्वर वाद करने वालों में से नही हूं (108)

کہو میرا رستہ تو یہ ہے میں اللہ کی طرف بلاتا ہوں میں اور میرے پیرو سب عقل و بصیرت پر ہیں اور اللہ پاک ہے اور میں شرک کرنے والوں میں سے نہیں ہوں(۱۰۸)

और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे नगर वालों में से निःसंदेह वह पुरुष ही थे, जिनकी ओर हम वही प्रेषित करते थे, क्या उन लोगों ने देश में भ्रमण नही की कि देख लेते कि जो लोग उनसे पहले थे उनका परिणाम क्या हुआ और सदाचारियों के लिए परलोक का घर बहुत अच्छा है क्या तुम समझते नही (109) {16:43, 22:52;75:20;20:13;41:6}

اور ہم نے تم سے پہلے جتنے رسول بھیجے اہل شہروں میں سے یقیناً وہ مرد ہی تھے جن کی طرف ہم وحی بھیجتے تھے کیا ان لوگوں نے ملک میں سیر نہیں کی کہ دیکھ لیتے کہ جو لوگ ان سے پہلے تھے ان کا انجام کیا ہوا اور متقیوں کے لئے آخرت کا گھر بہت اچھا ہے کیا تم سمجھتے نہیں (۱۰۹) [۱۶:۴۳:۲۲:۵۲:۷۵:۲۰:۱۳:۴۱:۶]

यहां तक कि जब उन लोगों की हठधर्मों के कारण ईश्वर के रसूल उनकी ओर से निराश हो गए प्रकट कारणों की आशा न रही, और वह लोग समझे कि ईशदूतों ने उनसे मिथ्या कहा था उस समय हमारी सहायता आई तो जिसे हमारे नियम ने चाहा उसे बचा लिया और हमारा कष्ट पापीयों से फैरा नही जाएगा, (110) {33:12} देखो

یہاں تک کہ جب ان لوگوں کی ہٹ دھرمی کی وجہ سے اللہ کے رسول ان کی طرف سے مایوس ہو گئے ظاہری اسباب کی امید نہ رہی اور وہ لوگ سمجھے کہ رسولوں نے ان سے غلط کہا تھا۔ اس وقت ہماری مدد آئی تو جسے ہمارے قانون نے چاہا اسے بچا لیا گیا۔ اور ہمارا عذاب مجرم لوگوں سے پھیرا نہیں جائے گا۔(۱۱۰) [۳۳:۱۲] دیکھو

उनकी कथा में बुद्धिमानों के लिए शिक्षा है यह

اُن کے قصے میں عقلمندوں کے لئے عبرت ہے یہ (قرآن)

(कुरआन) ऐसी बात नही है जो बनाई गई हो अपितु जो पुस्तके इससे पहले है सुरक्षा के मध्य उनकी पुष्टि करने वाला है और हर वस्तु का विवरण करने वाला और आस्तिकों के लिए शिक्षा और करुणा है(111){6:155-156,10:38,16:89}

ایسی بات نہیں ہے جو بنائی گئی ہو. بلکہ جو (کتابیں) اس سے پہلے ہیں حفاظت کے درمیان ان کی تصدیق کرنے والا ہےاور ہر چیز کی تفصیل کرنے والا اور مومنوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے(۱۱۱)[۶:۱۵۵،۱۵۶،۱۰:۳۸،۱۶:۸۹]

नोट- महामना यूसुफ की कथा पूरी हो गई जो कुरआन में एक स्थान ही आयी है इस विषय में कुछ बाते लिखी जा रही है? इसलिए कि हमारे यहां और बातों की भांति यह भी कुछ विचित्र ढंग से लिखी गई है वैसे यह बाते ऊपर ही विस्तार से लिख दी गई है तब भी संक्षिप्त लिख रहा हूं.

نوٹ :۔حضرت یوسف کا قصہ پورا ہوگیا جو قرآن میں ایک جگہ ہی آیا ہے.اس بارے میں کچھ باتیں لکھی جا رہی ہیں؟اس لئے کہ ہمارے یہاں اور باتوں کی طرح یہ بھی کچھ عجیب ڈھنگ سے لکھا گیا ہےویسے یہ باتیں اوپر ہی تفصیل سے لکھ دی گئیں ہیں تب بھی مختصر لکھ رہا ہوں.

(1) यूसुफ के भाईयों ने यूसुफ और बिन यमीन दोनों के लिए योजना बनाई थी कि उनको पिता से पृथक करना है, इस योजना के अनुसार यूसुफ अ0 को उन्होंने कूप में डाल दिया और छोटे भाई बिन यमीन को मिस्र में चोरी के आरोप में पकड़वा दिया यह कार्य करते समय यूसुफ के भाईयों पर अचेतना का आवरण पड़ा हुआ था यदि अचेतना में न होते तो वह यह विचार कर लेते कि यूसुफ कोई छोटा बच्चा न थे वह हर बात को जो भाईयों ने उनके साथ किया वह जान रहे थे अतः उनको अपने मुख से बताना सरल था और जब यूसुफ ने बताया तो भेद प्रकट हो गया, इसलिए उनकी बुद्धि मारी गई थी, परन्तु यह होना था ईश्वर को यही स्वीकृत था कर भाई रहे थे, बिन यमीन के सामान में गिलास रखते समय भी वह अचेतना में थे. {12:8}

(۱) یوسف کے بھائیوں نے یوسف اور بن یمین دونوں کے لئے منصوبہ بنایا تھا کہ ان کو والد سے الگ کرنا ہے.اس منصوبے کے مطابق یوسف کو انہوں نے کنویں میں ڈال دیا اور چھوٹے بھائی بن یمین کو مصر میں چوری کے الزام میں پکڑوا دیا. یہ کام کرتے وقت یوسف کے بھائیوں پر غفلت کا پردہ پڑا ہوا تھا اگر غفلت میں نہ ہوتے تو وہ یہ خیال کر لیتے کہ یوسف کوئی چھوٹا بچہ نہ تھے وہ ہر بات کو جانتے تھے اس لئے وہ اس عمل کو جو بھائیوں نے ان کے ساتھ کیا وہ جان رہے تھے اس لئے ان کو اپنی زبان سے بتانا آسان تھا.اور جب یوسف نے بتایا تو راز ظاہر ہوگیا اس لئے ان کی عقل ماری گئی تھی مگر یہ ہونا تھا اللہ کو یہی منظور تھا.کر بھائی رہے تھے.بن یمین کے سامان میں گلاس رکھتے وقت بھی وہ غفلت میں تھے(۱۲:۸)

(2) महामना याकूब अ0 के विषय में लिखा गया है कि यूसुफ के शोक में इतने रोए कि उनकी आंखे नेत्र ज्योति से वंचित हो गई, जबकि यह मिथ्या है महामना को दुख तो अवश्य था परन्तु उन्होंने कहा कि मैं धैर्य करूंगा और उन्होंने धैर्य किया और जो कर्तव्य उनको समर्पित था अर्थात धर्म का प्रचार वह बराबर करते रहे, यदि वह शोक में रोते रहते तो यह कर्तव्य ईशदौत्य पूरा नही होता परन्तु नबी अपने कर्तव्य से अचेत नही होते.

(۲) حضرت یعقوبؑ کے بارے میں لکھا گیا ہے کہ غم یوسف میں اتنے روئے کہ ان کی آنکھیں بینائی سے محروم ہوگئیں جب کہ یہ غلط ہے.حضرت کو غم تو ضرور تھا مگر انہوں نے کہا کہ میں صبر کروں گا اور انہوں نے صبر ہی کیا اور جو فریضہ ان کے سپرد تھا یعنی تبلیغ دین وہ برابر انجام دیتے رہے.اگر وہ غم میں روتے رہتے تو یہ فرض نبوت پورا نہیں ہوتا.مگر نبی اپنے فرض سے غافل نہیں ہوتے.

(3) स्त्रीयों ने अपने हाथ अचेतना में नही काटे थे अपितु बतौर धामकी काटे थे, वह स्त्रीयां भी आप पर मोहित हो गई थी, और कहा था ऐ यूसुफ या तो मान जाओ अन्यथा हम आत्म हत्या कर लेंगी और यह आरोप तुम पर आएगा, परन्तु यूसुफ ने किसी की न मानी और साफ बच गए इस बात की पुष्टि के लिए इसी सूरत की धारा (12:50-51) देखो जिनमें कारागार में रहते हुए यूसुफ ने पुष्टि कराने को कहा था और इस पुष्टि के समय उन स्त्रीयों ने स्वीकार किया था कि वास्तव में हमने ही यूसुफ पर डोरे डाले थे यदि केवल एक स्त्री इस अपराध में लिप्त होती तो दूसरी स्त्रीयां अपने को इस अपराध से पृथक करके केवल अजीज मिस्र की पत्नी के लिए ही स्वीकार करती और जमीर भी स्त्री लिंग एक वचन आती जबकि आयत में जमीर बहुवचन स्त्री लिंग हुआ है अतः उन स्त्रीयों ने अचेतना में हाथ नही काटे अपितु बतौर धामकी हाथ काटे थे.

(۳) عورتوں نے اپنے ہاتھ بےخودی میں نہیں کاٹے تھے بلکہ بطور دھمکی کاٹے تھے وہ عورتیں بھی آپ پر فریفتہ ہوگئیں تھیں اور کہا تھا اے یوسف یا تو مان جاؤ ورنہ ہم خودکشی کرلیں گیں اور یہ الزام تم پر آئے گا.مگر یوسف نے کسی کی نہ مانی اور صاف بچ گئے.اس بات کی تصدیق کے لئے اسی سورت کی آیت (۱۲:۵۰،۵۱) دیکھو جن میں قید میں رہتے ہوئے یوسف نے تصدیق کرانے کو کہا تھا.اور اس تصدیق کے وقت ان عورتوں نے اقرار کیا تھا کہ واقعی ہم نے ہی یوسف پر ڈورے ڈالے تھے اگر صرف ایک عورت اس جرم میں ملوث ہوتی تو دوسری عورتیں اپنے کو اس جرم سے الگ کر کے صرف عزیز مصر کی بیوی کے لئے ہی اقرار کرتیں اور ضمیر بھی مونث واحد کی آتی جب کہ آیت میں ضمیر جمع مونث ھُنّ ہے اس لئے ان عورتوں نے بےخودی میں ہاتھ نہیں کاٹے بلکہ بطور دھمکی ہاتھ زخمی کئے.

(4) याकूब अ0 को पहली बार पुत्रों के आने पर ही विश्वास हो गया था कि मिस्र का शासक मेरा यूसुफ है, इस विश्वास पर ही अपना पुत्र उन अपराधियों के साथ प्रेषित कर दिया था यदि विश्वास न होता तो कदापि पुत्र को उनके साथ प्रेषित न करते क्योंकि आस्तिक एक बिल से दो बार नही डसा जाता अर्थात दो बार एक ही व्यक्ति से धोका नही खाता वैसे तो आस्तिक का विवेक यह होता है कि वह धोका खाता ही नही यदि कभी अकस्मात ऐसा हो जाए तो केवल एक बार.

(۴) یعقوبؑ کو پہلی بار لڑکوں کے آنے پر ہی یقین ہوگیا تھا کہ مصر کا حاکم میرا یوسف ہے.اس یقین پر ہی اپنا بیٹا ان خطاکاروں کے ساتھ روانہ کردیا تھا.اگر یقین نہ ہوتا تو ہرگز بیٹے کو ان کے ساتھ روانہ نہ کرتے کیونکہ مومن ایک سوراخ سے دوبار نہیں ڈسا جاتا یعنی دوبار ایک ہی آدمی سے دھوکا نہیں کھاتا ویسے تو مومن کی فراست یہ ہوتی ہے کہ وہ دھوکا کھاتا ہی نہیں مگر کبھی اتفاقاً ایسا ہو جائے تو صرف ایک بار.

(5) गिलास यूसुफ ने सामान में नहीं रखा अपितु भाईयों ने ही (12:8)

(۵) گلاس یوسف نے سامان میں نہیں رکھا بلکہ بھائیوں نے ہی (۱۲:۸) کے

के अनुसार इस भाई को अपने मार्ग से हटाने के लिए रखा था जिस की पुष्टि {12:76-89-90-91} आदि से हो रही है चूंकि सदाचारी व्यक्ति अनुचित कार्य करके दूसरों पर आरोप नही लगाता (4:112) तो फिर यूसुफ कैसे यह कार्य कर सकते थे?

(6) यूसुफ की सुगंध अनुभूत करना आपने अनुमान लगा लिया था कि मिस्र से वापस कितने दिनों के बाद होंगे, वापसी का आभास करके ही कहा था कि मैं यूसुफ की सुगन्ध अनुभूत कर रहा हूं और इस पर ही घर वालों ने कहा था कि आप अभी तक अपनी पुरानी खोज में है न कि पुरानी सनक में जैसा कि ज्ञानीयों ने अनुवाद किया है,

(7) धारा के अनुवादों में भाईयों और माता पिता को सजदा करते बताया है और कहा है कि यह मेरे स्वपन का स्वपन फल है, एक व्यक्ति एक व्यक्ति को सजदा करे यह मिथ्या है अनेकेश्वर वाद है ईश्वर का ओदश नही है अतः धारा में सजदे से अर्थ यह है कि यूसुफ ने जो नियम बनाया था वह सब देश वासी और विदेसीयों ने उनको स्वीकार किया या पहले मिस्र में विदेसियों को नागरिक्ता नही मिलती थी परन्तु इस नियम में यह समाई थी, इसलिए मिस्र वासियों ने स्वीकार किया और मिस्र वालों ने यूसुफ के माता पिता और भाईयों का सम्मान किया यह है सजदे का अर्थ जैसे मिस्र के राजा का स्वपन क्या था स्वपन फल क्या आया क्या किसी गाय ने गाय को खाया या जैसे वृक्षों के लिए है कि वह ईश्वर को सजदा कर रहे हैं जबकि किसी ने भी नही देखा कि कौन वृक्ष सजदा कर रहा है इससे अर्थ यह है कि वह ईश्वर की आज्ञाकारी कर रहे हैं आयत प्रस्तुत है,

{13:15} वह तो ईश्वर ही है जिसको आकाश व पृथ्वी की हर वस्तु सजदा कर रही है, अर्थात आज्ञाकारी और सब वस्तुओ के प्रतिबिम्ब प्रातः और सांय उसके आगे झुक रहे हैं अर्थ यह है कि ईश्वर ने उन वस्तुओं के लिए जो नियम बना दिए हैं उनके अनुसार ही चल रहे हैं, आज्ञाकारी कर रहे हैं आज्ञाकारी ही उनका सजदा है (84:21) और जब उनके पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नही करते अर्थात कुरआन के आदेश को मानते नहीं इस आयत से सिद्ध हुआ कि सजदे का अर्थ आज्ञापालन है (12:22)

(8) तीन कुरते एक कुरता पहले भाई लेकर आए थे जिस को देख कर याकूब अ० ने विश्वास कर लिया था कि यूसुफ को भेड़या ने नही खाया अपितु वह जीवित है यह पुत्रों ने छल किया है दूसरे कुरते ने यूसुफ को निर्दोष सिद्ध किया जो पीछे से फटा था, तीसरा कुरता वह था जिसको देखकर याकूब ने विश्वास कर लिया था कि मिस्र का शासक मेरा यूसुफ है और इस विश्वास से उनका सब दुख जिसको वह सहन कर रहे थे दूर हो गया, और उनके नेत्र हर्ष से चमक उठे न कि दुख के कारण रोते रोते सफेद होना,

(9) धारा में है कि याकूब अ० ने अपने पुत्रों से कहा कि नगर में पृथक पृथक मार्गों से प्रविष्ट होना इसका अर्थ अनुवादों में यह लिखा है कि यह लड़के बहुत स्वस्थ और शक्ति शाली थे यदि एक साथ जाते तो मिस्र वाले इनको डाकू या आक्रमण कारी समझ कर लड़ते अतः अलग जाने को कहा, परन्तु यह लिखना अनुचित है? क्योंकि इस बार केवल एक छोटे पुत्र की वृद्धि हुई थी इससे पहले वह दस एक साथ गए थे यदि मिस्र वाले जत्थे को डाकू समझ लेते तो पहले समझते परन्तु पहले नही समझा और इनके अतिरिक्त भी कितने दल आते जाते होंगे जिनकी संख्या काफ़ी होगी, फिर यह कैसे मान लिया जाए बात वास्तव में यह है कि याकूब अ० ने जान लिया था कि यूसुफ जीवित है और अपने भाई को बुला रहा है, अतः याकूब ने एक विधि बताई जिससे यूसुफ

مطابق اس بھائی کو اپنے راستے سے ہٹانے کے لئے رکھا تھا۔جس کی تصدیق (۷۶:۱۲، ۸۹، ۹۰، ۹۱) وغیرہ سے ہورہی ہے۔ چونکہ نیک آدمی غلط کام کر کے دوسروں پر الزام نہیں لگاتا (۱۱۲:۴) تو پھر یوسف کیسے یہ کام کر سکتے تھے؟

(۶) یوسف کی خوشبو محسوس کرنا آپ نے اندازہ لگا لیا تھا کہ مصر سے واپس کتنے دنوں کے بعد ہوں گے۔ واپسی کا احساس کر کے ہی کہا تھا کہ میں یوسف کی خوشبو محسوس کر رہا ہوں اور اس پر ہی گھر والوں نے کہا تھا کہ آپ ابھی تک اپنی پرانی تلاش میں ہیں نہ کہ پرانے خبط میں جیسا کہ عالموں نے ترجمہ کیا ہے۔

(۷) آیت کے ترجموں میں بھائیوں اور والدین کو سجدہ کرتے بتایا ہے اور کہا ہے کہ یہ میرے خواب کی تعبیر ہے یہ غلط ہے سجدہ صرف اللہ کو ہے ایک انسان ایک انسان کو سجدہ کرے یہ غلط ہے شرک ہے اللہ کا حکم نہیں ہے اس لئے آیت میں سجدہ سے مراد یہ ہے کہ یوسف نے جو قانون بنائے تھے وہ سب ملکی غیر ملکی باشندوں نے ان کو تسلیم کیا تھا پہلے مصر میں غیر ملکی باشندوں کو شہریت نہیں ملتی تھی۔ مگر اس قانون میں یہ گنجائش تھی، اس لئے مصریوں نے تسلیم کیا اور مصر والوں نے یوسف کے والدین اور بھائیوں کی تعظیم کی۔ یہ ہے سجدے کا مطلب۔ جیسے شاہ مصر کا خواب کیا تھا تعبیر کیا آئی۔ کیا کسی گائے نے گائے کو کھایا یا جیسے درختوں کے لئے ہے کہ وہ اللہ کو سجدہ کر رہے ہیں۔ جب کہ کسی نے بھی نہیں دیکھا کہ کون درخت سجدہ کر رہا ہے اس سے مراد یہ ہے کہ وہ اللہ کی فرمانبرداری کر رہے ہیں آیت پیش ہے۔

(۱۵:۱۳) وہ تو اللہ ہی ہے جس کو آسمان وزمین کی ہر چیز طوعاً و کرہاً سجدہ کر رہی ہے یعنی فرمانبرداری۔ اور سب چیزوں کے سائے صبح اور شام اس کے آگے جھک رہے ہیں مطلب یہ ہے کہ اللہ نے ان چیزوں کے لئے جو قانون بنا دئے ہیں ان کے مطابق ہی چل رہے ہیں فرمانبرداری کر رہے ہیں فرمانبرداری ہی ان کا سجدہ ہے۔ (۲۱:۸۴) اور جب ان کے پاس قرآن پڑھا جاتا ہے تو سجدہ نہیں کرتے یعنی قرآن کے حکم کو مانتے نہیں اسی آیت سے ثابت ہوا کہ سجدہ کے مطلب فرمانبرداری ماننا ہے (۲۲:۱۲)

(۸) تین کرتے۔ ایک کرتا پہلے بھائی لے کر آئے تھے جس کو دیکھ کر یعقوبؑ نے یقین کر لیا تھا کہ یوسف کو بھیڑیئے نے نہیں کھایا بلکہ وہ زندہ ہے۔ یہ لڑکوں نے فریب کیا ہے۔ دوسرے کرتے نے یوسف کو بے قصور ثابت کیا جو پیچھے سے پھٹا تھا۔ تیسرا کرتا وہ تھا جس کو دیکھ کر یعقوب نے یقین کر لیا تھا کہ حاکم مصر میرا یوسف ہے اور اس یقین سے ان کا سب غم جس کو وہ برداشت کر رہے تھے دور ہو گیا اور ان کی آنکھیں فرط مسرت سے چمک اٹھیں نہ کہ غم کی وجہ سے روتے روتے سفید ہوا۔

(۹) آیت میں ہے کہ یعقوبؑ نے اپنے بیٹوں سے کہا کہ شہر میں الگ الگ راستوں سے داخل ہونا اس کا مطلب ترجموں میں یہ لکھا ہے کہ یہ لڑکے بہت تندرست اور طاقتور تھے اگر ایک جگہ جاتے تو مصر والے ان کو ڈاکو یا حملہ کرنے والے سمجھ کر لڑتے اس لئے الگ الگ جانے کو کہا۔ لیکن یہ لکھنا غلط ہے؟ کیونکہ اس بار صرف ایک چھوٹے بیٹے کا اضافہ ہوا تھا اس سے پہلے وہ دس ایک ساتھ گئے تھے اگر مصر والے جتھے کو ڈاکو سمجھ لیتے تو پہلے سمجھتے مگر پہلے نہیں سمجھا اور ان کے علاوہ بھی کتنے قافلے آتے جاتے ہوں گے جن کی تعداد کافی ہوگی۔ پھر یہ کیسے مان لیا جائے بات اصل میں یہ ہے کہ یعقوبؑ نے جان لیا تھا کہ یوسف زندہ ہے اور اپنے بھائی کو بلا رہا ہے۔ اس لئے یعقوب نے ایک طریقہ بتایا جس سے یوسف

मार्ग में ही अपने भाई से मिल कर बता दे कि मैं तेरा भाई यूसुफ हूं और यही हुआ.

(10) पहले कुर्ते को देखकर याकूब अ0 ने जान लिया था कि यूसुफ को भेड़िये ने नही खाया वह कहीं जीवित है तो फिर याकूब अ0 ने उसकी खोज क्यों न की जबकि हर व्यक्ति अपनी लुप्त वस्तु की खोज करता है और यहां तो महामना का पुत्र था जो बहुत प्रिय था ऐसा ही यूसुफ के विषय में है कि जब यूसुफ को भाईयों ने कूप में डाला था तो वह काफी बड़े थे यह जानते थे कि मेरा क्या नाम है मैं किसका पुत्र हूं अतः जब यात्री दल ने निकाला था उनसे उन्होंने क्यों नही बताया उनको बताना चाहिए था यदि बता देते तो दल वाले अवश्य यूसुफ को उनके पास पहुंचा देते. फिर मिस्र में जब विक्रय हो रहे थे उस समय बता देते परन्तु नही बताया? तो सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने अपने दोनों बन्दों के मनों से उस याद को निकाल दिया था कि मेरा पुत्र लुप्त है उसकी खोज करूं वह अपने कर्तव्य में लगे रहे धैर्य के साथ और यूसुफ अपने चरित्र को चमकाने में लगे रहे यह ईश्वर की इच्छा थी साथ में यह भी याद रहे कि दोनों बिलकुल ही नही भूल गए थे परन्तु जो व्याकूलता होनी थी वह नही होती थी और दोनों को अपना कार्य करना था और जब ईश्वर को स्वीकार हुआ मिलाना दोनों मिलने को व्याकूल हो गए और दोनों मिल गए यह है ईश्वर की इच्छा उधर भाईयों की अचेतना भी देख ली कि उन्होंने भी यह न सोचा कि यह भेद हमारा खुल जाएगा. परन्तु जो होना होता है वह, होता है.

(11) हमारे यहां यह भी मशहूर है कि यूसुफ ने उसी स्त्री से विवाह किया जो आप पर मोहित हो गई थी और आपको कारागार जाना पड़ा था. यह कथा उसी स्त्री से विवाह वाली बिलकुल मिथ्या है. एक नबी से यह आशा नही की जा सकती कि वह उस स्त्री से विवाह करें जिसका पति जीवित हो और जिसके कारण आप अपमानित हुए कठिनाइ उठाई अतः उस स्त्री से विवाह नही हुआ.

सारी वास्तविक्ता कुरआन के प्रकाश में स्पष्ट हो गई अब हमको इस सत्य पर पूरा विश्वास करना चाहिए यदि इतने पर भी हम अपनी पहली ही नीति पर स्थापित रहते हुए सत्य का इनकार करते है तो इसके अतिरिक्त और कुछ नही कहा जा सकता कि हम उस स्थान पर पहुंच गए है जहां पर हृदय पर ताले लग जाते है अपनी हट धर्मी के कारण जिसको ईश्वर ने अपनी ओर संबधित करके कहा कि उनके हृदयों पर ताले लग गए है. अर्थात उनकी हट धर्मी के कारण से ईश्वर के नियम ने ताले लगा दिए है.

راستے میں ہی اپنے بھائی سے مل کر بتا دے کہ میں تیرا بھائی یوسف ہوں اور یہی ہوا.

(۱۰) پہلے کرتے کو دیکھ کر یعقوبؑ نے جان لیا تھا کہ یوسف کو بھیڑیے نے نہیں کھایا وہ کہیں زندہ ہے تو پھر یعقوبؑ نے اس کو تلاش کیوں نہیں کیا جب کہ ہر آدمی اپنی گم شدہ چیز کو تلاش کرتا ہے اور یہاں تو حضرت کا بیٹا تھا جو بہت عزیز تھا ایسا ہی یوسف کے بارے میں ہے کہ جب یوسف کو بھائیوں نے کنوئیں میں ڈالا تھا تو وہ کافی بڑے تھے یہ جانتے تھے کہ میرا کیا نام ہے میں کس کا بیٹا ہوں اس لئے جب قافلہ والوں نے نکالا تھا ان سے انہوں نے کیوں نہیں بتایا ان کو بتانا چاہیے تھا اگر بتا دیتے تو قافلے والے ضرور یعقوبؑ کو جانتے ہوں گے وہ ضرور یوسف کو ان کے پاس پہنچا دیتے. پھر مصر میں جب فروخت ہو رہے تھے اس وقت بھی بتا دیتے لیکن نہیں بتایا؟ تو ثابت ہوا کہ اللہ نے اپنے دونوں بندوں کے ذہنوں سے اس یاد کو نکال دیا تھا کہ میرا بیٹا گم ہے اس کو تلاش کروں وہ اپنے فرض منصبی میں لگے رہے صبر کے ساتھ اور یوسف اپنے کردار کو چمکانے میں لگے رہے یہ اللہ کی مرضی تھی ساتھ میں یہ بھی یاد رہے کہ دونوں بالکل ہی نہیں بھول گئے تھے مگر جو بیقراری ہوتی تھی وہ نہیں ہوتی تھی اور دونوں کو اپنا کام کرنا تھا. اور جب اللہ کو منظور ہوا ملانا دونوں ملنے کو بے قرار ہو گئے اور دونوں مل گئے یہ ہے مشیت الٰہی. ادھر بھائیوں کی غفلت بھی دیکھ لی کہ انہوں نے بھی یہ نہ سوچا کہ یہ راز ہمارا کھل جائے گا مگر جو ہونا ہوتا ہے وہ ہوتا ہے.

(۱۱) ہمارے یہاں یہ بھی مشہور ہے کہ یوسف نے اسی عورت سے شادی کی جو آپ پر عاشق ہو گئی تھی اور آپ کو جیل جانا پڑا تھا. یہ قصہ اسی عورت سے شادی والا بالکل غلط ہے ایک نبی سے یہ امید نہیں کی جا سکتی کہ وہ اس عورت سے شادی کرے جس کا شوہر زندہ ہو اور جس کی وجہ سے آپ بدنام ہوئے پریشانی اٹھائی اس لئے اسی عورت سے شادی نہیں ہوئی.

ساری حقیقت قرآن کی روشنی میں روشن ہو گئی اب ہم کو اس حقیقت پر پورا یقین کرنا چاہیے. اگر اتنے پر بھی ہم اپنی پہلی ہی روش پر قائم رہتے ہوئے حقیقت کا انکار کریں تو اس کے علاوہ اور کچھ نہیں کہا جا سکتا کہ ہم اس مقام پر پہنچ گئے ہیں جہاں پر دلوں پر تالے لگ جاتے ہیں. اپنی ہٹ دھرمی کی وجہ سے جس کو اللہ نے اپنی طرف منسوب کر کے کہا کہ ان کے دلوں پر تالے لگ گئے ہیں یعنی ان کی ہٹ دھرمی کی وجہ سے اللہ کے قانون نے تالے لگا دئے ہیں.

सूरत अर्रअ्द 13 मक्की

سورت الرعد (۱۳) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स0 यह (ईश्वर की) पुस्तक (अर्थात कुरआन) की धाराएं है और जो पुस्तक तेरे रब की ओर से तुझ पर अवतरित की जा रही है वह सत्य है (सदैव रहने वाली सच्चाई) परन्तु अधिकांश लोग विश्वास नही लाते (1)

ईश्वर वही (सर्व शक्तिमान) है जिसने आकाशों को जैसा कि तुम देख रहे हो बिना किसी खांभ के उच्चता पर स्थापित कर दिया (अर्थात तमाम ग्रह) अपने अपने धव पर मध्या कर्षण के नियम के आधीन चक्र कर रहे है फिर (शासन के) सिंहासन पर स्थापित हुआ और सूरज चान्द (और दूसरे ग्रहों) को कार्य पर लगा दिया बिना पारिश्रमिक के (अर्थात बेगारी) हर एक अपने निश्चित समय तक (अपने धव पर) चला जा रहा है और वही कार्यों का प्रबन्ध कर रहा है (और अपने) चिन्हों को खोल खोल कर वर्णन कर रहा है. ताकि तुमको विश्वास आ जाए कि एक दिन अपने ईश्वर के

اے محمدؐ یہ (اللہ کی) کتاب (یعنی قرآن) کی آیتیں ہیں اور جو کتاب تیرے رب کی طرف سے تجھ پر نازل کی جا رہی ہے وہ حق ہے (ہمیشہ رہنے والی سچائی) لیکن زیادہ تر لوگ ایمان نہیں لاتے (۱)

اللہ وہی (قادر مطلق) ہے جس نے آسمانوں کو جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو بغیر کسی ستونوں کے بلندی پر قائم کر دیا (یعنی تمام سیارے) اپنے اپنے مدار پر کشش ثقل کے قانون کے تحت گردش کر رہے ہیں پھر (فرماں روائی کے) تخت پر قائم ہوا. اور سورج چاند (اور دوسرے سیاروں) کو کام پر لگا دیا بنا اجرت کے (یعنی بیگاری) ہر ایک اپنی مقررہ مدت تک (اپنے مدار پر) چلا جا رہا ہے. اور وہی کاموں کا انتظام کر رہا ہے (اور اپنی) نشانیوں کو کھول کھول کر بیان کر رہا ہے تاکہ تم کو یقین آ جائے کہ ایک روز اپنے

सामने उपस्थित होना है. (2)

رب کے سامنے حاضر ہونا ہے(۲)

और वही है जिसने पृथ्वी को फैलाया और उसमें पर्वत और दरया बनाए और हर प्रकार के मेवों की दो-दो प्रकार (अर्थात जोड़ा जोड़ा) बनाई वही रात्री से दिन को छुपा देता है, मनन करने वालों को इस में बहुत से चिन्ह है (जो संसार की उत्पत्ति में मनन चिन्तन करते हैं) (3)

اور وہی ہے جس نے زمین کو پھیلایا اور اس میں پہاڑ اور دریا پیدا کئے. اور ہر طرح کے میووں کی دو. دو قسمیں (یعنی جوڑا جوڑا) بنائیں. وہی رات سے دن کو چھپا دیتا ہے. غور کرنے والوں کو اس میں بہت سی نشانیاں ہیں (جو تخلیق عالم میں غور وفکر کرتے ہیں) (۳)

और पृथ्वी में कई प्रकार के खण्ड है एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के उपवन और खेती और खजूर के वृक्ष कतिपय की बहुत सी शाखा है और कतिपय की इतनी नही होती पानी सबको एक ही मिलता है और हम कतिपय मेवों को कतिपय पर स्वाद में श्रेष्ठता देते है और इस में बुद्धि मानों के लिए बहुत से चिन्ह है (4)

اور زمین میں کئی طرح کے قطعات ہیں ایک دوسرے سے ملے ہوئے اور انگور کے باغ اور کھیتی اور کھجور کے درخت. بعض کی بہت سی شاخیں ہیں اور بعض کی اتنی نہیں ہوتیں، پانی سب کو ایک ہی ملتا ہے اور ہم بعض میووں کو بعض پر لذت میں فضیلت دیتے ہیں اور اس میں عقل والوں کے لئے بہت سی نشانیاں ہیں (۴)

यदि तुम विचित्र बात सुननी चाहो तो नास्तिकों का यह कहना विचित्र है कि जब हम मर कर मिट्टी हो जाएंगे तो क्या पुनः उत्पन्न होंगे? वही वह लोग है जो अपने ईश्वर के विरोधी हुए है, और वही वह लोग है जिनकी गर्दनों में अन्धानुकरण का पट्टा पड़ा हुआ है और वह नर्की है वह सदैव उसमें जलते रहेंगे. (5)

اگر تم عجیب بات سننی چاہو تو کافروں کا یہ کہنا عجیب ہے کہ جب ہم (مرکر) مٹی ہوجائیں گے تو کیا از سر نو پیدا ہوں گے؟ وہی وہ لوگ ہیں جو اپنے رب سے منکر ہوئے ہیں. اور وہی وہ لوگ ہیں جن کی گردنوں میں اندھی تقلید کے طوق پڑے ہوئے ہیں اور وہ اہل دوزخ ہیں وہ ہمیشہ اس میں جلتے رہیں گے (۵)

और वह लोग भलाई से पहले तुमसे बुराई (यातना) के इच्छुक है, यद्यपि उनसे पहले दण्ड हो चुके है, और तुम्हारा रब लोगों के अन्याय के अतिरिक्त क्षमा करने वाला है और तेरा रब कठोर दण्ड देने वाला है. (6)

اور وہ لوگ بھلائی سے پہلے تم سے برائی (عذاب) کے طالب ہیں حالانکہ ان سے پہلے عذاب ہو چکے ہیں اور تمہارا رب لوگوں کے ظلم کے باوجود معاف کرنے والا ہے اور تیرا رب سخت عذاب دینے والا ہے (۶)

जिन लोगों ने नास्तिकता का मार्ग ग्रहण कर रखा है वह कहते है कि (यदि वास्तव में यह व्यक्ति ईशदूत है तो) इस पर इसके ईश्वर की ओर से कोई चमत्कार क्यों अवतरित नही होता? (ऐ रसूल! तुम्हारा कार्य चमत्कार दिखाना नही है) तुम तो केवल (इनकार व दुष्ट कार्यों के परिणाम से) अवगत सचेत करने वाले हो, (और तुम्हारा मार्ग दर्शक हो कर आना कोई नई बात नही है) हर जाति में पहले एक मार्ग दर्शक हुआ है (7)

{40:70, 16: 36-63}

جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ کہتے ہیں کہ (اگر واقعی یہ شخص رسول ہے تو) اس پر اس کے رب کی طرف سے کوئی معجزہ کیوں نازل نہیں ہوتا؟ (اے رسول! تمہارا کام معجزہ دکھانا نہیں ہے) تم تو صرف (انکار اور بدعملی کے نتائج سے) خبر دار کرنے والے ہو (اور تمہارا رہنما ہوکر آنا کوئی نئی بات نہیں ہے) ہر قوم میں پہلے ایک رہنما ہوا ہے (۷) [۴۰: ۷۰، ۱۶: ۳۶-۶۳]

ईश्वर एक एक गर्भवती के पेट से अवगत है, जो कुछ उसमें बनता है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उसमें कमी बेशी होती है उससे भी वह अवगत रहता है हर वस्तु के लिए उसके यहां एक मात्रा निश्चित है (8)

اللہ ایک ایک حاملہ کے پیٹ سے واقف ہے جو کچھ اس میں بنتا ہے اسے بھی وہ جانتا ہے اور جو کچھ اس میں کمی بیشی ہوتی ہے اس سے بھی وہ باخبر رہتا ہے. ہر چیز کے لئے اس کے یہاں ایک مقدار مقرر ہے (۸)

वह गुप्त और प्रकट हर वस्तु का ज्ञानी है वह महान है और हर दशा में श्रेष्ठ रहने वाला है (9)

وہ پوشیدہ اور ظاہر ہر چیز کا عالم ہے وہ بزرگ ہے اور ہر حال میں بالاتر رہنے والا ہے (۹)

तुममें से कोई चुपके से बात करे या वेग से बोले रात्री के अन्धकार में कही छुपा हो या दिन के प्रकाश में कही चल फिर रहा हो उसके लिए सब बराबर है (10)

تم میں سے کوئی چپکے سے بات کرے یا زور سے بولے. رات کی تاریکی میں کہیں چھپا ہو یا دن کی روشنی میں کہیں چل پھر رہا ہو اس کے لئے سب برابر ہے (۱۰)

उसके पहरे वाले है बन्दों के आगे से और पीछे से उसकी रक्षा करते है ईश्वर के आदेश से और जो

اس کے پہرے والے ہیں بندوں کے آگے سے اور پیچھے سے اس کی حفاظت کرتے ہیں اللہ کے حکم سے اور جو وہ

वह प्रकट करता है अपने हाथों के बीच से शक्ति से और जो छुपा कर करता है उसको भी नोट किया जा रहा है, ईश्वर किसी जाति की दशा को (उस समय तक नही बदलता जब तककि वह जाति स्वंय अपनी दशा को न बदले और जब ईश्वर किसी जाति को (उसके बुरे कर्मों के आधार पर) दण्ड देना चाहता है तो वह किसी के टाले नही टलती, ऐसे लोगों का ईश्वर के सिवा कोई सहायक नही होता, (11)

ظاہر کرتا ہے اپنے ہاتھوں کے درمیان طاقت سے اور جو چھپا کر کرتا ہے اس کو بھی نوٹ کیا جا رہا ہے اللہ کسی قوم کی حالت کو اس وقت تک نہیں بدلتا جب تک کہ وہ قوم خود اپنی حالت کو نہ بدلے اور جب اللہ کسی قوم کو (اس کی بداعمالی کی بنا پر) سزا دینا چاہتا ہے تو وہ کسی کے ٹالے نہیں ٹلتی۔ ایسے لوگوں کا اللہ کے سوا کوئی کارساز نہیں ہوتا (۱۱)

और वही तो है जो तुमको डराने और आशा दिलाने के लिए बिजली दिखाता और भारी भारी बादल बनाता है (जो पानी से बोझल होते हैं) (12)

اور وہی تو ہے جو تم کو ڈرانے اور امید دلانے کے لئے بجلی دکھاتا اور بھاری بھاری بادل پیدا کرتا ہے (جو پانی سے بوجھل ہوتے ہیں) (۱۲)

और बादल और फरिश्ते सब उसके भय से उसकी पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं (अर्थात जो कार्य उनको समर्पित किया है वह उसको अच्छी प्रकार से करते रहते हैं यही उनकी सलात है) और उन्हें जिसपर चाहता है ठीक उस स्थिति में गिरा देता है जब लोग ईश्वर के विषय में झगड़ रहे होते हैं और वह बड़ी शक्ति वाला है (13)

اور بادل اور فرشتے سب اس کے خوف سے اس کی تسبیح وتحمید کرتے رہتے ہیں (یعنی جو کام ان کے سپرد کیا ہے وہ اس کو اچھے طریقے سے کرتے رہتے ہیں یہی ان کی صلوٰۃ ہے) وہ کڑکتی ہوئی بجلیوں کو بھیجتا ہے اور انہیں جس پر چاہتا ہے عین اس حالت میں گرا دیتا ہے جب کہ لوگ اللہ کے بارے میں جھگڑ رہے ہیں اور وہ بڑی قوت والا ہے (۱۳)

उसीको पुकारना (हर दशा में) उचित है और जिनको वह लोग उसके सिवा पुकारते हैं वह उनकी पुकार को किसी प्रकार स्वीकार नही करते न उत्तर देते हैं, उन्हें पुकारना तो ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति पानी की ओर हाथ फैला कर उससे प्रार्थना करे कि तू मेरे मुख तक पहुंच जा, यद्यपि पानी उस तक पहुंचने वाला नही और नास्तिकों की पुकार पथ भ्रष्टता के सिवा कुछ नही (14)

اسی کو پکارنا (ہر حالت میں) برحق ہے اور جن کو وہ لوگ اس کے سوا پکارتے ہیں وہ ان کی پکار کو کسی طرح قبول نہیں کرتے نہ جواب دیتے ہیں انہیں پکارنا تو ایسا ہے جیسے کوئی شخص پانی کی طرف ہاتھ پھیلا کر اس سے درخواست کرے کہ تو میرے منہ تک پہنچ جا، حالانکہ پانی اس تک پہنچنے والا نہیں اور کافروں کی پکار گمراہی کے سوا کچھ نہیں (۱۴)

और आकाशों व पृथ्वी में जो कोई भी है ईश्वर ही के आगे नतमस्तक है (अर्थात ईश्वर के विधान का आबद्ध है) हर्ष से हो या अप्रसन्नता से (झुकना उसी के आगे है) और प्रातः व सांय उनके साये भी (प्राकृतिक नियम के अनुसार घटते बढ़ते रहते हैं (15)

اور آسمانوں وزمین میں جو کوئی بھی ہے اللہ ہی کے آگے سربسجود ہے (یعنی اللہ کے قانون کا پابند ہے) خوشی سے ہو یا ناخوشی سے (جھکنا اسی کے آگے ہے) اور صبح وشام ان کے سائے بھی (قانون فطرت کے مطابق گھٹتے بڑھتے رہتے ہیں (۱۵)

उनसे ज्ञात करो आकाशों और पृथ्वी का रब कौन है? आप ही (उनकी ओर से) कहदो कि ईश्वर (परन्तु वह मानते नही) फिर उनसे कहो (यदि ईश्वर ही सब का रब है तो) तुमने ईश्वर को छोड़ कर ऐसों को सहायक क्यों बना रखा है, जो (दूसरे तो दूर रहे) स्वंय अपने लाभ व हानी का भी अधिकार नही रखते उनसे (यह भी) ज्ञात करो क्या अन्धा और आंखों वाला बराबर है? या अन्धेरा और प्रकाश बराबर हो सकता? अर्थात पथ प्रदर्शन और पथ भ्रष्टता क्या उन लोगों ने जिनको ईश्वर का साझी बना रखा है क्या उन्होंने ईश्वर की सी रचना उत्पन्न की है, जिसके कारण से उनपर उत्पत्ति का विषय संदिग्ध हो गया है उन (बुद्धि हीनों) से कह दो ईश्वर ही हर वस्तु का उत्पन्न करने वाला है, और वही अकेला शक्ति शाली है (16)

ان سے پوچھو کہ آسمانوں اور زمین کا رب کون ہے؟ آپ ہی (ان کی طرف سے) کہدو کہ اللہ (لیکن وہ مانتے نہیں) پھر ان سے کہو (اگر اللہ ہی سب کا رب ہے تو) تم نے اللہ کو چھوڑ کر ایسوں کو کارساز کیوں بنا رکھا ہے جو (دوسرے تو دور رہے) خود اپنے نفع نقصان کا بھی اختیار نہیں رکھتے ان سے (یہ بھی) پوچھو کیا اندھا اور آنکھوں والا برابر ہیں؟ یا اندھیرا اور اجالا برابر ہو سکتا ہے؟ یعنی ہدایت اور گمراہی۔ کیا ان لوگوں نے جن کو اللہ کا شریک بنا رکھا ہے کیا انہوں نے اللہ کی سی مخلوق پیدا کی ہے جس کے سبب سے ان پر پیدائش کا معاملہ مشتبہ ہو گیا ہے۔ ان (عقل کے اندھوں) سے کہدو اللہ ہی ہر چیز کا پیدا کرنے والا ہے اور وہی اکیلا زبردست ہے (۱۶)

ईश्वर ने आकाश से पानी बरसाया और हर नदी नाला अपनी क्षमता पात्र के अनुसार उसे लेकर चल निकला फिर जब बाढ़ उठा तो तल पर झाग भी आ गए और ऐसे झाग उन धातों पर भी उठते

اللہ نے آسمان سے پانی برسایا اور ہر ندی نالا اپنے ظرف کے مطابق اسے لے کر چل نکلا پھر جب سیلاب اٹھا تو سطح پر جھاگ بھی آ گئے اور ایسے جھاگ ان دھاتوں پر بھی اٹھتے

है जिन्हें आभूषण और बासन आदि बनाने के लिए लोग आग में पिघलाया करते हैं, इस उपमा से ईश्वर सत्य और मिथ्या के प्रसंग को स्पष्ट करता है जो झाग है वह उड़ जाता है सूखकर और जो वस्तु (पानी) मानव के लिए लाभ दायक होती है वह पृथ्वी में ठहर जाती है, इस प्रकार उपमाओं से ईश्वर अपनी बात समझाता है (ताकि इन्सान समझे) (17) {77:1से7}

ہیں جنہیں زیوراور برتن وغیرہ بنانے کے لئے لوگ آگ میں پگھلایا کرتے ہیں اس مثال سے اللہ حق اور باطل کے معاملے کو واضح کرتا ہے. جو جھاگ ہے وہ اڑجاتا ہے سوکھ کر اور جو چیز (پانی) انسانوں کے لئے نافع ہوتی ہے وہ زمین میں ٹھہر جاتی ہے اس طرح مثالوں سے اللہ اپنی بات سمجھاتا ہے (تاکہ انسان سمجھیں) (۱۷) [۷۷:۱تا۷]

नोट- इस झाग की उपमा से ईश्वर ने सत्य और असत्य को समझाया है अर्थात कभी असत्य वेग पकड़ता है जैसे बरसात में जब बाड़ आती है तो पानी पर काफ़ी मात्रा में झाग आते हैं और झाग ही झाग दिखाई देते हैं जब सत्य का बोलबाला होता है तो सदाचारियों में कपटि भी सम्मिलित हो जाते हैं और वह सत्य के सहारे चमक जाते हैं प्रमुख दिखाई देते हैं, परन्तु कुछ देर बाद वह झाग समाप्त हो कर पानी जो लाभ दायक है शेष रहता है, और वह अधिक तर पृथ्वी के अन्दर चला जाता है उस पानी को लोग पीने और सींचाई के काम में लाते हैं, ऐसे ही धातों को शुद्ध किया जाता है उनमें जो निकृष्ट वस्तु होती है वह पिघल कर झाग बन कर उड़ जाती है और मूल शेष रहती है ऐसे ही मानव सदाचारी और दुराचारि होते हैं और अपनी अपनी क्षमता पात्र को लेकर चलते हैं जो इन्सान सदाचारी और दूसरों के लिए लाभ दायक होते हैं वह शेष रहते हैं और उनकी संतान भी उनकी उत्तराधिकारी होती है, उनका नाम भी शेष रहता है, परन्तु वह कभी झागों की भांति फूलते और घमण्डी नहीं होते सदैव न्याय पर स्थापित रहते हैं सूरत 'आलअसर' {103-77:1ता7}

और जो दुराचारी और हानी दायक होते हैं वह कुछ देर तो चमकते हैं परन्तु उनको झागों की भांति समाप्त कर दिया जाता है या समाप्त हो जाते हैं ध्वंसात्मक शक्तियां समाप्त हो जाती हैं और रचनात्मक शक्तियां शेष रहती हैं। असत्य और सत्य के युद्ध में दुनिया की हर वस्तु उस समय तक शेष रहेंगी जब तक उसमें लाभ पहुंचाने की क्षमता शेष है, ज्यूंही यह क्षमता समाप्त हो जाती है वह वस्तु मिट जाती है, कुरआन ने इस नियम को बड़े विस्तार से बताया है, इस प्रकार ईन्सान का वही कर्म लाभ दायक है जो ईश्वर के आदेशनुसार इन्सानियत की भलाई के लिए किया जाए, पूजा वही है जिससे मानव और हर प्राणी को लाभ पहुंचे इसी को सलात स्थापित करना कहते हैं,

نوٹ:۔ اس جھاگ کی مثال سے اللہ نے حق و باطل کو سمجھایا ہے یعنی کبھی باطل زور پکڑتا ہے جیسے برسات میں جب سیلاب آتا ہے تو پانی پر کافی مقدار میں جھاگ نظر آتے ہیں یا جب حق کا بول بالا ہوتا ہے تو حق پسندوں میں منافق بھی شامل ہوجاتے ہیں اور وہ حق کے سہارے چمک جاتے ہیں نمایاں نظر آتے ہیں. لیکن کچھ دیر کے بعد وہ جھاگ ختم ہوکر پانی جو نفع بخش ہے باقی رہتا ہے اور وہ زیادہ تر زمین کے اندر چلا جاتا ہے اس پانی کو لوگ پینے اور آبپاشی کے کام میں لاتے ہیں ایسے ہی دھاتوں کو صاف کیا جاتا ہے ان میں جو خراب چیز ہوتی ہے وہ پگھل کر جھاگ بن کر اڑ جاتی ہے اور اصل باقی رہتی ہے ایسے ہی انسان نیک اور بد ہوتے ہیں اور اپنے اپنے ظرف کو لے کر چلتے ہیں جو انسان نیک اور دوسروں کے لئے نافع ہوتے ہیں وہ باقی رہتے ہیں اور ان کی نسلیں بھی ان کی جانشین ہوتی ہیں ان کا نام بھی باقی رہتا ہے مگر وہ کبھی جھاگوں کی طرح پھولتے اتراتے نہیں ہمیشہ اعتدال پر قائم رہتے ہیں سورت العصر [۱۰۳،۷۷:۱تا۷]

اور جو بد اور نقصان دہ ہوتے ہیں وہ کچھ دیر تو چمکتے ہیں مگر ان کو جھاگوں کی طرح ختم کر دیا جاتا ہے یا ختم ہوجاتے ہیں. تخریبی قوتیں ختم ہوجاتی ہیں اور تعمیری قوتیں باقی رہتی ہیں. حق و باطل کے معرکہ میں. دنیا کی ہر چیز اس وقت تک باقی رہے گی جب تک اس میں نفع پہنچانے کی صلاحیت باقی ہے جوں ہی یہ صلاحیت ختم ہوجاتی ہے وہ چیز مٹ جائے گی. قرآن نے اس قانون کو بڑی وضاحت سے بتایا ہے اسی طرح انسان کا وہی عمل نفع بخش ہے جو اللہ کے حکم کے مطابق انسانیت کی بھلائی کے لئے کیا جائے. عبادت وہی ہے جس سے انسان اور ہر جاندار کو نفع پہنچے اس کو صلوٰۃ قائم کرنا کہتے ہیں (۷۷:۱سے۷)

जिन लोगों ने ईश्वर के आदेश को स्वीकार किया उनकी दशा बहुत अच्छी होगी और जिन्होंने उसको स्वीकार न किया यदि सारे संसार के सब कोश उनके अधिकार में हों तो वह सबके सब और उनके साथ उतने ही और (मुक्ति के) बदले में व्यय कर डाले (परन्तु मुक्ति कहां?) ऐसे लोगों का लेखा भी बुरा होगा और उनका ठिकाना भी नर्क है और वह बुरा स्थान है (18)

جن لوگوں نے اللہ کے حکم کو قبول کیا اُن کی حالت بہت بہتر ہوگی اور جنہوں نے اس کو قبول نہ کیا اگر روئے زمین کے سب خزانے ان کے اختیار میں ہوں تو وہ سب کے سب اور ان کے ساتھ اتنے ہی اور (نجات کے) بدلے میں صرف کرڈالیں (مگر نجات کہاں؟) ایسے لوگوں کا حساب بھی بُرا ہوگا اور ان کا ٹھکانا بھی دوزخ ہے اور وہ بری جگہ ہے (۱۸)

भला यह किस प्रकार सम्भव है कि वह व्यक्ति जो तुम्हारे रब की इस पुस्तक को जो उसने तुम पर अवतरित की है सत्य जानाता है, और वह व्यक्ति जो इस सत्य की ओर से अंधा है, दोनों बराबर हो सकते हैं? शिक्षा तो बुद्धि मान लोग ही स्वीकार करते हैं, (19)

بھلا یہ کس طرح ممکن ہے کہ وہ شخص جو تمہارے رب کی اس کتاب کو جو اس نے تم پر نازل کی ہے حق جانتا ہے اور وہ شخص جو اس حقیقت کی طرف سے اندھا ہے دونوں برابر ہوسکتے ہیں؟ نصیحت تو عقل مند لوگ ہی قبول کرتے ہیں (۱۹)

जो बुद्धिमान हैं वह ईश्वर से जो वचन करते हैं उसको पूरा करते हैं और प्रण को नहीं तोड़ते, (20)

جو عقل مند ہیں وہ اللہ سے جو عہد کرتے ہیں اس کو پورا کرتے ہیں اور اقرار کو نہیں توڑتے (۲۰)

यह वह लोग है जो इन सम्बन्धों को जोड़े रखते है जिन्हें ईश्वर ने जोड़ने का आदेश दिया है और अपने रब (के दण्ड) से डरते रहते है और बुरे लेखा से भय रखते है (21) {2:27, 4:1, 47:22-23}

یہ وہ لوگ ہیں جو ان رشتوں کو جوڑے رکھتے ہیں جنہیں اللہ نے جوڑے رکھنے کا حکم دیا ہے اور اپنے رب (کے عذاب) سے ڈرتے رہتے ہیں اور برے حساب سے خوف رکھتے ہیں (۲۱) [۲:۲۷؛ ۴:۱؛ ۴۷:۲۲،۲۳]

और वह लोग है जो अपने ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए (हर प्रकार की कठिनाइयों को झेलते है और) धैर्य से काम लेते है नमाज़ स्थापित करते है, और जो धन हमने उन्हें दिया है उसमें से (ईश्वर के मार्गा में) व्यय करते है गुप्त भी और प्रकट भी, और बुराई (का बदला लेने के स्थान पर उस) को सत्कर्म से दूर करते है वही वह लोग है जिनके लिए परलोक का घर है (22)

اور وہ وہ لوگ ہیں جو اپنے رب کی رضا حاصل کرنے کے لئے (ہر طرح کی سختیوں کو جھیلتے اور) صبر سے کام لیتے ہیں نماز قائم کرتے ہیں اور جو مال ہم نے انہیں دیا ہے، اس میں سے (اللہ کی راہ میں) خرچ کرتے ہیں چھپا کر بھی اور کھلے طور پر بھی اور برائی (کا بدلہ لینے کے بجائے اس) کو نیکی سے دور کرتے ہیں وہی وہ لوگ ہیں جن کے لئے آخرت کا گھر ہے (۲۲)

(अर्थात) सदेव रहने के उपवन जिनमें वह प्रविष्ट होंगे, और उनके बाप दादा और पत्नीयों और सन्तान में से जो सदाचरि होंगे वह भी, प्रविष्ट होंगे और फरिश्ते हर एक द्वार से उनके पास आएंगे, (23)

(یعنی) ہمیشہ رہنے کے باغات جن میں وہ داخل ہوں گے اور ان کے باپ دادا اور بیبیوں اور اولاد میں سے جو نیکوکار ہوں گے وہ بھی داخل ہوں گے. اور فرشتے ہر ایک دروازے سے ان کے پاس آئیں گے (۲۳)

(और कहेंगे) तुम पर शान्ति हो यह तुम्हारी दृढ़ता का बदला है, पस क्या ही अच्छा है यह प्रलोक का घर (24)

(اور کہیں گے) تم پر سلامتی ہو یہ تمہاری ثابت قدمی کا بدلہ ہے پس کیا ہی اچھا ہے یہ آخرت کا گھر (۲۴)

और रहे वह लोग जो ईश्वर से पक्का वचन करने के बाद उसको तोड़ डालते है और जिन नातों को ईश्वर ने जोड़ने का आदेश दिया है उनको तोड़ डालते है और देश में अशान्ति करते है ऐसो पर धिक्कार है और उनके लिए घर भी बुरा है (25)

اور رہے وہ لوگ جو اللہ سے پکا عہد کرنے کے بعد اس کو توڑ ڈالتے ہیں اور جن رشتوں کو اللہ نے جوڑے رکھنے کا حکم دیا ہے ان کو توڑ دیتے ہیں اور ملک میں فساد کرتے ہیں ایسوں پر لعنت ہے اور ان کے لئے گھر بھی برا ہے (۲۵)

ईश्वर का नियम जो उसको चाहता है अपने शुभ कर्मों से जीविका बढ़ा देता है और उसी नियम के आधीन जो अपने बुरे कर्मों से चाहता है की जीविका तंग हो जाती है, और नास्तिक लोग दुनिया के जीवन पर प्रसन्न हो रहे है, और दुनिया का जीवन प्रलोक की तुलना में बहुत थोड़ा लाभ है (26)

<u>اللہ کا قانون اس کا جو چاہتا ہے اپنے نیک عمل سے رزق فراغ کر دیتا ہے اور اسی قانون کے مطابق جو اپنے برے عملوں سے چاہتا ہے کا رزق تنگ ہو جاتا ہے اور کافر لوگ دنیا کی زندگی پر خوش ہو رہے ہیں اور دنیا کی زندگی آخرت کے مقابلے میں بہت تھوڑا فائدہ ہے (۲۶)</u>

और नास्तिक लोग कहते है कि उस व्यक्ति पर उसके रब की ओर से कोई चमत्कार क्यों अवतरित नहीं हुआ? तुम कहदो कि ईश्वर का नियम जिसे पथ भ्रष्ट करना चाहता है (वह चमत्कार देखने के बाद भी विश्वास न लाएगा) ईश्वर उसको (सफलता का) मार्ग दिखाता है जो उसकी ओर (हृदय से) आकृष्ट होता है अर्थात स्वंय चाहता है (27) {13:3 14:11, 17:95, 17:59-90से93, 20:132, 25:7-8से11; 29:51,13:7}

<u>اور کافر لوگ کہتے ہیں کہ اس شخص پر اس کے رب کی طرف سے کوئی معجزہ کیوں نازل نہیں ہوا؟ تم کہدو کہ اللہ کا قانون جسے گمراہ کرنا چاہتا ہے (وہ معجزہ دیکھنے کے بعد بھی ایمان نہ لائے گا) اللہ اس کو سعادت کی) راہ دکھاتا ہے جو اس کی طرف (دل سے) متوجہ ہوتا ہے یعنی خود چاہتا ہے (۲۷) [۱۳:۳؛ ۱۴:۱۱؛ ۱۷:۹۵، ۵۹تا۹۳؛ ۲۰:۱۳۲؛ ۲۵:۷،۸تا۱۱؛ ۲۹:۵۱؛ ۱۳:۷]</u>

(अर्थात ईश्वर उनको सीधा मार्ग दिखाता है) जो ईश्वर पर विश्वास रखते है और जिनके हृदय ईश्वर की याद से आराम पाते है, और सुन रखो ईश्वर ही की याद से दिलों को शान्ति मिलती है (28)

(یعنی اللہ ان کو سیدھی راہ دکھاتا ہے) جو اللہ پر ایمان رکھتے ہیں اور جن کے دل اللہ کی یاد سے آرام پاتے ہیں اور سن رکھو اللہ ہی کی یاد سے دلوں کو سکون ملتا ہے (۲۸)

और जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म किए उनके लिए सम्पन्नता और अच्छा स्थान है (29)

اور جو لوگ ایمان لائے اور عمل نیک کئے ان کے لئے خوش حالی اور عمدہ ٹھکانا ہے (۲۹)

(ऐ रसूल! जिस प्रकार हम जातियों में रसूल प्रेषित करते रहें है) उसी प्रकार हमने तुम को ऐसी जाति में भेजा है जिससे पहले बहुत सी जातियां हो चुकी है ताकि तुम उनको वह (पुस्तक) पढ़कर सुनाओ जो तुम पर अवतरित की है (उनकी भ्रष्टता की दशा

(اے رسول!) جس طرح ہم قوموں میں رسول بھیجتے رہے ہیں) اسی طرح ہم نے تم کو ایسی امت میں بھیجا ہے جس سے پہلے بہت سی امتیں گزر چکی ہیں تاکہ تم ان کو وہ کتاب پڑھ کر سناؤ جو ہم نے تم پر نازل کی ہے (ان کی

यह है कि) वह रहमान को नही मानते कह दो वही रहमान ही तो मेरा ईश्वर है (क्या वह कहते है कोई) ईश्वर नही तो सुनो! निःसंदेह वह ईश्वर है उसी पर मेरा भरोसा है और मैंने उसी से लो लगा रखी है. (30)

यदि कोई कुरआन ऐसा होता कि उसके प्रभाव से पर्वत चलने लगते या उससे पृथ्वी टुकड़े हो जाए या शीघ्र बड़ी दूरियां तै हो जाएं या मृतक बोल उठें (तो इस कुरआन से भी ऐसा हो जाता, परन्तु कुरआन में ऐसी कोई शक्ति नही) अपितु सारी बातों का अधिकार केवल ईश्वर को ही है तो वह लोग जो विश्वास ला चुके है उनको यह आश ही नही रखनी चाहिए कि नास्तिक विश्वास ले आएंगे (क्या अभी तक नास्तिकों की मांग के उत्तर में किसी चिन्ह के प्रकट होने की आश लगाए बैठे है? उनको यह जान लेना चाहिए) यदि ईश्वर चाहता (जबरदस्ती) तो सब व्यक्तियों को पथ प्रदर्शन दे देता और बराबर पहुंचता रहेगा नास्तिकों को उनकी करतूतों पर दुख या उतरेगा उनके घरों के पास यहां तक कि ईश्वर का वचन आ जाए निःसंदेह ईश्वर विरुद्ध नही करता अपना वचन (और नास्तिक लोग चिन्ह देखने के बाद भी विश्वास नही लाएंगे (31) {6:111, 7:146, 6:7-25, 10:96-97-100, 13:27, 15:114-115, 17:90-93}

नोट- कुरआन के अवतरित होने का उद्देश्य पथ प्रदर्शन है चमत्कार दिखाना नही है ईश्वर की पुस्तक मानव के पथ प्रदर्शन के लिए अवतरित हुई है जादू के लिए नही यह पुस्तक मृतक शरीरों को जीवित नही करती अपितु इस पुस्तक पर व्यवहार करने से पापी हृदय जीवित होते है "फिहि शिफाऊ माफिस्सुदूर" इस कुरआन में हृदयों के रोगों का उपचार है जिसमानी रोगों का उपचार नही है अतः जंतर मंतर से जिसमानी रोगों का उपचार करना इस मंत्र के विरुद्ध है और इस कार्य से मुसलमानों में अन्धा विश्वास और अनेकेश्वर वाद विचार उत्पन्न होते हैं अर्थात जनता यह विचार करने लगती है कि अमुक जंतर के प्रभाव से रोगों को आरोग्य प्राप्त होती है इस प्रकार मूल उपचार से अबोध रहते है झाड़ फूंक पर विश्वास रखना अनेकेश्वरवाद है, आरोग्य देने वाला केवल ईश्वर है, अर्थात ईश्वर ने हर रोग के उपचार के लिए प्राकृतिक नियम के आधीन प्रबन्ध किया है ईश्वर की उत्पन्न की हुई वस्तुओं और पेड़ों के फल फूल पत्ते और जड़ो इत्यादि में सम्पूर्ण रोगों की औषधि उपस्थिति है

डाक्टरों और वैधों का काम यह है कि स्वास्थ्य प्रणाली के अनुसार सम्पूर्ण रोगों की औषधि से ईश्वर के बनाए हुए नियमानुसार उपचार करें, इस प्रकार के उपचार के लिए महामना इब्राहीम अ0 ने कहा था "जब मैं रोगी होता हूं तो वही ईश्वर मुझे स्वास्थ देता है, अर्थात ईश्वर ही की बनाई वस्तुओ से और ईश्वर ही के नियम के अनुसार मैं उपाय करता हूं आरोग्य पाता हूं, जंतरों और मंतरो पर विश्वास रखने के कारण अधिकांश मुर्ख अपने रोगियों का प्राकृतिक उपचार नही करते और पीर व मुल्ला का जंतर कतिपय रोगियों को मृत्यु के घाट उतार देता है,

यह कुरआन जीवन व्यतीत करने का नियम है जिसमें जीवन व्यतीत करने के सरल नियम है यदि व्यक्ति उनका पालन करे तो निःसंदेह व्यक्ति सफल होगा, और ईश्वर की सहायता उसके आगे-आगे चलेगी जिसको नास्तिक लोग और धर्म के कच्चे जादू ही कल्पना करेंगे परन्तु वास्तव में वह जादू नही होता, अपितु वह ईश्वर की सहायता होती है, परन्तु दुख है आज मुस्लिम जाति की अधिक संख्या इस

گمراہی کا حال یہ ہے کہ) وہ رحمٰن کو نہیں مانتے کہدو کہ وہی رحمان ہی تو میرا رب ہے (کیا وہ کہتے ہیں کوئی) اللہ نہیں تو سنو! یقیناً وہ اللہ ہے اسی پر میرا بھروسہ ہے اور میں نے اسی سے لو لگا رکھی ہے (۳۰)

اگر کوئی قرآن ایسا ہوتا کہ اس کی تاثیر سے پہاڑ چلنے لگتے یا اس سے زمین ٹکڑے ٹکڑے ہو جائے یا جلدی بڑی دوریاں طے ہو جائیں یا مردے بول اٹھیں (تو اس قرآن سے بھی ایسا ہوتا لیکن قرآن میں ایسی کوئی طاقت نہیں) بلکہ ساری باتوں کا اختیار صرف اللہ ہی کو ہے تو وہ لوگ جو ایمان لا چکے ہیں ان کو یہ امید نہیں رکھنی چاہیے کہ کافر ایمان لے آئیں گے (کیا ابھی تک کافروں کی طلب کے جواب میں کسی نشانی کے ظہور کی آس لگائے بیٹھے ہیں؟ ان کو یہ جان لینا چاہیے) اگر اللہ چاہتا (زبردستی) تو سب آدمیوں کو ہدایت کر دیتا۔اور برابر پہنچتا رہے گا منکروں کو ان کی کرتوت پر صدمہ یا اترے گا ان کے گھروں کے پاس یہاں تک کہ اللہ کا وعدہ آجائے بے شک اللہ خلاف نہیں کرتا اپنا وعدہ (اور کافر لوگ نشانی دیکھنے کے بعد بھی ایمان نہیں لائیں گے) (۳۱)

[۶:۱۱۱، ۷:۱۴۶، ۶:۷-۲۵، ۱۰:۹۶، ۹۷، ۱۰۰، ۱۳:۲۷، ۱۵:۱۱۴، ۱۱۵، ۱۷:۹۰-۹۳]

نوٹ:۔نزول قرآن کا مقصد ہدایت ہے عجائبات دکھانا نہیں ہے اللہ کی کتاب ہدایت خلق کے لئے نازل ہوئی ہے۔جادو کے لئے نہیں۔یہ کتاب مردہ جسموں کو زندہ نہیں کرتی بلکہ اس کتاب پر عمل کرنے سے مردہ گناہ گار دل زندہ ہوتے ہیں "فیہ شفاء مانی الصدور" اس قرآن میں دلوں کی بیماریوں کا علاج ہے۔جسمانی بیماریوں کا علاج نہیں ہے۔لہٰذا تعویذ اور گنڈوں سے جسمانی بیماریوں کا علاج کرنا اس آیت کے منافی ہے اور اس کام سے مسلمانوں میں وہم پرستی اور مشرکانہ خیالات پیدا ہوتے ہیں یعنی عوام یہ خیال کرنے لگتے ہیں کہ فلاں تعویذ کے اثر سے مریض کو شفا حاصل ہوتی ہے۔اس طرح اصل علاج سے غافل رہتے ہیں جھاڑ پھونک پر یقین رکھنا شرک ہے شفا دینے والا صرف اللہ ہے یعنی اللہ نے ہر مرض کے علاج کے لئے قانون فطرت کے تحت انتظام کیا ہے اللہ کی پیدا کی ہوئی چیزوں اور درختوں کے پھل پھول پتے اور جڑوں وغیرہ میں تمام بیماریوں کی دوا موجود ہے۔

ڈاکٹروں اور حکیموں کا کام یہ ہے کہ اصول صحت کے مطابق تمام امراض کی دواؤں سے اللہ کے بنائے ہوئے قانون کے مطابق علاج کریں۔اس طرح کے علاج کے لئے حضرت ابراہیم نے فرمایا تھا "جب میں بیمار ہوتا ہوں تو وہی اللہ مجھے شفا دیتا ہے۔یعنی اللہ ہی کی بنائی چیزوں سے اور اللہ ہی کے قانون صحت کے مطابق میں علاج کرتا ہوں شفا پاتا ہوں۔تعویز اور گنڈوں پر یقین رکھنے کی وجہ سے اکثر جاہل اپنے بیماروں کا قدرتی علاج نہیں کرتے اور پیر و ملا کا تعویز بعض مریضوں کو موت کے گھاٹ اتار دیتا ہے۔

یہ قرآن ضابطہ حیات ہے جس میں زندگی گزارنے کے آسان قانون ہیں اگر آدمی ان کی پابندی کرے تو یقیناً آدمی کامیاب ہوگا۔اور اللہ کی مدد اس کے آگے آگے چلے گی جس کو منکر لوگ اور ایمان کے کچے جادو ہی تصور کریں گے۔ لیکن حقیقت میں وہ جادو نہیں ہوتا۔بلکہ وہ اللہ کی مدد ہوتی ہے۔لیکن افسوس آج

कुरआन को एक जादू की भांति प्रयोग कर रही है, और हर प्रकार के जंतर बना कर जाति को मूर्ख बना रही है लगभग अधिकांश कुरआनों के आरम्भ ही में हर सूरत का जंतर बना हुआ है और जंतरों की पुस्तकें भी बहुत बाजार में मिल जाती हैं झाड़ फूंक के विरुद्ध एक कथन बुखारी में भी अंकित है जिसमें है कि जो झाड़ फूंक न करेगा वह स्वर्गीय है.

(ऐ रसूल!) तुमसे पहले भी ईशदूतों की हंसी उड़ाई गई (परन्तु हमने उन्हें तुरन्त दण्ड नहीं दिया अपितु) हम नास्तिकों को ढील देते रहते हैं (शायद वह सदाचारी हो जाए फिर जब उनकी अवज्ञा सीमा से आगे बढ़ जाती है तो) फिर हम उन्हें पकड़ लेते हैं फिर देखो हमारा दण्ड कैसा कठोर होता है (32)

तो क्या ईश्वर जो हर व्यक्ति के कर्मों का रक्षक है (वह मूर्तियों की भांति अज्ञानी और अन्जान हो सकता है?) और उन लोगों ने ईश्वर के साझी बना रखे हैं उनसे कहो कि उनके नाम तो लो, क्या तुम उसे ऐसी वस्तुएं बताते हो जिसको वह पृथ्वी में (कहीं भी) ज्ञात नहीं करता या फिर एक जाहिरी और दिखाने की बात है (जिसका कोई मूल नहीं) बात यह है कि नास्तिकों के लिए शैतान ने उनके छल अच्छे कर दिए गए हैं और (इस कारण से वह) सत्य मार्ग में पग उठाने से रुक गए हैं और जिसे ईश्वर का नियम पथ भ्रष्ट कर दे उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है (33)

उनको दुनिया के जीवन में भी कष्ट है और प्रलोक का कष्ट तो बहुत ही कठोर है और कोई नहीं जो उन्हें ईश्वर के (नियम की) पकड़ से बचा सके (34)

जिस स्वर्ग का सदाचारि व्यक्तियों से वचन किया गया है उसकी उपमा ऐसी है जैसे एक उपवन है उसके नीचे नहरें बह रही हैं उसके फल सदैव सजल व प्रफुल्ल रहने वाले हैं और वृक्षों के साये भी स्थापित रहने वाले हैं, यह है उन लोगों का पुरस्कार जो ईश्वर की अवज्ञा से बचे और नास्तिकों का अन्त फल अग्नि है (35)

और जिन लोगों को हमने पहले पुस्तक दे रखी है (उनमें के आस्तिक लोग) वह इस बात से प्रसन्न होते हैं कि तुम पर (भी एक पुस्तक जिसकी प्रतीक्षा थी) अवतरित की गई है परन्तु उनमें कतिपय दल ऐसे भी हैं जो कुरआन के कतिपय आदेश नहीं मानते कह दो कि मुझको यही आदेश हुआ है कि ईश्वर ही की पूजा करूं और उसके साथ किसी को साझी न करूं मैं उसकी ओर बुलाता हूं, और उसी की ओर मुझे लौटना है (परन्तु तुम इसके विपरीत करते हो तुमने तीन ईश्वर बना रखे हैं) (36)

(जिस प्रकार हमने यहूदियों और इसाईयों को उनकी भाषा में तोरात और इन्जील दी) इसी प्रकार हमने इस कुरआन को अरबी आदेश की आकृति में प्रेषित किया और यदि तुम लोग ज्ञान आने के बाद उन लोगों की इच्छाओं के पीछे चलोगे तो ईश्वर के सामने कोई न तुम्हारा सहायक होगा और न कोई बचाने वाला (37)

مسلم قوم کی اکثریت اس قرآن کو ایک جادو کی طرح استعمال کر رہی ہے۔اور ہر طرح کے تعویز بنا کر قوم کو بے وقوف بنا رہی ہے تقریباً زیادہ تر قرآنوں کے شروع ہی میں ہر سورت کا تعویز بنا ہوا ہے اور تعویزوں کی کتابیں بھی بہت بازار میں مل جاتی ہیں۔جھاڑ پھونک کے خلاف ایک روایت بخاری میں بھی درج ہے جس میں ہے کہ جو جھاڑ پھونک نہ کرے گا وہ جنتی ہے۔

(اے رسول!) تم سے پہلے بھی رسولوں کی ہنسی اڑائی گئی (مگر ہم نے انہیں فوراً سزا نہیں دی بلکہ) ہم کافروں کو ڈھیل دیتے رہتے ہیں (شائد وہ نیک ہو جائیں پھر جب ان کی سرکشی حد سے آگے بڑھ جاتی ہے تو) پھر ہم انہیں پکڑ لیتے ہیں پھر (دیکھو) ہمارا عذاب کیسا سخت ہوتا ہے (۳۲)

تو کیا اللہ جو ہر شخص کے اعمال کا نگراں ہے (وہ بتوں کی طرح بے علم و بے خبر ہو سکتا ہے؟) اور ان لوگوں نے اللہ کے شریک بنا رکھے ہیں۔ان سے کہو کہ ان کے نام تو لو کیا تم اسے ایسی چیزیں بتاتے ہو جس کو وہ زمین میں (کہیں بھی) معلوم نہیں کرتا یا پھر ایک ظاہری اور دکھاوے کی بات ہے (جس کی کوئی اصلیت نہیں) بات یہ ہے کہ کافروں کے لئے شیطان نے ان کے فریب اچھے کر دیئے گئے ہیں اور (اس وجہ سے وہ) راہ حق میں قدم اٹھانے سے رک گئے ہیں اور جسے اللہ کا قانون گمراہ کر دے اسے کوئی راہ دکھانے والا نہیں ہے (۳۳)

ان کو دنیا کی زندگی میں بھی عذاب ہے اور آخرت کا عذاب تو بہت ہی سخت ہے اور کوئی نہیں جو انہیں (قانون الٰہی کی) پکڑ سے بچا سکے (۳۴)

جس جنت کا متقی انسانوں سے وعدہ کیا گیا ہے اس کی مثال ایسی ہے جیسے ایک باغ ہے اس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں اس کے پھل ہمیشہ تر و تازہ رہنے والے ہیں اور درختوں کے سائے بھی قائم رہنے والے ہیں۔یہ ہے ان لوگوں کا انعام جو اللہ کی نافرمانی سے بچے اور کافروں کا انجام آگ ہے (۳۵)

اور جن لوگوں کو ہم نے پہلے کتاب دے رکھی ہے (ان میں کے مومن لوگ) وہ اس بات سے خوش ہوتے ہیں کہ تم پر (بھی ایک کتاب جس کا انتظار تھا) نازل کی گئی ہے۔لیکن ان میں بعض جماعتیں ایسی بھی ہیں جو قرآن کے بعض حکم نہیں مانتیں۔کہہ دو کہ مجھ کو یہی حکم ہوا ہے کہ اللہ ہی کی عبادت کروں اور اس کے ساتھ کسی کو شریک نہ کروں۔میں اسی کی طرف بلاتا ہوں اور اسی کی طرف مجھے لوٹنا ہے (مگر تم اس کے خلاف کرتے ہو تم نے تین اللہ بنا رکھے ہیں) (۳۶)

(جس طرح ہم نے یہودیوں اور عیسائیوں کو ان کی زبان میں توریت اور انجیل عطا فرمائی) اسی طرح ہم نے اس قرآن کو عربی فرمان کی شکل میں نازل کیا اور اگر تم لوگ علم آنے کے بعد ان لوگوں کی خواہشوں کے پیچھے چلو گے تو اللہ کے سامنے کوئی نہ تمہارا مددگار ہوگا اور نہ کوئی بچانے والا (۳۷)

(ऐ रसूल!) यह सत्य है कि हमने तुम से पहले (हर जाति में) रसूल भेजे है (वह सब तुम्हारी ही प्रकार के व्यक्ति थे) हमने उन्हें पत्नीयां और सन्तान भी दी थी (फिर उन लोगों को तुम्हारे साथ पत्नी और सन्तान के होने पर क्या आपत्ति हो?) और किसी रसूल में यह शक्ति न थी कि ईश्वर के आदेश के बिना कोई चमत्कार दिखा देता (और हर अवसर) के लिए एक प्रथक आदेश अवधि लिखा हुआ है (38)

(اے رسول!) یہ حقیقت ہے کہ ہم نے تم سے پہلے (ہر قوم میں) رسول بھیجے ہیں (وہ سب تمہاری ہی طرح کے انسان تھے) ہم نے انہیں بیویاں اور اولاد بھی دی تھیں (پھر ان لوگوں کو تمہارے ساتھ بیوی اور بچوں کے ہونے پر کیوں اعتراض ہو؟) اور کسی رسول میں یہ طاقت نہ تھی کہ اللہ کے حکم کے بغیر (اپنی خواہش سے) معجزہ دکھا دیتا (اور ہر موقع) کے لئے ایک علیحدہ حکم اجل لکھا ہوا ہے (۳۸)

ईश्वर जो चाहे मिटा दे और जो चाहे स्थापित रखे (और यह सब कुछ उस पुस्तक में लिखा है) जो उसके पास मूल पुस्तक है (अर्थात उसका ज्ञान) (39) {13:17;42:24}

اللہ جو چاہے مٹا دے اور جو چاہے قائم رکھے (اور یہ سب کچھ اس کتاب میں لکھا ہے) جو اس کے پاس اصل کتاب ہے (یعنی اس کا حکم) (۳۹) [۱۳:۱۷؛۴۲:۲۴]

हमने जिस दण्ड का वचन उन लोगों से किया है (अनिवार्य नहीं कि सब एक साथ अवतरित हो जाए) हो सकता है कि उसमें से कुछ हम आपके जीवन में दिखा दें और यह भी सम्भव है कि उससे पहले हम आपको मृत्यु दे दे (अर्थात आपकी मृत्यु के बाद उन पर यातना अवतरित हो) अस्तु आपका कार्य संदेश पहुंचा देना है (और बस) उनसे उन कर्मों का लेखा लेना हमारा कार्य है (40) {3: 55, 5:117, 2:37-136, 10:46}

ہم نے جس عذاب کا وعدہ ان لوگوں سے کیا ہے (ضروری نہیں کہ سب ایک ساتھ ہی نازل ہو جائے) ہوسکتا ہے کہ اس میں سے کچھ ہم تیری زندگی میں دکھا دیں اور یہ بھی ممکن ہے کہ اس سے پہلے ہم آپ کو وفات دے دیں۔ (یعنی آپ کے انتقال کے بعد ان پر عذاب نازل ہو) بہرحال آپ کا کام پیغام دینا ہے (اور بس) ان سے ان کاموں کا حساب لینا ہمارا کام ہے (۴۰) [۳:۵۵؛۵:۱۱۷؛۲:۳۷، ۱۳۶؛۱۰:۴۶]

क्या वह लोग देखते नही कि हम इस पृथ्वी पर चले आ रहें है (अर्थात हमारा विधान कार्य कर रहा है) और इसकी परिधि हर ओर से तंग करते चले आ रहे है ईश्वर शासन कर रहा है कोई उसके निर्णय पर पुनरीक्षण करने वाला नही है और वह शीघ्र लेखा लेने वाला है (41) {21:44, 30:8}

کیا وہ لوگ دیکھتے نہیں کہ ہم اس زمین پر چلے آ رہے ہیں (یعنی ہمارا قانون کام کر رہا ہے) اور اس کا دائرہ ہر طرف سے تنگ کرتے چلے آ رہے ہیں اللہ حکومت کر رہا ہے کوئی اس کے فیصلوں پر نظر ثانی کرنے والا نہیں ہے اور وہ جلد حساب لینے والا ہے (۴۱) [۲۱:۴۴، ۳۰:۸]

नोट- पृथ्वी तंग करने का अर्थ अधिकांश यह लिखा है कि इस्लामी राज्य बढ़ता जा रहा है यदि इसको सत्य मान लिया जाए तो आयत में जो कार्य बताया गया है वह बराबर जारी रहने वाला है अतः इस्लामी राज्य को बराबर बढ़ते रहना चाहिए परन्तु काफी समय से इस्लामी राज्य कम होता जा रहा है, और यदि वास्तव में देखा जाए तो इस समय कही भी इस्लामी राज्य नही और न ही उचित अर्थ में प्रचलित इस्लाम इस्लाम है, इस्लाम तो कुरआन में है वह अलग बात है कि हम सत्य से उपेक्षा करके खुश फहमी से यही कहते रहे कि हम मुसलमान है तो यह बात अनुचित है, वास्तविक मुसलमान तो वह होता है जो कुरआन के अनुसार नियमों पर व्यवहार करता हो,

जैसे मुहम्मद स0 एक राज्य और धर्म शास्त्र छोड़ गए थे, जिस पर उनके उत्तराधिकारीयों और मुसलमानों ने व्यवहार किया, ऐसे ही अब हो, परन्तु नही है तो स्वयं ही निर्णय कर लिया जाए कि हम ईश्वर और ईशदूत का अनुकरण कर रहें है या निकल गए

ईश्वर कहता है कि आदेश ईश्वर का चलेगा कोई उसके निर्णयों पर पुनरीक्षण करने वाला नही परन्तु आज कुरआन के अतिरिक्त ज्ञात नही कितने धर्म नियम और विधानों पर व्यवहार हो रहा है जिनका कुरआन में कोई प्रमाण नही है सत्य इस्लाम और मुसलमान वही है जिसका प्रमाण कुरआन में हो, कुरआन हर मतभेद को मना करता है अतः मुस्लिम राज्य और शासक एक हो धर्म शास्त्र कुरआन के अनुसार एक हो तब अनुकरण ईशदूत है और वही अनुकरण ईश्वर है,

परन्तु दुख यदि कोई सत्य बात कहने और बताने का साहस करता है तो उसको बलात चुप कर दिया जाता है, एक बात और विचार योग्य है, वह यह कि यह सूरत और आयत (धारा) मक्की है, और उस

از زمین تنگ کرنے کا مطلب اکثر یہ لکھا ہے کہ اسلامی حکومت بڑھتی جارہی ہے اور مخالفوں کی حکومت کم ہوتی جارہی ہے اگر اس کو درست مان لیا جائے تو آیت میں جو کام بتایا گیا ہے وہ برابر جاری رہنے والا ہے اس لئے اسلامی حکومت کو برابر بڑھتے رہنا چاہیے۔ لیکن کافی دنوں سے اسلامی حکومت کم ہوتی جارہی ہے اور اگر حقیقت میں دیکھا جائے تو اس وقت کہیں بھی اسلامی حکومت نہیں اور نہ ہی صحیح معنیٰ میں رائج الوقت اسلام اسلام ہے۔ اسلام تو قرآن میں ہے۔ وہ الگ بات ہے کہ ہم حقیقت سے صرف نظر کر کے خوش فہمی سے یہی کہتے رہیں کہ ہم مسلمان ہیں تو یہ بات غلط ہے۔ حقیقی مسلمان وہ ہوتا ہے جو قرآن کے مطابق قانون پر عمل کرتا ہو۔

جیسے محمدؐ ایک حکومت اور ایک فقہ چھوڑ گئے تھے جس پر خلفاء راشدین اور مسلمانوں نے عمل کیا ایسا ہی اب ہو مگر نہیں ہے تو خود ہی فیصلہ کر لیا جائے کہ ہم اللہ اور رسول کی اطاعت کر رہے ہیں یا نکل گئے۔

اللہ کہتا ہے کہ حکم اللہ کا چلے گا کوئی اس کے فیصلوں پر نظر ثانی کرنے والا نہیں مگر آج قرآن کے علاوہ نہ معلوم کتنے فقہ اور قانونوں پر عمل ہو رہا ہے جن کی قرآن میں کوئی سند نہیں ہے۔ صحیح اسلام اور مسلمان وہی ہے جس کی سند قرآن میں ہے قرآن ہر اختلاف کو منع کرتا ہے۔ اس لئے مسلم حکومت اور امیر ایک ہو۔ فقہ قرآن کے مطابق ایک ہو تب اطاعت رسول ہے اور وہی اطاعت اللہ ہے

مگر افسوس اگر کوئی صحیح بات کہنے اور بتانے کی ہمت کرتا ہے تو اس کو زبردستی خاموش کر دیا جاتا ہے۔ ایک بات اور قابل غور ہے وہ یہ کہ یہ سورت اور

समय इस्लामी राज्य स्थापित न हुआ था और न ही कोई बढ़ोतरी हो रही थी, अतः राज्य वाली बात मिथ्या है, राज्य और सम्मान शुभ कर्मों से मिलता है जब भी मनुष्य ने शुभ कार्य किये ईश्वर के नियमानुसार राज्य मिल गया और जब अवज्ञा की तो राज्य और सम्मान समाप्त हो गया और अपमानता सवार हो गई, यह ईश्वर का अटल नियम है इसमें कोई परिवर्तन नही होता आरम्भ से है और अन्त तक रहेगा,

آیت مکی ہے اور اس وقت اسلامی حکومت قائم نہ ہوئی تھی اور نہ ہی کوئی بڑھوتری ہو رہی تھی. اس لئے حکومت والی بات غلط ہے. حکومت اور عزت نیک عملوں سے ملتی ہے. جب بھی انسان نے نیک عمل کئے اللہ کے قانون کے مطابق حکومت مل گئی اور جب نافرمانی کی تو حکومت اور عزت ختم ہوگئی اور ذلت سوار ہوگئی یہ اللہ کا اٹل قانون ہے اس میں کوئی بدلاؤ نہیں ہوتا شروع سے ہے اور آخیر تک رہے گا.

रहा प्रश्न परिधि तंग होने का तो वास्तव में ऐसा हो रहा है वह ऐसे कि पृथ्वी के अन्दर से तरल पदार्थ और अनेक गैस और ठोस पदार्थ टनों के हिसाब से प्रतिदिन निकल रहा है इस लिए इन पदार्थों के निकलने से पृथ्वी सुकड़ रही है और कम होती चली जा रही है, बर्फ पिघलने से पानी का क्षेत्र भी बढ़ रहा है जो हमको दिखाई नही दे रहा है शीघ्र ही इधर अनुसंधान होगा तब ज्ञात होगा कि पृथ्वी कम हो रही है और कुरआन की यह बात भी दुनिया मान कर रहेगी,

رہا سوال دائرہ تنگ ہونے کا تو حقیقت میں ایسا ہو رہا ہے وہ ایسے کہ زمین کے اندر سے سیال مادہ اور مختلف گیس اور ٹھوس مادہ ٹنوں کے حساب سے روز نکل رہا ہے اس لئے ان مادوں کے نکلنے سے زمین سکڑ رہی ہے اور کم ہوتی چلی جا رہی ہے. برف پگھلنے سے پانی کا رقبہ بھی بڑھ رہا ہے جو ہم کو نظر نہیں آ رہا ہے مگر جلد ہی ادھر تحقیق ہوگی تب پتہ چلے گا کہ زمین کم ہو رہی ہے اور قرآن کی یہ بات بھی دنیا مان کر رہے گی.

जो लोग उनसे पहले थे उन नास्तिकों ने भी (सत्य के आवाहन के सामने भांति भांति की) युक्तियां की थी सो (याद रखो) सारी युक्तियों का परिणाम ईश्वर ही के अधिकार में है वह जानता है कि कौन व्यक्ति क्या कर्म कर रहा है और शीघ्र ही नास्तिकों को ज्ञात हो जाएगा कि किसका अमंगल होने वाला है (42)

جو لوگ اُن سے پہلے تھے اُن کافروں نے بھی (دعوت حق کے مقابلے کے لئے طرح طرح کی) تدبیریں کی تھیں سنو (یاد رکھو) ساری تدبیروں کا نتیجہ اللہ ہی کے اختیار میں ہے. وہ جانتا ہے کہ کون انسان کیا کام کر رہا ہے اور جلد ہی کافروں کو معلوم ہو جائے گا کہ کس کا انجام بخیر ہونے والا ہے (۴۲)

और जो लोग नास्तिक है वह कहते है कि आप (ईश्वर के) ईशदूत नही है कह दो कि मेरे और तुम्हारे मध्य ईश्वर साक्षी प्रयाप्त है और वह कौन है? वह वह ईश्वर है कि उसके पास पुस्तक (आसमानी) का ज्ञान है पूर्ण पुस्तक है (43)

اور وہ کہیں گے جو کافر ہیں تو بھیجا ہوا نہیں آیا. کہہ دینا میرے اور تمہارے درمیان اللہ گواہ کافی ہے اور وہ کون ہے؟ وہ وہ اللہ ہے کہ اس کے پاس کتاب آسمانی کا علم ہے پوری کتاب (۴۳)

सूरह इब्राहीम 14 मक्की

سورہ ابراہیم (۱۴) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स0! यह एक (उज्ज्वल) पुस्तक है जो हमने आप पर अवतरित की है (उद्देश्य?) ताकि आप लोगों को उनके ईश्वर के आदेश से (नास्तिकता के) अन्धकारों से निकाल कर (आस्था के) प्रकाश में ले आओ (अर्थात) उनको अधिकार प्राप्त और वंदना योग्य (ईश्वर) के मार्ग पर चलाओ (1) (कदरा) 97

اے محمدؐ! یہ ایک (پرنور) کتاب ہے جو ہم نے آپ پر نازل کی ہے (مقصد؟) تاکہ آپ لوگوں کو ان کے رب کے حکم سے (کفر کی) تاریکیوں سے نکال کر (ایمان کی) روشنی میں لے آؤ (یعنی) ان کو غالب اور لائق حمد (اللہ) کے راستہ پر چلاؤ (۱) (قدر۔۹۷)

उस ईश्वर के मार्ग पर चलाव कि जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब उसी का है जो लोग उस के शासन से इनकार करते है उनके लिए कठोर दण्ड के कारण तबाही है (2)

اس اللہ کے رستہ پر چلاؤ کہ جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے سب اسی کا ہے جو لوگ اس کی فرماں روائی سے انکار کر رہے ہیں ان کے لئے سخت عذاب کی وجہ سے تباہی ہے (۲)

उन लोगों के लिए जो परलोक की ओर से मुख मोड़कर दुनिया के जीवन को पसन्द करते है और (दूसरे लोगों को भी) ईश्वर के मार्ग धर्म से रोकते है और चाहते है कि उसमें कजी उत्पन्न करें (अर्थात इस्लाम के सीधे साधे आदेशों को तोड़ मरोड़ कर उसकी आकृति को विकृत कर देना चाहते है) वह लोग परले दर्जे की पथ भ्रष्टता में पड़े हुए है (3)

ان لوگوں کے لئے جو آخرت کی طرف سے منہ موڑ کر دنیا کی زندگی کو پسند کرتے ہیں اور (دوسرے لوگوں کو بھی) اللہ کی راہ دین سے روکتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اس میں کجی پیدا کریں (یعنی اسلام کے سیدھے سادھے احکام کو توڑ مروڑ کر اس کی شکل کو مسخ کر دینا چاہتے ہیں) وہ لوگ پرلے درجے کی گمراہی میں پڑے ہوئے ہیں (۳)

और हमने जो ईशदूत प्रेषित किया निःसंदेह वह अपनी जाति की भाषा में (हमारा संदेश पहुंचाए) ताकि उन लोगों पर हमारे नियम स्पष्ट कर दे फिर ईश्वर का नियम भ्रष्टता में रहने देता है जो अपने

اور ہم نے جو رسول بھیجا یقیناً وہ اپنی قوم کی زبان میں (ہمارا پیغام پہنچائے) تاکہ ان لوگوں پر ہمارے احکام واضح کر دے پھر اللہ کا قانون گمراہی میں رہنے دیتا ہے جو